पारा नं - 16 से 30
पेज नं - 545 से 1116

क़ुरआन मजीद

मय तर्जुमा व अरबी मतन

तर्जुमा
हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०

हिन्दी अनुवाद
मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी
एम० ए० (अलीग०)

ibsbookstore.com
IBS™

सोलहवाँ पारः क़ा-ल अलम्

सूरतुल्-कह्फ़ि (आयत 75 से 110)

क़ा-ल अलम् अक़ुल्-ल-क इन्न-क लन् तस्तती-अ़ मअि़-य सब्रा **(75)** क़ा-ल इन् सअल्तु-क अ़न् शैइम् बअ़्-दहा फ़ला तुसाहिब्नी क़द् बलग़्-त मिल्लदुन्नी अ़ुज़्रा **(76)** फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा अ-तया अह्-ल क़र्-यति-निस्तत्-अ़मा अह्लहा फ़-अबौ अंय्युज़य्यिफ़ूहुमा फ़-व-जदा फ़ीहा जिदारंय्युरीदु अंय्यन्क़ज़्-ज़ फ़-अक़ामहू, क़ा-ल लौ शिअ्-त लत्त-ख़ज़्-त अ़लैहि अज्रा **(77)** क़ा-ल हाज़ा फ़िराक़ु बैनी व बैनि-क स-उनब्बिउ-क बितअ्वीलि मा लम् तस्ततिअ़् अ़लैहि सब्रा **(78)** अम्मस्सफ़ी-नतु फ़-कानत् लि-मसाकी-न यअ़्मलू-न फ़िल्बहिर फ़-अरत्तु अन् अअ़ी-बहा व का-न वरा-अहुम् मलिकुंय्यअ्ख़ुज़ु कुल्-ल सफ़ी-नतिन् ग़स्बा **(79)** व अम्मल्-ग़ुलामु फ़का-न अ-बवाहु मुअ्मिनैनि फ़-ख़शीना अंय्युर्हि-क़हुमा तुग़्यानंव्-व कुफ़्रा **(80)** फ़-अरद्ना अंय्युब्दि लहुमा रब्बुहुमा ख़ैरम्-मिन्हु ज़कातंव्-व अक़्र-ब रुह्मा **(81)** व अम्मल्-जिदारु फ़का-न लिग़ुलामैनि यतीमैनि फ़िल्-मदीनति व का-न तह्तहू कन्जुल्-लहुमा

قال الم ١٦ ٢٧٣ الكهف ١٨

قال الم اقل لك انك لن تستطيع معي صبرا ﴿٧٥﴾ قال ان
سالتك عن شيء بعدها فلا تصاحبني قد بلغت من
لدني عذرا ﴿٧٦﴾ فانطلقا حتى اذا اتيا اهل قرية استطعما
اهلها فابوا ان يضيفوهما فوجدا فيها جدارا يريد ان
ينقض فاقامه قال لو شئت لتخذت عليه اجرا ﴿٧٧﴾ قال
هذا فراق بيني وبينك سانبئك بتاويل ما لم تستطع
عليه صبرا ﴿٧٨﴾ اما السفينة فكانت لمسكين يعملون في البحر
فاردت ان اعيبها وكان وراءهم ملك ياخذ كل سفينة
غصبا ﴿٧٩﴾ واما الغلم فكان ابوه مؤمنين فخشينا ان يرهقهما
طغيانا وكفرا ﴿٨٠﴾ فاردنا ان يبدلهما ربهما خيرا منه زكوة و
اقرب رحما ﴿٨١﴾ واما الجدار فكان لغلمين يتيمين في المدينة
وكان تحته كنز لهما وكان ابوهما صالحا فاراد ربك ان
يبلغا اشدهما ويستخرجا كنزهما رحمة من ربك وما
فعلته عن امري ذلك تاويل ما لم تسطع عليه صبرا ﴿٨٢﴾
ويسئلونك عن ذي القرنين قل سانلوا عليكم منه ذكرا ﴿٨٣﴾
انا مكنا له في الارض واتينه من كل شيء سببا ﴿٨٤﴾ فاتبع

منزل ٤

व का-न अबूहुमा सालिहन् फ़-अरा-द रब्बु-क अंय्यब्लुग़ा अशुद्दहुमा व यस्तख़्रिजा कन्ज़हुमा रह्मतम् मिर्रब्बि-क व मा फ़अ़ल्तुहू अ़न् अम्री, ज़ालि-क तअ्वीलु मा लम् तस्तिअ़् अ़लैहि सब्रा **(82)** ❖

व यस्अलून-क अ़न् ज़िल्क़र्नैनि, क़ुल् स-अत्लू अ़लैकुम् मिन्हु ज़िक्रा **(83)** इन्ना

सोलहवाँ पारः क़ा-ल अलम्

सूरः कह्फ़ (आयत 75 से 110)

(उन बुज़ुर्ग ने) फ़रमाया कि क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि आपसे मेरे साथ सब्र न हो सकेगा? **(75)** (मूसा ने) फ़रमाया कि (ख़ैर अब की बार और जाने दीजिए) अगर इस (बार) के बाद आप से किसी मामले के बारे में कुछ पूछूँ तो आप मुझको अपने साथ न रखिए। बेशक आप मेरी तरफ़ से उज़्र (की इन्तिहा) को पहुँच चुके हैं।[1] **(76)** फिर दोनों (आगे) चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव वालों पर गुज़र हुआ तो वहाँ वालों से खाने को माँगा, (कि हम मेहमान हैं) सो उन्होंने उनकी मेहमानी करने से इनकार कर दिया, इतने में उनको वहाँ एक दीवार मिली जो गिरने ही वाली थी, तो (उन बुज़ुर्ग ने) उसको (हाथ के इशारे से) सीधा कर दिया। (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि अगर आप चाहते तो (इस काम) पर कुछ मुआ़वज़ा ही ले लेते। **(77)** (उन बुज़ुर्ग ने) कहा कि यह वक़्त हमारे और आपके अलग होने का है। (जैसा कि ख़ुद आपने शर्त रखी थी) मैं उन चीज़ों की हक़ीक़त आपको बतलाए देता हूँ जिनपर आपसे सब्र न हो सका।[2] **(78)** वह जो नाव थी, सो कुछ ग़रीब आदमियों की थी, जो (उसके ज़रिये से) दरिया में मेहनत (मज़दूरी) करते थे, सो मैंने चाहा कि उसमें ऐब डाल दूँ और (वजह उसकी यह थी कि) उन लोगों से आगे की तरफ़ एक (ज़ालिम) बादशाह था, जो हर (अच्छी) नाव को ज़बरदस्ती पकड़ रहा था। **(79)** और रहा वह लड़का, सो उसके माँ-बाप ईमान वाले थे, सो हमको अन्देशा (यानी तहक़ीक़) हुआ कि यह उन दोनों पर सरकशी और कुफ़्र का असर न डाल दे। **(80)** पस हमको यह मन्ज़ूर हुआ कि बजाय उसके उनका परवर्दिगार उनको ऐसी औलाद दे जो पाकीज़गी (यानी दीन) में उससे बेहतर हो, और (माँ-बाप के साथ) मुहब्बत करने में उससे बढ़कर हो। **(81)** और रही दीवार, सो वह दो यतीम लड़कों की थी जो इस शहर में (रहते) हैं, और उस (दीवार) के नीचे उनका कुछ माल दफ़न था, (जो उनके बाप से मीरास में पहुँचा है) और उनका बाप (जो मर गया है वह) एक नेक आदमी था, सो आपके रब ने अपनी मेहरबानी से चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी (की उम्र) को पहुँच जाएँ और अपना ख़ज़ाना निकाल लें, आपके रब की रहमत से। और (ये सारे काम मैंने अल्लाह की तरफ़ से हुक्म होने की वजह से किए हैं, इनमें से) कोई काम मैंने अपनी राय से नहीं किया। (लीजिए) यह है हक़ीक़त उन (बातों) की, जिनपर आप से सब्र न हो सका। **(82)** ❖

और ये लोग आप से ज़ुलक़रनैन का हाल पूछते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि मैं उनका ज़िक्र अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूँ। **(83)** हमने उनको धरती पर हुकूमत दी थी,[3] और हमने उनको हर क़िस्म का (काफ़ी)

---

1. यानी आपने बहुत दरगुज़र की, अगर अब साथ न रखेंगे तो माज़ूर हैं। अबकी बार भूल का उज़्र न करने से मालूम हुआ कि भूल न हुई थी।

2. अ़जब नहीं कि इन राज़ों का बतलाना उस दरख़्वास्त का पूरा करना भी हो जो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इन अल्फ़ाज़ में की थी कि "क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त से कि जो मुफ़ीद इल्म आपको अल्लाह की तरफ़ से सिखलाया गया है उसमें से आप मुझको भी सिखला दें" चाहे नमूने ही के तौर पर सही। और ज़्यादा साथ रहने में ग़ालिबन वह मुनासिब मौक़े पर ख़ुद ही बतलाते, और हर वाक़िए पर बतलाते तो यह इल्म ज़्यादा होता, अगरचे यह मूसा अ़लैहिस्सलाम के इल्म के बराबर मुफ़ीदे आ़म न हो, क्योंकि पैरवी के क़ाबिल नहीं। लेकिन इस मायने में ख़ास मुफ़ीद ज़रूर है कि बाज़ हिक्मतें तफ़सीली तौर पर ज़ाहिर होती हैं अगरचे इजमाली अ़क़ीदा कि हर वाक़िआ़ हिक्मतों पर मुश्तमिल होता है, क़ुर्ब (यानी निकटता) के लिए काफ़ी है।

3. बज़ाहिर मालूम होता है कि ज़ुल्क़रनैन कोई मक़बूल बुज़ुर्ग बादशाह हैं, चाहे नबी हों या वली हों, या किसी दूसरे नबी के पैरोकार। फिर वली होने की सूरत में यह गुफ़्तगू जिसका ज़िक्र आगे आएगा बतौर इल्हाम **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 548 पर)**

मक्कन्ना लहू फ़िल्अर्ज़ि व आतैनाहु मिन् कुल्लि शैइन् स-बबा **(84)** फ़-अत्ब-अ़ स-बबा **(85)** हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मग़्रिबश्शम्सि व-ज-दहा तग़्रुबु फ़ी औ़निन् हमि-अतिंव्-व व-ज-द अि़न्दहा क़ौमन्, क़ुल्ना या ज़ल्क़र्नैनि इम्मा अन् तुअ़ज़्ज़ि-ब व इम्मा अन् तत्तख़ि-ज़ फ़ीहिम् हुस्ना **(86)** क़ा-ल अम्मा मन् ज़-ल-म फ़सौ-फ़ नुअ़ज़्ज़िबुहू सुम्-म युरद्दु इला रब्बिही फ़युअ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबन् नुक्रा **(87)** व अम्मा मन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-लहू जज़ा-अ निल्हुस्ना व स-नक़ूलु लहू मिन् अम्रिना युस्रा **(88)** सुम्-म अत्ब-अ़ स-बबा **(89)** हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मत्लिअ़श्शम्सि व-ज-दहा तत्लुअ़ु अ़ला क़ौमिल्-लम् नज्अ़ल्-लहुम् मिन् दूनिहा सित्रा **(90)** कज़ालि-क व क़द् अ-हत्ना बिमा लदैहि ख़ुब्रा **(91)** सुम्-म अत्ब-अ़ स-बबा **(92)** हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ बैनस्सद्दैनि व-ज-द मिन् दूनिहिमा क़ौमल्-ला यकादू-न यफ़्क़हू-न क़ौला **(93)** क़ालू या ज़ल्क़र्नैनि इन्-न यअ्जू-ज व मअ्जू-ज मुफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-हल् नज्अ़लु ल-क ख़र्जन् अ़ला अन् तज्अ़-ल बैनना व बैनहुम् सद्दा **(94)** क़ा-ल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैरुन् फ़-अअ़ीनूनी बिक़ुव्वतिन् अज्अ़ल् बैनकुम् व बैनहुम् रद्मा **(95)** आतूनी ज़ु-बरल्-हदीदि, हत्ता इज़ा सावा बैनस्स-दफ़ैनि क़ालन्फ़ुख़ू हत्ता इज़ा ज-अ़-लहू नारन् क़ा-ल आतूनी उफ़्रिग़् अ़लैहि क़ित्रा **(96)** फ़-मस्ताअ़ू अंय्यज़्हरूहु व मस्तताअ़ू लहू नक़्बा **(97)** क़ा-ल हाज़ा रह्मतुम्-मिर्रब्बी फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दु रब्बी ज-अ़-लहू दक्का-अ व का-न वअ़्दु रब्बी हक़्क़ा **(98)** व

سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ
عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ
اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ
فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا
مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ
مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ؕ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ
وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾
كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰىٓ
اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ
يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ
مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ
تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ
بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ ۙ اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰىٓ
اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰىٓ اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ
قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾ ؕ فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَ
مَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ

सामान दिया था। **(84)** चुनाँचे वह (पश्चिमी मुल्कों को फ़त्ह करने के इरादे से) एक राह पर हो लिए। **(85)** यहाँ तक कि जब सूरज डूबने के मौक़े पर पहुँचे,[1] तो (वह सूरज) उनको एक काले रंग के पानी में डूबता हुआ दिखाई दिया,[2] और उसी जगह पर उन्होंने एक क़ौम देखी। हमने (उनके दिल में बात डाली और) यह कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन! चाहे सज़ा दो और चाहे इनके बारे में नरमी का मामला अपनाओ। **(86)** (ज़ुलक़रनैन ने) अ़र्ज़ किया कि (बहुत अच्छा, पहले ईमान ही की दावत दूँगा) लेकिन जो ज़ालिम रहेगा उसको तो हम लोग सज़ा देंगे, फिर वह अपने (हक़ीक़ी) मालिक के पास पहुँचाया जाएगा, फिर वह उसको (दोज़ख़ की) सख़्त सज़ा देगा। **(87)** और जो शख़्स ईमान ले आएगा और नेक अ़मल करेगा, तो उसके लिए (आख़िरत में भी) बदले में भलाई मिलेगी, और हम (दुनिया में भी) अपने बर्ताव में उसको आसान (और नरम) बात कहेंगे। **(88)** फिर एक (दूसरी) राह पर हो लिए। **(89)** यहाँ तक कि (जब दूरी तय करके) सूरज निकलने के मौक़े "यानी जगह" पर पहुँचे[3] तो सूरज को एक ऐसी क़ौम पर निकलते देखा,[4] जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी।[5] **(90)** (यह क़िस्सा) इसी तरह (है) और ज़ुलक़रनैन के पास जो कुछ (सामान वग़ैरह) था, हमको उस की पूरी ख़बर है। **(91)** फिर (पूरब व पश्चिम फ़त्ह करके) एक और राह पर हो लिए। **(92)** यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के दरमियान पहुँचे तो उन (पहाड़ों) से उस तरफ़ एक क़ौम को देखा, जो कोई बात समझने के क़रीब भी नहीं पहुँचते।[6] **(93)** उन्होंने (ज़ुलक़रनैन से) अ़र्ज़ किया, ऐ ज़ुलक़रनैन! याजूज व माजूज (की क़ौम जो इस घाटी के उस तरफ़ रहते हैं, हमारी) इस धरती "यानी इस इलाक़े" पर (कभी-कभी) बड़ा फ़साद मचाते हैं, सो क्या हम लोग आपके लिए कुछ चन्दा जमा कर दें, इस शर्त पर कि आप हमारे और उनके दरमियान कोई रोक बना दें। (कि वे फिर आने न पाएँ)। **(94)** (ज़ुलक़रनैन ने) जवाब दिया, कि जिस (माल) में मेरे रब ने मुझको इख़्तियार दिया है, वह बहुत कुछ है, सो (माल की मुझको ज़रूरत नहीं, हाँ) कुव्वत (यानी हाथ-पाँव) से मेरी मदद करो (तो) मैं तुम्हारे और उनके दरमियान में ख़ूब मज़बूत दीवार बना दूँ। **(95)** (अच्छा तो) तुम लोग मेरे पास लोहे की चादरें लाओ, यहाँ तक कि जब (रद्दे मिलाते-मिलाते) उनके "यानी पहाड़ों के" दोनों सिरों के बीच (के ख़ाली हिस्से) को बराबर कर दिया तो हुक्म दिया कि धौंको, (धौंकना शुरू हो गया) यहाँ तक कि जब उसको (लाल) अंगारा कर दिया तो उस वक़्त हुक्म दिया कि अब मेरे पास पिघला हुआ ताँबा लाओ (जो पहले से तैयार करा लिया होगा) कि इसपर डाल दूँ। **(96)** सो न तो वे लोग (यानी याजूज-माजूज) उसपर चढ़ सकते थे और (बहुत ज़्यादा मज़बूत होने की वजह से) न उसमें नक़ब दे सकते थे। **(97)** (ज़ुलक़रनैन ने) कहा कि यह (दीवार की तैयारी) मेरे रब की एक रहमत है। फिर

(पृष्ठ 546 का शेष) (यानी अल्लाह की तरफ़ से बात दिल में डालने से) हुई हो या किसी नबी के ज़रिये से, और शायद ज़ुल्क़रनैन उनका लक़ब इसलिए हुआ हो कि उन्होंने ज़मीन की दोनों जानिब (यानी पूरब व पश्चिम) पर कब्ज़ा हासिल कर लिया था इसलिए ज़ुल्क़रनैन लक़ब हो गया।

1. यानी पश्चिम की दिशा में आबादी की इन्तिहा पर।
2. मुराद इससे ग़ालिबन समुद्र है, कि उसका रंग अक्सर जगह काला है। और समुद्र में अगरचे हक़ीक़त में ग़ुरूब नहीं होता लेकिन जहाँ समुद्र से आगे निगाह न जाती हो तो देखने में समुद्र ही में ग़ुरूब होता हुआ मालूम होता है।
3. यानी पूरब की दिशा में आबादी की इन्तिहा पर।
4. यानी वहाँ एक ऐसी क़ौम आबाद थी।
5. बज़ाहिर यह मतलब मालूम होता है कि वे लोग मकान वग़ैरह बनाना न जानते थे कि सूरज की गर्मी और धूप से पनाह ले सकें।
6. यानी बोली अलग होने की वजह से तो बात नहीं समझते और जंगली और कम-समझ होने की वजह से समझने के लगभग भी नहीं पहुँचते, वरना समझदार आदमी इशारों और हालात से कुछ क़रीब-क़रीब समझ लेता है।

तरक्ना बअ्-ज़हुम् यौमइज़िंय्यमूजु फ़ी बअ्ज़िंव्-व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-जमअ्नाहुम् जम्आ़ **(99)** व अ़रज़्ना जहन्न-म यौमइज़िल्-लिल्काफ़िरी-न अ़र्ज़ा **(100)** अल्लज़ी-न कानत् अअ्युनुहुम् फ़ी ग़िताइन् अ़न् ज़िक्री व कानू ला यस्ततीअू-न सम्आ़ **(101)** ❖

अ-फ़-हसिबल्लज़ी-न क-फ़रू अंय्यत्तख़िज़ू अ़िबादी मिन् दूनी औलिया-अ, इन्ना अअ्तद्ना जहन्न-म लिल्काफ़िरी-न नुज़ुला **(102)** क़ुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल्-अख़्सरी-न अअ्माला **(103)** अल्लज़ी-न ज़ल्-ल सअ्युहुम् फ़िल्- हयातिद्दुन्या व हुम् यह्सबू-न अन्नहुम् युह्सिनू-न सुन्आ़ **(104)** उलाइ-कल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही फ़-हबितत् अअ्मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल्-क़ियामति वज़्ना **(105)** ज़ालि-क जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा क-फ़रू वत्त-ख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़ुवा **(106)** इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल्-फ़िर्दौसि नुज़ुला **(107)**

وعد ربي جعله دكاء وكان وعد ربي حقا ۝ وتركنا
بعضهم يومئذ يموج في بعض ونفخ في الصور فجمعنهم
جمعا ۝ وعرضنا جهنم يومئذ للكفرين عرضا ۝ الذين
كانت اعينهم في غطاء عن ذكري وكانوا لا يستطيعون
سمعا ۝ افحسب الذين كفروا ان يتخذوا عبادي من
دوني اولياء انا اعتدنا جهنم للكفرين نزلا ۝ قل هل
ننبئكم بالاخسرين اعمالا ۝ الذين ضل سعيهم في
الحيوة الدنيا وهم يحسبون انهم يحسنون صنعا ۝ اولئك
الذين كفروا بايت ربهم ولقائه فحبطت اعمالهم فلا نقيم
لهم يوم القيمة وزنا ۝ ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا
واتخذوا ايتي ورسلي هزوا ۝ ان الذين امنوا وعملوا الصلحت
كانت لهم جنت الفردوس نزلا ۝ خلدين فيها لا يبغون
عنها حولا ۝ قل لو كان البحر مدادا لكلمت ربي لنفد البحر
قبل ان تنفد كلمت ربي ولو جئنا بمثله مددا ۝ قل انما انا
بشر مثلكم يوحى الي انما الهكم اله واحد فمن كان يرجوا لقاء
ربه فليعمل عملا صالحا ولا يشرك بعبادة ربه احدا ۝

ख़ालिदी-न फ़ीहा ला यब्ग़ू-न अ़न्हा हि-वला **(108)** क़ुल् लौ कानल्-बह्रु मिदादल् लि-कलिमाति रब्बी ल-नफ़िदल्-बह्रु क़ब्-ल अन् तन्फ़-द कलिमातु रब्बी व लौ जिअ्ना बिमिस्लिही म-ददा **(109)** क़ुल् इन्नमा अ-न ब-शरुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़-मन् का-न यर्जू लिक़ा-अ रब्बिही फ़ल्यअ्मल् अ़-मलन् सालिहंव्-व ला युश्रिक् बिअ़िबादति रब्बिही अ-हदा **(110)** ❖

जिस वक़्त मेरे रब का वायदा आएगा, (यानी इसके फ़ना करने का वक़्त आएगा) तो इसको ढाकर (ज़मीन के) बराबर कर देगा। और मेरे परवर्दिगार का (हर) वायदा सच्चा है। **(98)** और हम उस दिन उनकी यह हालत करेंगे कि एक में एक गड्-मड् हो जाएँगे,[1] और सूर फुँका जाएगा, फिर हम सबको (एक-एक करके) जमा कर लेंगे। **(99)** और दोज़ख़ को उस दिन काफ़िरों के सामने पेश कर देंगे। **(100)** जिनकी आँखों पर (दुनिया में) हमारी याद से पर्दा पड़ा हुआ था और वे सुन भी न सकते थे।[2] **(101)** ❖

सो क्या फिर भी इन काफ़िरों का ख़्याल है कि मुझको छोड़कर मेरे बन्दों को अपना करता-धरता (यानी माबूद और हाजत पूरी करने वाला) क़रार दें। हमने (तो) काफ़िरों की दावत के लिए दोज़ख़ को तैयार कर रखा है।[3] **(102)** आप (उनसे) कहिए कि क्या हम तुमको ऐसे लोग बताएँ जो आमाल के एतिबार से बिलकुल घाटे में हैं। **(103)** ये वे लोग हैं जिनकी दुनिया में की-कराई मेहनत सब गई गुज़री हुई और वे (जहालत की वजह से) इस ख़्याल में हैं कि वे अच्छा काम कर रहे हैं। **(104)** ये वे लोग हैं जो अपने रब की आयतों (यानी अल्लाह तआला की किताबों) का और उससे (क़ियामत में) मिलने का इनकार कर रहे हैं। सो (इसलिए) उनके सारे काम ग़ारत हो गए, तो क़ियामत के दिन हम उन (के नेक आमाल) का ज़रा भी वज़न क़ायम न करेंगे। **(105)** (बल्कि) उनकी सज़ा वही होगी यानी दोज़ख़, इस वजह से कि उन्होंने कुफ़्र किया था, और (यह कि) मेरी आयतों और पैग़म्बरों का मज़ाक़ बनाया था। **(106)** बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, उनकी मेहमानी के लिए फ़िरदौस (यानी जन्नत) के बाग़ होंगे। **(107)** जिनमें वे हमेशा रहेंगे (न उनको कोई निकालेगा और) न वे वहाँ से कहीं और जाना चाहेंगे। **(108)** आप (उनसे) कह दीजिए कि अगर मेरे रबकी बातें[4] लिखने के लिए समुद्र (का पानी) रोशनाई (की जगह) हो तो मेरे रबकी बातें ख़त्म होने से पहले समुद्र ख़त्म हो जाए, (और बातें घेरे में न आएँ) अगरचे उस (समुद्र) जैसा (एक दूसरा समुद्र उसकी) मदद के लिए हम ले आएँ। **(109)** (और) आप (यूँ भी) कह दीजिए कि मैं तो तुम ही जैसा बशर हूँ, मेरे पास बस यह वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद (बरहक़) एक ही माबूद है, सो जो शख़्स अपने रब से मिलने की आरज़ू रखे तो नेक काम करता रहे और अपने रब की इबादत में किसी को शामिल न करे। **(110)** ❖

1. यानी जब उस दीवार के गिराने का मुक़र्ररा वक़्त आएगा और याजूज-माजूज का वहाँ से निकलना होगा तो उस दिन हम उनकी यह हालत करेंगे कि एक में एक गड्-मड् हो जाएँगे। इस वजह से कि बहुत ज़्यादा होंगे और एकदम से निकल पड़ेंगे।

2. यानी हक़ बात को ज़रा भी समझना न चाहते थे।

3. 'दावत' मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर फ़रमाया।

4. यानी वे कलिमात और इबारतें जो अल्लाह तआला की सिफ़तों और कमालात पर दलालत करती हों और उनसे उनकी ताबीर की जाए।

19 सूरतु मर्‌यम-म 44

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3986 अक्षर, 968 शब्द 98 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

سورة مريم مكية بسم الله الرحمن الرحيم
كهيعص ١ ذكر رحمت ربك عبده زكريا ٢ إذ نادى ربه
نداء خفيا ٣ قال رب إني وهن العظم مني واشتعل الرأس
شيبا ولم أكن بدعائك رب شقيا ٤ وإني خفت الموالي
من ورائي وكانت امرأتي عاقرا فهب لي من لدنك وليا ٥
يرثني ويرث من آل يعقوب واجعله رب رضيا ٦ يا زكريا
إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا ٧
قال رب أنى يكون لي غلام وكانت امرأتي عاقرا وقد بلغت
من الكبر عتيا ٨ قال كذلك قال ربك هو علي هين وقد
خلقتك من قبل ولم تك شيئا ٩ قال رب اجعل لي آية
قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاث ليال سويا ١٠ فخرج على قومه
من المحراب فأوحى إليهم أن سبحوا بكرة وعشيا ١١ يا يحيى
خذ الكتاب بقوة وآتيناه الحكم صبيا ١٢ وحنانا من لدنا
وزكاة وكان تقيا ١٣ وبرا بوالديه ولم يكن جبارا عصيا ١٤ و
سلام عليه يوم ولد ويوم يموت ويوم يبعث حيا ١٥ واذكر
في الكتاب مريم إذ انتبذت من أهلها مكانا شرقيا ١٦ فاتخذت

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

काफ़्-हा-या-अ़ैन्-सॉद् **(1)** ज़िक्रु रह्मति रब्बि-क अ़ब्दहू ज़-करिय्या **(2)** इज़् नादा रब्बहू निदाअन् ख़फ़िय्या **(3)** क़ा-ल रब्बि इन्नी व-हनल्-अ़ज़्मु मिन्नी वश्त-अ़लर्रअ्सु शैबंव्-व लम् अकुम्-बिदुआ़इ-क रब्बि शक़िय्या **(4)** व इन्नी ख़िफ़्तुल्-मवालि-य मिंव्वराई व कानतिम्र-अती आ़क़िरन् फ़-हब् ली मिल्लदुन्-क वलिय्या **(5)** यरिसुनी व यरिसु मिन् आलि यअ़्क़ू-ब, वज्अ़ल्हु रब्बि रज़िय्या **(6)** या ज़-करिय्या इन्ना नुबश्शिरु-क बिग़ुलामि-निस्मुहू यह्या लम् नज्अ़ल्-लहू मिन् क़ब्लु समिय्या **(7)** क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव्-व कानतिम्र-अती आ़क़िरंव्-व क़द् बलग़्तु मिनल्-कि-बरि अ़ितिय्या **(8)** क़ा-ल कज़ालि-क क़ा-ल रब्बु-क हु-व अ़लय्-य हय्यिनुंव्-व क़द् ख़लक़्तु-क मिन् क़ब्लु व लम् तकु शैआ **(9)** क़ा-ल रब्बिज्-अ़ल्-ली आ-यतन्, क़ा-ल आ-यतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स लयालिन् सविय्या **(10)** फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही मिनल्- मिह्राबि फ़औहा इलैहिम् अन् सब्बिहू बुक्र-तंव्-व अ़शिय्या **(11)** या यह्या ख़ुज़िल्- किता-ब बिक़ुव्वतिन्, व आतैनाहुल्-हुक्-म सबिय्या **(12)** व हनानम्-मिल्लदुन्ना व ज़कातन्, व का-न तक़िय्या **(13)** व बर्रम्-बिवालिदैहि व लम् यकुन् जब्बारन् अ़सिय्या **(14)** व सलामुन् अ़लैहि यौ-म वुलि-द व यौ-म यमूतु व यौ-म
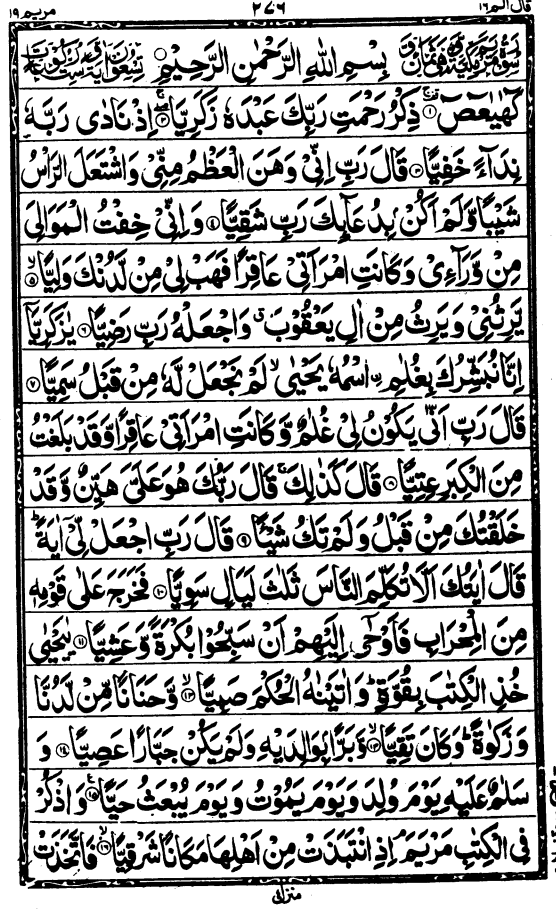
19 सूरः मरियम 44

सूरः मरियम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 98 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[1]काफ़-हा-या-अ़ैन-सॉद। **(1)** यह तज़्किरा है आपके परवर्दिगार के मेहरबानी फ़रमाने का अपने बन्दे ज़करिया पर। **(2)** जबकि उन्होंने अपने परवर्दिगार को पोशीदा तौर पर पुकारा। **(3)** (जिसमें यह) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी हड्डियाँ (बुढ़ापे की वजह से) कमज़ोर हो गईं और सर में बालों की सफ़ेदी फैल गई, और (इससे पहले कभी मैं) आपसे माँगने में ऐ मेरे रब मैं नाकाम नहीं रहा हूँ। **(4)** और मैं अपने बाद (अपने) रिश्तेदारों (की तरफ़) से अन्देशा रखता हूँ और मेरी बीवी बाँझ है, (इस सूरत में) आप मुझको ख़ास अपने पास से एक ऐसा वारिस (यानी बेटा) दे दीजिए। **(5)** कि वह (मेरे ख़ास उलूम में) मेरा वारिस बने, और (मेरे दादा) याक़ूब के ख़ानदान का वारिस बने,[2] और उसको ऐ मेरे रब! (अपना) पसन्दीदा बनाइए।[3] **(6)** ऐ ज़करिया! हम तुमको एक फ़रज़न्द की ख़ुशख़बरी देते हैं, जिसका नाम यह्या होगा कि इससे पहले हमने किसी को उस जैसी सिफ़त वाला न बनाया होगा।[4] **(7)** (ज़करिया अ़लैहिस्सलाम ने) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरे औलाद किस तौर पर होगी, हालाँकि मेरी बीवी बाँझ है और (इधर) मैं बुढ़ापे के इन्तिहाई दर्जे को पहुँच चुका हूँ। **(8)** इरशाद हुआ कि (मौजूदा हालत) यूँ ही (रहेगी, और फिर औलाद होगी। ऐ ज़करिया!) तुम्हारे रब का क़ौल है कि यह (बात) मुझको आसान है और मैंने तुमको पैदा किया हालाँकि तुम (पैदाइश से पहले) कुछ भी न थे।[5] **(9)** (जब ज़करिया अ़लैहिस्सलाम ने) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा दीजिए, इरशाद हुआ कि तुम्हारी (वह) निशानी यह है कि तुम तीन रात (और तीन दिन तक) आदमियों से बात न कर सकोगे, (हालाँकि तन्दुरुस्त होगे)। **(10)** पस हुजरे में से अपनी क़ौम के पास निकले और उनको इशारे से फ़रमाया कि तुम लोग सुबह और शाम अल्लाह की पाकी बयान किया करो। **(11)** ऐ यह्या! किताब को मज़बूत होकर लो,[6] और हमने उनको (उनके) लड़कपन ही में (दीन की) समझ **(12)** और ख़ास अपने पास से दिल की नरमी और (अख़्लाक़ की) पाकीज़गी अ़ता फ़रमाई थी,[7] और वह बड़े परहेज़गार थे। **(13)** और अपने माँ-बाप के ख़िदमत-गुज़ार थे, और वह (मख़्लूक़ के साथ) सरकशी करने वाले (या हक़ तआ़ला की) नाफ़रमानी करने वाले न थे।[8] **(14)** और उनको (अल्लाह तआ़ला का) सलाम पहुँचे जिस दिन कि वह पैदा हुए, और जिस दिन कि वह इन्तिक़ाल करेंगे, और जिस दिन (क़ियामत में) ज़िन्दा होकर उठाए जाएँगे।[9] **(15)** ❖

और (ऐ मुहम्मद!) इस किताब में मरियम का भी ज़िक्र कीजिए, जबकि वह अपने घर वालों से अलग

---

1. इस सूरः का ख़ुलासा तीन मज़मून हैं- अव्वल तौहीद का साबित करना, दूसरे नुबुव्वत का साबित करना, तीसरे आख़िरत के मुताल्लिक़ बयान।
2. यानी पिछले और मौजूदा उलूम उसको हासिल हों।
3. यानी आ़लिम भी हो और आ़मिल भी।
4. यानी जिस इल्म व अ़मल की तुम दुआ़ करते हो वह तो उस फ़रज़न्द को ज़रूर ही अ़ता करेंगे। और ज़्यादा यह कि कुछ ख़ास सिफ़तें भी इनायत की जाएँगी।
5. जब मअ़दूम (यानी जो चीज़ मौजूद न हो, नापैद हो) को मौजूद करना आसान है तो एक मौजूद से दूसरा मौजूद पैदा कर देना क्या मुश्किल है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 554 पर)**

युब्अ़सु हय्या (15) ❖

वज़्कुर् फ़िल्किताबि मर्‌य-म ✣ इज़िन्त-बज़त् मिन् अह्‌लिहा मकानन् शर्क़िय्या (16) फ़त्त-ख़ज़त् मिन् दूनिहिम् हिजाबन्, फ़-अर्सल्ना इलैहा रू-हना फ़-तमस्स-ल लहा ब-शरन् सविय्या (17) क़ालत् इन्नी अऊ़ज़ु बिर्रह्मानि मिन्-क इन् कुन्-त तक़िय्या (18) क़ा-ल इन्नमा अ-न रसूलु रब्बिकि लि-अ-ह-ब लकि ग़ुलामन् ज़किय्या (19) क़ालत् अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुंव्-व लम् अकु बग़िय्या ◆ (20) क़ा-ल कज़ालिकि क़ा-ल रब्बुकि हु-व अ़लय्-य हय्यिनुन् व लिनज्अ़-लहू आयतल्-लिन्नासि व रह्म-तम्-मिन्ना व का-न अम्रम्-मक़्ज़िय्या (21) फ़-ह-मलत्हु फ़न्त-बज़त् बिही मकानन् क़सिय्या (22) फ़-अजा-अहल्-मख़ाज़ु इला जिज़्‌अ़िन्-नख़्लति क़ालत् यालैतनी मित्तु क़ब्-ल हाज़ा व कुन्तु नस्यम्-मन्सिय्या (23) फ़नादाहा मिन् तह्तिहा अल्ला तह्ज़नी क़द् ज-अ़-ल रब्बुकि तह्तकि सरिय्या (24) व हुज़्ज़ी इलैकि बिजिज़्‌अ़िन्-नख़्लति तुसाक़ित् अ़लैकि रु-तबन् जनिय्या (25) फ़कुली वश्रबी व क़र्री अ़ैनन् फ़-इम्मा त-रयिन्-न मिनल् ब-शरि अ-हदन् फ़क़ूली इन्नी नज़र्तु लिर्रह्मानि सौमन् फ़-लन् उकल्लिमल्- यौ-म इन्सिय्या (26) फ़-अतत् बिही क़ौमहा तह्मिलुहू, क़ालू या मर्‌यमु ल-क़द् जिअ्‌ति शैअन् फ़रिय्या (27) या उख़्-त हारू-न मा का-न अबूकिम्र-अ सौइंव्-व मा कानत् उम्मुकि बग़िय्या (28) फ़-अशारत् इलैहि, क़ालू कै-फ़ नुकल्लिमु मन् का-न फ़िल्मह्दि सबिय्या (29) क़ा-ल इन्नी अ़ब्दुल्लाहि, आतानियल्-किता-ब व ज-अ़-लनी नबिय्या (30) व ज-अ़-लनी मुबा-रकन् ऐ-न मा कुन्तु व औसानी बिस्सलाति वज़्ज़काति

قال الم ١٦ — مريم ١٩

مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
سَوِيًّا ۝ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝ قَالَ اِنَّمَآ
اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ
وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ
عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا
مَّقْضِيًّا ۝ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝ فَاَجَآءَهَا
الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا
وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ
رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝ وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ
رُطَبًا جَنِيًّا ۝ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ
الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ
الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۝ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۗ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ
شَيْـًٔا فَرِيًّا ۝ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ
اُمُّكِ بَغِيًّا ۝ فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۗ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ
صَبِيًّا ۝ قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۗ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ۝
وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا

منزل

(होकर) एक ऐसे मकान में जो पूरब की जानिब था (नहाने के लिए) गईं। **(16)** फिर उन (घर वाले) लोगों के सामने उन्होंने पर्दा डाल लिया, पस (इस हालत में) हमने उनके पास अपने फ़रिश्ते (जिबराईल अ़लैहिस्सलाम) को भेजा, और वह उनके सामने एक पूरा आदमी बनकर ज़ाहिर हुआ। **(17)** कहने लगीं कि मैं तुझसे (अपने खुदा-ए-) रहमान की पनाह माँगती हूँ अगर तू (कुछ) खुदा से डरने वाला है (तो यहाँ से हट जाएगा)। **(18)** फ़रिश्ते ने कहा कि मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ (फ़रिश्ता) हूँ ताकि तुमको एक पाकीज़ा लड़का दूँ।[1] **(19)** वह (ताज्जुब से) कहने लगीं कि (भला) मेरे लड़का किस तरह हो जाएगा हालाँकि मुझको किसी इनसान ने हाथ तक नहीं लगाया, और न मैं बदकार हूँ। ◆ **(20)** फ़रिश्ते ने कहा कि यूँ ही (औलाद हो जाएगी) तुम्हारे रब ने इरशाद फ़रमाया है कि यह (बात) मुझको आसान है। और (इस तौर पर) इसलिए पैदा करेंगे ताकि हम उस (लड़के) को लोगों के लिए (कुदरत की) एक निशानी बनाएँ, और रहमत (का सबब) बनाएँ, और यह एक तयशुदा बात है (जो ज़रूर होगी)। **(21)** फिर उनके पेट में वह (लड़का) रह गया, फिर उस (हमल) को लिए हुए (अपने घर से) किसी दूर जगह में अलग चली गईं। **(22)** फिर पैदाइश के दर्द के मारे खजूर के पेड़ की तरफ़ आईं,[2] (घबरा कर) कहने लगीं काश! मैं इस (हालत) से पहले ही मर गई होती, और ऐसी नेस्तनाबूद हो जाती कि किसी को याद भी न रहती। **(23)** फिर जिबराईल ने उनके (उस मकान के) नीचे से उनको पुकारा कि तुम ग़मज़दा मत हो,[3] तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे के हिस्से में एक नहर पैदा कर दी है। **(24)** और इस खजूर के तने को (पकड़कर) अपनी तरफ़ को हिलाओ इससे तुमपर तरोताज़ा खजूरें झड़ेंगी। **(25)** फिर (उस फल को) खाओ और (वह पानी) पियो, और आँखें ठन्डी करो।[4] फिर अगर तुम आदमियों में से किसी को भी (एतिराज़ करता) देखो तो कह देना कि मैंने तो अल्लाह के वास्ते रोज़े की मन्नत माँग रखी है, सो आज मैं किसी आदमी से नहीं बोलूँगी।[5] **(26)** फिर वह उनको गोद में लिए हुए अपनी क़ौम के पास आईं, लोगों ने कहा कि ऐ मरियम! तुमने बड़े ग़ज़ब का काम किया।[6] **(27)** ऐ हारून की बहन! तुम्हारे बाप कोई बुरे आदमी न थे और न तुम्हारी माँ बदकार थीं। **(28)** पस मरियम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा कर दिया। वे लोग कहने लगे कि भला हम ऐसे शख़्स से क्योंकर बातें करें जो अभी गोद में बच्चा ही है। **(29)** वह (बच्चा खुद ही) बोल उठा कि मैं अल्लाह का (ख़ास) बन्दा हूँ, उसने मुझको किताब (यानी इन्जील) दी,[7] और उसने मुझको नबी बनाया। (यानी बना देगा)। **(30)** और मुझको बरकत वाला बनाया,[8] मैं जहाँ कहीं भी हूँ। और उसने मुझको नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक मैं (दुनिया में) ज़िन्दा रहूँ। **(31)** और मुझको मेरी माँ का

(पृष्ठ 552 का शेष) यह सब इरशाद उम्मीद को क़ुव्वत देने और मज़बूत करने के लिए था न कि शुब्हे को ख़त्म करने के लिए, क्योंकि ज़करिया अ़लैहिस्सलाम को कोई शुब्हा न था।

6. यानी तौरात कि उस वक़्त वही शरीअ़त की किताब थी, और इन्जील बाद में नाज़िल हुई।

7. 'हुक्म' में इल्म की तरफ़ और 'हन्नान' और 'ज़कात' में अख़्लाक़ की तरफ़ इशारा हो गया।

8. इसमें अल्लाह और बन्दों दोनों के हुक़ूक़ की तरफ़ इशारा हो गया।

9. वह अल्लाह के नज़दीक ऐसे ख़ूबसूरत और सम्मानित थे कि उनके हक़ में अल्लाह की तरफ़ से यह इरशाद होता है कि उनको अल्लाह तआ़ला का सलाम पहुँचे जिस दिन कि वह पैदा हुए, और जिस दिन वह इन्तिक़ाल करेंगे, और जिस दिन क़ियामत में ज़िन्दा होकर उठाए जाएँगे।

1. यानी तुम्हारे मुँह में या गिरेबान में फूँक मार दूँ कि उसके असर से अल्लाह के हुक्म से हमल (गर्भ) रह जाएगा और लड़का पैदा होगा। हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम ने पहली बार में अगरचे फ़रिश्ते को नहीं पहचाना मगर उनकी तक़रीर सुनकर अल्लाह वाली होने की वजह से हासिल ख़ास समझ से यक़ीन आ गया, पस यह शुब्हा नहीं हो सकता कि हज़रत मरियम ने ख़ाली दावा कैसे क़बूल कर लिया।

2. ताकि उसके सहारे बैठें उठें। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 556 पर)**

मा दुम्तु हय्या (31) व बर्रम् बिवालि-दती व लम् यज्अ़ल्नी जब्बारन् शक़िय्या (32) वस्सलामु अ़लय्-य यौ-म वुलित्तु व यौ-म अमूतु व यौ-म उब्अ़सु हय्या (33) ज़ालि-क अ़ीसब्नु मर्-य-म क़ौलल्-हक़्क़िल्लज़ी फ़ीहि यम्तरून (34) मा का-न लिल्लाहि अंय्यत्तख़ि-ज़ मिंव्व-लदिन् सुब्हानहू, इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून (35) व इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ़्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (36) फ़ख़्त-लफ़ल्-अह्ज़ाबु मिम्-बैनिहिम् फ़-वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-मश्हदि यौमिन् अ़ज़ीम (37) अस्मिअ़् बिहिम् व अब्सिर् यौ-म यअ्तूनना लाकिनिज़्ज़ालिमूनल्- यौ-म फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (38) व अन्ज़िर्हुम् यौमल्-हस्रति इज़् क़ुज़ियल्-अम्रु ✣ व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिंव्-व हुम् ला युअ्मिनून (39) इन्ना नह्नु नरिसुल्-अर्-ज़ व मन् अ़लैहा व इलैना युर्जअून (40) ❖

वज़्कुर् फ़िल्किताबि इब्राही-म, इन्नहू का-न सिद्दीक़न् नबिय्या (41) इज़् क़ा-ल लिअबीहि या अ-बति लि-म तअ्बुदु मा ला यस्मअ़ु व ला युब्सिरु व ला युग़्नी अ़न्-क शैआ (42) या अ-बति इन्नी क़द् जा-अनी मिनल्-अ़िल्मि मा लम् यअ्ति-क फ़त्तबिअ़्नी अह्दि-क सिरातन् सविय्या (43) या अ-बति ला तअ़्बुदिश्शैता-न, इन्नश्शैता-न का-न लिर्रह्मानि अ़सिय्या (44) या अ-बति इन्नी अख़ाफ़ु अंय्य-मस्स-क अ़ज़ाबुम्-मिनर्रह्मानि फ़-तकू-न लिश्शैतानि वलिय्या (45) क़ा-ल अरागिबुन् अन्-त अ़न् आलि-हती या इब्राहीमु ल-इल्लम् तन्तहि ल-अर्जुमन्न-क वह्जुर्नी मलिय्या (46) क़ा-ल सलामुन् अ़लै-क

قال الم ١٦ ٣٧٨ مريم ١٩

دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾ وَالسَّلَامُ
عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذَٰلِكَ عِيسَى
ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ
يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَانَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ﴿٣٥﴾ وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٣٦﴾
فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَشْهَدِ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٧﴾ أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ
الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٨﴾ وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ
الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ
الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ
إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ﴿٤١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ
مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ
جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾
يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾
يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِنَ الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ
لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ لَئِنْ

منزل

ख़िदमत करने वाला बनाया और उसने मुझको सरकश बदबख़्त नहीं बनाया। **(32)** और मुझपर (अल्लाह की जानिब से) सलाम है, जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन इन्तिक़ाल करूँगा, और जिस दिन (क़ियामत में) ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। **(33)** यह हैं ईसा मरियम के बेटे,[1] (मैं बिलकुल) सच्ची बात (कह रहा हूँ) जिसमें यह (कमी-बेशी करने वाले) लोग झगड़ रहे हैं। **(34)** अल्लाह तआ़ला की यह शान नहीं है कि वह (किसी को) औलाद बनाए, वह (बिलकुल) पाक है। वह जब कोई काम करना चाहता है तो बस उसको इरशाद फ़रमा देता है कि हो जा, सो वह हो जाता है। **(35)** और बेशक अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, सो (सिर्फ़) उसकी इबादत करो, यही (दीन का) सीधा रास्ता है।[2] **(36)** सो (फिर भी) मुख़्तलिफ़ गिरोहों ने (इस बारे में) आपस में इख़्तिलाफ़ डाल लिया,[3] सो उन काफ़िरों के लिए एक बड़े दिन के आने से एक बड़ी ख़राबी (होने वाली) है।[4] **(37)** जिस दिन ये लोग (हिसाब व बदले के लिए) हमारे पास आएँगे, कैसे कुछ सुनने और देखने वाले हो जाएँगे, लेकिन ये ज़ालिम आज (दुनिया में कैसी) खुली ग़लती में हैं। **(38)** और आप उन लोगों को हसरत के दिन से डराइए जबकि (जन्नत व दोज़ख़ का आख़िरी) फ़ैसला कर दिया जाएगा, और वे लोग (आज दुनिया में) ग़फ़लत में हैं, और वे लोग ईमान नहीं लाते। **(39)** (लेकिन आख़िर एक दिन मरेंगे और) तमाम ज़मीन और ज़मीन के रहने वालों के हम ही वारिस (यानी आख़िर मालिक) रह जाएँगे, और ये सब हमारे पास ही लौटाए जाएँगे। **(40)** ❖

और इस किताब में इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) का (क़िस्सा) ज़िक्र कीजिए। वह बड़े रास्ती वाले (और) पैग़म्बर थे। **(41)** जबकि उन्होंने अपने बाप से (जो कि मुश्रिक था) कहा कि ऐ मेरे बाप! तुम ऐसी चीज़ की क्यों इबादत करते हो जो न कुछ सुने और न कुछ देखे और न तुम्हारे कुछ काम आ सके।[5] **(42)** ऐ मेरे बाप! मेरे पास ऐसा इल्म पहुँचा है जो तुम्हारे पास नहीं आया,[6] तो तुम मेरे कहने पर चलो मैं तुमको सीधा रास्ता बताऊँगा।[7] **(43)** ऐ मेरे बाप! तुम शैतान की परस्तिश मत करो, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमानी करने वाला है। **(44)** ऐ मेरे बाप! मैं अन्देशा करता हूँ कि तुमपर रहमान की तरफ़ से कोई अ़ज़ाब (न) आ पड़े, फिर तुम (अ़ज़ाब में) शैतान के साथी हो जाओ।[8] **(45)** (बाप ने) जवाब दिया कि क्या तुम मेरे माबूदों

(पृष्ठ 554 का शेष) 3. हज़रत जिबराईल उनके अदब व एहतिराम की वजह से सामने नहीं गए बल्कि जिस मक़ाम पर हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम थीं, उससे नीचे के मक़ाम में आड़ में आए।

4. यानी बच्चे के देखने से और खाने-पीने से, और अल्लाह के यहाँ मक़बूल होने की निशानी से ख़ुश रहो।

5. बस तुम इतना जवाब देकर बेफ़िक्र हो जाना, अल्लाह तआ़ला इस मुबारक बच्चे को मोजिज़े के तौर पर बोलता कर देगा, जिससे तुम्हारे पाकदामन होने की दलील सामने आ जाएगी। ग़रज़ हर ग़म का इलाज हो गया।

6. यानी 'अल्लाह अपनी पनाह में रखे' बदकारी की।

7. यानी अगरचे आगे चलकर देगा मगर यक़ीनी होने की वजह से ऐसा ही है कि जैसे दे दी।

8. यानी मुझसे मख़्लूक़ को दीन का नफ़ा पहुँचेगा।

1. ईसा अ़लैहिस्सलाम के आयत में ज़िक्र हुए हालात व औसाफ़ के मजमूए से मरियम अ़लैहस्सलाम की पाकदामनी और बुज़ुर्गी साबित हो गई जो मक़सूद था इस ख़िलाफ़े आ़दत बोलने से। जिसमें सबसे बढ़कर नुबुव्वत की सिफ़त पर दलालत है, क्योंकि नुबुव्वत के साथ नसब की ख़राबी जो कि आला दर्जे का शर्म का सबब है, जमा नहीं हो सकती, और नुबुव्वत का मिलना इस ख़िलाफ़े आ़दत बोलने से साबित होता है, क्योंकि बेगुनाह से मोजिज़ों यानी ख़िलाफ़े आ़दत चीज़ों का ज़ाहिर होना मक़बूलियत की दलील है, और मक़बूल होना झूठा होने के मनाफ़ी है।

2. यानी ख़ालिस ख़ुदा की इबादत करना, या तौहीद इख़्तियार करना दीन का सीधा रास्ता है।

3. यानी तौहीद का इनकार करके तरह-तरह के मज़ाहिब ईजाद कर लिए।

4. मुराद इससे क़ियामत का दिन है कि सख़्ती और लम्बा होने के एतिबार से बड़ा होगा।

5. मुराद बुत हैं। हालाँकि अगर कोई देखता-सुनता कुछ काम आता भी हो मगर उसका वजूद अपनी ज़ात में मुस्तक़िल न हो तब भी इबादत के लायक़ नहीं, कहाँ यह कि इन सिफ़तों से भी ख़ाली हो, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 558 पर)**

स-अस्तग़्फ़िरु ल-क रब्बी, इन्नहू का-न बी हफ़िय्या (47) व अअ्तज़िलुकुम् व मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि व अद्अू रब्बी अ़सा अल्ला अकू-न बिदुआ-इ रब्बी शक़िय्या (48) फ़-लम्मअ्-त-ज़-लहुम् व मा यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब, व कुल्लन् जअ़ल्ना नबिय्या (49) व व-हब्ना लहुम् मिर्रह्मतिना व जअ़ल्ना लहुम् लिसा-न सिद्क़िन् अ़लिय्या (50) ❖

वज़्कुर् फ़िल्किताबि मूसा इन्नहू का-न मुख़्ल-संव्-व का-न रसूलन् नबिय्या (51) व नादैनाहु मिन् जानिबित्-तूरिल्-ऐ-मनि व क़र्रब्नाहु नजिय्या (52) व व-हब्ना लहू मिर्रह्मतिना अख़ाहु हारू-न नबिय्या (53) वज़्कुर् फ़िल्किताबि इस्माअ़ी-ल इन्नहू का-न सादिक़ल्-वअ्दि व का-न रसूलन् नबिय्या (54) व का-न यअ्मुरु अह्लहू बिस्सलाति वज़्ज़काति व का-न अ़िन्-द रब्बिही मर्ज़िय्या (55) वज़्कुर् फ़िल्किताबि इद्री-स इन्नहू का-न सिद्दीक़न् नबिय्या (56) व रफ़अ्नाहु मकानन् अ़लिय्या (57) उलाइ-कल्लज़ी-न अन्-अ़मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्-नबिय्यी-न मिन् ज़ुर्रिय्यति आद-म, व मिम्-मन् हमल्ना म-अ़ नूहिंव्-व मिन् ज़ुर्रिय्यति इब्राही-म व इस्राई-ल, व मिम्-मन् हैदना वज्तबैना, इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुर्रह्मानि ख़र्रू सुज्जदंव्-व बुकिय्या ☐ (58) फ़-ख़-ल-फ़ मिम्-बअ्दिहिम् ख़ल्फ़ुन् अज़ाअुस्सला-त वत्त-बअुश्श-हवाति फ़सौ-फ़ यल्क़ौ-न ग़य्या (59) इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त व ला युज़्लमू-न शैआ (60)

لم تنته لأرجمنك واهجرني مليا ۝ قال سلام عليك سأستغفر
لك ربي إنه كان بي حفيا ۝ وأعتزلكم وما تدعون من
دون الله وأدعوا ربي عسى ألا أكون بدعاء ربي شقيا ۝
فلما اعتزلهم وما يعبدون من دون الله وهبنا له إسحق
ويعقوب وكلا جعلنا نبيا ۝ ووهبنا لهم من رحمتنا و
جعلنا لهم لسان صدق عليا ۝ واذكر في الكتب موسى
إنه كان مخلصا وكان رسولا نبيا ۝ ونادينه من جانب
الطور الأيمن وقربنه نجيا ۝ ووهبنا له من رحمتنا أخاه
هرون نبيا ۝ واذكر في الكتب إسمعيل إنه كان صادق الوعد
وكان رسولا نبيا ۝ وكان يأمر أهله بالصلوة والزكوة وكان
عند ربه مرضيا ۝ واذكر في الكتب إدريس إنه كان صديقا
نبيا ۝ ورفعنه مكانا عليا ۝ أولئك الذين أنعم الله عليهم
من النبين من ذرية ادم وممن حملنا مع نوح ومن
ذرية إبرهيم وإسرائيل وممن هدينا واجتبينا إذا تتلى
عليهم ايت الرحمن خروا سجدا وبكيا ۝ فخلف من بعدهم
خلف أضاعوا الصلوة واتبعوا الشهوت فسوف يلقون غيا ۝

से फिरे हुए हो ऐ इब्राहीम! अगर तुम बाज़ न आए तो मैं ज़रूर तुमको (पत्थरों से मारकर) संगसार कर दूँगा, और हमेशा-हमेशा के लिए मुझसे अलग रहो। **(46)** (इब्राहीम ने) कहा मेरा सलाम लो, अब मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग़्फ़िरत की दरख़्वास्त करूँगा, बेशक वह मुझपर बहुत मेहरबान है। **(47)** और मैं तुम लोगों से और जिनकी तुम ख़ुदा को छोड़कर इबादत कर रहे हो उनसे किनारा करता हूँ, और (अलग होकर इत्मीनान से) अपने रबकी इबादत करूँगा, उम्मीद है कि अपने रब की इबादत करके महरूम न रहूँगा।[1] **(48)** पस जब उन लोगों से और जिनकी वे ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते थे उनसे अलग हो गए (तो) हमने उनको इसहाक़ (बेटा) और याक़ूब (पोता) अ़ता फ़रमाया, और हमने (उन दोनों में से) हर एक को नबी बनाया।[2] **(49)** और उन सबको हमने अपनी रहमत का हिस्सा दिया और (आगे नस्लों में) हमने उनका नाम नेक और बुलन्द किया। **(50)** ❖

और इस किताब में मूसा का भी ज़िक्र कीजिए,[3] बेशक वह (अल्लाह तआ़ला के) ख़ास किए हुए (बन्दे) थे, और वह रसूल भी थे, नबी भी थे। **(51)** और हमने उनको तूर (पहाड़) की दाहिनी जानिब से आवाज़ दी, और हमने उनको राज़ की बातें करने के लिए मुक़र्रब बनाया। **(52)** और हमने उनको अपनी रहमत से उनके भाई हारून को नबी बनाकर अ़ता किया।[4] **(53)** और इस किताब में इसमाईल का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह वायदे के (बड़े) सच्चे थे, और वह रसूल भी थे, नबी भी थे।[5] **(54)** और अपने मुताल्लिक़ीन को नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते रहते थे, और वह अपने रब के नज़दीक पसन्दीदा थे। **(55)** और इस किताब में इदरीस (अ़लैहिस्सलाम) का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह बड़े रास्ती वाले नबी थे। **(56)** और हमने उनको (कमालात में) बुलन्द रुतबे तक पहुँचाया। **(57)** ये वे लोग हैं[6] जिनपर अल्लाह तआ़ला ने (ख़ास) इनाम फ़रमाया है (दूसरे) अम्बिया में से कि आदम की नस्ल से और उन लोगों (की नस्ल) से जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था, और इब्राहीम और याक़ूब की नस्ल से और उन लोगों में से जिनको हमने हिदायत फ़रमाई और उनको मक़बूल बनाया, जब उनके सामने (अल्लाह) रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं तो सज्दा करते हुए और रोते हुए (ज़मीन पर) गिर जाते थे।[7] ❑ **(58)** फिर उनके बाद (बाज़े) ऐसे ना-ख़लफ़ "यानी नालायक़ और नाफ़रमान" पैदा हुए जिन्होंने नमाज़ को बरबाद किया और (नफ़्सानी नाजायज़) ख़्वाहिशों की पैरवी की,[8] सो ये लोग जल्द ही (आख़िरत में) ख़राबी देखेंगे। **(59)** हाँ मगर जिसने तौबा कर ली और

(पृष्ठ 556 का शेष) वह तो और ज़्यादा इबादत के लायक़ न होगा।

6. मुराद इससे वह्य है जिसमें ग़लती का शुब्हा हो ही नहीं सकता।

7. और वह तौहीद है।

8. यानी जब इताअ़त में उसका साथ दोगे तो सज़ा और अन्जाम में भी उसी का साथ होगा।

1. इस गुफ़्तगू के बाद उनसे इस तरह अलग हुए कि मुल्क शाम की तरफ़ हिजरत करके चले गए।

2. इसमाईल अ़लैहिस्सलाम का इस जगह ज़िक्र न फ़रमाना इस वजह से है कि अव्वल तो वह औरों से पहले अ़ता हो चुके थे, बाद वालों के ज़िक्र से पहले वाले का ज़िक्र ख़ुद ही समझ में आ जाता है। दूसरे उनका ज़िक्र मुस्तक़िल तौर पर आगे क़रीब ही आने वाला है। तीसरे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के ज़िक्र से जैसा कि अ़रब वालों की दिलजोई हुई इसी तरह इसहाक़ व याक़ूब अ़लैहिमस्सलाम के ज़िक्र से अहले किताब की दिलजोई मुनासिब है, और इसी नुक्ते की वजह से इसके साथ ही मूसा अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र आता है। फिर उसके बाद इसमाईल अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र आएगा।

3. यानी लोगों को सुनाइए वरना किताब में ज़िक्र करने वाला तो हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला है।

4. यानी उनकी दरख़्वास्त के मुताबिक़ उनको नबी बनाया कि उनकी मदद करें।

5. रसूल वह है कि जिनके पास वह भेजा गया है उनको नई शरीअ़त पहुँचाए। और नबी वह है जिसपर वह्य आती हो, चाहे नई शरीअ़त की तब्लीग़ करे या पहली और पुरानी शरीअ़त की। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 560 पर)**

जन्नाति अ़द्‌नि-निल्लती व-अ़दर्रह्मानु अ़िबादहू बिल्‌ग़ैबि इन्नहू का-न वअ़्दुहू मअ्‌तिय्या (61) ला यस्‌मअ़ू-न फ़ीहा लग्‌वन्‌ इल्ला सलामन्‌, व लहुम्‌ रिज़्क़ुहुम्‌ फ़ीहा बुक्र-तंव्‌-व अ़शिय्या (62) तिल्कल्‌-जन्नतुल्लती नूरिसु मिन्‌ अ़िबादिना मन्‌ का-न तक़िय्या (63) व मा न-तनज़्ज़लु इल्ला बिअम्‍रि रब्बि-क लहू मा बै-न ऐदीना व मा ख़ल्फ़ना व मा बै-न ज़ालि-क व मा का-न रब्बु-क नसिय्या (64) रब्बुस्‌- समावाति वल्‌अर्ज़ि व मा बैनहुमा फ़अ़्बुद्‌हु वस्तबिर्‌ लिअ़िबा-दतिही, हल्‌ तअ़्लमु लहू समिय्या (65) ❖

व यक़ूलुल्‌-इन्सानु अ-इज़ा मा मित्तु लसौ-फ़ उख़्‌रजु हय्या (66) अ-व ला यज़्कुरुल्‌-इन्सानु अन्ना ख़लक़्‌नाहु मिन्‌ क़ब्लु व लम्‌ यकु शैआ (67) फ़-व रब्बि-क लनह्‌शुरन्नहुम्‌ वश्शयाती-न सुम्‌-म लनुह्ज़िरन्नहुम्‌ हौ-ल जहन्न-म जिसिय्या (68) सुम्‌-म ल-नन्ज़िअ़न्‌-न मिन्‌ कुल्लि शी-अ़तिन्‌ अय्युहुम्‌ अशद्‌दु अ़लर्रह्मानि अ़ितिय्या (69) सुम्‌-म ल-नह्‌नु अअ़्लमु बिल्लज़ी-न हुम्‌ औला बिहा सिलिय्या (70) व इम्‌-मिन्कुम्‌ इल्ला वारिदुहा का-न अ़ला रब्बि-क हतमम्‌-मक़्ज़िय्या (71) सुम्‌-म नुनज्जिल्लज़ीनत्तक़ौ व न-ज़रुज़्ज़ालिमी-न फ़ीहा जिसिय्या (72) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम्‌ आयातुना बय्यिनातिन्‌ क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अय्युल्‌-फ़रीक़ैनि ख़ैरुम्‌-मक़ामंव्‌-व अह्‌सनु नदिय्या (73) व कम्‌ अह्‌लक्ना क़ब्लहुम्‌ मिन्‌ क़र्‌निन्‌ हुम्‌ अह्‌सनु असासंव्‌-व रिअ़्या (74) क़ुल्‌ मन्‌ का-न फ़िज़्ज़लालति फ़ल्यम्दुद्‌ लहुर्रह्मानु मद्‌दन्‌, हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अ़दू-न इम्मल्‌-अ़ज़ा-ब व

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ
وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۝ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُ
بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا
وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ
عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝ وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ
أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ
تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝ وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ
حَيًّا ۝ أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝
ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ۝
ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝ وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا
وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَ
نَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَقَامًا وَأَحْسَنُ
نَدِيًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ۝

ईमान ले आया और नेक काम करने लगा, सो ये लोग जन्नत में जाएँगे और उनका ज़रा नुक़सान न किया जाएगा।[1] (60) वे हमेशा रहने के बाग़ जिनका रहमान ने अपने बन्दों से ग़ायबाना वायदा फ़रमाया है, (और) उसकी वायदा की हुई चीज़ को ये लोग ज़रूर पहुँचेंगे। (61) उस (जन्नत) में वे लोग कोई फ़ुज़ूल बात सुनने न पाएँगे सिवाय सलाम के, और उनको उनका खाना सुबह व शाम मिला करेगा। (62) यह जन्नत (जिसका ज़िक्र हुआ) ऐसी है कि हम अपने बन्दों में से उसका मालिक ऐसों को बना देंगे जो कि ख़ुदा से डरने वाले हों। (63) और हम (यानी फ़रिश्ते) बिना आपके रब के हुक्म के वक़्त-वक़्त पर नहीं आ सकते, उसी की (मिल्क) हैं हमारे आगे की सब चीज़ें और हमारे पीछे की सब चीज़ें, और जो चीज़ें उनके दरमियान में हैं, और आपका रब भूलने वाला नहीं।[2] (64) वह रब है आसमानों और ज़मीन का, और उन सब चीज़ों का जो उन दोनों के दरमियान में हैं, सो (ऐ मुख़ातब!) तू उसकी इबादत किया कर और उसकी इबादत पर क़ायम रह, भला तू किसी को उसकी सिफ़तों जैसा जानता है?[3] (65) और (मरने के बाद ज़िन्दा होने का इनकारी) इनसान (यूँ) कहता है कि मैं जब मर जाऊँगा तो क्या फिर ज़िन्दा करके (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा। (66) ❖

क्या (यह) इनसान इस बात को नहीं समझता कि हम उसको इससे पहले (नापैदी की हालत से) वजूद में ला चुके हैं, और यह (उस वक़्त) कुछ भी न था।[4] (67) सो क़सम है आपके रब की हम उनको (उस वक़्त) जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उनको दोज़ख़ के गिरदा-गिर्द इस हालत से हाज़िर करेंगे कि घुटनों के बल गिरे होंगे। (68) फिर (उन कुफ़्फ़ार के) हर गिरोह में से उन लोगों को अलग करेंगे जो उनमें से सबसे ज़्यादा अल्लाह से सरकशी किया करते थे। (69) फिर हम (ख़ुद) ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो दोज़ख़ में जाने के ज़्यादा (यानी प्रथम) हक़दार हैं। (70) और तुममें से कोई भी नहीं जिसका उसपर गुज़र न हो,[5] यह आपके रब के एतिबार से (ताकीद के तौर पर) लाज़िम है जो (ज़रूर) पूरा होकर रहेगा। (71) फिर हम उन लोगों को नजात दे देंगे जो ख़ुदा से डरते (यानी उससे डरकर ईमान लाते) थे, और ज़ालिमों को उसमें ऐसी हालत में रहने देंगे कि (रंज व ग़म के मारे) घुटनों के बल गिर पड़ेंगे। (72) और जब उन (इनकार करने वाले) लोगों के सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो ये काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि दोनों फ़रीक़ों में से मकान "यानी ठिकाना" किसका ज़्यादा अच्छा है, और महफ़िल किसकी अच्छी है। (73) और हमने उनसे पहले बहुत-से (ऐसे-ऐसे) गिरोह हलाक किए हैं जो सामान और देखने में उनसे भी (कहीं) अच्छे थे। (74) आप फ़रमा दीजिए कि जो लोग गुमराही में हैं (यानी तुम) रहमान उनको ढील देता चला जा

(पृष्ठ 558 का शेष) 6. यानी जिनका ज़िक्र सूरः के शुरू से यहाँ तक हुआ, यानी हज़रत ज़करिया से इदरीस अ़लैहिस्सलाम तक।

7. यानी बावजूद इस मक़बूलियत व मख़्सूस होने के उन सब मज़कूरा हज़रात की बन्दगी की यह कैफ़ियत थी।

8. नमाज़ को बरबाद किया। चाहे एतिक़ाद के तौर पर कि इनकार किया, या अ़मल के तौर पर कि उसके अदा करने में या ज़रूरी हुक़ूक़ व आदाब में कोताही की।

1. यानी हर नेक अ़मल का बदला मिलेगा।

2. मतलब यह है कि हम पैदाइशी तौर पर या अहकाम की वजह से हुक्म के ताबे हैं। अपनी राय से एक जगह से दूसरी जगह में या जिस वक़्त हम कहीं जाना चाहें आ-जा नहीं सकते, लेकिन जब हमारा भेजना मस्लहत होता है तो हक़ तआ़ला भेज देते हैं। यह एहतिमाल नहीं कि शायद किसी मस्लहत के वक़्त में भूल जाते हैं।

3. यानी कोई उसका हम-सिफ़त (उस जैसी सिफ़तों का मालिक) नहीं, तो इबादत के लायक़ भी कोई नहीं। पस उसी की इबादत करना ज़रूरी हुआ।

4. जब ऐसी हालत से ज़िन्दगी तक लाना आसान है तो दोबारा ज़िन्दगी देना तो और भी ज़्यादा आसान है।

5. उसपर से गुज़रना किसी का दाख़िल होने के लिए और किसी का उसको पार करने के लिए होगा। जहन्नम का वजूद ऐसा यक़ीनी है कि उसका मुआयना हर मोमिन व हर काफ़िर को कराया जाएगा, अगरचे मुआयने की सूरत (शेष तफ़सीर पृष्ठ 562 पर)

इम्मस्सा-अ-त, फ़-सयअ्‌लमू-न मन्‌ हु-व शर्रुम्‌-मकानंव्‌-व अज़्अ़फ़ु जुन्दा (75) व यज़ीदुल्लाहुल्लज़ीनह्तदौ हुदन्‌, वल्‌-बाक़ियातुस्सालिहातु ख़ैरुन्‌ अ़िन्‌-द रब्बि-क सवाबंव्‌-व ख़ैरुम्‌ मरद्‌दा (76) अ-फ़-रऐतल्लज़ी क-फ़-र बिआयातिना व क़ा-ल ल-ऊ-तयन्‌-न मालंव्‌-व व-लदा (77) अत्त-लअ़्‌लौ-ब अमित्त-ख़-ज़ अ़िन्दर्रह्मानि अ़ह्‌दा (78) कल्ला, सनक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्‌दु लहू मिनल्‌-अ़ज़ाबि मद्‌दा (79) व नरिसुहू मा यक़ूलु व यअ्‌तीना फ़र्‌दा (80) वत्त-ख़ज़ू मिन्‌ दूनिल्लाहि आलि-हतल्‌-लि-यकूनू लहुम्‌ अ़िज़्ज़ा (81) कल्ला, स-यक्फ़ुरू-न बिअ़िबादतिहिम्‌ व यकूनू-न अ़लैहिम्‌ ज़िद्‌दा (82) ❖

अलम्‌ त-र अन्ना अर्‌सल्नश्‌-शयाती-न अ़लल्‌-काफ़िरी-न त-उज़्ज़ुहुम्‌ अज़्ज़ा (83) फ़ला तअ्‌जल्‌ अ़लैहिम्‌, इन्नमा नअ़ुद्‌दु लहुम्‌ अ़द्‌दा (84) यौ-म नह्शुरुल्‌-मुत्तक़ी-न इलर्रह्मानि वफ़्दा (85) व नसूक़ुल्‌-मुज्रिमी-न इला जहन्न-म विर्‌दा ✣ (86) ला यम्लिकूनश्‌- शफ़ा-अ़-त इल्ला मनित्त-ख़ा-ज़ अ़िन्दर्रह्मानि अ़ह्‌दा ✣ (87) व क़ालुत्त-ख़ज़र्रह्मानु व-लदा (88) ल-क़द्‌ जिअ्‌तुम्‌ शैअन्‌ इद्‌दा (89) तकादुस्समावातु य-तफ़त्तर्‌-न मिन्हु व तन्‌शक़्क़ुल्‌-अर्‌ज़ु व तख़िर्रुल्‌- जिबालु हद्‌दा (90) अन्‌ दऔ लिर्रह्मानि व-लदा (91) व मा यम्बग़ी लिर्रह्मानि अंय्यत्तख़ि-ज़ व-लदा (92) इन्‌ कुल्लु मन्‌ फ़िस्समावाति वल्‌अर्ज़ि इल्ला आतिर्रह्मानि अ़ब्दा (93) ल-क़द्‌ अह्‌साहुम्‌ व अ़द्‌दहुम्‌ अ़द्‌दा (94) व कुल्लुहुम्‌

قل من كان في الضللة فليمدد له الرحمن مدا حتى اذا راوا
ما يوعدون اما العذاب واما الساعة فسيعلمون من هو
شر مكانا واضعف جندا ويزيد الله الذين اهتدوا هدى
والبقيت الصلحت خير عند ربك ثوابا وخير مردا افرءيت
الذي كفر بايتنا وقال لاوتين مالا وولدا اطلع الغيب
ام اتخذ عند الرحمن عهدا كلا سنكتب ما يقول ونمد
له من العذاب مدا ونرثه ما يقول ويأتينا فردا واتخذوا
من دون الله الهة ليكونوا لهم عزا كلا سيكفرون
بعبادتهم ويكونون عليهم ضدا الم تر انا ارسلنا الشيطين
على الكفرين تؤزهم ازا فلا تعجل عليهم انما نعد لهم
عدا يوم نحشر المتقين الى الرحمن وفدا ونسوق المجرمين
الى جهنم وردا لا يملكون الشفاعة الا من اتخذ عند
الرحمن عهدا وقالوا اتخذ الرحمن ولدا لقد جئتم شيئا
ادا تكاد السموت يتفطرن منه وتنشق الارض وتخر الجبال
هدا ان دعوا للرحمن ولدا وما ينبغي للرحمن ان يتخذ
ولدا ان كل من في السموت والارض الا اتي الرحمن عبدا

रहा है,[1] यहाँ तक कि जिस चीज़ का उनसे वायदा किया गया है उसको देख लेंगे, चाहे (दुनिया में) अ़ज़ाब को चाहे (दूसरी दुनिया में) क़ियामत को, सो (उस वक़्त) उनको मालूम हो जाएगा कि बुरा ठिकाना किसका है, और कमज़ोर मददगार किसके हैं।[2] **(75)** और अल्लाह तआ़ला हिदायत वालों को (दुनिया में तो) हिदायत बढ़ाता है और (आख़िरत में ज़ाहिर होगा कि) जो नेक काम हमेशा के लिए बाक़ी रहने वाले हैं, वे तुम्हारे रब के नज़दीक सवाब में भी बेहतर हैं और अन्जाम में भी बेहतर हैं।[3] **(76)** भला आपने उस शख़्स (की हालत) को भी देखा जो हमारी आयतों के साथ कुफ़्र करता है और कहता है कि मुझको (आख़िरत में) माल और औलाद मिलेंगे।[4] **(77)** क्या यह शख़्स ग़ैब पर बा-ख़बर हो गया है, या क्या उसने अल्लाह तआ़ला से (इस बात का) कोई अ़हद ले लिया है। **(78)** हरगिज़ नहीं, (बिलकुल ग़लत कहता है, और) हम उसका कहा हुआ भी लिखे लेते हैं, और उसके लिए अ़ज़ाब बढ़ाते चले जाएँगे। **(79)** और उसकी कही हुई चीज़ों के हम वारिस रह जाएँगे और वह हमारे पास (माल व औलाद से) तन्हा (होकर) आएगा। **(80)** और उन लोगों ने अल्लाह के अ़लावा और माबूद तजवीज़ कर रखे हैं ताकि उनके लिए वे (अल्लाह के यहाँ) इ़ज़्ज़त का सबब हों। **(81)** (ऐसा) हरगिज़ नहीं (होगा, बल्कि) वे तो उनकी इबादत का ही इनकार कर बैठेंगे, और उनके मुख़ालिफ़ हो जाएँगे। **(82)** ❖

क्या आपको मालूम नहीं कि हमने शैतानों को (आज़माइश के तौर पर) काफ़िरों पर छोड़ रखा है, कि वे उनको (कुफ़्र व गुमराही पर) ख़ूब उभारते रहते हैं। **(83)** सो आप उनके लिए जल्दी न कीजिए, हम उनकी बातें खुद शुमार कर रहे हैं। **(84)** (और) जिस दिन मुत्तक़ियों को रहमान (के नेमतों के घर) की तरफ़ मेहमान बनाकर जमा करेंगे। **(85)** और मुजरिमों को दोज़ख़ की तरफ़ (प्यासा) हाँकेंगे। **(86)** (वहाँ) कोई सिफ़ारिश का इख़्तियार न रखेगा, मगर हाँ जिसने रहमान के पास से इजाज़त ली है।[5] **(87)** और ये (काफ़िर) लोग कहते हैं कि अल्लाह ने औलाद (भी) इख़्तियार कर रखी है। **(88)** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि) तुमने (जो) यह (बात कही तो) ऐसी सख़्त हरकत की है **(89)** कि उसके सबब कुछ बईद नहीं कि आसमान फट पड़ें और ज़मीन के टुकड़े उड़ जाएँ और पहाड़ टूटकर गिर पड़ें। **(90)** इस बात से कि ये लोग (ख़ुदा-ए-) रहमान की तरफ़ औलाद की निस्बत करते हैं **(91)** हालाँकि (ख़ुदा-ए-) रहमान की शान नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे। **(92)** (क्योंकि) जितने भी कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं सब (ख़ुदा-ए-) रहमान के सामने गुलाम होकर हाज़िर होते हैं। **(93)** (और) उसने सबको (अपनी क़ुदरत में) घेर रखा है, और सबको शुमार

(पृष्ठ 560 का शेष) और ग़रज़ अलग-अलग होंगी। काफ़िरों को दाख़िल होने और हमेशा का अ़ज़ाब देने के वास्ते, और मोमिनों को पुलसिरात को पार करने के तौर पर और शुक्र व खुशी की ज़्यादती के वास्ते। और बाज़े गुनाहगारों को सीमित सज़ा के लिए जो कि उनको पाक-साफ़ करना है।

1. यानी इस दुनियावी नेमत में यह हिक्मत है कि मोहलत देकर हुज्जत को पूरा कर दे, और यह मोहलत चन्द दिन की है।
2. यानी दुनिया में जो अपने मज्लिस वालों को अपना मददगार समझते हैं और फ़ख़्र करते हैं वहाँ मालूम होगा कि उनमें कितना ज़ोर है, क्योंकि वहाँ तो ज़ोर में इतनी कमी होगी कि बिलकुल ज़ोर न होगा, इसी को 'अज़्अफु' फ़रमाया।
3. पस उनको सवाब में बड़ी-बड़ी नेमतें मिलेंगी, जिनमें मकानात और बाग़ात सब कुछ होंगे। और इन आमाल का अन्जाम उन नेमतों का हमेशा रहना है। पस हर एतिबार से मुसलमानों ही की आख़िरी हालत बेहतर होगी, और अन्जाम ही का एतिबार है।
4. ख़ब्बाब बिन अरत सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु लुहार का काम करते थे। उनका कुछ क़र्ज़ आ़स बिन वाइल के ज़िम्मे रह गया था। उन्होंने एक बार तक़ाज़ा किया तो आ़स ने जवाब दिया कि जब तक तू मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के साथ कुफ़्र न करेगा तेरे दाम न दूँगा। उन्होंने कहा कि अगर तू मरकर भी ज़िन्दा होगा जब भी कुफ़्र न करूँगा। उसने कहा, तो जब यह बात है कि मैं मरकर फिर ज़िन्दा होने वाला हूँ तो मेरे पास जब ही आना, मेरे पास उस वक़्त भी माल-औलाद सब कुछ होगा, तेरे दाम चुकता कर दूँगा। इसपर यह आयत नाज़िल हुई। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 564 पर)**

आतीहि यौमल्-क़ियामति फ़र्दा (95) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति स-यज्अ़लु लहुमुर्रह्मानु वुद्दा (96) फ़-इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लितुबश्शि-र बिहिल्-मुत्तक़ी-न व तुन्ज़ि-र बिही क़ौमल्-लुद्दा (97) व कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन्, हल् तुहिस्सु मिन्हुम् मिन् अ-हदिन् औ तस्मअ़ु लहुम् रिक्ज़ा ● (98) ❖

20 सूरतु तॉ-हा 45

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5466 अक्षर 1251 शब्द, 135 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तॉ-हा (1) मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-क़ुर्आ-न लितश्क़ा (2) इल्ला तज़्कि-रतल्-लिमंय्यख़्शा (3) तन्ज़ीलम्-मिम्-मन् ख़-लक़ल्अर्-ज़ वस्समावातिल्-अ़ुला (4) अर्रह्मानु अ़लल्-अ़र्शिस्तवा (5) लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि व मा बैनहुमा व मा तह्तस्सरा (6) व इन् तज्हर् बिल्क़ौलि फ़-इन्नहू यअ़्लमुस्सिर्-र व अख़्फ़ा (7) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, लहुल्-अस्माउल्-हुस्ना (8) व हल् अता-क हदीसु मूसा ✣ (9) इज़् रआ नारन् फ़क़ा-ल लिअह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल्-लअ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-क़-बसिन् औ अजिदु अ़लन्नारि हुदा (10) फ़-लम्मा अताहा नूदि-य या मूसा (11) इन्नी अ-न रब्बु-क फ़ख़्लअ़् नअ़्लै-क इन्न-क बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा (12) व अनख़्तर्तु-क फ़स्तमिअ़् लिमा यूहा (13) इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह इल्ला अ-न

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فَرْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ
الرَّحْمٰنُ وُدًّا ۝ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ
وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ
تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ۝ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۝ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ
يَّخْشٰى ۝ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۝ اَلرَّحْمٰنُ
عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۝ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَ
مَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ۝ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ
السِّرَّ وَاَخْفٰى ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝ وَهَلْ
اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ
اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝
فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِىَ يٰمُوْسٰى ۝ اِنِّىْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ اِنَّكَ
بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝
اِنَّنِىْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِىْ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ ۝

कर रखा है। **(94)** और क़ियामत के दिन सब-के-सब उसके पास तन्हा-तन्हा हाज़िर होंगे।[1] **(95)** बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए (ख़ुदा-ए-) रहमान उनके लिए मुहब्बत पैदा कर देगा।[2] **(96)** सो हमने इस (क़ुरआन) को आपकी ज़बान (यानी अ़रबी) में इसलिए आसान किया है कि आप इससे मुत्तक़ियों को ख़ुशख़बरी सुनाएँ और (साथ ही) इससे झगड़ालू आदमियों को ख़ौफ़ दिलाएँ। **(97)** और हमने उनसे पहले बहुत-से गिरोहों को (अ़ज़ाब व क़हर से) हलाक कर दिया है, (सो) क्या आप उनमें से किसी को देखते हैं, या उनकी कोई आहिस्ता आवाज़ सुनते हैं।[3] ● **(98)** ❖

20 सूरः तॉ-हा 45

सूरः तॉ-हा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 135 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ता-हा (के मायने तो अल्लाह को मालूम हैं) **(1)** हमने आप पर क़ुरआन (मजीद) इसलिए नहीं उतारा कि आप तकलीफ़ उठाएँ। **(2)** बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए (उतारा है) जो (अल्लाह तआ़ला से) डरता हो। **(3)** यह उस (ज़ात) की तरफ़ से नाज़िल किया गया है जिसने ज़मीन को और बुलन्द आसमानों को पैदा किया है। **(4)** (और वह) बड़ी रहमत वाला (है) अ़र्श पर[4] क़ायम है। **(5)** उसी की (मिल्क) हैं जो चीज़ें आसमानों में हैं और जो चीज़ें ज़मीन में हैं, और जो चीज़ें इन दोनों के दरमियान में हैं, और जो चीज़ें तहतुस्सरा में हैं।[5] **(6)** और (उसके इल्म की यह शान है कि) अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह चुपके से कही हुई बात को और उससे भी ज़्यादा छुपी बात को जानता है।[6] **(7)** (वह) अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं।[7] **(8)** और क्या आपको मूसा (के क़िस्से) की ख़बर (भी) पहुँची है। **(9)** जबकि उन्होंने (मद्‌यन से आते हुए रात को) एक आग देखी, सो अपने घर वालों से फ़रमाया कि तुम रुके रहो मैंने आग देखी है, शायद उसमें से तुम्हारे पास कोई शोला लाऊँ या (वहाँ) आग के पास रास्ते का पता मुझको मिल जाए। **(10)** सो वह जब उस (आग) के पास पहुँचे तो (उनको अल्लाह की तरफ़ से) आवाज़ दी गई, कि ऐ मूसा! **(11)** मैं ही तुम्हारा रब हूँ, पस तुम अपनी जूतियाँ उतार डालो, (क्योंकि) तुम एक पाक मैदान यानी 'तुवा' में हो। (यह उसका नाम है)। **(12)** और मैंने तुमको (नबी बनाने के लिए) चुन लिया है, सो (इस वक़्त) जो कुछ वह्य की जा रही है उसको सुन लो। **(13)** (वह यह है कि) मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तुम मेरी ही इबादत किया करो और मेरी ही याद की नमाज़ पढ़ा

(पृष्ठ 562 का शेष) **5.** वे अम्बिया और नेक लोग हैं। और इजाज़त ख़ास है मोमिनों के साथ। पस काफ़िर लोग शफ़ाअ़त का महल (यानी उसके जारी होने की जगह) न हुए।

1. यानी हर शख़्स ख़ुदा ही का मोहताज और उसके हुक्म के ताबे होगा।

2. इसका यह मतलब नहीं कि उससे किसी को बुग्ज़ न होगा, बल्कि मक़सूद यह है कि आ़म मख़्लूक़ जिनका न कोई नफ़ा उस मोमिन से वाबस्ता है न कोई नुक़सान वे उससे मुहब्बत करेंगे।

3. यह इशारा है कि बिलकुल नाम व निशान मिट जाने और नेस्तनाबूद होने से।

4. यानी बादशाही के तख़्त पर। अ़र्श रिवायतों और आयतों के मुताबिक़ एक बड़ा जिस्म है। आसमानों और कुर्सी के अ़लावा उन सबके ऊपर एक गुंबद की तरह से है और उन सबसे बड़ा है। उसके पाए भी हैं और फ़रिश्ते उसको उठाए हुए हैं, और वह अपनी जगह ठहरा हुआ है, कभी उसको हरकत भी हो जाती है।

5. यानी ज़मीन के अन्दर जो तर मिट्टी है उसको 'सरा' कहते हैं। 'जो चीज़ उसके नीचे है' से मुराद **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 566 पर)**

फ़अ्बुद्नी व अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री (14) इन्नस्सा-अ-त आति-यतुन् अकादु उख़्फ़ीहा लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा तस्आ (15) फ़ला यसुद्दन्न-क अ़न्हा मल्ला युअ्मिनु बिहा वत्त-ब-अ़ हवाहु फ़-तर्दा (16) व मा तिल्-क बि-यमीनि-क या मूसा (17) क़ा-ल हि-य अ़सा-य अ-तवक्क-उ अ़लैहा व अहुश्शु बिहा अ़ला ग़-नमी व लि-य फ़ीहा मआरिबु उख़्रा (18) क़ा-ल अल्क़िहा या मूसा (19) फ़-अल्क़ाहा फ़-इज़ा हि-य हय्यतुन् तस्आ (20) क़ा-ल ख़ुज़्हा व ला त-ख़फ़्, सनुओदुहा सी-र-तहल्- ऊला (21) वज़्मुम् य-द-क इला जनाहि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन् आ-यतन् उख़्रा (22) लिनुरि-य-क मिन् आयातिनल्-कुब्रा (23) इज़्हब् इला फ़िर्औ-न इन्नू तग़ा (24) ❖

क़ा-ल रब्बिश्रह् ली सद्री (25) व यस्सिर् ली अम्री (26) वह्लुल् अुक्द-तम् मिल्-लिसानी (27) यफ़्क़हू क़ौली (28) वज्अ़ल्-ली वज़ीरम्-मिन् अह्ली (29) हारू-न अख़ि- (30) -श्दुद् बिही अज़्री (31) व अश्रिक्हु फ़ी अम्री (32) कै नुसब्बि-ह-क कसीरंव्- (33) -व नज़्कु-र-क कसीरा (34) इन्न-क कुन्-त बिना बसीरा (35) क़ा-ल क़द् ऊती-त सुअ्ल-क या मूसा (36) व ल-क़द् मनन्ना अ़लै-क मर्रतन् उख़्रा (37) इज़् औहैना इला उम्मि-क मा यूहा (38) अनिक़्ज़िफ़ीहि फ़ित्ताबूति फ़क़्ज़िफ़ीहि फ़िल्यम्मि फ़ल्युल्किहिल्-यम्मु बिस्साहिलि यअ्ख़ुज़्हु अ़दुव्वुल्ली व अ़दुव्वुल्लहू, व अल्क़ैतु अ़लै-क म-हब्बतम्-मिन्नी, व लितुस्न-अ़

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ﴿١٥﴾
فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ ﴿١٦﴾
وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿١٧﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ عَلَيْهَا وَ
أَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ﴿١٨﴾ قَالَ أَلْقِهَا
يَا مُوسَىٰ ﴿١٩﴾ فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ
سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ﴿٢١﴾ وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٣﴾
اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾ وَ
يَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾
وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾ هَارُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿٣١﴾
وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ﴿٣٢﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾ وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿٣٤﴾ إِنَّكَ
كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ
مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ﴿٣٧﴾ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ﴿٣٨﴾ أَنِ
اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ
يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِي وَعَدُوٌّ لَهُ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي وَلِتُصْنَعَ
عَلَىٰ عَيْنِي ﴿٣٩﴾ إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ

करो। (14) (दूसरी बात यह सुनो कि) बेशक क़ियामत आने वाली है, मैं उसको (तमाम मख़्लूक़ से) छुपाकर रखना चाहता हूँ ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला मिल जाए। (15) सो तुमको उस (क़ियामत) से ऐसा शख़्स बाज़ न रखने पाए जो उसपर ईमान नहीं रखता, और अपनी (नफ़्सानी) ख़्वाहिशों पर चलता है, कहीं तुम (इस बेफ़िक्री की वजह से) तबाह न हो जाओ।[1] (16) और यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है ऐ मूसा! (17) उन्होंने कहा कि यह मेरी लाठी है, मैं (कभी) इस पर सहारा लगाता हूँ और (कभी) अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूँ और इस में मेरे और भी काम (निकलते) हैं। (18) इरशाद हुआ कि इसको (ज़मीन पर) डाल दो ऐ मूसा! (19) सो उन्होंने उसको डाल दिया, यकायक वह (ख़ुदा की क़ुदरत से) एक दौड़ता हुआ साँप (बन गया)। (20) इरशाद हुआ कि उसको पकड़ लो और डरो नहीं,[2] हम अभी उसको उसकी पहली हालत पर कर देंगे।[3] (21) और तुम अपना (दाहिना) हाथ अपनी (बाईं) बग़ल में दे लो, (फिर निकालो) वह बिना किसी ऐब (यानी बिना किसी सफ़ेद कोढ़ की बीमारी वग़ैरह) के बहुत ही रोशन होकर निकलेगा, (कि यह) दूसरी निशानी होगी। (22) ताकि हम तुमको अपनी (क़ुदरत की) बड़ी निशानियों में से बाज़ (निशानियाँ) दिखलाएँ। (23) (अब ये निशानियाँ लेकर) तुम फ़िरऔन के पास जाओ, वह बहुत हद से निकल गया है।[4] (24) ❖

अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरा सीना (यानी हौसला) खोल दीजिए। (25) और मेरा (यह तबलीग़ का) काम आसान फ़रमा दीजिए। (26) और मेरी ज़बान पर से बन्दिश (यानी रुक-रुककर बोलने की हालत) को हटा दीजिए। (27) ताकि लोग मेरी बात समझ सकें। (28) और मेरे वास्ते मेरे कुन्बे में से एक मददगार मुक़र्रर कर दीजिए। (29) यानी हारून को कि मेरे भाई हैं। (30) उनके ज़रिये से मेरी कुव्वत को मज़बूत कर दीजिए। (31) और उनको मेरे (इस तब्लीग़ के) काम में शरीक कर दीजिए (32) ताकि हम दोनों (शिर्क और नुक़्सों से) कसरत से आपकी पाकी बयान करें (33) और आपका (ख़ूब) कसरत से ज़िक्र करें। (34) बेशक आप हमको ख़ूब देख रहे हैं। (35) इरशाद हुआ कि तुम्हारी (हर) दरख़्वास्त मन्ज़ूर की गई ऐ मूसा![5] (36) और हम तो एक दफ़ा और भी (इससे पहले बिना दरख़्वास्त ही) तुमपर एहसान कर चुके हैं। (37) जबकि हमने तुम्हारी माँ को वह बात इल्हाम "यानी दिल में डालने" से बतलाई जो बात इल्हाम से बतलाने की

(पृष्ठ 564 का शेष) यह है कि ज़मीन की तह में है।

6. यानी जो अभी दिल में है।

7. जो कमालात और ख़ूबियों पर दलालत करते हैं, और यह क़ुरआन उसी अच्छे-अच्छे नाम वाली और कमालात व ख़ूबियों वाली ज़ात का नाज़िल किया हुआ है, और यक़ीनी हक़ है।

1. बुनियादी बड़े मसले तीन थे- तौहीद, नुबुव्वत, आख़िरत। तीनों की तालीम दी गई। 'तुम मेरी ही इबादत किया करो' में तमाम फ़ुरूअ (यानी इनसे निकलने वाले अहकाम) आ गए। और नमाज़ को शर्फ़ की वजह से अलग भी ज़िक्र फ़रमाया।

2. मूसा अ़लैहिस्सलाम का डर जाना, बाज़ ने कहा कि तबई है जो किसी तरह से शान के अ़ज़ीम होने के मनाफ़ी नहीं, और बाज़ ने कहा है कि जो हादसा मख़्लूक़ की जानिब से हो उसमें तो न डरना कमाल है, जैसे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम नमरूद की आग से नहीं डरे, और जो मामला ख़ालिक़ (यानी अल्लाह पाक) की तरफ़ से हो उसमें डरना ही कमाल है, कि वह हक़ीक़त में हक़ तआ़ला से डरना है। जैसे हवा के तेज़ होने के वक़्त जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का घबरा जाना हदीसों में आया है। चूँकि इस बदलाव में मख़्लूक़ का वास्ता न था इसलिए उससे डर गए कि यह कोई अल्लाह का क़हर न हो। और दूसरी आयत में 'इन्न-क मिनल् आमिनीन' यानी आप महफ़ूज़ रहने वालों में हैं, फ़रमाकर तसल्ली देना इसी तरफ़ इशारा करता है।

3. यानी यह फिर लाठी बन जाएगा और तुमको कोई नुक़सान न पहुँचेगा।

4. कि ख़ुदाई का दावा करता है। तुम जाकर उसे तौहीद की दावत दो, अगर तुम्हारी नुबुव्वत में शक करे तो यही मोजिज़े दिखला दो।

5. जो 'रब्बिश्रह ली सदरी' से 'व अश्रिक्हु फ़ी अम्री' तक ज़िक्र किया गया है।

अ़ला अ़ैनी ✣ **(39)** इज़् तम्शी उख़्तु-क फ़-तक़ूलु हल् अदुल्लुकुम् अ़ला मंय्यक्फ़ुलुहू, फ़-रजअ़्ना-क इला उम्मि-क कै तक़र्-र अ़ैनुहा व ला तह्ज़-न, व क़तल्-त नफ़्सन् फ़-नज्जैना-क मिनल्-ग़म्मि व फ़तन्ना-क फ़ुतूनन्, फ़-लबिस्-त सिनी-न फ़ी अह्लि मद्य-न सुम्-म जिअ्-त अ़ला क़-दरिंय्-या मूसा **(40)** वस्त-नअ़्तु-क लिनफ़्सी **(41)** इज़्हब् अन्-त व अख़ू-क बिआयाती व ला तनिया फ़ी ज़िक्री **(42)** इज़्हबा इला फ़िर्औ़-न इन्नहू तग़ा **(43)** फ़क़ूला लहू क़ौलल्- लय्यिनल्-लअ़ल्लहू य-तज़क्करु औ यख़्शा **(44)** क़ाला रब्बना इन्नना नख़ाफ़ु अंय्यफ़्रु-त अ़लैना औ अंय्यत्ग़ा **(45)** क़ा-ल ला तख़ाफ़ा इन्ननी म-अ़कुमा अस्मअ़ु व अरा **(46)** फ़अ्तियाहु फ़क़ूला इन्ना रसूला रब्बि-क फ़-अर्सिल् म-अ़ना बनी इस्राई-ल व ला तुअ़ज़्ज़िब्हुम्, क़द् जिअ्ना-क बिआयतिम् मिर्रब्बि-क, वस्सलामु अ़ला मनित्त-बअ़ल्-हुदा **(47)** इन्ना क़द् ऊहि-य इलैना अन्नल्-अ़ज़ा-ब अ़ला मन् कज़्ज़-ब व तवल्ला **(48)** क़ा-ल फ़-मर्रब्बुकुमा या मूसा **(49)** क़ा-ल रब्बुनल्लज़ी अअ़्ता कुल्-ल शैइन् ख़ल्क़हू सुम्-म हदा **(50)** क़ा-ल फ़मा बालुल्-क़ुरूनिल्-ऊला **(51)** क़ा-ल अ़िल्मुहा अ़िन्-द रब्बी फ़ी किताबिन् ला यज़िल्लु रब्बी व ला यन्सा **(52)** अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ मह्दंव्-व स-ल-क लकुम् फ़ीहा सुबुलंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन्, फ़-अख़्रज्ना बिही अज़्वाजम् मिन् नबातिन् शत्ता **(53)** कुलू वर्औ़ अन्आ़-मकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लि-उलिन्नुहा **(54)** ◆

يَكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ
نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْٓ
اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ
لِنَفْسِىْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ﴿٤٢﴾
اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ
اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ
لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ
فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ
مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَآ
اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾
قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ
الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ فِىْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّىْ
وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا
سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ
شَتّٰى ﴿٥٣﴾ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿٥٤﴾ ع
مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾

✣ व. लाज़िम ◆ रु. 2/30/11

थी। **(38)** (वह यह) कि उनको (यानी मूसा को जल्लादों के हाथों से बचाने के लिए) एक सन्दूक़ में रखो, फिर उनको दरिया में डाल दो, फिर उनको (सन्दूक़ के साथ) दरिया किनारे तक ले आएगा, (आख़िरकार) उनको एक शख़्स पकड़ लेगा जो (काफ़िर होने की वजह से) मेरा भी दुश्मन है और उनका भी दुश्मन है।[1] और (ऐ मूसा) मैंने तुम्हारे ऊपर एक मुहब्बत का असर डाल दिया (ताकि जो तुमको देखे प्यार करे) और ताकि तुम मेरी (ख़ास) निगरानी में परवरिश पाओ। **(39)** (यह क़िस्सा उस वक़्त का है) जबकि तुम्हारी बहन चलती हुई आईं फिर कहने लगीं, क्या तुम लोगों को ऐसे शख़्स का पता दूँ जो इसको (अच्छी तरह) पाले, (यानी रखे) फिर (इस तदबीर से) हमने तुमको तुम्हारी माँ के पास फिर पहुँचा दिया, ताकि उनकी आँखें ठन्डी हों और उनको ग़म न रहे। और तुमने (ग़लती से) एक (क़िबती) शख़्स को जान से मार डाला,[2] फिर हमने तुमको इस ग़म से नजात दी, और हमने तुमको ख़ूब-ख़ूब मेहनतों में डाला, फिर (मद्‌यन पहुँचे और) मद्‌यन वालों में कई साल रहे, फिर एक ख़ास वक़्त पर तुम (यहाँ) आए ऐ मूसा! **(40)** और (यहाँ आने पर) मैंने तुमको अपने लिए चुन लिया। **(41)** (सो अब) तुम और तुम्हारे भाई दोनों मेरी निशानियाँ (यानी मोजिज़े) लेकर जाओ और मेरी याद (गारी) में सुस्ती मत करना।[3] **(42)** दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, वह बहुत हद निकल चुका है। **(43)** फिर उससे नरमी के साथ बात करना, शायद वह (दिलचस्पी से) नसीहत क़बूल कर ले, या (अल्लाह के अ़ज़ाब से) डर जाए। **(44)** दोनों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! हमको यह अन्देशा है कि (कहीं) वह हमपर ज़्यादती (न) कर बैठे, या यह कि ज़्यादा शरारत (न) करने लगे। **(45)** इरशाद हुआ कि तुम अन्देशा न करो (क्योंकि) मैं तुम दोनों के साथ हूँ सब सुनता और देखता हूँ। **(46)** सो तुम उसके पास जाओ और (उससे) कहो कि हम दोनों तेरे परवर्दिगार के भेजे हुए हैं, (कि हमको नबी बनाकर भेजा है) सो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे और उनको तकलीफ़ मत पहुँचा, हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से (अपनी नुबुव्वत का) निशान (यानी मोजिज़ा भी) लाए हैं, और ऐसे शख़्स के लिए सलामती है जो (सीधी) राह पर चले। **(47)** हमारे पास यह हुक्म पहुँचा है कि (अल्लाह तआ़ला का) अ़ज़ाब उस शख़्स पर होगा जो (हक़ को) झुठलाए और (उससे) मुँह मोड़े। **(48)** वह कहने लगा कि फिर (यह बतलाओ कि) तुम दोनों का रब कौन है? ऐ मूसा! **(49)** (मूसा ने) कहा कि हमारा (सबका) रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके मुनासिब बनावट अ़ता फ़रमाई, फिर रहनुमाई फ़रमाई। **(50)** (फ़िरऔन ने कहा) अच्छा तो पहले लोगों का क्या हाल हुआ। **(51)** (मूसा ने) फ़रमाया कि उन (लोगों) का इल्म मेरे रब के पास (आमाल के) दफ़्तर में (महफ़ूज़) है, मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है।[4] **(52)** वह (रब) ऐसा है जिसने तुम लोगों के लिए ज़मीन को फ़रश (की तरह) बनाया,[5] और इस (ज़मीन) में तुम्हारे (चलने के) वास्ते रास्ते बनाए और आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उस (पानी) के ज़रिए से (मुख़्तलिफ़) क़िस्मों के नबातात "यानी पेड़-पौधे, हरियाली और सब्ज़ियाँ" पैदा किए। **(53)** (और तुमको इजाज़त दी कि) ख़ुद (भी) खाओ और अपने मवेशियों को (भी) चराओ। इन सब चीज़ों में अ़क़्ल वालों के वास्ते (अल्लाह की क़ुदरत की) निशानियाँ हैं। **(54)** ❖

हमने तुमको इसी ज़मीन से पैदा किया,[6] और इसी में हम तुमको (मौत के बाद) ले जाएँगे,[7] और

---

1. चाहे फ़िलहाल इस वजह से कि सब बच्चों को क़त्ल करता था, चाहे आइन्दा कि उनका ख़ास तौर पर दुश्मन होगा।
2. और मारकर सज़ा के डर से भी और इन्तिक़ाम के ख़ौफ़ से भी ग़म हुआ।
3. उनमें असल दो मोजिज़े हैं- लाठी और चमकता हुआ हाथ। और हर एक में मोजिज़ा होने की अनेक वुजूहात हैं।
4. पस उनके आमाल का सही-सही इल्म उसको हासिल है, मगर अ़ज़ाब के लिए वक़्त मुक़र्रर कर रखा है। जब वह वक़्त आएगा वह अ़ज़ाब उनपर जारी कर दिया जाएगा, इसलिए दुनिया में अ़ज़ाब न होने से यह लाज़िम नहीं आता कि कुफ़्र व झुठलाना अ़ज़ाब का सबब न हो।
5. कि उसपर आराम करते हो। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 570 पर)**

मिन्हा ख़लक़्नाकुम् व फ़ीहा नुईदुकुम् व मिन्हा नुख़्रिजुकुम् ता-रतन् उख़्रा **(55)** व ल-क़द् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा फ़-कज़्ज़-ब व अबा **(56)** क़ा-ल अजिअ्तना लितुख़्रि-जना मिन् अर्ज़िना बिसिह्रि-क या मूसा **(57)** फ़-लनअ्तियन्न-क बिसिह्रिम्-मिस्लिही फ़ज्अल् बैनना व बैन-क मौअिदल् ला नुख़्लिफ़ुहू नह्नु व ला अन्-त मकानन् सुवा **(58)** क़ा-ल मौअिदुकुमुज़्ज़ीनति व अंय्युह्श-रन्नासु ज़ुहा **(59)** फ़-तवल्ला फ़िर्औनु फ़-ज-म-अ कैदहू सुम्-म अता **(60)** क़ा-ल लहुम् मूसा वै-लकुम ला तफ़्तरू अ़लल्लाहि कज़िबन् फ़युस्हि-तकुम् बि-अ़ज़ाबिन् व क़द् ख़ा-ब मनिफ़्तरा **(61)** फ़-तनाज़अू अम्-रहुम् बैनहुम् व अ-सरुन्नज्वा **(62)** क़ालू इन् हाज़ानि लसाहिरानि युरीदानि अंय्युख़्रिजाकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिहिमा व यज़्हबा बि-तरी-क़ति-कुमुल्-मुस्ला **(63)** फ़-अज्मिअू कैदकुम् सुम्मअ्तू सफ़्फ़न् व क़द् अफ़्ल-हल्यौ-म मनिस्तअ़्ला **(64)** क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्क़ि-य व इम्मा अन् नकू-न अव्व-ल मन् अल्क़ा **(65)** क़ा-ल बल् अल्क़ू फ़-इज़ा हिबालुहुम् व अ़िसिय्युहुम् युख़य्यलु इलैहि मिन् सिह्रिहिम् अन्नहा तस्आ़ **(66)** फ़-औज-स फ़ी नफ़्सिही ख़ी-फ़तम्-मूसा **(67)** क़ुल्ना ला तख़फ़् इन्न-क अन्तल्-अअ़्ला **(68)** व अल्क़ि मा फ़ी यमीनि-क तल्क़फ़् मा स-नअू, इन्नमा स-नअू कैदु साहिरिन्, व ला युफ़्लिहुस्साहिरु हैसु अता **(69)** फ़-उल्क़ियस्स-ह-रतु सुज्ज-दन् क़ालू आमन्ना बिरब्बि हारू-न व मूसा **(70)** क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम्,

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۗ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۗ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۗ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ

(क़ियामत के दिन) फिर दोबारा इसी से हम तुमको निकालेंगे। **(55)** और हमने उस (फ़िरऔ़न) को अपनी (वे) सब ही निशानियाँ दिखलाईं[1] सो (जब भी) वह झुठलाता ही रहा और इनकार ही करता रहा। **(56)** (और) कहने लगा (ऐ मूसा!) तुम हमारे पास इस वास्ते आए हो-(गे) कि हमको हमारे मुल्क से अपने जादू (के ज़ोर) से निकाल बाहर करो।[2] **(57)** सो अब हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाते हैं, तुम हमारे और अपने दरमियान एक वायदा मुक़र्रर कर लो जिसको न हम ख़िलाफ़ करें और न तुम (ख़िलाफ़ करो) किसी हमवार मैदान में। (ताकि सब देख लें) **(58)** (मूसा अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, तुम्हारे (मुक़ाबले के) वायदे का वक़्त तो वह दिन है जिसमें (तुम्हारा) मेला होता है, और (जिसमें) दिन चढ़े लोग जमा हो जाते हैं। **(59)** ग़रज़ (यह सुनकर) फ़िरऔ़न (दरबार से अपनी जगह) लौट गया, फिर अपने मक्र (यानी जादू) का सामान जमा करना शुरू किया, फिर आया।[3] **(60)** (उस वक़्त) मूसा ने उन (जादूगर) लोगों से फ़रमाया कि ऐ कमबख़्ती मारो! अल्लाह तआ़ला पर झूठ मत बाँधो,[4] कभी वह (यानी ख़ुदा तआ़ला) तुमको (किसी क़िस्म की) सज़ा से बिलकुल नेस्तनाबूद ही कर दे, और जो झूठ बाँधता है वह (आख़िरकार) नाकाम रहता है। **(61)** पस वे (जादूगर) यह बात सुनकर आपस में अपनी राय में इख़्तिलाफ़ करने लगे,[5] और ख़ुफ़िया गुफ़्तगू करते रहे। **(62)** (आख़िरकार सब मुत्तफ़िक़ होकर) कहने लगे कि बेशक ये दोनों जादूगर हैं, इनका मतलब यह है कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारी सरज़मीन से निकाल बाहर करें, और तुम्हारे उम्दा (मज़हबी) तरीक़े का दफ़्तर ही उठा दें। **(63)** सो अब तुम मिलकर अपनी तदबीर का इन्तिज़ाम करो और सफ़ें बना करके (मुक़ाबले में) आओ, और आज वही कामयाब है जो ग़ालिब हो। **(64)** फिर उन्होंने कहा कि ऐ मूसा (अ़लैहिस्सलाम)! तुम अपनी (लाठी) पहले डालोगे या हम पहले डालने वाले बनें। **(65)** आपने फ़रमाया, नहीं तुम ही पहले डालो,[6] पस यकायक उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ उनकी नज़रबन्दी से उनके (यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम के) ख़्याल में ऐसी मालूम होने लगीं जैसे (साँप की तरह चलती) दौड़ती हों। **(66)** सो मूसा के दिल में थोड़ा-सा ख़ौफ़ हुआ।[7] **(67)** हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे। **(68)** और (इसकी सूरत यह है कि) तुम्हारे दाहिने हाथ में जो (लाठी) है उसको डाल दो, इन लोगों ने जो कुछ (साँग) बनाया है यह (लाठी) सबको निगल जाएगी, यह जो कुछ उन्होंने बनाया है जादूगरों का साँग है, और जादूगर कहीं जाए (मोजिज़े के मुक़ाबले में कभी) कामयाब नहीं होता।[8] **(69)** सो जादूगर सज्दे में गिर गए[9] (और बुलन्द आवाज़ से) कहा कि हम ईमान ले आए हारून और मूसा के परवर्दिगार पर। **(70)** (फ़िरऔ़न ने) कहा कि इसके बिना

(पृष्ठ 568 का शेष) 6. चुनाँचे आदम अ़लैहिस्सलाम मिट्टी से बनाए गए। सो उनके वास्ते से सबका दूर का माद्दा मिट्टी हुई।

7. चुनाँचे कोई मुर्दा किसी हालत में हो लेकिन आख़िर को चाहे मुद्दतों के बाद ही सही मगर मिट्टी में ज़रूर मिलेगा।

1. जो मूसा अ़लैहिस्सलाम को अ़ता हुई थीं।

2. और ख़ुद अ़वाम को फ़रेफ़्ता और ताबे बनाकर सरदार बन जाओ।

3. यानी उस मैदान में जहाँ वायदा ठहरा था, आया।

4. कि उसके वजूद या तौहीद का इनकार करने लगो, या उसके ज़ाहिर किए हुए मोजिज़ों को जादू बतलाने लगो।

5. उन दोनों हज़रात के बारे में।

6. चुनाँचे उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डालीं और नज़रबन्दी कर दी।

7. यानी डर हुआ कि जब देखने में ये रस्सियाँ और लाठियाँ साँप मालूम होती हैं और मेरी लाठी भी साँप बन जाएगी तो देखने वाले दोनों चीज़ों को एक-सा ही समझेंगे। फिर हक़ और बातिल में फ़र्क़ किस तरह करेंगे।

8. इससे हज़रत मूसा की तसल्ली हो गई कि अब ख़ूब फ़र्क़ हो सकता है। चुनाँचे उन्होंने लाठी डाली और वह सबको निगल गई।

9. जबकि उन्होंने जादू से ऊपर का काम देखा और समझ गए कि बेशक यह मोजिज़ा है।

इन्नहू ल-कबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-मकुमुस्-सिह्-र फ़-ल-उक़त्तिअ़न्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव्-व ल-उसल्लिबन्नकुम् फ़ी जुज़ूअ़िन्नख़्लि व ल-तअ़्लमुन्-न अय्युना अशद्दु अ़ज़ाबंव्-व अब्क़ा **(71)** क़ालू लन् नुअ़्सि-र-क अ़ला मा जा-अना मिनल्-बय्यिनाति वल्लज़ी फ़-त-रना फ़क़्ज़ि मा अन्-त क़ाज़िन्, इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल्-हयातद्-दुन्या **(72)** इन्ना आमन्ना बिरब्बिना लियग़्फ़ि-र लना ख़तायाना व मा अक्रहतना अ़लैहि मिनस्सिहिर, वल्लाहु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा ▲ **(73)** इन्नहू मंय्यअ्ति रब्बहू मुज्रिमन् फ़-इन्-न लहू जहन्न-म, ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या **(74)** व मंय्यअ्तिही मुअ्मिनन् क़द् अ़मिलस्सालिहाति फ़-उलाइ-क लहुमुद्-द-रजातुल्-उ़ला **(75)** जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ा-उ मन् तज़क्का **(76)** ❖

व ल-क़द् औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी फ़ज़्रिब् लहुम् तरीक़न् फ़िल्बह्रि य-बसल्-ला तख़ाफ़ु द-रकंव्-व ला तख़्शा **(77)** फ़-अत्ब-अ़हुम् फ़िर्औ़नु बिजुनूदिही फ़-ग़शि-यहुम् मिनल्-यम्मि मा ग़शि-यहुम् **(78)** व अज़ल्-ल फ़िर्औ़नु क़ौ-महू व मा हदा **(79)** या बनी इस्राई-ल क़द् अन्जैनाकुम् मिन् अ़दुव्विकुम् व वाअ़द्नाकुम् जानिबत्तूरिल्- ऐम-न व नज़्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्-मन्-न वस्सल्वा **(80)** कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम् व ला तत्ग़ौ फ़ीहि फ़-यहिल्-ल अ़लैकुम् ग़-ज़बी व मंय्यह्लिल् अ़लैहि ग़-ज़बी फ़-क़द् हवा **(81)** व इन्नी ल-ग़फ़्फ़ारुल्-लिमन् ता-ब व आम-न व

فلا قطعن ايديكم وارجلكم من خلاف ولاوصلبنكم في
جذوع النخل ولتعلمن اينا اشد عذابا وابقى ﴿٧١﴾ قالوا لن
نؤثرك على ما جاءنا من البينت والذي فطرنا فاقض ما انت
قاض انما تقضي هذه الحيوة الدنيا ﴿٧٢﴾ انا امنا بربنا ليغفر لنا
خطينا وما اكرهتنا عليه من السحر والله خير وابقى ﴿٧٣﴾ انه
من يات ربه مجرما فان له جهنم لا يموت فيها ولا يحيى ﴿٧٤﴾
ومن ياته مؤمنا قد عمل الصلحت فاولئك لهم الدرجت
العلى ﴿٧٥﴾ جنت عدن تجري من تحتها الانهر خلدين فيها
وذلك جزؤا من تزكى ﴿٧٦﴾ ولقد اوحينا الى موسى ان اسر
بعبادي فاضرب لهم طريقا في البحر يبسا لا تخف دركا
ولا تخشى ﴿٧٧﴾ فاتبعهم فرعون بجنوده فغشيهم من اليم
ما غشيهم ﴿٧٨﴾ واضل فرعون قومه وما هدى ﴿٧٩﴾ يبني
اسراءيل قد انجينكم من عدوكم ووعدنكم جانب الطور
الايمن ونزلنا عليكم المن والسلوى ﴿٨٠﴾ كلوا من طيبت
ما رزقنكم ولا تطغوا فيه فيحل عليكم غضبي ومن
يحلل عليه غضبي فقد هوى ﴿٨١﴾ واني لغفار لمن تاب و

منزل ٤

ही कि मैं तुमको इजाज़त दूँ (यानी मेरी मरज़ी के ख़िलाफ़) तुम इसपर (यानी मूसा पर) ईमान ले आए, वाक़ई (मालूम होता है कि) वह (जादू में) तुम्हारे भी बड़े हैं, कि उन्होंने तुमको जादू सिखलाया है,[1] सो मैं तुम सबके हाथ-पाँव कटवाता हूँ, एक तरफ़ का हाथ और एक तरफ़ का पाँव, और तुम सबको खजूरों के पेड़ पर टँगवाता हूँ, और यह भी तुमको मालूम हुआ जाता है कि हम दोनों में (यानी मुझमें और मूसा के रब में) किसका अ़ज़ाब ज़्यादा सख़्त और देरपा है। **(71)** उन लोगों ने (साफ़) जवाब (दे) दिया कि हम तुझको कभी तरजीह न देंगे उन दलीलों के मुक़ाबले में जो हमको मिली हैं, और उस ज़ात के मुक़ाबले में जिसने हमको पैदा किया है, तुझको जो कुछ करना हो (दिल खोलकर) कर डाल। तू सिवाय इसके कि इस दुनियावी ज़िन्दगी में कुछ कर ले और कर ही क्या सकता है। **(72)** अब तो हम अपने रब पर ईमान ला चुके हैं ताकि हमारे (पिछले) गुनाह (कुफ़्र वग़ैरह) माफ़ कर दें, और तूने जो जादू (के पेश करने) में हमपर ज़ोर डाला (उसको भी माफ़ कर दें) और अल्लाह तआ़ला (तुझसे) लाख दर्जे अच्छे हैं, और ज़्यादा बक़ा वाले हैं। ▲ **(73)** जो शख़्स (बग़ावत का) मुजरिम होकर अपने रब के पास हाज़िर होगा सो उसके लिए दोज़ख़ (मुक़र्रर) है, उसमें न मरेगा ही और न ज़िन्दा ही रहेगा।[2] **(74)** और जो शख़्स रब के पास मोमिन होकर हाज़िर होगा, जिसने नेक काम भी किए हों, सो ऐसों के लिए बड़े ऊँचे दर्जे हैं। **(75)** (यानी) हमेशा-हमेशा रहने के बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे, और जो शख़्स (कुफ़्र व गुनाहों से) पाक हो उसका यही इनाम है। **(76)** ◆

और हमने मूसा के पास वह्य भेजी कि हमारे (उन) बन्दों (यानी बनी इस्राईल को मिस्र से) रातों-रात (बाहर) ले जाओ[3] फिर उनके लिए दरिया में (लाठी) मारकर सूखा रास्ता बना देना, न तुमको किसी के पीछा करने का अन्देशा होगा और न और किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा।[4] **(77)** पस फ़िरऔ़न अपने लश्करों को लेकर उनके पीछे चला,[5] (जब सब अन्दर आ गए) तो (उस वक़्त चारों तरफ़) दरिया (का पानी सिमट कर) उनपर जैसा मिलने को था, आ मिला।[6] **(78)** और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को बुरी राह पर डाला और नेक राह उनको न बतलाई।[7] **(79)** ऐ बनी इस्राईल! देखो हमने तुमको तुम्हारे (ऐसे बड़े) दुश्मन से नजात दी, और हमने तुमसे (यानी तुम्हारे पैग़म्बर से) तूर पहाड़ की दाहिनी जानिब (आने) का वायदा किया,[8] और (वादी-ए-तीह में) हमने तुमपर 'मन्न' व 'सलवा' नाज़िल फ़रमाया। **(80)** (और इजाज़त दी कि) हमने जो अच्छी चीज़ें[9] तुमको दी हैं, उनको खाओ और उस (खाने) में (शरई) हद से मत गुज़रो,[10] कहीं मेरा ग़ज़ब

---

1. फ़िरऔ़न का यह कहना कि 'उन्होंने तुमको जादू सिखलाया है' अ़वाम को धोखा देने के लिए था, वरना मूसा अ़लैहिस्सलाम से उनकी बेताल्लुक़ी तो वह भी जानता था।
2. न मरना तो ज़ाहिर है, और न जीना यह कि जीने का आराम न होगा।
3. और दूर चले जाओ ताकि फ़िरऔ़न के ज़ुल्म और सख़्तियों से उनको नजात हो।
4. क्योंकि पीछा करने वाले कामयाब नहीं होंगे, अगरचे पीछा करेंगे।
5. बनी इस्राईल अल्लाह के वायदे के मुताबिक़ दरिया से पार हो गए, और अभी तक वे रास्ते इसी तरह अपनी हालत पर थे, तो फ़िरऔ़नियों ने कुछ आगा-पीछा सोचा नहीं उनके रास्ते पर हो लिए।
6. और सब ग़र्क़ होकर रह गए।
7. बुरी राह होना ज़ाहिर है कि दुनिया का भी नुक़सान हुआ और आख़िरत का भी।
8. तूर पहाड़ की तरफ़ को 'ऐमन' इसलिए फ़रमाया कि वह दिशा उस तरफ़ जाने वाले के दाहिने हाथ पड़ती है। और बाज़ ने यमन से लिया है, बरकत के मायनों में, यानी मुबारक दिशा। इसकी वजह ज़ाहिर है कि वह वह्य की जगह थी और वह्य की जगह के मुबारक होने में क्या शुब्हा है, चुनाँचे उसको मुक़द्दस (और पाकीज़ा) भी कहा है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 574 पर)**

अ़मि-ल सालिहन् सुम्मह्-तदा **(82)** व मा अअ्ज-ल-क अ़न् क़ौमि-क या मूसा **(83)** क़ा-ल हुम् उला-इ अ़ला अ-सरी व अ़जिल्तु इलै-क रब्बि लितर्ज़ा **(84)** क़ा-ल फ़-इन्ना क़द् फ़तन्ना क़ौम-क मिम्-बअ्दि-क व अज़ल्लहुमुस्-सामिरिय्यु **(85)** फ़-र-ज-अ़ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न्, क़ा-ल या क़ौमि अलम् यअिद्कुम् रब्बुकुम् वअ्दन् ह-सनन्, अ-फ़ता-ल अ़लैकुमुल्-अ़ह्दु अम् अरत्तुम् अंय्यहिल्-ल अ़लैकुम् ग़-ज़बुम् मिर्रब्बिकुम् फ़-अख़्लफ़्तुम् मौअिदी **(86)** क़ालू मा अख़्लफ़्ना मौअि-द-क बिमल्किना व लाकिन्ना हुम्मिल्ना औज़ारम् मिन् ज़ीनतिल्-क़ौमि फ़-क़ज़फ़्नाहा फ़-कज़ालि-क अल्क़स्-सामिरिय्यु **(87)** फ़-अख़्र-ज लहुम् अ़िज्लन् ज-सदल्-लहू ख़ुवारुन् फ़क़ालू हाज़ा इलाहुकुम् व इलाहु मूसा फ़-नसि-य **(88)** अ-फ़ला यरौ-न अल्ला यर्जिअु इलैहिम् क़ौलंव्-व ला यम्लिकु लहुम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्आ **(89)** ❖

व ल-क़द् क़ा-ल लहुम् हारूनु मिन् क़ब्लु या क़ौमि इन्नमा फ़ुतिन्तुम् बिही व इन्-न रब्बकुमुर्-रह्मानु फ़त्तबिअूनी व अतीअू अम्री **(90)** क़ालू लन् नब्र-ह अ़लैहि आ़किफ़ी-न हत्ता यर्जि-अ़ इलैना मूसा **(91)** क़ा-ल या हारूनु मा म-न-अ़-क इज़् रऐ-तहुम् ज़ल्लू **(92)** अल्ला तत्तबि-अ़नि, अ-फ़-अ़सै-त अम्री **(93)** क़ा-ल यब्नउम्-म ला तअ्ख़ुज़् बिलिह्यती व ला बिरअ्सी इन्नी ख़शीतु अन् तक़ू-ल फ़र्रक़्-त बै-न बनी इस्राई-ल व लम् तरक़ुब् क़ौली **(94)** क़ा-ल फ़मा ख़त्बु-क या सामिरिय्यु **(95)** क़ा-ल

امن وعمل صالحا ثم اهتدى ﴿٨٢﴾ وما اعجلك عن قومك
يموسى ﴿٨٣﴾ قال هم اولاء على اثري وعجلت اليك رب لترضى ﴿٨٤﴾
قال فانا قد فتنا قومك من بعدك واضلهم السامري ﴿٨٥﴾
فرجع موسى الى قومه غضبان اسفا قال يقوم الم يعدكم
ربكم وعدا حسنا افطال عليكم العهد ام اردتم ان يحل عليكم
غضب من ربكم فاخلفتم موعدي ﴿٨٦﴾ قالوا ما اخلفنا موعدك
بملكنا ولكنا حملنا اوزارا من زينة القوم فقذفنها فكذلك
القى السامري ﴿٨٧﴾ فاخرج لهم عجلا جسدا له خوار فقالوا
هذا الهكم واله موسى فنسي ﴿٨٨﴾ افلا يرون الا يرجع اليهم
قولا ولا يملك لهم ضرا ولا نفعا ﴿٨٩﴾ ولقد قال لهم هرون
من قبل يقوم انما فتنتم به وان ربكم الرحمن فاتبعوني
واطيعوا امري ﴿٩٠﴾ قالوا لن نبرح عليه عكفين حتى يرجع الينا
موسى ﴿٩١﴾ قال يهرون ما منعك اذ رايتهم ضلوا ﴿٩٢﴾ الا تتبعن
افعصيت امري ﴿٩٣﴾ قال يبنؤم لا تاخذ بلحيتي ولا براسي
اني خشيت ان تقول فرقت بين بني اسراءيل ولم ترقب
قولي ﴿٩٤﴾ قال فما خطبك يسامري ﴿٩٥﴾ قال بصرت بما لم يبصروا

तुमपर न आ जाए। और जिस शख़्स पर मेरा ग़ज़ब आ पड़ता है वह बिलकुल गया गुज़रा हुआ। **(81)** और (तथा इसके साथ यह भी कि) मैं ऐसे लोगों के लिए बड़ा बख़्शने वाला भी हूँ जो तौबा कर लें और ईमान ले आएँ और नेक अ़मल करें, फिर (इसी) राह पर क़ायम (भी) रहें।[1] **(82)** और ऐ मूसा! आपको अपनी क़ौम से आगे जल्दी आने का क्या सबब हुआ? **(83)** उन्होंने (अपने गुमान के मुवाफ़िक़) अ़र्ज़ किया कि वे लोग यही तो हैं मेरे पीछे (पीछे आ रहे हैं) और मैं आपके पास जल्दी से (इसलिए) चला आया कि आप (ज़्यादा) ख़ुश होंगे। **(84)** इरशाद हुआ कि तुम्हारी क़ौम को तो हमने तुम्हारे (चले आने के) बाद (एक बला में) मुब्तला कर दिया, और उनको सामरी ने गुमराह कर दिया। **(85)** ग़रज़ मूसा (अ़लैहिस्सलाम मीयाद पूरी करने के बाद) गुस्से और रंज में भरे हुए अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आए, (और) फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी क़ौम! क्या तुमसे तुम्हारे रब ने एक अच्छा वायदा नहीं किया था, क्या तुमपर मुक़र्ररा मीयाद से (कुछ) ज़्यादा ज़माना गुज़र गया था, या तुमको यह मन्ज़ूर हुआ कि तुमपर तुम्हारे रब का ग़ज़ब आ पड़े, इसलिए तुमने मुझसे जो वायदा किया था उसको ख़िलाफ़ किया। **(86)** वे कहने लगे कि हमने जो आपसे वायदा किया था उसको अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ नहीं किया,[2] और लेकिन (क़िबती) क़ौम के ज़ेवर में से हमपर बोझ लद रहा था, सो हमने उसको (सामरी के कहने से आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने (भी) डाल दिया। **(87)** फिर उस (सामरी) ने उन लोगों के लिए एक बछड़ा (बनाकर) ज़ाहिर किया कि वह एक क़ालिब "यानी जिस्म और साँचा" था, जिसमें एक (बेमानी) आवाज़ थी, सो वे (अहमक़) लोग (एक-दूसरे से) कहने लगे कि तुम्हारा और मूसा का भी माबूद तो यह है, पस वह (यानी मूसा) तो भूल गए। **(88)** क्या वे लोग इतना भी नहीं देखते थे कि वह न तो उनकी किसी बात का जवाब दे सकता है और न उनके किसी नुक़सान या नफ़े पर क़ुदरत रखता है। **(89)** ❖

और उन लोगों से हारून ने (मूसा अ़लैहिस्सलाम के लौटने से) पहले भी कहा था कि ऐ मेरी क़ौम! तुम इस (गौसाला) के सबब (गुमराही में) फँस गए (हो)[3] और तुम्हारा (हक़ीक़ी) रब रहमान है,[4] सो तुम मेरी राह पर चलो और मेरा कहना मानो।[5] **(90)** उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जब तक मूसा हमारे पास वापस (होकर) आएँ इसी (की इबादत) पर (बराबर) जमे (बैठे) रहेंगे। **(91)** (मूसा ने) कहा कि ऐ हारून! जब तुमने उनको देखा था कि ये (बिलकुल) गुमराह हो गए तो (उस वक़्त) तुमको मेरे पास चले आने से कौन-सी चीज़ रोक हुई थी। **(92)** सो क्या तुमने मेरे कहने के ख़िलाफ़ किया। **(93)** (हारून ने) कहा कि ऐ मेरे माँ-जाय तुम मेरी दाढ़ी मत पकड़ो और न सर (के बाल पकड़ो) मुझे यह अन्देशा हुआ कि तुम यह कहने लगो कि तुमने बनी इस्राईल के बीच फूट डाल दी, और तुमने मेरी बात का पास न किया।[6] **(94)** (फिर सामरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है?[7] **(95)** उसने कहा कि मुझको ऐसी चीज़ नज़र आई

(पृष्ठ 572 का शेष) 9. कि वे शरई तौर पर भी हलाल हैं और तबई तौर पर भी मज़ेदार।

10. जैसे यह कि हराम से हासिल किया जाए, या खाकर गुनाह और नाफ़रमानी की जाए।

1. यानी ईमान और नेक अ़मल पर हमेशा पाबन्द रहें।

2. यह मायने नहीं कि बिलकुल मजबूर हो गए थे। बल्कि मतलब यह है कि जिस राय को हम शुरू में तबीयत से आज़ाद होकर इख़्तियार करते उसमें सामरी का फ़ेल (काम) हमारे लिए शुब्हे में पड़ने का सबब बन गया, जिससे हमने वह पहली राय इख़्तियार न की बल्कि राय बदल गई, अगरचे उसपर भी अ़मल इख़्तियार ही से हुआ।

3. यानी इस तरीक़े के सही होने का एहतिमाल ही नहीं, यक़ीनन गुमराही है।

4. न कि यह गौसाला।

5. यानी मेरे क़ौल व फ़ेल की पैरवी करो। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 576 पर)**

बसुरतु बिमा लम् यब्सुरू बिही फ़-क़बज़्तु क़ब्ज़-तम् मिन् अ-सरिर्रसूलि फ़-नबज़्तुहा व कज़ालि-क सव्वलत् ली नफ़्सी **(96)** क़ा-ल फ़ज़्हब् फ़-इन्-न ल-क फ़िल्हयाति अन् तक़ू-ल ला मिसा-स व इन्-न ल-क मौअिदल् लन् तुख़्ल-फ़हू वन्ज़ुर् इला इलाहि-कल्लज़ी ज़ल्-त अ़लैहि आ़किफ़न्, लनु-हर्रिक़न्नहू सुम्-म ल-नन्सिफ़न्नहू फ़िल्यम्मि नस्फ़ा **(97)** इन्नमा इलाहुकुमुल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व, वसि-अ़ कुल्-ल शैइन् अ़िल्मा **(98)** कज़ालि-क नक़ुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बा-इ मा क़द् स-ब-क़ व क़द् आतैना-क मिल्लदुन्ना ज़िक्रा **(99)** मन् अअ्र-ज़ अ़न्हु फ़-इन्नहू यह्मिलु यौमल्-क़ियामति विज़्रा **(100)** ख़ालिदी-न फ़ीहि व सा-अ लहुम् यौमल्-क़ियामति हिम्ला **(101)** यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि व नह्शुरुल्-मुज्रिमी-न यौमइज़िन् ज़ुर्क़ा **(102)** य-तख़ाफ़तू-न बैनहुम् इल्लबिस्तुम् इल्ला अ़श्रा **(103)** नह्नु अअ्लमु बिमा यक़ूलू-न इज़् यक़ूलु अम्सलुहुम् तरी-क़तन् इल्लबिस्तुम् इल्ला यौमा **(104)** ❖

व यस्अलून-क अ़निल्-जिबालि फ़क़ुल् यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़ा **(105)** फ़-य-ज़रुहा क़ाअ़न् सफ़्सफ़ा **(106)** ला तरा फ़ीहा अ़ि-वजंव्-व ला अम्ता **(107)** यौमइज़िंय्-यत्तबिअ़ूनद्दाअ़ि-य ला अ़ि-व-ज लहू व ख़-श-अ़तिल्-अस्वातु लिर्रह्मानि फ़ला तस्मअ़ु इल्ला हम्सा **(108)** यौमइज़िल्-ला तन्फ़अ़ुश्शफ़ा-अ़तु इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व रज़ि-य लहू क़ौला **(109)** यअ्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू-न बिही अ़िल्मा **(110)** व अ़-नतिल्-वुजूहु

بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ
لِيْ نَفْسِيْ ۝٩٦ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ
وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ
عَلَيْهِ عَاكِفًا ۭ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝٩٧ اِنَّمَآ
اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝٩٨ كَذٰلِكَ
نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا
ذِكْرًا ۝٩٩ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۝١٠٠
خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ۭ وَسَاۗءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۝١٠١ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي
الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ زُرْقًا ۝١٠٢ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ
اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ۝١٠٣ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ
طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ۝١٠٤ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ
يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۝١٠٥ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝١٠٦ لَّا تَرٰى فِيْهَا
عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ۝١٠٧ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ
الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ۝١٠٨ يَوْمَىِٕذٍ لَّا تَنْفَعُ
الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ۝١٠٩ يَعْلَمُ
مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ۝١١٠ وَعَنَتِ

थी जो औरों को नज़र न आई थी।[1] फिर मैंने उस (खुदा की तरफ़ से) भेजी हुई (सवारी) के नक़्शे क़दम "पैरों के निशान" से एक मुट्ठी (भर मिट्टी) उठा ली थी, सो मैंने वह मिट्टी (इस जिस्म-साँचे के अन्दर) डाल दी, और मेरे जी को यही बात पसन्द आई।[2] **(96)** आपने फ़रमाया तो बस तेरे लिए इस (दुनियावी) ज़िन्दगी में यह (सज़ा) है कि तू यह कहता फिरा करेगा कि मुझको कोई हाथ न लगाना, और (इसके अ़लावा) तेरे लिए एक और वायदा है जो तुझसे टलने वाला नहीं। (यानी आख़िरत में अ़ज़ाब अलग होगा) और तू अपने इस (बातिल) माबूद को जिसपर तू जमा हुआ बैठा था (देख) हम इसको जला देंगे फिर उस (की राख) को दरिया में बिखेर कर बहा देंगे।[3] **(97)** बस तुम्हारा (हक़ीक़ी) माबूद तो सिर्फ़ अल्लाह है जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अपने इल्म से तमाम चीज़ों को घेरे हुए है। **(98)** (जिस तरह हमने मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान किया) इसी तरह हम आपसे और गुज़रे हुए वाक़िआत की ख़बरें भी बयान करते रहते हैं, और हमने आपको अपने पास से एक नसीहत-नामा भी दिया है, (यानी क़ुरआन)। **(99)** जो लोग इससे मुँह मोड़ेंगे सो वे क़ियामत के दिन बड़ा भारी (अ़ज़ाब का) बोझ लादे होंगे। **(100)** (और) वे उस अ़ज़ाब में हमेशा-हमेशा रहेंगे, और यह बोझ क़ियामत के दिन उनके लिए बुरा (बोझ) होगा। **(101)** जिस दिन सूर में फूँक मारी जाएगी (जिससे मुर्दे ज़िन्दा हो जाएँगे) और हम उस दिन मुजरिम (यानी काफ़िर) लोगों को (क़ियामत के मैदान में) इस हालत से जमा करेंगे कि (आँखों से) नीले होंगे। **(102)** चुपके-चुपके आपस में बातें करते होंगे कि तुम लोग (क़ब्रों में) सिर्फ़ दस दिन रहे होंगे।[4] **(103)** जिस (मुद्दत) के बारे में वे बातचीत करेंगे उसको हम ख़ूब जानते हैं (कि वह किस क़द्र है) जबकि उन सबमें का ज़्यादा सही राय वाला यूँ कहता होगा कि नहीं तुम तो (क़ब्र में) एक ही दिन रहे हो। **(104)** ❖

और लोग आपसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (कि क़ियामत में उनका क्या हाल होगा) सो आप फ़रमा दीजिए कि मेरा रब उनको बिलकुल उड़ा देगा। **(105)** फिर इस (ज़मीन) को एक हमवार मैदान कर देगा। **(106)** जिसमें तू (ऐ मुख़ातब!) न तो नाहमवारी देखेगा और न कोई बुलन्दी देखेगा। **(107)** उस दिन सब-के-सब (यानी मख़्लूक़) बुलाने वाले (यानी सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते) के कहने पर हो लेंगे, उसके सामने (किसी का) टेढ़ापन न रहेगा,[5] और तमाम आवाज़ें (ख़ुदा-ए-) रहमान के सामने (हैबत की वजह से) दब जाएँगी, सो तू (ऐ मुख़ातब!) सिवाय पाँव की आहट के और कुछ न सुनेगा। **(108)** उस दिन (किसी को किसी की) सिफ़ारिश नफ़ा न देगी, मगर ऐसे शख़्स को कि जिसके वास्ते (ख़ुदा-ए-) रहमान ने इजाज़त दे दी हो, और उस शख़्स के वास्ते बोलना पसन्द कर लिया हो।[6] **(109)** वह (अल्लाह तआ़ला) उन सबके

(पृष्ठ 574 का शेष) **6.** मक़ाम का हासिल यह है कि यहाँ दो चीज़ें हैं- एक यह कि उनका साथ छोड़ देना ज़्यादा फ़ायदेमन्द था, दूसरा यह कि उनके साथ न रहना ज़्यादा नुक़सानदेह था। मूसा अ़लैहिस्सलाम का ज़ेहन अव्वल चीज़ की तरफ़ गया और हारून अ़लैहिस्सलाम का ज़ेहन दूसरी बात की तरफ़ गया।

7. यानी तूने यह हरकत क्यों की।

1. यानी हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम नज़र आए जो घोड़े पर चढ़े हुए थे। जिस दिन दरिया से पार उतरे हैं मोमिनों की मदद और काफ़िरों को हलाक करने की मस्लहत से आए होंगे।

2. यानी मेरे दिल में खुद-बखुद यह बात पैदा हुई कि इसमें ज़िन्दगी हासिल हो जाने का असर होगा।

3. ताकि उसका नाम व निशान भी न रहे।

4. मतलब यह है कि हम तो यूँ समझे थे कि मरने के बाद फिर ज़िन्दा होना नहीं, यह गुमान तो बिलकुल ग़लत निकला। ज़िन्दा न होना तो दरकिनार यह भी तो न हुआ कि देर ही में ज़िन्दा होते, बल्कि बहुत ही जल्दी हम ज़िन्दा हो गए, कि यह मुद्दत दस दिन के बराबर मालूम होती है। इस मात्रा के बराबर मालूम होने की वजह उस दिन का लम्बा और घबराहट व परेशानी है, कि क़ब्र में ठहरने की मुद्दत इतनी कम मालूम होगी। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 578 पर)**

लिल्हय्यिल्-क़य्यूमि, व क़द् ख़ा-ब मन् ह-म-ल ज़ुल्मा **(111)** व मंय्यअ़्मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला यख़ाफ़ु ज़ुल्मंव्-व ला हज़्मा **(112)** व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यंव्-व सर्रफ़्ना फ़ीहि मिनल्-वअ़ीदि लअ़ल्लहुम् यत्तक़ू-न औ युह्दिसु लहुम् ज़िक्रा **(113)** फ़-तआ़लल्लाहुल्-मलिकुल्-हक़्क़ु व ला तअ़्जल् बिल्क़ुर्आनि मिन् क़ब्लि अंय्युक़्ज़ा इलै-क वह्युहू व क़ुर्रब्बि ज़िद्नी अ़िल्मा **(114)** व ल-क़द् अ़हिद्ना इला आद-म मिन् क़ब्लु फ़-नसि-य व लम् नजिद् लहू अ़ज़्मा **(115)** ❖

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, अबा **(116)** फ़क़ुल्ना या आदमु इन्-न हाज़ा अ़दुव्वुल्-ल-क व लिज़ौजि-क फ़ला युख़्रिजन्नकुमा मिनल्-जन्नति फ़-तश्क़ा **(117)** इन्-न ल-क अल्ला तजू-अ़ फ़ीहा व ला तअ़्रा **(118)** व अन्न-क ला तज़्मउ फ़ीहा व ला तज़्हा **(119)** फ़-वस्व-स इलैहिश्शैतानु क़ा-ल या आदमु हल् अदुल्लु-क अ़ला श-ज-रतिल्-ख़ुल्दि व मुल्किल्-ला यब्ला **(120)** फ़-अ-कला मिन्हा फ़-बदत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव्-रक़िल्-जन्नति, व अ़सा आदमु रब्बहू फ़-ग़वा **(121)** सुम्मज्तबाहु रब्बुहू फ़ता-ब अ़लैहि व हदा **(122)** क़ालह्बिता मिन्हा जमीअ़म्-बअ़्ज़ुकुम् लिबअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन् फ़-इम्मा यअ्ति-यन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मनित्त-ब-अ़ हुदा-य फ़ला यज़िल्लु व ला यश्क़ा **(123)** व मन् अअ़्र-ज़ अ़न् ज़िक्री फ़-इन्-न लहू मअ़ी-शतन् ज़न्कंव्-व नह्शुरुहू यौमल्-क़ियामति अअ़्मा **(124)** क़ा-ल रब्बि

الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ
يَعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ
وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ
رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَ
لَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا
اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَ
لَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ
الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾
فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ
وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۡ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ
فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا ۢ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ
عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۥ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ
وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّ

ع ١١ ١٥

अगले-पिछले हालात को जानता है और उसको उनका इल्म इहाता नहीं कर सकता। **(110)** और (उस दिन) तमाम चेहरे उसी हय्यु व क़य्यूम "यानी अल्लाह" के सामने झुके होंगे।[1] और ऐसा शख़्स तो (हर तरह) नाकाम रहेगा जो ज़ुल्म (यानी शिर्क) लेकर आया होगा। **(111)** और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा, सो उसको (पूरा सवाब मिलेगा) न किसी ज़्यादती का अन्देशा होगा और न किसी कमी का। **(112)** और हमने इसी तरह इसको अ़रबी क़ुरआन (करके) नाज़िल किया है, और हमने इसमें तरह-तरह से वईद "यानी सज़ा की धमकी और तंबीह" बयान की है, ताकि वे (सुनने वाले) लोग डर जाएँ,[2] यह (क़ुरआन) उनके लिए किसी क़द्र (तो) समझ पैदा कर दे।[3] **(113)** सो अल्लाह तआ़ला जो हक़ीक़ी बादशाह है, बड़ा आ़लीशान है, और क़ुरआन (पढ़ने) में इससे पहले कि आप पर उसकी वह्य नाज़िल हो चुके जल्दी न किया कीजिए, और आप यह दुआ़ कीजिए कि ऐ मेरे रब! मेरा इल्म बढ़ा दीजिए।[4] **(114)** और इससे (बहुत ज़माने) पहले हम आदम को एक हुक्म दे चुके थे, सो उनसे ग़फ़लत (और बेएहतियाती) हो गई, हमने (उस हुक्म के एहतिमाम में) उनमें पुख़्तगी (और साबित-क़दमी) न पाई। **(115)** ❖

और (वह वक़्त याद करो) जबकि हमने फ़रिश्तों से इरशाद फ़रमाया कि आदम के सामने (सलाम व ताज़ीम का) सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया सिवाय शैतान के, (कि) उसने इनकार किया। **(116)** फिर हमने (आदम से) कहा कि ऐ आदम! (याद रखो) यह बिला शुब्हा तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का (इस वजह से) दुश्मन है (कि तुम्हारे मामले में यह मरदूद हुआ), सो कहीं तुम दोनों को जन्नत से न निकलवा दे,[5] फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ। **(117)** यहाँ (जन्नत में) तो तुम्हारे लिए यह (आराम) है कि तुम न भूखे रहोगे और न नंगे होगे। **(118)** और न यहाँ प्यासे होगे और न धूप में तपोगे। **(119)** फिर उनको शैतान ने बहकाया, कहने लगा कि ऐ आदम! क्या मैं तुमको हमेशगी (की ख़ासियत) का पेड़ बतलाऊँ,[6] और ऐसी बादशाही कि जिसमें कभी कमज़ोरी न आए। **(120)** सो (उसके बहकाने से) दोनों ने उस पेड़ से खा लिया, तो उन दोनों के सतर "यानी जिस्म की छुपाने की जगहें" एक-दूसरे के सामने खुल गए, और (अपना बदन ढाँकने को) दोनों अपने ऊपर जन्नत के (पेड़ों के) पत्ते चिपकाने लगे, और आदम से अपने रब का क़ुसूर हो गया, सो ग़लती में पड़ गए। **(121)** फिर (जब उन्होंने माज़िरत की तो) उनको उनके रब ने (ज़्यादा) मक़बूल बना लिया, सो उनपर ज़्यादा तवज्जोह फ़रमाई और (हमेशा सीधे) रास्ते पर क़ायम रखा। **(122)** अल्लाह ने फ़रमाया कि दोनों के दोनों इस (जन्नत) से उतरो (और दुनिया में) ऐसी हालत से (जाओ) कि एक का दुश्मन एक होगा। फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत (का ज़रिया यानी रसूल या किताब) पहुँचे तो (तुममें) जो शख़्स मेरी (उस) हिदायत की इत्तिबा करेगा तो वह न (दुनिया में) गुमराह होगा और न (आख़िरत

(पृष्ठ 576 का शेष) **5.** यानी क़ब्र से ज़िन्दा होकर ऐसे न रहेंगे जैसे दुनिया में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के सामने टेढ़े रहते थे, कि तस्दीक़ न करते थे।

6. मुराद इससे मोमिन है कि सिफ़ारिश करने वालों को उसकी सिफ़ारिश के लिए इजाज़त होगी। और इस बारे में सिफ़ारिश करने वाले का बोलना अल्लाह तआ़ला को पसन्दीदा होगा, और काफ़िरों के लिए किसी को सिफ़ारिश की इजाज़त ही न होगी। पस नफ़ा न होना सिफ़ारिश न होने की वजह से है, इसमें मुँह मोड़ने वाले काफ़िरों को डराना है कि तुम तो शफ़ाअ़त से भी महरूम रहोगे।

1. यानी सब घमण्ड करने वालों और इनकारियों का घमण्ड व इनकार ख़त्म हो जाएगा।

2. मतलब यह है कि सारे क़ुरआन के मज़ामीन हमने साफ़-साफ़ बतलाए हैं।

3. यानी अगर पूरा असर न हो तो थोड़ा ही हो, और इसी तरह चन्द बार थोड़ा-थोड़ा जमा होकर काफ़ी मिक़दार (मात्रा) हो जाए, और किसी वक़्त मुसलमान हो जाएँ।

4. इसमें जो इल्म हासिल है उसके याद रहने की, और जो इल्म हासिल नहीं उसके हासिल होने की, और जो हासिल होने वाला नहीं है उसके हासिल न होने को ख़ैर समझने की और सब उलूम में अच्छी समझ की, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 580 पर)**

लि-म हशर्-तनी अअ्मा व क़द् कुन्तु बसीरा **(125)** क़ा-ल कज़ालि-क अतत्-क आयातुना फ़-नसीतहा व कज़ालिकल्-यौ-म तुन्सा **(126)** व कज़ालि-क नज्ज़ी मन् अस्-र-फ़ व लम् युअ्मिम्-बिआयाति रब्बिही, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अशद्दु व अब्क़ा **(127)** अ-फ़लम् यह्दि लहुम् कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिनल्-क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिउलिन्नुहा **(128)** ❖

व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्-रब्बि-क लका-न लिज़ामंव्-व अ-जलुम्-मुसम्मा **(129)** फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बि-हम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअि्श्शम्सि व क़ब्-ल ग़ुरूबिहा व मिन् आनाइल्लैलि फ़-सब्बिह् व अत्राफ़न्नहारि लअ़ल्ल-क तर्ज़ा **(130)** व ला तमुद्दन्-न ऐनै-क इला मा मत्तअ्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् ज़हर-तल्- हयातिद्दुन्या लि-नफ़्ति-नहुम् फ़ीहि, व रिज़्क़ु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व अब्क़ा **(131)** वअ्मुर् अह्ल-क बिस्सलाति वस्तबिर् अ़लैहा, ला नस्अलु-क रिज़्क़न्, नह्नु नर्ज़ुक़ु-क, वल्आ़क़ि-बतु लित्तक़्वा **(132)** व क़ालू लौ ला यअ्तीना बिआयतिम्-मिर्रब्बिही, अ-व लम् तअ्तिहिम् बय्यि-नतु मा फ़िस्सुहुफ़िल्-ऊला **(133)** व लौ अन्ना अह्लक्नाहुम् बि-अ़ज़ाबिम् मिन् क़ब्लिही लक़ालू रब्बना लौ ला अर्सल्-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ़ आयाति-क मिन् क़ब्लि अन् नज़िल्-ल व नख़्ज़ा **(134)** क़ुल् कुल्लुम् मु-तरब्बिसुन् फ़-तरब्बसू फ़-सतअ्लमू-न मन् अस्हाबुस्- सिरातिस्- सविय्यि व मनिह्तदा **(135)** ❖

نَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ
كُنْتُ بَصِيْرًا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ
تُنْسٰى ۝ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ۝ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ
مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي
النُّهٰى ۝ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ۝
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ
وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
تَرْضٰى ۝ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ
زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝
وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ
نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ
اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ
بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ
اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ۝ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ
فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ۝

में) शक़ी ''यानी बदबख़्त और महरूम'' होगा। **(123)** और जो शख़्स मेरी (इस) नसीहत से मुँह मोड़ेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा,[1] और क़ियामत के दिन हम उसको अन्धा (करके क़ब्र से) उठाएँगे। **(124)** वह (ताज्जुब से) कहेगा कि ऐ मेरे रब! आपने मुझको अन्धा (करके) क्यों उठाया, मैं तो (दुनिया में) आँखो वाला था। **(125)** इरशाद होगा कि ऐसा ही (तुझसे अ़मल हुआ था, और यह कि) तेरे पास हमारे अहकाम पहुँचे थे फिर तूने उनका कुछ ख़्याल न किया और ऐसा ही आज तेरा कुछ ख़्याल न किया जाएगा। **(126)** और इसी तरह (हर) उस शख़्स को हम (अ़मल के मुनासिब) सज़ा देंगे जो (इताअ़त की) हद से गुज़र जाए और अपने परवर्दिगार की आयतों पर ईमान न लाए, और वाक़ई आख़िरत का अ़ज़ाब है बड़ा सख़्त और बड़ा देर तक रहने वाला। **(127)** क्या उन लोगों को (अब तक) इससे भी हिदायत नहीं हुई कि हम उनसे पहले बहुत-से गिरोहों को हलाक कर चुके हैं, कि उन (में से बाज़) के रहने के मक़ामात में ये लोग भी चलते (फिरते) हैं, इसमें तो समझ वालों के लिए (काफ़ी) दलीलें मौजूद हैं।[2] **(128)** ❖

और अगर आपके रब की तरफ़ से एक बात पहले से फ़रमाई हुई न होती और (अ़ज़ाब के लिए) एक मीयाद मुतैयन न होती। (कि वह क़ियामत का दिन है) तो (अ़ज़ाब) लाज़िमी तौर पर होता।[3] **(129)** सो (जब अ़ज़ाब का आना यक़ीनी है तो) आप उनकी (कुफ़्र भरी) बातों पर सब्र कीजिए और अपने रब की तारीफ़ के साथ (उसकी) तसबीह कीजिए, (इसमें नमाज़ भी आ गई) सूरज निकलने से पहले (जैसे फ़ज्र की नमाज़) और उसके छुपने से पहले (जैसे ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ें) और रात के वक़्तों में (भी) तसबीह किया कीजिए (जैसे मग़्रिब व इशा की नमाज़ें) और दिन के शुरू व आख़िर में, ताकि (आपको जो सवाब मिले) आप (उससे) ख़ुश हों।[4] **(130)** और हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ आप आँख उठाकर न देखिए जिनसे हमने उन (काफ़िरों) के मुख़्तलिफ़ गिरोहों को आज़माइश के लिए फ़ायदा उठाने वाला बना रखा है कि वह (सिर्फ़) दुनियावी ज़िन्दगी की रौनक़ है,[5] और आपके रब का अ़तिया (जो आख़िरत में मिलेगा) इससे कहीं बेहतर और देरपा है।[6] **(131)** और अपने मुताल्लिक़ीन को (यानी ख़ानदान वालों को या मोमिनों को) भी नमाज़ का हुक्म करते रहिए और ख़ुद भी इसके पाबन्द रहिए,[7] हम आपसे (और दूसरों से) रोज़ी (कमवाना) नहीं चाहते, रोज़ी तो आपको हम देंगे,[8] और बेहतर अन्जाम तो परहेज़गारी ही का है। **(132)** और वे लोग (दुश्मनी और बैर के तौर पर) यूँ कहते हैं कि यह (रसूल) हमारे पास अपने रब के पास से (अपनी नुबुव्वत की) कोई निशानी क्यों नहीं लाते। (जवाब यह है कि) क्या उनके पास पहली किताबों के मज़ामीन का ज़ाहिर होना नहीं पहुँचा।[9] **(133)** और अगर हम उनको इस (कुरआन आने) से पहले (कुफ़्र की सज़ा में) किसी अ़ज़ाब से हलाक कर देते तो ये लोग (उज़्र के तौर पर यूँ) कहते कि ऐ हमारे रब! आपने हमारे पास (दुनिया में) कोई रसूल क्यों नहीं भेजा था, कि हम आपके अहकाम पर चलते इससे पहले कि हम (यहाँ ख़ुद) बेक़द्र हों और दूसरों की निगाह में रुस्वा हों। **(134)** आप कह दीजिए कि (हम) सब इन्तिज़ार कर रहे हैं, सो (थोड़ा) और इन्तिज़ार कर लो। अब जल्द ही तुमको (भी) मालूम हो जाएगा कि सही रास्ते वाले कौन हैं, और वह कौन है जो (मन्ज़िले) मक़सूद तक पहुँचा। **(135)** ❖

(पृष्ठ 578 का शेष) ये सब दुआ़एँ दाख़िल हैं। हासिल यह कि याद करने की तदबीरों में से जल्दी करने की तदबीर को छोड़ दीजिए और दुआ़ की तदबीर को इख़्तियार कीजिए।

5. यानी उसके कहने से कोई ऐसा काम मत कर बैठना कि जन्नत से बाहर किए जाओ।

6. कि उसके खाने से हमेशा ख़ुश और आबाद रहो।

1. यानी क़ियामत से पहले दुनिया और क़ब्र में। 'तंगी का जीना' क़ब्र में तो ज़ाहिर है कि क़ब्र काफ़िर पर तंग होगी और उसमें उसपर तरह-तरह से अ़ज़ाब होगा, और दुनिया में तंगी दिल के एतिबार से है, कि हर वक़्त दुनिया की हिर्स में तरक़्क़ी की फ़िक्र में, कमी के अन्देशे में बे-आराम रहता है, अगरचे कोई काफ़िर बेफ़िक्र भी हो लेकिन अक्सर की हालत यही है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 582 पर)**

सत्रहवाँ पारः इक़्त-र-ब लिन्नासि

21 सूरतुल्-अम्बिया-इ 73

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5154 अक्षर, 1187 शब्द 112 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इक़्त-र-ब लिन्नासि हिसाबुहुम् व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिम्-मुअ़्रिज़ून **(1)** मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम्-मिर्रब्बिहिम् मुह्दसिन् इल्लस्त-मअ़ूहु व हुम् यल्अ़बून **(2)** लाहि-यतन् क़ुलूबुहुम्, व अ-सर्रुन्-नज्वल्लज़ी-न ज़-लमू हल् हाज़ा इल्ला ब-शरुम्- मिस्लुकुम् अ-फ़तअ्तूनस्सिह्-र व अन्तुम् तुब्सिरून **(3)** क़ा-ल रब्बी यअ़्लमुल्क़ौ-ल फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि व हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम **(4)** बल् क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिम्-बलिफ़्तराहु बल् हु-व शाअ़िरुन् फ़ल्यअ्तिना बिआयतिन् कमा उर्सिलल्-अव्वलून **(5)** मा आम-नत् क़ब्लहुम् मिन् क़र्-यतिन् अह्लक्नाहा अ-फ़हुम् युअ्मिनून **(6)** व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् फ़स्अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्लमून **(7)** व मा जअ़ल्नाहुम् ज-सदल्-ला यअ्कुलूनत्तआ-म व मा कानू ख़ालिदीन **(8)** सुम्-म सदक़्नाहुमुल्- वअ़्-द फ़-अन्जैनाहुम् व मन्-नशा-उ व अह्लक्नल्- मुस्रिफ़ीन **(9)** ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् किताबन् फ़ीहि ज़िक्रुकुम्, अ-फ़ला तअ़्क़िलून **(10)** ❖

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۱﴾
مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَ
هُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۲﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ
تُبْصِرُوْنَ ﴿۳﴾ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؗ
وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۴﴾ بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ
افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚۖ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿۵﴾
مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ
يُؤْمِنُوْنَ ﴿۶﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ
فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۷﴾ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ
جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿۸﴾ ثُمَّ
صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا
الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۹﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۚ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً

सत्रहवाँ पारः इक़्त-र-ब लिन्नासि

21 सूरः अम्बिया 73

सूरः अम्बिया मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 112 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[1]उन (इनकार करने वाले) लोगों से उनका हिसाब (का वक़्त) नज़दीक आ पहुँचा,[2] और ये (अभी) ग़फ़लत (ही) में (पड़े हैं और) मुँह मोड़े हुए हैं। **(1)** उनके पास उनके रब की तरफ़ से जो ताज़ा नसीहत (उनके हाल के मुताबिक़) आती है, ये उसको ऐसे तरीक़े से सुनते हैं कि (उसके साथ) हँसी करते हैं। **(2)** (और) उनके दिल मुतवज्जह नहीं होते, और ये लोग यानी ज़ालिम (और काफ़िर) लोग (आपस में) चुपके-चुपके सरगोशी करते हैं कि यह (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) महज़ तुम जैसे एक (मामूली) आदमी हैं, तो क्या तुम फिर भी जादू (की बात सुनने को उन) के पास जाओगे, हालाँकि तुम जानते हो। **(3)** (पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने) फ़रमाया कि मेरा रब हर बात को (चाहे) आसमान में (हो) और (चाहे) ज़मीन में (हो) जानता है,[3] और वह ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है। **(4)** बल्कि (यूँ भी) कहा कि (यह कुरआन) परेशान ख़्यालात हैं, बल्कि उन्होंने (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने) इसको घड़ लिया है, बल्कि यह तो एक शायर (शख़्स) है,[4] (अगर वाक़ई यह रसूल हैं) तो इनको चाहिए कि हमारे पास कोई ऐसी (बड़ी) निशानी लाएँ जैसा कि पहले लोग रसूल बनाए गए। (और बड़े-बड़े मोजिज़े ज़ाहिर किए) **(5)** उनसे पहले कई बस्ती वाले जिनको हमने हलाक किया है, ईमान नहीं लाए, सो क्या ये लोग ईमान ले आएँगे। **(6)** और हमने आपसे पहले सिर्फ़ आदमियों ही को पैग़म्बर बनाया जिनके पास हम वह्य भेजा करते थे, सो (ऐ इनकारियो!) अगर तुमको (यह बात) मालूम न हो तो अहले किताब से मालूम कर लो। **(7)** और हमने उन (रसूलों) के लिए ऐसे जुस्से "यानी जिस्म" नहीं बनाए थे जो खाना न खाते हों (यानी फ़रिश्ता न बनाया था) और वे (हज़रात भी दुनिया में) हमेशा रहने वाले नहीं हुए।[5] **(8)** फिर हमने जो उनसे वायदा किया था उसको सच्चा किया, यानी उनको और जिन-जिनको (नजात देना) मन्ज़ूर हुआ हमने नजात दी और (इताअ़त) की हद से गुज़रने वालों को हलाक किया। **(9)** हम तुम्हारे पास ऐसी किताब भेज चुके हैं कि उसमें

(पृष्ठ 580 का शेष) 2. मुल्क शाम को जाते हुए मक्का वालों के रास्ते में उन क़ौमों में से बाज़ के ठिकाने आते थे।

3. ख़ुलासा यह कि कुफ़्र तो अ़ज़ाब को चाहता है लेकिन एक रुकावट से देरी हो रही है। पस उनका वह शुब्हा और अ़ज़ाब के न आने से दलील पकड़ना ग़लत है।

4. मतलब यह है कि आप अपनी तवज्जोह माबूदे हक़ीक़ी की तरफ़ रखिए, उनकी फ़िक्र न कीजिए।

5. इस मना करने से मक़सूद औरों को सुनाना है, कि जब गुनाहों से पाक और महफ़ूज़ के लिए यह मनाही है जिनमें एहतिमाल भी नहीं तो जो गुनाहों से महफ़ूज़ नहीं उनको तो इसका एहतिमाम क्योंकर ज़रूरी न होगा। और आज़माइश यह कि कौन एहसान मानता है और कौन नाफ़रमानी करता है।

6. कलाम का ख़ुलासा यह हुआ कि न उनके मुँह मोड़ने की तरफ़ ध्यान किया जाए न उनके साज़ो-सामान की तरफ़, सबका अन्जाम अ़ज़ाब है।

7. यानी ज़्यादा तवज्जोह के क़ाबिल ये चीज़ें हैं।

8. यानी असली मक़सूद कमाना नहीं, बल्कि दीन और बन्दगी हैं। कमाने की उसी हालत में इजाज़त या हुक्म है कि ज़रूरी बन्दगी में वह ख़लल डालने वाला न हो।

9. मतलब यह है कि क्या उनके पास कुरआन नहीं पहुँचा जिसकी पहले से शोहरत थी कि वह नुबुव्वत पर काफ़ी दलील है।

1. इस सूरः में ये मज़ामीन मिले-जुले हैं- आख़िरत की तहक़ीक़, नुबुव्वत की तहक़ीक़ और तौहीद की **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 584 पर)**

व कम् क़सम्ना मिन् क़र्-यतिन् कानत् ज़ालि-मतंव्-व अन्शअ्ना बअ्-दहा क़ौमन् आ-ख़रीन **(11)** फ़-लम्मा अ-हस्सू बअ्सना इज़ा हुम् मिन्हा यर्कुज़ून **(12)** ला तर्कुज़ू वर्जिअू इला मा उत्रिफ़्तुम् फ़ीहि व मसाकिनिकुम् लअ़ल्लकुम् तुस्अलून **(13)** क़ालू या वैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन **(14)** फ़मा ज़ालत् तिल्-क दअ्वाहुम् हत्ता जअ़ल्नाहुम् हसीदन् ख़ामिदीन **(15)** व मा ख़लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन **(16)** लौ अरद्ना अन् नत्तख़ि-ज़ लह्वल्-लत्त-ख़ज़्नाहु मिल्लदुन्ना इन् कुन्ना फ़ाअिलीन **(17)** बल् नक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि अ़लल्-बातिलि फ़-यद्मग़ुहू फ़-इज़ा हु-व ज़ाहिक़ुन्, व लकुमुल्-वैलु मिम्मा तसिफ़ून **(18)** व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मन् अ़िन्दहू ला यस्तक्बिरू-न अ़न् अ़िबादतिही व ला यस्तह्सिरून **(19)** युसब्बिहूनल्लै-ल वन्नहा-र ला यफ़्तुरून **(20)** अमित्त-ख़ज़ू आलि-हतम् मिनल्अर्ज़ि हुम् युन्शिरून **(21)** लौ का-न फ़ीहिमा आलि-हतुन् इल्लल्लाहु ल-फ़-स-दता फ़-सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-अ़र्शि अ़म्मा यसिफ़ून **(22)** ला युस्अलु अ़म्मा यफ़्अ़लु व हुम् युस्अलून **(23)** अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतन्, क़ुल् हातू बुर्हानकुम् हाज़ा ज़िक्रु मम्-मअि-य व ज़िक्रु मन् क़ब्ली, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमूनल्-हक़्-क़ फ़हुम् मुअ्रिज़ून **(24)** व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिन् इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फ़अ्बुदून **(25)**

وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿١١﴾ فَلَمَّا أَحَسُّوا بَأْسَنَا إِذَا هُمْ
مِنْهَا يَرْكُضُونَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَىٰ مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ
وَمَسَاكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُونَ ﴿١٣﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿١٤﴾
فَمَا زَالَتْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خَامِدِينَ ﴿١٥﴾
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿١٦﴾ لَوْ أَرَدْنَا
أَنْ نَتَّخِذَ لَهْوًا لَاتَّخَذْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا إِنْ كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٧﴾ بَلْ
نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَ
لَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾ وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿١٩﴾
يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ﴿٢٠﴾ أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً
مِنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنْشِرُونَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ
إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾
لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٢٣﴾ أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ
دُونِهِ آلِهَةً قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ هَٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَعِيَ
وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِي بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ
فَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ

तुम्हारी नसीहत (काफ़ी मौजूद) है, क्या फिर भी तुम नहीं समझते (और नहीं मानते)। **(10)** ❖

और हमने बहुत-सी बस्तियाँ जहाँ के रहने वाले ज़ालिम (यानी काफ़िर) थे, ग़ारत कर दीं, और उनके बाद दूसरी क़ौम पैदा कर दी। **(11)** सो जब उन्होंने हमारा अ़ज़ाब आता देखा तो उस (बस्ती) से भागना शुरू कर किया।[1] **(12)** भागो मत और अपने ऐश के सामान की तरफ़ और अपने मकानों की तरफ़ वापस चलो, शायद तुमसे कोई पूछे-पाछे।[2] **(13)** वे लोग (अ़ज़ाब नाज़िल होने के वक़्त) कहने लगे कि हाय हमारी कमबख़्ती! इसमें कोई शक नहीं कि हम लोग ज़ालिम थे।[3] **(14)** सो उनकी यही (चीख़) पुकार रही यहाँ तक कि हमने उनको ऐसा (नेस्तनाबूद) कर दिया, जिस तरह खेती कट गई हो और आग ठन्डी हो गई हो। **(15)** हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है उसको इस तौर पर नहीं बनाया कि हम बेफ़ायदा काम करने वाले हों।[4] **(16)** (और) अगर हमको मश्ग़ला ही बनाना मन्ज़ूर होता तो हम ख़ास अपने पास की चीज़ को मश्ग़ला बनाते,[5] अगर हमको यह करना होता। **(17)** बल्कि हम हक़ बात को बातिल पर फेंक मारते हैं, सो वह (हक़) उस (बातिल) का भेजा निकाल देता है, (यानी उसको मग़लूब कर देता है) सो वह (मग़लूब होकर) यकायक जाता रहता है,[6] और तुम्हारे लिए उस बात से बड़ी ख़राबी होगी जो तुम घड़ते हो। **(18)** और (हक़ तआ़ला की वह शान है कि) जितने कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं सब उसी के हैं, और (उनमें से) जो उसके (यानी अल्लाह तआ़ला के) नज़दीक (बड़े मक़बूल व मुक़र्रब) हैं, वे उसकी इबादत से शर्म नहीं करते और न ही थकते हैं। **(19)** (बल्कि) रात और दिन (अल्लाह की) तस्बीह करते हैं (किसी वक़्त) बन्द नहीं करते।[7] **(20)** क्या (बावजूद इन दलीलों के) उन लोगों ने अल्लाह के सिवा और माबूद बना रखे हैं, (ख़ासकर) ज़मीन (की चीज़ों में) से (जैसे पत्थर या खनिज पदार्थ के बुत) जो किसी को ज़िन्दा करते हों। **(21)** ज़मीन (में या) आसमान में अल्लाह तआ़ला के सिवा और माबूद (जिसका वजूद अपना ज़ाती हो) होता तो दोनों दरहम-बरहम "यानी उलट-पलट" हो जाते,[8] सो (इन तक़रीरों से साबित हुआ कि) अल्लाह मालिके अ़र्श उन चीज़ों से पाक है जो ये लोग बयान कर रहे हैं। **(22)** वह जो कुछ करता है उससे कोई पूछताछ नहीं कर सकता, और औरों से पूछताछ की जा सकती है। **(23)** क्या उस (ख़ुदा) को छोड़कर उन्होंने और माबूद बना रखे हैं, (उनसे) कहिए कि तुम (इस दावे पर) अपनी दलील पेश करो, यह मेरे साथ वालों की

(पृष्ठ 582 का शेष) तहक़ीक़। तौहीद और रिसालत की ताईद के लिए बाज़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के क़िस्से भी ज़िक्र हुए हैं।

2. यानी क़ियामत धीरे-धीरे नज़दीक होती जाती है।

3. सो तुम्हारी इन कुफ़्रिया बातों को भी जानता है और तुमको ख़ूब सज़ा देगा।

4. ख़ुलासा यह कि रसूल नहीं हैं।

5. पस अगर आपकी भी वफ़ात हो जाए तो नुबुव्वत में क्या ख़राबी लाज़िम आई। ग़रज़ यह कि जैसे पहले रसूल थे वैसे ही आप भी हैं। और ये लोग जिस तरह आपको झुठलाते हैं इसी तरह उन हज़रात को भी उस ज़माने के काफ़िरों ने झुठलाया।

1. ताकि अ़ज़ाब से बच जाएँ।

2. कि क्या गुज़री। मक़सद इससे छेड़ना और छींटा देना है कि न वह सामान रहा न वह मकान रहा न किसी हमदर्द का निशान रहा।

3. 'बेशक हम लोग ज़ालिम थे' का इक़रार इसलिए उनको नफ़ा देने वाला न हुआ कि अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को देखने के बाद होगा, जैसा कि फ़िरऔन का 'आमन्तु' यानी मैं ईमान लाया कहना डूबने का एहसास होने के वक़्त उसको फ़ायदेमन्द न हुआ।

4. बल्कि इनमें बहुत-सी हिक्मतें हैं, जिनमें सबसे बड़ी यह कि तौहीद पर दलालत है।

5. जैसे अपनी सिफ़ाते कमाल के देखने को।

6. यानी तौहीद की दलीलें जो उन बनाई हुई चीज़ों से हासिल होती हैं, शिर्क की पूरी तरह नफ़ी कर देती हैं, जिसकी मुख़ालिफ़ जानिब (विपरीत दिशा) का एहतिमाल ही नहीं रहता। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 586 पर)**

व क़ालुत्त-ख़ज़र्रह्मानु व-लदन् सुब्हानहू, बल् अिबादुम् मुक्रमून **(26)** ला यस्बिक़ूनहू बिल्क़ौलि व हुम् बिअम्रिही यअ्मलून **(27)** यअ्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला यश्फ़अू-न इल्ला लि-मनिर्तज़ा व हुम् मिन् ख़श्यतिही मुश्फ़िक़ून **(28)** व मंय्यक़ुल् मिन्हुम् इन्नी इलाहुम्-मिन् दूनिही फ़ज़ालि-क नज्ज़ीहि जहन्न-म, कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन **(29)** ❖

अ-व लम् यरल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नस्समावाति वल्अर्-ज़ कानता रत्क़न् फ़-फ़तक़्नाहुमा, व जअ़ल्ना मिनल्मा-इ कुल्-ल शैइन् हय्यिन्, अ-फ़ला युअ्मिनून **(30)** व जअ़ल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिहिम् व जअ़ल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल्-लअ़ल्लहुम् यह्तदून **(31)** व जअ़ल्नस्-समा-अ सक़्फ़म्-मह़्फ़ूज़ंव्-व हुम् अन् आयातिहा मुअ्रिज़ून **(32)** व हुवल्लज़ी ख़-लक़ल्लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्-क़-म-र, कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्यस्बहून **(33)** व मा जअ़ल्ना लि-ब-शरिम्-मिन् क़ब्लिकल्-ख़ुल्-द, अ-फ़इम्-मित्-त फ़हुमुल्-ख़ालिदून **(34)** कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ-क़तुल्-मौति, व नब्लूकुम् बिश्शर्रि वल्-ख़ैरि फ़ित्-नतन्, व इलैना तुर्जअ़ून **(35)** व इज़ा रआकल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवन्, अ-हाज़ल्लज़ी यज़्कुरु आलि-ह-तकुम्

الانبياء ٢١ — ٢٩٣ — اقترب ١٧

إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا ٱتَّخَذَ
ٱلرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ۗ سُبْحَٰنَهُۥ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُونَهُۥ
بِٱلْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِۦ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ
خَشْيَتِهِۦ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾ وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّىٓ إِلَٰهٌ مِّن
دُونِهِۦ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾
أَوَلَمْ يَرَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا أَنَّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ كَانَتَا
رَتْقًا فَفَتَقْنَٰهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ ٱلْمَآءِ كُلَّ شَىْءٍ حَىٍّ ۖ
أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلْنَا فِى ٱلْأَرْضِ رَوَٰسِىَ أَن تَمِيدَ
بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾
وَجَعَلْنَا ٱلسَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ ءَايَٰتِهَا
مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾ وَهُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ وَٱلشَّمْسَ
وَٱلْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِى فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن
قَبْلِكَ ٱلْخُلْدَ ۖ أَفَإِي۟ن مِّتَّ فَهُمُ ٱلْخَٰلِدُونَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ
ذَآئِقَةُ ٱلْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِٱلشَّرِّ وَٱلْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا
تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا رَءَاكَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا

منزل

किताब (यानी क़ुरआन) और मुझसे पहले लोगों की किताबें (यानी तौरात व इन्जील व ज़बूर) मौजूद हैं, बल्कि उनमें ज़्यादा वही हैं जो हक़ बात का यक़ीन नहीं करते, सो (इस वजह से) वे मुँह मोड़ रहे हैं। **(24)** और हमने आपसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसके पास हमने यह वह्य न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई माबूद (होने के लायक़) नहीं, पस मेरी (ही) इबादत किया करो। **(25)** और ये (मुश्रिक) लोग (यूँ) कहते हैं कि (ख़ुदा-ए-) रहमान ने (फ़रिश्तों को) औलाद बना रखा है, वह (अल्लाह तआ़ला इससे) पाक है बल्कि (वे फ़रिश्ते उसके) सम्मानित बन्दे हैं। **(26)** वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं कर सकते, और वे उसी के हुक्म के मुवाफ़िक़ अ़मल करते हैं। **(27)** (वे जानते हैं कि) अल्लाह तआ़ला उनके अगले-पिछले हालात को जानता है, और सिवाय उसके जिसके लिए (शफ़ाअ़त करने की) ख़ुदा तआ़ला की मरज़ी हो और किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते, और वे सब अल्लाह तआ़ला की हैबत से डरते (रहते) हैं। **(28)** और उनमें से जो शख़्स (मान लो यूँ) कहे कि मैं अ़लावा ख़ुदा के माबूद हूँ, सो हम उसको जहन्नम की सज़ा देंगे, (और) हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।[1] **(29)** ❖

क्या उन काफ़िरों को यह मालूम नहीं हुआ कि आसमान और ज़मीन (पहले) बन्द थे,[2] फिर हमने दोनों को (अपनी क़ुदरत से) खोल दिया,[3] और हमने (बारिश के) पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया है,[4] क्या (इन बातों को सुनकर) फिर भी ईमान नहीं लाते। **(30)** और हमने ज़मीन में इसलिए पहाड़ बनाए कि ज़मीन उन लोगों को लेकर हिलने (न) लगे, और हमने इस (ज़मीन) में खुले-खुले रास्ते बनाए ताकि वे लोग (उनके ज़रिये से) मन्ज़िले (मक़सूद) को पहुँच जाएँ। **(31)** और हमने (अपनी क़ुदरत से) आसमान को एक छत (की तरह) बनाया जो महफ़ूज़ है,[5] और ये लोग इस (आसमान के अन्दर) की (मौजूदा) निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं।[6] **(32)** और वह ऐसा है कि उसने रात और दिन और सूरज और चाँद बनाए (वे निशानियाँ यही हैं) हर एक एक- (एक) दायरे में तैर रहे हैं।[7] **(33)** और हमने आपसे पहले भी किसी बशर के लिए हमेशा रहना तजवीज़ नहीं किया, फिर अगर आपका इन्तिक़ाल हो जाए तो क्या ये लोग (दुनिया में) हमेशा-हमेशा को रहेंगे। **(34)** हर जानदार मौत का मज़ा चखेगा, और हम तुमको बुरी-भली (हालतों) से अच्छी तरह आज़माते हैं,[8] और (फिर इस ज़िन्दगी के ख़त्म पर) तुम सब हमारे पास चले आओगे। **(35)** और ये काफ़िर लोग जब

(पृष्ठ 584 का शेष) 7. जब उनकी यह हालत है तो आ़म मख़्लूक़ तो किस गिनती में है। पस इबादत के लायक़ वही है। और जब कोई दूसरा ऐसा नहीं है तो फिर उसका शरीक समझना कितनी बेअ़क़्ली है।

8. क्योंकि आ़दतन दोनों के इरादों और कामों में टकराव होता जिससे फ़साद लाज़िम है, लेकिन चूँकि फ़साद ज़ाहिर नहीं है इसलिए अनेक ख़ुदाओं का वजूद भी नहीं है।

1. यानी ख़ुदा का उनपर पूरा क़ाबू है जैसे और मख़्लूक़ात पर, फिर वे ख़ुदा की औलाद जिसके लिए ख़ुदा होना ज़रूरी है कैसे हो सकते हैं।

2. यानी न आसमान से बारिश होती थी न ज़मीन से कुछ पैदावार, इसी को बन्द होना फ़रमा दिया। चुनाँचे जिस ज़माने में बारिश नहीं होती और ज़मीन से कुछ पैदा नहीं होता, अब भी बन्द होते हैं।

3. कि आसमान से बारिश होने लगी और ज़मीन से नबातात (पेड़-पौधे और घास व सब्ज़ा वग़ैरह) उगने लगे।

4. चाहे ख़त्म होने के लिए हो, चाहे बाक़ी रहने के लिए। वास्ते से हो या बिला वास्ता।

5. यानी गिरने से भी महफ़ूज़ बनाया, टूटने से भी, शैतानों के ख़बरें चुराने से भी और यह महफ़ूज़ रहना लम्बे ज़माने तक रहेगा, हमेशा के लिए ऐसा नहीं है।

6. यानी उनमें ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते।

7. फ़लक (यानी आसमान) गोल चीज़ को कहते हैं। चूँकि सूरज चाँद की हरकत दायरों के अन्दर है, इसलिए इनके हरकत करने की जगह को फ़लक फ़रमा दिया, चाहे वह आसमान हो, आसमानों के दरमियान की फ़िज़ा हो या आसमान व ज़मीन के बीच की फ़िज़ा हो, या आसमान की मोटाई हो, इसके बारे में कोई क़तई वज़ाहत नहीं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 588 पर)**

व हुम् बिज़िक्रिर्रह्मानि हुम् काफ़िरून **(36)** ख़ुलिक़ल्-इन्सानु मिन् अ़-जलिन्, स-उरीकुम् आयाती फ़ला तस्तअ्जिलून **(37)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(38)** लौ यअ्-लमुल्लज़ी-न क-फ़रू ही-न ला यकुफ़्फ़ू-न अंव्वुजूहिहिमुन्ना-र व ला अ़न् ज़ुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सरून **(39)** बल् तअ्तीहिम् बग़्त-तन् फ़-तब्हतुहुम् फ़ला यस्ततीअू-न रद्दहा व ला हुम् युन्ज़रून **(40)** व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(41)** ❖

क़ुल् मंय्यक्ल-उकुम् बिल्लैलि वन्नहारि मिनर्रह्मानि, बल् हुम् अ़न् ज़िक्रि रब्बिहिम् मुअ्रिज़ून **(42)** अम् लहुम् आलि-हतुन् तम्नअुहुम् मिन् दूनिना, ला यस्ततीअू-न नस्-र अन्फ़ुसिहिम् व ला हुम् मिन्ना युस्हबून **(43)** बल् मत्तअ्ना हाउला-इ व आबा-अहुम् हत्ता ता-ल अ़लैहिमुल्- अ़ुमुरु, अ-फ़ला यरौ-न अन्ना नअ्तिल्-अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा, अ-फ़हुमुल्- ग़ालिबून **(44)** क़ुल् इन्नमा उन्ज़िरुकुम् बिल्वह्यि व ला यस्मअुस्-सुम्मुद्दुआ-अ इज़ा मा युन्ज़रून **(45)** व ल-इम्-मस्सत्हुम् नफ़्हतुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न या वैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन **(46)** व न-ज़अुल्-

هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِیْ یَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ
هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝۳۶ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۭ سَاُورِیْكُمْ اٰیٰتِیْ
فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝۳۷ وَیَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِیْنَ ۝۳۸ لَوْ یَعْلَمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا حِیْنَ لَا یَكُفُّوْنَ عَنْ
وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ۝۳۹
بَلْ تَاْتِیْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ رَدَّهَا وَ
لَا هُمْ یُنْظَرُوْنَ ۝۴۰ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَحَاقَ بِالَّذِیْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۴۱ ع
قُلْ مَنْ یَّكْلَؤُكُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۭ بَلْ هُمْ
عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝۴۲ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ
دُوْنِنَا ۭ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا
یُصْحَبُوْنَ ۝۴۳ بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰی طَالَ عَلَیْهِمُ
الْعُمُرُ ۭ اَفَلَا یَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِی الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ
اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝۴۴ قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْیِ ۫ۖ وَلَا یَسْمَعُ الصُّمُّ
الدُّعَآءَ اِذَا مَا یُنْذَرُوْنَ ۝۴۵ وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ
عَذَابِ رَبِّكَ لَیَقُوْلُنَّ یٰوَیْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِیْنَ ۝۴۶ وَنَضَعُ

منزل ٤

आपको देखते हैं तो बस आपसे हँसी करने लगते हैं, (और आपस में कहते हैं) कि क्या यही हैं जो तुम्हारे माबूदों का (बुराई से) ज़िक्र किया करते हैं, और (ख़ुद) ये लोग (ख़ुदा-ए-) रहमान के ज़िक्र पर इनकार (किया) करते हैं। **(36)** इनसान जल्दी ही (के ख़मीर) का बना हुआ है,[1] हम जल्द ही (वक़्त आने पर) तुमको अपनी (क़हर की) निशानियाँ (यानी सज़ायें) दिखाए देते हैं, पस तुम मुझसे जल्दी मत मचाओ। **(37)** और ये लोग कहते हैं कि यह वायदा किस वक़्त आएगा अगर तुम (अ़ज़ाब के आने की ख़बर में) सच्चे हो। **(38)** काश! इन काफ़िरों को उस वक़्त की ख़बर होती, जबकि ये लोग (उस) आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से, और न उनकी कोई हिमायत करेगा।[2] **(39)** बल्कि वह (आग तो) उनको एकदम से आ लेगी, सो उनको बदहवास कर देगी, फिर न उसके हटाने की उनको क़ुदरत होगी और न उनको मोहलत दी जाएगी। **(40)** और आपसे पहले जो पैग़म्बर हो गुज़रे हैं उनके साथ भी (काफ़िरों की तरफ़ से) मज़ाक़ और हँसी उड़ाना किया गया था, सो जिन लोगों ने हँसी-मज़ाक़ किया था, उनपर वह (अ़ज़ाब) आ ही पड़ा जिसके साथ वे मज़ाक़-ठट्ठा किया करते थे।[3] **(41)** ❖

(और यह भी उनसे) कह दीजिए कि वह कौन है जो रात और दिन में रहमान (के अ़ज़ाब) से तुम्हारी हिफ़ाज़त करता हो, बल्कि वे लोग अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरने वाले (ही) हैं। **(42)** क्या उनके पास हमारे सिवा और ऐसे माबूद हैं कि (ज़िक्र हुए अ़ज़ाब से) उनकी हिफ़ाज़त कर लेते हों, वे ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त की ताक़त नहीं रखते,[4] और न हमारे मुक़ाबले में कोई उनका साथ दे सकता है। **(43)** बल्कि हमने उनको और उनके बाप-दादाओं को (दुनिया का) ख़ूब सामान दिया, यहाँ तक कि उनपर (उसी हालत में) एक लम्बी मुद्दत गुज़र गई, क्या उनको यह नज़र नहीं आता कि हम (उनकी) ज़मीन को (इस्लामी फ़ुतूहात के ज़रिये) हर (चार) तरफ़ से (बराबर) घटाते (चले जाते) हैं, सो क्या ये लोग (उम्मीद रखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और ईमान वालों पर) ग़ालिब आएँगे। **(44)** आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ वह्य के ज़रिये से तुमको डराता हूँ और (यह) बहरे जिस वक़्त डराए जाते हैं पुकार सुनते ही नहीं। **(45)** और (उनकी बुलन्द हिम्मती की कैफ़ियत यह है कि) अगर उनको आपके रब के अ़ज़ाब का एक झोंका भी (ज़रा) लग जाए तो (यूँ) कहने लगें कि हाय हमारी कमबख़्ती वाक़ई हम ख़तावार थे। **(46)** और (वहाँ) क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ की

(पृष्ठ 586 का शेष) **8.** मतलब यह है कि ज़िन्दगी इसलिए दे रखी है कि देखें कैसे-कैसे अ़मल करते हैं।

1. यानी जैसे इसके बुनियादी ख़मीर और फ़ितरत में जल्दी है, इसी वास्ते ये लोग अ़ज़ाब जल्दी माँगते हैं और उसमें देर होने को अ़ज़ाब के न आने की दलील समझते हैं। लेकिन ऐ काफ़िरो! यह तुम्हारी ग़लती है, क्योंकि उसका वक़्त मुतैयन है, सो ज़रा सब्र करो।

2. यानी अगर उस मुसीबत का इल्म होता तो ऐसी बातें न बनाते।

3. पस इससे मालूम हुआ कि कुफ़्र अ़ज़ाब को वाजिब करने वाला है, अगर दुनिया में न आया तो आख़िरत में ज़रूर होगा।

4. जैसे उनको कोई तोड़ने-फोड़ने लगे तो अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते।

मवाज़िनल्-क़िस्-त लियौमिल्-क़ियामति फ़ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअन्, व इन् का-न मिस्क़ा-ल हब्बतिम्-मिन् ख़र्-दलिन् अतैना बिहा, व कफ़ा बिना हासिबीन (47) व ल-क़द् आतैना मूसा व हारूनल्-फ़ुर्क़ा-न व ज़ियाअंव्-व ज़िक्रल् लिल्मुत्तक़ीन (48) अल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व हुम् मिनस्सा-अ़ति मुश्फ़िक़ून (49) व हाज़ा ज़िक्रुम् मुबा-रकुन् अन्ज़ल्नाहु, अ-फ़अन्तुम् लहू मुन्किरून ◆ (50) ❖

व ल-क़द् आतैना इब्राही-म रुश्दहू मिन् क़ब्लु व कुन्ना बिही आ़लिमीन (51) इज़् क़ा-ल लिअबीहि व क़ौमिही मा हाज़िहित्तमासीलुल्लती अन्तुम् लहा आ़किफ़ून (52) क़ालू वजद्ना आबा-अना लहा आ़बिदीन (53) क़ा-ल ल-क़द् कुन्तुम् अन्तुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (54) क़ालू अजिअ्-तना बिल्हक़्क़ि अम् अन्-त मिनल्-लाअ़िबीन (55) क़ा-ल बर्-रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति वल्-अर्ज़िल्लज़ी फ़-त-रहुन्-न व अ-न अ़ला ज़ालिकुम् मिनश्-शाहिदीन (56) व तल्लाहि ल-अकीदन्-न अस्नामकुम् बअ़्-द अन् तुवल्लू मुद्बिरीन (57) फ़-ज-अ़-लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल्-लहुम् लअ़ल्लहुम् इलैहि यर्जिअून (58) क़ालू मन् फ़-अ़-ल हाज़ा बिआलि-हतिना इन्नहू लमिनज़्ज़ालिमीन (59) क़ालू समिअ़्ना फ़-तयंय्यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम (60) क़ालू फ़अ्तू बिही अ़ला

اقترب ١٧ ٢٩٥ الانبياء ٢١

الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ وَ
إِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا
حَاسِبِينَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً
وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُم
مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾ وَهَٰذَا ذِكْرٌ مُّبَارَكٌ أَنزَلْنَاهُ ۚ
أَفَأَنتُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ
مِن قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَالِمِينَ ﴿٥١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا
هَٰذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي أَنتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا
وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنتُمْ أَنتُمْ
وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنتَ
مِنَ اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَل رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
الَّذِي فَطَرَهُنَّ وَأَنَا عَلَىٰ ذَٰلِكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾ وَتَاللَّهِ
لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُم بَعْدَ أَن تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾ فَجَعَلَهُمْ
جُذَاذًا إِلَّا كَبِيرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿٥٨﴾ قَالُوا مَن
فَعَلَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٩﴾ قَالُوا سَمِعْنَا
فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَىٰ

منزل ٤

तराज़ू खड़ी करेंगे (और सबके आमाल का वज़न करेंगे)[1] सो किसी पर बिलकुल भी ज़ुल्म न होगा, और अगर (किसी का अ़मल) राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको (वहाँ) हाज़िर कर देंगे, और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।[2] (47) और हमने (आपसे पहले) मूसा और हारून को एक फ़ैसले की और रोशनी की और मुत्तक़ियों के लिए नसीहत की चीज़ (यानी तौरात) अ़ता फ़रमाई थी। (48) जो (मुत्तक़ी) अपने परवर्दिगार से बिन देखे डरते हैं, और वे लोग क़ियामत से (भी) डरते हैं। (49) और यह (क़ुरआन भी) बहुत ज़्यादा फ़ायदों वाली नसीहत (की किताब) है, जिसको हमने नाज़िल किया, तो क्या फिर भी तुम इसके इनकारी हो। ◆ (50) ❖

और हमने (उस मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने से) पहले इब्राहीम को उनकी (शान के मुनासिब) अ़क़्ल व दानिश अ़ता फ़रमाई थी, और हम उनको[3] ख़ूब जानते थे।[4] (51) (उनका वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी बिरादरी से फ़रमाया कि ये क्या (वाहियात) मूर्तियाँ हैं जिन (की इबादत) पर तुम जमे बैठे हो।[5] (52) वे लोग (जवाब में) कहने लगे कि हमने अपने बड़ों को उनकी इबादत करते हुए देखा है। (53) (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने) कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप-दादे (उनको इबादत के लायक़ समझने में) खुली ग़लती में हो। (54) वे कहने लगे कि क्या तुम (अपने नज़दीक) सच्ची बात (समझकर) हमारे सामने पेश कर रहे हो, या दिल्लगी कर रहे हो। (55) (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि नहीं, (दिल्लगी नहीं) बल्कि तुम्हारा रब्बे (हक़ीक़ी जो इबादत के लायक़ है) वह है जो तमाम आसमानों और ज़मीन का रब है, जिसने उन सबको पैदा (भी) किया और मैं इस (दावे) पर दलील भी रखता हूँ। (56) और ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारे उन बुतों की गत ऐसी बनाऊँगा जब तुम (उनके पास से) पीठ फेर कर चले जाओगे।[6] (57) तो (उनके चले जाने के बाद) उन्होंने उन (बुतों) को (कुल्हाड़ी वग़ैरह से) टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवाय उनके एक बड़े (बुत) के, कि शायद वे लोग इब्राहीम की तरफ़ (दरियाफ़्त करने के लिए) रुजू करें।[7] (58) कहने लगे कि यह हमारे बुतों के साथ किसने किया है, इसमें कोई शक नहीं कि उसने बड़ा ही ग़ज़ब किया। (59) (बाज़ों ने) कहा कि हमने एक नौजवान आदमी को जिसको इब्राहीम करके पुकारा जाता है

---

1. 'मवाज़ीन' का बहुसंख्या में लाना या तो इस वजह से है कि हर शख़्स के लिए अलग मीज़ाने अ़मल (अ़मल की तराज़ू) हो, या चूँकि एक ही तराज़ू में बहुत-से लोगों के आमाल का वज़न होगा इसलिए वह एक ही अनेक के क़ायम-मक़ाम होगी।

2. शुरू सूरः से यहाँ तक तौहीद और रिसालत का ज़्यादा और उसके ज़िम्न में उसके ताल्लुक़ से रसूलों के मुख़ालिफ़ों का आख़िरत में उमूमन अ़ज़ाब पाना और बाज़ का दुनिया में भी हलाक होना ज़िक्र हुआ था, आगे बाज़ हज़राते अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के क़िस्से बयान फ़रमाकर इन्हीं मज़ामीन की ताईद फ़रमाते हैं। रिसालत की ताईद तो उनके रसूल होने से ज़ाहिर है और तौहीद की ताईद उनके तौहीद की तरफ़ बुलाने वाले होने से, और अ़ज़ाब दिए जाने की ताईद उनकी बाज़ उम्मतों की हलाकत से।

3. यानी उनके इल्मी और अ़मली कमालात को।

4. यानी वह बड़े कामिल थे, सलाहियत व इस्तेदाद के एतिबार से अ़क़्ल व दानिश दिए जाने से पहले और ज़ाहिर व मौजूदा हालत में अ़क़्ल व दानिश दिए जाने के बाद।

5. यानी ये हरगिज़ इबादत के क़ाबिल नहीं।

6. ताकि उनका आ़जिज़ और मजबूर होना सामने आ जाए।

7. बड़ा बुत जो जुस्से में या उन लोगों की नज़रों में इ़ज़्ज़त वाला होने में बड़ा था, उसको छोड़ दिया, जिससे एक क़िस्म का मज़ाक़ उड़ाना मक़सूद था, कि एक के सही सालिम रहने और दूसरों के टूट जाने से दूसरों को (शेष तफ़सीर पृष्ठ 592 पर)

अअ्युनिन्नासि लअ़ल्लहुम् यश्हदून **(61)** क़ालू अ-अन्-त फ़-अ़ल्-त हाज़ा बिआलि-हतिना या इब्राहीम **(62)** क़ा-ल बल् फ़-अ़-लहू कबीरुहुम् हाज़ा फ़स्अलूहुम् इन् कानू यन्तिक़ून **(63)** फ़-र-जअू इला अन्फ़ुसिहिम् फ़क़ालू इन्नकुम् अन्तुमुज़्ज़ालिमून **(64)** सुम्-म नुकिसू अ़ला रुऊसिहिम् ल-क़द् अ़लिम्-त मा हाउला-इ यन्तिक़ून **(65)** क़ा-ल अ-फ़तअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुकुम् शैअंव्-व ला यज़ुर्रुकुम् **(66)** उफ़्फ़िल्-लकुम् व लिमा तअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि, अ-फ़ला तअ़्क़िलून **(67)** क़ालू हर्रिक़ूहु वन्सुरू आलि-ह-तकुम् इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन **(68)** क़ुल्ना या नारु कूनी बर्दंव्-व सलामन् अ़ला इब्राहीम **(69)** व अरादू बिही कैदन् फ़-जअ़ल्नाहुमुल्-अख़्सरीन **(70)** व नज्जैनाहु व लूतन् इलल्-अर्ज़िल्लती बारक्ना फ़ीहा लिल्आ़लमीन **(71)** व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब नाफ़ि-लतन्, व कुल्लन् जअ़ल्ना सालिहीन **(72)** व जअ़ल्नाहुम् अ-इम्म-तंय्यह्दू-न बिअम्रिना व औहैना इलैहिम् फ़िअ़्लल्-ख़ैराति व इक़ामस्सलाति व ईताअज़्ज़काति व कानू लना आ़बिदीन **(73)** व लूतन् आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मंव्-व नज्जैनाहु मिनल्-क़र्यतिल्लती कानत् तअ़्मलुल्-ख़बाइ-स, इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़ासिक़ीन **(74)** व अद्ख़ल्नाहु फ़ी रह्मतिना, इन्नहू

أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿٦١﴾ قَالُوٓا ءَأَنتَ فَعَلْتَ هَٰذَا
بِـَٔالِهَتِنَا يَٰٓإِبْرَٰهِيمُ ﴿٦٢﴾ قَالَ بَلْ فَعَلَهُۥ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا فَسْـَٔلُوهُمْ
إِن كَانُوا يَنطِقُونَ ﴿٦٣﴾ فَرَجَعُوٓا إِلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوٓا إِنَّكُمْ أَنتُمُ
الظَّٰلِمُونَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هَٰٓؤُلَآءِ
يَنطِقُونَ ﴿٦٥﴾ قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكُمْ
شَيْـًٔا وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ أُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا حَرِّقُوهُ وَٱنصُرُوٓا ءَالِهَتَكُمْ إِن كُنتُمْ
فَٰعِلِينَ ﴿٦٨﴾ قُلْنَا يَٰنَارُ كُونِى بَرْدًا وَسَلَٰمًا عَلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٦٩﴾ وَ
أَرَادُوا بِهِۦ كَيْدًا فَجَعَلْنَٰهُمُ ٱلْأَخْسَرِينَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنَٰهُ وَلُوطًا
إِلَى ٱلْأَرْضِ ٱلَّتِى بَٰرَكْنَا فِيهَا لِلْعَٰلَمِينَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ
وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صَٰلِحِينَ ﴿٧٢﴾ وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً
يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ ٱلْخَيْرَٰتِ وَإِقَامَ ٱلصَّلَوٰةِ
وَإِيتَآءَ ٱلزَّكَوٰةِ وَكَانُوا لَنَا عَٰبِدِينَ ﴿٧٣﴾ وَلُوطًا ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا
وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَٰهُ مِنَ ٱلْقَرْيَةِ ٱلَّتِى كَانَت تَّعْمَلُ ٱلْخَبَٰٓئِثَ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَٰسِقِينَ ﴿٧٤﴾ وَأَدْخَلْنَٰهُ فِى رَحْمَتِنَآ إِنَّهُۥ
مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٧٥﴾ وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ

इन (बुतों) का (बुराई से) तज़किरा करते सुना है। **(60)** (फिर) वे लोग बोले, (जब यह बात है) तो अच्छा उसको सब आदमियों के सामने हाज़िर करो ताकि वे लोग (इस इक़रार के) गवाह हो जाएँ। **(61)** (ग़रज़ वह सबके सामने आए) उन लोगों ने कहा, क्या हमारे बुतों के साथ तुमने यह हरकत की है ऐ इब्राहीम! **(62)** उन्होंने (जवाब में) कहा नहीं! बल्कि उनके इस बड़े (गुरू) ने की, सो उन (ही) से पूछ लो (ना) अगर ये बोलते हों।[1] **(63)** इसपर वे लोग अपने जी में सोचे फिर (आपस में) कहने लगे कि हक़ीक़त में तुम लोग ही नाहक़ पर हो, (कि जो ऐसा आ़जिज़ हो वह क्या माबूद होगा)। **(64)** फिर (शर्मिन्दगी के मारे) अपने सरों को झुका लिया (और बोले कि) ऐ इब्राहीम! तुमको तो मालूम ही है कि ये (बुत कुछ) बोलते नहीं। **(65)** (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, तो क्या तुम खुदा को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो जो तुमको न कुछ नफ़ा पहुँचा सके और न कुछ नुक़सान पहुँचा सके। **(66)** तुफ़ "यानी लानत व अफ़सोस" है तुमपर (कि बावजूद हक़ सामने आ जाने के बातिल पर जमे हुए हो) और उनपर (भी) जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते। **(67)** (आपस में) वे लोग कहने लगे कि इनको (आग में) जला दो, और अपने माबूदों का (इनसे) बदला लो, अगर तुमको (कुछ) करना है। **(68)** (ग़रज़ उन्होंने मुत्तफ़िक़ होकर आग में डाल दिया, उस वक़्त) हमने आग को हुक्म दिया कि ऐ आग! तू इब्राहीम के हक़ में ठन्डी और तकलीफ़ न पहुँचाने वाली बन जा।[2] **(69)** और उन लोगों ने उनके साथ बुराई करना चाहा था, सो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम कर दिया।[3] **(70)** और हमने उनको (यानी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को) और (उनके भतीजे) लूत (अ़लैहिस्सलाम) को ऐसे मुल्क (यानी मुल्क शाम) की तरफ़ भेजकर बचा लिया जिसमें हमने दुनिया जहान वालों के लिए (ख़ैर व) बरकत रखी है।[4] **(71)** और (हिजरत के बाद) हमने उनको इसहाक़ (बेटा) और याकूब (पोता) अ़ता किया, और हमने उन सबको (आला दर्जे का) नेक बनाया।[5] **(72)** और हमने उनको मुक़्तदा "यानी पेशवा और रहनुमा" बनाया, कि हमारे हुक्म से (मख़्लूक़ को) हिदायत किया करते थे, और हमने उनके पास नेक कामों के करने का और (ख़ासकर) नमाज़ की पाबन्दी का और ज़कात अदा करने का हुक्म भेजा, और वे (हज़रात) हमारी इबादत (ख़ूब) किया करते थे। **(73)** और लूत को हमने हिक्मत और इल्म (जो अम्बिया की शान के मुनासिब होता है) अ़ता फ़रमाया, और हमने उनको उस बस्ती से नजात दी जिसके रहने वाले गन्दे (गन्दे) काम किया करते थे, बेशक वे लोग बड़े बदज़ात बदकार थे। **(74)** और हमने उसको (यानी लूत को) अपनी रहमत में दाख़िल किया, (क्योंकि) बेशक वह बड़े नेकों में थे। **(75)** ❖

(पृष्ठ 590 का शेष) वहम व गुमान होता है कि कहीं उसने तो सबकी ख़बर नहीं ली। पस शुरू में तो शक व गुमान है फिर जब वे लोग काँट-छाँट करने वाले की तहक़ीक़ करेंगे और इस बड़े बुत पर अन्देशा भी न करेंगे तो उनकी तरफ़ से इसके आ़जिज़ होने का भी एतिराफ़ हो जाएगा, और हुज्जत भी पूरी हो जाएगी। पस इन्तिहा के तौर पर यह इल्ज़ाम देना और लाजवाब करना है और मक़सूद मुश्तरक उनमें से बाज़ के इक़रार और बाज़ के इनकार से आ़जिज़ होना साबित करना है। ग़रज़ इस मस्लहत से एक को छोड़कर बाक़ी सबको तोड़ दिया।

1. अगर यह काम करने और बोलने की सूरत बातिल है तो उनका आ़जिज़ होना तुम्हारे नज़दीक भी मुसल्लम हो गया फिर उनके मुताल्लिक़ ख़ुदा होने का एतिक़ाद रखने की क्या वजह।

2. यानी न जलाने वाली रह कि गर्मी की तकलीफ़ पहुँचे और न बहुत ठंडी हो जा कि ठंडक की तकलीफ़ पहुँचे, बल्कि दरमियानी हवा की तरह बन जा, चुनाँचे ऐसा ही हो गया।

3. कि उनका मक़सद हासिल न हुआ बल्कि और उसके उलट यह कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का हक़ पर होना और ज़्यादा साबित हो गया। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 594 पर)**

मिनस्-सालिहीन **(75)** ❖

व नूहन् इज़् नादा मिन् क़ब्लु फ़स्त-जब्ना लहू फ़नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल् कर्बिल्-अ़ज़ीम **(76)** व नसर्नाहु मिनल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़-अग़रक़्नाहुम् अज्मअ़ीन **(77)** व दावू-द व सुलैमा-न इज़् यह्कुमानि फ़िल्हर्सि इज़् न-फ़शत् फ़ीहि ग़-नमुल्-क़ौमि व कुन्ना लिहुक्मिहिम् शाहिदीन **(78)** फ़-फ़ह्हम्नाहा सुलैमा-न व कुल्लन् आतैना हुक्मंव्-व अ़िल्मंव्-व सख़्ख़र्ना म-अ़ दावूदल्-जिबा-ल युसब्बिह्-न वत्तै-र, व कुन्ना फ़ाअ़िलीन **(79)** व अ़ल्लम्नाहु सन्अ़-त लबूसिल्-लकुम् लितुह्सि-नकुम् मिम्-बअ्सिकुम् फ़-हल् अन्तुम् शाकिरून **(80)** व लिसुलैमानर्री-ह आ़सि-फ़तन् तज्री बिअम्रिही इलल्-अर्ज़िल्लती बारक्ना फ़ीहा, व कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आ़लिमीन **(81)** व मिनश्- शयातीनि मंय्यग़ूसू-न लहू व यअ़्मलू-न अ़-मलन् दू-न ज़ालि-क व कुन्ना लहुम् हाफ़िज़ीन **(82)** व अय्यू-ब इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्-ज़ुर्रु व अन्-त अर्हमुर्-राहिमीन **(83)** फ़स्त-जब्ना लहू फ़-कशफ़्ना मा बिही मिन् ज़ुर्रिंव्-व आतैनाहु अह्लहू व मिस्लहुम् म-अ़हुम् रह्म-तम् मिन् अ़िन्दिना व ज़िक्रा लिल्आ़बिदीन **(84)** व इस्माअ़ी-ल व इद्री-स व ज़ल्किफ़्लि, कुल्लुम् मिनस्साबिरीन **(85)** व अद्ख़ल्नाहुम् फ़ी रह्मतिना, इन्नहुम् मिनस्सालिहीन **(86)** व ज़न्नूनि इज़् ज़-ह-ब मुग़ाज़िबन् फ़-ज़न्-न अल्लन् नक़्दि-र अ़लैहि फ़नादा फ़िज़्ज़ुलुमाति

الانبیآء ٢١ ٢٩٧ اقترب ١٧

فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ
نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾
فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ؗ وَّسَخَّرْنَا مَعَ
دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ
صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ
شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى
الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾ وَ
مِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ
ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ
مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا
مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ
وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ
اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ

منزل ٤

और नूह (अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से का तज़किरा कीजिए) जबकि उस (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने) से (भी) पहले उन्होंने दुआ़ की, सो हमने उनकी दुआ़ क़बूल की और उनको और उनके पैरोकारों को बड़े भारी ग़म से नजात दी।[1] **(76)** और (नजात इस तरह दी कि) हमने ऐसे लोगों से उनका बदला लिया जिन्होंने हमारे हुक्मों को (जो कि नूह अ़लैहिस्सलाम लाए थे) झूठा बताया था, बेशक वे लोग बहुत बुरे थे, इसलिए उन सबको हमने ग़र्क़ कर दिया। **(77)** और दाऊद और सुलैमान (के क़िस्से का तज़किरा कीजिए) जबकि दोनों किसी खेत के बारे में फ़ैसला करने लगे, जबकि (उस खेत में) कुछ लोगों की बकरियाँ रात के वक़्त (जा घुसीं और) उसको चर गईं, और हम उस फ़ैसले को जो लोगों के मुताल्लिक़ हुआ था, देख रहे थे। **(78)** सो हमने उस (फ़ैसले) की समझ सुलैमान को दे दी, और (यूँ) हमने दोनों को हिक्मत और इल्म अ़ता फ़रमाया था,[2] और हमने दाऊद के साथ ताबे कर दिया था पहाड़ों को, कि (उनकी तस्बीह के साथ) वे तस्बीह किया करते थे, और परिन्दों को भी और (दरअसल उन कामों के) करने वाले हम थे। **(79)** और हमने उनको ज़िरह (बनाने) का हुनर तुम लोगों के (नफ़े के) वास्ते सिखलाया, ताकि वह (ज़िरह) तुमको (लड़ाई में) एक-दूसरे की मार से बचाए, सो तुम (इस नेमत का) शुक्र करोगे भी (या नहीं)? **(80)** और हमने सुलैमान का ज़ोर की हवा को ताबे बना दिया था कि वह उनके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ को चलती जिसमें हमने बरकत रखी है, (मुराद मुल्क शाम है)[3] और हम हर चीज़ को जानते हैं। **(81)** और बाज़े शैतान (यानी जिन्न) ऐसे थे कि उनके (यानी सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के) लिए (दरियाओं में) डुबकी लगाते थे (ताकि मोती निकाल कर दें) और वे और (और) काम भी इसके अ़लावा किया करते थे, और उनके सँभालने वाले हम थे। **(82)** और अय्यूब (का तज़किरा कीजिए) जबकि उन्होंने (सख़्त बीमारी में मुब्तला होने के बाद) अपने रब को पुकारा कि मुझको यह तकलीफ़ पहुँच रही है, और आप सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान हैं। **(83)** हमने उनकी दुआ़ क़बूल की और उनको जो तकलीफ़ थी उसको दूर कर दिया, और (बिला दरख़्वास्त) हमने उनको उनका कुन्बा अ़ता फ़रमा दिया, और उनके साथ (गिनती में) उनके बराबर और भी अपनी ख़ास रहमत से, और इबादत करने वालों के लिए यादगार रहने के लिए (अ़ता फ़रमाए)[4] **(84)** और इसमाईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल (का तज़किरा कीजिए)[5] ये सब (अल्लाह के अहकाम पर) साबित-क़दम रहने वाले लोगों में से थे। **(85)** और हमने उनको अपनी (ख़ास) रहमत में दाख़िल कर लिया था, बेशक ये पूरी सलाहियत वालों में से थे। **(86)** और

(पृष्ठ 592 का शेष) 4. दुनियावी भी कि अनाज और मेवे व फल वग़ैरह कसरत से पैदा होते हैं और दूसरे लोग भी इससे फ़ायदा उठाते हैं। और दीनी भी कि कसरत से वहाँ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम हुए जिनकी शरीअ़तों की बरकत दुनिया में दूर-दूर तक फैली। यानी उन्होंने मुल्क शाम की तरफ़ अल्लाह के हुक्म से हिजरत फ़रमाई।

5. आला दर्जे की नेकी से मुराद गुनाहों से महफ़ूज़ होना है जो इनसान में नुबुव्वत की ख़ुसूसियात में से है। पस मुराद यह है कि उन सबको नबी बनाया।

1. उस भारी ग़म से जो झुठलाने और काफ़िरों के तकलीफ़ देने की वजह से उनको पेश आया था।

2. मुक़द्दमे की सूरत यह थी कि जिस क़द्र खेत का नुक़सान हुआ था उसकी लागत बकरियों की क़ीमत के बराबर थी। दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने ज़िमान में खेत वाले को वे बकरियाँ दिलवा दीं, और असल शरई क़ानून का यही तक़ाज़ा था, जिसमें मुद्दई या जिसपर दावा किया गया, उसकी रज़ामन्दी भी शर्त नहीं, मगर चूँकि इसमें बकरी वालों का बिलकुल ही नुक़सान होता था इसलिए सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बतौर सुलह के जो मौक़ूफ़ थी दोनों फ़रीक़ों के राज़ी होने पर, यह सूरत जिसमें दोनों की सहूलत और रियायत थी तजवीज़ फ़रमाई कि चन्द दिन के लिए तो बकरियाँ खेत वाले को दे दी जाएँ कि उनके दूध वग़ैरह से अपना गुज़र करे और बकरी वाले को वह खेत सुपुर्द किया जाए कि उसकी ख़िदमत पानी देने वग़ैरह से करें। जब खेत पहली हालत पर आ जाए तो खेत व बकरियाँ अपने-अपने मालिकों को दे दी जाएँ। पस इससे मालूम हो गया कि दोनों फ़ैसलों में कोई टकराव नहीं, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 596 पर)**

अल्-ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन **(87)** फ़स्त-जब्ना लहू व नज्जैनाहु मिनल्-ग़म्मि, व कज़ालि-क नुन्जिल्-मुअ्मिनीन **(88)** व ज़-करिय्या इज़् नादा रब्बहू रब्बि ला तज़र्नी फ़र्दंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-वारिसीन **(89)** फ़स्त-जब्ना लहू व व-हब्ना लहू यह्या व अस्लह्ना लहू ज़ौजहू, इन्नहुम् कानू युसारिअू-न फ़िल्ख़ैराति व यद्अूनना र-ग़बंव्-व र-हबन्, व कानू लना ख़ाशिअीन **(90)** वल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना व जअ़ल्नाहा वब्नहा आयतल् लिल्आ़लमीन **(91)** इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-दतंव्-व अ-न रब्बुकुम् फ़अ्बुदून **(92)** व त-क़त्तअू अम्रहुम् बैनहुम्, कुल्लुन् इलैना राजिअून **(93)** ❖

फ़-मंय्यअ्मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला कुफ़रा-न लिसअ्यिही व इन्ना लहू कातिबून **(94)** व हरामुन् अ़ला क़र्यतिन् अह्लक्नाहा अन्नहुम् ला यर्जिअून **(95)** हत्ता इज़ा फ़ुतिहत् यअ्जूजु व मअ्जूजु व हुम् मिन् कुल्लि ह-दबिंय्-यन्सिलून **(96)** वक़्त-रबल्-वअ्दुल्हक़्क़ु फ़-इज़ा हि-य शाख़ि-सतुन् अब्सारुल्लज़ी-न क-फ़रू, या वैलना क़द् कुन्ना फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन् हाज़ा बल् कुन्ना ज़ालिमीन **(97)** इन्नकुम् व मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ह-सबु जहन्न-म, अन्तुम् लहा वारिदून **(98)** लौ का-न हाउला-इ आलि-हतम् मा व-रदूहा, व कुल्लुन् फ़ीहा ख़ालिदून **(99)** लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्-व हुम् फ़ीहा ला

أَن لَّن نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا أَنتَ
سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ
مِنَ الْغَمِّ ۚ وَكَذَٰلِكَ نُنجِي الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ
رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ
وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَا لَهُ زَوْجَهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسَارِعُونَ
فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا لَنَا خَاشِعِينَ ﴿٩٠﴾
وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِن رُّوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا
وَابْنَهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿٩١﴾ إِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ ۖ كُلٌّ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ﴿٩٣﴾
فَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِ
وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ﴿٩٤﴾ وَحَرَامٌ عَلَىٰ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾
حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُم مِّن كُلِّ حَدَبٍ
يَنسِلُونَ ﴿٩٦﴾ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ
الَّذِينَ كَفَرُوا يَا وَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا بَلْ كُنَّا
ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾ إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ
أَنتُمْ لَهَا وَارِدُونَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هَٰؤُلَاءِ آلِهَةً مَّا وَرَدُوهَا ۖ وَ

मछली वाले (पैग़म्बर यानी यूनुस अ़लैहिस्सलाम का तज़किरा कीजिए) जबकि वह अपनी क़ौम से (जबकि वे ईमान न लाए) ख़फ़ा होकर चल दिए,[1] और उन्होंने यह समझा कि हम उनपर (इस चले जाने में) कोई पकड़ न करेंगे,[2] पस उन्होंने अन्धेरों में पुकारा कि (इलाही) आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप (सब कमियों से) पाक हैं, मैं बेशक क़ुसूरवार हूँ।[3] (87) सो हमने उनकी दुआ़ क़बूल की और हमने उनको उस घुटन से नजात दी,[4] और हम इसी तरह (और) ईमान वालों को (भी मुसीबत और परेशानी से) नजात दिया करते हैं। (88) और ज़करिया (का तज़किरा कीजिए) जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा, ऐ मेरे रब! मुझको लावारिस मत रखियो, (यानी मुझको बेटा दे दीजिए कि मेरा वारिस हो) और सब वारिसों से बेहतर आप ही हैं। (89) सो हमने उनकी दुआ़ क़बूल कर ली और हमने उनको यह्या (बेटा) अ़ता फ़रमाया और उनकी ख़ातिर उनकी बीवी को (जो कि बाँझ थीं औलाद के) क़ाबिल कर दिया, ये सब नेक कामों में दौड़ते थे, और उम्मीद व ख़ौफ़ के साथ हमारी इबादत किया करते थे, और हमारे सामने दबकर रहते थे।[5] (90) और उनका (यानी बीबी मरियम अ़लैहस्सलाम का भी तज़किरा कीजिए) जिन्होंने अपनी आबरू को (मर्दों से) बचाया (निकाह से भी और नाजायज़ से भी) फिर हमने उनमें (जिबराईल अ़लैहिस्सलाम के वास्ते से) अपनी रूह फूँक दी और हमने उनको और उनके बेटे (ईसा अ़लैहि.) को दुनिया जहान वालों के लिए (अपनी क़ुदरते कामिला की) निशानी बना दी। (91) यह है तुम्हारा तरीक़ा कि (जिसपर तुमको रहना वाजिब है, और) वह एक ही तरीक़ा है, और मैं तुम्हारा (हक़ीक़ी) रब हूँ, सो तुम मेरी इबादत किया करो। (92) और उन लोगों ने अपने (दीन के) मामले में इख़्तिलाफ़ पैदा कर लिया, (सो उसकी सज़ा देखेंगे, क्योंकि) सब हमारे पास आने वाले हैं। (93) ❖

सो जो शख़्स नेक काम करता होगा और वह ईमान वाला भी होगा तो उसकी मेहनत बेकार (जाने वाली) नहीं, और हम उसको लिख लेते हैं। (94) और हम जिन बस्तियों को (अ़ज़ाब से या मौत से) फ़ना कर चुके हैं उनके (रहने वालों के) लिए यह बात नामुम्किन है कि वे (दुनिया में) फिर लौटकर आएँ। (95) यहाँ तक कि जब याजूज व माजूज खोल दिए जाएँगे और वे (अपनी तादाद के ज़्यादा होने की वजह से) हर बुलन्दी (जैसे पहाड़ और टीले) से निकलते (मालूम) होंगे। (96) और (वह अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाने और मरने के बाद ज़िन्दा होने का) सच्चा वायदा नज़दीक आ पहुँचा होगा, तो बस फिर एकदम से यह (क़िस्सा) होगा कि इनकार करने वालों की निगाहें फटी-की-फटी रह जाएँगी, (और यूँ कहते नज़र आएँगे) कि हाय हमारी कमबख़्ती हम इस (चीज़) से ग़फ़लत में थे, बल्कि वाक़िआ़ यह है कि हम ही क़ुसूरवार थे।[6] (97) बेशक (ऐ मुश्रिको!) तुम और जिनको तुम ख़ुदा तआ़ला को छोड़कर पूज रहे हो सब जहन्नम में झोंके जाओगे, (और) तुम सब उसमें दाख़िल होगे। (98) (और यह बात समझने की है कि) अगर ये (तुम्हारे माबूद वाक़ई) माबूद

(पृष्ठ 594 का शेष) कि एक का सही होना दूसरे के सही न होने का मुक़्तज़ी हो, इसलिए 'और यूँ हमने दोनों को इल्म और हिक्मत अ़ता फ़रमाया था' फ़रमाया।

3. यानी जब मुल्क शाम से किसी तरफ़ जाते और फिर आते तो यह आना और इसी तरह जाना भी हवा के ज़रिये से होता था।

4. यानी इबादत करने वाले याद रखें कि अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों को कैसा बदला देते हैं।

5. हज़रत ज़ुलकिफ़्ल के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि आया यह नबी थे या एक नेक शख़्स थे। क़ुरआन के बयान करने के अन्दाज़ से उनका नबी होना महसूस होता है।

1. और अपनी क़ौम पर से अ़ज़ाब टलने के बाद भी ख़ुद वापस न आए और उस सफ़र के लिए हमारे हुक्म का इन्तिज़ार न किया।

2. पस चूँकि वहाँ से चले जाने को उन्होंने अपने ख़्याल से जायज़ समझा इसलिए वह्य और वाज़ेह हुक्म का इन्तिज़ार न किया, लेकिन चूँकि वह्य की उम्मीद तक वह्य का इन्तिज़ार अम्बिया के लिए मुनासिब था। इस मुनासिब को छोड़ने पर उनको यह आज़माइश पेश आई कि राह में उनको कोई दरिया मिला और वहाँ कश्ती में सवार हुए। कश्ती चलते-चलते रुक गई। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 598 पर)**

यस्मअ़ून (100) इन्नल्लज़ी-न स-बक़त् लहुम् मिन्नल्-हुस्ना उलाइ-क अ़न्हा मुब्अ़दून (101) ला यस्मअ़ू-न हसी-सहा व हुम् फ़ी मश्त-हत् अन्फ़ुसुहुम् ख़ालिदून (102) ला यह्ज़ुनुहुमुल् फ़-ज़अ़ुल्-अक्बरु व त-तलक़्क़ाहुमुल्-मलाइ-कतु, हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम् तूअ़दून (103) यौ-म नत्विस्- समा-अ क-तय्यिस्-सिजिल्लि लिल्कुतुबि, कमा बदअ्ना अव्व-ल ख़ल्किन् नुअ़ीदुहू, वअ़्दन् अ़लैना, इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन (104) व ल-क़द् कतब्ना फ़िज़्ज़बूरि मिम्-बअ़्दिज़्ज़िक्रि अन्नल्-अर्-ज़ यरिसुहा अ़िबादि-यस्सालिहून (105) इन्-न फ़ी हाज़ा ल-बलाग़ल्-लिक़ौमिन् आ़बिदीन (106) व मा अर्सल्ना-क इल्ला रह्म-तल्-लिल्आ़लमीन (107) क़ुल् इन्नमा यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (108) फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल् आज़न्तुकुम् अ़ला सवा-इन्, व इन् अद्री अ-क़रीबुन् अम् बअ़ीदुम् मा तूअ़दून (109) इन्नहू यअ़्लमुल्- जह्-र मिनल्-क़ौलि व यअ़्लमु मा तक्तुमून (110) व इन् अद्री लअ़ल्लहू फ़ित्-नतुल्- लकुम् व मताअ़ुन् इला हीन (111) क़ा-ल रब्बिह्कुम् बिल्हक़्क़ि व रब्बुनर्रह्मानुल्-मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून ● (112) ◆

كل فيها خلدون ٩٩ لهم فيها زفير وهم فيها لا يسمعون ١٠٠
ان الذين سبقت لهم منا الحسنى اولئك عنها مبعدون ١٠١
لا يسمعون حسيسها وهم في ما اشتهت انفسهم
خلدون ١٠٢ لا يحزنهم الفزع الاكبر وتتلقىهم الملئكة
هذا يومكم الذي كنتم توعدون ١٠٣ يوم نطوي السماء
كطي السجل للكتب كما بدانا اول خلق نعيده وعدا
علينا انا كنا فعلين ١٠٤ ولقد كتبنا في الزبور من بعد
الذكر ان الارض يرثها عبادي الصلحون ١٠٥ ان في
هذا لبلغا لقوم عبدين ١٠٦ وما ارسلنك الا رحمة
للعلمين ١٠٧ قل انما يوحى الي انما الهكم اله واحد
فهل انتم مسلمون ١٠٨ فان تولوا فقل اذنتكم على
سواء وان ادري اقريب ام بعيد ما توعدون ١٠٩ انه
يعلم الجهر من القول ويعلم ما تكتمون ١١٠ وان
ادري لعله فتنة لكم ومتاع الى حين ١١١ قل
رب احكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على
ما تصفون ١١٢

होते तो उस (जहन्नम) में क्यों जाते, और सब (इबादत करने वाले और जिनकी इबादत की जा रही है) उसमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे। **(99)** (और) उनका उसमें शोर होगा, और वहाँ (अपने शोरो-गुल में किसी की) कोई बात सुनेंगे भी नहीं। **(100)** (यह तो दोज़ख़ियों का हाल हुआ, और) जिनके लिए हमारी तरफ़ से भलाई मुक़द्दर हो चुकी है वे उस (दोज़ख़) से (इस क़द्र) दूर किए जाएँगे **(101)** (कि) उसकी आहट भी न सुनेंगे,[1] और वे लोग अपनी दिल चाही चीज़ों में हमेशा रहेंगे। **(102)** (और) उनको बड़ी घबराहट (यानी दूसरी बार सूर फूँकने से ज़िन्दा होने की हालत) ग़म में न डालेगी, और (क़ब्र से निकलते ही) फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे (और कहेंगे कि) यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वायदा किया जाता था।[2] **(103)** (वह दिन भी याद करने के क़ाबिल है) जिस दिन हम (पहली बार सूर फूँकने के वक़्त) आसमानों को इस तरह लपेट देंगे जिस तरह लिखे हुए मज़मून का काग़ज़ लपेट लिया जाता है, (और) हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त (हर चीज़ की) शुरूआत की थी उसी तरह (आसानी से) उसको दोबारा (पैदा) कर देंगे, यह हमारे ज़िम्मे वायदा है, (और) हम ज़रूर (इसको पूरा) करेंगे। **(104)** और हम ज़बूर (और सब आसमानी किताबों) में ज़िक्र (यानी लौहे-महफ़ूज़ में लिखने) के बाद लिख चुके हैं कि इस ज़मीन (यानी जन्नत) के मालिक मेरे नेक बन्दे होंगे।[3] **(105)** बिला शुब्हा इस (क़ुरआन) में (हिदायत का) काफ़ी मज़मून है, उन लोगों के लिए जो बन्दगी करने वाले हैं। **(106)** और हमने (ऐसे नफ़ा देने वाले मज़ामीन देकर) आपको और किसी बात के वास्ते नहीं भेजा मगर दुनिया जहान के लोगों (यानी शरीअ़त के अहकाम के जो मुकल्लफ़ हैं, उन) पर मेहरबानी करने के लिए।[4] **(107)** आप (ख़ुलासे के तौर पर एक बार फिर) फ़रमा दीजिए कि मेरे पास तो सिर्फ़ यह वह्य आती है कि तुम्हारा (हक़ीक़ी) माबूद एक ही माबूद है, सो अब भी तुम मानते हो (या नहीं?, यानी अब तो मान लो) **(108)** फिर (भी) अगर ये लोग नाफ़रमानी करें तो (हुज्जत पूरी करने के तौर पर) आप फ़रमा दीजिए कि मैं तुमको बहुत ही साफ़ इत्तिला कर चुका हूँ, और मैं यह नहीं जानता कि जिस सज़ा का तुमसे वायदा हुआ है, क्या वह क़रीब है या (बहुत ज़्यादा) दूर (है, अलबत्ता वह आएगा ज़रूर, क्योंकि) **(109)** अल्लाह को तुम्हारी पुकार कर कही हुई बात की ख़बर है, और जो (बात) तुम दिल में रखते हो उसकी भी ख़बर है। **(110)** और मैं (मुतैयन तौर पर) नहीं जानता (कि क्या मस्लहत है) शायद वह (अ़ज़ाब में देरी) तुम्हारे लिए (सूरत के एतिबार से) एक इम्तिहान हो, और एक वक़्त (यानी मौत) तक (ज़िन्दगी से) फ़ायदा पहुँचाना हो। **(111)** (पैग़म्बर ने अल्लाह के हुक्म से) कहा कि ऐ मेरे रब! फ़ैसला कर दीजिए,[5] हक़ के मुवाफ़िक़, और (पैग़म्बर सल्ल. ने काफ़िरों से यह भी फ़रमाया कि) हमारा रब हमपर बड़ा मेहरबान है, जिससे उन बातों के मुक़ाबले में मदद चाही जाती है जो तुम बनाया करते हो। ● **(112)** ❖

(पृष्ठ 596 का शेष) यूनुस अ़लैहिस्सलाम समझ गए कि मेरा यह वहाँ से बिना इजाज़त चले आना नापसन्द हुआ, उसकी वजह से कश्ती रुकी। कश्ती वालों से फ़रमाया कि मुझको दरिया में डाल दो, वे राज़ी न हुए। ग़रज़ क़ुर्आ डालने पर इत्तिफ़ाक़ हुआ, तब भी उन्हीं का नाम निकला, आख़िर उनको दरिया में डाल दिया और ख़ुदा के हुक्म से उनको एक मछली निगल गई।

3. कई अन्धेरे इस तरह कि एक अन्धेरा मछली के पेट का, दूसरा दरिया की गहराई का, फिर दोनों गहरे अन्धेरे बहुत-से अन्धेरों की तरह हुए, और तीसरा अन्धेरा रात का। ग़रज़ उन अन्धेरों में दुआ़ की।

4. हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम से इस वाक़िए में किसी बात की मुख़ालफ़त नहीं हुई सिर्फ़ राय क़ायम करने में ग़लती हुई जो उम्मत के लिए माफ़ है, मगर अम्बिया की तरबियत तथा और ज़्यादा सँवारना और इस्लाह मक़सूद होती थी, इसलिए यह आज़माइश हुई।

5. जिससे उन हज़रात का बन्दगी में कामिल होना और हमारा माबूद होने में कामिल होना साबित होता है।

6. हासिल यह हुआ कि उस वक़्त जो लोग अल्लाह की तरफ़ लौटने के इनकारी थे वे भी इसके इक़रारी हो जाएँगे।

1. क्योंकि वे जन्नत में होंगे और जन्नत और दोज़ख़ में बहुत ज़्यादा दूरी होगी।

2. कि क़ियामत आएगी और नेक लोगों को नेक बदला मिलेगा। पस यह सम्मान और ख़ुशख़बरी **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 600 पर)**

22 सूरतुल्-हज्जि 103

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5432 अक्षर, 1283 शब्द

78 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् इन्-न ज़ल्ज़-लतस्सा-अ़ति शैउन् अ़ज़ीम **(1)** यौ-म तरौनहा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़ि-अ़तिन् अ़म्मा अर्-ज़-अ़त् व त-ज़अ़ु कुल्लु ज़ाति-हम्लिन् हम्लहा व तरन्ना-स सुकारा व मा हुम् बिसुकारा व लाकिन्-न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद **(2)** व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व यत्तबिअ़ु कुल्-ल शैतानिम्-मरीद **(3)** कुति-ब अ़लैहि अन्नहू मन् तवल्लाहु फ़-अन्नहू युज़िल्लुहू व यह्दीहि इला अ़ज़ाबिस्सअ़ीर **(4)** या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम् मिनल्-बअ़्सि फ़-इन्ना ख़लक़्नाकुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ़-ल-क़तिन् सुम्-म मिम्-मुज़्-ग़तिम् मुख़ल्ल-क़तिंव्-व ग़ैरि मुख़ल्ल-क़तिल् लिनुबय्यि-न लकुम्, व नुक़िर्रु फ़िल्अर्हामि मा नशा-उ इला अ-जलिम्-मुसम्मन् सुम्-म नुख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्दकुम् व मिन्कुम् मंय्यु-तवफ़्फ़ा व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल्-अ़ुमुरि लिकैला यअ़्ल-म मिम्-बअ़्दि अ़िल्मिन् शैअन्, व तरल्अर्-ज़ हामि-दतन् फ़-इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल् मा-अह्तज़्ज़त् व रबत् व अम्ब-तत् मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज **(5)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्नहू युह्यिल्-मौता व

اقترب ١٧ ٣٠٠ الحج ٢٢

سُورَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٍ وَسَبْعُونَ آيَةً وَعَشْرُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ① يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَارَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ② وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَرِيدٍ ③ كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلُّهُ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ④ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُضْغَةٍ مُخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ۖ وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّىٰ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ⑤ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُ

منزل ٤

22 सूरः हज 103

सूरः हज मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 78 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[1]ऐ लोगो! अपने रब से डरो, (क्योंकि) यक़ीनन क़ियामत (के दिन) का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ होगी।[2] **(1)** जिस दिन तुम लोग उस (ज़लज़ले) को देखोगे (उस दिन) तमाम दूध पिलाने वालियाँ (डर के मारे) अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएँगी, और तमाम हमल ''यानी गर्भ'' वालियाँ अपने हमल को (पूरे दिन होने से पहले) डाल देंगी। और (ऐ मुख़ातब!) तुझको लोग नशे जैसी हालत में दिखाई देंगे, हालाँकि वे (हक़ीक़त में) नशे में न होंगे, और लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब है (ही) सख़्त चीज़।[3] **(2)** और बाज़े आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह के बारे में (यानी उसकी ज़ात या सिफ़ात में) बेजाने-बूझे झगड़ा करते हैं और हर शैतान सरकश के पीछे हो लेते हैं। **(3)** जिसके मुताल्लिक़ (ख़ुदा के यहाँ से) यह बात लिखी जा चुकी है कि जो शख़्स उससे ताल्लुक़ रखेगा (यानी उसका कहना मानेगा) तो (उसका काम ही यह है कि) वह उसको (हक़ रास्ते से) बेराह कर देगा, और उसको दोज़ख़ के अ़ज़ाब का रास्ता दिखला देगा। **(4)** ऐ लोगो! अगर तुम (क़ियामत के दिन) दोबारा ज़िन्दा होने से शक (व इनकार) में हो तो हमने (पहले) तुमको मिट्टी से बनाया, फिर नुत्फ़े से (जो कि ग़िज़ा से पैदा होता है) फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर बोटी से कि (बाज़ी) पूरी होती है और (बाज़ी) अधूरी भी, ताकि हम तुम्हारे सामने (अपनी कुदरत) ज़ाहिर कर दें,[4] और हम (माँ के) रहम में जिस (नुत्फ़े) को चाहते हैं एक मुक़र्ररा मुद्दत (यानी पैदाइश) तक ठहराए रखते हैं फिर हम तुमको बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं, फिर ताकि तुम अपनी भरी जवानी (की उम्र) तक पहुँच जाओ, और बाज़े तुममें वे भी हैं जो (जवानी से पहले ही) मर जाते हैं, और बाज़े तुममें वे हैं जो निकम्मी उम्र (यानी ज़्यादा बुढ़ापे) तक पहुँचा दिए जाते हैं, (जिसका असर यह है) कि एक चीज़ से जानकार होकर फिर बेख़बर हो जाते हैं,[5] और (आगे दूसरा इस्तिदलाल है कि ऐ मुख़ातब!) तू ज़मीन को देखता है कि सूखी (पड़ी) है, फिर जब हम उसपर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूलती है, और हर क़िस्म के ख़ुशनुमा नबातात ''यानी पेड़-पौधे और सब्ज़ियाँ व घास वग़ैरह'' उगाती है।[6] **(5)** यह (सब) इस सबब से हुआ कि (वजूद में) अल्लाह तआ़ला ही कामिल है,[7] और वही बेजानों में जान डालता है,[8] और वही हर चीज़ पर क़ादिर है।[9] **(6)** और (तथा इस सबब से हुआ कि) क़ियामत आने

(पृष्ठ 598 का शेष) उनके लिए ज़्यादा ख़ुशी का सबब हो जाएगी।

3. यहाँ तक सूरः के बड़े हिस्से में तौहीद व नुबुव्वत की तहक़ीक़ और इनकार करने वालों के लिए वईद (डाँट और सज़ा की धमकी) ज़िक्र हुई। कुरआने करीम के इन मुफ़ीद मज़ामीन पर मुश्तमिल होने की वजह से आयत 'इन्-न फ़ी हाज़ा' और 'व मा अरसल्ना-क'..... में इन मज़ामीन की खुले तौर पर तारीफ़ व ख़ूबी और दूसरी आयत में इशारे के तौर पर इन मज़ामीन के लाने वाले की भी तारीफ़ और आयत 'क़ुल इन्नमा यू-हा....' में पहले मज़मून के खुलासे के तौर पर तौहीद और इस्लाम की तरफ़ जिसके लवाज़िम में से नुबुव्वत की तस्दीक़ भी है, दोबारा दावत, और आयत 'फ़इन् तवल्लौ.....' से आख़िर तक खुलासे ही के तौर पर इनकार पर दोबारा वईद और धमकी और सज़ा के मुताल्लिक़ और मुनासिब मज़ामीन इरशाद हैं।

4. वह मेहरबानी यही है कि लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इन मज़ामीन को क़बूल करें, हिदायत और हिदायत के फल हासिल करें। और जो क़बूल न करे यह उसका क़ुसूर है, इससे मज़मून के सही होने में कोई ख़लल नहीं पड़ता।

5. मतलब यह है कि अ़मली फ़ैसला कर दीजिए। यानी मुसलमानों के जिस ग़ल्बे की पैशीनगोई (भविष्यवाणी) है उसको ज़ाहिर कर दीजिए ताकि हुज्जत और ज़्यादा मुकम्मल हो जाए।

1. इस सूरः का खुलासा ये मज़ामीन हैं- १. मरने के बाद ज़िन्दा होना और हिसाब, जिससे सूरः शुरू भी हुई है और बीच में क़ियामत के दिन और दोज़ख़ व जन्नत का ज़िक्र जगह-जगह आया है। २. नुबुव्वत और उसके मुताल्लिक़ **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 602 पर)**

अन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(6)** व अन्नस्सा-अ़-त आति-यतुल्-ला रै-ब फ़ीहा व अन्नल्ला-ह यब्अ़सु मन् फ़िल्क़ुबूर **(7)** व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व ला हुदंव्-व ला किताबिम्-मुनीर **(8)** सानि-य अ़ित्फ़िही लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिल्लाहि, लहू फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व नुज़ीक़ुहू यौमल्-क़ियामति अ़ज़ाबल्-हरीक़ **(9)** ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् यदा-क व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद **(10)** ❖

व मिनन्नासि मंय्यअ़्बुदुल्ला-ह अ़ला हर्फ़िन् फ़-इन् असा-बहू ख़ैरु-नितम-अन्-न बिही व इन् असाबत्हु फ़ित्नतु-निन्क़-ल-ब अ़ला वज्हिही, ख़सिरद्दुन्या वल्आख़िर-त, ज़ालि-क हुवल् ख़ुस्रानुल्-मुबीन **(11)** यद्अ़ू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहू व मा ला यन्फ़अ़ुहू, ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद **(12)** यद्अ़ू ल-मन् ज़र्रुहू अक़्रबु मिन् नफ़्अ़िही, लबिअ्सल्-मौला व लबिअ्सल्-अ़शीर **(13)** इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, इन्नल्ला-ह यफ़्अ़लु मा युरीद **(14)** मन् का-न यज़ुन्नु अल्लंय्यन्सु-रहुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति फ़ल्यम्दुद् बि-स-बबिन् इलस्समा-इ सुम्मल्-यक़्तअ़् फ़ल्यन्ज़ुर् हल् युज़्हिबन्-न कैदुहू मा यग़ीज़ **(15)** व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु आयातिम्-बय्यिनातिंव्-व अन्नल्ला-ह यह्दी मंय्युरीद **(16)** इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ۞ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ
فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ ثَانِىَ عِطْفِهٖ
لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۞ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَ
اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۞ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ
اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ
فِتْنَةُ ۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۞ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا
لَا يَنْفَعُهٗ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۞ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ
اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۗ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۞ اِنَّ اللّٰهَ
يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۞ مَنْ كَانَ يَظُنُّ
اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى
السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۞
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يُّرِيْدُ ۞

वाली है इसमें ज़रा भी शुब्हा नहीं, और अल्लाह क़ियामत में क़ब्र वालों को दोबारा पैदा कर देगा।[1] (7) और बाज़े आदमी ऐसे होते हैं कि अल्लाह के बारे में बिना जानकारी (यानी ज़रूरी इल्म) के और बिना दलील (यानी अक़्ली तौर पर दलील लाने) और बिना किसी रोशन किताब (यानी नक़ली दलील लाने) के तकब्बुर करते हुए झगड़ा करते हैं (8) ताकि अल्लाह की राह से (यानी दीने हक़ से) बेराह कर दें, ऐसे शख़्स के लिए दुनिया में रुस्वाई है और क़ियामत के दिन हम उसको जलती आग का अज़ाब चखाएँगे। (9) (और उससे कहा जाएगा) कि यह तेरे हाथ के किए हुए कामों का बदला है, और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआला (अपने) बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं, (पस तुझको बिला जुर्म सज़ा नहीं दी गई)। (10) ❖

और बाज़ आदमी अल्लाह की इबादत (ऐसे तौर पर) करता है (जैसे किसी चीज़ के) किनारे पर (खड़ा हो) फिर अगर उसको कोई (दुनियावी) नफ़ा पहुँच गया तो उसकी वजह से (ज़ाहिरी) क़रार पा लिया, और अगर उसकी कुछ आज़माइश हो गई तो मुँह उठाकर (कुफ़्र की तरफ़) चल दिया, (जिससे) दुनिया और आख़िरत दोनों को खो बैठा, यही खुला नुक़सान (कहलाता) है। (11) ख़ुदा (की इबादत) को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत करने लगा जो न उसको नुक़सान पहुँचा सकती है और न उसको नफ़ा पहुँचा सकती है, यह इन्तिहाई दर्जे की गुमराही है।[2] (12) वह ऐसे की इबादत कर रहा है कि उस (की इबादत) का नुक़सान उसके नफ़े के मुक़ाबले में ज़्यादा जल्द (सामने आने वाला) है, (और) ऐसा कारसाज़ भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा।[3] (13) बेशक अल्लाह तआला ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल फ़रमाएँगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, अल्लाह तआला जो इरादा करता है कर गुज़रता है।[4] (14) जो शख़्स (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मुख़ालफ़त करके) इस बात का ख़्याल रखता है कि अल्लाह तआला उनकी (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की) दुनिया और आख़िरत में मदद न करेगा तो उसको चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक तान ले, फिर (उसके ज़रिये से आसमान तक पहुँचकर अगर हो सके इस वह्य को) रुकवा दे,[5] तो फिर (अब) ग़ौर करना चाहिए कि क्या उसकी (यह) तदबीर उसकी नागवारी की चीज़ को (यानी वह्य को) बन्द कर सकती है।[6] (15) और हमने इस क़ुरआन को इसी तरह उतारा है (जिसमें) खुली-खुली दलीलें (हक़ को मुतैयन करने की हैं) और (बात) यह (ही है) कि अल्लाह तआला जिसको चाहता है (हक़ की) हिदायत करता है।[7] (16) इसमें कोई शुब्हा नहीं कि मुसलमान और यहूद

(पृष्ठ 600 का शेष) शुब्हात का जगह-जगह जवाब और नुबुव्वत ही के मुताल्लिक़ मदद का वायदा और जिहाद की इजाज़त और उसके बारे में झगड़ने और बहस करने वालों की निन्दा, चाहे वह झगड़ना ज़बान से हो या फ़ेल से। जैसे हज या उमरः से रोकना, जिसके ज़िम्न में हज के अहकाम ज़िक्र हुए। ३. तौहीद।

2. जब ज़लज़ला जो कि उसके वाक़िआत में से एक वाक़िआ है, ऐसा होगा तो वाक़िआत के मजमूए की क्या शिद्दत और सख़्ती होगी, तो उन सख़्तियों के ख़ैरियत से गुज़रने के लिए सामान करो, और वह तक़्वा है।

3. रिवायतों से ऐन क़ियामत ही के दिन और क़ियामत से पहले भी ज़लज़ले का आना साबित है, लेकिन जिस ज़लज़ले का आयत में ज़िक्र है हदीस से उसका क़ियामत के दिन आना मालूम होता है।

4. और इसी से ज़ाहिर है कि हम दोबारा पैदा करने पर क़ादिर हैं।

5. ये सब हालात भी हमारे क़ादिर होने पर दलालत करते हैं।

6. सो यह भी दलील है क़ुदरते कामिला की।

7. यह उसका ज़ाती कमाल है।

8. यह उसका फ़ेली कमाल है।

9. यह उसका कमाले वस्फ़ी है, और ये तीनों कमालात मिलकर ज़िक्र हुए उमूर की इल्लत हैं, क्योंकि अगर तीनों कमालात में से एक भी मौजूद न पाया जाता तो ईजाद करना न पाया जाता। **(पृष्ठ 602 की तफ़सीर पृष्ठ 604 पर)**

हादू वस्साबिई-न वन्नसारा वल्मजू-स वल्लज़ी-न अश्रकू इन्नल्ला-ह यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद **(17)** अलम् त-र अन्नल्ला-ह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि वश्शम्सु वल्क़-मरु वन्नुजूमु वल्जिबालु वश्श-जरु वद्दवाब्बु व कसीरुम्-मिनन्-नासि, व कसीरुन् हक़्-क़ अ़लैहिल्-अ़ज़ाबु, व मंय्युहिनिल्लाहु फ़मा लहू मिम्-मुक्रिमिन्, इन्नल्ला-ह यफ़्अ़लु मा यशा-उ ❑ **(18)** हाज़ानि ख़स्मानिख़्त--समू फ़ी रब्बिहिम्, फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू कुत्तिअ़त् लहुम् सियाबुम्-मिन् नारिन्, युसब्बु मिन् फ़ौक़ि-रुऊसिहिमुल्-हमीम **(19)** युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम् वल्जुलूद **(20)** व लहुम् मक़ामिअ़ु मिन् हदीद **(21)** कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन् उअ़ीदू फ़ीहा, व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्- हरीक़ **(22)** ❖

इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्- सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव्-व लुअ्लुअन्, व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर **(23)** व हुदू इलत्तय्यिबि मिनल्-क़ौलि व हुदू इला सिरातिल्-हमीद **(24)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि वल्मस्जिदिल्-हरामिल्लज़ी

الحج ٢٢ ٣٠٢ اقترب ١٧

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ
وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ
اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ
مِنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ
فَمَا لَهُ مِنْ مُكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾ هَٰذَانِ خَصْمَانِ
اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِنْ
نَارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي
بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُمْ مَقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا أَرَادُوا
أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ
ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ
مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ

منزل ٤

और साबिईन और ईसाई और मजूस[1] और मुश्रिकीन अल्लाह तआ़ला इन सबके दरमियान क़ियामत के दिन (अ़मली) फ़ैसला कर देगा, (मुसलमानों को जन्नत में दाख़िल कर देगा और काफ़िरों को दोज़ख़ में), बेशक ख़ुदा तआ़ला हर चीज़ से वाक़िफ़ है।[2] **(17)** (ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको (अ़क्ल से या देखने से) यह (बात) मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला के सामने (अपनी-अपनी हालत के मुनासिब) सब आ़जिज़ी करते हैं, जो कि आसमानों में हैं और जो कि ज़मीन में हैं, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाये और बहुत सारे (तो) आदमी भी,[3] और बहुत-से ऐसे हैं जिनपर (फ़रमाँबरदार न होने की वजह से) अ़ज़ाब साबित हो गया है। और (सच यह है कि) जिसको ख़ुदा ज़लील करे (और उसको हिदायत की तौफ़ीक़ न हो) उसको कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, (और) अल्लाह तआ़ला (को इख़्तियार है) जो चाहे करे। ❑ **(18)** ये (जिनका ऊपर की आयत में ज़िक्र हुआ है) दो फ़रीक़ हैं, जिन्होंने अपने रब के (दीन के) बारे में (आपस में) इख़्तिलाफ़ किया, सो जो लोग काफ़िर थे उनके (पहनने के) लिए (क़ियामत में) आग के कपड़े काटे जाएँगे,[4] (और) उनके सर के ऊपर से तेज़ गर्म पानी छोड़ा जाएगा। **(19)** (और) उससे उनके पेट में की चीज़ें (यानी अंतड़ियाँ) और (उनकी) खालें सब गल जाएँगी। **(20)** और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे। **(21)** वे लोग जब (दोज़ख़ में) घुटे-घुटे (घबरा जाएँगे और) उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें धकेल दिए जाएँगे, और (उनको कहा जाएगा कि) जलने का अ़ज़ाब (हमेशा के लिए है) चखते रहो। **(22)** ❖

(और) अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जो कि ईमान लाए और नेक काम किए (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, (और) उनको वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और उनका लिबास वहाँ रेशम का होगा। **(23)** और (यह सब इनाम उनके लिए इसलिए है कि दुनिया में) उनको कलिमा-ए-तय्यिबा (के एतिक़ाद) की हिदायत हो गई थी, और उनको उस (ख़ुदा) के रास्ते की हिदायत हो गई थी जो तारीफ़ के लायक़ है। (वह रास्ता इस्लाम है)। **(24)** बेशक जो लोग काफ़िर हुए और (मुसलमानों को) अल्लाह के (रास्ते से और मस्जिदे हराम यानी हरम) से (भी) रोकते हैं जिसको हमने तमाम आदमियों के वास्ते मुक़र्रर किया है, कि उसमें सब बराबर हैं, उसमें रहने वाला भी और बाहर से आने वाला भी, (ये रोकने वाले लोग अ़ज़ाब पाएँगे) और जो शख़्स उसमें (यानी हरम शरीफ़ में) कोई दीन के ख़िलाफ़ काम जान-बूझकर

(तफ़सीर पृष्ठ 602) **1.** यह ज़िक्र हुए उमूर की हिक्मत है। यानी हमने वे ज़िक्र हुए तसर्रुफ़ात इसलिए ज़ाहिर किए कि इसमें और हिक्मतों में से एक हिक्मत और वजह यह भी थी कि हमको क़ियामत का लाना और मुर्दों को ज़िन्दा करना मन्ज़ूर था। तो उन तसर्रुफ़ात से इनका मुम्किन होना लोगों पर ज़ाहिर हो जाएगा।

2. सिर्फ़ यही नहीं कि उसकी इबादत से नफ़ा न होता हो बल्कि इबादत में नुक़सान होता है।

3. न 'मौला' यानी बड़ा होकर काम आए और न 'अ़शीर' यानी बराबर होकर काम आए।

4. उसके साथ कोई रोक-टोक नहीं कर सकता, और वह इस जज़ा व सज़ा का इरादा कर चुका है, पस ज़रूर ऐसा ही ज़ाहिर होगा।

5. और ज़ाहिर है कि ऐसा कोई नहीं कर सकता।

6. यानी हरगिज़ नहीं कर सकती।

7. अलबत्ता इनसान की कोशिश और तलब के बाद अल्लाह तआ़ला इरादा कर ही लेता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 604) **1.** 'मजूस' आग की पूजा करने वाले हैं।

2. पस उसको हर एक के कुफ़्र व ईमान की भी इत्तिला है, हर एक को मुनासिब बदला और सिला देगा।

3. बावजूद तमाम मख़्लूक़ात के ताबे-ए-फ़रमान होने के आदमियों में जो ख़ास दर्जे की अ़क़्ल रखता है, उनमें सब फ़रमाँबर्दार नहीं।

4. यानी आग चारों तरफ़ से सर से पाँव तक कपड़ों की तरह घेरे हुए होगी।

जअ़ल्नाहु लिन्नासि सवा-अ-निल्-आ़किफ़ु फ़ीहि वल्बादि, व मंय्युरिद् फ़ीहि बि-इल्हादिम्-बिज़ुल्मिन् नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम **(25)** ❖

व इज़् बव्वअ्ना लिइब्राही-म मकानल्-बैति अल्ला तुश्रिक् बी शैअंव्-व तह्हिर् बैति-य लित्ताइफ़ी-न वल्क़ाइमी-न वर्रुक्कअिस्-सुजूद **(26)** व अज़्ज़िन् फ़िन्नासि बिल्हज्जि यअ्तू-क रिजालंव्-व अ़ला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्ती-न मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अ़मीक़ **(27)** लि-यश्हदू मनाफ़ि-अ़ लहुम् व यज़्कुरुस्मल्लाहि फ़ी अय्यामिम् मअ्लूमातिन् अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम्-बहीमतिल्-अन्आ़मि फ़कुलू मिन्हा व अत्अिमुल्-बाइसल्-फ़क़ीर **(28)** सुम्मल्-यक़्ज़ू त-फ़-सहुम् वल्यूफ़ू नुज़ूरहुम् वल्यत्तव्वफ़ू बिल्बैतिल्-अ़तीक़ **(29)** ज़ालि-क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फ़हु-व ख़ैरुल्लहू अ़िन्-द रब्बिही, व उहिल्लत् लकुमुल्-अन्आ़मु इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम् फ़ज्तनिबुर्रिज्-स मिनल्-औसानि वज्तनिबू क़ौलज़्ज़ूर **(30)** हु-नफ़ा-अ लिल्लाहि ग़ै-र मुश्रिकी-न बिही, व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-कअन्नमा ख़र्-र मिनस्समा-इ फ़-तख़्तफ़ुहुत्तैरु औ तह्वी बिहिर्-रीहु फ़ी मकानिन् सहीक़ **(31)** ज़ालि-क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़-इरल्लाहि फ़-इन्नहा मिन् तक़्वल्-क़ुलूब **(32)** लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु इला अ-जलिम् मुसम्मन् सुम्-म महिल्लुहा इलल्-बैतिल्-अ़तीक़ **(33)** ❖

व लिकुल्लि उम्मतिन् जअ़ल्ना मन्-सकल् लि-यज़्कुरुस्मल्लाहि अ़ला मा र-ज़-क़हुम्

لِلنَّاسِ سَوَآءً ۨالْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ
بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرٰهِيمَ مَكَانَ
الْبَيْتِ أَنْ لَّا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِينَ وَ
الْقَآئِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾ وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ
رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾
لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيٓ أَيَّامٍ مَّعْلُومٰتٍ
عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۚ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا
الْبَآئِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ
وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ
فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلٰى
عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ
الزُّورِ ﴿٣٠﴾ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۗ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ
فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي
مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿٣١﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَإِنَّهَا مِنْ
تَقْوَى الْقُلُوبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ
مَحِلُّهَآ إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا

(ख़ासकर जबकि वह) ज़ुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) के साथ करेगा तो हम उसको दर्दनाक अ़ज़ाब (का मज़ा) चखाएँगे।[1] (25) ❖

और जबकि हमने इब्राहीम को ख़ाना काबा की जगह बतला दी[2] (और हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक मत करना,[3] और मेरे इस घर को तवाफ़ करने वालों और (नमाज़ में) क़ियाम व रुकूअ़ व सज्दा करने वालों के वास्ते (महसूस और ग़ैर-महसूस गन्दगी और नापाकियों से) पाक रखना। (26) और (इब्राहीम से यह भी कहा गया कि) लोगों में हज (के फ़र्ज़ होने) का ऐलान कर दो, (जिससे कि) लोग तुम्हारे पास (हज को) चले आएँगे, पैदल भी और (जो ऊँटनियाँ सफ़र के मारे) दुबली (हो गईं होंगी उन) ऊँटनियों पर भी, जो कि दूर-दराज़ रास्तों से पहुँची होंगी। (27) ताकि अपने (दीनी और दुनियावी) फ़ायदों के लिए आ मौजूद हों[4] और (इसलिए आएँगे) ताकि मुक़र्ररा दिनों (यानी क़ुरबानी के दिनों) में उन (मख़्सूस) चौपायों पर (ज़िब्ह के वक़्त) अल्लाह का नाम लें, (यानी बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कहें जो अल्लाह तआ़ला ने) उनको अ़ता किए हैं, सो उन (क़ुरबानी के जानवरों) में से तुम (को) भी (मुस्तहब होने के साथ इजाज़त है कि) खाया करो और (मुस्तहब यह है कि) मुसीबतज़दा मोहताजों को भी खिलाया करो। (28) फिर (लोगों को) चाहिए कि अपना मैल-कुचैल दूर कर दें और अपने वाजिबात को पूरा करें, और (उन्हीं मुक़र्ररा दिनों में) इस मामून घर (यानी ख़ाना-ए-काबा) का तवाफ़ करें।[5] (29) यह बात तो हो चुकी, और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के मोहतरम अहकाम[6] की वक़्अ़त करेगा,[7] सो यह (वक़्अ़त करना) उसके हक़ में उसके रब के नज़दीक बेहतर है,[8] और उन (मख़्सूस) चौपायों को उन (बाज़) को छोड़कर जो तुमको पढ़कर सुना दिए गए हैं तुम्हारे लिए हलाल कर दिया गया है, तो तुम लोग गन्दगी से यानी बुतों से (बिलकुल) किनारा करने वाले रहो और झूठी बात से अलग रहो। (30) इस तौर से कि अल्लाह ही की तरफ़ झुके रहो (और) उसके साथ शरीक मत ठहराओ, और जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा, फिर परिन्दों ने उसकी बोटियाँ नोच लीं या उसको हवा ने किसी दूर-दराज़ जगह में लेजा पटका।[9] (31) यह बात भी हो चुकी, और जो शख़्स अल्लाह (के दीन) की (इन ज़िक्र हुई) यादगारों का पूरा लिहाज़ रखेगा तो (उनका) यह (लिहाज़ रखना ख़ुदा तआ़ला से) दिल के साथ डरने से होता है। (32) तुमको उनसे एक मुतैयन वक़्त तक फ़ायदे हासिल करना (जायज़) है, फिर (यानी क़ुरबानी का जानवर बनने के बाद) उसके (ज़िब्ह) हलाल होने का मौक़ा बैते अ़तीक़ ''यानी बैतुल्लाह'' के क़रीब है।[10] (33) ❖

---

1. अगरचे दीन के ख़िलाफ़ काम करना हर जगह ही अ़ज़ाब का सबब है लेकिन हरम के अन्दर और ज्यादा अ़ज़ाब का सबब है।
2. क्योंकि उस वक़्त ख़ाना-ए-काबा बना हुआ न था।
3. यह उनके बाद वालों को सुनाना है, और घर के ज़िक्र के साथ इसका ज़िक्र इसलिए निहायत ही मुनासिब हुआ कि किसी हक़ीक़त न पहचानने वाले को इस घर की क़द्र व अ़ज़मत से और इसके इबादत की जगह होने के बारे में कोई शक व वहम न हो जाए।
4. जैसे आख़िरत के फ़ायदे ये हैं- हज का सवाब और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा। और दुनियावी फ़ायदे ये हैं- क़ुरबानी का गोश्त खाना और तिजारत वग़ैरह। इसको हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इब्ने अबी हातिम ने नक़ल किया है। अलबत्ता दुनियावी फ़ायदों का असल मक़सद होना नापसन्दीदा है।
5. यह तवाफ़े ज़ियारत कहलाता है जो कि फ़र्ज़ है।
6. आ़म इससे कि हज के अहकाम ज़िक्र हुए हों या हज के अहकाम ज़िक्र न हुए हों, या हज से मुताल्लिक़ न हों।
7. इल्म के एतिबार से भी कि उनको मालूम करे और अ़मल के एतिबार से भी कि उनके ख़िलाफ़ न करे।
8. क्योंकि सवाब को वाजिब करने वाला और अ़ज़ाब से नजात देने वाला है।
9. इसी तरह जिसने शिर्क किया या तो किसी के हाथ से मारा गया या किसी वक़्त तबई मौत से (शेष तफ़सीर पृष्ठ 608 पर)

मिम्-बहीमतिल्-अन्आ़मि, फ़-इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़-लहू अस्लिमू, व बश्शिरिल्-मुख़्बितीन **(34)** अल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् वस्साबिरी-न अ़ला मा असा-बहुम् वल्मुक़ीमिस्सलाति व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून **(35)** वल्बुद्-न जअ़ल्नाहा लकुम् मिन् शआ़-इरिल्लाहि लकुम् फ़ीहा ख़ैरुन् फ़ज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहा सवाफ़्-फ़ फ़-इज़ा व-जबत् जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत्अ़िमुल्- क़ानि-अ़ वल्-मुअ़्तर्-र, कज़ालि-क सख़्ख़र्नाहा लकुम् लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(36)** लंय्यनालल्ला-ह लुहूमुहा व ला दिमा-उहा व ला किंय्यनालुहुत्-तक़्वा मिन्कुम्, कज़ालि-क सख़्ख़-रहा लकुम् लितुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम्, व बश्शिरिल्-मुह्सिनीन **(37)** इन्नल्ला-ह युदाफ़िअ़ु अ़निल्लज़ी-न आमनू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल ख़व्वानिन् कफ़ूर ▲ **(38)** ❖

उज़ि-न लिल्लज़ी-न युक़ातलू-न बि-अन्नहुम् ज़ुलिमू, व इन्नल्ला-ह अ़ला नस्रिहिम् ल-क़दीर **(39)** अल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् बिग़ैरि हक़्क़िन् इल्ला अंय्यक़ूलू रब्बुनल्लाहु, व लौ ला दफ़्अ़ुल्लाहिन्ना-स बअ़्-ज़हुम् बिबअ़्ज़िल्-लहुद्दिमत् सवामिअ़ु व बि-यअ़ुंव्-व स-लवातुंव्-व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्लाहि कसीरन्, व ल-यन्सुरन्नल्लाहु मंय्यन्सुरुहू, इन्नल्ला-ह ल-कविय्युन् अ़ज़ीज़ **(40)** अल्लज़ी-न इम्-मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि अक़ामुस्सला-त व आ-तवुज़्-ज़का-त व अ-मरू बिल्-मअ़्रूफ़ि व नहौ अ़निल्-मुन्करि, व लिल्लाहि

اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۗ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ۗ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي
الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ
مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ
فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۗ
كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا
وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۗ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ
لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ
يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝
اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ
لَقَدِيْرُ ۝ ۨالَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا
رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ
صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ
اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا

और (जितने शरीअ़तों वाले गुज़रे हैं उनमें से) हमने हर उम्मत के लिए क़ुरबानी करना इस ग़रज़ से मुक़र्रर किया था कि वे उन (मख़्सूस) चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उनको अ़ता फ़रमाए थे, सो (इससे यह बात निकल आई कि) तुम्हारा (हक़ीक़ी) माबूद एक ही ख़ुदा है तो तुम पूरी तरह उसी के होकर रहो।[1] आप (अल्लाह के अहकाम के सामने ऐसे) गरदन झुका देने वालों को (जन्नत वग़ैरह की) ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। **(34)** जो ऐसे हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जो उन मुसीबतों पर जो कि उनपर पड़ती हैं सब्र करते हैं, और जो नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से (हुक्म और तौफ़ीक़ के मुताबिक़) ख़र्च करते हैं।[2] **(35)** और क़ुरबानी के ऊँट (और गाय और इसी तरह भेड़ और बकरी को भी) हमने अल्लाह (के दीन) की यादगार बनाया है, इन (जानवरों) में तुम्हारे (और भी) फ़ायदे हैं, सो तुम उनपर खड़े करके[3] (ज़िब्ह करने के वक़्त) अल्लाह का नाम लिया करो। पस जब वे (किसी) करवट के बल गिर पड़ें (और ठन्डे हो जाएँ) तो तुम ख़ुद भी खाओ और बेसवाल और सवाली (मोहताज) को भी खाने को दो, (और) हमने इन (जानवरों) को इस तरह तुम्हारे हुक्म के ताबे कर दिया, ताकि तुम (इस ताबे कर देने पर अल्लाह तआ़ला का) शुक्र करो।[4] **(36)** अल्लाह के पास न उनका गोश्त पहुँचता है और न उनका ख़ून, और लेकिन उसके पास तुम्हारा तक़्वा पहुँचता है, इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने उन (जानवरों) को तुम्हारे हुक्म के ताबे कर दिया ताकि तुम (अल्लाह की राह में उनकी क़ुरबानी करके) इस बात पर अल्लाह की बड़ाई (बयान) करो कि उसने तुमको तौफ़ीक़ दी, और (ऐ मुहम्मद!) इख़्लास वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। **(37)** बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला (उन मुश्रिकीन के ग़ल्बे और तकलीफ़ पहुँचाने की क़ुदरत को) ईमान वालों से (जल्द ही) हटा देगा,[5] बेशक अल्लाह तआ़ला किसी दग़ाबाज़-कुफ़्र करने वाले को नहीं चाहता।[6] ▲ **(38)** ❖

(अब) लड़ने की उन लोगों को इजाज़त दे दी गई जिनसे (काफ़िरों की तरफ़ से) लड़ाई की जाती है, इस वजह से कि उनपर (बहुत) ज़ुल्म किया गया है,[7] और बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला उनके ग़ालिब कर देने पर पूरी क़ुदरत रखता है। **(39)** (आगे उनकी मज़लूमियत का बयान है) जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए, सिर्फ़ इतनी (बात) पर कि वे (यूँ) कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है,[8] और अगर (यह बात न होती कि) अल्लाह तआ़ला (हमेशा से) लोगों का एक-दूसरे (के हाथ) से ज़ोर न घटवाता रहता[9] तो (अपने-अपने ज़मानों में) ईसाइयों के ख़िल्वतख़ाने और इबादतख़ाने और यहूद के इबादतख़ाने और (मुसलमानों की) वे मस्जिदें जिनमें अल्लाह तआ़ला का नाम कसरत से लिया जाता है, सब ढा दिए गए होते। और बेशक अल्लाह उसकी मदद करेगा जो अल्लाह के दीन की मदद करेगा,[10] बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला (और) ग़ल्बे वाला है। (वह जिसको चाहे ग़ल्बा और क़ुव्वत दे सकता है)। **(40)** ये लोग ऐसे हैं कि अगर हम उनको दुनिया में हुकूमत दे

(पृष्ठ 606 का शेष) मर गया, हर हालत में हलाकत के घर यानी दोज़ख़ में पहुँचेगा। और यूँ हवा के झोंकों के बग़ैर भी ज़रूर ही गिरता, लेकिन उस सूरत में और ज़्यादा कुल्फ़त होगी। चुनाँचे तबई मौत के साथ फ़रिश्तों के धक्के-मुक्के उसी के जैसे हैं।

10. मुराद पूरा हरम है। यानी हरम से बाहर ज़िब्ह न करें।

1. यानी ख़ालिस मोमिन रहो, किसी मकान वग़ैरह को उसकी ज़ात के एतिबार से अ़ज़मत वाला समझने से ज़र्रा बराबर शिर्क का शक व शुब्हा भी अपने अ़मल में न पैदा होने दो।

2. यानी तौहीदे ख़ालिस ऐसी बरकत वाली चीज़ है कि उसकी बदौलत नफ़्सानी, जिस्मानी और माली कमालात पैदा हो जाते हैं।

3. यह सिर्फ़ ऊँटों के एतिबार से फ़रमाया कि उनका इस तरह ज़िब्ह करना इसलिए बेहतर है कि इससे ज़िब्ह करने और रूह के निकलने में आसानी होती है।

4. यह हिक्मत मुतलक़ ज़िब्ह में है क़ुरबानी होने से अलग। और आगे ज़िब्ह की तख़्सीसात के अपनी ज़ात में मक़सूद न होने को एक अ़क़्ली क़ायदे से बयान फ़रमाते हैं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 610 पर)**

आ़कि-बतुल्-उमूर (41) व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़-बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व आ़दुंव्-व समूद (42) व क़ौमु इब्राही-म व क़ौमु लूत (43) व अस्हाबु मद्य-न व कुज़्ज़ि-ब मूसा फ़-अम्लैतु लिल्काफ़िरी-न सुम्-म अ-ख़ज़्तुहुम् कै-फ़ का-न नकीर (44) फ़-कअय्यिम्-मिन् क़र्-यतिन् अह्लक्नाहा व हि-य ज़ालि-मतुन् फ़हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला उ़रूशिहा व बिअ्रिम् मु-अ़त्त-लतिंव्-व क़स्रिम्-मशीद (45) अ-फ़लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-तकू-न लहुम् क़ुलूबुंय्-यअ्क़िलू-न बिहा औ आज़ानुंय्यस्मअू-न बिहा फ़-इन्नहा ला तअ्मल्-अब्सारु व लाकिन् तअ्मल्- क़ुलूबुल्लती फ़िस्सुदूर (46) व यस्तअ्जिलून-क बिल्-अ़ज़ाबि व लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु वअ्दहू, व इन्-न यौमन् अ़िन्-द रब्बि-क क-अल्फ़ि स-नतिम्-मिम्मा तअुद्दून (47) व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् अम्लैतु लहा व हि-य ज़ालि-मतुन् सुम्-म अख़ज़्तुहा व इलय्यल्-मसीर (48) ◆

क़ुल् या अय्युहन्नासु इन्नमा अ-न लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन (49) फ़ल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (50) वल्लज़ी-न सअ़ौ फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी-न उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम (51) व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिंव्-व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा तमन्ना अल्क़श्शैतानु फ़ी उम्निय्यतिही फ़-यन्सख़ुल्लाहु मा युल्क़िश्शैतानु सुम्-म युह्किमुल्लाहु आयातिही, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (52)

الحج ٢٢ ٣٠٥ اقترب ١٧

بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾ وَإِنْ
يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿٤٢﴾ وَ
قَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٣﴾ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ ۖ وَكُذِّبَ مُوسَىٰ
فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٤﴾ فَكَأَيِّنْ
مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا
وَبِئْرٍ مُعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَشِيدٍ ﴿٤٥﴾ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ
فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۖ
فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي
الصُّدُورِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهُ ۚ
وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٧﴾ وَكَأَيِّنْ
مِنْ قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَيَّ
الْمَصِيرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٤٩﴾
فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَحِيمِ ﴿٥١﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا
إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي

منزل ٤

दें तो ये लोग (खुद भी) नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और (दूसरों को भी) नेक कामों के करने को कहें और बुरे कामों से मना करें,[1] और सब कामों का अन्जाम तो अल्लाह के ही इख़्तियार में है।[2] **(41)** और ये (झगड़ालू) लोग अगर आपको झुठलाते हैं तो (आप ग़मगीन न होइए, क्योंकि) इन लोगों से पहले क़ौमे नूह, आद और समूद **(42)** और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूत **(43)** और मद्यन वाले (भी अपने-अपने अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम को) झुठला चुके हैं, और मूसा को भी (क़िब्त की तरफ़ से) झूठा क़रार दिया गया, सो (झुठलाए जाने के बाद) मैंने (उन) काफ़िरों को (थोड़ी-सी) मोहलत दी, फिर मैंने उनको पकड़ लिया, सो मेरा अ़ज़ाब कैसा हुआ। **(44)** (ग़रज़) कितनी बस्तियाँ हैं जिनको हमने (अ़ज़ाब से) हलाक किया, जिनकी यह हालत थी कि वे नाफ़रमानी करती थीं, सो (अब उनकी कैफ़ियत यह है कि) वे अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं,[3] और (इसी तरह उन बस्तियों में) बहुत-से बेकार कुएँ (जो पहले आबाद थे) और बहुत-से क़लई-चूने के महल[4] (भी उन बस्तियों के साथ तबाह हुए)। **(45)** सो क्या ये (इनकारी) लोग मुल्क में चले-फिरे नहीं, जिससे कि उनके दिल ऐसे हो जाएँ कि उनसे समझने लगें, या उनके कान ऐसे हो जाएँ जिससे सुनने लगें। बात यह है कि (न समझने वालों की कुछ) आँखें अन्धी नहीं हो जाया करतीं, बल्कि दिल जो सीनों में हैं वे अन्धे हो जाया करते हैं।[5] **(46)** और ये लोग (नुबुव्वत में शुब्हा निकालने के लिए ऐसे) अ़ज़ाब का तक़ाज़ा करते हैं, हालाँकि अल्लाह कभी अपना वायदा ख़िलाफ़ न करेगा, और आपके रब के पास का एक दिन (यानी क़ियामत का दिन लम्बा होने में या सख़्त होने में) एक हज़ार साल के बराबर है, तुम लोगों की गिनती के मुवाफ़िक़। **(47)** और बहुत-सी बस्तियाँ हैं जिनको मैंने (उनकी तरह) मोहलत दी थी, और वे (उन्हीं की तरह) नाफ़रमानी करती थीं,[6] फिर मैंने उनको पकड़ लिया और (सबको) मेरी ही तरफ़ लौटना होगा।[7] **(48)** ◆

(और) आप (यह भी) फ़रमा दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तो सिर्फ़ तुम्हारे लिए एक खुला डराने वाला हूँ। **(49)** सो जो लोग (इस डर को सुनकर) ईमान ले आए और अच्छे काम करने लगे, उनके लिए मग़्फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी (यानी जन्नत) है। **(50)** और जो लोग हमारी आयतों के मुताल्लिक़ (उनको झुठलाने की) कोशिश करते रहते हैं (नबी को और ईमान वालों को) हराने के लिए, ऐसे लोग दोज़ख़ (में रहने) वाले हैं।[8] **(51)** और ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! हमने आपसे पहले कोई रसूल और कोई नबी ऐसा नहीं भेजा जिसको यह क़िस्सा पेश न आया हो कि जब उसने अल्लाह तआ़ला के अहकाम में से कुछ पढ़ा

(पृष्ठ 608 का शेष) 5. कि फिर हज वग़ैरह से रोक ही न सकेंगे।

6. इसलिए अन्जामकार उनको मग़लूब और मुख़्लिस मोमिनों को ग़ालिब कर देगा।

7. यह इल्लत है जिहाद के जायज़ व मश्रू होने की। मगर मज़लूमियत के सबब और वजह होने से कोई यह शुब्हा न करे कि जो काफ़िर ज़ालिम न हों और इस्लाम के ज़ेरे फ़रमान भी न हों उनके साथ जंग व क़िताल नहीं है।

8. यानी उनके तौहीद के इक़रार पर काफ़िरों का यह तमाम नाराज़गी और गुस्सा था जिसकी वजह से उनको इस क़द्र परेशान किया कि वतन छोड़ना पड़ा।

9. 'व लौ ला दफ़्अुल्लाहि......" के हिक्मत होने से कोई यह शुब्हा न करे कि कभी-कभी अहले हक़ भी मग़लूब हो जाते हैं, असल यह है कि इतना ग़ल्बा जिसमें हक़ न मिटे यही हिक्मत का मक़सद है, सो यह हासिल रहा है।

10. यानी उसके लड़ने में ख़ालिस नीयत अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने की हो। इस आयत से यह शुब्हा न पैदा होना चाहिए कि ग़ैर-मुस्लिमों की यह इबादतगाहें अब भी अल्लाह के यहाँ मक़बूल हैं। असल यह है कि मश्रू होने के अपने-अपने ज़माने में और अपनी-अपनी मिल्लत में उनके मक़सूद होने में उनका मतलूब होना मक़सूद है। और ईसाइयों की दो इबादतगाहों का इसलिए ज़िक्र किया कि उनमें दुरवेशी की भी रस्म जारी थी, और 'ल-यन्सुरन्नल्लाहु......' से कोई शुब्हा न करे कि कभी-कभी हक़ के मददगार भी मग़लूब हो जाते हैं, असल यह है कि उलट-पलट होने के बाद अन्जामकार ग़ल्बा हक़ के मददगारों ही को होता है, शर्त यह है कि वे साबित-क़दम रहें।

1. इस आयत से सहाबा की फ़ज़ीलत और खुलफ़ा-ए-राशिदीन का हक़ पर होना साबित होता है।

2. पस मुसलमानों की मौजूदा हालत को देखकर कोई क्योंकर यह कह सकता है कि **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 612 पर)**

लि-यज्अ़-ल मा युल्क़िश्शैतानु फ़ित्न-तल्-लिल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंव्वल्-क़ासि-यति क़ुलूबुहुम्, व इन्नज़्ज़ालिमी-न लफ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद **(53)** व लियअ़्ल-मल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म अन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़युअ्मिनू बिही फ़तुख़्बि-त लहू क़ुलूबुहुम्, व इन्नल्ला-ह लहादिल्लज़ी-न आमनू इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(54)** व ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी मिर्यतिम् मिन्हु हत्ता तअ्ति-यहुमुस्सा-अ़तु बग़्त-तन् औ यअ्ति-यहुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़क़ीम **(55)** अल्मुल्कु यौमइज़िल्-लिल्लाहि, यह्कुमु बैनहुम्, फ़ल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम **(56)** वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना फ़-उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन **(57)** ❖

वल्लज़ी-न हाजरू फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म क़ुतिलू औ मातू ल-यर्ज़ुक़न्न-हुमुल्लाहु रिज़्क़न् ह-सनन्, व इन्नल्ला-ह लहु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन **(58)**

اقترب ١٧ ٣٠٦ الحج ٢٢

الشيطن ثم يحكم الله ايته والله عليم حكيم ۝ ليجعل
ما يلقي الشيطن فتنة للذين في قلوبهم مرض والقاسية
قلوبهم وان الظلمين لفي شقاق بعيد ۝ وليعلم الذين
اوتوا العلم انه الحق من ربك فيؤمنوا به فتخبت له
قلوبهم وان الله لهاد الذين امنوا الى صراط مستقيم ۝
ولا يزال الذين كفروا في مرية منه حتى تاتيهم الساعة
بغتة او ياتيهم عذاب يوم عقيم ۝ الملك يومئذ لله
يحكم بينهم فالذين امنوا وعملوا الصلحت في جنت
النعيم ۝ والذين كفروا وكذبوا بايتنا فاولئك لهم عذاب
مهين ۝ والذين هاجروا في سبيل الله ثم قتلوا او ماتوا
ليرزقنهم الله رزقا حسنا وان الله لهو خير الرزقين ۝
ليدخلنهم مدخلا يرضونه وان الله لعليم حليم ۝
ذلك ومن عاقب بمثل ما عوقب به ثم بغي عليه
لينصرنه الله ان الله لعفو غفور ۝ ذلك بان الله يولج
اليل في النهار ويولج النهار في اليل وان الله سميع
بصير ۝ ذلك بان الله هو الحق وان ما يدعون من

منزل

लयुद्ख़िलन्नहुम् मुद्-ख़लंय्-यर्ज़ौनहू, व इन्नल्ला-ह ल-अ़लीमुन् हलीम **(59)** ज़ालि-क व मन् आ़क़-ब बिमिस्लि मा अ़ूक़ि-ब बिही सुम्-म बुग़ि-य अ़लैहि ल-यन्सुरन्नहुल्लाहु, इन्नल्ला-ह ल-अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर **(60)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व अन्नल्ला-ह समीअ़ुम्-बसीर **(61)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह

(तब ही) शैतान ने उसके पढ़ने में (काफ़िरों के दिलों में) शुब्हा डाला, फिर अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए (शुब्हात) को नेस्तनाबूद कर देता है, फिर अल्लाह अपनी आयतों को ज़्यादा मज़बूत कर देता है,[1] और अल्लाह तआ़ला ख़ूब इल्म वाला, ख़ूब कुदरत वाला है। **(52)** (और यह सारा क़िस्सा इसलिए किया है) ताकि अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए (शुब्हात) को ऐसे लोगों के लिए आज़माइश (का ज़रिया) बना दे, जिनके दिल में (शक की) बीमारी है, और जिनके दिल (बिलकुल) सख़्त हैं,[2] और वाक़ई (ये) ज़ालिम लोग बड़ी मुख़ालफ़त में हैं। **(53)** और ताकि जिन लोगों को (सही) समझ अ़ता हुई है वे (इन जवाबों और हिदायत के नूर से इस बात का ज़्यादा) यक़ीन कर लें कि यह आपके रब की तरफ़ से हक़ है, ईमान पर ज़्यादा क़ायम हो जाएँ, फिर उसकी तरफ़ उनके दिल (और भी) झुक जाएँ। और वाक़ई (उन) ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला (ही) सीधा रास्ता दिखलाता है। **(54)** और (रह गए) काफ़िर लोग (सो वे) हमेशा इस (पढ़े हुए हुक्म) की तरफ़ से शक ही में रहेंगे, यहाँ तक कि उनपर अचानक क़ियामत आ जाए, या उनपर किसी बेबरकत दिन का (जो कि क़ियामत का दिन है) अ़ज़ाब आ पहुँचे।[3] **(55)** बादशाही उस दिन अल्लाह ही की होगी, वह इन सब (ज़िक्र-शुदा) के दरमियान (अ़मली) फ़ैसला फ़रमाएगा, सो जो लोग ईमान लाए होंगे और अच्छे काम किए होंगे वे चैन के बाग़ों में होंगे। **(56)** और जिन्होंने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा तो उनके लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब होगा। (वह फ़ैसला यह होगा)। **(57)** ❖

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में (यानी दीन के लिए) अपना वतन छोड़ा, फिर वे लोग (कुफ़्र के मुक़ाबले में) क़त्ल किए गए या मर गए, अल्लाह तआ़ला ज़रूर उनको (एक) उम्दा रिज़्क़ देगा,[4] और यक़ीनन अल्लाह तआ़ला सब देने वालों से अच्छा (देने वाला) है। **(58)** (और उम्दा रिज़्क़ के साथ अल्लाह तआ़ला उनको ऐसी जगह लेजाकर) दाख़िल करेगा जिसको वे (बहुत ही) पसन्द करेंगे, और बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला (हर बात की मस्लहत को) ख़ूब जानने वाला है, बहुत हिल्म वाला (भी) है। **(59)** यह (मज़मून तो) हो चुका और जो शख़्स (दुश्मन को) उसी क़द्र तकलीफ़ पहुँचाए जिस क़द्र (उस दुश्मन की तरफ़ से) उसको तकलीफ़ पहुँचाई गई थी, (और) फिर उस शख़्स पर ज्यादती की जाए तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स की ज़रूर मदद करेगा,[5] बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत ज़्यादा माफ़ करने वाला, बहुत ज़्यादा मग़्फ़िरत करने वाला है।[6] (ऐसी बारीकियों पर पकड़ नहीं करता)। **(60)** यह (मोमिनों का ग़ालिब कर देना) इस सबब से है कि अल्लाह तआ़ला रात (के हिस्सों) को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन के (हिस्सों) को रात में दाख़िल कर देता है, और (साथ ही) इस सबब से है कि अल्लाह तआ़ला (इन सब हालात और बातों को) ख़ूब सुनने

(पृष्ठ 610 का शेष) अन्जाम भी उनका यही रहेगा, बल्कि मुम्किन है कि इसका उल्टा हो जाए, चुनाँचे हुआ।

3. मुराद यह है कि वीरान हैं। क्योंकि आ़दतन पहले छत गिरती है फिर उसपर दीवारें आ पड़ती हैं।
4. इसी तरह वायदा किए गए वक़्त पर ये लोग भी अ़ज़ाब दिए जाएँगे।
5. सो उनके भी वही दिल जो सीनों में हैं अन्धे हो रहे हैं, वरना ज़िक्र की गई उम्मतों की हालत से समझ लेते कि सच-मुच कुफ़्र अल्लाह का नापसन्दीदा है, जब ही तो इसपर अ़ज़ाब आया।
6. यानी वह भी जल्दी मचाते और हँसी उड़ाते थे।
7. उस वक़्त कुफ़्र की पूरी सज़ा दी जाएगी।
8. पस यह मेरा दावा है और मैं इसपर दलील रखता हूँ। और अ़ज़ाब से डराना मेरा फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी है, जो अपने वक़्त पर अल्लाह के इख़्तियार से वाक़ेअ़ और ज़ाहिर होगा।

1. अगरचे वे अपने आपमें भी मज़बूत थीं लेकिन एतिराज़ों के जवाब से उस मज़बूती का और ज़्यादा ज़ुहूर हो गया।
2. कि वह शक से आगे बढ़कर बातिल का यक़ीन किए हुए हैं। सो उनकी आज़माइश होती है कि देखें जवाब के बाद अब भी शुब्हात की पैरवी करते हैं या जवाब को समझकर हक़ को कबूल करते हैं।
3. मतलब यह है कि ये अ़ज़ाब को देखे बग़ैर कुफ़्र से बाज़ न आएँगे, मगर उस वक़्त बाज़ आना **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 614 पर)**

हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्अू-न मिन् दूनिही हुवल्-बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल्-अ़लिय्युल्-कबीर **(62)** अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़तुस्बिहुल्-अर्ज़ु मुख़्ज़र्र-तन्, इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर **(63)** लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व इन्नल्ला-ह लहुवल्-ग़निय्युल्-हमीद **(64)** ❖

अलम् त-र अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि वल्फ़ुल्-क तज्री फ़िल्बह्रि बिअम्रिही, व युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ अ़लल्-अर्ज़ि इल्ला बि-इज़्निही, इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफ़ुर्रहीम **(65)** व हुवल्लज़ी अह्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम्, इन्नल्-इन्सा-न ल-कफ़ूर **(66)** लिकुल्लि उम्मतिन् जअ़ल्ना मन्स-कन् हुम् नासिकूहु फ़ला युनाज़िअुन्न-क फ़िल्अम्रि वद्अु इला रब्बि-क, इन्न-क ल-अ़ला हुदम्-मुस्तक़ीम **(67)** व इन् जादलू-क फ़क़ुलिल्लाहु अअ्लमु बिमा तअ्मलून **(68)** अल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून **(69)** अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह यअ्लमु मा फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि इन्-न ज़ालि-क फ़ी किताबिन्, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर **(70)** व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व मा लै-स लहुम् बिही अिल्मुन्, व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर **(71)** व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् तअ्रिफ़ु फ़ी वुजूहिल्लज़ी-न क-फ़रुल्-मुन्क-र, यकादू-न यस्तू-न बिल्लज़ी-न यत्लू-न अ़लैहिम् आयातिना, क़ुल्

الحج ٢٢ ٣٠٦ اقترب ١٧

دُونِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ
اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا
فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ
اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ
اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ
فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى
مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ
ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ وَيَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ
بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ
اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ

منزل

वाला, ख़ूब देखने वाला है। **(61)** यह (मदद) इस सबब से (यक़ीनी) है कि अल्लाह तआ़ला ही (वजूद में) कामिल है, और जिन चीज़ों की ये लोग अल्लाह के सिवा इबादत कर रहे हैं, वे बिलकुल लचर हैं, और अल्लाह ही आ़लीशान और (सबसे) बड़ा है। **(62)** (और ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाए, जिससे ज़मीन हरी-भरी हो गई, बेशक अल्लाह बहुत मेहरबान (और) सब बातों की ख़बर रखने वाला है। **(63)** (सब) उसी का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है, (यानी वह सबका मालिक है) और बेशक अल्लाह ही ऐसा है जो किसी का मोहताज नहीं (और) हर तरह की तारीफ़ के लायक़ है। **(64)** ◆

(और ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के काम में लगा रखा है ज़मीन की चीज़ों को और कश्ती को (भी) कि वह दरिया में उस (ख़ुदा) के हुक्म से चलती है, और वही आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है, हाँ! मगर उसी का हुक्म हो जाए (तो ख़ैर), यक़ीनन अल्लाह तआ़ला लोगों (के हाल) पर बड़ी शफ़्क़त और रहमत फ़रमाने वाला है। **(65)** और वही है जिसने तुमको ज़िन्दगी दी, फिर (मुक़र्ररा वक़्त पर) तुमको मौत देगा, फिर (क़ियामत में दोबारा) तुमको ज़िन्दा करेगा, वाक़ई इनसान है बड़ा बेक़द्र।[1] **(66)** (जितनी उम्मतें शरीअ़त वालों की गुज़री हैं) हमने (उनमें) हर उम्मत के वास्ते ज़िब्ह करने का तरीक़ा मुक़र्रर किया है, कि वे उसी (तरीक़े) पर ज़िब्ह किया करते थे, सो इन (एतिराज़ करने वाले) लोगों को चाहिए कि आपसे इस (ज़िब्ह के) मामले में झगड़ा न करें, और आप (उनको) अपने रब (यानी उसके दीन) की तरफ़ बुलाते रहिए, क्योंकि आप यक़ीनन सही रास्ते पर हैं।[2] **(67)** और अगर (इसपर भी) ये लोग आपसे झगड़ा निकालते रहें, तो आप (आख़िरी बात यह) फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है। **(68)** अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दरमियान क़ियामत के दिन (अ़मली) फ़ैसला फ़रमा देगा, जिन चीज़ों में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। **(69)** (आगे इसकी ताईद है कि ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला सब चीज़ों को जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। यक़ीनी बात है कि यह (सब उनका क़ौल व फ़ेल) आमालनामे में (भी महफ़ूज़) है, (पस) यक़ीनन (साबित हो गया कि) यह (फ़ैसला करना) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक (बहुत) आसान है।[3] **(70)** और ये (मुश्रिक) लोग अल्लाह तआ़ला के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जिन (की इबादत के जायज़ होने पर) अल्लाह तआ़ला ने (अपनी किताब में) कोई हुज्जत नहीं भेजी और न उनके पास उसकी कोई (अ़क़्ली) दलील है, और उन ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा।[4] **(71)** और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें जो कि (अपने मज़ामीन में) ख़ूब

(पृष्ठ 612 का शेष) कुछ नफ़ा न देगा।

4. यानी जन्नत के मेवे और अल्लाह रब्बुल आ़लमीन का दीदार।

5. अगर यह शख़्स बदला लेना चाहे तो दुनिया में शरीअ़त की मदद यक़ीनी है, यानी बदला लेने की इजाज़त। और अगर बदला न ले तो आख़िरत में महसूस और ज़ाहिरी मदद ज़रूरी है, यानी ज़ालिम को अ़ज़ाब दिया जाना।

फ़ायदाः बराबरी की इस रियायत का वाजिब होना मामलों और समाजी ज़िन्दगी में हैं न कि जिहाद में। तथा जो काम हर हाल में गुनाह हैं वे भी इस उमूम से अलग हैं, जैसे कोई किसी के माँ-बाप को बुरा कहे तो बदले में उसके माँ-बाप को बुरा कहना जायज़ न होगा।

6. ऊपर मोमिनों के ग़ालिब और काफ़िरों के मग़लूब होने का बयान था। चूँकि मुसलमानों की मौजूदा बेसरो-सामानी और काफ़िरों का तादाद और सामान व तैयारी में बहुत ज़्यादा होने पर नज़र करते हुए इसमें एक तरह की दूर की बात मालूम होती थी, इसलिए आगे अपनी क़ुदरते कामिला का बयान फ़रमाते हैं। और चूँकि जाहिल काफ़िरों को इस मक़ाम पर अपने माबूदों के मददगार होने का वहम भी हो सकता था, इसलिए 'ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल् हक़्क़ु......" में उनका नाकारा होना इरशाद फ़रमाते हैं। यह मज़मून तौहीदे ज़ाती व सिफ़ाती व अफ़आ़ली को शामिल था और मुश्रिकीन की तरफ़ ख़िताब था जो कि शिर्क में मुब्तला होने से अल्लाह की नेमतों का इनकार करते थे, इसलिए 'अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल' से 'ल-कफ़ूर' तक इस मज़मून की किसी क़द्र तफ़सील फ़रमाते हैं।

1. कि अब भी कुफ़्र व शिर्क से बाज़ नहीं आता। इनसान से मुराद ऐसे ही लोग हैं। इस सूरः के **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 616 पर)**

अ-फ़-उनब्बिउकुम् बिशर्रिम्-मिन् ज़ालिकुम्, अन्नारु, व-अ़-दहल्लाहुल्लज़ी-न क-फ़रू, व बिअ्सल्-मसीर **(72)** ❖

या अय्युहन्नासु जुरि-ब म-सलुन् फ़स्तमिअ़ू लहू, इन्नल्लज़ी-न तद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि लंय्यख़्लुक़ू जुबाबंव्-व लविज्त-मअ़ू लहू, व इंय्यस्लुब्हुमुज़्-जुबाबु शैअल्-ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्हु, ज़अ़ुफ़त्तालिबु वल्मत्लूब **(73)** मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही, इन्नल्ला-ह ल-क़विय्युन् अ़ज़ीज़ **(74)** अल्लाहु यस्तफ़ी मिनल्-मलाइ-कति रुसुलंव्-व मिनन्नासि, इन्नल्ला-ह समीअ़ुम्- बसीर **(75)** यअ़्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम्, व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल्-उमूर **(76)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुर्कअ़ू वस्जुदू वअ़्बुदू रब्बकुम् वफ़्अलुल्-ख़ै-र लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ❑ **(77)** व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्-क़ जिहादिही, हुवज्तबाकुम् व मा ज-अ़-ल अ़लैकुम् फ़िद्दीनि मिन् ह-रजिन्, मिल्ल-त अबीकुम् इब्राही-म, हु-व सम्माकुमुल्-मुस्लिमी-न मिन् क़ब्लु व फ़ी हाज़ा लि-यकूनर्रसूलु शहीदन् अ़लैकुम् व तकूनू शु-हदा-अ अ़लन्नासि फ़-अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वअ़्तसिमू बिल्लाहि, हु-व मौलाकुम् फ़-निअ़्मल्-मौला व निअ़्मन्-नसीर **(78)** ❖

يسطون بالذين يتلون عليهم ءايتنا قل أفأنبئكم بشر
من ذلكم النار وعدها الله الذين كفروا وبئس
المصير ﴿٧٢﴾ يأيها الناس ضرب مثل فاستمعوا له إن
الذين تدعون من دون الله لن يخلقوا ذبابا ولو اجتمعوا
له وإن يسلبهم الذباب شيئا لا يستنقذوه منه ضعف
الطالب والمطلوب ﴿٧٣﴾ ما قدروا الله حق قدره إن الله
لقوي عزيز ﴿٧٤﴾ الله يصطفي من الملئكة رسلا ومن
الناس إن الله سميع بصير ﴿٧٥﴾ يعلم ما بين أيديهم و
ما خلفهم وإلى الله ترجع الأمور ﴿٧٦﴾ يأيها الذين ءامنوا
اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم وافعلوا الخير لعلكم
تفلحون ﴿٧٧﴾ وجاهدوا في الله حق جهاده هو اجتبكم
وما جعل عليكم في الدين من حرج ملة أبيكم
إبرهيم هو سمىكم المسلمين من قبل وفي هذا
ليكون الرسول شهيدا عليكم وتكونوا شهداء على
الناس فأقيموا الصلوة وءاتوا الزكوة واعتصموا بالله هو
مولىكم فنعم المولى ونعم النصير ﴿٧٨﴾

वाज़ेह हैं, पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम उन काफ़िरों के चेहरों में (अन्दरूनी नागवारी की वजह से) बुरे आसार देखते हो,[1] क़रीब है कि ये उन लोगों पर (अब) हमला कर बैठें-(गे) जो हमारी आयतें उनके सामने पढ़ रहे हैं। आप (उन मुश्रिकों से) कहिए कि क्या मैं तुमको इस (क़ुरआन) से भी ज़्यादा नागवार चीज़ बतला दूँ, वह दोज़ख़ है (कि) उसका अल्लाह ने काफ़िरों से वायदा किया है, और वह बुरा ठिकाना है।[2] **(72)** ❖

ऐ लोगो! एक अ़जीब बात बयान की जाती है, उसको कान लगाकर सुनो। (वह यह है कि) इसमें कोई शुब्हा नहीं कि जिनकी तुम ख़ुदा को छोड़कर इबादत करते हो, वे एक (मामूली) मक्खी को तो पैदा ही नहीं कर सकते चाहे सबके सब भी (क्यों न) जमा हो जाएँ। और (पैदा करना तो बड़ी बात है, वे तो ऐसे आ़जिज़ हैं कि) अगर उनसे मक्खी कुछ छीन ले जाए तो उसको (तो) उससे छुड़ा (ही) नहीं सकते, ऐसा इबादत करने वाला भी लचर और ऐसा माबूद भी लचर। **(73)** (अफ़सोस है) उन लोगों ने अल्लाह की जैसी ताज़ीम करनी चाहिए थी (कि उसके सिवा किसी की इबादत न करते) वह न की, अल्लाह तआ़ला बड़ी क़ुव्वत वाला है सबपर ग़ालिब है।[3] **(74)** अल्लाह तआ़ला (को इख़्तियार है) रसूल बनाने के लिए (जिसको चाहता है) चुन लेता है, फ़रिश्तों में से (जिन फ़रिश्तों को चाहे) अहकाम पहुँचाने वाले मुक़र्रर फ़रमा देता है, और (इसी तरह) आदमियों में से। यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब देखने वाला है।[4] **(75)** (यानी) वह उन (सब फ़रिश्तों और आदमियों) की आने वाली और गुज़री हुई हालतों को (ख़ूब) जानता है,[5] और तमाम कामों का मदार अल्लाह ही पर है। (यानी वह अपनी ज़ात से मुस्तक़िल मालिक है)। **(76)** ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ़ किया करो और सज्दा किया करो, और अपने रब की इबादत किया करो, और (तुम) ऐसे नेक काम (भी) किया करो, उम्मीद (यानी वायदा) है कि तुम फ़लाह पाओगे। ❑ **(77)** और अल्लाह (के काम) में ख़ूब कोशिश किया करो जैसा कि उसमें कोशिश करने का हक़ है, उसने तुमको (और उम्मतों से) मुमताज़ फ़रमाया, और (उसने) तुमपर दीन (के अहकाम) में किसी क़िस्म की तंगी नहीं की, तुम अपने बाप इब्राहीम की (इस) मिल्लत पर (हमेशा) क़ायम रहो। उस (अल्लाह) ने तुम्हारा लक़ब मुसलमान रखा है,[6] (क़ुरआन नाज़िल होने से) पहले भी और इस (क़ुरआन) में भी, ताकि तुम्हारे (गवाही के क़ाबिल और मोतबर होने के) रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) गवाह हों, और (इस रसूलुल्लाह की गवाही से पहले) तुम लोगों के मुक़ाबले में गवाह (तजवीज़) हो।[7] सो तुम लोग (ख़ुसूसियत के साथ) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह ही को मज़बूत पकड़े रहो,[8] वह तुम्हारा कारसाज़ है, (किसी की मुख़ालफ़त तुमको हक़ीक़त में नुक़सानदेह न होगी) सो क्या ही अच्छा कारसाज़ है और क्या अच्छा मददगार है। **(78)** ❖

(पृष्ठ 614 का शेष) अक्सर हिस्सों में काफ़िरों के हुज्जत व बहस और उसके बातिल होने की वुजूहात का बयान है, उन बहसों और हुज्जत व तकरार में से एक बहस ज़िब्ह के मुताल्लिक़ थी, जिसका हासिल वही है जो अब भी बाज़ काफ़िरों की ज़बान पर मशहूर है कि ख़ुदा का मारा हुआ मुर्दार और अपना मारा हुआ हलाल, आगे इसपर मुश्रिकों को तंबीह है।

2. सही रास्ते वाले को हक़ होता है कि ग़लत रास्ते वाले को अपनी तरफ़ बुलाए। और ग़लत रास्ते वाले को यह हक़ नहीं होता।

3. क्योंकि फ़ैसले का सबसे बड़ा मदार हाकिम के एतिबार से इल्म ही है, और ग़ैर-हाकिम के एतिबार से इल्म के साथ हुकूमत के हासिल होने की भी ज़रूरत है, और हक़ तआ़ला का हाकिम होना मुसल्लम ही था।

4. न क़ौल के एतिबार से कि उनके फ़ेल के अच्छा होने पर कोई हुज्जत पेश कर सके, न अ़मल के एतिबार से कि उनको अ़ज़ाब से बचा सके।

1. जैसे चेहरे पर बल पड़ जाना, नाक चढ़ जाना, तैवर बदल जाना।

2. यानी क़ुरआन से नागवारी का नागवार नतीजा दोज़ख़ है।

3. तो इबादत ख़ालिस उसी का हक़ था न कि उसका जो न क़ुव्वत वाला हो और न ग़ालिब।

4. यानी रसूल होने का मदार अल्लाह के चुन लेने पर है, इसमें फ़रिश्ता होने की कुछ ख़ुसूसियत नहीं। बल्कि जिस तरह फ़रिश्ता होने के साथ रिसालत जमा हो सकती है, जिसको मुश्रिक भी मानते हैं, इसी तरह इनसान होने के साथ **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 618 पर)**

अट्ठारहवाँ पारः क़द् अफ़्ल-हल् मुअ्मिनून

23 सूरतुल्-मुअ्मिनून 74

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4538 अक्षर, 1070 शब्द 118 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़द् अफ़्ल-हल् मुअ्मिनून **(1)** अल्लज़ी-न हुम् फ़ी सलातिहिम् ख़ाशिअ़ून **(2)** वल्लज़ी-न हुम् अ़निल्लग़्वि मुअ्रिज़ून **(3)** वल्लज़ी-न हुम् लिज़्ज़काति फ़ाअ़िलून **(4)** वल्लज़ी-न हुम् लिफुरूजिहिम् हाफ़िज़ून **(5)** इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन **(6)** फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-आ़दून **(7)** वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राअ़ून **(8)** वल्लज़ी-न हुम् अ़ला स-लवातिहिम् युहाफ़िज़ून ✣ **(9)** उलाइ-क हुमुल्-वारिसून **(10)** अल्लज़ी-न यरिसूनल् फ़िर्दौ-स हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(11)** व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सुलालतिम्-मिन् तीन **(12)** सुम्-म जअ़ल्नाहु नुत्फ़-तन् फ़ी क़रारिम्-मकीन **(13)** सुम्-म ख़लक़्नन्-नुत्फ़-त अ़-ल-क़तन् फ़-ख़लक़्नल् अ़-ल-क़-त मुज़्-ग़तन् फ़-ख़लक़्नल्-मुज़्ग़-त अ़िज़ामन् फ़-कसौनल्-अ़िज़ा-म लह्मन्, सुम्-म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आख़-र, फ़-तबा-रकल्लाहु अह्सनुल्-ख़ालिक़ीन **(14)** सुम्-म इन्नकुम् बअ़्-द ज़ालि-क ल-मय्यितून **(15)** सुम्-म

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ
فٰعِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ إِلَّا عَلٰى
أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ
ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِأَمٰنٰتِهِمْ
وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ
هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ
نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ
مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ
أَنْشَأْنٰهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ أَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ
بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۝
وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنّٰهُ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّا
عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۝ فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

✣ व. लाज़िम

अट्ठारहवाँ पारः क़द् अफ़्ल-हल् मुअ्मिनून

23 सूरः मुअ्मिनून 74

सूरः मुअ्मिनून मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 118 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रह्म वाले हैं।

[1]यक़ीनन उन मुसलमानों ने (आख़िरत में) फ़लाह पाई[2] **(1)** जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ़ करने वाले हैं।[3] **(2)** और जो लग्व बातों से (चाहे क़ौली हों या फ़ेली) अलग रहने वाले हैं।[4] **(3)** और जो (आमाल व अख़्लाक़ में) अपनी सफ़ाई करने वाले हैं। **(4)** और जो अपनी शरमगाहों की (हराम शहवत पूरी करने से) हिफ़ाज़त करने वाले हैं। **(5)** लेकिन अपनी बीवियों से या अपनी (शरई) बाँदियों से (हिफ़ाज़त नहीं करते), क्योंकि उनपर (उसमें) कोई इल्ज़ाम नहीं। **(6)** हाँ, जो इसके अ़लावा (और जगह शहवत पूरी करने का) तलबगार हो,[5] ऐसे लोग (शरई) हद से निकलने वाले हैं। **(7)** और जो अपनी (सुपुर्दगी में ली हुई) अमानतों और अपने अ़हदों का ख़्याल रखने वाले हैं। **(8)** और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं। **(9)** (पस) ऐसे ही लोग वारिस होने वाले हैं। **(10)** जो जन्नत के वारिस होंगे (और) वे उसमें हमेशा हमेशा रहेंगे। **(11)** और हमने इनसान को मिट्टी के ख़ुलासे (यानी ग़िज़ा) से बनाया। **(12)** फिर हमने उसको नुत्फ़े से बनाया जो कि (एक मुक़र्ररा मुद्दत तक) एक महफ़ूज़ मक़ाम (यानी गर्भ) में रहा। **(13)** फिर हमने उस नुत्फ़े को ख़ून का लोथड़ा बना दिया, फिर हमने उस ख़ून के लोथड़े को (गोश्त की) बोटी बना दिया, फिर हमने उस बोटी (के बाज़ हिस्सों) को हड्डियाँ बना दिया, फिर हमने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया, फिर हमने (उसमें रूह डालकर) उसको एक दूसरी ही (तरह की) मख़्लूक़ बना दिया। सो कैसी बड़ी शान है अल्लाह की जो तमाम बनाने वालों से बढ़कर है।[6] **(14)** फिर तुम इस (तमाम अ़जीब क़िस्से) के बाद ज़रूर ही मरने वाले हो। **(15)** फिर तुम क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किए जाओगे। **(16)** और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाए और हम मख़्लूक़ (की मस्लहतों) से बेख़बर न थे। **(17)** और हमने आसमान से (मुनासिब) मिक़दार के साथ

(पृष्ठ 616 का शेष) भी वह जमा हो सकती है।

5. ग़रज़ सबके सुने हुए और देखे हुए हालात उसको मालूम हैं, उनमें से बाज़ का हाल चूँकि उनके चुन लेने को चाहता था इसलिए उन्हें रिसालत के लिए चुन लिया गया।

6. चुनाँचे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ज़बान से कहलवाया- 'उम्मतम्-मुस्लि-मतल् ल-क' और शायद क़ुरआन से पहले नाज़िल होने वाली किताबों में भी हो। और क़ुरआन में तो जगह-जगह आया है, और अल्लाह तआ़ला ने यह उन्वान मुक़र्रर किया है तो ज़रूर ही उम्मते मुहम्मदिया में इताअ़त व फ़रमाँर्दारी का माद्दा ज़्यादा होगा।

7. तुम एक बड़े मुक़द्दमे में जिसमें एक फ़रीक़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम होंगें और दूसरा फ़रीक़ उनकी मुख़ालिफ़ क़ौमें होंगी। उन मुख़ालिफ़ क़ौमों के मुक़ाबले में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के हक़ में गवाही दो, और तुम्हारी गवाही से उस मुक़द्दमे का फ़ैसला अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के हक़ में हो और मुख़ालिफ़ मुजरिम क़रार पाकर सज़ा पाने वाले हों।

8. यानी हिम्मत व इरादे के साथ दीन के कामों में लगे रहो। अल्लाह के ग़ैर के ख़ुश होने या ख़ुश न होने, या अपने नफ़्स की मस्लहत या नुक़सान की तरफ़ तवज्जोह मत करो।

1. इस सूरः का ख़ुलासा ये मज़ामीन हैं- अव्वल इबादत की फ़ज़ीलत जो शुरू ही में ज़िक्र की गई है। दूसरे अल्लाह की क़ुदरत के आसार का बयान जो इनाम व तौहीद दोनों पर दलालत करता है। तीसरे नुबुव्वत की तहक़ीक़ मय उसके मुताल्लिक़ जो शुब्हात हैं उनका दूर करना। चौथे मरने के बाद ज़िन्दा होना और आमाल का बदला दिया जाना। पाँचवे काफ़िरों के हाल की बुराई। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 620 पर)**

इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति तुब्अ़सून (16) व ल-क़द् ख़लक़्ना फ़ौक़कुम् सब्-अ़ तराइ-क़ व मा कुन्ना अ़निल्-ख़ल्क़ि ग़ाफ़िलीन (17) व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् बि-क़-दरिन् फ़-अस्कन्नाहु फ़िल्अर्ज़ि व इन्ना अ़ला ज़हाबिम् बिही लक़ादिरून (18) फ़-अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव्-व अअ्नाबिन् ✣ लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसीरतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून (19) व श-ज-रतन् तख़्रुजु मिन् तूरि सैना-अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्ग़िल् लिल्आकिलीन (20) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आ़मि ल-अ़िब्-रतन्, नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु क़सी-रतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून (21) व अ़लैहा व अ़लल्-फ़ुल्कि तुह्मलून (22) ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तक़ून (23) फ़क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा हाज़ा इल्ला ब-शरुम्- मिस्लुकुम् युरीदु अंय्-य-तफ़ज़्ज़-ल अ़लैकुम्, व लौ शा-अल्लाहु ल-अन्ज़-ल मलाइ-कतम् मा समिअ़्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्-अव्वलीन (24) इन् हु-व इल्ला रजुलुम्-बिही जिन्नतुन् फ़-तरब्बसू बिही हत्ता हीन (25) क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून (26) फ़-औहैना इलैहि अनिस्नअ़िल्-फ़ुल्-क बि-अअ्युनिना व वह़्यिना फ़-इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु फ़स्लुक् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल-क इल्ला मन् स-ब-क़ अ़लैहिल्-क़ौलु मिन्हुम् व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू इन्नहुम् मुग़्-रक़ून (27) फ़-इज़स्तवै-त अन्-त व मम्म-अ़-क

قد افلح ١٨ ٣١٠ المؤمنون ٢٣

وَّاَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً
تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾
وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ
فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ
تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ
عَلَيْكُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا
الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى
حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ
اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ
فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ
عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ
مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ
اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

منزل

✣ व. लाज़िम ◆ रु. 1/22/1

पानी बरसाया, फिर हमने उसको (मुद्दत तक) ज़मीन में ठहराया, और हम उस (पानी) के ख़त्म कर देने पर (भी) क़ादिर हैं। **(18)** फिर हमने उस (पानी) के ज़रिये से बाग़ पैदा किए खजूरों के और अंगूरों के, तुम्हारे वास्ते उनमें कसरत से मेवे भी हैं, और उनमें से खाते भी हो। **(19)** और (उसी पानी से) एक (ज़ैतून का) पेड़ भी (हमने पैदा किया) जो कि तूरे- सीना में (कसरत से) पैदा होता है,[1] जो कि उगता है तेल लिए हुए और खाने वालों के लिए सालन लिए हुए।[2] **(20)** और तुम्हारे लिए मवेशियों में (भी) ग़ौर करने का मौक़ा है कि हम तुमको उनके पेट में की चीज़ (यानी दूध) पीने को देते हैं, और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत-से फ़ायदे हैं,[3] और (साथ ही) उनमें से बाज़ को खाते भी हो। **(21)** और उनपर और कश्ती पर लदे-लदे फिरते (भी) हो। **(22)** ❖

और हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा, सो उन्होंने (अपनी क़ौम से) फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह ही की इबादत किया करो, उसके सिवा कोई तुम्हारे लिए माबूद बनाने के लायक़ नहीं, फिर क्या तुम (दूसरों को माबूद बनाने से) डरते नहीं हो। **(23)** पस (नूह अ़लैहिस्सलाम की यह बात सुनकर) उनकी क़ौम में जो काफ़िर सरदार थे, (अ़वाम से) कहने लगे कि यह शख़्स सिवाय इसके कि तुम्हारी तरह का एक (मामूली) आदमी है और कुछ नहीं, (इस दावे से) उसका मतलब यह है कि तुमसे बरतर होकर रहे,[4] और अल्लाह तआ़ला को (रसूल भेजना) मन्ज़ूर होता तो फ़रिश्तों को भेजता, हमने यह बात अपने पहले बड़ों में नहीं सुनी। **(24)** बस यह एक आदमी है जिसको जुनून हो गया है। सो एक ख़ास वक़्त (यानी उसके मरने के वक़्त) तक उस (की हालत) का और इन्तिज़ार कर लो। **(25)** नूह ने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरा बदला ले इस वजह से कि उन्होंने मुझको झुठलाया है। **(26)** पस हमने (उनकी दुआ़ क़बूल की और) उनके पास हुक्म भेजा कि तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म से कश्ती तैयार कर लो, फिर जिस वक़्त हमारा (अ़ज़ाब का) हुक्म (क़रीब) आ पहुँचे और (निशानी उसकी यह है कि) ज़मीन से पानी उबलना शुरू हो तो (उस वक़्त) हर क़िस्म (के जानवरों) में से एक-एक नर और एक-एक मादा यानी दो-दो अ़दद उस (कश्ती) में दाख़िल कर लो, और अपने घर वालों को भी (सवार कर लो) उसको छोड़कर जिसपर उनमें से (ग़र्क़ होने का) हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है। और (यह सुन लो कि) मुझसे काफ़िरों (की नजात) के बारे में कुछ गुफ़्तगू मत करना (क्योंकि) वे सब ग़र्क़ किए जाएँगे। **(27)** फिर जिस वक़्त तुम और तुम्हारे (मुसलमान) साथी कश्ती में बैठ चुको तो यूँ कहना, शुक्र है ख़ुदा का जिसने हमको काफ़िर लोगों से (यानी उनके फ़ेलों और तकलीफ़ों से) नजात दी। **(28)** और यूँ कहना कि ऐ मेरे रब! मुझको (ज़मीन पर) बरकत का उतारना उतारियो,[5] और आप

(पृष्ठ 618 का शेष) छठे उनमें से अक्सर की तक़्वियत (यानी मज़बूती व ताक़त देने) के लिए बाज़ हिकायतें और क़िस्से। सातवें बाज़ आला आमाल व उम्दा अख़्लाक़ की तालीम जो पहले मज़मून के मुनासिब है।

2. यानी उन मुसलमानों ने फ़लाह पाई जो अक़ायद को सही रखने के साथ निम्न सिफ़तों के साथ भी मौसूफ़ हैं।

3. ख़ुशूअ़ की हक़ीक़त है सुकून, यानी दिल का भी कि दूसरे ख़्यालात को दिल में इरादा करके हाज़िर न करे, और जिस्म के अंगों का भी कि बेफ़ायदा हरकतें न करे। और उसकी फ़र्ज़ियत में कलाम है, मगर हक़ यह है कि नमाज़ के सही होने के लिए तो लाज़िमी नहीं और इस दर्जे में फ़र्ज़ नहीं, लेकिन नमाज़ के क़बूल होने के लिए ख़ुशूअ़ ज़रूरी है और इस दर्जे में फ़र्ज़ है।

4. 'लग़्व' का अदना दर्जा अगरचे मुबाह हो मगर उसका छोड़ना अच्छा और क़ाबिले तारीफ़ है, और नाफ़रमानी लग़्व का आला दर्जा है, उसका छोड़ना वाजिब है। पस लग़्व के मायने हैं ग़ैर-मुफ़ीद, फिर उसकी दो क़िस्में हैं- नुक़सानदेह व ग़ैर-नुक़सानदेह।

5. इसके अ़लावा वह तलबगार हो, इसमें ज़िना व बदफ़ेली व चौपायों के साथ संभोग वग़ैरह इज्माई तौर पर और बाज़ के नज़दीक हाथ से मनी (यानी वीर्य) निकालना भी दाख़िल है। और अगर यह आयत मदनी हो तो मुताअ़ के हराम होने पर भी इससे दलील पकड़ना सही है।

6. क्योंकि दूसरे बनाने वाले सिर्फ़ चीज़ों को अलग-अलग कर सकते या कई चीज़ों को मिला-जुला सकते हैं, ज़िन्दगी का देना हक़ीक़त में यह अल्लाह ही का काम है।

1. जिस पहाड़ का नाम तूर है तूरे-सीना भी उसी का नाम है। क्योंकि वह जिस जगह है **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 622 पर)**

अ़लल्-फ़ुल्कि फ़क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी नज्जाना मिनल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन **(28)** व क़ुर्रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़-लम् मुबा-रकंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन **(29)** इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिंव्-व इन् कुन्ना लमुब्तलीन **(30)** सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-बअ़्दिहिम् क़र्नन् आख़रीन **(31)** फ़-अर्सल्ना फ़ीहिम् रसूलम् मिन्हुम् अनिअ़्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तक़ून **(32)** ❖

व क़ालल्-मल-उ मिन् क़ौमिहिल्-लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिलिक़ाइल्-आख़िरति व अत्रफ़्नाहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या मा हाज़ा इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् यअ्कुलु मिम्मा तअ्कुलू-न मिन्हु व यश्रबु मिम्मा तश्रबून **(33)** व ल-इन् अ-तअ़्तुम् ब-शरम् मिस्-लकुम् इन्नकुम् इज़ल्-लख़ासिरून **(34)** अ-यअिदुकुम् अन्नकुम् इज़ा मित्तुम् व कुन्तुम् तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अन्नकुम् मुख़्रजून **(35)** हैहा-त हैहा-त लिमा तूअ़दून **(36)** इन् हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा नह्नु बिमब्अ़ूसीन **(37)** इन् हु-व इल्ला रजुलु-निफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबंव्-व मा नह्नु लहू बिमुअ्मिनीन **(38)** क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून **(39)** क़ा-ल अ़म्मा क़लीलिल्-लयुस्बिहुन्-न नादिमीन **(40)** फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सै-हतु बिल्हक़्क़ि फ़-जअ़ल्नाहुम् ग़ुसा-अन् फ़बुअ़्दल्-लिल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन **(41)** सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-बअ़्दिहिम् क़ुरूनन् आ-ख़रीन **(42)** मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून **(43)** सुम्-म अर्सल्ना रुसु-लना तत्रा, कुल्लमा

وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٣١﴾
فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ
غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ
كَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَٰذَا إِلَّا
بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾
وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَخَاسِرُونَ ﴿٣٤﴾ أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ
إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنَّكُمْ مُخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ
لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا
نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَ
مَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا
قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ﴿٤٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ
غُثَاءً فَبُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا
آخَرِينَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ
أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّ مَا جَاءَ أُمَّةً رَسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَأَتْبَعْنَا
بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبُعْدًا لِقَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾
ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٤٥﴾

सब उतारने वालों से अच्छे हैं। **(29)** इस (ज़िक्र हुए वाक़िए) में बहुत-सी निशानियाँ हैं, और हम (ये निशानियाँ मालूम कराकर अपने बन्दों को) आज़माते हैं।[1] **(30)** फिर हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम के बाद दूसरा गिरोह पैदा किया।[2] **(31)** फिर हमने उनमें एक पैग़म्बर को भेजा जो उनमें ही के थे,[3] (उन पैग़म्बर ने कहा) कि तुम लोग अल्लाह तआ़ला ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा और कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं, क्या तुम (शिर्क से) डरते नहीं हो। **(32)** ❖

और (उन पैग़म्बर की यह बात सुनकर) उनकी क़ौम में जो सरदार थे, जिन्होंने (ख़ुदा और रसूल के साथ) कुफ़्र किया था, और आख़िरत के आने को झुठलाया था, और हमने उनको दुनियावी ज़िन्दगी में ऐश व आराम भी दिया था, कहने लगे कि बस यह तो तुम्हारी तरह एक (मामूली) आदमी हैं, (चुनाँचे) ये वही खाते हैं जो तुम खाते हो और वही पीते हैं जो तुम पीते हो। **(33)** और अगर तुम अपने जैसे एक (मामूली) आदमी के कहने पर चलने लगो तो बेशक तुम (अ़क़्ल के) घाटे में हो।[4] **(34)** क्या यह शख़्स तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और (मरकर) मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे तो (दोबारा ज़िन्दा करके ज़मीन से) निकाले जाओगे। **(35)** बहुत ही दूर और बहुत ही दूर "की बात" है, जो बात तुमसे कही जाती है। **(36)** बस ज़िन्दगी तो यही हमारी दुनियावी ज़िन्दगी है कि हममें कोई मरता है और कोई पैदा होता है, और हम दोबारा ज़िन्दा न किए जाएँगे।[5] **(37)** बस यह एक ऐसा शख़्स है जो अल्लाह पर झूठ बाँधता है, और हम तो हरगिज़ इसको सच्चा न समझेंगे। **(38)** पैग़म्बर ने दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! मेरा बदला ले, इस वजह से कि उन्होंने मुझको झुठलाया। **(39)** इरशाद हुआ कि ये लोग जल्द ही शर्मिन्दा होंगे। **(40)** चुनाँचे उनको एक सख़्त आवाज़ (यानी अ़ज़ाब) ने सच्चे वायदे के मुवाफ़िक़ आ पकड़ा, (जिससे वे सब हलाक हो गए) फिर हमने उनको कूड़े-करकट (की तरह बरबाद) कर दिया, सो ख़ुदा की मार काफ़िर लोगों पर।[6] **(41)** फिर उन (आ़द व समूद) के हलाक होने के बाद हमने और उम्मतों को पैदा किया। **(42)** (उन उम्मतों में से) कोई उम्मत अपनी मुक़र्ररा मुद्दत से (हलाक होने में) न आगे आ सकती थी और न (उस मुद्दत से) वे लोग पीछे हट सकते थे। **(43)** फिर (उनके पास) हमने अपने पैग़म्बरों को एक के बाद एक भेजा, जब कभी किसी उम्मत के पास उस उम्मत का (ख़ास) रसूल आया, उन्होंने उसको झुठलाया, सो हमने (भी हलाक करने में) एक के बाद एक का नम्बर लगा दिया। और हमने उनकी कहानियाँ बना दीं,[7] सो ख़ुदा की मार उन लोगों पर जो (अम्बिया के समझाने पर भी) ईमान न लाते थे। **(44)** फिर हमने मूसा और उनके भाई हारून को अपने अहकाम और खुली दलील[8] देकर फ़िरऔ़न और उसके दरबारियों के पास (भी पैग़म्बर बनाकर) भेजा। **(45)** सो उन लोगों

(पृष्ठ 620 का शेष) उसका नाम सीना है और सीनीन भी। अगरचे अब कुछ और नाम हो गया हो, और ज़ैतून की तख़्सीस तूर के साथ उसके कसरत से पैदा होने की वजह से है। और तूर की तख़्सीस ज़ैतून के साथ फ़ायदों के ज़्यादा होने की वजह से है।

2. यानी उसके फल से दोनों काम की चीज़ हासिल होती है। चाहे रोशन करने और मालिश करने के काम में लाओ चाहे उसमें रोटी डुबोकर खाओ।

3. जैसे उनके बाल और ऊन काम आते हैं।

4. यानी ओ़हदा व हुकूमत मक़सूद है।

5. यानी ज़ाहिरी व बातिनी इत्मीनान के साथ रखियो।

1. कि देखें कौन-सा फ़ायदा उठाता है और कौन-सा नहीं उठाता।

2. मुराद क़ौमे आ़द है या समूद।

3. मुराद हूद अ़लैहिस्सलाम या सालेह अ़लैहिस्सलाम हैं।

4. यानी बड़ी बेवक़ूफ़ी है।

5. तो भला ऐसा शख़्स कहीं इताअ़त व इत्तिबा के लायक़ हो सकता है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 624 पर)**

जा-अ उम्मतर्रसूलुहा कज़्ज़बूहु फ़-अत्बअ्ना बअ्-ज़हुम् बअ्ज़ंव्-व जअ़ल्नाहुम् अहादी-स फ़बुअ्दल्-लिक़ौमिल्-ला युअ्मिनून (44) सुम्-म अर्सल्ना मूसा व अख़ाहु हारू-न बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन (45) इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमन् आ़लीन (46) फ़क़ालू अनुअ्मिनु लि-ब-शरैनि मिस्लिना व क़ौमुहुमा लना आ़बिदून (47) फ़-कज़्ज़बूहुमा फ़कानू मिनल्-मुह्लकीन (48) व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब लअ़ल्लहुम् यह्तदून (49) व जअ़ल्नब्-न मर्य-म व उम्महू आ-यतंव्-व आवैनाहुमा इला रब्वतिन् ज़ाति क़रारिंव्-व मअ़ीन (50) ❖

या अय्युहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ्मलू सालिहन्, इन्नी बिमा तअ्मलू-न अ़लीम (51) व इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-दतंव्-व अ-न रब्बुकुम् फ़त्तक़ून (52) फ़-तक़त्तअू अम्रहुम् बैनहुम् ज़ुबुरन्, कुल्लु हिज़्बिम्-बिमा लदैहिम् फ़रिहून (53) फ़-ज़र्हुम् फ़ी ग़म्-रतिहिम् हत्ता हीन (54)

अ-यह्सबू-न अन्नमा नुमिद्दुहुम् बिही मिम्-मालिंव्-व बनीन (55) नुसारिअु लहुम् फ़िल्- ख़ैराति, बल् ला यश्अुरून (56) इन्नल्लज़ी-न हुम् मिन् ख़श्यति रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून (57) वल्लज़ी-न हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअ्मिनून (58) वल्लज़ी-न हुम् बिरब्बिहिम् ला युश्रिकून (59) वल्लज़ी-न युअ्तू-न मा आतौ व क़ुलूबुहुम् वजि-लतुन् अन्नहुम् इला रब्बिहिम् राजिअून (60) उलाइ-क युसारिअू-न फ़िल्-ख़ैराति व हुम् लहा साबिक़ून (61) व ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा व लदैना किताबुंय्यन्तिक़ु बिल्हक़्क़ि

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوا
أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَابِدُونَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوهُمَا
فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ
رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾ يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ
وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾ وَإِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ
أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ
زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِي غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ
حِينٍ ﴿٥٤﴾ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَالٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ
لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ
خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾
وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا
وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ
فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا
وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوبُهُمْ
فِي غَمْرَةٍ مِنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا

ने (उनकी तस्दीक़ व इताअ़त से) तकब्बुर किया, और वे लोग थे ही घमण्डी।[1] (46) चुनाँचे वे (आपस में) कहने लगे कि क्या हम ऐसे दो शख़्सों पर जो हमारी तरह के आदमी हैं ईमान ले आएँ, हालाँकि उनकी क़ौम (तो खुद) हमारे हुक्म के ताबे हैं।[2] (47) ग़रज़ वे लोग उन दोनों को झुठलाते ही रहे, पस हलाक किए गए। (48) और (उनके हलाक होने के बाद) हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को किताब (यानी तौरात) अ़ता फ़रमाई, ताकि (उसके ज़रिये से) वे लोग हिदायत पाएँ। (49) और हमने मरियम (अ़लैहस्सलाम) के बेटे (ईसा अ़लैहिस्सलाम) को और उनकी माँ (हज़रत मरियम अ़लैहस्सलाम) को बड़ी निशानी बनाया, और हमने उन दोनों को एक ऐसी बुलन्द ज़मीन पर लेजाकर पनाह दी[3] जो (ग़ल्लों और मेवों के पैदा होने की वजह से) ठहरने के क़ाबिल और हरी-भरी जगह थी। (50) ❖

ऐ पैग़म्बरो! तुम (और तुम्हारी उम्मतें) नफ़ीस चीज़ें खाओ और नेक काम (यानी इबादत) करो, (और) मैं तुम सबके किए हुए कामों को ख़ूब जानता हूँ।[4] (51) और (हमने उन सबसे यह भी कहा कि) यह है तुम्हारा तरीक़ा कि वह एक ही तरीक़ा है,[5] और (हासिल उस तरीक़े का यह है) कि मैं तुम्हारा रब हूँ, सो तुम मुझसे डरते रहो।[6] (52) सो उन लोगों ने अपने दीन में अपना तरीक़ा अलग-अलग करके इख़्तिलाफ़ पैदा कर लिया। हर गिरोह के पास जो दीन है वह उसी से खुश है।[7] (53) सो आप उनको उनकी (उसी) जहालत में एक ख़ास वक़्त (यानी मौत तक) रहने दीजिए। (54) क्या ये लोग यूँ गुमान कर रहे हैं कि हम उनको जो कुछ माल व औलाद देते चले जाते हैं (55) तो हम उनको जल्दी-जल्दी फ़ायदा पहुँचा रहे हैं, (यह बात हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग (उसकी वजह) नहीं जानते। (56) इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं (57) और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58) और जो लोग (उस ईमान में) अपने रब के साथ शिर्क नहीं करते हैं। (59) और जो लोग (अल्लाह की राह में) देते हैं जो कुछ देते हैं, और (बावजूद देने के) उनके दिल इससे ख़ौफ़ज़दा होते हैं कि वे अपने रब के पास जाने वाले हैं।[8] (60) ये लोग (अलबत्ता) अपने फ़ायदे जल्दी-जल्दी हासिल कर रहे हैं, और वे उनकी तरफ़ दौड़ते हैं, (न कि ये काफ़िर लोग जिनका ज़िक्र हुआ)। (61) और हम (तो) किसी को उसकी वुसअ़त से ज़्यादा काम करने को नहीं कहते, (पस जो काम बतला रखे हैं, सब आसान ही हैं) और हमारे पास एक दफ़्तर (नामा-ए-आमाल का महफ़ूज़) है, जो ठीक-ठीक (सबका हाल) बता देगा और लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। (62) बल्कि उन काफ़िरों के दिल इस दीन की तरफ़ से जहालत (और शक) में हैं, और इसके अ़लावा उन लोगों के और भी (बुरे-बुरे)

(पृष्ठ 622 का शेष) 6. चूँकि "सैहा" (यानी सख़्त आवाज़) से समूद का अ़ज़ाब दिया जाना दूसरी आयतों में भी आया है। इस वजह से बाज़ ने तो इसको समूद का क़िस्सा समझा है, और चूँकि अक्सर जगह नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के बाद क़ौमे आ़द का क़िस्सा आया है इस बात से बाज़ ने इसको आ़द का क़िस्सा समझा है, और मुराद "सैहा" से एक हौलनाक सज़ा ली है, या मुम्किन है कि आ़द पर भी "सैहा" आया हो।

7. यानी वे ऐसे नेस्तनाबूद हुए कि सिवाय कहानियों के उनका कुछ नामो-निशान न रहा।

8. यानी साफ़ मोजिज़ा जो कि नुबुव्वत की दलील है।

1. यानी पहले ही से उनका दिमाग़ सड़ा हुआ था।

2. यानी हमको तो खुद उनकी क़ौम पर सरदारी हासिल है। फिर उन दोनों को हमपर कैसे सरदारी हासिल हो सकती है।

3. "हेरो देस" नाम का एक ज़ालिम बादशाह नुजूमियों से यह सुनकर कि ईसा अ़लैहिस्सलाम को सरदारी हासिल होगी बचपन ही में उनका दुश्मन हो गया था। अल्लाह के ख़बर देने से मरियम अ़लैहस्सलाम उनको लेकर मुल्क मिस्र चली गईं और उस ज़ालिम के मरने के बाद फिर 'शाम' चली आईं।

4. पस इबादतों पर फल अ़ता करूँगा। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 626 पर)**

व हुम् ला युज़्लमून **(62)** बल् क़ुलूबुहुम् फ़ी ग़म्रतिम्-मिन् हाज़ा व लहुम् अअ्मालुम्-मिन् दूनि ज़ालि-क हुम् लहा आ़मिलून **(63)** हत्ता इज़ा अख़ज़्ना मुत्रफ़ीहिम् बिल्-अ़ज़ाबि इज़ा हुम् यज्अरून **(64)** ला तज्अरुल्-यौ-म, इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून **(65)** क़द् कानत् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् अ़ला अअ्क़ाबिकुम् तन्किसून **(66)** मुस्तक्बिरी-न बिही सामिरन् तह्जुरून **(67)** अ-फ़लम् यद्दब्बरुल्-क़ौ-ल अम् जा-अहुम् मा लम् यअ्ति आबा-अहुमुल्-अव्वलीन **(68)** अम् लम् यअ्रिफ़ू रसूलहुम् फ़हुम् लहू मुन्किरून **(69)** अम् यक़ूलू-न बिही जिन्नतुन्, बल् जा-अहुम् बिल्हक़्क़ि व अक्सरुहुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून **(70)** व लवित्त-बअ़ल्- हक़्क़ु अह्वा-अहुम् ल-फ़-स-दतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्-न, बल् अतैनाहुम् बिज़िक्रिहिम् फ़हुम् अ़न् ज़िक्रिहिम् मुअ़्रिज़ून **(71)** अम् तस्अलुहुम् ख़र्जन् फ़-ख़राजु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व हु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन **(72)** व इन्न-क ल-तद्अूहुम इला सिरातिम्- मुस्तक़ीम **(73)** व इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति अ़निस्सिराति लनाकिबून **(74)** व लौ रहिम्नाहुम् व कशफ़्ना मा बिहिम् मिन् ज़ुर्रिल् ल-लज्जू फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून ◆ **(75)** व ल-क़द् अख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि फ़मस्तकानू लिरब्बिहिम् व मा य-तज़र्रअ़ून **(76)** हत्ता इज़ा फ़तह्ना अ़लैहिम् बाबन् ज़ा-अ़ज़ाबिन् शदीदिन् इज़ा हुम् फ़ीहि मुब्लिसून **(77)** ❖

عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾
لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى
عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا
تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ
كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ
وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾
اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَ
اِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ
مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ
بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰۤى اِذَا
فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾
وَهُوَ الَّذِىْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾

व हुवल्लज़ी अन्श-अ लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा

अ़मल हैं जिनको ये करते रहते हैं। (63) यहाँ तक कि हम जब उनके ख़ुशहाल लोगों को (मौत के बाद) अ़ज़ाब में धर पकड़ेंगे तो फ़ौरन चिल्ला उठेंगे।[1] (64) (उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) अब मत चिल्लाओ, हमारी तरफ़ से तुम्हारी बिलकुल मदद न होगी।[2] (65) मेरी आयतें तुमको (रसूल की ज़बानी) पढ़-पढ़कर सुनाई जाया करती थीं तो तुम उल्टे पाँव भागते थे (66) तकब्बुर करते हुए, क़ुरआन का मश्ग़ला बनाते हुए, (इस क़ुरआन की शान में) बेहूदा बकते हुए।[3] (67) तो क्या उन लोगों ने इस (अल्लाह के) कलाम में ग़ौर नहीं किया, या उनके पास ऐसी चीज़ आई है जो उनके पहले बड़ों के पास नहीं आई थी।[4] (68) या ये लोग अपने रसूल (की दियानत, अमानत और सच्चाई) से वाक़िफ़ न थे इस वजह से उनके इनकारी हुए।[5] (69) या ये लोग आपके बारे में जुनून के क़ायल हैं, (हालाँकि आपका आला दरजे का सही राय वाला होना मुसल्लम है) बल्कि (उनके झुठलाने की असल वजह यह है कि) यह रसूल उनके पास हक़ बात लेकर आए हैं, और उनमें अक्सर लोग हक़ से नफ़रत रखते हैं।[6] (70) और (अगरचे यह मुहाल है लेकिन अगर फ़र्ज़ कर लो कि) अगर दीने हक़ उनके ख़्यालात के ताबे हो जाता तो तमाम आसमान और ज़मीन और जो उनमें (आबाद) हैं सब तबाह हो जाते, बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत की बात भेजी, सो ये लोग अपनी (नफ़े वाली) नसीहत से भी मुँह मोड़ते हैं। (71) या आप उनसे कुछ आमदनी चाहते हैं, तो आमदनी तो आपके रब की सबसे बेहतर है, और वह सब देने वालों से अच्छा है। (72) और (उनकी हालत का ख़ुलासा यह है कि) आप तो उनको सीधे रास्ते की तरफ़ (जिसको ऊपर हक़ कहा है) बुला रहे हैं (73) और उन लोगों की जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते यह हालत है कि उस (सीधे) रास्ते से हटते जाते हैं। (74) और अगर हम उनपर मेहरबानी फ़रमा दें और उनपर जो तकलीफ़ है उसको हम दूर भी कर दें तो वे लोग (फिर) अपनी गुमराही में भटकते हुए इसरार करते हैं।[7] ◆ (75) और हमने उनको अ़ज़ाब में गिरफ़्तार भी किया है, सो उन लोगों ने अपने रब के सामने (पूरे तौर से) इन्किसारी की और न आ़जिज़ी इख़्तियार की। (76) यहाँ तक कि हम जब उनपर सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे तो उस वक़्त बिलकुल हैरान रह जाएँगे। (77) ◆

और वह (अल्लाह तआ़ला) ऐसा (क़ादिर व नेमत देने वाला) है, जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए,[8] (लेकिन) तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करते हो।[9] (78) और वह ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में फैला रखा है, और तुम सब (क़ियामत में) उसी के पास लाए जाओगे।[10] (79) और वह ऐसा है जो

(पृष्ठ 624 का शेष) 5. यानी किसी शरीअ़त में अलग नहीं हुआ।

6. और मेरे अहकाम की मुख़ालफ़त मत करो।

7. और उसके बातिल होने के सुबूत के बावजूद हक़ समझता है, तो आप उन क़ुरैश के मुश्रिकों के ऐसे ही बिना दलील के दावे और कुफ़्र पर हठधर्मी पर ग़म न कीजिए।

8. यानी बावजूद देने के उनके दिल ख़ौफ़ज़दा रहते हैं कि देखिए वहाँ जाकर इन सदक़ात का क्या फल और नतीजा ज़ाहिर हो, ऐसा न हो कि हुक्म के मुवाफ़िक़ न दिया गया हो, जैसे हलाल माल न हो, या नीयत ख़ालिस न हो, तो उल्टी पकड़ होने लगे।

1. और सारा घमण्ड करना जिसके ये आ़दी हैं, सब हवा हो जाएगा।

2. क्योंकि यह बदला मिलने की जगह है अ़मल करने की जगह नहीं है कि चिल्लाना और आ़जिज़ी करना मुफ़ीद हो।

3. कोई उसको जादू कहता था, कोई शे'र कहता था और मश्ग़ले का यही मतलब है।

4. मुराद इससे रसूलों के ज़रिये अल्लाह के अहकाम का आना है। मतलब यह कि यह बात भी नहीं हुई कि इन रसूल पर यह नई वह्य आई हो, बल्कि शरीअ़तें तो रसूलों के ज़रिये से हमेशा से नाज़िल होती आई हैं। पस झुठलाने की यह वजह भी बातिल ठहरी।

5. यानी यह वजह भी बातिल है, क्योंकि आपके सच्चा होने पर सबका इत्तिफ़ाक़ था।

6. पस यही असल वजह है झुठलाने और इत्तिबा न करने की।

7. और वे क़ौल व क़रार जो मुसीबत के वक़्त किए थे सब ख़त्म हो जाएँगे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 628 पर)

तश्कुरून (78) व हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून (79) व हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफ़ुल्-लैलि वन्नहारि, अ-फ़ला तअ्क़िलून (80) बल् क़ालू मिस्-ल मा क़ालल्-अव्वलून (81) क़ालू अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ-इन्ना लमब्अूसून (82) ल-क़द् वुअ़िद्ना नह्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (83) क़ुल् लि-मनिल्-अर्ज़ु व मन् फ़ीहा इन् कुन्तुम् तअ्लमून (84) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् अ-फ़ला तज़क्करून (85) क़ुल् मर्रब्बुस्समावातिस्-सब्अ़ि व रब्बुल्-अ़र्शिल्-अ़ज़ीम (86) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (87) क़ुल् मम्-बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व युजीरु व ला युजारु अ़लैहि इन् कुन्तुम् तअ्लमून (88) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् फ़-अन्ना तुस्हरून (89) बल् अतैनाहुम् बिल्हक़्क़ि व इन्नहुम् लकाज़िबून (90) मत्त-ख़ज़ल्लाहु मिंव्-लदिंव्-व मा का-न म-अ़हू मिन् इलाहिन् इज़ल् ल-ज़-ह-ब कुल्लु इलाहिम्-बिमा ख़-ल-क़ व ल-अ़ला बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िन्, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून (91) आ़लिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फ़-तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (92) ❖

क़ुर्रब्बि इम्मा तुरियन्नी मा यूअ़दून (93) रब्बि फ़ला तज्अ़ल्नी फ़िल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (94) व इन्ना अ़ला अन् नुरि-य-क मा नअ़िदुहुम् लक़ादिरून (95) इद्फ़अ् बिल्लती हि-य

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ط
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠ بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٨١ قَالُوْٓا ءَاِذَا
مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝٨٢ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ
وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨٣ قُلْ
لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٨٤ سَيَقُوْلُوْنَ
لِلّٰهِ ط قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٨٥ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ
رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝٨٦ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ط قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٨٧
قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٨٨ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ط قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ۝٨٩
بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٩٠ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ
وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَ
لَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ط سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٩١
عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٩٢ قُلْ رَّبِّ اِمَّا
تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۝٩٣ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٩٤
وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ۝٩٥ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ
اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ط نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ۝٩٦ وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُبِكَ

ع ٥ ١٥

जिलाता है और मारता है, और उसी के इख़्तियार में है रात और दिन का घटना-बढ़ना, सो क्या तुम (इतनी बात) नहीं समझते।[1] (80) बल्कि यह भी वैसी ही बात कहते हैं जो अगले (काफ़िर) लोग कहते चले आए हैं। (81) (यानी) यूँ कहते हैं कि क्या जब हम मर जाएँगे और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे। (82) इसका तो हमसे और (हमसे) पहले हमारे बड़ों से वायदा होता चला आया है, ये कुछ नहीं महज़ बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़्ल होती चली आती हैं। (83) आप (जवाब में) कह दीजिए कि (अच्छा यह बतलाओ कि) यह ज़मीन और जो इसपर रहते हैं, यह किसके हैं, अगर तुमको कुछ ख़बर है। (84) वे ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह के हैं। (तो) उनसे कहिए कि फिर क्यों नहीं ग़ौर "व फ़िक्र" करते।[2] (85) (और) आप यह भी कहिए कि (अच्छा यह बतलाओ कि) इन सात आसमानों का मालिक और आलीशान अ़र्श का मालिक कौन है? (86) (उसका भी) वे ज़रूर यही जवाब देंगे कि यह भी (सब) अल्लाह का है, (उस वक़्त) आप कहिए कि फिर तुम (उससे) क्यों नहीं डरते।[3] (87) आप (उनसे) यह भी कहिए कि (अच्छा) वह कौन है जिसके हाथ में तमाम चीज़ों का इख़्तियार है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता, अगर तुमको कुछ ख़बर है। (88) (तब भी जवाब में) वे ज़रूर यही कहेंगे कि ये सब सिफ़तें भी अल्लाह ही की हैं, आप (उस वक़्त) कहिए कि फिर तुमको कैसा ख़ब्त हो रहा है।[4] (89) बल्कि हमने उनको सच्ची बात पहुँचाई है, और यक़ीनन ये झूठे हैं। (90) अल्लाह ने किसी को औलाद क़रार नहीं दिया और न उसके साथ कोई और ख़ुदा है, अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ को (तक़सीम करके) अलग कर लेता और एक-दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह उन (बुरी और बेहूदा) बातों से पाक है, जो ये लोग उसके (मुताल्लिक़) बयान करते हैं। (91) जानने वाला है सब छुपे हुए और ज़ाहिर का, ग़रज़ उन लोगों के शिर्क से वह बुलन्द और पाक है। (92) ◆

आप (अल्लाह तआ़ला से) दुआ़ कीजिए कि ऐ मेरे परवर्दिगार! जिस अ़ज़ाब का उन काफ़िरों से वायदा किया जा रहा है, अगर आप मुझको दिखा दें (93) तो ऐ मेरे रब! मुझको उन ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए। (94) और हम इस बात पर क़ादिर हैं कि जो उनसे वायदा कर रहे हैं आपको भी दिखला दें (95) (लेकिन जब तक उनपर अ़ज़ाब न आए) आप उनकी बदी का दफ़ीया ऐसे बर्ताव से कर दिया कीजिए जो बहुत ही अच्छा (और नरम) हो,[5] हम ख़ूब जानते हैं जो-जो कुछ ये (आपके बारे में) कहा करते हैं। (96)

(पृष्ठ 626 का शेष) 8. कि आराम भी बरतो और दीन का भी ख़्याल व एहसास रखो।

9. क्योंकि असली शुक्र यह था कि उस नेमत देने वाले के पसन्दीदा दीन को क़बूल करते और दोबारा ज़िन्दा करके उठाने पर उसकी क़ुदरत का इनकार न करते।

10. उस वक़्त नेमतों की इस नाशुक्री की हक़ीक़त मालूम होगी।

1. कि क़ुदरत होने की ये दलीलें तौहीद और मरने के बाद ज़िन्दा करने दोनों पर दलालत करती हैं, मगर फिर भी हम नहीं मानते।
2. कि मरने के बाद ज़िन्दा करने और तौहीद दोनों का तुमको सुबूत हो जाए।
3. कि उसकी क़ुदरत और दोबारा ज़िन्दा करने की निशानियों का इनकार करते हो।
4. कि इन सब मुक़द्दमात को मानते हो और नतीजे को जो कि तौहीद और मरने के बाद फिर ज़िन्दा होने का एतिक़ाद है, नहीं मानते।
5. यानी अपनी ज़ात के लिए बदला न लीजिए, बल्कि हमारे हवाले कर दिया कीजिए।

अह्सनुस्सय्यि-अ-त, नह्नु अअ्लमु बिमा यसिफ़ून **(96)** व क़ुर्रब्बि अअूज़ु बि-क मिन् ह-मज़ातिश्-शयातीन **(97)** व अअूज़ु बि-क रब्बि अंय्यह्ज़ुरून **(98)** हत्ता इज़ा जा-अ अ-ह-दहुमुल्-मौतु क़ा-ल रब्बिर्जिअून **(99)** लअ़ल्ली अअ्मलु सालिहन् फ़ीमा तरक्तु कल्ला, इन्नहा कलि-मतुन् हु-व क़ाइलुहा, व मिंव्वरा-इहिम् बर्-ज़ख़ुन् इला यौमि युब्अ़सून **(100)** फ़-इज़ा नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़ला अन्सा-ब बैनहुम् यौमइज़िंव्-व ला य-तसा-अलून **(101)** फ़-मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्- मुफ़्लिहून **(102)** व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-कल्लज़ी-न ख़ासिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़ी जहन्न-म ख़ालिदून **(103)** तल्फ़हु वुजू-हहुमुन्नारु व हुम् फ़ीहा कालिहून **(104)** अलम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून **(105)** क़ालू रब्बना ग़-लबत् अ़लैना शिक़्वतुना व कुन्ना क़ौमन् ज़ाल्लीन **(106)** रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ़-इन् अ़ुद्ना फ़-इन्ना ज़ालिमून **(107)** क़ालख़्सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमून **(108)** इन्नहू का-न फ़रीक़ुम् मिन् अ़िबादी यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़ग़्फ़िर् लना वर्हम्ना व अन्-त ख़ैरुर्-राहिमीन **(109)** फ़त्त-ख़ज़्तुमूहुम् सिख़्रिय्यन् हत्ता अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्हकून **(110)** इन्नी जज़ैतुहुमुल्-यौ-म बिमा स-बरू अन्नहुम् हुमुल्-फ़ाइज़ून **(111)** क़ा-ल कम् लबिस्तुम् फ़िल्अर्ज़ि अ़-द-द सिनीन **(112)** क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ़्-ज़ यौमिन् फ़स्अलिल्-आ़द्दीन **(113)** क़ा-ल इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीलल्-लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ़्लमून **(114)**

مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾
حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْٓ
اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ
وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ
اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ
النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ
بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾
رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا
وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِىْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ
اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ
سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِىْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّىْ
جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ
فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ
الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾

और आप यूँ दुआ़ किया कीजिए कि ऐ मेरे रब! मैं आपकी पनाह माँगता हूँ, शैतानों के वस्वसों से। **(97)** और ऐ मेरे रब! आपकी पनाह माँगता हूँ इससे कि शैतान मेरे पास भी आएँ।[1] **(98)** यहाँ तक कि जब उनमें से किसी (के सर) पर मौत आ (खड़ी हो-) ती है, उस वक़्त कहता है कि ऐ मेरे रब! मुझको (दुनिया में) फिर वापस भेज दीजिए। **(99)** ताकि जिस (दुनिया) को मैं छोड़कर आया हूँ, उसमें फिर जाकर नेक काम करूँ, हरगिज़ (ऐसा) नहीं (होगा)। यह (उसकी) एक बात ही बात है, जिसको यह कहे जा रहा है,[2] और उन लोगों के आगे एक (चीज़) आड़ (की आने वाली) है, (मुराद इससे मौत है) क़ियामत के दिन तक। **(100)** फिर जब (क़ियामत में) सूर फूँका जाएगा तो उनमें (जो) आपसी रिश्ते-नाते (थे) उस दिन न रहेंगे,[3] और न कोई किसी को पूछेगा।[4] **(101)** सो जिस शख़्स का (ईमान का) पल्ला भारी होगा,[5] तो ऐसे लोग कामयाब (यानी नजात पाने वाले) होंगे। **(102)** और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा, (यानी वह काफ़िर होगा) सो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया और जहन्नम में हमेशा के लिए रहेंगे। **(103)** उनके चेहरों को (उस जहन्नम की) आग झुलस्ती होगी, और उस (जहन्नम) में उनके मुँह बिगड़े हुए होंगे। **(104)** क्यों क्या तुमको (दुनिया में) मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाया करती थीं और तुम उनको झुठलाया करते थे। (यह उसकी सज़ा मिल रही है)। **(105)** वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! (वाक़ई) हमारी बदबख़्ती ने हमको घेर लिया था और (बेशक) हम गुमराह लोग थे।[6] **(106)** ऐ हमारे रब! हमको इस (जहन्नम) से (अब) निकाल दीजिए, फिर अगर हम दोबारा (ऐसा) करें तो हम बेशक क़ुसूरवार हैं। **(107)** इरशाद होगा कि इसी (जहन्नम) में धुतकारे हुए पड़े रहो और मुझसे बात मत करो। **(108)** मेरे बन्दों में एक गिरोह था जो (हमसे) अ़र्ज़ किया करते थे कि ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए सो हमको बख़्श दीजिए और हमपर रहमत फ़रमाइए और आप सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाले हैं। **(109)** सो तुमने उनका मज़ाक़ बनाया था (और) यहाँ तक (उसका मश्ग़ला किया) कि मश्ग़ले ने तुमको हमारी याद भी भुला दी, और तुम उनसे हँसी-मज़ाक़ किया करते थे। **(110)** मैंने उनको आज उनके सब्र का यह बदला दिया है कि वही कामयाब हुए।[7] **(111)** इरशाद होगा (कि अच्छा यह बतलाओ) तुम बरसों की गिनती से किस क़द्र मुद्दत ज़मीन पर रहे होगे। **(112)** वे जवाब देंगे कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम रहे होंगे, (और सच यह है कि हमको याद नहीं) सो गिनने वालों से पूछ लीजिए।[8] **(113)** इरशाद होगा कि तुम (दुनिया में) थोड़ी ही मुद्दत रहे (लेकिन) क्या अच्छा होता कि तुम

---

1. यह दुआ़ इस वजह से नहीं है "अल्लाह अपनी पनाह" कि ऐसा होने का कोई शक व गुमान भी है, बल्कि इज़हार है अ़ज़ाब के उतरने का कि जहाँ इसकी कोई गुन्जाइश और वहम भी नहीं जब वहाँ पनाह माँगने का हुक्म है तो जो मुस्तहिक़ हैं उनको तो बहुत ही डरना चाहिए।
2. और वह बात पूरी होने वाली नहीं।
3. यानी कोई किसी की हमदर्दी नहीं करेगा।
4. ग़रज़ न रिश्ता-नाता काम आएगा न दोस्ती और परिचय, बस वहाँ काम की चीज़ एक ईमान होगा जिसकी आ़म पहचान के लिए कि सबपर ज़ाहिर हो जाए एक तराज़ू खड़ी की जाएगी और उससे आमाल व अ़क़ीदों का वज़न होगा।
5. यानी वह मोमिन होगा।
6. यानी हम जुर्म का इक़रार और उसपर शर्मिन्दगी व माज़िरत का इज़हार करके दरख़्वास्त करते हैं कि अब हमारे जुर्म बख़्श दिए जाएँ।
7. जवाब का मतलब यह हुआ कि तुम्हारा क़ुसूर इस क़ाबिल नहीं कि सज़ा के वक़्त इक़रार करने से माफ़ कर दिया जाए, क्योंकि तुमने ऐसा मामला किया जिससे हमारे हुक़ूक़ भी ज़ाया हुए और बन्दों के हुक़ूक़ भी, और बन्दे भी कैसे? हमारे मक़बूल और महबूब! जो हमसे बहुत ही ख़ुसूसियत रखते थे। पस इसकी सज़ा के लिए हमेशा के लिए और पूरी सज़ा होना मुनासिब है। और मोमिनों को फ़लाह व कामयाबी की जज़ा देना यह भी काफ़िरों की सज़ाओं में से एक सज़ा है, क्योंकि दुश्मनों की कामयाबी से रूहानी तकलीफ़ होती है।
8. यानी फ़रिश्तों से।

अ-फ़-हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम् अ़-बसंव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जअ़ून (115) फ़-तआ़लल्लाहुल्-मलिकुल्-हक़्क़ु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल् अ़र्शिल्-करीम (116) व मंय्यद्अ़ु मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र ला बुर्हा-न लहू बिही फ़-इन्नमा हिसाबुहू अ़िन्-द रब्बिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून (117) व क़ुर्रब्बिग़्फ़िर् वर्हम् व अन्-त ख़ैरुर्-राहिमीन (118) ❖

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ۝
فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝
وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ
عِندَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ وَقُل رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ
وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝ ع

24 सूरतुन्नूरि 102

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 641 अक्षर, 142 शब्द, 64 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سُورَةٌ أَنزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ۝ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ
جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُم بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ الزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ
لَا يَنكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ
فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَ
أَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ

सूरतुन् अन्ज़ल्नाहा व फ़रज़्नाहा व अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम् बय्यिनातिल् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (1) अज़्ज़ानि-यतु वज़्ज़ानी फ़ज्लिदू कुल्-ल वाहिदिम्- मिन्हुमा मि-अ-त जल्दतिंव्-व ला तअ्ख़ुज़्कुम् बिहिमा रअ्-फ़तुन् फ़ी दीनिल्लाहि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि वल्यश्-हद् अ़ज़ाबहुमा ताइ-फ़तुम् मिनल्-मुअ्मिनीन (2) अज़्ज़ानी ला यन्किहु इल्ला ज़ानि-यतन् औ मुश्रि-कतंव्-व वज़्ज़ानि-यतु ला यन्किहुहा इल्ला ज़ानिन् औ मुश्रिकुन् व हुर्रि-म ज़ालि-क अ़लल्-मुअ्मिनीन (3) वल्लज़ी-न यर्मूनल् मुह्सनाति सुम्-म लम् यअ्तू बि-अर्-ब-अ़ति शु-हदा-अ फ़ज्लिदूहुम् समानी-न जल्दतंव्-व ला तक़्बलू लहुम् शहा-दतन् अ-बदन् व उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (4) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क व अस्लहू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (5) वल्लज़ी-न यर्मू-न अज़्वाजहुम् व लम् यकुल्लहुम्

(यह बात दुनिया में) समझते होते। **(114)** हाँ! तो क्या तुमने यह ख़्याल किया था कि हमने तुमको यूँ ही (हिक्मत से ख़ाली) बेकार पैदा कर दिया है, और यह (ख़्याल किया था) कि तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे।[1] **(115)** सो अल्लाह तआ़ला बहुत ही आ़लीशान है जो कि हक़ीक़ी बादशाह है, उसके सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं, (और वह) अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है। **(116)** और जो शख़्स (इस बात पर दलील क़ायम होने के बाद) अल्लाह के साथ किसी और माबूद की भी इबादत करे कि जिस (के माबूद होने) पर उसके पास कोई भी दलील नहीं, सो उसका हिसाब उसी के रब के यहाँ होगा, (जिसका लाज़िमी नतीजा यह है कि) यक़ीनन काफ़िरों को फ़लाह न होगी। **(117)** और आप यूँ कहा करें कि ऐ मेरे रब! (मेरी ख़ताएँ) माफ़ कर और रहम कर, और तू सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है।[2] **(118)** ❖

24 सूरः नूर 102

सूरः नूर मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 64 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

यह एक सूरः है जिस (के अल्फ़ाज़) को (भी) हम (ही) ने नाज़िल किया है और इस (के मायने यानी अहकाम) को (भी) हम (ही) ने मुक़र्रर किया है और हमने इस सूरः में साफ़-साफ़ आयतें नाज़िल की हैं, ताकि तुम समझो और अ़मल करो।[3] **(1)** ज़िना कराने वाली औ़रत और ज़िना करने वाला मर्द, सो उनमें से हर एक को सौ दुर्रे मारो,[4] और तुम लोगों को उन दोनों पर अल्लाह के मामले में ज़रा रहम न आना चाहिए अगर अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हो, और दोनों की सज़ा के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअ़त को हाज़िर रहना चाहिए।[5] **(2)** ज़ानी निकाह भी किसी के साथ नहीं करता सिवाय ज़ानिया या मुश्रिका के, और (इसी तरह) ज़ानिया के साथ भी और कोई निकाह नहीं करता सिवाय ज़ानी या मुश्रिक के, और यह (यानी ऐसा निकाह) मुसलमानों पर हराम (और गुनाह को वाजिब करने वाला) किया गया है।[6] **(3)** और जो लोग (ज़िना की) तोहमत लगाएँ पाकदामन औ़रतों को, और फिर (अपने दावे पर) चार गवाह न ला सकें तो ऐसे लोगों को अस्सी दुर्रे लगाओ, और उनकी कोई गवाही कभी क़बूल मत करो, (यह तो दुनिया में उनकी सज़ा हुई) और ये लोग (आख़िरत में भी सज़ा के मुस्तहिक़ हैं, क्योंकि) फ़ासिक़ हैं।[7] **(4)** लेकिन जो लोग इस (तोहमत लगाने) के बाद (ख़ुदा के सामने) तौबा कर लें और अपनी (हालत की) इस्लाह कर लें सो (इस हालत में) अल्लाह तआ़ला ज़रूर मग़्फ़िरत करने वाला, रहमत करने वाला है।[8] **(5)** और जो लोग अपनी

---

1. मतलब यह कि जब हमने आयतों में जिनका सच्चा होना सही दलीलों से साबित है, मरने के बाद ज़िन्दा होने और आमाल का बदला दिए जाने की ख़बर दी थी, तो मालूम हो गया था कि जो मुकल्लफ़ हैं उनके पैदा करने की हिक्मतों में से एक हिक्मत यह भी है। इसका इनकार करना कितनी ख़तरनाक और सख़्त बात थी।
2. आपका मग़्फ़िरत व रहमत माँगना अपने दर्जे के मुवाफ़िक़ है, पस इससे नाफ़रमानी और गुनाह का शुब्हा नहीं हो सकता।
3. इस तम्हीद में अपनी तरफ़ मन्सूब फ़रमाकर सूरः के अलफ़ाज़ और मायनों का अ़ज़ीमुश्शान और आला दर्जे का होना ख़ुद-बख़ुद ज़ाहिर हो गया। फिर अलफ़ाज़ का मायनों पर वाज़ेह तौर पर दलालत करना और फिर इस मजमूए की ग़रज़ बयान फ़रमाने से इन अहकाम पर अ़मल करने का बहुत ही ज़्यादा एहतिमाम व तवज्जोह करने की ज़रूरत व अहमियत ज़ाहिर हो गई।
4. यह सज़ा उस ज़ानी और ज़ानिया की है जो आज़ाद, आ़क़िल, बालिग़ हों और निकाह किए हुए न हों, या निकाह के बाद हमबिस्तरी न कर चुके हों। और जो आज़ाद न हो उसके पचास दुर्रे लगते हैं, और जो आ़क़िल या बालिग़ न हो वह मुकल्लफ़ ही नहीं, और जिस मुसलमान में तमाम सिफ़तें हों, यानी आज़ाद हो, बालिग़ हो, अ़क़्ल वाला हो, निकाह और हमबिस्तरी कर चुका हो ऐसे शख़्स को "मुह्सिन" कहते हैं, उसकी सज़ा 'रज्म' (यानी पत्थर मार-मारकर उसको हलाक कर देना) है। और जो बीमारी **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 634 पर)**

शु-हदा-उ इल्ला अन्फ़ुसुहुम् फ़-शहा-दतु अ-हदिहिम् अर्-बअ़ु शहादातिम्- बिल्लाहि इन्नहू लमिनस्-सादिक़ीन **(6)** वल्ख़ामि-सतु अन्-न लअ़्-नतल्लाहि अ़लैहि इन् का-न मिनल्-काज़िबीन **(7)** व यद्रउ अ़न्हल्-अ़ज़ा-ब अन् तश्ह-द अर्ब-अ़ शहादातिम्- बिल्लाहि इन्नहू लमिनल्-काज़िबीन **(8)** वल्ख़ामि-स-त अन्-न ग़-ज़बल्लाहि अ़लैहा इन् का-न मिनस्-सादिक़ीन **(9)** व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू व अन्नल्ला-ह तव्वाबुन् हकीम **(10)** ❖

इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल्-इफ़्कि अ़ुस्बतुम्-मिन्कुम्, ला तह्सबूहु शर्रल्-लकुम्, बल् हु-व ख़ैरुल्-लकुम्, लिकुल्लिम्-रिइम्-मिन्हुम् मक्त-स-ब मिनल्-इस्मि वल्लज़ी तवल्ला किब्रहू मिन्हुम् लहू अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(11)** लौ ला इज़् समिअ़्तुमूहु ज़न्नल्-मुअ्मिनू-न वल्-मुअ्मिनातु बिअन्फ़ुसिहिम् ख़ैरंव्-व क़ालू हाज़ा इफ़्कुम्-मुबीन **(12)** लौ ला जाऊ अ़लैहि बि-अर्-ब-अ़ति शु-हदा-अ फ़-इज़् लम् यअ्तू बिश्शु-हदा-इ फ़-उलाइ-क अ़िन्दल्लाहि हुमुल्-काज़िबून **(13)** व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ल-मस्सकुम् फ़ीमा अफ़ज़्तुम् फ़ीहि अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(14)** इज़् तलक़्क़ौनहू बिअल्सि-नतिकुम् व तक़ूलू-न बिअफ़्वाहिकुम् मा लै-स लकुम् बिही अ़िल्मुंव्-व तह्सबूनहू हय्यिनंव्-व हु-व अ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीम **(15)** व लौ ला इज़् समिअ़्तुमूहु क़ुल्तुम् मा यकूनु लना अन् न-तकल्ल-म बिहाज़ा सुब्हान-क हाज़ा

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ
شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ
اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ
اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٨﴾
وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٩﴾
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ ع ١٠/٧
اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۭ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ۭ
بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ
وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١﴾ لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ
ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ
اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٢﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا
بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ
اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ ۚ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ
بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ
اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ

(निकाह की हुई) बीवियों को (ज़िना की) तोहमत लगाएँ और उनके पास सिवाय अपने ही (दावे के) और कोई गवाह न हों (जिनको संख्या में चार होना चाहिए) तो उनकी गवाही (जो कि रोकने को ख़त्म करने वाली या तोहमत की सज़ा हो) यही है कि चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह कह दे कि बेशक मैं सच्चा हूँ **(6)** और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझपर ख़ुदा की लानत हो अगर मैं झूठा हूँ। **(7)** और (उसके बाद उस औ़रत से (रोकने की या ज़िना की) सज़ा इस तरह टल सकती है कि वह चार बार क़सम खाकर कहे कि बेशक यह मर्द झूठा है **(8)** और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझपर ख़ुदा का ग़ज़ब हो अगर यह सच्चा हो।[1] **(9)** और (ऐ मर्दो और औ़रतो!) अगर यह बात न होती कि तुमपर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसका करम है और यह कि अल्लाह तआ़ला तौबा क़बूल करने वाला (और) हिक्मत वाला है तो तुम बड़ी दिक़्क़तों और परेशानियों में पड़ जाते। **(10)** ◆

जिन लोगों ने यह तूफ़ान (हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बारे में) बर्पा किया है, (ऐ मुसलमानो!) वह तुम्हारे में का एक (छोटा-सा) गिरोह है,[2] तुम इस (तूफ़ान बन्दी) को अपने हक़ में बुरा न समझो बल्कि यह (अन्जाम के एतिबार से) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, उनमें से हर शख़्स को जितना किसी ने कुछ किया था गुनाह हुआ। और उनमें जिसने उस (तूफ़ान) में सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसको सख़्त सज़ा होगी।[3] **(11)** (आगे उन तोहमत लगाने वाले मोमिनों को नसीहत के अन्दाज़ में मलामत है कि) जब तुम लोगों ने यह बात सुनी थी तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों ने अपने आपस वालों के साथ नेक गुमान क्यों न किया,[4] और (ज़बान से) यूँ क्यों न कहा कि यह खुला झूठ है। **(12)** (आगे इस अच्छे गुमान के वाजिब होने की वजह इरशाद है कि) ये (तोहमत लगाने वाले) लोग (अपने) उस (क़ौल) पर चार गवाह क्यों न लाए,[5] सो जिस सूरत में ये लोग (क़ायदे के मुवाफ़िक़) गवाह नहीं लाए तो बस अल्लाह के नज़दीक ये झूठे हैं। **(13)** और अगर तुमपर अल्लाह तआ़ला का करम व फ़ज़्ल न होता दुनिया में और आख़िरत में तो जिस शग़ल में तुम पड़े थे उसमें तुमपर सख़्त अ़ज़ाब आ पड़ता।[6] **(14)** जबकि तुम इस (झूठ) को अपनी ज़बानों से नक़ल दर नक़ल कर रहे थे और अपने मुँह से ऐसी बात कह रहे थे जिसकी तुमको (किसी दलील से) बिलकुल ख़बर नहीं, और तुम उसको हल्की बात (यानी गुनाह का सबब न होने वाली) समझ रहे थे, हालाँकि वह अल्लाह के नज़दीक बहुत भारी बात है।[7] **(15)** और तुमने जब इस (बात) को (पहले) सुना था तो यूँ क्यों न

(पृष्ठ 632 का शेष) की वजह से दुर्रों के बरदाश्त करने के क़ाबिल न हो उसकी सेहत का इन्तिज़ार करेंगे।

5. ताकि उनके ज़रिये से इसका चर्चा हो, और सुनने वालों को इबरत हो, और दूसरे लोग इससे रुकें।

6. मतलब इसका यह है कि जो लोग ज़िना के आ़दी हो जाते हैं और अभी उन्होंने तौबा न की हो, उनकी असल रग़बत ज़िना की तरफ़ होती है और उसी में उनको ज़्यादा लज़्ज़त आती है। यहाँ तक कि उनको जो औ़रत पसन्द आती है, अव्वल उनका मक़सूद यही होता है कि उससे ज़िना मयस्सर हो जाए और यह हमारे साथ ज़ानिया होना गवारा कर ले।

7. हर तोहमत का यह हुक्म नहीं बल्कि ख़ास ज़िना की तोहमत का, अगरचे यह क़ैद साफ़ तौर पर मज़कूर नहीं मगर "चार गवाहों" का होना इसपर दलालत करता है।

8. इसलिए फ़ासिक़ होने की वजह से आख़िरत के अ़ज़ाब का जो इस्तेहक़ाक़ हुआ था वह ख़त्म हो जाएगा, अगरचे गवाही का रद्द किया जाना जो कि सज़ा का एक हिस्सा था वह फिर भी बाक़ी रहेगा क्योंकि तौबा से सज़ा साक़ित नहीं होती।

1. इस तरीक़े से दोनों सज़ा से बच सकते हैं। लेकिन वह औ़रत उस मर्द पर हराम हो जाएगी। इस तरह कहलवाने को 'लिआ़न' कहते हैं और लिआ़न ख़ास उस सूरत में होता है जब शौहर अपनी औ़रत को ज़िना की तोहमत लगा दे, या अपने बच्चे को कहे कि यह मेरे नुत्फ़े से नहीं है।

2. तोहमत लगाने वाले कुल चार थे- एक ज़ाती तौर पर और इस ख़बर को घड़कर जारी करने वाला यानी अ़ब्दुल्लाह मुनाफ़िक़, और तीन प्रत्यक्ष रूप से ताबे होकर यानी 'हस्सान' 'मिस्तह' और 'हम्ना'। यह हज़रात मुख़्लिस मोमिन थे।

3. मुराद इससे अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 636 पर)**

बुह्तानुन् अ़ज़ीम (16) यअ़िज़ुकुमुल्लाहु अन् तअूदू लिमिस्लिही अ-बदन् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (17) व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (18) इन्नल्लज़ी-न युहिब्बू-न अन् तशीअ़ल्-फ़ाहि-शतु फ़िल्लज़ी-न आमनू लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुन् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति, वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून (19) व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू व अन्नल्ला-ह रऊफ़ुर्-रहीम ● (20) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि, व मंय्यत्तबिअ् ख़ुतुवातिश्शैतानि फ़-इन्नहू यअ्मुरु बिल्फ़ह़्शा-इ वल्मुन्करि, व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू मा ज़का मिन्कुम् मिन् अ-हदिन् अ-बदंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युज़क्की मंय्यशा-उ, वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम (21) व ला यअ्तलि उलुल्-फ़ज़्लि मिन्कुम् वस्स-अ़ति अंय्युअ्तू उलिल्-क़ुर्बा वल्मसाकी-न वल्मुहाजिरी-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-यअ्फ़ू वल्-यस्फ़हू, अला तुहिब्बू-न अंय्यग़्फ़िरल्लाहु लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (22) इन्नल्लज़ी-न यर्मूनल्-मुह्सनातिल्-ग़ाफ़िलातिल्-मुअ्मिनाति लुअ़िनू फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (23) यौ-म तश्-हदु अ़लैहिम् अल्सि-नतुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा कानू यअ्मलून (24) यौमइज़िंय्-युवफ़्फ़ीहिमुल्लाहु दीनहुमुल्-हक़्-क़ व यअ्लमू-न अन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ुल्-मुबीन (25) अल्ख़बीसातु लिल्ख़बीसी-न वल्ख़बीसू-न लिल्ख़बीसाति वत्तय्यिबातु लित्तय्यिबी-न वत्तय्यिबू-न लित्तय्यिबाति उलाइ-क मुबर्रऊ-न मिम्मा

تتكلم بهذا سبحنك هذا بهتان عظيم ﴿١٦﴾ يعظكم الله
ان تعودوا لمثله ابدا ان كنتم مؤمنين ﴿١٧﴾ ويبين الله لكم
الايت والله عليم حكيم ﴿١٨﴾ ان الذين يحبون ان تشيع
الفاحشة في الذين امنوا لهم عذاب اليم في الدنيا والاخرة
والله يعلم وانتم لا تعلمون ﴿١٩﴾ ولولا فضل الله عليكم و
رحمته وان الله رءوف رحيم ﴿٢٠﴾ يايها الذين امنوا
لا تتبعوا خطوت الشيطن ومن يتبع خطوت الشيطن
فانه يامر بالفحشاء والمنكر ولولا فضل الله عليكم و
رحمته ما زكى منكم من احد ابدا ولكن الله يزكي من يشاء
والله سميع عليم ﴿٢١﴾ ولا ياتل اولوا الفضل منكم والسعة
ان يؤتوا اولي القربى والمسكين والمهجرين في سبيل الله
وليعفوا وليصفحوا الا تحبون ان يغفر الله لكم والله غفور
رحيم ﴿٢٢﴾ ان الذين يرمون المحصنت الغفلت المؤمنت لعنوا
في الدنيا والاخرة ولهم عذاب عظيم ﴿٢٣﴾ يوم تشهد عليهم
السنتهم وايديهم وارجلهم بما كانوا يعملون ﴿٢٤﴾ يومئذ
يوفيهم الله دينهم الحق ويعلمون ان الله هو الحق المبين ﴿٢٥﴾

कहा कि हमारे लिए यह मुनासिब नहीं कि हम ऐसी बात मुँह से भी निकालें, अल्लाह की पनाह यह तो बड़ा बोहतान है।[1] (16) अल्लाह तआ़ला तुमको नसीहत करता है कि फिर ऐसी हरकत मत करना अगर तुम ईमान वाले हो। (17) और अल्लाह तआ़ला तुमसे साफ़-साफ़ अहकाम बयान करता है। और अल्लाह तआ़ला बड़ा जानने वाला, बड़ा हिक्मत वाला है। (18) जो लोग (इन आयतों के नाज़िल होने के बाद भी) चाहते हैं कि बेहयाई की बात का मुसलमानों में चर्चा हो,[2] उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा (मुक़र्रर) है। और (उस मामले पर इस सज़ा का ताज्जुब मत करो, क्योंकि) अल्लाह तआ़ला जानता है और तुम नहीं जानते। (19) और (ऐ तौबा करने वालो!) अगर यह बात न होती कि तुमपर अल्लाह का फ़ज़्ल व करम है और यह कि अल्लाह तआ़ला बड़ा शफ़ीक़ बड़ा रहीम है तो तुम भी (इस वईद से) न बचते।[3] ● (20) ❖

ऐ ईमान वालो! तुम शैतान के क़दम-से-क़दम मिलाकर मत चलो (यानी उसके बहकाने पर अ़मल मत करो) और जो शख़्स शैतान के क़दम-से-क़दम मिलाकर चलता है तो वह तो (हमेशा हर शख़्स को) बेहयाई और नामाक़ूल काम करने को ही कहेगा, और अगर तुमपर अल्लाह का फ़ज़्ल व करम न होता तो तुममें से कोई कभी भी (तौबा करके) पाक व साफ़ न होता।[4] और लेकिन अल्लाह तआ़ला जिसको चाहता है (तौबा की तौफ़ीक़ देकर) पाक-साफ़ कर देता है। और अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनता है, सब कुछ जानता है।[5] (21) और जो लोग तुममें (दीनी) बुज़ुर्गी और दुनियावी वुस्अ़त वाले हैं, वे रिश्तेदारों को और मसाकीन को और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने से क़सम न खा बैठें। और चाहिए कि वे माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम यह बात नहीं चाहते कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे क़ुसूर माफ़ कर दे, बेशक अल्लाह तआ़ला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है।[6] (22) (आगे मुनाफ़िक़ों की वईद की तफ़सील है) जो लोग तोहमत लगाते हैं उन औ़रतों को जो पाकदामन हैं (और) ऐसी बातों (के करने) से (बिलकुल) बेख़बर हैं (और) ईमान वालियाँ हैं, उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत की जाती है और उनको (आख़िरत में) बड़ा अ़ज़ाब होगा। (23) जिस दिन उनके ख़िलाफ़ उनकी ज़बानें गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पाँव भी (गवाही देंगे), उन कामों की जो कि ये लोग करते थे। (24) उस दिन अल्लाह तआ़ला उनको वाजिबी बदला पूरा-पूरा देगा। और उनको (उस दिन ठीक-ठीक) मालूम होगा कि अल्लाह ही ठीक फ़ैसला करने वाला (और) बात (की हक़ीक़त) को खोल देने वाला है।[7] (25) गन्दी औ़रतें (हमेशा) गन्दे मर्दों के लायक़ होती हैं, और गन्दे मर्द गन्दी

(पृष्ठ 634 का शेष) 4. यानी हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और उन सहाबी के साथ दिल से नेक गुमान क्यों न किया।

5. जो कि ज़िना के साबित करने के लिए शर्त है।

6. इससे मालूम हो गया कि सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तौबा क़बूल हो चुकी और वे पाक होकर आख़िरत में रहमत में हैं।

7. यानी बहुत बड़े गुनाह का सबब है।

1. जैसा कि बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने इसी तरह कहा था।

2. यानी यह ख़बर फैले कि उन मुसलमानों में यह बेहयाई की बात है। हासिले मतलब यह कि जो लोग उन मुक़द्दस और पाक हज़रात की तरफ़ ज़िना की निस्बत करते हैं।

3. आगे मुसलमानों को अपनी रहमत से बिना तख़्सीस इस ज़िक्र हुए गुनाह और तमाम गुनाहों से बचने का हुक्म और तौबा के ज़रिये उनका पाक-साफ़ होना और उनपर अपना एहसान फ़रमाने को मुख़्तलिफ़ उन्वानों से दोबारा इरशाद फ़रमाते हैं।

4. या तो तौबा की तौफ़ीक़ ही न होती जैसा कि मुनाफ़िक़ों को न हुई, और या तौबा क़बूल न की जाती, क्योंकि हमपर कोई चीज़ वाजिब तो है नहीं।

5. आगे इसका बयान है कि बरी होने की आयतों के नाज़िल होने के बाद बाज़ सहाबा ने जिनमें हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु भी हैं और दूसरे सहाबा भी, सख़्त नाराज़गी और ग़म व गुस्से में क़सम खा ली कि जिस-जिसने यह चर्चा किया है कि बाज़ उनमें से ज़रूरतमन्द भी थे उनको अब से किसी क़िस्म की माली इम्दाद न देंगे। अल्लाह तआ़ला क़ुसूर के माफ़ कर देने और इम्दाद जारी कर देने के लिए इरशाद फ़रमाते हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 638 पर)

यक़ूलू-न, लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (26) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र बुयूतिकुम् हत्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू अ़ला अह्लिहा, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (27) फ़-इल्लम् तजिदू फ़ीहा अ-हदन् फ़ला तद्ख़ुलूहा हत्ता युअ्-ज़-न लकुम् व इन् क़ी-ल लकुमुर्जिअ़ू फ़र्जिअ़ू हु-व अज़्का लकुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न अ़लीम (28) लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र मस्कूनतिन् फ़ीहा मताअ़ुल्-लकुम्, वल्लाहु यअ्लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून (29) क़ुल् लिल्-मुअ्मिनी-न यग़ुज़्ज़ू मिन् अब्सारिहिम् व यह्फ़ज़ू फ़ुरू-जहुम्, ज़ालि-क अज़्का लहुम्, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा यस्नअ़ून (30) व क़ुल् लिल्-मुअ्मिनाति यग़्ज़ुज़्-न मिन् अब्सारिहिन्-न व यह्फ़ज़्-न फ़ुरू-जहुन्-न व ला युब्दी-न ज़ीन-तहुन्-न इल्ला मा ज़-ह-र मिन्हा वल्यज़्रिब्-न बिख़ुमुरिहिन्-न अ़ला जुयूबिहिन्-न व ला युब्दी-न ज़ीन-तहुन्-न इल्ला लिबुअ़ू-लतिहिन्-न औ आबाइ-हिन्-न औ आबाइ-बुअ़ू-लतिहिन्-न औ अब्नाइ-हिन्-न औ अब्ना-इ बुअ़ू-लतिहिन्-न औ इख़्वानिहिन्-न औ बनी इख़्वानिहिन्-न औ बनी अ-ख़वातिहिन्-न औ निसाइ-हिन्-न औ मा म-लकत् ऐमानुहुन्-न अवित्ताबिअ़ी-न ग़ैरि उलिल्-इर्बति मिनर्-रिजालि अवित्-तिफ़्लिल्लज़ी-न लम् यज़्हरू अ़ला औरातिन्निसा-इ व ला यज़्रिब्-न बि-अर्जुलिहिन्-न लियुअ्-ल-म मा युख़्फ़ी-न मिन् ज़ीनतिहिन्-न, व तूबू इलल्लाहि जमीअ़न् अय्युहल्-मुअ्मिनू-न लअ़ल्लकुम्

قد افلح ١٨ ٣١٩ النور ٢٤

الخبيثت للخبيثين والخبيثون للخبيثت والطيبت للطيبين
والطيبون للطيبت اولئك مبرءون مما يقولون لهم مغفرة
ورزق كريم ۝ يايها الذين امنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم
حتى تستانسوا وتسلموا على اهلها ذلكم خير لكم لعلكم
تذكرون ۝ فان لم تجدوا فيها احدا فلا تدخلوها حتى يؤذن
لكم وان قيل لكم ارجعوا فارجعوا هو ازكى لكم والله بما
تعملون عليم ۝ ليس عليكم جناح ان تدخلوا بيوتا غير
مسكونة فيها متاع لكم والله يعلم ما تبدون وما تكتمون ۝
قل للمؤمنين يغضوا من ابصارهم ويحفظوا فروجهم ذلك
ازكى لهم ان الله خبير بما يصنعون ۝ وقل للمؤمنت يغضضن
من ابصارهن ويحفظن فروجهن ولا يبدين زينتهن الا ما
ظهر منها وليضربن بخمرهن على جيوبهن ولا يبدين
زينتهن الا لبعولتهن او ابائهن او اباء بعولتهن او ابنائهن
او ابناء بعولتهن او اخوانهن او بني اخوانهن او بني اخوتهن
او نسائهن او ما ملكت ايمانهن او التبعين غير اولي الاربة
من الرجال او الطفل الذين لم يظهروا على عورت النساء

منزل ٤

औरतों के लायक़ होते हैं, और पाक-साफ़ औरतें पाक-साफ़ मर्दों के लायक़ होती हैं, और पाक-साफ़ मर्द पाक-साफ़ औरतों के लायक़ होते हैं। ये उस बात से पाक हैं जो ये (मुनाफ़िक़) बकते फिरते हैं। उन (हज़रात) के लिए (आख़िरत में) मग़्फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी (यानी जन्नत) है। **(26)** ❖

ऐ ईमान वालो! तुम अपने (ख़ास रहने के) घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल मत हो, जब तक कि (उनसे) इजाज़त हासिल न कर लो, और (इजाज़त लेने से पहले) उनके रहने वालों को सलाम न कर लो,[1] यही तुम्हारे लिए बेहतर है। (यह बात तुमको इसलिए बतलाई है) ताकि तुम ख़्याल रखो, (और इसपर अ़मल करो)। **(27)** फिर अगर उन घरों में तुमको कोई (आदमी) मालूम न हो तो (भी) उन घरों में न जाओ, जब तक कि तुमको (इजाज़त देने वाले की जानिब से) इजाज़त न दी जाए। और अगर तुमसे (इजाज़त लेने के वक़्त) यह कह दिया जाए कि (इस वक़्त) लौट जाओ, तो तुम लौट आया करो,[2] यही बात तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे आमाल की सब ख़बर है। (अगर ख़िलाफ़ करोगे तो सज़ा के मुस्तहिक़ होगे) **(28)** तुमको ऐसे मकानों में चले जाने का गुनाह न होगा जिनमें (घर के तौर पर) कोई न रहता हो, उनमें तुम्हारी कुछ इस्तेमाली ज़रूरत हो। और तुम जो कुछ ज़ाहिरी तौर पर करते हो और जो पोशीदा तौर पर करते हो अल्लाह तआ़ला सब जानता है। **(29)** आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिए कि अपनी निगाहें नीची रखें,[3] और अपनी शरमगाहों की हिफ़ाज़त करें,[4] यह उनके लिए ज़्यादा सफ़ाई की बात है। बेशक अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर है जो कुछ लोग किया करते हैं। **(30)** और (इसी तरह) मुसलमान औरतों से (भी) कह दीजिए कि (वे भी) अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शरमगाहों की हिफ़ाज़त करें, और अपनी ज़ीनत "यानी बनाव-सिंघार" (की जगहों) को ज़ाहिर न करें[5] मगर जो उस (ज़ीनत की जगह) में से (आ़म तौर पर) खुला रहता है, (जिसके हर वक़्त छुपाने में हर्ज है)[6] और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहा करें और अपनी ज़ीनत (की ज़िक्र हुई जगहों) को (किसी पर) ज़ाहिर न होने दें मगर अपने शौहरों पर या अपने (मेहरम रिश्तेदारों पर, यानी) बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने (सगे, माँ-शरीक और बाप-शरीक) भाइयों पर[7] या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी (सगी, माँ-शरीक और बाप-शरीक) बहनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर[8] या अपनी बाँदियों पर, या उन मर्दों पर जो तुफ़ैली (के तौर पर रहते) हों और उनको ज़रा भी तवज्जोह न हो, या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के पर्दे की बातों से अभी नावाक़िफ़ हैं। (मुराद वे लड़के हैं जो अभी बालिग़ होने के क़रीब न हुए हों) और अपने पाँव को ज़ोर से न रखें कि उनका छुपा हुआ ज़ेवर मालूम हो जाए। और मुसलमानो! (तुमसे जो इन अहकाम

(पृष्ठ 636 का शेष) 6. सो तुमको भी अल्लाह के अख़्लाक़ व सिफ़ात को अपनाना चाहिए। तुम भी अपने क़ुसूरवारों को माफ़ कर दो।

7. ये आयतें उनके बारे में हैं जिन्होंने तौबा नहीं की और अल्लाह की तरफ़ से बराअत का हुक्म नाज़िल होने के बाद भी अपने उस ग़लत ख़्याल से बाज़ नहीं आए। तौबा करने वालों को दोनों जहाँ में रहमत का हक़दार फ़रमाया और तौबा न करने वालों को मलऊन क़रार देकर उनके लिए हमेशा के अ़ज़ाब की सज़ा मुक़र्रर फ़रमाई।

1. यानी पहले सलाम करके उनसे पूछो कि हम आएँ? और वैसे ही बेइजाज़त लिए हुए मत घुस जाओ।

2. इजाज़त लेने का यह मसला मर्दाना और ज़नाना सब घरों के लिए है। और इजाज़त लेना वाजिब है और पहले सलाम करना सुन्नत है। और अगरचे यहाँ ख़िताब मर्दों को है मगर औरतों का हुक्म भी यही है, मर्दाना में भी और ज़नाना में भी।

3. यानी जिस्म के जिस अंग की तरफ़ मुतलक़न देखना नाजायज़ है उसको बिलकुल न देखें, और जिसको अपने आप में देखना जायज़ है, मगर शहवत से देखना जायज़ नहीं उसको शहवत से न देखें।

4. यानी नाजायज़ जगह में शहवत पूरी न करें, जिसमें ज़िना और बदफ़ेली सब दाख़िल है।

5. ज़ीनत से मुराद ज़ेवर और उनके मौक़ों से मुराद हाथ, पिंडली, बाज़ू, गर्दन, सर, सीना, कान यानी इन सब जगहों को छुपाए रखें, उन दो को छोड़कर जो आगे आते हैं। और जब इन मौक़ों को अजनबियों से छुपाना वाजिब है, जिनका मेहरमों के **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 640 पर)**

तुफ़्लिहून (31) व अन्किहुल्-अयामा मिन्कुम् वस्सालिही-न मिन् अिबादिकुम् व इमा-इकुम्, इंय्यकूनू फ़ु-क़रा-अ युग़्निहिमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (32) वल्-यस्तअ़्फ़िफ़िल्लज़ी-न ला यजिदू-न हत्ता युग़्नि-यहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, वल्लज़ी-न यब्तग़ूनल्-किता-ब मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् फ़कातिबूहुम् इन् अ़लिम्तुम् फ़ीहिम् ख़ैरंव्-व आतूहुम् मिम्-मालिल्लाहिल्लज़ी आताकुम्, व ला तुक्रिहू फ़-तयातिकुम् अ़लल्बिग़ा-इ इन् अरद्-न त-हस्सुनल्-लितब्तग़ू अ़-रज़ल्-हयातिद्दुन्या, व मंय्युक्रिरहहुन्-न फ़-इन्नल्ला-ह मिम्-बअ़्दि इक्राहिहिन्-न ग़फ़ूरुर्-रहीम (33) व ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् आयातिम्-मुबय्यिनातिंव्-व म-सलम्-मिनल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम् व मौअ़ि-ज़तल्-लिल्मुत्तक़ीन (34) ❖

अल्लाहु नूरुस्समावाति वल्अर्ज़ि, म-सलु नूरिही कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन्, अल्-मिस्बाहु फ़ी ज़ुजाजतिन्, अज़्ज़ुजा-जतु क-अन्नहा कौकबुन् दुर्रिय्-युंय्यू-क़दु मिन् श-ज-रतिम् मुबार-कतिन् ज़ैतूनतिल्-ला शर्क़िय्यतिंव् व ला ग़र्बिय्यतिंय्-यकादु ज़ैतुहा युज़ी-उ व लौ लम् तम्सस्हु नारुन्, नूरुन् अ़ला नूरिन्, यह्दिल्लाहु लिनूरिही मंय्यशा-उ, व यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (35) फ़ी बुयूतिन् अज़िनल्लाहु अन् तुर्-फ़-अ़ व युज़्क-र फ़ीहस्मुहू युसब्बिहु लहू फ़ीहा बिल्-ग़ुदुव्वि वल्-आसाल (36) रिजालुल् ला तुल्हीहिम् तिजा-रतुंव्-व ला बैअ़ुन् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व

قد افلح ١٨ ٣٢٠ النور ٢٤

وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوا
إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾ وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ
مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ إِن يَكُونُوا فُقَرَاءَ
يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَالَّذِينَ
يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ
خَيْرًا وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ
عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ
مَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ
أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾ اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ مَثَلُ نُورِهِ
كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا
كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا
غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ
يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾ فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ

منزل

में कोताही हो गई हो तो) तुम सब अल्लाह के सामने तौबा करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। **(31)** और तुममें (यानी आज़ाद लोगों में) जो बेनिकाह हों तुम उनका निकाह कर दिया करो, और (इसी तरह) तुम्हारे ग़ुलामों और बाँदियों में से जो इस (निकाह के) लायक़ हो उसका भी। अगर वे लोग मुफ़्लिस होंगे तो ख़ुदा तआ़ला (अगर चाहेगा) उनको अपने फ़ज़्ल से ग़नी "मालदार व ख़ुशहाल" कर देगा,[1] और अल्लाह तआ़ला वुसूअ़त वाला है, ख़ूब जानने वाला है। **(32)** और ऐसे लोगों को कि जिनको निकाह की ताक़त व क़ुदरत नहीं उनको चाहिए कि (अपने नफ़्स को) क़ाबू करें, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला (अगर चाहे) उनको अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे, (फिर निकाह कर लें) और तुम्हारे मम्लूकों "यानी गुलाम बाँदियों" में से जो मुकातब होने के इच्छुक हों तो (बेहतर है कि) उनको मुकातब बना दिया करो,[2] अगर उनमें बेहतरी (के आसार) पाओ। और अल्लाह के (दिए हुए) उस माल में से उनको भी दो जो अल्लाह ने तुमको दे रखा है, (ताकि जल्दी आज़ाद हो सकें) और अपनी (मिल्क में मौजूद) बाँदियों को ज़िना कराने पर मजबूर मत करो, (और ख़ास तौर पर) जबकि वे पाकदामन रहना चाहें, महज़ इसलिए कि दुनियावी ज़िन्दगी का कुछ फ़ायदा (यानी माल) तुमको हासिल हो जाए, और जो शख़्स उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किए जाने के बाद (उनके लिए) बख़्शने वाला, मेहरबान है। **(33)** और हमने तुम्हारे पास खुले-खुले अहकाम भेजे हैं, और जो लोग तुमसे पहले हो गुज़रे हैं उनकी बाज़ हिकायतें भी, और (ख़ुदा से) डरने वालों के लिए नसीहत की बातें (भेजी हैं)। **(34)** ❖

अल्लाह तआ़ला नूर (हिदायत) देने वाला है आसमानों का और ज़मीन का,[3] उसके नूर (हिदायत) की अ़जीब हालत ऐसी है जैसे (फ़र्ज़ करो) एक ताक़ है (और) उसमें एक चिराग़ है (और) वह चिराग़ एक क़िन्दील में है (और वह क़िन्दील ताक़ में रखा है, और) वह क़िन्दील ऐसा (साफ़-सुथरा) है जैसे एक चमकदार सितारा हो, (और) वह चिराग़ एक निहायत मुफ़ीद दरख़्त (के तेल) से रोशन किया जाता है कि वह ज़ैतून (का दरख़्त) है, जो (किसी आड़ के) न पूरब रुख़ है और न पश्चिम रुख़ है। उसका तेल (इस क़द्र साफ़ और सुलगने वाला है) अगर उसको आग भी न छुए लेकिन ऐसा मालूम होता है कि ख़ुद-बख़ुद जल उठेगा। (और जब आग भी लग गई तब तो) नूर पर नूर है, और अल्लाह तआ़ला अपने (इस हिदायत के नूर) तक जिसको चाहता है राह दे देता है,[4] और अल्लाह तआ़ला लोगों (की हिदायत) के लिए (ये) मिसालें बयान फ़रमाता है, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। **(35)**[5] वे ऐसे घरों में (इबादत करते) हैं जिनके मुताल्लिक़ अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनका अदब किया जाए,[6] और उनमें अल्लाह का नाम लिया जाए, उनमें ऐसे लोग सुबह व शाम अल्लाह तआ़ला की पाकी (नमाज़ों में) बयान करते हैं।[7] **(36)** जिनको अल्लाह

(पृष्ठ 638 का शेष) सामने ज़ाहिर करना जायज़ है तो और मौक़ों व अंगों जैसे पीठ व पेट वग़ैरह जिनका खोलना मेहरम के सामने भी जायज़ नहीं, उनका पोशीदा रखना शरई तौर पर वाजिब हो गया। हासिल यह हुआ कि सर से पाँव तक अपना तमाम बदन पोशीदा रखें।

6. मुराद इस ज़ीनत की जगह से सही क़ौल के मुताबिक़ चेहरा, दोनों हाथ और दोनों पैर हैं। कि चेहरा तो क़ुदरती तौर पर मुकम्मल ज़ीनत की जगह है और बाज़ी ज़ीनतें इरादतन भी उसमें की जाती हैं जैसे सुर्मा, पॉवडर वग़ैरह। और हाथ और उँगली, अँगूठी छल्ले मेहंदी की जगह है, और पैर भी छल्लों और मेहंदी का मक़ाम हैं। पस इन जगहों को इज़्हार की ज़रूरत की वजह से अलग रखा है।

7. न कि चचाज़ाद मामूँज़ाद वग़ैरह पर।

8. मतलब यह कि मुसलमान औ़रतों पर, क्योंकि काफ़िर औ़रत का हुक्म अजनबी मर्द के जैसा है।

1. पस न मालदारी के न होने को निकाह के लिए रोक समझें और न निकाह को मालदारी के लिए रोक, इसका दारोमदार अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर है।

2. 'मुकातबत' शरीअ़त में एक मुआ़हदा है ग़ुलाम और आक़ा के दरमियान। आक़ा उससे यह कहे कि तू मुझको इस क़द्र माल कमाकर दे तो तू आज़ाद है, और ग़ुलाम क़बूल कर ले।

3. यानी आसमान व ज़मीन वालों में जिनको हिदायत हुई है उन सबको अल्लाह ही ने हिदायत दी है। और आसमान व ज़मीन से मुराद कुल आ़लम है, पस जो मख़्लूक़ात आसमान व ज़मीन से बाहर हैं वे भी दाख़िल हो गईं जैसे अ़र्श को उठाने वाले। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 642 पर)**

इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़काति यख़ाफ़ू-न यौमन् त-तक़ल्लबु फ़ीहिल्-क़ुलूबु वल्-अब्सार **(37)** लियज्ज़ि-यहुमुल्लाहु अह्स-न मा अमिलू व यज़ी-दहुम् मिन् फ़ज़्लिही, वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब **(38)** वल्लज़ी-न क-फ़रू अअ्मालुहुम् क-सराबिम् बिक़ी-अतिंय्-यह्सबुहुज़्-ज़म्आनु मा-अन्, हत्ता इज़ा जा-अहू लम् यजिद्हू शैअंव्-व व-जदल्ला-ह अिन्दहू फ़-वफ़्फ़ाहु हिसा-बहू, वल्लाहु सरीअुल्-हिसाब **(39)** औ क-ज़ुलुमातिन् फ़ी बह्रिल् लुज्जिय्यिंय्-यग़्शाहु मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही सहाबुन्, ज़ुलुमातुम्-बअ्ज़ुहा फ़ौ-क़ बअ्ज़िन्, इज़ा अख़्र-ज य-दहू लम् य-कद् यराहा, व मल्लम् यज्अ़लिल्लाहु लहू नूरन् फ़मा लहू मिन्-नूर **(40)** ❖

अलम् त-र अन्नल्ला-ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ातिन्, कुल्लुन् क़द् अलि-म सला-तहू व तस्बी-हहू, वल्लाहु अलीमुम् बिमा यफ़्अ़लून **(41)** व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलल्लाहिल्-मसीर **(42)** अलम् त-र अन्नल्ला-ह

قد افلح ١٨ ٣٢١ النور ٢٤

فيها اسمه يسبح له فيها بالغدو والآصال ۙ رجال لا تلهيهم
تجارة ولا بيع عن ذكر الله وإقام الصلوة وإيتاء الزكوة ۙ
يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والأبصار ۙ ليجزيهم الله
أحسن ما عملوا ويزيدهم من فضله ۗ والله يرزق من يشاء
بغير حساب ۝ والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة يحسبه
الظمآن ماء ۗ حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده
فوفاه حسابه ۗ والله سريع الحساب ۝ أو كظلمات في بحر
لجي يغشاه موج من فوقه موج من فوقه سحاب ۗ ظلمات
بعضها فوق بعض ۗ إذا أخرج يده لم يكد يراها ۗ ومن لم يجعل
الله له نورا فما له من نور ۝ ألم تر أن الله يسبح له من في
السموات والأرض والطير صافات ۗ كل قد علم صلاته و
تسبيحه ۗ والله عليم بما يفعلون ۝ ولله ملك السموات والأرض ۚ
وإلى الله المصير ۝ ألم تر أن الله يزجي سحابا ثم يؤلف بينه
ثم يجعله ركاما فترى الودق يخرج من خلاله ۚ وينزل من
السماء من جبال فيها من برد فيصيب به من يشاء ويصرفه
عن من يشاء ۗ يكاد سنا برقه يذهب بالأبصار ۝ يقلب الله

منزل ٤

युज़्जी सहाबन् सुम्-म युअल्लिफ़ु बैनहू सुम्-म यज्-अ़लुहू रुकामन् फ़-तरल्-वद्-क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही व युनज़्ज़िलु मिनस्स्मा-इ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम्-ब-रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशा-उ व यस्रिफ़ुहू अम्-मंय्यशा-उ, यकादु सना बर्क़िही यज़्हबु बिल्अब्सार **(43)** युक़ल्लिबुल्लाहुल्लै-ल वन्नहा-र, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लअिब्-रतल्-लिउलिल्-अब्सार **(44)** वल्लाहु ख़-ल-क़ कुल्-ल दाब्बतिम् मिम्-माइन् फ़-मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला बत्निही व मिन्हुम्

की याद से और (ख़ास तौर पर) नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से न ख़रीद ग़फ़लत में डालने पाती है और न बेंच, (और) वे ऐसे दिन (की पकड़) से डरते रहते हैं जिसमें बहुत-से दिल और बहुत-सी आँखें उलट जाएँगी। **(37)** अन्जाम (उन लोगों का) यह होगा कि अल्लाह उनको उनके आमाल का बहुत ही अच्छा बदला देगा (यानी जन्नत), और (अ़लावा जज़ा के) उनको अपने फ़ज़्ल से और भी ज़्यादा देगा,[1] और अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे बेशुमार देता है। **(38)** और जो लोग काफ़िर हैं उनके आमाल ऐसे हैं कि एक चटियल मैदान में चमकता हुआ रेत, कि प्यासा आदमी उसको (दूर से) पानी ख़्याल करता है, यहाँ तक कि जब उसके पास आया तो उसको (जो समझ रखा था) कुछ भी न पाया और क़ज़ा-ए-इलाही को पाया, सो अल्लाह तआ़ला ने उस (की उम्र) का हिसाब उसको बराबर-सराबर चुका दिया, (यानी उम्र का ख़ात्मा कर दिया) और अल्लाह तआ़ला दम भर में हिसाब (यानी फ़ैसला) कर देता है। **(39)** या वे ऐसे हैं जैसे बड़े गहरे समुद्र में अन्दुरूनी अन्धेरे, कि उसको एक बड़ी लहर ने ढाँक लिया हो, उस (लहर) के ऊपर दूसरी लहर उसके ऊपर बादल है (ग़रज़) ऊपर नीचे बहुत-से अन्धेरे (ही अन्धेरे) हैं, कि अगर (कोई ऐसी हालत में) अपना हाथ निकाले (और देखना चाहे) तो देखने का एहतिमाल भी नहीं, और जिसको अल्लाह तआ़ला ही नूर (हिदायत) न दे उसको (कहीं से भी) नूर मयस्सर नहीं हो सकता।[2] **(40)** ❖

(ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ कि आसमानों में और ज़मीन में (मख़्लूक़ात) हैं,[3] और (ख़ासकर) परिन्दे जो पर फैलाए हुए (उड़ते फिरते) हैं सबको अपनी-अपनी दुआ़ और अपनी तस्बीह मालूम है, और अल्लाह तआ़ला को उन लोगों के सब कामों का पूरा इल्म है। **(41)** और अल्लाह तआ़ला ही की हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में, और अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ (सबको) लौटकर जाना है। **(42)** क्या तुझको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला (एक) बादल को (दूसरे बादल की तरफ़) चलता करता है (और) फिर उस बादल (के मजमूए) को आपस में मिला देता है, फिर उसको तह-ब-तह करता है, फिर तू बारिश को देखता है कि उस (बादल) के बीच में से निकलती है, और उसी बादल से यानी उसके बड़े-बड़े हिस्सों में से ओले बरसाता है, फिर उनको जिस (की जान पर या माल) पर चाहता है गिराता है और जिससे चाहता है उसको हटा देता है, (और) उस बादल की बिजली की चमक की यह हालत है कि ऐसा मालूम होता है कि गोया उसने अब बीनाई "यानी आँखों की

(पृष्ठ 640 का शेष) **4.** पस इसी तरह मोमिन के दिल में अल्लाह तआ़ला जब हिदायत का नूर डालता है तो दिन-बदिन उसका हक़ के क़ुबूल करने के लिए दिली इत्मीनान बढ़ता चला जाता है और वह हर वक़्त अहकाम पर अ़मल करने के लिए तैयार रहता है।

5. मतलब यह कि अल्लाह तआ़ला मिसालें बयान करता है और वह मिसाल निहायत मुनासिब होती है, ताकि ख़ूब हिदायत हो।

6. मुराद उन घरों से मस्जिदें हैं और उनका अदब यह कि उनमें नापाक मर्द और नापाक औ़रत दाख़िल न हो, और उनमें कोई गन्दी और नापाक चीज़ दाख़िल न की जाए। वहाँ शोर न मचाया जाए, दुनिया के काम और बातें करने के लिए वहाँ न बैठें। बदबू की चीज़ खाकर उनमें न जाएँ, वग़ैरह-वग़ैरह।

7. यानी पाँचों नमाज़ें अदा करते हैं। सुबह की नमाज़ "ग़ुदुव्वि" में आ गई और चार नमाज़ें "आसाल" में आ गई। क्योंकि आसाल कहते हैं सूरज ढलने से लेकर तमाम रात तक।

1. 'जज़ा' वह जिसका वायदा मुफ़स्सल है और 'ज़्यादा' वह जिसका मुफ़स्सल वायदा नहीं।

2. पस उन लोगों को चाहिए था कि अल्लाह के अहकाम की पैरवी का इरादा करते तो अल्लाह तआ़ला अपनी आ़दत के मुताबिक़ कि इरादे के बाद फ़ेल पैदा कर देता है उनको हिदायत का नूर देता, मगर उन्होंने मुँह मोड़ा तो अन्धेरियों में रह गए, कहीं से भी सहारा न लगा।

3. चाहे ज़बान से हो जो बाज़ मख़्लूक़ात में देखा भी जाता है, चाहे हाल के एतिबार से हो जो तमाम मख़्लूक़ात में अ़क़्ल की दलालत करने से मालूम है।

मंय्यम्शी अ़ला रिज्लैनि व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला अर्-बअ़िन्, यख़्लुक़ुल्लाहु मा यशा-उ, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (45) ल-क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम्-मुबय्यिनातिन्, वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (46) व यक़ूलू-न आमन्ना बिल्लाहि व बिर्रसूलि व अ-तअ़्ना सुम्-म य-तवल्ला फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क, व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्मिनीन (47) व इज़ा दुअ़ू इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बैनहुम् इज़ा फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मुअ़्रिज़ून (48) व इंय्यकुल्-लहुमुल्-हक़्क़ु यअ्तू इलैहि मुज़्अ़िनीन (49) अ-फ़ी क़ुलूबि-हिम् म-रजुन् अमिर्ताबू अम् यख़ाफ़ू-न अंय्यहीफ़ल्लाहु अ़लैहिम् व रसूलुहू, बल् उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून ▲ (50) ❖

इन्नमा का-न क़ौलल्-मुअ्मिनी-न इज़ा दुअ़ू इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बैनहुम् अंय्यक़ूलू समिअ़्ना व अतअ़्ना, व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (51) व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू व यख़्शल्ला-ह व यत्तक़्हि फ़-उलाइ-क हुमुल्-फ़ाइज़ून (52) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् अमर्-तहुम् ल-यख़्रुजुन्-न, क़ुल् ला तुक़्सिमू ता-अ़तुम् मअ़्रू-फ़तुन्, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून (53) क़ुल् अतीअ़ुल्ला-ह व अतीअ़ुर्रसू-ल फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैहि मा हुम्मि-ल व अ़लैकुम् मा हुम्मिल्तुम्, व इन् तुतीअ़ूहु तह्तदू, व मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (54) व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व

قد افلح ١٨ ٣٢٢ النور ٢٤

الليل والنهار ان في ذلك لعبرة لاولي الابصار ﴿٤٤﴾ والله خلق
كل دابة من ماء فمنهم من يمشي على بطنه ومنهم من
يمشي على رجلين ومنهم من يمشي على اربع يخلق الله
ما يشاء ان الله على كل شيء قدير ﴿٤٥﴾ لقد انزلنا ايت مبينت
والله يهدي من يشاء الى صراط مستقيم ﴿٤٦﴾ ويقولون امنا
بالله وبالرسول واطعنا ثم يتولى فريق منهم من بعد ذلك
وما اولئك بالمؤمنين ﴿٤٧﴾ واذا دعوا الى الله ورسوله ليحكم
بينهم اذا فريق منهم معرضون ﴿٤٨﴾ وان يكن لهم الحق ياتوا
اليه مذعنين ﴿٤٩﴾ افي قلوبهم مرض ام ارتابوا ام يخافون
ان يحيف الله عليهم ورسوله بل اولئك هم الظلمون ﴿٥٠﴾ انما
كان قول المؤمنين اذا دعوا الى الله ورسوله ليحكم بينهم
ان يقولوا سمعنا واطعنا واولئك هم المفلحون ﴿٥١﴾ ومن يطع
الله ورسوله ويخش الله ويتقه فاولئك هم الفائزون ﴿٥٢﴾
واقسموا بالله جهد ايمانهم لئن امرتهم ليخرجن قل
لا تقسموا طاعة معروفة ان الله خبير بما تعملون ﴿٥٣﴾ قل
اطيعوا الله واطيعوا الرسول فان تولوا فانما عليه ما حمل

منزل ٤

रोशनी" ली। (43) (और तथा) अल्लाह तआ़ला रात और दिन को (भी) बदलता रहता है, इस (सब मजमूए) में समझ रखने वालों के लिए दलील हासिल करने (का मौक़ा) है। (44) और अल्लाह तआ़ला ही ने हर चलने वाले जानदार को (पानी का हो या ख़ुश्की का) पानी से पैदा किया है। फिर उनमें बाज़े तो वे (जानवर) हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं,[1] और बाज़े उनमें वे हैं जो दो पैरों पर चलते हैं,[2] और बाज़े उनमें वे हैं जो चार (पैरों) पर चलते हैं।[3] अल्लाह जो चाहता है बनाता है। बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है। (45) हमने (हक़ के) समझाने वाली दलीलें नाज़िल फ़रमाई हैं, और (उन आ़म में से) जिसको अल्लाह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमाता है। (46) और (ये मुनाफ़िक़) लोग (ज़बान से) दावा करते हैं कि हम अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान ले आए और हुक्म माना, फिर उसके बाद (दावे की सच्चाई ज़ाहिर होने के मौक़े पर) उनमें का एक गिरोह नाफ़रमानी करता है। और ये लोग (दिल में) बिलकुल भी ईमान नहीं रखते।[4] (47) और ये लोग जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ इस ग़रज़ से बुलाए जाते हैं कि रसूल उनके (और उनके मुख़ालिफ़ के) दरमियान फ़ैसला कर दें तो उनमें का एक गिरोह किनारा करता है।[5] (48) और अगर उनका हक़ (किसी की तरफ़ वाजिब) हो तो सर झुकाए हुए आपके पास चले आते हैं।[6] (49) क्या उनके दिलों में (जड़ पकड़े हुए कुफ़्र का) मरज़ है या ये (नुबुव्वत की तरफ़ से) शक में पड़े हैं, या उनको यह अन्देशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उनपर ज़ुल्म (न) करने लगें, (सो इनमें से कोई सबब) नहीं (है) बल्कि (असली सबब यह है) कि ये लोग ज़ुल्म पर उतरे हुए (होते) हैं।[7] ▲ (50) ❖

मुसलमानों का क़ौल तो जबकि उनको (किसी मुक़द्दमे में) अल्लाह की और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि उनके दरमियान में फ़ैसला कर दें, यह है कि वे (दिली ख़ुशी से) कहते हैं कि हमने सुन लिया और मान लिया, और ऐसे लोग (आख़िरत में) फ़लाह पाएँगे। (51) और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल का कहा माने और अल्लाह से डरे और उसकी मुख़ालफ़त से बचे, बस ऐसे लोग कामयाब होंगे। (52) और वे लोग बड़ा ज़ोर लगाकर क़स्में खाया करते हैं कि अल्लाह की क़सम! (हम ऐसे फ़रमाँबर्दार हैं कि) अगर आप उनको (यानी हमको) हुक्म दें तो वे अभी निकल खड़े हों, (आप उनसे) कह दीजिए कि बस क़स्में न खाओ, (तुम्हारी) फ़रमाँबर्दारी (की हक़ीक़त) मालूम है, (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखता है। (53) आप कहिए कि अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल की इताअ़त करो, फिर अगर तुम लोग (इताअ़त से) मुँह मोड़ोगे तो समझ लो कि रसूल के ज़िम्मे वही (तब्लीग़) है जिसका उनपर बार रखा गया है, और तुम्हारे ज़िम्मे वह है जिसका तुमपर बार रखा गया है। और अगर तुमने उनकी इताअ़त कर ली तो

1. जैसे साँप और मछली।
2. जैसे इनसान और परिन्दे जबकि हवा में न हों।
3. जैसे मवेशी।
4. इस मौक़े से वह सूरत मुराद है कि जब उनके ज़िम्मे किसी का हक़ चाहता हो और हक़ वाला उस मुनाफ़िक़ से दरख़्वास्त करे कि चलो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास मुक़द्दमा ले चलते हैं, उस मौक़े पर ये नाफ़रमानी और हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं, क्योंकि आपके इज्लास में जब हक़ ज़ाहिर हो जाएगा तो उसी के मुवाफ़िक़ आप फ़ैसला करेंगे।
5. यह बुलाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ही की तरफ़ है, मगर चूँकि आपका फ़ैसला अल्लाह के हुक्म के मुवाफ़िक़ होता है इसलिए "इलल्लाहि" यानी 'अल्लाह की तरफ़' बढ़ा दिया।
6. क्योंकि इत्मीनान होता है कि वहाँ इन्साफ़ होगा।
7. इसी वास्ते हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में मुक़द्दमा लाना पसन्द नहीं करते।

अ़मिलुस्सालिहाति ल-यस्तख़्लिफ़न्नहुम् फ़िल्अर्ज़ि क-मस्तख़्ल-फ़ल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व ल-युमक्किनन्न-न लहुम् दीनहुमुल्लज़िर्-तज़ा लहुम् व लयुबद्दिलन्नहुम् मिम्-बअ़्दि ख़ौफ़िहिम् अम्नन्, यअ़्बुदू-ननी ला युशिरकू-न बी शैअन्, व मन् क-फ़-र बअ़्-द ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून **(55)** व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अतीअ़ुर्रसू-ल लअ़ल्लकुम् तुर्-हमून **(56)** ला तह्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मुअ़्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मअ्वाहुमुन्नारु, व ल-बिअ्सल्- मसीर **(57)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-यस्तअ्ज़िन्कुमुल्लज़ी-न म-लकत् ऐमानुकुम् वल्लज़ी-न लम् यब्लुग़ुल्-हुलु-म मिन्कुम् सला-स मर्रातिन् मिन् क़ब्लि सलातिल्-फ़ज्रि व ही-न त-ज़अू-न सिया-बकुम् मिनज़्ज़ही-रति व मिम्-बअ़्दि सलातिल्-अ़िशा-इ, सलासु औ़रातिल्- लकुम्, लै-स अ़लैकुम् व ला अ़लैहिम् जुनाहुम् बअ़्-दहुन्-न, तव्वाफ़ू-न अ़लैकुम् बअ़्ज़ुकुम् अ़ला बअ़्ज़िन्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(58)** व इज़ा ब-लग़ल्-अत्फ़ालु मिन्कुमुल्-हुलु-म फ़ल्यस्तअ्ज़िनू कमस्तअ्-ज़नल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(59)** वल्क़वाअ़िदु मिनन्निसाइल्लाती ला यर्जू-न निकाहन् फ़लै-स अ़लैहिन्-न जुनाहुन् अंय्य-ज़अ्-न सिया-बहुन्-न ग़ै-र मु-तबर्रिजातिम्- बिज़ी-नतिन्, व

وعليكم ما حملتم وان تطيعوه تهتدوا وما على الرسول الا
البلغ المبين ۝ وعد الله الذين امنوا منكم وعملوا الصلحت
ليستخلفنهم في الارض كما استخلف الذين من قبلهم
وليمكنن لهم دينهم الذي ارتضى لهم وليبدلنهم من
بعد خوفهم امنا يعبدونني لا يشركون بي شيئا ومن كفر
بعد ذلك فاولئك هم الفسقون ۝ واقيموا الصلوة واتوا الزكوة
واطيعوا الرسول لعلكم ترحمون ۝ لا تحسبن الذين كفروا
معجزين في الارض وماوىهم النار ولبئس المصير ۝ ع
يايها الذين امنوا ليستاذنكم الذين ملكت ايمانكم والذين
لم يبلغوا الحلم منكم ثلث مرت من قبل صلوة الفجر
وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة ومن بعد صلوة
العشاء ثلث عورت لكم ليس عليكم ولا عليهم جناح
بعدهن طوفون عليكم بعضكم على بعض كذلك يبين
الله لكم الايت والله عليم حكيم ۝ واذا بلغ الاطفال منكم
الحلم فليستاذنوا كما استاذن الذين من قبلهم كذلك
يبين الله لكم ايته والله عليم حكيم ۝ والقواعد من النساء

राह पर जा लगोगे, और (बहरहाल) रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। **(54)** (ऐ पूरी उम्मत!) तुममें जो लोग ईमान लाएँ और नेक अ़मल करें,[1] उनसे अल्लाह तआ़ला वायदा फ़रमाता है कि उनको (इस इत्तिबा की बरकत से) ज़मीन में हुकूमत अ़ता फ़रमाएगा, जैसा कि उनसे पहले (हिदायत वाले) लोगों को हुकूमत दी थी।[2] और जिस दीन को (अल्लाह तआ़ला ने) उनके लिए पसन्द फ़रमाया है (यानी इस्लाम) उसको उनके (आख़िरत के नफ़े के) लिए कुव्वत देगा, और उनके इस ख़ौफ़ के बाद उसको अमन से बदल देगा, बशर्ते कि मेरी इबादत करते रहें (और) मेरे साथ किसी क़िस्म का शिर्क न करें। और जो शख़्स इस (वायदे के ज़ाहिर होने) के बाद नाशुक्री करेगा[3] तो ये लोग बेहुक्म हैं।[4] **(55)** और (मुसलमानो!) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात दिया करो और (बाक़ी अहकाम में भी) रसूल की इताअ़त किया करो, ताकि तुमपर (कामिल) रहम किया जाए। **(56)** (ऐ मुख़ातब!) काफ़िरों के बारे में यह ख़्याल मत करना (कि हमारे क़हर से बचने के लिए) ज़मीन (के किसी हिस्से) में (भागकर हमको) हरा देंगे, और (आख़िरत में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और बहुत ही बुरा ठिकाना है। **(57)** ❖

ऐ ईमान वालो! (तुम्हारे पास आने के लिए) तुम्हारे मम्लूकों "यानी ग़ुलाम बाँदियों वग़ैरह" को और तुममें से जो अभी बालिग़ होने की हद को नहीं पहुँचे, उनको तीन वक़्तों में इजाज़त लेना चाहिए- (एक तो) सुबह की नमाज़ से पहले, और (दूसरे) जब (सोने के लिए) दोपहर को अपने (बाज़) कपड़े उतार दिया करते हो, और (तीसरे) इशा की नमाज़ के बाद।[5] ये तीन वक़्त तुम्हारे पर्दों के (वक़्त) हैं, (और) इन वक़्तों के अ़लावा न तुमपर कोई इल्ज़ाम है और न (बिना इजाज़त चले आने में) उनपर कुछ इल्ज़ाम है, (क्योंकि) वे कसरत से तुम्हारे पास आते-जाते रहते हैं, कोई किसी के पास और कोई किसी के पास। इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम से (अपने) अहकाम साफ़-साफ़ बयान करता है, और अल्लाह तआ़ला जानने वाला, हिक्मत वाला है।[6] **(58)** और जिस वक़्त तुममें के वे लड़के (जिनका हुक्म ऊपर आया है) बालिग़ होने की हद को पहुँचें तो उनको भी उसी तरह इजाज़त लेना चाहिए जैसा कि उनसे अगले (यानी उनसे बड़ी उम्र के) लोग इजाज़त लेते हैं, इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुमसे अपने अहकाम साफ़-साफ़ बयान करता है, और अल्लाह तआ़ला जानने वाला, हिक्मत वाला है।[7] **(59)** और बड़ी-बूढ़ी औ़रतें जिनको (किसी के) निकाह (में आने) की कुछ उम्मीद न रही

---

1. यानी हिदायत की मुकम्मल तौर पर पैरवी करें।

2. जैसे बनी इस्राईल को क़िब्तियों पर ग़ालिब किया फिर अ़मालक़ा पर ग़ल्बा दिया और मिस्र पर ग़ल्बा दिया और मिस्र व शाम मुल्कों की हुकूमत दी।

3. यानी दीन के ख़िलाफ़ तरीक़ा इख़्तियार करेगा।

4. इस आयत में उम्मत के मजमूए से ईमान और नेक अ़मल पर हुकूमत देने का वायदा है। जिसका ज़ुहूर ख़ुद हुज़ूरे पाक के ज़माने से शुरू होकर ख़िलाफ़ते राशिदा तक बराबर चलता रहा। चुनाँचे जज़ीरा-ए-अ़रब आपके ज़माने में और दूसरे मुमालिक ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़माने में फ़त्ह हो गए। और बाद में भी वक़्त-वक़्त पर अगरचे लगातार और बराबर न हो, दूसरे नेक बादशाहों और ख़ुलफ़ा के हक़ में इस वायदे का ज़ुहूर होता रहा और आगे भी होता रहेगा।

5. यानी ये तीनों वक़्त चूँकि आ़दतन और ग़ालिबन तन्हाई और आराम करने के हैं, इनमें ज़्यादातर आदमी बेतकल्लुफ़ी से रहते हैं। इसलिए अपने ग़ुलाम, बाँदियों, नौकरों और नाबालिग़ बच्चों को समझा दो कि बेइत्तिला और इजाज़त के बग़ैर तुम्हारे पास न आया करें।

फ़ायदाः इन तीन वक़्तों की ही कुछ तख़्सीस नहीं, उस वक़्त आ़दत इसी के मुवाफ़िक़ थी। बाक़ी जहाँ जैसी ज़रूरत हो, यह हुक्म इस सबब पर लागू है कि जहाँ जिसका जो वक़्त तन्हाई और आराम करने का हो वहाँ उस वक़्त इजाज़त लेना ज़रूरी है।

6. पस सब मस्लहतों और हिक्मतों पर उसकी नज़र है, और अहकाम में उनकी रियायत फ़रमाता है।

7. उसको दोबारा इसलिए लाया गया कि इजाज़त लेने के क़ानून की मस्लहतें निहायत वाज़ेह और उसके अहकाम निहायत रियायत के क़ाबिल हैं, दोबारा लाने से इसका अहम होना ज़ाहिर हो गया।

अंय्यस्तअ़्फ़िफ़्-न ख़ैरुल् लहुन्-न, वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम **(60)** लै-स अ़लल्-अअ़्मा ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-अअ़्रजि ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-मरीज़ि ह-रजुंव्-व ला अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अन् तअ्कुलू मिम्-बुयूतिकुम् औ बुयूति आबाइकुम् औ बुयूति उम्महातिकुम् औ बुयूति इख़्वानिकुम् औ बुयूति अ-ख़वातिकुम् औ बुयूति अअ़्मामिकुम् औ बुयूति अ़म्मातिकुम् औ बुयूति अख़्वालिकुम् औ बुयूति ख़ालातिकुम् औ मा मलक्तुम् मफ़ाति-हहू औ सदीक़िकुम्, लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तअ्कुलू जमीअ़न् औ अश्तातन्, फ़-इज़ा दख़ल्तुम् बुयूतन् फ़-सल्लिमू अ़ला अन्फ़ुसिकुम् तहिय्य-तम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुबार-कतन् तय्यि-बतन्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून **(61)** ❖

इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही व इज़ा कानू म-अ़हू अ़ला अम्रिन् जामिअ़िल् लम् यज़्हबू हत्ता यस्तअ्ज़िनूहु, इन्नल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनू-न-क उलाइ-कल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इज़्स्तअ्-ज़नू-क लिबअ़्ज़ि शअ्निहिम् फ़अ्ज़ल्-लिमन् शिअ्-त मिन्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुमुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम **(62)** ला तज्अ़लू दुआअर्रसूलि बैनकुम् क-दुआ-इ बअ़्ज़िकुम् बअ़्ज़न्, क़द् यअ़्लमुल्लाहुल्लज़ी-न य-तसल्ललू-न मिन्कुम् लिवाज़न् फ़ल्यह्ज़रिल्लज़ी-न युख़ालिफ़ू-न अ़न् अम्रिही अन् तुसी-बहुम् फ़ित्-नतुन् औ युसी-बहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(63)** अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, क़द्

قد افلح ١٨ ٣٢٤ النور ٢٤

الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ
غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾ لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا
عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا مِن بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا
مَلَكْتُم مَّفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَأْكُلُوا جَمِيعًا
أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ
اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾ ع ١٤
إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ
أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ
شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ
قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ
عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ

منزل ٤

हो,[1] उनको (अलबत्ता) इस बात में कोई गुनाह नहीं कि वे अपने (फ़ालतू)[2] कपड़े उतार दें, बशर्ते कि बनने-सँवरने (की जगहों) का इज़्हार न करें।[3] और (अगरचे बड़ी-बूढ़ियों को मुँह खोलने की इजाज़त है लेकिन अगर) इससे भी एहतियात रखें तो उनके लिए और ज़्यादा बेहतर है। और अल्लाह तआला (सब कुछ) सुनता है, (सब कुछ) जानता है। **(60)** न तो अन्धे आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न लंगड़े आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न बीमार आदमी के लिए कुछ हर्ज है और न खुद तुम्हारे लिए इस बात में (कुछ हर्ज है) कि तुम अपने घरों से (जिनमें बीवी और औलाद के घर भी आ गए) खाना खा लो, या अपने बाप के घर से या अपनी माँओं के घर से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या उन घरों से जिनकी कुन्जियाँ तुम्हारे इख़्तियार में हैं या अपने दोस्तों के घरों से, (फिर इसमें भी) तुमपर कुछ गुनाह नहीं कि सब मिलकर खाओ या अलग-अलग (खाओ), फिर (यह भी जान लो कि) जब तुम अपने घरों में जाने लगा करो तो अपने लोगों को सलाम कर लिया करो, (जो कि) दुआ के तौर पर (है, और) जो खुदा की तरफ़ से मुक़र्रर है, (और) बरकत वाली उम्दा चीज़ है। (अल्लाह ने जिस तरह ये अहकाम बतलाए) इसी तरह अल्लाह तुमसे (अपने) अहकाम बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो (और अ़मल करो)।[4] **(61)** ❖

बस मुसलमान तो वही हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं, और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम पर होते हैं जिसके लिए लोगों को जमा किया गया है (और इत्तिफ़ाक़न वहाँ से जाने की ज़रूरत पड़ती है) तो जब तक आपसे इजाज़त न ले लें, नहीं जाते।[5] (ऐ पैग़म्बर!) जो लोग आपसे (ऐसे मौक़ों पर) इजाज़त लेते हैं, बस वही अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं,[6] तो जब ये (ईमान वाले लोग) ऐसे मौक़ों पर अपने किसी (ज़रूरी) काम के लिए आपसे (जाने की) इजाज़त तलब करें तो उनमें से जिसके लिए आप चाहें इजाज़त दे दिया करें,[7] और (इजाज़त देकर भी) आप उनके लिए अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की दुआ कीजिए,[8] बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला, मेहरबान है। **(62)** तुम लोग रसूल के बुलाने को ऐसा (मामूली बुलाना) मत समझो जैसा तुममें एक-दूसरे को बुलाता है,[9] अल्लाह तआला उन लोगों को ख़ूब जानता है जो (दूसरे की) आड़ में होकर तुममें से (हुज़ूरे पाक की मज्लिस से) खिसक जाते हैं। सो जो लोग अल्लाह के हुक्म की (जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वास्ते से पहुँचा है) मुख़ालफ़त करते हैं उनको इससे डरना चाहिए कि उनपर (दुनिया में) कोई आफ़त (न) आ पड़े, या उनपर (आख़िरत में) कोई दर्दनाक अ़ज़ाब नाज़िल (न) हो जाए।[10] **(63)** (और यह भी) याद रखो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में

---

1. यानी जो बिलकुल भी रग़बत का स्थान नहीं रहीं।
2. फ़ालतू कपड़े जिनसे चेहरा वग़ैरह छुपा रहता है, नामेहरम के सामने उतारना जायज़ है।
3. ज़ीनत के मौक़ों का ज़ाहिर करना नामेहरम के सामने बिलकुल ही नाजायज़ है।
4. ऊपर बहुत-से अहकाम का हुक्म और बहुत-सी चीज़ों से मनाही इरशाद फ़रमाई। आगे उस वक़्त के मुनासिब एक ख़ास हुक्म इरशाद फ़रमाते हैं। जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इन्तिहाई दर्जे की इताअ़त का वाजिब होना साबित होता है, जो कि ज़िक्र हुए तमाम अहकाम और मना की हुई चीज़ों, बल्कि दुनिया व आख़िरत की तमाम ज़ाहिरी व बातिनी सआ़दतों की ताकीद करने वाली है।
5. यानी जब तक आपसे इजाज़त न ले लें और आप उसपर इजाज़त न दे दें।
6. हासिल यह है कि इजाज़त लेना बिना ईमान के नहीं पाया जाता, क्योंकि कोई मुनाफ़िक़ इजाज़त न लेता था।
7. यानी इसका फ़ैसला हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की राय मुबारक पर छोड़ दिया गया है।
8. क्योंकि इजाज़त माँगना अगरचे किसी क़वी उज़्र की वजह से हो, लेकिन फिर भी उसमें दुनिया को दीन पर मुक़द्दम करना तो लाज़िम आया। और उसमें एक नुक़्स का शुब्हा है, उसकी तलाफ़ी के लिए इस्तिग़फ़ार का हुक्म हुआ।
9. कि चाहे आया या न आया, फिर आकर भी जब तक चाहा बैठा, जब चाहा उठकर बिना इजाज़त लिए **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 650 पर)**

यअ्लमु मा अन्तुम् अ़लैहि, व यौ-म युर्जअू-न इलैहि फ़युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(64)** ❖

25 सूरतुल्-फ़ुरक़ानि 42

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3919 अक्षर, 906 शब्द, 77 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तबा-रकल्लज़ी नज़्ज़-लल्-फ़ुर्क़ा-न अ़ला अ़ब्दिही लि-यकू-न लिल्आलमी-न नज़ीरा **(1)** अल्लज़ी लहू मुल्कुस्-समावाति वल्अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्-मुल्कि व ख़ा-ल-क़ कुल्-ल शैइन् फ़-क़द्द-रहू तक़्दीरा **(2)** वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतल्-ला यख़्लुक़ू-न शैअंव् व हुम् युख़्लक़ू-न व ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्अंव्-व ला यम्लिकू-न मौतंव्-व ला हयातंव्-व ला नुशूरा **(3)** व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला इफ़्कु-निफ़्तराहु व अ-आ़नहू अ़लैहि क़ौमुन् आ-ख़रू-न फ़-क़द् जाऊ ज़ुल्मंव्-वज़ूरा **(4)** व क़ालू असातीरुल् अव्वलीनक्त-त-बहा फ़हि-य तुम्ला अ़लैहि बुक्र-तंव्-व असीला **(5)** क़ुल् अन्ज़-लहुल्लज़ी यअ्लमुस्सिर्-र फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नहू का-न ग़फ़ूरर्रहीमा **(6)** व क़ालू मालि- हाज़र्रसूलि यअ्कुलुत्तआ़-म व यम्शी फ़िल्-अस्वाक़ि, लौ ला उन्ज़ि-ल इलैहि म-लकुन् फ़-यकू-न म-अ़हू नज़ीरा **(7)** औ युल्क़ा इलैहि कन्ज़ुन् औ तकूनु लहू जन्नतुंय्-यअ्कुलु मिन्हा, व

ما في السموت والارض قد يعلم ما انتم عليه ويوم يرجعون
اليه فينبئهم بما عملوا والله بكل شيء عليم ﴿٦٤﴾
سورة الفرقان مكية بسم الله الرحمن الرحيم وسبعون اية وست ركوعات
تبرك الذي نزل الفرقان على عبده ليكون للعلمين نذيرا ﴿١﴾
الذي له ملك السموت والارض ولم يتخذ ولدا ولم يكن
له شريك في الملك وخلق كل شيء فقدره تقديرا ﴿٢﴾
واتخذوا من دونه الهة لا يخلقون شيئا وهم يخلقون و
لا يملكون لانفسهم ضرا ولا نفعا ولا يملكون موتا ولا حيوة
ولا نشورا ﴿٣﴾ وقال الذين كفروا ان هذا الا افك افترىه
واعانه عليه قوم اخرون فقد جاءو ظلما وزورا ﴿٤﴾ و
قالوا اساطير الاولين اكتتبها فهي تملى عليه بكرة و
اصيلا ﴿٥﴾ قل انزله الذي يعلم السر في السموت والارض
انه كان غفورا رحيما ﴿٦﴾ وقالوا مال هذا الرسول ياكل
الطعام ويمشي في الاسواق لولا انزل اليه ملك فيكون
معه نذيرا ﴿٧﴾ او يلقى اليه كنز او تكون له جنة ياكل منها و
قال الظلمون ان تتبعون الا رجلا مسحورا ﴿٨﴾ انظر كيف ضربوا

(मौजूद) है सब ख़ुदा ही का है। अल्लाह तआ़ला उस हालत को भी जानता है जिसपर तुम (अब) हो, और उस दिन को जिसमें सब उसके पास (ज़िन्दा करके) लाए जाएँगे। फिर वह उनको सब जतलाएगा जो कुछ उन्होंने किया था, और अल्लाह तआ़ला (तो) सब कुछ जानता है। **(64)** ❖

25 सूरः फ़ुरक़ान 42

सूरः फ़ुरक़ान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 77 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

बड़ी[1] आ़लीशान ज़ात है जिसने यह फ़ैसले की किताब (यानी क़ुरआन) अपने ख़ास बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर नाज़िल फ़रमाई ताकि वह (बन्दा) तमाम दुनिया जहान वालों के लिए डराने वाला हो। **(1)** ऐसी ज़ात जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की हुकूमत हासिल है, और उसने किसी को (अपनी) औलाद क़रार नहीं दिया, और न कोई हुकूमत में उसका साझी है, और उसने (तमाम मुमकिन चीज़ों में से) हर (मौजूद) चीज़ को पैदा किया, फिर सबका अलग-अलग अन्दाज़ रखा।[2] **(2)** और (बावजूद हक़ तआ़ला के ऐसे बेमिस्ल होने के) उन मुश्रिकों ने ख़ुदा (की तौहीद) को छोड़कर और ऐसे माबूद क़रार दिए हैं जो किसी चीज़ के पैदा करने वाले नहीं, और (बल्कि) वे ख़ुद मख़्लूक़ "यानी पैदा किए हुए" हैं, और ख़ुद अपने लिए न किसी नुक़सान (के हटाने) का इख़्तियार रखते हैं और न किसी नफ़े (के हासिल करने) का, और न किसी के मरने का इख़्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का, और न किसी को (क़ियामत में) दोबारा जिलाने का। **(3)** और काफ़िर (यानी मुश्रिक) लोग (क़ुरआन के बारे में) यूँ कहते हैं कि यह तो कुछ भी नहीं निरा झूठ है, जिसको एक शख़्स (यानी पैग़म्बर) ने घड़ लिया है, और दूसरे लोगों ने उस (घड़ने) में उसकी मदद की है।[3] सो ये लोग बड़े ज़ुल्म और झूठ के मुरतकिब हुए। **(4)** और ये (काफ़िर) लोग यूँ कहते हैं कि यह (क़ुरआन) बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़ल होती चली आती हैं, जिनको उस शख़्स (यानी पैग़म्बर) ने लिखवा लिया है, फिर वही (मज़ामीन) उसको सुबह व शाम पढ़कर सुनाए जाते हैं। **(5)** आप (उसके जवाब में) कह दीजिए कि इस (क़ुरआन) को तो उस ज़ात ने उतारा है जिसको सब छुपी बातों की, चाहे वे आसमान में हों या ज़मीन में, ख़बर है।[4] वाक़ई अल्लाह तआ़ला मग़्फ़िरत करने वाला, रहमत करने वाला है। **(6)** और ये (काफ़िर) लोग (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में) यूँ कहते हैं कि इस रसूल को क्या हुआ कि वह (हमारी तरह) खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है,[5] उसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया कि वह उसके साथ रहकर डराता। **(7)** या उसके पास (ग़ैब से) कोई ख़ज़ाना आ पड़ता या उसके पास कोई (ग़ैबी) बाग़ होता जिससे यह खाया करता, और (ईमान वालों से) ये ज़ालिम यूँ (भी) कहते हैं कि तुम लोग एक बेअ़क़्ल आदमी की राह पर चल रहे हो। **(8)** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि

(पृष्ठ 648 का शेष) चल दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बुलाना ऐसा नहीं है, बल्कि उसका मानना और बजा लाना वाजिब है। और बेइजाज़त जाना हराम है।

10. यह इजाज़त माँगने का वाजिब होना उस वक़्त है जब बुलाए हुए आएँ, या किसी मश्विरा वग़ैरह के लिए ख़ास ऐलान या आ़म ऐलान के ज़रिये बुलाया गया हो, वरना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस में कितनी ही बार लोग ख़ुद हाज़िर हुए और ख़ुद चले गए उनपर मलामत नहीं की गई। और अब भी मुसलमानों का इमाम (यानी मुसलमान बादशाह और हाकिम) अगर लोगों को जमा करे तो बेइजाज़त जाना जायज़ नहीं।

1. इस सूरः में ये मज़ामीन हैं। तौहीद का साबित करना, शिर्क और मुश्रिकीन की बुराई, रिसालत का साबित करना, रिसालत से मुताल्लिक़ शुब्हात का जवाब, आख़िरत का बयान और उसकी तफ़सील में तस्दीक़ करने वालों और झुठलाने वालों की सज़ा व जज़ा, मज़मून की मुनासबत से बाज़ क़िस्से, तौहीद व रिसालत के इनकार करने की बुराई, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 652 पर)**

क़ालज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा **(8)** उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला **(9)** ❖

तबा-रकल्लज़ी इन् शा-अ ज-अ-ल ल-क ख़ैरम्-मिन् ज़ालि-क जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व यज्अल् ल-क क़ुसूरा **(10)** बल् कज़्ज़बू बिस्सा-अति व अअ्तद्ना लिमन् कज़्ज़-ब बिस्सा-अति सअीरा **(11)** इज़ा र-अत्हुम् मिम्-मकानिम्-बअीदिन् समिअू लहा त-ग़य्युज़ंव्-व ज़फ़ीरा **(12)** व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मानन् ज़य्यिक़म्-मुक़र्रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूरा **(13)** ला तद्अुल्यौ-म सुबूरंव्-वाहिदंव्-वद्अू सुबूरन् कसीरा **(14)** क़ुल् अ-ज़ालि-क ख़ैरुन् अम् जन्नतुल्-ख़ुल्दिल्लती वुअिदल् मुत्तक़ू-न, कानत् लहुम् जज़ा-अंव्-व मसीरा **(15)** लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न ख़ालिदी-न, का-न अला रब्बि-क वअ्दम् मस्ऊला **(16)** व यौ-म यह्शुरुहुम् व मा यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़-यक़ूलु अ-अन्तुम् अज़्लल्तुम् अिबादी हाउला-इ अम् हुम् ज़ल्लुस्सबील **(17)** क़ालू सुब्हान-क मा का-न यम्बग़ी लना अन्-नत्तख़ि-ज़ मिन् दूनि-क मिन् औलिया-अ व लाकिम्-मत्तअ्-तहुम् व आबा-अहुम् हत्ता नसुज़्ज़िक्-र व कानू क़ौमम्-बूरा **(18)** फ़-क़द् कज़्ज़बूकुम् बिमा तक़ूलू-न फ़मा तस्ततीअू-न सर्फ़ंव्-व ला नस्रन् व मंय्यज़्लिम् मिन्कुम् नुज़िक़्हु अज़ाबन् कबीरा **(19)** व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क मिनल्-मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम् ल-यअ्कुलूनत्तआ-म व यमशू-न फ़िल्-अस्वाक़ि, व जअल्ना बअ्-ज़कुम् लिबअ्ज़िन फ़ित्-नतन् अ-तस्बिरू-न व का-न रब्बु-क बसीरा **(20)** ❖

قد افلح ١٨ ٣٢٦ الفرقان ٢٥

لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾ تَبَارَكَ الَّذِي إِن
شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
وَيَجْعَل لَّكَ قُصُورًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾ إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا
وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾
لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾ قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ
أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾
لَّهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ﴿١٦﴾
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ
أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿١٧﴾ قَالُوا سُبْحَانَكَ
مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِن
مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ
كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن
يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ
الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَ
جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

منزل

व सल्लम!) देखिए तो ये लोग आपके लिए कैसी अ़जीब-अ़जीब बातें बयान कर रहे हैं, सो (उन ख़ुराफ़ात से) वे (बिलकुल) गुमराह हो गए, फिर वे राह नहीं पा सकते। **(9)** ❖

वह ज़ात बड़ी आ़लीशान है कि अगर वह चाहे तो आपको (काफ़िरों की) उस (फ़रमाइश) से (भी) अच्छी चीज़ दे दे, यानी बहुत-से (ग़ैबी) बाग़ात जिनके नीचे से नहरें बहती हों, और आपको बहुत-से महल दे दे।[1] **(10)** बल्कि ये लोग क़ियामत को झूठ समझ रहे हैं[2] और (अन्जाम इसका यह होगा कि) हमने ऐसे शख़्स के लिए जो कि क़ियामत को झूठ समझे, दोज़ख़ तैयार कर रखी है।[3] **(11)** वह उनको दूर से देखेगी तो वे लोग (दूर ही से) उसका जोश व ख़रोश सुनेंगे। **(12)** और (फिर) जब वे उस (दोज़ख़) की किसी तंग जगह में हाथ-पाँव जकड़ कर डाल दिए जाएँगे तो वहाँ मौत ही मौत पुकारेंगे। **(13)** (उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) एक मौत को न पुकारो बल्कि बहुत-सी मौतों को पुकारो।[4] **(14)** आप (उनको यह मुसीबत सुनाकर) कहिए कि (यह बतलाओ कि) क्या यह (मुसीबत की हालत) अच्छी है या वह हमेशा रहने की जन्नत (अच्छी है) जिसका ख़ुदा से डरने वालों से वायदा किया गया है, कि वह उनके लिए (उनकी इताअ़त का) सिला है, और उनका (आख़िरी) ठिकाना। **(15)** (और) उनको वहाँ वे सब चीज़ें मिलेंगी जो कुछ वे चाहेंगे (और) वे (उसमें) हमेशा रहेंगे। (ऐ पैग़म्बर!) यह एक वायदा है जो आपके रब के ज़िम्मे है और माँगने के क़ाबिल है। **(16)** और जिस दिन अल्लाह उन (काफ़िर) लोगों को और जिनको वे लोग ख़ुदा के सिवा पूजते थे उन (सब) को जमा करेगा, फिर (उन माबूदों से) फ़रमाएगा, क्या तुमने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था या ये (ख़ुद ही हक़ के) रास्ते से गुमराह हो गए थे।[5] **(17)** वे (माबूदीन) अ़र्ज़ करेंगे कि अल्लाह की पनाह! हमारी क्या मजाल थी कि हम आपके सिवा और कारसाज़ों को तजवीज़ करते, और लेकिन आपने (तो) उनको और उनके बड़ों को (ख़ूब) ऐश व आराम दिया,[6] यहाँ तक कि वे (आपकी) याद को भुला बैठे, और ये लोग ख़ुद ही बरबाद हुए।[7] **(18)** (उस वक़्त अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि) लो तुम्हारे इन माबूदों ने तो तुमको तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया, सो (अब) तुम न तो ख़ुद (अ़ज़ाब को) टाल सकते हो और न (किसी दूसरे की तरफ़ से) मदद दिए जा सकते हो। और जो (जो) तुममें ज़ालिम (यानी मुश्रिक) होगा हम उसको बड़ा अ़ज़ाब चखाएँगे। **(19)** और हमने आपसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे,[8] और हमने तुम (तमाम ही मुकल्लफ़ लोगों) में एक को दूसरे के लिए आज़माइश बनाया है, क्या तुम सब्र करोगे? (यानी सब्र करना चाहिए) और आपका रब ख़ूब देख रहा है। **(20)** ❖

(पृष्ठ 650 का शेष) तौहीद व रिसालत की तस्दीक़ करने वाले बाज़ ख़ास बन्दों के कुछ अच्छे-बुलन्द आमाल, और इसी आख़िरी मज़मून पर सूरः ख़त्म है।

2. किसी चीज़ के आसार व ख़ुसूसियतें कुछ हैं किसी के कुछ हैं।

3. इम्दाद करने वालों से वे अहले किताब मुराद हैं जो मुसलमान हो गए थे या आपकी ख़िदमत में वैसे ही हाज़िर हुआ करते थे।

4. जवाब का हासिल यह हुआ कि इस कलाम का इनसानी ताक़त से बाहर होना इसकी दलील है कि काफ़िरों का कहना कि "यह क़ुरआन बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़ल होती चली आती हैं" ग़लत है। और इसी से यह साबित हो गया कि वे लोग ज़ुल्म और झूठ के मुजरिम हैं। अगर यह ख़ुद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का घड़ा हुआ या किसी का लिखवाया हुआ कलाम होता या किसी दूसरी क़ौम की मदद से तैयार किया हुआ होता तो दूसरे लोग ऐसा कलाम लाने से आ़जिज़ क्यों होते।

5. यानी इनसान है जो कि मोहताज होता है खाने व रोज़ी का एहतिमाम करने का। मतलब यह कि रसूल को फ़रिश्ता होना चाहिए।

1. मतलब यह कि जो जन्नत में मिलेगा अगर अल्लाह तआ़ला चाहे तो आपको दुनिया ही में दे दे लेकिन बाज़ हिक्मतों से नहीं चाहा, और इसकी कोई ज़रूरत भी न थी, पस यह शुब्हा बिलकुल बेहूदा है।

2. इसलिए अन्जाम की फ़िक्र नहीं है और जो जी में आता है कर लेते हैं, बक देते हैं।

3. क्योंकि क़ियामत को झुठलाने से अल्लाह व रसूल का झुठलाना लाज़िम आता है जो दोज़ख़ में जाने का असल सबब है।

4. क्योंकि मौत के पुकारने की इल्लत मुसीबत है और मुसीबत ऐसी है जिसकी कोई सीमा नहीं है, और हर मुसीबत का मुक़्तज़ा मौत को पुकारना है तो पुकारना भी बहुत ज़्यादा और असीमित हुआ। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 654 पर)**

उन्नीसवाँ पारः व क़ालल्लज़ी-न

सूरतुल्-फ़ुरक़ानि (आयत 21 से 77)

व क़ालल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-मलाइ-कतु औ नरा रब्बना, ल-क़दिस्तक्बरू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् व अ़तौ अ़ुतुव्वन् कबीरा (21) यौ-म यरौनल्-मलाइ-क-त ला बुश्रा यौमइज़िल्-लिल्मुज्रिमी-न व यक़ूलू-न हिज्रम्-मह्जूरा (22) व क़दिम्ना इला मा अ़मिलू मिन् अ़-मलिन् फ़-जअ़ल्नाहु हबा-अम् मन्सूरा (23) अस्हाबुल्-जन्नति यौमइज़िन् ख़ैरुम्-मुस्त-क़र्रंव्-व अह्सनु मक़ीला (24) व यौ-म त-शक़्क़क़ुस्समा-उ बिल्-ग़मामि व नुज़्ज़िलल्-मलाइ-कतु तन्ज़ीला (25) अल्मुल्कु यौमइज़ि-निल्हक़्क़ु लिर्रह्मानि, व का-न यौमन् अ़लल्- काफ़िरी-न अ़सीरा (26) व यौ-म य-अ़ज़्ज़ुज़्ज़ालिमु अ़ला यदैहि यक़ूलु यालै-तनित्तख़ज़्तु मअ़र्-रसूलि सबीला (27) या वैलता लै-तनी लम् अत्तख़िज़् फ़ुलानन् ख़लीला (28) ल-क़द् अज़ल्लनी अ़निज़्ज़िक्रि बअ़्-द इज़् जा-अनी, व कानश्शैतानु लिल्इन्सानि ख़ज़ूला (29) व क़ालर्रसूलु या रब्बि इन्-न क़ौमित्त-ख़ज़ू हाज़ल्-क़ुर्आ-न मह्जूरा (30) व कज़ालि-क जअ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वम् मिनल्-मुज्रिमी-न, व कफ़ा बिरब्बि-क हादियंव्-व नसीरा (31) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिल्-क़ुर्आनु जुम्ल-तंव्वाहि-दतन् कज़ालि-क लिनुसब्बि-त बिही फ़ुआद-क व रत्तल्नाहु तर्तीला (32) व ला यअ्तून-क बि-म-सलिन्

وقال الذين ١٩ — ٣٢٧ — الفرقان ٢٥

وقال الذين لا يرجون لقاءنا لولا انزل علينا الملئكة
او نرى ربنا لقد استكبروا في انفسهم وعتو عتوا كبيرا ﴿٢١﴾
يوم يرون الملئكة لا بشرى يومئذ للمجرمين ويقولون
حجرا محجورا ﴿٢٢﴾ وقدمنا الى ما عملوا من عمل فجعلنه
هباء منثورا ﴿٢٣﴾ اصحب الجنة يومئذ خير مستقرا واحسن
مقيلا ﴿٢٤﴾ ويوم تشقق السماء بالغمام ونزل الملئكة تنزيلا ﴿٢٥﴾
الملك يومئذ الحق للرحمن وكان يوما على الكفرين عسيرا ﴿٢٦﴾
ويوم يعض الظالم على يديه يقول يليتني اتخذت مع
الرسول سبيلا ﴿٢٧﴾ يويلتى ليتني لم اتخذ فلانا خليلا ﴿٢٨﴾
لقد اضلني عن الذكر بعد اذ جاءني وكان الشيطن للانسان
خذولا ﴿٢٩﴾ وقال الرسول يرب ان قومي اتخذوا هذا القران
مهجورا ﴿٣٠﴾ وكذلك جعلنا لكل نبي عدوا من المجرمين و
كفى بربك هاديا ونصيرا ﴿٣١﴾ وقال الذين كفروا لولا نزل
عليه القران جملة واحدة كذلك لنثبت به فؤادك و
رتلنه ترتيلا ﴿٣٢﴾ ولا ياتونك بمثل الا جئنك بالحق واحسن
تفسيرا ﴿٣٣﴾ الذين يحشرون على وجوههم الى جهنم اولئك

منزل

उन्नीसवाँ पारः व क़ालल्लज़ी-न

सूरः फ़ुरक़ान (आयत 21 से 77)

और जो लोग हमारे सामने पेश होने से अन्देशा नहीं करते (इस वजह से कि उसके मुन्किर हैं) वे यूँ कहते हैं कि हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं आते, या हम अपने रब को देख लें,[1] ये लोग दिलों में अपने को बहुत बड़ा समझ रहे हैं, और ये लोग (इनसानियत की) हद से बहुत दूर निकल गए हैं। **(21)** जिस दिन ये लोग फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन (क़ियामत में) मुजरिमों (यानी काफ़िरों) के लिए कोई ख़ुशी की बात न होगी, और (अ़ज़ाब के फ़रिश्तों को देखकर) कहेंगे कि पनाह है, पनाह है। **(22)** और हम (उस दिन) उनके (यानी काफ़िरों के) उन (नेक) कामों की तरफ़ जो कि वे (दुनिया में) कर चुके थे मुतवज्जह होंगे, सो उनको ऐसा (बेकार) कर देंगे जैसे परेशान गुबार।[2] **(23)** (अलबत्ता) जन्नत वाले उस दिन ठिकाने में भी अच्छे रहेंगे और आरामगाह में भी ख़ूब अच्छे होंगे।[3] **(24)** और जिस दिन आसमान एक बदली पर से फट जाएगा, और (उस बदली के साथ) फ़रिश्ते (ज़मीन पर) कसरत से उतारे जाएँगे। **(25)** (और) उस दिन हक़ीक़ी हुकूमत (ख़ुदा-ए-) रहमान (ही) की होगी,[4] और वह (दिन) काफ़िरों पर बड़ा सख़्त दिन होगा।[5] **(26)** और जिस दिन ज़ालिम (यानी काफ़िर आदमी इन्तिहाई हसरत से) अपने हाथ काट खाएगा, (और) कहेगा क्या अच्छा होता मैं रसूल के साथ (दीन की) राह पर लग लेता। **(27)** हाय मेरी शामत (कि ऐसा न किया, और) क्या अच्छा होता कि मैं फ़लाँ शख़्स को दोस्त न बनाता। **(28)** उस (कमबख़्त) ने मुझको नसीहत आने के बाद उससे बहका दिया (और हटा दिया) और शैतान तो इनसान को (ऐन वक़्त पर) मदद करने से जवाब दे ही देता है। **(29)** और (उस दिन) रसूल कहेंगे कि ऐ मेरे रब! मेरी (इस) क़ौम ने इस क़ुरआन को (जिसपर अ़मल करना वाजिब था) बिलकुल नज़र अन्दाज़ कर रखा था।[6] **(30)** और हम इसी तरह (यानी जिस तरह ये लोग आपसे दुश्मनी और बैर रखते हैं) मुजरिम लोगों में से हर नबी के दुश्मन बनाते रहे हैं,[7] और हिदायत करने और मदद करने को आपका रब काफ़ी है। **(31)** और काफ़िर लोग यूँ कहते हैं कि उन (पैग़म्बर) पर यह क़ुरआन एक ही बार में क्यों नाज़िल नहीं किया गया, इस तरह (धीरे-धीरे हमने) इसलिए (नाज़िल किया) है ताकि हम उसके ज़रिये आपके दिल को क़वी रखें, और (इसी लिए) हमने इसको बहुत ठहरा-ठहराकर उतारा है।[8] **(32)** और ये लोग कैसा ही अ़जीब सवाल आपके सामने पेश करें मगर हम (उसका) ठीक जवाब और वज़ाहत में (भी) बढ़ा हुआ आपको इनायत कर देते हैं। **(33)** ये लोग वे हैं जो अपने मुहों के बल जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएँगे, ये लोग जगह में भी बदतर हैं और तरीक़े में भी बहुत गुमराह हैं।[9] **(34)** ❖

(पृष्ठ 652 का शेष) 5. मतलब यह कि उन्होंने तुम्हारी इबादत जो कि हक़ीक़त में गुमराही है, तुम्हारे हुक्म और तुम्हारी रिज़ा से की थी, जैसा कि उन लोगों का ख़्याल था कि ये माबूद ख़ुश होते हैं और ख़ुश होकर अल्लाह तआ़ला से शफ़ाअ़त करेंगे, या अपनी फ़ासिद राय से घड़ ली थी।

6. जिसका मुक़्तज़ा यह था कि नेमत देने वाले की पहचान और उसका शुक्र व इताअ़त करते।

7. जवाब का मतलब ज़ाहिर है कि दोनों सूरतों में "राह से गुमराह होने" की सूरत को इख़्तियार किया और गुमराही की बुराई और नापसन्दीदा को राहत व आराम में पड़ने के ज़िक्र से मुअक्कद किया जिससे ख़ूब नाराज़ी उन इबादत करने वालों से ज़ाहिर हो जाए।

8. मतलब यह कि नुबुव्वत और खाना खाने वग़ैरह में कोई ज़िद और मुख़ालफ़त नहीं, कि दोनों एक साथ जमा न हो सकें।

1. यानी फ़रिश्ते आकर हमसे कहें कि यह अल्लाह के रसूल हैं, या हमारा रब ख़ुद फ़रमा दे कि हमने उनको रसूल बनाकर भेजा है।

2. यानी जिस तरह गुबार किसी काम नहीं आता, उसी तरह उन काफ़िरों के आमाल पर कुछ सवाब न होगा।

3. मुराद ठिकाने और आरामगाह से जन्नत है। यानी जन्नत उनके लिए रहने की जगह **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 656 पर)**

इल्ला जिअ्ना-क बिल्हक़्क़ि व अह्स-न तफ़्सीरा **(33)** अल्लज़ी-न युह्शरू-न अ़ला वुजूहिहिम् इला जहन्न-म उलाइ-क शर्रुम्-मकानंव्-व अज़ल्लु सबीला **(34)** ❖

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब व जअ़ल्ना म-अ़हू अख़ाहु हारू-न वज़ीरा **(35)** फ़-क़ुल्नज़्हबा इलल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, फ़-दम्मर्नाहुम् तद्मीरा **(36)** व क़ौ-म नूहिल्-लम्मा कज़्ज़बुर्रुसु-ल अग़्रक़्नाहुम् व जअ़ल्नाहुम् लिन्नासि आ-यतन्, व अअ्तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न अ़ज़ाबन् अलीमा **(37)** व आ़दंव्-व समू-द व अस्हाबर्रस्सि व क़ुरूनम्-बै-न ज़ालि-क कसीरा **(38)** व कुल्लन् ज़रब्ना लहुल्-अम्सा-ल व कुल्लन् तब्बर्ना तत्बीरा **(39)** व ल-क़द् अतौ अ़लल्-क़र्-यतिल्लती उम्ति-रत् म-तरस्सौ-इ, अ-फ़लम् यकूनू यरौनहा बल् कानू ला यर्जू-न नुशूरा **(40)** व इज़ा रऔ-क इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवा, अहाज़ल्लज़ी ब-अ़सल्लाहु रसूला **(41)** इन् का-द लयुज़िल्लुना अ़न् आलि-हतिना लौ ला अन् सबर्ना अ़लैहा, व सौ-फ़ यअ्लमू-न ही-न यरौलन्-अ़ज़ा-ब मन् अज़ल्लु सबीला **(42)** अ-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इला-हहू हवाहु, अ-फ़अन्-त तकूनु अ़लैहि वकीला **(43)** अम् तह्सबु अन्-न अक्स-रहुम् यस्मअू-न औ यअ्क़िलू-न, इन् हुम् इल्ला कल्-अन्आमि बल् हुम् अज़ल्लु सबीला **(44)** ❖

अलम् त-र इला रब्बि-क कै-फ़ मद्दज़्ज़िल्-ल व लौ शा-अ ल-ज-अ़-लहू साकिनन् सुम्-म जअ़ल्नश्शम्-स अ़लैहि दलीला **(45)** सुम्-म क़बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा **(46)** व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लिबासंव्-वन्नौ-म सुबातंव्-व ज-अ़लन्नहा-र नुशूरा **(47)**

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ
جَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ۝ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا
الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ
عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ
ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝ وَ
لَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا
يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ
اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ
اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ
الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰـهَهٗ هَوٰىهُ ۭ
اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ
اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَلَمْ
تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَاۗءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا
الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝ وَهُوَ
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ

और तहक़ीक़ कि हमने मूसा को किताब (यानी तौरात) दी थी,[1] और हमने उनके साथ उनके भाई हारून को (उनका) मददगार बनाया था। **(35)** फिर हमने (दोनों को) हुक्म दिया कि दोनों आदमी उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी (तौहीद की) दलीलों को झुठलाया है,[2] सो हमने उनको (अपने क़हर से) बिलकुल ही ग़ारत कर दिया। **(36)** और नूह की क़ौम को भी हम हलाक कर चुके हैं, जब उन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमने उनको (तूफ़ान से) ग़र्क़ कर दिया, और हमने उन (के वाक़िए) को लोगों (की इबरत) के लिए एक निशान बना दिया, और (आख़िरत में) हमने उन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। **(37)** और हमने आ़द और समूद और रस्स वालों[3] और उनके बीच-बीच में बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर दिया। **(38)** और हमने हर एक के वास्ते अ़जीब-अ़जीब (यानी असरदार) मज़ामीन बयान किए, और (जब न माना तो) हमने सबको बिलकुल बरबाद ही कर दिया। **(39)** और ये (मक्का के काफ़िर) उस बस्ती पर होकर गुज़रे हैं जिसपर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए। (मुराद लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम की बस्ती है) सो क्या ये लोग उसको देखते नहीं रहते, बल्कि ये लोग मर कर जी उठने का अन्देशा ही नहीं रखते। (यानी आख़िरत के इनकारी हैं)। **(40)** और जब ये लोग आपको देखते हैं तो बस आपसे हँसी करने लगते हैं, (और कहते हैं) कि क्या यही हैं जिनको ख़ुदा तआ़ला ने रसूल बनाकर भेजा है।[4] **(41)** इस शख़्स ने तो हमको हमारे माबूदों से हटा ही दिया होता अगर हम उनपर (मज़बूती से) क़ायम न रहते,[5] और (मरने के बाद) जल्दी ही उनको मालूम हो जाएगा जब अ़ज़ाब का मुआ़यना करेंगे कि कौन शख़्स गुमराह था। **(42)** ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आपने उस शख़्स की हालत भी देखी जिसने अपना ख़ुदा अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को बना रखा है, सो क्या आप उसकी निगरानी कर सकते हैं। **(43)** या आप ख़्याल करते हैं कि उनमें अक्सर सुनते या समझते हैं,[6] ये तो महज़ चौपायों की तरह हैं (कि वे बात को न सुनते हैं, न समझते हैं,) बल्कि ये उनसे भी ज़्यादा बेराह हैं।[7] **(44)** ❖

(ऐ मुख़ातब!) क्या तुमने अपने रब (की क़ुदरत) पर नज़र नहीं की, उसने साये को किस तरह (दूर तक) फैलाया है। और अगर वह चाहता तो उसको एक हालत पर ठहराया हुआ रखता। फिर हमने सूरज को उस (साये के लम्बा और कम होने) पर निशानी मुक़र्रर किया। **(45)** फिर हमने उसको अपनी तरफ़ आहिस्ता-आहिस्ता समेट लिया। **(46)** और वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दे की चीज़ और नींद को राहत की चीज़ बनाया, और दिन को ज़िन्दा होने का वक़्त बनाया।[8] **(47)** और वह ऐसा है कि अपनी

(पृष्ठ 654 का शेष) और आराम की जगह होगी, और उसका अच्छा होना ज़ाहिर है।

4. यानी हिसाब व किताब और जज़ा व सज़ा में किसी को दख़ल न होगा।

5. क्योंकि उनके हिसाब का अन्जाम जहन्नम ही है।

6. मतलब यह कि ख़ुद काफ़िर लोग भी अपनी गुमराही का इक़रार करेंगे और रसूल भी गवाही देंगे, और जुर्म के साबित होने की यही दो सूरतें प्रचलित हैं- इक़रार और गवाही, और दोनों के जमा होने से यह सुबूत और भी ज़्यादा पक्का हो जाएगा, और सज़ा पाने वाले होंगे।

7. यानी यह पुराना तरीक़ा चला आता है कि काफ़िर लोग अम्बिया के साथ दुश्मनी और बैर रखते रहे हैं, सो यह कोई नई बात नहीं जिसका ग़म किया जाए।

8. चुनाँचे 23 साल में पूरा हुआ ताकि धीरे-धीरे उतारने का मुकम्मल फ़ायदा हो।

9. जगह से मुराद दोज़ख़ और तरीक़े से मुराद मस्लक और मज़हब है।

1. यानी वह बहुत बड़े रुतबे वाले और किताब वाले नबी थे।

2. इस क़ौम से मुराद फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम है।

3. "रस्स" लुग़त में कहते हैं कुएँ को, और कुछ लोग क़ौमे समूद के रह गए थे और किसी कुएँ पर आबाद थे। वे 'रस्स वाले' हैं।

4. यानी ऐसा आदमी रसूल न होना चाहिए। अगर रिसालत कोई चीज़ है **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 658 पर)**

व हुवल्लज़ी अर्-सलर्रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह़्मतिही व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अन् तहूरा **(48)** लिनुह़्यि-य बिही बल्द-तम् मैतंव्-व नुस्क़ि-यहू मिम्मा ख़लक़्ना अन्आमंव्-व अनासिय्-य कसीरा **(49)** व ल-क़द् सर्रफ़्नाहु बैनहुम् लियज़्ज़क्करू फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा **(50)** व लौ शिअ्ना ल-बअ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र्-यतिन् नज़ीरा **(51)** फ़ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा **(52)** व हुवल्लज़ी म-रजल्-बह़्रैनि हाज़ा अ़ज़्बुन् फ़ुरातुंव्-व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् व ज-अ़-ल बैनहुमा बर्-ज़ख़ंव्-व हिज्रम्-मह़्जूरा **(53)** व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ मिनल्-मा-इ ब-शरन् फ़-ज-अ़-लहू न-सबंव्-व् सिह्रन्, व का-न रब्बु-क क़दीरा **(54)** व यअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम्, व कानल्-काफ़िरु अ़ला रब्बिही ज़हीरा **(55)** व मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा **(56)** क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इल्ला मन् शा-अ अंय्यत्तख़ि-ज़ इला रब्बिही सबीला **(57)** व तवक्कल् अ़लल्-हय्यिल्लज़ी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही, व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरा **(58)** अल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, अर्रह़्मानु फ़स्अल् बिही ख़बीरा **(59)** व इज़ा क़ी-ल लहुमुस्जुदू लिर्रह़्मानि क़ालू व मर्रह़्मानु अ-नस्जुदु लिमा तअ्मुरुना व ज़ा-दहुम् नुफ़ूरा ❑ **(60)** ❖

نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ
وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ
مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ
لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ
كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾
وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ
وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ
الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾ وَيَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ
ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ
مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى
الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۗ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ
خَبِيْرًا ﴿٥٨﴾ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ
لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَ
زَادَهُمْ نُفُوْرًا ۩ ﴿٦٠﴾ تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ

रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वे (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिल को) ख़ुश कर देती हैं, और हम आसमान से पानी बरसाते हैं जो पाक-साफ़ करने की चीज़ है। **(48)** ताकि उसके ज़रिये से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें, और अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत-से चार पैरों वाले और बहुत-से आदमियों को सैराब कर दें। **(49)** और हम उस (पानी) को (मस्लहत के मुताबिक़) उन लोगों के दरमियान तक़सीम कर देते हैं, ताकि लोग ग़ौर करें। सो (चाहिए था कि ग़ौर करके उसका हक़ अदा करते, लेकिन) अक्सर लोग बग़ैर नाशुक्री किए न रहे। **(50)** और अगर हम चाहते तो (आपके अ़लावा इसी ज़माने में) हर बस्ती में एक पैग़म्बर भेज देते।[1] **(51)** सो (इस नेमत के शुक्रिये में) आप काफ़िरों की ख़ुशी का काम न कीजिए और क़ुरआन से उनका ज़ोर से मुक़ाबला कीजिए।[2] **(52)** (आगे फिर तौहीद का बयान है) और वह ऐसा है जिसने दो दरियाओं को सूरत के एतिबार से मिला दिया जिनमें एक (का पानी) तो मीठा सुकून बख़्श है और एक (का पानी) खारा कड़वा है। और उनके दरमियान में (अपनी क़ुदरत से) एक पर्दा और एक मज़बूत रोक रख दी।[3] **(53)** और वह ऐसा है जिसने पानी से (यानी नुत्फ़े से) आदमी को पैदा किया, फिर उसको ख़ानदान वाला और ससुराल वाला बनाया। और (ऐ मुख़ातब!) तेरा रब बड़ी क़ुदरत वाला है। **(54)** और (बावजूद इसके) ये (मुश्रिक) लोग (ऐसे) ख़ुदा को छोड़कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको कुछ नफ़ा पहुँचा सकती हैं और न उनको कुछ नुक़सान पहुँचा सकती हैं, और काफ़िर तो अपने रब का मुख़ालिफ़ है। **(55)** और हमने आपको सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि (मोमिनों को जन्नत की) ख़ुशख़बरी सुनाएँ, और (काफ़िरों को दोज़ख़ से) डराएँ।[4] **(56)** आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कोई मुआवज़ा नहीं माँगता, हाँ जो शख़्स यूँ चाहे कि अपने रब तक (पहुँचने का) रास्ता इख़्तियार कर ले।[5] **(57)** और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा रखिए (और इत्मीनान के साथ) उसकी तस्बीह व तारीफ़ बयान करने में लगे रहिए,[6] और वह (ख़ुदा) अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी (तौर पर) ख़बरदार है।[7] **(58)** वह ऐसा है जिसने आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान में है सब छह दिन (की मिक़्दार) में पैदा किया, फिर (शाही) तख़्त पर क़ायम हुआ, वह बड़ा मेहरबान है, सो उसकी शान किसी जानने वाले से पूछना चाहिए। (काफ़िर क्या जानें)। **(59)** और जब उन (काफ़िरों) से कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो (जहालत व बैर की वजह से) कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है? क्या हम उसको सज्दा करने लगेंगे जिसको तुम सज्दा करने के लिए हमको कहोगे, और उससे उनको और ज़्यादा नफ़रत होती है।[8] ❑ **(60)** ❖

(पृष्ठ 656 का शेष) तो कोई सरदार और बड़ा आदमी होना चाहिए था, पस यह रसूल नहीं।

5: यानी हम तो हिदायत पर हैं और यह हमको गुमराह करने की कोशिश में थे।

6. मतलब यह कि आप उनको हिदायत न होने से ग़मज़दा न होइए। क्योंकि आप उनपर मुसल्लत नहीं कि वे चाहें या न चाहें उनको राह पर लाएँ ही, और न हिदायत की उनसे उम्मीद कीजिए, क्योंकि उनको न सुनना मयस्सर है न उनके पास अ़क़्ल है।

7. क्योंकि वे इस दीन के रास्ते के मुकल्लफ़ नहीं, तो उनका न समझना निन्दनीय नहीं और ये मुकल्लफ़ हैं, फिर नहीं समझते।

8. इस एतिबार से कि सोना मौत के ही जैसा है, और दिन का वक़्त जागने का है।

1. और तन्हा आप पर तमाम काम न डालते, लेकिन चूँकि आपका अज्र बढ़ाना मक़सूद है इसलिए हमने ऐसा नहीं किया। तो इस तौर पर इतना काम आपके सुपुर्द करना ख़ुदा तआ़ला की नेमत है।

2. यानी आ़म और मुकम्मल तब्लीग़ कीजिए। यानी सबसे कहिए और बार-बार कहिए और हिम्मत मज़बूत रखिए जैसा कि अब तक आप करते रहे हैं।

3. मुराद इन दो दरियाओं से वे जगहें हैं जहाँ मीठी नदियाँ और नहरें बहते-बहते समुद्र में आकर गिरती हैं। वहाँ बावजूद इसके कि ऊपर से दोनों की सतह एक मालूम होती है, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत से उनमें एक ऐसी फ़ासले की हद है कि संगम की एक जानिब से पानी लिया जाए तो मीठा और दूसरी जानिब से जो कि पहली जानिब से बिलकुल क़रीब है, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 660 पर)**

तबा-रकल्लज़ी ज-अ़-ल फ़िस्समा-इ बुरूजंव्-व ज-अ़-ल फ़ीहा सिराजंव्-व क़-मरम् मुनीरा **(61)** व हुवल्लज़ी ज-अ़लल्लै-ल वन्नहा-र ख़िल्फ़-तल् लिमन् अरा-द अंय्यज़्ज़क्क-र औ अरा-द शुकूरा **(62)** व अ़िबादुर्रह्मानिल्लज़ी-न यम्शू-न अ़लल्-अर्ज़ि हौनंव्-व इज़ा ख़ा-त-बहुमुल्-जाहिलू-न क़ालू सलामा **(63)** वल्लज़ी-न यबीतू-न लिरब्बिहिम् सुज्जदंव्-व क़ियामा **(64)** वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्ब-नस्रिफ़् अ़न्ना अ़ज़ा-ब जहन्न-म इन्-न अ़ज़ा-बहा का-न ग़रामा **(65)** इन्नहा साअत् मुस्त-क़र्रंव्-व मुक़ामा **(66)** वल्लज़ी-न इज़ा अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व का-न बै-न ज़ालि-क क़वामा **(67)** वल्लज़ी-न ला यद्अू-न मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र व ला यक़्तुलूनन्-नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्-हक़्क़ि व ला यज़्नू-न, व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क यल्-क़ असामा **(68)** युज़ाअ़फ़् लहुल्-अ़ज़ाबु यौमल्-क़ियामति व यख़्लुद् फ़ीही मुहाना **(69)** इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल अ़-मलन् सालिहन् फ़-उलाइ-क युबद्दिलुल्लाहु सय्यिआतिहिम् ह-सनातिन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा **(70)** व मन् ता-ब व अ़मि-ल सालिहन् फ़-इन्नहू यतूबु इलल्लाहि मताबा **(71)** वल्लज़ी-न ला यश्हदूनज़्ज़ू-र व इज़ा मर्रू बिल्लग़्वि मर्रू किरामा **(72)** वल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिआयाति रब्बिहिम् लम् यख़िर्रू अ़लैहा सुम्मंव्-व अ़ुम्याना **(73)** वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र-त अअ़्युनिंव्-वज्अ़ल्ना लिल्मुत्तक़ी-न इमामा **(74)** उलाइ-क युज्ज़ौनल्-ग़ुर्फ़-त बिमा स-बरू व युलक़्क़ौ-न फ़ीहा तहिय्य-तंव्-

وقال الذين ١٩ — ٣٣٠ — الفرقان ٢٥

فيها سراجا وقمرا منيرا ﴿٦١﴾ وهو الذي جعل الليل والنهار خلفة
لمن أراد أن يذكر أو أراد شكورا ﴿٦٢﴾ وعباد الرحمن الذين
يمشون على الأرض هونا وإذا خاطبهم الجاهلون قالوا
سلاما ﴿٦٣﴾ والذين يبيتون لربهم سجدا وقياما ﴿٦٤﴾ والذين
يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم إن عذابها كان
غراما ﴿٦٥﴾ إنها ساءت مستقرا ومقاما ﴿٦٦﴾ والذين إذا أنفقوا
لم يسرفوا ولم يقتروا وكان بين ذلك قواما ﴿٦٧﴾ والذين
لا يدعون مع الله إلها آخر ولا يقتلون النفس التي حرم
الله إلا بالحق ولا يزنون ومن يفعل ذلك يلق أثاما ﴿٦٨﴾ يضاعف
له العذاب يوم القيامة ويخلد فيه مهانا ﴿٦٩﴾ إلا من تاب
وآمن وعمل عملا صالحا فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات
وكان الله غفورا رحيما ﴿٧٠﴾ ومن تاب وعمل صالحا فإنه يتوب
إلى الله متابا ﴿٧١﴾ والذين لا يشهدون الزور وإذا مروا باللغو
مروا كراما ﴿٧٢﴾ والذين إذا ذكروا بآيات ربهم لم يخروا عليها
صما وعميانا ﴿٧٣﴾ والذين يقولون ربنا هب لنا من أزواجنا
وذرياتنا قرة أعين واجعلنا للمتقين إماما ﴿٧٤﴾ أولئك

منزل ٤

वह ज़ात बहुत आ़लीशान है। जिसने आसमान में बड़े-बड़े सितारे बनाए और इस (आसमान) में एक चिराग़ (यानी सूरज) और नूरानी चाँद बनाया। **(61)** और वह ऐसा है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने-जाने वाले बनाए, (और ये तमाम दलीलें) उस शख़्स के लिए हैं जो समझना चाहे या शुक्र करना चाहे। **(62)** और (हज़रते) रहमान के (ख़ास) बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर आ़जिज़ी के साथ चलते हैं,[1] और जब जाहिल लोग उनसे (जहालत की बात करते हैं) तो वे बुराई को दफ़ा करने की बात कहते हैं।[2] **(63)** और जो रातों को अपने रब के आगे सज्दे और क़ियाम (यानी नमाज़) में लगे रहते हैं।[3] **(64)** और जो दुआ़एँ माँगते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमसे जहन्नम को दूर रखिए क्योंकि उसका अ़ज़ाब पूरी तबाही है। **(65)** बेशक वह जहन्नम बुरा ठिकाना और बुरा मक़ाम है। **(66)** (यह तो उनकी जिस्मानी इबादतों की हालत है) और (माली इबादतों में उनका यह तरीक़ा है कि) वे जब ख़र्च करने लगते हैं तो न फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं और न तंगी करते हैं, और उनका ख़र्च करना इस (कमी-बेशी) के दरमियान ऐतिदाल पर होता है। **(67)** और जो कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और माबूद की पूजा नहीं करते, और जिस शख़्स (के क़त्ल करने) को अल्लाह तआ़ला ने हराम फ़रमाया है उसको क़त्ल नहीं करते, हाँ मगर हक़ पर, और वे ज़िना नहीं करते, और जो शख़्स ऐसे काम करेगा तो सज़ा से उसको साबक़ा पड़ेगा। **(68)** कि क़ियामत के दिन उसका अ़ज़ाब बढ़ता चला जाएगा और वह उस (अ़ज़ाब) में हमेशा-हमेशा ज़लील (व रुस्वा) होकर रहेगा। **(69)** मगर जो (शिर्क व गुनाहों से) तौबा कर ले और ईमान (भी) ले आए और नेक काम करता रहे तो अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों के (पिछले) गुनाहों की जगह नेकियाँ इनायत फ़रमाएगा। और अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। **(70)** और जो शख़्स (गुनाहों से) तौबा करता है और नेक काम करता है तो वह (भी अ़ज़ाब से बचा रहेगा, क्योंकि वह) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ख़ास तौर पर रुजू कर रहा है। **(71)** और वे बेहूदा बातों में शामिल नहीं होते, और अगर (इत्तिफ़ाक़ से) बेहूदा मश्ग़लों के पास को होकर गुज़रें तो सन्जीदगी के साथ गुज़र जाते हैं।[4] **(72)** और वे ऐसे हैं कि जिस वक़्त उनको अल्लाह के अहकाम के ज़रिये से नसीहत की जाती है तो उन (अहकाम) पर बहरे अन्धे होकर नहीं गिरते।[5] **(73)** और वे ऐसे हैं कि दुआ़ करते रहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको हमारी बीवियों और हमारी औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक (यानी राहत) अ़ता फ़रमा,[6] और हमको मुत्तक़ियों का अफ़सर बना दे।[7] **(74)** ऐसे लोगों को (जन्नत में रहने को) बालाख़ाने

(पृष्ठ 658 का शेष) पानी लिया जाए तो कड़वा। चुनाँचे बंगाल में भी ऐसा स्थान मौजूद है।

4. उनके ईमान न लाने से आपका क्या नुक़सान है? फिर आप क्यों ग़म करें। और न आप उस विरोध को मालूम करके फ़िक्र में पड़ें।

5. तो यह अलबत्ता चाहता हूँ चाहे उसको बदला कहो या न कहो।

6. यानी तब्लीग़ जो कि ऐसी इबादत है जिसका नफ़ा दूसरों तक पहुँचता है और तस्बीह व तारीफ़ बयान करने की इबादत ऐसी है जिसका फ़ायदा अपनी ज़ात तक सीमित है। उनको बेफ़िक्री से अदा कीजिए।

7. जब मुनासिब समझेगा सज़ा देगा। इन जुम्लों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ग़म व फ़िक्र और ख़ौफ़ को ख़त्म फ़रमाया है।

8. लफ़्ज़ 'रहमान' उनमें कम मश्हूर था, मगर यह नहीं कि जानते न हों। मगर इस्लामी तालीम से जो मुख़ालफ़त बढ़ी हुई थी तो अल्फ़ाज़ के बोलने में भी मुख़ालफ़त को निभाते थे। क़ुरआन में जो यह लफ़्ज़ कसरत से आया वे इसमें भी मुख़ालफ़त कर बैठे और इस हैसियत से कि क़ुरआनी मुहावरा है जानकर भी अन्जान बनने के तौर पर उसमें कलाम और उसका इनकार करने लगे। चाहे ख़ुदा ही का इनकार और बे-अदबी लाज़िम आ जाए।

1. मतलब यह कि उनके मिज़ाज में तमाम मामलात में तवाज़ो है और उसी का असर चलने में भी ज़ाहिर होता है।

2. मतलब यह कि अपने नफ़्स के लिए ज़बानी या फ़ेल से बदला नहीं लेते और जो सख़्ती तरबियत, इस्लाह और शरई ज़रूरत या दीन की बात को बुलन्द करने के लिए हो यहाँ उसकी नफ़ी मक़सूद नहीं।

3. अल्लाह और बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने के बावजूद अल्लाह से इस क़द्र डरते हैं। (आगे देखो तर्जुमा) **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 662 पर)**

व सलामा (75) ख़ालिदी-न फ़ीहा हसुनत् मुस्तक़र्रंव्-व मुक़ामा (76) क़ुल् मा यअ़्-बउ बिकुम् रब्बी लौ ला दुआउकुम् फ़-क़द् कज़्ज़ब्तुम् फ़सौ-फ़ यकूनु लिज़ामा ◆ (77) ❖

26 सूरतुश्-शु-अ़रा-इ 47

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5689 अक्षर 1347 शब्द 227 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ता-सीम्-मीम् (1) तिल्-क आयातुल् किताबिल्-मुबीन (2) लअ़ल्ल-क बाख़िअुन्-नफ़्स-क अल्-ला यकूनू मुअ्मिनीन (3) इन् न-शअ् नुनज़्ज़िल् अ़लैहिम् मिनस्समा-इ आ-यतन् फ़-ज़ल्लत् अअ्नाक़ुहुम् लहा ख़ाज़िअीन (4) व मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम् मिनर्रह्मानि मुह्दसिन् इल्ला कानू अ़न्हु मुअ्रिज़ीन (5) फ़-क़द् कज़्ज़बू फ़-सयअ्तीहिम् अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (6) अ-व लम् यरौ इलल्-अर्ज़ि कम् अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (7) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (8) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (9) ❖

وقال الذين ١٩ — ٣٣١ — الشعرآء ٢٦

يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلٰمًا ۝٧٥
خٰلِدِينَ فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝٧٦ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ
رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۝٧٧
سورة الشعراء مكية — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
طٰسٓمٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِينِ ۝٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا
يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝٣ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ
اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِينَ ۝٤ وَمَا يَاْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ
مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ۝٥ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَاْتِيهِمْ اَنْبٰٓؤُا
مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ۝٦ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْبَتْنَا
فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝٧ اِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِينَ ۝٨ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝٩ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ
مُوسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ۝١٠ قَوْمَ فِرْعَوْنَ اَلَا يَتَّقُونَ ۝١١
قَالَ رَبِّ اِنِّيٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُونِ ۝١٢ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا
يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُونَ ۝١٣ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَاَخَافُ
اَنْ يَّقْتُلُونِ ۝١٤ قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُونَ ۝١٥
فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَآ اِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝١٦ اَنْ اَرْسِلْ

منزل ٥

व इज़् नादा रब्बु-क मूसा अनिअ्तिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन (10) क़ौ-म फ़िर्औ-न, अला यत्तक़ून (11) क़ा-ल रब्बि इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यु-कज़्ज़िबून (12) व यज़ीक़ु सद्री व ला यन्तलिक़ु लिसानी फ़-अर्सिल् इला हारून (13) व लहुम् अ़लय्-य ज़म्बुन् फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून (14) क़ा-ल कल्ला फ़ज़्हबा बिआयातिना इन्ना म-अ़कुम् मुस्तमिऊन (15)
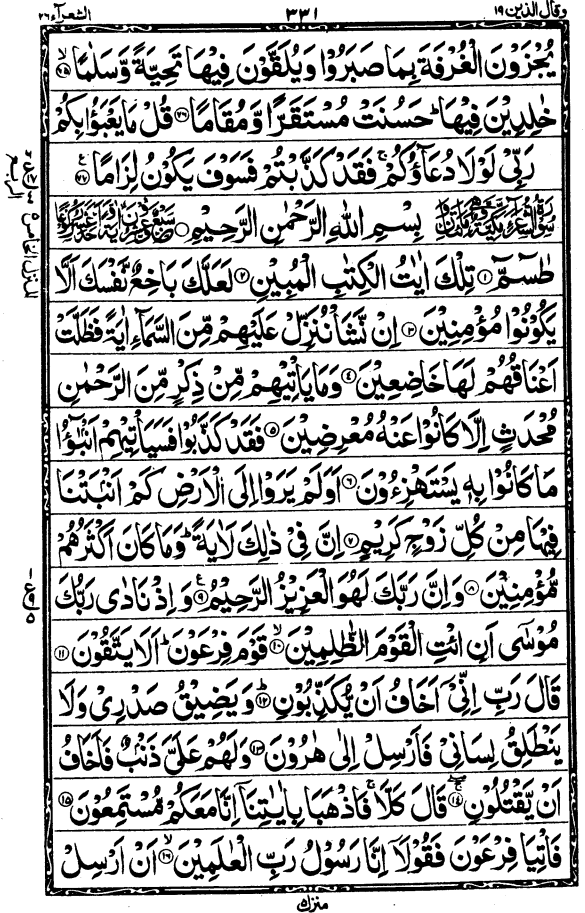
मिलेंगे इस वजह से कि वे (दीन और बन्दगी पर) साबित क़दम रहे, और उनको उस (जन्नत) में (फ़रिश्तों की ओर से) बाक़ी रहने की दुआ़ और सलाम मिलेगा। **(75)** (और) उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे, वह कैसा अच्छा ठिकाना और मक़ाम है। **(76)** आप (आ़म तौर पर लोगों से) कह दीजिए कि मेरा रब तुम्हारी ज़रा भी परवाह न करेगा अगर तुम इबादत न करोगे। सो तुम जो (अल्लाह के अहकाम को) झूठा समझते हो तो जल्द ही यह (झूठा समझना तुम्हारे लिए) वबाले (जान) होगा।[1] ◆ **(77)** ❖

26 सूरः शु-अ़रा 47

सूरः शु-अ़रा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 227 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, और बड़े रहम वाले हैं।[2]

ता-सीम्-मीम्। **(1)** ये (मज़ामीन जो आप पर नाज़िल होते हैं) वाज़ेह किताब (यानी क़ुरआन) की आयतें हैं। **(2)** शायद आप उनके ईमान न लाने पर (रंज करते-करते) अपनी जान दे देंगे। **(3)** अगर हम (उनको मोमिन करना) चाहें तो उनपर आसमान से एक बड़ी निशानी नाज़िल कर दें, फिर उनकी गर्दनें उस निशानी से झुक जाएँ। **(4)** और (उनकी हालत यह है कि) उनके पास कोई ताज़ा तंबीह (हज़रते) रहमान की तरफ़ से ऐसी नहीं आती जिससे ये बेरुख़ी न करते हों। **(5)** सो उन्होंने (दीने हक़ को) झूठा बतला दिया, सो अब जल्द ही उनको उस बात की हक़ीक़त मालूम हो जाएगी जिसके साथ यह हँसी-मज़ाक़ किया करते थे। **(6)** क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस क़द्र उम्दा-उम्दा क़िस्म की बूटियाँ उगाई हैं। **(7)** इसमें (तौहीद की) एक बड़ी निशानी है, और उनमें अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।[3] **(8)** और बेशक आपका रब ग़ालिब है, रहीम है।[4] **(9)** ❖

और (उन लोगों से कहिए कि) जब आपके रब ने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को पुकारा (और हुक्म दिया) कि तुम उन ज़ालिम लोगों के पास जाओ **(10)** यानी फ़िरऔ़न की क़ौम के, (और ऐ मूसा! देखो) क्या ये लोग (हमारे ग़ज़ब से) नहीं डरते। **(11)** उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मुझको यह अन्देशा है कि वे मुझको झुठलाने लगें। **(12)** और (तबई तौर पर ऐसे वक़्त में) मेरा दिल तंग होने लगता है और मेरी ज़बान (अच्छी तरह) नहीं चलती, इसलिए हारून के पास भी वह्य भेज दीजिए। **(13)** और मेरे ज़िम्मे उन लोगों का एक जुर्म भी है,[4] सो मुझको यह अन्देशा है कि वे लोग मुझको (रिसालत की तब्लीग़ से पहले) क़त्ल कर डालें। **(14)** इरशाद हुआ क्या मजाल है, सो (अब) तुम दोनों हमारे अहकाम लेकर जाओ, हम (हिमायत और इम्दाद से) तुम्हारे साथ हैं, सुनते हैं। **(15)** सो तुम दोनों फ़िरऔ़न के पास जाओ और (उससे) कहो कि हम रब्बुल

(पृष्ठ 660 का शेष) **4.** यानी न उसकी तरफ़ मश्ग़ूल होते हैं और न उनके अन्दाज़ से गुनाहगारों को हक़ीर समझना और अपनी बड़ाई व तकब्बुर ज़ाहिर होता है।

5. जिस तरह काफ़िर क़ुरआन पर एक नई बात समझकर तमाशे के तौर पर और साथ ही उसमें एतिराज़ात पैदा करने के लिए उसकी सच्चाइयों से अन्धे-बहरे होकर अंधाधुंध बेतरतीब हुजूम कर लेते थे। जैसे कि अल्लाह ने इरशाद फ़रमायाः "कादू यकूनू-न अ़लैहि लि-बदा" सो ये इबादत करने वाले जिनका ज़िक्र हुआ ऐसा नहीं करते, बल्कि अ़क्ल व समझ के साथ क़ुरआन पर मुतवज्जह होते हैं।

6. खुद जैसे दीन के आ़शिक़ हैं उसी तरह अपने घर वालों और बाल-बच्चों के लिए भी उसके कोशिश करने वाले और दावत देने वाले हैं। चुनाँचे अ़मली कोशिश के साथ हक़ तआ़ला से दुआ़ भी करते हैं कि उनको दीनदार बना दे, और हमको हमारी इस दीनी कोशिश में कामयाब फ़रमा कि उनको दीनदारी की हालत में देखकर राहत और ख़ुशी हासिल हो।

7. असल मक़सूद अफ़सरी माँगना नहीं अगरचे उसमें भी बुराई नहीं, मगर मक़ाम दलालत नहीं करता। बल्कि असल मक़सूद अपने ख़ानदान के मुत्तक़ी होने की दरख़्वास्त है।

1. जिस तरह काफ़िर क़ुरआन पर एक नई बात समझकर तमाशे के तौर पर और साथ ही उसमें और साथ ही उसमें एतिराज़ात पैदा करने के लिए उसकी सच्चाइयों से अन्धे-बहरे होकर अंधाधुंध बेतरतीब हुजूम कर लेते थे। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 664 पर)**

फ़अ्तिया फ़िर्औ़-न फ़क़ूला इन्ना रसूलु रब्बिल्-आ़लमीन **(16)** अन् अर्सिल् म-अ़ना बनी इस्राईल **(17)** क़ा-ल अलम् नुरब्बि-क फ़ीना वलीदंव्-व लबिस्-त फ़ीना मिन् अ़ुमुरि-क सिनीन **(18)** व फ़अ़ल्-त फ़अ्-ल-तकल्लती फ़अ़ल्-त व अन्-त मिनल्-काफ़िरीन **(19)** क़ा-ल फ़अ़ल्तुहा इज़ंव्-व अ-न मिनज़्ज़ाल्लीन **(20)** फ़-फ़रर्तु मिन्कुम् लम्मा ख़िफ़्तुकुम् फ़-व-ह-ब ली रब्बी हुक्मंव्-व ज-अ़-लनी मिनल्-मुर्सलीन **(21)** व तिल्-क निअ्-मतुन् तमुन्नुहा अ़लय्-य अन् अ़ब्बत्-त बनी इस्राईल **(22)** क़ा-ल फ़िर्औ़नु व मा रब्बुल्-आ़लमीन **(23)** क़ा-ल रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, इन् कुन्तुम् मूक़िनीन **(24)** क़ा-ल लिमन् हौलहू अला तस्तमिअ़ून **(25)** क़ा-ल रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वलीन **(26)** क़ा-ल इन्-न रसूलकुमुल्लज़ी उर्सि-ल इलैकुम् ल-मज्नून **(27)** क़ा-ल रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व मा बैनहुमा, इन् कुन्तुम् तअ्क़िलून **(28)** क़ा-ल ल-इनित्त--ख़ज़्-त इलाहन् ग़ैरी ल-अज्अ़-लन्न-क मिनल्-मस्जूनीन **(29)** क़ा-ल अ-व लौ जिअ्तु-क बिशैइम्-मुबीन **(30)** क़ा-ल फ़अ्ति बिही इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन **(31)** फ़-अल्क़ा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य सुअ्बानुम्-मुबीन **(32)** व न-ज़-अ़ य-दहू फ़-इज़ा हि-य बैज़ा-उ लिन्नाज़िरीन **(33)** ❖

वقال الذين ١٩ — ٣٣٢ — الشعرآء ٢٦

معنا بني إسراءيل ﴿١٧﴾ قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت
فينا من عمرك سنين ﴿١٨﴾ وفعلت فعلتك التي فعلت و
أنت من الكافرين ﴿١٩﴾ قال فعلتها إذا وأنا من الضالين ﴿٢٠﴾
ففررت منكم لما خفتكم فوهب لي ربي حكما وجعلني
من المرسلين ﴿٢١﴾ وتلك نعمة تمنها علي أن عبدت بني
إسراءيل ﴿٢٢﴾ قال فرعون وما رب العالمين ﴿٢٣﴾ قال رب السماوات
والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين ﴿٢٤﴾ قال لمن حوله
ألا تستمعون ﴿٢٥﴾ قال ربكم ورب آبائكم الأولين ﴿٢٦﴾ قال
إن رسولكم الذي أرسل إليكم لمجنون ﴿٢٧﴾ قال رب المشرق
والمغرب وما بينهما إن كنتم تعقلون ﴿٢٨﴾ قال لئن اتخذت
إلها غيري لأجعلنك من المسجونين ﴿٢٩﴾ قال أولو جئتك
بشيء مبين ﴿٣٠﴾ قال فأت به إن كنت من الصادقين ﴿٣١﴾
فألقى عصاه فإذا هي ثعبان مبين ﴿٣٢﴾ ونزع يده فإذا
هي بيضاء للناظرين ﴿٣٣﴾ قال للملإ حوله إن هذا لساحر
عليم ﴿٣٤﴾ يريد أن يخرجكم من أرضكم بسحره فماذا
تأمرون ﴿٣٥﴾ قالوا أرجه وأخاه وابعث في المدائن حاشرين ﴿٣٦﴾

منزل ٥

क़ा-ल लिल्म-लइ हौलहू इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अ़लीम **(34)** युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिही फ़-माज़ा तअ्मुरून **(35)** क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु वब्अ़स् फ़िल्मदाइनि हाशिरीन **(36)** यअ्तू-क बिकुल्लि सह्हारिन् अ़लीम **(37)** फ़जुमिअ़स्स-ह-रतु

आ़लमीन के भेजे हुए हैं। **(16)** (और तौहीद की तरफ़ दावत के साथ यह हुक्म भी लाए हैं) कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे।[1] **(17)** (दोनों हज़रात गए और फ़िरऔ़न से सब मज़ामीन कह दिए) फ़िरऔ़न कहने लगा कि (आहा, तुम हो) क्या हमने तुमको बचपन में परवरिश नहीं किया, और तुम अपनी (उस) उम्र में बरसों रहा-सहा किए। **(18)** और तुमने अपनी वह हरकत भी की थी जो की थी, (यानी क़िबती को क़त्ल किया था) और तुम बड़े नाशुक्रे हो। **(19)** (हज़रत) मूसा ने जवाब दिया कि (वाक़ई) उस वक़्त वह हरकत मैं कर बैठा था और मुझसे ग़लती हो गई थी। **(20)** फिर जब मुझको डर लगा तो मैं तुम्हारे यहाँ से फ़रार हो गया, फिर मुझको मेरे रब ने दानिशमन्दी "यानी ख़ुसूसी समझ व शुऊर" अ़ता फ़रमाई और मुझको पैग़म्बरों में शामिल कर दिया।[2] **(21)** और (रहा परवरिश करने का एहसान जतलाना सो) वह यह नेमत है जिसका तू मुझपर एहसान रखता है कि तूने बनी इस्राईल को सख़्त ज़िल्लत में डाल रखा था।[3] **(22)** फ़िरऔ़न (इस बात में लाजवाब हुआ तो उस) ने कहा कि रब्बुल आ़लमीन की माहियत (और हक़ीक़त) क्या है? **(23)** मूसा ने जवाब दिया कि वह रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ (मख़्लूक़ात) उनके दरमियान में है उसका, अगर तुमको यक़ीन करना हो (तो यह पता बहुत काफ़ी है)।[4] **(24)** फ़िरऔ़न ने अपने इर्द-गिर्द वालों से कहा कि तुम लोग सुनते हो, (कि सवाल कुछ और जवाब कुछ)। **(25)** मूसा ने फ़रमाया कि वह परवर्दिगार है तुम्हारा और तुम्हारे पहले बुज़ुर्गों का। **(26)** फ़िरऔ़न (न समझा और) कहने लगा कि यह तुम्हारा रसूल जो (अपने ख़्याल के मुताबिक़) तुम्हारी तरफ़ रसूल होकर आया है, मजनूँ (मालूम होता) है। **(27)** मूसा ने फ़रमाया कि वह परवर्दिगार है पूरब और पश्चिम का, और जो कुछ उनके दरमियान में है उसका भी, अगर तुमको अ़क़्ल हो (तो इसी से मान लो)। **(28)** फ़िरऔ़न (आख़िर झुल्लाकर) कहने लगा कि अगर तुम मेरे सिवा कोई और माबूद तजवीज़ करोगे तो मैं तुमको जेलख़ाने भेज दूँगा। **(29)** मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अगर मैं कोई साफ़ और खुली दलील पेश करूँ तब भी (न मानेगा?) **(30)** फ़िरऔ़न ने कहा कि अच्छा तो वह दलील पेश करो, अगर तुम सच्चे हो। **(31)** मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी लाठी डाल दी तो वह एकदम एक नुमायाँ अज़्दहा बन गया। **(32)** और दूसरा (मोजिज़ा) अपना हाथ (गिरेबान में देकर) बाहर निकाला तो वह यकायक सब देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया। **(33)** ❖

फ़िरऔ़न ने दरबार वालों से जो उसके आस-पास (बैठे) थे, कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है। **(34)** इसका (असल) मतलब यह है कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारी सरज़मीन से बाहर कर दे, सो तुम लोग क्या मश्विरा देते हो। **(35)** दरबारियों ने कहा कि आप उनको और

(पृष्ठ 662 का शेष) जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः "कादू यकूनू-न अ़लैहि लि-बदा" सो ये इबादत करने वाले जिनका ज़िक्र हुआ ऐसा नहीं करते, बल्कि अ़क़्ल व समझ के साथ क़ुरआन पर मुतवज्जह होते हैं।

2. चाहे वह दुनिया में जैसे वाक़िआ़-ए-बद्र में काफ़िरों पर मुसीबत आई या आख़िरत में, और वह ज़ाहिर है।

3. इस सूरः के सबसे पहले और सबसे पिछले रुकूअ़ में क़ुरआन और रिसालत की हक़्क़ानियत व सच्चाई और उसके मुताल्लिक़ चीज़ों का ज़िक्र है, और इनके इनकारियों को मलामत और झिड़की और इबरत के लिए पहले रुकूअ़ के ख़त्म पर तौहीद को साबित करने वाली बाज़ दलीलें जो कि क़ुरआन का एक हिस्सा है, और सूरः के दरमियान में अल्लाह के अहकाम और रसूलों को झुठलाने वालों के बाज़ क़िस्से ज़िक्र किए गए हैं। चुनाँचे हर क़िस्से में आयत "इन्-न फ़ी ज़ालि-क......" को बार-बार लाया जाना उस इबरत के मक़सूद होने पर साफ़ तौर पर दलालत करता है।

4. मालूम हुआ कि उनके बैर व दुश्मनी ने उनकी फ़ितरत को बिलकुल तबाह व ज़ाया कर दिया, फिर ऐसों के पीछे क्यों जान खोई जाए।

5. उसकी आ़म फैली हुई रहमत दुनिया में काफ़िरों से भी मुताल्लिक़ है। इसका असर यह है कि उनको मोहलत दे रखी है वरना कुफ़्र यक़ीनन बुरा और अ़ज़ाब का सबब है।

6. जुर्म एक क़िबती के क़त्ल का, जिसका क़िस्सा सूरः क़सस् में आएगा।

1. कुल मिलाकर दावत का हासिल अल्लाह तआ़ला और बन्दों के हुक़ूक़ में ज़ुल्म व ज़्यादती का छोड़ना है।

2. जवाब का ख़ुलासा यह है कि मैं पैग़म्बर की हैसियत से आया हूँ। जिसमें दबने की कोई वजह नहीं, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 666 पर)**

लिमीक़ाति यौमिम्-मअ़्लूम (38) व क़ी-ल लिन्नासि हल् अन्तुम् मुज्तमिअ़ून (39) लअ़ल्लना नत्तबिअ़ुस्स-ह-र-त इन् कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (40) फ़-लम्मा जाअस्स-ह-रतु क़ालू लिफ़िर्औ़-न अ-इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्-ग़ालिबीन (41) क़ा-ल न-अ़म् व इन्नकुम् इज़ल् लमिनल्-मुक़र्रबीन (42) क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (43) फ़-अल्क़ौ हिबा-लहुम् व अ़िसिय्यहुम् व क़ालू बिअ़िज़्ज़ति फ़िर्औ़-न इन्ना ल-नह्नुल्-ग़ालिबून (44) फ़-अल्क़ा मूसा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून (45) फ़-उल्क़ियस्स-ह-रतु साजिदीन (46) क़ालू आमन्ना बिरब्बिल्-आ़लमीन (47) रब्बि मूसा व हारून (48) क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम् इन्नहू लकबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-मकुमुस्- सिह्-र फ़-लसौ-फ़ तअ़्लमू-न, ल-उक़त्तिअ़न्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव्-व ल-उसल्लिबन्नकुम् अज्मअ़ीन (49) क़ालू ला ज़ै-र इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून (50) इन्ना नत्मअ़ु अंय्यग़्फ़ि-र लना रब्बुना ख़तायाना अन् कुन्ना अव्वलल्-मुअ्मिनीन (51) ❖

وقال الذين ١٩ ٣٣٣ الشعراء ٢٦

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿٣٧﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾
وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ
إِن كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ
أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ
إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾
فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ
الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾ فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾
فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ
مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ
لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ لَأُقَطِّعَنَّ
أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾
قَالُوا لَا ضَيْرَ ۖ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا
رَبُّنَا خَطَايَانَا أَن كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ
أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٥٢﴾ فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ
حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِنَّهُمْ لَنَا
لَغَائِظُونَ ﴿٥٥﴾ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَاذِرُونَ ﴿٥٦﴾ فَأَخْرَجْنَاهُم مِّن جَنَّاتٍ

منزل ٥

व औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी इन्नकुम मुत्त-बअ़ून (52) फ़-अर्स-ल फ़िर्औ़नु फ़िल्मदाइनि हाशिरीन (53) इन्-न हाउला-इ लशिर्ज़ि-मतुन् क़लीलून (54) व इन्नहुम् लना लग़ाइज़ून (55) व इन्ना ल-जमीअ़ुन् हाज़िरून (56) फ़-अख़्रज्नाहुम् मिन् जन्नातिंव्-व अ़ुयून (57) व कुनूज़िंव्-व मक़ामिन् करीम (58) कज़ालि-क, व औरस्नाहा

उनके भाई को (थोड़ी) मोहलत दीजिए और शहरों में चपरासियों को (हुक्मनामे देकर) भेज दीजिए **(36)** कि वे (सब शहरों से) सब माहिर जादूगरों को आपके पास लाकर हाज़िर कर दें। **(37)** ग़रज़ वे जादूगर एक मुक़र्ररा दिन के ख़ास वक़्त पर[1] जमा किए गए। **(38)** और फिर (फ़िरऔन की तरफ़ से) लोगों को यह इश्तिहार दिया गया कि क्या तुम लोग जमा होगे? (यानी जमा हो जाओ) **(39)** ताकि अगर जादूगर ग़ालिब आ जाएँ तो हम उन्हीं की राह पर रहें। **(40)** फिर जब वे जादूगर (फ़िरऔन की पेशी में) आए तो फ़िरऔन से कहने लगे कि अगर हम (मूसा पर) ग़ालिब आ गए तो क्या हमको कोई बड़ा सिला (और इनाम) मिलेगा? **(41)** फ़िरऔन ने कहा, हाँ! और (उसपर ज़ायद यह कि) तुम उस सूरत में (हमारे) क़रीबी लोगों में दाख़िल हो जाओगे।[2] **(42)** मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उनसे फ़रमाया कि तुमको जो कुछ डालना हो (मैदान में) डालो। **(43)** सो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ[3] डालीं और कहने लगे कि फ़िरऔन के इक़्बाल ''यानी बुलन्दी और इ़ज़्ज़त'' की क़सम बेशक हम ही ग़ालिब आएँगे। **(44)** फिर मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी लाठी डाली, सो डालने के साथ ही (अज़्दहा बनकर) उनके तमाम-के-तमाम बनाए हुए धन्धे को निगलना शुरू कर दिया। **(45)** सो (यह देखकर) जादूगर (ऐसे मुतास्सिर हुए कि) सब सज्दे में गिर पड़े। **(46)** (और पुकार-पुकारकर) कहने लगे कि हम ईमान ले आए रब्बुल आ़लमीन पर। **(47)** जो मूसा और हारून का भी रब है।[4] **(48)** फ़िरऔन कहने लगा कि हाँ, तुम मूसा पर ईमान ले आए बिना इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, ज़रूर (मालूम होता है कि) यह (जादू में) तुम सबका उस्ताद है, जिसने तुमको जादू सिखाया है।[5] सो अब तुमको हक़ीक़त मालूम हुई जाती है। (और वह यह है कि) मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूँगा, और तुम सबको सूली पर लटकाऊँगा (ताकि औरों को सबक़ मिले)। **(49)** उन्होंने जवाब दिया कि कुछ हर्ज नहीं, हम अपने मालिक के पास जा पहुँचेंगे। **(50)** (और) हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा परवर्दिगार हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे, इस वजह से कि हम (इस मौक़े पर हाज़िरीन में से) सबसे पहले ईमान लाए हैं। **(51)** ❖

और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि मेरे (उन) बन्दों को रातों-रात (मिस्र से बाहर) निकाल ले जाओ, (और फ़िरऔन की जानिब से) तुम लोगों का पीछा किया जाएगा। **(52)** फ़िरऔन ने (पीछा करने की तदबीर के लिए आस-पास के) शहरों में चपरासी दौड़ा दिए। **(53)** (और यह कहला भेजा) कि ये लोग (यानी बनी इस्राईल हमारे मुक़ाबले में) थोड़ी-सी जमाअ़त है। **(54)** और उन्होंने हमको बहुत गुस्सा दिलाया है। **(55)** और हम सब एक हथियारों से लेस जमाअ़त (और बाक़ायदा फ़ौज) हैं। **(56)** ग़रज़ हमने उनको बाग़ों से

(पृष्ठ 664 का शेष) और पैग़म्बरी उस ग़लती से क़त्ल हो जाने के मनाफ़ी नहीं। क्योंकि वह क़त्ल ग़लती से था, जो नुबुव्वत की मलाहियत में फ़तूर डालने वाला नहीं और इस्तेदाद व सलाहियत के बाद उसका हो जाना कुछ बईद नहीं।

3. कि उनके लड़कों को क़त्ल करता था, जिसके ख़ौफ़ से मैं सन्दूक़ में रखकर दरिया में डाला गया और तेरे हाथ लग गया, और तेरी परवरिश में रहा। तो उस परवरिश की असल वजह तो तेरा ज़ुल्म ही है। तो ऐसी परवरिश का क्या एहसान जतलाया जाता है, बल्कि उससे तो तुझे अपनी नामाक़ूल हरकतों को याद करके शरमाना चाहिए। मगर याद रहे कि परवरिश का एहसान जतलाने का जवाब देने से एहसान मानने की नफ़ी मक़सूद नहीं, बल्कि एहसान जतलाने की नफ़ी मक़सूद है, जो उमूमन बुरी और नापसन्दीदा है और ख़ुसूसन जबकि उस एहसान का सबब उस एहसान के दावेदार का ज़ुल्म व ज़्यादती हो।

4. मतलब यह कि हक़ीक़त से उसकी मअ़रिफ़त और पहचान नहीं हो सकती। जब सवाल होगा, सिफ़तों ही से जवाब मिलेगा।

1. मुक़र्ररा दिन से ''यौमुज़्ज़ीनत'' और ख़ास वक़्त से सूरज चढ़े का वक़्त मुराद है, जैसा कि सूरः ता-हा के शुरू रुकूअ़ में इसका मुक़ाबले के लिए मुतैयन होना ज़िक्र किया गया है। यानी उस वक़्त के क़रीब तक सब जमा कर लिए गए और फ़िरऔन को जमा होने की इत्तिला की गई।

2. ग़रज़ इस गुफ़्तगू के बाद मुक़ाबले की जगह पर आए और दूसरी तरफ़ मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनके भाई हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और मुक़ाबला शुरू हुआ। जादूगरों ने मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा कि आप अपनी लाठी पहले डालिएगा या हम डालें? आपने फ़रमाया कि तुम ही पहले डालो। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 668 पर)**

बनी इस्राईल (59) फ़-अत्बअ़ूहुम् मुश्रिक़ीन (60) फ़-लम्मा तरा-अल्-जम्आ़नि क़ा-ल अस्हाबु मूसा इन्ना लमुद्-रकून (61) क़ा-ल कल्ला इन्-न मअ़ि-य रब्बी स-यह्दीन (62) फ़-औहैना इला मूसा अनिज़्रिब् बिअ़साकल्-बह्-र, फ़न्फ़-ल-क़ फ़का-न कुल्लु फ़िर्क़िन् कत्तौदिल्-अ़ज़ीम (63) व अज़्लफ़्ना सम्मल्-आ-ख़रीन (64) व अन्जैना मूसा व मम्-म-अ़हू अज्मअ़ीन (65) सुम्-म अग़्रक़्नल्-आ-ख़रीन (66) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (67) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (68) ❖

वत्लु अ़लैहिम् न-ब-अ इब्राही-म ✣ (69) इज़् क़ा-ल लि-अबीहि व क़ौमिही मा तअ़्बुदून (70) क़ालू नअ़्बुदु अस्नामन् फ़-नज़ल्लु लहा आ़किफ़ीन (71) क़ा-ल हल् यस्मअ़ूनकुम् इज़् तद्अ़ून (72) औ यन्फ़अ़ूनकुम् औ यजुर्रून (73) क़ालू बल् वजद्ना आबा-अना कज़ालि-क यफ़्अ़लून (74) क़ा-ल अ-फ़-रऐतुम् मा कुन्तुम् तअ़्बुदून (75) अन्तुम् व आबाउकुमुल्-अक़्दमून (76) फ़-इन्नहुम् अ़दुव्वुल्-ली इल्ला रब्बल्-आ़लमीन (77) अल्लज़ी ख़-ल-क़नी फ़हु-व यह्दीन (78) वल्लज़ी हु-व युत्अ़िमुनी व यस्क़ीन (79) व इज़ा मरिज़्तु फ़हु-व यश्फ़ीन (80) वल्लज़ी युमीतुनी सुम्-म युह्यीन (81) वल्लज़ी अत्मअ़ु अंय्यग़्फ़ि-र ली ख़ाती-अती यौमद्दीन (82) रब्बि हब् ली हुक्मंव्-व अल्हिक़्नी

وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾ كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي
إِسْرَاءِيلَ ﴿٥٩﴾ فَأَتْبَعُوهُم مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَاءَا الْجَمْعَانِ قَالَ
أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي
سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ
فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ
الْآخَرِينَ ﴿٦٤﴾ وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ
أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٦٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم
مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ
إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالُوا نَعْبُدُ
أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ
تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾ أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾ قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا
كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾ قَالَ أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾ أَنتُمْ وَ
آبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾
الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾
وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾
وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِي

और चश्मों से "निकाला" **(57)** और ख़ज़ानों से और उम्दा मकानात से निकाल बाहर किया। **(58)** (हमने उनके साथ तो) यूँ किया, और उनके बाद बनी इस्राईल को उनका मालिक बनाया। **(59)** ग़रज़ सूरज निकलने के वक़्त उनको पीछे से जा लिया। **(60)**[1] फिर दोनों जमाअ़तें (आपस में ऐसी क़रीब हुईं कि) एक-दूसरे को देखने लगीं, तो मूसा के साथ वाले (घंबराकर) कहने लगे कि (ऐ मूसा!) बस हम तो हाथ आ गए। **(61)** (मूसा अ़लैहि. ने) फ़रमाया हरगिज़ नहीं, क्योंकि मेरे साथ मेरा रब है, वह मुझको (दरिया से निकलने का) अभी रास्ता बतला देगा। **(62)**[2] फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी को दरिया पर मारो, चुनाँचे (उन्होंने उसपर लाठी मारी, जिससे) वह (दरिया) फट गया,[3] और हर हिस्सा इतना (बड़ा) था जैसा बड़ा पहाड़।[4] **(63)** और हमने दूसरे फ़रीक़ को भी उस जगह के क़रीब पहुँचा दिया।[5] **(64)** और (क़िस्से का अन्जाम यह हुआ कि) हमने मूसा को और उनके साथ वालों को सबको बचा लिया। **(65)** फिर दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। **(66)** (और) इस वाक़िए में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उन (काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। **(67)** और आपका रब बड़ा ज़बरदस्त है, (और) बड़ा मेहरबान है। **(68)** ❖

और आप उन लोगों के सामने इब्राहीम (अ़लैहि.) का क़िस्सा बयान कीजिए। **(69)** जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो। **(70)** उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत किया करते हैं, (और) हम उन्ही की (इबादत) पर जमे बैठे रहते हैं। **(71)** (इब्राहीम अ़लैहि. ने) फ़रमाया कि क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इनको पुकारा करते हो? **(72)** या ये तुमको कुछ नफ़ा पहुँचाते हैं, या ये तुमको कुछ नुक़सान पहुँचा सकते हैं? **(73)** उन लोगों ने कहा कि (इनकी इबादत करने की यह वजह तो) नहीं, बल्कि हमने अपने बड़ों को इसी तरह करते देखा है। **(74)** (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि भला तुमने उनको (ग़ौर से) देखा भी जिनकी तुम इबादत किया करते हो। **(75)** तुम भी और तुम्हारे पुराने बड़े भी **(76)** कि ये (जिनकी इबादत की जा रही है) मेरे (यानी तुम्हारे) लिए नुक़सान का सबब हैं, मगर हाँ रब्बुल आ़लमीन (की इबादत पूरी तरह नफ़ा देने वाली है) **(77)** जिसने मुझको (और इसी तरह सबको) पैदा किया, फिर वही मुझको (मेरी मस्लहतों की तरफ़) रहनुमाई करता है। **(78)** और जो कि मुझको खिलाता-पिलाता है। **(79)** और जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो वही मुझको शिफ़ा देता है। **(80)** और जो मुझको (वक़्त पर) मौत देगा। फिर (क़ियामत के दिन) मुझको ज़िन्दा करेगा। **(81)** और जिससे मुझको यह उम्मीद है कि मेरे ग़लतियों को[6] क़ियामत के दिन माफ़ कर देगा। **(82)** ऐ मेरे रब! मुझको हिक्मत अ़ता फ़रमा

(पृष्ठ 666 का शेष) **3.** जो जादू के असर से साँप मालूम होती थीं।

4. उम्मीद के ख़िलाफ़ यह अन्जाम देखकर फ़िरऔ़न बहुत घबराया कि कहीं ऐसा न हो कि सारी रिआ़या और पब्लिक ही मुसलमान हो जाए। तो एक बात बनाकर नाराज़गी के तौर पर जादूगरों से कहने लगा।

5. और तुम इसके शागिर्द हो, इसलिए आपस में खुफ़िया साज़िश कर ली है कि तुम यूँ करना हम यूँ करेंगे, फिर इस तरह हार-जीत ज़ाहिर करेंगे, ताकि क़िब्तियों से हुकूमत छीनकर ख़ूब मज़े के साथ खुद हुकूमत करो।

1. यानी क़रीब पहुँच गए। उस वक़्त बनी इस्राईल दरिया-ए-क़ुल्ज़ुम से उतरने की फ़िक्र में थे कि क्या सामान करें।

2. क्योंकि मूसा अ़लैहिस्सलाम से हक़ तआ़ला ने फ़रमा दिया था कि उनके लिए दरिया में (लाठी मारकर) खुश्क रास्ता बना देना। फिर तुमको न तो फ़िरऔ़न के आ पकड़ने का ख़ौफ़ होगा और न (डूब जाने का) डर। पस मूसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के इस वायदे पर मुत्मइन थे। लेकिन उनकी क़ौम इस वायदे का इल्म न रखने के सबब परेशान थी।

3. यानी पानी कई जगह से इधर-उधर हटकर बीच में अनेक सड़कें खुल गईं।

4. बनी इस्राईल अमन व इत्मीनान के साथ दरिया से पार हो गए।

5. फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी भी दरिया के नज़दीक पहुँचे। दरिया उस वक़्त उसी हाल पर ठहरा हुआ था, इसलिए फ़िरऔ़न ने खुले हुए रास्तों को ग़नीमत समझा। आगा-पीछा कुछ न सोचा, सारे लश्कर को लेकर अन्दर घुस गया। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 670 पर)**

बिस्सालिहीन (83) वज्अ़ल्ली लिसा-न सिद्क़िन् फ़िल्-आख़िरीन (84) वज्अ़ल्नी मिंव्-र-सति जन्नतिन्-नअ़ीम (85) वग़्फ़िर् लि-अबी इन्नहू का-न मिनज़्ज़ाल्लीन (86) व ला तुख़्ज़िनी यौ-म युब्अ़सून (87) यौ-म ला यन्फ़अ़ु मालुंव्-व ला बनून (88) इल्ला मन् अतल्ला-ह बि-क़ल्बिन् सलीम (89) व उज़्लि-फ़तिल्- जन्नतु लिल्मुत्तक़ीन (90) व बुर्रि-ज़तिल्-जहीमु लिल्ग़ावीन (91) व क़ी-ल लहुम् ऐ-नमा कुन्तुम् तअ़्बुदून (92) मिन् दूनिल्लाहि, हल् यन्सुरूनकुम् औ यन्तसिरून (93) फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम् वल्ग़ावून (94) व जुनूदु इब्ली-स अज्मअ़ून (95) क़ालू व हुम् फ़ीहा यख़्तसिमून (96) तल्लाहि इन् कुन्ना लफ़ी ज़लालिम् मुबीन (97) इज़् नुसव्वीकुम् बिरब्बिल्-आ़लमीन (98) व मा अज़ल्लना इल्लल्- मुज्रिमून (99) फ़मा लना मिन् शाफ़िअ़ीन (100) व ला सदीक़िन् हमीम (101) फ़लौ अन्-न लना कर्र-तन् फ़-नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (102) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (103) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (104) ❖

وقال الذين ١٩ ٣٣٥ الشعرآء ٢٦

حُكْمًا وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي
الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ
اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا
يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ
الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا
كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾
فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾ قَالُوْا
وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾ اِذْ
نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا
مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اِنِّيْ لَكُمْ
رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ
اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾
قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا

ع ٥

منزل ٥

कज़्ज़बत् क़ौमु नूहि-निल्-मुर्सलीन (105) इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् नूहुन् अला तत्तक़ून (106) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (107) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (108) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (109)

और (अपनी निकटता के दर्जों में) मुझको (आला दर्जे के) नेक लोगों में शामिल फ़रमा।[1] **(83)** और मेरा ज़िक्र आगे आने वालों में जारी रख। **(84)** और मुझको जन्नतुन्-नअ़ीम के हक़दारों में से कर। **(85)** और मेरे बाप (को ईमान की तौफ़ीक़ देकर उस) की मग़्फ़िरत फ़रमा, कि वह गुमराह लोगों में है। **(86)** और जिस दिन सब ज़िन्दा होकर उठेंगे उस दिन मुझको रुस्वा न करना। **(87)** उस दिन में कि (नजात के लिए) न माल काम आएगा और न औलाद।[2] **(88)** मगर हाँ, (उसकी नजात होगी) जो अल्लाह तआ़ला के पास (कुफ़्र व शिर्क से) पाक दिल लेकर आएगा। **(89)** और (उस दिन) ख़ुदा से डरने वालों (यानी ईमान वालों) के लिए जन्नत नज़दीक कर दी जाएगी। **(90)** और गुमराहों (यानी काफ़िरों) के लिए दोज़ख़ सामने ज़ाहिर की जाएगी। **(91)** और (उस दिन) उनसे कहा जाएगा कि वे माबूद कहाँ गए जिनकी तुम इबादत करते थे **(92)** अल्लाह के अ़लावा। क्या (इस वक़्त) वे तुम्हारा साथ दे सकते हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं। **(93)** फिर (यह कहकर) वे (माबूद) और गुमराह लोग **(94)** और शैतान का लश्कर सब के सब दोज़ख़ में औंधे मुँह डाल दिए जाएँगे। **(95)** वे काफ़िर दोज़ख़ में गुफ़्तगू करते हुए (उन माबूदों से) कहेंगे **(96)** कि अल्लाह की क़सम! बेशक हम खुली गुमराही में थे। **(97)** जबकि तुमको (इबादत में) रब्बुल आ़लमीन के बराबर करते थे। **(98)** और हमको तो बस इन बड़े मुजरिमों ने (जो कि गुमराही की बुनियाद रखने वाले थे) गुमराह किया। **(99)** सो (अब) न कोई हमारा सिफ़ारशी है (कि छुड़ा ले) **(100)** और न कोई मुख़्लिस दोस्त है (कि ख़ाली दिल को तसल्ली ही दे) **(101)** सो क्या अच्छा होता कि हमको (दुनिया में) फिर वापस जाना मिलता ताकि हम मुसलमान हो जाते।[3] **(102)** बेशक इस वाक़िए में (भी हक़ के तालिबों के लिए) एक बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उन (मक्का के मुश्रिकों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। **(103)** बेशक आपका रब बड़ा ज़बरदस्त, रहमत वाला है। **(104)** ❖

नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया।[4] **(105)** जबकि उनसे उनकी बिरादरी के भाई नूह ने फ़रमाया कि क्या तुम (अल्लाह तआ़ला से) नहीं डरते। **(106)** मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। **(107)** सो (इसका तक़ाज़ा यह है कि) तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। **(108)** और (साथ ही यह कि) मैं तुमसे कोई (दुनियावी) सिला नहीं माँगता, मेरा सिला तो बस रब्बुल आ़लमीन के ज़िम्मे है। **(109)** सो (मेरी इस बेग़रज़ी का मुक़्तज़ा भी यह है कि) तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। **(110)** वे लोग कहने लगे कि क्या हम तुमको मानेंगे हालाँकि रज़ील "यानी समाजी तौर पर कमज़ोर व कम दर्जे के" लोग तुम्हारे साथ हो लिए हैं।[5] **(111)** नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि उनके (पेशे और) काम से मुझको क्या बहस **(112)**

(पृष्ठ 668 का शेष) अब दरिया का पानी चारों तरफ़ से सिमटना शुरू हुआ और फ़िरऔ़न का सारा लश्कर ग़र्क़ हो गया।

6. इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह की ये सिफ़तें इसलिए सुनाईं कि ख़ुदा तआ़ला की इबादत की रग़बत हो, और "ख़ती-अती" से मुराद ख़िलाफ़े औला (यानी ना-मुनासिब) है वरना अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम गुनाहों से क़तई तौर पर पाक थे।

1. शामिल फ़रमाने से मरतबे की ज़्यादती और नेक लोगों के साथ ख़ुसूसी निकटता मुराद है।

2. इससे कोई शख़्स यह शुब्हा न करे कि मोमिनों को तो वह माल जिसको सदक़ा किया हो, और वह औलाद जो नेक हो या नाबालिग़ मर गई हो, नफ़ा देती है। बात यह है कि नफ़े का इनकार उनकी ज़ात के एतिबार से है, और मोमिन के लिए नफ़ा देने वाला होना नेक अ़मल के मिल जाने यानी सब्र और सदक़े की वजह से है, पस इस जवाब की हाजत नहीं कि यह नफ़ा न पहुँचना काफ़िरों के लिए मख़्सूस है।

3. यहाँ तक इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तक़रीर है। उसके बाद ख़ुदा तआ़ला फ़रमाता है।

4. क्योंकि एक पैग़म्बर को झुठलाने से तमाम नबियों का झुठलाना लाज़िम आता है।

5. जिनकी मुवाफ़क़त से शरीफ़ और बड़े लोगों को शर्म आती है, और यह भी कि अक्सर ऐसे कम-हौसला लोगों की ग़रज़ भी माल का हासिल करना या बुलन्दी व तरक़्क़ी पाना हुआ करता है, ये लोग भी दिल से ईमान नहीं लाए।

फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (110) क़ालू अनुअ्मिनु ल-क वत्त-ब-अ़कल्-अर्-ज़लून (111) क़ा-ल व मा अ़िल्मी बिमा कानू यअ्मलून (112) इन् हिसाबुहुम् इल्ला अ़ला रब्बी लौ तश्अुरून (113) व मा अ-न बितारिदिल्-मुअ्मिनीन (114) इन् अ-न इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (115) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि या नूहु ल-तकूनन्-न मिनल्-मर्जूमीन (116) क़ा-ल रब्बि इन्-न क़ौमी कज़्ज़बून (117) फ़फ़्तह् बैनी व बैनहुम् फ़त्हंव्-व नज्जिनी व मम्-मअि-य मिनल्-मुअ्मिनीन ● (118) फ़-अन्जैनाहु व मम्-म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्किल्-मश्हून (119) सुम्-म अग्रक़्ना बअ्दुल्-बाक़ीन (120) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (121) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (122) ❖

कज़्ज़-बत् आ़दु-निल्-मुर्-सलीन (123) इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् हूदुन् अला तत्तक़ून (124) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (125) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (126) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (127)

كانوا يعملون ﴿١١٢﴾ إن حسابهم إلا على ربي لو تشعرون ﴿١١٣﴾ و
ما أنا بطارد المؤمنين ﴿١١٤﴾ إن أنا إلا نذير مبين ﴿١١٥﴾ قالوا لئن
لم تنته يا نوح لتكونن من المرجومين ﴿١١٦﴾ قال رب إن قومي
كذبون ﴿١١٧﴾ فافتح بيني وبينهم فتحا ونجني ومن معي من
المؤمنين ﴿١١٨﴾ فأنجيناه ومن معه في الفلك المشحون ﴿١١٩﴾ ثم
أغرقنا بعد الباقين ﴿١٢٠﴾ إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم
مؤمنين ﴿١٢١﴾ وإن ربك لهو العزيز الرحيم ﴿١٢٢﴾ كذبت عاد
المرسلين ﴿١٢٣﴾ إذ قال لهم أخوهم هود ألا تتقون ﴿١٢٤﴾ إني لكم
رسول أمين ﴿١٢٥﴾ فاتقوا الله وأطيعون ﴿١٢٦﴾ وما أسألكم عليه من
أجر إن أجري إلا على رب العالمين ﴿١٢٧﴾ أتبنون بكل ريع
آية تعبثون ﴿١٢٨﴾ وتتخذون مصانع لعلكم تخلدون ﴿١٢٩﴾ وإذا
بطشتم بطشتم جبارين ﴿١٣٠﴾ فاتقوا الله وأطيعون ﴿١٣١﴾ واتقوا
الذي أمدكم بما تعلمون ﴿١٣٢﴾ أمدكم بأنعام وبنين ﴿١٣٣﴾ وجنات
وعيون ﴿١٣٤﴾ إني أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ﴿١٣٥﴾ قالوا سواء
علينا أوعظت أم لم تكن من الواعظين ﴿١٣٦﴾ إن هذا إلا خلق
الأولين ﴿١٣٧﴾ وما نحن بمعذبين ﴿١٣٨﴾ فكذبوه فأهلكناهم إن في

अ-तब्नू-न बिकुल्लि रीअिन् आ-यतन् तअ्-बसून (128) व तत्तख़िज़ू-न मसानि-अ़ लअ़ल्लकुम् तख़्लुदून (129) व इज़ा ब-तश्तुम् ब-तश्तुम् जब्बारीन (130) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (131) वत्तक़ुल्लज़ी अ-मद्दकुम् बिमा तअ्लमून (132) अ-मद्दकुम् बिअन्आ़मिंव्-व बनीन (133) व जन्नातिंव्-व अ़ुयून (134) इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (135) क़ालू सवाउन् अ़लैना अ-वअ़ज़्-त अम् लम् तकुम् मिनल्-

● निस्फ़ 1/2 ❖ रु. 6/18/10

उनसे हिसाब क़िताब लेना बस ख़ुदा का काम है। क्या ख़ूब हो कि तुम इसको समझो। **(113)** और मैं ईमान वालों को दूर करने वाला नहीं हूँ। **(114)** मैं तो साफ़ तौर पर एक डराने वाला हूँ।[1] **(115)** वे लोग कहने लगे कि अगर तुम (इस कहने-सुनने से) ऐ नूह! बाज़ न आओगे तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। **(116)** नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने[2] दुआ़ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! (मेरी कौम) मुझको (बराबर) झुठला रही है। **(117)** सो आप मेरे और उनके दरमियान में एक (अ़मली) फ़ैसला कर दीजिए,[3] और मुझको और जो ईमान वाले मेरे साथ हैं उनको (उस हलाकत से) नजात दीजिए। ● **(118)** तो हमने (उनकी दुआ़ कुबूल की और) उनको और जो उनके साथ भरी कश्ती में (सवार) थे उनको नजात दी। **(119)** फिर उसके बाद हमने बाक़ी लोगों को डुबू दिया। **(120)** इस (वाक़िए) में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। **(121)** और बेशक आपका रब ज़बरदस्त (और) मेहरबान है। **(122)** ❖

क़ौमे आ़द ने पैग़म्बरों को झुठलाया। **(123)** जबकि उनसे उन (की बिरादरी) के भाई हूद ने कहा कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो? **(124)** मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। **(125)** सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। **(126)** और मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कोई सिला नहीं माँगता, बस मेरा सिला तो रब्बुल आ़लमीन के ज़िम्मे है। **(127)** क्या तुम हर ऊँचे मक़ाम पर एक यादगार (के तौर पर इमारत) बनाते हो, जिसको महज़ फ़ुज़ूल (बिला ज़रूरत) बनाते हो। **(128)** और बड़े-बड़े महल बनाते हो, जैसे दुनिया में तुमको हमेशा रहना है।[4] **(129)** और जब किसी की पकड़-धकड़ करने लगते हो तो बिलकुल जाबिर (और ज़ालिम) बनकर पकड़ करते हो।[5] **(130)** सो तुम (को चाहिए कि) अल्लाह तआ़ला से डरो, और (चूँकि मैं रसूल हूँ इसलिए) मेरी इताअ़त करो। **(131)** और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से इम्दाद की जिनको तुम जानते हो **(132)** (यानी) मवेशी और बेटों **(133)** और बाग़ों और चश्मों से तुम्हारी इम्दाद की।[6] **(134)** (अगर तुम इन हरकतों से बाज़ न आए तो) मुझको तुम्हारे हक़ में एक बड़े सख़्त दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है। **(135)** वे लोग बोले कि हमारे नज़दीक तो दोनों बातें बराबर हैं, चाहे तुम नसीहत करो और चाहे नसीहत करने वाले मत बनो। **(136)** यह तो बस अगले लोगों की एक (मामूली) आ़दत (और रस्म) है। **(137)** और (तुम जो हमको अ़ज़ाब से डराते हो तो) हमको हरगिज़ अ़ज़ाब न होगा। **(138)** ग़रज़ उन लोगों ने हूद (अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया तो हमने उनको (आँधी के अ़ज़ाब से) हलाक कर दिया, बेशक

---

1. और तब्लीग़ से मेरा फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है। आगे अपना नफ़ा व नुक़सान तुम देख लो।
2. ग़रज़ लम्बी मुद्दत इसी तरह से गुज़र गई तो नूह अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की।
3. यानी उनको हलाक कर दीजिए।
4. यानी ऐसे लम्बे-चौड़े और बुलन्द व मज़बूत मकानात और महल यादगार और निशानियाँ बनाना उस वक़्त मुनासिब थे कि दुनिया में हमेशा रहना होता, तो यह ख़्याल होता कि लम्बे-चौड़े मकान बनाओ ताकि आने वाली नस्ल में तंगी न हो, क्योंकि हम भी रहेंगे और वे भी होंगे। और ऊँचे और बुलन्द भी बनाओ ताकि नीचे जगह न रहे तो ऊपर रहने लगें।
5. इन बुरे अख़्लाक़ का इसलिए बयान किया गया कि ये बुरे अख़्लाक़ अक्सर ईमान व इताअ़त के लिए रुकावट हो जाते हैं, और चूँकि शिर्क और बुरे अख़्लाक़ अल्लाह की नाराज़ी और अ़ज़ाब दिए जाने का सबब हैं, इसलिए तुमको चाहिए कि अल्लाह से डरो।
6. तो नेमतें देने वाला होने का तक़ाज़ा यह है कि उसके अहकाम की बिलकुल भी मुख़ालफ़त न की जाए।

वाअ़िज़ीन **(136)** इन् हाज़ा इल्ला ख़ुलुक़ुल्-अव्वलीन **(137)** व मा नह्नु बिमु-अ़ज़्ज़बीन **(138)** फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अह़्लक्नाहुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन **(139)** व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम **(140)** ❖

कज़्ज़-बत् समूदुल्-मुर्सलीन **(141)** इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् सालिहुन् अला तत्तक़ून **(142)** इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन **(143)** फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून **(144)** व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन **(145)** अ-तुतरकू-न फ़ी मा हाहुना आमिनीन **(146)** फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून **(147)** व ज़ुरूअ़िंव् व नख़्लिन् तल्अ़ुहा हज़ीम **(148)** व तन्हितू-न मिनल्-जिबालि बुयूतन् फ़ारिहीन **(149)** फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून **(150)** व ला तुतीअ़ू अम्रल्-मुस्रिफ़ीन **(151)** अल्लज़ी-न युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून **(152)** क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल्-मुसह़्हरीन **(153)** मा अन्-त इल्ला ब-शरुम् मिस्लुना फ़अ्ति बिआ-यतिन् इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन **(154)** क़ा-ल हाज़िही ना-क़तुल्-लहा शिर्बुंव्-व लकुम् शिर्बु यौमिम्-मअ़्लूम **(155)** व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्ख़ु-ज़कुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़ज़ीम **(156)** फ़-अ़-क़रूहा फ़-अस्बहू नादिमीन **(157)** फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्-अ़ज़ाबु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन **(158)** व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम **(159)** ❖

कज़्ज़-बत् क़ौमु लूति-निल्-मुर्सलीन **(160)** इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् लूतुन् अला

وقال الذين ١٩ ٣٧٦ الشعراء ٢٦

ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۚ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ
اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾ وَ
مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾
اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٦﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٧﴾ وَّزُرُوْعٍ
وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾ وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾ الَّذِيْنَ
يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ
الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾
وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوْهَا
فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَ
مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾ كَذَّبَتْ
قَوْمُ لُوْطِ ِالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾
اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ
عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ

منزل ٥

इस (वाक़िए) में भी बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) उनमें अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। **(139)** और बेशक आपका रब ज़बरदस्त (और) मेहरबान है।[1] **(140)** ❖

क़ौमे समूद ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया। **(141)** जबकि उनसे उनके भाई सालेह (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया, क्या तुम (अल्लाह तआ़ला से) नहीं डरते। **(142)** मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। **(143)** सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। **(144)** और मैं तुमसे इसपर कुछ सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला तो रब्बुल आ़लमीन के ज़िम्मे है।[2] **(145)** क्या तुमको इन्ही चीज़ों में बेफ़िक्री से रहने दिया जाएगा जो यहाँ (दुनिया में) मौजूद हैं। **(146)** यानी बाग़ों में और चश्मों में **(147)** और खेतों और उन खजूरों में जिनके गुफ्फे ख़ूब गूँधे हुए हैं।[3] **(148)** और क्या (इसी ग़फ़लत की वजह से) तुम पहाड़ों को तराश-तराशकर इतराते हो (और फ़ख़्र करते हुए) मकान बनाते हो। **(149)** सो अल्लाह तआ़ला से डरो और मेरा कहना मानो। **(150)** और इन (बन्दगी) की हदों से निकल जाने वालों का कहना मत मानो **(151)** जो सरज़मीन में फ़साद किया करते हैं और (कभी) सुधार (की बात) नहीं करते।[4] **(152)** उन लोगों ने कहा कि तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है।[5] **(153)** तुम बस हमारी ही तरह के एक (मामूली) आदमी हो, (और आदमी नबी होता नहीं) सो कोई मोजिज़ा पेश करो अगर तुम सच्चे हो। **(154)** सालेह ने फ़रमाया कि यह एक ऊँटनी है[6] पानी पीने के लिए एक बारी इसकी है और एक मुक़र्ररा दिन में एक बारी तुम्हारी। (यानी तुम्हारे मवेशियों की)[7] **(155)** और इसको बुराई (तकलीफ़ देने की नीयत) के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको एक भारी दिन का अ़ज़ाब आ पकड़े। **(156)** सो उन्होंने[8] उस ऊँटनी को मार डाला, फिर (अपनी हरकत पर) शर्मिन्दा हुए।[9] **(157)** फिर (आख़िर) अ़ज़ाब ने उनको आ लिया, बेशक इस (वाक़िए) में बड़ी इबरत है। और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। **(158)** और बेशक आपका रब बड़ा ज़बरदस्त, बहुत मेहरबान है (कि बावजूद क़ुदरत के मोहलत देता है)। **(159)** ❖

लूत की क़ौम ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया। **(160)** जबकि उनसे उनके भाई[10] लूत (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो। **(161)** मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। **(162)** सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। **(163)** और मैं तुमसे इसपर कोई सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला

---

1. कि अ़ज़ाब देने पर भी क़ादिर है और अपनी रहमत से मोहलत भी दे रखी है।
2. और तुम जो ऐश व आराम की बदौलत अल्लाह से इस दर्जा ग़ाफ़िल हो तो (आगे देखो तर्जुमा)
3. जिनमें ख़ूब कसरत से फल आता है।
4. मुराद काफ़िरों के सरदार हैं जो लोगों को गुमराही पर तैयार करते थे। फ़साद फैलाने और सुधार न करने से यही मुराद है।
5. जिससे तुम्हारी अ़क़्ल में फ़ुतूर आ गया है कि वह्य और नुबुव्वत का दावा करते हो।
6. जो ख़िलाफ़े आ़दत पैदा होने की वजह से मोजिज़ा है। जैसे आठवे पारः के ख़त्म के क़रीब गुज़रा। और इसके अ़लावा कि यह मेरी रिसालत पर एक दलील है खुद इसके भी कुछ हुक़ूक़ हैं। चुनाँचे उनमें से एक यह है कि (आगे देखो तर्जुमा)
7. पानी की बारी इस तरह थी कि एक दिन ऊँटनी का और एक दिन दूसरे जानवरों का। जब ऊँटनी की बारी का दिन होता तो वह तमाम पानी पी जाती, और उस दिन न दूसरे जानवरों को पानी मिलता न आदमियों को, और यह बात उन लोगों को नागवार हुई और उस ऊँटनी के दुश्मन हो गए। हदीसों से मालूम होता है कि वहाँ एक कुआँ था जिसमें यह बारी थी।
8. न रिसालत की तस्दीक़ की न ऊँटनी के हुक़ूक़ अदा किए। बल्कि (आगे देखो तर्जुमा)
9. मगर अव्वल तो अ़ज़ाब के देखने के वक़्त शर्मिन्दगी बेकार है, दूसरे ख़ाली तबई शर्मिन्दगी से क्या होता है जब तक इख़्तियारी तलाफ़ी यानी तौबा और ईमान न हो।
10. रूहुल-मअ़ानी में सूरः क़ाफ़ की तफ़सीर में लिखा है कि ये लोग नसबी भाई न थे, मजाज़न भाई कह दिया, ससुराली रिश्तेदार थे। क्योंकि लूत अ़लैहिस्सलाम हिजरत करके यहाँ तशरीफ़ लाए थे, आपकी बिरादरी के लोग (यानी हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम के ख़ानदान वाले) यहाँ आपके साथ मौजूद न थे।

तत्तक़ून (161) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (162) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (163) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (164) अ-तअ्तूनज़्ज़ुक्रा-न मिनल्-आ़लमीन (165) व त-ज़रू-न मा ख़-ल-क़ लकुम् रब्बुकुम् मिन् अज़्वाजिकुम्, बल् अन्तुम् क़ौमुन् आ़दून (166) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि या लूतु ल-तकूनन्-न मिनल्-मुख़्रजीन (167) क़ा-ल इन्नी लि-अ़-मलिकुम् मिनल्-क़ालीन (168) रब्बि नज्जिनी व अह्ली मिम्मा यअ्मलून (169) फ़-नज्जैनाहु व अह्लहू अज्मअ़ीन (170) इल्ला अ़जूज़न् फ़िल्-ग़ाबिरीन (171) सुम्-म दम्मर्नल् आख़रीन (172) व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-तरन् फ़सा-अ म-तरुल्-मुन्ज़रीन (173) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (174) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (175) ❖

कज़्ज़-ब अस्हाबुल्- ऐ-कतिल् मुर्-सलीन (176) इज़् क़ा-ल लहुम् शुअ़ैबुन् अला तत्तक़ून (177) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (178) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (179) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (180) औफ़ुल्कै-ल व ला तकूनू मिनल्-मुख़्सिरीन (181) व ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीम (182) व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (183) वत्तक़ुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्- जिबिल्ल-तल्-अव्वलीन (184) क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल्-मुसह्हरीन (185) व मा अन्-त इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना व इन् नज़ुन्नु-क लमिनल्-काज़िबीन (186) फ़-अस्क़ित् अ़लैना कि-सफ़म्-मिनस्समा-इ इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (187) क़ा-ल रब्बी

مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾ وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَلْ اَنْتُمْ
قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾
قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾
فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ
لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوْا
بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾
قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ
نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ
فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

तो रब्बुल आ़लमीन के ज़िम्मे है। **(164)** क्या तमाम दुनिया जहान वालों में से तुम (यह हरकत करते हो कि) मर्दों से बदफ़ेली करते हो। **(165)** और तुम्हारे रब ने जो तुम्हारे लिए बीवियाँ पैदा की हैं उनको नज़र अन्दाज़ किए रहते हो।[1] बल्कि (असल बात यह है कि) तुम (इनसानियत की) हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। **(166)** वे कहने लगे कि ऐ लूत! अगर तुम (हमको कहने-सुनने से) बाज़ नहीं आओगे तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। **(167)** लूत (अ़लैहि.) ने फ़रमाया[2] कि मैं तुम्हारे इस काम से सख़्त नफ़रत रखता हूँ।[3] **(168)** (हज़रत) लूत ने दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! मुझको और मेरे (ख़ास) मुताल्लिक़ीन को उनके इस काम (के वबाल) से नजात दे। **(169)** सो हमने उनको और उनके मुताल्लिक़ीन को सबको नजात दी **(170)** सिवाय एक बुढ़िया के,[4] वह (अ़ज़ाब के अन्दर) रह जाने वालों में रह गई।[5] **(171)** फिर हमने और सबको हलाक कर दिया। **(172)** और हमने उनपर एक ख़ास क़िस्म की (यानी पत्थरों की) बारिश बरसाई, सो क्या बुरी बारिश थी जो उन लोगों पर बरसी जिनको (अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से) डराया गया था। **(173)** बेशक इस (वाक़िए) में (भी) इबरत है, और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। **(174)** और बेशक आपका परवर्दिगार बड़ी क़ुदरत वाला, बड़ी रहमत वाला है। **(175)** ❖

ऐका वालों ने (भी जिनका ज़िक्र सूरः हिज्र के आख़िर में गुज़रा है) पैग़म्बरों को झुठलाया। **(176)** जबकि उनसे शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो। **(177)** मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ। **(178)** सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। **(179)** और मैं तुमसे इसपर कोई सिला नहीं चाहता, बस मेरा सिला तो रब्बुल आ़लमीन के ज़िम्मे है। **(180)** तुम लोग पूरा नापा करो, और (हक़ वाले का) नुक़सान मत किया करो। **(181)** और (इसी तरह तौलने की चीज़ों में) सीधी तराज़ू से तौला करो।[6] **(182)** और लोगों का उनकी चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और सरज़मीन में फ़साद मत मचाया करो। **(183)** और उस (ख़ुदा-ए-क़ादिर) से डरो जिसने तुमको और तमाम अगली मख़्लूक़ात को पैदा किया। **(184)** वे लोग कहने लगे कि बस तुमपर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है। **(185)** और तुम तो महज़ हमारी तरह (के) एक (मामूली) आदमी हो, और हम तो तुमको झूठे लोगों में से ख़्याल करते हैं। **(186)** सो अगर तुम सच्चों में से हो तो हमपर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो।[7] **(187)** शुऐब ने कहा कि[8] तुम्हारे आमाल को मेरा रब (ही) ख़ूब जानता है। **(188)** सो वे लोग (बराबर) उनको झुठलाया किए, फिर उनको सायबान[9] के वाक़िए ने आ पकड़ा, बेशक वह बड़े सख़्त दिन का अ़ज़ाब था। **(189)** (और) इस (वाक़िए) में (भी) बड़ी इबरत है, और (बावजूद इसके) इन (मक्का के काफ़िरों) में अक्सर लोग

---

1. यानी और कोई आदमी तुम्हारे सिवा यह हरकत नहीं करता, और यह नहीं है कि उसके बुरा होने में कुछ छुपी हुई बात है।
2. तुम्हारी यह धमकी मुझको हक़ कहने से बाज़ नहीं रख सकती। क्योंकि (आगे देखो तर्जुमा)
3. तो कहना कैसे छोड़ दूँगा। जब उन लोगों ने किसी तरह न माना और अ़ज़ाब आता मालूम हुआ तो (आगे देखो तर्जुमा)
4. इससे लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी मुराद है।
5. अ़ज़ाब में रह जाना इसलिए था कि वह काफ़िरा थी, इसलिए रात को लूत अ़लैहिस्सलाम के साथ शहर से न निकली।
6. यानी डन्डी न मारा करो, न बाटों में फ़र्क़ किया करो।
7. ताकि हमको मालूम हो जाए कि वाक़ई तुम नबी थे। तुम्हारे झुठलाने से हमको यह सज़ा हुई।
8. मैं अ़ज़ाब का लाने वाला या उसकी कैफ़ियत को मुतैयन करने वाला कौन होता हूँ।
9. 'सायबान का अ़ज़ाब' जैसा कि तफ़सीर दुर्रे मन्सूर में रिवायत किया गया है, यह था कि पहले उन लोगों पर गर्मी मुसल्लत हुई। फिर एक बादल ज़ाहिर हुआ जिससे ठन्डी हवा आती थी। सब लोग उसके नीचे जमा हो गए। उसमें से आग बरसना शुरू हुई और सब जल गए।

अअ़्लमु बिमा तअ़्मलून (188) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़-ज़हुम् अ़ज़ाबु यौमिज़्ज़ुल्लति, इन्नहू का-न अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (189) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (190) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (191) ❖

व इन्नहू ल-तन्ज़ीलु रब्बिल्-आ़लमीन (192) न-ज़-ल बिहिर्-रूहुल्-अमीन (193) अ़ला क़ल्बि-क लि-तकू-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (194) बिलिसानिन् अ़-रबिय्यिम्-मुबीन (195) व इन्नहू लफ़ी ज़ुबुरिल्-अव्वलीन (196) अ-व लम् यकुल्लहुम् आ-यतन् अंय्यअ्-ल-महू अ़ु-लमा-उ बनी इस्राईल (197) व लौ नज़्ज़ल्नाहु अ़ला बअ्ज़िल्-अअ्-जमीन (198) फ़-क़-र-अहू अ़लैहिम् मा कानू बिही मुअ्मिनीन (199) कज़ालि-क सलक्नाहु फ़ी क़ुलूबिल्-मुज्रिमीन (200) ला युअ्मिनू-न बिही हत्ता य-रवुल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (201) फ़-यअ्ति-यहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अ़ुरून (202) फ़-यक़ूलू हल् नह्नु मुन्ज़रून (203) अ-फ़बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ्जिलून (204) अ-फ़-रऐ-त इम् मत्तअ्नाहुम् सिनीन (205) सुम्-म जा-अहुम् मा कानू यू-अ़दून (206) मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू युमत्तअ़ून (207) व मा अह्लक्ना मिन् क़र्-यतिन् इल्ला लहा मुन्ज़िरून (208) ज़िक्रा व मा कुन्ना ज़ालिमीन (209) व मा तनज़्ज़-लत् बिहिश्शयातीन (210) व मा यम्बग़ी लहुम् व मा यस्ततीअ़ून (211) इन्नहुम् अ़निस्सम्अ़ि ल-मअ्ज़ूलून (212) फ़ला तद्अ़ु मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-तकू-न मिनल्-मुअ़ज़्ज़बीन (213) व अन्ज़िर् अ़शी-र-तकल् अक़्रबीन (214) वख़्फ़िज़् जना-ह-क लि-मनित्त-ब-अ़-क मिनल्-मुअ्मिनीन (215) फ़-इन् अ़सौ-क फ़क़ुल् इन्नी बरीउम्-मिम्मा

الشعرآء ٢٦ ٣٣٩ وقال الذين ١٩

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ نَزَلَ بِهِ
الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ بِلِسَانٍ
عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ۝ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً
اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰۗؤُا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰي بَعْضِ
الْاَعْجَمِيْنَ ۝ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ
فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝
فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝
اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝ ثُمَّ جَاۗءَهُمْ
مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ۝ وَمَآ اَهْلَكْنَا
مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ۝ ذِكْرٰي ڜ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَمَا
تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ۝ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ اِنَّهُمْ
عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ۝ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ
مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ۝ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ۝ وَاخْفِضْ
جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ
اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ الَّذِيْ

منزل ٥

ईमान नहीं लाते। **(190)** और बेशक आपका रब बड़ी कुव्वत वाला और बड़ी रहमत वाला है। **(191)** ❖

और यह कुरआन रब्बुल आ़लमीन का भेजा हुआ है। **(192)** इसको अमानत दार फ़रिश्ता लेकर आया है **(193)** आपके दिलपर ताकि आप (भी) अन्य डराने वालों में से हों **(194)** साफ़ अ़रबी ज़बान में "नाज़िल किया" **(195)** और इस (कुरआन) का ज़िक्र पहली उम्मतों की (आसमानी) किताबों में (भी) है।[1] **(196)** क्या उन लोगों के लिए यह बात दलील नहीं है कि इस (पैशीनगोई) को बनी इस्राईल के उलमा जानते हैं।[2] **(197)** और अगर (फ़र्ज़ करो) हम इस (कुरआन) को किसी अ़जमी (ग़ैर-अ़रबी) पर नाज़िल कर देते **(198)** फिर वह (ग़ैर-अ़रबी) उनके सामने इसको पढ़ भी देता, ये लोग (अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी और बैर की वजह से) तब भी इसको न मानते। **(199)** हमने इसी तरह (सख़्ती और इसरार के साथ) इस ईमान न लाने को उन नाफ़रमानों के दिलों में डाल रखा है।[3] **(200)** ये लोग इस (कुरआन) पर ईमान न लाएँगे जब तक कि सख़्त अ़ज़ाब को (मरने के वक़्त या बरज़ख़ में या आख़िरत में) न देख लेंगे। **(201)** जो अचानक उनके सामने आ खड़ा होगा, और उनको (पहले से) ख़बर भी न होगी। **(202)** फिर (उस वक़्त जान को बनेगी) कहेंगे कि क्या (किसी तौर पर) हमको (कुछ) मोहलत मिल सकती है।[4] **(203)** क्या (हमारी डाँट और धमकियों को सुनकर) ये लोग हमारे अ़ज़ाब का जल्द आना चाहते हैं।[5] **(204)** ऐ मुख़ातब! ज़रा बतलाओ तो अगर हम उनको चन्द साल तक ऐश में रहने दें, **(205)** फिर जिस (अ़ज़ाब) का उनसे वायदा है वह उनके सर पर आ पड़े, **(206)** तो उनका वह ऐश किस काम आ सकता है।[6] **(207)** और जितनी बस्तियाँ (इनकार करने वालों की) हमने (अ़ज़ाब से) ग़ारत की हैं सबमें डराने वाले (पैग़म्बर) आए। **(208)** (जब न माना तो अ़ज़ाब नाज़िल हुआ) नसीहत के वास्ते, "यानी पैग़म्बर नसीहत के वास्ते आए" और हम (बज़ाहिर देखने में भी) ज़ालिम नहीं हैं। **(209)** और इस (कुरआन) को शैतान (जो काहिनों के पास आया करते थे) लेकर नहीं आए। **(210)** और यह उन (की हालत) के मुनासिब ही नहीं, और वे इसपर क़ादिर भी नहीं। **(211)** क्योंकि वे शयातीन (आसमानी वह्य) सुनने से रोक दिए गए हैं। **(212)** सो (ऐ पैग़म्बर!) तुम अल्लाह के साथ किसी और माबूद की इबादत मत करना, कभी तुमको सज़ा होने लगे।[7] **(213)** और (इस मज़मून से) आप (सबसे पहले) अपने नज़दीक के कुन्बे को डराइए।[8] **(214)** और उन लोगों के साथ (तो शफ़्क़त भरी) इन्किसारी से पेश आइए जो मुसलमानों में दाख़िल होकर आपकी राह पर चलें। **(215)** और अगर ये लोग (जिनको आपने डराया है) आपका कहा न मानें तो आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारे फ़ेलों से बेज़ार हूँ। **(216)** और आप

---

1. कि एक ऐसी-ऐसी शान का पैग़म्बर होगा और उसपर ऐसा कलाम नाज़िल होगा, चुनाँचे तफ़सीरे हक़्क़ानी के इस मक़ाम के हाशियों में चन्द ख़ुशख़बरियाँ नक़ल की हैं। आगे इस मज़मून "व इन्नहू लफ़ी ज़ुबुरिल् अव्वली-न" की वज़ाहत है।

2. चुनाँचे उनमें जो लोग इस्लाम ले आए हैं तो वे ऐलानिया इसका एतिराफ़ करते हैं, और जो इस्लाम नहीं लाए वे भी ख़ास-ख़ास लोगों के सामने इसका इक़रार करते हैं।

3. यानी कुफ़्र में सख़्त हैं और उसपर अड़े हुए हैं।

4. लेकिन वह वक़्त न मोहलत का है न ईमान के क़बूल करने का।

5. यानी सच्ची ख़बर देने वाले के दलीलें क़ायम करने के बावजूद फिर भी इनकार करते हैं।

6. यानी यह ऐश जो मोहलत देने के तौर पर है, अ़ज़ाब में कमीं करने तक में तो मुअस्सिर है नहीं, फिर अ़ज़ाब के न होने में इसको क्या दख़ल होता। पस उनका यह दलील पकड़ना बिलकुल बेकार है।

7. हालाँकि आप में 'अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे' न शिर्क का एहतिमाल न अ़ज़ाब दिए जाने का। पस जब आपके एतिबार से भी इन दोनों में लाज़िमियत का हुक्म किया जाता है तो और बेचारे तो किस गिनती में हैं, शिर्क से उनको कैसे मना न किया जाएगा, और शिर्क करके अ़ज़ाब से क्योंकर बचेंगे।

8. चुनाँचे आपने सबको पुकारकर जमा किया और शिर्क पर अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया, जैसा कि हदीसों में है।

तअ़्मलून **(216)** व त-वक्कल् अ़लल्-अ़ज़ीज़िर्रहीम **(217)** अल्लज़ी यरा-क ही-न तक़ूम **(218)** व तक़ल्लु-ब-क फ़िस्साजिदीन **(219)** इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम **(220)** हल् उनब्बिउकुम् अ़ला मन् तनज़्ज़लुश्शयातीन **(221)** तनज़्ज़लु अ़ला कुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीम **(222)** युल्क़ूनस्सम्-अ़ व अक्सरुहुम् काज़िबून **(223)** वश्शु-अ़रा-उ यत्तबिअ़ुहुमुल्-ग़ावून **(224)** अलम् त-र अन्नहुम् फ़ी कुल्लि वादिंय्-यहीमून **(225)** व अन्नहुम् यक़ूलू-न मा ला यफ़्अ़लून **(226)** इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व ज़-करुल्ला-ह कसीरंव्-वन्त-सरू मिम्-बअ़्दि मा ज़ुलिमू, व स-यअ़्-लमुल्लज़ी-न ज़-लमू अय्-य मुन्क़-लबिंय्- यन्क़लिबून **(227)** ❖

27 सूरतुन्-नम्लि 48

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4879 अक्षर, 1167 शब्द, 93 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तॉ-सीन्, तिल्-क आयातुल्-क़ुरआनि व किताबिम्- मुबीन **(1)** हुदंव् व बुश्रा लिल्-मुअ़्मिनीन **(2)** अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ़्तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून **(3)** इन्नल्लज़ी-न ला युअ़्मिनू-न बिल्-आख़िरति ज़य्यन्ना लहुम् अअ़्मालहुम् फ़हुम् यअ़्महून **(4)** उलाइ-कल्लज़ी-न लहुम् सूउल्-अ़ज़ाबि व हुम् फ़िल्-आख़िरति हुमुल् अख़्सरून **(5)** व इन्न-क लतु-लक़्क़ल्-क़ुरआ-न मिल्लदुन् हकीमिन् अ़लीम ▲ **(6)** इज़् क़ा-ल मूसा लिअह्लिही इन्नी आनस्तु नारन्, स-आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ आतीकुम् बिशिहाबिन् क़-बसिल् लअ़ल्लकुम् तस्तलून **(7)** फ़-लम्मा जा-अहा नूदि-य अम्बूरि-क मन्

النمل ٢٧ ٣٧٠ وقال الذين ١٩

يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۙ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ۝ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝
هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ۝ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ
اَثِيْمٍ ۝ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ۝ وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ۝
اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ۝ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ۝
اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْ
بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝ هُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ
بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ
اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ
حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۗ سَاٰتِيْكُمْ
مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝
فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۗ وَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

منزل ٥

ख़ुदा-ए-क़ादिर रहीम पर भरोसा रखिए। **(217)** जो आपको जिस वक़्त कि आप (नमाज़ के लिए) खड़े होते हैं **(218)** और (तथा नमाज़ शुरू करने के बाद) नमाज़ियों के साथ आपके उठने-बैठने को देखता है। **(219)** वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है।[1] **(220)** (ऐ पैग़म्बर! लोगों से कह दीजिए कि) क्या मैं तुमको बतला दूँ शैतान किसपर उतरा करते हैं। **(221)** (सुनो!) ऐसे शख़्सों पर उतरा करते हैं जो (पहले से) झूठ बोलने वाले, बड़े बद-किरदार हों। **(222)** और जो (शैतानों की ख़बरें सुनने के लिए) कान लगा देते हैं, और वे कसरत से झूठ बोलते हैं। **(223)** और शायरों की राह तो बेराह लोग चला करते हैं।[2] **(224)** (ऐ मुख़ातब!) क्या तुमको मालूम नहीं कि वे (शायर) लोग (ख़्याली मज़ामीन के) हर मैदान में हैरान फिरा करते हैं **(225)** और ज़बान से वे बातें कहते हैं जो करते नहीं। **(226)** हाँ, मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए,[3] और उन्होंने (अपने शे'रों में) कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया, और उन्होंने उसके बाद कि उनपर ज़ुल्म हो चुका है, (उसका) बदला लिया, और जल्द ही उन लोगों को मालूम हो जाएगा जिन्होंने (अल्लाह के हुक़ूक़ वग़ैरह में) ज़ुल्म कर रखा है कि कैसी जगह उनको लौटकर जाना है।[4] **(227)** ❖

27 सूरः नम्ल 48

सूरः नम्ल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 93 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

[5]तॉ-सीन। ये (आयतें जो आपपर नाज़िल की जाती हैं) आयतें हैं क़ुरआन की, और एक वाज़ेह किताब की।[6] **(1)** ये (आयतें) ईमान वालों के लिए हिदायत (का ज़रिया) और ख़ुशख़बरी सुनाने वाली हैं। **(2)** जो (मुसलमान) ऐसे हैं कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात देते हैं, और वे आख़िरत पर (पूरा) यक़ीन रखते हैं। **(3)** (यह तो ईमान वालों की सिफ़त है, और) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके (बुरे) आमाल उनकी नज़र में पसन्दीदा कर रखे हैं। सो वे (अपनी इस दोहरी जहालत में हक़ से दूर) भटकते-फिरते हैं। **(4)** ये वे लोग हैं जिनके लिए (मरने के वक़्त भी) सख़्त अ़ज़ाब (होने वाला) है, और वे लोग आख़िरत में (भी) सख़्त घाटे में हैं। (कि कभी नजात न होगी) **(5)** और आपको यक़ीनन एक बड़ी हिक्मत वाले, इल्म वाले की जानिब से क़ुरआने हकीम दिया जा रहा है। ▲ **(6)** (इसलिए आप उनके इनकार से ग़मगीन न होइए, उस वक़्त का क़िस्सा याद कीजिए) जबकि मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं अभी (जाकर) वहाँ से (या तो रास्ते की) कोई ख़बर लाता हूँ या तुम्हारे पास (वहाँ से) आग का शोला (किसी लकड़ी वग़ैरह में लगा हुआ) लाता हूँ ताकि तुम सेंको। **(7)** सो जब उस (आग) के पास पहुँचे तो उनको (अल्लाह की जानिब से) आवाज़ दी गई कि जो इस आग के अन्दर हैं (यानी फ़रिश्ते) उनपर भी बरकत हो और जो इसके पास है (यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम) उसपर भी (बरकत हो)[7] और रब्बुल आ़लमीन पाक है।[8] **(8)** ऐ मूसा! बात यह है कि मैं (जो बेकैफ़ियत के कलाम कर रहा हूँ) अल्लाह हूँ,

---

1. पस जब उसको इल्म भी कामिल है, और आप पर मेहरबान भी है, और उसको सब कुछ क़ुदरत भी है तो ज़रूर वह भरोसे के लायक़ है। वह आपको हक़ीक़ी नुक़सान से बचाएगा। और जो भरोसा करने वाले को नुक़सान पहुँचता है, वह देखने में नुक़सान होता है जिसके तहत में हज़ारों फ़ायदे होते हैं, जिनका कभी दुनिया में और कभी आख़िरत में इज़हार होता हैं।

2. मुराद 'राह' से शे'र कहना है। यानी ख़्याली शायराना मज़ामीन को नस्र (गिद्य) या नज़्म (पद्य) के तौर पर कहना उन लोगों का शेवा है, जो तहक़ीक़ के रास्ते से दूर हों। चुनाँचे ख़्याली मज़मून उसको कहते हैं जो तहक़ीक़ के ख़िलाफ़ हो।

3. यानी शरीअ़त के ख़िलाफ़ न उनका क़ौल है न फ़ेल, यानी उनके शे'रों में बेहूदा मज़ामीन नहीं हैं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 682 पर)**

फ़िन्नारि व मन् हौलहा, व सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-आलमीन **(8)** या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(9)** व अल्क़ि अ़सा-क, फ़-लम्मा र-आहा तहतज़्ज़ु क-अन्नहा जान्नुंव्-वल्ला मुद्बिरंव्-व लम् युअ़क़्क़िब्, या मूसा ला तख़फ़्, इन्नी ला यख़ाफ़ु ल-दय्यल्-मुर्सलून **(10)** इल्ला मन् ज़-ल-म सुम्-म बद्द-ल हुस्नम् बअ़्-द सूइन् फ़-इन्नी ग़फ़ूरुर्-रहीम **(11)** व अद्ख़िल् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन्, फ़ी तिस्अ़ि आयातिन् इला फ़िरऔ़-न व क़ौमिही, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन **(12)** फ़-लम्मा जाअत्हुम् आयातुना मुब्सि-रतन् क़ालू हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन **(13)** व ज-हदू बिहा वस्तै-क़नत्हा अन्फ़ुसुहुम् ज़ुल्मंव्-व अ़ुलुव्वन्, फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुफ़्सिदीन **(14)** ❖

व ल-क़द् आतैना दावू-द व सुलैमा-न अ़िल्मन् व क़ालल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी फ़ज़्ज़-लना अ़ला कसीरिम् मिन् अ़िबादिहिल्-मुअ्मिनीन **(15)** व वरि-स सुलैमानु दावू-द व क़ा-ल या अय्युहन्नासु अ़ुल्लिम्ना मन्तिक़त्तैरि व ऊतीना मिन् कुल्लि शैइन्, इन्-न हाज़ा ल-हुवल् फ़ज़्लुल्-मुबीन **(16)** व हुशि-र लिसुलैमा-न जुनूदुहू मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि वत्तैरि फ़हुम् यू-ज़अ़ून **(17)** हत्ता इज़ा अतौ अ़ला वादिन्नम्लि क़ालत् नम्लतुंय्-या अय्युहन्-नम्लुद्ख़ुलू मसाकि-नकुम् ला यह्तिमन्नकुम् सुलैमानु व जुनूदुहू व हुम् ला यश्अ़ुरून **(18)** फ़-तबस्स-म ज़ाहिकम्-मिन् क़ौलिहा व क़ा-ल रब्बि औज़िअ़्नी अन् अश्कु-र निअ़्-म-तकल्लती अन्अ़म्-त अ़लय्-य व अ़ला वालिदय्-य व अन् अअ़्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अद्ख़िल्नी बि-रह्मति-क फ़ी अ़िबादिकस्-सालिहीन **(19)** व त-फ़क़्क़-दत्तै-र फ़क़ा-ल मा लि-य ला

وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ
يٰمُوسٰى لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ﴿١٠﴾ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ
ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١﴾ وَأَدْخِلْ يَدَكَ
فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ فِي تِسْعِ اٰيٰتٍ إِلٰى فِرْعَوْنَ
وَقَوْمِهٖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فٰسِقِينَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً
قَالُوا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾ وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا
وَّعُلُوًّا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا
دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلٰى
كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ
يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُودُهٗ مِنَ الْجِنِّ
وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾ حَتّٰى إِذَا أَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ
قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓأَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ
وَجُنُودُهٗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ
رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ
وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ

ज़बरदस्त, हिक्मत वाला। **(9)** और (ऐ मूसा!) तुम अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो, सो जब उन्होंने उसको इस तरह हरकत करते देखा जैसे साँप हो तो पीठ फेर कर भागे, और पीछे मुड़कर भी न देखा। (इरशाद हुआ कि) ऐ मूसा! डरो नहीं, हमारे हुज़ूर में (यानी नुबुव्वत का सम्मान दिए जाने के वक़्त) पैग़म्बर नहीं डरा करते।[1] **(10)** हाँ, मगर जिससे कोई क़ुसूर हो जाए[2] फिर बुराई (हो जाने) के बाद उसकी जगह नेक काम कर ले, (यानी तौबा कर ले) तो मैं मग़्फ़िरत वाला, रहमत वाला हूँ।[3] **(11)** और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान के अन्दर ले जाओ (और फिर निकालो), वह बिना किसी ऐब (यानी बिना किसी कोढ़ वग़ैरह की बीमारी) के रोशन होकर निकलेगा, नौ मोजिज़ों में से हैं, (जिनके साथ तुमको) फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ (भेजा जाता है क्योंकि) वे बड़े हद से निकल जाने वाले लोग हैं **(12)** ग़रज़ उन लोगों के पास जब हमारे (दिए हुए) मोजिज़े पहुँचे (जो) निहायत वाज़ेह (थे) तो वे लोग (उन सबको देखकर भी) बोले, यह खुला जादू है। **(13)** (और) ग़ज़ब तो यह था कि ज़ुल्म और तकब्बुर की राह से उन (मोजिज़ों) के (बिलकुल) मुन्किर हो गए, हालाँकि उनके दिलों ने उनका यक़ीन कर लिया था, सो देखिए कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ उन फ़साद फैलाने वालों का।[4] **(14)** ❖

और हमने दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) और सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) को (शरीअ़त और बादशाहत चलाने का) इल्म अ़ता फ़रमाया, और उन दोनों ने (शुक्र अदा करने के लिए) कहा कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए लायक़ हैं, जिसने हमको अपने बहुत-से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत दी। **(15)** और दाऊद (अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद उन) के क़ायम मुक़ाम सुलैमान हुए, और उन्होंने (शुक्र ज़ाहिर करने के लिए) कहा कि ऐ लोगो! हमको परिन्दों की बोली (समझने) की तालीम दी गई है, और हमको (हुकूमत के सामान के मुताल्लिक़) हर क़िस्म की (ज़रूरी) चीज़ें दी गई हैं। वाक़ई यह (अल्लाह तआ़ला का) साफ़ फ़ज़्ल है। **(16)** और सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) के लिए (जो) उनका लश्कर जमा किया गया, उनमें जिन्न भी थे और इनसान भी और परिन्दे भी, (जो किसी बादशाह के ताबे नहीं होते) और (इस कसरत से थे कि) उनको (चलने के वक़्त) रोका जाता था।[5] **(17)** यहाँ तक कि जब चींवटियों के एक मैदान में आए तो एक चींवटी ने (दूसरी चींवटियों से) कहा कि ऐ चींवटियो! अपने-अपने सूराख़ों में जा घुसो, कहीं तुमको सुलैमान और उनका लश्कर बेख़बरी में न कुचल डालें।[6] **(18)** सो सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) उसकी बात से मुस्कुराते हुए हँस पड़े[7] और कहने लगे कि ऐ मेरे रब! मुझको इसपर हमेशगी दीजिए कि मैं नेक काम किया करूँ जिससे आप ख़ुश हों, और मुझको अपनी

(पृष्ठ 680 का शेष) **4.** मुराद इससे जहन्नम है।

5. इस सूरः का असल ख़ुलासा तीन मज़मून हैं- अव्वल वह्य व रिसालत का साबित करना, दूसरे तौहीद, तीसरे आख़िरत का सुबूत और क़ियामत का क़ायम होना और बदला व सज़ा का मिलना।

6. यानी इसमें दो सिफ़तें हैं- क़ुरआन होना और स्पष्ट किताब होना।

7. यह दुआ़ सलाम और बरकत के तौर पर है। जैसे आने के वक़्त आने वाला या जिसके पास आया जाए वह सलाम किया करता है। मगर चूँकि मूसा अ़लैहिस्सलाम जानते न थे कि यह नूर अल्लाह के नूरों में से है, इसलिए ख़ुद सलाम न कर सके तो अल्लाह की तरफ़ से उनको मानूस करने के लिए सलाम इरशाद हुआ।

8. और इस चीज़ के बतलाने के लिए कि यह नूर जो आग की शक्ल में है ख़ुद ज़ाते बारी तआ़ला नहीं, यह इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुल आ़लमीन दिशाओं, हदों, मिक़दार और रंगों वग़ैरह से पाक है।

1. इस जुमले से जो कि ऐसा मालूम होता है कि ख़बर दी जा रही है, लेकिन इससे मुराद यह है कि डरना न चाहिए।

2. यानी जिससे कोई ग़लती हो जाए और उस ग़लती व गुनाह को याद करके डरे तो कोई हर्ज नहीं।

3. यह इसलिए फ़रमा दिया कि इस लाठी की शक्ल बदल जाने के मामले से मुत्मइन हो जाने के बाद कहीं क़िबती को क़त्ल कर देने वाले वाक़िए को याद करके परेशान हों। इसलिए इससे भी मुत्मइन फ़रमा दिया ताकि घबराहट जाती रहे।

4. कि दुनिया में डूबने और आख़िरत में आग में जलने की सज़ा पाई। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 684 पर)**

अरल्-हुद्हु-द अम् का-न मिनल्-ग़ाइबीन (20) ल-उअ़ज़्ज़िबन्नहू अ़ज़ाबन् शदीदन् औ ल-अज़्ब-हन्नहू औ ल-यअ्ति-यन्नी बिसुल्तानिम्-मुबीन (21) फ़-म-क-स ग़ै-र बअ़ीदिन् फ़क़ा-ल अहत्तु बिमा लम् तुहित् बिही व जिअ्तु-क मिन् स-बइम् बि-न-बइय्-यक़ीन (22) इन्नी वजत्तुम्-र-अतन् तम्लिकुहुम् व ऊतियत् मिन् कुल्लि शैइंव्-व लहा अ़र्शुन् अ़ज़ीम (23) वजत्तुहा व क़ौमहा यस्जुदू-न लिश्शम्सि मिन् दूनिल्लाहि व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्मालहुम् फ़-सद्दहुम् अ़निस्सबीलि फ़हुम् ला यह्तदून (24) अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी युख़्रिजुल्-ख़ब्-अ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुख़्फ़ू-न व मा तुअ्लिनून (25) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल्-अ़र्शिल्-अ़ज़ीम ☐ (26) क़ा-ल सनन्ज़ुरु अ-सदक़्-त अम् कुन्-त मिनल्-काज़िबीन (27) इज़्हब्-बिकिताबी हाज़ा फ़-अल्क़िह् इलैहिम् सुम्-म तवल्-ल अ़न्हुम् फ़न्ज़ुर् माज़ा यर्जिअ़ून (28) क़ालत् या अय्युहल्म-लउ इन्नी उल्क़ि-य इलय्-य किताबुन् करीम (29) इन्नहू मिन् सुलैमा-न व इन्नहू बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम (30) अल्ला तअ्लू अ़लय्-य वअ्तूनी मुस्लिमीन (31) ❖

क़ालत् या अय्युहल् म-लउ अफ़्तूनी फ़ी अम्री मा कुन्तु क़ाति-अ़तन् अम्रन् हत्ता तश्हदून (32) क़ालू नह्नु उलू क़ुव्वतिंव्-व उलू बअ्सिन् शदीदिंव्-वल्-अम्रु इलैकि फ़न्ज़ुरी माज़ा तअ्मुरीन (33) क़ालत् इन्नल्-मुलू-क इज़ा द-ख़लू क़र्-यतन् अफ़्सदूहा व ज-अ़लू अअ़िज़्ज़-त-अह्लिहा अज़िल्ल-तन् व कज़ालि-क यफ़्अ़लून (34) व इन्नी मुर्सि-लतुन्

الصلحين ۝ وتفقد الطير فقال ما لي لا ارى الهدهد ام كان
من الغائبين ۝ لاعذبنه عذابا شديدا او لاذبحنه او لياتيني
بسلطن مبين ۝ فمكث غير بعيد فقال احطت بما لم تحط
به وجئتك من سبا بنبا يقين ۝ اني وجدت امراة تملكهم
واوتيت من كل شيء ولها عرش عظيم ۝ وجدتها وقومها
يسجدون للشمس من دون الله وزين لهم الشيطن اعمالهم
فصدهم عن السبيل فهم لا يهتدون ۝ الا يسجدوا لله
الذي يخرج الخبء في السموت والارض ويعلم ما تخفون و
ما تعلنون ۝ الله لا اله الا هو رب العرش العظيم ۝ قال سننظر
اصدقت ام كنت من الكذبين ۝ اذهب بكتبي هذا فالقه اليهم
ثم تول عنهم فانظر ماذا يرجعون ۝ قالت يايها الملؤا اني القي
الي كتب كريم ۝ انه من سليمن وانه بسم الله الرحمن الرحيم ۝
الا تعلوا علي واتوني مسلمين ۝ قالت يايها الملؤا افتوني في
امري ما كنت قاطعة امرا حتى تشهدون ۝ قالوا نحن اولوا قوة و
اولوا باس شديد والامر اليك فانظري ماذا تامرين ۝ قالت ان
الملوك اذا دخلوا قرية افسدوها وجعلوا اعزة اهلها اذلة وكذلك

(ख़ास) रहमत से अपने (आला दर्जे के) नेक बन्दों में दाख़िल रखिए। **(19)** और (एक बार यह क़िस्सा हुआ कि) सुलैमान ने परिन्दों की हाज़िरी ली,[1] तो हुदहुद को न देखा, फ़रमाने लगे कि यह क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देखता, क्या कहीं ग़ायब हो गया है? **(20)** मैं उसको (ग़ैर-हाज़िरी पर) सख़्त सज़ा दूँगा,[2] या उसको ज़िब्ह कर डालूँगा या वह कोई साफ़ हुज्जत (और ग़ैर-हाज़िरी का उज़्र) मेरे सामने पेश करे। **(21)** सो थोड़ी ही देर में वह आ गया और (सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से) कहने लगा कि मैं ऐसी बात मालूम करके आया हूँ[3] जो आपको मालूम नहीं हुई। (और मुख़्तसर बयान उसका यह है कि) मैं आपके पास क़बीला सबा की एक तहक़ीक़ी ख़बर लाया हूँ। **(22)** मैंने एक औरत को देखा कि वह उन लोगों पर बादशाही कर रही है, और उसको (बादशाही के लिए ज़रूरी चीज़ों में से) हर क़िस्म का सामान मयस्सर है, और उसके पास एक बड़ा (और क़ीमती) तख़्त है। **(23)** मैंने उसको और उस (औरत) की क़ौम को देखा कि वे ख़ुदा (की इबादत) को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हैं, और शैतान ने उनके (उन) (कुफ़्रिया) आमाल को उनकी नज़र में पसन्दीदा कर रखा है, और उनको हक़ रास्ते से रोक रखा है, सो वे (हक़ के) रास्ते पर नहीं चलते **(24)** कि उस ख़ुदा को सज्दा नहीं करते जो (ऐसा क़ादिर है कि) आसमान और ज़मीन की पोशीदा चीज़ों को (जिनमें बारिश और पेड़-पौधे वग़ैरह भी हैं) बाहर लाता है, और (ऐसा आ़लिम है कि) तुम जो कुछ (दिल में) पोशीदा रखते हो और जो (कुछ ज़बान वग़ैरह से) ज़ाहिर करते हो वह सबको जानता है। **(25)** (पस) अल्लाह ही ऐसा है कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और वह अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है। ❑ **(26)** सुलैमान (अ़लैहि. ने यह सुनकर) फ़रमाया कि हम अभी देखते हैं कि तू सच कहता है या झूठों में से है। **(27)** (अच्छा) मेरा यह ख़त ले जा और इसको उसके पास डाल देना, फिर (ज़रा वहाँ से) हट जाना, फिर देखना कि आपस में क्या सवाल व जवाब करते हैं।[4] **(28)** बिलक़ीस ने (ख़त पढ़कर अपने सरदारों से मश्विरे के लिए) कहा कि ऐ दरबार वालो! मेरे पास एक ख़त (जिसका मज़मून) निहायत बा-वक़्अ़त (है)[5] डाला गया है। **(29)** वह सुलैमान की तरफ़ से है, और उसमें यह (मज़मून) है, (पहले) बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम **(30)** (और उसके बाद यह कि) तुम मेरे मुक़ाबले में तकब्बुर मत करो और मेरे पास ताबेदार होकर चले आओ। **(31)** ❖

बिलक़ीस ने कहा कि ऐ दरबार वालो! तुम मुझको मेरे इस मामले में राय दो (कि मुझको सुलैमान के साथ क्या मामला करना चाहिए और) मैं किसी बात का क़तई फ़ैसला नहीं करती जब तक कि तुम लोग मेरे पास मौजूद न हो। **(32)** वे लोग कहने लगे कि हम बड़े ताक़तवर और बड़े लड़ने वाले हैं, और (आगे) इख़्तियार तुमको है, सो तुम ही (मस्लहत देख लो, जो कुछ (तजवीज़ करके) हुक्म देना हो। **(33)** बिलक़ीस कहने लगी कि बादशाहों (का क़ायदा है कि) जब किसी बस्ती में (मुख़ालफ़त के तौर पर) दाख़िल होते हैं तो

(पृष्ठ 682 का शेष) 5. ताकि बिखर न जाएँ। पीछे वाले भी पहुँच जाएँ। यह बात आ़दतन बहुत ज़्यादा तादाद होने में होती है, क्योंकि थोड़े मजमे में तो अगला आदमी ख़ुद ही ऐसे वक़्त रुक जाता है, और बड़े मजमे में अगलों को पिछलों की ख़बर भी नहीं होती, इसलिए इसका इन्तिज़ाम करना पड़ता है। एक बार अपने लाव-लश्कर के साथ तशरीफ़ लिए जाते थे, (आगे देखो तर्जुमा)

6. चींवटी के इस कलाम के वक़्त या तो आपका लश्कर ज़मीन पर चल रहा होगा और अगर हवा पर सफ़र था तो वहाँ उतरने का इरादा होगा और चींवटी को अल्लाह के ख़बर देने से सुलैमान अ़लैहिस्सलाम और उनके लश्कर और इस इरादे की जानकारी हो गई होगी, और क़ुदरत के सामने सब आसान है।

7. और ''हँस पड़ने'' से अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के हँसने का सुबूत मिलता है और हदीस में जो आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इसकी नफ़ी आई है तो मुराद उससे आ़दत की नफ़ी है न कि कुल्ली तौर पर नफ़ी। और सुलैमान अ़लैहिस्सलाम अगर दुनिया भर के बादशाह मान लिए जाएँ तो उनका धीरे-धीरे पूरी दुनिया का बादशाह बनने का क़ायल होना चाहिए ताकि उस वक़्त तक बिलक़ीस का मुल्क आपके क़ब्ज़े में न आना शक व शुब्हे का सबब न हो।

1. या तो परिन्दों को कुछ ख़िदमतें सुपुर्द कर रखी होंगी इसलिए हाज़िरी ली, या यह कि महज़ इन्तिज़ामी **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 686 पर)**

इलैहिम् बि-हदिय्यतिन् फ़नाज़ि-रतुम् बि-म यर्जिअुल्-मुर्सलून **(35)** फ़-लम्मा जा-अ सुलैमा-न क़ा-ल अतुमिद्दू-ननि बिमालिन् फ़मा आतानि-यल्लाहु ख़ैरुम् मिम्मा आताकुम् बल् अन्तुम् बि-हदिय्यतिकुम् तफ़्रहून **(36)** इर्जिअ् इलैहिम् फ़-लनअ्ति-यन्नहुम् बिजुनूदिल् ला क़ि-ब-ल लहुम् बिहा व लनुख़्रिजन्नहुम् मिन्हा अज़िल्ल-तंव्-व हुम् सागिरून **(37)** क़ा-ल या अय्युहल्-म-लउ अय्युकुम् यअ्तीनी बिअ़र्शिहा क़ब्-ल अंय्यअ्तूनी मुस्लिमीन **(38)** क़ा-ल अ़िफ़रीतुम् मिनल्-जिन्नि अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अन् तक़ू-म मिम्-मक़ामि-क व इन्नी अ़लैहि ल-क़विय्युन् अमीन **(39)** क़ालल्लज़ी अ़िन्दहू अ़िल्मुम् मिनल्-किताबि अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अंय्यर्-तद्-द इलै-क तर्फ़ु-क, फ़-लम्मा रआहु मुस्तक़िर्रन् अ़िन्दहू क़ा-ल हाज़ा मिन् फ़ज़्लि रब्बी, लि-यब्लु-वनी अ-अश्कुरु अम् अक्फ़ुरु, व मन् श-क-र फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क-फ़-र फ़-इन्-न रब्बी ग़निय्युन् करीम **(40)** क़ा-ल नक्किरू लहा अ़र्-शहा नन्ज़ुर् अ-तह्तदी अम् तकूनु मिनल्लज़ी-न ला यह्तदून **(41)** फ़-लम्मा जाअत् क़ी-ल अहा-कज़ा अ़र्शुकि, क़ालत् क-अन्नहू हु-व व ऊतीनल्-अ़िल्-म मिन् क़ब्लिहा व कुन्ना मुस्लिमीन **(42)** व सद्दहा मा कानत् तअ्बुदु मिन् दूनिल्लाहि, इन्नहा कानत् मिन् क़ौमिन् काफ़िरीन **(43)** क़ी-ल ल-हद्ख़ुलिस्सर्-ह फ़-लम्मा र-अत्हु हसि-बत्हु लुज्जतंव्-व क-शफ़त् अ़न् साक़ैहा, क़ा-ल इन्नहू सर्हुम्-मुमर्रदुम मिन् क़वारी-र, क़ालत् रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी व अस्लम्तु म-अ़ सुलैमा-न लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन **(44)** ❖

يفعلون ﴿٣٤﴾ واني مرسلة اليهم بهدية فنظرة بم يرجع
المرسلون ﴿٣٥﴾ فلما جاء سليمن قال اتمدونن بمال فما اتن الله
خير مما اتكم بل انتم بهديتكم تفرحون ﴿٣٦﴾ ارجع اليهم
فلناتينهم بجنود لا قبل لهم بها ولنخرجنهم منها اذلة وهم
صاغرون ﴿٣٧﴾ قال يايها الملؤا ايكم ياتيني بعرشها قبل ان ياتوني
مسلمين ﴿٣٨﴾ قال عفريت من الجن انا اتيك به قبل ان تقوم من
مقامك واني عليه لقوي امين ﴿٣٩﴾ قال الذي عنده علم من الكتب
انا اتيك به قبل ان يرتد اليك طرفك فلما راه مستقرا عنده
قال هذا من فضل ربي ليبلوني ءاشكر ام اكفر ومن شكر
فانما يشكر لنفسه ومن كفر فان ربي غني كريم ﴿٤٠﴾ قال نكروا
لها عرشها ننظر اتهتدي ام تكون من الذين لا يهتدون ﴿٤١﴾
فلما جاءت قيل اهكذا عرشك قالت كانه هو واوتينا العلم
من قبلها وكنا مسلمين ﴿٤٢﴾ وصدها ما كانت تعبد من دون الله
انها كانت من قوم كفرين ﴿٤٣﴾ قيل لها ادخلي الصرح فلما راته حسبته
لجة وكشفت عن ساقيها قال انه صرح ممرد من قوارير قالت
رب اني ظلمت نفسي واسلمت مع سليمن لله رب العلمين ﴿٤٤﴾

منزل ٥

उसको तबाह व बरबाद कर देते हैं, और उसके रहने वालों में जो इज़्ज़तदार हैं, उनको ज़लील किया करते हैं, और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे। **(34)** और मैं उन लागों के पास कुछ हदिया भेजती हूँ फिर देखूँगी कि वे ऐलची (वहाँ से) क्या (जवाब) लेकर आते हैं। **(35)** सो जब वह ऐलची सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) के पास पहुँचा (और तोहफ़े पेश किए तो सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, क्या तुम लोग (यानी बिलक़ीस वग़ैरह) माल से मेरी इम्दाद करते हो, सो (समझ लो कि) अल्लाह ने जो कुछ मुझको दे रखा है वह उससे कहीं बेहतर हैं जो तुमको दे रखा है।[1] हाँ तुम ही अपने इस हदिए पर इतराते होगे। (सो ये तोहफ़े हम न लेंगे) **(36)** तुम (इनको लेकर) उन लोगों के पास लौट जाओ, सो हम उनपर ऐसी फ़ौजें भेजते हैं कि उन लोगों से उनका ज़रा मुक़ाबला न हो सकेगा और हम उनको वहाँ से ज़लील करके निकाल देंगे, और वे (हमेशा के लिए) मातहत हो जाएँगे। **(37)** सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम को वह्य से या किसी परिन्दे वग़ैरह के ज़रिये से उसका चलना मालूम हुआ तो उन्होंने) फ़रमाया कि ऐ दरबारियो! तुममें कोई ऐसा है जो उस (बिलक़ीस) का तख़्त इससे पहले कि वे लोग मेरे पास ताबेदार होकर आएँ, हाज़िर कर दे। **(38)** एक ताक़तवर हैकल जिन्न ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि मैं उसको आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दूँगा, इससे पहले कि आप अपने इजलास से उठें, और (अगरचे वह बहुत भारी है मगर) मैं उस (के लाने) पर ताक़त रखता हूँ (और अगरचे वह बड़ा क़ीमती जवाहरात से जड़ा हुआ है, मगर) मैं अमानतदार (भी) हूँ। **(39)** जिसके पास किताब का इल्म था[2] उस (इल्म वाले) ने (उस जिन्न से) कहा कि मैं उसको तेरे सामने आँख झपकने से पहले लाकर खड़ा कर सकता हूँ।[3] पस जब सुलैमान (अ़लैहि.) ने उसको सामने रखा देखा तो (ख़ुश होकर शुक्र के तौर पर) कहने लगे कि यह भी मेरे रब का एक फ़ज़्ल है, ताकि वह मेरी आज़माइश करे कि मैं शुक्र करता हूँ या (ख़ुदा न करे) नाशुक्री करता हूँ। और (ज़ाहिर है कि) जो शख़्स शुक्र करता है वह अपने ही नफ़े के लिए शुक्र करता है, (अल्लाह तआ़ला का कोई नफ़ा नहीं) और (इसी तरह) जो नाशुक्री करता है, मेरा रब ग़नी है और करीम है। **(40)** (उसके बाद सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बिलक़ीस की अ़क़्ल आज़माने के लिए) हुक्म दिया कि उसके लिए उसके तख़्त की सूरत बदल दो, हम देखें कि उसको इसका पता लगता है या उसकी गिनती उन्हीं में है जिनको (ऐसी बातों का) पता नहीं लगता। **(41)** सो जब (बिलक़ीस) आई तो उससे (तख़्त दिखाकर) कहा गया कि क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है, वह कहने लगी कि हाँ है तो ऐसा ही, और (यह भी कहा कि) हम लोगों को तो इस वाक़िए से पहले ही (आपकी नुबुव्वत की) तहक़ीक़ हो चुकी है, और हम (उसी वक़्त से दिल से) मानने वाले हो चुके हैं। **(42)** और उसको (ईमान लाने से) अल्लाह के अ़लावा दूसरों की इबादत ने (जिसकी उसको आ़दत थी) रोक रखा था, (और वह आ़दत इसलिए पड़ गई थी कि) वह काफ़िर क़ौम में की थी।[4] **(43)** (बिलक़ीस से) कहा गया कि इस महल में दाख़िल हो। (वह चलीं, रास्ते में हौज़ आया) तो जब उसका आँगन देखा तो उसको पानी (से भरा हुआ) समझा, और (उसके अन्दर घुसने के लिए) अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं। (उस वक़्त) सुलैमान ने फ़रमाया कि यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है,[5] (उस वक़्त बिलक़ीस)[6] कहने लगीं कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने (अब तक) अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया था, (कि शिर्क में मुब्तला थी) और मैं अब सुलैमान के साथ (यानी उनके तरीक़े पर) होकर रब्बुल आ़लमीन पर ईमान लाई। **(44)** ❖

(पृष्ठ 684 का शेष) ज़रूरतों के लिए जैसे लश्करों के सरदार ऐसा किया करते हैं, इस तौर पर ऐसा किया हो।

2. ''मैं उसको ग़ैर-हाज़िरी पर सख़्त सज़ा दूँगा'' से मालूम हुआ कि जानवरों को तालीम के लिए सधाना और तरबियत देना जायज़ है, और तकलीफ़ दूर करने के लिए क़त्ल करना भी जायज़ है। जहाँ अदब सिखाना और तकलीफ़ दूर करना मक़सद हो वरना नहीं।

3. हुदहुद के इस क़ौल का मतलब यह है कि मेरी ग़ैर-हाज़िरी नाफ़रमानी के तौर पर न थी, बल्कि एक तरीक़े से हुक्म का पालन करने ही में दाख़िल थी कि आप ही की ख़िदमत में लगा हुआ था। 'सबा' एक शख़्स का नाम था, फिर उसकी औलाद को कहने लगे। ये लोग यमन में आबाद थे, फिर उनके शहर को भी सबा कहने लगे **(पृष्ठ 684 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 686 की तफ़सीर पृष्ठ 688, 690 पर)**

व ल-क़द् अरसल्ना इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् अनिअ्बुदुल्ला-ह फ़-इज़ा हुम् फ़रीक़ानि यख़्तसिमून (45) क़ा-ल या क़ौमि लि-म तस्तअ्जिलू-न बिस्सय्यि-अति क़ब्लल्-ह-स-नति लौ ला तस्तग़्फ़िरूनल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (46) क़ालुत्तय्यर्ना बि-क व बि-मम्-म-अ-क, क़ा-ल ताइरुकुम् अिन्दल्लाहि बल् अन्तुम् क़ौमुन् तुफ़्तनून (47) व का-न फ़िल्मदी-नति तिस्अतु रह्तिंय्-युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून (48) क़ालू तक़ा-समू बिल्लाहि लनुबय्यितन्नहू व अह्लहू सुम्-म ल-नक़ूलन्-न लि-वलिय्यिही मा शहिद्ना मह्लि-क अह्लिही व इन्ना ल-सादिक़ून (49) व म-करू मक्रंव्-व मकर्ना मक्रंव्-व हुम् ला यश्अुरून (50) फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतु मक्रिहिम् अन्ना दम्मर्नाहुम् व क़ौमहुम् अज्मअ़ीन (51) फ़-तिल्-क बुयूतुहुम् ख़ावि-यतम् बिमा ज़-लमू, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्-यअ्लमून (52) व अन्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून (53) व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल् फ़ाहि-श-त व अन्तुम् तुब्सिरून (54) अ-इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्-रिजा-ल शह्व-तम् मिन् दूनिन्निसा-इ, बल् अन्तुम् क़ौमुन् तज्हलून (55) फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजू आ-ल लूतिम्-मिन् क़र्-यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्-य-त-तह्हरून (56) फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्र-अ-तहू क़द्दर्नाहा मिनल्-ग़ाबिरीन (57) व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-तरन् फ़सा-अ म-तरुल्-मुन्ज़रीन (58) ❖

क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अ़ला इबादिहिल्लज़ीनस्-तफ़ा, आल्लाहु ख़ैरुन् अम्मा युश्रिकून (59)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ
فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يَا قَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ ۖ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَ
بِمَنْ مَعَكَ ۚ قَالَ طَائِرُكُمْ عِنْدَ اللَّهِ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾ وَ
كَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾
قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا
مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٤٩﴾ وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَّا دَمَّرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾ وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾ وَلُوطًا إِذْ قَالَ
لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾ أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ
يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٥٧﴾
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۗ آللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

और हमने (क़ौमे) समूद के पास उनके (बिरादरी के) भाई सालेह (अ़लैहिस्सलाम) को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, यह (पैग़ाम देकर) कि तुम अल्लाह की इबादत करो, सो अचानक उनमें दो फ़रीक़ हो गए जो (दीन के बारे में) आपस में झगड़ने लगे।[1] **(45)** सालेह (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि ऐ भाइयो! तुम नेक काम (यानी तौबा व ईमान) से पहले अ़ज़ाब को क्यों जल्दी माँगते हो, तुम लोग अल्लाह के सामने (कुफ़्र से) माफ़ी क्यों नहीं चाहते, जिससे उम्मीद हो कि तुमपर रहम किया जाए (यानी अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहो)। **(46)** वे लोग कहने लगे कि हम तो तुमको और तुम्हारे साथ वालों को मन्हूस समझते हैं। सालेह (अ़लैहिस्सलाम) ने (जवाब में) फ़रमाया कि तुम्हारी (इस) नहूसत का सबब अल्लाह के इल्म में है,[2] बल्कि तुम लोग वे हो कि (कुफ़्र की बदौलत) अ़ज़ाब में मुब्तला होगे। **(47)** और (कुफ़्र के सरग़ना) उस बस्ती में नौ शख़्स थे जो सरज़मीन में (यानी बस्ती से बाहर तक भी) फ़साद किया करते थे, और (ज़रा भी) सुधार न करते थे। **(48)** उन्होंने कहा कि सब आपस में (इसपर) अल्लाह की क़सम खाओ कि हम रात के वक़्त सालेह और उनके मुताल्लिक़ीन (ईमान वालों को) जा मारेंगे, फिर (तहक़ीक़ के वक़्त) हम उनके वारिस से कह देंगे कि हम उनके मुताल्लिक़ीन और ख़ुद उनके मारे जाने में मौजूद (भी) न थे, और हम बिलकुल सच्चे हैं। **(49)** और (यह मश्विरा करके) उन्होंने एक ख़ुफ़िया तदबीर की, और एक ख़ुफ़िया तदबीर हमने की, और (उस तदबीर की) उनको ख़बर भी न हुई।[3] **(50)** सो देखिए उनकी शरारत का क्या अन्जाम हुआ कि हमने उनको (ज़िक्र हुए तरीक़े पर) और (फिर) उनकी क़ौम को सबको (आसमानी अ़ज़ाब से) ग़ारत कर दिया। **(51)** सो ये उनके घर हैं जो वीरान पड़े हैं,[4] उनके कुफ़्र के सबब से बिला शुब्हा इस (वाक़िए) में बड़ी इबरत है समझदारों के लिए। **(52)** और हमने ईमान और तक़्वे वालों को नजात दी। **(53)** और हमने लूत (अ़लैहिस्सलाम) को भेजा था जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि क्या तुम बेहयाई का काम करते हो, हालाँकि समझदार हो। **(54)** क्या तुम मर्दों के साथ शहवत पूरी करते हो औरतों को छोड़कर, (और इसके बुरा होने में कोई शुब्हा नहीं) बल्कि (इस बारे में) तुम (बिलकुल) जहालत कर रहे हो। **(55)** सो (इस तक़रीर का) उनकी क़ौम से कोई उचित जवाब न बन पड़ा सिवाय इसके कि आपस में कहने लगे कि लूत के लोगों को तुम अपनी बस्ती से निकाल दो, (क्योंकि) ये लोग बड़े पाक व साफ़ बनते हैं। **(56)** सो हमने (उस क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल किया और) लूत (अ़लैहिस्सलाम) को और उनके मुताल्लिक़ीन को बचा लिया, सिवाय उनकी बीवी के, उसको हमने उन्हीं लोगों में तजवीज़ कर रखा था जो अ़ज़ाब में रह गए थे। **(57)** और हमने उनपर एक नई तरह की बारिश बरसाई, सो उन लोगों की क्या बुरी बारिश थी जो डराए गए थे।[5] **(58)** ❖

आप (तौहीद का बयान करने के लिए ख़ुतबे के तौर पर) कहिए कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए लायक़ हैं और उसके उन बन्दों पर सलाम (नाज़िल) हो जिनको उसने मुन्तख़ब फ़रमाया ''यानी चुन लिया'' है। क्या अल्लाह बेहतर है या वे चीज़ें जिनको वे शरीक ठहराते हैं। **(59)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) जो 'सुनआ़' से तीन दिन के फ़ासले पर है। बिलक़ीस उसी ख़ानदान में से है और 'यअ़रब बिन क़हतान' की औलाद में होने की वजह से उनकी ज़बान अ़रबी थी।

4. मालूम होता है कि हुदहुद सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के अ़लावा दूसरों का कलाम भी समझता था, सो यह भी हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का मोजिज़ा होगा।

5. ''बा वक़्अ़त'' इसलिए कहा कि हाकिमाना मज़मून है, जिसमें बावजूद बहुत ज़्यादा मुख़्तसर होने के आला दर्जे की बलाग़त है।

(तफ़सीर पृष्ठ 686) **1.** क्योंकि तुम्हारे पास सिर्फ़ दुनिया है और मेरे पास दीन भी है और दुनिया भी तुमसे ज़्यादा, सो मैं तो इन चीज़ों का लालची नहीं हूँ।

2. ज़्यादा सही यह है कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम मुराद हैं।

3. क्योंकि मैं मोजिज़े की कुव्वत से लाऊँगा। चुनाँचे आपने हक़ तआ़ला से दुआ़ की वैसे ही या किसी अल्लाह के नाम के ज़रिये से और तख़्त सामने आ मौजूद हुआ। **(पृष्ठ 686 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 688 की तफ़सीर पृष्ठ 690, 692 पर)**

बीसवाँ पारः अम्मन् ख़-ल-क़

सूरतुन्-नम्लि (आयत 60 से 93)

अम्मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्ज़-ल लकुम् मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अम्बत्ना बिही हदाइ-क़ ज़ा-त बह्जतिन् मा का-न लकुम् अन् तुम्बितू श-ज-रहा अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, बल् हुम् क़ौमुंय्-यअ़्दिलून **(60)** अम्मन् ज-अ़लल्-अर्-ज़ क़रारंव्-व ज-अ़-ल ख़िला-लहा अन्हारंव्-व ज-अ़-ल लहा रवासि-य व ज-अ़-ल बैनल्-बहरैनि हाजिज़न्, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमून **(61)** अम्-मंय्युजीबुल्-मुज़्तर्-र इज़ा दअ़ाहु व यक्शिफ़ुस्सू-अ व यज्-अ़लुकुम् ख़ु-लफ़ाअल्-अर्ज़ि, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, क़लीलम् मा तज़क्करून **(62)** अम्-मंय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बहिर व मंय्युर्सिलुर्-रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, तअ़ालल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून **(63)** अम्-मंय्यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू व मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि, अ-इलाहुम्

امن خلق ٢٠ ٣٤٥ النمل ٢٧

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا
ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ
قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَاۤ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ
الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾
اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ
خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾
اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِىْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ
بُشْرًا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ
مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادّٰرَكَ
عِلْمُهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِىْ شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ
مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَاۤ اَئِنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ اِنْ

منزل ٥

मअ़ल्लाहि, क़ुल् हातू बुर्हा-नकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(64)** क़ुल् ला यअ़्लमु मन् फ़िस्-समावाति वल्अर्ज़िल्ग़ै-ब इल्लल्लाहु, व मा यश्अ़ुरू-न अय्या-न युब्अ़सून **(65)** बलिद्दार-क अ़िल्मुहुम् फ़िल्-आख़िरति, बल् हुम् फ़ी शक्किम् मिन्हा, बल् हुम् मिन्हा अ़मून **(66)** ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू अ-इज़ा कुन्ना तुराबंव्-व आबाउना अ-इन्ना
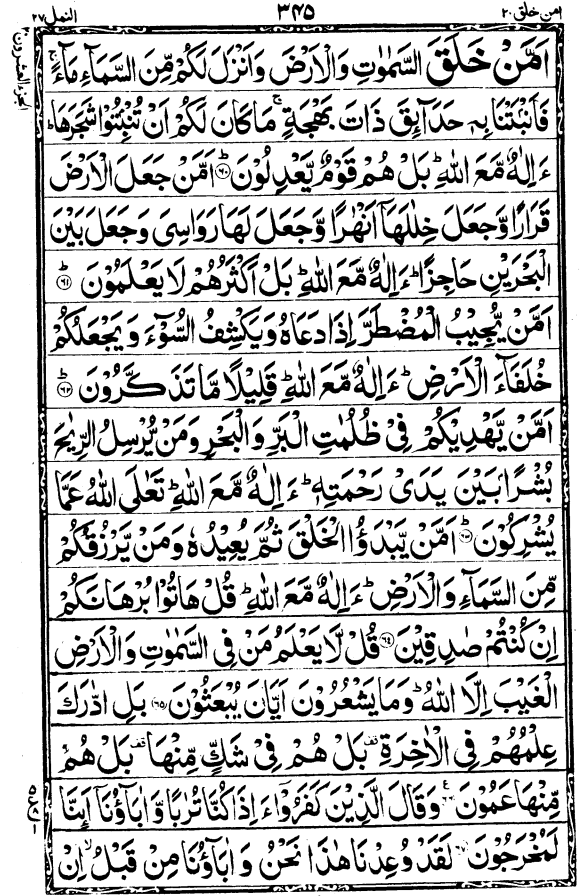
बीसवाँ पारः अम्मन् ख़-ल-क़

सूरः नम्ल (आयत 60 से 93)

या वह ज़ात (बेहतर है) जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया, और उसने आसमान से तुम्हारे लिए पानी बरसाया। फिर उस (पानी) के ज़रिये हमने रौनक़दार बाग़ उगाए (वरना) तुमसे तो मुम्किन न था कि तुम उन (बाग़ों) के दरख़्तों को उगा सको। (यह सुनकर बतलाओ कि) क्या अल्लाह तआला के साथ (इबादत में शरीक होने के लायक़) कोई और माबूद है? (मगर मुश्रिक लोग फिर भी नहीं मानते) बल्कि ये ऐसे लोग हैं कि (दूसरों को) ख़ुदा के बराबर ठहराते हैं।[1] **(60)** या वह ज़ात जिसने ज़मीन को (मख़्लूक़ के) ठहरने की जगह बनाया और उसके दरमियान नहरें बनाईं और उस (ज़मीन) के ठहराने के लिए पहाड़ बनाए, और दो दरियाओं के दरमियान एक हद्दे-फ़ासिल "यानी एक आड़" बनाई। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (मगर मुश्रिक लोग नहीं मानते) बल्कि उनमें ज़्यादा तो (अच्छी तरह) समझते भी नहीं। **(61)** या वह ज़ात जो बेक़रार आदमी की सुनता है, जब वह उसको पुकारता है, और (उसकी) मुसीबत को दूर कर देता है, और तुमको ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाता है। (यह सुनकर अब बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (मगर) तुम लोग बहुत ही कम याद रखते हो। **(62)** (अच्छा फिर और कमालात सुनकर बतलाओ कि ये बुत बेहतर हैं) या वह ज़ात जो तुमको ख़ुश्की और दरिया की अंधेरियों में रास्ता सुझाता है, और जो कि हवाओं को बारिश से पहले भेजता है जो (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिलों को) ख़ुश कर देती हैं। (यह सुनकर बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? (हरगिज़ नहीं, बल्कि) अल्लाह पाक,[2] उन लोगों के शिर्क से बरतर है। **(63)** या वह ज़ात जो मख़्लूक़ात को अव्वल बार पैदा करता है, (यह तो मानी हुई बात है) फिर उसको दोबारा ज़िन्दा करेगा और जो कि आसमान (से पानी बरसाकर) और ज़मीन से (पैड़-पौधे वग़ैरह निकालकर) तुमको रिज़्क़ देता है। (यह सुनकर अब बतलाओ कि) क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? आप कहिए कि (अच्छा) तुम (उनके इबादत के मुस्तहिक़ होने पर) अपनी दलील पेश करो अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो। **(64)** आप कह दीजिए कि जितनी मख़्लूक़ात आसमानों और ज़मीन (यानी दुनिया में) मौजूद हैं, (उनमें से) कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता, सिवाय अल्लाह के, और (इसी वजह से) उन (मख़्लूक़ात) को यह ख़बर नहीं कि वे कब दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे।[3] **(65)** बल्कि आख़िरत के बारे में (ख़ुद) उनका इल्म (उसके ज़ाहिर होने के बारे में) नहीं है, बल्कि ये लोग उससे शक में हैं, बल्कि यह उससे अन्धे बने हुए हैं।[4] **(66)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. उसके बाद सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने यह चाहा कि मोजिज़े और नुबुव्वत की शान दिखलाने के अ़लावा उसको बादशाहत की ज़ाहिरी शान भी दिखला दी जाए, ताकि अपने को दुनिया के एतिबार से भी बड़ा न समझे। इसलिए एक शीश-महल बनवाकर उसके आँगन में हौज़ बनवाया, और उसमें पानी और मछलियाँ भरकर उसको शीशे से पाट दिया। वह शीशा ऐसा साफ़ और चमकदार था कि सरसरी निगाह में नज़र न आता था। और वह हौज़ ऐसी जगह पर था कि उस महल में जाने वाले को हर हाल में उसपर से पार उतरना पड़े।

5. और यह हौज़ भी शीशे से पटा हुआ है, दामन उठाने की ज़रूरत नहीं।

6. बिलक़ीस को मालूम हो गया कि यहाँ दुनियावी चीज़ें और अ़जायबात भी ऐसे हैं जो आज तक मैंने आँख से नहीं देखे, तो उनके दिल में हर तरह सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का सम्मान पैदा हुआ और एकदम कहने लगीं, (आगे देखो तर्जुमा)

(तफ़सीर पृष्ठ 688) 1. यानी एक फ़िर्क़ा तो ईमान ले आया और एक न लाया। और उनमें जो झगड़ा और कलाम हुआ, उसमें से बाज़ बातों का सूरः आराफ़ में ज़िक्र हुआ है, **(पृष्ठ 688 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 690 की तफ़सीर पृष्ठ 692, 694 पर)**

ल-मुख़्रजून (67) ल-क़द् वुअिद्ना हाज़ा नह्नु व आबाउना मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (68) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुज्रिमीन (69) व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् व ला तकुन् फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून (70) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (71) क़ुल् अ़सा अंय्यकू-न रदि-फ़ लकुम् बअ़्ज़ुल्लज़ी तस्तअ़्जिलून (72) व इन्-न रब्ब-क लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून (73) व इन्-न रब्ब-क ल-यअ़्लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ़्लिनून (74) व मा मिन् ग़ाइ-बतिन् फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन (75) इन्-न हाज़ल्-क़ुर्आ-न यक़ुस्सु अ़ला बनी इस्राई-ल अक्स-रल्लज़ी हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (76) व इन्नहू ल-हुदंव्-व रह्मतुल् लिल्-मुअ्मिनीन (77) इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम बिहुक्मिही व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-अ़लीम (78) फ़-तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्न-क अ़लल्-हक़्क़िल्-मुबीन (79) इन्न-क ला तुस्मिअ़ुल्मौता व ला तुस्मिअ़ुस्-सुम्मद्दुआ़-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (80) व मा अन्-त बिहादिल्-अ़ुम्यि अ़न् ज़लालतिहिम्, इन् तुस्मिअ़ु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून (81) व इज़ा व-क़अ़ल्-क़ौलु अ़लैहिम् अख़्रज्ना लहुम् दाब्बतम् मिनल्अर्ज़ि तुकल्लिमुहुम् अन्नन्ना-स कानू बिआयातिना ला यूक़िनून (82) ❖

व यौ-म नह्शुरु मिन् कुल्लि उम्मतिन् फ़ौजम् मिम्मंय्युकज़्ज़िबु बिआयातिना फ़हुम्

هٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝ قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَٱنظُرُوا۟
كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُجْرِمِينَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن
فِى ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا ٱلْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَٰدِقِينَ ۝ قُلْ عَسَىٰٓ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ ٱلَّذِى
تَسْتَعْجِلُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى ٱلنَّاسِ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ
صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى ٱلسَّمَآءِ
وَٱلْأَرْضِ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ۝ إِنَّ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانَ يَقُصُّ عَلَىٰ
بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ أَكْثَرَ ٱلَّذِى هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَإِنَّهُۥ
لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِى بَيْنَهُم
بِحُكْمِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْعَلِيمُ ۝ فَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى
ٱلْحَقِّ ٱلْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ ٱلْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ ٱلصُّمَّ ٱلدُّعَآءَ
إِذَا وَلَّوْا۟ مُدْبِرِينَ ۝ وَمَآ أَنتَ بِهَٰدِى ٱلْعُمْىِ عَن ضَلَٰلَتِهِمْ
إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِـَٔايَٰتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَإِذَا وَقَعَ
ٱلْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ ٱلْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ
ٱلنَّاسَ كَانُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ

और ये काफ़िर यूँ कहते हैं कि क्या हम लोग जब (मरकर) मिट्टी हो गए और (इसी तरह) हमारे बड़े भी, तो क्या (फिर) हम (ज़िन्दा करके क़ब्रों से) निकाले जाएँगे। (67) इसका तो हमसे और हमारे बड़ों से (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से) पहले से वायदा होता चला आया है, ये बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़ल होती चली आई हैं। (68) आप कह दीजिए कि तुम ज़मीन में चल-फिरकर देखो कि मुजरिम लोगों का अन्जाम क्या हुआ। (69) और (अगर वाज़ेह नसीहतों के बावजूद फिर भी मुख़ालफ़त पर कमर कसे हुए हैं तो) आप उनपर ग़म न कीजिए और जो कुछ ये शरारतें कर रहे हैं उनसे तंग न होइए।[1] (70) और ये लोग (निडर होकर) यूँ कहते हैं कि यह (अ़ज़ाब व क़हर का) वायदा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो (तो बतलाओ)। (71) आप कह दीजिए कि अ़जब नहीं कि जिस अ़ज़ाब की तुम जल्दी मचा रहे हो उसमें से कुछ तुम्हारे पास ही आ लगा हो। (72) और (अब तक जो देर हो रही है उसकी वजह यह है कि) आपका रब लोगों पर (अपना) बड़ा फ़ज़्ल रखता है,[2] और लेकिन अक्सर आदमी (इस बात पर) शुक्र नहीं करते। (73) और आपके रब को सब ख़बर है जो कुछ उनके दिलों में छुपा है और जिसको वे ऐलानिया करते हैं। (74) और आसमान और ज़मीन में ऐसी कोई छुपी हुई चीज़ नहीं जो लौहे महफ़ूज़ में न हो।[3] (75) बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर अक्सर उन बातों (की हक़ीक़त) को ज़ाहिर करता है जिसमें वे इख़्तिलाफ़ करते हैं। (76) और यक़ीनन वह ईमान वालों के लिए (ख़ास) हिदायत और (ख़ास) रहमत है। (77) यक़ीनन आपका परवर्दिगार उनके दरमियान अपने हुक्म से (वह अ़मली) फ़ैसला क़ियामत के दिन करेगा। और वह ज़बरदस्त (और) इल्म वाला है। (78) सो (जब वह ऐसा है तो) आप अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखिए। यक़ीनन आप बिलकुल हक़ (तरीक़े) पर हैं। (79) आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकते हैं, (ख़ासकर) जब वे पीठ फेरकर चल दें। (80) और न आप अन्धों को उनकी गुमराही से (बचाकर) रास्ता दिखलाने वाले हैं, आप तो सिर्फ़ उन्हीं को सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं (और) फिर वे मानते (भी) हैं।[4] (81) और जब (क़ियामत का) वायदा उनपर पूरा होने को होगा तो हम उनके लिए ज़मीन से एक (अ़जीब) जानवर निकालेंगे कि वह उनसे बातें करेगा, कि (काफ़िर) लोग हमारी

(पिछले पृष्ठ का शेष) और उनमें से बाज़ आगे ज़िक्र हो रही हैं।

2. यानी तुम्हारे कुफ़्रिया आमाल अल्लाह को मालूम हैं। ये बदियाँ उन्हीं आमाल पर मुरत्तब हैं।

3. वह यह कि एक पहाड़ से एक पत्थर उनपर लुढ़क आया और वे सब वहीं पर हलाक हो गए।

4. जो कि मक्का वालों को मुल्क शाम के सफ़र में मिलते हैं।

5. सूरः के शुरू से यहाँ तक रिसालत की बहस थी, आगे तौहीद की बहस है जिसको एक बहुत ही आ़लीशान और मुख़्तसर ख़ुतबे से शुरू किया है।

(तफ़सीर पृष्ठ 690) 1. आसमान में सूरज चाँद सितारे, ज़मीन में नदियाँ नाले और बड़े-बड़े दरिया, इनसान और तरह-तरह के जानवर, चरिन्द-परिन्द, बाग़ खेती और उसके लिए पानी, यह सब कुछ जो अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया है वह सब की आँखों के सामने है। और यह भी सब की आँखों के सामने है कि अल्लाह तआ़ला के अ़लावा किसी को भी न आसमान पैदा करने की क़ुदरत है न ज़मीन। बारिश अगर मुक़र्ररा वक़्त पर न बरसे तो सारी दुनिया के बादशाह अमीर व ग़रीब सब जमा हों तो भी एक क़तरा बरसाने की किसी में क़ुदरत नहीं। इसी तरह मुर्दा इनसान व हैवानात में से किसी को अल्लाह के अ़लावा न कोई जिला सकता है और न बीमार को तन्दुरुस्त कर सकता है। अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर न दुआ़ में असर है, न दवा में। क्या इन सब बातों के होते हुए कोई कह सकता है कि ख़ुदा के अ़लावा कोई और माबूद है? और क्या अपने आपको और सब चीज़ों को अपनी आँखों के सामने पैदा होता हुआ देखकर कोई शक कर सकता है कि क़ियामत के दिन ख़ुदा मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं है, बल्कि वह ज़रूर क़ादिर है। (फ़तहुल बारी, इब्ने जरीर, ख़ाज़िन)

2. दोबारा ज़िन्दगी का सुबूतः बिना दलील शिर्क करना किस क़द्र वबाल की बात है, और यह कि आसमान व ज़मीन से जिस क़द्र चीज़ें पैदा होती हैं अगरचे बार-बार पैदा होने की वजह से लोगों के आगे यह एक मामूली बात हो गई है, मगर हक़ीक़त में हर एक बात अ़क़्ल के ख़िलाफ़ है। ख़ुद इनसान की पैदाइश 'मनी' (यानी वीर्य) के एक क़तरे से है, यह भला कौन-सी अ़क़्ल की बात है। फिर क़ियामत के दिन एक-एक ज़र्रा जमा करके जिस्म तैयार करे, (पृष्ठ 690 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 692 की तफ़सीर पृष्ठ 694, 696 पर)

यू-ज़अून (83) हत्ता इज़ा जाऊ क़ा-ल अ-कज़्ज़ब्तुम् बिआयाती व लम् तुहीतू बिहा अिल्मन् अम्-मा ज़ा कुन्तुम् तअ्मलून (84) व व-क़अल्-क़ौलु अ़लैहिम् बिमा ज़-लमू फ़हुम् ला यन्तिक़ून (85) अलम् यरौ अन्ना ज-अ़ल्नल्लै-ल लियस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (86) व यौ-म युन्फ़खु फ़िस्सूरि फ़-फ़ज़ि-अ़ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु, व कुल्लुन् अतौहु दाख़िरीन (87) व तरल् -जिबा-ल तह्सबुहा जामि-दतंव्-व हि-य तमुर्रु मर्रस्सहाबि, सुन्-अ़ल्लाहिल्लज़ी अत्क़-न कुल्-ल शैइन्, इन्नहू ख़बीरुम् बिमा तफ़्अ़लून (88) मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा व हुम् मिन् फ़-ज़अिंय्-यौमइज़िन् आमिनून (89) व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़कुब्बत् वुजूहुहुम् फ़िन्नारि, हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्मलून (90) इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्बु-द रब्-ब हाज़िहिल्-बल्दतिल्लज़ी हर्र-महा व लहू कुल्लु शैइंव्-व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्- मुस्लिमीन (91) व अन् अत्लुवल्-क़ुर्आ-न फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़क़ुल् इन्नमा अ-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (92) व क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि सयुरीकुम् आयातिही फ़-तअ्रिफ़ूनहा, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (93) ❖

امن خلق ٢٠ ٣٤٧ النمل ٢٧

فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْ
قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾
اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِى
الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ
شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً
وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِىْۤ اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ؕ
اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ
وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ
وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾
اِنَّمَاۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ
كُلُّ شَىْءٍ ؗ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا
الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ
فَقُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ
فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع

منزل

(यानी अल्लाह तआ़ला की) आयतों पर यक़ीन न लाते थे। **(82)** ❖

और जिस दिन (क़ब्रों से ज़िन्दा करने के बाद) हम हर उम्मत से एक गिरोह उन लोगों का (हिसाब के लिए) जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे, फिर उनको रोका जाएगा। **(83)** यहाँ तक कि जब (ठहरने की जगह में) हाज़िर हो जाएँगे तो अल्लाह इरशाद फ़रमाएगा कि क्या तुमने मेरी आयतों को झुठलाया था, हालाँकि तुम उनको अपने इल्मी घेरे में भी नहीं लाए, बल्कि और भी क्या-क्या काम करते रहे।[1] **(84)** और (अब वह वक़्त है कि) उनपर (अ़ज़ाब का) वायदा पूरा हो गया, इस वजह से कि (दुनिया में) उन्होंने (बड़ी-बड़ी) ज़्यादतियाँ की थीं, सो वे लोग बात भी न कर सकेंगे। **(85)** क्या उन्होंने इसपर नज़र नहीं की कि हमने रात बनाई, ताकि लोग उसमें आराम करें, (और यह आराम मौत की तरह है) और दिन बनाया जिसमें देखें, (और यह मौत के बाद ज़िन्दा होने जैसा है, पस) बिला शुब्हा इसमें बड़ी-बड़ी दलीलें हैं, उन (ही) लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।[2] **(86)** और जिस दिन सूर में फूँक मारी जाएगी, सो जितने आसमान और ज़मीन में हैं सब घबरा जाएँगे मगर जिसको ख़ुदा चाहे, (वह उस घबराहट से और मौत से महफ़ूज़ रहेगा) और सबके सब उसी के सामने दबे-झुके रहेंगे। **(87)** और तू (जिन) पहाड़ों को देख रहा है और उनको ख़्याल कर रहा है कि ये (अपनी जगह से) हरकत न करेंगे, हालाँकि वे बादलों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे। यह ख़ुदा का काम होगा। जिसने हर चीज़ को (मुनासिब अन्दाज़ पर) मज़बूत बना रखा है। यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है। **(88)** जो शख़्स नेकी (यानी ईमान) लाएगा सो उस शख़्स को उस (नेकी के अज्र) से बेहतर (अज्र) मिलेगा, और वे लोग बड़ी घबराहट से उस दिन अमन में रहेंगे। **(89)** और जो शख़्स बुराई (यानी कुफ़्र व शिर्क) लाएगा तो वे लोग औंधे मुँह आग में डाल दिए जाएँगे, (और उनसे कहा जाएगा कि) तुमको उन्हीं आ़माल की सज़ा दी जा रही है जो तुम (दुनिया में) किया करते थे।[3] **(90)** मुझको तो यही हुक्म मिला है कि मैं इस शहर (यानी मक्का) के (हक़ीक़ी) मालिक की इबादत किया करूँ जिसने इस (शहर) को एहतिराम वाला बनाया है।[4] और (उसकी इबादत क्यों न की जाए जबकि वह ऐसा है कि) सब चीज़ें उसी की (मिल्क) हैं। और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि मैं फ़रमाँबर्दार रहूँ। **(91)** और (मुझको) यह (भी हुक्म मिला है) कि मैं क़ुरआने करीम पढ़-पढ़कर सुनाऊँ, सो (मेरी तब्लीग़ के बाद) जो शख़्स राह पर आएगा, सो वह अपने ही फ़ायदे के लिए राह पर आएगा।[5] और जो शख़्स गुमराह रहेगा तो आप कह दीजिए (कि मेरा कोई नुक़सान नहीं, क्योंकि) मैं तो सिर्फ़ डराने वाले पैग़म्बरों में से हूँ।[6] **(92)** और आप (यह भी) कह दीजिए कि सब ख़ूबियाँ ख़ालिस अल्लाह ही के लिए साबित हैं, वह तुमको जल्द ही अपनी निशानियाँ (यानी क़ियामत के वाक़िआत) दिखला देगा। सो तुम (उनके ज़ाहिर होने के वक़्त) उनको पहचानोगे, और आपका रब उन कामों से बेख़बर नहीं जो तुम सब लोग कर रहे हो। **(93)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) फिर उसमें वही रूह डाल दे जो जिस्म से निकली थी तो यह क्या ताज्जुब की बात है? (इब्ने जरीर, फ़त्हुल बारी)।

3. यानी अल्लाह तआ़ला को तो बिना बतलाए ही सब कुछ मालूम है और किसी को बिना बतलाए कुछ भी मालूम नहीं। मगर देखा जाता है कि बहुत-सी बातें जिनका पहले से इल्म नहीं होता, ज़ाहिर होती हैं। इससे मालूम हुआ कि इल्म का न होना ज़ाहिर न होने को लाज़िम नहीं। बल्कि बात यह है कि अल्लाह तआ़ला को बाज़ उलूम का ग़ैब में रखना मन्ज़ूर है। सो क़ियामत के आने का मुतैयन करना भी उन्हीं बातों में से है। इसलिए मख़्लूक़ को इसका इल्म नहीं दिया गया। मगर इससे उसका न आना कैसे लाज़िम आ गया।

4. यानी जैसे अन्धे को रास्ता नज़र नहीं आता, इसलिए मक़सूद तक पहुँचना मुहाल है। इसी तरह आख़िरत की तस्दीक़ करने का जो रास्ता है यानी सही दलीलें ये लोग अपनी दुश्मनी और बैर की वजह से उनमें ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते, इसलिए वे दलीलें उनको नज़र नहीं आतीं जिससे मतलूब तक पहुँच जाने की उम्मीद होती। पस यह शक से भी बढ़कर है, क्योंकि शक वाला कभी-कभी दलीलों में ग़ौर-फ़िक्र करके शक को दूर कर लेता है और ये ग़ौर व फ़िक्र भी नहीं करते।

(तफ़सीर पृष्ठ 692) **1.** कि और नबियों के साथ भी यही मामला हुआ है।

2. इस रहमते आ़म्मा की वजह से किसी क़द्र मोहलत दे रखी है।

3. जब छुपी हुई चीज़ें जिनको कोई नहीं जानता, **(पृष्ठ 692 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 694 की तफ़सीर पृष्ठ 696, 698 पर)**

28 सूरतुल् क़-ससि 49

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6011 अक्षर, 1454 शब्द 88 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ता-सीम्-मीम् **(1)** तिल्-क आयातुल् किताबिल्-मुबीन **(2)** नत्लू अ़लै-क मिन् न-बइ मूसा व फ़िर्औ़-न बिल्हक़्क़ि लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून **(3)** इन्-न फ़िर्औ़-न अ़ला फ़िल्अर्ज़ि व ज-अ-ल अह़्लहा शि-यअ़ंय्- यस्तज़्अिफ़ु ताइ-फ़तम् मिन्हुम् युज़ब्बिहु अब्ना-अहुम् व यस्तह़्यी निसा-अहुम्, इन्नहू का-न मिनल्-मुफ़्सिदीन **(4)** व नुरीदु अन्-नमुन्-न अ़लल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू फ़िल्अर्ज़ि व नज्अ़-लहुम् अ-इम्मतंव्-व नज्अ़-लहुमुल्-वारिसीन **(5)** व नुमक्कि-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व नुरि-य फ़िर्औ़-न व हामा-न व जुनू-दहुमा मिन्हुम् मा कानू यह़्ज़रून **(6)** व औहैना इला उम्मि मूसा अन् अर्ज़िअ़ीहि फ़-इज़ा ख़िफ़्ति अ़लैहि फ़-अल्क़ीहि फ़िल्यम्मि व ला तख़ाफ़ी व ला तह़्ज़नी इन्ना राद्दूहु इलैकि व जाअ़िलूहु मिनल्-मुर्सलीन **(7)** फ़ल्त-क़-तहू आलु फ़िर्औ़-न लि-यकू-न लहुम् अ़दुव्वंव्-व ह-ज़नन्, इन्-न फ़िर्औ़-न व हामा-न व जुनू-दहुमा कानू ख़ातिईन **(8)** व क़ालतिम्-र-अतु फ़िर्औ़-न क़ुर्रतु अ़ैनिल्-ली व ल-क, ला तक़्तुलूहु अ़सा अय्यन्फ़-अ़ना औ नत्तख़ि-ज़हू व-लदंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(9)** व अस्ब-ह फ़ुआदु उम्मि

سورة القصص مكية وهي ثمان وثمانون اية وتسع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

طسم (1) تلك ايت الكتب المبين (2) نتلوا عليك من
نبا موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون (3) ان
فرعون علا في الارض وجعل اهلها شيعا يستضعف
طائفة منهم يذبح ابناءهم ويستحي نساءهم انه
كان من المفسدين (4) ونريد ان نمن على الذين استضعفوا
في الارض ونجعلهم ائمة ونجعلهم الورثين (5) و
نمكن لهم في الارض ونري فرعون وهامن وجنودهما
منهم ما كانوا يحذرون (6) واوحينا الى ام موسى ان
ارضعيه فاذا خفت عليه فالقيه في اليم ولا تخافي
ولا تحزني انا رادوه اليك وجاعلوه من المرسلين (7)
فالتقطه ال فرعون ليكون لهم عدوا وحزنا ان
فرعون وهامن وجنودهما كانوا خطئين (8) وقالت امرات
فرعون قرت عين لي ولك لا تقتلوه عسى ان ينفعنا
او نتخذه ولدا وهم لا يشعرون (9) واصبح فؤاد ام

28 सूरः क़सस् 49

सूरः क़सस् मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 88 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

तॉ-सीम्-मीम् **(1)** ये (मज़ामीन जो आप पर वह्य किए जाते हैं) वाज़ेह (मायनों वाली) किताब (यानी कुरआन) की आयतें हैं। **(2)** हम आपको मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और फ़िरऔ़न का कुछ क़िस्सा ठीक-ठीक पढ़कर (यानी नाज़िल करके) सुनाते हैं। उन लोगों के (नफ़े के) लिए जो ईमान रखते हैं।[1] **(3)** फ़िरऔ़न (मिस्र की) सरज़मीन में बहुत बढ़-चढ़ गया था, और उसने वहाँ के रहने वालों को मुख़्तलिफ़ क़िस्में कर रखा था,[2] कि उन (निवासियों में) से एक जमाअ़त (यानी बनी इस्राईल) का ज़ोर घटा रखा था, (इस तरह से कि) उनके बेटों को ज़िब्ह कराता था और उनकी औ़रतों (यानी लड़कियों) को ज़िन्दा रहने देता था, वाक़ई वह बड़ा फ़सादी था। **(4)** (ग़रज़ फ़िरऔ़न तो इस ख़्याल में था) और हमको यह मन्ज़ूर था कि जिन लोगों का ज़ोर (मिस्र की) ज़मीन में घटाया जा रहा था, हम उनपर (दुनियावी व दीनी) एहसान करें, और (वह एहसान यह कि) उनको (दीन में) पेशवा बना दें, और (दुनिया में) उनको (मुल्क का) मालिक बनाएँ। **(5)** और (मालिक होने के साथ) उनको ज़मीन में हुकूमत दें, और फ़िरऔ़न और हामान और उनके पैरोकारों को उन (बनी इस्राईल) की जानिब से वे (नागवार) वाक़िआ़त दिखलाएँ जिनसे वे बचाव कर रहे थे।[3] **(6)** और (जब मूसा पैदा हुए तो) हमने मूसा की वालिदा को इल्हाम किया कि तुम उनको दूध पिलाओ। फिर जब तुम उनके बारे में (जासूसों के ख़बर पाने का) अन्देशा हो तो (बिना किसी डर और ख़तरे के) उनको (नील) दरिया में डाल देना। और न तो (डूब जाने का) अन्देशा करना और न (जुदाई पर) ग़म करना, (क्योंकि) हम ज़रूर उनको फिर तुम्हारे ही पास वापस पहुँचा देंगे और (फिर अपने वक़्त पर) उनको पैग़म्बर बना देंगे।[4] **(7)** तो फ़िरऔ़न के लोगों ने मूसा को (यानी मय सन्दूक़ के) उठा लिया, ताकि वह उन लोगों के लिए दुश्मन और ग़म का सबब बनें। बिला शुब्हा फ़िरऔ़न और हामान और उनके पैरोकार (इस बारे में) बहुत चूके।[5] **(8)** और फ़िरऔ़न की बीवी (हज़रत आसिया) ने (फ़िरऔ़न से) कहा कि यह (बच्चा) मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है,[6] इसको क़त्ल मत करो, अ़जब नहीं कि (बड़ा होकर) हमको कुछ फ़ायदा पहुँचाए या हम इसको अपना बेटा ही बना लें, और उन लोगों को (अन्जाम की) ख़बर न थी।[7] **(9)** और (उधर यह क़िस्सा हुआ कि) मूसा

(पिछले पृष्ठ का शेष) उसमें मौजूद हैं तो ज़ाहिर चीज़ें तो ज़रूर ही मौजूद हैं। ग़रज़ उनके आमाल की खुदा को भी ख़बर, दफ़्तर में भी महफ़ूज़, और वे आमाल खुद सज़ा का तक़ाज़ा करने वाले, और सज़ा के होने पर सच्ची ख़बरें भी मुत्तफ़िक़, फिर यह समझने की क्या गुन्जाइश है कि सज़ा न होगी, हाँ देर मुम्किन है। चुनाँचे बाज़ सज़ाएँ उन इनकार करने वालों को दुनिया में हुईं जैसे अकाल का शिकार होना और क़त्ल किया जाना, और बाज़ मरने के बाद बरज़ख़ में होंगी, कि ये सब क़रीब हैं। और कुछ आख़िरत में होंगी।

4. मतलब यह कि ये लोग तो मुर्दों, बहरों और अन्धों के जैसे हैं। फिर उनसे समझने और सही रास्ते पर आने की उम्मीद बेकार है, जब उम्मीद न होगी, ग़म भी न होगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 694) 1. मतलब यह कि सुनते ही बिना सोचे-समझे उनको झुठला दिया। और झुठलाने ही पर बस नहीं किया बल्कि याद करो कि उसके अ़लावा और भी क्या-क्या करते रहे, जैसे नबियों और ईमान वालों को तकलीफ़ दी, इसी तरह अन्य कुफ़्रिया आमाल और अ़क़ीदों और नाफ़रमानियों में मुब्तला रहे।

2. क्योंकि वे ग़ौर-फ़िक्र करते हैं और दूसरे ग़ौर-फ़िक्र नहीं करते, और नतीजे पर पहुँचने के लिए ग़ौर-फ़िक्र ज़रूरी है। इसलिए दूसरे इससे फ़ायदा उठाने वाले नहीं होते।

3. ऊपर सूरः में जो तीन मज़ामीन- नुबुव्वत, तौहीद और आख़िरत मुफ़स्सल ज़िक्र हुए हैं, आगे ख़त्मे में उनका मुख़्तसर और खुलासे के तौर पर बयान है। **(पृष्ठ 694 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 696 की तफ़सीर पृष्ठ 698 पर)**

मूसा फ़ारिग़न्, इन् कादत् लतुब्दी बिही लौ ला अर्र-बत्ना अ़ला क़ल्बिहा लि-तकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन **(10)** व क़ालत् लिउख़्तिही क़ुस्सीहि फ़-बसुरत् बिही अ़न् जुनुबिंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(11)** व हर्रम्ना अ़लैहिल्-मराज़ि-अ़ मिन् क़ब्लु फ़क़ालत् हल् अदुल्लुकुम् अ़ला अह्लि बैतिंय्- यक्फ़ुलूनहू लकुम् व हुम् लहू नासिहून **(12)** फ़-रदद्नाहु इला उम्मिही कै तक़र्-र अ़ैनुहा व ला तह्ज़-न व लितअ्-ल-म अन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून ◆ **(13)** ❖

व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू वस्तवा आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मन्, कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन **(14)** व द-ख़लल्-मदी-न-त अ़ला हीनि ग़फ़्लतिम् मिन् अह्लिहा फ़-व-ज-द फ़ीहा रजुलैनि यक़्ततिलानि, हाज़ा मिन् शी-अ़तिही व हाज़ा मिन् अ़दुव्विही फ़स्तग़ा-सहुल्लज़ी मिन् शी-अ़तिही अ़लल्लज़ी मिन् अ़दुव्विही फ़-व-क-ज़हू मूसा फ़-क़ज़ा अ़लैहि, क़ा-ल हाज़ा मिन् अ़-मलिश्-शैतानि, इन्नहू अ़दुव्वुम्-मुज़िल्लुम्-मुबीन **(15)** क़ा-ल रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर् ली फ़-ग़-फ़-र लहू, इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम **(16)** क़ा-ल रब्बि बिमा अन्अ़म्-त अ़लय्-य फ़-लन् अकू-न ज़हीरल्-लिल्मुज्रिमीन **(17)** फ़-अस्ब-ह फ़िल्मदी-नति ख़ाइफंय्य-तरक़्क़बु फ़-इज़ल्-लज़िस्तन्स-रहू बिल्अम्सि यस्तस्रिख़ुहू, क़ा-ल लहू मूसा इन्न-क ल-ग़विय्युम्-मुबीन **(18)** फ़-लम्मा अन् अरा-द अंय्यब्ति-श बिल्लज़ी हु-व अ़दुव्वुल्-लहुमा क़ा-ल या मूसा अतुरीदु

امن خلق ٢٠ ٣٤٩ القصص ٢٨

مُوسٰى فٰرِغًا ۗ اِنۡ كَادَتۡ لَتُبۡدِىۡ بِهٖ لَوۡلَاۤ اَنۡ رَّبَطۡنَا عَلٰى
قَلۡبِهَا لِتَكُوۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝ وَقَالَتۡ لِاُخۡتِهٖ قُصِّيۡهِ ۖ
فَبَصُرَتۡ بِهٖ عَنۡ جُنُبٍ وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ۙ وَحَرَّمۡنَا عَلَيۡهِ
الۡمَرَاضِعَ مِنۡ قَبۡلُ فَقَالَتۡ هَلۡ اَدُلُّكُمۡ عَلٰۤى اَهۡلِ بَيۡتٍ
يَّكۡفُلُوۡنَهٗ لَـكُمۡ وَهُمۡ لَهٗ نٰصِحُوۡنَ ۝ فَرَدَدۡنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَىۡ
تَقَرَّ عَيۡنُهَا وَلَا تَحۡزَنَ وَلِتَعۡلَمَ اَنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰـكِنَّ
اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسۡتَوٰٓى اٰتَيۡنٰهُ
حُكۡمًا وَّعِلۡمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ۝ وَدَخَلَ
الۡمَدِيۡنَةَ عَلٰى حِيۡنِ غَفۡلَةٍ مِّنۡ اَهۡلِهَا فَوَجَدَ فِيۡهَا
رَجُلَيۡنِ يَقۡتَتِلٰنِ هٰذَا مِنۡ شِيۡعَتِهٖ وَهٰذَا مِنۡ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسۡتَغَاثَهُ
الَّذِىۡ مِنۡ شِيۡعَتِهٖ عَلَى الَّذِىۡ مِنۡ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوۡسٰى
فَقَضٰى عَلَيۡهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنۡ عَمَلِ الشَّيۡطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ
مُّبِيۡنٌ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّىۡ ظَلَمۡتُ نَفۡسِىۡ فَاغۡفِرۡ لِىۡ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنۡعَمۡتَ عَلَىَّ فَلَنۡ
اَكُوۡنَ ظَهِيۡرًا لِّلۡمُجۡرِمِيۡنَ ۝ فَاَصۡبَحَ فِى الۡمَدِيۡنَةِ خَآئِفًا
يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِىۡ اسۡتَنۡصَرَهٗ بِالۡاَمۡسِ يَسۡتَصۡرِخُهٗ ؕ قَالَ

منزل

(अ़लैहिस्सलाम) की वालिदा का दिल (अनेक ख़्यालों के आने से) बेक़रार हो गया, क़रीब था कि वह मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का हाल सबपर ज़ाहिर कर देतीं, अगर हम उनके दिल को इस ग़रज़ से मज़बूत न किए रहें कि यह (हमारे वायदे पर) यक़ीन किए (बैठी) रहें। **(10)** उन्होंने मूसा की बहन (यानी अपनी बेटी) से कहा कि ज़रा मूसा का सुराग़ तो लगा, सो उन्होंने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को दूर से देखा और उन लोगों को (यह) ख़बर न थी (कि यह उनकी बहन हैं और इस फ़िक्र में आई हैं)। **(11)** और हमने पहले ही से मूसा (अ़लैहिस्सलाम) पर दूध पिलाने वालियों की बन्दिश कर रखी थी, सो वह (इस मौक़े को देखकर) कहने लगीं, क्या मैं तुम लोगों को किसी ऐसे घराने का पता बता दूँ जो तुम्हारे लिए इस बच्चे की परवरिश करें, और वे दिल से इसकी ख़ैरख़्वाही करें। **(12)** ग़रज़ हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी वालिदा के पास (अपने वायदे के मुवाफ़िक़) वापस पहुँचा दिया, ताकि उनकी आँखें ठंडी हों और ताकि (जुदाई के) ग़म में न रहें, और ताकि इस बात को जान लें कि अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा (होता) है, लेकिन (अफ़सोस की बात है कि) अक्सर लोग (इसका) यक़ीन नहीं रखते। ◆ **(13)** ❖

और जब (परवरिश पाकर) अपनी भरी जवानी (की उम्र) को पहुँचे और (जिस्मानी और अ़क़्ली ताक़त से) दुरुस्त हो गए हमने उनको हिक्मत और इल्म अ़ता फ़रमाया,[1] और हम नेक काम करने वालों को इसी तरह सिला दिया करते हैं। (यानी नेक अ़मल से इल्मी फ़ैज़ में तरक़्क़ी होती है)[2] **(14)** और मूसा शहर में (यानी मिस्र में कहीं बाहर से) ऐसे वक़्त पहुँचे कि वहाँ के (अक्सर) निवासी बेख़बर (पड़े सो रहे) थे, तो उन्होंने वहाँ दो आदमियों को लड़ते देखा, एक तो उनकी बिरादरी में का था और दूसरा उनके मुख़ालिफ़ीन में से था। सो वह जो उनकी बिरादरी का था उसने मूसा से उसके मुक़ाबले में जो उनके मुख़ालिफ़ीन में से था मदद चाही, तो मूसा ने उसको (एक) घूँसा मारा, सो उसका काम ही तमाम कर दिया।[3] मूसा कहने लगे कि यह तो शैतानी हरकत हो गई। बेशक शैतान (भी आदमी का) खुला दुश्मन है। (ग़लती में डाल देता है)। **(15)** अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझसे कुसूर हो गया है, आप माफ़ फ़रमा दीजिए, सो अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमा दिया। बिला शुब्हा वह बड़ा माफ़ करने वाला, रहमत करने वाला है। **(16)** मूसा ने (यह भी) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! चूँकि आपने मुझपर बड़े-बड़े इनामात फ़रमाए हैं, सो कभी मैं मुजरिमों की मदद न करूँगा।[4] **(17)** फिर मूसा को शहर में सुबह हुई ख़ौफ़ और घबराहट की हालत में कि अचानक (देखते क्या हैं

(पिछले पृष्ठ का शेष) **4.** मतलब यह कि इबादत में शिर्क से दूर रहूँ जैसा कि अब तक दूर हूँ।

5. यानी उसको अज्र व सवाब और नजात होगी। मैं उससे किसी माली फ़ायदे या ओ़हदे व शान का इच्छुक नहीं हूँ।

6. यानी मेरा काम सिर्फ़ हुक्म पहुँचाना है, सो पहुँचाकर भार-मुक्त हो जाऊँगा। आगे न मानने का वबाल तुमको भुगतना पड़ेगा। मतलब यह कि मैं पैग़म्बर हूँ और तुमसे कोई ग़रज़ या लालच नहीं रखता।

(तफ़सीर पृष्ठ 696) **1.** क्योंकि क़िस्सों के मक़ासिद में इनसे इबरत हासिल करना और नुबुव्वत वग़ैरह पर इस्तिदलाल है, जो मोमिनों ही को नफ़ा देने वाले हैं, चाहे हक़ीक़त के एतिबार से मोमिन हों या हुक्म के एतिबार से।

2. इस तरह कि क़िब्तियों को सम्मान वाला बना रखा था और सिब्तियों यानी बनी इस्राईल को ज़लील व पस्त कर रखा था।

3. इससे हुकूमत का पतन और हलाक होना मुराद है, कि इसी पतन व हलाकत से बचाव के लिए बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करता था, जिसकी बिना एक ख़्वाब थी जो फ़िरऔ़न ने देखा था और नुजूमियों ने उसकी यही ताबीर दी थी। पस हमारे तक़दीरी हुक्म के सामने उन लोगों की तदबीर कुछ काम न आई।

4. ग़रज़ वह इसी तरह उनको दूध पिलाती रहीं, फिर जब राज़ खुलने का ख़ौफ़ हुआ तो सन्दूक़ में बन्द करके अल्लाह के नाम पर नील दरिया में छोड़ दिया। ग़रज़ वह सन्दूक़ किनारे पर लगा।

5. कि अपने दुश्मन को अपनी बग़ल में पाला।

6. यानी इसको देखकर जी ख़ुश हुआ करेगा।

7. कि यह वही बच्चा है जिसके हाथों फ़िरऔ़न की बादशाहत ग़ारत होगी। **(पृष्ठ 698 की फसीर पृष्ठ 700 पर)**

अन् तक़्तु-लनी कमा क़तल्-त नफ़्सम्-बिल्अम्सि इन् तुरीदु इल्ला अन् तकू-न जब्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मा तुरीदु अन् तकू-न मिनल्-मुस्लिहीन **(19)** व जा-अ रजुलुम्-मिन् अक़्सल्-मदी-नति यस्आ, क़ा-ल या मूसा इन्नल्-म-ल-अ यअ्तमिरू-न बि-क लि-यक़्तुलू-क फ़ख़्रुज् इन्नी ल-क मिनन्नासिहीन **(20)** फ़-ख़-र-ज मिन्हा ख़ाइफ़ंय्-य-तरक़्क़बु क़ा-ल रब्बि नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन **(21)** ❖

व लम्मा तवज्ज-ह तिल्क़ा-अ मद्-य-न क़ा-ल अ़सा रब्बी अंय्यह्दि-यनी सवा-अस्सबील **(22)** व लम्मा व-र-द मा-अ मद्-य-न व-ज-द अ़लैहि उम्म-तम् मिनन्नासि यस्क़ू-न, व व-ज-द मिन् दूनिहिमुम्-र-अतैनि तज़ूदानि क़ा-ल मा ख़त्बुकुमा, क़ा-लता ला नस्क़ी हत्ता युस्दिरर्-रिआ-उ, व अबूना शैख़ुन् कबीर **(23)** फ़-सक़ा लहुमा सुम्-म तवल्ला इलज़्ज़िल्लि फ़क़ा-ल रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्-त इलय्-य मिन् ख़ैरिन् फ़क़ीर **(24)**

لَهٗ مُوْسٰى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ
بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ
كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا
فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَ
جَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۡ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ
الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ
النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۡ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى
رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ
وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ
امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۭ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى
يُصْدِرَ الرِّعَاۗءُ ٜ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى
الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾
فَجَاۗءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَاۗءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ
لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۭ فَلَمَّا جَاۗءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ
الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ڣ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

फ़जा-अत्हु इह्दाहुमा तम्शी अ़-लस्तिह्याइन् क़ालत् इन्-न अबी यद्अू-क लि-यज्ज़ि-य-क अज्-र मा सक़ै-त लना, फ़-लम्मा जा-अहू व क़स्-स अ़लैहिल्-क़-स-स क़ा-ल ला त-ख़फ़् नजौ-त मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन **(25)** क़ालत् इह्दाहुमा या अ-बतिस्तअ्जिर्हु इन्-न ख़ै-र मनिस्तअ्जर्तल्-क़विय्युल्-अमीन **(26)** क़ा-ल इन्नी उरीदु अन् उन्कि-ह-क इह्दब्-नतय्-य

❖ रु. 2/8/5

कि) वही शख़्स जिसने गुज़री कल इम्दाद चाही थी वह फिर उनको मदद के लिए पुकार रहा है। मूसा (अ़लैहिस्सलाम) उससे फ़रमाने लगे बेशक तू खुला बुरे रास्ते वाला (आदमी) है। **(18)** सो जब मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उसपर हाथ बढ़ाया जो उन दोनों का मुख़ालिफ़ था, वह इस्राईली कहने लगा, ऐ मूसा! क्या (आज) मुझको क़त्ल करना चाहते हो, जैसा कि कल एक आदमी को क़त्ल कर चुके हो। (मालूम होता है कि) बस तुम दुनिया में अपना ज़ोर बिठलाना चाहते हो और सुलह (और मिलाप) करवाना नहीं चाहते। **(19)** और (उस मजमे में) एक शख़्स शहर के (उस) किनारे से (जहाँ यह मश्विरा हो रहा था) दौड़े हुए आए (और) कहने लगे कि ऐ मूसा! दरबार वाले आपके मुताल्लिक़ मश्विरा कर रहे हैं कि आपको क़त्ल कर दें। सो आप (यहाँ से) चल दीजिए। मैं आपकी ख़ैरख़्वाही कर रहा हूँ। **(20)** पस (यह सुनकर) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) वहाँ से (किसी तरफ़ को) निकल गए ख़ौफ़ और घबराहट की हालत में, (और चूँकि रास्ता मालूम न था, दुआ़ के तौर पर) कहने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको इन ज़ालिम लोगों से बचा लीजिए[1] **(21)** ❖

और जब मूसा (अ़लैहि.) मद्यन की तरफ़ हो लिए, कहने लगे कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (किसी अमन की जगह का) सीधा रास्ता चलाएगा। (चुनाँचे ऐसा ही हुआ और मद्यन जा पहुँचे)। **(22)** और जब मद्यन के पानी (यानी कुँए) पर पहुँचे तो उसपर (विभिन्न) आदमियों का एक मजमा देखा जो पानी पिला रहे थे। और उन लोगों से एक तरफ़ (अलग) को दो औ़रतें देखीं कि वे (अपनी बकरियाँ) रोके खड़ी हैं। मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने (उनसे) पूछा तुम्हारा क्या मतलब है? वे दोनों बोलीं कि (हमारा मामूल यह है कि) हम (अपने जानवरों को) उस वक़्त तक पानी नहीं पिलाते जब तक ये चरवाहे पानी पिलाकर (जानवरों को) हटाकर न ले जाएँ, और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं। **(23)** पस (यह सुनकर) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उनके लिए पानी (खींचकर उनके जानवरों को) पिलाया फिर (वहाँ से) हटकर साये में जा बैठे, फिर (अल्लाह से) दुआ़ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! (इस वक़्त) जो नेमत भी आप मुझको भेज दें मैं उसका (सख़्त) ज़रूरतमन्द हूँ। **(24)** मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास एक लड़की आई कि शरमाती हुई चलती थी, (और आकर) कहने लगी कि मेरे वालिद तुमको बुलाते हैं,[2] ताकि तुमको उसका सिला दें जो तुमने हमारी ख़ातिर (हमारे जानवरों को) पानी पिला दिया था।[3] सो जब उनके पास पहुँचे और उनसे तमाम हाल बयान किया तो उन्होंने (तसल्ली दी और) कहा कि

(तफ़सीर पृष्ठ 698) 1. यानी नुबुव्वत से पहले ही सही समझ और मज़बूत अ़क़्ल इनायत फ़रमाई जिससे अच्छे-बुरे में फ़र्क़ कर सकें।

2. इसमें इशारा है कि फ़िरऔ़न के तरीक़े को मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कभी इख़्तियार न किया था, बल्कि उससे नफ़रत ही करते रहे।

3. यानी इत्तिफ़ाक़ से वह मर ही गया।

4. यहाँ मुजरिमों से मुराद वे हैं जो दूसरों से गुनाह का काम कराना चाहें। क्योंकि किसी से गुनाह कराना यह भी जुर्म है। पस इसमें शैतान भी दाख़िल हो गया कि वह गुनाह कराता है, और गुनाह करने वाला उसकी मदद करता है, चाहे जान-बूझकर या ग़लती से। मतलब यह हुआ कि मैं शैतान का कहना कभी न मानूँगा। यानी जहाँ ग़लती का इम्कान होगा वहाँ एहतियात और समझदारी से काम लूँगा। और असल मक़सूद इतना ही है, मगर हुक्म को शामिल करने के लिए 'मुजरिमीन' बहुवचन का सीग़ा लाया गया है कि औरों को भी आ़म हो जाए।

(तफ़सीर पृष्ठ 700) 1. और अमन की जगह पहुँचा दीजिए।

2. यह बुज़ुर्ग हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम थे।

3. मूसा अ़लैहिस्सलाम साथ हो लिए, अगरचे मूसा अ़लैहिस्सलाम का मक़सद यक़ीनन सिला लेना न था, लेकिन वक़्त के तक़ाज़े के मुताबिक़ अमन की जगह और किसी मेहरबान साथी के मुतलाशी थे। और अगर भूख की शिद्दत भी इस जाने का एक सबब हो तो मुज़ायक़ा नहीं, और इसको उजरत से कुछ ताल्लुक़ नहीं। और मेहमान नवाज़ी का अनुरोध भी ख़ासकर ज़रूरत के वक़्त और किसी ख़ास करीम से कुछ ज़िल्लत नहीं। कहाँ यह कि दूसरे के अनुरोध पर मेहमान नवाज़ी का क़बूल कर लेना।

अ़ला अन् तअ्जु-रनी समानि-य हि-जजिन् फ़-इन् अत्मम्-त अ़श्रन् फ़-मिन् अ़िन्दि-क व मा उरीदु अन् अशुक़्-क़ अ़लै-क, स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु मिनस्सालिहीन **(27)** क़ा-ल ज़ालि-क बैनी व बैन-क, अय्यमल्-अ-जलैनि क़ज़ैतु फ़ला अ़ुद्वा-न अ़लय्-य, वल्लाहु अ़ला मा नक़ूलु वकील **(28)** ❖

फ़-लम्मा क़ज़ा मूसल्-अ-ज-ल व सा-र बि-अह्लिही आ-न-स मिन् जानिबित्-तूरि नारन् क़ा-ल लि-अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल्-लअ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ जज़्वतिम् मिनन्नारि लअ़ल्लकुम् तस्तलून **(29)** फ़-लम्मा अताहा नूदि-य मिन् शातिइल्-वादिल्-ऐमनि फ़िल्-बुक़्अ़तिल्-मुबा-र-कति मिनश्श-ज-रति अंय्यामूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल्-अ़ालमीन **(30)** व अन् अल्क़ि अ़सा-क, फ़-लम्मा रआहा तह्तज़्ज़ु क-अन्नहा जान्नुंव्-वल्ला मुद्बिरंव्-व लम् यु-अ़क़्क़िब्, या मूसा अक़्बिल् व ला तख़फ़्, इन्न-क मिनल्-आमिनीन **(31)** उस्लुक् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइंव्-वज़्मुम् इलै-क जना-ह-क मिनर्रह्बि फ़ज़ानि-क बुर्हानानि मिर्रब्बि-क इला फ़िर्औ़-न व म-लइही, इन्नहुम् **कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (32) क़ा-ल रब्बि इन्नी क़तल्तु मिन्हुम् नफ़्सन् फ़-अख़ाफ़ु** अंय्यक़्तुलून **(33)** व अख़ी हारूनु हु-व अफ़्सहु मिन्नी लिसानन् फ़-अर्सिल्हु मअि़-य

قالت احدىهما يابت استاجره ان خير من استاجرت القوي
الامين ۝ قال اني اريد ان انكحك احدى ابنتي هتين
على ان تاجرني ثمني حجج فان اتممت عشرا فمن عندك
وما اريد ان اشق عليك ستجدني ان شاء الله من
الصلحين ۝ قال ذلك بيني وبينك ايما الاجلين قضيت
فلا عدوان علي والله على ما نقول وكيل ۝ فلما قضى موسى
الاجل وسار باهله انس من جانب الطور نارا قال
لاهله امكثوا اني انست نارا لعلي اتيكم منها بخبر او
جذوة من النار لعلكم تصطلون ۝ فلما اتىها نودي من
شاطئ الواد الايمن في البقعة المبركة من الشجرة ان
يموسى اني انا الله رب العلمين ۝ وان الق عصاك فلما
راها تهتز كانها جان ولى مدبرا ولم يعقب يموسى اقبل
ولا تخف انك من الامنين ۝ اسلك يدك في جيبك
تخرج بيضاء من غير سوء واضمم اليك جناحك من
الرهب فذنك برهنن من ربك الى فرعون وملايه
انهم كانوا قوما فسقين ۝ قال رب اني قتلت منهم نفسا

(अब) अन्देशा न करो तुम ज़ालिम लोगों से बच आए। **(25)** (फिर) एक लड़की ने कहा कि अब्बा जान! आप इनको नौकर रख लीजिए, क्योंकि अच्छा नौकर वह शख़्स है जो मज़बूत (हो और) अमानतदार (भी) हो।[1] **(26)** वह (बुज़ुर्ग मूसा अ़लैहिस्सलाम से) कहने लगे कि मैं चाहता हूँ कि इन दोनों लड़कियों में से एक को तुम्हारे साथ ब्याह दूँ, इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी नौकरी करो,[2] फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो यह तुम्हारी तरफ़ से (एहसान) है। और मैं (इस मामले में) तुमपर कोई मशक़्क़त डालना नहीं चाहता, (और) तुम मुझको इन्शा-अल्लाह तआ़ला अच्छे मामले वाला पाओगे।[3] **(27)** मूसा (अ़लैहिस्सलाम रज़ामन्द हो गए और) कहने लगे कि (बस तो) यह बात मेरे और आपके दरमियान (पक्की) हो चुकी, मैं इन दो मुद्दतों में से जिस (मुद्दत) को पूरा कर दूँ, मुझपर कोई जब्र न होगा, और हम जो (मामले की) बातचीत कर रहे हैं अल्लाह तआ़ला इसका गवाह (काफ़ी) है।[4] **(28)** ❖

ग़रज़ जब मूसा (अ़लैहिस्सलाम) उस मुद्दत को पूरा कर चुके और (शुऐब अ़लैहिस्सलाम की इजाज़त से) अपनी बीवी को लेकर (मिस्र को या मुल्क शाम को) रवाना हुए तो उनको तूर पहाड़ की तरफ़ से एक (रोशनी) आग (की शक्ल में) दिखलाई दी। उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि तुम (यहीं) ठहरे रहो, मैंने एक आग देखी है (मैं वहाँ जाता हूँ) शायद मैं तुम्हारे पास वहाँ से (रास्ते की कुछ) ख़बर लाऊँ या कोई आग का (दहकता हुआ) अंगारा ले आऊँ, ताकि तुम सेंको। **(29)** सो जब वह उस आग के पास पहुँचे तो उनको उस मैदान की दाहिनी ओर से (जो कि मूसा अ़लैहिस्सलाम की दाहिनी जानिब था) उस मुबारक मक़ाम में एक दरख़्त में से आवाज़ आई कि ऐ मूसा! मैं अल्लाह रब्बुल आ़लमीन हूँ। **(30)** और यह (भी आवाज़ आई) कि तुम अपनी लाठी डाल दो,[5] सो उन्होंने जब उसको लहराता हुआ देखा जैसा पतला साँप (तेज़) होता है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़कर भी न देखा। (हुक्म हुआ कि) ऐ मूसा! आगे आओ और डरो मत, तुम (हर तरह) अमन में हो।[6] **(31)** तुम अपना हाथ गिरेबान के अन्दर डालो (और फिर निकालो) वह बिना किसी मर्ज़ के निहायत रोशन होकर निकलेगा। और ख़ौफ़ (दूर करने) के वास्ते अपना (वह) हाथ (फिर) अपने गिरेबान और (बग़ल) से (पहले की तरह) बदस्तूर मिला लेना, सो ये (तुम्हारी नुबुव्वत की) दो सनदें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास जाने के वास्ते, (जिसका तुमको हुक्म दिया जाता है) क्योंकि वे बड़े नाफ़रमान लोग हैं। **(32)** उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैंने उनमें से एक आदमी का ख़ून

---

1. और इनमें दोनों सिफ़तें हैं।

2. हासिल यह कि आठ साल की ख़िदमत इस निकाह का महर है।

3. यानी काम लेने और वक़्त की पाबन्दी वग़ैरह-वग़ैरह तमाम बातों में आसानी बरतूँगा।

4. उसको हाज़िर-नाज़िर समझकर अ़हद को पूरा करना चाहिए।

5. चुनाँचे उन्होंने डाल दिया और वह साँप बनकर चलने लगा।

6. यह कोई डर की बात नहीं बल्कि तुम्हारा मोजिज़ा है।

रिद्अंय्-युसद्दिक़ुनी इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून (34) क़ा-ल स-नशुद्दु अज़ु-द-क बि-अख़ी-क व नज्अ़लु लकुमा सुल्तानन् फ़ला यसिलू-न इलैकुमा बिआयातिना अन्तुमा व मनित्त-ब-अ़कुमल्-ग़ालिबून (35) फ़-लम्मा जा-अहुम् मूसा बिआयातिना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला सिह्रुम्- मुफ़्तरंव्-व मा समिअ़्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्- अव्वलीन (36) व क़ा-ल मूसा रब्बी अअ़्लमु बिमन् जा-अ बिल्हुदा मिन् अ़िन्दिही व मन् तकूनु लहू आ़क़ि-बतुद्-दारि, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (37) व क़ा-ल फ़िरऔनु या अय्युहल्-म-ल-उ मा अ़लिम्तु लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरी फ़-औक़िद् ली या हामानु अ़लत्तीनि फ़ज्अ़ल्ली सर्हल्-लअ़ल्ली अत्तलिअु इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू मिनल्-काज़िबीन (38) वस्तक्ब-र हु-व व जुनूदुहू फ़िल्- अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व ज़न्नू अन्नहुम् इलैना ला युर्जअून (39) फ़-अख़ज़्नाहु व जुनू-दहू फ़-नबज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुज़्ज़ालिमीन (40) व जअ़ल्ना-हुम् अ-इम्म-तंय्यद्अू-न इलन्नारि व यौमल्-क़ियामति ला युन्सरून (41) व अत्बअ़्नाहुम् फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ़्-नतन् व यौमल्-क़ियामति हुम् मिनल् मक़्बूहीन (42) ❖

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब मिम्-बअ़्दि मा अह्लक्नल्-क़ुरूनल्-ऊला बसाइ-र लिन्नासि व हुदंव्-व रह्म-तल् लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (43) व मा कुन्-त बिजानिबिल्-

فأخاف أن يقتلون ۝ وأخي هرون هو أفصح مني لسانا
فأرسله معي ردءا يصدقني إني أخاف أن يكذبون ۝
قال سنشد عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطنا فلا
يصلون إليكما بآيتنا أنتما ومن اتبعكما الغلبون ۝
فلما جاءهم موسى بآيتنا بينت قالوا ما هذا إلا سحر
مفترى وما سمعنا بهذا في آبائنا الأولين ۝ وقال
موسى ربي أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ومن
تكون له عاقبة الدار إنه لا يفلح الظلمون ۝ وقال
فرعون يأيها الملأ ما علمت لكم من إله غيري فأوقد لي
يهمن على الطين فاجعل لي صرحا لعلي أطلع إلى
إله موسى وإني لأظنه من الكذبين ۝ واستكبر هو
وجنوده في الأرض بغير الحق وظنوا أنهم إلينا
لا يرجعون ۝ فأخذنه وجنوده فنبذنهم في اليم فانظر
كيف كان عاقبة الظلمين ۝ وجعلنهم أئمة يدعون إلى
النار ويوم القيمة لا ينصرون ۝ وأتبعنهم في هذه
الدنيا لعنة ويوم القيمة هم من المقبوحين ۝

منزل ٥

कर दिया था, सो मुझको अन्देशा है कि (कहीं पहली ही बार में) वे लोग मुझको क़त्ल कर दें।[1] **(33)** और मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे ज़्यादा रवाँ है, तो उनको भी मेरा मददगार बनाकर मेरे साथ रिसालत दे दीजिए कि वह मेरी तक़रीर की ताईद और तस्दीक़ करेंगे। क्योंकि मुझको अन्देशा है कि वे लोग (यानी फ़िरऔन और उसके दरबारी) मुझको झुठलाएँ।[2] **(34)** इरशाद हुआ कि (बेहतर है) हम अभी तुम्हारे भाई को तुम्हारे हाथ की कुव्वत बनाए देते हैं। (एक दरख़्वास्त तो यह मन्ज़ूर हुई) और हम तुम दोनों को एक ख़ास रोब व दबदबा (और हैबत) अ़ता करते हैं जिससे उन लोगों को तुमपर पहुँच और ताक़त न होगी। (पस) हमारे मोजिज़े लेकर जाओ। तुम दोनों और जो तुम्हारी पैरवी करने वाला होगा (उन लोगों पर) ग़ालिब रहोगे। **(35)** ग़रज़ जब उन लोगों के पास मूसा हमारी खुली दलीलें लेकर आए तो उन लोगों ने (मोजिज़ों को देखकर) कहा कि यह तो (महज़) एक जादू है कि (ख़्वाह-मख़्वाह ख़ुदा तआ़ला पर) झूठ घड़ा जाता है। और हमने ऐसी बात कभी नहीं सुनी कि हमारे अगले बाप-दादों के वक़्त में भी हुई हो। **(36)** और मूसा (अ़लैहि.) ने उसके जवाब में फ़रमाया कि मेरा परवर्दिगार उस शख़्स को ख़ूब जानता है जो सही दीन उसके पास से लेकर आया है, और जिसका उस आ़लम "यानी आख़िरत" का अन्जाम अच्छा होने वाला है। (और) यक़ीनन ज़ालिम लोग कभी फ़लाह न पाएँगे।[3] **(37)** और (मूसा अ़लैहिस्सलाम की दलीलें देखकर सुनकर) फ़िरऔन कहने लगा कि ऐ दरबार वालो! मुझको तो तुम्हारा अपने सिवा कोई ख़ुदा मालूम नहीं होता, तो ऐ हामान! तुम हमारे लिए मिट्टी (की ईंटें बनवाकर उन) को आग में (पज़ावा लगाकर) पकवाओ फिर (उन पक्की ईंटों से) मेरे वास्ते एक बुलन्द इमारत बनवाओ ताकि मैं (उसपर चढ़कर) मूसा के ख़ुदा को देखूँ-भालूँ, और मैं तो (इस दावे में कि मेरे सिवा और कोई ख़ुदा है) मूसा को झूठा ही समझता हूँ। **(38)** और फ़िरऔन और उसके ताबेदारों ने नाहक़ दुनिया में सर उठा रखा था और यूँ समझ रहे थे कि उनको हमारे पास लौटकर आना नहीं है। **(39)** तो हमने (तकब्बुर की सज़ा में) उसको और उसके ताबेदारों को पकड़कर दरिया में फेंक दिया (यानी डुबू दिया) सो देखिए ज़ालिमों का क्या अन्जाम हुआ। **(40)** (और मूसा अ़लैहि. का क़ौल ज़ाहिर हो गया) और हमने उन लोगों को ऐसा सरदार बनाया था जो (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते रहे और (इसी वास्ते) क़ियामत के दिन (ऐसे बेसहारा रह जाएँगे कि) कोई उनका साथ न देगा। **(41)** और (ये लोग दोनों जहाँ में घाटे में रहे, चुनाँचे) दुनिया में भी हमने उनके पीछे लानत लगा दी[4] और क़ियामत के दिन भी वे बदहाल लोगों में से होंगे।[5] **(42)** ❖

---

1. और तब्लीग़ भी न होने पाए।
2. तो उस वक़्त मुनाज़रा करने की ज़रूरत होगी और ज़बानी मुनाज़रे के लिए रवाँ ज़बान आ़दतन ज़्यादा मुफ़ीद है।
3. मतलब यह कि ख़ुदा को ख़ूब मालूम है कि हममें और तुममें कौन सही रास्ते पर है, और कौन ज़ालिम। और कौन अच्छे अन्जाम वाला है और कौन कामयाबी से महरूम है। पस हर एक की हालत और नतीजे का जल्दी ही मरने के साथ ही ज़ुहूर हो जाएगा।
4. लानत पीछे लगा देने का मतलब यह है कि दुनिया में जो ज़ालिमों-काफ़िरों वग़ैरह पर लानत करता है, चूँकि वे लोग भी ऐसे ही थे उनपर भी लानत पड़ती है।
5. मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा फ़िरऔन के साथ ख़त्म हुआ। आगे इस क़िस्से के सबसे बड़े मक़सद यानी हुज़ूरे पाक जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रिसालत को साबित करने का मज़मून मज़कूर है, साथ ही काफ़िरों के बाज़ शुब्हात का जवाब और तम्हीद के लिए मूसा अ़लैहिस्सलाम की रिसालत का खुलासा इरशाद है।

ग़र्बिय्यि इज़् क़ज़ैना इला मूसल्-अम्-र व मा कुन्-त मिनश्शाहिदीन **(44)** व लाकिन्ना अन्शअ्ना क़ुरूनन् फ़-तता-व-ल अ़लैहिमुल्-अ़ुमुरु व मा कुन्-त सावि-यन् फ़ी अह्लि मद्-य-न तत्लू अ़लैहिम् आयातिना व लाकिन्ना कुन्ना मुर्सिलीन **(45)** व मा कुन्-त बिजानिबित्तूरि इज़् नादैना व लाकिर्-रह्म-तम् मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र क़ौमम् मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम् मिन् क़ब्लि-क लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून **(46)** व लौ ला अन् तुसी-बहुम् मुसीबतुम् बिमा क़द्दमत् ऐदीहिम् फ़-यक़ूलू रब्बना लौ ला अर्सल्-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ़ आयाति-क व नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन **(47)** फ़-लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु मिन् अ़िन्दिना क़ालू लौ ला ऊति-य मिस्-ल मा ऊति-य मूसा, अ-व लम् यक्फ़ुरू बिमा ऊति-य मूसा मिन् क़ब्लु क़ालू सिह्रानि तज़ा-हरा, व क़ालू इन्ना बिकुल्लिन् काफ़िरून **(48)** क़ुल् फ़अ्तू बिकिताबिम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि हु-व अह्दा मिन्हुमा अत्तबिअ़्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(49)** फ़-इल्लम् यस्तजीबू ल-क फ़अ़्लम् अन्नमा यत्तबिअ़ू-न अह्वा-अहुम्, व मन् अज़ल्लु मिम्-मनित्त-ब-अ़ हवाहु बिग़ैरि हुदम्-मिनल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन **(50)** ❖

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ
الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾
وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ
وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ
عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ
الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾
وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢبِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا
رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ
اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ۗ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى
مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۗ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ
كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ
اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ
اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۗ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ

और हमने मूसा को अगली उम्मतों (यानी नूह की कौम और आ़द व समूद) के हलाक करने के बाद किताब (यानी तौरात) दी थी, जो लोगों (यानी बनी इस्राईल) के लिए दानिशमन्दियों ''यानी बुद्धिमत्ता'' का सबब और हिदायत और रहमत थी,[1] ताकि वे (उससे) नसीहत हासिल करें।[2] **(43)** और आप (तूर पहाड़ की) पश्चिमी ओर मौजूद न थे, जबकि हमने मूसा को अहकाम दिए थे और (ख़ास वहाँ तो क्या मौजूद होते) आप (तो) उन लोगों में से (भी) न थे जो (उस ज़माने में) मौजूद थे। **(44)** और लेकिन (बात यह है कि हमने मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद) बहुत-सी नस्लें पैदा कीं। फिर उनपर लम्बा ज़माना गुज़र गया,[3] और आप मद्यन वालों में भी न रहते थे कि आप (वहाँ के हालात देखकर उन हालात के मुताल्लिक़) हमारी आयतें उन लोगों को पढ़-पढ़कर सुना रहे हों, और लेकिन हम ही (आपको) रसूल बनाने वाले हैं। **(45)** और (इसी तरह) आप तूर की (पश्चिमी) ओर (जिसका ज़िक्र हुआ) में उस वक़्त (भी) मौजूद न थे, जब हमने (मूसा को) पूकारा था, और लेकिन (इसका इल्म भी इसी तरह हासिल हुआ कि) आप अपने रब की रहमत से नबी बनाए गए, ताकि आप ऐसे लोगों को डराएँ जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला (नबी) नहीं आया, क्या अ़जब है कि नसीहत क़बूल करें।[4] **(46)** और हम रसूल न भी भेजते अगर यह बात न होती कि उनपर उनके किरदारों के सबब (जो कि अ़क़्ल के एतिबार से बुरे हैं) कोई मुसीबत (दुनिया या आख़िरत में) नाज़िल होती, तो यह कहने लगते कि ऐ हमारे रब! आपने हमारे पास कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा, ताकि हम आपके अहकाम की पैरवी करते, और (उन अहकाम और रसूल पर) ईमान लाने वालों में होते।[5] **(47)** सो जब हमारी तरफ़ से उन लोगों के पास हक़ बात पहुँची तो (उसमें शुब्हा निकालने के लिए यूँ) कहने लगे कि उनको ऐसी किताब क्यों न मिली जैसी मूसा को मिली थी,[6] क्या जो किताब मूसा को मिली थी इससे पहले ये लोग उसके इनकार करने वाले नहीं हुए। ये लोग तो यूँ कहते हैं कि दोनों जादू हैं जो एक-दूसरे के मुवाफ़िक़ ''यानी अनुकूल'' हैं। और यूँ भी कहते हैं कि हम तो दोनों में से किसी को भी नहीं मानते। **(48)** आप कह दीजिए कि अच्छा तो (तौरात और क़ुरआन के अ़लावा) तुम कोई और किताब अल्लाह के पास से ले आओ जो हिदायत करने में उन दोनों से बेहतर हो, मैं उसी की पैरवी करने लगूँगा, अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो।[7] **(49)** फिर (इस एहतिजाज के बाद) अगर ये लोग आपका (यह) कहना न कर सकें तो आप समझ लीजिए कि ये लोग महज़

---

1. हक़ के तालिब की अव्वल समझ दुरुस्त होती है, यह 'बसीरत' है। फिर अहकाम क़बूल करता है, यह 'हिदायत' है। फिर हिदायत का फल यानी अल्लाह तआ़ला की निकटता और उसके यहाँ क़बूलियत इनायत होती है, यह 'रहमत' है।
2. इसी तरह जब यह दौर भी ख़त्म हो चुका और लोग फिर नई हिदायत के नए सिरे से मोहताज हुए तो अपनी मुस्तक़िल आ़दत के मुताबिक़ हमने आपको रसूल बनाया जिसकी दलीलों में से एक यही मूसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िए की यक़ीनी ख़बर देना है।
3. जिससे फिर सही उलूम नायाब (यानी अप्राप्य) हो गए। और लोग फिर हिदायत के मोहताज हुए। और अगरचे बीच-बीच में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम आया किए मगर उनके उलूम भी इसी तरह नायाब हुए। इसलिए हमारी रहमत ने यह चाहा कि हमने आपको वह्य और रिसालत से सम्मानित फ़रमाया।
4. हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने वालों, बल्कि उनके क़रीबी बाप-दादाओं ने भी किसी नबी को नहीं देखा।
5. अगर ये लोग ज़रा ग़ौर-फ़िक्र करें तो समझ सकते हैं कि पैग़म्बर भेजने से हमारा कोई फ़ायदा नहीं बल्कि उन्हीं लोगों का फ़ायदा है कि ये लोग अच्छाई और बुराई पर बाख़बर होकर सज़ा से बच सकते हैं। वरना जिन बातों का बुरा होना अ़क़्ल से मालूम हो सकता है उनपर बिना रसूल भेजे भी अ़ज़ाब होना मुम्किन था। लेकिन उस वक़्त उनको एक तरह की हसरत होती कि हाय! अगर रसूल आ जाता तो हमको ज़्यादा ताकीद हो जाती और इस मुसीबत में न पड़ते। इसलिए रसूल भी भेज दिया ताकि उनको उस हसरत से बचना आसान हो।
6. यानी क़ुरआन एक ही बार में तौरात की तरह क्यों नाज़िल न हुआ।
7. ग़रज़ यह कि मैं हक़ साबित कर दूँ तो तुम उसकी इत्तिबा करो, और अगर तुम हक़ साबित कर दो तो मैं भी इत्तिबा करने के लिए तैयार हूँ।

व ल-क़द् वस्सल्ना लहुमुल्-क़ौ-ल लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (51) अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिही हुम् बिही युअ्मिनून ● (52) व इज़ा युत्ला अ़लैहिम् क़ालू आमन्ना बिही इन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिना इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लिही मुस्लिमीन (53) उलाइ-क युअ्तौ-न अज्-रहुम् मर्रतैनि बिमा स-बरू व यद्रऊ-न बिल्ह-स-नतिस्-सय्यि-अ-त व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (54) व इज़ा समिअुल्लग़्-व अअ्-रज़ू अ़न्हु व क़ालू लना अअ्मालुना व लकुम् अअ्मालुकुम् सलामुन् अ़लैकुम् ला नब्तग़िल्-जाहिलीन (55) इन्न-क ला तह्दी मन् अह्बब्-त व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ व हु-व अअ्लमु बिल्मुह्-तदीन (56) व क़ालू इन् नत्तबिअ़िल्-हुदा म-अ़-क नु-तख़त्तफ़् मिन् अर्ज़िना, अ-व लम् नुमक्किल् लहुम् ह-रमन् आमिनंय्-युज्बा इलैहि स-मरातु कुल्लि शैइर्-रिज़्क़म् मिल्लदुन्ना व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (57) व कम् अह्लक्ना मिन् क़र्-यतिम् बतिरत् मअ़ी-श-तहा फ़तिल्-क मसाकिनुहुम् लम् तुस्कम् मिम्-बअ्दिहिम् इल्ला क़लीलन्, व कुन्ना नह्नुल्-वारिसीन (58) व मा का-न रब्बु-क मुह्लिकल्-क़ुरा हत्ता यब्-अ़-स फ़ी उम्मिहा रसूलंय्-यत्लू अ़लैहिम् आयातिना व मा कुन्ना मुह्लिकिल्-क़ुरा इल्ला व अह्लुहा ज़ालिमून (59) व मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़-मताअुल्-हयातिद्दुन्या व ज़ी-नतुहा व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुंव्-व अब्क़ा, अ-फ़ला तअ्क़िलून (60) ❖

هُدًى مِّنَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ
وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا
عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ
لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ۝ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَقَالُوْٓا
اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا اَوَلَمْ نُمَكِّنْ
لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطِرَتْ
مَعِيْشَتَهَا فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْ بَعْدِهِمْ اِلَّا
قَلِيْلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى
حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا وَمَا كُنَّا
مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ

अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर चलते हैं। और ऐसे शख़्स से ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पर चलता हो बग़ैर इसके कि अल्लाह की जानिब से कोई दलील (उसके पास) हो, (और) अल्लाह तआ़ला ऐसे ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं किया करता। **(50)** ❖

और हमने इस कलाम (यानी क़ुरआन) को उन लोगों के लिए वक़्त-वक़्त पर एक के बाद एक भेजा, ताकि ये लोग (बार-बार ताज़ा-बताज़ा सुनने से) नसीहत मानें।[1] **(51)** (और) जिन लोगों को हमने क़ुरआन से पहले (आसमानी) किताबें दी हैं (उनमें जो इन्साफ़ पसन्द हैं) वे इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं। ● **(52)** और जब क़ुरआन उनके सामने पढ़ा जाता है तो कहते हैं कि हम इसपर ईमान लाए, बेशक यह हक़ है (जो) हमारे रब की तरफ़ से (नाज़िल हुआ है, और) हम तो इस (के आने) से पहले भी मानते थे। **(53)** उन लोगों को उनकी पुख़्तगी की वजह से दोहरा सवाब मिलेगा, और वे लोग नेकी (और बरदाश्त) से बुराई (और तकलीफ़) को दफ़ा कर देते हैं, और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से (अल्लाह तआ़ला की राह में) ख़र्च करते हैं। **(54)** और जब (किसी से अपने बारे में) कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उसको (भी) टाल जाते हैं, और (सही चलन के तौर पर) कह देते हैं कि (हम कुछ जवाब नहीं देते) हमारा किया हमारे सामने आएगा और तुम्हारा किया तुम्हारे सामने आएगा। (भाई) हम तुमको सलाम करते हैं, हम बे-समझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। **(55)** आप जिसको चाहें हिदायत नहीं कर सकते बल्कि अल्लाह जिसको चाहे हिदायत कर देता है, और हिदायत पाने वालों का इल्म (भी) उसी को है।[2] **(56)** और ये लोग कहते हैं कि अगर हम आपके साथ होकर (इस दीन की) हिदायत पर चलने लगें तो फ़ौरन अपने मक़ाम से मारकर निकाल दिए जाएँ। क्या हमने उनको अमन व शान्ति वाले हरम में जगह न दी, जहाँ हर क़िस्म के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से (यानी हमारी क़ुदरत और हमारे देने से) खाने को मिलते हैं, और लेकिन उनमें अक्सर लोग (इसको) नहीं जानते।[3] **(57)** और हम बहुत-सी ऐसी बस्तियाँ हलाक कर चुके हैं जो अपने ऐश के सामान पर इतराते थे। सो (देख लो) ये उनके घर (तुम्हारी आँखों के सामने पड़े) हैं कि उनके बाद आबाद ही न हुए मगर थोड़ी देर के लिए,[4] और आख़िरकार (उनके उन सब सामानों के) हम ही मालिक रहे। **(58)** और आपका रब बस्तियों को (अव्वल ही बार में) हलाक नहीं किया करता जब तक कि उन (बस्तियों) के मुख्य स्थान में किसी पैग़म्बर को न भेज ले, कि वह उन लोगों को हमारी आयतें पढ़-पढ़कर सुनाए। और हम उन बस्तियों को हलाक नहीं करते मगर उसी हालत में कि वहाँ के रहने वाले बहुत ही शरारत करने लगें।[5] **(59)** और जो कुछ

---

1. यानी हम तो एक ही बार में भेजने पर भी क़ादिर हैं, मगर उन्हीं की मस्लहत से थोड़ा-थोड़ा नाज़िल करते हैं।
2. यानी हिदायत करने की क़ुदरत तो सिवाय ख़ुदा तआ़ला के किसी को क्या होती, किसी को इसका इल्म भी नहीं कि कौन-कौन हिदायत पाने वाला है।
3. यानी हरम होने की वजह से जिसका सब एहतिराम करते हैं, नुक़सान पहुँचने का भी अन्देशा नहीं और इस नुक़सान के न होने की वजह से रिज़्क़ के फ़ायदे के ख़त्म होने का अन्देशा भी नहीं। पस उनको चाहिए था कि इस हालत को ग़नीमत समझते और इसको नेमत समझकर क़द्र करते और ईमान ले आते, लेकिन वे इसका ख़्याल नहीं करते।
4. यानी किसी मुसाफ़िर का इत्तिफ़ाक़ से उधर को गुज़र हो जाए और वह थोड़ी देर वहाँ सुस्ताने को या तमाशा देखने को बैठ जाए।
5. यानी एक अच्छी-ख़ासी मुद्दत तक बार-बार के नसीहत करने से नसीहत हासिल न करें, उस वक़्त हलाक कर देते हैं। इसी क़ानून के मुवाफ़िक़ तुम्हारे साथ अ़मल दरामद हो रहा है।

अ-फ़मंव्-वअ़द्नाहु वअ़्दन् ह-सनन् फ़हु-व लाक़ीहि कमम्-मत्तअ़्नाहु मताअ़ल्-हयातिद्दुन्या सुम्-म हु-व यौमल्-क़ियामति मिनल्-मुह्ज़रीन (61) व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अ़ुमून (62) क़ालल्लज़ी-न हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु रब्बना हा-उलाइल्लज़ी-न अग़्वैना अग़्वैनाहुम् कमा ग़वैना तबर्रअ़्ना इलै-क मा कानू इय्याना यअ़्बुदून (63) व क़ीलद्अ़ू शु-रका-अकुम् फ़-दऔ़हुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व र-अवुल्-अ़ज़ा-ब लौ अन्नहुम् कानू यह्तदून (64) व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु माज़ा अ-जब्तुमुल्-मुर्सलीन (65) फ़-अ़मियत् अ़लैहिमुल्- अम्बा-उ यौमइज़िन् फ़हुम् ला य-तसाअलून (66) फ़-अम्मा मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-अ़सा अंय्यकू-न मिनल्-मुफ़्लिहीन (67) व रब्बु-क यख़्लुक़ु मा यशा-उ व यख़्तारु, मा का-न लहुमुल् ख़ि-य-रतु, सुब्हानल्लाहि व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (68) व रब्बु-क यअ़्लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ़्लिनून (69) व हुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, लहुल्-हम्दु फ़िल्-ऊला वल्- आख़िरति व लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअ़ून (70) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़लल्लाहु अ़लैकुमुल्-लै-ल सर्-मदन् इला यौमिल्-क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिज़ियाइन्, अ-फ़ला तस्-मअ़ून (71) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़लल्लाहु अ़लैकुमुन्नहा-र सर्-मदन् इला यौमिल्-क़ियामति मन्

شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ
وَّاَبْقٰى ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ
لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ
الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا
هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ
مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ
فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ
عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ
وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾
وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحٰنَ
اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ
وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى
وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ
جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ

तुमको दिया दिलाया गया है वह महज़ (चन्द दिन का) दुनियावी ज़िन्दगी के बरतने के लिए है, और यहीं की (ज़ेब व ज़ीनत है)[1] और जो (अज्र व सवाब) अल्लाह के यहाँ है वह इससे बहुत ज़्यादा बेहतर है, और ज़्यादा (यानी हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। क्या तुम लोग (इस फ़र्क़ को) नहीं समझते। **(60)** ❖

भला वह शख़्स जिससे हमने एक पसन्दीदा वायदा कर रखा है। फिर वह शख़्स उस (वायदे की चीज़) को पाने वाला है, क्या उस शख़्स के जैसा हो सकता है जिसको हमने दुनियावी ज़िन्दगी का चन्द दिन का फ़ायदा दे रखा है।[2] फिर वह क़ियामत के दिन उन लोगों में से होगा जो गिरफ़्तार करके लाए जाएँगे। **(61)** और (वह दिन याद करने के क़ाबिल है) जिस दिन अल्लाह उन काफ़िरों को (झिड़की के तौर पर) पुकार कर कहेगा कि वे मेरे शरीक कहाँ हैं, जिनको तुम (हमारा शरीक) समझ रहे थे।[3] **(62)** जिनपर (गुमराह करने की वजह से) ख़ुदा का फ़रमाया हुआ (यानी अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ होना) साबित हो चुका होगा। वे बोल उठेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! बेशक ये वही लोग हैं जिनको हमने बहकाया, हमने उनको वैसा ही (बिना किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती) बहकाया जैसा कि हम ख़ुद बहके थे, और हम आपकी मौजूदगी में उन (के ताल्लुक़ात) से अ़लाहिदगी इख़्तियार करते हैं (और) ये लोग (हक़ीक़त में) हमको न पूजते थे।[4] **(63)** और (उस वक़्त उन मुश्रिकों से मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर) कहा जाएगा कि (अब) अपने उन शरीकों को बुलाओ, चुनाँचे वे (इन्तिहाई हैरत से बेक़रारी के साथ) उनको पुकारेंगे, सो वे जवाब भी न देंगे। और (उस वक़्त) ये लोग (अपनी आँखों से) अ़ज़ाब देख लेंगे। ऐ काश! ये लोग (दुनिया में) सही रास्ते पर होते, (तो यह मुसीबत न आती)। **(64)** और जिस दिन उन काफ़िरों से पुकार कर पूछेगा कि तुमने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? **(65)** सो उस दिन उन (के ज़ेहन) से सारे मज़ामीन गुम हो जाएँगे, तो वे (अपने आप भी न समझ सकेंगे और) आपस में पूछताछ भी न कर सकेंगे।[5] **(66)** लेकिन जो शख़्स (कुफ़्र व शिर्क से दुनिया में) तौबा करे और ईमान ले आए और नेक काम किया करे तो ऐसे लोग उम्मीद है कि (आख़िरत में) कामयाबी पाने वालों में से होंगे। **(67)** और आपका रब जिस चीज़ को चाहता है पैदा करता है और (जिस हुक्म को चाहता है) पसन्द करता है। उन लोगों को (अहकाम) तजवीज़ करने का कोई हक़ हासिल नहीं। अल्लाह तआ़ला उनके शिर्क से पाक और बरतर है। **(68)** और आपका रब सब चीज़ों की ख़बर रखता है, जो उनके दिलों में पोशीदा रहता है और जिसको ये ज़ाहिर करते हैं। **(69)** और अल्लाह तआ़ला वही (कामिल सिफ़ात वाला) है, उसके सिवा कोई माबूद (होने को क़ाबिल) नहीं, तारीफ़ (और प्रशंसा) के लायक़ दुनिया और आख़िरत में वही है,[6] और हुकूमत भी (क़ियामत में) उसी की होगी, तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। **(70)** आप (उन लोगों से) कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुमपर हमेशा के लिए क़ियामत तक रात ही रहने दे तो ख़ुदा के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रोशनी को ले आए, तो क्या तुम (तौहीद

---

1. यानी उम्र के ख़ात्मे के साथ उसका भी ख़ात्मा हो जाएगा।
2. मुराद पहले शख़्स से मोमिन है जिससे जन्नत का वायदा है, और दूसरे से मुराद काफ़िर है जो मुजरिम होकर आएगा।
3. मुराद उससे शयातीन हैं कि उन्हीं की मुतलक़ ताबेदारी से शिर्क करते थे, इसलिए उनको "शु-रका" कहा।
4. यानी जब ये अपने इख़्तियार से बहके हैं न कि ख़ालिस हमारे बहकाने से तो इस एतिबार से ये ख़्वाहिश-परस्त थे, न कि सिर्फ़ शैतान-परस्त। मतलब यह कि ये ख़ुद अपनी ख़्वाहिश से ख़राब हुए इस दर्जे में हमारा उनका कोई ताल्लुक़ नहीं। लेकिन जिस क़द्र हमारी ख़ता है कि हमने उनको बहकाया उसका हम इक़रार करते हैं। मक़सूद इस सब हिकायत से यह है कि जिनके भरोसे पर बैठे हैं वे उनसे कानों पर हाथ रखेंगे।
5. ऊपर शिर्क पर धमकी और झिड़की की हिकायत में शिर्क की निन्दा ज़िक्र हुई है, आगे तौहीद को और उसके तहत में इनामात व एहसानात को साबित किया गया है।
6. क्योंकि उसके इख़्तियारात और दख़ल दोनों आ़लम में ऐसे हैं **(पृष्ठ 710 की बक़िया तफ़सीर पृष्ठ 712 पर)**

इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिलैलिन् तस्कुनू-न फ़ीहि, अ-फ़ला तुब्सिरून (72) व मिर्रह्मतिही ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र लितस्कुनू फ़ीहि व लि-तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (73) व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (74) व न-ज़अ़्ना मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् फ़-क़ुल्ना हातू बुर्हा-नकुम् फ़-अ़लिमू अन्नल्-हक़्-क़ लिल्लाहि व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (75) ❖

इन्-न क़ारू-न का-न मिन् क़ौमि मूसा फ़-बग़ा अ़लैहिम् व आतैनाहु मिनल्-कुनूज़ि मा इन्-न मफ़ाति-हहू ल-तनूउ बिल्अुस्बति उलिल्-क़ुव्वति, इज़् क़ा-ल लहू क़ौमुहू ला तफ़्रह् इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्- फ़रिहीन (76) वब्तग़ि फ़ीमा आताकल्लाहुद्-दारल्- आख़िर-त व ला तन्-स नसी-ब-क मिनद्दुन्या व अह्सिन् कमा अह्स-नल्लाहु इलै-क व ला तब्ग़िल्-फ़सा-द फ़िल्अर्ज़ि, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुफ़्सिदीन (77) क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अ़िल्मिन् अ़िन्दी, अ-व लम् यअ़्लम् अन्नल्ला-ह क़द् अह्ल-क मिन् क़ब्लिही

امن خلق ٢٠ ٣٥٦ القصص ٢٨

الٰه غير الله يأتيكم بضياء ۖ افلا تسمعون ٧١ قل ارءيتم
ان جعل الله عليكم النهار سرمدا الى يوم القيمة من
الٰه غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه ۖ افلا تبصرون ٧٢
ومن رحمته جعل لكم اليل والنهار لتسكنوا فيه
ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون ٧٣ ويوم يناديهم
فيقول اين شركاءي الذين كنتم تزعمون ٧٤ ونزعنا
من كل امة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم فعلموا ان الحق
لله وضل عنهم ما كانوا يفترون ٧٥ ان قارون كان من
قوم موسى فبغى عليهم ۖ واتينه من الكنوز ما ان
مفاتحه لتنوأ بالعصبة اولى القوة اذ قال له قومه
لا تفرح ان الله لا يحب الفرحين ٧٦ وابتغ فيما اتىك
الله الدار الاخرة ولا تنس نصيبك من الدنيا واحسن
كما احسن الله اليك ولا تبغ الفساد فى الارض ۖ ان
الله لا يحب المفسدين ٧٧ قال انما اوتيته على علم
عندى ۚ اولم يعلم ان الله قد اهلك من قبله من
القرون من هو اشد منه قوة واكثر جمعا ۚ ولا يسئل

منزل ٥

मिनल्-क़ुरूनि मन् हु-व अशद्दु मिन्हु क़ुव्वतंव्-व अक्सरु जम्अ़न्, व ला युस्अलु अ़न् ज़ुनूबिहिमुल्-मुज्रिमून (78) फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही फ़ी ज़ी-नतिही, क़ालल्लज़ी-न युरीदूनल्-हयातद्दुन्या यालै-त लना मिस्-ल मा ऊति-य क़ारूनु इन्नहू लज़ू

की ऐसी साफ़ दलीलों को) सुनते नहीं। **(71)** आप कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर हमेशा के लिए क़ियामत तक दिन ही रहने दे,[1] तो ख़ुदा तआ़ला के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए, जिसमें तुम आराम पाओ। क्या तुम (इस क़ुदरत के गवाह को) देखते नहीं। **(72)** और (वह नेमत देने वाला ऐसा है कि) उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया, ताकि रात में आराम करो और ताकि (दिन में) उसकी रोज़ी तलाश करो, और ताकि (इन दोनों नेमतों पर) तुम (अल्लाह का) शुक्र करो।[2] **(73)** और जिस दिन अल्लाह तआ़ला उनको पुकार कर फ़रमाएगा कि जिनको तुम मेरा शरीक समझते थे वे कहाँ गए। **(74)** और हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह निकाल लाएँगे,[3] फिर हम (उन मुश्रिकों से) कहेंगे कि (अब) अपनी (कोई) दलील (शिर्क के सही होने के दावे पर) पेश करो, सो (उस वक़्त) उनको मालूम हो जाएगा कि सच्ची बात ख़ुदा ही की थी, और (दुनिया में) जो कुछ बातें घड़ा करते थे (आज) किसी का पता न रहेगा।[4] **(75)** ❖

क़ारून मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की बिरादरी में से था, सो वह (माल की ज़्यादती की वजह से) उन लोगों के मुक़ाबले में तकब्बुर करने लगा और (उस माल की ज़्यादती यह थी कि) हमने उसको इस क़द्र ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी कुन्जियाँ कई-कई ताक़तवर शख़्सों को बोझल कर देती थीं।[5] जबकि उसको उसकी बिरादरी ने (समझाने के तौर पर) कहा कि तू (इस माल व शान पर) इतरा मत, वाक़ई अल्लाह तआ़ला इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। **(76)** और (यह भी कहा कि) तुझको जितना दे रखा है उसमें आ़लमे आख़िरत की भी जुस्तजू किया कर, और दुनिया से अपना हिस्सा (आख़िरत में ले जाना) मत भूल, और जिस तरह ख़ुदा तआ़ला ने तेरे साथ एहसान किया तू भी (बन्दों के साथ) एहसान किया कर। दुनिया में फ़साद का इच्छुक मत हो,[6] बेशक अल्लाह फ़सादियों को पसन्द नहीं करता। **(77)** क़ारून (यह सुनकर कहने लगा कि) मुझको तो यह सब कुछ मेरी ज़ाती हुनर मन्दी "यानी कमाल और योग्यता" से मिला है,[7] क्या उस (क़ारून) ने (निरन्तर ख़बरों से) यह न जाना कि अल्लाह तआ़ला उससे पहले पिछली उम्मतों में ऐसे-ऐसों को हलाक कर चुका है जो (माली) ताक़त में (भी) उससे कहीं बढ़े हुए थे और मजमा (भी) उनका (उससे) ज़्यादा था। और मुजरिमों से (तहक़ीक़ करने के लिए) उनके गुनाहों का सवाल न करना पड़ेगा।[8] **(78)** फिर (एक बार ऐसा इत्तिफ़ाक़

(पिछले पृष्ठ का शेष) कि जो सिफ़ाते कमाल पर दलालत करते हैं जिससे यह वाज़ेह है कि तारीफ़ के लायक़ वही है।

1. रात हमेशा होना इस तौर पर कि सूरज को उफ़ुक़ (आसमान के किनारे) से न निकलने दे या उसका नूर छीन ले। और दिन का हमेशा होना इस तरह पर कि सूरज को छुपने न दे। या बिना सूरज ही के नूर फैला दे।

2. कमाल की समस्त सिफ़तें जो इस मक़ाम पर दलील पकड़ने के लिए ज़िक्र हुई हैं, ये हैं- **1-** ख़ालिक़ होना **2-** शरीअ़त व क़ानून का मुख़्तार होना **3-** इल्म **4-** हुकूमत **5-** हुकूमत की क़ुव्वत व वुसअ़त **6-** क़ुदरत **7-** नेमत अ़ता करना।

3. मुराद इससे अम्बिया हैं कि वे उनके कुफ़्र की गवाही देंगे।

4. क्योंकि हक़ के ज़ाहिर होने के लिए बातिल का ग़ायब हो जाना लाज़िम है।

5. यानी उनसे मुश्किल से उठती थीं, तो जब कुन्जियाँ इतनी ज़्यादा थीं तो ज़ाहिर है कि ख़ज़ाने बहुत होंगे।

6. यानी गुनाह करने से दुनिया में फ़साद व बिगाड़ होता है।

7. यानी मैं कमाने और माल हासिल करने के तरीक़े और तदबीरें ख़ूब जानता हूँ उससे मैंने यह सब जमा किया है। फिर मेरा फ़ख़्र करना बेजा नहीं और न इसको ग़ैबी एहसान कहा जा सकता है। और न इसमें किसी का हक़ हो सकता है।

8. क्योंकि अल्लाह तआ़ला को सब मालूम है अगरचे सख़्ती करने और झिड़कने के लिए सवाल हो। मतलब यह कि अगर क़ारून इस मज़मून पर ग़ौर करता तो ऐसी जहालत की बात न कहता। क्योंकि दुनियावी हलाकत से हक़ीक़ी क़ुदरत के तहत में और आख़िरत की पकड़ से हक़ीक़ी हुकूमत के तहत में दाख़िल होना ज़ाहिर है। फिर ऐसे शख़्स की क्या क़ुदरत कि अपने कमाने और ज़ाती मेहनत से हासिल करने को हक़ीक़ी इल्लत समझे, और ऐसे शख़्स की क्या राय कि वाजिब हुक़ूक़ का इनकार करे।

हज़्ज़िन् अ़ज़ीम **(79)** व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म वैलकुम् सवाबुल्लाहि ख़ैरुल्-लिमन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् व ला युलक़्क़ाहा इल्लस्साबिरून **(80)** फ़-ख़सफ़्ना बिही व बिदारिहिल्-अर्-ज़, फ़मा का-न लहू मिन् फ़ि-अतिंय्-यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि, व मा का-न मिनल्-मुन्तसिरीन **(81)** व अस्-बहल्लज़ी-न तमन्नौ मकानहू बिल्अम्सि यक़ूलू-न वै-क-अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्-रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लौ ला अम्-मन्नल्लाहु अ़लैना ल-ख़-स-फ़ बिना, वै-क-अन्नहू ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून **(82)** ❖

तिल्कद्-दारुल्-आख़ि-रतु नज्अ़लुहा लिल्लज़ी-न ला युरीदू-न अ़ुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़सादन्, वल्-आ़क़ि-बतु लिल्-मुत्तक़ीन **(83)** मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़ला युज्ज़ल्लज़ी-न अ़मिलुस्सय्यिआति इल्ला मा कानू यअ़्मलून **(84)** इन्नल्लज़ी फ़-र-ज़ अ़लैकल्-क़ुरआ-न ल-राद्दु-क इला मआ़दिन्, क़ुर्रब्बी अअ़्लमु मन् जा-अ बिल्हुदा व मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(85)** व मा कुन्-त तर्जू अंय्युल्क़ा इलैकल्-किताबु इल्ला रह्म-तम् मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न ज़हीरल् लिल्-काफ़िरीन **(86)** व ला यसुद्दुन्न-क

عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ
قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا
أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا وَلَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ
الْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٨١﴾ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ
بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ
وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا
لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾ إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ
مَعَادٍ ۚ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي
ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ

हुआ कि) वह अपने ठाठ (और शान) से अपनी बिरादरी के सामने निकला। जो लोग (उसकी बिरादरी में) दुनिया के तालिब थे (अगरचे मोमिन हों) कहने लगे, क्या ख़ूब होता कि हमको भी वह साज़ो-सामान मिला होता जैसा कि क़ारून को मिला है। वाक़ई वह बड़ा नसीब वाला है। **(79)** और जिन लोगों को (दीन की) समझ अ़ता हुई थी वे (उन लालचियों से) कहने लगे, अरे तुम्हारा नास हो, (तुम इस दुनिया पर क्या ललचाते हो) अल्लाह के घर का सवाब (इस दुनियावी शान-शौकत से) हज़ार दर्जे बेहतर है, जो ऐसे शख़्स को मिलता है कि ईमान लाए और नेक अ़मल करे, और (फिर) वह (सवाब पूरे तौर पर) उन्हीं को दिया जाता है जो (दुनिया की हिर्स व लालच से) सब्र करने वाले हैं।[1] **(80)** फिर हमने उस (क़ारून) को और उसके महल-सराय को (उसकी शरारत बढ़ जाने से) ज़मीन में धँसा दिया। सो कोई ऐसी जमाअ़त न हुई जो उसको अल्लाह (के अ़ज़ाब) से बचा लेती, और न वह ख़ुद ही अपने को बचा सका। **(81)** और कल (यानी पिछले क़रीबी ज़माने में) जो लोग उस जैसे होने की तमन्ना कर रहे थे, वे (उसको ज़मीन में धँसता देखकर) कहने लगे, बस जी यूँ मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और (जिसको चाहे) तंगी से देने लगता है। अगर हमपर अल्लाह तआ़ला की मेहरबानी न होती तो हमको भी धँसा देता, बस जी मालूम हुआ कि काफ़िरों को कामयाबी नहीं होती।[2] **(82)** ❖

यह आ़लमे-आख़िरत हम उन्हीं लोगों के लिए ख़ास करते हैं जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना, और अच्छा अन्जाम परहेज़गार लोगों को मिलता है।[3] **(83)** जो शख़्स (क़ियामत के दिन) नेकी लेकर आएगा उसको उस (नेकी की वजह) से बेहतर (बदला) मिलेगा,[4] और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा सो ऐसे लोगों को जो कि बुराई के काम करते हैं उतना ही बदला मिलेगा जितना वे करते थे।[5] **(84)** जिस ख़ुदा ने आप पर क़ुरआन (के अहकाम पर अ़मल और उसकी तब्लीग़) को फ़र्ज़ किया है वह आपको (आपके) असली वतन (यानी मक्का शरीफ़) में फिर पहुँचाएगा।[6] आप (उनसे) फ़रमा दीजिए कि मेरा रब ख़ूब जानता है कि (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) कौन सच्चा दीन लेकर आया है और कौन खुली गुमराही में (मुब्तला) है। **(85)** और आपको (अपने नबी होने से पहले) यह उम्मीद न थी कि आप पर यह किताब नाज़िल की जाएगी, मगर महज़ आपके रब की मेहरबानी से इसका उतरना हुआ, सो आप उन काफ़िरों की

---

1. पस तुम लोग ईमान को मुकम्मल करने और नेक आमाल के हासिल करने में लगो, और शरई हद के अन्दर दुनिया हासिल करके उसकी हिर्स व लालच से सब्र करो और बचो।

2. अगरचे चन्द दिन मज़े लूट लें मगर अन्जाम फिर नाकामी और घाटा है। पस असल और हक़ीक़ी कामयाबी ईमान वालों ही के साथ मख़्सूस है।

3. यानी न तकब्बुर करते हैं और न कोई ज़ाहिरी गुनाह करते हैं। ख़ासकर ऐसा गुनाह जिसका असर दूसरे की ज़ात तक पहुँचे, जैसा कि फ़िरऔन व क़ारून तकब्बुर व घमण्ड और बिगाड़ व फ़साद के मुजरिम हुए। और वे सिर्फ़ मना की हुई चीज़ों से रुकने पर बस नहीं करते, बल्कि जो गुनाहों और मनाशुदा बातों के साथ-साथ हुक्म की हुई बातों और अहकाम को भी बजा लाते हों।

4. क्योंकि तक़ाज़ा तो यह था कि सिर्फ़ अ़मल की हैसियत के मुवाफ़िक़ बदला मिले मगर वहाँ ज़्यादा मिलेगा। जिसका कम-से-कम दर्जा दस हिस्से है।

5. यानी उसके तक़ाज़े से ज़्यादा न मिलेगा।

6. हासिले कलाम यह कि जिसने आपको नबी व वह्य वाला बनाया है और नबी से जो वायदा किया जाता है वह वह्य के क़तई होने की वजह से यक़ीनन सच्चा होता है, वह आपसे यह वायदा करता है, पस यक़ीनन ऐसा होगा।

अन् आयातिल्लाहि बअ्-द इज़् उन्ज़िलत् इलै-क वद्अु इला रब्बि-क व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन (87) व ला तद्अु मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र ✣ ला इला-ह इल्ला हु-व, कुल्लु शैइन् हालिकुन् इल्ला वज्-हहू, लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअ़ून ▲ (88) ❖

29 सूरतुल्-अ़न्कबूति 85

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4410 अक्षर, 990 शब्द, 69 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) अ-हसिबन्-नासु अंय्युत्-रकू अंय्यकूलू आमन्ना व हुम् ला युफ़्तनून (2) व ल-क़द् फ़तन्नल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-लयअ्-लमन्नल्लाहुल्लज़ी-न स-दकू व ल-यअ्-लमन्नल्-काज़िबीन (3) अम् हसिबल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सय्यिआति अंय्यस्बिक़ूना, सा-अ मा यह्कुमून (4) मन् का-न यर्जू लिक़ा-अल्लाहि फ़-इन्-न अ-जलल्लाहि लआतिन्, व हुवस्समीअुल्-अ़लीम (5) व मन् जा-ह-द फ़-इन्नमा युजाहिदु लिनफ़्सिही, इन्नल्ला-ह ल-ग़निय्युन् अ़निल्-आ़लमीन (6) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अह्-सनल्लज़ी कानू यअ्मलून (7) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि हुस्नन्, व इन् जा-हदा-क लितुश्रि-क

إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكٰفِرِينَ ﴿٨٦﴾
وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ
إِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ
إِلٰهًا اٰخَرَ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ
لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ تِسْعٌ وَسِتُّونَ اٰيَةً سَبْعُ رُكُوعَاتٍ

الٓمٓ ﴿١﴾ أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا اٰمَنَّا وَهُمْ
لَا يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ
اللّٰهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِينَ ﴿٣﴾ أَمْ حَسِبَ
الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّاٰتِ أَن يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾
مَن كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللّٰهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٥﴾ وَمَن جٰهَدَ فَإِنَّمَا يُجٰهِدُ لِنَفْسِهِ
إِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِينَ ﴿٦﴾ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ
الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧﴾ وَوَصَّيْنَا الْإِنسٰنَ بِوٰلِدَيْهِ
حُسْنًا وَإِن جٰهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ

منزل

ज़रा भी ताईद न कीजिए। **(86)** और जब अल्लाह के अहकाम आप पर नाज़िल हो चुके तो ऐसा न होने पाए (जैसा अब तक भी नहीं होने पाया) कि ये लोग आपको उन अहकाम से रोक दें और आप (बदस्तूर) अपने रब (के दीन) की तरफ़ (लोगों को) बुलाते रहिए, और उन मुश्रिकों में शामिल न होइए। **(87)** और (जिस तरह अब तक आप शिर्क से पाक और महफ़ूज़ हैं उसी तरह आगे भी) अल्लाह तआ़ला के साथ किसी माबूद को न पुकारना, उसके सिवा कोई माबूद (होने के क़ाबिल) नहीं,[1] (इसलिए कि) सब चीज़ें फ़ना होने वाली हैं सिवाय उसकी ज़ात के, उसी की हुकूमत है (जिसका पूरे तौर पर ज़ुहूर क़ियामत में है) और उसी के पास तुम सबको जाना है। (पस सबको उनके किए का बदला देगा)। ▲ **(88)** ❖

29 सूरः अ़न्कबूत 85

सूरः अ़न्कबूत मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 69 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़्-लाम्-मीम्[2] **(1)** (बाज़े मुसलमान जो काफ़िरों के तकलीफ़ पहुँचाने से घबरा जाते हैं, तो) क्या उन लोगों ने यह ख़्याल कर रखा है कि वे इतना कहने पर छूट जाएँगे कि हम ईमान ले आए और उनको (क़िस्म-क़िस्म की मुसीबतों से) आज़माया न जाएगा। **(2)** और हम तो (ऐसे ही वाक़िआ़त से) उन लोगों को भी आज़मा चुके हैं जो उनसे पहले (मुसलमान) हो गुज़रे हैं। सो अल्लाह तआ़ला उन लोगों को (ज़ाहिरी इल्म से) जानकर रहेगा जो (ईमान के दावे में) सच्चे थे, और झूठों को भी जानकर रहेगा।[3] **(3)** हाँ, क्या जो लोग बुरे-बुरे काम कर रहे हैं वे यह ख़्याल करते हैं कि हमसे कहीं निकल भागेंगे, उनकी यह तजवीज़ निहायत ही बेहूदा है।[4] **(4)** जो शख़्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है, सो (उसको तो ऐसे-ऐसे हादसों से परेशान न होना चाहिए, क्योंकि) अल्लाह तआ़ला (से मिलने) का वह मुक़र्ररा वक़्त ज़रूर आने वाला है, (जिससे सारे ग़म दूर हो जाएँगे) और वह सब कुछ सुनता, सब कुछ जानता है। **(5)** और जो शख़्स मेहनत करता है, वह अपने ही (नफ़े के) लिए मेहनत करता है, (वरना) ख़ुदा तआ़ला को (तो) तमाम जहान वालों में किसी की हाजत नहीं। **(6)** और (वह नफ़ा जो नेकी करने से पहुँचता है उसका बयान यह है कि) जो लोग ईमान लाते हैं और नेक काम करते हैं। हम उनके गुनाह उनसे दूर कर देंगे और उनको उनके (उन) आमाल (ईमान और नेक कामों) का (हक़ से) ज़्यादा अच्छा बदला देंगे।[5] **(7)** और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा

1. इन आयतों में काफ़िरों और मुश्रिकों को उनकी दरख़्वास्तों से मायूस करना है, और बात का रुख़ उन्हीं की तरफ़ है कि तुम जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दीन में मुवाफ़िक़ होने यानी की दरख़्वास्त करते हो उसमें कामयाबी का कभी का सवाल ही नहीं। मगर आदत है कि जिसपर ज़्यादा गुस्सा होता है उससे बात नहीं किया करते। अपने महबूब से बातें करके उस शख़्स को सुनाया करते हैं।
2. इस सूरः में ज़्यादातर दीन पर साबित क़दम रहने में जो चीज़ें रुकावट होती हैं उनके मुताल्लिक़ अहकाम हैं।
3. चुनाँचे जो सच्चे दिल और एतिक़ाद से मुसलमान होते हैं वे इन इम्तिहानों में अटल रहते हैं, बल्कि और ज़्यादा पुख़्ता हो जाते हैं। और जो वक़्ती तौर पर यूँही मुसलमान होते हैं वे ऐसे वक़्त में इस्लाम को छोड़ बैठते हैं। यानी यह एक हिक्मत है इम्तिहान की।
4. जारी मज़मून से अलग यह एक दूसरी बात बयान की है। जिसमें काफ़िरों के बुरे अन्जाम को सुनाकर मुसलमानों की एक तरह से तसल्ली कर दी कि इन तकलीफ़ों का उनसे बदला लिया जाएगा।
5. काफ़िर लोग तरह-तरह से मुसलामनों को इस्लाम से हटाने की फ़िक्रें करते थे। बाज़े जिस्मानी तकलीफ़ें पहुँचाया करते थे और बाज़े दूसरे तरीक़ों से मजबूर करते। चुनाँचे सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वालिदा (माँ) ने उनसे कहा कि अल्लाह का हुक्म है कि माँ-बाप की इताअ़त करो, सो मैं क़सम खाती हूँ कि खाना-पानी न चखूँगी जब तक कि तू इस्लाम न छोड़ देगा चाहे मेरी जान निकल जाए, इसपर अगली आयत नाज़िल हुई।

बी मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् फ़ला तुतिअ्हुमा, इलय्-य मर्जिअुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून **(8)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुद्ख़िलन्नहुम् फ़िस्सालिहीन **(9)** व मिनन्नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि फ़-इज़ा ऊज़ि-य फ़िल्लाहि ज-अ़-ल फ़ित्-नतन्नासि क-अ़ज़ाबिल्लाहि, व लइन् जा-अ नस्रुम्-मिर्रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न इन्ना कुन्ना म-अ़कुम्, अ-व लैसल्लाहु बि-अअ़्ल-म बिमा फ़ी सुदूरिल्-आ़लमीन **(10)** व ल-यअ़्-ल-मन्नल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व ल-यअ़्-ल-मन्नल्-मुनाफ़िक़ीन **(11)** व क़ालल्-लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनुत्-तबिअू सबीलना वल्नह्मिल् ख़तायाकुम्, व मा हुम् बिहामिली-न मिन् ख़तायाहुम् मिन् शैइन्, इन्नहुम् ल-काज़िबून **(12)** व ल-यह्मिलुन्-न अस्क़ा-लहुम् व अस्क़ालम् म-अ़ अस्क़ालिहिम् व ल-युस्अलुन्-न यौमल्- क़ियामति अ़म्मा कानू यफ़्तरून **(13)** ❖

فلا تطعهما الي مرجعكم فانبئكم بما كنتم تعملون ﴿٨﴾
والذين امنوا وعملوا الصلحت لندخلنهم في الصلحين ﴿٩﴾
ومن الناس من يقول امنا بالله فاذا اوذي في الله جعل
فتنة الناس كعذاب الله ولئن جاء نصر من ربك
ليقولن انا كنا معكم اوليس الله باعلم بما في صدور
العلمين ﴿١٠﴾ وليعلمن الله الذين امنوا وليعلمن المنفقين ﴿١١﴾
وقال الذين كفروا للذين امنوا اتبعوا سبيلنا ولنحمل
خطيكم وما هم بحملين من خطيهم من شيء انهم
لكذبون ﴿١٢﴾ وليحملن اثقالهم واثقالا مع اثقالهم و
ليسئلن يوم القيمة عما كانوا يفترون ﴿١٣﴾ ولقد ارسلنا نوحا
الى قومه فلبث فيهم الف سنة الا خمسين عاما فاخذهم
الطوفان وهم ظلمون ﴿١٤﴾ فانجينه واصحب السفينة و
جعلنها اية للعلمين ﴿١٥﴾ وابرهيم اذ قال لقومه اعبدوا
الله واتقوه ذلكم خير لكم ان كنتم تعلمون ﴿١٦﴾ انما تعبدون
من دون الله اوثانا وتخلقون افكا ان الذين تعبدون
من دون الله لا يملكون لكم رزقا فابتغوا عند الله الرزق

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-लबि-स फ़ीहिम् अल्-फ़ स-नतिन् इल्ला ख़म्सी-न आ़मन्, फ़-अ-ख़-ज़हुमुत्तूफ़ानु व हुम् ज़ालिमून **(14)** फ़-अन्जैनाहु व अस्हाबस्सफ़ी-नति व जअ़ल्नाहा आ-यतल् लिल्आ़लमीन **(15)** व इब्राही-म इज़् क़ा-ल लिक़ौमिहिअ़्बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु, ज़ालिकुम्

सुलूक करने का हुक्म दिया है। और (उसके साथ यह भी कह दिया है कि) अगर वे दोनों तुझपर इस बात का दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा शरीक ठहराए जिस (के माबूद होने) की कोई (सही) दलील तेरे पास नहीं है, तो तू उनका कहना न मानना, तुम सबको मेरे ही पास लौटकर आना है। सो मैं तुमको तुम्हारे सब काम (नेक हों या बुरे) जतला दूँगा।[1] **(8)** और (तुममें) जो लोग ईमान लाए होंगे और नेक अ़मल किए होंगे, हम उनको नेक बन्दों (के दर्जे) में (जो कि जन्नत है) दाख़िल कर देंगे। **(9)** और बाज़े आदमी ऐसे भी हैं जो कह देते हैं कि हम अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए, फिर जब उनको अल्लाह के रास्ते में कुछ तकलीफ़ पहुँचाई जाती है[2] तो लोगों के तकलीफ़ पहुँचाने को ऐसा (बड़ा) समझ जाते हैं जैसे ख़ुदा का अ़ज़ाब। और अगर (कभी) कोई (मुसलमानों की) मदद आपके रब की तरफ़ से आ पहुँचती है तो (उस वक़्त) कहते हैं कि हम तो (दीन व अ़क़ीदे में) तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह को दुनिया-जहान वालों के दिलों की बातें मालूम नहीं? (यानी उनके दिल ही में ईमान न था)। **(10)** और (ये वाक़िआ़त इसलिए होते रहते हैं कि) अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को मालूम करके रहेगा और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम करके रहेगा। **(11)** और काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि तुम (दीन में) हमारी राह चलो और (क़ियामत में) तुम्हारे गुनाह हमारे ज़िम्मे, हालाँकि ये लोग उनके गुनाहों में से ज़रा भी नहीं ले सकते, ये बिलकुल झूठ बक रहे हैं। **(12)** और (अलबत्ता यह होगा कि) ये लोग अपने गुनाह अपने ऊपर लादे होंगे और अपने (उन) गुनाहों के साथ (ही) कुछ गुनाह और (भी लादे हुए होंगे) और ये लोग जैसी-जैसी झूठी बातें बनाते थे, क़ियामत में उनसे पूछताछ (और फिर सज़ा) ज़रूर होगी।[3] **(13)** ❖

और हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम की तरफ़ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, सो वह उनमें पचास साल कम एक हज़ार बरस रहे (और क़ौम को समझाते रहे)।[4] फिर (जब उसपर भी वे बाज़ न आए तो) उनको तूफ़ान ने आ दबाया, और वे बड़े ज़ालिम लोग थे।[5] **(14)** फिर (उस तूफ़ान के आने के बाद) हमने उनको और कश्ती वालों को (उस तूफ़ान से) बचा लिया, और हमने इस वाक़िए को तमाम जहान वालों के लिए इबरत का सबब बनाया। **(15)** और हमने इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से (जो कि बुतपरस्त थे) फ़रमाया कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो,[6] यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। **(16)** तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज़ बुतों को पूज रहे हो, और (उसके मुताल्लिक़) झूठी बातें घड़ते हो। तुम ख़ुदा को छोड़कर जिनको पूज रहे हो वे तुमको

---

1. हासिल यह हुआ कि ऊपर वाले वाक़िए में माँ की नाफ़रमानी से गुनाह का वस्वसा न किया जाए।

2. रद्द करने से मक़सूद यह नहीं है कि उनका इस्लाम अब मक़बूल नहीं। बल्कि गुज़रे हुए ज़माने में इस्लाम पर बराबर क़ायम रहने के दावे को झुठलाना है।

3. ऊपर काफ़िरों के तकलीफ़ देने और मुख़ालफ़तों का बयान था जिससे मुसलमान नुक़सान व परेशानी उठाते हैं, आगे तसल्ली के लिए पहली उम्मतों के बाज़ क़िस्से ज़िक्र हुए हैं।

4. रुहुल-मआ़नी में इब्ने अबी शैबा, अ़ब्द बिन हमीद, इब्नुल मुन्ज़िर, इब्ने अबी हातिम, इब्ने मरदूविया और हाकिम की रिवायत से हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से नक़ल किया है कि नूह अ़लैहिस्सलाम को चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत मिली और साढ़े नौ सौ साल वअ़ज़ फ़रमाया। और फिर तूफ़ान के बाद साठ साल ज़िन्दा रहे, सो इस हिसाब से उनकी उम्र एक हज़ार पचास साल की हुई, और अल्लाह ही ख़ूब जानते हैं।

5. कि इतनी लम्बी मुद्दत की तंबीह और समझाने से भी मुतास्सिर न हुए।

6. और डरकर शिर्क छोड़ दो।

ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून (16) इन्नमा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि औसानंव्-व तख़्लुक़ू-न इफ़्कन्, इन्नल्लज़ी-न तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न लकुम् रिज़्क़न् फ़ब्तग़ू अिन्दल्लाहिर्-रिज़्-क़ वअ्बुदूहु वश्कुरू लहू, इलैहि तुर्जअून (17) व इन् तुकज़्ज़िबू फ़-क़द् कज़्ज़-ब उ-ममुम्-मिन् क़ब्लिकुम्, व मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (18) अ-व लम् यरौ कै-फ़ युब्दिउल्लाहुल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअीदुहू, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (19) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ ब-दअल्-ख़ल्-क़ सुम्मल्लाहु युन्शिउन्-नश्-अतल्-आख़ि-र-त, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (20) युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यर्-हमु मंय्यशा-उ व इलैहि तुक़्लबून (21) व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (22) ❖

वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि व लिक़ा-इही उलाइ-क यइसू मिर्रह्मती व उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (23) फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुक़्तुलूहु औ हर्रिक़ूहु फ़अन्जाहुल्लाहु मिनन्नारि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (24) व क़ा-ल इन्नमत्तख़ज़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि औसानम् म-वद्द-त बैनिकुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या सुम्-म यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरु बअ्ज़ुकुम् बि-बअ्ज़िंव्-व यल्अ़नु बअ्ज़ुकुम् बअ्ज़ंव्-व

العنكبوت ٢٩ ٣٦٠ امن خلق ٢٠

وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾ وَإِن تُكَذِّبُوا فَقَدْ
كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾
أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى
اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ
ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾
يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾
وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا لَكُم
مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا اقْتُلُوهُ
أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ
بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم
بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا
لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَآمَنَ لَهُ لُوطٌ ۘ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ
إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَ

منزل ٥

कुछ भी रिज़्क़ देने का इख़्तियार नहीं रखते। सो तुम रिज़्क़ ख़ुदा के पास से तलाश करो[1] और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र अदा करो, और तुमको उसी के पास लौटकर जाना है।[2] **(17)** और अगर तुम लोग मुझको झूठा समझो तो (मेरा कुछ नुक़सान नहीं, क्योंकि) तुमसे पहले भी बहुत-सी उम्मतें (अपने पैग़म्बरों को) झूठा समझ चुकी हैं, और (उनका भी कुछ नुक़सान नहीं हुआ। वजह उसकी यह है कि) पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ (बात का) साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। **(18)** क्या उन लोगों को यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला किस तरह मख़्लूक़ को अव्वल बार पैदा करता है, (कि नापैदी की हालत से वजूद में लाता है) फिर वही दोबारा उसको पैदा करेगा, यह अल्लाह के नज़दीक बहुत ही आसान बात है। **(19)** आप (उन लोगों से) कहिए कि तुम लोग मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि ख़ुदा तआ़ला ने मख़्लूक़ को किस तौर पर अव्वल बार पैदा किया है। फिर अल्लाह तआ़ला पिछली बार भी पैदा करेगा। बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है।[3] **(20)** जिसको चाहेगा अ़ज़ाब देगा (यानी जो उसका हक़दार होगा) और जिसपर चाहे रहमत फ़रमा देगा (यानी जो उसका अहल होगा) और तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। **(21)** और न तुम ज़मीन में (छुपकर ख़ुदा को) हरा सकते हो और न आसमान में (उड़कर), और ख़ुदा के सिवा न तुम्हारा कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार।[4] **(22)** ❖

और जो लोग ख़ुदा की आयतों के और (ख़ास तौर पर) उसके सामने जाने के इनकारी हैं, वे लोग (क़ियामत में) मेरी रहमत से नाउम्मीद होंगे, और यही हैं जिनको दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। **(23)** सो (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की इस दिल को छू लेने वाली तक़रीर के बाद) उनकी क़ौम का (आख़िरी) जवाब बस यह था कि (आपस में) कहने लगे कि उनको या तो क़त्ल कर डालो या उनको जला दो। (चुनाँचे जलाने का सामान किया) सो अल्लाह ने उनको उस आग से बचा लिया। बेशक इस वाक़िए में उन लोगों के लिए जो कि ईमान रखते हैं, कई निशानियाँ हैं।[5] **(24)** और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने (वअ़ज़ यानी तक़रीर में यह भी) फ़रमाया कि तुमने जो ख़ुदा को छोड़कर बुतों को (माबूद) तजवीज़ कर रखा है, बस यह तुम्हारे दुनिया के आपसी ताल्लुक़ात की वजह से है।[6] फिर क़ियामत में (तुम्हारा यह हाल होगा कि) तुममें से एक दूसरे का मुख़ालिफ़ हो जाएगा और एक दूसरे पर लानत करेगा। और (अगर तुम इस बुतपरस्ती से बाज़ न आए तो) तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा, और तुम्हारा कोई हिमायती न होगा। **(25)** सो (इतने वअ़ज़ और नसीहत पर भी उनकी क़ौम ने न माना) सिर्फ़ लूत (अ़लैहिस्सलाम) ने उनकी तस्दीक़ फ़रमाई और (इब्राहीम ने) फ़रमाया कि मैं अपने परवर्दिगार की (बतलाई हुई जगह की) तरफ़ वतन छोड़ करके चला जाऊँगा,[7] बेशक वह ज़बरदस्त, हिक्मत

---

1. यानी उससे माँगो कि रिज़्क़ का मालिक वही है।

2. एक तो इबादत के वाजिब होने का सबब यह है कि वह नफ़े का मालिक है, और दूसरा यह कि वह नुक़सान का भी मालिक है।

3. मख़्लूक़ की पहली पैदाइश के इल्मे अ़क़्ली से उसके दोबारा पैदा करने पर इस्तिदलाल किया है जैसा कि इसपर "अ-व लम् यरौ" दलालत कर रहा है। और फिर मख़्लूक़ के पहली बार पैदाइश के महसूस किए जाने वाले इल्म से दोबारा पैदाइश पर इस्तिदलाल है जैसा कि "उन्ज़ुरू" इसपर दलालत कर रहा है, जिसमें पहली दलील से और आगे बढ़कर इरशाद है, कि जिस चीज़ से दलील पकड़ी जा रही है वह सिर्फ़ अ़क़्ली चीज़ नहीं बल्कि महसूस की जाने वाली बात है।

4. पस न अपनी तदबीर से बच सके न दूसरे की हिमायत से।

5. यानी यह वाक़िआ़ कई चीज़ों पर दलालत करता है- अल्लाह का क़ादिर होना, इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का नबी होना, कुफ़्र व शिर्क का बातिल होना। पस एक दलील इस एतिबार से कई दलीलों के क़ायम-मक़ाम हो गई कि उससे कई चीज़ों पर दलालत हो रही है।

6. चुनाँचे आँखों के सामने है कि अक्सर आदमी अपने ताल्लुक़ वालों, दोस्तों और रिश्तेदारों के तरीक़े पर रहता है, या तो इस वजह से हक़ के बारे में ग़ौर ही नहीं करता, और या समझकर भी डरता है कि ये सब छूट जाएँगे। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 722 पर)**

मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन्-नासिरीन **(25)** फ़-आम-न लहू लूतुन् ✣ व क़ा-ल इन्नी मुहाजिरुन् इला रब्बी, इन्नहू हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(26)** व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब व जअ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहिन्-नुबुव्व-त वल्किता-ब व आतैनाहु अज्रहू फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल्-आख़िरति लमिनस्सालिहीन **(27)** व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही इन्नकुम् ल-तअ्तूनल्-फ़ाहि-श-त मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम्-मिनल्-आ़लमीन **(28)** अ-इन्नकुम् लतअ्तूनर्-रिजा-ल व तक़्तअूनस्सबी-ल व तअ्तू-न फ़ी नादीकुमुल्-मुन्क-र, फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुअ्तिना बि-अ़ज़ाबिल्लाहि इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन **(29)** क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी अ़लल् क़ौमिल्-मुफ़्सिदीन **(30)** ❖

व लम्मा जाअत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा क़ालू इन्ना मुह्लिकू अह्लि हाज़िहिल्-क़र्यति इन्-न अह्लहा कानू ज़ालिमीन **(31)** क़ा-ल इन्-न फ़ीहा लूतन्, क़ालू नह्नु अअ्लमु बि-मन् फ़ीहा ल-नुनज्जियन्नहू व अह्लहू इल्लम्-र-अ-तहू कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन **(32)** व लम्मा अन् जाअत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़र्अंव्-व क़ालू ला तख़फ़् व ला तह्ज़न्, इन्ना मुनज्जू-क व अह्ल-क इल्लम्-र-अ-त-क कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन **(33)** इन्ना मुन्ज़िलू-न अ़ला अह्लि हाज़िहिल् क़र्यति रिज्ज़म्-मिनस्समा-इ बिमा कानू यफ़्सुक़ून **(34)** व ल-क़त्तरक्ना मिन्हा आ-यतम् बय्यि-नतल्-लिक़ौमिंय्-

يَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ
أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾
وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا
سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾ أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ
الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ
الْمُنْكَرَ ۖ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا
بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ
انْصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا
إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُو أَهْلِ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ
إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ
كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ
بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ
إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٣﴾
إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِقَوْمٍ

वाला है। **(26)** और हमने (हिजरत के बाद) उनको इसहाक़ (बेटा) और याकूब (पोता) इनायत फ़रमाया, और हमने उनकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब (के सिलसिले) को क़ायम रखा, और हमने उनका सिला उनको दुनिया में भी दिया और आख़िरत में भी (बड़े दर्जे के) नेक बन्दों में होंगे।[1] **(27)** और हमने लूत (अ़लैहिस्सलाम) को पैग़म्बर बनाकर भेजा, ज़बकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले किसी ने दुनिया जहान वालों में नहीं किया। **(28)** क्या तुम मर्दों से फ़ेल "यानी बुरा काम" करते हो, (वह बेहयाई का काम यही है) और तुम डाका डालते हो, और (ग़ज़ब यह है कि) अपनी भरी मज्लिस में नामाकूल हरकत करते हो।[2] सो उनकी क़ौम का (आख़िरी) जवाब बस यह था कि तुम हमपर अल्लाह का अ़ज़ाब ले आओ अगर तुम (इस बात में) सच्चे हो (कि ये काम अ़ज़ाब को लाने वाले हैं)। **(29)** लूत (अ़लैहिस्सलाम) ने दुआ़ की, ऐ मेरे रब! मुझको इन फ़साद "यानी बिगाड़" पैदा करने वाले लोगों पर ग़ालिब (और इनको अ़ज़ाब से हलाक) कर दे।[3] **(30)** ❖

और हमारे (वे) भेजे हुए फ़रिश्ते जब इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के पास ख़ुशख़बरी लेकर आए तो (बातचीत के दौरान में) उन फ़रिश्तों ने (इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से) कहा कि हम इस बस्ती वालों को हलाक करने वाले हैं, (क्योंकि) वहाँ के रहने वाले बड़े शरीर हैं। **(31)** इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि वहाँ तो लूत (अ़लैहिस्सलाम भी मौजूद) हैं। फ़रिश्तों ने कहा कि जो-जो वहाँ (रहते) हैं हमको सब मालूम हैं। हम उनको और उनके ख़ास मुताल्लिक़ीन को बचा लेंगे सिवाय उनकी बीवी के, कि वह अ़ज़ाब में रह जाने वालों में होगी। **(32)** (यह बातचीत तो इब्राहीम अ़लैहि. से हुई) और (फिर वहाँ से फ़ारिग़ होकर) जब हमारे वे भेजे हुए लूत के पास पहुँचे तो लूत (अ़लैहिस्सलाम) उन (के आने) की वजह से रन्जीदा हुए[4] और उनके सबब तंगदिल हुए। और (फ़रिश्तों ने जब यह हाल देखा तो) वे फ़रिश्ते कहने लगे कि आप (किसी बात का) अन्देशा न करें और न रन्जीदा हों, हम आप और आपके ख़ास मुताल्लिक़ीन को बचा लेंगे सिवाय आपकी बीवी के, कि वह अ़ज़ाब में रह जाने वालों में होगी। **(33)** (और आपको मय मुताल्लिक़ीन उससे बचाकर) हम इस बस्ती के (बक़िया) रहने वालों पर एक आसमानी अ़ज़ाब उनकी बदकारियों की सज़ा में नाज़िल करने वाले हैं।[5] **(34)** और हमने उस बस्ती के कुछ ज़ाहिरी निशान (अब तक) रहने दिए हैं उन लोगों (की इबरत) के लिए जो अ़क़्ल रखते हैं।[6] **(35)** और मद्यन वालों के पास हमने उन (की बिरादरी) के भाई शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को पैग़म्बर बनाकर भेजा। सो उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो (और शिर्क छोड़ दो) और क़ियामत के दिन से डरो, और सरज़मीन में फ़साद मत फैलाओ।[7] **(36)** सो उन

(पृष्ठ 720 का शेष) 7. वह मेरी हिफ़ाज़त करेगा और मुझको इसका फल देगा।

1. इस सिला से मुराद अल्लाह की निकटता और उसके यहाँ मक़बूल होना है।
2. और गुनाह का ऐलान और ज़ाहिर करना यह खुद एक गुनाह और अ़क़्ली तौर पर बुरी चीज़ है।
3. और उनकी दुआ़ क़बूल होने के बाद अल्लाह तआ़ला ने अ़ज़ाब की ख़बर देने के लिए फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा दिए। और दूसरा काम उन फ़रिश्तों को यह बतलाया गया कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को इसहाक़ के पैदा होने की ख़ुशख़बरी दें।
4. क्योंकि वे हसीन नौजवानों की शक्ल में आए थे और लूत अ़लैहिस्सलाम ने उनको आदमी समझा, और अपनी क़ौम की नामाकूल हरकत का ख़्याल आया।
5. चुनाँचे वह बस्ती उलट दी गई और ग़ैब से पत्थर बरसाए गए।
6. चुनाँचे मक्का वाले मुल्क शाम के सफ़र में उन वीरान स्थानों को देखते थे, और जो अ़क़्लमन्द थे वे फ़ायदा भी उठाते थे कि डरकर ईमान ले आते थे। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 724 पर)**

यअ्क़िलून (35) व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुअैबन् फ़क़ा-लं या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह वर्जुल्-यौमल्-आख़ि-र व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (36) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़ज़त्हुमुर्-रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (37) व आदंव्-व समू-द व क़त्-त-बय्य-न लकुम् मिम्-मसाकिनिहिम्, व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्मालहुम् फ़-सद्दहुम् अनिस्सबीलि व कानू मुस्तब्सिरीन (38) व क़ारू-न व फ़िर्औ-न व हामा-न, व ल-क़द् जा-अहुम् मूसा बिल्बय्यिनाति फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि व मा कानू साबिक़ीन (39) फ़-कुल्लन् अख़ज़्ना बि-ज़म्बिही फ़-मिन्हुम् मन् अर्सल्ना अ़लैहि हासिबन् व मिन्हुम् मन् अ-ख़ज़त्हुस्सै-हतु व मिन्हुम् मन् ख़सफ़्ना बिहिल्-अर्-ज़ व मिन्हुम् मन् अग्रक़्ना व मा कानल्लाहु लि-यज़्लि--महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (40) म-सलुल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ क-म-सलिल्-अ़न्कबूति इत्त-ख़ाज़त् बैतन्, व इन्-न औ-हनल्-बुयूति लबैतुल्- अ़न्कबूति ✣ लौ कानू यअ्लमून (41) इन्नल्ला-ह यअ्लमु मा यद्अू-न मिन् दूनिही मिन् शैइन्, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (42) व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि व मा यअ्क़िलुहा इल्लल्-आ़लिमून (43) ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिल्मुअ्मिनीन (44) ❖

يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا
اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٦﴾
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٣٧﴾
وَعَادًا وَثَمُودَا وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَسَاكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٨﴾
وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ
فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا أَخَذْنَا
بِذَنْبِهِ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ
أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ
مَنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ
الْعَنْكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ
الْعَنْكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ
دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 4/14/16

लोगों ने शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया, पस ज़लज़ले ने उनको आ पकड़ा, फिर वे अपने घरों में औंधे गिरकर रह गए। **(37)**) और हमने आ़द और समूद को भी (उनके बैर और मुख़ालफ़त की वजह से) हलाक किया, और यह हलाक होना तुमको उनके रहने के स्थानों से नज़र आ रहा है।[1] और (उनकी यह हालत थी कि) शैतान ने उनके (बुरे) आमाल को उनकी नज़र में अच्छा कर रखा था, और (इस तरह से) उनको (हक़) रास्ते से रोक रखा था, और वे लोग (वैसे) होशियार थे। **(38)** और हमने क़ारून और फ़िरऔ़न और हामान को भी (उनके कुफ़्र के सबब) हलाक किया। और उन (तीनों) के पास मूसा (अ़लैहिस्सलाम हक़ की) खुली दलीलें लेकर आए थे, फिर उन लोगों ने ज़मीन में सरकशी की और (हमारे अ़ज़ाब से) भाग न सके। **(39)** तो हमने हर एक को उसके गुनाह की सज़ा में पकड़ लिया। सो उनमें बाज़ों पर तो हमने तेज़ हवा भेजी[2] और उनमें बाज़ों को हौलनाक आवाज़ ने आ दबाया।[3] और उनमें बाज़ को हमने ज़मीन में धँसा दिया।[4] और उनमें बाज़ को हमने (पानी में) डुबो दिया।[5] और अल्लाह ऐसा न था कि उनपर ज़ुल्म करता, लेकिन यही लोग (शरारतें करके) अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते थे।[6] **(40)** जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा और कारसाज़ तजवीज़ कर रखे हैं, उन लोगों की मिसाल मकड़ी जैसी मिसाल है, जिसने एक घर बनाया, और कुछ शक नहीं कि सब घरों में ज़्यादा बोदा मकड़ी का घर होता है। अगर वे (हक़ीक़ते हाल को) जानते तो ऐसा न करते।[7] **(41)** अल्लाह तआ़ला (तो) उन सब चीज़ों (की हक़ीक़त और कमज़ोरी) को जानता है जिस-जिसको वे लोग ख़ुदा के सिवा पूज रहे हैं। (पस वे चीज़ें तो बहुत ही कमज़ोर हैं) और वह (अल्लाह तआ़ला) ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। **(42)** और हम इन (क़ुरआनी) मिसालों को लोगों के (समझाने के) लिए बयान करते हैं, और मिसालों को बस इल्म वाले लोग ही समझते हैं। **(43)** अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को मुनासिब तौर पर बनाया है। ईमान वालों के लिए इसमें (अल्लाह के इबादत का हक़दार होने की) बड़ी दलील है।[8] **(44)** ❖

(पृष्ठ 722 का शेष) 7. यानी अल्लाह और बन्दों के हुक़ूक़ को ज़ाया मत करो, जैसा कि कुफ़्र व शिर्क के साथ कम नापने-तौलने के भी आ़दी थे। और इन्साफ़ के अगर क़ायम न रखा जाए तो उससे जो फ़साद व बिगाड़ फैलेगा वह ज़ाहिर है।

1. कि वीरानी और बरबादी के आसार उनसे ज़ाहिर हैं। और ये मक़ामात (यानी स्थान) मुल्क शाम को जाते हुए मिलते थे।

2. इससे क़ौमे आ़द मुराद है।

3. इससे क़ौमे समूद मुराद है।

4. इससे क़ारून मुराद है।

5. इससे फ़िरऔ़न और हामान मुराद है।

6. सूरः के शुरू से यहाँ तक काफ़िरों के मुसलमानों को तकलीफ़ देने के मज़मून बयान होता चला आया है। आगे तौहीद व नुबुव्वत की तहक़ीक़ है जो असल बिना थी इस तकलीफ़ पहुँचाने की, और इससे उस तकलीफ़ पहुँचाने का नाहक़ होना भी वाज़ेह हो जाएगा।

7. पस जैसे उस मकड़ी ने अपने ख़्याल में अपनी एक पनाह लेने की जगह बनाई है, मगर हक़ीक़त में वह पनाह की जगह बहुत ही कमज़ोर होने की वजह से न होने के बराबर है, इसी तरह ये मुश्रिक लोग बातिल माबूदों को अपने गुमान में अपनी पनाह समझते हैं, मगर हक़ीक़त में वह पनाह कुछ नहीं है।

8. ऊपर तौहीद का ज़िक्र था आगे नुबुव्वत का ज़िक्र है। इस तरतीब से कि पहले हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को "उत्लु मा ऊहि-य इलै-क" से ज़बानी तब्लीग़ और "अक़िमिस्सला-त" से अ़मली तब्लीग़ का हुक्म, और उसके बाद के जुमलों (यानी वाक्यों) में अल्लाह के इल्म का बयान किया और आमाल की फ़ज़ीलत बयान की, जिससे तरग़ीब देना और डराना और शरीअ़त के मुक़र्ररा मक़सूद की तब्लीग़ है। और "ला तुजादिलू......आख़िर तक" से "क़ुल कफ़ा बिल्लाहि......" तक रिसालत का इनकार करने वालों से कलाम किया, पहले अहले किताब से फिर ग़ैर-अहले किताब से। फिर आगे "यस्तअ़जिलून-क" से बाज़ रिसालत का इनकार करने वालों के एक शुब्हे का जवाब ज़िक्र किया गया है।

इक्कीसवाँ पारः उत्लु मा ऊहि-य

सूरतुल्-अ़न्कबूति (आयत 45 से 69)

उत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिनल्-किताबि व अक़िमिस्सला-त, इन्नस्सला-त तन्हा अ़निल् फ़ह्शा-इ वल्मुन्करि, व ल-ज़िक्रुल्लाहि अक्बरु, वल्लाहु यअ़्लमु मा तस्नअ़ून (45) व ला तुजादिलू अह्लल्-किताबि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलैना व उन्ज़ि-ल इलैकुम् व इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदुंव्-व नह्नु लहू मुस्लिमून (46) व कज़ालि-क अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब, फ़ल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब युअ्मिनू-न बिही व मिन् हाउला-इ मंय्युअ्मिनु बिही, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लल्-काफ़िरून (47) व मा कुन्-त तत्लू मिन् क़ब्लिही मिन् किताबिंव्-व ला तख़ुत्तुहू बि-यमीनि-क इज़ल्-लर्ताबल्-मुब्तिलून (48) बल् हु-व आयातुम् बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लज़्ज़ालिमून (49) व क़ालू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयातुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नमल्-आयातु अ़िन्दल्लाहि, व इन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन (50) अ-व लम् यक्फ़िहिम् अन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब युत्ला अ़लैहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-रह्म-तंव्-व ज़िक्रा लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (51) ❖

क़ुल् कफ़ा बिल्लाही बैनी व बैनकुम् शहीदन् यअ़्लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि,

اُتۡلُ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡکَ مِنَ الۡکِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوۃَ
تَنۡہٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَ الۡمُنۡکَرِ ؕ وَ لَذِکۡرُ اللّٰہِ اَکۡبَرُ ؕ وَ اللّٰہُ یَعۡلَمُ
مَا تَصۡنَعُوۡنَ ﴿۴۵﴾ وَ لَا تُجَادِلُوۡۤا اَہۡلَ الۡکِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیۡ ہِیَ
اَحۡسَنُ ٭ۖ اِلَّا الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡہُمۡ وَ قُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ
اِلَیۡنَا وَ اُنۡزِلَ اِلَیۡکُمۡ وَ اِلٰـہُنَا وَ اِلٰـہُکُمۡ وَاحِدٌ وَّ نَحۡنُ لَہٗ مُسۡلِمُوۡنَ ﴿۴۶﴾
وَ کَذٰلِکَ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَیۡکَ الۡکِتٰبَ ؕ فَالَّذِیۡنَ اٰتَیۡنٰہُمُ الۡکِتٰبَ
یُؤۡمِنُوۡنَ بِہٖ ۚ وَ مِنۡ ہٰۤؤُلَآءِ مَنۡ یُّؤۡمِنُ بِہٖ ؕ وَ مَا یَجۡحَدُ
بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الۡکٰفِرُوۡنَ ﴿۴۷﴾ وَ مَا کُنۡتَ تَتۡلُوۡا مِنۡ قَبۡلِہٖ مِنۡ
کِتٰبٍ وَّ لَا تَخُطُّہٗ بِیَمِیۡنِکَ اِذًا لَّارۡتَابَ الۡمُبۡطِلُوۡنَ ﴿۴۸﴾ بَلۡ
ہُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیۡ صُدُوۡرِ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ ؕ وَ مَا یَجۡحَدُ
بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۴۹﴾ وَ قَالُوۡا لَوۡ لَاۤ اُنۡزِلَ عَلَیۡہِ اٰیٰتٌ مِّنۡ
رَّبِّہٖ ؕ قُلۡ اِنَّمَا الۡاٰیٰتُ عِنۡدَ اللّٰہِ ؕ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیۡرٌ مُّبِیۡنٌ ﴿۵۰﴾
اَوَ لَمۡ یَکۡفِہِمۡ اَنَّاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ یُتۡلٰی عَلَیۡہِمۡ ؕ اِنَّ
فِیۡ ذٰلِکَ لَرَحۡمَۃً وَّ ذِکۡرٰی لِقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۱﴾ قُلۡ کَفٰی بِاللّٰہِ
بَیۡنِیۡ وَ بَیۡنَکُمۡ شَہِیۡدًا ۚ یَعۡلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ
وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِالۡبَاطِلِ وَ کَفَرُوۡا بِاللّٰہِ ۙ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۵۲﴾

इक्कीसवाँ पारः उत्लु मा ऊहि-य

सूरः अ़न्कबूत (आयत 45 से 69)

जो किताब आप पर वह्य की गई है आप उसको पढ़ा कीजिए। और नमाज़ की पाबन्दी रखिए। बेशक नमाज़ (अपनी शक्ल और ज़ाहिरी हालात के एतिबार से) बेहयाई और नामाकूल कामों से रोक-टोक करती रहती है,[1] और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है। और अल्लाह तुम्हारे सब कामों को जानता है। **(45)** और तुम अहले किताब के साथ सिवाय मुहज़्ज़ब तरीक़े के बहस मत करो। हाँ, जो उनमें ज़्यादती करें,[2] और यूँ कहो कि हम उस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो हमपर नाज़िल हुई और उन किताबों पर भी जो तुमपर नाज़िल हुईं। और (यह तुम भी मानते हो) कि हमारा और तुम्हारा माबूद एक है, और हम तो उसकी इताअ़त करते हैं। **(46)** और इसी तरह हमने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई। सो जिन लोगों को हमने किताब (की नफ़ा देने वाली समझ) दी है, वे इस (आप वाली) किताब पर ईमान ले आते हैं, और इन (अ़रब के मुश्रिक) लोगों में भी बाज़े ऐसे (इन्साफ़ पसन्द) हैं कि इस किताब पर ईमान ले आते हैं। और हमारी आयतों से सिवाय (ज़िद्दी) काफ़िरों के और कोई मुन्किर नहीं होता। **(47)** और आप इस किताब से पहले न कोई किताब पढ़े हुए थे और न कोई किताब अपने हाथ से लिख सकते थे, कि ऐसी हालत में यह हक़ न पहचानने वाले लोग कुछ शुब्हा निकालते। **(48)** बल्कि यह किताब ख़ुद बहुत-सी वाज़ेह दलीलें हैं उन लोगों के ज़ेहन में जिनको इल्म अ़ता हुआ है, और हमारी आयतों से बस ज़िद्दी लोग इनकार किए जाते हैं। **(49)** और ये लोग यूँ कहते हैं कि उनपर उनके रब के पास से निशानियाँ क्यों नहीं नाज़िल हुईं। आप कह दीजिए कि वे निशानियाँ तो ख़ुदा के क़ब्ज़े में हैं और मैं तो सिर्फ़ एक साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। **(50)** क्या उन लोगों को यह बात काफ़ी नहीं हुई कि हमने आप पर यह किताब नाज़िल फ़रमाई जो उनको सुनाई जाती रहती है, बेशक इस किताब में ईमान लाने वाले लोगों के लिए बड़ी रहमत और नसीहत है। **(51)** ❖

आप यह कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह काफ़ी है। उसको सब चीज़ की ख़बर है जो आसमानों में है और ज़मीन में है, और जो लोग झूठी बातों पर यक़ीन रखते हैं और अल्लाह तआ़ला के मुन्किर हैं तो वे लोग बड़े घाटा उठाने वाले हैं।[3] **(52)** और ये लोग आपसे अ़ज़ाब का तक़ाज़ा करते हैं। और अगर (अल्लाह तआ़ला के इल्म में अ़ज़ाब आने की) मीयाद मुक़र्रर न होती तो उनपर अ़ज़ाब

1. यानी नमाज़ ज़बाने हाल से कहती है कि जिस माबूद की तू इतनी ताज़ीम करता है 'बेहयाई' और 'बुरे कामों' करके उसकी बेअदबी करना बहुत ही नामुनासिब है।

2. यानी उनको तुर्की-ब-तुर्की जवाब देने में कोई हर्ज नहीं, अगरचे अफ़ज़ल जब भी वही तरीक़ा है। यानी अच्छे अन्दाज़ से उनसे बहस-मुबाहसा किया जाए।

3. यानी जब अल्लाह तआ़ला के इरशाद से मेरी रिसालत साबित है तो उसका इनकार करना अल्लाह का इनकार करना है, और अल्लाह तआ़ला का इल्म घेरने वाला है, तो उसको इस इनकार करने और कुफ़्र की भी ख़बर है और अल्लाह तआ़ला कुफ़्र पर घाटे में रहने की सज़ा देते हैं। पस ज़रूर ऐसे लोग घाटा उठाने वाले होंगे।

❖ रु. 5/7/1

वल्लज़ी-न आमनू बिल्बातिलि व क-फ़रू बिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(52)** व यस्तअ्जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि, व लौ ला अ-जलुम्-मुसम्मल्-लजा-अहुमुल्-अ़ज़ाबु, व ल-यअ्ति-यन्नहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(53)** यस्तअ्जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि, व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम्- बिल्-काफ़िरीन **(54)** यौ-म यग़्शाहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् व यक़ूलु ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तअ्मलून **(55)** या अ़िबादि-यल्लज़ी-न आमनू इन्-न अर्ज़ी वासि-अ़तुन् फ़-इय्या-य फ़अ्बुदून **(56)** कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ-क़तुल्मौति, सुम्-म इलैना तुर्जअून **(57)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति लनुबव्वि-अन्नहुम् मिनल्-जन्नति गु-रफ़न् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, निअ्-म अज्रुल्-आ़मिलीन **(58)** अल्लज़ी-न स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून **(59)** व क-अय्यिम् मिन् दाब्बतिल्-ला तह्मिलु रिज़्-क़हा अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व इय्याकुम् व हुवस्-समीअुल्-अ़लीम **(60)** व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून **(61)** अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लहू, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(62)** व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् नज़्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ मिम्बअ्दि मौतिहा ल-यक़ूलुन्नल्लाहु, क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्क़िलून **(63)** ❖

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَآ أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ
الْعَذَابُ ۚ وَلَيَأْتِيَنَّهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُونَكَ
بِالْعَذَابِ ۚ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشَاهُمُ
الْعَذَابُ مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا
مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي
وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ
ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ۚ نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٥٨﴾ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾ وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا
اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِن سَأَلْتَهُم
مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٦١﴾ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾
وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ
مِن بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ

❖ रु. 6/12/2

आ चुका होता, और वह अज़ाब उनपर एकदम से आ पहुँचेगा, और उनको ख़बर भी न होगी। **(53)** ये लोग आपसे अज़ाब का तक़ाज़ा करते हैं और इसमें कुछ शक नहीं कि जहन्नम उन काफ़िरों को घेर लेगी। **(54)** जिस दिन कि उनपर अज़ाब उनके ऊपर से और उनके नीचे से घेर लेगा और हक़ तआला फ़रमाएगा कि जो कुछ करते रहे हो (अब उसका मज़ा) चखो।[1] **(55)** ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो! मेरी ज़मीन फ़राख़ "यानी खुली हुई और बहुत बड़ी" है सो ख़ालिस मेरी ही इबादत करो।[2] **(56)** हर शख़्स को मौत का मज़ा चखना है,[3] फिर तुम सबको हमारे पास आना है। **(57)** और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अमल किए हम उनको जन्नत के बालाख़ानों में जगह देंगे, जिनके नीचे से नहरें चलती होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (नेक) काम करने वालों का क्या अच्छा अज्र है। **(58)** जिन्होंने सब्र किया,[4] और वे अपने रब पर भरोसा किया करते थे।[5] **(59)** और बहुत-से जानवर ऐसे हैं कि जो अपनी गिज़ा उठाकर नहीं रखते, अल्लाह ही उनको (उनके लिए लिखी गई) रोज़ी पहुँचाता है और तुमको भी, और वह सब कुछ सुनता, सब कुछ जानता है।[6] **(60)** और अगर आप उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया? और जिसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, तो वे लोग यही कहेंगे कि वह अल्लाह तआला है, फिर किधर उल्टे चले जा रहे हैं।[7] **(61)** अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ "खोल देता और ज़्यादा" कर देता है, और जिसके लिए चाहे तंग कर देता है। बेशक अल्लाह ही हर चीज़ के हाल से वाक़िफ़ है। **(62)** और अगर आप उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे ज़मीन को इसके बाद कि वह खुश्क पड़ी थी तरोताज़ा कर दिया। तो वे लोग यही कहेंगे कि वह भी अल्लाह है, आप कहिए कि अल्हम्दु लिल्लाहि, बल्कि उनमें अक्सर समझते नहीं।[8] **(63)** ❖

---

1. पस वह अज़ाब जहन्नम का अज़ाब है और वह मीयाद क़ियामत का दिन है।

2. यानी जब ये लोग अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी और बैर की वजह से शरीअत की चीज़ों को क़ायम करने और दीन को इख़्तियार करने पर तकलीफ़ पहुँचाते हैं तो यहाँ रहने की क्या ज़रूरत है, मेरी ज़मीन बहुत बड़ी है। अगर यहाँ रहकर इबादत नहीं कर सकते तो कहीं और चले जाओ और वहाँ जाकर ख़ालिस मेरी ही इबादत करो।

3. यानी अगर हिजरत करने में तुमको यार-दोस्त और अपने वतनों को छोड़ना भारी मालूम हो तो यह समझ लो कि एक-न-एक दिन तो यह होना ही है, क्योंकि हर शख़्स को ज़रूर मौत का मज़ा चखना है, आख़िर उस वक़्त सब छूटेंगे।

4. यानी पेश आने वाली सख़्तियों पर जिनमें हिजरत की सख़्ती भी दाख़िल है, सब्र किया।

5. यानी जो तकलीफ़ें आ सकती हों उनके आने के अन्देशे के वक़्त वह अपने रब पर भरोसा करते थे, जिनमें दूसरी संभावित सख़्तियों के साथ रोज़ी का अन्देशा भी आ गया।

6. यानी दिल मज़बूत करके अल्लाह पर भरोसा रखो, और वह भरोसे के लायक़ है, क्योंकि वह सब कुछ सुनता सब कुछ जानता है। इसी तरह दूसरी सिफ़तों में कामिल है। और जो ऐसा कामिल सिफ़तों वाला हो वह ज़रूर भरोसे के क़ाबिल है।

7. यानी माबूद होने में तौहीद का जो आधार है, यानी पैदा करने और बनाने में वह तो उन लोगों के नज़दीक भी मुसल्लम है, फिर जब पैदा करने और बनाने की तौहीद को मानते हैं तो फिर माबूद होने में तौहीद के बारे में किधर उल्टे चले जा रहे हैं।

8. इस वजह से नहीं कि अक़्ल नहीं, बल्कि अक़्ल से काम नहीं लेते और ग़ौर नहीं करते। इसलिए बिलकुल आम-सी औरी ज़ाहिर चीज़ भी आँखों से ओझल रहती है।

व मा हाज़िहिल्-हयातुद्दुन्या इल्ला लह्वुंव्-व लअिबुन्, व इन्नद्दारल्-आख़ि-र-त लहि-यल् ह-यवानु ✣ लौ कानू यअ्लमून (64) फ़-इज़ा रकिबू फ़िल्-फ़ुल्कि द-अ़वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, फ़-लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून (65) लि-यक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् व लि-य-तमत्तअ़ू, फ़सौ-फ़ यअ्लमून (66) अ-व लम् यरौ अन्ना जअ़ल्ना ह-रमन् आमिनंव्-व यु-तख़त्-त-फ़ुन्नासु मिन् हौलिहिम्, अ-फ़बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि यक्फ़ुरून (67) व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहू, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्काफ़िरीन (68) वल्लज़ी-न जा-हदू फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबुलना, व इन्नल्ला-ह ल-मअ़ल्मुह्सिनीन (69) ❖

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۶۳﴾ وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ۭ وَ
اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاِذَا
رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ
اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا
فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ
النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ
يَكْفُرُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ
كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى
لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾

سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿۲﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ
غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿۳﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ
وَمِنْ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۴﴾ بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ
مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۵﴾ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ

منزل ۵

30 सूरतुर्-रूमि 84

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3547 अक्षर, 827 शब्द, 60 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) ग़ुलि-बतिर्रूम (2) फ़ी अद्नल्-अर्ज़ि व हुम् मिम्बअ़्दि ग़-लबिहिम् स-यग़्लिबून (3) फ़ी बिज़्अि सिनी-न, लिल्लाहिल्-अम्रु मिन् क़ब्लु व मिम्बअ़्दु, व यौमइज़िंय्-यफ़्रहुल्-मुअ्मिनून (4) बिनस्रिल्लाहि, यन्सुरु मंय्यशा-उ, व हुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (5) वअ़्दल्लाहि, ला युख़्लिफ़ुल्लाहु वअ़्-दहू व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (6) यअ्लमू-न ज़ाहिरम् मिनल्-हयातिद्दुन्या व हुम् अ़निल्-आख़िरति हुम्
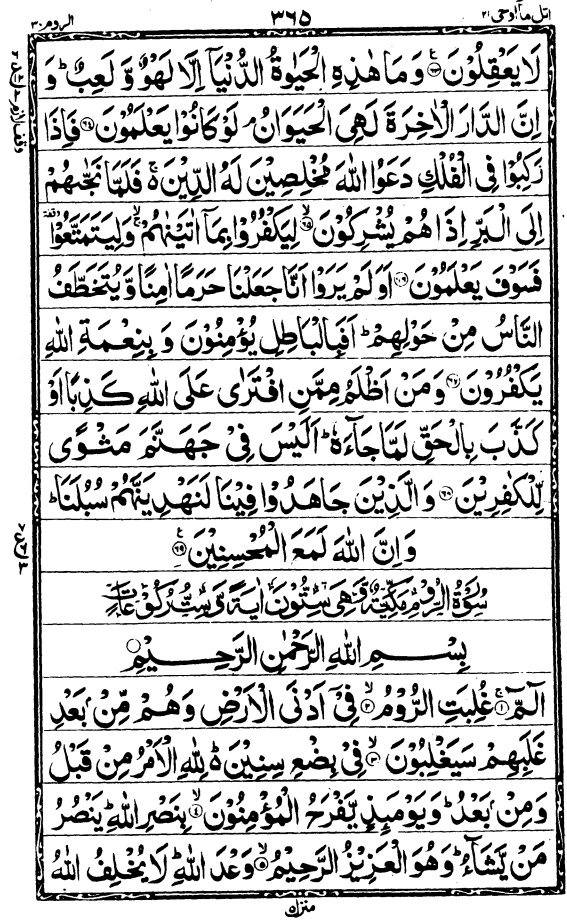
और यह दुनियावी ज़िन्दगी (अपने आपमें) सिवाय खेल-तमाशे के और कुछ भी नहीं, और असल ज़िन्दगी आ़लमे आख़िरत है। अगर उनको इसका इल्म होता तो ऐसा न करते।[1] **(64)** फिर जब ये लोग कश्ती में सवार होते हैं तो ख़ालिस एतिक़ाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं। फिर जब उनको नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले आता है, तो वे फ़ौरन ही शिर्क करने लगते हैं। **(65)** जिसका हासिल यह है कि हमने जो नेमत उनको दी है उसकी नाक़द्री करते हैं, और ये लोग थोड़ा और फ़ायदा हासिल कर लें, फिर जल्द ही उनको सब ख़बर हुई जाती है। **(66)** क्या उन लोगों ने इस बात पर नज़र नहीं की कि हमने अमन वाला हरम बनाया है,[2] और उनके आस-पास में लोगों को निकाला जा रहा है, फिर क्या ये लोग झूठे माबूदों पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री करते हैं।[3] **(67)** और उस शख़्स से ज़्यादा कौन नाइन्साफ़ होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और जब सच्ची बात उसके पास पहुँचे वह उसको झुठलाए,[4] क्या ऐसे काफ़िरों का जहन्नम में ठिकाना न होगा।[5] **(68)** और जो लोग हमारी राह में मशक़्क़तें बरदाश्त करते हैं, हम उनको अपनी (निकटता और सवाब यानी जन्नत के) रास्ते ज़रूर दिखा देंगे, और बेशक अल्लाह (की रिज़ा व रहमत) ऐसे ख़ुलूस वालों के साथ है। **(69)** ❖

30 सूरः रूम 84

सूरः रूम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 60 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अलिफ़्-लाम्-मीम् **(1)** रूम वाले एक क़रीब के मौक़े में मग़्लूब हो गए।[6] **(2)** और वे अपने मग़्लूब होने के बाद जल्द ही तीन साल से लेकर नौ साल के अन्दर-अन्दर ग़ालिब आ जाएँगे। **(3)** पहले भी इख़्तियार अल्लाह तआ़ला ही को था और बाद में भी, और उस दिन मुसलमान अल्लाह तआ़ला की उस इम्दाद पर ख़ुश होंगे। **(4)** वह जिसको चाहे ग़ालिब कर देता है और वह ज़बरदस्त है, (और) रहीम है। **(5)** अल्लाह

---

1. कि फ़ानी में मश्ग़ूल होकर बाक़ी को भुला देते और उसके लिए सामान न करते, बल्कि ये लोग दलीलों में ग़ौर करते और ईमान ले आते जैसा कि पैदा करने और वजूद में लाने तथा बाक़ी रखने में वे तौहीद के इक़रारी हैं।
2. यानी मक्का शहर को।
3. क्योंकि शिर्क से बढ़कर कोई नाशुक्री नहीं कि पैदा करने, रिज़्क़ देने और बाक़ी रखने और तदबीर वग़ैरह की नेमत वह अ़ता फ़रमाए और इबादात जो कि इन नेमतों का शुक्र है दूसरे के लिए तजवीज़ की जाए।
4. बेइन्साफ़ी ज़ाहिर है कि बिना दलील वाली बात की तो तस्दीक़ करे और दलील वाली बात को झुठलाए।
5. यानी ज़रूर होगा।
6. एक बार रूम और फ़ारस (यानी प्राचीन ईरान) में मक़ाम 'अज़रआ़त' और 'बसरा' के दरमियान लड़ाई हुई और रूमी मग़्लूब हो गए। मक्का के मुश्रिक लोग मुसलमानों से कहने लगे कि तुम और रूमी अहले किताब हो और हम और फ़ारसी ग़ैर-अहले किताब हैं, पस रूम पर फ़ारस का ग़ालिब आना इसका शगून है कि हम भी तुमपर ग़ालिब रहेंगे, इसपर ये आयतें नाज़िल हुईं। जिनमें पेशीनगोई है कि नौ साल के अन्दर रूमी फ़ारसियों पर ग़ालिब आ जाएँगे। चुनाँचे उससे सातवें साल फिर दोनों का मुक़ाबला हुआ और रूमी ग़ालिब आ गए जिससे वह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) पूरी हुई।

ग़ाफ़िलून **(7)** अ-व लम् य-तफ़क्करू फ़ी अन्फ़ुसिहिम्, मा ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्, व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् लकाफ़िरून **(8)** अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व असारुल्-अर्-ज़ व अ-मरूहा अक्स-र मिम्मा अ-मरूहा व जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति, फ़मा कानल्लाहु लियज़्लि--महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(9)** सुम्-म का-न आक़ि-बतल्लज़ी-न असाउस्सूआ अन् कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि व कानू बिहा यस्तह्ज़िऊन **(10)** ❖

अल्लाहु यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युओदुहू सुम्-म इलैहि तुर्जअून **(11)** व यौ-म तक़ूमुस्सा-अतु युब्लिसुल्-मुज्रिमून **(12)** व लम् यकुल्-लहुम् मिन् शु-रकाइहिम् शु-फ़आ-उ व कानू बिशु-रकाइहिम् काफ़िरीन **(13)** व यौ-म तक़ूमुस्सा-अतु यौमइज़िंय्-य-तफ़र्रक़ून **(14)** फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़हुम् फ़ी रौज़तिंय्-युह्-बरून **(15)** व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल्-आख़िरति फ़-उलाइ-क फ़िल्अज़ाबि मुह्ज़रून **(16)** फ़सुब्हानल्लाहि ही-न तुम्सू-न व ही-न तुस्बिहून **(17)** व लहुल्-हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अशिय्यंव्-व ही-न तुज़्हिरून **(18)**

الروم٣٠ ٣٦٦ اتل ما اوحي ٢١

وَعْدَهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا
مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝ اَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
النَّاسِ بِلِقَاۤئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوْۤا اَشَدَّ
مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَاۤ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا
وَجَاۤءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۗ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَاۤءُوا
السُّوْۤاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَللّٰهُ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ
يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَاۤئِهِمْ شُفَعٰۤؤُا وَكَانُوْا
بِشُرَكَاۤئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝
وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاۤئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰۤئِكَ فِي
الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝

منزل ٥

तआला ने इसका वायदा फ़रमाया है, अल्लाह तआला अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं फ़रमाता,[1] और लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। **(6)** ये लोग सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी के ज़ाहिर को जानते हैं और ये लोग आख़िरत से बेख़बर हैं।[2] **(7)** क्या उन्होंने अपने दिलों में यह ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान में हैं, किसी हिक्मत ही से और एक मुक़र्ररा मीयाद के लिए पैदा किया है,[3] और बहुत-से आदमी अपने रब के मिलने के मुन्किर हैं,[4] **(8)** क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं जिसमें देखते-भालते कि जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका अन्जाम क्या हुआ, वे इनसे कुव्वत में भी बढ़े हुए थे, और उन्होंने ज़मीन को बोया-जोता था। और जितना इन्होंने उसको आबाद कर रखा है उससे ज़्यादा उन्होंने उसको आबाद किया था, और उनके पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े लेकर आए थे, सो अल्लाह ऐसा न था कि उनपर ज़ुल्म करता और लेकिन वे तो खुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे।[5] **(9)** फिर ऐसे लोगों का अन्जाम जिन्होंने बुरा काम किया था बुरा ही हुआ,[6] इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह तआला की आयतों को झुठलाया था और उनकी हँसी उड़ाते थे। **(10)** ❖

अल्लाह तआला मख़्लूक़ को पहली बार भी पैदा करता है, फिर वही दोबारा भी उसको पैदा करेगा, फिर उसके पास लाए जाओगे। **(11)** और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन मुजरिम लोग हैरान रह जाएँगे।[7] **(12)** और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफ़ारिशी न होगा, और ये लोग अपने शरीकों से मुन्किर हो जाएँगे। **(13)** और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन सब आदमी अलग-अलग हो जाएँगे। **(14)** यानी जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किए थे, वे तो बाग़ में खुश "और प्रसन्न" होंगे। **(15)** और जिन लोगों ने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुठलाया था वे लोग अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे।[8] **(16)** सो तुम अल्लाह की तस्बीह किया करो शाम के वक़्त और सुबह के

---

1. इसलिए यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) ज़रूर पूरी होगी।

2. इसलिए उनको न सज़ा के असबाब का अन्देशा है जो कि कुफ़्र व इनकार है, न नजात के असबाब की फ़िक्र है जो कि तस्दीक़ व ईमान है।

3. उन हिक्मतों में से एक आमाल का बदला देना है, और मुक़र्ररा मीयाद क़ियामत है।

4. अगर अपने दिलों में ग़ौर करते तो इन वाक़िआत की संभावना अक़्ल से और उनका आना और ज़ाहिर होना नक़्ल से, और उस नक़्ल का सच्चा होना मोजिज़े से ज़ाहिर हो जाता और आख़िरत के इनकारी न होते। मगर ग़ौर न करने से इनकारी हो रहे हैं।

5. कि रसूलों का इनकार करके हलाकत के हक़दार बने।

6. वह अन्जाम दोज़ख़ की सज़ा है।

7. यानी कोई उचित बात उनसे बन न पड़ेगी।

8. ये मायने हैं अलग-अलग होने के।

युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्-मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, व कज़ालि-क तुख़्रजून (19) ❖

व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म इज़ा अन्तुम् ब-शरुन् तन्तशिरून (20) व मिन् आयातिही अन् ख़ा-ल-क़ लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजल्-लितस्कुनू इलैहा व ज-अ्-ल बैनकुम् मवद्द-तंव्-व रह्म-तन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून (21) व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़ु-अल्सि-नतिकुम् व अल्वानिकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिल्-आलमीन (22) व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब्तिग़ा-उकुम् मिन् फ़ज़्लिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्यस्-मअून (23) व मिन् आयातिही युरीकुमुल्-बर्-क़ ख़ौफ़ंव्-व त-मअंव्-व युनज़्ज़िलु मिनस्-समा-इ मा-अन् फ़युह्यी बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (24) व मिन् आयातिही अन् तक़ूमस्समा-उ वल्अर्ज़ु बिअम्रिही, सुम्-म इज़ा दआकुम् दअ्-वतम्-मिनल्अर्ज़ि इज़ा अन्तुम् तख़्रुजून (25) व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्लुल्-लहू क़ानितून (26) व हुवल्लज़ी यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअीदुहू व हु-व अह्वनु अ़लैहि, व लहुल्-म-सलुल्-अअ्ला फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम ◆ (27) ❖

ज़-र-ब लकुम् म-सलम् मिन् अन्फ़ुसिकुम्, हल्-लकुम् मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् मिन्

اتل مآ اوحی ٢١ | ٣٦٧ | الروم ٣٠

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ
اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ
مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمِنْ
اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۚ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ
وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ
بِاَمْرِهٖ ۚ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ
الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ ضَرَبَ

منزل

वक़्त। (17) और तमाम आसमान व ज़मीन में उसी की तारीफ़ होती है,[1] और सूरज ढलने के बाद ज़ोहर के वक़्त।[2] (18) वह जानदार को बेजान से बाहर लाता है और बेजान को जानदार से बाहर लाता है,[3] और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है, और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। (19) ❖

और उसी की निशानियों में से एक यह है कि तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर थोड़े ही दिनों बाद तुम आदमी बनकर फैले हुए फिरते हो। (20) और उसी की निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी जिन्स की ''यानी तुम्हारी ज़ात से और तुम्हारी ही शक्ल व सूरत वाली'' बीवियाँ बनाईं ताकि तुमको उनके पास आराम मिले और तुम मियाँ-बीवी में मुहब्बत और हमदर्दी पैदा की। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो फ़िक्र से काम लेते हैं। (21) और उसी की निशानियों में से आसमान और ज़मीन का बनाना है। और तुम्हारे बातचीत करने के अन्दाज़ और रंगतों का अलग-अलग होना है।[4] इसमें समझदारों के लिए निशानियाँ हैं।[5] (22) और उसी की निशानियों में से तुम्हारा सोना-लेटना है रात में और दिन में,[6] और उसकी रोज़ी को तुम्हारा तलाश करना है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। (23) और उसी की निशानियों में से यह है कि वह तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है, और वही आसमान से पानी बरसाता है फिर उसी से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक़्ल रखते हैं। (24) और उसी की निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं।[7] फिर जब तुमको पुकारकर ज़मीन में से बुलाएगा तो तुम एकदम से निकल पड़ोगे।[8] (25) और जितने आसमान और ज़मीन में मौजूद हैं, सब उसी के ताबे हैं। (26) और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा और यह उसके नज़दीक ज़्यादा आसान है, और आसमान व ज़मीन में उसी की शान आला है, और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। ◆ (27) ❖

---

1. यानी आसमान में फ़रिश्ते और ज़मीन में बाज़ इख़्तियारी तौर पर और बाज़ ग़ैर-इख़्तियारी तौर पर उसकी तारीफ़ व प्रशंसा करते हैं, पस जब वह ऐसा बेहतरीन सिफ़ात वाला और अपनी ज़ात में कामिल है तो तुमको भी ज़रूर उसकी तस्बीह करना चाहिए।
2. इसलिए कि ये वक़्त नई नेमत देने और क़ुदरत के आसार के ज़्यादा ज़ाहिर होने के हैं, इनमें फिर नए सिरे से अल्लाह की पाकी बयान करना मुनासिब है।
3. जैसे नुत्फ़े और अन्डे से इनसान और बच्चे, और इनसान और परिन्दे से नुत्फ़ा और अन्डा।
4. बातचीत करने के अन्दाज़ से मुराद या तो बोलियाँ हों या आवाज़ व गुफ़्तगू करने का तरीक़ा और ढंग।
5. निशानियाँ बहुवचन इसलिए फ़रमाया कि ज़िक्र हुई बात कई चीज़ों पर मुश्तमिल है।
6. अगरचे रात को ज़्यादा और दिन में कम हो।
7. इसमें बयान है उनके बाक़ी रखने का, और ऊपर ''आसमान व ज़मीन के बनाने'' में ज़िक्र था उनके वजूद में आने का, और यह दुनिया का पूरा निज़ाम जो ज़िक्र हुआ यानी तुम्हारी नस्ल चलने और पैदाइश का सिलसिला जारी होना, और आपस में शादी-विवाह होना, और आसमान व ज़मीन का मौजूदा शक्ल और हालत पर मौजूद और क़ायम होना, और बोलियों व रंगतों का विभिन्न होना, और रात व दिन के आने-जाने में ख़ास मस्लहतों का होना, और बारिश का उतरना, और उसके आने से पहले उसके आसार व निशानियों का ज़ाहिर होना, ये सब उसकी पहली ज़िन्दगी के सिलसिले के बाक़ी रहने तक है, और एक दिन ये सब ख़त्म हो जाएगा।
8. और दूसरा निज़ाम शुरू हो जाएगा, जिसका इस जगह बयान करना मक़सद है।

शु-रका-अ फ़ी मा रज़क़्नाकुम् फ़-अन्तुम् फ़ीहि सवाउन् तख़ाफ़ूनहुम् कख़ी-फ़तिकुम् अन्फ़ु-सकुम्, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यअ़्क़िलून (28) बलित्-त-बअ़ल्लज़ी-न ज़-लमू अह्वा-अहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् फ़-मंय्यह्दी मन् अज़ल्लल्लाहु, व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (29) फ़-अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनि हनीफ़न्, फ़ित्-रतल्लाहिल्लती फ़-तरन्ना-स अ़लैहा, ला तब्दी-ल लिख़ल्क़िल्लाहि, ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून (30) मुनीबी-न इलैहि वत्तक़ूहु व अक़ीमुस्-सला-त व ला तकूनू मिनल्-मुश्रिकीन (31) मिनल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शि-यअ़न्, कुल्लु हिज़्बिम्-बिमा लदैहिम् फ़रिहून (32) व इज़ा मस्सन्ना-स ज़ुर्रुन् दअ़ौ रब्बहुम् मुनीबी-न इलैहि सुम्-म इज़ा अज़ा-क़हुम् मिन्हु रह्म-तन् इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्हुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून (33) लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम्, फ़-तमत्तअ़ू, फ़सौ-फ़ तअ़्लमून (34) अम् अन्ज़ल्ना अ़लैहिम् सुल्तानन् फ़हु-व य-तकल्लमु बिमा कानू बिही युश्रिकून (35) व इज़ा अज़क़्नन्ना-स रह्म-तन् फ़रिहू बिहा, व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुम्-बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम् इज़ा हुम् यक़्नतून (36) अ-व लम् यारौ अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (37) फ़-आति ज़ल्क़ुरबा हक़्क़हू वल्मिस्की-न वब्नस्सबीलि, ज़ालि-क ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न युरीदू-न वज्हल्लाहि व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (38) व मा आतैतुम् मिर्रिबल्- लि-यर्बु-व फ़ी अम्वालिन्नासि

لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۭ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
مِّنْ شُرَكَاۗءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ تَخَافُوْنَهُمْ
كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝
بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ
مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ
حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ
اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڎ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝
مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ
فَرِحُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ
اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ
يُشْرِكُوْنَ ۝ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۪ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ اَمْ
اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ۝ وَاِذَآ
اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ فَاٰتِ

अल्लाह तआला तुमसे एक अजीब मज़मून तुम्हारे ही हालात में से बयान फ़रमाते हैं। क्या तुम्हारे गुलामों में कोई शख़्स तुम्हारा उस माल में जो हमने तुमको दिया है शरीक है? कि तुम और वह उसमें बराबर हों जिनका तुम ऐसा ख़्याल करते हो जैसा अपने आपस का ख़्याल किया करते हो।[1] हम इसी तरह समझदारों के लिए साफ़-साफ़ दलीलें बयान करते रहते हैं। **(28)** बल्कि उन ज़ालिमों ने बिना दलील अपने ख़्यालात का इत्तिबा कर रखा है, सो जिसको ख़ुदा गुमराह करे उसको कौन राह पर लाए, और उनका कोई हिमायती न होगा। **(29)** सो तुम यक्सू होकर अपना रुख़ उस दीन की तरफ़ रखो। अल्लाह की दी हुई क़ाबलियत का इत्तिबा करो जिसपर अल्लाह तआला ने लोगों को पैदा किया है,[2] अल्लाह तआला की उस पैदा की हुई चीज़ को न बदलना चाहिए जिसपर उसने तमाम आदमियों को पैदा किया है। पस सीधा दीन यही है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। **(30)** तुम ख़ुदा की तरफ़ रुजू होकर अल्लाह तआला के क़ानून का इत्तिबा करो, और उससे डरो और नमाज़ की पाबन्दी करो और शिर्क करने वालों में से मत रहो। **(31)** जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया और बहुत-से गिरोह हो गए।[3] हर गिरोह अपने उस तरीक़े पर ख़ुश है जो उनके पास है। **(32)** और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है, अपने रब को उसी की तरफ़ रुजू होकर पुकारने लगते हैं,[4] फिर जब अल्लाह तआला उनको अपनी तरफ़ से कुछ इनायतों का मज़ा चखा देता है तो बस उनमें से बाज़े लोग अपने रब के साथ शिर्क करने लगते हैं। **(33)** जिसका हासिल यह है कि हमने जो उनको दिया है उसकी नाशुक्री करते हैं, सो चन्द रोज़ और फ़ायदा उठा लो फिर जल्दी ही तुम मालूम कर लोगे। **(34)** क्या हमने उनपर कोई सनद नाज़िल की है कि वह उनको अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने को कह रही है। **(35)** और हम जब लोगों को कुछ इनायत का मज़ा चखा देते हैं तो वे उससे ख़ुश होते हैं। और अगर उनके आमाल के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं, उनपर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो बस वे लोग नाउम्मीद हो जाते हैं। **(36)** क्या उनको यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआला जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहे कम देता है, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। **(37)** फिर रिश्तेदार को उसका हक़ दिया करो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को भी। यह उन लोगों के लिए बेहतर है

---

1. ज़ाहिर है कि गुलाम इस तरह शरीक नहीं होता।

2. मतलब फ़ितरत का यह है कि अल्लाह तआला ने हर शख़्स में पैदाइशी तौर पर यह सलाहियत रखी है कि अगर हक़ को सुनना और समझना चाहे तो वह समझ में आ जाता है। और उसके इत्तिबा का मतलब यह है कि उस सलाहियत और क़ाबलियत से काम ले और उसके तक़ाज़े पर अमल करे जो कि हक़ को पाना है। ग़रज़ उस फ़ितरत का इत्तिबा करना चाहिए।

3. यानी हक़ तो एक था और बातिल बहुत हैं, उन्होंने हक़ को छोड़ दिया और बातिल की मुख़्तलिफ़ राहें इख़्तियार कर लीं, ये टुकड़े-टुकड़े करना है कि एक ने एक ले लिया दूसरे ने दूसरा।

4. यानी जिस तौहीद की तरफ़ हम बुलाते हैं परेशानी और मुसीबत के वक़्त आम तौर पर अपनी ज़बान और अपने हाल से बावजूद इस मुख़ालफ़त व इनकार के उसका इज़हार व इक़रार भी होने लगता है, जिससे उसके फ़ितरी होने की भी ताईद होती है।

फ़ला यर्बू अिन्दल्लाहि व मा आतैतुम् मिन् ज़कातिन् तुरीदू-न वज्हल्लाहि फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुज़्अफ़ून **(39)** अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् सुम्-म र-ज़-क़कुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह़्यीकुम्, हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यफ़्अ़लु मिन् ज़ालिकुम् मिन् शैइन्, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून **(40)** ❖

ज़-हरल्-फ़सादु फ़िल्-बर्रि वल्-बह़्रि बिमा क-सबत् ऐदिन्नासि लियुज़ी-क़हुम् बअ़्ज़ल्लज़ी अ़मिलू लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून **(41)** क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लु, का-न अक्सरुहुम् मुश्रिकीन **(42)** फ़-अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनिल्-क़य्यिमि मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल् ला मरद्-द लहू मिनल्लाहि यौमइज़िंय्-यस्सद्दअ़ून **(43)** मन् क-फ़-र फ़-अ़लैहि कुफ़्रुहू व मन् अ़मि-ल स़ालिहन् फ़लिअन्फ़ुसिहिम् यम्हदून **(44)** लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति मिन् फ़ज़्लिही, इन्नहू ला युहिब्बुल्-काफ़िरीन **(45)** व मिन् आयातिही अंय्युर्सिलर्-रिया-ह मुबश्शिरातिंव्-व लियुज़ी-क़कुम् मिर्रह़्मतिही व लितज्रि-यल्फ़ुल्कु बिअम्रिही व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(46)** व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़न्त-क़म्ना मिनल्लज़ी-न अज्-रमू, व का-न हक़्क़न् अ़लैना

ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَآ اٰتَيْتُمْ
مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ
اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ
مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي
النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ قُلْ
سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ۭ
كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ۝ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَىِٕذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ۝
مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ
يَمْهَدُوْنَ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ
وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ
فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا

जो अल्लाह तआला की रिज़ा के तालिब हैं। और ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। **(38)** और जो चीज़ तुम इस ग़रज़ से दोगे कि वह लोगों के माल में पहुँचकर ज़्यादा हो जाए तो यह ख़ुदा के नज़दीक नहीं बढ़ता, और जो ज़कात दोगे जिससे अल्लाह तआला की रिज़ा तलब करते होगे, तो ऐसे लोग ख़ुदा तआला के पास बढ़ाते रहेंगे।[1] **(39)** अल्लाह ही वह है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रिज़्क़ दिया, फिर तुमको मौत देता है, फिर तुमको ज़िन्दा करेगा। क्या तुम्हारे शरीकों में भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके।[2] वह उनके शिर्क से पाक और बरतर है। **(40)** ❖

ख़ुश्की और तरी में लोगों के आमाल के सबब बलाएँ फैल रही हैं, ताकि अल्लाह तआला उनके बाज़ आमाल का मज़ा उनको चखा दे, ताकि वे बाज़ आ जाएँ।[3] **(41)** आप फ़रमा दीजिए कि मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि जो लोग पहले गुज़र चुके हैं उनका अन्जाम कैसा हुआ, उनमें अक्सर मुश्रिक ही थे। **(42)** सो तुम अपना रुख़ इस सच्चे दीन की तरफ़ रखो,[4] इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके वास्ते फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ से हटना न होगा।[5] उस दिन सब लोग अलग-अलग हो जाएँगे। **(43)** जो शख़्स कुफ़्र कर रहा है उसपर तो उसका कुफ़्र पड़ेगा, और जो नेक अ़मल कर रहा है सो ये लोग अपने लिए सामान कर रहे हैं। **(44)** जिसका हासिल यह होगा कि अल्लाह तआला उन लोगों को अपने फ़ज़्ल से जज़ा देगा जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अ़मल किए। वाक़ई अल्लाह तआला काफ़िरों को पसन्द नहीं करता है। **(45)** और अल्लाह तआला की निशानियों में से एक यह है कि वह हवाओं को भेजता है कि वे ख़ुशख़बरी देती हैं, और ताकि तुमको अपनी रहमत का मज़ा चखा दे, और ताकि कश्तियाँ उसके हुक्म से चलें, और ताकि तुम उसकी रोज़ी तलाश करो,[6] और ताकि तुम शुक्र करो। **(46)** और हमने आपसे पहले बहुत-से पैग़म्बर उनकी क़ौमों के

---

1. जब तौहीद की दलीलों में मालूम हुआ कि रिज़्क़ की कमी-ज़्यादती अल्लाह ही के तरफ़ से है, तो इससे एक बात और साबित हुई कि कन्जूसी करना बुरा है क्योंकि उससे तक़दीर से ज़्यादा नहीं मिल सकता फिर इम्साक (यानी रोक के रखना) बेफ़ायदा है, और ख़ैर होने के लिए जो "युरीदू-न वज्हल्लाहि" की क़ैद लगाई है, वजह इसकी यह है कि मुतलक़ ख़र्च करना ख़ैर और कामयाबी का वाजिब करने वाला नहीं। ख़ुदा के नज़दीक पहुँचना और बढ़ना उस माल के साथ ख़ास है जो अल्लाह की रिज़ा के लिए ख़र्च किया जाए।

2. ज़ाहिर है कि ऐसा कोई भी नहीं।

3. बाज़ का मतलब यह है कि अगर सब पर सज़ाएँ लागू हों तो एक साँस भी ज़िन्दा न रहें।

4. यानी तौहीदे इस्लामी की तरफ़।

5. यानी जैसे दुनिया में ख़ास अ़ज़ाब के वक़्त को अल्लाह तआला क़ियामत के वायदे पर हटाता जाता है। जब वह वायदा किया हुआ दिन आ जाएगा फिर उसको न हटाएगा, और ढील व मोहलत न होगी।

6. यानी आसमान की गर्दिश और रोज़ी पहुँचाना दोनों हवा के भेजने का सबब और ज़रिया हैं। पहला क़रीब बिला-वास्ता और दूसरा दूर का पहले के वास्ते से।

नस्रुल्-मुअ्मिनीन (47) अल्लाहुल्लज़ी युर्सिलुर्-रिया-ह फ़तुसीरु सहाबन् फ़-यब्सुतुहू फ़िस्समा-इ कै-फ़ यशा-उ व यज्-अ़लुहू कि-सफ़न् फ़-तरल्-वद्-क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही फ़-इज़ा असा-ब बिही मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून (48) व इन् कानू मिन् क़ब्लि अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैहिम् मिन् क़ब्लिही लमुब्लिसीन (49) फ़न्ज़ुर् इला आसारि रह़्मतिल्लाहि कै-फ़ युह़्यिल्-अर्-ज़ बअ़्-द मौतिहा, इन्-न ज़ालि-क लमुह़्यिल्-मौता व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (50) व ल-इन् अर्सल्ना रीहन् फ़-रऔहु मुस्फ़र्रल् लज़ल्लू मिम्-बअ़्दिही यक्फ़ुरून (51) फ़-इन्न-क ला तुस्मिअ़ुल्-मौता व ला तुस्मिअ़ुस्-सुम्मद्-दुआ़-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (52) व मा अन्-त बिहादिल्-अ़ुम्यि अ़न् ज़लालतिहिम्, इन् तुस्मिअ़ु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून (53) ❖

الی قومهم فجاءوهم بالبینت فانتقمنا من الذین اجرموا
وکان حقا علینا نصر المؤمنین ﴿٤٧﴾ الله الذی یرسل الریح
فتثیر سحابا فیبسطه فی السماء کیف یشاء ویجعله کسفا
فتری الودق یخرج من خلله فاذا اصاب به من یشاء
من عباده اذا هم یستبشرون ﴿٤٨﴾ وان کانوا من قبل
ان ینزل علیهم من قبله لمبلسین ﴿٤٩﴾ فانظر الی اثر رحمت
الله کیف یحی الارض بعد موتها ان ذلک لمحی الموتی
وهو علی کل شیء قدیر ﴿٥٠﴾ ولئن ارسلنا ریحا فراوه مصفرا
لظلوا من بعده یکفرون ﴿٥١﴾ فانک لا تسمع الموتی ولا تسمع
الصم الدعاء اذا ولوا مدبرین ﴿٥٢﴾ وما انت بهد العمی عن
ضللتهم ان تسمع الا من یؤمن بایتنا فهم مسلمون ﴿٥٣﴾
الله الذی خلقکم من ضعف ثم جعل من بعد ضعف
قوة ثم جعل من بعد قوة ضعفا وشیبة یخلق ما یشاء
وهو العلیم القدیر ﴿٥٤﴾ ویوم تقوم الساعة یقسم المجرمون
ما لبثوا غیر ساعة کذلک کانوا یؤفکون ﴿٥٥﴾ وقال الذین
اوتوا العلم والایمان لقد لبثتم فی کتب الله الی یوم البعث

منزل ٥

अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् ज़ुअ़्फ़िन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ़्दि ज़ुअ़्फ़िन् क़ुव्वतन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्-बअ़्दि क़ुव्वतिन् ज़ुअ़्फ़ंव्-व शै-बतन्, यख़्लुक़ु मा यशा-उ व हुवल्-अ़लीमुल्-क़दीर (54) व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु युक़्सिमुल्-मुज्रिमू-न मा लबिसू ग़ै-र सा-अ़तिन्, कज़ालि-क कानू युअ्फ़कून (55) व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म वल्-ईमा-न ल-क़द् लबिस्तुम् फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल्-बअ़्सि फ़-हाज़ा यौमुल्-बअ़्सि व

❖ रु. 5/13/8

पास भेजे, और वे उनके पास दलीलें लेकर आए। सो हमने उन लोगों से इन्तिक़ाम लिया जिन्होंने जुर्म किए थे,[1] और ईमान वालों को ग़ालिब करना हमारे ज़िम्मे था।[2] **(47)** अल्लाह तआ़ला ऐसा है कि वह हवाएँ भेजता है, फिर वे बादलों को उठाती हैं, फिर अल्लाह तआ़ला उसको जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है, और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है।[3] फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अन्दर से निकलती है। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे पहुँचा देता है तो बस वे ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं। **(48)** और वे लोग इससे पहले कि उनके ख़ुश होने से पहले उनपर बरसे, नाउम्मीद थे।[4] **(49)** सो अल्लाह की रहमत के आसार देखो कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद किस तरह ज़िन्दा करता है। कुछ शक नहीं कि वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। **(50)** और अगर हम उनपर और हवा चलाएँ, फिर ये लोग खेती को पीली हुई देखें तो ये उसके बाद नाशुक्री करने लगें।[5] **(51)** सो आप मुर्दों को नहीं सुना सकते, और बहरों को आवाज़ नहीं सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चल दें।[6] **(52)** और आप अन्धों को उनकी बेराही से राह पर नहीं ला सकते। आप तो बस उनको सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं, फिर वे मानते हैं। **(53)** ❖

अल्लाह ऐसा है जिसने तुमको कमज़ोरी की हालत में बनाया,[7] फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त अ़ता की,[8] फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा किया। वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह जानने वाला, क़ुव्वत रखने वाला है।[9] **(54)** और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी मुजरिम लोग क़सम खा बैठेंगे कि वे लोग (यानी हम बरज़ख़ के मक़ाम में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे, इसी तरह ये लोग उल्टे चला करते थे। **(55)** और जिन लोगों को इल्म और ईमान अ़ता हुआ है,[10] वे कहेंगे कि तुम तो अल्लाह के लिखे हुए के मुवाफ़िक़ क़ियामत के दिन तक रहे हो, सो क़ियामत का दिन यही है, और लेकिन तुम यक़ीन न करते थे।[11] **(56)**

---

1. और वे जुर्म हक़ का झुठलाना और अहले हक़ की मुख़ालफ़त है, और उस इन्तिक़ाम में हमने उनको मग़लूब और ईमान वालों को ग़ालिब किया।

2. वह इन्तिक़ाम अल्लाह का अ़ज़ाब था, और उसमें काफ़िरों का हलाक होना उनका मग़लूब होना है और मुसलमानों का बच जाना उनका ग़ालिब आना है। ग़रज़ इसी तरह उन काफ़िरों से इन्तिक़ाम लिया जाएगा। चाहे दुनिया में हो चाहे मौत के बाद हो।

3. 'बस्त' का मतलब यह है कि इकट्ठा करके दूर तक फैला देता है, और 'कै-फ़' का मतलब यह है कि कभी थोड़ी दूर तक कभी बहुत दूर तक। और 'कि-सफ़न्' का मतलब यह है कि इकट्ठा नहीं होता अलग-अलग और बिखरा हुआ रहता है।

4. यानी अभी-अभी नाउम्मीद थे और अभी ख़ुश हो गए। और ऐसा ही देखने में भी आता है कि ऐसी हालत में इनसान की कैफ़ियत बहुत ही जल्दी बदल जाती है।

5. और पिछली सब नेमतें भुला दीं।

6. सो जब उनकी ग़फ़लत और नाशुक्री का यह हाल है तो उससे यह भी साबित हुआ कि बिलकुल ही बेहिस हैं। तो उनके ईमान न लाने और आयतों में ग़ौर-फ़िक्र न करने पर ग़म करना भी बेकार है।

7. मुराद उससे बचपन की शुरू की हालत है।

8. यानी जवानी अ़ता की।

9. पस जो ऐसा क़ादिर हो उसको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है?

10. मुराद ईमान वाले हैं कि शरीअ़त के ज़रिए दी हुई ख़बरों का उन्हें इल्म हासिल है।

11. उस इनकार के वबाल में आज परेशानी का सामना हुआ। इस वजह से घबराकर ख़्याल हुआ कि अभी तो मीयाद पूरी नहीं हुई और अगर तस्दीक़ करते और ईमान ले आते तो उसके आने को जल्दी न समझते, बल्कि यूँ चाहते कि उससे भी जल्दी आ जाए।

लाकिन्नकुम् कुन्तुम् ला तअ्लमून (56) फ़यौमइज़िल्-ला यन्फ़अुल्लज़ी-न ज़-लमू मअ्ज़ि-रतुहुम् व ला हुम् युस्तअ्-तबून (57) व ल-क़द् ज़रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन्, व ल-इन् जिअ्-तहुम् बिआयतिल् ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् अन्तुम् इल्ला मुब्तिलून (58) कज़ालि-क यत्बअुल्लाहु अ़ला क़ुलूबिल्लज़ी-न ला यअ्लमून (59) फ़स्बिर् इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व ला यस्तख़िफ़्फ़न्न--कल्लज़ी-न ला यूक़िनून (60) ❖

31 सूरतु लुक़्मान 57

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2217 अक्षर, 554 शब्द, 34 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-हकीम (2) हुदंव्-व रह्म-तल् लिल्मुह्सिनीन (3) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्-सला-त व युअ्तूनज़्-ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून (4) उलाइ-क अ़ला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (5) व मिनन्नासि मंय्यश्तरी लह्वल्-हदीसि लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व यत्तख़ि-ज़हा हुज़ुवन्, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (6) व इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना वल्ला मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ्हा क-अन्-न फ़ी उज़ुनैहि वक़्रन् फ़-बश्शिर्हु बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (7) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन्-नअ़ीम (8)

فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ
الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا
لِلنَّاسِ فِي هٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ
لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ
عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَ
لَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿٦٠﴾ ع

سُورَةُ لُقْمَانَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

الٓمٓ ﴿١﴾ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَرَحْمَةً لِلْمُحْسِنِينَ ﴿٣﴾
الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾ أُولٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ ۖ وَأُولٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولٰئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٦﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَنْ
لَمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٧﴾
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ﴿٨﴾ خَالِدِينَ

ग़रज़ उस दिन ज़ालिमों को उनका उज़्र करना नफ़ा न देगा, और न उनसे ख़ुदा की नाराज़गी की तलाफ़ी चाही जाएगी।[1] (57) और हमने लोगों के वास्ते इस क़ुरआन में हर तरह के उम्दा मज़ामीन बयान किए हैं। और अगर आप उनके पास कोई निशानी ले आएँ तब भी ये लोग जो काफ़िर हैं यही कहेंगे कि तुम सब ख़ालिस झूठे और अहले बातिल हो। (58) जो लोग यक़ीन नहीं करते अल्लाह तआ़ला उनके दिलों पर यूँ ही मुहर कर दिया करता है।[2] (59) सो आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वायदा सच्चा है,[3] और ये बद्-यक़ीन लोग आपको बे-बरदाश्त न करने पाएँ।[4] (60) ❖

31 सूरः लुक़मान 57

सूरः लुक़मान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 34 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अलिफ़्-लाम्-मीम्। (1) ये आयतें एक हिक्मत से भरी किताब की हैं।[5] (2) जो कि हिदायत और रहमत है नेक काम करने वालों के लिए। (3) जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और वे लोग आख़िरत का पूरा यक़ीन रखते हैं। (4) ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं, और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।[6] (5) और बाज़ा आदमी ऐसा (भी) है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है[7] जो (अल्लाह से) ग़ाफ़िल करने वाली हैं, ताकि अल्लाह की राह से बेसमझे-बूझे गुमराह कर ले और उसकी हँसी उड़ाए, ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। (6) और जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह शख़्स तकब्बुर करता हुआ मुँह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं। जैसे उसके कानों में भारीपन "यानी डाट" है,[8] सो उसको एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दीजिए। (7) लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनके लिए ऐश की जन्नतें हैं। (8) जिनमें वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह ने सच्चा वायदा फ़रमाया है

1. यानी इसका मौक़ा न दिया जाएगा कि तौबा करके ख़ुदा को राज़ी कर लें।
2. यानी रोज़ाना हक़ को क़बूल करने की सलाहियत कमज़ोर और निढाल होती जाती है, इसलिए इताअ़त में कमज़ोरी और दुश्मनी में क़ुव्वत बढ़ती जाती है।
3. वह वायदा ज़रूर ज़ाहिर होगा। पस सब्र व बरदाश्त थोड़े ही दिन करना पड़ता है।
4. यानी उनकी तरफ़ से चाहे कैसी ही बात पेश आए मगर ऐसा न हो कि आप बरदाश्त न करें।

फ़ायदाः नफ़्सानी इन्तिक़ाम अगरचे अपने आपमें जायज़ है, मगर तब्लीग़ करने वाले के लिए और ख़ासकर बातचीत और संबोधन के वक़्त मस्लहत के ख़िलाफ़ है, क्योंकि इस्लाम की इब्तिदाई हालत थी।

5. यानी क़ुरआन की।
6. पस क़ुरआन इस तरह उनके लिए हिदायत व रहमत का सबब हो गया कि इसका असर फ़लाह है।
7. यानी ऐसी बातें इख़्तियार करता है।
8. यानी जैसे बहरा है।

ख़ालिदी-न फ़ीहा, वअ़्दल्लाहि हक़्क़न्, व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (9) ख़-लक़स्समावाति बिग़ैरि अ़-मदिन् तरौनहा व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन्, व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (10) हाज़ा ख़ल्क़ुल्लाहि फ़-अरूनी माज़ा ख़-लक़ल्लज़ी-न मिन् दूनिही, बलिज़्ज़ालिमू-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (11) ❖

व ल-क़द् आतैना लुक़्मानल्-हिक्म-त अनिश्कुर् लिल्लाहि, व मंय्यश्कुर् फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (12) व इज़् क़ा-ल लुक़्मानु लिब्निही व हु-व यअ़िज़ुहू या-बुनय्-य ला तुश्रिक् बिल्लाहि, इन्नश्शिर्-क ल-ज़ुल्मुन् अ़ज़ीम (13) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि ह-मलत्हू उम्मुहू वह्नन् अ़ला वह्निंव्-व फ़िसालुहू फ़ी आ़मैनि अनिश्कुर् ली व लिवालिदै-क, इलय्यल्-मसीर ● (14) व इन् जा-हदा-क अ़ला अन् तुश्रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन् फ़ला तुतिअ़्हुमा व साहिब्हुमा फ़िद्दुन्या मअ़्रूफ़ंव्-वत्तबिअ़् सबी-ल मन् अना-ब इलय्-य सुम्-म इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (15) या बुनय्-य इन्नहा इन् तकु मिस्क़ा-ल हब्बतिम् मिन् ख़र्-दलिन् फ़-तकुन् फ़ी सख़्रतिन् औ फ़िस्समावाति औ फ़िल्अर्ज़ि यअ़्ति बिहल्लाहु, इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर (16) या बुनय्-य अक़िमिस्सला-त वअ़्मुर् बिल्मअ़्रूफ़ि वन्-ह अ़निल्-मुन्करि वस्बिर् अ़ला मा असा-ब-क, इन्-न ज़ालि-क मिन्

فِيهَا ۚ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَأَلْقٰى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا
فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿١٠﴾ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ
الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ الظّٰلِمُونَ فِي ضَلٰلٍ مُبِينٍ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ۚ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ
لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿١٢﴾ وَإِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهِ
وَهُوَ يَعِظُهُ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ۖ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾
وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَ
فِصٰلُهُ فِي عَامَيْنِ أَنِ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ ۖ إِلَيَّ الْمَصِيرُ ﴿١٤﴾ وَ
إِنْ جٰهَدٰكَ عَلٰى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا
وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۖ وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ
ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ يٰبُنَيَّ إِنَّهَا
إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي
السَّمٰوٰتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللّٰهُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١٦﴾
يٰبُنَيَّ أَقِمِ الصَّلٰوةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ

और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है।[1] (9) अल्लाह तआ़ला ने आसमानों को बिना सुतून के बनाया, तुम उनको देख रहे हो। और ज़मीन में पहाड़ डाल रखे हैं कि वह तुमको लेकर डावाँ-डोल न होने लगे, और उसमें हर क़िस्म के जानवर फैला रखे हैं। और हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस ज़मीन में हर तरह की उम्दा क़िस्में उगाईं। (10) ये तो अल्लाह की बनाई हुई चीज़ें हैं, अब तुम मुझको दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या-क्या चीज़ें पैदा कीं, बल्कि ये ज़ालिम लोग खुली गुमराही में हैं। (11) ❖

और हमने लुक़मान को दानिशमन्दी "यानी ख़ुसूसी अ़क़्ल व समझ" अ़ता फ़रमाई,[2] कि अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते रहो और जो शख़्स शुक्र करेगा वह अपने ज़ाती नफ़े के लिए शुक्र करता है,[3] और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज़, ख़ूबियों वाला है। (12) और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है।[4] (13) और हमने इनसान को उसके माँ-बाप के मुताल्लिक़ ताकीद की है।[5] उसकी माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी उठाकर उसको पेट में रखा और दो साल में उसका दूध छूटता है, कि तू मेरी और अपने माँ-बाप की शुक्रगुज़ारी किया कर,[6] मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है। ● (14) और अगर तुझपर वे दोनों इस बात का ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराए जिसकी तेरे पास कोई दलील न हो,[7] तू उनका कहना न मानना, और दुनिया में उनके साथ अच्छाई से बसर करना, और उसी की राह पर चलना जो मेरी तरफ़ रुजू हो।[8] फिर तुम सबको मेरे पास आना है, फिर मैं तुमको जतला दूँगा जो कुछ तुम करते थे। (15) बेटा! अगर कोई अ़मल राई के दाने के बराबर हो, फिर वह किसी पत्थर के अन्दर हो या वह आसमान के अन्दर हो या वह ज़मीन के अन्दर हो, तब भी उसको अल्लाह हाज़िर कर देगा,[9] बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बारीकबीन, बाख़बर है। (16) बेटा! नमाज़ पढ़ा कर और अच्छे कामों की नसीहत किया कर और बुरे कामों से मना किया कर, और तुझपर जो मुसीबत आए उसपर सब्र किया कर, यह हिम्मत के कामों में से है। (17)

---

1. पस क़ुदरत के कामिल होने से वायदे और वईद को ज़ाहिर कर सकता है, और हिक्मत से उसको वायदे के मुताबिक़ सामने लाएगा।
2. लुक़मान अ़लैहिस्सलाम नबी न थे, उनका ज़माना दाऊद अ़लैहिस्सलाम के क़रीब का था। पस उनके नबी न होने की बिना पर उनको यह हुक्म होना "कि अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते रहो" या तो बतौर इल्हाम के होगा या उस ज़माने के किसी नबी की तालीम के ज़रिए से। और जिस बेटे को उन्होंने नसीहत की है, सही और वाज़ेह तौर पर कहीं नहीं देखा कि उनके बेटे का क्या तरीक़ा था, पहले से मोमिन थे या इस नसीहत के बाद मोमिन हुए, या क्या हुआ।
3. यानी ख़ुद उसी का नफ़ा है कि इससे नेमत में तरक़्क़ी होती है। दुनियावी नेमत में तो कभी नेमत की ज़ात के एतिबार से, और सवाब के एतिबार से हमेशा। और दीनी नेमत में जैसे इल्म वग़ैरह के दोनों तरह पर। यानी इल्म भी बढ़ता है और सवाब भी मिलता है।
4. ज़ुल्म की हक़ीक़त है किसी चीज़ का उसके मौक़े-महल से हटाकर दूसरे मक़ाम और जगह पर रखना, और ज़ाहिर है कि यह बात शिर्क में सख़्त दर्जे में पाई जाती है।
5. कि उनकी इताअ़त और ख़िदमत करे, क्योंकि उन्होंने उसके लिए बड़ी मशक़्क़तें झेली हैं, ख़ासकर माँ ने।
6. हक़ तआ़ला की शुक्रगुज़ारी तो इबादत और हक़ीक़ी इताअ़त के साथ, और माँ-बाप की ख़िदमत व शरई हुक़ूक़ अदा करने के साथ।
7. और ज़ाहिर है कि कोई चीज़ भी ऐसी नहीं कि जिसके शरीक होने के हक़दार होने पर कोई दलील क़ायम हो, बल्कि हक़दार न होने पर दलीलें क़ायम हैं।
8. यानी मेरे अहकाम का एतिक़ाद रखने वाला और उनपर अ़मल करने वाला हो।
9. मख़्लूक़ के इल्म से चीज़ के पोशीदा रह जाने के यही असबाब हैं। क्योंकि कभी बहुत ज़्यादा छोटा होने की वजह से एक चीज़ आँखों से ओझल हो जाती है, कभी पर्दे के सख़्त और गहरा होने की वजह से, कभी जगह के दूर होने से, कभी अन्धेरा होने से।

अ़ज़्मिल्-उमूर **(17)** व ला तुसअ़्अ़िर् ख़द्द-क लिन्नासि व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-रहन्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर **(18)** वक़्सिद् फ़ी मश्यि-क वग़्ज़ुज़् मिन् सौति-क, इन्-न अन्करल्-अस्वाति लसौतुल्-हमीर **(19)** ❖

अलम् तरौ अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अस्ब-ग़ अ़लैकुम् नि-अ़-महू ज़ाहि-रतंव्-व बाति-नतन्, व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व ला हुदंव्-व ला किताबिम् मुनीर **(20)** व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअ़ू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअ़ु मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ कानश्शैतानु यद्अ़ूहुम् इला अ़ज़ाबिस्- सअ़ीर **(21)** व मंय्युस्लिम् वज्हहू इलल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्अुर्-वतिल्-वुस्क़ा, व इलल्लाहि आ़क़ि-बतुल्-उमूर **(22)** व मन् क-फ़-र फ़ला यह्ज़ुन्-क कुफ़्रुहू, इलैना मर्जिअ़ुहुम् फ़नुनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्- बिज़ातिस्-सुदूर **(23)** नुमत्तिअ़ुहुम् क़लीलन् सुम्-म नज़्तर्रुहुम् इला अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ **(24)** व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाहु, क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमून **(25)** लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद **(26)** व लौ अन्-न मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् श-ज-रतिन् अक़्लामुंव्-वल्बह्रु यमुद्दुहू मिम्बअ़्दिही सब्अ़तु अब्हुरिम्-मा नफ़िदत् कलिमातुल्लाहि, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(27)** मा ख़ल्क़ुकुम् व ला बअ़्सुकुम् इल्ला क-नफ़्सिंव्-वाहि-दतिन्, इन्नल्ला-ह समीअ़ुम्-बसीर **(28)** अलम् त-र

عَلٰى مَآ اَصَابَكَ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ
لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ
مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝ وَاقْصِدْ فِىْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ
اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ۝ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ
مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ
بَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى
وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ
مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۗ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ
السَّعِيْرِ ۝ وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ
كُفْرُهٗ ۗ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ۝ وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ
وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ

❖ रु. 2/8/11

और लोगों से अपना रुख़ मत फेर, और ज़मीन पर इतराकर मत चल, बेशक अल्लाह तआ़ला किसी तकब्बुर करने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसन्द नहीं करते। **(18)** और अपनी रफ़्तार में दरमियानापन इख़्तियार कर,[1] और अपनी आवाज़ को पस्त कर,[2] बेशक आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ है। **(19)** ❖

क्या तुम लोगों को यह बात मालूम नहीं हुई कि अल्लाह तआ़ला ने तमाम चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रखा है, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और उसने तुमपर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेमतें पूरी कर रखी हैं।[3] और बाज़े आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला के बारे में बिना जानकारी और बिना दलील और बिना किसी रोशन किताब के झगड़ा करते हैं। **(20)** और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का इत्तिबा करो जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई है, तो कहते हैं कि नहीं! हम उसी का इत्तिबा करेंगे जिसपर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या अगर शैतान उनके बड़ों को दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ बुलाता रहा हो तब भी?[4] **(21)** और जो शख़्स अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ झुका दे[5] और वह मुख़्लिस भी हो,[6] तो उसने बड़ा मज़बूत हल्क़ा थाम लिया,[7] और अख़ीर सब कामों का अल्लाह ही की तरफ़ पहुँचेगा। **(22)** और जो शख़्स कुफ़्र करे सो आपके लिए उसका कुफ़्र ग़म का सबब न होना चाहिए, उन सबको हमारे ही पास लौटना है, सो हम उन सबको जतला देंगे, जो-जो कुछ वे किया करते थे। अल्लाह तआ़ला को दिलों की बातें ख़ूब मालूम हैं। **(23)** हम उनको चन्द दिन की ऐश दिए हुए हैं, फिर उनको ज़बरदस्ती खींचते-खींचते एक सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ ले आएँगे। **(24)** और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है तो ज़रूर यही जवाब देंगे कि अल्लाह तआ़ला ने, आप कहिए कि अल्हम्दु लिल्लाहि! बल्कि उनमें अक्सर नहीं जानते। **(25)** जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है सब अल्लाह ही का है, और बेशक अल्लाह तआ़ला बेनियाज़, सब ख़ूबियों वाला है। **(26)** और जितने पेड़ ज़मीन भर में हैं, अगर वे सब क़लम बन जाएँ और यह जो समुद्र है उसके अ़लावा सात समुद्र इसमें और शामिल हो जाएँ तो अल्लाह की बातें ख़त्म न हों;[8] बेशक ख़ुदा तआ़ला ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। **(27)** तुम सबका पैदा करना और ज़िन्दा करना

---

1. न बहुत दौड़कर चल कि वक़ार के ख़िलाफ़ है और न बहुत गिन-गिनकर क़दम रख, बल्कि बेतकल्लुफ़ और दरमियानी चाल तवाज़ो व सादगी के साथ इख़्तियार कर, जिसको दूसरी आयत में इस उन्वान से ज़िक्र किया हैः 'यम्शू-न अ़लल् अर्ज़ि हौनन्'।
2. यानी बहुत शोर न मचा। यह मतलब नहीं कि इतनी पस्त कर कि दूसरा सुने भी नहीं।
3. ज़ाहिरी वह कि हवास (यानी सुनने, देखने, छूने, सूँघने और चखने) से पता चलें, और बातिनी वह जो अ़क़्ल से मालूम और महसूस हों। और नेमतों से वे नेमतें मुराद हैं जो आसमानों और ज़मीन को ताबे करने पर मुरत्तब होती हैं।
4. मतलब यह कि ऐसे दुश्मन और मुख़ालिफ़ हैं कि बावजूद इसके कि उनको दलील की तरफ़ बुलाया जाता है, मगर फिर भी बिना दलील, बल्कि ख़िलाफ़े दलील महज़ अपने गुमराह बाप-दादाओं की राह पर चलते हैं।
5. यानी फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करे, अ़क़ीदों में भी और आमाल में भी। मुराद इस्लाम व तौहीद है।
6. यानी महज़ ज़ाहिरी इस्लाम न हो।
7. यानी वह उस शख़्स के जैसा हो गया जो किसी मज़बूत रस्सी का हल्क़ा थामकर गिरने से महफ़ूज़ रहता है, इसी तरह यह शख़्स हलाक होने और नुक़सान से महफ़ूज़ है।
8. अल्लाह की बातें यानी वे कलिमात जिनसे अल्लाह तआ़ला के कमालात को बयान किया गया हो।

अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र कुल्लुंय्यज्री इला अ-जलिम् मुसम्मंव्-व अन्नल्ला-ह बिमा तअ्मलू-न ख़बीर **(29)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्अू-न मिन् दूनिहिल्-बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल् अ़लिय्युल्-कबीर **(30)** ❖

अलम् त-र अन्नल्-फ़ुल्-क तज्री फ़िल्बह्रि बिनिअ्मतिल्लाहि लियुरि-यकुम् मिन् आयातिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर **(31)** व इज़ा ग़शि-यहुम् मौजुन् कज़्ज़ुलि-ललि द-अ़वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, फ़-लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि फ़मिन्हुम् मुक़्तसिदुन्, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्ला कुल्लु ख़त्तारिन् कफ़ूर **(32)** या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् वख़्शौ यौमल्-ला यज्ज़ी वालिदुन् अंव्व-लदिही व ला मौलूदुन् हु-व जाज़िन् अंव्वालिदिही शैअन्, इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्-हयातुद्दुन्या, व ला यग़ुर्रन्न-कुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर **(33)** इन्नल्ला-ह अ़िन्दहू अ़िल्मुस्सा-अ़ति व युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स व यअ्लमु मा फ़िल्-अर्हामि, व मा तद्री नफ़्सुम्-माज़ा तक्सिबु ग़दन्, व मा तद्री नफ़्सुम् बिअय्यि अर्ज़िन् तमूतु, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् ख़बीर **(34)** ❖

السجدة ٣٢ ٣٧٤ اتل مآ اوحي ٢١

اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۗ إِنَّ
اللّٰهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ
فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَّ
أَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا
يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ
أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ آيٰتِهِ ۚ إِنَّ فِي
ذٰلِكَ لَآيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا
اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمَا
يَجْحَدُ بِآيٰتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝ يٰۤأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا
يَوْمًا لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهِ ۖ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهِ
شَيْئًا ۚ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ
بِاللّٰهِ الْغَرُورُ ۝ إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَ
يَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي
نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ — آيَاتُهَا ٣٠ رُكُوعَاتُهَا ٣

الٓمٓ ۝ تَنْزِيلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ

منزل ٥

32 सूरतुस्-सज्दति 75

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1577 अक्षर, 274 शब्द, 30 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् **(1)** तन्ज़ीलुल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल्-आ़लमीन **(2)** अम्

बस ऐसा ही है जैसा कि एक शख़्स का। बेशक अल्लाह तआला सब कुछ सुनता, सब कुछ देखता है।[1] (28) (ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआला रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कर देता है, और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, कि हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक[2] चलता रहेगा, और यह कि अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखता है। (29) यह इस सबब से है कि अल्लाह ही हस्ती में कामिल है और जिन चीज़ों की अल्लाह के सिवा ये लोग इबादत कर रहे हैं, बिलकुल ही लचर हैं। और अल्लाह ही आलीशान (और) बड़ा है।[3] (30) ❖

(ऐ मुख़ातब!) क्या तुझको (तौहीद की) यह (दलील) मालूम नहीं कि अल्लाह ही के फ़ज़्ल से दरिया में कश्ती चलती है, ताकि तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाए, उसमें हर ऐसे शख़्स के लिए निशानियाँ हैं जो साबिर व शाकिर हो।[4] (31) और जब उन लोगों को मौजें सायबानों "यानी साया करने वाले जैसे छप्पर वग़ैरह" की तरह घेर लेती हैं तो वे ख़ालिस एतिक़ाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, फिर जब उनको नजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले आता है सो बाज़े तो उनमें एतिदाल पर रहते हैं,[5] और हमारी आयतों के बस वही लोग मुन्किर होते हैं जो बद्-अ़हद और नाशुक्र हैं।[6] (32) ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जिसमें न कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से कुछ मुतालबा अदा कर सकेगा, और न कोई बेटा ही है कि वह अपने बाप की तरफ़ से ज़रा भी मुतालबा अदा कर दे। यक़ीनन अल्लाह का वायदा सच्चा है।[7] सो तुमको दुनियावी ज़िन्दगानी धोखे में न डाले,[8] और न वह धोखेबाज़ (शैतान) अल्लाह से धोखे में डाले। (33) बेशक अल्लाह तआला ही को क़ियामत की ख़बर है, और वही बारिश बरसाता है, और वही जानता है जो कुछ रहम "यानी माँ के पेट" में है, और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह कल क्या अ़मल करेगा, और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्लाह तआला सब बातों का जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।[9] (34) ❖

32 सूरः सज्दः 75

सूरः सज्दः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 30 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अलिफ़्-लाम्-मीम्[10] (1) यह नाज़िल की हुई किताब है इसमें कुछ शुब्हा नहीं, यह रब्बुल आ़लमीन की

1. पस जो लोग बावजूद इन दलीलों के मौत के बाद ज़िन्दा होने का इनकार कर रहे हैं और इस जुर्रत पर गुनाह और बुराइयाँ करते हैं, उन सबको सुन रहा है, देख रहा है।
2. यानी क़ियामत तक।
3. इसलिए ये सब इख़्तियारात और ताक़त उसके साथ ख़ास हैं।
4. इससे मोमिन मुराद है कि सब्र व शुक्र में कामिल होना उसकी सिफ़त है।
5. यानी शिर्क के टेढ़ को छोड़कर तौहीद इख़्तियार कर लेते हैं जो कि तमाम रास्तों में बेहतर रास्ता है।
6. कि कश्ती में जो तौहीद का अ़हद किया था उसको तोड़ दिया, और ख़ुश्की में आने का मुक़्तज़ा था शुक्र करना उसको छोड़ दिया।
7. यानी वह दिन ज़रूर आने वाला है, क्योंकि उसके मुताल्लिक़ अल्लाह का वायदा है।
8. कि उसमें मश्ग़ूल होकर उस दिन से ग़ाफ़िल रहो।
9. ऊपर धमकी और डाँट थी क़ियामत के दिन की, और इनकार करने वाले इनकार के मक़सद से उसका वक़्त पूछा करते थे, इसलिए इस आयत में (कि इसके नाज़िल होने का मौक़ा भी बाज़ लोगों का हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से उसके मुताल्लिक़ सवाल करना दुर्रे मन्सूर में मज़कूर है) जवाब के तौर पर ग़ैब के इल्म को अपने साथ ख़ास फ़रमाया। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 750 पर)

यक़ूलूनफ़्तराहु बल् हुवल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र क़ौमम्-मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम्-मिन् क़ब्लि-क लअ़ल्लहुम् यह्तदून **(3)** अल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, मा लकुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्-वला शफ़ीअ़िन्, अ-फ़ला त-तज़क्करून **(4)** युदब्बिरुल्-अम्-र मिनस्समा-इ इलल्-अर्ज़ि सुम्-म यअ़्रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू अल्-फ़ स-नतिम्-मिम्मा तअ़ुद्दून **(5)** ज़ालि-क आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दतिल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम **(6)** अल्लज़ी अह्स-न कुल्-ल शैइन् ख़-ल-क़हू व ब-द-अ ख़ल्क़ल्-इन्सानि मिन् तीन **(7)** सुम्-म ज-अ़-ल नस्-लहु मिन् सुला-लतिम् मिम्मा-इम्-महीन **(8)** सुम्-म सव्वाहु व न-फ़-ख़ फ़ीहि मिर्रूहिही व ज-अ़-ल लकुमुस्-सम्-अ़ वल्-अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा तश्कुरून **(9)** व क़ालू अ-इज़ा ज़लल्ना फ़िल्अर्ज़ि अ-इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन्, बल् हुम् बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् काफ़िरून **(10)** क़ुल् य-तवफ़्फ़ाकुम् म-लकुल्-मौतिल्लज़ी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअ़ून **(11)** ❖

اتل ما اوحی ۲۱ ۳۷۵ السجدة ۳۲

افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ
مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ
مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ يُدَبِّرُ
الْاَمْرَ مِنَ السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ
مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ
الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّاۗءٍ مَّهِيْنٍ ۝
ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْىِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ
ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۭ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝ قُلْ
يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝ ع
وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا
وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا
كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ

منزل ۵

व लौ तरा इज़िल्-मुज्रिमू-न नाकिसू रुऊसिहिम् अ़िन्-द रब्बिहिम्, रब्बना अब्सर्ना व समिअ़्ना फ़र्जिअ़्ना नअ़्मल् सालिहन् इन्ना मूक़िनून **(12)** व लौ शिअ़्ना लआतैना कुल्-ल नफ़्सिन् हुदाहा व लाकिन् हक़्क़ल्-क़ौलु मिन्नी ल-अम्-लअन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अज्मअ़ीन **(13)** फ़ज़ूक़ू बिमा नसीतुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा इन्ना नसीनाकुम् व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-ख़ुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून **(14)** इन्नमा युअ़्मिनु

तरफ़ से है। (2) क्या ये लोग यूँ कहते हैं कि पैग़म्बर ने यह अपने दिल से बना लिया है, बल्कि यह सच्ची किताब है आपके रब की तरफ़ से, ताकि आप ऐसे लोगों को डराएँ जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे लोग राह पर आ जाएँ। (3) अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को और उस मख़्लूक़ को जो उन दोनों के दरमियान है, छह दिन में पैदा किया, फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ।[1] उसके अ़लावा न तुम्हारा कोई मददगार है और न कोई सिफ़ारिश करने वाला। सो क्या तुम समझते नहीं हो?[2] (4) वह आसमान से लेकर ज़मीन तक हर मामले की तदबीर करता है, फिर हर मामला उसी के हुज़ूर में पहुँच जाएगा, एक ऐसे दिन में जिसकी मिक़्दार "यानी मात्रा" तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल की होगी।[3] (5) वही पोशादा "छुपी" और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है। ज़बरदस्त, रहमत वाला है। (6) जिसने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई,[4] और इनसान की पैदाइश मिट्टी से शुरू की। (7) फिर उसकी नस्ल को ख़ुलासा-ए-अख़्लात यानी एक बेक़द्र पानी से बनाया। (8) फिर उसके आज़ा "यानी अंग और हिस्से" दुरुस्त किए और उसमें अपनी रूह फूँकी, और तुमको कान और आँखें और दिल दिए,[5] तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो, (यानी नहीं करते)। (9) और ये लोग कहते हैं कि जब हम ज़मीन में नेस्तनाबूद हो गए तो क्या हम फिर नए जन्म में आएँगे, बल्कि वे लोग अपने रब से मिलने के इनकारी ही हैं।[6] (10) आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारी जान मौत का फ़रिश्ता क़ब्ज़ करता है जो तुमपर मुतैयन है। फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाकर लाए जाओगे। (11) ❖

और अगर आप देखें तो अ़जीब हाल देखें, जबकि ये मुजरिम अपने रब के पास सर झुकाए होंगे, कि ऐ हमारे परवर्दिगार! बस हमारी आँखें और कान खुल गए।[7] सो हमको फिर भेज दीजिए, हम नेक काम करेंगे हमको पूरा यक़ीन आ गया। (12) और अगर हमको मन्ज़ूर होता तो हम हर शख़्स को उसका रास्ता अ़ता फ़रमाते और लेकिन मेरी यह बात तय हो चुकी है कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इनसान दोनों से ज़रूर

(पृष्ठ 748 का शेष) जवाब का हासिल यह हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के क़ियामत के वक़्त को न जानने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह आएगी ही नहीं।

10. पिछली सूरः में तौहीद और आख़िरत के मज़ामीन थे। इस सूरः के शुरू में क़ुरआन के हक़ होने को साबित करने से रिसालत को साबित करना है, फिर तौहीद और आख़िरत का ज़िक्र है। फिर "व ल-क़द् आतैना मूसा" से रिसालत के मसले की ताईद और झुठलाने वालों के मामले में रसूल की तसल्ली का मज़मून है। और "अ-व लम् यह्दि" से आख़िर तक झुठलाने वालों को डाँट-डपट और सज़ा की धमकी और उनके बाज़ क़ौलों का जवाब है।

1. यानी इख़्तियारात और ताक़त व क़ुदरत नाफ़िज़ करने लगा।
2. कि ऐसी ज़ात का कोई शरीक नहीं हो सकता।
3. यानी क़ियामत में उनसे मुताल्लिक़ चीज़ों के सब मामले और सब ही कुछ उसी के सामने पेश होंगे।
4. यानी जिस मस्लहत के लिए उसको बनाया उसके मुनासिब बनाया।
5. यानी ज़ाहिरी व बातिनी हवास दिए।
6. यह सवाल के अन्दाज़ में इनकार है।
7. और मालूम हो गया कि पैग़म्बरों ने जो कुछ कहा सब हक़ था।

बिआयातिनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिहा ख़र्रू सुज्जदंव्-व सब्बहू बिहम्दि रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून ❑ **(15)** त-तजाफ़ा जुनूबुहुम् अ़निल्-मज़ाजिअ़ि यद्अ़ू-न रब्बहुम् ख़ौफ़ंव्-व त-मअ़ंव्-व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून **(16)** फ़ला तअ़्लमु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् क़ुर्रति अअ़्युनिन् जज़ा-अम् बिमा कानू यअ़्मलून **(17)** अ-फ़-मन् का-न मुअ़्मिनन् कमन् का-न फ़ासिक़न्, ला यस्तवून **(18)** अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् जन्नातुल्-मअ़्वा नुज़ुलम् बिमा कानू यअ़्मलून **(19)** व अम्मल्लज़ी-न फ़-सक़ू फ़-मअ़्वाहुमुन्नारु, कुल्-लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा उईदू फ़ीहा व क़ी-ल लहुम् ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्नारिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून **(20)** व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिनल् अ़ज़ाबिल्-अद्ना दूनल् अ़ज़ाबिल्-अक्बरि लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून **(21)** व मन् अज़्लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही सुम्-म अअ़्र-ज़ अ़न्हा, इन्ना मिनल् मुज्रिमी-न मुन्तक़िमून **(22)** ❖

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ला तकुन् फ़ी मिर्यतिम् मिल्लिक़ा-इही व जअ़ल्नाहु हुदल् लि-बनी इस्राईल **(23)** व जअ़ल्ना मिन्हुम् अ-इम्मतंय्-यह्दू-न बिअम्रिना लम्मा स-बरू, व कानू बिआयातिना यूक़िनून **(24)** इन्-न रब्ब-क हु-व यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(25)** अ-व लम् यह्दि लहुम् कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्- क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिन्, अ-फ़ला यस्मअ़ून **(26)** अ-व लम् यरौ अन्ना नसूक़ुल्-मा-अ इलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि फ़नुख़्रिजु बिही ज़र्अ़न् तअ़्कुलु

هٰذَا ۚ إِنَّا نَسِينٰكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا
يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوا بِحَمْدِ
رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافٰى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۖ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ
نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾
أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۗ لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾ أَمَّا الَّذِينَ
اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَأْوٰى ۫ نُزُلًا بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوٰىهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ
يَّخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي
كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنٰى دُونَ
الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ
رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ وَجَعَلْنٰهُ
هُدًى لِّبَنِي إِسْرَاءِيلَ ﴿٢٣﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَّهْدُونَ بِأَمْرِنَا
لَمَّا صَبَرُوا ۗ وَكَانُوا بِاٰيٰتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ

भरूँगा। (13) तो अब इसका मज़ा चखो कि तुम इस दिन के आने को भूले रहे। हमने तुमको भुला दिया,[1] और अपने आमाल की बदौलत हमेशा के अ़ज़ाब का मज़ा चखो। (14) बस हमारी आयतों पर तो वे लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वे आयतें याद दिलाई जाती हैं तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं, और अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करने लगते हैं, और वे लोग तकब्बुर नहीं करते। ❑ (15) उनके पहलू सोने की जगहों "यानी बिस्तर व पलंग वग़ैरह" से अलग होते हैं, इस तौर पर कि वे लोग अपने रब को उम्मीद से और ख़ौफ़ से पुकारते हैं, और हमारी दी हुई चीज़ों में से ख़र्च करते हैं।[2] (16) सो किसी शख़्स को ख़बर नहीं, जो-जो आँखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिए ग़ैब के ख़ज़ाने में मौजूद है। यह उनको उनके आमाल का सिला मिला है। (17) तो जो शख़्स मोमिन हो क्या वह उस शख़्स जैसा हो जाएगा जो बेहुक्म "यानी नाफ़रमान" हो, वे आपस में बराबर नहीं हो सकते। (18) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए सो उनके लिए हमेशा का ठिकाना जन्नतें हैं जो उनके आमाल के बदले में बतौर उनकी मेहमानी के हैं। (19) और जो लोग बेहुक्म थे सो उनका ठिकाना दोज़ख़ है, वे लोग जब उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएँगे, और उनको कहा जाएगा कि दोज़ख़ का वह अ़ज़ाब चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे। (20) और हम उनको क़रीब का (यानी दुनिया में आने वाला) अ़ज़ाब भी उस बड़े अ़ज़ाब से पहले चखा देंगे,[3] ताकि ये लोग बाज़ आएँ।[4] (21) और उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जिसको उसके रब की आयतें याद दिलाई जाएँ, फिर वह उनसे मुँह मोड़े,[5] हम ऐसे मुजरिमों से बदला लेंगे। (22) ❖

और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को किताब दी थी, सो आप उसके मिलने में कुछ शक न कीजिए।[6] और हमने उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया था।[7] (23) और हमने उनमें बहुत-से पेशवा "यानी रहनुमा" बना दिए थे जो हमारे हुक्म से हिदायत करते थे, जबकि वे लोग सब्र किए रहे और वे लोग हमारी आयतों का यक़ीन रखते थे।[8] (24) आपका रब क़ियामत के दिन उन सबके दरमियान उन मामलों में फ़ैसला कर देगा जिनमें ये आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे।[9] (25) क्या उनको इस बात से रहनुमाई नहीं हुई कि

1. यानी रहमत से महरूम कर दिया।
2. मतलब यह कि ईमान लाने वालों की ये सिफ़तें हैं, जिनमें से बाज़ पर तो ईमान का वजूद मौक़ूफ़ है और बाज़ पर ईमान का मुकम्मल होना।
3. जैसे बीमारियाँ और मुसीबतें।
4. फिर जो बाज़ न आए उसके लिए बड़ा अ़ज़ाब है ही।
5. उसके अ़ज़ाब का हक़्दार होने में क्या शुब्हा है।
6. मतलब यह कि आप किताब वाले और साहिबे-ख़िताब हैं। पस जब आप अल्लाह के नज़दीक ऐसे मक़बूल हैं तो अगर चन्द मुट्ठी भर बेवक़ूफ़ आपको क़बूल न करें तो कोई ग़म की बात नहीं।
7. इसी तरह आपकी किताब से बहुतों को हिदायत होगी।
8. यह मोमिनों को तसल्ली है कि तुम लोग सब्र करो। और जब तुम यक़ीन वाले हो और यक़ीन का तक़ाज़ा सब्र करना है तो तुमको सब्र ज़रूरी है। उस वक़्त हम तुमको भी दीन के पेशवा बना देंगे।
9. यानी मोमिनों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में डाल देगा।

मिन्हु अन्आ़मुहुम् व अन्फ़ुसुहुम्, अ-फ़ला युब्सिरून ▲ (27) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-फ़त्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (28) क़ुल् यौमल्-फ़त्हि ला यन्फ़अुल्लज़ी-न क-फ़रू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्ज़रून (29) फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् वन्तज़िर् इन्नहुम् मुन्तज़िरून (30) ❖

33 सूरतुल्-अह्ज़ाबि 90

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5909 अक्षर, 1210 शब्द, 73 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्युत्-तक़िल्ला-ह व ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न वल्मुनाफ़िक़ी-न, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा (1) वत्तबिअ़् मा यूहा इलै-क मिर्रब्बि-क, इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्मलू-न ख़बीरा (2) व तवक्कल् अ़लल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (3) मा ज-अ़लल्लाहु लि-रजुलिम् मिन् क़ल्बैनि फ़ी जौफ़िही व मा ज-अ़-ल अज़्वा-जकुमुल्लाई तुज़ाहिरू-न मिन्हुन्-न उम्महातिकुम् व मा ज-अ़-ल अद्अ़िया-अकुम् अब्ना-अकुम्, ज़ालिकुम् क़ौलुकुम् बि-अफ़्वाहिकुम्, वल्लाहु यक़ूलुल्-हक़्-क़ व हु-व यह्दिस्सबील (4) उद्अ़ूहुम् लिआबाइहिम् हु-व अक़्सतु अ़िन्दल्लाहि फ़-इल्लम् तअ़्लमू आबा-अहुम् फ़-इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि व मवालीकुम्, व लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् फ़ीमा अख़्तअ्तुम् बिही व लाकिम्-मा तअ़म्म-दत् क़ुलूबुकुम्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (5) अन्नबिय्यु औला बिल्मुअ्मिनी-न मिन्

الاحزاب ٣٣ ٦٧٧ اتل ما اوحي ٢١

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۭ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ۭ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَاۗءَ اِلَى
الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ۭ
اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ۝
سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ وَّتَوَكَّلْ عَلَي اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝
مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ
الّٰۗـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاۗءَكُمْ اَبْنَاۗءَكُمْ ۭ
ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝
اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَاۗىِٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَاۗءَهُمْ
فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۭ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ
اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

منزل

हम उनसे पहले कितनी उम्मतें हलाक कर चुके हैं जिनके रहने की जगहों में ये लोग आते-जाते हैं, इसमें साफ़ निशानियाँ हैं,[1] क्या ये लोग सुनते नहीं हैं। (26) क्या उन्होंने इस बात पर नज़र नहीं की कि हम सूखी पड़ी ज़मीन की तरफ़ पानी पहुँचाते हैं। फिर उसके ज़रिये से खेती पैदा करते हैं, जिससे उनके मवेशी और वे ख़ुद भी खाते हैं, तो क्या वे देखते नहीं। ▲ (27) और ये लोग कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह फ़ैसला कब होगा? (28) आप फ़रमा दीजिए कि उस फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उनका ईमान लाना नफ़ा न देगा, और उनको मोहलत भी न मिलेगी। (29) सो उनकी बातों का ख़्याल न कीजिए और आप इन्तिज़ार कीजिए, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।[2] (30) ❖

33 सूरः अहज़ाब 90

सूरः अहज़ाब मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 73 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! अल्लाह से डरते रहिए[3] और काफ़िरों का और मुनाफ़िक़ों का कहना न मानिए, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा इल्म वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। (1) और आपके परवर्दिगार की तरफ़ से जो हुक्म आप पर वह्य किया जाता है उसपर चलिए, बेशक तुम लोगों के सब आमाल की अल्लाह तआ़ला पूरी ख़बर रखता है।[4] (2) और आप अल्लाह पर भरोसा रखिए और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है।[5] (3) अल्लाह तआ़ला ने किसी शख़्स के सीने में दो दिल नहीं बनाए, और तुम्हारी उन बीवियों को जिनसे तुम ज़िहार कर लेते हो तुम्हारी माँ नहीं बना दिया। और तुम्हारे मुँह-बोले बेटों को तुम्हारा (सचमुच का) बेटा नहीं बना दिया, यह सिर्फ़ तुम्हारे मुँह से कहने की बात है। और अल्लाह हक़ बात फ़रमाता है और वही सीधा रास्ता बतलाता है।[6] (4) तुम उनको उनके बापों की तरफ़ मन्सूब किया करो, यह अल्लाह के नज़दीक रास्ती की बात है। और अगर तुम उनके बापों को न जानते हो तो वे तुम्हारे दीन के भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं। और तुमको इसमें जो भूल-चूक हो जाए तो उससे तो तुमपर कुछ गुनाह न होगा। लेकिन हाँ जो दिल से इरादा करके करो, और अल्लाह मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (5) नबी मोमिनों के साथ ख़ुद

---

1. यानी कुफ़्र के बुरा और गुमराही होने की निशानियाँ मौजूद हैं।
2. मालूम हो जाएगा कि किसका इन्तिज़ार हक़ीक़त के मुताबिक़ है और किसका नहीं।
3. इस सूरः में मजमूई तौर पर जो मज़ामीन बयान किए गए हैं उनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अल्लाह के यहाँ महबूब और वहाँ से मदद याफ़्ता होना और आपका अल्लाह के यहाँ ख़ुसूसी मक़ाम वाला और मुकर्रम होना, और आपका अदब व एहतिराम वाजिब होना, और आपको तकलीफ़ देना हराम होना वग़ैरह हैं। इसके अ़लावा जो मज़ामीन हैं वे सब इन्हीं के मुक़द्दिमात या इनको पूरा करने के लिए हैं।
4. "इत्तक़ि" और "ला तुतिअ़" और "इत्तबिअ़" और "तवक्कल्" इन सब फ़रमानों और मुमानअ़तों पर आप पहले ही से अ़मल करने वाले हैं। यहाँ ज़्यादा मक़सूद मुख़ालिफ़ों को सुनाना है कि हमारे नबी तो इस हालत पर रहेंगे, तुम नाकाम और घाटा उठाने वाले होकर बैठ रहो।
5. उसके मुक़ाबले में उन लोगों की कोई तदबीर नहीं चल सकती, इसलिए कुछ अन्देशा न कीजिए।
6. जाहिलियत के ज़माने में ये तीनों ग़लत बातें मशहूर थीं कि ज़हीन और अ़क़्लमन्द आदमी के दो दिल समझा करते, और ज़िहार से हमेशा के लिए बीवी के हराम होने का हुक्म करते, और मुँह-बोले बेटे को तमाम अहकाम में हक़ीक़ी बेटे जैसा क़रार देते। यहाँ अगरचे असल मक़सद तीसरी ग़लती का दूर करना है, मगर बात को मज़बूत बनाने के लिए दो ग़लतियाँ और भी दूर कर दीं।

अन्फ़ुसिहिम् व अज़्वाजुहू उम्महातुहुम्, व उलुल्-अर्हामि बअ्ज़ुहुम् औला बि-बअ्ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि मिनल्-मुअ्मिनी-न वल्मुहाजिरी-न इल्ला अन् तफ़्अलू इला औलिया-इकुम् मअ्रूफ़न्, का-न ज़ालि-क फ़िल्-किताबि मस्तूरा **(6)** व इज़् अख़ज़्ना मिनन्नबिय्यी-न मीसा-क़हुम् व मिन्-क व मिन् नूहिंव्-व इब्राही-म व मूसा व ओसब्नि-मर्य-म व अख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा **(7)** लियस्-अलस्सादिक़ी-न अन् सिद्क़िहिम् व अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन् अलीमा **(8)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् जाअत्कुम् जुनूदुन् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहंव्-व जुनूदल्-लम् तरौहा, व कानल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीरा **(9)** इज़् जाऊकुम् मिन् फ़ौक़िकुम् व मिन् अस्-फ़-ल मिन्कुम् व इज़् ज़ा-ग़तिल्-अब्सारु व ब-ल-ग़तिल् क़ुलूबुल्-हनाजि-र व तज़ुन्नू-न बिल्लाहिज़्ज़ुनूना **(10)** हुनालिकब्- तुलियल्- मुअ्मिनू-न व ज़ुल्ज़िलू ज़िल्ज़ालन् शदीदा **(11)** व इज़् यक़ूलुल्- मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुम् मा व-अ-दनल्लाहु व रसूलुहू इल्ला ग़ुरूरा **(12)** व इज़् क़ालत्ताइ-फ़तुम् मिन्हुम् या अह्-ल यस्रि-ब ला मुक़ा-म लकुम् फ़र्जिअू व यस्तअ्ज़िनु फ़रीक़ुम् मिन्हुमुन्नबिय्-य यक़ूलू-न इन्-न बुयूतना औ-रतुन्, व मा हि-य बिऔ-रतिन्, इंय्युरीदू-न इल्ला फ़िरारा **(13)** व लौ दुख़िलत् अ़लैहिम् मिन् अक़्तारिहा सुम्-म सुइलुल्-फ़ित्-न-त लआतौहा व मा तलब्बसू बिहा

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَ
أُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَن تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُم مَّعْرُوفًا كَانَ
ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٦﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَ
مِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا
مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٧﴾ لِّيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَن صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ
لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا
وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٩﴾ إِذْ جَاءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ
أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَ
تَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا ﴿١٠﴾ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا
شَدِيدًا ﴿١١﴾ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢﴾ وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ
يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ
النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِن يُرِيدُونَ
إِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا

उनके नफ़्स से भी ज़्यादा ताल्लुक़ रखते हैं,[1] और आपकी बीवियाँ उनकी माएँ हैं।[2] और रिश्तेदार अल्लाह की किताब में एक-दूसरे से दूसरे मोमिनों और मुहाजिरों के मुक़ाबले में ज़्यादा ताल्लुक़ रखते हैं, मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो तो वह जायज़ है, यह बात लौहे-महफ़ूज़ में लिखी जा चुकी थी।[3] (6) और जबकि हमने तमाम पैग़म्बरों से उनका इक़रार लिया और आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से भी, और नूह (अ़लैहिस्सलाम) और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) और ईसा बिन मरियम (अ़लैहिस्सलाम) से भी, और हमने उन सबसे ख़ूब पक्का अ़हद लिया (7) ताकि उन सच्चों से उनके सच की तहक़ीक़ात करे, और काफ़िरों के लिए अल्लाह तआ़ला ने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।[4] (8) ◆

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह का इनाम याद करो जब तुमपर बहुत-से लश्कर चढ़ आए, फिर हमने उनपर एक आँधी भेजी और ऐसी फ़ौज भेजी जो तुमको दिखाई न देती थी, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल को देखते थे।[5] (9) जबकि वे लोग तुमपर आ चढ़े थे ऊपर की तरफ़ से भी और नीचे की तरफ़ से भी, और जबकि आँखें खुली की खुली रह गई थीं और कलेजे मुँह को आने लगे थे। और तुम लोग अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान कर रहे थे। (10) उस मौक़े पर मुसलमानों का इम्तिहान किया गया और सख़्त ज़लज़ले में डाले गए। (11) और जबकि मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, यूँ कह रहे थे कि हमसे तो अल्लाह और उसके रसूल ने धोखे ही का वायदा कर रखा है। (12) और जबकि उनमें से बाज़ लोगों ने कहा कि ऐ यसरिब[6] के लोगो! तुम्हारे लिए ठहरने का मौक़ा नहीं, सो लौट चलो। और बाज़ लोग उनमें नबी से इजाज़त माँगते थे, कहते थे कि हमारे घर ग़ैर-महफ़ूज़ "यानी असुरक्षित" हैं, हालाँकि वे ग़ैर-महफ़ूज़ नहीं हैं, ये सिर्फ़ भागना ही चाहते हैं। (13) और अगर (मदीना में) उसकी सम्तों और किनारों से

---

1. इसलिए मुसलमान पर अपनी जान से भी ज़्यादा आपका हक़ है। और आपकी इताअ़त पूरी तरह और ताज़ीम पूरे दर्जे में वाजिब है। और इसमें तमाम अहकाम और मामलात आ गए।

2. हुज़ूरे पाक की बीवियों का मुसलमानों की माँए होना अदब व ताज़ीम के एतिबार से है, और अदब व ताज़ीम की एक क़िस्म हराम होना भी है, इसलिए हराम होना भी ज़ाहिर हुआ।

3. यानी शरीअ़त का आख़िरी हुक्म रिश्तेदारों में मीरास की तक़सीम का हो जाएगा।

4. इस अ़हद और ग़रज़ से दोनों बातों का वाजिब होना साबित हो गया। जिसपर वह्य आए उसपर वह्य की इत्तिबा करने का और जिसपर वह्य न आए उसपर उसकी इत्तिबा का जिसपर वह्य आए।

5. इस वाक़िए का ख़ुलासा यह है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यहूद बनी नज़ीर को मदीने से निकाल दिया था। उन्होंने सन् चार या पाँच हिजरी में अ़रब के क़बीलों को बहकाया और सब दस या बारह हज़ार आदमी मदीना पर चढ़ आए। आपने मदीना के चारों तरफ़ ख़न्दक़ खुदवाई और तीन हज़ार आदमियों से सामना और मुक़ाबला किया, क़रीब एक महीना यह घेराव रहा आख़िर अल्लाह तआ़ला ने ज़ाहिरी तौर पर एक आँधी और बातिनी तौर पर फ़रिश्तों के लश्कर से सब काफ़िरों को तित्तर-बित्तर कर दिया और शिकस्त उनका मुक़द्दर बनी। चूँकि यहूद बनी क़ुरैज़ा ने अपने मुआ़हदे के विपरीत इन घेराव करने वालों की मदद की थी इसलिए आप अहज़ाब की लड़ाई से फ़ारिग़ होने के बाद उनके मुक़ाबले के लिए चले। वे पहले तो क़िले के अन्दर बन्द हो गए और बीस-पच्चीस दिन तक घेरे में रहे, फिर आख़िर तंग होकर निकले और बाज़े क़त्ल और बाज़े क़ैद किए गए। और इस वाक़िए में मुनाफ़िक़ों से भी बहुत-सी बेमुरव्वती की बातें सामने आईं। और चूँकि इसमें बहुत-से गिरोह चढ़ आए थे और ख़न्दक़ भी खुदी थी इसलिए इसका नाम ग़ज़्वा-ए-अहज़ाब (यानी गिरोहों वाली लड़ाई) भी है और ग़ज़्वा-ए-ख़न्दक़ (यानी ख़न्दक़ वाली लड़ाई) भी।

6. यानी मदीना।

इल्ला यसीरा (14) व ल-क़द् कानू आ-हदुल्ला-ह मिन् क़ब्लु ला युवल्लूनल्-अद्बा-र, व का-न अ़ह्दुल्लाहि मसूऊला (15) क़ुल् लंय्यन्फ़-अ़कुमुल्-फ़िरारु इन् फ़रर्तुम् मिनल्-मौति अविल्-क़त्लि व इज़ल् ला तुमत्तअू-न इल्ला क़लीला (16) क़ुल् मन् ज़ल्लज़ी यअ्सिमुकुम् मिनल्लाहि इन् अरा-द बिकुम् सूअन् औ अरा-द बिकुम् रह्म-तन्, व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा (17) क़द् यअ्-लमुल्लाहुल्-मुअ़व्विक़ी-न मिन्कुम् वल्क़ाइली-न लि-इख़्वानिहिम् हलुम्-म इलैना व ला यअ्तूनल्-बअ्-स इल्ला क़लीला (18) अशिह्-ह-तन् अ़लैकुम् फ़-इज़ा जा-अल्-ख़ौफ़ु रऐ-तहुम् यन्ज़ुरू-न इलै-क तदूरु अअ्युनुहुम् कल्लज़ी युग़्शा अ़लैहि मिनल्-मौति फ़-इज़ा ज़-हबल्-ख़ौफ़ु स-लक़ूकुम् बि-अल्सि-नतिन् हिदादिन् अशिह्-ह-तन् अ़लल्-ख़ैरि, उलाइ-क लम् युअ्मिनू फ़-अह्-बतल्लाहु अअ्मालहुम्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा (19) यह्सबूनल्-अह्ज़ा-ब लम् यज़्हबू व इंय्यअ्तिल्-अह्ज़ाबु यवद्दू लौ अन्नहुम् बादू-न फ़िल्-अअ्राबि यस्अलू-न अ़न् अम्बा-इकुम्, व लौ कानू फ़ीकुम् मा क़ा-तलू इल्ला क़लीला (20) ❖

ल-क़द् का-न लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्यौमल्-आख़ि-र व ज़-करल्ला-ह कसीरा (21) व लम्मा र-अल्-मुअ्मिनूनल् अह्ज़ा-ब क़ालू हाज़ा मा व-अ़-दनल्लाहु व रसूलुहू व स-दक़ल्लाहु व रसूलुहू व मा ज़ा-दहुम् इल्ला

الفتنة لاتوها وما تلبثوا بها الا يسيرا ﴿١٤﴾ ولقد كانوا
عاهدوا الله من قبل لا يولون الادبار وكان عهد الله
مسئولا ﴿١٥﴾ قل لن ينفعكم الفرار ان فررتم من الموت او
القتل واذا لا تمتعون الا قليلا ﴿١٦﴾ قل من ذا الذي يعصمكم
من الله ان اراد بكم سوءا او اراد بكم رحمة و
لا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا ﴿١٧﴾ قد
يعلم الله المعوقين منكم والقائلين لاخوانهم هلم
الينا ولا ياتون البأس الا قليلا ﴿١٨﴾ اشحة عليكم فاذا
جاء الخوف رايتهم ينظرون اليك تدور اعينهم كالذي
يغشى عليه من الموت فاذا ذهب الخوف سلقوكم بالسنة
حداد اشحة على الخير اولئك لم يؤمنوا فاحبط الله اعمالهم
وكان ذلك على الله يسيرا ﴿١٩﴾ يحسبون الاحزاب لم
يذهبوا وان يات الاحزاب يودوا لو انهم بادون في
الاعراب يسالون عن انبائكم ولو كانوا فيكم ما قتلوا
الا قليلا ﴿٢٠﴾ لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة لمن
كان يرجوا الله واليوم الاخر وذكر الله كثيرا ﴿٢١﴾ ولما را

उनपर कोई आ घुसे फिर उनसे फ़साद की दरख़्वास्त की जाए तो ये उसको मन्ज़ूर कर लें और उन घरों में बहुत ही कम ठहरें। **(14)** हालाँकि यही लोग पहले ख़ुदा से अ़हद कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे,[1] और अल्लाह से जो अ़हद किया जाता है उसकी पूछ "और सवाल" होगा। **(15)** आप फ़रमा दीजिए कि तुमको भागना कुछ फ़ायदेमन्द नहीं हो सकता। अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागते हो, और इस हालत में सिवाय थोड़े दिनों के और ज़्यादा फ़ायदा उठाने वाले नहीं हो सकते।[2] **(16)** यह भी फ़रमा दीजिए कि वह कौन है जो तुमको ख़ुदा से बचा सके, अगर वह तुम्हारे साथ बुराई करना चाहे।[3] या वह कौन है जो ख़ुदा के फ़ज़्ल से तुमको रोक सके अगर वह तुमपर फ़ज़्ल करना चाहे,[4] और ख़ुदा के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएँगे और न कोई मददगार। **(17)** अल्लाह तआ़ला तुममें से उन लोगों को जानता है जो रुकावट बनते हैं और जो अपने (नसबी या वतनी) भाइयों से यूँ कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ, और लड़ाई में बहुत ही कम आते हैं। **(18)** तुम्हारे हक़ में कन्जूसी लिए हुए,[5] सो जब ख़ौफ़ पेश आता है तो उनको देखते हो कि वे आपकी तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आँखें चकराई जाती हैं, जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो। फिर जब वह ख़ौफ़ दूर हो जाता है तो तुमको तेज़-तेज़ ज़बानों से ताने देते हैं, माल पर हिर्स लिए हुए।[6] ये लोग ईमान नहीं लाए तो अल्लाह तआ़ला ने उनके तमाम आमाल बेकार कर रखे हैं, और यह बात अल्लाह के नज़दीक बिलकुल आसान है। **(19)** उन लोगों का यह ख़्याल है कि (अभी तक) ये लश्कर गए नहीं, और अगर (फ़र्ज़ कर लें कि) ये (गए हुए) लश्कर (फिर लौटकर) आ जाएँ तो (फिर तो) ये लोग (अपने लिए) यही पसन्द करेंगे कि काश! हम देहातियों में बाहर जाकर रहें कि तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें, और अगर तुम ही में रहें तब भी कुछ यूँ ही-सा लड़ें।[7] **(20)** ❖

तुम लोगों के लिए यानी ऐसे शख़्स के लिए जो अल्लाह से और आख़िरत के दिन से डरता हो, और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो,[8] रसूलुल्लाह का एक उम्दा नमूना मौजूद था।[9] **(21)** और जब ईमान

---

1. यह अ़हद उस वक़्त किया था जबकि बद्र की लड़ाई में बाज़ लोग शरीक होने से रह गए थे। तो बाज़ मुनाफ़िक़ भी मुफ़्त की भलाई लेने के लिए कहने लगे कि अफ़सोस! हम शरीक न हुए, ऐसा करते वैसा करते। जब वक़्त आया तो सारी क़लई खुल गई।

2. यानी भागकर उम्र नहीं बढ़ सकती, क्योंकि उसका वक़्त तो पहले से तय है। और जब तय है तो अगर न भागते तो भी वक़्त से पहले मर नहीं सकते, पस न तो डटे रहने से कोई नुक़सान और न फ़रार होने से कोई नफ़ा, फिर भागना सिर्फ़ बेअ़क़्ली है।

3. जैसे वह तुमको हलाक करना चाहे तो क्या तुमको कोई बचा सकता है? जैसा कि तुम फ़रार होने को फ़ायदेमन्द ख़्याल करते हो।

4. जैसे वह ज़िन्दा रखना चाहे जो कि दुनिया के एतिबार से रहमत है, तो कोई उसके लिए रुकावट हो सकता है? जैसा कि तुम्हारा ख़्याल है कि लड़ाई में जमे रहने को ज़िन्दगी के ख़त्म होने का सबब समझते हो।

5. यानी आने में बड़ी नीयत यह होती है कि ग़नीमत का सारा माल मुसलमानों को न मिल जाए। नाम के लिए शरीक होने से ग़नीमत के माल के हक़दार होने का दावा तो किसी दर्जे में कर सकेंगे।

6. यानी ग़नीमत के माल के लिए दिल दुखाने वाली बातें करते हैं, कि हम शरीक क्यों न थे? हमारे ही पीछा संभालने से तुमको यह जीत नसीब हुई है।

7. आगे जंग में डटे रहने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी को ईमान का मुक़्तज़ा होना बयान फ़रमाते हैं, ताकि मुनाफ़िक़ों को शर्म दिलाई जा सके कि ईमान का दावा करने के बावजूद उसके तक़ाज़े के ख़िलाफ़ किया और मुख़्लिस हज़रात को ख़ुशख़बरी हो कि ये लोग अल्लाह से डरने के सही मिस्दाक़ हैं।

8. "यरजू" में आग़ाज़ व अन्जाम का एतिक़ाद आ गया। और "ज़-करल्ला-ह" में सब इबादतें और नेकियाँ आ गईं।

9. आगे मुनाफ़िक़ों के मुक़ाबले में मुख़्लिस मोमिनों का ज़िक्र है।

ईमानंव्-व तस्लीमा (22) मिनल्-मुअ्मिनी-न रिजालुन् स-दक़ू मा आ-हदुल्ला-ह अ़लैहि फ़मिन्हुम् मन् क़ज़ा नह्-बहू व मिन्हुम् मंय्यन्तज़िरु व मा बद्दलू तब्दीला (23) लियज्ज़ि-यल्लाहुस्सादिक़ी-न बिसिद्क़िहिम् व युअ़ज़्ज़िबल्-मुनाफ़िक़ी-न इन् शा-अ औ यतू-ब अ़लैहिम्, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (24) व रद्दल्लाहुल्लज़ी-न क-फ़रू बिग़ैज़िहिम् लम् यनालू ख़ैरन्, व कफ़ल्लाहुल्-मुअ्मिनीनल्-क़िता-ल, व कानल्लाहु क़विय्यन् अ़ज़ीज़ा (25) व अन्ज़लल्लज़ी-न ज़ा-हरूहुम् मिन् अह्लिल्-किताबि मिन् सयासीहिम् व क़-ज़-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्-रुअ्-ब फ़रीक़न् तक़्तुलू-न व तअ्सिरू-न फ़रीक़ा (26) व औ-र-सकुम् अर्-ज़हुम् व दिया-रहुम् व अम्वा-लहुम् व अर्ज़ल्-लम् त-तऊहा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा (27) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिअज़्वाजि-क इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्-हयातद्दुन्या व ज़ीन-तहा फ़-तआ़लै-न उमत्तिअ्कुन्-न व उसर्रिह्कुन्-न सराहन् जमीला (28) व इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्ला-ह व रसूलहू वद्दारल्-आख़िर-त फ़-इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्मुह्सिनाति मिन्कुन्-न अज्रन् अ़ज़ीमा (29) या निसाअन्नबिय्यि मंय्यअ्ति मिन्कुन्-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यि-नतिंय्-युज़ा-अ़फ़् ल-हल्-अ़ज़ाबु ज़िअ्फ़ैनि, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा (30)

المؤمنون الاحزاب قالوا هذا ما وعدنا الله ورسوله و
صدق الله ورسوله وما زادهم الا ايمانا وتسليما ﴿٢٢﴾ من
المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه فمنهم من
قضى نحبه ومنهم من ينتظر وما بدلوا تبديلا ﴿٢٣﴾ ليجزي
الله الصدقين بصدقهم ويعذب المنفقين ان شاء
او يتوب عليهم ان الله كان غفورا رحيما ﴿٢٤﴾ ورد الله الذين
كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا وكفى الله المؤمنين القتال
وكان الله قويا عزيزا ﴿٢٥﴾ وانزل الذين ظاهروهم من اهل
الكتب من صياصيهم وقذف في قلوبهم الرعب فريقا
تقتلون وتاسرون فريقا ﴿٢٦﴾ واورثكم ارضهم وديارهم و
اموالهم وارضا لم تطئوها وكان الله على كل شيء قديرا ﴿٢٧﴾
يايها النبي قل لازواجك ان كنتن تردن الحيوة الدنيا وزينتها
فتعالين امتعكن واسرحكن سراحا جميلا ﴿٢٨﴾ وان كنتن تردن
الله ورسوله والدار الاخرة فان الله اعد للمحسنت منكن اجرا
عظيما ﴿٢٩﴾ ينساء النبي من يات منكن بفاحشة مبينة
يضعف لها العذاب ضعفين وكان ذلك على الله يسيرا ﴿٣٠﴾

वालों ने उन लश्करों को देखा तो कहने लगे कि यह वही है जिसकी हमको अल्लाह और उसके रसूल ने ख़बर दी थी, और अल्लाह व रसूल ने सच फ़रमाया था और उससे उनके ईमान और फ़रमाँबरदारी में तरक़्क़ी हो गई।[1] (22) उन मोमिनों में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उन्होंने जिस बात का अल्लाह से अ़हद किया था उसमें सच्चे उतरे,[2] फिर बाज़े आदमी तो उनमें वे हैं जो अपनी मन्नत पूरी कर चुके हैं और बाज़े उनमें आरज़ू करने वाले हैं और उन्होंने ज़रा भी बदलाव नहीं किया। (23) यह वाक़िआ़ इसलिए हुआ ताकि अल्लाह तआ़ला सच्चे मुसलमानों को उनके सच का सिला दे, और मुनाफ़िक़ों को चाहे सज़ा दे या चाहे उनको तौबा की तौफ़ीक़ दे। बेशक अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (24) और अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को उनके गुस्से में भरा हुआ हटा दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई। और जंग में अल्लाह तआ़ला मुसलमानों के लिए आप ही काफ़ी हो गया,[3] और अल्लाह तआ़ला बड़ी क़ुव्वत वाला, बड़ा ज़बरदस्त है। (25) और जिन अहले किताब ने उनकी मदद की थी उनको उनके क़िलों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में तुम्हारा रौब बिठा दिया, बाज़ को तुम क़त्ल करने लगे और बाज़ को क़ैद कर लिया। (26) और उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का तुमको मालिक बना दिया, और ऐसी ज़मीन का भी जिसपर तुमने क़दम नहीं रखा,[4] और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।[5] (27) ◆

ऐ नबी! आप अपनी बीवियों से फ़रमा दीजिए कि तुम अगर दुनियावी ज़िन्दगी (का ऐश) और उसकी बहार चाहती हो तो आओ मैं तुमको कुछ माल और (दुनियावी) सामान दे दूँ और तुमको ख़ूबी के साथ रुख़्सत करूँ।[6] (28) और अगर तुम अल्लाह को चाहती हो और उसके रसूल को और आख़िरत के घर को तो तुममें नेक किरदारों के लिए अल्लाह तआ़ला ने बड़ा अज्र मुहैया कर रखा है। (29) ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की बीवियो! जो कोई तुममें से खुली हुई बेहूदगी करेगी,[7] उसको दोहरी सज़ा दी जाएगी। और यह बात अल्लाह को आसान है। (30)

---

1. यह सिफ़त तो सब मोमिनों में मुश्तरक रूप से है और बाज़ सिफ़तें बाज़ मोमिनों में ख़ास भी हैं जिसका बयान आगे है।
2. यह तक़सीम इस बिना पर है कि बाज़ ने अ़हद ही नहीं किया था और बिना अ़हद ही साबित-क़दम रहे। और मुराद उन अ़हद करने वालों से हज़रत अनस बिन नज़र और उनके साथी हैं। जो हज़रात इत्तिफ़ाक़ से बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं हो पाए थे, तो उनको अफ़सोस हुआ और अ़हद किया कि अगर अब की बार कोई जिहाद हो तो उसमें हमारी जान तोड़ कोशिश देख ली जाएगी। मतलब यह था कि मुँह न मोड़ेंगे चाहे मारे जाएँ।
3. यानी काफ़िरों को लड़ने की बाक़ायदा नौबत भी न आई कि पहले ही दफ़ा हो गए।
4. इसमें ख़ुशख़बरी है आने वाली जीत और फ़ुतूहात की उमूमन, या ख़ैबर की जीत की ख़ुसूसन, जो इसके कुछ बाद हासिल हुई।
5. इसलिए यह चीज़ें कुछ मुश्किल नहीं हैं।
6. हुज़ूरे पाक की बीवियों (रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न) के तक़ाज़े के साथ कुछ ज़ायद दुनियावी सामान माँगने से जिसको वे ग़लती से ज़ायद न समझी थीं, आपके दिल मुबारक को तकलीफ़ पहुँची, यहाँ तक कि आप नाराज़ होकर एक महीने के लिए सबसे अलग हो गए। ये आयतें उसके मुताल्लिक़ नबी-ए-करीम की पाक बीवियों (जो तमाम मुसलमानों की माएँ हैं) की तंबीह के लिए इरशाद हुईं। और ग़ालिबन उस माँगने की वजह यह हुई कि ख़ैबर वग़ैरह के फ़त्ह होने से किसी क़द्र माली वुसअ़त हासिल हो गई थी, तो अपने ख़्याल में वे इसको तकलीफ़ का सबब नहीं समझीं। और यह क़िस्सा ख़ैबर के फ़त्ह होने के बाद हुआ, चुनाँचे उस वक़्त हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा भी आपके निकाह में थीं जो ख़ैबर से हासिल हुई थीं।
7. इससे वह मामला मुराद है जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तंग और परेशान हों।

बाईसवाँ पारः व मंय्यक़्नुत्

सूरतुल्-अह्ज़ाबि (आयत 31 से 73)

व मंय्यक़्नुत् मिन्कुन्-न लिल्लाहि व रसूलिही व तअ्मल् सालिहन् नुअ्तिहा अज्रहा मर्रतैनि व अअ्तद्ना लहा रिज़्क़न् करीमा **(31)** या निसा-अन्नबिय्यि लस्तुन्-न क-अ-हदिम् मिनन्निसा-इ इनित्तक़ैतुन्-न फ़ला तख़्-ज़अ्-न बिल्क़ौलि फ़यत्म-अ़ल्लज़ी फ़ी क़ल्बिही म-रज़ुंव्-व क़ुल्-न क़ौलम् मअ्रूफ़ा **(32)** व क़र्-न फ़ी बुयूतिकुन्-न व ला त-बर्रज्-न त-बर्रुजल्-जाहिलिय्यतिल्-ऊला व अक़िम्नस्सला-त व आतीनज़्-ज़का-त व अतिअ्नल्ला-ह व रसूलहू, इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़्हि-ब अ़न्कुमुर्-रिज्-स अह्लल्-बैति व यु-तह्हि-रकुम् ततह्हीरा **(33)** वज़्कुर्-न मा युत्ला फ़ी बुयूतिकुन्-न मिन् आयातिल्लाहि वल्हिक्मति, इन्नल्ला-ह का-न लतीफ़न् ख़बीरा **(34)** ❖
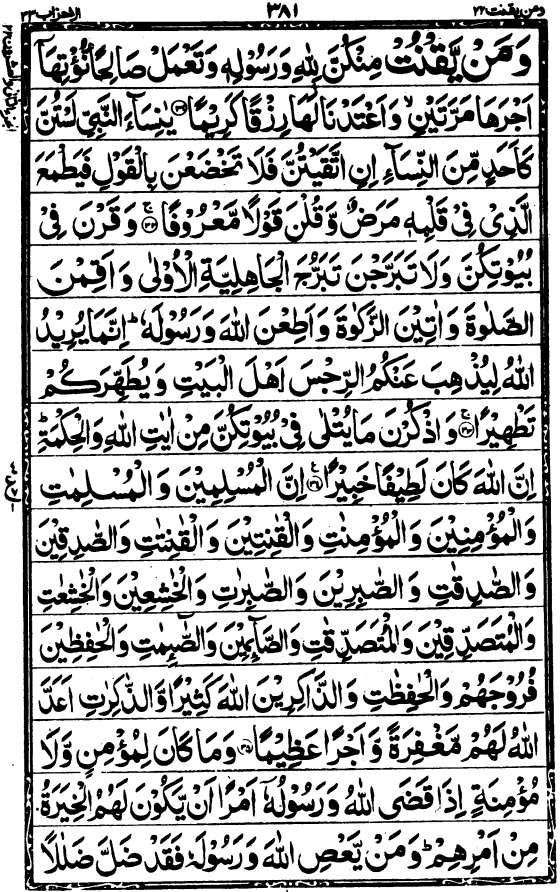
इन्नल्-मुस्लिमी-न वल्मुस्लिमाति वल्मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति वल्क़ानिती-न वल्क़ानिताति वस्सादिक़ी-न वस्सादिक़ाति वस्साबिरी-न वस्साबिराति वल्ख़ाशिई-न वल्ख़ाशिआति वल्मु-तसद्दिक़ी-न वल्मु-तसद्दिक़ाति वस्सा-इमी-न वस्सा-इमाति वल्हाफ़िज़ी-न फ़ुरू-जहुम् वल्हाफ़िज़ाति वज़्ज़ाकिरीनल्ला-ह कसीरंव्-वज़्ज़ाकिराति अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् मग़्फ़ि-रतंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा **(35)** व मा का-न लिमुअ्मिनिंव्-व ला मुअ्मि-नतिन् इज़ा क़ज़ल्लाहु व रसूलुहू अम्रन्

الاحزاب ٣٣ ٣٨١ ومن يقنت ٢٢

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ
اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۝ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ
كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ
الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝ وَقَرْنَ فِيْ
بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ
اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيْرًا ۝ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ
وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ
وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ
وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ
فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ
اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا
مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ
مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا

منزل ٥

बाईसवाँ पारः व मंय्यक़्नुत्

सूरः अहज़ाब (आयत 31 से 73)

और जो कोई तुममें अल्लाह की और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करेगी और नेक काम करेगी तो हम उसको उसका सवाब दोहरा देंगे, और हमने उसके लिए एक उम्दा रोज़ी तैयार कर रखी है। **(31)** ऐ नबी की बीवियो! तुम मामूली औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करो,[1] तो तुम (नामेहरम मर्द से) बोलने में (जबकि ज़रूरत से बोलना पड़े) नरमी और लचक मत करो, (इससे) ऐसे शख़्स को (तबई तौर पर बुरा) ख़्याल पैदा होने लगता है जिसके दिल में ख़राबी है, और (पाकदामनी के) क़ायदे के मुवाफ़िक़ बात कहो।[2] **(32)** और तुम अपने घरों में क़रार से रहो और पुराने जहालत के ज़माने के दस्तूर के मुवाफ़िक़ मत फिरो, और तुम नमाज़ों की पाबन्दी रखो और ज़कात दिया करो और अल्लाह का और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का कहना मानो, अल्लाह को यह मन्ज़ूर है कि ऐ घर वालो! तुमसे आलूदगी को दूर रखे और तुमको (हर तरह ज़ाहिरी तौर पर भी और बातिनी तौर पर भी) पाक-साफ़ रखे। **(33)** और तुम उन आयतों को और उस इल्म (अहकाम) को याद रखो जिसका तुम्हारे घरों में चर्चा रहता है।[3] बेशक अल्लाह तआ़ला राज़ का जानने वाला है, पूरा ख़बर रखने वाला है। **(34)** ◆

बेशक इस्लाम के काम करने वाले मर्द और इस्लाम के काम करने वाली औरतें, और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें,[4] और फ़रमाँबरदारी करने वाले मर्द और फ़रमाँबरदारी करने वाली औरतें, और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और ख़ुशूअ़ करने वाले मर्द और ख़ुशूअ़ करने वाली औरतें, और ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें, और अपनी शरमगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और कसरत से ख़ुदा को याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें, इन सबके लिए अल्लाह तआ़ला ने मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र तैयार कर रखा है।[5] **(35)** और किसी ईमान वाले मर्द और किसी ईमान वाली औरत को गुन्जाइश नहीं है जबकि अल्लाह और उसका रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) किसी काम का हुक्म दे दें कि (फिर) उन (मोमिनों) को उनके उस काम में कोई इख़्तियार (बाक़ी) रहे। और जो शख़्स अल्लाह का और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का कहना न मानेगा वह खुली गुमराही में जा पड़ा।[6] **(36)** और जब आप उस शख़्स से फ़रमा रहे थे जिसपर अल्लाह ने भी इनाम किया

---

1. यानी तक़्वे के बग़ैर ख़ाली निस्बत बेकार है!
2. मतलब यह है कि जैसे औरतों के बात करने का एक फ़ितरी अन्दाज़ होता है कि बोलने में नरमी होती है, मिज़ाज की सादगी से उस अन्दाज़ को मत बरतो, बल्कि ऐसे मौक़े पर तकल्लुफ़ और एहतिमाम से उस फ़ितरी अन्दाज़ को बदल कर बातचीत करो, यानी ऐसे अन्दाज़ से बातचीत करो जिसमें रूखापन हो कि यह पाकदामनी और आबरू की हिफ़ाज़त करने वाला है।
3. अल्लाह की आयतें यानी क़ुरआन।
4. इस्लाम से मुराद नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज वग़ैरह आमाल हुए, और ईमान से मुराद अ़कायद हुए।
5. अगली आयत के नाज़िल होने का सबब यह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु का निकाह अपनी फूफीज़ाद बहन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा से करना चाहा। चूँकि हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु गुलाम मश्हूर हो चुके थे इसलिए हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा और उनके भाई अ़ब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इस निकाह की मन्ज़ूरी से उज़्र किया, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।
6. अगली आयत के नाज़िल होने का सबब यह है कि जब गुज़री हुई आयत के नाज़िल होने पर **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 764 पर)**

अंय्यकू-न लहुमुल्-ख़ि-य-रतु मिन् अम्रिहिम्, व मंय्यअ्सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-मुबीना **(36)** व इज़् तक़ूलु लिल्लज़ी अन्-अमल्लाहु अ़लैहि व अन्अम्-त अ़लैहि अम्सिक् अ़लै-क ज़ौ-ज-क वत्तक़िल्ला-ह व तुख़्फ़ी फ़ी नफ़्सि-क मल्लाहु मुब्दीहि व तख़्शन्ना-स वल्लाहु अ-हक़्क़ु अन् तख़्शाहु, फ़-लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम्-मिन्हा व-तरन् ज़व्वज्ना-क-हा लिकैला यकू-न अ़लल्-मुअ्मिनी-न ह-रजुन् फ़ी अज़्वाजि अद्अ़िया-इहिम् इज़ा क़ज़ौ मिन्हुन्-न व-तरन्, व का-न अम्रुल्लाहि मफ़्अूला **(37)** मा का-न अ़लन्नबिय्यि मिन् ह-रजिन् फ़ीमा फ़-रज़ल्लाहु लहू, सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लु, व का-न अम्रुल्लाहि क़-दरम् मक़्दूरा **(38)** अल्लज़ी-न युबल्लिग़ू-न रिसालातिल्लाहि व यख़्शौनहू व ला यख़्शौ-न अ-हदन् इल्लल्ला-ह, व कफ़ा बिल्लाहि हसीबा **(39)** मा का-न मुहम्मदुन् अबा अ-हदिम्-मिर्रिजालिकुम् व लाकिर्रसूलल्लाहि व ख़ा-तमन्-नबिय्यी-न, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा **(40)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरुल्ला-ह ज़िक्रन् कसीरा **(41)** व सब्बिहूहु बुक्र-तंव्-व असीला **(42)** हुवल्लज़ी युसल्ली अ़लैकुम् व मलाइ-कतुहू लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व का-न बिल्मुअ्मिनी-न रहीमा **(43)** तहिय्यतुहुम् यौ-म यल्क़ौनहू सलामुन् व अ-अ़द्-द लहुम् अज्रन् करीमा **(44)** या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा **(45)** व दाअ़ि-यन्

ومن يقنت ٢٢ ٣٨٢ الاحزاب ٣٣

مُّبِينًا ۝ وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ
أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ
مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَى
زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ
فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ
مَفْعُولًا ۝ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا
مَّقْدُورًا ۝ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ
أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّنْ
رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِنْ رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝ وَ
سَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ
لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝
تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا
النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى
اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِّنَ

منزل

और आपने भी इनाम किया,[1] कि अपनी बीवी (ज़ैनब) को अपने निकाह में रहने दे और ख़ुदा से डर, और आप अपने दिल में वह (बात भी) छुपाए हुए थे जिसको अल्लाह तआला (आख़िर में) ज़ाहिर करने वाला था, और आप लोगों (के ताना देने) से अन्देशा करते थे, और डरना तो आपको ख़ुदा ही से ज़्यादा मुनासिब है।[2] फिर जब ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का उससे जी भर गया,[3] हमने आपसे उसका निकाह कर दिया, ताकि मुसलमानों पर अपने मुँह-बोले बेटों की बीवियों के (निकाह के) बारे में कुछ तंगी न रहे, जब वे (मुँह बोले बेटे) उनसे अपना जी भर चुकें,[4] और ख़ुदा का यह हुक्म तो होने वाला ही था। **(37)** और उन पैग़म्बर के लिए जो बात (तक़दीरी तौर पर या शरीअ़त के हुक्म के तौर पर) ख़ुदा तआ़ला ने मुक़र्रर कर दी थी उसमें नबी पर कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तआ़ला ने उन (पैग़म्बरों) के हक़ में (भी) यही मामूल कर रखा है जो पहले हो गुज़रे हैं, और अल्लाह का हुक्म (पहले से) तजवीज़ किया हुआ होता है। **(38)** ये सब (पहले गुज़रे हुए पैग़म्बर) ऐसे थे कि अहकाम पहुँचाया करते थे और इस बारे में अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरते थे, और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है। **(39)** मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन अल्लाह के रसूल हैं, सब नबियों के ख़त्म पर हैं, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानता है। **(40)** ◆

(और) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को ख़ूब कसरत से याद करो **(41)** और सुबह व शाम (यानी हमेशा) उसकी तस्बीह (व पाकी बयान) करते रहो। **(42)** वह ऐसा (रहीम) है कि वह (ख़ुद भी) और उसके फ़रिश्ते (भी) तुमपर रहमत भेजते रहते हैं,[5] ताकि हक़ तआ़ला तुमको अन्धेरियों से नूर की तरफ़ ले आए। और अल्लाह तआ़ला मोमिनों पर बहुत मेहरबान है। **(43)** वे जिस दिन अल्लाह से मिलेंगे तो उनको जो सलाम होगा वह यह होगा कि अस्सलामु अ़लैकुम, और अल्लाह ने उनके लिए उम्दा सिला (जन्नत) तैयार कर रखा है। **(44)** ऐ नबी! हमने बेशक आपको इस शान का रसूल बनाकर भेजा है कि आप गवाह होंगे और आप (मोमिनों को) ख़ुशख़बरी देने वाले हैं, और (काफ़िरों को) डराने वाले हैं। **(45)** और (सबको) अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाले हैं और आप एक रोशन चिराग़ हैं।[6] **(46)** और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे

(पृष्ठ 762 का शेष) निकाह मन्ज़ूर कर लिया गया तो इत्तिफ़ाक़ से आपस में मिज़ाजों में मुवाफ़क़त और मिलाप न हुआ। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तलाक़ देना चाहा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मश्विरा किया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने समझाया कि तलाक़ मत दो। मगर जब किसी तरह निभाह न हुआ, आख़िर फिर तलाक़ का इरादा ज़ाहिर किया। उस वक़्त आपको वह्य से मालूम हुआ कि ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ज़रूर तलाक़ देंगे और ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का आपसे निकाह होगा। और उस वक़्त मस्लहत भी यही थी, क्योंकि अव्वल तो यह निकाह मरज़ी के ख़िलाफ़ होने से तबई तकलीफ़ का सबब हुआ था, फिर उसपर तलाक़ देना और ज़्यादा परेशानी, तकलीफ़ और दिल टूटने का सबब था। उस दिल टूटने की तलाफ़ी जिससे हज़रत ज़ैनब रज़ि. के आँसू पोंछे जा सकते थे, इससे बेहतर और कोई न थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनसे निकाह करके उनका दिल रखें और सम्मानित फ़रमाएँ, मगर साथ ही अ़वाम के ताने देने और बुरा-भला कहने का ख़्याल था, मगर अल्लाह के हुक्म से निकाह हुआ, जिसमें ज़िक्र हुई ख़ास मस्लहत के अ़लावा शरीअ़त की यह आ़म मस्लहत भी थी कि मुँह-बोले बेटे की बीवी से निकाह का हलाल होना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अ़मल से साबित हो जाए।

1. इससे हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु मुराद हैं।
2. इससे हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के तलाक़ देने की सूरत में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह मुराद है।

फ़ायदाः दीनी मस्लहत के मालूम होने के बाद फिर आपने अन्देशा नहीं किया।

3. यानी तलाक़ दे दी और इद्दत भी गुज़र गई।
4. यानी तलाक़ दे दें। मतलब यह कि शरीअ़त के इस हुक्म का इज़्हार करना हमको मक़सूद था। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 766 पर)**

इलल्लाहि बि-इज़्निही व सिराजम्-मुनीरा **(46)** व बश्शिरिल्-मुअ्मिनी-न बिअन्-न लहुम् मिनल्लाहि फ़ज़्लन् कबीरा **(47)** व ला तुतिअिल्-काफ़िरी-न वल्-मुनाफ़िक़ी-न व दअ् अज़ाहुम् व तवक्कल् अ़लल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला **(48)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नकह्तुमुल् मुअ्मिनाति सुम्-म तल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न फ़मा लकुम् अ़लैहिन्-न मिन् अ़िद्दतिन् तअ्तद्दूनहा फ़-मत्तिअूहुन्-न व सर्रिहू-हुन्-न सराहन् जमीला **(49)** या अय्युहन्-नबिय्यु इन्ना अह्लल्ना ल-क अज़्वा-जकल्लाती आतै-त उजू-रहुन्-न व मा म-लकत् यमीनु-क मिम्मा अफ़ाअल्लाहु अ़लै-क व बनाति अ़म्मि-क व बनाति अ़म्माति-क व बनाति ख़ालि-क व बनाति ख़ालातिकल्--लाती हाजर्-न म-अ़-क वम्-र-अतम् मुअ्मि-नतन् इंव्व-हबत् नफ़्सहा लिन्नबिय्यि इन् अरादन्नबिय्यु अंय्यस्तन्कि-हहा, ख़ालि-सतल् ल-क मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न, क़द् अ़लिम्ना मा फ़रज़्ना अ़लैहिम् फ़ी अज़्वाजिहिम् व मा म-लकत् ऐमानुहुम् लिकैला यकू-न अ़लै-क ह-रजुन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा **(50)** तुर्जी मन् तशा-उ मिन्हुन्-न व तुअ्वी इलै-क मन् तशा-उ, व मनिब्तग़ै-त मिम्मन् अ़ज़ल्-त फ़ला जुना-ह अ़लै-क, ज़ालि-क अद्ना अन् तक़र्-र अअ्युनुहुन्-न व ला यह्ज़न्-न व यर्ज़ै-न बिमा आतै-तहुन्-न कुल्लुहुन्-न, वल्लाहु यअ्लमु मा फ़ी क़ुलूबिकुम्, व कानल्लाहु अ़लीमन् हलीमा **(51)** ला

الله فضلا كبيرا ﴿٤٧﴾ ولا تطع الكفرين والمنفقين ودع
اذىهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ﴿٤٨﴾ يايها الذين
امنوا اذا نكحتم المؤمنت ثم طلقتموهن من قبل ان
تمسوهن فما لكم عليهن من عدة تعتدونها فمتعوهن
وسرحوهن سراحا جميلا ﴿٤٩﴾ يايها النبي انا احللنا لك ازواجك
التي اتيت اجورهن وما ملكت يمينك مما افاء الله عليك
وبنت عمك وبنت عمتك وبنت خالك وبنت خلتك
التي هاجرن معك وامراة مؤمنة ان وهبت نفسها للنبي
ان اراد النبي ان يستنكحها خالصة لك من دون المؤمنين
قد علمنا ما فرضنا عليهم في ازواجهم وما ملكت ايمانهم
لكيلا يكون عليك حرج وكان الله غفورا رحيما ﴿٥٠﴾ ترجي
من تشاء منهن وتؤي اليك من تشاء ومن ابتغيت
ممن عزلت فلا جناح عليك ذلك ادنى ان تقر اعينهن
ولا يحزن ويرضين بما اتيتهن كلهن والله يعلم
ما في قلوبكم وكان الله عليما حليما ﴿٥١﴾ لا يحل لك
النساء من بعد ولا ان تبدل بهن من ازواج ولو

दीजिए कि उनपर अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल होने वाला है। **(47)** और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहना न मानिए, और उनकी तरफ़ से जो तकलीफ़ पहुँचे उसका ख़्याल न कीजिए,[1] और अल्लाह पर भरोसा कीजिए और अल्लाह तआ़ला काफ़ी कारसाज़ है। **(48)** ऐ ईमान वालो! तुम जब मुसलमान औ़रतों से निकाह करो (और) फिर तुम उनको हाथ लगाने से पहले (किसी इत्तिफ़ाक़ से) तलाक़ दे दो,[2] तो तुम्हारी उनपर कोई इ़द्दत (वाजिब) नहीं, जिसको तुम गिनने लगो, तो उनको कुछ (माल) सामान दे दो,[3] और ख़ूबी के साथ उनको रुख़्सत करो।[4] **(49)** ऐ नबी! हमने आपके लिए आपकी ये बीवियाँ जिनको आप उनके मह्र दे चुके हैं, हलाल की हैं, और वे औ़रतें भी जो तुम्हारी मम्लूका हैं, जो अल्लाह तआ़ला ने ग़नीमत में आपको दिलवा दी हैं, और आपके चचा की बेटियाँ और आपकी फूफियों की बेटियाँ और आपके मामूँ की बेटियाँ और आपकी ख़ालाओं की बेटियाँ भी जिन्होंने आपके साथ हिजरत की हो, और उस मुसलमान औ़रत को भी जो बिना बदले के अपने को पैग़म्बर को दे दे,[5] बशर्ते कि पैग़म्बर उसको निकाह में लाना चाहें। ये सब आपके लिए मख़्सूस किए गए हैं :ा कि और मोमिनों के लिए। हमको वे अहकाम मालूम हैं जो हमने उनपर उनकी बीवियों और बाँदियों के बारे में मुक़र्रर किए हैं। ताकि आप पर किसी क़िस्म की तंगी न हो। और अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। **(50)** उनमें से आप जिसको चाहें (और जब तक चाहें) अपने से दूर रखें, और जिसको चाहें (और जब तक चाहें) अपने नज़दीक रखें,[6] और जिनको दूर कर रखा था उनमें से फिर किसी को तलब करें तब भी आप पर कोई गुनाह नहीं।[7] इसमें ज़्यादा उम्मीद है कि उनकी आँखें ठन्डी रहेंगी[8] और ग़मगीन न होंगी। और जो कुछ भी आप उनको दे देंगे उसपर सबकी सब राज़ी रहेंगी। और ख़ुदा तआ़ला को तुम लोगों के दिलों की सब बातें मालूम हैं, और अल्लाह तआ़ला (यही क्या) सब कुछ जानने वाला, बुर्दबार

(पृष्ठ 764 का शेष) **5.** उसका रहमत भेजना तो रहमत करना है, और फ़रिश्तों का रहमत भेजना रहमत की दुआ़ करना है।

6. इसलिए कि आपकी हर हालत नूर के तालिबों के लिए हिदायत का सरमाया है। पस क़ियामत में उन मोमिनों पर जो कुछ रहमत होगी वह आप ही की इन सिफ़्तों यानी ख़ुशख़बरी देने वाले, डराने वाले, अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले और रोशन चिराग़ होने की के वास्ते से है।

1. यानी उनका ताना देना और एतिराज़ करना उनको तब्लीग़ करने से रोकने का सबब न हो जाए।

2. हाथ लगाना, इससे सोहबत करने की तरफ़ इशारा है, चाहे वह हक़ीक़त में हो या हुक्मन, जैसे इतनी तन्हाई कि जिसमें सोहबत की जा सके।

3. माल व सामान में यह तफ़सील है कि अगर उसका मह्र मुक़र्रर नहीं हुआ तो यह सामान एक जोड़ा है, और अगर मह्र मुक़र्रर हुआ है तो यह सामान आधा मह्र है।

4. 'ख़ूबी के साथ रुख़्सत करना' यह कि बिना हक़ न रोके, उसका वाजिब माल-सामान न रखे और दिया हुआ माल-सामान वापस न ले, कोई सख़्त बात न कहे।

5. यानी निकाह में आना चाहे।

6. यानी जिसको चाहें और जब तक चाहें उसको बारी यानी नम्बर न दें, और जिसको चाहें और जब तक चाहें उसको बारी दें।

7. मतलब यह हुआ कि उनकी बारी वग़ैरह की रियायत आप पर वाजिब नहीं।

8. यानी ख़ुश रहेंगी।

यहिल्लु लकन्निसा-उ मिम्बअ़्दु व ला अन् तबद्द-ल बिहिन्-न मिन् अज़्वाजिंव्-व लौ अअ़्-ज-ब-क हुस्नुहुन्-न इल्ला मा म-लकत् यमीनु-क, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइर्-रक़ीबा (52) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन्नबिय्यि इल्ला अंय्युअ़्-ज़-न लकुम् इला तअ़ामिन् ग़ै-र नाज़िरी-न इनाहु व लाकिन् इज़ा दुई़तुम् फ़द्ख़ुलू फ़-इज़ा तइ़म्तुम् फ़न्तशिरू व ला मुस्तअ्निसी-न लि-हदीसिन्, इन्-न ज़ालिकुम् का-न युअ़्ज़िन्नबिय्-य फ़-यस्तह्यी मिन्कुम् वल्लाहु ला यस्तह्यी मिनल्-हक़्क़ि, व इज़ा सअल्तुमूहुन्-न मताअ़न् फ़स्अलूहुन्-न मिंव्वरा-इ हिजाबिन्, ज़ालिकुम् अत्हरु लिक़ुलूबिकुम् व क़ुलूबिहिन्-न, व मा का-न लकुम् अन् तुअ्ज़ू रसूलल्लाहि व ला अन् तन्किहू अज़्वाजहू मिम्बअ़्दिही अ-बदन्, इन्-न ज़ालिकुम् का-न अ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीमा (53) इन् तुब्दू शैअन् औ तुख़्फ़ूहु फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा (54) ला जुना-ह अ़लैहिन्-न फ़ी आबा-इहिन्-न व ला

٣٨٤

ومن يقنت ٢٢ — الاحزاب ٣٣

أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيبًا ﴿٥٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَن يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَن تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَن تَنكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِن بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾ إِن تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾ لَّا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۗ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٥﴾ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ

منزل ٥

इख़्वानिहिन्-न व ला अब्ना-इ इख़्वानिहिन्-न व ला अब्ना-इ अ-ख़वातिहिन्-न व ला निसा-इहिन्-न व ला मा म-लकत् ऐमानुहुन्-न वत्तक़ीनल्ला-ह, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा (55) इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न अ़लन्नबिय्यि, या अय्युहल्लज़ी-न आमनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा (56) इन्नल्लज़ी-न युअ़्ज़ूनल्ला-ह

है। (51) इनके अ़लावा और औ़रतें आपके लिए हलाल नहीं हैं,[1] और न यह दुरुस्त है कि आप उन (मौजूदा) बीवियों की जगह दूसरी बीवियाँ कर लें, अगरचे आपको उन (दूसरियों) का हुस्न अच्छा मालूम हो, हाँ मगर जो आपकी मिल्क में हो। और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ (की हक़ीक़त और आसार और मस्लहतों) का पूरा निगराँ है। (52) ❖

ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में (बिना बुलाए) मत जाया करो, मगर जिस वक़्त तुमको खाने के लिए इजाज़त दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुन्तज़िर न रहो।[2] लेकिन जब तुमको बुलाया जाए (कि खाना तैयार है) तब जाया करो। फिर जब खाना खा चुको तो उठकर चले जाया करो और बातों में जी लगाकर मत बैठे रहा करो, इस बात से नबी को नागवारी होती है, सो वह तुम्हारा लिहाज़ करते हैं,[3] और अल्लाह तआ़ला साफ़-साफ़ बात कहने से (किसी का) लिहाज़ नहीं करता। और जब तुम उनसे कोई चीज़ माँगो तो पर्दे के बाहर से माँगा करो।[4] यह बात (हमेशा के लिए) तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के पाक रहने का उम्दा ज़रिया है। और तुमको जायज़ नहीं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को तकलीफ़ पहुँचाओ, और न यह ज़ायज़ है कि तुम आपके बाद आपकी बीवियों से कभी भी निकाह करो, यह ख़ुदा के नज़दीक बड़ी भारी (गुनाह और नाफ़रमानी की) बात है। (53) अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करोगे या उसको छुपाओगे तो अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं। (54) पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं, और न अपने बेटों के, और न अपने भाइयों के, और न अपने भतीजों के, और न अपने भान्जों के, और न अपनी औ़रतों के, और न अपनी बाँदियों के, और ख़ुदा से डरती रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर हाज़िर (नाज़िर) है।[5] (55) बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं इन पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर।[6] ऐ ईमान वालो! तुम भी आप पर रहमत भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो। (56) बेशक जो लोग अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल को तकलीफ़ देते हैं अल्लाह तआ़ला उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत करता है, और उनके लिए ज़लील करने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।[7] (57) और जो लोग ईमान वाले मर्दों को और ईमान वाली औ़रतों को बग़ैर इसके कि

1. यानी रिश्तेदारों में से वे औ़रतें हलाल नहीं जिन्होंने हिजरत नहीं की। और दूसरी औ़रतों में से ग़ैर-मोमिन औ़रतें हलाल नहीं।

2. यानी बिना दावत किए तो जाओ मत, और दावत हो तब भी बहुत पहले से मत जा बैठो।

3. और ज़बान से नहीं फ़रमाते कि उठकर चले जाओ।

4. यानी बेज़रूरत तो पर्दे के पास जाना और बात करना भी न चाहिए, लेकिन ज़रूरत में गुफ़्तगू करने में कोई हर्ज नहीं, मगर सामने न आना चाहिए।

5. यानी उससे कोई बात छुपी नहीं। पस इसके ख़िलाफ़ करने में सज़ा का अन्देशा है।

6. अल्लाह तआ़ला का रहमत भेजना तो रहमत फ़रमाना है, और मुराद इससे ख़ास रहमत है जो आपकी बुलन्द शान के मुनासिब है। और फ़रिश्तों का रहमत भेजना और इसी तरह जिस रहमत के भेजने का हमको हुक्म है उससे मुराद उस ख़ास रहमत की दुआ़ करना है, और इसी को हमारे मुहावरे में दुरूद कहते हैं। और इस दुआ़ करने से हुज़ूरे पाक के बुलन्द मर्तबों में भी तरक़्क़ी हो सकती है और ख़ुद दुआ़ करने वाले को भी नफ़ा होता है।

7. अल्लाह के नाराज़ करने को तकलीफ़ देना कहा गया है।

व रसूलहू ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति व अ-अ़द्-द लहुम् अ़ज़ाबम्-मुहीना **(57)** वल्लज़ी-न युअ्ज़ूनल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति बिग़ैरि मक्त-सबू फ़-क़दिह्त-मलू बुह्तानंव्-व इस्मम्-मुबीना **(58)** ❖

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लि-अज़्वाजि-क व बनाति-क व निसाइल्-मुअ्मिनी-न युद्नी-न अ़लैहिन्-न मिन् जलाबीबिहिन्-न, ज़ालि-क अद्ना अंय्युअ्-रफ़्-न फ़ला युअ्ज़ै-न, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा **(59)** ल-इल्लम् यन्तहिल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंव्वल्-मुर्जिफ़ू-न फ़िल्मदी-नति ल-नुग़्रियन्न-क सुम्-म ला युजाविरू-न-क फ़ीहा इल्ला क़लीला **(60)** मल्अूनी-न ऐ-नमा सुक़िफ़ू उख़िज़ू व क़ुत्तिलू तक़्तीला **(61)** सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ◆ **(62)** यस्अलुकन्नासु अ़निस्सा-अ़ति, क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि, व मा युद्री-क लअ़ल्लस्-सा-अ़-त तकूनु क़रीबा **(63)** इन्नल्ला-ह ल-अ़नल्-काफ़िरी-न व अ-अ़द्-द लहुम् सअ़ीरा **(64)** ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन् ला यजिदू-न वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(65)** यौ-म तुक़ल्लबु वुजूहुहुम् फ़िन्नारि यक़ूलू-न या लै-तना अतअ्नल्ला-ह व अतअ्नर्रसूला **(66)** व क़ालू रब्बना इन्ना अतअ्ना सा-द-तना व कु-बरा-अना फ़-अज़ल्लूनस्-सबीला **(67)** रब्बना आतिहिम् ज़िअ्फ़ैनि मिनल्-अ़ज़ाबि वल्अ़नूहुम् लअ्नन् कबीरा **(68)** ❖

يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا
بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ
وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ذَٰلِكَ
أَدْنَىٰ أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝
لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ
فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا
قَلِيلًا ۝ مَلْعُونِينَ أَيْنَمَا ثُقِفُوا أُخِذُوا وَقُتِّلُوا تَقْتِيلًا ۝
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ
تَبْدِيلًا ۝ يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ
اللَّهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝ إِنَّ اللَّهَ
لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا
لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي
النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ۝ وَقَالُوا
رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ۝ رَبَّنَا
آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا

उन्होंने कुछ किया हो तकलीफ़ पहुँचाते हैं तो वे लोग बोहतान और खुले गुनाह का बोझ लेते हैं।[1] (58) ❖

ऐ पैग़म्बर! अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और दूसरे मुसलमानों की बीवियों से भी कह दीजिए कि (सर से) नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी-सी अपनी चादरें,[2] इससे जल्दी पहचान हो जाया करेगी, तो तकलीफ़ न दी जाया करेंगी। और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है।[3] (59) ये मुनाफ़िक़ लोग और वे लोग जिनके दिलों में ख़राबी है, और वे लोग जो मदीने में (झूठी-झूठी) अफ़वाहें उड़ाया करते हैं, अगर बाज़ न आए तो ज़रूर हम आपको उनपर मुसल्लत करेंगे,[4] फिर ये लोग आपके पास मदीने में बहुत ही कम रहने पाएँगे। (60) वे भी (हर तरफ़ से) फटकारे हुए जहाँ मिलेंगे पकड़-धकड़ और मार-धाड़ की जाएगी। (61) अल्लाह तआ़ला ने उन (फ़साद करने वाले) लोगों में भी अपना यही दस्तूर रखा है जो पहले हो गुज़रे हैं, और आप खुदा के दस्तूर में किसी शख़्स की तरफ़ से रद्दोबदल न पाएँगे।[5] ◆ (62) ये (इनकार करने वाले) लोग आपसे क़ियामत के मुताल्लिक़ सवाल करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उसकी ख़बर तो बस अल्लाह तआ़ला ही के पास है। और आपको उसकी क्या ख़बर, अ़जब नहीं कि क़ियामत क़रीब ही ज़ाहिर हो जाए। (63) बेशक अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को रहमत से दूर रखा है, और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (64) जिसमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे, न कोई यार पाएँगे और न कोई मददगार। (65) जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में उलट-पलट किए जाएँगे,[6] यूँ कहते होंगे कि ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअ़त की होती और हमने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की इताअ़त की होती। (66) और यूँ कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना था। सो उन्होंने हमको (सीधे) रास्ते से गुमराह किया था। (67) ऐ हमारे रब! उनको दोहरी सज़ा दीजिए, और उनपर बड़ी लानत कीजिए। (68) ❖

1. यानी अगर वह तकलीफ़ ज़बान से है तो बोहतान है, और अगर फ़ेल से है तो मुतलक़ गुनाह ही है।

2. यानी किसी ज़रूरत से बाहर निकलना पड़े तो चादर से सर और चेहरा भी छुपा लिया जाए।

3. यानी इस सर और चेहरे के ढाँकने में जो बिला इरादा कोताही या बेएहतियाती हो जाए तो अल्लाह तआ़ला उसको माफ़ कर देगा।

4. यानी उनके निकाल बाहर करने का हुक्म कर देंगे।

5. कि खुदा तो कोई बात जारी करना चाहे और कोई उसको रोक सके। पस 'सुन्नतुल्लाहि' में किसी बात के वक़्त से पहले हो जाने का रद्द फ़रमा दिया, और 'लन तजि-द' में किसी बात का वक़्त के बाद ज़ाहिर होने का रद्द फ़रमा दिया। कि जब वह ज़ाहिर करने और सामने लाने लगे तो कोई हटा नहीं सकता।

6. यानी चेहरों के बल घसीटे जाएँगे, कभी चेहरे की इस करवट कभी उस करवट।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न आज़ौ मूसा फ़-बर्र-अहुल्लाहु मिम्मा क़ालू, व का-न अिन्दल्लाहि वजीहा **(69)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व क़ूलू क़ौलन् सदीदा **(70)** युस्लिह् लकुम् अअ्मा-लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम्, व मंय्युतिअिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् फ़ा-ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा **(71)** इन्ना अ़रज़्नल्-अमान-त अ़लस्-समावाति वल्अर्ज़ि वल्जिबालि फ़-अबै-न अंय्यह्मिल्नहा व अश्फ़क़्-न मिन्हा व ह-म-लहल्-इन्सानु, इन्नहू का-न ज़लूमन् जहूला **(72)** लि-युअ़ज़्ज़िबल्लाहुल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्-मुनाफ़िक़ाति वल्-मुश्रिकी-न वल्-मुश्रिकाति व यतूबल्लाहु अ़लल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा **(73)** ❖

34 सूरतु स-बइन् 58

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3636 अक्षर, 896 शब्द, 54 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व लहुल्-हम्दु फ़िल्-आख़िरति, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर **(1)** यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा, व हुवर्रहीमुल्-ग़फ़ूर **(2)** व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ्तीनस्सा-अतु क़ुल् बला व रब्बी ल-तअ्ति-यन्नकुम् आ़लिमिल्-ग़ैबि ला यअ्ज़ुबु अ़न्हु मिस्क़ालु ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व ला

ومن يقنت ٢٢ ٣٨٦ سبأ ٣٤

قَالُوا ۚ وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا
اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝
إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ
أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ
ظَلُومًا جَهُولًا ۝ لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ
وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

سُورَةُ سَبَإٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَسِتُّ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي
الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ
لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَ

منزل ٥

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह मत होना जिन्होंने (कुछ तोहमत घड़कर) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को तकलीफ़ दी थी, सो उनको ख़ुदा तआ़ला ने बरी साबित कर दिया,[1] और वह अल्लाह के नज़दीक बड़े इज़्ज़त वाले "यानी सम्मानित" थे।[2] **(69)** ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो[3] और सच्ची बात कहो।[4] **(70)** अल्लाह तआ़ला (इसके सिले में) तुम्हारे आमाल को क़बूल करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करेगा, सो वह बड़ी कामयाबी को पहुँचेगा। **(71)** हमने यह अमानत (यानी अहकाम जो अमानत के दर्जे में हैं) आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की थी, सो उन्होंने इसकी ज़िम्मेदारी से इनकार कर दिया और इससे डर गए, और इनसान ने इसको अपने ज़िम्मे ले लिया,[5] वह ज़ालिम है, जाहिल है। **(72)** अन्जाम यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को सज़ा देगा, और मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों पर तवज्जोह (और रहमत) फ़रमाएगा, और अल्लाह तआ़ला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। **(73)** ◆

34 सूरः सबा 58

सूरः सबा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 54 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

पूरी की पूरी तारीफ़ें (और प्रशंसा) उसी अल्लाह के लिए हैं जिसकी मिल्क में है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी को तारीफ़ (और प्रशंसा) आख़िरत में भी (लायक़) है। और वह हिक्मत वाला,[6] ख़बर रखने वाला है।[7] **(1)** वह सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाख़िल होती है (जैसे बारिश), और जो चीज़ उसमें से निकलती है (जैसे पेड़-पौधे, घास, सब्ज़ियाँ और हरियाली वग़ैरह) और जो चीज़ आसमान से उतरती है, और जो चीज़ उसमें चढ़ती है,[8] और वह (अल्लाह तआ़ला) रहीम (और) ग़फ़ूर (भी) है। **(2)** और ये काफ़िर कहते हैं कि हमपर क़ियामत न आएगी। आप फ़रमा दीजिए कि क्यों नहीं, क़सम है अपने परवर्दिगार ग़ैब के जानने वाले की, वह ज़रूर तुमपर आएगी। उस (के इल्म) से कोई ज़र्रा

---

1. यानी उनका तो कुछ नुक़सान न हुआ, तोहमत लगाने वाले ही झूठे और सज़ा के मुस्तहिक़ ठहरे।

2. मतलब यह कि तुम रसूल को उनकी मुख़ालफ़त करके तकलीफ़ मत देना कि वह अल्लाह की मुख़ालफ़त भी है।

3. यानी हर मामले में उसकी इताअ़त करो।

4. जिसमें इन्साफ़ हो, हद से गुज़रना न हो।

5. यह किसी ख़ास इनसान से जैसे आदम अ़लैहिस्सलाम से नहीं पूछा गया बल्कि जैसे 'अ़हद लेने' (यानी वह अ़हद जो तमाम रूहों से अल्लाह पाक ने लिया था) की तरह यह पेशकश भी आ़म होगी। और लाज़िम कर लेना और ज़रूरी क़रार दे लेना भी आ़म था। पस आसमान, ज़मीन और पहाड़ मुकल्लफ़ न हुए और यह मुकल्लफ़ बना दिया गया। आयत में इसका याद दिलाना ग़ालिबन इसी हिक्मत से है, जैसा कि 'अ़हद' याद दिलाया। यानी इन अहकाम को तुमने ख़ुद ही अपने ऊपर लाज़िम किया है, फिर निभाना चाहिए।

6. कि ज़मीन व आसमान में मौजूद चीज़ों को फ़ायदों और मस्लहतों पर मुश्तमिल बनाया है।

7. कि उन मस्लहतों और फ़ायदों को पैदा करने से पहले ही जानता था, फिर उनको पैदा करके ज़मीन और आसमानों में रख दिया।

8. जैसे फ़रिश्ते कि उतरते-चढ़ते हैं, और जैसे अहकाम जो नाज़िल होते हैं, और आमाल जो चढ़ते हैं।

अस्-ग़रु मिन् ज़ालि-क व ला अक्बरु इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन **(3)** लि-यज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, उलाइ-क लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम **(4)** वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी-न उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम् मिर्रिज्ज़िन् अलीम **(5)** व यरल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्मल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क हुवल्-हक़्-क़ व यह्दी इला सिरातिल् अ़ज़ीज़िल्-हमीद **(6)** व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू हल् नदुल्लुकुम् अ़ला रजुलिंय्-युनब्बिउकुम् इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम् कुल्-ल मुमज़्ज़किन् इन्नकुम् लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीद **(7)** अफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् अम् बिही जिन्नतुन्, बलिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति फ़िल्अ़ज़ाबि वज़्ज़लालिल्-बअ़ीद **(8)** अ-फ़लम् यरौ इला मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् मिनस्-समा-इ वल्अर्ज़ि, इन्न-शअ् नख़्सिफ़् बिहिमुल्-अर्-ज़ औ नुस्क़ित् अ़लैहिम् कि-सफ़म् मिनस्समा-इ, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिकुल्लि अ़ब्दिम्-मुनीब **(9)** ❖

व ल-क़द् आतैना दावू-द मिन्ना फ़ज़्लन्, या जिबालु अव्विबी म-अ़हू वत्तै-र व अलन्ना लहुल्-हदीद **(10)** अनिअ़्मल् साबिग़ातिंव्-व क़द्दिर् फ़िस्सर्दि वअ़्मलू सालिहन्, इन्नी बिमा तअ़्मलू-न बसीर **(11)** व लि-सुलैमानर्-री-ह ग़ुदुव्वुहा शह्रुंव्-व रवाहुहा शह्रुन् व असल्ना लहू अ़ैनल्-क़ित्रि, व मिनल्-जिन्नि मंय्यअ़्मलु बै-न यदैहि बि-इज़्नि रब्बिही, व मंय्यज़िग़् मिन्हुम् अ़न् अम्रिना नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिस्-सअ़ीर **(12)**

لا اصغر من ذلك ولا اكبر الا في كتب مبين ﴿٣﴾ ليجزي
الذين امنوا وعملوا الصلحت اولئك لهم مغفرة ورزق
كريم ﴿٤﴾ والذين سعو في ايتنا معجزين اولئك لهم عذاب
من رجز اليم ﴿٥﴾ ويرى الذين اوتوا العلم الذي انزل
اليك من ربك هو الحق ويهدي الى صراط العزيز الحميد ﴿٦﴾
وقال الذين كفروا هل ندلكم على رجل ينبئكم اذا
مزقتم كل ممزق انكم لفي خلق جديد ﴿٧﴾ افترى على
الله كذبا ام به جنة بل الذين لا يؤمنون بالاخرة في
العذاب والضلل البعيد ﴿٨﴾ افلم يروا الى ما بين ايديهم
وما خلفهم من السماء والارض ان نشا نخسف بهم
الارض او نسقط عليهم كسفا من السماء ان في ذلك
لاية لكل عبد منيب ﴿٩﴾ ولقد اتينا داود منا فضلا
يجبال اوبي معه والطير والنا له الحديد ﴿١٠﴾ ان اعمل
سبغت وقدر في السرد واعملوا صالحا اني بما تعملون
بصير ﴿١١﴾ ولسليمن الريح غدوها شهر ورواحها شهر
واسلنا له عين القطر ومن الجن من يعمل بين يديه

ع

बराबर भी ग़ायब नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में, और न कोई चीज़ इस (ज़िक्र हुई मात्रा) से छोटी है और न कोई चीज़ (इससे) बड़ी है, मगर ये सब किताबे मुबीन में (लिखी हुई) है।[1] (3) ताकि उन लोगों को (नेक) सिला दे जो ईमान लाए थे और उन्होंने नेक काम किए थे, (सो) ऐसे लोगों के लिए मग़्फ़िरत और (जन्नत में) इज़्ज़त की रोज़ी है। (4) और जिन लोगों ने हमारी आयतों के मुताल्लिक़ (उनके बातिल करने की) कोशिश की थी हराने के लिए, ऐसे लोगों के वास्ते सख़्ती का दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।[2] (5) और जिन लोगों को (आसमानी किताबों का) इल्म दिया गया है, वे इस क़ुरआन को जो कि आपके रब की तरफ़ से आपके पास भेजा गया है, ऐसा समझते हैं कि वह हक़ है और वह ख़ुदा-ए-ग़ालिब तारीफ़ वाले (की रिज़ा) का रास्ता बतलाता है। (6) और काफ़िर (आपस में) कहते हैं कि क्या हम तुमको एक ऐसा आदमी बताएँ जो तुमको यह अ़जीब ख़बर देता है कि जब तुम बिलकुल रेज़ा-रेज़ा हो जाओगे तो (उसके बाद क़ियामत में) ज़रूर एक नए जन्म में आओगे। (7) मालूम नहीं उस शख़्स ने ख़ुदा तआ़ला पर (जान-बूझकर) झूठ बोहतान बाँधा है या उसको किसी तरह का जुनून है, बल्कि जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते (वही) अ़ज़ाब और दूर-दराज़ गुमराही में (मुब्तला) हैं।[3] (8) तो क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन की तरफ़ नज़र नहीं की, जो उनके आगे भी और उनके पीछे (भी) मौजूद हैं। अगर हम चाहें तो उनको ज़मीन में धंसा दें या उनपर आसमान के टुकड़े गिरा दें। इस (ज़िक्र हुई दलील) में (अल्लाह की क़ुदरत की) पूरी दलील है, (मगर) उस बन्दे के लिए जो (ख़ुदा की तरफ़) मुतवज्जह (भी) हो[4] (9) ❖

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी थी। ऐ पहाड़ो! दाऊद के साथ बार-बार तस्बीह करो, और (इसी तरह) परिन्दों को भी हुक्म दिया,[5] और हमने उनके वास्ते लोहे को (मोम की तरह) नरम कर दिया। (10) (और यह हुक्म दिया) कि तुम पूरी ज़िरहें बनाओ (और कड़ियों के) जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और तुम सब नेक काम किया करो,[6] मैं तुम्हारे सब आमाल देख रहा हूँ। (11) और सुलैमान के लिए हवा को ताबे कर दिया कि उस (हवा) की सुबह की मन्ज़िल एक महीने भर की (राह) होती और उसकी शाम की मन्ज़िल एक महीने भर की (राह) होती,[7] और हमने उनके लिए ताँबे का चश्मा बहा दिया, और जिन्नात में बाज़े वे थे जो उनके आगे काम करते थे उनके रब के हुक्म से, और उनमें से जो शख़्स हमारे इस हुक्म से सरकशी करेगा, हम उसको (आख़िरत में) अ़ज़ाब चखा देंगे।[8] (12) वे जिन्नात उनके लिए वे-वे चीज़ें बनाते

1. यानी लौहे-महफ़ूज़ में।
2. क़ुरआनी आयतों के झुठलाने पर यह सज़ा होना ही चाहिए। क्योंकि अव्वल तो क़ुरआन अपनी ज़ात के एतिबार से एक हक़ चीज़ है जो अल्लाह की तरफ़ से उतरा है, और ऐसी हक़ चीज़ का झुठलाना ख़ुद हक़ तआ़ला को झुठलाना है। इसपर जितनी भी सज़ा हो बजा है। दूसरे क़ुरआन सही रास्ते की तालीम व हिदायत करता है जो अल्लाह के यहाँ पसन्दीदा है। जो शख़्स उसको न मानेगा वह सही रास्ते से जान-बूझकर दूर रहेगा। न उसको हक़ अ़क़ीदों का पता लगेगा, न नेक आमाल का, और यही तरीक़ा है नजात का। पस नजात के रास्ते से जान-बूझकर दूर रहने पर सज़ा होना बेजा नहीं है।
3. इस गुमराही का मौजूदा असर यह है कि सच्चे भी झूठ घड़ने वाले और मजनूँ नज़र आते हैं, और अन्जाम का असर यह है कि अ़ज़ाब भुगतना पड़ेगा।
4. यानी दलील तो काफ़ी है मगर उनकी तरफ़ से तलब नहीं, इसलिए महरूम हैं।
5. यानी जब यह ज़िक्र में मशग़ूल हों तो तुम भी इनका साथ दो। ग़ालिबन यह तस्बीह ऐसी होगी कि जो सुनने वाले को समझ में आए, वरना समझ में न आने वाली तस्बीह तो आ़म है उसमें दाऊद अ़लैहिस्सलाम का साथ देने की क्या तख़्सीस है?
6. यानी दाऊद अ़लैहिस्सलाम और उनके ताल्लुक़ वाले।
7. यानी वह हवा सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को इतनी-इतनी दूर पहुँचाती। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 776 पर)

यअ्मलू-न लहू मा यशा-उ मिम्-महारी-ब व तमासी-ल व जिफ़ानिन् कल्जवाबि व क़ुदूरिर्-रासियातिन्, इअ्मलू आ-ल दावू-द शुक्रन्, व क़लीलुम् मिन् अ़िबादि-यश्शकूर (13) फ़-लम्मा क़ज़ैना अ़लैहिल्-मौ-त मा दल्लहुम् अ़ला मौतिही इल्ला दाब्बतुल्-अर्ज़ि तअ्कुलु मिन्स-अ-तहू फ़-लम्मा ख़र्-र तबय्य-नतिल्-जिन्नु अल्लौ कानू यअ्लमूनल्-ग़ै-ब मा लबिसू फ़िल्-अ़ज़ाबिल्-मुहीन (14) ल-क़द् का-न लि-स-बइन् फ़ी मस्कनिहिम् आ-यतुन् जन्नतानि अ़ंय्यमीनिंव्-व शिमालिन्, कुलू मिर्रिज़्क़ि-रब्बिकुम् वश्कुरू लहू, बल्दतुन् तय्यि-बतुंव्-व रब्बुन् ग़फ़ूर (15) फ़-अअ्रज़ू फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् सैलल्-अ़रिमि व बद्दल्नाहुम् बिजन्नतैहिम् जन्नतैनि ज़वातै उकुलिन् ख़म्तिंव्-व अस्लिंव्-व शैइम्-मिन् सिद्रिन् क़लील (16) ज़ालि-क जज़ैनाहुम् बिमा क-फ़रू, व हल् नुजाज़ी इल्लल्-कफ़ूर (17) व जअ़ल्ना बैनहुम् व बैनल्-क़ुरल्लती बारक्ना फ़ीहा क़ुरन् ज़ाहि-रतंव्-व क़द्दर्ना फ़ीहस्सै-र, सीरू फ़ीहा लयालि-य व अय्यामन् आमिनीन (18) फ़क़ालू रब्बना बाअ़िद् बै-न अस्फ़ारिना व ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़-जअ़ल्नाहुम् अहादी-स व मज़्ज़क़्नाहुम् कुल्-ल मुमज़्ज़क़िन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (19) व ल-क़द् सद्द-क़ अ़लैहिम् इब्लीसु ज़न्नहू फ़त्त-बअ़ूहु इल्ला फ़रीक़म् मिनल्-मुअ्मिनीन (20) व मा का-न लहू अ़लैहिम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला लिनअ़्-ल-म मंय्युअ्मिनु बिल्-आख़िरति मिम्-मन्

بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۗ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ
السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۗ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۗ وَقَلِيْلٌ مِّنْ
عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى
مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ
الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ
الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾ لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ
يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۬ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۚ بَلْدَةٌ
طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ
مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۗ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ
اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا
قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۗ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا
اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾ فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ

जो उनको (बनवाना) मन्ज़ूर होता। बड़ी-बड़ी इमारतें और मूरतें और लगन (ऐसे बड़े) जैसे हौज़ और (बड़ी-बड़ी) देगें जो एक ही जगह जमी रहें। ऐ दाऊद के ख़ानदान वालो! तुम सब शुक्रिए में नेक काम किया करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार कम ही होते हैं। **(13)** फिर जब हमने उनपर मौत का हुक्म जारी कर दिया तो किसी चीज़ ने उनके मरने का पता न बतलाया मगर घुन के कीड़े ने, कि वह सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) की लाठी को खाता था।[1] सो जब वह गिर पड़े तब जिन्नात को हक़ीक़त मालूम हुई कि अगर वे ग़ैब जानते होते तो इस ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते।[2] **(14)** सबा (के लोगों) के लिए उनके वतन (की मजमूई हालत) में निशानियाँ मौजूद थीं। दो क़तारें थीं बाग़ की दाएँ और बाएँ,[3] अपने रब का (दिया हुआ) रिज़्क़ खाओ और उसका शुक्र अदा करो (कि रहने को) उम्दा शहर (दिया) और बख़्शने वाला, परवर्दिगार है। **(15)** सो उन्होंने नाफ़रमानी की तो हमने उनपर बन्द का सैलाब छोड़ दिया।[4] और हमने उनके उन दो तरफ़ा बाग़ों के बदले और दो बाग़ दिए जिनमें ये चीज़ें रह गईं- बद्मज़ा फल और झाव और थोड़ी-सी बेरी। **(16)** उनको यह सज़ा हमने उनकी नाशुक्री के सबब दी। और हम ऐसी सज़ा बड़े नाशुक्रे ही को दिया करते हैं। **(17)** और हमने उनके और उन बस्तियों के दरमियान में जहाँ हमने बरकत कर रखी है, बहुत-से गाँव आबाद कर रखे थे जो नज़र आते थे, और हमने उन देहात के दरमियान उनके चलने का एक ख़ास अन्दाज़ रखा था कि बिना किसी डर और ख़ौफ़ के उनमें रातों को और दिनों को चलो। **(18)** सो वे कहने लगे कि ऐ हमारे रब! हमारे सफ़रों में लम्बाई कर दे, और (इस नाशुक्री के अ़लावा) उन्होंने (और भी नाफ़रमानियाँ करके) अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, सो हमने उनको अफ़साना बना दिया और उनको बिलकुल तित्तर-बित्तर कर दिया। बेशक इस (क़िस्से) में हर साबिर व शाकिर (मोमिन) के लिए बड़ी इब्रतें हैं। **(19)** और वाक़ई शैतान ने उन लोगों के बारे में[5] अपना गुमान सही पाया कि ये सब उसी की राह पर हो लिए, मगर ईमान वालों का गिरोह। **(20)** और शैतान का उन लोगों पर (बहकाने और गुमराह करने के तौर पर जो) क़ब्ज़ा है, इसके

(पृष्ठ 774 का शेष) 8. हासिल यह कि जो जिन्न ईमान और फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करेगा वह दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा, जैसा कि ईमान का तक़ाज़ा है।

1. सुलैमान अ़लैहिस्सलाम मौत के क़रीब लाठी को दोनों हाथ से पकड़कर उसको ठोड़ी के नीचे लगाकर तख़्त पर बैठ गए और उसी हालत में रूह क़ब्ज़ हो गई, और उसी तरह साल भर तक बैठे रहे। जिन्नात आपको बैठा देखकर ज़िन्दा समझते रहे और ज़िन्दा समझकर बदस्तूर काम करते रहे।
2. मुराद मशक़्क़त भरे आमाल हैं, जिनमें मातहत होने की वजह से ज़िल्लत भी है और मशक़्क़त की वजह से मुसीबत भी है।
3. यानी उनके तमाम इलाक़े में दोनों तरफ़ मिले हुए बाग़ात चले गए थे।
4. यानी जो सैलाब बन्द से रुका रहता था, बन्द टूटकर उस सैलाब का पानी चढ़ आया जिससे उनके दोनों तरफ़ लगे हुए ये बाग़ात सब ग़ारत हो गए।
5. यानी आदम की औलाद (इनसानों) के बारे में।

हु-व मिन्हा फ़ी शक्किन्, व रब्बु-क अ़ला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ (21) ❖

क़ुलिद्अुल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व मा लहुम् फ़ीहिमा मिन् शिर्किंव्-व मा लहू मिन्हुम् मिन् ज़हीर (22) व ला तन्फ़अुश्शफ़ा-अ़तु अ़िन्दहू इल्ला लिमन् अज़ि-न लहू, हत्ता इज़ा फ़ुज़्ज़ि-अ़ अ़न् क़ुलूबिहिम् क़ालू माज़ा क़ा-ल रब्बुकुम्, क़ालुल्-हक़्-क़ व हुवल् अ़लिय्युल्-कबीर (23) क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि, क़ुलिल्लाहु व इन्ना औ इय्याकुम् ल-अ़ला हुदन् औ फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (24) क़ुल् ला तुस्अलू-न अ़म्मा अज्रम्ना व ला नुस्अलु अ़म्मा तअ़्मलून (25) क़ुल् यज्-मअ़ु बै-नना रब्बुना सुम्-म यफ़्तहु बै-नना बिल्हक़्क़ि, व हुवल् फ़त्ताहुल्-अ़लीम (26) क़ुल् अरूनियल्लज़ी-न अल्हक़्तुम् बिही शु-रका-अ कल्ला, बल् हुवल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (27) व मा अर्सल्ना-क इल्ला काफ़्फ़-तल् लिन्नासि बशीरंव्-व नज़ीरंव्-व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ़्लमून (28) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (29) क़ुल् लकुम् मीआ़दु यौमिल्-ला तस्तअ्ख़िरू-न अ़न्हु सा-अ़तंव्-व ला तस्तक़्दिमून ● (30) ❖

فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم
مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا
فِي شَكٍّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ
زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ
وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم
مِّن ظَهِيرٍ ۝ وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ
إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۖ وَهُوَ
الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ
اللَّهُ ۖ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ قُل
لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ يَجْمَعُ
بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ
أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ ۖ كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝ قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً
وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लन्-नुअ्मि-न बिहाज़ल्-क़ुर्आनि व ला बिल्लज़ी बै-न यदैहि, व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न मौक़ूफ़ू-न अ़िन्-द रब्बिहिम् यर्जिअ़ु बअ़्ज़ुहुम् इला

सिवा और किसी वजह से नहीं कि हमको (ज़ाहिरी तौर पर) उन लोगों को जो कि आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से (अलग करके) मालूम करना है जो उसकी तरफ़ से शक में हैं,[1] और आपका रब हर चीज़ का निगराँ है। **(21)** ❖

आप फ़रमा दीजिए कि जिनको तुम ख़ुदा के सिवा (ख़ुदाई में दख़ील) समझ रहे हो उनको पुकारो, वे ज़र्रा बराबर इख़्तियार नहीं रखते, न आसमानों में और न ज़मीन में, और न उनकी उन दोनों (के पैदा करने) में कोई शिरकत है, और न उनमें से कोई अल्लाह का (किसी काम में) मददगार है।[2] **(22)** और ख़ुदा के सामने (किसी की) सिफ़ारिश किसी के लिए काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके मुताल्लिक़ (सिफ़ारिश करने वाले को) वह इजाज़त दे दे।[3] यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो एक-दूसरे से पूछते हैं कि तुम्हारे परवर्दिगार ने क्या हुक्म फ़रमाया? वे कहते हैं कि (फ़लानी) हक़ बात का हुक्म फ़रमाया, और वह आलीशान, सबसे बड़ा है।[4] **(23)** आप (तौहीद की तहक़ीक़ के लिए यह भी) पूछिए कि (अच्छा बतलाओ) तुमको आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह (रोज़ी देता है)। और (यह भी कहिए कि इस तौहीद के मसले में) बेशक हम या तुम ज़रूर सही रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में हैं। **(24)** आप (यह भी) फ़रमा दीजिए कि अगर हम मुजरिम हैं (तो) तुमसे हमारे जुर्मों की पूछताछ न होगी, और हमसे तुम्हारे आमाल की पूछताछ न होगी। **(25)** (और यह भी) कह दीजिए कि हमारा रब हम सबको (एक जगह) जमा करेगा। फिर हमारे दरमियान ठीक-ठीक (अमली) फ़ैसला कर देगा, और वह बड़ा फ़ैसला करने वाला, जानने वाला है।[5] **(26)** आप (यह भी) कहिए कि मुझको ज़रा वे तो दिखलाओ जिनको तुमने शरीक बनाकर ख़ुदा के साथ मिला रखा है, हरगिज़ (उसका कोई शरीक) नहीं, बल्कि (हक़ीक़त में) वही है अल्लाह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला।[6] **(27)** और हमने तो आपको तमाम लोगों के वास्ते पैग़म्बर बनाकर भेजा है,[7] (ईमान लाने पर उनको हमारी रिज़ा और सवाब की) ख़ुशख़बरी सुनाने वाले, और (ईमान न लाने पर उनको हमारे अज़ाब व ग़ज़ब से) डराने वाले, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। **(28)** और ये लोग (ऐसे मज़ामीन सुनकर) कहते हैं कि यह वायदा कब होगा, अगर तुम (यानी नबी और आपके मानने वाले) सच्चे हो (तो बतलाओ)। **(29)** आप कह दीजिए कि तुम्हारे वास्ते एक ख़ास दिन का वायदा (मुक़र्रर) है, कि उससे न एक घड़ी पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो।[8] ● **(30)** ❖

---

1. यानी आज़माइश और इम्तिहान मक़सूद है, ताकि मोमिन व काफ़िर मुतैयन हो जाएँ, कि बाज़ को सवाब देना और बाज़ को अज़ाब देना हिक्मत का तक़ाज़ा है।

2. यानी न दुनिया के बनाने में उनका कोई दख़ल है और न मौजूद हो जाने के बाद उनका मुस्तक़िल तौर पर कोई इख़्तियार है, और न नायब होने की हैसियत से इख़्तियार है।

3. और दलीलों से साबित है कि यह इजाज़त सिर्फ़ मोमिनों के हक़ में होगी।

4. पस जब मुक़र्रब फ़रिश्तों की यह हालत हो तो बुत और शयातीन तो किस गिनती में हैं। कि एक में क़ाबलियत नहीं दूसरे में मक़बूलियत नहीं।

5. उससे किसी का हाल छुपा नहीं जिससे ग़लत फ़ैसले का शुब्हा हो सके।

6. ऊपर तौहीद का ज़िक्र था। आगे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत और उसके आम (यानी सबके लिए) होने का मज़मून है, कि वे लोग इसके भी इनकारी थे। फिर तौहीद का हक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी के बग़ैर हासिल भी नहीं होता।

7. यानी चाहे जिन्नात हों या इनसान, अरब वाले हों या अरब से बाहर के, मौजूद हों या आइन्दा होने वाले हों।

8. यानी अगरचे हम वक़्त न बतलाएँगे मगर आएगी ज़रूर।

बअ्ज़ि-निल्क़ौ-ल यक़ूलुल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ीनस्तक्बरू लौ ला अन्तुम् लकुन्ना मुअ्मिनीन (31) क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू लिल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू अ-नह्नु सदद्नाकुम् अ़निल्हुदा बअ्-द इज़् जा-अकुम् बल् कुन्तुम् मुज्रिमीन (32) व क़ालल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ीनस्-तक्बरू बल् मक्रुल्लैलि वन्नहारि इज़् तअ्मुरू-नना अन् नक्फ़ु-र बिल्लाहि व नज्-अ़-ल लहू अन्दादन्, व असर्रुन्नदा-म-त लम्मा र-अवुल् अ़ज़ा-ब, व जअ़ल्नल्-अग़्ला-ल फ़ी अअ्नाक़िल्लज़ी-न क-फ़रू, हल् युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ्मलून (33) व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम्-मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत्-रफ़ूहा इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (34) व क़ालू नह्नु अक्सरु अम्वालंव्-व औलादंव्-व मा नह्नु बिमु-अ़ज़्ज़बीन (35) क़ुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्-रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्लमून (36) ❖

व मा अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् बिल्लती तुक़र्रिबुकुम् अ़िन्-दना ज़ुल्फ़ा इल्ला मन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन्

سبا ٣٤ ٣٩٠ ومن يقنت ٢٢

ولا بالذي بين يديه ۗ ولو ترى إذ الظالمون موقوفون
عند ربهم ۚ يرجع بعضهم إلى بعض القول ۚ يقول الذين
استضعفوا للذين استكبروا لولا أنتم لكنا مؤمنين ﴿٣١﴾ قال
الذين استكبروا للذين استضعفوا أنحن صددناكم عن
الهدى بعد إذ جاءكم بل كنتم مجرمين ﴿٣٢﴾ وقال الذين
استضعفوا للذين استكبروا بل مكر الليل والنهار إذ تأمروننا
أن نكفر بالله ونجعل له أندادا ۚ وأسروا الندامة لما رأوا
العذاب ۚ وجعلنا الأغلال في أعناق الذين كفروا ۚ هل يجزون
إلا ما كانوا يعملون ﴿٣٣﴾ وما أرسلنا في قرية من نذير إلا
قال مترفوها إنا بما أرسلتم به كافرون ﴿٣٤﴾ وقالوا نحن أكثر
أموالا وأولادا ۙ وما نحن بمعذبين ﴿٣٥﴾ قل إن ربي يبسط
الرزق لمن يشاء ويقدر ولكن أكثر الناس لا يعلمون ﴿٣٦﴾ و
ما أموالكم ولا أولادكم بالتي تقربكم عندنا زلفى إلا من
آمن وعمل صالحا فأولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا و
هم في الغرفات آمنون ﴿٣٧﴾ والذين يسعون في آياتنا معاجزين
أولئك في العذاب محضرون ﴿٣٨﴾ قل إن ربي يبسط الرزق

ع

منزل ٥

फ़-उलाइ-क लहुम् जज़ाउज़्-ज़िअ्फ़ि बिमा अ़मिलू व हुम् फ़िल्-ग़ुरुफ़ाति आमिनून (37) वल्लज़ी-न यस्औ-न फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ-क फ़िल्-अ़ज़ाबि मुह्ज़रून (38) क़ुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लहू, व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् शैइन् फ़हु-व युख़्लिफ़ुहू व हु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (39) व यौ-म यह्शुरुहुम्

और ये काफ़िर लोग (दुनिया में तो ख़ूब बातें बनाते हैं और) कहते हैं कि हम हरगिज़ इस क़ुरआन पर ईमान न लाएँगे और न इससे पहली किताबों पर, और अगर आप (उनकी) उस वक़्त की हालत देखें (तो एक हौलनाक मन्ज़र नज़र आए), जब ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे, एक-दूसरे पर बात डालता होगा। (चुनाँचे) अदना दर्जे के लोग[1] बड़े लोगों से[2] कहेंगे कि (हम तो तुम्हारे सबब से बरबाद हुए) अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आए होते। **(31)** (उसपर) ये बड़े लोग उन अदना दर्जे के लोगों से कहेंगे कि क्या हमने तुमको हिदायत (पर अ़मल करने) से (ज़बरदस्ती) रोका था, इसके बाद कि वह (हिदायत) तुमको पहुँच चुकी थी। नहीं! बल्कि तुम ही क़ुसूरवार हो। **(32)** और (उसके जवाब में) ये कम दर्जे के लोग उन बड़े लोगों से कहेंगे कि (हम ज़बरदस्ती को रुकावट) नहीं (कहते) बल्कि तुम्हारी रात-दिन की तदबीरों ने रोका था, जब तुम हमको फ़रमाइश करते रहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें,[3] और उसके लिए शरीक क़रार दें। और वे लोग (अपनी उस) शर्मिन्दगी को (एक-दूसरे से) छुपाकर रखेंगे जबकि अ़ज़ाब देखेंगे। और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डालेंगे, जैसा करते थे वैसा ही तो भरा।[4] **(33)** और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला (पैग़म्बर) नहीं भेजा, मगर वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उन अहकाम के इनकार करने वाले हैं जो तुमको देकर भेजा गया है। **(34)** और उन्होंने यह भी कहा कि हम माल और औलाद में तुमसे ज़्यादा हैं, और हमको कभी अ़ज़ाब न होगा। **(35)** आप कह दीजिए कि मेरा परवर्दिगार जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है कम देता है, और लेकिन अक्सर लोग (इससे) वाक़िफ़ नहीं।[5] **(36)** ◆

और तुम्हारे माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो दर्जे में तुमको हमारा मुक़र्रब बना दे, (यानी अल्लाह की निकटता की भी सबब व इल्लत नहीं) मगर हाँ जो ईमान लाए और अच्छे काम करे (ये दोनों चीज़ें अलबत्ता निकटता का सबब हैं) सो ऐसे लोगों के लिए उनके (नेक) अ़मल का सिला है और वे (जन्नत के) बालाख़ानों में चैन से (बैठे) होंगे। **(37)** और जो लोग हमारी आयतों के मुताल्लिक़ (उनको बातिल करने की) कोशिश कर रहे हैं (नबी को) हराने के लिए, ऐसे लोग अ़ज़ाब में लाए जाएँगे।[6] **(38)** आप (मोमिनों से)

---

1. यानी पैरवी करने वाले।

2. यानी जिनकी पैरवी की गई उनसे।

3. तदबीरों से मुराद शौक़ दिलाना और डराना है।

4. अगर शुब्हा हो कि बाज़ काफ़िरों ने तो अपने मानने वालों पर ज़बरदस्ती भी की है, फिर इसके क्या मायने "अ-नहनु सदद्नाकुम् (आख़िर तक)" तो जवाब यह है कि असल ईमान एतिक़ाद है, और उसका स्थान दिल है, वहाँ ज़बरदस्ती करना मुम्किन नहीं।

5. यानी इस हक़ीक़त के वाक़िफ़ नहीं कि रिज़्क़ के ज़्यादा होने का मदार अल्लाह के यहाँ मक़बूल होने पर नहीं है, बल्कि इसका मदार दूसरी मस्लहतों पर है।

6. ऊपर रिज़्क़ के कम-ज़्यादा होने का इरादे और चाहने से ताल्लुक़ होने को बातिल फ़रमाया था जैसा कि काफ़िरों का ख़्याला था, आगे इसी पर मोमिनों की इस्लाह का एक मज़मून बयान फ़रमाते हैं। जिसका हासिल यह है कि माल का कम-ज़्यादा होना महज़ इरादे और चाहने पर है, तो मोमिन को चाहिए कि दिल को उसके साथ ज़्यादा न लगाए और काफ़िरों की तरह उसको मक़सूद न समझे, बल्कि उसको अल्लाह की रिज़ा और निकटता के हासिल होने का ज़रिया बनाए जो कि असल मक़सूद है।

जमीअ़न् सुम्-म यक़ूलु लिल्मलाइ-कति अ-हाउला-इ इय्याकुम् कानू यअ़्बुदून (40) क़ालू सुब्हान-क अन्-त वलिय्युना मिन् दूनिहिम् बल् कानू यअ़्बुदूनल्-जिन्-न अक्सरुहुम् बिहिम् मुअ़्मिनून (41) फ़ल्यौ-म ला यम्लिकु बअ़्जुकुम् लि-बअ़्ज़िन् नफ़अंव्-व ला ज़र्रन्, व नक़ूलु लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अज़ाबन्-नारिल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (42) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला रजुलुंय्-युरीदु अंय्यसुद्दकुम् अ़म्मा का-न यअ़्बुदु आबाउकुम् व क़ालू मा हाज़ा इल्ला इफ़्कुम् मुफ़्तरन्, व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (43) व मा आतैनाहुम् मिन् कुतुबिंय्-यद्रुसूनहा व मा अर्सल्ना इलैहिम् क़ब्-लक मिन् नज़ीर (44) व कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व मा ब-लग़ू मिअ़्शा-र मा आतैनाहुम् फ़-कज़्ज़बू रुसुली, फ़कै-फ़ का-न नकीर (45) ❖

سپارہ ٢٢ ٣٩١ ومن يقنت ٢٢

لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنفَقْتُم مِّن شَيْءٍ
فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ
يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾ قَالُوا سُبْحَانَكَ
أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم
بِهِم مُّؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَلَا
ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُم بِهَا
تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا
رَجُلٌ يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ وَقَالُوا مَا هَٰذَا
إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ
هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٣﴾ وَمَا آتَيْنَاهُم مِّن كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا ۖ وَمَا
أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِن نَّذِيرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
وَمَا بَلَغُوا مِعْشَارَ مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾
قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ ۖ أَن تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ
تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ
يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ
إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ

منزل

क़ुल् इन्नमा अअ़िज़ुकुम् बिवाहि-दतिन् अन् तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्-म त-तफ़क्करू, मा बिसाहिबिकुम् मिन् जिन्नतिन्, इन् हु-व इल्ला नज़ीरुल्-लकुम् बै-न यदै अ़ज़ाबिन् शदीद (46) क़ुल् मा सअल्तुकुम् मिन् अज्रिन् फ़हु-व लकुम्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (47) क़ुल इन्-न रब्बी यक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि

फ़रमा दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहे तंगी से देता है,[1] और जो चीज़ तुम (अल्लाह के हुक्म के मौक़ों में) ख़र्च करोगे, सो वह (यानी अल्लाह तआ़ला) उसका बदला देगा, और वह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।[2] **(39)** और (वह दिन ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन सबको (क़ियामत के मैदान में) जमा फ़रमाएगा। फिर फ़रिश्तों से इरशाद फ़रमाएगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे? **(40)** वे अ़र्ज़ करेंगे कि आप पाक हैं, हमारा तो आपसे ताल्लुक़ है न कि इनसे, बल्कि ये लोग शैतानों को पूजा करते थे, उनमें अक्सर लोग उन्हीं के मोतक़िद थे। **(41)** सो (काफ़िरों से कहा जाएगा) आज तुम (इबादत करने वाले और जिनकी इबादत की जाती थी सबके सब) में से न कोई किसी को नफ़ा पहुँचाने का इख़्तियार रखता है और न नुक़सान पहुँचाने का, और (उस वक़्त) हम ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) से कहेंगे कि जिस दोज़ख़ के अ़ज़ाब को तुम झुठलाया करते थे (अब) उसका मज़ा चखो। **(42)** और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें जो (हक़ और हिदायत वाली होने की सिफ़त में) साफ़-साफ़ पढ़ी जाती हैं, तो ये लोग (पढ़ने वाले यानी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में) कहते हैं (अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे) कि यह महज़ एक ऐसा शख़्स है जो यूँ चाहता है कि तुमको उन चीज़ों (की इबादत) से रोक दे जिनको (पहले से) तुम्हारे बड़े पूजते थे,[3] और (क़ुरआन के बारे में) कहते हैं (अल्लाह की पनाह) कि यह महज़ एक घड़ा हुआ झूठ है। और ये काफ़िर इस हक़ चीज़ (यानी क़ुरआन) के मुताल्लिक़ जबकि वह उनके पास पहुँचा यूँ कहते हैं कि यह महज़ एक खुला जादू है। **(43)** और हमने उनको किताबें नहीं दी थीं कि उनको पढ़ते-पढ़ाते हों, और (इसी तरह) हमने आपसे पहले उनके पास कोई डराने वाला (यानी पैग़म्बर) नहीं भेजा था। **(44)** और उनसे पहले जो (काफ़िर) लोग थे उन्होंने झुठलाया था और ये (अ़रब के मुश्रिक लोग) तो उस सामान के जो हमने उनको दे रखा था, दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे।[4] ग़रज़ उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, सो (देखो) मेरा (उनपर) कैसा अ़ज़ाब हुआ। **(45)** ❖

आप कहिए कि मैं तो सिर्फ़ एक बात समझाता हूँ।[5] वह यह कि तुम (सिर्फ़) ख़ुदा के वास्ते खड़े हो ज़ाओ, दो-दो[6] और एक-एक, फिर सोचो कि तुम्हारे उस साथी को जुनून (तो) नहीं है। वह तो तुमको एक सख़्त अ़ज़ाब आने से पहले डराने वाला है। **(46)** आप कह दीजिए कि मैंने तुमसे (इस तब्लीग़ पर) कुछ मुआ़वज़ा माँगा हो तो वह तुम्हारा ही रहा,[7] मेरा मुआ़वज़ा तो बस अल्लाह तआ़ला ही के ज़िम्मे है, और वही हर चीज़ पर इत्तिला रखने वाला है।[8] **(47)** आप कह दीजिए कि मेरा रब हक़ बात (यानी ईमान) को (कुफ़्र

1. इस सूरत में रोक लेने से रिज़्क़ बढ़ नहीं सकता, और शरीअ़त के हुक्म के मुताबिक़ ख़र्च करने से घट नहीं सकता। पस माल से ज़्यादा ताल्लुक़ मत रखो बल्कि जहाँ-जहाँ अल्लाह के, घर वालों और बाल-बच्चों के और फ़क़ीरों व ज़रूरतमन्दों के हुक़ूक़ और दूसरी जगहों में ख़र्च करने का हुक्म है बेधड़क ख़र्च करते रहो कि उससे जितना रिज़्क़ तय हो चुका है उसमें तो कमी का नुक़सान न होगा, और आख़िरत का नफ़ा होगा।
2. "राज़िक़ी-न" बहुवचन लाना इस एतिबार से है कि जो लोग ज़ाहिर में अपने हाथ से देते-दिलाते हैं उनको मजाज़न राज़िक़ क़रार दे दिया गया। और चूँकि अल्लाह तआ़ला हक़ीक़ी राज़िक़ है इसलिए उसका "सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला" होना ज़ाहिर है।
3. उन कमबख़्तों का मतलब यह था कि यह नबी नहीं, और इनका बुलाना और दावत देना अल्लाह की जानिब से नहीं बल्कि इसमें ख़ुद इनकी ज़ाती ग़रज़ ओ़हदा व सरदारी हासिल करने की है।
4. यानी उनके जैसी क़ुव्वत, उनके जैसी उम्रें, उनके जैसी मालदारी इनको नहीं मिली जो कि ग़ुरूर और घमण्ड का ज़रिया होता है।
5. इससे हक़ वाज़िह हो जाएगा, बस इसको कर लो।
6. यानी तैयार हो जाओ।
7. यानी तुम अपने ही पास रखो। यह मुहावरे में अज्र माँगने का ज़्यादा ज़ोरदार अन्दाज़ में इनकार करना है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 784 पर)**

अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब (48) क़ुल जा-अल्हक़्क़ु व मा युब्दिउल्-बातिलु व मा युई़द (49) क़ुल् इन् ज़लल्तु फ़-इन्नमा अज़िल्लु अ़ला नफ़्सी व इनिह्तदैतु फ़-बिमा यूही इलय्-य रब्बी, इन्नहू समीअ़ुन् क़रीब (50) व लौ तरा इज़् फ़ज़िअ़ू फ़ला फ़ौ-त व उख़िज़ू मिम्-मकानिन् क़रीब (51) व क़ालू आमन्ना बिही व अन्ना लहुमुत्-तनावुशु मिम्-मकानिम्-बई़द (52) व क़द् क-फ़रू बिही मिन् क़ब्लु व यक़्ज़िफ़ू-न बिल्ग़ैबि मिम्-मकानिम्-बई़द (53) व ही-ल बैनहुम् व बै-न मा यश्तहू-न कमा फ़ुअ़ि-ल बिअश्याअ़िहिम् मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू फ़ी शक्किम् मुरीब (54) ❖

إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا
يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ
عَلَىٰ نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ
قَرِيبٌ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِنْ مَكَانٍ
قَرِيبٍ ۝ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَكَانٍ
بَعِيدٍ ۝ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ
مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ
بِأَشْيَاعِهِمْ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا
أُولِي أَجْنِحَةٍ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۚ
إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ
فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَ
هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ
هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ

35 सूरतु फ़ातिरिन् 43

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3289 अक्षर, 792 शब्द, 45 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि जाअ़िलिल्-मलाइ-कति रुसुलन् उली अज्नि-हतिम् मस्ना व सुला-स व रुबा-अ़, यज़ीदु फ़िल्-ख़ल्क़ि मा यशा-उ, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (1) मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रह्मतिन् फ़ला मुम्सि-क लहा व मा युम्सिक् फ़ला मुर्सि-ल लहू मिम्बअ़्दिही, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (2) या अय्युहन्नासुज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम्, हल् मिन् ख़ालिक़िन् ग़ैरुल्लाहि यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि, ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुअ़्फ़कून (3) व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कुज़्ज़िबत्
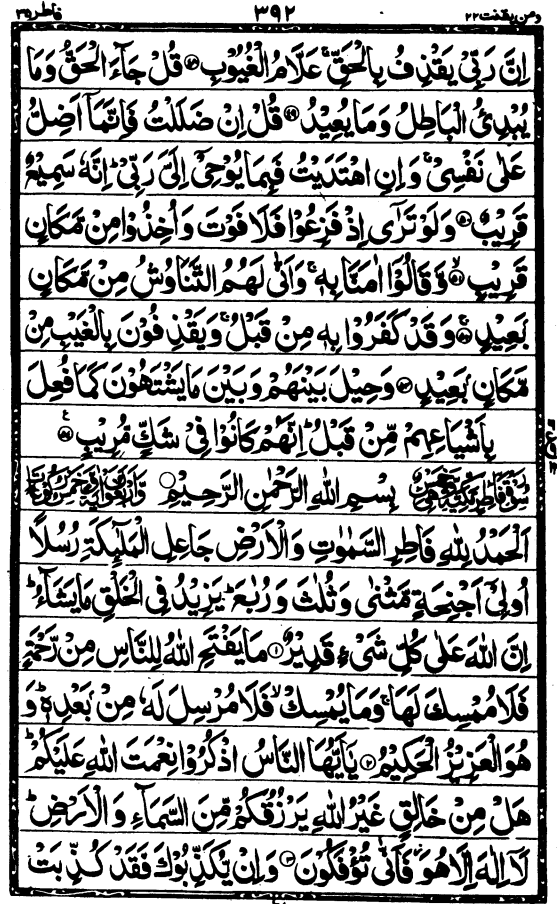
पर) ग़ालिब कर रहा है, (और) वह तमाम ग़ैब की बातों और चीज़ों को जानता है। **(48)** आप कह दीजिए कि (दीने) हक़ आ गया और (दीने) बातिल न करने का रहा न धरने का।[1] **(49)** आप कह दीजिए कि अगर (मसलन् मान लें और फ़र्ज़ कर लें) मैं गुमराह हो जाऊँ तो मेरी गुमराही मुझ ही पर वबाल होगी, और अगर मैं (सही) रास्ते पर हूँ तो यह इस क़ुरआन की बदौलत है जिसको मेरा रब मेरे पास भेज रहा है। वह सब कुछ सुनता (और) बहुत नज़दीक है। **(50)** और अगर आप वह वक़्त देखें (तो आपको हैरत हो) जबकि काफ़िर लोग घबराए फिरेंगे, फिर निकल भागने की कोई सूरत न होगी और पास के पास ही (यानी फ़ौरन) पकड़ लिए जाएँगे। **(51)** और कहेंगे कि हम हक़ दीन पर ईमान ले आए, और इतनी दूर जगह से (ईमान का) उनके हाथ आना कहाँ मुम्किन है।[2] **(52)** हालाँकि पहले से (दुनिया में) ये लोग उसका इनकार करते रहे, और बेतहक़ीक़ बातें दूर-ही-दूर से हाँका करते थे।[3] **(53)** और उनमें और उनकी (ईमान क़बूल करने की) आरज़ू में एक आड़ कर दी जाएगी,[4] जैसा कि उनके हम-ख़्यालों के साथ (भी) यही (बर्ताव) किया जाएगा जो उनसे पहले थे, क्योंकि ये सब बड़े शक में थे जिसने इनको दुविधा में डाल रखा था। **(54)** ❖

35 सूरः फ़ातिर 43

सूरः फ़ातिर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 45 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

पूरी की पूरी[5] तारीफ़ (उसी) अल्लाह को लायक़ है जो आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला है। जो फ़रिश्तों को पैग़ाम पहुँचाने वाला बनाने वाला है,[6] जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर वाले बाज़ू हैं। वह पैदाइश में जो चाहे ज़्यादा कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। **(1)** अल्लाह जो रहमत (बारिश वग़ैरह) लोगों के लिए खोल दे, सो उसका कोई बन्द करने वाला नहीं। और जिसको बन्द कर दे, सो उसके (बन्द करने के) बाद उसका कोई जारी करने वाला नहीं, और वही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(2)** ऐ लोगो! तुमपर जो अल्लाह के एहसान हैं उनको याद करो, (शुक्र करो और ग़ौर करो कि) क्या अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई पैदा करने वाला है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ पहुँचाता हो?[7] उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो तुम (शिर्क करके) कहाँ उल्टे जा रहे हो। **(3)** और अगर ये लोग आपको झुठलाएँ

(पृष्ठ 782 का शेष) **8.** बदले में माल और ओ़हदा यानी सरदारी सब आ गया, क्योंकि इन दोनों ही चीज़ों में अज्र बनने की सलाहियत है। मतलब यह कि मैं तुमसे किसी ग़रज़ का तालिब नहीं हूँ।

1. असल मक़सूद मुख़ातबीन को सुनाना है कि बावजूद हक़ सामने आ जाने और वाज़ेह हो जाने के अगर तुमने हक़ का इत्तिबा न किया तो तुम भुगतोगे, मेरा क्या बिगड़ेगा। और अगर राह पर आ गए तो यह राह पर आना भी उस दीने हक़ की पैरवी के सबब होगा जिसका हक़ होना वह्य के ज़रिए साबित है। पस तुमको चाहिए कि सही रास्ते पर आने के लिए इस दीन को इख़्तियार करो।

2. यानी दारुल-अ़मल (अ़मल करने की जगह) की वजह से ईमान लाने की जगह दुनिया थी जो बड़ी दूर हो गई। अब आख़िरत में जो कि दारुल-जज़ा (बदला मिलने की जगह) है, ईमान मक़बूल नहीं।

3. दूर का मतलब यह है कि उसकी तहक़ीक़ से दूर थे। यानी दुनिया में तो कुफ़्र करते रहे अब ईमान सूझा है, और उसके मक़बूल होने की आरज़ू है।

4. यानी उनकी आरज़ू पूरी न होगी।

5. इस सूरः का ज़्यादा हिस्सा तौहीद को साबित करने और शिर्क को बातिल करने में है। और बाज़ आयतों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तसल्ली दी गयी है। और बाज़ आयतों में आमाल के फ़ायदों और नुक़सानों और बाज़ आयतों में कुफ़्र के बुराई और उसपर सज़ा की धमकी व डाँट है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 786 पर)**

रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर **(4)** या अय्युहन्नासु इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्- हयातुद्दुन्या व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर **(5)** इन्नश्-शैता-न लकुम् अ़दुव्वुन् फ़त्तख़िज़ूहु अ़दुव्वन्, इन्नमा यद्अू हिज़्बहू लि-यकूनू मिन् अस्हाबिस्सअ़ीर **(6)** अल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर **(7)** ❖

अ-फ़-मन् ज़ुय्यि-न लहू सूउ अ़-मलिही फ़-रआहु ह-सनन्, फ़-इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ फ़ला तज़्हब् नफ़्सु-क अ़लैहिम् ह-सरातिन्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्- बिमा यस्-नअून **(8)** वल्लाहुल्लज़ी अर्-सलर्- रिया-ह फ़-तुसीरु सहाबन् फ़-सुक़्नाहु इला ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अह्यैना बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, कज़ालिकन्-नुशूर **(9)** मन् का-न युरीदुल्-अ़िज़्ज़-त फ़लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु जमीअ़न्, इलैहि यस्-अ़दुल्-कलिमुत्तय्यिबु वल्-अ़-मलुस्-सालिहु यर्-फ़अुहू, वल्लज़ी-न यम्कुरूनस्सय्यिआति लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, व मक्रु उलाइ-क हु-व यबूर **(10)** वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म ज-अ़-लकुम् अज़्वाजन्, व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला बिअ़िल्मिही, व मा युअ़म्म-रु मिम्-मुअ़म्म-रिंव्-व ला युन्क़सु मिन् अ़ुमुरिही इल्ला फ़ी किताबिन्, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर **(11)** व मा यस्तविल्-बह्रानि हाज़ा अ़ज़्बुन् फ़ुरातुन् सा-इग़ुन् शराबुहू व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन्, व

رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ ﴿٤﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ
الْغَرُوْرُ ﴿٥﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۚ اِنَّمَا يَدْعُوْا
حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿٦﴾ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ۖ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ
كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۖ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ
حَسَرٰتٍ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٨﴾ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ
الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ
فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ۚ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ
يَرْفَعُهٗ ۚ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۖ وَ
مَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ﴿١٠﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۚ
وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۚ اِنَّ
ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ

तो (आप ग़मं न करें, क्योंकि) आपसे पहले भी बहुत-से पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं, और सब मामलात अल्लाह ही के सामने पेश किए जाएँगे। **(4)** ऐ लोगो! अल्लाह तआ़ला का (यह) वायदा ज़रूर सच्चा है। सो ऐसा न हो कि यह दुनियावी ज़िन्दगी तुमको धोखे में डाले रखे,[1] और ऐसा न हो कि तुमको धोखेबाज़ शैतान अल्लाह से धोखे में डाल दे। **(5)** यह शैतान बेशक तुम्हारा दुश्मन है, सो तुम उसको (अपना) दुश्मन (ही) समझते रहो। वह तो अपने गिरोह को महज़ इसलिए (बातिल की तरफ़) बुलाता है ताकि वे लोग दोज़ख़ियों में से हो जाएँ। **(6)** (पस) जो लोग काफ़िर हो गए उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए (गुनाहों की) बख़्शिश और ईमान पर बड़ा अज्र है। **(7)** ❖

तो क्या ऐसा शख़्स जिसको उसका बुरा अ़मल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसको अच्छा समझने लगा (यानी काफ़िर), और ऐसा शख़्स जो बुरे को बुरा समझता है (यानी मोमिन), कहीं बराबर हो सकते हैं?[2] सो अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है हिदायत देता है। सो उनपर अफ़सोस करके कहीं आपकी जान न जाती रहे, अल्लाह को उनके सब कामों की ख़बर है। **(8)** और अल्लाह ऐसा (क़ुदरत वाला) है जो (बारिश से पहले) हवाओं को भेजता है, फिर वे (हवाएँ) बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस बादल को ज़मीन के सूखे टुकड़े की तरफ़ हाँक ले जाते हैं, फिर हम उसके (पानी के) ज़रिए से ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं, इसी तरह (क़ियामत में आदमियों का) जी उठना है।[3] **(9)** जो शख़्स इज़्ज़त हासिल करना चाहे तो पूरी की पूरी इज़्ज़त ख़ुदा ही के लिए है।[4] अच्छा कलाम उसी तक पहुँचता है और अच्छा काम उसको पहुँचाता है।[5] और जो लोग (उसके ख़िलाफ़) बुरी-बुरी तदबीरें कर रहे हैं उनको सख़्त अ़ज़ाब होगा,[6] और उन लोगों का यह मक्र नेस्तनाबूद हो जाएगा।[7] **(10)** और अल्लाह ने तुमको (ज़िम्नी तौर पर) मिट्टी से पैदा किया है, फिर (मुस्तक़िल तौर पर) नुत्फ़े से पैदा किया, फिर तुमको जोड़े-जोड़े बनाया।[8] और किसी औ़रत को न गर्भ रहता है और न वह जन्म देती है मगर सब उसकी इत्तिला से होता है।[9] और (इसी तरह) न किसी की उम्र ज़्यादा (मुक़र्रर) की जाती है और न किसी की उम्र कम (मुक़र्रर) की जाती है मगर ये सब लौहे-महफ़ूज़ में होता है। यह सब अल्लाह को आसान है। **(11)** और दोनों दरिया बराबर नहीं हैं (बल्कि) एक

(पृष्ठ 784 का शेष) 6. पैग़ाम से मुराद अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की तरफ़ वह्य लाना है, चाहे वह अहकाम से मुताल्लिक़ हो या ख़ुशख़बरी वग़ैरह हों।

7. यानी न कोई पैदा करने वाला है जो कि ईजाद करने की नेमत है, और न कोई रिज़्क़ देने वाला है जो कि बाक़ी रखने की नेमत है। पस जब वह हर तरह कामिल है तो यक़ीनन उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ भी नहीं।

1. कि उसमें मश्ग़ूल होकर उस वायदा किए गए दिन से ग़ाफ़िल रहो।

2. पहले शख़्स से मुराद काफ़िर है जो शैतान के बहकाने और गुमराह करने से बातिल को हक़ और नुक़सान पहुँचाने वाली चीज़ को नफ़ा देनी वाली समझता है। और दूसरे शख़्स से मुराद मोमिन है जो नबियों की इत्तिबा और शैतानों की मुख़ालफ़त करने से बातिल को बातिल, हक़ को हक़, नुक़सान देने वाली चीज़ को नुक़सान देनी वाली और नफ़ा देनी वाली को नफ़ा देनी वाली जानता है। यानी ये दोनों बराबर कहाँ हुए? बल्कि एक जहन्नमी और एक जन्नती है।

3. समान बताने (एक जैसा होने) की वजह ज़ाहिर है कि दोनों में एक ख़त्म हो जाने वाली सिफ़त का दोबारा पैदा करना है।

4. इसलिए उसको चाहिए कि अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करे।

5. अच्छे कलाम में कलिमा-ए-तौहीद और अल्लाह तआ़ला के तमाम ज़िक्र और अच्छे काम में दिल से तस्दीक़ और ज़ाहिर व बातिन के तमाम नेक आमाल दाख़िल हैं। और पहुँचना (यानी अल्लाह की तरफ़ जाना) आ़म है, सिर्फ़ क़बूल होने को भी, और मुकम्मल तौर पर क़बूल होने को। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 788 पर)**

मिन् कुल्लिन् तअ्कुलू-न लह्मन् तरिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू-न हिल्य-तन् तल्बसूनहा व तरल्-फ़ुल्-क फ़ीहि मवाख़ि-र लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(12)** यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र कुल्लुंय्-यज्री लि-अ-जलिम्-मुसम्मन्, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्-मुल्कु, वल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिही मा यम्लिकू-न मिन् क़ित्मीर **(13)** इन् तद्अूहुम् ला यस्मअ़ू दुआ़-अकुम् व लौ समिअ़ू मस्तजाबू लकुम्, व यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरू-न बिशिर्किकुम् व ला युनब्बिउ-क मिस्लु ख़बीर ▲ **(14)** ❖

या अय्युहन्नासु अन्तुमुल्-फ़ु-क़रा-उ इलल्लाहि वल्लाहु हुवल् ग़निय्युल्-हमीद **(15)** इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्किन् जदीद **(16)** व मा ज़ालि-क अ़लल्लाहि बि-अ़ज़ीज़ **(17)** व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, व इन् तद्अु मुस्क़-लतुन् इला हिम्लिहा ला युह्मल् मिन्हु शैउंव्-व लौ का-न ज़ा-क़ुर्बा, इन्नमा तुन्ज़िरुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व अक़ामुस्-सला-त, व मन् तज़क्का फ़-इन्नमा य-तज़क्का लि-नफ़्सिही, व इलल्लाहिल्-मसीर **(18)** व मा यस्तविल्-अअ़्मा वल्बसीर **(19)** व लज़्ज़ुलुमातु व लन्नूर **(20)** व लज़्ज़िल्लु व लल्हरूर **(21)** व मा यस्तविल्-अह्या-उ व लल्अम्वातु, इन्नल्ला-ह युस्मिअ़ु मंय्यशा-उ व मा अन्-त बिमुस्मिअ़िम्-मन् फ़िल्क़ुबूर **(22)** इन् अन्-त इल्ला नज़ीर **(23)** इन्ना अर्सल्ना-क

سائغ شرابه وهذا ملح اجاج ومن كل تاكلون لحما طريا
وتستخرجون حلية تلبسونها وترى الفلك فيه مواخر
لتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون ﴿١٢﴾ يولج اليل في النهار
ويولج النهار في اليل وسخر الشمس والقمر كل يجري
لاجل مسمى ذلكم الله ربكم له الملك والذين تدعون
من دونه ما يملكون من قطمير ﴿١٣﴾ ان تدعوهم لا يسمعوا
دعاءكم ولو سمعوا ما استجابوا لكم ويوم القيمة يكفرون
بشرككم ولا ينبئك مثل خبير ﴿١٤﴾ يايها الناس انتم الفقراء
الى الله والله هو الغني الحميد ﴿١٥﴾ ان يشا يذهبكم ويات بخلق
جديد ﴿١٦﴾ وما ذلك على الله بعزيز ﴿١٧﴾ ولا تزر وازرة وزر
اخرى وان تدع مثقلة الى حملها لا يحمل منه شيء ولو
كان ذا قربى انما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب واقاموا
الصلوة ومن تزكى فانما يتزكى لنفسه والى الله المصير ﴿١٨﴾
وما يستوي الاعمى والبصير ﴿١٩﴾ ولا الظلمت ولا النور ﴿٢٠﴾ و
لا الظل ولا الحرور ﴿٢١﴾ وما يستوي الاحياء ولا الاموات ان
الله يسمع من يشاء وما انت بمسمع من في القبور ﴿٢٢﴾ ان انت

منزل ٥

तो मीठा प्यास बुझाने वाला है, जिसका पीना आसान है, और एक खारा कड़वा है, और तुम हर एक (दरिया) से (मछलियाँ निकालकर उनका) ताज़ा गोश्त खाते हो, (तथा) ज़ेवर (मोती) निकालते हो जिसको तुम पहनते हो। और तू कश्तियों को उसमें देखता है पानी को फाड़ती हुई चली जाती हैं, ताकि तुम (उनके ज़रिए से) उसकी रोज़ी ढूँढो और ताकि तुम शुक्र अदा करो। **(12)** वह रात को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन को रात में दाख़िल कर देता है।[1] और (जैसे यह कि) उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक[2] चलते रहेंगे। यही अल्लाह (जिसकी यह शान है) तुम्हारा परवर्दिगार है, उसी की हुकूमत है और उसके सिवा जिनको तुम पुकारते हो वे तो खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी इख़्तियार नहीं रखते। **(13)** अगर तुम उनको पुकारो भी तो वे तुम्हारी पुकार (पहले तो) सुनेंगे नहीं, और अगर (फ़र्ज़ कर लो कि) सुन भी लें तो तुम्हारा कहना न करेंगे। और क़ियामत के दिन वे (खुद) तुम्हारे शिर्क करने की मुख़ालफ़त करेंगे, और तुझको ख़बर रखने वाले की बराबर कोई नहीं बतलाएगा।[3] ▲ **(14)** ❖

ऐ लोगो! तुम (ही) खुदा तआ़ला के मोहताज हो और अल्लाह (तो) बेपरवाह (और खुद तमाम) ख़ूबियों वाला है। **(15)** अगर वह चाहे तुमको फ़ना कर दे और एक नई मख़्लूक़ पैदा कर दे। **(16)** और यह बात अल्लाह तआ़ला को कुछ मुश्किल नहीं। **(17)** और कोई दूसरे का (गुनाह का) बोझ न उठाएगा। और अगर कोई बोझ का लदा हुआ (यानी कोई गुनाहगार) किसी को अपना बोझ उठाने के लिए बुलाएगा (भी) तब भी उसमें से कुछ भी बोझ न बटाया जाएगा अगरचे वह शख़्स क़रीबी रिश्तेदार ही (क्यों न) हो। आप तो सिर्फ़ ऐसे लोगों को डरा सकते हैं जो बेदेखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं।[4] और जो शख़्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है, और खुदा की तरफ़ लौटकर जाना है। **(18)** और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं हो सकते **(19)** और न अंधेरा और रोशनी **(20)** और न छाँव और धूप।[5] **(21)** और ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते।[6] अल्लाह जिसको चाहता है सुनवा देता है, और आप उन लोगों

(पृष्ठ 786 का शेष) **6.** यह उनकी ज़िल्लत का सबब होगा, और उनके ख़्याली खुदा उनको ख़ाक इज़्ज़त न दे सकेंगे। बल्कि उल्टे वे खुद उनके ख़िलाफ़ हो जाएँगे।

7. यानी उन तदबीरों में उनको कामयाबी न होगी। चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि वे इस्लाम को मिटाना चाहते थे खुद ही मिट गए।

8. यानी कुछ नर और कुछ मादा बनाए।

9. यानी उसको पहले से सबकी ख़बर होती है।

1. जिससे दिन और रात के घटने-बढ़ने के मुताल्लिक़ फ़ायदे हासिल होते हैं।

2. यानी क़ियामत के दिन तक।

3. ऊपर तौहीद का ज़िक्र था। चूँकि काफ़िर लोग उसका इनकार करते थे और उस इनकार से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ग़म भी होता था, इसलिए आगे इनकार से हक़ तआ़ला का नुक़सान न होना बल्कि खुद उन काफ़िरों ही का नुक़सान होना, और मान लेने से हक़ तआ़ला का कुछ नफ़ा न होना बल्कि खुद उन्हीं का नफ़ा होना, और दुनिया में उस नुक़सान का अन्देशा और आख़िरत में उसके सामने आने और ज़ाहिर होने को बयान करके काफ़िरों को ख़बरदार करने और उससे डराने और उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ग़म करने पर आपकी तसल्ली का मज़मून है।

4. मतलब यह है कि हक़ के तालिब को नफ़ा हुआ करता है। ये लोग हक़ के तालिब ही नहीं, इनसे उम्मीद न रखिए।

5. यानी उन लोगों से क्या उम्मीद रखी जाए कि उनका समझना मोमिनों जैसा समझना हो, और उस समझने से मोमिनों की तरह ये भी हक़ को क़बूल कर लें, और हक़ को क़बूल करने के दीनी फ़ायदों में भी ये लोग शरीक हो जाएँ। क्योंकि मोमिनों की मिसाल हक़ को समझने में देखने वाले के जैसी है, और उनकी मिसाल हक़ के न समझने में अन्धों जैसी है। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 790 पर)**

बिल्हक़्क़ि बशीरंव्-व नज़ीरन्, व इम्-मिन् उम्म-तिन् इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर **(24)** व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व बिज़्ज़ुबुरि व बिल्-किताबिल्-मुनीर **(25)** सुम्-म अख़ज़्तुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-कै-फ़ का-न नकीर **(26)** ❖

अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्रज्ना बिही स-मरातिम्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा, व मिनल्-जिबालि जु-ददुम् बीज़ुंव्-व हुमुरुम् मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूद **(27)** व मिनन्नासि वद्दवाब्बि वल्-अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालि-क, इन्नमा यख़्शल्ला-ह मिन् अिबादिहिल्-अु-लमा-उ, इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ग़फ़ूर **(28)** इन्नल्लज़ी-न यत्लू-न किताबल्लाहि व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अलानि-यतंय्-यर्जू-न तिजा-रतल् लन् तबूर **(29)** लियुवफ़्फ़ि-यहुम् उजू-रहुम् व यज़ी-दहुम् मिन् फ़ज़्लिही, इन्नहू ग़फ़ूरुन् शकूर **(30)** वल्लज़ी औहैना इलै-क मिनल्-किताबि हुवल्-हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि, इन्नल्ला-ह बिअिबादिही ल-ख़बीरुम्-बसीर **(31)** सुम्-म औरस्नल्-किताबल्लज़ीनस्तफ़ैना मिन् अिबादिना फ़मिन्हुम् ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही व मिन्हुम् मुक़्तसिदुन् व मिन्हुम् साबिक़ुम् बिल्-ख़ैराति बि-इज़्निल्लाहि, ज़ालि-क हुवल् फ़ज़्लुल्-कबीर **(32)** जन्नातु अद्निंय्-यद्ख़ुलूनहा युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन्

إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ
إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾ وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن
قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ
أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ
الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾
وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ
إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾
إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ
أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِي
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ
اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ
وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾
جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَ

को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में (दफ़न) हैं। **(22)** आप तो सिर्फ़ डराने वाले हैं। **(23)** हम ही ने आपको (दीने) हक़ देकर ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डर सुनाने वाला बनाकर भेजा है। और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिसमें कोई डर सुनाने वाला न गुज़रा हो। **(24)** और अगर ये लोग आपको झुठलाएँ तो जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उन्होंने भी झुठलाया था, (और) उनके पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े और सहीफ़े और रोशन किताबें लेकर आए थे। **(25)** फिर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया। सो (देखो) मेरा कैसा अ़ज़ाब हुआ। **(26)** ❖

(ऐ मुख़ातब!) क्या तूने इस बात पर नज़र नहीं की कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा, फिर हमने उसके ज़रिए से मुख़्तलिफ़ रंगतों के फल निकाले। और (इसी तरह) पहाड़ों के भी मुख़्तलिफ़ हिस्से हैं- (बाज़े) सफ़ेद, (बाज़े) सुर्ख़ कि उनकी भी रंगतें अलग-अलग हैं। (और बाज़े न सफ़ेद न सुर्ख़ बल्कि) बहुत गहरे काले। **(27)** और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चौपायों में भी बाज़ ऐसे हैं कि उनकी रंगतें अलग-अलग हैं। ख़ुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो (उसकी बड़ाई का) इल्म रखते हैं, वाक़ई अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त, बड़ा बख़्शने वाला है।[1] **(28)** जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत (और साथ ही उस पर अ़मल भी) करते रहते हैं और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको अ़ता फ़रमाया है उसमें से छुपे और खुले तौर पर ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मद्धम और फीकी न होगी। **(29)** ताकि उनको उनकी उजरतें (भी) पूरी-पूरी दें और उनको अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा (भी) दें। बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा क़द्र करने वाला है। **(30)** और यह किताब जो हमने आपके पास वह्य के तौर पर भेजी है, यह बिलकुल ठीक है जो कि अपने से पहली किताबों की भी तस्दीक़ करती है। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की (हालत की) पूरी खबर रखने वाला, ख़ूब देखने वाला है। **(31)** फिर यह किताब हमने उन लोगों के हाथों में पहुँचाई जिनको हमने अपने (तमाम दुनिया के) बन्दों में से पसन्द फ़रमाया,[2] फिर बाज़े तो उनमें अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं और बाज़े उनमें दरमियानी दर्जे के हैं, और बाज़े उनमें ख़ुदा की तौफ़ीक़ से नेकियों में तरक़्क़ी किए चले जाते हैं। यह बड़ा फ़ज़्ल है।[3] **(32)** वे बाग़ात हैं हमेशा रहने के जिनमें

(पृष्ठ 788 का शेष) और इसी तरह मोमिनों ने हक़ को समझने और पाने के ज़रिए से जिस हिदायत के रास्ते को इख़्तियार किया है उस हक़ रास्ते की मिसाल नूर के जैसी है, और काफ़िर ने हक़ को न समझने और उसको कबूल न करने से जिस रास्ते को इख़्तियार किया है उसकी मिसाल अन्धेरे के जैसी है। और इसी तरह जो फल जन्नत वग़ैरह इस हक़ तरीक़े पर मुरत्तब होगा उसकी मिसाल ठन्डे साये के जैसी है, और जो नतीजा और फल जहन्नम वग़ैरह बातिल तरीक़े पर मुरत्तब होगा उसकी मिसाल जलती धूप के जैसी है। पस न उनका और मोमिनों का समझना बराबर हुआ और न उनका तरीक़ा और न उस तरीक़े का फल और नतीजा।

6. जब ये मुर्दे हैं तो मुर्दों को ज़िन्दा करना ख़ुदा की क़ुदरत में है, बन्दे की क़ुदरत में नहीं।

1. पस अल्लाह से डरना और ख़ौफ़ इज़्ज़त का सबब भी है और बख़्शिश का भी।

2. इससे मुसलमान मुराद हैं जो इस ईमान की हैसियत से तमाम दुनिया वालों में अल्लाह के नज़दीक मक़बूल हैं। अगरचे उनमें कोई किसी दूसरी वजह से जैसे आमाल का ख़राब होना वग़ैरह, मलामत (डाँट-डपट और बुरा-भला कहने) का सबब भी हो। मतलब यह है कि मुसलमानों के हाथों में वह किताब पहुँचाई।

3. क्योंकि उसपर अ़मल करने की बदौलत कैसे अज्र व फ़ज़्ल के हक़दार हो गए।

ज़्-हबिंव्-व लुअ्लुअन् व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर (33) व क़ालुल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह-ब अ़न्नल्-ह-ज़्-न, इन्-न रब्बना ल-ग़फ़ूरुन् शकूर (34) अल्लज़ी अ-हल्लना दारल्-मुक़ामति मिन् फ़ज़्लिही ला यमस्सुना फ़ीहा न-सबुंव्-व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब (35) वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् नारु जहन्न-म ला युक़्ज़ा अ़लैहिम् फ़-यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् मिन् अ़ज़ाबिहा, कज़ालि-क नज्ज़ी कुल्-ल कफ़ूर (36) व हुम् यस्तरिख़ू-न फ़ीहा रब्बना अख़्रिज्ना नअ्मल् सालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्मलु, अ-व लम् नुअ़म्मिर्कुम् मा य-तज़क्करु फ़ीहि मन् तज़क्क-र व जा-अकुमुन्नज़ीरु, फ़ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर (37) ❖

इन्नल्ला-ह आ़लिमु ग़ैबिस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (38) हुवल्लज़ी ज-अ़-लकुम् ख़लाइ-फ फ़िल्अर्ज़ि, फ़-मन् क-फ़-र फ़-अ़लैहि कुफ़्रुहू, व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् इल्ला मक़्तन् व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् इल्ला ख़सारा (39) क़ुल् अ-रऐतुम् शु-रका-अकुमुल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्-अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति अम् आतैनाहुम् किताबन् फ़हुम् अ़ला बय्यि-नतिम् मिन्हु बल् इंय्यअ़िदुज़्ज़ालिमू-न बअ्ज़ुहुम् बअ्ज़न् इल्ला ग़ुरूरा (40) इन्नल्ला-ह युम्सिकुस्समावाति वल्अर्-ज़ अन् तज़ूला, व ल-इन् ज़ा-लता इन् अम्-स-कहुमा मिन् अ-हदिम् मिम्बअ्दिही, इन्नहू का-न हलीमन् ग़फ़ूरा (41) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् जा-अहुम्

لُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیٓ اَذْهَبَ
عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِیٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ
مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَ
لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِیْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ
يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِیْ كُنَّا
نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ
فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَكُمْ
خَلٰٓئِفَ فِی الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ
كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا
خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ
اَرُوْنِیْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِی السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ
اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ
وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا

ये लोग दाख़िल होंगे (और) उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका लिबास रेशम का होगा। **(33)** और कहेंगे अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिसने हमसे (रंज और) ग़म दूर किया, बेशक हमारा परवर्दिगार बड़ा बख़्शने वाला, क़द्रदान है। **(34)** जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से हमेशा रहने के ठिकाने में ला उतारा, जहाँ हमको न कोई परेशानी पहुँचेगी और न हमको कोई ख़स्तगी पहुँचेगी। **(35)** और (उनके विपरीत) जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए दोज़ख़ की आग है, न तो उनकी मौत आएगी कि मर ही जाएँ और न उनसे दोज़ख़ का अज़ाब ही हल्का किया जाएगा। हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं। **(36)** और वे लोग उस (दोज़ख़) में चिल्लाएँगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको (यहाँ से) निकाल लीजिए, हम (अब ख़ूब) अच्छे (-अच्छे) काम करेंगे, उन कामों के उलट जो किया करते थे। क्या हमने तुमको इतनी उम्र न दी थी कि जिसको समझना होता वह समझ सकता?[1] और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था। सो (उसे न मानने का) मज़ा चखो, कि ऐसे ज़ालिमों का (यहाँ) कोई मददगार नहीं। **(37)** ❖

बेशक अल्लाह तआ़ला (ही) जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों का। बेशक वही जानने वाला है दिल की बातों का। **(38)** वही ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में आबाद किया।[2] सो जो शख़्स कुफ़्र करेगा उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा,[3] और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके परवर्दिगार के नज़दीक नाराज़ी ही बढ़ने का सबब हो जाता है, और (साथ ही) काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र घाटा ही बढ़ने का सबब होता है। **(39)** आप कहिए कि तुम अपने बनाए हुए शरीकों का हाल तो बताओ जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूजा करते हो। यानी मुझको यह बतलाओ कि उन्होंने ज़मीन का कौन-सा हिस्सा बनाया है, या उनका आसमान (बनाने) में कुछ साझा है,[4] या हमने उनको कोई किताब दी है कि ये उसकी किसी दलील पर क़ायम हों,[5] बल्कि ये ज़ालिम एक-दूसरे से ख़ालिस धोखे की बातों का वायदा करते आए हैं।[6] **(40)** यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे मौजूदा हालत को छोड़ न दें। और अगर (मान लो) वे मौजूदा हालत को छोड़ दें तो फिर ख़ुदा के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता, वह हलीम है, मग़फ़िरत करने वाला है। **(41)** और उन (क़ुरैश के) काफ़िरों ने बड़ी ज़ोरदार क़सम खाई थी कि

---

1. इससे बालिग़ होने की उम्र मुराद है कि उसमें ज़रूरत के मुताबिक़ पूरी समझ हासिल हो जाती है, इसी लिए उसमें मुकल्लफ़ हो जाता है।

2. इन दलीलों और नेमतों का तक़ाज़ा यह था कि दलील पकड़ते और शुक्र अदा करते हुए तौहीद और फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करते, मगर बाज़े इसके ख़िलाफ़ कुफ़्र व मुख़ालफ़त पर अड़े हुए हैं।

3. किसी दूसरे का क्या बिगड़ता है।

4. ताकि अ़क़्ली दलील से उनका इबादत का हक़दार होना साबित हो।

5. असल यह है कि न अ़क़्ली दलील है न नक़्ली दलील है।

6. उनके बड़ों ने उनको बे-सनद ग़लत बात बतला दी कि "ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं" हालाँकि हक़ीक़त में वे बिलकुल बेइख़्तियार हैं। पस वे इबादत के हक़दार भी नहीं। तो जब कुल मुख़्तार हक़ तआ़ला है तो वही इबादत के क़ाबिल भी है।

नज़ीरुल् ल-यकूनन्-न अह्दा मिन् इह्दल्-उ-ममि फ़-लम्मा जा-अहुम् नज़ीरुम् मा ज़ा-दहुम् इल्ला नुफ़ूरा **(42)** इस्तिक्बारन् फ़िल्‌अर्ज़ि व मक्रस्सय्यि-इ व ला यहीक़ुल्-मक्रुस्सय्यि-उ इल्ला बि-अह्लिही, फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला सुन्नतल्-अव्वली-न फ़-लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला, व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तह्वीला **(43)** अ-व लम् यसीरू फ़िल्‌अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतन्, व मा कानल्लाहु लियुअ्जि-ज़हू मिन् शैइन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्‌अर्ज़ि, इन्नहू का-न अ़लीमन् क़दीरा **(44)** व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्ना-स बिमा क-सबू मा त-र-क अ़ला ज़ह्रिहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्-युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम् मुसम्मन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिअ़िबादिही बसीरा **(45)** ❖

غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ
لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ
اِلَّا نُفُوْرَا ۙ﴿٤٢﴾ اِسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۭ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ
السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ۭ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ
لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا
فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا
اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ
وَلَا فِى الْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ
بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

ع ٥/٨ ١٧

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰسٓ ۚ﴿١﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿٣﴾ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۭ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَّآ اُنْذِرَ اٰبَاۗؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ
عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ

36 सूरतु या-सीन 41

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3090 अक्षर, 739 शब्द, 83 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या-सीन् **(1)** वल्क़ुर्‌आनिल्-हकीम **(2)** इन्न-क ल-मिनल्-मुर्सलीन **(3)** अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(4)** तन्ज़ीलल् अ़ज़ीज़िर्-रहीम **(5)** लितुन्ज़ि-र क़ौमम्-मा उन्ज़ि-र आबाउहुम् फ़हुम् ग़ाफ़िलून **(6)** ल-क़द् हक़्क़ल्-क़ौलु अ़ला अक्सरिहिम् फ़हुम् ला युअ्मिनून **(7)** इन्ना
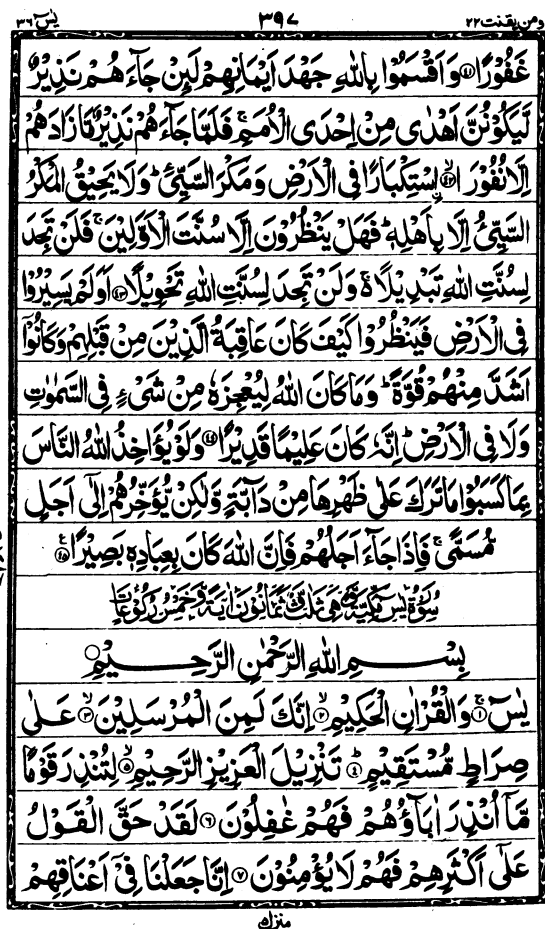
अगर उनके पास कोई डराने वाला आए तो वे हर-हर उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़बूल करने वाले हों। फिर जब उनके पास एक पैग़म्बर आ पहुँचे[1] तो बस उनकी नफ़रत ही को तरक़्क़ी हुई। **(42)** दुनिया में अपने को बड़ा समझने की वजह से और उनकी बुरी तदबीरों को,[2] और बुरी तदबीरों का (असली) वबाल उन तदबीर वालों ही पर पड़ता है। सो क्या ये उसी दस्तूर का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो अगले (काफ़िर) लोगों के साथ होता रहा है।[3] सो आप ख़ुदा के (इस) दस्तूर को कभी बदलता हुआ न पाएँगे, और आप ख़ुदा के दस्तूर को मुन्तक़िल होता हुआ "यानी एक जगह से दूसरी जगह जाने वाला" न पाएँगे।[4] **(43)** और क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं, जिसमें देखते-भालते कि जो (इनकार करने वाले) लोग उनसे पहले गुज़र चुके उनका अन्जाम क्या हुआ? हालाँकि वे क़ुव्वत में इनसे भी बढ़े हुए थे। और ख़ुदा तआ़ला ऐसा नहीं है कि कोई चीज़ (ताक़त वाली) उसको हरा दे, न आसमान में और न ज़मीन में, (क्योंकि) वह बड़े इल्म वाला (और) बड़ी क़ुदरत वाला है।[5] **(44)** और अगर अल्लाह तआ़ला (उन) लोगों पर उनके आमाल के सबब (फ़ौरन) पकड़ फ़रमाने लगता तो रू-ए-ज़मीन पर एक जानदार को न छोड़ता, लेकिन अल्लाह तआ़ला उनको एक मुक़र्ररा मीयाद (यानी क़ियामत) तक मोहलत दे रहा है। सो जब उनकी वह मीयाद आ पहुँचेगी (उस वक़्त) अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को आप देख लेगा। **(45)** ❖

36 सूरः यासीन 41

सूरः यासीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 83 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

या-सीन् **(1)** क़सम है क़ुरआन की जो हिक्मत से भरा हुआ है। **(2)** कि बेशक आप पैग़म्बरों में से हैं। **(3)** (और) सीधे रास्ते पर हैं। **(4)** यह क़ुरआन ज़बरदस्त, मेहरबान ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल किया गया है। **(5)** कि आप (पहले) ऐसे लोगों को डराएँ जिनके बाप-दादा नहीं डराए गए थे, सो इसी वजह से ये बेख़बर हैं। **(6)** उनमें से अक्सर लोगों पर (तक़दीरी) बात साबित हो चुकी है। सो ये लोग (हरगिज़) ईमान न लाएँगे। **(7)** हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं, फिर वे ठोड़ियों तक (अड़ गए) हैं, जिससे

---

1. यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।
2. यानी तकब्बुर की वजह से आपकी पैरवी से शर्म तो हुई थी मगर यह भी न किया कि न पैरवी होती और न तकलीफ़ पहुँचाने के पीछे पड़ते, बल्कि आपको तकलीफ़ पहुँचाने की फ़िक्र में लग गए। चुनाँचे हर वक़्त उनका इसी में लगे रहना मालूम और मशहूर है।
3. यानी सज़ा देना और हलाक करना।
4. मतलब यह है कि हक़ तआ़ला का वायदा है कि काफ़िरों को अ़ज़ाब होगा चाहे दुनिया में भी, चाहे सिर्फ़ आख़िरत में। और हक़ तआ़ला का वायदा हमेशा सच्चा होता है। पस न यह शक व शुब्हा है कि उनको अ़ज़ाब न हो, और न यह शक व शुब्हा कि दूसरों को होने लगे। इस तक़रीर से मक़सद अ़ज़ाब के वाक़ेअ़ होने की ताकीद है। (यानी अ़ज़ाब ज़रूर होगा यह कोई ख़्याली बात नहीं)।
5. पस इल्म से अपने हर इरादे को नाफ़िज़ और लागू करने का तरीक़ा जानता है, और क़ुदरत से उसको नाफ़िज़ और लागू कर सकता है।

जअ़ल्ना फ़ी अअ़्नाक़िहिम् अग़्लालन् फ़हि-य इलल्-अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्महून (8) व जअ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्-व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़-अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून (9) व सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला युअ्मिनून (10) इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्त-ब-अ़ज़्ज़िक्-र व ख़शि-यर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि फ़-बश्शिर्हु बिमग़्फ़ि-रतिंव्-व अज्रिन् करीम (11) इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसा-रहुम्, व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु फ़ी इमामिम्-मुबीन (12) ❖

वज़्रिब् लहुम् म-सलन् अस्हाबल्-क़र्-यति ✣ इज़् जा-अहल्-मुर्-सलून (13) इज़् अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि फ़-कज़्ज़बूहुमा फ़-अ़ज़्ज़ज़्ना बिसालिसिन् फ़क़ालू इन्ना इलैकुम् मुर्-सलून (14) क़ालू मा अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना व मा अन्ज़लर्-रह्मानु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला तक्ज़िबून (15) क़ालू रब्बुना यअ़्लमु इन्ना इलैकुम् ल-मुर्-सलून (16) व मा अ़लैना इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (17) क़ालू इन्ना त-तय्यर्ना बिकुम् ल-इल्लम् तन्तहू ल-नर्जुमन्नकुम् व ल-यमस्सन्नकुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम (18) क़ालू ताइरुकुम् म-अ़कुम् अ-इन् ज़ुक्किर्तुम्, बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (19) व जा-अ मिन् अक़्सल्-मदीनति रजुलुंय्-यस्आ, क़ा-ल या क़ौमित्तबिअ़ुल्-मुर्-सलीन (20) इत्तबिअ़ू मल्ला यस्अलुकुम् अज्रंव्-व हुम् मुह्तदून (21)

يٰسٓ ٣٦ ٣٩٨ ومن يقنت ٢٢

اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝٨ وَجَعَلْنَا مِنْۢ
بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ
فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝٩ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ
تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ
الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝١١ اِنَّا نَحْنُ
نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ
اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝١٢ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ
الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٣ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ
فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝١٤ قَالُوْا
مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ۝١٥ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ۝١٦
وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٧ قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ
تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٨ قَالُوْا
طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۚ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝١٩
وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا
الْمُرْسَلِيْنَ ۝٢٠ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٢١

منزل

उनके सर ऊपर को उठ रहे हैं।[1] **(8)** और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी और एक आड़ उनके पीछे कर दी, जिससे हमने (हर तरफ़ से) उनको (पर्दों में) घेर दिया, सो वे नहीं देख सकते। **(9)** और उनके हक़ में आपका डराना या न डराना दोनों बराबर हैं ये ईमान न लाएँगे। **(10)** पस आप तो सिर्फ़ ऐसे शख़्स को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और ख़ुदा से बेदेखे डरे।[2] सो आप उसको मग़्फ़िरत और उम्दा बदले की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।[3] **(11)** बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे, और हम लिखते जाते हैं वे आमाल भी जिनको लोग आगे भेजते जाते हैं, और उनके वे आमाल भी जिनको पीछे छोड़ जाते हैं।[4] और हमने हर चीज़ को एक वाज़ेह किताब में लिख दिया था।[5] **(12)** ❖

और आप उनके सामने एक क़िस्सा यानी एक बस्ती वालों का क़िस्सा उस वक़्त का बयान कीजिए[6] जबकि उस बस्ती में कई रसूल आए। **(13)** यानी जबकि हमने उनके पास (पहले) दो को भेजा, सो उन लोगों ने (पहले) दोनों को झूठा बतलाया, फिर तीसरे (रसूल) से ताईद की, सो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। **(14)** उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह (महज़) मामूली आदमी हो, और ख़ुदा-ए-रहमान ने (तो) कोई चीज़ नाज़िल (ही) नहीं की, तुम ख़ालिस झूठ बोलते हो। **(15)** उन रसूलों ने कहा कि हमारा परवर्दिगार जानता है कि बेशक हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। **(16)** और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ स्पष्ट तौर पर (हुक्म का) पहुँचा देना था।[7] **(17)** वे लोग कहने लगे कि हम तो तुमको मन्हूस समझते हैं,[8] अगर तुम बाज़ न आए तो हम पत्थरों से तुम्हारा काम तमाम कर देंगे, और तुमको हमारी तरफ़ से सख़्त तकलीफ़ पहुँचेगी। **(18)** उन रसूलों ने कहा कि तुम्हारी नहूसत तो तुम्हारे साथ लगी हुई है, क्या इसको नहूसत समझते हो कि तुमको नसीहत की जाए? बल्कि तुम (ख़ुद अक़्ल और शरीअ़त की) हद से निकल जाने वाले लोग हो।[9] **(19)** और एक (मुसलमान) शख़्स उस शहर के किसी दूर मक़ाम से दौड़ता हुआ आया (और) कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम! इन रसूलों की राह पर (ज़रूर) चलो। **(20)** ऐसे लोगों की राह पर चलो जो तुमसे कोई मुआवज़ा और सिला नहीं माँगते और वे ख़ुद सही रास्ते पर हैं।[10] **(21)**

---

1. यानी उठे रह गए, नीचे को नहीं हो सकते।
2. इसलिए कि डर ही से हक़ की तलब होती है, और तलब से पाना, और ये डरते ही नहीं।
3. इसी से इसपर भी दलालत हो गई कि जो गुमराही और हक़ से मुँह मोड़ने का जुर्म करेगा, वह मग़्फ़िरत और अज्र से महरूम और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ है।
4. "मा क़द्दमू" से मुराद जो काम अपने हाथ से किया और "आसा-रहुम" से मुराद वह असर जो उसके काम के सबब पैदा हुआ और मरने के बाद भी बाक़ी रहा। ग़रज़ ये सब लिखे जा रहे हैं और वहाँ इन सबपर जज़ा और सज़ा मुरत्तब हो जाएगी।
5. यानी लौहे-महफ़ूज़ में।
6. ऊपर रिसालत का मसला मय तसल्ली देने के ज़िक्र किया गया था। आगे रिसालत की ताईद और झुठलाने वालों को डराने और धमकाने के लिए एक क़िस्सा ज़िक्र किया गया है, जो रिसालत के झुठलाने वालों की मलामत और निन्दा वग़ैरह पर ख़त्म किया गया है। जिससे उस मज़मून की भी ताईद हो गई जो सज़ा के बारे में ऊपर ज़िक्र किया गया था।
7. ग़रज़ यह कि हम अपना काम कर चुके, तुम न मानो तो हम मजबूर हैं।
8. मतलब यह होगा कि तमाम लोगों में एक फ़ितना डाल दिया जिससे नुक़सानात पहुँच रहे हैं, यह नहूसत है, और इस नहूसत के सबब तुम हो।
9. पस शरीअ़त की मुख़ालफ़त से तुमपर यह नहूसत आई, और अ़क़्ल की मुख़ालफ़त से तुमने इसका सबब ग़लत समझा।
10. यानी ख़ुद-ग़रज़ी जो पैरवी के लिए रुकावट है वह हट गई और हिदायत याफ़्ता होना जो कि पैरवी को चाहता है वह मौजूद है, फिर पैरवी क्यों न की जाए।

तेईसवाँ पारः व मा लि-य

सूरतु या-सीन् (आयत 22 से 83)

व मा लि-य ला अअ़्बुदुल्लज़ी फ़-त-रनी व इलैहि तुर्जअ़ून (22) अ-अत्तख़िज़ु मिन् दूनिही आलि-हतन् इंय्युरिद्-निर्-रह्मानु बिज़ुर्रिल्-ला तुग़्नि अ़न्नी शफ़ा-अ़तुहुम् शैअंव्-व ला युन्क़िज़ून (23) इन्नी इज़ल्-लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन (24) इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फ़स्मअ़ून (25) क़ीलद्ख़ुलिल्-जन्न-त, क़ा-ल यालै-त क़ौमी यअ़्लमून (26) बिमा ग़-फ़-र ली रब्बी व ज-अ़-लनी मिनल्-मुक्रमीन (27) व मा अन्ज़ल्ना अ़ला क़ौमिही मिम्बअ़्दिही मिन् जुन्दिम्-मिनस्समा-इ व मा कुन्ना मुन्ज़िलीन (28) इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ़-इज़ा हुम् ख़ामिदून (29) या हस्-रतन् अ़लल्-अ़िबादि, मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (30) अलम् यरौ कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिनल्-क़ुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिअ़ून (31) व इन् कुल्लुल्-लम्मा जमीअ़ुल्-लदैना मुह्ज़रून (32) ❖

يٰس ٣٦ ٣٩٩ ومالي ٢٣

وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ءَأَتَّخِذُ مِن
دُونِهِ ءَالِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ
شَيْـًٔا وَلَا يُنقِذُونِ إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ إِنِّي ءَامَنتُ
بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِي
يَعْلَمُونَ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ وَمَآ
أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا
مُنزِلِينَ إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ
يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ
إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ وَ
ءَايَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ
يَأْكُلُونَ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا
فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ
أَفَلَا يَشْكُرُونَ سُبْحٰنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنبِتُ
الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ وَءَايَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ
نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا

منزل ٥

व आ-यतुल् लहुमुल्-अर्ज़ुल्-मै-ततु अह्यैनाहा व अख़्रज्ना मिन्हा हब्बन् फ़मिन्हु यअ्कुलून (33) व जअ़ल्ना फ़ीहा जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव्-व अअ़्नाबिंव्-व फ़ज्जर्ना फ़ीहा मिनल्-अ़ुयून (34) लि-यअ्कुलू मिन् स-मरिही व मा अ़मिलत्हु ऐदीहिम्, अ-फ़ला यश्कुरून (35) सुब्हानल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु व मिन्

तेईसवाँ पारः व मा लि-य

सूरः यासीन (आयत 22 से 83)

और मेरे पास कौन-सा उज़्र है कि मैं उस माबूद की इबादत न करूँ जिसने मुझको पैदा किया और तुम सबको उसी के पास लौटकर जाना है।[1] (22) क्या मैं अल्लाह तआ़ला को छोड़कर और ऐसे-ऐसे माबूद क़रार दे लूँ कि अगर ख़ुदा-ए-रहमान मुझको कुछ तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो न उन माबूदों की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम आए और न वे मुझको छुड़ा सकें। (23) अगर मैं ऐसा करूँ तो खुली गुमराही में जा पड़ा। (24) मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ला चुका, सो तुम (भी) मेरी बात सुन लो। (25) इरशाद हुआ कि जा जन्नत में दाख़िल हो, कहने लगा कि काश! मेरी क़ौम को यह बात मालूम हो जाती (26) कि मेरे परवर्दिगार ने मुझको बख़्श दिया और मुझको इज़्ज़तदारों में शामिल कर दिया। (27) और हमने उस (शहीद) की क़ौम पर उसके बाद कोई (फ़रिश्तों का) लश्कर आसमान से नहीं उतारा और न हमको उतारने की ज़रूरत थी। (28) वह सज़ा बस एक सख़्त आवाज़ थी और वे सब उसी दम (उससे) बुझकर (यानी मरकर) रह गए। (29) अफ़सोस ऐसे बन्दों के हाल पर, उनके पास कभी कोई रसूल नहीं आया जिसकी उन्होंने हँसी न उड़ाई हो। (30) क्या उन लोगों ने इसपर नज़र नहीं की कि हम उनसे पहले बहुत-सी उम्मतें ग़ारत कर चुके कि वे (फिर) उनकी तरफ़ (दुनिया में) लौटकर नहीं आते। (31) और उनमें कोई ऐसा नहीं जो मुज्तमा तौर पर "यानी इकट्ठा होकर और जमा होकर" हमारे सामने हाज़िर न किया जाए। (32) ❖

और उन लोगों के लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है। हमने उसको (बारिश से) ज़िन्दा किया और हमने उससे ग़ल्ले निकाले, सो उनमें से लोग खाते हैं। (33) और (तथा) हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और (साथ ही) उसमें चश्मे जारी किए। (34) ताकि लोग बाग़ के फलों में से खाएँ, और उस (फल और ग़ल्ले) को उनके हाथों ने नहीं बनाया,[2] सो क्या शुक्र नहीं करते। (35) वह पाक ज़ात है जिसने तमाम मुक़ाबिल क़िस्मों को पैदा किया, ज़मीन में से उगने वाली चीज़ों में से भी,[3] और (ख़ुद) उन आदमियों में से भी, और उन चीज़ों में से भी जिनको (आ़म लोग) नहीं जानते।[4] (36) और एक निशानी उनके लिए रात है,[5] कि हम उस (रात) पर से दिन को उतार लेते हैं, सो यकायक वे लोग अन्धेरे में रह जाते हैं। (37) और (एक

1. असल मतलब यही है कि तुमको कौन-सा उज़्र है।

2. अगरचे बीज डालने का काम बज़ाहिर उन्हीं के हाथों होता हो, मगर फल और ग़ल्ले का पैदा करना ख़ास ख़ुदा ही का काम है।

3. चाहे मुक़ाबला एक जैसे होने का हो, जैसे एक-से ग़ल्ले एक-से फल, चाहे मुक़ाबला अलग और एक-दूसरे की ज़िद होने का हो, जैसे गेहूँ और जौ और खट्टे फल, या इससे भी ज़्यादा इख़्तिलाफ़ (यानी विभिन्नता) हो।

4. यानी लोग नहीं जानते कि आ़म मुक़ाबले के मफ़हूम के एतिबार से पोशीदा चीज़ों में भी कोई चीज़ मुक़ाबिल से ख़ाली नहीं, और इसी से हक़ तआ़ला का बेमुक़ाबिल होना मालूम हो गया। ग़रज़ सब जोड़े मख़्लूक़ और वह उन सबका ख़ालिक़।

5. अन्धेरे के असल होने की वजह से, गोया असल वक़्त वही था। और सूरज की रोशनी के सबब गोया उसको दिन ने छुपा लिया था।

अन्फ़ुसिहिम् व मिम्मा ला यअ्लमून **(36)** व आ-यतुल् लहुमुल्लैलु नस्-लखु मिन्हुन्नहा-र फ़-इज़ा हुम् मुज़्लिमून **(37)** वश्शम्सु तज्री लिमुस्त-क़र्रिल्-लहा, ज़ालि-क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम **(38)** वल्क़-म-र क़द्दर्नाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ़-द कल्-अु़र्जूनिल्-क़दीम **(39)** लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्रिकल् क़-म-र व लल्लैलु साबिक़ुन्-नहारि, व कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्-यस्बहून **(40)** व आ-यतुल्-लहुम् अन्ना हमल्ना ज़ुर्रिय्य- -तहुम् फ़िल्-फ़ुल्किल्-मश्हून **(41)** व ख़लक़्ना लहुम् मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून **(42)** व इन्न-शअ् नुग्रिक्हुम् फ़ला सरी-ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ून **(43)** इल्ला रह्म-तम् मिन्ना व मताअ़न् इला हीन **(44)** व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम् व मा ख़ल्फ़कुम् लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(45)** व मा तअ्तीहिम् मिन् आ-यतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन **(46)** व इज़ा क़ी-ल लहुम् अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अ-नुत्अिमु मल्लौ यशाउल्लाहु अत्-अ़-महू इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(47)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(48)** मा यन्ज़ुरू-न इल्ला सै-हतंव्-वाहि-दतन् तअ्ख़ुज़ुहुम् व हुम् यख़िस्सिमून **(49)** फ़ला यस्ततीअ़ू-न तौसि-यतंव्-व ला इला अह्लिहिम् यर्जिअ़ून **(50)** ❖

ذلك تقدير العزيز العليم ۝ والقمر قدرنه منازل حتى عاد
كالعرجون القديم ۝ لا الشمس ينبغي لها ان تدرك القمر
ولا اليل سابق النهار وكل في فلك يسبحون ۝ واية لهم
انا حملنا ذريتهم في الفلك المشحون ۝ وخلقنا لهم من مثله
ما يركبون ۝ وان نشا نغرقهم فلا صريخ لهم ولا هم ينقذون
الا رحمة منا ومتاعا الى حين ۝ واذا قيل لهم اتقوا ما
بين ايديكم وما خلفكم لعلكم ترحمون ۝ وما تاتيهم من
اية من ايت ربهم الا كانوا عنها معرضين ۝ واذا قيل
لهم انفقوا مما رزقكم الله قال الذين كفروا للذين امنوا
انطعم من لو يشاء الله اطعمه ان انتم الا في ضلل مبين ۝
ويقولون متى هذا الوعد ان كنتم صدقين ۝ ما ينظرون
الا صيحة واحدة تاخذهم وهم يخصمون ۝ فلا يستطيعون
توصية ولا الى اهلهم يرجعون ۝ ونفخ في الصور فاذا هم
من الاجداث الى ربهم ينسلون ۝ قالوا يويلنا من بعثنا من
مرقدنا هذا ما وعد الرحمن وصدق المرسلون ۝ ان كانت
الا صيحة واحدة فاذا هم جميع لدينا محضرون ۝ فاليوم

व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-इज़ा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून **(51)** क़ालू

निशानी) सूरज (है कि वह) अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है।[1] यह अन्दाज़ा बाँधा हुआ है उस (ख़ुदा तआ़ला) का जो ज़बरदस्त, इल्म वाला है। **(38)** और चाँद के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं, यहाँ तक कि ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी। **(39)** न सूरज की मजाल है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से पहले आ सकती है, और दोनों एक-एक दायरे में तैर रहे हैं। **(40)** और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी औलाद को भरी हुई कश्ती में सवार किया। **(41)** और हमने उनके लिए कश्ती ही जैसी ऐसी चीज़ें पैदा कीं जिनपर ये लोग सवार होते हैं। **(42)** और अगर हम चाहें तो उनको ग़र्क़ कर दें, फिर न तो कोई उनकी फ़रियाद को पहुँचने वाला हो और न ये ख़लासी "यानी छुटकारा और नजात" दिए जाएँ **(43)** मगर यह हमारी ही मेहरबानी है, और उनको एक मुक़र्ररा वक़्त तक फ़ायदा देना (मन्ज़ूर) है। **(44)** और जब उन लोगों से कहा जाता है कि तुम लोग उस अ़ज़ाब से डरो जो तुम्हारे सामने है और तुम्हारे (मरने के) पीछे "बाद" है, ताकि तुमपर रहमत की जाए **(45)** तो वे बिलकुल परवाह नहीं करते, और उनके रब की आयतों में से कोई आयत भी उनके पास ऐसी नहीं आती, जिससे वे मुँह न मोड़ते हों। **(46)** और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुमको दिया है उसमें से ख़र्च करो, तो ये कुफ़्फ़ार (उन) मुसलमानों से यूँ कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खाने को दें जिनको अगर ख़ुदा चाहे तो (बहुत कुछ) खाने को दे दे। तुम बिलकुल खुली ग़लती में (पड़े) हो।[2] **(47)** और ये लोग (बतौर इनकार) कहते हैं कि यह वायदा कब होगा? अगर तुम सच्चे हो।[3] **(48)** ये लोग बस एक सख़्त आवाज़ के मुन्तज़िर हैं जो उनको आ पकड़ेगी और वे सब आपस में लड़-झगड़ रहे होंगे। **(49)** सो न तो वसीयत करने की फ़ुरसत होगी और न अपने घर वालों के पास लौटकर जा सकेंगे।[4] **(50)** ❖

और (फिर दोबारा) सूर फूँका जाएगा, सो वे सब एकदम से क़ब्रों से (निकल-निकल कर) अपने रब की तरफ़ जल्दी से चलने लगेंगे। **(51)** कहेंगे कि हाय! हमारी कमबख़्ती हमको हमारी क़ब्रों से किसने उठाया?[5] यह वही (क़ियामत) है जिसका रहमान ने वायदा किया था, और पैग़म्बर सच कहते थे। **(52)** बस वह एक ज़ोर की आवाज़ होगी जिससे एक बार ही में सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिए जाएँगे। **(53)** फिर उस दिन किसी शख़्स पर ज़रा ज़ुल्म न होगा, और तुमको बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते

---

1. यह आ़म है उस नुक़्ते (बिन्दू) और जगह को भी जहाँ से चलकर सालाना दौरा करके फिर उसी नुक़्ते पर जा पहुँचता है, और उस नुक़्ते को भी जहाँ से निकल कर अपनी रोज़ाना की हरकत में वहाँ पहुँचकर ग़ुरूब हो जाता है।

2. ग़रज़ न डराने से वे ईमान लाएँ न शौक़ दिलाने से।

3. ऊपर तौहीद का मज़मून और उसके साथ आख़िरत के अ़ज़ाब से डराने का मुख़्तसर ज़िक्र था। अब आख़िरत के हालात किसी क़द्र तफ़सील के साथ ज़िक्र किए गए हैं। और उसके अख़ीर में "व लौ नशाउ ल-तमस्ना……आख़िर तक" से दुनिया में भी अ़ज़ाब के आ जाने के अन्देशे से डरावा है, जिससे "मा बै-न ऐदीकुम" की किसी क़द्र शरह और ख़ुलासा हो गया।

4. यानी जो जिस हाल में होगा उसी हाल में मर जाएगा।

5. इसलिए कि यहाँ के मुक़ाबले में तो वहाँ ही राहत में थे।

या वैलना मम्ब-अ़-सना मिम्-मर्क़दिना ✤ हाज़ा मा व-अ़-दर्रह्मानु व स-दक़ल्-मुर्सलून **(52)** इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ़-इज़ा हुम् जमीअ़ुल्-लदैना मुह्ज़रून **(53)** फ़ल्यौ-म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव्-व ला तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ़्मलून **(54)** इन्-न अस्हाबल्-जन्नतिल्-यौ-म फ़ी शुग़ुलिन् फ़ाकिहून **(55)** हुम् व अज़्वाजुहुम् फ़ी ज़िलालिन् अ़लल्-अराइकि मुत्तकिऊन **(56)** लहुम् फ़ीहा फ़ाकि-हतुंव्-व लहुम् मा यद्-दऊन **(57)** सलामुन्, क़ौलम् मिर्रब्बिर्-रहीम **(58)** वम्ताज़ुल्-यौ-म अय्युहल् मुज्रिमून **(59)** अलम् अअ़्हद् इलैकुम् या बनी आद-म अल्ला तअ़्बुदुश्शैता-न इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन **(60)** व अनिअ़्बुदूनी, हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम **(61)** व ल-क़द् अज़ल्-ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसीरन्, अ-फ़लम् तकूनू तअ़्क़िलून **(62)** हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तू-अ़दून **(63)** इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून **(64)** अल्यौ-म नख़्तिमु अ़ला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून **(65)** व लौ नशा-उ ल-तमस्ना अ़ला अअ़्युनिहिम् फ़स्त-बक़ुस्सिरा-त फ़-अन्ना युब्सिरून **(66)** व लौ नशा-उ ल-मसख़्नाहुम् अ़ला मका-नतिहिम् फ़-मस्तताअ़ू मुज़िय्यंव्-व ला यर्जिअ़ून **(67)** ❖

व मन् नुअ़म्मिर्हु नुनक्किस्हु फ़िल्ख़ल्क़ि अ-फ़ला यअ़्क़िलून **(68)** व मा अ़ल्लम्नाहुश्-शिअ़्-र व मा यम्बग़ी लहू, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुंव्-व क़ुरआनुम्-मुबीन **(69)** लियुन्ज़ि-र मन् का-न हय्यंव्-व यहिक़्क़ल्-क़ौलु अ़लल्-काफ़िरीन **(70)** अ-व लम् यरौ अन्ना ख़लक़्ना लहुम् मिम्मा अ़मिलत् ऐदीना अन्आमन् फ़हुम् लहा मालिकून **(71)**

لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون ﴿٥٤﴾ إن أصحب
الجنة اليوم في شغل فكهون ﴿٥٥﴾ هم وأزوجهم في ظلل على
الأرائك متكئون ﴿٥٦﴾ لهم فيها فكهة ولهم ما يدعون ﴿٥٧﴾
سلم قولا من رب رحيم ﴿٥٨﴾ وامتازوا اليوم أيها المجرمون ﴿٥٩﴾
ألم أعهد إليكم يبني ءادم أن لا تعبدوا الشيطن إنه لكم
عدو مبين ﴿٦٠﴾ وأن اعبدوني هذا صرط مستقيم ﴿٦١﴾ ولقد
أضل منكم جبلا كثيرا أفلم تكونوا تعقلون ﴿٦٢﴾ هذه جهنم
التي كنتم توعدون ﴿٦٣﴾ اصلوها اليوم بما كنتم تكفرون ﴿٦٤﴾ اليوم
نختم على أفوههم وتكلمنا أيديهم وتشهد أرجلهم بما
كانوا يكسبون ﴿٦٥﴾ ولو نشاء لطمسنا على أعينهم فاستبقوا الصرط
فأنى يبصرون ﴿٦٦﴾ ولو نشاء لمسخنهم على مكانتهم فما استطعوا
مضيا ولا يرجعون ﴿٦٧﴾ ومن نعمره ننكسه في الخلق أفلا
يعقلون ﴿٦٨﴾ وما علمنه الشعر وما ينبغي له إن هو إلا ذكر
وقرءان مبين ﴿٦٩﴾ لينذر من كان حيا ويحق القول على
الكفرين ﴿٧٠﴾ أولم يروا أنا خلقنا لهم مما عملت أيدينا أنعما
فهم لها ملكون ﴿٧١﴾ وذللنها لهم فمنها ركوبهم ومنها

थे। **(54)** जन्नत वाले बेशक उस दिन अपने मश्ग़लों में ख़ुशदिल होंगे। **(55)** वे और उनकी बीवियाँ,[1] सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। **(56)** उनके लिए वहाँ (हर तरह के) मेवे होंगे, और जो कुछ माँगेंगे उनको मिलेगा। **(57)** उनको मेहरबान रब की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा।[2] **(58)** और ऐ मुजरिमो! आज (ईमान वालों से) अलग हो जाओ।[3] **(59)** ऐ आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद! क्या मैंने तुमको ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। **(60)** और यह कि मेरी (ही) इबादत करना,[4] यही सीधा रास्ता है। **(61)** और वह (शैतान) तुममें एक बड़ी मख़्लूक़ को गुमराह कर चुका (है), सो क्या तुम नहीं समझते थे? **(62)** यह जहन्नम है जिसका तुमसे वायदा किया जाया करता था। **(63)** आज अपने कुफ़्र के बदले में उसमें दाख़िल हो। **(64)** आज हम उनके मुहों पर मुहर लगा देंगे,[5] और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पाँव गवाही देंगे, जो कुछ ये लोग किया करते थे। **(65)** और अगर हम चाहते तो (दुनिया ही में) उनकी आँखों को मलियामेट कर देते, फिर ये रास्ते की तरफ़ दौड़ते-फिरते, सो उनको कहाँ नज़र आता। **(66)** और अगर हम चाहते तो उनकी सूरतें बदल डालते, इस हालत से कि ये जहाँ हैं वहीं रह जाते, जिससे ये लोग न आगे को चल सकते और न पीछे को लौट सकते। **(67)** ❖

और हम जिसकी उम्र ज़्यादा कर देते हैं तो उसको तबई हालत में उल्टा कर देते हैं,[6] सो क्या वे लोग नहीं समझते? **(68)** और हमने आपको शायरी का इल्म नहीं दिया, और वह आपके लिए मुनासिब भी नहीं, वह तो महज़ नसीहत (का मज़मून) और एक आसमानी किताब है जो अहकाम को ज़ाहिर करने वाली है। **(69)** ताकि ऐसे शख़्स को डराए जो ज़िन्दा हो और ताकि काफ़िरों पर (अ़ज़ाब की) हुज्जत साबित हो जाए। **(70)** क्या उन लोगों ने इसपर नज़र नहीं की कि हमने उनके (फ़ायदे के) लिए अपने हाथ की बनाई हुई चीज़ों में से मवेशी पैदा किए, फिर ये लोग उनके मालिक बन रहे हैं। **(71)** और हमने उन मवेशियों को उनका ताबे बना

---

1. "अज़्वाजुहुम" में हूरें और ईमान वाली बीवियाँ दोनों मुराद हो सकती हैं।

2. यानी हक़ तआ़ला ख़ुद फ़रमाएँगे "अस्सलामु अ़लैकुम या अह्लल् जन्नति" (ऐ जन्नतियो! तुमपर सलाम हो)।

फ़ायदाः जन्नत में सलाम से मक़सद या तो महज़ इक्राम है या हमेशा की सलामती की ख़ुशख़बरी और ख़बर देना है। पस यह शुब्हा न रहा कि जन्नतियों को तो सलामती पहले ही से हासिल है इस सलामती की दुआ़ में क्या नई बात हुई?

3. क्योंकि उनको जन्नत में भेजना है और तुमको दोज़ख़ में।

4. इबादत से मुराद मुतलक़ इताअ़त व फ़रमाँबरदारी है।

5. जिससे यह झूठा उज़्र न कर सकें।

6. तबई हालत से मुराद सुनने वाली, देखने वाली, महसूस करने वाली, काम करने वाली, हज़्म करने वाली, बढ़ोतरी करने वाली वग़ैरह क़ुव्वतें हैं, और रंग व रोग़न व हुस्न व ख़ूबसूरती हैं। और उल्टा करने से उनकी हालत का घटिया और पस्त दर्जे की तरफ़ बदल जाना मुराद है। पस 'आँखों को मलियामेट करना' और 'सूरतें बदल डालना' भी कामिल से नाक़िस की तरफ़ एक क़िस्म की तब्दीली है।

व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फ़मिन्हा रकूबुहुम् व मिन्हा यअ्कुलून (72) व लहुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व मशारिबु, अ-फ़ला यश्कुरून (73) वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-हतल् लअ़ल्लहुम् युन्सरून (74) ला यस्ततीअू-न नस्-रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम् मुह्ज़रून (75) फ़ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम् ✣ इन्ना नअ्लमु मा युसिर्रून व मा युअ्लिनून (76) अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना ख़लक़्नाहु मिन् नुत्फ़तिन् फ़-इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (77) व ज़-र-ब लना म-सलंव्-व नसि-य ख़ल्क़हू, क़ा-ल मंय्युह्यिल्-अ़िज़ा-म व हि-य रमीम (78) क़ुल् युह्यीहल्लज़ी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिन्, व हु-व बिकुल्लि ख़ल्क़िन् अ़लीम (79) अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुम् मिनश्श-जरिल्-अख़्-ज़रि नारन् फ़-इज़ा अन्तुम् मिन्हु तूक़िदून (80) अ-व लैसल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम्, बला, व हुवल् ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (81) इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा-द शैअन् अंय्यक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून (82) फ़-सुब्हानल्लज़ी बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व इलैहि तुर्जअ़ून (83) ❖

ومالي ٢٣ ٨٠٢ الصّٰفّٰت ٣٧

يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوا
مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَعَلَّهُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ
وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُحْضَرُونَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا
يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ
فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ
مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ
مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ
الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ
الْعَلِيمُ ﴿٨١﴾ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾
فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾
سورة الصّٰفّٰت مكية وهي مائة واثنتان وثمانون آية وخمس ركوعات
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾ إِنَّ إِلَٰهَكُمْ
لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾
إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ﴿٦﴾ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ

منزل ٦

37 सूरतुस्-साफ़्फ़ाति 56

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2951 अक्षर, 873 शब्द, 182 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़ा (1) फ़ज़्ज़ाजिराति ज़ज्रा (2) फ़त्तालियाति ज़िक्रा (3) इन्-न इला-हकुम् लवाहिद् (4) रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक़् (5) इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बिज़ी-नति-निल्-कवाकिब (6) व हिफ़्ज़म् मिन् कुल्लि

दिया, सो उनमें बाज़े तो उनकी सवारियाँ हैं और बाज़ों को वे खाते हैं। **(72)** और उनमें उन लोगों के और भी नफ़े हैं, और पीने की चीज़ें भी हैं (यानी दूध), सो क्या ये लोग शुक्र नहीं करते। **(73)** और उन्होंने ख़ुदा के सिवा और माबूद क़रार दे रखे हैं, इस उम्मीद पर कि उनको मदद मिले। **(74)** (लेकिन) वे उनकी कुछ मदद कर ही नहीं सकते, और वे उन लोगों के हक़ में एक (मुख़ालिफ़) फ़रीक़ हो जाएँगे जो हाज़िर किए जाएँगे। **(75)** तो उन लोगों की बातें आपके लिए रंजीदगी का सबब न होना चाहिए, बेशक हम सब जानते हैं जो कुछ ये दिल में रखते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।[1] **(76)** क्या आदमी को यह मालूम नहीं कि हमने उसको नुत्फ़े से पैदा किया, सो वह खुलेआम एतिराज़ करने लगा। **(77)** और उसने हमारी शान में एक अ़जीब मज़मून बयान किया और अपनी असल को भूल गया। कहता है कि हड्डियों को (ख़ास तौर पर) जबकि वे बोसीदा हो गई हों, कौन ज़िन्दा कर देगा? **(78)** आप जवाब दे दीजिए कि उनको वह ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार में उनको पैदा किया है, और वह सब तरह का पैदा करना जानता है। **(79)** वह ऐसा (क़ादिर) है कि (बाज़) हरे पेड़ से तुम्हारे लिए आग पैदा कर देता है, फिर तुम उससे और आग सुलगा लेते हो।[2] **(80)** और जिसने आसमान और ज़मीन पैदा किए हैं, क्या वह इसपर क़ादिर नहीं कि उन जैसे आदमियों को (दोबारा) पैदा कर दे? ज़रूर क़ादिर है, और वह बड़ा पैदा करने वाला, ख़ूब जानने वाला है। **(81)** जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस उसका मामूल तो यह है कि उस चीज़ को कह देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। **(82)** तो उसकी ज़ात पाक है जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा इख़्तियार है, और तुम सबको उसी के पास लौटकर जाना है। **(83)** ❖

37 सूरः साफ़्फ़ात 56

सूरः साफ़्फ़ात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 182 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है उन फ़रिश्तों की जो सफ़ बाँधकर खड़े होते हैं।[3] **(1)** फिर उन फ़रिश्तों की जो बन्दिश करने वाले हैं।[4] **(2)** फिर उन फ़रिश्तों की जो ज़िक्र की तिलावत करने वाले हैं। **(3)** कि तुम्हारा माबूद (बरहक़) एक है। **(4)** वह परवर्दिगार है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके दरमियान में है। **(5)** और परवर्दिगार है तुलूअ़ करने के मौक़ों का "यानी पूरब के उन स्थानों का जहाँ से सूरज निकलता है"। हम ही ने रौनक़ दी है इस तरफ़ वाले आसमान को एक अ़जीब सजावट यानी सितारों के साथ। **(6)** और हिफ़ाज़त भी

1. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि आ़स बिन वाइल एक बोसीदा हड्डी लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसको चुटकी से मलकर कहने लगा कि क्या यह ऐसी हालत के बाद ज़िन्दा होगी? आपने फ़रमाया "हाँ! और तू दोज़ख़ में जाएगा"। इसपर "अ-व लम् यरल् इन्सानु" से सूरः के आख़िर तक की आयतें नाज़िल हुईं।
2. चुनाँचे अ़रब में एक पेड़ मर्ख़ था, और एक अफ़ार, उनसे चक़माक़ (यानी माचिस) का काम लेते थे। पस जब पानी में कि हरा होना उसी का असर है, आग पैदा कर देते हैं तो बेजान चीज़ में ज़िन्दगी पैदा करना क्या मुश्किल है।
3. इबादत में या हक़ तआ़ला का हुक्म सुनने के वक़्त।
4. यानी शिहाबि-साक़िब (चमकदार सितारा जो रात में टूटकर गिरता है) के ज़रिए से आसमानी ख़बरें लाने से शैतानों की बन्दिश करने वाले।

शैतानिम्-मारिद (7) ला यस्सम्मअू-न इलल् म-लइल्-अअ्ला व युक़्ज़फ़ू-न मिन् कुल्लि जानिब (8) दुहूरंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुंव्-वासिब् (9) इल्ला मन् ख़ातिफ़ल्-ख़त्फ़-त फ़-अत्ब-अ़हू शिहाबुन् साक़िब (10) फ़स्तफ़्तिहिम् अ-हुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अम्मन् ख़लक़्ना, इन्ना ख़लक़्नाहुम् मिन् तीनिल्-लाज़िब (11) बल् अ़जिब्-त व यस्ख़रून (12) व इज़ा ज़ुक्किरू ला यज़्कुरून (13) व इज़ा रऔ आ-यतंय्-यस्तस्ख़िरून (14) व क़ालू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (15) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ-इन्ना लमब्अूसून (16) अ-व आबा-उनल्-अव्वलून (17) क़ुल् न-अ़म् व अन्तुम् दाख़िरून (18) फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्-रतुंव्-वाहि-दतुन् फ़-इज़ा हुम् यन्ज़ुरून (19) व क़ालू या वै-लना हाज़ा यौमुद्दीन (20) हाज़ा यौमुल्-फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (21) ❖

उह्शुरुल्लज़ी-न ज़-लमू व अज़्वा-जहुम् व मा कानू यअ्बुदून (22) मिन् दूनिल्लाहि फ़ह्दूहुम् इला सिरातिल्-जहीम ◆ (23) वक़िफ़ूहुम् इन्नहुम् मस्अूलून (24) मा लकुम् ला तना-सरून (25) बल् हुमुल्-यौ-म मुस्तस्लिमून (26) व अक़्ब-ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्-य-तसा-अलून (27) क़ालू इन्नकुम् कुन्तुम् तअ्तू-नना अ़निल्-यमीन (28) क़ालू बल्-लम् तकूनू मुअ्मिनीन (29) व मा का-न लना अ़लैकुम् मिन् सुल्तानिन् बल् कुन्तुम् क़ौमन् ताग़ीन (30) फ़-हक़्-क़ अ़लैना क़ौलु रब्बिना इन्ना लज़ा-इक़ून (31) फ़-अग़्वैनाकुम् इन्ना कुन्ना ग़ावीन (32) फ़-इन्नहुम् यौमइज़िन् फ़िल्-अ़ज़ाबि मुश्तरिकून (33) इन्ना कज़ालि-क नफ़्अ़लु बिल्-मुज्रिमीन (34) इन्नहुम्

مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ
جَانِبٍ ۝ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ
فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ
خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّن طِينٍ لَّازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝
وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا إِنْ
هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝
أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ
وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ۝
هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ احْشُرُوا الَّذِينَ
ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝ مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ
إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۝ وَقِفُوهُمْ ۖ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ ۝ مَا لَكُمْ
لَا تَنَاصَرُونَ ۝ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۝ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ
عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ۝
قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۚ
بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ۝ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ۝
فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ۝ فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ

की है हर शरीर शैतान से। (7) वे शयातीन ऊपर के आलम की तरफ़ कान भी नहीं लगा सकते, और वे हर तरफ़ से मार कर धक्के दिए जाते हैं।[1] (8) और उनके लिए हमेशा का अ़ज़ाब होगा। (9) मगर जो शैतान कुछ ख़बर ले ही भागे, तो एक दहकता हुआ शोला उसके पीछे लग लेता है।[2] (10) तो आप उनसे पूछिए कि ये लोग बनावट में ज़्यादा सख़्त हैं या हमारी पैदा की हुई ये चीज़ें?[3] (क्योंकि) हमने उन लोगों को चिपकती मिट्टी से पैदा किया है।[4] (11) बल्कि आप तो ताज्जुब करते हैं और ये लोग मज़ाक़ उड़ाते हैं। (12) और जब उनको समझाया जाता है तो ये समझते नहीं। (13) और जब कोई मोजिज़ा देखते हैं तो (ख़ुद) उसकी हँसी उड़ाते हैं। (14) और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है। (15) (क्योंकि) भला जब हम मर गए और मिट्टी और हड्डियाँ हो गए तो क्या हम (फिर) ज़िन्दा किए जाएँगे? (16) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी? (17) आप कह दीजिए कि हाँ! (ज़रूर ज़िन्दा होगे) और तुम ज़लील भी होगे।[5] (18) पस क़ियामत तो बस एक ललकार होगी (यानी दूसरी बार का सूर फूँका जाना), सो सब यकायक देखने-भालने लगेंगे। (19) और कहेंगे कि हाय! हमारी कमबख़्ती यह तो वही बदले का दिन मालूम होता है। (20) (इरशाद होगा कि हाँ) यह वही फ़ैसले का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (21) ❖

जमा कर लो ज़ालिमों को,[6] और उनके हम मशरबों "यानी उन जैसे काम करने वालों और उनको साथियों" को और उन माबूदों को जिनकी वे लोग इबादत किया करते थे[7] (22) अल्लाह के अ़लावा। फिर उन सबको दोज़ख़ का रास्ता बतलाओ। ◆ (23) और (अच्छा) उनको (ज़रा) ठहराओ, उनसे कुछ पूछा जाएगा। (24) कि अब तुमको क्या हुआ एक-दूसरे की मदद नहीं करते। (25) बल्कि वे सब-के-सब उस दिन सर झुकाए (खड़े) होंगे। (26) और वे एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर जवाब-सवाल (यानी झगड़ा) करने लगेंगे। (27) (चुनाँचे) पैरोकार कहेंगे कि हमपर तुम्हारी आमद बड़े ज़ोर की हुआ करती थी।[8] (28) जिनकी पैरवी की जाती थी वे कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम ख़ुद ही ईमान नहीं लाए थे। (29) और हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था ही नहीं, बल्कि तुम ख़ुद ही सरकशी किया करते थे। (30) सो हम सब पर ही हमारे रब की यह (हमेशा की "यानी शुरू में तय हो चुकी है वह") बात साबित हो चुकी थी कि हम सबको मज़ा चखना है। (31) तो हमने तुमको बहकाया, हम ख़ुद भी गुमराह थे। (32) तो वे सब-के-सब उस दिन

1. ग़रज़ ख़बर सुनने से पहले ही शोले बरसा दिये जाते हैं। और सुनने का इरादा करके भी वह ख़बर के सुनने में नाकाम रहता है।
2. पस ख़बर सुनने के बाद भी वह ख़बर दूसरों को सुनाने और पहुँचाने में नाकाम रहता है।
3. हक़ीक़त में यही चीज़ें ज़्यादा सख़्त हैं।
4. ग़रज़ जब ताक़तवर और सख़्त मख़्लूक़ात के इब्तिदा में पैदा करने पर हम क़ादिर हैं तो कमज़ोर मख़्लूक़ के दोबारा पैदा करने पर क़ुदरत क्यों न होगी?
5. जो शख़्स दलील के बाद भी दुश्मनी और बैर की वजह से इनकार करे उसके लिए ऐसा ही जवाब मुनासिब है।
6. यानी जो कुफ़्र व शिर्क की बुनियाद डालने वाले और मुक़्तदा थे।
7. यानी शयातीन व बुत।
8. यानी हमपर ख़ूब ज़ोर डालकर हमारे गुमराह करने का एहतिमाम और उसमें कोशिश किया करते थे।

कानू इज़ा क़ी-ल लहुम् ला इला-ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरून (35) व यक़ूलू-न अ-इन्ना लतारिकू आलि-हतिना लिशाअ़िरिम्-मज्नून (36) बल् जा-अ बिल्हक़्क़ि व सद्द-क़ल् मुर्-सलीन (37) इन्नकुम् लज़ा-इक़ुल् अ़ज़ाबिल्-अलीम (38) व मा तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ़्मलून (39) इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (40) उलाइ-क लहुम् रिज़्क़ुम्-मअ़्लूम (41) फ़वाकिहु व हुम् मुक्रमून (42) फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (43) अ़ला सुररिम् मु-तक़ाबिलीन (44) युताफ़ु अ़लैहिम् बिकअ्सिम् मिम्-मअ़ीन (45) बैज़ा-अ लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबीन (46) ला फ़ीहा ग़ौलुंव्-व ला हुम् अ़न्हा युन्ज़फ़ून (47) व अ़िन्-दहुम् क़ासिरातुत्-तर्फ़ि अ़ीन (48) क-अन्नहुन्-न बैज़ुम्-मक्नून (49) फ़-अक़्ब-ल बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िंय्-य-तसा-अलून (50) क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् इन्नी का-न ली क़रीन (51) यक़ूलु अ-इन्न-क लमिनल्-मुसद्दिक़ीन (52) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ-इन्ना ल-मदीनून (53) क़ा-ल हल् अन्तुम् मुत्तलिअ़ून (54) फ़त्त-ल-अ फ़-रआहु फ़ी सवाइल्-जहीम (55) क़ा-ल तल्लाहि इन् कित्-त ल-तुर्दीन (56) व लौ ला निअ़्मतु रब्बी लकुन्तु मिनल्-मुह्ज़रीन (57) अ-फ़मा नह्नु बिमय्यितीन (58) इल्ला मौत-तनल्-ऊला व मा नह्नु बिमुअ़ज़्ज़बीन (59) इन्-न हाज़ा ल-हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (60) लिमिस्लि हाज़ा फ़ल्यअ़्मलिल्-आ़मिलून (61) अ-ज़ालि-क ख़ैरुन् नुज़ुलन् अम् श-ज-रतुज़्-ज़क़्क़ूम (62) इन्ना जअ़ल्नाहा फ़ित्-नतल् लिज़्ज़ालिमीन (63) इन्नहा श-ज-रतुन् तख़रुजु फ़ी

مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا
قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا
اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾
اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ
مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾ عَلٰى
سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ
لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَ
عِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾
فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ
اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾ يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا
وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾
فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾
وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾
اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا

अ़ज़ाब में (भी) शरीक रहेंगे। **(33)** (और) हम ऐसे मुजरिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। **(34)** वे लोग ऐसे थे कि जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, तो तकब्बुर किया करते थे। **(35)** और कहा करते थे कि क्या हम अपने माबूदों को एक दीवाने शायर की वजह से छोड़ देंगे?[1] **(36)** बल्कि एक सच्चा दीन लेकर आए हैं, और दूसरे पैग़म्बरों की तस्दीक़ करते हैं।[2] **(37)** तुम सबको दर्दनाक अ़ज़ाब चखना पड़ेगा। **(38)** और तुमको उसी का बदला मिलेगा जो कुछ तुम किया करते थे। **(39)** हाँ, मगर जो अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे हैं[3] **(40)** उनके वास्ते ऐसी ग़िज़ाएँ हैं जिनका हाल (क़ुरआन की दूसरी सूरतों में) मालूम (हो चुका) है। **(41)** यानी मेवे, और वे लोग बड़ी इ़ज़्ज़त से **(42)** आराम के बाग़ों में **(43)** तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे। **(44)** उनके पास शराब का ऐसा जाम लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। **(45)** सफ़ेद होगी, पीने वालों को मज़ेदार मालूम होगी। **(46)** न उसमें सरदर्द होगा और न उससे अ़क़्ल में फ़ुतूर आएगा। **(47)** और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें) होंगी। **(48)** गोया कि वे बैज़े हैं जो छुपे हुए रखे हैं।[4] **(49)** फिर एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बातचीत करेंगे। **(50)** उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनिया में) मेरा एक मिलने वाला था। **(51)** वह कहा करता था कि क्या तू मरने के बाद ज़िन्दा होने का यक़ीन रखने वालों में से है? **(52)** क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम जज़ा और सज़ा दिए जाएँगे?[5] **(53)** इरशाद होगा कि क्या तुम झाँककर (उसको) देखना चाहते हो? **(54)** सो वह शख़्स झाँकेगा तो उसको जहन्नम के बीच में देखेगा। **(55)** कहेगा कि ख़ुदा की क़सम! तू तो मुझे तबाह ही करने को था। **(56)** और अगर मेरे रब का (मुझपर) फ़ज़्ल न होता तो मैं भी पकड़े गए लोगों में होता। **(57)** क्या हम अब नहीं मरेंगे **(58)** पहली बार के मर चुकने के अ़लावा। और न हमको अ़ज़ाब होगा। **(59)** यह बेशक बड़ी कामयाबी है। **(60)** ऐसी ही कामयाबी के लिए अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिए।[6] **(61)** भला यह दावत बेहतर है या ज़क़्क़ूम

---

1. इसमें तौहीद और रिसालत दोनों का इनकार हो गया।
2. यानी ऐसे उसूल बतलाते हैं जिनमें सब रसूल मुत्तफ़िक़ हैं।
3. इससे ईमान वाले मुराद हैं, कि उन्होंने हक़ की पैरवी की और अल्लाह तआ़ला ने उनको मक़बूल और मख़्सूस फ़रमा लिया।
4. तश्बीह (यानी मिसाल देना) सिर्फ़ सफ़ाई में है रंगत में नहीं।
5. यानी वह मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने का इनकारी था।
6. यानी ईमान लाना और इताअ़त करना चाहिए।

अस्लिल्-जहीम **(64)** तल्अुहा क-अन्नहू रुऊसुश्-शयातीन **(65)** फ़-इन्नहुम् ल-आकिलू-न मिन्हा फ़-मालिऊ-न मिन्हल्-बुतून **(66)** सुम्-म इन्-न लहुम् अ़लैहा लशौबम् मिन् हमीम **(67)** सुम्-म इन्-न मर्जि-अ़हुम् ल-इलल्-जहीम **(68)** इन्नहुम् अल्फ़ौ आबा-अहुम् ज़ाल्लीन **(69)** फ़हुम् अ़ला आसारिहिम् युह्रअून **(70)** व ल-क़द् ज़ल्-ल क़ब्लहुम् अक्सरुल्-अव्वलीन **(71)** व ल-क़द् अर्सल्ना फ़ीहिम् मुन्ज़िरीन **(72)** फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुन्ज़रीन **(73)** इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन **(74)** ❖

व ल-क़द् नादाना नूहुन् फ़-लनिअ्मल्- मुजीबून **(75)** व नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल् कर्बिल्-अ़ज़ीम **(76)** व जअ़ल्ना ज़ुर्रिय्य-तहू हुमुल्-बाक़ीन **(77)** व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन **(78)** सलामुन् अ़ला नूहिन् फ़िल्-आ़लमीन **(79)** इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्- मुह्सिनीन **(80)** इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन **(81)** सुम्-म अ़ग्रक़्नल्-आ-ख़रीन **(82)** व इन्-न मिन् शी-अ़तिही ल-इब्राहीम ✣ **(83)** इज़् जा-अ रब्बहू बिक़ल्बिन् सलीम **(84)** इज़् क़ा-ल लि-अबीहि व क़ौमिही माज़ा तअ्बुदून **(85)** अ-इफ़्कन् आलि-हतन् दूनल्लाहि तुरीदून **(86)** फ़मा ज़न्नुकुम् बिरब्बिल्- आ़लमीन **(87)** फ़-न-ज़-र नज़्र-तन् फ़िन्नुजूम **(88)** फ़क़ा-ल इन्नी सक़ीम **(89)** फ़-तवल्लौ अ़न्हु मुद्बिरीन **(90)** फ़रा-ग़ इला आलि-हतिहिम् फ़क़ा-ल अला तअ्कुलून **(91)** मा लकुम् ला तन्तिक़ून **(92)** फ़रा-ग़ अ़लैहिम् ज़र्बम्-बिल्यमीन **(93)** फ़-अक़्बलू इलैहि

الصّٰفّٰت ٣٧ ٨٠٥ ومالي ٢٣

اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّهَا شَجَرَةٌ
تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ۝
فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ
عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۝ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ ۝
اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ۝ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝
وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ
الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ
فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝
وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝
اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ۝ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ
اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ۝ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى
النُّجُوْمِ ۝ فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ۝ فَرَاغَ اِلٰٓى
اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَأْكُلُوْنَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

منزل

❖ रु. 2/53/6 ✣ व. लाज़िम

का दरख़्त। (62) हमने उस दरख़्त को ज़ालिमों के लिए इम्तिहान का ज़रिया बनाया है। (63) वह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ की गहराई में से निकलता है। (64) उसके फल ऐसे हैं जैसे साँप के फन। (65) तो वे लोग उसमें से खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे। (66) फिर उनको खौलता हुआ पानी (पीप में) मिलाकर दिया जाएगा। (67) फिर उनका आख़िरी ठिकाना दोज़ख़ ही की तरफ़ होगा।[1] (68) (क्योंकि) उन्होंने बड़ों को गुमराही की हालत में पाया था। (69) फिर ये भी उन्हीं के क़दम-ब-क़दम "यानी उन्हीं के पीछे-पीछे" तेज़ी के साथ चलते थे।[2] (70) और उनसे पहले भी अगले लोगों में अक्सर गुमराह हो चुके हैं। (71) और हमने उनमें भी डराने वाले (पैग़म्बर) भेजे थे। (72) सो देख लीजिए उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ, जिनको डराया गया था। (73) हाँ, मगर जो अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे थे।[3] (74) ❖

और हमको नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने पुकारा, सो हम ख़ूब फ़रियाद सुनने वाले हैं। (75) और हमने उनको और उनके मानने वालों को बड़े भारी ग़म से नजात दी।[4] (76) और हमने उन्हीं की औलाद को बाक़ी रहने दिया।[5] (77) और हमने उनके लिए बाद आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (78) कि नूह पर सलाम हो आ़लम वालों में। (79) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (80) बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। (81) फिर हमने दूसरे लोगों को (यानी काफ़िरों को) डूबो दिया। (82) और नूह (अ़लैहिस्सलाम) के तरीक़े वालों में से इब्राहीम भी थे। (83) जबकि वह अपने रब की तरफ़ साफ़ दिल से मुतवज्जह हुए।[6] (84) जबकि उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम किस (वाहियात) चीज़ की इबादत किया करते हो। (85) क्या झूठ-मूठ के माबूदों को अल्लाह के सिवा चाहते हो? (86) तो तुम्हारा रब्बुल आ़लमीन के साथ क्या ख़्याल है? (87) सो इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने सितारों को एक निगाह भर कर देखा (88) और कह दिया कि मैं बीमार होने को हूँ।[7] (89) ग़रज़ वे लोग उनको छोड़कर चले गए। (90) तो यह उनके बुतों में जा घुसे और कहने लगे कि क्या तुम खाते नहीं हो? (91) तुमको क्या हुआ तुम बोलते भी नहीं हो? (92) फिर उनपर ताक़त के साथ जा पड़े और मारने लगे। (93) सो वे लोग

---

1. यानी उसके बाद भी वहीं पर हमेशा रहना होगा।
2. यानी शौक़ और रग़बत से उनके बेराही के रास्ते पर चलते थे।
3. यानी ईमान वाले बन्दे।
4. कि तूफ़ान से कुफ़्फ़ार को ग़र्क़ कर दिया और उनको और उनके मानने वालों को बचा लिया।
5. यानी और किसी की नस्ल नहीं चली।
6. साफ़ दिल का मतलब यह है कि बुरे अ़क़ीदों और रियाकारी वग़ैरह से पाक था। जिसका हासिल ख़ालिस तौहीद और कामिल इख़्लास है।
7. यह सितारों को देखना धोखे में डालने और हालत छुपाने के लिए था। कि वे तो इस वजह से कि सितारों को हवादिस में तसर्रुफ़ करने वाला समझते थे, यूँ समझे कि उनको सितारों का क़ायदा अता होगा, जिससे सितारों की रफ़्तार को देखकर उनको मालूम हो गया कि मैं थोड़ी देर में बीमार हो जाऊँगा, और चूँकि वे सितारों के मोतक़िद थे इसलिए इसरार नहीं किया।

यज़िफ़्फ़ून (94) क़ा-ल अ-तअ़्बुदू-न मा तन्हितून (95) वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् व मा तअ़्मलून (96) क़ालुब्नू लहू बुन्यानन् फ़-अल्क़ूहु फ़िल्-जहीम (97) फ़-अरादू बिही कैदन् फ़-जअ़ल्नाहुमुल्-अस्-फ़लीन (98) व क़ा-ल इन्नी ज़ाहिबुन् इला रब्बी स-यह्दीन (99) रब्बि हब् ली मिनस्सालिहीन (100) फ़-बश्शर्नाहु बिग़ुलामिन् हलीम (101) फ़-लम्मा ब-ल-ग़ म-अ़हुस्सअ़्-य क़ा-ल या बुनय्-य इन्नी अरा फ़िल्-मनामि अन्नी अज़्बहु-क फ़न्ज़ुर् माज़ा तरा, क़ा-ल या अ-बतिफ़्अ़ल् मा तुअ़्मरु, स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु मिनस्साबिरीन (102) फ़-लम्मा अस्-लमा व तल्लहू लिल्जबीन (103) व नादैनाहु अंय्या इब्राहीम (104) क़द् सद्दक़्तर्-रुअ्या इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (105) इन्-न हाज़ा ल-हुवल् बलाउल्-मुबीन (106) व फ़दैनाहु बिज़िब्हिन् अ़ज़ीम (107) व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन (108) सलामुन् अ़ला इब्राहीम (109) कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (110) इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन (111) व बश्शर्नाहु बि-इस्हा-क़ नबिय्यम् मिनस्-सालिहीन (112) व बारक्ना अ़लैहि व अ़ला इस्हा-क़, व मिन् ज़ुर्रिय्यतिहिमा मुह्सिनुंव्-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही मुबीन (113) ❖

व ल-क़द् मनन्ना अ़ला मूसा व हारून (114) व नज्जैनाहुमा व क़ौमहुमा मिनल् कर्बिल्-अ़ज़ीम (115) व नसर्नाहुम् फ़कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (116) व आतैनाहुमल् किताबल्-मुस्तबीन (117) व हदैनाहुमस्सिरातल् मुस्तक़ीम (118) व तरक्ना अ़लैहिमा

ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَأَقْبَلُوْٓا إِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾ قَالَ أَتَعْبُدُوْنَ مَا
تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا
فَأَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾ فَأَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْأَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾
وَقَالَ إِنِّيْ ذَاهِبٌ إِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ
يٰبُنَيَّ إِنِّيْ أَرٰى فِي الْمَنَامِ أَنِّيْ أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ۚ قَالَ
يٰٓأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِيْٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾
فَلَمَّآ أَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ أَنْ يّٰٓإِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ
صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ هٰذَا لَهُوَ
الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي
الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى إِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾
إِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ بِإِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى إِسْحٰقَ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ
وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ ع وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾
وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا
هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا

उनके पास दौड़ते हुए आए। **(94)** इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया, क्या तुम उन चीज़ों को पूजते हो जिनको खुद तराशते हो। **(95)** हालाँकि तुमको और तुम्हारी उन बनाई हुई चीज़ों को अल्लाह ही ने पैदा किया है। **(96)** वे लोग कहने लगे कि इब्राहीम के लिए एक आतिशख़ाना "यानी आग का घर" तामीर करो और उसको दहकती आग में डाल दो। **(97)** ग़रज़ उन लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई करना चाहा था, सो हमने उन्हीं को नीचा दिखाया। **(98)** और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) कहने लगे कि मैं तो अपने रब की तरफ़ चला जाता हूँ वह मुझको (अच्छी जगह) पहुँचा ही देगा।[1] **(99)** ऐ मेरे रब! मुझको एक नेक फ़रज़न्द दे। **(100)** सो हमने उनको एक हलीमुल-मीज़ाज "यानी बुर्दबार और नरम मिज़ाज वाले" फ़रज़न्द की ख़ुशख़बरी दी। **(101)** सो जब वह लड़का ऐसी उम्र को पहुँचा कि इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के साथ चलने-फिरने लगा, तो इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि बेटा! मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुमको (अल्लाह के हुक्म से) ज़िब्ह कर रहा हूँ, सो तुम भी सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है? वह बोले कि अब्बा जान! आपको जो हुक्म हुआ है आप (बिला झिझक) कीजिए, इन्शा-अल्लाह आप मुझको सहार करने वालों में से पाएँगे।[2] **(102)** ग़रज़ जब दोनों ने (ख़ुदा के हुक्म को) तस्लीम कर लिया और बाप ने बेटे को (ज़िब्ह करने के लिए) करवट पर लिटा दिया **(103)** और (चाहते थे कि गला काट डालें, उस वक़्त) हमने उनको आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! (शाबाश!) **(104)** तुमने ख़्वाब को सच कर दिखाया। (वह वक़्त भी अ़जीब था), हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। **(105)** हक़ीक़त में यह था भी बड़ा इम्तिहान।[3] **(106)** और हमने एक बड़ा ज़बीहा "यानी क़ुरबानी का जानवर" उसके बदले में दे दिया।[4] **(107)** और हमने पीछे आने वालों में यह बात उनके लिए रहने दी **(108)** कि इब्राहीम पर सलाम हो। **(109)** हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही बदला दिया करते हैं।[5] **(110)** बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे। **(111)** और हमने (एक इनाम उनपर यह किया कि) उनको इसहाक़ (अ़लैहिस्सलाम) की ख़ुशख़बरी दी कि नबी और नेक-बख़्तों में से होंगे। **(112)** और हमने इब्राहीम पर और इसहाक़ पर बरकतें नाज़िल कीं और (फिर आगे) उन दोनों की नस्ल में बाज़े अच्छे भी हैं और बाज़े ऐसे भी जो (बुराइयाँ करके) खुले तौर पर अपना नुक़सान कर रहे हैं।[6] **(113)** ❖

और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और हारून पर भी एहसान किया। **(114)** और हमने उन दोनों को और उनकी क़ौम को बड़े ग़म से[7] नजात दी। **(115)** और हमने उन सबकी (फ़िरऔन के मुक़ाबले में) मदद की, सो यही लोग ग़ालिब आए।[8] **(116)** और हमने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। **(117)** और हमने उन

---

1. चुनाँचे मुल्क शाम में जा पहुँचे।
2. इसमें इख़्तिलाफ़ हुआ है कि ज़िब्ह होने वाले इसमाईल अ़लैहिस्सलाम थे या इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम, दोनों तरफ़ की रिवायतों पर कलाम किया गया है। आयत के मज़मून से ज़ाहिरी तौर पर इसमाईल अ़लैहिस्सलाम मालूम होते हैं।
3. जिसको सिवाय कामिल मुख़्लिस के दूसरा बरदाश्त नहीं कर सकता।
4. "एक बड़ा क़ुरबानी का जानवर" के मुतैयन करने में भी कलाम है। बाज़ ने कहा है कि मामूली दुंबा था, और अ़ज़ीम 'मोटा-ताज़ा' होने के मायने में है, और बाज़ ने कहा है कि जन्नत से भेजा गया था और अ़ज़ीम 'बड़े रुतबे वाले' के मायने में है। और जब हज्रे अस्वद वग़ैरह का जन्नत से आना साबित है तो एक हैवान का आना क्या बईद है।
5. कि उनको दुआ़ व सलामती की ख़ुशख़बरी का महल (स्थान) बनाते हैं।
6. इसमें इस बात का इज़हार हो गया कि उसूल (यानी बड़ों और बाप-दादा) का नेक होना उनकी नस्ल के काम नहीं आ सकता जबकि वे खुद ईमान से महरूम हों। इसमें यहूद के आ़लिमों के फ़ख़्र करने का ख़ात्मा कर दिया।
7. वह ग़म उनको फ़िरऔन की तरफ़ से तकलीफ़ पहुँचना था।
8. फ़िरऔन ग़र्क़ कर दिया गया और ये हुकूमत वाले हो गए।

फ़िल्-आख़िरीन **(119)** सलामुन् अ़ला मूसा व हारून **(120)** इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन **(121)** इन्नहुमा मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन **(122)** व इन्-न इल्या-स लमिनल् -मुर्-सलीन **(123)** इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अला तत्तक़ून **(124)** अतद्अू-न बअ्लंव्-व त-ज़रू-न अह्स-नल्-ख़ालिक़ीन **(125)** अल्ला-ह रब्बकुम् व रब्-ब आबा-इकुमुल् अव्वलीन **(126)** फ़-कज़्ज़बूहु फ़-इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून **(127)** इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन **(128)** व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन **(129)** सलामुन् अ़ला इल्यासीन **(130)** इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन **(131)** इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन **(132)** व इन्-न लूतल्-लमिनल्- मुर्-सलीन **(133)** इज़् नज्जैनाहु व अह्लहू अज्मअ़ीन **(134)** इल्ला अ़जूज़न् फ़िल्-ग़ाबिरीन **(135)** सुम्-म दम्मर्नल्- आख़रीन **(136)** व इन्नकुम् ल-तमुर्रू-न अ़लैहिम् मुस्बिहीन **(137)** व बिल्लैलि, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(138)** ❖

व इन्-न यूनु-स लमिनल्-मुर्-सलीन **(139)** इज़् अ-ब-क़ इलल्-फ़ुल्किल्-मश्हून **(140)** फ़-सा-ह-म फ़का-न मिनल्-मुद्-हज़ीन **(141)** फ़ल्त-क़-महुल्-हूतु व हु-व मुलीम **(142)** फ़-लौ ला अन्नू का-न मिनल्-मुसब्बिहीन **(143)** ल-लबि-स फ़ी बत्निही इला यौमि युब्असून ● **(144)** फ़-नबज़्नाहु बिल्अ़रा-इ व हु-व सक़ीम **(145)** व अम्बत्ना अ़लैहि श-ज-रतम् मिंय्यक़्तीन **(146)** व अर्सल्नाहु इला मि-अति अल्फ़िन् औ यज़ीदून **(147)** फ़-आमनू फ़-मत्तअ़्नाहुम् इला हीन **(148)** फ़स्तफ़्तिहिम् अ-लिरब्बिकल्-बनातु व

الصّٰفّٰت ٣٧ ٨٠٧ ومالي ٢٣

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ﴿١١٩﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ
مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢١﴾ إِنَّهُمَا مِنْ
عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٢﴾ وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ
أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾ أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ﴿١٢٥﴾ اللَّهَ
رَبَّكُمْ وَرَبَّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٢٧﴾
إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٩﴾
سَلَامٌ عَلَىٰ إِلْ يَاسِينَ ﴿١٣٠﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾ إِنَّهُ
مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾ وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾ إِذْ
نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ
دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٦﴾ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾ وَبِاللَّيْلِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾ وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾ إِذْ أَبَقَ إِلَى
الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ
الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ
فِي بَطْنِهِ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿١٤٥﴾
وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِنْ يَقْطِينٍ ﴿١٤٦﴾ وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ
أَوْ يَزِيدُونَ ﴿١٤٧﴾ فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١٤٨﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ

منزل

दोनों को सीधे रास्ते पर क़ायम रखा। (118) और हमने उन दोनों के लिए पीछे "यानी बाद में" आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (119) कि मूसा और हारून (अ़लैहिमस्सलाम) पर सलाम हो। (120) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (121) बेशक वे दोनों हमारे (कामिल) ईमान वाले बन्दों में से थे। (122) और इलियास (अ़लैहिस्सलाम) भी (बनी इसराईल के) पैग़म्बरों में से थे। (123) जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि क्या तुम ख़ुदा से डरते नहीं? (124) क्या तुम बअ़ल को पूजते हो, और उसको छोड़े बैठे हो जो सबसे बढ़कर बनाने वाला है (125) (और वह) माबूद बरहक़ है। तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादाओं का भी रब है। (126) सो उन लोगों ने उनको झुठलाया, सो वे लोग पकड़े जाएँगे। (127) मगर जो अल्लाह के ख़ालिस बन्दे थे। (128) और हमने इलियास के लिए पीछे आने वाले लोगों में यह बात रहने दी (129) कि इलियासीन पर सलाम हो। (130) हम मुख़्लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। (131) बेशक वह हमारे (कामिल) ईमान वाले बन्दों में से थे। (132) और बेशक लूत (अ़लैहिस्सलाम) भी पैग़म्बरों में से थे। (133) जबकि हमने उनको और उनके मुताल्लिक़ीन को सबको नजात दी (134) सिवाय उस बुढ़िया (यानी उनकी बीवी) के, कि वह रह जाने वालों में रह गई। (135) फिर हमने और सबको हलाक कर दिया।[1] (136) और तुम तो उन (के घरों और ठिकानों) पर सुबह होते और रात में गुज़रा करते हो[2] (137) तो क्या फिर भी नहीं समझते हो? (138) ❖

और बेशक यूनुस (अ़लैहिस्सलाम) भी पैग़म्बरों में से थे। (139) जबकि भाग कर भरी हुई कश्ती के पास पहुँचे। (140) सो यूनुस क़ुरआ़ में शरीक हुए तो यही मुल्ज़िम ठहरे। (141) फिर उनको मछली ने (पूरा-का-पूरा) निगल लिया और यह अपने को मलामत कर रहे थे। (142) सो अगर वह (उस वक़्त) तस्बीह करने वालों में से न होते (143) तो क़ियामत तक उसी "यानी मछली" के पेट में रहते।[3] ● (144) सो हमने उनको एक मैदान में डाल दिया, और वह उस वक़्त कमज़ोर थे। (145) और हमने उनपर एक बेलदार पेड़ भी उगा दिया था। (146) और हमने उनको एक लाख या उससे भी ज़्यादा आदमियों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा था (147) फिर वे लोग ईमान ले आए थे, तो हमने उनको एक ज़माने तक ऐश दिया।[4] (148)

---

1. यानी जो लूत अ़लैहिस्सलाम और उनके मुताल्लिक़ीन के अ़लावा थे।

2. सुबह और रात का ज़िक्र इसलिए किया कि अ़रब में अक्सर आ़दत रात को सुबह तक चलने की है।

3. मतलब यह कि पेट से निकलना मयस्सर न होता।

4. ऊपर के क़िस्सों से उन सब अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का जिनकी नुबुव्वत अ़क़्लन साबित है, मोमिन, ख़ुदा को एक मानने वाला, आ़बिद, मुख़्लिस और तौहीद व ईमान की तरफ़ दावत देने वाला होना साबित होता है। इससे पहली सूरः के शुरू में तौहीद की अ़क़्ली दलीलें ज़िक्र हो चुकी हैं। आगे उन अ़क़्ली और नक़्ली दलीलों से शिर्क व कुफ़्र को बातिल होना बयान फ़रमाते हैं। यहाँ दलीले अ़क़्ली के ज़रिए साबित करना तो ज़ाहिर है, और दलीले नक़्ली से इस तरह कि नुबुव्वत के लिए सच्चा होना लाज़िम है, पस तौहीद का हक़ होना ज़रूरी और शिर्क का बातिल होना उसके लवाज़िम में से होना ज़ाहिर है।

लहुमुल्-बनून **(149)** अम् ख़लक़्नल्-मलाइ-क-त इनासंव्-व हुम् शाहिदून **(150)** अला इन्नहुम् मिन् इफ़्किहिम् ल-यक़ूलून **(151)** व-लदल्लाहु व इन्नहुम् ल-काज़िबून **(152)** अस्त-फ़ल्-बनाति अ़लल्-बनीन **(153)** मा लकुम्, कै-फ़ तह्कुमून **(154)** अ-फ़ला तज़क्करून **(155)** अम् लकुम् सुल्तानुम्-मुबीन **(156)** फ़अ्तू बिकिताबिकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(157)** व ज-अ़लू बैनहू व बैनल्-जिन्नति न-सबन्, व ल-क़द् अ़लि-मतिल्-जिन्नतु इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून **(158)** सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून **(159)** इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन **(160)** फ़-इन्नकुम् व मा तअ्बुदून **(161)** मा अन्तुम् अ़लैहि बिफ़ातिनीन **(162)** इल्ला मन् हु-व सालिल्-जहीम **(163)** व मा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुम् मअ्लूम **(164)** व इन्ना ल-नह्नुस्-साफ़्फ़ून **(165)** व इन्ना ल-नह्नुल्-मुसब्बिहून **(166)** व इन् कानू ल-यक़ूलून **(167)** लौ अन्-न अ़िन्-दना ज़िक्रम् मिनल्-अव्वलीन **(168)** लकुन्ना अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन **(169)** फ़-क-फ़रू बिही फ़सौ-फ़ यअ्लमून **(170)** व ल-क़द् स-बक़त् कलि-मतुना लिअ़िबादिनल्-मुर्-सलीन **(171)** इन्नहुम् लहुमुल्-मन्सूरून **(172)** व इन्-न जुन्दना लहुमुल्-ग़ालिबून **(173)** फ़-तवल्-ल अ़न्हुम् हत्ता हीन **(174)** व अब्सिर्हुम् फ़सौ-फ़ युब्सिरून **(175)** अ-फ़ बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ्जिलून **(176)** फ़-इज़ा न-ज़-ल बिसा-हतिहिम् फ़सा-अ सबाहुल्-मुन्ज़रीन **(177)** व तवल्-ल अ़न्हुम् हत्ता हीन **(178)** व अब्सिर् फ़सौ-फ़ युब्सिरून **(179)** सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल्-अ़िज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ून **(180)** व सलामुन्

الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ۝ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ
شٰهِدُوْنَ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۝ وَلَدَ اللّٰهُ وَاِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۝ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ۝ مَا لَكُمْ كَيْفَ
تَحْكُمُوْنَ ۝ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝ فَاْتُوْا
بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا
وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۝ مَآ اَنْتُمْ
عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۝ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ۝ وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ
مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۝ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ۝ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ۝
وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ۝ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝
لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝
وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ۝
وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ وَّاَبْصِرْهُمْ
فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۝ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ
فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ وَّاَبْصِرْ
فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۝ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝

सो उन लोगों से पूछिए कि क्या अल्लाह तआ़ला के लिए तो बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे?[1] **(149)** हाँ, क्या हमने फ़रिश्तों को औरत बनाया है? और वे (उनके बनाए जाने के वक़्त) देख रहे थे?[2] **(150)** ख़ूब सुन लो कि वे लोग अपनी तरफ़ से बात बनाकर ऐसा कहते हैं **(151)** कि (नऊज़ु बिल्लाह) अल्लाह औलाद वाला है, और वे यक़ीनन (बिलकुल) झूठे हैं। **(152)** क्या अल्लाह तआ़ला ने बेटों के मुक़ाबले में बेटियाँ ज़्यादा पसन्द कीं? **(153)** तुमको क्या हो गया, तुम कैसा (बेहूदा) हुक्म लगाते हो? **(154)** फिर क्या तुम (अ़क़्ल और) सोच से काम नहीं लेते हो। **(155)** हाँ, क्या तुम्हारे पास (इसपर) कोई वाज़ेह दलील मौजूद है? **(156)** सो तुम अगर (इसमें) सच्चे हो तो अपनी वह किताब पेश करो।[3] **(157)** और उन लोगों ने अल्लाह में और जिन्नात में (भी) रिश्तेदारी क़रार दी है, और (जिस-जिसको ये लोग ख़ुदा का शरीक ठहरा रहे हैं उनकी तो यह कैफ़ियत है कि उनमें जो) जिन्नात हैं, ख़ुद उनका यह अ़क़ीदा है कि (उनमें जो काफ़िर हैं) वे (अ़ज़ाब में) गिरफ़्तार होंगे। **(158)** अल्लाह उन बातों से पाक है जो-जो ये बयान करते हैं, **(159)** मगर जो अल्लाह तआ़ला के ख़ास (ईमान वाले) बन्दे हैं। **(160)** सो तुम और तुम्हारे सारे माबूद, **(161)** अल्लाह से किसी को नहीं फेर सकते, **(162)** मगर उसी को जो कि (ख़ुदा तआ़ला के इल्म में) जहन्नम में जाने वाला है। **(163)** और हममें से हर एक का एक तयशुदा दर्जा है।[4] **(164)** और (ख़ुदा के हुज़ूर में हुक्म सुनने के वक़्त या इबादत के वक़्त) हम सफ़ बाँधे खड़े होते हैं। **(165)** और हम ख़ुदा की पाकी बयान करने में भी लगे रहते हैं। **(166)** और ये लोग कहा करते थे[5] **(167)** कि अगर हमारे पास कोई नसीहत (की किताब) पहले लोगों की (किताबों के) तौर पर आती **(168)** तो हम अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे होते। **(169)** फिर ये लोग उसका इनकार करने लगे, सो (ख़ैर) अब उनको (उसका अन्जाम) मालूम हुआ जाता है। **(170)** और हमारे ख़ास बन्दों यानी पैग़म्बरों के लिए हमारा यह क़ौल पहले ही से मुक़र्रर हो चुका है **(171)** कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएँगे। **(172)** और (हमारा तो क़ायदा आ़म है कि) हमारा ही लश्कर ग़ालिब रहता है।[6] **(173)** तो आप (तसल्ली रखिए और) थोड़े ज़माने तक (सब्र कीजिए और उनकी मुख़ालफ़त और तकलीफ़ देने का) का ख़्याल न कीजिए। **(174)** और (ज़रा) उनको देखते रहिए, सो जल्द ही ये भी देख लेंगे। **(175)** क्या हमारे अ़ज़ाब का तक़ाज़ा कर रहे हैं? **(176)** सो वह (अ़ज़ाब) जब उनके सामने आ नाज़िल होगा, सो वह दिन उन लोगों का जिनको डराया जा चुका था बहुत ही बुरा होगा (टल न सकेगा)। **(177)** और आप थोड़े ज़माने तक उनका ख़्याल न कीजिए। **(178)** और देखते रहिए। सो जल्दी ही ये लोग भी देख लेंगे। **(179)** आपका परवर्दिगार जो बड़ी अ़ज़्मत वाला है, उन बातों से पाक है जो ये (काफ़िर) बयान करते हैं। **(180)**

1. यानी जब अपने लिए बेटे पसन्द करते हो तो ज़िक्र हुए अ़क़ीदे में ख़ुदा के लिए बेटियाँ कैसे तजवीज़ करते हो?
2. यानी बिना दलील के फ़रिश्तों पर मुअन्नस **(Female)** होने की तोहमत रखते हैं।
3. हासिल मक़ाम का यह हुआ कि जिसके तुम मुद्दई हो उसमें तीन तो ख़ामियाँ हैं और दलील एक भी नहीं, न मुशाहदा और न अ़क़्ल और न नक़्ल।
4. यानी उनमें जो फ़रिश्ते हैं उनका यह कहना है कि हम तो सिर्फ़ बन्दे हैं। चुनाँचे जो ख़िदमत हमको सुपुर्द है उसको पूरा करने में लगे रहते हैं, अपनी राय से कुछ नहीं कर सकते।
5. यानी अ़रब के काफ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नबी होने की हैसियत से ज़ाहिर होने से पहले कहा करते थे।
6. अहले हक़ के ग़ालिब होने का मतलब यह है कि उसका असली तक़ाज़ा यही है। पस आरज़ी तौर पर मग़लूब होना आज़माइश की हिक्मत से उसके ख़िलाफ़ नहीं।

अ़लल्-मुर्-सलीन (181) वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन (182) ❖

38 सूरतु सॉद 38

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3107 अक्षर, 738 शब्द, 88 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सॉद् वल्-क़ुर्आनि ज़िज़्ज़िक्र (1) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी अिज़्ज़तिंव्-व शिक़ाक़ (2) कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निनन् फ़नादव्-व ला-त ही-न मनास (3) व अ़जिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् व क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा साहिरुन् कज़्ज़ाब (4) अ-ज-अ़लल् आलि-ह-त इलाहंव्-वाहिदन् इन्-न हाज़ा लशैउन् अुजाब (5) वन्त-लक़ल्-म-ल-उ मिन्हुम् अनिम्शू वस्बिरू अ़ला आलि-हतिकुम् इन्-न हाज़ा लशैउंय्-युराद (6) मा समिअ़्ना बिहाज़ा फ़िल्-मिल्लतिल्-आख़िरति इन् हाज़ा इल्लख़्तिलाक़ (7) अ-उन्ज़ि-ल अ़लैहिज़्ज़िक्रु मिम्बैनिना, बल् हुम् फ़ी शक्किम् मिन् ज़िक्री बल् लम्मा यज़ूक़ू अ़ज़ाब (8) अम् अिन्दहुम् ख़ज़ा-इनु रह्मति रब्बिकल्-अ़ज़ीज़िल्-वह्हाब (9) अम् लहुम् मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, फ़ल्यर्तक़ू फ़िल्-अस्बाब (10) जुन्दुम्-मा हुनालि-क मह्ज़ूमुम् मिनल्-अह्ज़ाब (11) कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व आ़दुंव्-व फ़िर्औनु ज़ुल्-औताद (12) व समूदु व क़ौमु लूतिंव्-व अस्हाबुल्-ऐ-कति, उलाइ-कल्-अह्ज़ाब (13) इन् कुल्लुन् इल्ला कज़्ज़-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ अिक़ाब (14) ❖

ص ٣٨ ٤٠٩ ومالي ٢٣

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اٰيَاتُهَا ٨٨ رُكُوْعَاتُهَا ٥

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾ وَ

عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ

مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ﴿٦﴾

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿٧﴾ ءَاُنْزِلَ

عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ بَلْ لَّمَّا

يَذُوْقُوْا عَذَابِ ﴿٨﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ﴿٩﴾

اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿١٠﴾

جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ﴿١٢﴾ وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ

اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٣﴾ اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾ وَ

مَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوْا

رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ

منزل ٦

और सलाम हो पैग़म्बरों पर। (181) और तमाम की तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम आ़लम का परवर्दिगार है। (182) ❖

38 सूरः सॉद 38

सूरः सॉद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 88 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

सॉद। क़सम है क़ुरआन की जो नसीहत से पुर है।[1] (1) बल्कि (ख़ुद) ये कुफ़्फ़ार (ही) तअ़स्सुब और (हक़ की) मुख़ालफ़त करते हैं। (2) उनसे पहले बहुत-सी उम्मतों को हम (अ़ज़ाब से) हलाक कर चुके हैं, सो उन्होंने (हलाकत के वक़्त) बड़ी हाय-पुकार की, और वह वक़्त छुटकारे और नजात का न था। (3) और उन (क़ुरैश के) काफ़िरों ने इस बात पर ताज्जुब किया कि उनके पास उन (ही) में से एक (पैग़म्बर) डराने वाला आ गया, और कहने लगे कि यह (मोजिज़ों में) जादू और (नुबुव्वत के दावे में) झूठा है। (4) (और) क्या (यह शख़्स सच्चा हो सकता है कि) उसने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद रहने दिया, वाक़ई यह बहुत अ़जीब बात है। (5) और (तौहीद का मज़मून सुनकर) उन कुफ़्फ़ार में के सरदार यह कहते हुए चले कि (यहाँ से) चलो और अपने माबूदों (की इबादत पर) क़ायम रहो, यह कोई मतलब की बात है। (6) हमने तो यह बात (अपने) पिछले मज़हब में नहीं सुनी,[2] हो न हो यह (इस शख़्स की) घड़त है। (7) क्या हम सबमें से उसी शख़्स पर अल्लाह का कलाम नाज़िल किया गया? बल्कि ये लोग (ख़ुद) मेरी वह्य की तरफ़ से शक (यानी इनकार) में हैं।[3] बल्कि (असल वजह यह है कि) उन्होंने अभी तक मेरे अ़ज़ाब का मज़ा नहीं चखा। (8) क्या उन लोगों के पास आपके परवर्दिगार ज़बरदस्त, फ़य्याज़ की रहमत के ख़ज़ाने हैं? (जिसमें नुबुव्वत भी दाख़िल है)।[4] (9) या क्या उनको आसमान व ज़मीन और जो चीज़ें उनके दरमियान हैं उनका इख़्तियार हासिल है? (अगर इख़्तियार है) तो उनको चाहिए कि सीढ़ियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ जाएँ। (10) इस मक़ाम पर[5] उन लोगों की यूँ ही एक भीड़ है, ये सब (रसूलों के मुख़ालिफ़ीन) गिरोहों में से हैं जो शिकस्त दिए जाएँगे। (11) उनसे पहले भी नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम और आ़द और फ़िरऔ़न ने जिस (की हुकूमत) के खूँटे गड़ गए थे[6] (12) और समूद ने और क़ौमे लूत और ऐका वालों ने झुठलाया था (और) वह गिरोह यही लोग हैं। (13) उन सबने सिर्फ़ रसूलों को झुठलाया था, सो मेरा अ़ज़ाब (उनपर) आ पड़ा। (14) ❖

और ये लोग बस एक ज़ोर की चीख़ के मुन्तज़िर हैं, जिसमें दम लेने की गुन्जाइश न होगी (इससे क़ियामत मुराद है)। (15) और ये लोग कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमारा हिस्सा हमको हिसाब के दिन से पहले दे दे।[7] (16) आप उन लोगों की बातों पर सब्र कीजिए। और हमारे बन्दे दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को याद

---

1. इब्तिदाई आयतों के नाज़िल होने का सबब यह है कि अबू तालिब की बीमारी में क़ुरैश उनके पास आए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी तशरीफ़ लाए। क़ुरैश ने उनसे आपकी शिकायत की, उन्होंने आपसे पूछा कि आप अपनी क़ौम से क्या बात चाहते हैं? आपने फ़रमाया सिर्फ़ एक कलिमा चाहता हूँ जिससे तमाम अ़रब उनका फ़रमाँबरदार हो जाए, और ग़ैर-अ़रब उनको जिज़्या यानी टैक्स देने लगे। उन्होंने पूछा वह एक कलिमा कौन-सा है? आपने फ़रमाया "ला इला-ह इल्लल्लाहु"। कहने लगे कि लो सब माबूदों का इनकार करके एक ही माबूद क़रार दे दिया, यह अ़जीब बात है। उसपर 'सॉद' से 'बल लम्मा यज़ूक़ू अ़ज़ाब' तक नाज़िल हुआ।
2. पिछले मज़हब का मतलब यह कि दुनिया में बहुत-से तरीक़े के लोग हुए। सबसे पीछे हम मौजूद हैं और हक़ पर हैं, सो हमने इस तरीक़े के बुज़ुर्गों से कभी यह बात नहीं सुनी। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 820 पर)

व मा यन्जुरु हा-उला-इ इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतम् मा लहा मिन् फ़वाक़ (15) व क़ालू रब्बना अ़ज्जिल्-लना कित्तना क़ब्-ल यौमिल्-हिसाब (16) इस्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न वज़्कुर् अ़ब्दना दावू-द ज़ल्ऐदि इन्नहू अव्वाब (17) इन्ना सख़्ख़र्नल्-जिबा-ल म-अ़हू युसब्बिह्-न बिल्-अशिय्यि वल्-इश्राक़ (18) वत्तै-र मह्शू-रतन्, कुल्लुल्लहू अव्वाब (19) व श-दद्ना मुल्कहू व आतैनाहुल्-हिक्म-त व फ़स्लल्-ख़िताब (20) व हल् अता-क न-बउल्-ख़स्मि ✣ इज़् तसव्वरुल्-मिह्राब (21) इज़् द-ख़लू अ़ला दावू-द फ़-फ़ज़ि-अ़ मिन्हुम् क़ालू ला तख़फ़् ख़स्मानि बग़ा बअ़्ज़ुना अ़ला बअ़्ज़िन् फ़ह्कुम् बैनना बिल्हक़्क़ि व ला तुश्तित् वह्दिना इला सवा-इस्सिरात (22) इन्-न हाज़ा अख़ी, लहू तिस्अुंव्-व तिस्अू-न नअ्-जतंव्-व लि-य नअ्-जतुंव्-वाहि-दतुन्, फ़क़ा-ल अक्फ़िल्नीहा व अ़ज़्ज़नी फ़िल्-ख़िताब (23) क़ा-ल ल-क़द् ज़-ल-म-क बिसुआलि-नअ्जति-क इला निआ़जिही, व इन्-न कसीरम् मिनल्-ख़ु-लता-इ ल-यब्ग़ी बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िन् इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व क़लीलुम्-मा हुम् व ज़न्-न दावूदु अन्नमा फ़तन्नाहु फ़स्तग़फ़-र रब्बहू व ख़र्-र राकिअंव्-व अनाब ❑ (24) फ़-ग़फ़र्ना लहू ज़ालि-क, व इन्-न लहू अ़िन्दना ल-ज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब (25) या दावूदु इन्ना जअ़ल्ना-क ख़ली-फ़तन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ह्कुम् बैनन्नासि बिल्हक़्क़ि व ला तत्तबिअ़िल्हवा फ़युज़िल्ल-क अ़न् सबीलिल्लाहि, इन्नल्लज़ी-न यज़िल्लू-न अ़न् सबीलिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुम्-बिमा नसू यौमल्-हिसाब (26) ❖

व मा ख़लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा बातिलन्, ज़ालि-क ज़न्नुल्लज़ी-न

واذكر عبدنا داود ذا الايد انه اواب ﴿١٧﴾ انا سخرنا الجبال معه
يسبحن بالعشي والاشراق ﴿١٨﴾ والطير محشورة كل له اواب ﴿١٩﴾ و
شددنا ملكه واتينه الحكمة وفصل الخطاب ﴿٢٠﴾ وهل اتىك
نبؤا الخصم اذ تسوروا المحراب ﴿٢١﴾ اذ دخلوا على داود ففزع منهم
قالوا لا تخف خصمن بغى بعضنا على بعض فاحكم بيننا بالحق
ولا تشطط واهدنا الى سواء الصراط ﴿٢٢﴾ ان هذا اخي له تسع و
تسعون نعجة ولي نعجة واحدة فقال اكفلنيها وعزني في
الخطاب ﴿٢٣﴾ قال لقد ظلمك بسؤال نعجتك الى نعاجه وان كثيرا
من الخلطاء ليبغي بعضهم على بعض الا الذين امنوا وعملوا
الصلحت وقليل ما هم وظن داود انما فتنه فاستغفر ربه و
خر راكعا واناب ﴿٢٤﴾ فغفرنا له ذلك وان له عندنا لزلفى و
حسن ماب ﴿٢٥﴾ يداود انا جعلنك خليفة في الارض فاحكم بين
الناس بالحق ولا تتبع الهوى فيضلك عن سبيل الله ان
الذين يضلون عن سبيل الله لهم عذاب شديد بما نسوا يوم
الحساب ﴿٢٦﴾ وما خلقنا السماء والارض وما بينهما باطلا ذلك ظن
الذين كفروا فويل للذين كفروا من النار ﴿٢٧﴾ ام نجعل الذين

कीजिए जो बड़ी क़ुव्वत (और हिम्मत) वाले थे। वह (ख़ुदा की तरफ़) बहुत रुजू होने वाले थे। **(17)** हमने पहाड़ों को हुक्म कर रखा था कि उनके साथ शाम और सुबह तस्बीह किया करें। **(18)** और (इसी तरह) परिन्दों को भी जो (तस्बीह के वक़्त उनके पास) जमा हो जाते थे, सब उनकी (तस्बीह की) वजह से ज़िक्र में मश्गूल रहते। **(19)** और हमने उनकी हुकूमत को बड़ी क़ुव्वत दी थी, और हमने उनको हिक्मत और फ़ैसला करने वाली तक़रीर अ़ता फ़रमाई थी। **(20)** और भला आपको उन मुक़द्दमे वालों की ख़बर भी पहुँची है, जबकि वे लोग (दाऊद के) इबादतख़ाने की दीवार फाँदकर दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) के पास आए। **(21)** तो वह (उनके इस तरह आने से) घबरा गए। वे लोग कहने लगे कि आप डरें नहीं, हम दो अहले मामला हैं, कि एक ने दूसरे पर (कुछ) ज़्यादती की है, सो आप हममें इन्साफ़ से फ़ैसला कर दीजिए और बेइन्साफ़ी न कीजिए, और हमको (मामले की) सीधी राह बता दीजिए। **(22)** (फिर एक शख़्स बोला, मुक़द्दमे की शक्ल यह है कि) यह शख़्स मेरा भाई है, इसके पास निन्नानवे दुंबियाँ हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, सो यह कहता है कि वह भी मुझको दे डाल, और बातचीत में मुझको दबा देता है। **(23)** दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा, यह जो तेरी दुंबी अपनी दुंबियों में मिलाने की दरख़्वास्त करता है तो वाक़ई तुझपर ज़ुल्म करता है, और अक्सर शरीकों (की आ़दत है कि) एक-दूसरे पर (यूँ ही) ज़्यादती किया करते हैं, मगर हाँ! जो लोग ईमान रखते हैं और नेक काम करते हैं, और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं। और दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को ख़्याल आया कि हमने उनका इम्तिहान किया है, सो उन्होंने अपने रब के सामने तौबा की और सज्दे में गिर पड़े और रुजू हुए।[1] ❑ **(24)** सो हमने उनको वह (मामला) माफ़ कर दिया और हमारे यहाँ उनके लिए (ख़ास) निकटता और (आला दर्जे की) नेक अन्जामी है। **(25)** ऐ दाऊद (अ़लैहिस्सलाम)! हमने तुमको ज़मीन पर हाकिम बनाया है, सो लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करते रहना, और आइन्दा भी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी मत करना। (अगर ऐसा करोगे तो) वह ख़ुदा के रास्ते से तुमको भटका देगी। (और) जो लोग ख़ुदा के रास्ते से भटकते हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब होगा, इस वजह से कि वे हिसाब के दिन को भूले रहे।[2] **(26)** ❖

और हमने आसमान व ज़मीन को और जो चीज़ें उनके दरमियान मौजूद हैं उनको हिक्मत से ख़ाली पैदा नहीं किया। यह (यानी उनका हिक्मत से ख़ाली होना) उन लोगों का ख़्याल है जो काफ़िर हैं, सो काफ़िरों के लिए (आख़िरत में) बड़ी ख़राबी है, यानी दोज़ख़। **(27)** हाँ, तो क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और

(पृष्ठ 818 का शेष) **3.** यानी असल नुबुव्वत के मसले ही के इनकारी हैं, ख़ास तौर पर इनसान के लिए। (यानी इनके ख़्याल के मुताबिक़ कोई इनसान नबी नहीं हो सकता)।

4. यानी नुबुव्वत एक अ़ज़ीम चीज़ है उसके दिए जाने के लिए बहुत ज़्यादा दबदबे वाला, सख़्त ग़ल्बे वाला और ख़ज़ानों का मालिक होना लाज़िम है। सो इस तरह अगर यह उनके इख़्तियार में होता तो उनको इस कहने की गुन्जाइश थी कि हमने बशर को नुबुव्वत नहीं दी, फिर वह नबी कैसे हो गया? या हमने फ़लाँ बशर को दी और फ़लाँ को नहीं दी। उस सूरत में यह कहना उनके लिए मुनासिब था।

5. यानी मक्का में।

6. यानी उसकी हुकूमत बहुत बड़ी और ज़बरदस्त थी।

7. मतलब यह कि क़ियामत नहीं है। और अगर है तो हमको अभी अ़ज़ाब चाहिए। जब अ़ज़ाब नहीं होता तो मालूम हुआ कि क़ियामत न आएगी। ख़ुदा की पनाह ये कैसे जाहिल थे।

1. उनकी हरकतों और अक़्वाल का मजमूआ निहायत दर्जे की गुस्ताख़ी और बेअदबी है। पस इसमें दाऊद अ़लैहिस्सलाम के संयम और सब्र का इम्तिहान हो गया, कि आया हुकूमत के ज़ोर में इन लगातार गुस्ताख़ियों पर पकड़ करते हैं या नुबुव्वत के नूर के ग़ल्बे की वजह से माफ़ फ़रमाते हैं। चुनाँचे इम्तिहान में साबिर साबित हुए और मुक़द्दमे को निहायत ठन्डे दिल से सुना और फ़ैसला फ़रमाया। लेकिन अम्बिया का अ़ज़ीम रुतबा और इन्साफ़ की ऊँची शान जिस बुलन्द दर्जे को चाहती है उससे बज़ाहिर एक बात यह मामूली-सी बईद पेश आ गई कि **शरई** दलील के क़ायम हो जाने के बाद बजाय इसके कि सिर्फ़ ज़ालिम से यह ख़िताब फ़रमाते **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 822 पर)**

क-फ़रू फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिनन्नार (27) अम् नज्अ़लुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति कल्-मुफ़्सिदी-न फ़िल्अर्ज़ि अम् नज्अ़लुल्-मुत्तक़ी-न कल्फ़ुज्जार (28) किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क मुबारकुल्-लियद्-दब्बरू आयातिही व लि-य-तज़क्क-र उलुल्-अल्बाब (29) व व-हब्ना लिदावू-द सुलैमा-न, निअ्मल्-अ़ब्दु इन्नहू अव्वाब (30) इज़् अ़ुरि-ज़ अ़लैहि बिल्अ़शिय्यिस्-साफ़िनातुल्-जियाद (31) फ़क़ा-ल इन्नी अह्बब्तु हुब्बल्-ख़ैरि अ़न् ज़िक्रि रब्बी हत्ता तवारत् बिल्-हिजाब (32) रुद्दूहा अ़लय्-य फ़-तफ़ि-क़ मस्हम्-बिस्सूक़ि वल्-अअ़्नाक़ (33) व ल-क़द् फ़तन्ना सुलैमा-न व अल्क़ैना अ़ला कुर्सिय्यिही ज-सदन् सुम्-म अनाब (34) क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व हब् ली मुल्कल्-ला यम्बग़ी लि-अ-हदिम् मिम्बअ़्दी इन्न-क अन्तल्-वह्हाब (35) फ़-सख़्ख़र्ना लहुर्-री-ह तज्री बिअम्रिही रुख़ाअन् हैसु असाब (36) वश्शयाती-न कुल्-ल बन्नाइंव्-व ग़व्वास (37) व आख़री-न मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद (38) हाज़ा अ़ता-उना फ़म्नुन् औ अम्सिक् बिग़ैरि हिसाब (39) व इन्-न लहू अ़िन्दना ल-ज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब (40) ❖

वज़्कुर् अ़ब्दना अय्यू-ब ✣ इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनि-यश्शैतानु बिनुस्बिंव्-व अ़ज़ाब (41) उर्कुज़् बिरिज्लि-क हाज़ा मुग़्-त-सलुम् बारिदुंव्-व शराब (42) व व-हब्ना लहू अह्लहू व मिस्लहुम् म-अ़हुम् रह्म-तम्-मिन्ना व ज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब (43) व ख़ुज़् बि-यदि-क ज़िग़्सन् फ़ज़्रिब् बिही व ला तह्नस्, इन्ना वजद्नाहु साबिरन्, निअ्मल्-अ़ब्दु, इन्नहू अव्वाब (44) वज़्कुर् अ़िबा-दना इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब

امنوا وعملوا الصلحت كالمفسدين في الارض ام نجعل المتقين
كالفجار ۝ كتب انزلنه اليك مبرك ليدبروا ايته وليتذكر اولوا
الالباب ۝ ووهبنا لداود سليمن نعم العبد انه اواب ۝ اذ
عرض عليه بالعشي الصفنت الجياد ۝ فقال اني احببت حب
الخير عن ذكر ربي حتى توارت بالحجاب ۝ ردوها علي فطفق
مسحا بالسوق والاعناق ۝ ولقد فتنا سليمن والقينا على
كرسيه جسدا ثم اناب ۝ قال رب اغفر لي وهب لي ملكا لا
ينبغي لاحد من بعدي انك انت الوهاب ۝ فسخرنا له الريح
تجري بامره رخاء حيث اصاب ۝ والشيطين كل بناء و
غواص ۝ واخرين مقرنين في الاصفاد ۝ هذا عطاؤنا فامنن
او امسك بغير حساب ۝ وان له عندنا لزلفى وحسن ماب ۝
واذكر عبدنا ايوب اذ نادى ربه اني مسني الشيطن بنصب
وعذاب ۝ اركض برجلك هذا مغتسل بارد وشراب ۝ و
وهبنا له اهله ومثلهم معهم رحمة منا وذكرى لاولي الالباب ۝
وخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث انا وجدنه صابرا
نعم العبد انه اواب ۝ واذكر عبدنا ابرهيم واسحق ويعقوب

وقف لازم

अच्छे काम किए उनके बराबर उन्हें कर देंगे जो (कुफ़्र वग़ैरह करके) दुनिया में फ़साद करते फिरते हैं, या हम परहेज़गारों को बदकारों के बराबर कर देंगे? **(28)** यह एक बरकत वाली किताब है जिसको हमने आप पर इस वास्ते नाज़िल किया है ताकि लोग इसकी आयतों में ग़ौर करें और ताकि समझदार लोग नसीहत हासिल करें।[1] **(29)** और हमने दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को सुलैमान अ़ता किया, बहुत अच्छे बन्दे थे कि (ख़ुदा तआ़ला की तरफ़) बहुत रुजू होने वाले थे। **(30)** (चुनाँचे वह क़िस्सा उनका याद करने के क़ाबिल है) जबकि शाम के वक़्त उनके रू-ब-रू असील (और) उम्दा घोड़े पेश किए गए। **(31)** तो कहने लगे कि (अफ़सोस) मैं इस माल की मुहब्बत में (लगकर) अपने रब की याद से ग़ाफ़िल हो गया, यहाँ तक कि सूरज (मग़रिब के) पर्दे में छुप गया। **(32)** (फिर ख़ादिमों और नौकरों को हुक्म दिया कि) उन घोड़ों को ज़रा फिर मेरे सामने लाओ, सो उन्होंने उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर (तलवार से) हाथ साफ़ करना शुरू किया। **(33)** और हमने सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) को (एक और तरह से भी) इम्तिहान में डाला, और हमने उनके तख़्त पर (एक अधूरा) धड़ डाला, फ़िर उन्होंने (अल्लाह तआ़ला की तरफ़) रुजू किया। **(34)** दुआ़ माँगी कि ऐ मेरे रब! मेरा (पिछला) क़ुसूर माफ़ फ़रमा और (आइन्दा के लिए) मुझको ऐसी हुकूमत दे कि (मेरे ज़माने में) मेरे सिवा किसी को मयस्सर न हो, आप बड़े देने वाले हैं।[2] **(35)** सो (हमने उनकी दुआ़ क़बूल की और साथ ही) हमने हवा को उनके ताबे कर दिया कि वह उनके हुक्म से जहाँ वह (जाना) चाहते नरमी से चलती। **(36)** और जिन्नात को भी उनका ताबे कर दिया, यानी तामीर बनाने वालों को भी और ग़ोता लगाने वालों को भी। **(37)** और दूसरे जिन्नात को भी जो ज़न्जीरों में जकड़े रहते थे। **(38)** (और हमने यह सामान देकर इरशाद फ़रमाया कि) यह हमारी देन है, सो चाहे (किसी को) दो या न दो, तुमसे कुछ पूछ-गछ नहीं। **(39)** और (इसके अ़लावा) उनके लिए हमारे यहाँ (ख़ास) नज़दीकी और नेक अन्जामी है।[3] **(40)** ❖

और हमारे बन्दे अय्यूब (अ़लैहि.) को याद कीजिए, जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझको रंज और दुख पहुँचाया है। **(41)** अपना पाँव मारो, यह नहाने का ठन्डा पानी है और पीने का।[4] **(42)** और हमने उनको उनका कुंबा अ़ता फ़रमाया और उनके साथ (गिनती में) उनके बराबर और भी (दिए) अपनी ख़ास रहमत के सबब से, और अ़क़्ल वालों के लिए यादगार रहने के सबब से। **(43)** और तुम अपने हाथ में एक मुट्ठा सींकों का लो और उससे मारो और क़सम न तोड़ो, बेशक हमने उनको साबिर पाया, अच्छे बन्दे थे कि बहुत रुजू होते थे। **(44)** और हमारे बन्दों इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब (अ़लैहिमुस्सलाम) को याद

(पृष्ठ 820 का शेष) कि तूने ज़ुल्म किया, उस मज़्लूम से यह ख़िताब फ़रमाया कि तुझपर ज़ुल्म किया, जिससे एक तरफ़दारी की सूरत वहम में आती है, और इस तरफ़दारी का वहम भी पैदा न होना ज़्यादा इन्साफ़ वाले और कामिल होने की बात थी। सो इन्तिहाई दर्जे का तक़्वा होने की वजह से इतनी बात को भी सब्र के आला दर्जे और इम्तिहान में मुकम्मल साबित-क़दम रहने में ख़लल डालने वाला समझे।

2. यह बात औरों को सुना दी, जो भटक रहे हैं।

1. यानी उसपर अ़मल करें।

2. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि एक बार सुलैमान अ़लैहिस्सलाम अपने लश्कर के सरदारों पर उनकी किसी जिहाद की कोताही पर ख़फ़ा हुए और फ़रमाने लगे कि मैं आज रात अपनी सत्तर बीवियों से हमबिस्तर हूँगा, और उनसे सत्तर मुजाहिद पैदा होंगे। फ़रिश्ते ने दिल में डाला कि इन्शा-अल्लाह कह लीजिए। आपको कुछ ख़्याल न रहा, चुनाँचे सिर्फ़ एक औ़रत हामिला (गर्भवती) हुई और उससे भी एक नाक़िस जिस्म का बच्चा पैदा हुआ जिसके एक तरफ़ का धड़ न था।

3. जिहाद के क़िस्से में सब्र यह हुआ कि इतने ज़्यादा माल की कुछ परवाह न की, यह दीन पर हद दर्जे का जमाव था कि सब्र की हक़ीक़त की यही दलील है। और जसद के क़िस्से में तौबा करना इसके बावजूद कि नाफ़रमानी न थी, यह भी दलील है हद दर्जा दीन पर साबित-क़दम रहने की।

4. चुनाँचे नहाये और पिया, और बिलकुल अच्छे हो गए।

उलिल्-ऐदी वल्-अब्सार **(45)** इन्ना अख़्लस्नाहुम् बिख़ालि-सतिन् ज़िक्रद्दार **(46)** व इन्नहुम् अिन्दना लमिनल् मुस्तफ़ैनल्-अख़्यार **(47)** वज़्कुर् इस्माअी-ल वल्य-स-अ व ज़ल्किफ़्लि, व कुल्लुम् मिनल्-अख़्यार **(48)** हाज़ा ज़िक्रुन्, व इन्-न लिल्-मुत्तक़ी-न लहुस्-न मआब **(49)** जन्नाति अ़द्निम्-मुफ़त्त-ह-तल् लहुमुल्-अब्वाब **(50)** मुत्तकिई-न फ़ीहा यद्अू-न फ़ीहा बिफ़ाकि-हतिन् कसी-रतिंव्-व शराब **(51)** व अिन्दहुम् क़ासिरातुत्तर्फ़ि अत्राब **(52)** हाज़ा मा तू-अ़दू-न लियौमिल्-हिसाब ▲ **(53)** इन्-न हाज़ा ल-रिज़्क़ुना मा लहू मिन्-नफ़ाद **(54)** हाज़ा व इन्-न लित्ताग़ी-न लशर्-र मआब **(55)** जहन्न-म यस्लौनहा फ़बिअ्सल्-मिहाद **(56)** हाज़ा फ़ल्यज़ूक़ूहु हमीमुंव्-व ग़स्साक़ **(57)** व आ-ख़रु मिन् शक्लिही अज़्वाज **(58)** हाज़ा फ़ौजुम्-मुक़्तहिमुम् म-अ़कुम् ला मर्-हबम् बिहिम्, इन्नहुम् सालुन्नार **(59)** क़ालू बल् अन्तुम्, ला मर्-हबम् बिकुम्, अन्तुम् क़द्दम्तुमूहु लना फ़बिअ्सल्-क़रार **(60)** क़ालू रब्बना मन् क़द्द-म लना हाज़ा फ़ज़िद्हु अ़ज़ाबन् ज़िअ्फ़न् फ़िन्नार **(61)** व क़ालू मा लना ला नरा रिजालन् कुन्ना नअुद्दुहुम्-मिनल्- अश्रार **(62)** अत्त-ख़ज़्नाहुम् सिख़्रिय्यन् अम् ज़ाग़त् अ़न्हुमुल्-अब्सार **(63)** इन्-न ज़ालि-क ल-हक़्क़ुन् तख़ासुमु अह्लिन्नार **(64)** ❖

ص ٣٨ ٨١٢ ومالي ٢٣

أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾
وَإِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ
وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ هَٰذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ
مَآبٍ ﴿٤٩﴾ جَنَّاتِ عَدْنٍ مُفَتَّحَةً لَهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ
فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٥١﴾ وَعِنْدَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾
هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِنْ نَفَادٍ ﴿٥٤﴾
هَٰذَا وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ﴿٥٥﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾
هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ وَآخَرُ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ هَٰذَا
فَوْجٌ مُقْتَحِمٌ مَعَكُمْ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ إِنَّهُمْ صَالُو النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ
لَا مَرْحَبًا بِكُمْ أَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا مَنْ
قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ
رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾ أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ
الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنْذِرٌ وَ
مَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾ أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾
مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾ إِنْ يُوحَىٰ إِلَيَّ

منزل

क़ुल् इन्नमा अ-न मुन्ज़िरुंव्-व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहुल्-वाहिदुल्-क़ह्हार **(65)** रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमल्-अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़्फ़ार **(66)** क़ुल् हु-व न-बउन् अ़ज़ीम **(67)** अन्तुम् अ़न्हु मुअ़रिज़ून **(68)** मा का-न लि-य मिन् अि़ल्मिम्-बिल्म-लइल्-अअ़्ला इज़् यख़्तसिमून **(69)** इंय्यूहा इलय्-य इल्ला अन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन **(70)** इज़्

कीजिए जो हाथों वाले और आँखों वाले थे।[1] (45) हमने उनको एक ख़ास बात के साथ मख़्सूस किया था कि वह आख़िरत की याद है।[2] (46) और वे (हज़रात) हमारे यहाँ चुनिन्दा और सब से अच्छे लोगों में से हैं।[3] (47) और इसमाईल और य-स-अ़ और ज़ुलकिफ़्ल (अ़लैहिमुस्सलाम) को भी याद कीजिए, और ये सब भी सबसे अच्छे लोगों में से हैं। (48) एक नसीहत का मज़मून तो यह हो चुका,[4] और परहेज़गारों के लिए (आख़िरत में) अच्छा ठिकाना है। (49) यानी हमेशा रहने के बाग़ात जिनके दरवाज़े उनके वास्ते खुले होंगे। (50) वे उन बाग़ों में तकिया लगाए बैठे होंगे, (और) वह वहाँ (जन्नत के ख़ादिमों से) बहुत-से मेवे और पीने की चीज़ें मँगवाएँगे। (51) और उनके पास नीची निगाह वालियाँ उन्हीं की उम्र वाली होंगी। (52) (ऐ मुसलमानो!) यह वह (नेमत) है जिसका तुमसे हिसाब का दिन आने पर वायदा किया जाता है। ▲ (53) बेशक यह हमारी अ़ता है, इसका कहीं अंत ही नहीं।[5] (54) यह बात तो हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है (55) यानी दोज़ख़, उसमें वे दाख़िल होंगे, सो वह बहुत ही बुरी जगह है। (56) यह खौलता हुआ पानी और पीप है, सो ये लोग उसको चखेंगे। (57) और (इसके अ़लावा) और भी इसी क़िस्म की (नागवार) तरह-तरह की चीज़ें हैं। (58) यह एक जमाअ़त और आई जो तुम्हारे साथ (अ़ज़ाब में शरीक होने के लिए दोज़ख़ में) घुस रहे हैं, उनपर ख़ुदा की मार, यह भी दोज़ख़ ही में आ रहे हैं। (59) वे (पैरवी करने वाले उन मुक़्तदाओं से) कहेंगे, बल्कि तुम्हारे ही ऊपर ख़ुदा की मार, (क्योंकि) तुम ही तो यह (मुसीबत) हमारे आगे लाए, सो (जहन्नम) बहुत ही बुरा ठिकाना है। (60) दुआ़ करेंगे कि ऐ हमारे रब! जो शख़्स इस (मुसीबत) को हमारे आगे लाया हो उसको दोज़ख़ में दोगुना अ़ज़ाब दीजिए। (61) और वे लोग कहेंगे कि क्या बात है हम उन लोगों को (दोज़ख़ में) नहीं देखते जिनको हम बुरे लोगों में शुमार करते थे।[6] (62) क्या हमने उन लोगों की हँसी कर रखी थी, या उन (के देखने) से निगाहें चकरा रही हैं? (63) यह बात यानी दोज़ख़ियों का लड़ना-झगड़ना बिलकुल सच्ची बात है। (64) ❖

आप कह दीजिए कि मैं तो (तुमको अल्लाह के अ़ज़ाब से) डराने वाला हूँ और सिवाय एक अल्लाह ग़ालिब के कोई इबादत के लायक़ नहीं है। (65) वह परवर्दिगार है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो उनके दरमियान में हैं। (और वह) ज़बरदस्त, बड़ा बख़्शने वाला है। (66) आप कह दीजिए कि यह एक अ़ज़ीमुश्शान मज़मून है (67) जिससे तुम (बिलकुल ही) बेपरवाह हो रहे हो। (68) मुझको ऊपर की दुनिया (की बहस व गुफ़्तगू) की कुछ भी ख़बर न थी जबकि वे (आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश के बारे में) झगड़ रहे थे।[7] (69) मेरे पास (जो) वह्य (आती है तो) महज़ इस सबब से आती है कि मैं (अल्लाह तआ़ला की जानिब से) साफ़-साफ़ डराने वाला (भेजा गया) हूँ। (70) जबकि आपके परवर्दिगार ने फ़रिश्तों से इरशाद

1. यानी उनमें अ़मली क़ुव्वत भी थी और इल्मी क़ुव्वत भी।
2. शायद यह इसलिए बढ़ा दिया हो कि ग़ाफ़िलों के कान हों कि जब अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम इस फ़िक्र से ख़ाली न थे तो हम किस गिनती में हैं।
3. यानी चुनिन्दा लोगों में से भी सबसे बढ़कर।
4. नबियों के क़िस्से मुराद हैं कि झुठलाने वालों के लिए इसमें नुबुव्वत के मसले का सुबूत, और तस्दीक़ करने वालों के लिए इसमें अच्छे अख़्लाक़ और उम्दा आमाल की तालीम है।
5. यानी हमेशा-हमेशा रहने वाली नेमत है।
6. यानी मुसलमानों को बुरी राह वाला और हक़ीर समझा करते थे, वे क्यों नज़र नहीं आते।
7. अल्लाह तआ़ला से फ़रिश्तों की गुफ़्तगू को मजाज़न झगड़ना कहा गया कि ज़ाहिरन झगड़ने की तरह थी।

क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी ख़ालिकुम् ब-शरम्-मिन् तीन (71) फ़-इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़-क़अू लहू साजिदीन (72) फ़-स-जदल् मलाइ-कतु कुल्लुहुम् अज्मअून (73) इल्ला इब्ली-स, इस्तक्ब-र व का-न मिनल्-काफ़िरीन (74) क़ा-ल या इब्लीसु मा म-न-अ़-क अन् तस्जु-द लिमा ख़लक़्तु बि-यदय्-य, अस्तक्बर्-त अम् कुन्-त मिनल्-आ़लीन (75) क़ा-ल अ-न ख़ैरुम्-मिन्हु ख़लक़्तनी मिन्-नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन् तीन (76) क़ा-ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम (77) व इन्-न अ़लै-क लअ़्नती इला यौमिद्दीन (78) क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून (79) क़ा-ल फ़-इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन (80) इला यौमिल्- वक़्तिल्-मअ़्लूम (81) क़ा-ल फ़बिअ़िज़्ज़ति-क ल-उग़्वियन्नहुम् अज्मअ़ीन (82) इल्ला अ़िबा-द-क मिन्हुमुल्- मुख़्लसीन (83) क़ा-ल फ़ल्-हक़्क़ु वल्-हक़्-क़ अक़ूल (84) ल-अम्ल-अन्-न जहन्न-म मिन्-क व मिम्-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् अज्मअ़ीन (85) क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिंव्-व मा अ-न मिनल्-मु-त-कल्लिफ़ीन (86) इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्आ़लमीन (87) व लतअ़्-लमुन्-न न-ब-अहू बअ़्-द हीन (88) ❖

الزمر ٣٩ ٨١٣ ومالي ٢٣

إلا أنما أنا نذير مبين ﴿٧٠﴾ إذ قال ربك للملٰئكة إني خالق بشرا
من طين ﴿٧١﴾ فإذا سويته ونفخت فيه من روحي فقعوا له
سٰجدين ﴿٧٢﴾ فسجد الملٰئكة كلهم أجمعون ﴿٧٣﴾ إلا إبليس استكبر
وكان من الكٰفرين ﴿٧٤﴾ قال يٰإبليس ما منعك أن تسجد لما خلقت
بيدي أستكبرت أم كنت من العالين ﴿٧٥﴾ قال أنا خير منه خلقتني
من نار وخلقته من طين ﴿٧٦﴾ قال فاخرج منها فإنك رجيم ﴿٧٧﴾
وإن عليك لعنتي إلى يوم الدين ﴿٧٨﴾ قال رب فأنظرني إلى يوم
يبعثون ﴿٧٩﴾ قال فإنك من المنظرين ﴿٨٠﴾ إلى يوم الوقت المعلوم ﴿٨١﴾
قال فبعزتك لأغوينهم أجمعين ﴿٨٢﴾ إلا عبادك منهم المخلصين ﴿٨٣﴾
قال فالحق والحق أقول ﴿٨٤﴾ لأملأن جهنم منك وممن تبعك منهم
أجمعين ﴿٨٥﴾ قل ما أسئلكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين ﴿٨٦﴾
إن هو إلا ذكر للعٰلمين ﴿٨٧﴾ ولتعلمن نبأه بعد حين ﴿٨٨﴾

ع ٥ ٢٤ ١٤

سورة الزمر مكية وهي خمس وسبعون آية وثماني ركوعات بسم الله الرحمٰن الرحيم
تنزيل الكتٰب من الله العزيز الحكيم ﴿١﴾ إنا أنزلنا إليك الكتٰب
بالحق فاعبد الله مخلصا له الدين ﴿٢﴾ ألا لله الدين الخالص
والذين اتخذوا من دونه أولياء ما نعبدهم إلا ليقربونا إلى

منزل ٦

39 सूरतुज़्-ज़ु-मरि 59

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4965 अक्षर, 1184 शब्द, 75 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-हकीम (1) इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल्- किता-ब बिल्-हक़्क़ि फ़अ़्बुदिल्ला-ह मुख़्लिसल्-लहुद्दीन (2) अला लिल्लाहिद्- दीनुल्-ख़ालिसु,
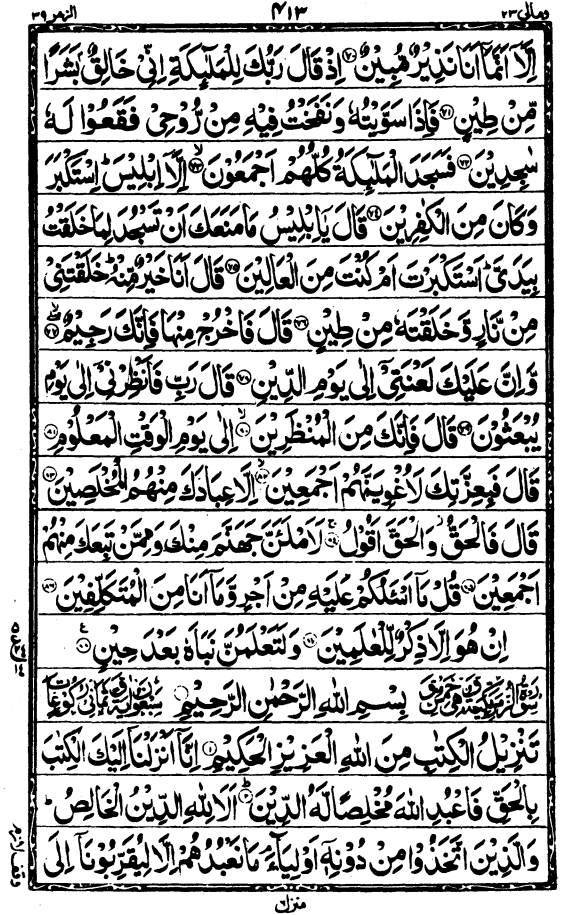
फ़रमाया कि मैं गारे से एक इनसान को (यानी उसके पुतले को) बनाने वाला हूँ। **(71)** सो मैं जब उसको पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी (तरफ़ से) जान डाल दूँ तो तुम सब उसके रू-ब-रू सज्दे में गिर पड़ना। **(72)** सो (जब अल्लाह तआला ने उसको बना लिया तो) सारे-के-सारे फ़रिश्तों ने (आदम को) सज्दा किया **(73)** मगर शैतान ने, कि वह ग़ुरूर में आ गया और काफ़िरों में से हो गया। **(74)** अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ इब्लीस! जिस चीज़ को मैंने अपने हाथों से बनाया,[1] उसको सज्दा करने से तुझको कौन-सी चीज़ रुकावट हुई, क्या तू ग़ुरूर में आ गया (और हक़ीक़त में बड़ा नहीं है), या यह कि तू (वाक़ई ऐसे) बड़े दर्जे वालों में है। **(75)** कहने लगा कि (दूसरी वाली बात ही है, यानी) मैं आदम से बेहतर हूँ। (क्योंकि) आपने मुझको आग से पैदा किया है और उस (आदम अ़लैहि.) को ख़ाक से पैदा किया है।[2] **(76)** इरशाद हुआ कि (अच्छा फिर) तू आसमान से निकल, क्योंकि बेशक तू (इस हरकत से) मरदूद हो गया। **(77)** और बेशक तुझपर मेरी लानत रहेगी क़ियामत के दिन तक। **(78)** कहने लगा, तो फिर मुझको मोहलत दीजिए क़ियामत के दिन तक। **(79)** इरशाद हुआ (कि जब तू मोहलत माँगता है) तो (जा) तुझको मोहलत दी गई **(80)** मुक़र्ररा वक़्त की तारीख़ तक। **(81)** कहने लगा, (जब मुझको मोहलत मिल गई) तो (मुझको भी) तेरी इज़्ज़त की क़सम कि मैं उन सबको गुमराह करूँगा **(82)** सिवाय आपके उन बन्दों के जो उनमें चुन लिए गए हैं। **(83)** इरशाद हुआ कि मैं सच कहता हूँ और मैं तो (हमेशा) सच ही कहा करता हूँ **(84)** कि मैं तुझसे और जो उनमें तेरा साथ दे उन सबसे दोज़ख़ को भर दूँगा। **(85)** आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस क़ुरआन (की तब्लीग़) पर न कुछ बदला चाहता हूँ और न मैं बनावट करने वालों मे से हूँ।[3] **(86)** यह क़ुरआन तो (अल्लाह का कलाम और) दुनिया जहान वालों के लिए बस एक नसीहत है। **(87)** और थोड़े दिनों के बाद तुमको इसका हाल मालूम हो जाएगा। (यानी मरने के साथ ही हक़ीक़त खुल जाएगी कि यह हक़ और सच्चा था)।[4] **(88)** ❖

39 सूरः ज़ुमर 59

सूरः ज़ुमर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 75 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

यह नाज़िल की हुई किताब है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से।[5] **(1)** हमने ठीक तौर पर इस किताब को आपकी तरफ़ नाज़िल किया है, सो आप (क़ुरआन की तालीम के मुवाफ़िक़) ख़ालिस एतिक़ाद करके

1. यानी जिसके बनाने की तरफ़ अल्लाह तआ़ला की ख़ास इनायत मुतवज्जह हुई, यह तो उसका शर्फ़ उसकी ज़ात के एतिबार से है और फिर उसके सामने सज्दा करने का हुक्म भी दिया गया।
2. आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश का माद्दा कहीं "ख़ाक" आया है, कहीं "मिट्टी" और कहीं "सड़े हुए गारे की बनी हुई मिट्टी"। इनमें कुछ टकराव और तआ़रुज़ नहीं, कहीं क़रीबी माद्दा बतला दिया, कहीं दूर का माद्दा।
3. यानी अगर झूठ बोलता तो उसका मन्शा या तो कोई अ़क़्ली नफ़ा होता जिसको अज्र कहा जाता है, और या तबई आ़दत होती जिसको तकल्लुफ़ कहा जाता है, सो ये दोनों बातें नहीं।
4. इस सूरः में क़ुरआन की तीन जगह तरीफ़ है, और तीनों जगह इसको "ज़िक्र" फ़रमाया गया है। अव्वल में- "ज़िज़्ज़िक्रि" दूसरी में "लि-य-तज़क्क-र" और तीसरी में "ज़िक्रुल् लिल्आ़लमी-न"।
5. ग़ालिब होना इसको चाहता था कि जो इसको झुठलाए उसको सज़ा दे दी जाए, मगर चूँकि हकीम भी है और मोहलत में मस्लहत थी, इसलिए सज़ा में मोहलत दे रखी है।

वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ ✣ मा नअ़्बुदुहुम् इल्ला लियुक़र्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फ़ा, इन्नल्ला-ह यह्कुमु बैनहुम् फ़ीमा हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ू-न, इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व काज़िबुन् कफ़्फ़ार (3) लौ अरादल्लाहु अंय्यत्तख़ि-ज़ व-लदल्लस्तफ़ा मिम्मा यख़्लुक़ु मा यशा-उ सुब्हानहू, हुवल्लाहुल्-वाहिदुल्-क़ह्हार (4) ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि युकव्विरुल्-लै-ल अ़लन्नहारि व युकव्विरुन्-नहा-र अ़लल्-लैलि व सख़्ख़-रश्-शम्-स वल्क़-म-र, कुल्लुंय्-यज्री लि-अ-जलिम् मुसम्मन्, अला हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़्फ़ार (5) ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिन् सुम्-म ज-अ़-ल मिन्हा ज़ौ-जहा व अन्ज़-ल लकुम् मिनल्-अन्आ़मि समानि-य-त अज़्वाजिन्, यख़्लुक़ुकुम् फ़ी बुतूनि उम्म-हातिकुम् ख़ल्क़म्-मिम्बअ़्दि ख़ल्क़िन् फ़ी ज़ुलुमातिन् सलासिन्, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्-मुल्कु, ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (6) इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़न्कुम्, व ला यर्ज़ा लिअ़िबादिहिल्-कुफ़्-र व इन् तश्कुरू यर्-ज़हु लकुम्, व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअ़ुकुम् फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलू-न, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (7) व इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ़ रब्बहू मुनीबन् इलैहि सुम्-म इज़ा ख़व्व-लहू निअ़्-मतम् मिन्हु नसि-य मा का-न यद्अ़ू इलैहि मिन् क़ब्लु व ज-अ़-ल लिल्लाहि अन्दादल् लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिही, क़ुल् त-मत्तअ़् बिकुफ़्रि-क क़लीलन् इन्न-क मिन् अस्हाबिन्नार (8) अम्मन् हु-व क़ानितुन् आना-अल्लैलि साजिदंव्-व क़ाइमंय्यह्-ज़रुल्-आख़िर-त व यर्जू रह्म-त रब्बिही, क़ुल् हल् यस्तविल्- लज़ी-न

الله زلفى إن الله يحكم بينهم في ما هم فيه يختلفون ۗ إن
الله لا يهدي من هو كذب كفار ۝٣ لو أراد الله أن يتخذ ولدا
لاصطفى مما يخلق ما يشاء سبحنه هو الله الواحد القهار ۝٤
خلق السموت والأرض بالحق يكور اليل على النهار ويكور
النهار على اليل وسخر الشمس والقمر كل يجري لأجل مسمى
ألا هو العزيز الغفار ۝٥ خلقكم من نفس وحدة ثم جعل
منها زوجها وأنزل لكم من الأنعام ثمنية أزوج يخلقكم
في بطون أمهتكم خلقا من بعد خلق في ظلمت ثلث
ذلكم الله ربكم له الملك لا إله إلا هو فأنى تصرفون ۝٦ إن
تكفروا فإن الله غني عنكم ولا يرضى لعباده الكفر وإن
تشكروا يرضه لكم ولا تزر وازرة وزر أخرى ثم إلى ربكم
مرجعكم فينبئكم بما كنتم تعملون إنه عليم بذات الصدور ۝٧
وإذا مس الإنسان ضر دعا ربه منيبا إليه ثم إذا خوله نعمة
منه نسي ما كان يدعوا إليه من قبل وجعل لله أندادا ليضل
عن سبيله قل تمتع بكفرك قليلا إنك من أصحب النار ۝٨
أمن هو قنت آناء اليل ساجدا وقائما يحذر الآخرة ويرجوا

✣ व. लाज़िम

अल्लाह की इबादत करते रहिए। **(2)** याद रखो, इबादत जो कि (शिर्क से) ख़ालिस हो, अल्लाह ही के लायक़ है। और जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा और शरीक तजवीज़ कर रखे हैं (और कहते हैं) कि हम तो उनकी पूजा सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि हमको ख़ुदा का मुक़र्रब बना दें, तो उनके (और उनके मुक़ाबिल ईमान वालों के) आपसी इख़्तिलाफ़ों का (क़ियामत के दिन) अल्लाह तआला फ़ैसला कर देगा।[1] अल्लाह तआला ऐसे शख़्स को राह पर नहीं लाता जो (ज़बान का) झूठा और (एतिक़ाद के एतिबार से) काफ़िर हो।[2] **(3)** अगर (मान लो) अल्लाह तआला किसी को औलाद बनाने का इरादा करता तो ज़रूर अपनी मख़्लूक़ में से जिसको चाहता चुन लेता। वह पाक है, वह ऐसा अल्लाह है जो अकेला है ज़बरदस्त है। **(4)** उसने आसामन व ज़मीन को हिक्मत से पैदा किया। वह रात (की अंधेरी) को दिन (की रोशनी के महल यानी हवा) पर लपेटता है, और दिन (की रोशनी) को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है कि (उनमें से) हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता रहेगा। याद रखो कि वह ज़बरदस्त है, बड़ा बख़्शने वाला (भी) है। **(5)** उसने तुम लोगों को वाहिद तन (यानी आदम अलैहिस्सलाम) से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया,[3] और (उस पैदाइश और वजूद में आने के बाद) तुम्हारे (नफ़े के बाक़ी रहने के) लिए आठ नर व मादा चौपायों के पैदा किए, वह तुमको माओं के पेट में एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत पर बनाता है, तीन अंधेरियों में। यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसी की सल्तनत है। उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो (इन दलीलों के बाद) तुम (हक़ से) कहाँ फिरे चले जा रहे हो? **(6)** अगर तुम कुफ़्र करोगे तो ख़ुदा तआला को तुम्हारी ज़रूरत नहीं, और वह अपने बन्दों के लिए कुफ़्र को पसन्द नहीं करता।[4] और अगर तुम शुक्र करोगे तो इसको तुम्हारे लिए पसन्द करता है।[5] और कोई किसी (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाता,[6] फिर अपने परवर्दिगार के पास तुमको लौटकर जाना होगा, सो वह तुमको तुम्हारे सब आमाल जतला देगा,[7] वह दिलों तक की बातों का जानने वाला है।[8] **(7)** और (मुश्रिक) आदमी को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अपने परवर्दिगार को उसी की तरफ़ रुजू होकर पुकारने लगता है, फिर जब अल्लाह तआला उसको अपने पास से (अमन व सुकून की) नेमत अता फ़रमा देता है तो जिसके लिए पहले से (ख़ुदा को) पुकार रहा था उसको भूल जाता है, और ख़ुदा के शरीक बनाने लगता है। जिसका असर यह होता है कि अल्लाह की राह से (दूसरों को) गुमराह करता है। आप (ऐसे शख़्स से) कह दीजिए कि अपने कुफ़्र की बहार थोड़े दिनों और लूट ले, (फिर आख़िरकार) तू दोज़ख़ियों में से होने वाला है। **(8)** भला जो शख़्स रात के समय में सज्दा व क़ियाम (यानी नमाज़) की हालत में इबादत कर रहा हो, आख़िरत से डर रहा हो और अपने परवर्दिगार की रहमत की उम्मीद कर रहा हो,

---

1. यानी उन लोगों के न मानने पर आप ग़म न करें, उनका फ़ैसला वहाँ होगा।
2. यानी मुँह से कुफ़िया बातों और दिल से कुफ़िया अक़ीदों पर इसरार करता हो। और उससे बाज़ न आने का और हक़ की तलब का इरादा ही न करता हो तो उसके इस बैर और दुश्मनी से अल्लाह तआला भी उसको हिदायत की तौफ़ीक़ नहीं देता।
3. इससे हव्वा अलैहस्सलाम मुराद हैं।
4. क्योंकि कुफ़्र से बन्दों को नुक़सान पहुँचता है।
5. क्योंकि उसमें तुम्हारा नफ़ा है।
6. इसलिए कुफ़्र करके यूँ न समझना कि हमारा कुफ़्र दूसरे के नामा-ए-आमाल में किसी वजह से दर्ज हो जाएगा और हम बरी हो जाएँगे। ग़रज़ तुम्हारा कुफ़्र तुम्हारे जुर्मों में लिखा जाएगा।
7. पस यह गुमान भी ग़लत है कि इन आमाल की पेशी का वक़्त न आएगा।
8. पस यह गुमान भी मत करना कि हमारे कुफ़्र की शायद उसको इत्तिला न हो।

यअ्लमू-न वल्लजी-न ला यअ्लमू-न, इन्नमा य-तज़क्करु उलुल्- अल्बाब (9) ❖

क़ुल् या अिबादिल्लज़ी-न आमनुत्तक़ू रब्बकुम्, लिल्लज़ी-न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद्-दुन्या ह-स-नतुन्, व अर्ज़ुल्लाहि वासि-अ़तुन्, इन्नमा युवफ़्फ़स्-साबिरू-न अज्रहुम् बिग़ैरि हिसाब **(10)** क़ुल् इन्नी उमिर्तु अन् अअ्बुदल्ला-ह मुख़्लिसल्-लहुद्दीन **(11)** व उमिर्तु लि-अन् अकू-न अव्वलल्-मुस्लिमीन **(12)** क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम **(13)** कुलिल्ला-ह अअ्बुदु मुख़्लिसल्-लहू दीनी **(14)** फ़अ्बुदू मा शिअ्तुम् मिन् दूनिही, क़ुल् इन्नल्-ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़ासिरू अन्फ़ु-सहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति, अला ज़ालि-क हुवल् ख़ुस्रानुल्-मुबीन **(15)** लहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् ज़ु-ललुम्-मिनन्नारि व मिन् तह्तिहिम् ज़ु-ललुन्, ज़ालि-क युख़व्विफ़ुल्लाहु बिही अिबादहू, या अिबादि फ़त्तक़ून **(16)** वल्लज़ीनज्-त-नबुत्ताग़ू-त अंय्यअ्बुदूहा व अनाबू इलल्लाहि लहुमुल्-बुश्रा फ़-बश्शिर् अिबाद **(17)** अल्लज़ी-न यस्तमिअूनल्-क़ौ-ल फ़-यत्तबिअू-न अह्स-नहू, उलाइ-कल्लज़ी-न हदाहुमुल्लाहु व उलाइ-क हुम् उलुल्-अल्बाब **(18)**

الزمر ٣٩ — ٨١٥ — ومالي ٢٣

رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ
إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۞ قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ
لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا
يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۞ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ
اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۞ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۞ قُلْ
إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۞ قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ
مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۞ فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۗ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ
الْمُبِينُ ۞ لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَٰلِكَ
يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ ۚ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ ۞ وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ
أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۞ الَّذِينَ
يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ
وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ۞ أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ
أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ۞ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِنْ
فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ
اللَّهُ الْمِيعَادَ ۞ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي

منزل

अ-फ़-मन् हक़्-क़ अ़लैहि कलि-मतुल्-अ़ज़ाबि, अ-फ़ अन्-त तुन्क़िज़ु मन् फ़िन्नार **(19)** लाकिनिल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् ग़ु-रफ़ुम्-मिन् फ़ौक़िहा ग़ु-रफ़ुम्-मब्निय्यतुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, वअ्दल्लाहि, ला युख़्लिफ़ुल्लाहुल्-मीआद **(20)** अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-स-ल-कहू यनाबी-अ़ फ़िल्अर्ज़ि सुम्-म युख़्रिजु बिही ज़र्अम्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यज्-अ़लुहू हुतामन्,

आप कहिए क्या इल्म वाले और जहल वाले (कहीं) बराबर होते हैं? वही लोग नसीहत पकड़ते हैं जो (सही) अक़्ल वाले हैं। (9) ❖

आप (मोमिनों को मेरी तरफ़ से) कहिए कि ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो! तुम अपने परवर्दिगार से डरते रहो।[1] जो लोग इस दुनिया में नेकी करते हैं उनके लिए नेक सिला है और अल्लाह की ज़मीन फ़राख़ "लम्बी-चौड़ी" है,[2] साबित-क़दम रहने वालों को उनका सिला बेशुमार ही मिलेगा। (10) आप कह दीजिए कि मुझको (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह तआ़ला की इस तरह इबादत करूँ कि इबादत को उसी के लिए ख़ास रखूँ।[3] (11) और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि सब मुसलमानों में अव्वल मैं हूँ। (12) आप (यह भी) कह दीजिए कि अगर (मान लो, जबकि ऐसा होना नामुम्किन है कि) मैं अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा रखता हूँ।[4] (13) आप कह दीजिए कि मैं तो अल्लाह ही की इबादत इस तरह करता हूँ कि अपनी इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रखता हूँ। (14) सो ख़ुदा को छोड़कर तुम्हारा दिल जिस चीज़ को चाहे उसकी इबादत करो। आप (यह भी) कह दीजिए कि पूरे घाटे वाले वही लोग हैं जो अपनी जानों से और अपने मुताल्लिक़ीन से क़ियामत के दिन ख़सारे में पड़े। याद रखो कि यह खुला घाटा है। (15) उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के घेरने वाले शोले होंगे और उनके नीचे से भी आग के घेरने वाले शोले होंगे, यह वही (अ़ज़ाब) है जिससे ख़ुदा तआ़ला अपने बन्दों को डराता है। ऐ मेरे बन्दो! मुझसे (यानी मेरे अ़ज़ाब से) डरो। (16) और जो लोग शैतान की इबादत से बचते हैं (मुराद ग़ैरुल्लाह की इबादत है) और (पूरी तरह) ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं, वे ख़ुशख़बरी सुनाने के हक़दार हैं, सो आप मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए (17) जो इस (अल्लाह के) कलाम को कान लगाकर सुनते हैं, फिर उसकी अच्छी-अच्छी बातों पर चलते हैं। यही हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत की, और यही हैं जो अ़क़्ल रखते हैं। (18) भला जिस शख़्स पर अ़ज़ाब की (अज़ली तक़दीरी) बात साबित हो चुकी, तो क्या आप ऐसे शख़्स को जो कि (अल्लाह के इल्म में) दोज़ख़ में है, छुड़ा सकते हैं?[5] (19) लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए (जन्नत के) बालाख़ाने हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं, जो बने बनाए तैयार हैं। उनके नीचे नहरें चल रही हैं। यह अल्लाह तआ़ला ने वायदा किया है (और) अल्लाह वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (20) (ऐ मुख़ातब) क्या तूने इस (बात) पर नज़र नहीं की कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन के सोतों में दाख़िल कर देता है। फिर (जब वह उबलता है तो)

1. यानी बन्दगी व ताअ़त पर हमेशा क़ायम रहने वाले और गुनाहों से परहेज़ करने वाले रहो, कि ये सब परहेज़गारी की क़िस्में हैं।

2. इसलिए अगर वतन में कोई नेकी करने से रुकावट हो तो हिजरत करके दूसरी जगह चले जाओ।

3. यानी उसमें शिर्क का मामूली-सा शुब्हा भी न हो।

4. मतलब यह कि ख़ालिस तौहीद का वाजिब होना और उसके छोड़ने पर अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ होना ऐसा आ़म है कि मासूम (गुनाहों से महफ़ूज़) जिनमें नाफ़रमानी का एहतिमाल है ही नहीं, वह भी इस क़ायदे से बाहर नहीं, तो ग़ैर-मासूम तो किस गिनती में है।

5. यानी जो दोज़ख़ में जाने वाले हैं वे कोशिश से भी गुमराही से न निकलेंगे, तो अफ़सोस व ग़म करना बेफ़ायदा है।

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब (21) ❖

अ-फ़ मन् श-रहल्लाहु सद्-रहू लिल्इस्लामि फ़हु-व अ़ला नूरिम्-मिर्रब्बिही, फ़-वैलुल्-लिल्क़ासि-यति क़ुलूबुहुम् मिन् ज़िक्रिल्लाहि, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (22) अल्लाहु नज़्ज़-ल अह्स-नल्- हदीसि किताबम्-मु-तशाबिहम्-मसानि-य तक़्शअ़िर्रु मिन्हु जुलूदुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् सुम्-म तलीनु जुलूदुहुम् व क़ुलूबुहुम् इला ज़िक्रिल्लाहि, ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशा-उ, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (23) अ-फ़ मंय्-यत्तक़ी बिवज्हिही सूअल्-अ़ज़ाबि यौमल्-क़ियामति, व क़ी-ल लिज़्ज़ालिमी-न ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्सिबून (24) कज़्ज़बल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अताहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (25) फ़-अज़ा-क़हुमुल्लाहुल्-ख़िज़्-य फ़िल्-हयातिद्दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्- आख़िरति अक्बरु ✣ लौ कानू यअ़्लमून (26) व ल-क़द् ज़रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिल्-लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (27) क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यन् ग़ै-र ज़ी अ़ि-वजिल्-लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (28) ज़-रबल्लाहु म-सलर्-रजुलन् फ़ीहि शु-रका-उ मु-तशाकिसू-न व रजुलन् स-लमल्-लि-रजुलिन्, हल् यस्तवियानि म-सलन्, अल्हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमून (29) इन्न-क मय्यितुंव्-व इन्नहुम् मय्यितून (30) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति अ़िन्-द रब्बिकुम् तख़्तसिमून (31) ❖

وما لي ٢٣ — ٧١٦ — الزمر ٣٩

الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا
ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾ أَفَمَن
شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ
قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢﴾ اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ
الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ
ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾ أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَقِيلَ
لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
فَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾ فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ
اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ
هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾ إِنَّكَ مَيِّتٌ
وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

منزل ٦

उसके ज़रिये से खेतियाँ पैदा करता है जिसकी मुख़्तलिफ़ क़िस्में हैं, फिर वह खेती बिलकुल सूख जाती है, सो उसको तू ज़र्द देखता है। फिर (अल्लाह तआला) उसको चूरा-चूरा कर देता है। इस (नमूने) में अक़्ल वालों के लिए बड़ी इब्रत है। **(21)** ❖

सो जिस शख़्स का सीना अल्लाह तआला ने इस्लाम (के क़बूल करने) के लिए खोल दिया[1] और वह अपने परवर्दिगार के (अता किए हुए) नूर पर है,[2] (क्या वह शख़्स और संगदिल बराबर हैं?) सो जिन लोगों के दिल ख़ुदा के ज़िक्र से मुतास्सिर नहीं होते उनके लिए बड़ी ख़राबी है, ये लोग खुली गुमराही में हैं। **(22)** अल्लाह ने बड़ा उम्दा कलाम[3] नाज़िल फ़रमाया है, जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती जुलती है। बार-बार दोहराई गई है, जिससे उन लोगों के जो कि अपने रब से डरते हैं, बदन काँप उठते हैं।[4] फिर उनके बदन और दिल नरम (और ताबेदार) होकर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं।[5] यह (क़ुरआन) अल्लाह की हिदायत है, जिसको वह चाहता है इसके ज़रिए से हिदायत करता है, और ख़ुदा जिसको गुमराह करता है उसका कोई हिदायत देने वाला नहीं। **(23)** भला जो शख़्स अपने मुँह को क़ियामत के दिन अज़ाब की ढाल बना देगा,[6] और ऐसे ज़ालिमों को हुक्म होगा कि जो कुछ तुम किया करते थे (अब) उसका मज़ा चखो। **(24)** तो क्या यह (अज़ाब पाने वाले) और जो ऐसा न हो बराबर हो सकते हैं? जो लोग उनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (हक़ को) झुठलाया था, सो उनपर (ख़ुदा का) अज़ाब ऐसे तौर पर आया कि उनको ख़्याल भी न था। **(25)** सो अल्लाह ने उनको इसी दुनियावी ज़िन्दगी में भी रुस्वाई का मज़ा चखाया और आख़िरत का अज़ाब और भी बड़ा (और सख़्त) है, काश! ये लोग समझ जाते। **(26)** और हमने लोगों की (हिदायत) के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म के (ज़रूरी) उम्दा मज़ामीन बयान किए हैं, ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें। **(27)** जिसकी कैफ़ियत यह है कि वह अरबी क़ुरआन है जिसमें ज़रा भी टेढ़ नहीं (और) ताकि ये लोग डरें।[7] **(28)** अल्लाह ने (मोमिन व मुश्रिक के बारे में) एक मिसाल बयान फ़रमाई कि एक शख़्स (ग़ुलाम) है, जिसमें कई साझी हैं, जिनमें आपस में ज़िद्दा-ज़िद्दी (भी) है, और एक और शख़्स है कि पूरा एक ही शख़्स का (ग़ुलाम) है, (तो) क्या उन दोनों की हालत बराबर (हो सकती) है?[8] अल्हम्दु लिल्लाह (क़बूल तो किया) बल्कि उनमें अक्सर समझते भी नहीं। **(29)** आपको भी मरना है और उनको भी मरना है। **(30)** फिर क़ियामत के दिन तुम मुक़द्दमात अपने रब के सामने पेश करोगे। (उस वक़्त अमली फ़ैसला हो जाएगा)।[9] **(31)** ❖

1. यानी इस्लाम के हक़ होने का उसको यक़ीन आ गया।
2. यानी वह हिदायत के तक़ाज़े पर चल रहा है। यानी यक़ीन लाकर उसी के मुताबिक़ अमल करने लगा।
3. यानी क़ुरआन पाक।
4. इससे डर और ख़ौफ़ मुराद है, अगरचे दिल ही में रहे बदन पर उसका असर ज़ाहिर न हो।
5. यानी डरकर हाथ-पैर वग़ैरह के आमाल और दिल के आमाल को फ़रमाँबरदारी और तवज्जोह से बजा लाते हैं।
6. ढाल बनाने का मतलब यह है कि आदमी की आदत यह है कि जो कोई उसपर वार और हमला करता है तो वह उसको हाथ पर रोकता है, मगर वहाँ हाथ-पाँव जकड़े होंगे इसलिए सब मुँह पर ही लेगा। हम अल्लाह के ग़ज़ब से उसकी पनाह चाहते हैं।
7. पस हिदायत की किताब होने के लिए जिन कमाल की सिफ़तों की ज़रूरत थी, क़ुरआन उनपर हावी है। लेकिन अगर उन्हीं की इस्तेदाद और सलाहियत ख़राब और फ़ासिद हो तो क्या किया जाए।
8. पहली मिसाल मुश्रिक की है कि हमेशा डावाँ-डोल रहता है, कभी ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अलावा) की तरफ़ दौड़ता है, कभी अल्लाह की तरफ़। फिर कभी ग़ैरुल्लाह में भी एक पर इत्मीनान नहीं होता। कभी किसी की तरफ़ रुजू करता है, कभी किसी की तरफ़।
9. इस झगड़े के वक़्त फ़ैसला यह होगा कि जो हक़-परस्त नहीं उनको दोज़ख़ का अज़ाब नसीब होगा और हक़-परस्तों को बड़ा अज्र मिलेगा।

चौबीसवाँ पारः फ़-मन् अज़्लमु

सूरतुज़्-ज़ु-मरि (आयत 32 से 75)

फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् क-ज़-ब अ़लल्लाहि व कज़्ज़-ब बिस्सिद्क़ि इज़् जा-अहू, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्-काफ़िरीन **(32)** वल्लज़ी जा-अ बिस्सिद्क़ि व सद्द-क़ बिही उलाइ-क हुमुल्-मुत्तक़ून **(33)** लहुम् मा यशाऊ-न अ़िन्-द रब्बिहिम्, ज़ालि-क जज़ाउल्-मुह्सिनीन **(34)** लि-युकफ़्फ़िरल्लाहु अ़न्हुम् अस्व-अल्लज़ी अ़मिलू व यज्ज़ि-यहुम् अज्रहुम् बि-अह्सनिल्लज़ी कानू यअ़्मलून **(35)** अ-लैसल्लाहु बिकाफ़िन् अ़ब्दहू, व युख़व्विफ़ून-क बिल्लज़ी-न मिन् दूनिही, व मंय्युज़्लि-लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद **(36)** व मंय्यह्दिल्लाहु फ़मा लहू मिम्-मुज़िल्लिन्, अ-लैसल्लाहु बि-अ़ज़ीज़िन् ज़िन्तिक़ाम **(37)** व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-नल्लाहु क़ुल् अ-फ़-रऐतुम् मा तद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि इन् अरा-दनियल्लाहु बिज़ुर्रिन् हल् हुन्-न काशिफ़ातु ज़ुर्रिही औ अरा-दनी बिरह्मतिन् हल् हुन्-न मुम्सिकातु रह्मतिही, क़ुल् हस्बियल्लाहु अ़लैहि य-तवक्कलुल्-मु-तवक्किलून **(38)** क़ुल् या क़ौमिअ़्मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् फ़सौ-फ़ तअ़्लमून **(39)** मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्-युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ाबुम्-मुक़ीम **(40)** इन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब लिन्नासि बिल्हक़्क़ि फ़-मनिह्तदा फ़लिनफ़्सिही व मन्

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ
بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۲﴾
وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُتَّقُوْنَ ﴿۳۳﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۴﴾ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا
وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۵﴾
اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۶﴾ وَمَنْ يَّهْدِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿۳۷﴾
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ
اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ
اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ
هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ
عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ

चौबीसवाँ पारः फ़-मन् अज़्लमु

सूरः ज़ुमर (आयत 32 से 75)

सो उस शख़्स से ज़्यादा बेइन्साफ़ कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे और सच्ची बात (यानी क़ुरआन) को जबकि वह उसके पास (रसूल के ज़रिए से) पहुँची झुठलाए। क्या (क़ियामत के दिन) ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा?[1] **(32)** और जो लोग सच्ची बात लेकर आए और (ख़ुद भी) उसको सच जाना तो ये लोग परहेज़गार हैं। **(33)** (उनका फ़ैसला यह होगा कि) वे जो कुछ चाहेंगे उनके लिए उनके परवर्दिगार के पास सब कुछ है, यह सिला है नेक काम करने वालों का। **(34)** ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे आमाल को दूर कर दे और उनके नेक कामों के बदले उनको उनका सवाब दे।[2] **(35)** क्या अल्लाह तआला अपने (ख़ास) बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त) के लिए काफ़ी नहीं, और ये लोग आपको उन (झूठे माबूदों) से डराते हैं जो ख़ुदा के सिवा (तजवीज़ कर रखे) हैं, और जिसको ख़ुदा गुमराह करे उसका कोई हिदायत देने वाला नहीं। **(36)** और जिसको वह हिदायत दे उसका कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या ख़ुदा तआला ज़बरदस्त, इन्तिक़ाम लेने वाला नहीं।[3] **(37)** और अगर (आप) उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया है? तो यही कहेंगे कि अल्लाह तआला ने, आप (उनसे) कहिए कि भला फिर यह तो बतलाओ कि ख़ुदा के सिवा तुम जिन माबूदों को पूजते हो अगर अल्लाह तआला मुझको कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे, क्या ये माबूद उसकी दी हुई तकलीफ़ दूर कर सकते हैं? या अल्लाह तआला मुझपर अपनी इनायत करना चाहे, क्या ये माबूद उसकी इनायत को रोक सकते हैं? आप कह दीजिए कि (इससे साबित हो गया कि) मेरे लिए ख़ुदा काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।[4] **(38)** आप कह दीजिए कि तुम अपनी हालत पर अमल किए जाओ, मैं भी अमल कर रहा हूँ,[5] सो अब जल्दी ही तुमको मालूम हुआ जाता है **(39)** कि वह कौन शख़्स है जिसपर (दुनिया में) ऐसा अज़ाब आया चाहता है जो उसको रुस्वा कर देगा, और (मौत के बाद) उसपर हमेशा रहने वाला अज़ाब नाज़िल होगा। **(40)** हमने आप पर यह किताब लोगों के (नफ़े के) लिए उतारी जो हक़ को लिए हुए है। सो जो शख़्स सच्ची राह पर आएगा तो अपने

1. ऐसे शख़्स का बहुत बड़ा ज़ालिम होना भी ज़ाहिर है और बड़े ज़ालिम का बड़ी सज़ा का मुस्तहिक़ होना भी ज़ाहिर है, और बड़ी सज़ा जहन्नम है।

2. ऊपर की कई आयतों में तौहीद के हक़ होने और शिर्क के बातिल होने को बयान किया है। ऐसे मज़मूनों को सुनकर कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन आपसे कहते कि हमारे माबूदों से गुस्ताख़ी न कीजिए वरना हम उनसे दरख़्वास्त करके आपको मजनूँ करवा देंगे। चुनाँचे इसपर आयत "व युख़व्विफ़ून-क......आख़िर तक" नाज़िल हुई। इसी तरह और भी मुख़ालफ़त और दुश्मनी की बातें करते थे। आप रन्जीदा और ग़मगीन होते। आगे आपके लिए तसल्ली के मज़ामीन हैं, जिनमें से बाज़ में आपको ख़िताब (संबोधन) करने वाला और बाज़ में जवाब देने वाला बनाना मक़सूद है।

3. यानी अल्लाह तआला मददगार होने की सिफ़त में कामिल और ख़ास बन्दा मदद किए जाने के क़ाबिल, और बातिल माबूद क़ुदरत और मदद से बेबस व बेकार। फिर यह डराना ख़ालिस जहालत और गुमराही नहीं तो और क्या है।

4. पस मैं भी उसी पर भरोसा रखता हूँ और तुम्हारी मुख़ालफ़त और दुश्मनी की कुछ परवाह नहीं करता।

5. यानी जैसे तुम अपना तरीक़ा नहीं छोड़ते मैं अपना तरीक़ा नहीं छोड़ता।

ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-वकील (41) ❖

अल्लाहु य-तवफ़्फ़ल्-अन्फ़ु-स ही-न मौतिहा वल्लती लम् तमुत् फ़ी मनामिहा फ़-युम्सिकुल्लती क़ज़ा अ़लैहल्-मौ-त व युर्सिलुल्-उख़्रा इला अ-जलिम्-मुसम्मन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (42) अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि शु-फ़आ-अ, क़ुल् अ-व लौ कानू ला यम्लिकू-न शैअंव्-व ला यअ़्क़िलून (43) क़ुल् लिल्लाहिश्- शफ़ा-अ़तु जमीअ़न्, लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, सुम्-म इलैहि तुर्जअ़ून (44) व इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वह्दहुश्-म-अज़्ज़त् क़ुलूबुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व इज़ा ज़ुकिरल्लज़ी-न मिन् दूनिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून (45) क़ुलिल्लाहुम्-म फ़ातिरस्-समावाति वल्अर्ज़ि आ़लिमल्-ग़ैबि वश्शहा-दति अन्-त तह्कुमु बै-न अ़िबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (46) व लौ अन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू मा फ़िल्-अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्-लहू म-अ़हू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल्-अ़ज़ाबि यौमल्-क़ियामति, व बदा लहुम् मिनल्लाहि मा लम् यकूनू यह्तसिबून (47) व बदा लहुम् सय्यिआतु मा क-सबू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (48) फ़-इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ़ना सुम्-म इज़ा ख़व्वल्नाहु निअ़्-मतम् मिन्ना क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अ़िल्मिन्, बल् हि-य फ़ित्-नतुंव्-व लाकिन्-न

فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ
وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ
مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى
عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ شُفَعَاۗءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾
قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ
اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ
جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْۗءِ الْعَذَابِ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۭ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ

नफ़े के वास्ते, और जो शख़्स बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना (यानी उसका वबाल) उसी पर पड़ेगा, और आप उनपर (कुछ बतौर ज़िम्मेदारी के) मुसल्लत नहीं किए गए। **(41)** ❖

अल्लाह ही क़ब्ज़ (यानी मुअ़त्तल व बेकार) करता है (उन) जानों को उनकी मौत के वक़्त, और उन जानों को भी जिनकी मौत नहीं आई उनके सोने के वक़्त, फिर उन जानों को तो रोक लेता है जिनपर मौत का हुक्म फ़रमा चुका है और बाक़ी जानों को एक मुक़र्ररा मीयाद तक के लिए रिहा कर देता है, इसमें उन लोगों के लिए जो कि सोचने के आ़दी हैं दलीलें हैं। **(42)** हाँ, क्या उन (मुश्रिक) लोगों ने ख़ुदा के सिवा दूसरों को (माबूद) क़रार दे रखा है, जो (उनकी) सिफ़ारिश करेंगे। आप कह दीजिए कि अगरचे ये कुछ भी क़ुदरत न रखते हों और कुछ भी इल्म न रखते हों।[1] **(43)** आप कह दीजिए कि सिफ़ारिश तो मुकम्मल तौर पर ख़ुदा ही के इख़्तियार में है,[2] तमाम आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है, फिर उसी की तरफ़ लौटकर जाओगे। **(44)** और जब फ़क़त अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिलों को नागवार होता है जो कि आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते, और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र आता है तो उसी वक़्त वे लोग ख़ुश हो जाते हैं।[3] **(45)** आप कहिए कि ऐ अल्लाह आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले! बातिन और ज़ाहिर के जानने वाले! आप ही (क़ियामत के दिन) अपने बन्दों के दरमियान उन मामलों में फ़ैसला फ़रमा देंगे जिनमें वे आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे।[4] **(46)** और अगर ज़ुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) करने वालों के पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ उतनी ही चीज़ें और भी हों, तो वे लोग क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब से छूट जाने के लिए (बिना सोचे) उनको देने लगें। और ख़ुदा की तरफ़ से उनको वह मामला पेश आएगा जिसका उनको गुमान भी न था। **(47)** और (उस वक़्त) उनको तमाम बुरे आमाल ज़ाहिर हो जाएँगे और जिस (अ़ज़ाब) के साथ वे हँसी-मज़ाक़ किया करते थे, वह उनको आ घेरेगा। **(48)** फिर जिस वक़्त (उस मुश्रिक) आदमी को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारता है। फिर जब हम उसको अपनी

---

1. यानी शफ़ाअ़त के लिए कम-से-कम इल्म व क़ुदरत तो ज़रूरी है।

2. यानी उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी की मजाल नहीं कि सिफ़ारिश कर सके। और इजाज़त के लिए दो शर्तें हैं- शफ़ाअ़त करने वाले का मक़बूल होना और जिसके लिए शफ़ाअ़त की जाए उसका मग़्फ़िरत के क़ाबिल होना। पस जिन रूहों को ये माबूद क़रार देते हैं अगर वे शयातीन हैं तो दोनों शर्तें नहीं पाई गईं, और अगर वे फ़रिश्ते वग़ैरह हैं तो दूसरी शर्त नहीं पाई गई। बहरहाल इजाज़त नहीं पाई गई, पस उनकी शफ़ाअ़त भी नहीं होगी। और यही बुनियाद थी उनके माबूद क़रार देने की, पस उनका माबूद होना बातिल ठहरा और हक़ तआ़ला का यक्ता होना साबित हो गया।

3. ऊपर तौहीद के ज़िम्न में मुश्रिकीन के तकब्बुर और दुश्मनी का बयान है। चूँकि घमण्ड और तकब्बुर और दुश्मनी तब्लीग़ करने वाले को रंज पहुँचाने का सबब होता है इसलिए आगे आपकी तसल्ली के लिए एक दुआ़ की तालीम है। और जज़ा के बयान से तसल्ली देते और दुआ़ के मज़मून को मुकम्मल फ़रमाते हैं।

4. यानी आप उन घमण्ड और तकब्बुर करने वालों की फ़िक्र में न पड़िए, बल्कि उनका मामला अल्लाह के सुपुर्द कीजिए, वह अ़मली फ़ैसला कर देंगे।

अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (49) क़द् क़ा-लहल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़मा अग्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून (50) फ़-असा-बहुम् सय्यिआतु मा क-सबू, वल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् हाउला-इ सयुसीबुहुम् सय्यिआतु मा क-सबू व मा हुम् बिमुअ्जिज़ीन (51) अ-व लम् यअ्लमू अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (52) ❖

क़ुल् या अिबादि-यल्लज़ी-न अस्-रफ़ू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्नतू मिर्रह्मतिल्लाहि, इन्नल्ला-ह यग्फ़िरुज़्-ज़ुनू-ब जमीअ़न्, इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (53) व अनीबू इला रब्बिकुम् व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अ़ज़ाबु सुम्-म ला तुन्सरून (54) वत्तबिअू अह्स-न मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अ़ज़ाबु बग़्-ततंव्-व अन्तुम् ला तश्अ़ुरून (55) अन् तक़ू-ल नफ़्सुंय्या-हस्-रता अ़ला मा फ़र्रत्तु फ़ी जम्बिल्लाहि व इन् कुन्तु ल-मिनस्साख़िरीन (56) औ तक़ू-ल लौ अन्नल्ला-ह हदानी लकुन्तु मिनल्-मुत्तक़ीन (57) औ तक़ू-ल ही-न तरल्-अ़ज़ा-ब लौ अन्-न ली कर्र-तन् फ़-अकू-न मिनल्-मुह्सिनीन (58) बला क़द् जाअत्-क आयाती फ़-कज़्ज़ब्-त बिहा वस्तक्बर्-त व कुन्-त मिनल्-काफ़िरीन (59) व यौमल्-क़ियामति तरल्लज़ी-न क-ज़बू अ़लल्लाहि वुजूहुहुम्

نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ
وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَاَصَابَهُمْ
سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ
سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ
اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ
مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا
اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ
يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِىْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ
السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِىْ لَكُنْتُ مِنَ
الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِىْ كَرَّةً
فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِىْ فَكَذَّبْتَ

तरफ़ से कोई नेमत अता फ़रमा देते हैं तो कहता है कि यह तो मुझको (मेरी) तदबीर से मिली है, बल्कि वह एक आज़माइश है,[1] लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं।[2] (49) यह बात (बाज़) उन लोगों ने भी कही थी जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं (जैसे क़ारून ने कहा था), सो उनकी कार्रवाई उनके कुछ काम न आई, (50) फिर उनके तमाम बुरे आमाल उनपर आ पड़े (और सज़ा पाने वाले हुए)। और उनमें भी जो ज़ालिम हैं उनपर भी उनके बुरे आमाल अभी पड़ने वाले हैं, और ये (खुदा तआला को) हरा नहीं सकते।[3] (51) क्या उन लोगों को (हालात में ग़ौर करने से) यह मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह ही जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़्क़ देता है, और वही (जिसके लिए चाहता है) तंगी भी कर देता है, इस (ज़्यादती और तंगी करने) में ईमान वालों के वास्ते निशानियाँ हैं।[4] (52) ❖

आप कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने (कुफ़्र व शिर्क करके) अपने ऊपर ज़्यादतियाँ की हैं, कि तुम खुदा की रहमत से नाउम्मीद मत हो, यक़ीनन खुदा तआला तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा।[5] वाक़ई वह बड़ा बख़्शने वाला और बड़ी रहमत वाला है। (53) और तुम अपने रब की तरफ़ रुजू करो और (इस्लाम क़बूल करने में) उसकी फ़रमाँबरदारी करो,[6] इससे पहले कि तुमपर (अल्लाह का) अ़ज़ाब आ जाए (और) उस वक़्त किसी की तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद न की जाए[7] (54) और तुम (को चाहिए कि) अपने रब के पास से आए हुए अच्छे-अच्छे हुक्मों पर चलो, इससे पहले कि तुमपर अचानक अ़ज़ाब आ पड़े और तुमको (उसका) ख़्याल भी न हो।[8] (55) कभी (कल क़ियामत को) कोई शख़्स कहने लगे कि अफ़सोस मेरी उस कोताही पर जो मैंने खुदा तआला की जनाब में की, और मैं तो (खुदा के अहकाम पर) हँसता ही रहा। (56) या कोई यह कहने लगे कि अगर अल्लाह तआला (दुनिया में) मुझको हिदायत करता तो मैं भी परहेज़गारों में से होता। (57) या कोई अ़ज़ाब को देखकर यूँ कहने लगे कि काश! मेरा (दुनिया में) फिर जाना हो जाए, फिर मैं नेक बन्दों में हो जाऊँ। (58) हाँ, बेशक तेरे पास मेरी आयतें पहुँची थीं, सो तूने उनको झुठलाया और

1. आज़माइश इसलिए कि देखें उसके मिलने पर हमको भूल जाता है और कुफ़्र करता है, या याद रखता है और शुक्र करता है। और इसी आज़माइश के लिए बाज़ नेमतों में असबाब और कमाने का वास्ता भी रख दिया है, इससे और ज़्यादा आज़माइश हो गई, कि देखें इस ज़ाहिरी सबब पर नज़र करता है या हक़ीक़ी सबब पर।

2. इसलिए उसको अपनी तदबीर का नतीजा बतलाते हैं, और शिर्क में मुब्तला रहते हैं।

3. चुनाँचे बद्र में ख़ूब सज़ा हुई।

4. यानी दलीलें क़ायम हैं कि कम-ज़्यादा करने वाला वही है, तदबीर और तदबीर का बुरा होना हक़ीक़ी इल्लत नहीं। पस इन दलीलों को जो शख़्स समझ लेगा वह अपनी तदबीर की तरफ़ निस्बत नहीं करेगा, बल्कि खुदा के मुनइम (नेमत देने वाला) होना ज़हन से न उतरेगा, जो शिर्क में मुब्तला हो जाने का सबब हो गया था, बल्कि वह ईमान वाला रहेगा। और तंगदस्ती और बीमारी में उसके हाल और क़ौल में इख़्तिलाफ़ और टकराव न होगा।

5. यानी यह ख़्याल न करो कि पहले जो कुफ़्र व शिर्क किया है ईमान लाने के बाद उसपर पकड़ होगी, सो यह बात नहीं।

6. यानी माफ़ी की शर्त कुफ़्र से तौबा करना और ईमान लाना है।

7. यानी जैसे ईमान लाने की सूरत में सब कुफ़्र व शिर्क माफ़ हो जाएगा, इसी तरह इस्लाम न लाने की सूरत में उस कुफ़्र व शिर्क पर अ़ज़ाब होगा जिसको कोई दूर करने वाला नहीं।

8. इससे आख़िरत का अ़ज़ाब मुराद है।

मुस्वद्द-तुन्, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्मु-तकब्बिरीन (60) व युनज्जिल्लाहुल्-लज़ीनत्तक़ौ बि-मफ़ा-ज़तिहिम् ला यमस्सुहुमुस्सू-उ व ला हुम् यह्ज़नून (61) अल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हु-व अ़ला कुल्लि शैइंव्-वकील (62) लहू मक़ालीदुस्-समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लज़ी-न क-फ़रू बि-आयातिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (63) ❖

क़ुल् अ-फ़ग़ैरल्लाहि तअ्मुरून्नी अअ्बुदु अय्युहल्-जाहिलून (64) व ल-क़द् ऊहि-य इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि-क ल-इन् अश्रक्-त ल-यह्-बतन्-न अ़-मलु-क व ल-तकूनन्-न मिनल्- ख़ासिरीन (65) बलिल्ला-ह फ़अ्बुद् व कुम् मिनश्-शाकिरीन (66) व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही वल्अर्ज़ु जमीअ़न् क़ब्-ज़तुहू यौमल्-क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम् बि-यमीनिही, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (67) व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-सअ़ि-क़ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु, सुम्-म नुफ़ि-ख़ फ़ीहि उख़्रा फ़-इज़ा हुम् क़ियामुंय्-यन्ज़ुरून (68) व अश्र-क़तिल्-अर्ज़ु बिनूरि रब्बिहा व वुज़िअ़ल्-किताबु व जी-अ बिन्नबिय्यी-न वश्शु-हदा-इ व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून (69) व वुफ़्फ़ि-यत् कुल्लु नफ़्सिम्-मा अ़मिलत् व हु-व

بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى
الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ
مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫
لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۫
وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ ع
قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ
عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ
مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖۗ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا
قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ
اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ
رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا

(झुठलाना किसी शुब्हे से न था, बल्कि) तूने तकब्बुर किया और काफ़िरों में (हमेशा) शामिल रहा। **(59)** और आप क़ियामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखेंगे जिन्होंने ख़ुदा पर झूठ बोला था,[1] क्या उन तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम नहीं है? **(60)** और जो लोग (शिर्क और कुफ़्र से) बचते थे, अल्लाह तआला उन लोगों को कामयाबी के साथ (जहन्नम से) नजात देगा। उनको (ज़रा भी) तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे ग़मगीन होंगे। (क्योंकि जन्नत में ग़म नहीं)। **(61)** अल्लाह ही पैदा करने वाला है हर चीज़ का, और वही हर चीज़ का निगहबान है। **(62)** (और) उसी के इख़्तियार में हैं आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ।[2] और जो लोग (इसपर भी) अल्लाह की आयतों को नहीं मानते वे बड़े घाटे में रहेंगे। **(63)** ◆

आप (उनके जवाब में) कह दीजिए कि ऐ जाहिलो! क्या फिर भी तुम मुझसे अल्लाह के ग़ैर की इबादत करने की फ़रमाइश करते हो? **(64)** और आपकी तरफ़ भी और जो पैग़म्बर आपसे पहले हो गुज़रे हैं उनकी तरफ़ भी यह (बात) वह्य में भेजी जा चुकी है कि ऐ आम मुख़ातब! अगर तू शिर्क करेगा तो तेरा किया कराया काम (सब) बरबाद हो जाएगा और तू घाटे में पड़ेगा। (तो ऐ मुख़ातब! कभी शिर्क मत करना) **(65)** बल्कि (हमेशा) अल्लाह ही की इबादत करना और (अल्लाह तआला का) शुक्रगुज़ार रहना।[3] **(66)** और (अफ़सोस है कि) उन लोगों ने ख़ुदा तआला की कुछ अज़्मत न की जैसी अज़्मत करना चाहिए थी,[4] हालाँकि (उसकी वह शान है कि) सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी क़ियामत के दिन, और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में, वह पाक और बरतर है उनके शिर्क से। **(67)** और (क़ियामत के दिन) सूर में फूँक मारी जाएगी, सो तमाम आसमान और ज़मीन वालों के होश उड़ जाएँगे मगर जिसको ख़ुदा चाहे, फिर उस (सूर) में दोबारा फूँक मारी जाएगी तो एक ही बार में सब-के-सब खड़े हो जाएँगे (और चारों तरफ़) देखने लगेंगे। **(68)** और ज़मीन अपने रब के नूर (जिसकी कैफ़ियत नाक़ाबिले बयान है) से रोशन हो जाएगी और (सबका) नामा-ए-आमाल (हर एक के सामने) रख दिया जाएगा, और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किए जाएँगे, और सब में ठीक-ठीक फ़ैसला किया जाएगा, और उनपर ज़रा ज़ुल्म न होगा। **(69)** और हर शख़्स को उसके

---

1. इसमें दो चीज़ें आ गईं। जो बात ख़ुदा ने नहीं कही, जैसे शिर्क वग़ैरह उसको कहना कि ख़ुदा ने कहा है। और जो बात ख़ुदा ने कही जैसे क़ुरआन, उसको कहना कि ख़ुदा ने नहीं कही।

2. यानी पहली बार पैदा करने वाला भी वही और हिफ़ाज़त करने वाला भी वही और तसर्रुफ़ करने वाला भी वही। पस ऐसी सिफ़ाते कमाल का रखने वाला शरीक से भी पाक होगा और जज़ा व सज़ा का भी मालिक होगा।

3. यह शिर्क के बुरा होने की दलील है कि वह सख़्त दर्जे की नाशुक्री है। पस जब नबियों को शिर्क का बुरा होना वह्य से मालूम है और दूसरों तक उसके पहुँचाने का हुक्म है, तो उनसे शिर्क का होना कैसे मुम्किन है? और आप भी उन्हीं यानी अम्बिया में से हैं। तो ऐसी हवस रखना उनके दिमाग़ का ख़लल है।

4. अज़्मत के हक़ से मुराद तौहीद है, और उसके इनकार करने से मुराद शिर्क है।

अअ्लमु बिमा यफ़्अलून (70) ❖

व सीक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म जु-मरन्, हत्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व क़ा-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा अलम् यअ्तिकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यत्लू-न अलैकुम् आयाति रब्बिकुम् व युन्ज़िरू-नकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा, क़ालू बला व लाकिन् हक़्क़त् कलि-मतुल्-अ़ज़ाबि अ़लल्-काफ़िरीन (71) क़ीलद्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा फ़-बिअ्-स मस्वल्-मु-तकब्बिरीन (72) व सीक़ल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् इलल्-जन्नति जु-मरन्, हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व क़ा-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा सलामुन् अ़लैकुम् तिब्तुम् फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन (73) व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स-द-क़ना वअ्दहू व और-सनल्-अर्-ज़ न-तबव्व-उ मिनल्-जन्नति हैसु नशा-उ फ़निअ्-म अज्रुल्-आ़मिलीन (74) व तरल्-मलाइ-क-त हाफ़्फ़ी-न मिन् हौलिल्-अ़र्शि युसब्बिहू-न बि-हम्दि रब्बिहिम् व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व क़ीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन ◆ (75) ❖

فمن اظلم ٢٤ ٤٦١ المؤمن ٤٠

عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى
جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ
وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ
الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ
اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۝ وَقَالُوا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ
مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاۗءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ وَتَرَى
الْمَلٰۗىِٕكَةَ حَاۗفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ خَمْسٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

حٰمۗ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ
الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِي الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ

منزل ٦

40 सूरतुल्-मुअ्मिनि 60

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5213 अक्षर, 1242 शब्द, 85 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् (1) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (2) ग़ाफ़िरिज़्-ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल्-अ़िक़ाबि ज़ित्तौलि, ला इला-ह इल्ला हु-व, इलैहिल्-मसीर (3) मा

आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा,[1] और वह सबके कामों को ख़ूब जानता है। (70) ❖

और जो काफ़िर हैं वे जहन्नम की तरफ़ गिरोह-गिरोह बनाकर हाँके जाएँगे,[2] यहाँ तक कि जब दोज़ख़ के पास पहुँचेंगे तो (उस वक़्त) उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उनसे दोज़ख़ के मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते, मलामत के तौर पर) कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही लोगों में से पैग़म्बर नहीं आए थे? जो तुमको तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाया करते थे और तुमको तुम्हारे इस दिन के पेश आने से डराया करते थे। काफ़िर कहेंगे कि हाँ! लेकिन अ़ज़ाब का वायदा काफ़िरों पर पूरा होकर रहा।[3] (71) (फिर उनसे) कहा जाएगा (यानी फ़रिश्ते कहेंगे) कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो (और) हमेशा उसमें रहा करो। ग़रज़ (ख़ुदा के अहकाम से) तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है।[4] (72) और जो लोग अपने रब से डरते थे, वे गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ रवाना किए जाएँगे।[5] यहाँ तक कि जब उस (जन्नत) के पास पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े (पहले से) खुले हुए होंगे (ताकि ज़रा भी देर न लगे) और वहाँ के मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते) उनसे कहेंगे कि अस्सलामु अ़लैकुम! तुम मज़े में रहो, सो इस (जन्नत) में हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ। (73) और (दाख़िल होकर) कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला का (लाख-लाख) शुक्र है जिसने हमसे अपना वायदा सच्चा किया और हमको इस सरज़मीन का मालिक बना दिया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें ठहरें।[6] ग़रज़ (नेक) अ़मल करने का अच्छा बदला है।[7] (74) और आप फ़रिश्तों को दखेंगे कि (हिसाब के इज्लास के वक़्त) अ़र्श के इर्द-गिर्द घेरा बनाए होंगे (और) अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करते होंगे, और तमाम बन्दों में ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी ख़ूबियाँ ख़ुदा ही को लायक़ हैं जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है। ◆ (75) ❖

40 सूरः मुअ्मिन 60

सूरः मुअ्मिन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 85 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम्।[8] (इसके मायने अल्लाह ही को मालूम हैं) (1) यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है, हर चीज़ का जानने वाला है। (2) गुनाह का बख़्शने वाला है और तौबा का क़बूल करने वाला है। सख़्त सज़ा देने वाला है, क़ुदरत वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसी के पास (सबको) जाना है। (3) अल्लाह तआ़ला की इन आयतों में (यानी क़ुरआन में) वही लोग (नाहक़ के) झगड़े

---

1. नेक आमाल में बदले के पूरा होने से मक़सूद कमी का इनकार करना है, और बुरे आमाल में बदले के पूरा होने से ज़्यादती का इनकार करना मक़सूद है।
2. गिरोह-गिरोह इसलिए कि कुफ़्र के दर्जे और क़िस्में अलग-अलग हैं। पस एक तरह के काफ़िरों का एक-एक गिरोह होगा।
3. यह माज़िरत नहीं इक़रार है, कि पहुँचाने के बावजूद हमने कुफ़्र किया, और काफ़िरों के लिए जिस अ़ज़ाब का वायदा किया गया था वह हमारे सामने आया। वाक़ई हमारी नालायक़ी है।
4. फिर उस हुक्म के बाद वे जहन्नम में दाख़िल किए जाएँगे और दरवाज़े बन्द कर दिए जाएँगे।
5. यानी जिस दर्जे का तक़्वा होगा उस दर्जे के मुत्तक़ी एक जगह कर दिए जाएँगे।
6. यानी हर शख़्स को ख़ूब फ़राग़त की जगह मिली है।
7. यह या तो उन्हीं का कलाम हो, या अल्लाह तआ़ला का हो।
8. यहाँ से सूरः अहक़ाफ़ तक लगातार सात सूरतें 'हा-मीम्' से शुरू हुई हैं। और अ़जीब लतीफ़ा है कि सातों क़ुरआन मजीद के अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल शुदा होने और वह्य किए जाने के मज़मून से शुरू हुई हैं।

युजादिलु फ़ी आयातिल्लाहि इल्लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ला यग़्रुर्-क त-क़ल्लुबुहुम् फ़िल्-बिलाद (4) कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्वल्-अह्ज़ाबु मिम्बअ्दिहिम् व हम्मत् कुल्लु उम्म-तिम्-बि-रसूलिहिम् लियअ्ख़ुज़ूहु व जादलू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्-क फ़-अख़ज़्तुहुम् फ़कै-फ़ का-न अ़िक़ाब (5) व कज़ालि-क हक़्क़त् कलि-मतु रब्बि-क अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् अस्हाबुन्-नार ✣ (6) अल्लज़ी-न यह्मिलूनल्-अ़र्-श व मन् हौलहू युसब्बिहू-न बिहम्दि-रब्बिहिम् व युअ्मिनू-न बिही व यस्तग़्फ़िरू-न लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना वसिअ्-त कुल्-ल शैइर्रह्म-तंव्-व अ़िल्मन् फ़ग़्फ़िर् लिल्लज़ी-न ताबू वत्त-बअू सबील-क वक़िहिम् अ़ज़ाबल्-जहीम (7) रब्बना व अद्ख़िल्हुम् जन्नाति अ़द्नि-निल्लती वअ़त्त-हुम् व मन् स-ल-ह मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम्, इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल् हकीम (8) वक़िहिमुस्सय्यिआति, व मन् तक़िस्सय्यिआति यौमइज़िन् फ़-क़द् रहिम्-तहू, व ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (9) ◆

फ़मन् अज़्लम २४ ٧٢٢ المؤمن ٤٠

كفروا فلا يغررك تقلبهم في البلاد ۝ كذبت قبلهم قوم
نوح والأحزاب من بعدهم وهمت كل أمة برسولهم
ليأخذوه وجادلوا بالباطل ليدحضوا به الحق فأخذتهم
فكيف كان عقاب ۝ وكذلك حقت كلمت ربك على الذين
كفروا أنهم أصحب النار ۝ الذين يحملون العرش ومن
حوله يسبحون بحمد ربهم ويؤمنون به ويستغفرون للذين
آمنوا ربنا وسعت كل شيء رحمة وعلما فاغفر للذين
تابوا واتبعوا سبيلك وقهم عذاب الجحيم ۝ ربنا وأدخلهم
جنت عدن التي وعدتهم ومن صلح من آبائهم و
أزواجهم وذريتهم إنك أنت العزيز الحكيم ۝ وقهم
السيئات ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته وذلك
هو الفوز العظيم ۝ إن الذين كفروا ينادون لمقت الله
أكبر من مقتكم أنفسكم إذ تدعون إلى الإيمان فتكفرون ۝
قالوا ربنا أمتنا اثنتين وأحييتنا اثنتين فاعترفنا بذنوبنا
فهل إلى خروج من سبيل ۝ ذلكم بأنه إذا دعي الله وحده
كفرتم وإن يشرك به تؤمنوا فالحكم لله العلي الكبير ۝ هو

منزل ٦

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युनादौ-न ल-मक़्तुल्लाहि अक्बरु मिम्मक़्तिकुम् अन्फ़ु-सकुम् इज़् तुद्औ-न इलल्-ईमानि फ़-तक्फ़ुरून (10) क़ालू रब्बना अ-मत्त-नस्नतैनि व अह्यै-तनस्नतैनि फ़अ्-तरफ़्ना बिज़ुनूबिना फ़-हल् इला ख़ुरूजिम् मिन् सबील (11) ज़ालिकुम् बिअन्नहू इज़ा दुअ़ि-यल्लाहु वह्दहू क-फ़र्तुम् व इंय्युश्-रक् बिही तुअ्मिनू, फ़ल्-हुक्मु लिल्लाहिल् अ़लिय्यिल्-कबीर (12) हुवल्लज़ी युरीकुम् आयातिही व युनज़्ज़िलु लकुम् मिनस्समा-इ रिज़्क़न्, व मा य-तज़क्करु इल्ला

निकालते हैं जो (इसके) इनकारी हैं, सो उन लोगों का शहरों में (अमन व अमान से) चलना-फिरना आपको शुब्हे में न डाले।[1] **(4)** उनसे पहले नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम ने और दूसरे गिरोहों ने भी जो उनके बाद हुए (जैसे आ़द व समूद वग़ैरह ने सच्चे दीन को) झुठलाया था, और हर उम्मत (में से जो लोग ईमान न लाए थे उन्होंने) अपने पैग़म्बर के गिरफ़्तार करने का इरादा किया और नाहक़ के झगड़े निकाले, ताकि उस नाहक़ से हक़ को बातिल कर दें, सो मैंने (आख़िर) उनपर पकड़ की, सो (देखो) मेरी तरफ़ से (उनको) कैसी सज़ा हुई। **(5)** और इसी तरह तमाम काफ़िरों पर आपके रब का यह क़ौल साबित हो चुका है कि वे लोग (आख़िरत में) दोज़ख़ी होंगे।[2] **(6)** जो फ़रिश्ते कि (अल्लाह के) अ़र्श को उठाए हुए हैं और जो फ़रिश्ते उसके इर्द-गिर्द हैं वे अपने रब की तस्बीह व तारीफ़ करते रहते हैं और उसपर ईमान रखते हैं, और ईमान वालों के लिए (इस तरह) इस्तिग़फ़ार किया करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपकी रहमत (जो कि आ़म है) और इल्म हर चीज़ को शामिल है,[3] सो उन लोगों को बख़्श दीजिए (जिन्होंने शिर्क और कुफ़्र से) तौबा कर ली और आपके रास्ते पर चलते हैं, और उनको जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लीजिए।[4] **(7)** ऐ हमारे परवर्दिगार! उनको हमेशा रहने की जन्नतों में जिनका आपने उनसे वायदा किया है, दाख़िल कर दीजिए, और उनके माँ-बाप और बीवियों और औलाद में जो (जन्नत के) लायक़ (यानी मोमिन) हों उनको भी दाख़िल कर दीजिए, बेशक आप ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं।[5] **(8)** और उनको (क़ियामत के दिन हर तरह की) तकलीफ़ों से बचाइए,[6] और आप जिसको उस दिन की तकलीफ़ों से बचा लें तो उसपर आपने (बहुत) मेहरबानी फ़रमाई और यह बड़ी कामयाबी है।[7] **(9)** ◆

जो लोग काफ़िर हुए (उस वक़्त) उनको पुकारा जाएगा कि जैसी तुमको (इस वक़्त) अपने आप से नफ़रत है, इससे बढ़कर ख़ुदा को (तुमसे) नफ़रत थी, जबकि तुम (दुनिया में) ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे फिर तुम नहीं मानते थे।[8] **(10)** वे लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने हमको दो बार मुर्दा रखा और दो बार ज़िन्दगी दी,[9] सो हम अपनी ख़ताओं का इक़रार करते हैं, तो क्या (यहाँ से) निकलने की कोई सूरत है? **(11)** वजह इसकी यह है कि जब सिर्फ़ अल्लाह का नाम लिया जाता था तो तुम इनकार करते थे, और अगर उसके साथ किसी को शरीक किया जाता था तो तुम मान लेते थे, सो (उसपर) यह फ़ैसला अल्लाह का है जो आ़लीशान (और) बड़े रुतबे वाला है।[10] **(12)** वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाता है, और (वही है

1. आपके इस ख़िताब (संबोधित किए जाने) से दूसरों को सुनाना मक़सूद है।
2. यानी यहाँ भी सज़ा हुई और वहाँ भी होगी। इसी तरह कुफ़्र के सबब इन मौजूदा काफ़िरों की भी पकड़ और सज़ा होने वाली है, चाहे दोनों आ़लम में हो या आख़िरत में।
3. पस ईमान वालों पर और ज़्यादा रहमत होगी।
4. जो कि मग़्फ़िरत का सबब है, क्योंकि अ़ज़ाब का सबब गुनाह हैं। गुनाहों के दूर होने से वह भी दूर हो जाएगा।
5. यानी आप मग़्फ़िरत पर क़ादिर हैं और हर एक के मुनासिब उसको दर्जा अ़ता फ़रमाते हैं।
6. अगरचे वे जहन्नम से हल्के हों जैसे क़ियामत के मैदान की परेशानियाँ।
7. यानी छोटे और बड़े अ़ज़ाब से मग़्फ़िरत और हिफ़ाज़त और जन्नत में दाख़िल होना बड़ी चीज़ है।
8. इस कहने से मक़सूद हसरत बढ़ाना और शर्मिन्दगी दिलाना है।
9. दो बार मुर्दा रखा। यानी एक बार पैदा होने से पहले जबकि बेजान चीज़ की हालत में थे, जिसमें परिचित जान नहीं होती। और दूसरी बार जिसको सब मौत कहते हैं। और दो बार ज़िन्दगी दी- यानी एक दुनिया की ज़िन्दगी और दूसरी आख़िरत की।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 846 पर)

मंय्युनीब (13) फ़द्अुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल्-काफ़िरून (14) रफ़ीअुद्-द-रजाति ज़ुल्अ़र्शि युल्क़िर्रू-ह मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही लि-युन्ज़ि-र यौमत्तलाक़ (15) यौ-म हुम् बारिज़ू-न, ला यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन्हुम् शैउन्, लि-मनिल्-मुल्कुल्-यौ-म, लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-क़ह्हार (16) अल्यौ-म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत्, ला ज़ुल्मल्-यौ-म, इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्-हिसाब (17) व अन्ज़िर्हुम् यौमल्-आज़ि-फ़ति इज़िल्-क़ुलूबु ल-दल्-हनाजिरि काज़िमी-न, मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् हमीमिंव्-व ला शफ़ीअ़िंय्-युता-अ़ु (18) यअ़्लमु ख़ाइ-नतल्-अअ़्युनि व मा तुख़्फ़िस्सुदूर (19) वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्हक़्क़ि वल्लज़ी-न यद्अ़ू-न मिन् दूनिही ला यक़्ज़ू-न बिशैइन्, इन्नल्ला-ह हुवस्समीअ़ुल्-बसीर (20) ❖

अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न कानू मिन् क़ब्लिहिम्, कानू हुम् अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्व-तंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनुबिहिम्, व मा का-न लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (21) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-क-फ़रू फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु, इन्नहू क़विय्युन् शदीदुल्-अ़िक़ाब (22) व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन (23) इला फ़िर्औ़-न व हामा-न व क़ारू-न फ़क़ालू साहिरुन् कज़्ज़ाब (24)

الذی یریکم ایته وینزل لکم من السماء رزقا وما یتذکر
الا من ینیب ﴿١٣﴾ فادعوا الله مخلصین له الدین ولو کره
الکفرون ﴿١٤﴾ رفیع الدرجت ذو العرش یلقی الروح من امره
علی من یشاء من عباده لینذر یوم التلاق ﴿١٥﴾ یوم هم بارزون
لا یخفی علی الله منهم شیء لمن الملك الیوم لله الواحد
القهار ﴿١٦﴾ الیوم تجزی کل نفس بما کسبت لا ظلم الیوم
ان الله سریع الحساب ﴿١٧﴾ وانذرهم یوم الازفة اذ القلوب
لدی الحناجر کظمین ما للظلمین من حمیم ولا شفیع
یطاع ﴿١٨﴾ یعلم خائنة الاعین وما تخفی الصدور ﴿١٩﴾ والله
یقضی بالحق والذین یدعون من دونه لا یقضون
بشیء ان الله هو السمیع البصیر ﴿٢٠﴾ اولم یسیروا فی
الارض فینظروا کیف کان عاقبة الذین کانوا من قبلهم
کانوا هم اشد منهم قوة واثارا فی الارض فاخذهم الله
بذنوبهم وما کان لهم من الله من واق ﴿٢١﴾ ذلك بانهم کانت
تاتیهم رسلهم بالبینت فکفروا فاخذهم الله انه قوی
شدید العقاب ﴿٢٢﴾ ولقد ارسلنا موسی بایتنا وسلطن مبین ﴿٢٣﴾

ع ١١ ٧

जो) आसमान से तुम्हारे लिए रिज़्क़ भेजता है। और सिर्फ़ वही शख़्स नसीहत क़ुबूल करता है जो (ख़ुदा की तरफ़) रुजू (करने का इरादा) करता है। **(13)** सो तुम लोग ख़ुदा को ख़ालिस एतिक़ाद करके पुकारो, अगरचे काफ़िरों को नागवार (ही) क्यों न हो। **(14)** वह बुलन्द और आला दर्जों वाला है, वह अ़र्श का मालिक है, वह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है वह्य यानी अपना हुक्म भेजता है, ताकि (वह वह्य वाला लोगों को) जमा होने के दिन (यानी क़ियामत के दिन) से डराए। **(15)** जिस दिन सब लोग (ख़ुदा के) सामने आ मौजूद होंगे, (कि) उनकी बात ख़ुदा से छुपी न रहेगी। आज के दिन किसकी हुकूमत होगी? बस अल्लाह ही की होगी जो यकता (और) ग़ालिब है। **(16)** आज हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाएगा, आज (किसी पर) ज़ुल्म न होगा, अल्लाह तआ़ला बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। **(17)** और आप उन लोगों को एक क़रीब आने वाले मुसीबत के दिन से (जो कि क़ियामत का दिन है) डराइए, जिस वक़्त कलेजे मुँह को आ जाएँगे (और ग़म से) घुट-घुट जाएँगे। (उस दिन) ज़ालिमों का न कोई दिली दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी होगा जिसका कहा माना जाए। **(18)** (वह ऐसा है कि) आँखों की चोरी को जानता है, और उन (बातों) को भी जो सीनों में छुपी हैं।[1] **(19)** और अल्लाह तआ़ला ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा। और ख़ुदा के सिवा जिनको ये लोग पुकारा करते हैं, वे किसी तरह का भी फ़ैसला नहीं कर सकते, (क्योंकि) अल्लाह ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।[2] **(20)** ❖

क्या उन लोगों ने मुल्क में चल-फिरकर नहीं देखा कि जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका क्या अन्जाम हुआ, वे लोग ताक़त और उन निशानों में जो कि ज़मीन पर छोड़ गए हैं, उनसे बहुत ज़्यादा थे। सो उनके गुनाहों की वजह से ख़ुदा ने उनपर पकड़ फ़रमाई,[3] और उनका कोई ख़ुदा (के अ़ज़ाब) से बचाने वाला न हुआ। **(21)** यह (पकड़) इस वजह से हुई कि उनके पास उनके रसूल रोशन दलीलें[4] लेकर आते रहे, फिर उन्होंने न माना, तो अल्लाह ने उनपर पकड़ फ़रमाई, बेशक वह बड़ी कुव्वत वाला, सख़्त सज़ा देने वाला है।[5] **(22)** और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को अपने अहकाम और खुली दलील के साथ **(23)** फ़िरऔ़न

(पृष्ठ 844 का शेष) फ़ायदाः ये सब चार हालतें हुईं। अगरचे इनमें इनकार एक ही का था और उसी का इक़रार इस वक़्त मक़सूद है, लेकिन बक़िया तीन हालतें इसलिए ज़िक्र कर दीं कि वे यक़ीनी थीं। पस मक़सूद यह होगा कि यह चौथी भी उन तीनों के जैसे यक़ीनी और साबित है।

10. यानी चूँकि हक़ तआ़ला की बुलन्द शान और बड़ाई के एतिबार से यह बड़ा जुर्म था, इसलिए फ़ैसले में सज़ा भी बड़ी तजवीज़ हुई, यानी हमेशा उसमें गिरफ़्तार रहना।

1. मतलब यह कि उसको बन्दों के तमाम आमाल की जानकारी है जिसपर बदले का दिया जाना मौक़ूफ़ है।

2. इससे दो बातें साबित हुईं- एक ग़ैरे-ख़ुदा का मदद करने से आजिज़ होना और दूसरे ख़ुदाई में किसी का शरीक न होना।

3. यानी अ़ज़ाब नाज़िल किया।

4. यानी मोजिज़े (चमत्कार), जो कि नुबुव्वत की दलीलें हैं।

5. पस जब पकड़ की वजह कुफ़्र और शिर्क है, जो उनमें भी मुश्तरक है, फिर ये पकड़ से कैसे महफ़ूज़ हैं? चाहे दोनों जहाँ में, चाहे आख़िरत में।

फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्हक़्क़ि मिन् अिन्दिना क़ालुक़्तुलू अब्नाअल्लज़ी-न आमनू म-अहू वस्तह़्यू निसा-अहुम्, व मा कैदुल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल **(25)** व क़ा-ल फ़िर्‌औनु ज़रूनी अक़्तुल् मूसा वल्यद्‌अु रब्बहू इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यु-बद्दि-ल दी-नकुम् औ अंय्युज़्हि-र फ़िल्‌अर्ज़िल्-फ़साद **(26)** व क़ा-ल मूसा इन्नी उ़ज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् मिन् कुल्लि मु-तकब्बिरिल्-ला युअ्मिनु बियौमिल्-हिसाब **(27)** ❖

व क़ा-ल रजुलुम्-मुअ्मिनुम्-मिन् आलि फ़िर्‌औ-न यक्तुमु ईमानहू अ-तक़्तुलू-न रजुलन् अंय्यक़ू-ल रब्बियल्लाहु व क़द् जा-अकुम् बिल्-बय्यिनाति मिर्रब्बिकुम्, व इंय्यकु काज़िबन् फ़-अलैहि कज़िबुहू व इंय्यकु सादिक़ंय्-युसिब्कुम् बअ्‌ज़ुल्लज़ी यअ़िदुकुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व मुस्रिफ़ुन् कज़्ज़ाब **(28)** या क़ौमि लकुमुल्-मुल्कुल्-यौ-म ज़ाहिरी-न फ़िल्‌अर्ज़ि फ़-मंय्यन्सुरुना मिम्बअ्‌सिल्लाहि इन् जा-अना, क़ा-ल फ़िर्‌औनु मा उरीकुम् इल्ला मा अरा व मा अह्दीकुम् इल्ला सबीलर्-रशाद **(29)** व क़ालल्लज़ी आम-न या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् मिस्-ल यौमिल्-अह्ज़ाब **(30)** मिस्-ल दअ्‌बि क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द वल्लज़ी-न मिम्बअ्‌दिहिम्, व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्-लिल्‌अ़िबाद **(31)** व या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु

المؤمن ٤٠ — فمن اظلم ٢٤

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝ فَلَمَّا
جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝
وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ
أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝ وَقَالَ
مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ
بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ
إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ وَإِنْ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِنْ
يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يَا قَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ
فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا ۚ قَالَ
فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ
الرَّشَادِ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ
يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝ مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ
مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعِبَادِ ۝ وَيَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ

منزل

और हामान और क़ारून के पास भेजा, तो उन लोगों ने कहा कि यह जादूगर (और) झूठा है।[1] (24) फिर (उसके बाद) जब वह (आम) लोगों के पास हक़ दीन जो कि हमारी तरफ़ से था, लेकर आए तो उन (ज़िक्र शुदा) लोगों ने (मश्विरे के तौर पर) कहा कि जो लोग उनके साथ ईमान ले आए हैं उनके बेटों को क़त्ल कर डालो और उनकी लड़कियों को ज़िन्दा रहने दो, और उन काफ़िरों की तदबीर बिलकुल बेअसर रही।[2] (25) और फ़िरऔन ने (दरबारियों से) कहा कि मुझको छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल कर डालूँ, और उसको चाहिए कि अपने परवर्दिगार को (मदद के लिए) पुकारे, मुझको अन्देशा है कि वह (कहीं) तुम्हारा दीन (न) बदल डाले, या मुल्क में कोई ख़राबी (न) फैला दे। (26) और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने (जब यह बात सुनी तो) कहा कि मैं अपने और तुम्हारे (यानी सबके) परवर्दिगार की पनाह लेता हूँ हर तकब्बुर करने वाले शख़्स (की बुराई) से, जो हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं रखता। (27) ❖

और (उस मश्विरे की मज्लिस में) एक मोमिन शख़्स ने जो कि फ़िरऔन के ख़ानदान से थे, (और अब तक) अपना ईमान छुपाकर रखे हुए थे, कहा क्या तुम एक शख़्स को (सिर्फ़) इस बात पर क़त्ल करते हो कि वह कहता है कि मेरा परवर्दिगार अल्लाह है, हालाँकि वह तुम्हारे रब की तरफ़ से (इस दावे पर) दलीलें (भी) लेकर आया है।[3] और अगर (मान लो) वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा, और अगर वह सच्चा हुआ तो वह जो कुछ पेशीनगोई "यानी भविष्यवाणी" कर रहा है उसमें से कुछ तो तुमपर (ज़रूर ही) पड़ेगा।[4] अल्लाह तआला ऐसे शख़्स को मक़सूद तक नहीं पहुँचाता जो (अपनी) हद से गुज़र जाने वाला, बहुत झूठ बोलने वाला हो। (28) ऐ मेरे भाईयो! आज तो तुम्हारी हुकूमत है कि इस सरज़मीन में तुम हाकिम हो, सो ख़ुदा के अज़ाब में हमारी कौन मदद करेगा अगर (उनके क़त्ल करने से) वह हमपर आ पड़ा? फ़िरऔन ने (यह तक़रीर सुनकर जवाब में) कहा कि मैं तुमको वही राय दूँगा जो खुद समझ रहा हूँ (कि उनका क़त्ल ही मुनासिब है) और मैं तुमको बिलकुल मस्लहत का तरीक़ा बतलाता हूँ। (29) और उस मोमिन ने कहा[5] साथियो! मुझको तुम्हारे बारे में और उम्मतों के जैसे बुरे दिन का अन्देशा है। (30) जैसा कि क़ौमे नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों (यानी क़ौमे लूत वग़ैरह) का हाल हुआ था, और अल्लाह तो बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नहीं चाहता।[6] (31) और साहिबो! मुझको तुम्हारे बारे में उस दिन का अन्देशा है

1. जादूगर मोजिज़ा दिखलाने में कहा, और झूठा नुबुव्वत व अहकाम के दावे में कहा।
2. चुनाँचे आख़िर में मूसा अलैहिस्सलाम ग़ालिब आए।
3. यानी मोजिज़े भी दिखलाता है जो नुबुव्वत के दावे में सच्चा होने और अल्लाह की तरफ़ से तौहीद की तब्लीग़ के लिए मुक़र्रर किए जाने की दलील है। और दलील मौजूद होते हुए दलील रखने वाले की मुख़ालफ़त करना, और मुख़ालफ़त भी इस दर्जे की कि क़त्ल का इरादा किया जाए, यह निहायत नामुनासिब है।
4. ग़रज़ उसके झूठे होने की सूरत में क़त्ल बेकार और उसके सच्चा होने की सूरत में नुक़सानदेह। फिर ऐसा काम क्यों किया जाए?
5. उस मोमिन ने जब देखा कि नसीहत में मुख़ातब के ख़्याल की रियायत यानी नरमी इख़्तियार करने से काम नहीं चलता, तो अब धमकाने और डराने से काम लिया।
6. यह दुनिया के अज़ाब से डराना था। आगे आख़िरत के अज़ाब से डराना है।

अ़लैकुम् यौमत्तनाद **(32)** यौ-म तुवल्लू-न मुद्बिरी-न मा लकुम् मिनल्लाहि मिन् आ़सिमिन् व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद **(33)** व ल-क़द् जा-अकुम् यूसुफ़ु मिन् क़ब्लु बिल्बय्यिनाति फ़मा ज़िल्तुम् फ़ी शक्किम् मिम्मा जा-अकुम् बिही, हत्ता इज़ा ह-ल-क क़ुल्तुम् लंय्यब्-अ़सल्लाहु मिम्बअ़्दिही रसूलन्, कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मन् हु-व मुस्रिफ़ुम्-मुर्ताब **(34)** अल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम्, कबु-र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि व अ़िन्दल्लज़ी-न आमनू, कज़ालि-क यत्बअ़ुल्लाहु अ़ला कुल्लि क़ल्बि मु-तकब्बिरिन् जब्बार **(35)** व क़ा-ल फ़िर्औ़नु या हामानुब्नि-ली सर्हल्-लअ़ल्ली अब्लुग़ुल्-अस्बाब **(36)** अस्बाबस्समावाति फ़-अत्तलि-अ़ इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू काज़िबन्, व कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिफ़िर्औ़-न सू-उ अ़-मलिही व सुद्-द अ़निस्सबीलि, व मा कैदु फ़िर्औ़-न इल्ला फ़ी तबाब **(37)** ❖

فمن اظلم ٢٤ ۔ ٤٢٥ ۔ المؤمن ٤٠

عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
مِنْ عَاصِمٍ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ
يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ
حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا كَذٰلِكَ
يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ
اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾
وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾
اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا وَكَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْۤءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ وَمَا كَيْدُ
فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ
اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ
وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى
اِلَّا مِثْلَهَا وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَ
يٰقَوْمِ مَا لِيْۤ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

منزل ٦

व क़ालल्लज़ी आम-न या क़ौमित्तबिअ़ूनि अह्दिकुम् सबीलर्रशाद **(38)** या क़ौमि इन्नमा हाज़िहिल्-हयातुद्दुन्या मताअ़ुंव्-व इन्नल्-आख़िर-त हि-य दारुल्-क़रार **(39)** मन् अ़मि-ल सय्यि-अतन् फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व मन् अ़मि-ल सालिहम्-मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनून् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त युर्ज़क़ू-न फ़ीहा बिग़ैरि हिसाब **(40)** व या क़ौमि मा ली अद्अ़ूकुम् इलन्नजाति व तद्अ़ूननी इलन्नार ● **(41)** तद्अ़ूननी

जिसमें कसरत से आवाज़ें दी जाएँगी।[1] (32) जिस दिन (हिसाब की जगह से) पीठ फेर कर (दोज़ख़ की तरफ़) लौटोगे (और उस वक़्त) तुमको ख़ुदा तआ़ला से कोई बचाने वाला न होगा, और जिसको ख़ुदा ही गुमराह करे उसका कोई हिदायत करने वाला नहीं। (33) और इससे पहले तुम लोगों के पास यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम नुबुव्वत और तौहीद की) दलीलें लेकर आ चुके हैं। सो तुम उन उमूर में भी बराबर शक ही में रहे जो वह तुम्हारे पास लेकर आए थे, यहाँ तक कि जब उनकी वफ़ात हो गई तो तुम लोग कहने लगे कि बस अब अल्लाह किसी रसूल को न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह तआ़ला आपे से बाहर हो जाने वालों (और) शुब्हात में गिरफ़्तार रहने वालों को ग़लती में डाले रखता है। (34) जो अपने पास मौजूद बिना किसी सनद के ख़ुदा की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं, उस (उल्टी बहस) से ख़ुदा तआ़ला को भी बड़ी नफ़रत है और मोमिनों को भी। (और) इसी तरह अल्लाह तआ़ला हर ग़ुरूर करने वाले ज़ालिम के पूरे दिल पर मुहर कर देता है।[2] (35) और फ़िरऔ़न ने कहा, ऐ हामान! मेरे वास्ते एक ऊँची इमारत बनवाओ, शायद मैं आसमान पर जाने की राहों तक पहुँच जाऊँ। (36) फिर (वहाँ जाकर) मूसा के ख़ुदा को देखूँ-भालूँ और मैं तो मूसा को झूठा ही समझता हूँ। और इसी तरह फ़िरऔ़न के (और) बुरे काम भी उसको अच्छे मालूम हुए थे और (सीधे) रास्ते से रुक गया, और फ़िरऔ़न की (हर) तदबीर बेकार ही गई। (37) ❖

और उस मोमिन ने कहा कि ऐ भाइयो! तुम मेरी राह पर चलो, मैं तुमको ठीक-ठीक रास्ता बतलाता हूँ।[3] (38) ऐ भाइयो! यह दुनियावी ज़िन्दगानी सिर्फ़ चन्द दिन का नफ़ा है और (असल) ठहरने का मक़ाम तो आख़िरत है। (39) (जहाँ बदले का यह क़ानून है कि) जो शख़्स गुनाह करता है उसको तो बराबर-सराबर ही बदला मिलता है, और जो नेक काम करता है, चाहे मर्द हो या औ़रत बशर्ते कि मोमिन हो, ऐसे लोग जन्नत में जाएँगे (और वहाँ) बेहिसाब उनको रिज़्क़ मिलेगा। (40) और ऐ मेरे भाइयो! यह क्या बात है कि मैं तो तुमको नजात (के रास्ते) की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझको दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हो? ● (41) (यानी) तुम मुझको इस बात की तरफ़ बुलाते हो कि मैं ख़ुदा के साथ कुफ़्र करूँ और ऐसी चीज़ों को उसका साझी बनाऊँ जिस (के साझी होने) की मेरे पास कोई भी दलील नहीं, और मैं तुमको गुनाहों को माफ़ करने वाले,

1. यानी वह दिन बड़े-बड़े वाक़िआ़त पर मुश्तमिल है, क्योंकि आवाज़ों का ज़्यादा होना वाक़िआ़त के अहम और बड़ा होने में होता है।

2. इसलिए इसमें हक़ के समझने की गुन्जाइश बिलकुल नहीं रहती।

फ़ायदाः यह तक़रीर उन मोमिन बुज़ुर्ग की थी। और इस तक़रीर से उन बुज़ुर्ग का ईमान का छुपाना जाता रहा।

3. यानी सही रास्ता मेरा बतलाया हुआ रास्ता है न कि फ़िरऔ़न का रास्ता।

लि-अक्फ़ु-र बिल्लाहि व उशिर-क बिही मा लै-स ली बिही अिल्मुंव्-व अ-न अद्अूकुम् इलल् अ़ज़ीज़िल्-ग़फ़्फ़ार (42) ला ज-र-म अन्नमा तद्अूननी इलैहि लै-स लहू दअ्-वतुन् फ़िद्दुन्या व ला फ़िल्-आख़िरति व अन्-न मरद्-दना इलल्लाहि व अन्नल्-मुस्रिफ़ी-न हुम् अस्हाबुन्नार (43) फ़-सतज़्कुरू-न मा अक़ूलु लकुम् व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाहि, इन्नल्ला-ह बसीरुम्-बिल्अिबाद (44)

फ़-वक़ाहुल्लाहु सय्यिआति मा म-करू व हा-क़ बि-आलि फ़िर्औ़-न सूउल्-अ़ज़ाब (45) अन्नारु युअ्-रज़ू-न अ़लैहा ग़ुदुव्वंव्-व अ़शिय्यन् व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु, अद्ख़िलू आ-ल फ़िर्औ़-न अशद्दल्-अ़ज़ाब (46) व इज़् य-तहाज्जू-न फ़िन्नारि फ-यक़ूलुज़्-ज़ु-अ़फ़ा-उ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-बअ़न् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अ़न्ना नसीबम्-मिनन्नार (47) क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुल्लुन् फ़ीहा इन्नल्ला-ह क़द् ह-क-म बैनल्- अिबाद (48) व क़ालल्लज़ी-न फ़िन्नारि लि-ख़ा-ज़-नति जहन्न-मद्अू रब्बकुम् युख़फ़्फ़िफ़् अ़न्ना यौमम् मिनल्-अ़ज़ाब (49) क़ालू अ-व लम् तकु तअ्तीकुम् रुसुलुकुम् बिल्बय्यिनाति, क़ालू बला, क़ालू फ़द्अू व मा दुआउल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल (50) ❖

تدعونني لاكفر بالله واشرك به ما ليس لي به علم وانا
ادعوكم الى العزيز الغفار ﴿۴۲﴾ لا جرم انما تدعونني اليه ليس
له دعوة في الدنيا ولا في الاخرة وان مردنا الى الله وان
المسرفين هم اصحب النار ﴿۴۳﴾ فستذكرون ما اقول لكم
وافوض امري الى الله ان الله بصير بالعباد ﴿۴۴﴾ فوقىه
الله سيات ما مكروا وحاق بال فرعون سوء العذاب ﴿۴۵﴾
النار يعرضون عليها غدوا وعشيا ويوم تقوم الساعة
ادخلوا ال فرعون اشد العذاب ﴿۴۶﴾ واذ يتحاجون في النار
فيقول الضعفؤا للذين استكبروا انا كنا لكم تبعا فهل
انتم مغنون عنا نصيبا من النار ﴿۴۷﴾ قال الذين استكبروا
انا كل فيها ان الله قد حكم بين العباد ﴿۴۸﴾ وقال الذين
في النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف عنا يوما من
العذاب ﴿۴۹﴾ قالوا اولم تك تاتيكم رسلكم بالبينت قالوا
بلى قالوا فادعوا وما دعؤا الكفرين الا في ضلل ﴿۵۰﴾ انا
لننصر رسلنا والذين امنوا في الحيوة الدنيا ويوم يقوم
الاشهاد ﴿۵۱﴾ يوم لا ينفع الظلمين معذرتهم ولهم اللعنة

इन्ना ल-नन्सुरु रुसु-लना वल्लज़ी-न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौ-म यक़ूमुल्-अश्हाद (51) यौ-म ला यन्फ़अुज़्ज़ालिमी-न मअ्ज़ि-रतुहुम् व लहुमुल्-लअ्-नतु व लहुम् सूउद्-दार (52) व ल-क़द् आतैना मूसल्हुदा व औरस्ना बनी इस्राईलल्-किताब (53)

ज़बरदस्त ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूँ। **(42)** यक़ीनी बात है कि तुम जिस चीज़ (की इबादत) की तरफ़ मुझको बुलाते हो वह न तो दुनिया ही में पुकारे जाने के लायक़ है और न आख़िरत ही में, और (यक़ीनी बात है कि) हम सबको ख़ुदा तआ़ला के पास जाना है। और जो लोग (बन्दगी के) दायरे से निकल रहे हैं वे सब दोज़ख़ी होंगे। **(43)** सो आगे चलकर तुम मेरी बात को याद करोगे, और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। ख़ुदा तआ़ला सब बन्दों का निगराँ है। **(44)** फिर ख़ुदा तआ़ला ने उस (मोमिन) को उन लोगों की बुरी तदबीरों से महफ़ूज़ रखा, और फ़िरऔ़न वालों पर (मय फ़िरऔ़न के) तकलीफ़ वाला अ़ज़ाब नाज़िल हुआ (जिसका आगे बयान है कि) **(45)** वे लोग (बरज़ख़ में) सुबह व शाम आग के सामने लाए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी (हुक्म होगा कि) फ़िरऔ़न वालों को (मय फ़िरऔ़न के) निहायत सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करो।[1] **(46)** और जबकि कुफ़्फ़ार दोज़ख़ में एक-दूसरे से झगड़ेंगे तो कम दर्जे के लोग (यानी पैरवी करने वाले) बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे कि हम (दुनिया में) तुम्हारे ताबे थे, सो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो?[2] **(47)** वे बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही दोज़ख़ में हैं,[3] अल्लाह तआ़ला बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर चुका।[4] **(48)** और (उसके बाद) जितने लोग दोज़ख़ में होंगे, जहन्नम के ज़िम्मेदार फ़रिश्तों से (दरख़्वास्त के तौर पर) कहेंगे कि तुम ही अपने परवर्दिगार से दुआ़ क कि किसी दिन तो हमसे अ़ज़ाब हल्का कर दे।[5] **(49)** फ़रिश्ते कहेंगे कि (यह बतलाओ) क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मोजिज़े लेकर नहीं आते रहे थे? दोज़ख़ी कहेंगे कि हाँ, आते तो रहे थे। फ़रिश्ते कहेंगे कि फिर तुम ही दुआ़ करो और काफ़िरों की दुआ़ बिलकुल बेअसर है। **(50)** ❖

हम अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की दुनियावी ज़िन्दगानी में भी मदद करते हैं और उस दिन भी जिसमें गवाही देने वाले (यानी फ़रिश्ते जो कि आमाल नामे लिखते थे) "मदद करेंगे"।[6] **(51)** जिस दिन कि

---

1. इन आयतों से बरज़ख़ (यानी मरने के बाद और क़ियामत के आने से पहले के ज़माने) का अ़ज़ाब साबित होता है।

2. यानी जब तुम हमसे अपनी पैरवी कराते थे तो अब तुमको हमारी मदद करनी चाहिए।

3. यानी जैसे तुम दोज़ख़ में हो हम भी दोज़ख़ में हैं। सो हमको अगर मदद करने की कुछ क़ुदरत होती तो पहले अपनी ही फ़िक्र करते। जब अपने ही से अ़ज़ाब दूर नहीं कर सकते तो तुमसे क्या दूर करेंगे।

4. अब उसके ख़िलाफ़ गुमान नहीं, इस फ़ैसले में हम सब दोज़ख़ी ठहरे, अब क्या होता है।

5. यानी इसकी तो क्या उम्मीद करें कि अ़ज़ाब बिलकुल हट जाए या हमेशा के लिए हल्का हो जाए, मगर ख़ैर एक ही दिन के लिए हल्का हो जाए।

6. इससे क़ियामत का दिन मुराद है।

हुदंव्-व ज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब **(54)** फ़स्बिर् इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-वस्तग़्फ़िर् लि-ज़म्बि-क व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क बिल्अशिय्यि वल्-इब्कार **(55)** इन्नल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् इन् फ़ी सुदूरिहिम् इल्ला किब्रुम्-मा हुम् बिबालिग़ीहि फ़स्तअिज़् बिल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअुल्-बसीर **(56)** ल-ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि अक्बरु मिन् ख़ल्क़िन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून **(57)** व मा यस्तविल्-अअ्मा वल्बसीरु वल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व लल्-मुसी-उ, क़लीलम्-मा त-तज़क्करून **(58)** इन्नस्सा-अ-त लआति-यतुल्-ला रै-ब फ़ीहा व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून **(59)** व क़ा-ल रब्बुकुमुद्-अूनी अस्तजिब् लकुम्, इन्नल्लज़ी-न यस्तक्बिरू-न अन् अिबादती स-यद्ख़ुलू-न जहन्न-म दाख़िरीन **(60)** ❖

المؤمن ٤٠ ۴۲۷ فمن اظلم ٢٤

وَلَهُمْ سُوٓءُ الدَّارِ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ۝ هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ
بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ
بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَخَلْقُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ڏ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝
اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝
اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۡ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

ع ٦
وقف الازم

منزل ٦

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अलन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून **(61)** ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् ✣ ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुअ्फ़कून **(62)** कज़ालि-क युअ्-फ़कुल्लज़ी-न कानू बिआयातिल्लाहि यज्हदून **(63)** अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल

ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) को उनकी माज़िरत कुछ नफ़ा न देगी,[1] और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए उस जहान में ख़राबी होगी।[2] (52) और (आपसे पहले) हम मूसा को हिदायतनामा (यानी तौरात) दे चुके हैं, और (फिर) हमने वह किताब बनी इस्राईल को पहुँचाई थी। (53) कि वह हिदायत और नसीहत (की किताब) थी (सही) अ़क्ल रखने वालों के लिए। (54) सो आप सब्र कीजिए। बेशक अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा है। और अपने (उस) गुनाह की (जिसको मजाज़न गुनाह कह दिया गया) माफ़ी माँगिए।[3] और शाम और सुबह अपने रब की पाकी और तारीफ़ बयान करते रहिए।[4] (55) (और) जो लोग अपने पास मौजूद बिना किसी सनद के ख़ुदाई आयतों में झगड़े निकाला करते हैं, उनके दिलों में निरी बड़ाई (ही बड़ाई) है, कि वे उस तक कभी पहुँचने वाले नहीं। सो आप अल्लाह की पनाह माँगते रहिए, बेशक वही है सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला।[5] (56) यक़ीनन आसमानों और ज़मीन को (शुरू में) पैदा करना आदमियों के (दोबारा) पैदा करने के मुक़ाबले में बड़ा काम है, और लेकिन अक्सर आदमी (इतनी बात) नहीं समझते। (57) और देखने वाला और अन्धा, और (एक) वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और (दूसरे) बदकार, आपस में बराबर नहीं होते, तुम लोग बहुत ही कम समझते हो।[6] (58) क़ियामत तो ज़रूर ही आकर रहेगी, उस (के आने) में किसी तरह का शक है ही नहीं, मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (59) और तुम्हारे रब ने फ़रमा दिया है कि मुझको पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त क़बूल करूँगा। जो लोग (सिर्फ़) मेरी इबादत से सरकशी करते हैं,[7] वे जल्द ही (यानी मरते ही) ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60) ❖

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे (नफ़े के) लिए रात बनाई, ताकि तुम उसमें आराम करो, और उसी ने दिन को (देखने के लिए) रोशन बनाया।[8] बेशक अल्लाह तआ़ला का लोगों पर बड़ा ही फ़ज़्ल है, और लेकिन अक्सर आदमी (इन नेमतों का) शुक्र अदा नहीं करते। (61) यह अल्लाह है तुम्हारा रब,[9] वह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो (तौहीद के साबित होने के बाद) तुम लोग शिर्क करके कहाँ उल्टे जा रहे हो? (62) इसी तरह वे (पहले) लोग भी उल्टे चला करते थे जो अल्लाह की

---

1. यानी पहले तो कोई ख़ास और क़ाबिले तवज्जोह माज़िरत न होगी, अगर कुछ हरकत भी हुई तो वह नफ़ा देने वाली न होगी।
2. पस इसी तरह आप और आपके मानने वाले भी मदद किए जाएँगे और मुख़ालिफ़ीन नाकाम और क़हर के अन्दर होंगे, तो आप तसल्ली रखिए।
3. यानी अगर कभी कामिल दर्जे का सब्र होने में कुछ कमी हो गई हो जो शरीअ़त के क़ायदों की रू से हक़ीक़त में तो गुनाह नहीं, मगर आपके बुलन्द रुतबे के एतिबार से उसकी तलाफ़ी करने के वाजिब होने में गुनाह के जैसे ही है, उसकी तलाफ़ी कीजिए।
4. यानी ऐसे शुग़ल में रहिए कि जिन चीज़ों से रंज व ग़म होता हो उनकी तरफ़ ख़्याल ही न हो।
5. वह अपनी कामिल सिफ़ात से अपनी पनाह में आए हुए को महफ़ूज़ रखेगा।
6. वरना अन्धे और बदकार न रहते।
7. हासिल यह हुआ कि जो लोग तौहीद से मुँह मोड़ करके शिर्क करते हैं।
8. ताकि बेतकल्लुफ़ रोज़ी-रोटी हासिल करो।
9. यानी जिसका ज़िक्र हुआ, न कि वह जिनको तुमने घड़ रखा है।

लकुमुल्-अर्-ज़ क़रारंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व सव्व-रकुम् फ़-अह्स-न सु-व-रकुम् व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़-तबा-रकल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन **(64)** हुवल्-हय्यु ला इला-ह इल्ला हु-व फ़द्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन **(65)** क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्बुदल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि लम्मा जा-अनियल्-बय्यिनातु मिर्रब्बी व उमिर्तु अन् उस्लि-म लि-रब्बिल्-आ़लमीन **(66)** हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ़-ल-क़तिन् सुम्-म युख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्-दकुम् सुम्-म लि-तकूनू शुयूख़ान् व मिन्कुम् मंय्यु-तवफ़्फ़ा मिन् क़ब्लु व लि-तब्लुग़ू अ-जलम्-मुसम्मंव्-व लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून **(67)** हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु फ़-इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून **(68)** ❖

فمن اظلم ٢٤ ٤٢٨ المؤمن ٤٠

يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ
بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا
اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ
وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ
وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ اَلَمْ
تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۟ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾
اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ؕ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾ فِي الْحَمِيْمِ ۙ
ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ
تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا

منزل ٦

अलम् त-र इलल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि, अन्ना युस्रफ़ून **(69)** अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिल्किताबि व बिमा अर्सल्ना बिही रुसु-लना, फ़सौ-फ़ यअ्लमून **(70)** इज़िल्-अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम् वस्सलासिलु युस्हबून **(71)** फ़िल्हमीमि सुम्-म फ़िन्नारि युस्जरून **(72)** सुम्-म क़ी-ल लहुम् ऐ-न मा कुन्तुम् तुश्रिकून **(73)** मिन्

निशानियों का इनकार किया करते थे।[1] (63) अल्लाह ही है जिसने ज़मीन को (मख़्लूक़ के) रहने का ठिकाना बनाया, और आसमान को छत (की तरह) बनाया, और तुम्हारा नक़्शा बनाया, सो उम्दा नक़्शा बनाया,[2] और तुमको उम्दा-उम्दा चीज़ें खाने को दीं। (पस) यह अल्लाह है तुम्हारा रब, सो बड़ा आ़लीशान है अल्लाह, जो सारे जहान का परवर्दिगार है। (64) वही (हमेशा से और हमेशा तक) ज़िन्दा रहने वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, सो तुम (सब) ख़ालिस एतिक़ाद करके उसको पुकारा करो,[3] तमाम ख़ूबियाँ उसी अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहान का परवर्दिगार है। (65) आप (उन मुश्रिकों को सुनाने के लिए) कह दीजिए कि मुझको इससे मनाही कर दी गई है कि मैं उन (शरीकों) की इबादत करूँ जिनको ख़ुदा के सिवा तुम पुकारते हो। जबकि मेरे पास मेरे रब की निशानियाँ आ चुकी हैं।[4] और मुझको यह हुक्म हुआ है कि मैं (सिर्फ़) रब्बुल आ़लमीन के सामने गर्दन झुका लूँ।[5] (66) वही है जिसने तुमको[6] मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से,[7] फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर तुमको बच्चा करके (माँ के पेट से) निकालता है, फिर (तुमको ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ। और कोई-कोई तुममें से पहले ही मर जाता है[8] और ताकि तुम सब (अपने-अपने) वक़्ते मुक़र्ररा (जो तक़दीर में तय है) तक पहुँच जाओ, और (यह सब कुछ इसलिए किया गया) ताकि तुम लोग समझो। (67) वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, फिर वह जब किसी काम को (फ़ौरन) पूरा करना चाहता है, सो बस उसके मुताल्लिक़ (इतना) फ़रमा देता है कि हो जा, सो वह हो जाता है। (68) ❖

क्या आपने उन लोगों (की हालत) को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, (हक़ से) कहाँ फिरे चले जा रहे हैं? (69) जिन लोगों ने इस किताब (यानी क़ुरआन) को झुठलाया और उस चीज़ को जो हमने अपने पैग़म्बरों को देकर भेजा था, सो उनको अभी (यानी क़ियामत में जो क़रीब है) मालूम हुआ जाता है। (70) जबकि तौक़ उनकी गर्दनों में होंगे और ज़न्जीरें उनको घसीटते हुए (71) खौलते पानी में ले जाए जाएँगे, फिर ये आग में झोंक दिए जाएँगे। (72) फिर उनसे पूछा जाएगा कि अ़ल्लाह के अ़लावा (वे माबूद) कहाँ गए जिनको तुम (ख़ुदाई में) शरीक ठहराते थे।[9] (73) वे कहेंगे कि वे सब तो हमसे ग़ायब हो

1. इसमें एक तरह से आपकी तसल्ली भी है।
2. चुनाँचे इनसान के जिस्मानी अंगों के बराबर किसी हैवान के जिस्मानी अंगों में तनासुब नहीं।
3. और शिर्क न किया करो।
4. अ़क़्ली और नक़्ली दलीलें मुराद हैं। मतलब यह है कि शिर्क से मुझको मनाही हुई है।
5. मतलब यह कि मुझको तौहीद का हुक्म हुआ है।
6. यानी तुम्हारे बाप को।
7. यानी आगे उनकी नस्ल को।
8. यानी जवानी और बुढ़ापे से पहले।
9. यानी तुम्हारी मदद क्यों नहीं करते।

दूनिल्लाहि, क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना बल्-लम् नकुन्-नद्अू मिन् क़ब्लु शैअन्, कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहुल्-काफ़िरीन **(74)** ज़ालिकुम् बिमा कुन्तुम् तफ़्रहू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तम्रहून **(75)** उद्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा फ़बिअ्-स मस्वल्- मु-तकब्बिरीन **(76)** फ़स्बिर् इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़-इम्मा नुरि-यन्न-क बअ़्ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-तवफ़्फ़-यन्न-क फ़-इलैना युर्जअ़ून **(77)** व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम्-मिन् क़ब्लि-क मिन्हुम् मन् क़सस्ना अ़लै-क व मिन्हुम् मल्लम् नक़्सुस् अ़लै-क, व मा का-न लि-रसूलिन् अंय्यअ्ति-य बिआ-यतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि फ़-इज़ा जा-अ अम्रुल्लाहि क़ुज़ि-य बिल्-हक़्क़ि व ख़सि-र हुनालिकल्-मुब्तिलून **(78)** ❖

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अन्आ-म लि-तर्कबू मिन्हा व मिन्हा तअ्कुलून **(79)** व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु व लि-तब्लुग़ू अ़लैहा हा-जतन् फ़ी सुदूरिकुम् व अ़लैहा व अ़लल्-फ़ुल्कि तुह्मलून **(80)** व युरीकुम् आयातिही फ़-अय्-य आयातिल्लाहि तुन्किरून **(81)** अ-फ़ लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अक्स-र मिन्हुम् व अशद्-द क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून **(82)** फ़-लम्मा जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रिहू बिमा अ़िन्दहुम् मिनल्-अ़िल्मि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(83)** फ़-लम्मा रऔ बअ्-सना क़ालू आमन्ना बिल्लाहि वह्-दहू व क-फ़र्ना बिमा कुन्ना बिही मुश्रिकीन **(84)**

من قبل شيئا كذلك يضل الله الكفرين ذلكم بما كنتم
تفرحون في الارض بغير الحق وبما كنتم تمرحون ادخلوا
ابواب جهنم خلدين فيها فبئس مثوى المتكبرين
فاصبر ان وعد الله حق فاما نرينك بعض الذي
نعدهم او نتوفينك فالينا يرجعون ولقد ارسلنا
رسلا من قبلك منهم من قصصنا عليك ومنهم من
لم نقصص عليك وما كان لرسول ان يأتي باية
الا باذن الله فاذا جاء امر الله قضي بالحق وخسر
هنالك المبطلون الله الذي جعل لكم الانعام لتركبوا
منها ومنها تأكلون ولكم فيها منافع ولتبلغوا عليها
حاجة في صدوركم وعليها وعلى الفلك تحملون
ويريكم ايته فاي ايت الله تنكرون افلم يسيروا
في الارض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم
كانوا اكثر منهم واشد قوة واثارا في الارض فما اغنى
عنهم ما كانوا يكسبون فلما جاءتهم رسلهم بالبينت
فرحوا بما عندهم من العلم وحاق بهم ما كانوا به

ع ١٠ ١٣

गए, बल्कि हम इससे पहले किसी को भी नहीं पूजते थे।[1] अल्लाह तआला इसी तरह काफ़िरों को ग़लती में फँसाए रखता है। **(74)** यह (सज़ा) उसके बदले में है कि तुम दुनिया में नाहक़ ख़ुशियाँ मनाते थे, और उसके बदले में कि तुम इतराते थे।[2] **(75)** जहन्नम के दरवाज़ों में घुसो (और) हमेशा-हमेशा उसमें रहो, सो तकब्बुर करने वालों का वह बुरा ठिकाना है। **(76)** (और जब उनसे इस तरह बदला लिया जाएगा) तो आप (थोड़ा-सा) सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है। फिर जिस (अ़ज़ाब) का हम उनसे वायदा कर रहे हैं, उसमें से कुछ थोड़ा-सा (अ़ज़ाब) अगर हम आपको दिखला दें,[3] या (उसके आने से पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें, सो हमारे ही पास उनको आना होगा। **(77)** और हमने आपसे पहले बहुत-से पैग़म्बर भेजे, जिनमें से बाज़े तो वे हैं कि उनका क़िस्सा हमने आपसे बयान किया है, और बाज़े वे हैं जिनका हमने आपसे क़िस्सा बयान नहीं किया, और (इतनी बात सबमें मुश्तरक है कि) किसी रसूल से यह न हो सकेगा कि कोई मोजिज़ा अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ज़ाहिर कर सके, फिर जिस वक़्त (अ़ज़ाब के आने के लिए) अल्लाह का हुक्म आएगा, ठीक-ठीक फ़ैसला हो जाएगा, और उस वक़्त बातिल वाले घाटे में रह जाएँगे। **(78)** ❖

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि उनमें बाज़ से सवारी लो, और उनमें बाज़ (ऐसे हैं कि उन) को खाते भी हो। **(79)** और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत फ़ायदे हैं।[4] और (इसलिए बनाए) ताकि तुम उनपर अपने मतलब तक पहुँचो जो तुम्हारे दिलों में है, और उनपर (भी) और कश्ती पर (भी) लदे-लदे फिरते हो। **(80)** और (उनके अ़लावा) तुमको अपनी और भी निशानियाँ दिखलाता रहता है,[5] सो तुम अल्लाह तआला की कौन-कौन-सी निशानियों का इनकार करोगे? **(81)** क्या उन लोगों ने मुल्क में चल-फिरकर नहीं देखा कि जो (मुश्रिक) लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका क्या अन्जाम हुआ?[6] (हालाँकि) वे लोग उनसे ज़्यादा थे, और क़ुव्वत में और निशानियों में (भी) जो कि ज़मीन पर छोड़ गए हैं बढ़े हुए थे, सो उनकी (यह पूरी की पूरी) कमाई उनके कुछ भी काम न आई।[7] **(82)** ग़रज़ जब उनके पैग़म्बर उनके पास ख़ुली दलीलें लेकर आए तो वे लोग अपने (उस रोज़गार और कमाने के) इल्म पर बड़े इतराए, जो उनको हासिल था,[8] और उनपर वह अ़ज़ाब आ पड़ा जिसके साथ मज़ाक़ करते थे। **(83)** फिर जब उन्होंने हमारा

---

1. यानी मालूम हुआ कि वे कुछ भी न थे। ऐसी बात ग़लत ज़ाहिर होने के वक़्त कही जाती है। जैसे कोई शख़्स तिजारत में नुक़सान उठाए और उससे पूछा जाए कि तुम फ़लाँ माल की तिजारत किया करते हो, और वह कहे कि मैं तो कहीं की भी तिजारत नहीं करता। यानी जब उसका फ़ायदा हासिल न हुआ तो यूँ समझना चाहिए कि गोया वह अ़मल ही नहीं हुआ।

2. "फ़रह" (ख़ुशियाँ मनाना) दिल के मुताल्लिक़ है, और "मरह" (इतराना) बदन के। चाहे लुग़त के एतिबार से या मुक़ाबले के, यानी दुनिया के फ़ायदे को असल मक़सूद समझकर उसके हासिल करने पर दिल में ऐसे ख़ुश होते थे कि उसके आसार बदन पर ज़ाहिर होते थे, जैसे चाल वग़ैरह में, जिसकी मनाही आई है- "व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-रहन्" यानी ज़मीन पर इतराकर मत चल।

3. यानी आपकी ज़िन्दगी में उनपर वह नाज़िल हो जाए।

4. जैसे उनके बाल और ऊन काम आते हैं।

5. चुनाँचे हर तैयार होने वाली चीज़ उसके बनाए जाने पर एक निशान है।

6. यानी क्या उनको शिर्क के वबाल की ख़बर नहीं?

7. क्योंकि वे अल्लाह के अ़ज़ाब से न बच सके।

8. यानी मआश (कमाने और रोज़गार) को मक़सूद समझकर और उसमें जो उनको क़ाबलियत हासिल थी उसपर ख़ुश हुए और आख़िरत का इनकार करके उसकी तलब को दीवानगी, और उसके इनकार पर सज़ा की धमकी को हँसी मज़ाक़ का सबब बनाया।

फ़-लम् यकु यन्फ़अुहुम् ईमानुहुम् लम्मा रऔ बअ्-सना, सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् फ़ी अ़िबादिही व ख़सि-र हुनालिकल्-काफ़िरून (85) ❖

41 सूरतु हा-मीम् अस्सज्दति 61

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3406 अक्षर, 809 शब्द, 54 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् (1) तन्ज़ीलुम्-मिनर्रह्मा-निर्रहीम (2) किताबुन् फ़ुस्सिलत् आयातुहू क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल् लिक़ौमिंय्-यअ्लमून (3) बशी-रंव्-व नज़ीरन् फ़-अअ्-र-ज़ अक्सरुहुम् फ़हुम् ला यस्मअून (4) व क़ालू क़ुलूबुना फ़ी अकिन्नतिम्-मिम्मा तद्अूना इलैहि व फ़ी आज़ानिना वक़्रुंव्-व मिम्बैनिना व बैनि-क हिजाबुन् फ़अ्मल् इन्नना आ़मिलून ▲ (5) क़ुल् इन्नमा अ-न ब-शरुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़स्तक़ीमू इलैहि वस्तग़्फ़िरूहु, व वैलुल्-लिल्-मुश्रिकीन (6) अल्लज़ी-न ला युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् काफ़िरून (7) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (8) ❖

فمن اظلم ٢٤ ٤٣٠ حٰمٓ السجدة ٤١

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَ
كَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ
لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَ
خَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ
قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ
وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا
عٰمِلُوْنَ ﴿٥﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦﴾
الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٨﴾ قُلْ
اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ
لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ
فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً

منزل ٦

क़ुल् अ-इन्नकुम् ल-तक्फ़ुरू-न बिल्लज़ी ख़-लक़ल्-अर्-ज़ फ़ी यौमैनि व तज्अ़लू-न लहू अन्दादन्, ज़ालि-क रब्बुल्-आ़लमीन (9) व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि-य मिन् फ़ौक़िहा व बार-क फ़ीहा व क़द्-द-र फ़ीहा अक़्वा-तहा फ़ी अर्-ब-अ़ति अय्यामिन्, सवा-अल्-

अ़ज़ाब देखा तो कहने लगे (अब) हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और उन सब चीज़ों से हम इनकारी हुए जिनको हम उसके साथ शरीक ठहराते थे। **(84)** सो उनका यह ईमान लाना फ़ायदेमन्द न हुआ जब उन्होंने हमारा अ़ज़ाब देख लिया।[1] अल्लाह तआ़ला ने अपना यही मामूल "यानी आ़दत और तरीक़ा" मुक़र्रर किया है जो उसके बन्दों में पहले से होता चला आया है, और उस वक़्त काफ़िर घाटे में रह गए।[2] **(85)** ❖
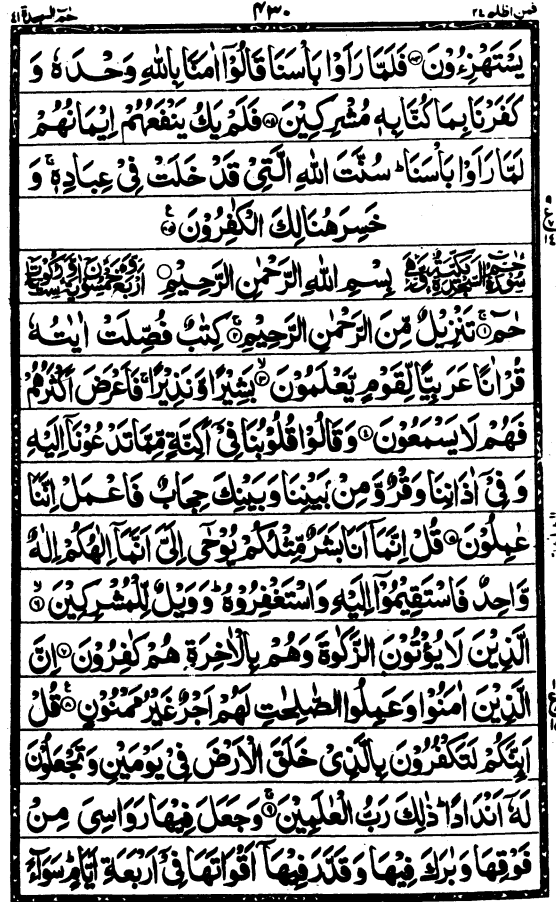
41 सूरः हा-मीम् अस्-सज्दः 61

सूरः हा-मीम् अस्-सज्दः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 54 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् **(1)** यह कलाम रहमान रहीम की तरफ़ से नाज़िल किया जाता है। **(2)** यह एक किताब है जिसकी आयतें साफ़-साफ़ बयान की गई हैं। यानी ऐसा क़ुरआन है जो अ़रबी (ज़बान में) है,[3] ऐसे लोगों के लिए (नफ़ा देने वाला है) जो अ़क़्लमन्द हैं।[4] **(3)** ख़ुशख़बरी देने वाला है (और न मानने वालों के लिए) डराने वाला है, सो अक्सर लोगों ने (इससे) मुँह फेरा, फिर वे (मुँह फेरने की वजह से) सुनते ही नहीं। **(4)** और वे लोग कहते हैं कि जिस बात की तरफ़ आप हमको बुलाते हैं हमारे दिल उससे पर्दों में हैं,[5] और हमारे कानों में डाट (लग रही) है, और हमारे और आपके दरमियान एक पर्दा है, सो आप अपना काम किए जाइए हम अपना काम कर रहे हैं।[6] ▲ **(5)** आप फ़रमा दीजिए कि मैं भी तुम ही जैसा बशर हूँ। मुझपर यह वह्य नाज़िल होती है कि तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है,[7] सो उस (माबूदे बरहक़) की तरफ सीध बाँध लो और उससे माफ़ी माँगो, और ऐसे मुश्रिकों के लिए बड़ी ख़राबी है **(6)** जो ज़कात नहीं देते, और वे आख़िरत के इनकारी ही रहते हैं। **(7)** (और उनके उलट) जो लोग ईमान ले आए और उन्होंने नेक काम किए उनके लिए (आख़िरत में) ऐसा अज्र है जो (कभी) मौक़ूफ़ होने जाने वाला नहीं। **(8)** ❖

आप फ़रमाइए कि क्या तुम लोग ऐसे ख़ुदा (की तौहीद) का इनकार करते हो जिसने ज़मीन को (इतनी बड़ा होने के बावजूद) दो दिन में पैदा कर दिया, और तुम उसके शरीक ठहराते हो। यही सारे जहान का रब है। **(9)** और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर पहाड़ बना दिए, और इस (ज़मीन) में फ़ायदे की चीज़ें रख दीं, और इसमें इस (के रहने वालों) की ग़िज़ाएँ तजवीज़ कर दीं,[8] चार दिन में (हुआ। जो गिनती में) पूरे हैं पूछने वालों के लिए। **(10)** फिर आसमान (के बनाने) की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और वह (उस वक़्त) धुआँ-सा

1. क्योंकि वह ईमान बेइख़्तियारी था और बन्दा इख़्तियारी ईमान का मुकल्लफ़ है।
2. पस उन मुश्रिकीन को भी ये सब मज़ामीन समझकर डरना चाहिए। उनके लिए भी यही होगा। फिर कुछ तलाफ़ी न हो सकेगी।
मसलाः जब आख़िरत का अ़ज़ाब और फ़रिश्ते नज़र आ जाएँ उस वक़्त ईमान लाना मक़बूल नहीं, और उसको 'ईमाने-बाइस' कहते हैं।
3. यानी अ़रबी में इसलिए है ताकि जिन लोगों में यह नाज़िल हुआ है वे आसानी से समझ लें।
4. यानी अगरचे मुकल्लफ़ सब ही हैं, मगर फ़ायदा उठाने वाले सिर्फ़ अ़क़्ल वाले ही होते हैं।
5. यानी हमारी समझ में नहीं आती।
6. यानी हमसे क़ुबूल करने की कुछ उम्मीद न रखिए, और फिर भी कहने को जी चाहे तो कहे जाइए। आप जानें और आपका काम हम अपने तरीक़े को न छोड़ेंगे।
7. यानी मुझपर वह्य आती है जिसकी तस्दीक़ मोजिज़ों से हो चुकी है, जिनमें सबसे बड़ा मोजिज़ा क़ुरआन है, जिसका ऊपर बयान है।
8. चुनाँचे आँखों के सामने है कि ज़मीन के हर हिस्से के रहने वालों के मुनासिब अलग-अलग ग़िज़ाएँ हैं। यानी ज़मीन में हर क़िस्म के ग़ल्ले, अनाज और मेवे पैदा कर दिए हैं। कहीं कुछ कहीं कुछ, जिनका सिलसिला अब तक चला आता है।

लिस्सा-इलीन (10) सुम्मस्तवा इलस्समा-इ व हि-य दुख़ानुन् फ़क़ा-ल लहा व लिल्-अर्ज़िअ्तिया तौअ़न् औ करहन्, क़ा-लता अतैना ता-इअ़ीन (11) फ़-क़ज़ाहुन्-न सब्-अ़ समावातिन् फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि समा-इन् अम्-रहा, व ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बि-मसाबी-ह व हिफ़्ज़न्, ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (12) फ़-इन् अअ़्-रज़ू फ़क़ुल् अन्ज़र्तुकुम् साअ़ि-क़तम् मिस्-ल साअ़ि-क़ति आ़दिंव्-व समूद (13) इज़् जा-अत्हुमुर् -रसुलु मिम्-बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला-ह, क़ालू लौ शा-अ रब्बुना ल-अन्ज़-ल मलाइ-कतन् फ़-इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (14) फ़-अम्मा आ़दुन् फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व क़ालू मन् अशद्दु मिन्ना क़ुव्वतन्, अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़हुम् हु-व अशद्दु मिन्हुम् क़ुव्वतन्, व कानू बिआयातिना यज्हदून (15) फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्-सरन् फ़ी अय्यामिन्-नहिसातिल्-लिनुज़ी-क़हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्हयातिद्दुन्या, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अख़्ज़ा व हुम् ला युन्सरून (16) व अम्मा समूदु फ़-हदैनाहुम् फ़स्तहब्बुल्-अ़मा अ़लल्-हुदा फ़-अ-ख़ज़त्हुम् साअ़ि-क़तुल्-अ़ज़ाबिल्-हूनि बिमा कानू यक्सिबून (17) व नज्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून (18) ◆

व यौ-म युह्शरु अअ़्दाउल्लाहि इलन्नारि फ़हुम् यू-ज़अ़ून (19) हत्ता इज़ा मा जाऊहा शहि-द अ़लैहिम् सम्अ़ुहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बिमा कानू यअ़्मलून (20) व क़ालू

فمن اظلم ٢٤ ٤٣١ حٰمٓ السجدة ٤١

لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَ
لِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۗ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۝ فَقَضٰىهُنَّ
سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ۗ وَزَيَّنَّا
السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۗ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ
الْعَلِيْمِ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ
عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۝ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۗ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً
فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۗ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى
وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى
عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُحْشَرُ
اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ

منزل

था,[1] सो उससे और ज़मीन से फ़रमाया कि तुम दोनों ख़ुशी से आओ या ज़बरदस्ती से।[2] दोनों ने अर्ज़ किया कि हम ख़ुशी से हाज़िर हैं। **(11)** सो दो दिन में उसके सात आसमान बना दिए और हर आसमान में उसके मुनासिब (फ़रिश्तों को) अपना हुक्म भेज दिया। और हमने इस क़रीब वाले आसमान को सितारों से सजाया और (शैतानों के वहाँ जाकर चोरी-छुपे ख़बर सुनने से) उसकी हिफ़ाज़त की, यह तजवीज़ है (ख़ुदा-ए-) ज़बरदस्त, हर चीज़ के जानने वाले की।[3] **(12)** फिर अगर (तौहीद की दलीलें सुनकर भी) ये लोग (तौहीद से) मुँह मोड़ें तो आप कह दीजिए कि मैं तुमको ऐसी आफ़त से डराता हूँ जैसी आ़द व समूद पर (शिर्क व कुफ़्र की बदौलत) आफ़त आई थी।[4] **(13)** जबकि उनके पास उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी पैग़म्बर आए, कि अल्लाह के सिवा और किसी को मत पूजो। उन्होंने जवाब दिया कि अगर हमारे रब को (यह) मन्ज़ूर होता (कि किसी को पैग़म्बर बनाकर भेजे) तो फ़रिश्तों को भेजता, सो हम इस (तौहीद) से भी इनकारी हैं, जिसको देकर (तुम अपने गुमान के मुताबिक़) भेजे गए हो। **(14)** फिर वे जो आ़द के लोग थे, वे दुनिया में नाहक़ का तकब्बुर करने लगे और कहने लगे, वह कौन है जो क़ुव्वत में हमसे ज़्यादा है? (आगे जवाब है कि) क्या उनको यह नज़र न आया कि जिस ख़ुदा ने उनको पैदा किया वह उनसे क़ुव्वत में बहुत ज़्यादा है, और हमारी आयतों का इनकार करते रहे। **(15)** तो हमने उनपर एक तेज़ हवा ऐसे दिनों में भेजी जो मन्हूस थे, ताकि हम उनको इस दुनियावी ज़िन्दगी में रुस्वाई के अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँ, और आख़िरत का अ़ज़ाब और ज़्यादा रुस्वाई का सबब है, और उनको मदद न पहुँचेगी। **(16)** और वे जो समूद थे, तो हमने उनको (पैग़म्बर के ज़रिए से) रास्ता बतलाया था, सो उन्होंने हिदायत के मुक़ाबले में गुमराही को पसन्द किया, पस उनको उनके बुरे आमाल की वजह से ज़िल्लत भरे अ़ज़ाब की आफ़त ने पकड़ लिया। **(17)** और हमने (उस अ़ज़ाब से) उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और (हमसे) डरते थे।[5] **(18)** ❖

और (उनको वह दिन भी याद दिलाइए) जिस दिन अल्लाह तआ़ला के दुश्मन (यानी कुफ़्फ़ार) दोज़ख़ की तरफ़ जमा कर- (ने) के (लिए एक जगह) लाए जाएँगे, फिर वे रोके जाएँगे (ताकि बक़िया भी आ जाएँ)। **(19)** यहाँ तक कि जब वे उसके क़रीब आ जाएँगे तो उनके कान और आँखें और उनकी खालें उनपर

---

1. यानी उसका माद्दा जो कि ज़मीन के माद्दे के बाद और ज़मीन की मौजूदा सूरत से पहले बन चुका था, इस शक्ल में था।
2. मतलब यह कि हमारे तक्वीनी अहकाम जो तुम दोनों में जारी हुआ करेंगे, तो उनका जारी होना तुम्हारे इख़्तियार से ख़ारिज है, लेकिन जो इदराक और शुऊर तुमको अ़ता हुआ है, उससे तुम्हारी हालत के मुनासिब रज़ामन्दी और नापसन्दीदगी दोनों का सुबूत हो सकता है। सो तुम देख लो कि हमारे उन अहकाम पर राज़ी रहा करोगे या नापसन्दीदगी इख़्तियार करोगे।
3. पस इबादत के लायक़ यह ज़ात है जो कामिल सिफ़ात वाली है, या दूसरी चीज़ें जो अपनी ज़ात और सिफ़ात में नाक़िस हैं?
4. मुराद हलाक करने वाला अ़ज़ाब है। चुनाँचे मक्का वाले भी बद्र में हलाक किए गए।
5. यहाँ तक दुनियावी अ़ज़ाब का ज़िक्र था और आगे आख़िरत के अ़ज़ाब का ज़िक्र है।

लिजुलूदिहिम् लि-म शहित्तुम् अ़लैना, क़ालू अन्त-क़नल्लाहुल्लज़ी अन्त-क़ कुल्-ल शैइंव्-व हु-व ख़-ल-क़कुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व इलैहि तुर्जअून (21) व मा कुन्तुम् तस्ततिरू-न अंय्यश्-ह-द अ़लैकुम् सम्अुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला जुलूदुकुम् व लाकिन् ज़नन्तुम् अन्नल्ला-ह ला यअ्लमु कसीरम्-मिम्मा तअ्मलून (22) व ज़ालिकुम् ज़न्नुकुमुल्लज़ी ज़नन्तुम् बिरब्बिकुम् अर्दाकुम् फ़-अस्बह्तुम् मिनल्-ख़ासिरीन (23) फ़-इंय्यस्बिरू फ़न्नारु मस्वल्-लहुम्, व इंय्यस्तअ्तिबू फ़मा हुम् मिनल्-मुअ्तबीन (24) व क़य्यज़्ना लहुम् क़ु-रना-अ फ़-ज़य्यनू लहुम् मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन (25) ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू ला तस्मअू लिहाज़ल्- क़ुर्आनि वल्ग़ौ फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तग़्लिबून (26)

फ़-लनुज़ीक़न्नल्लज़ी-न क-फ़रू अ़ज़ाबन् शदीदंव्-व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अस्व-अल्लज़ी कानू यअ्मलून (27) ज़ालि-क जज़ा-उ अअ्दा-इल्लाहिन्नारु लहुम् फ़ीहा दारुल्-ख़ुल्दि जज़ा-अम् बिमा कानू बिआयातिना यज्हदून (28) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू रब्बना अरिनल्लज़ैनि अज़ल्लाना मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि नज्अ़ल्हुमा तह्-त अक़्दामिना लि-यकूना

عليهم سمعهم وابصارهم وجلودهم بما كانوا يعملون ﴿٢٠﴾
وقالوا لجلودهم لم شهدتم علينا قالوا انطقنا الله الذي
انطق كل شيء وهو خلقكم اول مرة واليه ترجعون ﴿٢١﴾
وما كنتم تستترون ان يشهد عليكم سمعكم ولا
ابصاركم ولا جلودكم ولكن ظننتم ان الله لا يعلم
كثيرا مما تعملون ﴿٢٢﴾ وذلكم ظنكم الذي ظننتم
بربكم اردىكم فاصبحتم من الخسرين ﴿٢٣﴾ فان يصبروا فالنار
مثوى لهم وان يستعتبوا فما هم من المعتبين ﴿٢٤﴾ و
قيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين ايديهم وما خلفهم
وحق عليهم القول في امم قد خلت من قبلهم من
الجن والانس انهم كانوا خسرين ﴿٢٥﴾ وقال الذين كفروا
لا تسمعوا لهذا القران والغوا فيه لعلكم تغلبون ﴿٢٦﴾
فلنذيقن الذين كفروا عذابا شديدا ولنجزينهم
اسوا الذي كانوا يعملون ﴿٢٧﴾ ذلك جزاء اعداء الله
النار لهم فيها دار الخلد جزاء بما كانوا باياتنا
يجحدون ﴿٢٨﴾ وقال الذين كفروا ربنا ارنا الذين

उनके आमाल की गवाही देंगे। (20) और (उस वक़्त) वे लोग (ताज्जुब से) अपने जिस्म के अंगों से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी? वे (जिस्म के अंग) जवाब देंगे कि हमको उस अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी जिसने हर (बोलने वाली) चीज़ को बोलने की ताक़त दी, और उसी ने तुमको पहली बार पैदा किया था, और उसी के पास फिर लाए गए हो।[1] (21) और तुम (दुनिया में) इस बात से तो अपने आपको छुपा ही न सकते थे[2] कि तुम्हारे कान और आँखें और खालें तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दें, और लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे बहुत-से आमाल की ख़बर भी नहीं। (22) और तुम्हारे इसी गुमान ने जो कि तुमने अपने रब के साथ किया था तुमको बरबाद किया,[3] फिर तुम (हमेशा के) घाटे में पड़ गए। (23) सो (उस हालत में) अगर ये लोग सब्र करें तब भी दोज़ख़ ही उनका ठिकाना है,[4] और अगर वे उज़्र करना चाहेंगे तो भी मक़बूल न होगा। (24) और हमने (दुनिया में) उनके लिए कुछ साथ रहने वाले शैतान मुक़र्रर कर रखे थे। सो उन्होंने उनके अगले-पिछले आमाल उनकी नज़र में अच्छे बना रखे थे, और उनके हक़ में भी उन लोगों के साथ अल्लाह का क़ौल (यानी अ़ज़ाब का वायदा) पूरा होकर रहा, जो उनसे पहले (कुफ़्फ़ार में से) जिन्नात व इनसान गुज़र चुके हैं। बेशक वे (सब) भी घाटे में रहे।[5] (25) ◆

और ये काफ़िर (आपस में) यह कहते हैं कि इस क़ुरआन को सुनो ही मत, और (अगर पैग़म्बर सुनाने लगें तो) उसके बीच में शोर मचा दिया करो, शायद (इस तदबीर से) तुम ही ग़ालिब रहो। (26) सो हम उन काफ़िरों को सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखा देंगे, और उनको उनके (ऐसे) बुरे-बुरे कामों की सज़ा देंगे। (27) यही सज़ा है अल्लाह के दुश्मनों की, यानी दोज़ख़ उनके लिए वहाँ हमेशा रहने की जगह होगी, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इनकार किया करते थे। (28) और (जब अ़ज़ाब में मुब्तला होंगे तो) वे

1. पस जो खुदा ऐसा क़ुदरत वाला और बड़ी शान वाला हो, उसके सामने उसके पूछने पर हम हक़ को कैसे छुपा सकते थे कि उसकी बड़ाई उससे रुकावट थी। इसलिए हमने गवाही दे दी।

2. क्योंकि हक़ तआ़ला की क़ुदरत हर चीज़ पर है, और आमाल की जानकारी हक़ीक़त में साबित है।

3. क्योंकि इस गुमान से कुफ़्रिया आमाल के करने वाले हुए और वे आमाल बरबादी का सबब हुए।

4. यह नहीं कि उनका सब्र करना और ख़ामोशी रहम का सबब हो जाए, जैसा कि दुनिया में कभी-कभी ऐसा हो जाता है।

5. ऊपर सूरः के शुरू में क़ुरआन व रिसालत के मुताल्लिक़ मज़मून था, आगे उसका इनकार करने वालों को तंबीह व धमकी और मलामत है।

मिनल्-अस्फ़लीन **(29)** इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्-तक़ामू त-तनज़्ज़लु अ़लैहिमुल्-मलाइ-कतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू व अब्शिरू बिल्-जन्नतिल्लती कुन्तुम् तू-अ़दून **(30)** नह्नु औलिया-उकुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व फ़िल्-आख़िरति व लकुम् फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम् व लकुम् फ़ीहा मा तद्-दऊन **(31)** नुज़ुलम् मिन् ग़फ़ूरिर्रहीम **(32)** ❖

व मन् अह्सनु क़ौलम् मिम्-मन् दआ़ इलल्लाहि व अ़मि-ल सालिहंव्-व क़ा-ल इन्ननी मिनल्-मुस्लिमीन **(33)** व ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यि-अतु इद्फ़अ् बिल्लती हि-य अह्सनु फ़-इज़ल्-लज़ी बैन-क व बैनहू अ़दा-वतुन् क-अन्नहू वलिय्युन् हमीम **(34)** व मा युलक़्क़ाहा इल्लल्लज़ी-न स-बरू व मा युलक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन् अ़ज़ीम **(35)** व इम्मा यन्-ज़ग़न्न-क मिनश्-शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम **(36)** व मिन् आयातिहिल्लैलु वन्नहारु वश्शम्सु वल्क़-मरु, ला तस्जुदू लिश्शम्सि व ला लिल्क़-मरि वस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़हुन्-न इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ़्बुदून **(37)** फ़-इनिस्तक्बरू फ़ल्लज़ी-न अ़िन्-द रब्बि-क युसब्बिहू-न लहू बिल्लैलि वन्नहारि व हुम् ला यस्-अमून ❑ **(38)** व मिन् आयातिही अन्न-क तरल्-अर्-ज़ ख़ाशि-अतन् फ़-इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल्

اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا
مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا
تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا
بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ
وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ۝ وَ
مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ
اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ
اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ
كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ۝ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَ
مَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ
الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝
وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوْا
لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ
كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ
رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ۝

काफ़िर लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको वे दोनों शैतान और इनसान दिखा दीजिए जिन्होंने हमको गुमराह किया था, हम उनको अपने पैरों तले मसल डालें, ताकि वे ख़ूब ज़लील हों।[1] **(29)** जिन लोगों ने (दिल से) इक़रार कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है,[2] फिर (उसपर) जमे रहे,[3] उनपर फ़रिश्ते उतरेंगे कि तुम न अन्देशा करो और न ग़म करो, और तुम जन्नत (के मिलने) पर ख़ुश रहो, जिसका तुमसे (पैग़म्बरों की मारिफ़त) वायदा किया जाया करता था। **(30)** और हम दुनियावी ज़िन्दगी में भी तुम्हारे साथी थे और आख़िरत में भी रहेंगे,[4] और तुम्हारे लिए इस (जन्नत) में जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा मौजूद है, और तुम्हारे लिए उसमें जो माँगोगे मौजूद है।[5] **(31)** यह मेहमानी के तौर पर होगा माफ़ करने वाले, रहम करने वाले की तरफ़ से।[6] **(32)** ❖

और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) ख़ुदा की तरफ़ बुलाए और (ख़ुद भी) नेक अ़मल करे, और कहे कि मैं फ़रमाँबरदारों में से हूँ।[7] **(33)** और नेकी और बुराई बराबर नहीं होती, (बल्कि हर एक का असर अलग है), तो अब आप (मय अपने मानने वालों के) नेक बर्ताव से (बुराई को) टाल दिया कीजिए। फिर यकायक आपमें और जिस शख़्स में दुश्मनी थी वह ऐसा हो जाएगा जैसा कि कोई दिली दोस्त होता है। **(34)** और यह बात उन्हीं लोगों को नसीब होती है जो बड़े मुस्तक़िल (मीज़ाज) हैं। और यह बात उसी को नसीब होती है जो बड़ा नसीब वाला है। **(35)** और अगर (ऐसे वक़्त में) आपको शैतान की तरफ़ से कुछ वस्वसा आने लगे तो (फ़ौरन) अल्लाह की पनाह माँग लिया कीजिए, बेशक वह ख़ूब सुनने वाला है, ख़ूब जानने वाला है। **(36)** और उसकी (क़ुदरत और तौहीद की) निशानियों में से रात और दिन है, और सूरज है और चाँद है। (पस) तुम लोग न सूरज को सज्दा करो और न चाँद को, और (सिर्फ़) उस ख़ुदा तआ़ला को सज्दा करो जिसने इन (सब) निशानियों को पैदा किया, अगर तुमको अल्लाह की इबादत करना है। **(37)** फिर अगर ये लोग तकब्बुर करें तो जो फ़रिश्ते आपके रब के क़रीबी हैं वे रात और दिन उसकी पाकी बयान करते हैं, और वे (उससे ज़रा) नहीं उकताते। ❑ **(38)** और उसकी (क़ुदरत और तौहीद की) निशानियों में से एक

---

1. यानी उस वक़्त उन लोगों पर गुस्सा आएगा जिन्होंने बहकाया था, और वे बहकाने वाले आदमी भी होंगे और शैतान भी। और उस दरख़्वास्त का मन्ज़ूर होना ज़रूरी नहीं, और यूँ तो गुमराह करने वाले भी जहन्नम में होंगे मगर शायद दरख़्वास्त के वक़्त नज़र न आएँ।
2. मतलब यह कि शिर्क छोड़कर तौहीद इख़्तियार कर ली।
3. यानी उसको छोड़ा नहीं।
4. चुनाँचे दुनिया में नेकियों का दिल में डालना, हादसों में सब्र और सुकून फ़रिश्तों ही का फ़ैज़ है।
5. यानी तलब इख़्तियारी हो या बेइख़्तियारी दोनों बराबर पूरी होंगी।
6. यानी ये नेमतें इज़्ज़त के साथ मिलेंगी जिस तरह मेहमान को मिलती हैं।
7. यानी बन्दगी को फ़ख़्र समझे। घमण्डी लोगों की तरह शर्म न करे।

मा-अह्तज़्ज़त् व र-बत्, इन्नल्लज़ी अह्याहा ल-मुह्यिल्-मौता, इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(39)** इन्नल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी आयातिना ला यख़्फ़ौ-न अ़लैना, अ-फ़-मंय्युल्क़ा फ़िन्नारि ख़ैरुन् अम्-मंय्यअ्ती आमिनंय्यौमल्-क़ियामति, इअ्मलू मा शिअ्तुम् इन्नहू बिमा तअ्मलू-न बसीर **(40)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिज़्ज़िक्रि लम्मा जा-अहुम् व इन्नहू ल-किताबुन् अ़ज़ीज़ **(41)** ला यअ्तीहिल्-बातिलु मिम्बैनि यदैहि व ला मिन् ख़ल्फ़िही, तन्ज़ीलुम्-मिन् हकीमिन् हमीद **(42)** मा युक़ालु ल-क इल्ला मा क़द् क़ी-ल लिर्रुसुलि मिन् क़ब्लि-क, इन्-न रब्ब-क लज़ू मग़्फ़ि-रतिंव्-व ज़ू अ़िक़ाबिन् अलीम **(43)** व लौ जअ़ल्नाहु क़ुर्आनन् अअ्-जमिय्यल्-लक़ालू लौ ला फ़ुस्सिलत् आयातुहू अ-अअ्-जमिय्युंव्-व अ़-रबिय्युन्, क़ुल् हु-व लिल्लज़ी-न आमनू हुदंव्-व शिफ़ाउन्, वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रुंव्-व हु-व अ़लैहिम् अ़-मन्, उलाइ-क युनादौ-न मिम्-मकानिम्-बअ़ीद **(44)** ◆

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ख़्तुलि-फ फ़ीहि, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम्, इन्नहुम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब **(45)** मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लि-नफ़्सिही व मन् असा-अ फ़-अ़लैहा, व मा रब्बु-क बिज़ल्लामिल्-लिल्-अ़बीद **(46)**

حٰمٓ السجدة ٤١ ۶۳۴ فمن اظلم ٢٤

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْۤ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا
لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْۤ اٰمِنًا
يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۝
لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ
مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ۝ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ
مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَلَوْ
جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ
وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ
يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

منزل

यह है कि (ऐ मुख़ातब!) तू ज़मीन को देखता है कि दबी-दबाई पड़ी है, फिर जब हम उसपर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है[1] और फूलती है। (इससे साबित हुआ कि) जिसने इस ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया वही मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा, बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है। **(39)** बेशक जो लोग हमारी आयतों में ग़लत रास्ता इख़्तियार करते हैं, वे लोग हमपर छुपे नहीं हैं।[2] सो भला जो शख़्स दोज़ख़ में डाला जाए वह अच्छा है या वह शख़्स जो क़ियामत के दिन अमन व अमान के साथ (जन्नत में) आए? जो जी चाहे कर लो वह तुम्हारा सब किया हुआ देख रहा है। **(40)** जो लोग इस क़ुरआन का इनकार करते हैं, जबकि वह उनके पास पहुँचता है, (उनमें ख़ुद सोचने-समझने की कमी है) और यह (क़ुरआन मजीद) बड़ी वक़्अत वाली किताब है **(41)** जिसमें ख़िलाफ़े हक़ीक़त बात न उसके आगे की तरफ़ से आ सकती है और न उसके पीछे की तरफ़ से,[3] यह हिक्मत वाले और तारीफ़ वाले ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल किया गया है। **(42)** आपको वही बातें (झुठलाने और तकलीफ़ देने की) कही जाती हैं जो आपसे पहले रसूलों को कही गई हैं, आपका रब बड़ी मग़्फ़िरत वाला और दर्दनाक सज़ा देने वाला है। **(43)** और अगर हम इसको अ़जमी "यानी अ़रबी ज़बान के अ़लावा किसी और" (ज़बान का) क़ुरआन बनाते तो यूँ कहते कि इसकी आयतें साफ़-साफ़ क्यों नहीं बयान की गईं? यह क्या बात कि अ़जमी किताब और अ़रबी रसूल?[4] आप कह दीजिए कि यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए रास्ता दिखाने वाला और शिफ़ा है। और जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है। और वह क़ुरआन उनके हक़ में अंधापन है, ये लोग (फ़ायदा न उठाने की वजह से ऐसे हैं कि गोया) किसी बड़ी दूर जगह से पुकारे जा रहे हैं (कि आवाज़ सुनते हों मगर समझते न हों)। **(44)** ◆

और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को भी किताब दी थी, सो उसमें भी इख़्तिलाफ़ हुआ।[5] और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले ठहर चुकी है (कि पूरा अ़ज़ाब आख़िरत में मिलेगा) तो उनका फ़ैसला (दुनिया ही में) हो चुका होता, और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उनको तरद्दुद "यानी असमंजस" में डाल रखा है। **(45)** जो शख़्स नेक अ़मल करता है वह अपने नफ़े के लिए, और जो शख़्स बुरा अ़मल करता है उसका वबाल उसी पर पड़ेगा, और आपका परवर्दिगार बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं।[6] **(46)**

1. इससे तौहीद पर दलालत होने के अ़लावा मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने के मुम्किन होने पर भी दलील हासिल हुई।

2. हमको उनका सब हाल मालूम है और उनको हम जहन्नम की सज़ा देंगे।

3. यानी इसमें किसी पहलू और किसी सम्त से इसका एहतिमाल नहीं कि यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से उतरा हुआ न हो, और फिर हक़ीक़त के ख़िलाफ़ इसको अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल-शुदा (उतरा हुआ) कह दिया जाए।

4. ख़ुलासा यह कि अब जो क़ुरआन अ़रबी है तो कहते हैं कि अ़जमी (अ़रबी के अ़लावा किसी और ज़बान में) क्यों नहीं? अगर अ़जमी होता तो कहते कि अ़रबी क्यों नहीं? किसी हाल पर उनको क़रार नहीं। फिर अ़जमी (ग़ैर-अ़रबी) होने से क्या फ़ायदा होता?

5. यानी किसी ने माना किसी ने न माना, यह आपके लिए कोई नई बात नहीं हुई। पस आप ग़मगीन न हों।

6. यानी ऐसा नहीं कि कोई नेकी जो उसकी पूरी शर्तों के साथ अ़मल में लाई गई हो, उसको शुमार न करे। या किसी बुराई को ज़्यादा शुमार कर ले।

पच्चीसवाँ पारः इलैहि युरद्दु

सूरतु हा-मीम् अस्सज्दति (आयत 47 से 54)

इलैहि युरद्दु अिल्मुस्सा-अति व मा तख़्रुजु मिन् स-मरातिम्-मिन् अक्मामिहा व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला बिअिल्मिही, व यौ-म युनादीहिम् ऐ-न शु-रकाई क़ालू आज़न्ना-क मा मिन्ना मिन् शहीद **(47)** व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यद्अू-न मिन् क़ब्लु व ज़न्नू मा लहुम् मिम्-महीस **(48)** ला यस्-अमुल् -इन्सानु मिन् दुआ-इल्ख़ैरि व इम्-मस्सहुश्-शर्रु फ़-यऊसुन् क़नूत **(49)** व ल-इन् अज़क़्नाहु रह्म-तम् मिन्ना मिम्-बअ्दि ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न हाज़ा ली व मा अज़ुन्नुस्सा-अ-त क़ाइ-मतंव्-व ल-इर्-रुजिअ्तु इला रब्बी इन्-न ली अिन्दहू लल्हुस्ना फ़-लनुनब्बि-अन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिमा अमिलू व लनुज़ीक़न्नहुम् मिन् अज़ाबिन् ग़लीज़ **(50)** व इज़ा अन्अम्ना अलल्-इन्सानि अअ्-र-ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश्शर्रु फ़ज़ू दुआइन् अरीज़ **(51)** क़ुल् अ-रऐतुम् इन् का-न मिन् अिन्दिल्लाहि सुम्-म कफ़र्तुम् बिही मन् अज़ल्लु मिम्मन् हु-व फ़ी शिक़ाक़िम्-बअीद **(52)** सनुरीहिम् आयातिना फ़िल्-आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हत्ता य-तबय्य-न लहुम् अन्नहुल्-हक़्क़ु, अ-व लम् यक्फ़ि बिरब्बि-क अन्नहू अला कुल्लि शैइन् शहीद **(53)** अला इन्नहुम् फ़ी मिर्-यतिम्-मिल्लिक़ा-इ रब्बिहिम्, अला इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-मुहीत **(54)** ❖

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَ
مَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي
قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ
مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾ لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ
الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا
مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً
وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾ وَإِذَا أَنْعَمْنَا
عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ
عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِ مَنْ
أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَ
فِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ
أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ
رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ﴿٥٤﴾

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ﴿١﴾ عسق ﴿٢﴾ كَذَٰلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ

पच्चीसवाँ पारः इलैहि युरद्दु

सूरः हा-मीम् अस्-सज्दः (आयत 47 से 54)

क़ियामत के इल्म का हवाला ख़ुदा ही की तरफ़ दिया जा सकता है।[1] और कोई फल अपने ख़ोल में से नहीं निकलता और न किसी औरत को हमल "यानी गर्भ" रहता है, और न वह बच्चे को जन्म देती है, मगर यह सब उसकी इत्तिला से होता है। और जिस दिन अल्लाह तआला उन (मुश्रिकों) को पुकारेगा (और कहेगा) कि मेरे शरीक (अब) कहाँ हैं, वे कहेंगे कि (अब तो) हम आपसे यही अर्ज़ करते हैं कि हममें (इस अक़ीदे का) कोई दावेदार नहीं। **(47)** और जिन-जिनको ये लोग पहले से (यानी दुनिया में) पूजा करते थे, वे सब ग़ायब हो जाएँगे।[2] और ये लोग समझ लेंगे कि उनके लिए कहीं बचाव की सूरत नहीं। **(48)** आदमी, तरक़्क़ी की ख़्वाहिश से उसका जी नहीं भरता, और अगर उसको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो नाउम्मीद परेशान हो जाता है।[3] **(49)** और अगर हम उसको किसी तकलीफ़ के बाद जो कि उसपर आ पड़ी थी, अपनी मेहरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो कहता है कि यह तो मेरे लिए होना ही चाहिए था,[4] और मैं क़ियामत को आने वाला नहीं ख़्याल करता, और अगर मैं अपने रब के पास पहुँचाया भी गया तो मेरे लिए उसके पास भी बेहतरी ही है। सो हम उन इनकार करने वालों को उनके (यह) सब किरदार ज़रूर बतला देंगे, और उनको सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखा देंगे। **(50)** और जब हम आदमी को नेमत अ़ता करते हैं तो (हमसे और हमारे अहकाम से) मुँह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है,[5] और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो ख़ूब लम्बी-चौड़ी दुआएँ करता है।[6] **(51)** आप कहिए कि भला यह तो बतलाओ कि अगर यह क़ुरआन ख़ुदा तआला के यहाँ से आया हो (और) फिर तुम इसका इनकार करो तो ऐसे शख़्स से ज़्यादा कौन ग़लती में होगा जो (हक़ से) ऐसी दूर-दराज़ मुख़ालफ़त में पड़ा हो? **(52)** हम जल्द ही उनको अपनी (क़ुदरत की) निशानियाँ उनके इर्द-गिर्द में भी दिखा देंगे[7] और ख़ुद उनकी ज़ात में भी,[8] यहाँ तक कि उनपर ज़ाहिर हो जाएगा कि वह क़ुरआन हक़ है। (तो) क्या आपके रब की यह बात (आपके हक़ पर होने की शहादत के लिए) काफ़ी नहीं कि वह हर चीज़ का शाहिद है।[9] **(53)** याद रखो कि वे लोग अपने रब के सामने जाने की तरफ़ से शक में पड़े हैं। याद रखो कि वह हर चीज़ को (अपने इल्म के) घेरे में लिए हुए है।[10] **(54)** ◆

---

1. यानी इस सवाल के ज़वाब में कि क़ियामत कब आएगी? यही कहा जाएगा कि उसका इल्म ख़ुदा ही को है, मख़्लूक़ को उसका इल्म न होने से उसका न आना लाज़िम नहीं आता।
2. या तो यह मुराद है कि उनकी शिर्कत का एतिक़ाद हक़ के वाज़ेह होने के सबब ज़ेहन से सब ख़त्म हो जाएगा, या यह कि वे मदद न कर सकेंगे।
3. और यह हद दर्जे की नाशुक्री, अल्लाह के साथ बदगुमानी और उसके हुक्म से नागवारी है।
4. क्योंकि मेरी तदबीर व क़ाबलियत और फ़ज़ीलत इसी को चाहती थी और यह भी हद दर्जे की नाशुक्री और तकब्बुर है।
5. और यह हद दर्जे की बुराई और सरकशी है।
6. और यह हद दर्जे की बेसब्री और दुनिया की मुहब्बत में मश्ग़ूलियत है।
7. कि अ़रब के इलाक़े पेशीनगोई के मुताबिक़ फ़त्ह हो जाएँगे।
8. यानी ये 'बद्र' में मारे जाएँगे और उनका मस्कन (यानी ठिकाना और रहने की जगह) मक्का भी फ़त्ह हो जाएगा।
9. और उसने जगह-जगह आपकी रिसालत की गवाही दी, मोजिज़ों के इज़्हार से ज़बान से भी और अ़मल से भी। पस वह गवाही काफ़ी है।
10. पस उनके शक व इनकार को भी जानता है और उसपर सज़ा देगा।

42 सूरतुश्-शूरा 62

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3585 अक्षर, 869 शब्द, 53 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् **(1)** अ़ैन्-सीन्-क़ाफ़् **(2)** कज़ालि-क यूही इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(3)** लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व हुवल् अ़लिय्युल्-अ़ज़ीम **(4)** तकादुस्-समावातु य-तफ़त्तर्-न मिन् फ़ौक़िहिन्-न वल्मलाइ-कतु युसब्बिहू-न बिहम्दि-रब्बिहिम् व यस्तग़्फ़िरू-न लिमन् फ़िल्-अर्ज़ि, अला इन्नल्ला-ह हुवल् ग़फ़ूरुर्-रहीम **(5)** वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अल्लाहु हफ़ीज़ुन् अ़लैहिम् व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-वकील **(6)** व कज़ालि-क औहैना इलै-क क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल्-लितुन्ज़ि-र उम्मल्-क़ुरा व मन् हौ-लहा व तुन्ज़ि-र यौमल्-जम्अ़ि ला रै-ब फ़ीहि, फ़रीक़ुन् फ़िल्-जन्नाति व फ़रीक़ुन् फ़िस्सअ़ीर **(7)** व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ़-लहुम् उम्म-तंव्-वाहि-दतंव्-व लाकिंय्युद्ख़िलु मंय्यशा-उ फ़ी रह्मतिही, वज़्ज़ालिमू-न मा लहुम् मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(8)** अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ फ़ल्लाहु हुवल्-वलिय्यु व हु-व युह्यिल्-मौता व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(9)** ❖

व मख़्त-लफ़्तुम् फ़ीहि मिन् शैइन् फ़हुक्मुहू इलल्लाहि, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बी अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब **(10)** फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्ज़ि, ज-अ़-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व मिनल्-अन्आ़मि अज़्वाजन् यज़्-रउकुम् फ़ीहि, लै-स कमिस्लही

الشورى ٤٢ — ٤٣٦ — اليه يرد ٢٥

الله العزيز الحكيم ﴿٣﴾ له ما في السموت وما في الارض وهو
العلي العظيم ﴿٤﴾ تكاد السموت يتفطرن من فوقهن والملئكة
يسبحون بحمد ربهم ويستغفرون لمن في الارض الا ان
الله هو الغفور الرحيم ﴿٥﴾ والذين اتخذوا من دونه اولياء الله
حفيظ عليهم وما انت عليهم بوكيل ﴿٦﴾ وكذلك اوحينا
اليك قرانا عربيا لتنذر ام القرى ومن حولها وتنذر يوم
الجمع لا ريب فيه فريق في الجنة وفريق في السعير ﴿٧﴾ ولو
شاء الله لجعلهم امة واحدة ولكن يدخل من يشاء في
رحمته والظلمون ما لهم من ولي ولا نصير ﴿٨﴾ ام اتخذوا
من دونه اولياء فالله هو الولي وهو يحي الموتى وهو على
كل شيء قدير ﴿٩﴾ وما اختلفتم فيه من شيء فحكمه الى
الله ذلكم الله ربي عليه توكلت واليه انيب ﴿١٠﴾ فاطر
السموت والارض جعل لكم من انفسكم ازواجا ومن
الانعام ازواجا يذرؤكم فيه ليس كمثله شيء وهو
السميع البصير ﴿١١﴾ له مقاليد السموت والارض يبسط
الرزق لمن يشاء ويقدر انه بكل شيء عليم ﴿١٢﴾ شرع لكم

ع

منزل ٦

42 सूरः शूरा 62

सूरः शूरा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 53 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् (1) अ़ैन-सीन-क़ाफ़ (2) इसी तरह आप पर और जो (पैग़म्बर) आपसे पहले हो चुके हैं उनपर अल्लाह जो ज़बरदस्त हिक्मत वाला है (दूसरी सूरतों और किताबों की) वह्य भेजता रहा है। (3) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही सबसे बरतर और बड़ी शान वाला है। (4) कुछ बईद नहीं कि आसमान अपने ऊपर से (कि उधर ही से बोझ पड़ता है) फट पड़ें, और (वे) फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ करते हैं और ज़मीन वालों के लिए माफ़ी माँगते हैं, ख़ूब समझ लो कि अल्लाह ही माफ़ करने वाला, रहमत करने वाला है। (5) और जिन लोगों ने अल्लाह के अ़लावा दूसरे कारसाज़ "यानी काम बनाने वाले" क़रार दे रखे हैं अल्लाह तआ़ला उनको भी देख-भाल रहा है। और आपको उनपर कोई इख़्तियार नहीं दिया गया। (6) और हमने इसी तरह आप पर (यह) क़ुरआन अ़रबी वह्य के ज़रिए से नाज़िल किया है, ताकि आप (सबसे पहले) मक्का में रहने वालों को और जो लोग उसके आस-पास हैं उनको डराएँ और जमा होने के दिन से डराएँ,[1] जिस (के आने) में ज़रा शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में (दाख़िल) होगा और एक दोज़ख़ में होगा। (7)[2] और अगर अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होता तो उन सबको एक ही तरीक़े का बना देता,[3] लेकिन वह जिसको चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है, और (उन) ज़ालिमों का (क़ियामत के दिन) कोई हिमायती और मददगार नहीं। (8) क्या उन लोगों ने ख़ुदा के सिवा दूसरे कारसाज़ "काम बनाने वाले" क़रार दे रखें हैं? सो अल्लाह ही कारसाज़ है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।[4] (9) ◆

और जिस-जिस बात में तुम (हक़ वालों के साथ) इख़्तिलाफ़ करते हो उसका फ़ैसला अल्लाह तआ़ला ही के सुपुर्द है। यह अल्लाह मेरा रब है, मैं उसी पर भरोसा करता हूँ और उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ।[5] (10) वह आसमानों का और ज़मीन का पैदा करने वाला है,[6] उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जोड़े बनाए और (इसी तरह) मवेशियों के जोड़े बनाए। (और) इस (जोड़े मिलाने) के ज़रिए से तुम्हारी नस्ल चलाता रहता है। कोई चीज़ उसके जैसी नहीं और वही हर बात का सुनने वाला (और) देखने वाला है। (11) उसी के इख़्तियार में हैं आसमानों की और ज़मीन की कुन्जियाँ,[7] जिसको चाहता है ज्यादा रोज़ी देता है और (जिसको चाहे) कम देता है, बेशक वह हर चीज़ का पूरा जानने वाला है।[8] (12) अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के वास्ते वही दीन

---

1. इससे क़ियामत का दिन मुराद है, कि उसमें पहले वाले और आख़िर वाले सब जमा हो जाएँगे।
2. पस आपका काम सिर्फ़ ऐसे दिन से डरा देना है। और बाक़ी उनके ईमान लाने और ईमान न लाने से आपको क्या बहस, वह अल्लाह तआ़ला की चाहत और मरज़ी पर है।
3. यानी सबको ईमान नसीब कर देता।
4. तो कारसाज़ बनाने के लायक़ वही हुआ जिसकी क़ुदरत हर चीज़ पर आ़म तौर पर और मुर्दों को ज़िन्दा करने पर ख़ास तौर पर साबित है। इस ख़ास क़ुदरत का इसलिए बयान किया कि इस वक़्त औरों की क़ुदरत जो अब नाम के लिए है वह भी बेनाम व निशान हो जाएगी, तो क़ुदरत का ज़ुहूर पूरी तरह होगा।
5. पस न उन नुक़सान और तकलीफ़ों से डरता हूँ, और न तौहीद में कोई शुब्हा करता हूँ जिसको उसने हक़ कह दिया है।
6. और वह तुम्हारा भी पैदा करने वाला है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 874 पर)

शैउन् व हुवस्समीअुल्-बसीर (11) लहू मक़ालीदुस्समावाति वल्अर्ज़ि यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्-यशा-उ व यक़्दिरु, इन्नहू बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (12) श-र-अ़ लकुम् मिनद्दीनि मा वस्सा बिही नूहंव्वल्लज़ी औहैना इलै-क व मा वस्सैना बिही इब्राही-म व मूसा व अ़ीसा अन् अक़ीमुद्-दी-न व ला त-तफ़र्रक़ू फ़ीहि, कबु-र अ़लल्-मुश्रिकी-न मा तद्अूहुम् इलैहि, अल्लाहु यज्तबी इलैहि मंय्यशा-उ व यह्दी इलैहि मंय्युनीब (13) व मा त-फ़र्रक़ू इल्ला मिम्-बअ्दि मा जा-अहुमुल्-अि़ल्मु बग़्यम् बैनहुम्, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क इला अ-जलिम् मुसम्मल्-लक़ुज़ि-य बैनहुम्, व इन्नल्लज़ी-न ऊरिसुल्-किता-ब मिम्-बअ्दिहिम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (14) फ़-लिज़ालि-क फ़द्अु वस्तक़िम् कमा उमिर्-त व ला तत्तबिअ् अह्वा-अहुम् व क़ुल् आमन्तु बिमा अन्ज़-ल्लाहु मिन् किताबिन् व उमिर्तु लि-अअ्दि-ल बैनकुम्, अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम्, लना अअ्मालुना व लकुम् अअ्मालुकुम्, ला हुज्ज-त बैनना व बैनकुम्, अल्लाहु यज्मअु बैनना व इलैहिल्-मसीर (15) वल्लज़ी-न युहाज्जू-न फ़िल्लाहि मिम्-बअ्दि मस्तुजी-ब लहू हुज्जतुहुम् दाहि-ज़तुन् अि़न्-द रब्बिहिम् व अ़लैहिम् ग़-ज़बुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (16) अल्लाहुल्लज़ी अन्ज़लल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि वल्मीज़ा-न, व मा युद्री-क लअ़ल्लस्सा-अ़-त क़रीब (17) यस्तअ्जिलु बि-हल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिहा वल्लज़ी-न आमनू मुश्फ़िक़ू-न मिन्हा व यअ्लमू-न अन्नहल्-हक़्क़ु, अला इन्नल्लज़ी-न युमारू-न फ़िस्सा-अ़ति लफ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद (18) अल्लाहु लतीफ़ुम्-बिअि़बादिही यर्ज़ुक़ु

من الدين ما وصى به نوحا والذي اوحينا اليك وما
وصينا به ابرهيم وموسى وعيسى ان اقيموا الدين و
لا تتفرقوا فيه كبر على المشركين ما تدعوهم اليه الله يجتبي
اليه من يشاء ويهدي اليه من ينيب ۝ وما تفرقوا الا
من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم ولولا كلمة سبقت
من ربك الى اجل مسمى لقضي بينهم وان الذين اورثوا
الكتب من بعدهم لفي شك منه مريب ۝ فلذلك فادع
واستقم كما امرت ولا تتبع اهواءهم وقل امنت بما انزل
الله من كتب وامرت لاعدل بينكم الله ربنا وربكم لنا
اعمالنا ولكم اعمالكم لا حجة بيننا وبينكم الله يجمع بيننا
واليه المصير ۝ والذين يحاجون في الله من بعد ما
استجيب له حجتهم داحضة عند ربهم وعليهم غضب
ولهم عذاب شديد ۝ الله الذي انزل الكتب بالحق والميزان
وما يدريك لعل الساعة قريب ۝ يستعجل بها الذين
لا يؤمنون بها والذين امنوا مشفقون منها ويعلمون
انها الحق الا ان الذين يمارون في الساعة لفي ضلل بعيد ۝

मुक़र्रर किया जिसका उसने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को हुक्म दिया था, और जिसको हमने आपके पास वह्य के ज़रिए से भेजा है, और जिसका हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा (अ़लैहिमुस्सलाम) को (मय उनके सब पैरोकारों के) हुक्म दिया था, (और उनकी उम्मतों को यह कहा था) कि इसी दीन को क़ायम रखना और इसमें फूट न डालना।[1] मुश्रिकीन को वह बात बड़ी नागवार गुज़रती है जिसकी तरफ़ आप उनको बुला रहे हैं। अल्लाह अपनी तरफ़ जिसको चाहता है खींच लेता है,[2] और जो शख़्स (ख़ुदा की तरफ़) रुजू करे उसको अपने तक पहुँचना नसीब फ़रमाता है।[3] **(13)** और वे लोग इसके बाद कि उनके पास इल्म पहुँच चुका था, आपस की ज़िद्दा-ज़िद्दी से आपस में अलग-अलग हो गए। और अगर आपके परवर्दिगार की तरफ़ से एक मुक़र्ररा वक़्त तक (के लिए मोहलत देने की) एक बात पहले क़रार न पा चुकती तो (दुनिया ही में) उनका फ़ैसला हो चुका होता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई है (मुराद इससे हुज़ूरे पाक के ज़माने के मुश्रिक हैं) वे उसकी तरफ़ से ऐसे (मज़बूत) शक में पड़े हैं जिसने (उनको) दुविधा और शक में डाल रखा है। **(14)** सो आप उसी तरफ़ (उनको बराबर) बुलाते रहिए, और जिस तरह आपको हुक्म हुआ है (उसपर) अटल और क़ायम रहिए, और उनकी (बुरी) ख़्वाहिशों पर न चलिए। और आप कह दीजिए कि अल्लाह ने जितनी किताबें नाज़िल फ़रमाई हैं मैं सबपर ईमान लाता हूँ। और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि (अपने और) तुम्हारे दरमियान में इन्साफ़ रखूँ। अल्लाह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है। हमारे आमाल हमारे लिए और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए, हमारी-तुम्हारी कुछ बहस नहीं। अल्लाह हम सबको जमा करेगा और (इसमें शक ही नहीं कि) उसी के पास जाना है। **(15)** और जो लोग अल्लाह तआ़ला (के दीन) के बारे में (मुसलमानों से) झगड़े निकालते हैं, इसके बाद कि वह मान लिया गया,[4] उन लोगों की हुज्जत उनके रब के नज़दीक बातिल है, और उनपर ग़ज़ब (पड़ने वाला) है, और उनके लिए (क़ियामत में) सख़्त अ़ज़ाब (होने वाला) है।[5] **(16)** अल्लाह ही है जिसने (इस) किताब (यानी क़ुरआन) को और इन्साफ़ को नाज़िल फ़रमाया। और आपको (इसकी) क्या ख़बर, अ़जब नहीं कि क़ियामत क़रीब हो। **(17)** (मगर) जो लोग उसका यक़ीन नहीं रखते उसका तक़ाज़ा करते हैं, और जो लोग यक़ीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और एतिक़ाद रखते हैं कि वह बरहक़ है। याद रखो कि जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ते हैं, बड़ी दूर की गुमराही में (मुब्तला)

(पृष्ठ 872 का शेष) **7.** यानी तसर्रुफ़ करने वाला वही है।

8. यानी वह जानने वाला है कि किसके लिए क्या मस्लहत है।

1. मुराद इस दीन से दीन की उसूली चीज़ें हैं, जो तमाम शरीअ़तों में मुश्तरक हैं। जैसे अल्लाह को एक मानना और रसूलों पर ईमान लाना और मरने के बाद ज़िन्दा होने पर यक़ीन लाना वग़ैरह।

फ़ायदाः क़ायम रखना यह कि उसको तब्दील मत करना, उसको छोड़ना मत। और फूट यह कि किसी बात पर ईमान लाएँ और किसी पर ईमान न लाएँ, या कोई ईमान लाए कोई न लाए। हासिल यह कि तौहीद वग़ैरह दीने क़दीम है कि शुरू से इस वक़्त तक तमाम शरीअ़तें इसमें मुत्तफ़िक़ रही हैं, और इसके ज़िम्न में नुबुव्वत की भी ताईद हो गई। पस चाहिए था कि उसके क़बूल करने में लोगों को ज़रा भी बहाने बनाना और टाल-मटोल न होता।

2. यानी हक़ दीन को क़बूल करने की तौफ़ीक़ दे देता है।

3. चाहत के बाद इज्तिबा यानी ईमान की तौफ़ीक़ देना होता है, और इज्तिबा यानी ईमान की तौफ़ीक़ के बाद अगर अल्लाह की तरफ़ रुजू और इताअ़त हो तो उसपर अल्लाह की नज़दीकी और बेइन्तिहा सवाब मुरत्तब होता है। ख़ुलासा यह कि मुश्रिकीन इनकार की सिफ़त के साथ मुत्तसिफ़ हैं और मोमिनीन अल्लाह की तौफ़ीक़ व हिदायत के साथ मुत्तसिफ़ हैं।

4. यानी इसके बाद कि बहुत-से आदमी अक़्लमन्द और समझदार होकर उसको मान चुके, जिससे हुज्जत और ज़्यादा ज़ाहिर हो गई।

5. और उससे बचने का तरीक़ा यही है कि अल्लाह को और उसके दीन को मानो, और उसका मानना यह है कि अल्लाह की किताब को जो कि अल्लाह और बन्दों के हुक़ूक़ और सच और जिन चीज़ों पर अ़मल करना वाजिब है, उनको जामे और मुश्तमिल है।

मंय्यशा-उ व हुवल्-क़विय्युल्-अ़ज़ीज़ (19) ❖

मन् का-न युरीदु हर्सल्-आख़िरति नज़िद् लहू फ़ी हर्सिही व मन् का-न युरीदु हर्सद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन्-नसीब (20) अम् लहुम् शु-रका-उ श-रअू लहुम् मिनद्दीनि मा लम् यअ्ज़म्-बिहिल्लाहु, व लौ ला कलि-मतुल्-फ़स्लि लक़ुज़ि-य बैनहुम् व इन्नज़्-ज़ालिमीन-न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (21) तरज़्ज़ालिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा क-सबू व हु-व वाक़िअुम् बिहिम्, वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी रौज़ातिल्-जन्नाति लहुम्-मा यशाऊ-न अ़िन्-द रब्बिहिम्, ज़ालि-क हुवल् फ़ज़्लुल्-कबीर (22) ज़ालिकल्लज़ी युबश्शिरुल्लाहु अ़िबा-दहुल्-लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, क़ुल्-ला अस्-अलुकुम् अ़लैहि अज्रन् इल्लल्-म-वद्द-त फ़िल्क़ुर्बा, व मंय्-यक़्तरिफ़् ह-स-नतन् नज़िद् लहू फ़ीहा हुस्नन्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् शकूर (23) अम् यक़ूलूनफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् फ़-इंय्य-श-इल्लाहु यख़्तिम् अ़ला क़ल्बि-क, व यम्हुल्लाहुल्-बाति-ल व युहिक़्क़ुल्-हक़्-क़ बि-कलिमातिही, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (24) व हुवल्लज़ी यक़्बलुत्तौ-ब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ्फ़ू अ़निस्सय्यिआति व यअ्लमु मा तफ़्अ़लून (25) व यस्तजीबुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व यज़ीदुहुम्-मिन् फ़ज़्लिही, वल्काफ़िरू-न लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (26) व लौ ब-सतल्लाहुर्रिज़्-क़ लिअ़िबादिही ल-बग़ौ फ़िल्अर्ज़ि व लाकिंय्-युनज़्ज़िलु बि-क़-दरिम्-मा यशा-उ, इन्नहू बिअ़िबादिही ख़बीरुम्-बसीर (27) व

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ
يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾
اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ۚ
وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ
وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ
الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾
ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۚ
قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۚ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى
قَلْبِكَ ۚ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ
يَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَالْكٰفِرُوْنَ

हैं। (18) अल्लाह तआला (दुनिया में) अपने बन्दों पर मेहरबान है, जिसको (जिस क़द्र) चाहता है रोज़ी देता है।[1] और वह कुव्वत वाला (और) ज़बरदस्त है। (19) ❖

जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो,[2] हम उसको उसकी खेती में तरक़्क़ी देंगे,[3] और जो दुनिया की खेती का तालिब हो[4] तो हम उसको कुछ दुनिया (अगर चाहें) दे देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं। (20) क्या (ख़ुदाई में) उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुक़र्रर कर दिया है जिसकी ख़ुदा ने इजाज़त नहीं दी,[5] और अगर (ख़ुदा की तरफ़ से) एक फ़ैसले वाली बात (ठहरी हुई) न होती तो (दुनिया ही में) उनका फ़ैसला हो चुका होता, और (आख़िरत में) उन ज़ालिमों को ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (21) (उस दिन) आप उन ज़ालिमों को देखेंगे कि अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे, और वह (वबाल) उनपर (ज़रूर) पड़कर रहेगा। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए वे जन्नतों के बाग़ों में (दाख़िल) होंगे। वे जिस चीज़ को चाहेंगे उनके रब के पास उनको मिलेगी, यही बड़ा इनाम है।[6] (22) यही है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह तआला अपने उन बन्दों को दे रहा है जो ईमान लाए और अच्छे अ़मल किए, आप (उनसे) यूँ कहिए कि मैं तुमसे कुछ मतलब नहीं चाहता सिवाय रिश्तेदारी की मुहब्बत के।[7] और जो शख़्स कोई नेकी करेगा हम उसमें और ज़्यादा ख़ूबी कर देंगे। बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला, बड़ क़द्रदान है। (23) क्या ये लोग यूँ कहते हैं कि उन्होंने ख़ुदा पर झूठ बोहतान बाँध रखा है? सो ख़ुदा अगर चाहे तो आपके दिल पर बन्द लगा दे, और अल्लाह तआला बातिल को मिटाया करता है और हक़ को अपने अहकाम से साबित किया करता है। वह दिलों की बातें जानता है। (24) और वह ऐसा (रहम करने वाला) है कि अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है,[8] और वह तमाम (गुज़रे हुए) गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। और जो कुछ तुम करते हो वह उस (सब) को जानता है।[9] (25) और उन लोगों की इबादत क़बूल करता है जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अ़मल किए, और उनको अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा (सवाब) देता है। और जो लोग क़ुफ़्र कर रहे हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (26) और अगर अल्लाह तआला अपने सब बन्दों के लिए रोज़ी

---

1. इस दुनिया में लुत्फ़ व मेहरबानी से यह लाज़िम नहीं आता कि उनका मस्लक (यानी मज़हब और तरीक़ा) हक़ हो, और आख़िरत में भी उनपर लुत्फ़ हो और अ़ज़ाब न हो, बल्कि बातिल पर जमे रहने की वजह से वहाँ अ़ज़ाब दिए जाएँगे।
2. यानी आख़िरत के सवाब का तालिब हो।
3. यानी आमाल पर उसको सवाब देंगे और उस सवाब को दोगुना करेंगे।
4. यानी तदबीर और कोशिश से उसकी ग़रज़ दुनिया का नफ़ा हो और आख़िरत के लिए कुछ कोशिश न करे, यहाँ तक कि ईमान भी न लाए।
5. इस इनकार के अन्दाज़ में सवाल करने से मक़सूद यह है कि कोई इस क़ाबिल नहीं कि ख़ुदा के ख़िलाफ़ उसका मुक़र्रर किया हुआ दीन मोतबर हो सके।
6. न वह जो दुनिया में ऐश और आराम मौजूद है।
7. यानी इतना चाहता हूँ कि मेरे-तुम्हारे जो रिश्तेदारी के ताल्लुक़ात हैं जो कि तमाम क़ुरैश में बल्कि तमाम अ़रब में फैले हुए थे, उनके हुक़ूक़ का तो ख़्याल रखो।
8. पस अगर कोई काफ़िर कुफ़्र से तौबा कर ले और इस्लाम ले आए तो हम उसका ईमान क़बूल कर लेंगे।
9. पस उसको यह भी ख़बर है कि तौबा ख़ालिस की है या ग़ैर-ख़ासिल की है। तो तुमको ख़ालिस तौबा करनी चाहिए।

हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स मिम्बअ्दि मा क़्-नतू व यन्शुरु रह्म-तहू, व हुवल् वलिय्युल्-हमीद **(28)** व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बस्-स फ़ीहिमा मिन् दाब्बतिन्, व हु-व अ़ला जम्अिहिम् इज़ा यशा-उ क़दीर ◆ **(29)** ❖

व मा असाबकुम् मिम्-मुसी-बतिन् फ़बिमा क-सबत् ऐदीकुम् व यअ्फ़ू अ़न् कसीर **(30)** व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(31)** व मिन् आयातिहिल्-जवारि फ़िल्-बहिर कल्-अअ्लाम **(32)** इंय्य-शअ् युस्किनिर्-री-ह फ़-यज़्लल्-न रवाकि-द अ़ला ज़ह्रिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर **(33)** औ यूबिक़्हुन्-न बिमा क-सबू व यअ्फ़ु अ़न् कसीर **(34)** व यअ्-ल--मल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिना, मा लहुम् मिम्-महीस **(35)** फ़मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़-मताअुल्-हयातिद्दुन्या व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुंव्-व अब्क़ा लिल्लज़ी-न आमनू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून **(36)** वल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबा-इरल्-इस्मि वल्फ़वाहि-श व इज़ा मा ग़ज़िबू हुम् यग़्फ़िरून **(37)** वल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अम्रुहुम् शूरा बैनहुम् व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून **(38)** वल्लज़ी-न इज़ा असा-बहुमुल्-बग़्यु हुम् यन्तसिरून **(39)** व जज़ा-उ सिय्य-अतिन्

لهم عذاب شديد ۞ ولو بسط الله الرزق لعباده لبغوا
في الأرض ولكن ينزل بقدر ما يشاء ۚ إنه بعباده خبير
بصير ۝ وهو الذي ينزل الغيث من بعد ما قنطوا وينشر
رحمته ۚ وهو الولي الحميد ۝ ومن آياته خلق السماوات
والأرض وما بث فيهما من دابة ۚ وهو على جمعهم
إذا يشاء قدير ۝ وما أصابكم من مصيبة فبما كسبت
أيديكم ويعفو عن كثير ۝ وما أنتم بمعجزين في الأرض
وما لكم من دون الله من ولي ولا نصير ۝ ومن آياته
الجوار في البحر كالأعلام ۝ إن يشأ يسكن الريح فيظللن
رواكد على ظهره ۚ إن في ذلك لآيات لكل صبار شكور ۝
أو يوبقهن بما كسبوا ويعف عن كثير ۝ ويعلم الذين
يجادلون في آياتنا ما لهم من محيص ۝ فما أوتيتم من
شيء فمتاع الحياة الدنيا ۖ وما عند الله خير وأبقى للذين
آمنوا وعلى ربهم يتوكلون ۝ والذين يجتنبون كبائر
الإثم والفواحش وإذا ما غضبوا هم يغفرون ۝ والذين
استجابوا لربهم وأقاموا الصلاة وأمرهم شورى بينهم

कुशादा कर देता तो वे दुनिया में शरारत करने लगते,[1] लेकिन जितना रिज़्क़ चाहता है (मुनासिब) अन्दाज़ से (हर एक के लिए) उतारता है, वह अपने बन्दों (की मस्लहतों) को जानने वाला (और उनका हाल) देखने वाला है।[2] (27) और वह ऐसा है जो लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैलाता है,[3] और वह (सबका) काम बनाने वाला, तारीफ़ के क़ाबिल है।[4] (28) और उस (की कुदरत) की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन का पैदा करना है, और उन जानदारों का जो उसने आसमान और ज़मीन में फैला रखे हैं,[5] और वह उन (मख़्लूक़ात) के जमा कर लेने पर भी जब वह (जमा करना) चाहे क़ादिर है। ◆ (29) ❖

और तुमको (ऐ गुनाहगारो!) जो कुछ मुसीबत पहुँचती है तो वह तुम्हारे ही हाथों के किए हुए कामों से (पहुँचती है) और बहुत-से तो दरगुज़र ही कर देता है।[6] (30) और तुम ज़मीन में (पनाह लेकर उसको) हरा नहीं सकते, और ख़ुदा तआ़ला के सिवा तुम्हारा कोई भी हामी और मददगार नहीं। (31) और उसकी निशानियों में से जहाज़ हैं समुद्र में (ऐसे ऊँचे) जैसे पहाड़। (32) अगर वह चाहे हवा को ठहरा दे, तो वह (समुद्री जहाज़) समुद्र की सतह पर खड़े-के-खड़े रह जाएँ। बेशक इसमें निशानियाँ हैं हर साबिर-शाकिर (यानी मोमिन) के लिए। (33) या उन जहाज़ों को उनके (बुरे) आमाल (कुफ़्र वग़ैरह) के सबब तबाह कर दे, और (उनमें) बहुत-से आदमियों से दरगुज़र कर जाए। (34) और (उस तबाही के वक़्त) उन लोगों को जो कि हमारी आयतों में झगड़े निकालते हैं मालूम हो जाए कि (अब) उनके लिए कहीं बचाव नहीं। (35) सो जो कुछ तुमको दिया-दिलाया गया है वह सिर्फ़ (चन्द दिन की) दुनियावी ज़िन्दगी के बरतने के लिए है,[7] और जो (अज्र और सवाब आख़िरत में) अल्लाह तआ़ला के यहाँ है वह इससे कहीं बढ़ा हुआ और बेहतर है, और ज़्यादा पायदार।[8] वह उन लोगों के लिए है जो ईमान ले आए और अपने परवर्दिगार पर भरोसा करते हैं। (36) और जो कि बड़े गुनाहों से और (उनमें) बेहयाई की बातों से बचते हैं, और जब उनको गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं। (37) और जिन लोगों ने कि अपने रब का हुक्म माना और वे नमाज़ के पाबन्द हैं। और उनका हर काम (जिसमें शरीअ़त का कोई वाज़ेह हुक्म मौजूद न हो) आपस के मश्विरे से होता है,[9] और हमने जो

1. यानी अल्लाह तआ़ला की सिफ़ते हिक्मत की निशानियों में से यह है कि उसने सब आदमियों को ज़्यादा माल नहीं दिया, और ज़ाहिर है कि अगर मालदारी आ़म हो जाए तो माल की ज़रूरत तो किसी को किसी से बाक़ी न रहे और काम किसी का कोई करे नहीं, तो दोनों तरफ़ से ज़रूरत जाती रहे, फिर कौन किससे दबे?
2. इससे हिक्मत वाला होने के अ़लावा ख़बर रखने वाला और दूर अन्देश होना दो सिफ़तें और साबित हुईं।
3. निशानियों से उगने वाले चीज़ें और फल मुराद हैं।
4. पस ऊपर की तीन सिफ़तों के साथ तीन सिफ़तें और साबित हुईं- 'रहम करने वाला, कारसाज़ और तारीफ़ के क़ाबिल होना'।
5. इससे ऊपर की छह सिफ़तों के साथ 'ख़ालिक़' होना भी साबित हुआ।
6. चाहे दोनों जहान में या सिर्फ़ दुनिया में।
7. और उम्र के ख़त्म होने के साथ उसका भी ख़ात्मा हो जाएगा।
8. पस दुनिया की तलब छोड़कर आख़िरत की तलब करो।
9. हर काम से मुराद हर अहम और बड़ा काम है, इसलिए कि मामूली कामों में मश्विरा मन्क़ूल नहीं, जैसे दो वक़्त का खाना खाना वग़ैरह। और शरीअ़त का हुक्म न होने की क़ैद इसलिए कि शरीअ़त की तरफ़ से मुक़र्ररा अहकाम में भी मश्विरा नहीं, जैसे यह मश्विरा कि पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ा करूँ या न पढ़ा करूँ।

सय्यि-अतुम्-मिस्लुहा फ़-मन् अ़फ़ा व अस्ल-ह फ़-अज्रुहू अ़लल्लाहि, इन्नहू ला युहिब्बुज़्-ज़ालिमीन **(40)** व ल-मनिन्त-स-र बअ़्-द ज़ुल्मिही फ़-उलाइ-क मा अ़लैहिम् मिन् सबील **(41)** इन्नमस्सबीलु अ़लल्लज़ी-न यज़्लिमूनन्ना-स व यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(42)** व ल-मन् स-ब-र व ग़-फ़-र इन्-न ज़ालि-क लमिन् अ़ज़्मिल्-उमूर **(43)** ❖

व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिंव्-वलिय्यिम्- मिम्-बअ़्दिही, व तरज़्-ज़ालिमी-न लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब यक़ूलू-न हल् इला मरद्दिम्-मिन् सबील **(44)** व तराहुम् युअ़्रज़ू-न अ़लैहा ख़ाशिअ़ी-न मिनज़्ज़ुल्लि यन्ज़ुरू-न मिन् तर्फ़िन् ख़फ़िय्यिन्, व क़ालल्लज़ी-न आमनू इन्नल्-ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति, अला इन्नज़्ज़ालिमी-न फ़ी अ़ज़ाबिम्-मुक़ीम **(45)** व मा का-न लहुम् मिन् औलिया-अ यन्सुरूनहुम् मिन् दूनिल्लाहि, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् सबील **(46)** इस्तजीबू लि-रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्-ला मरद्-द लहू मिनल्लाहि, मा लकुम् मिम्-मल्ज-इंय्यौमइज़िंव्-व मा लकुम् मिन्-नकीर **(47)** फ़-इन् अअ़्रज़ू फ़मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् हफ़ीज़न्, इन् अ़लै-क इल्लल्-बलाग़ु, व इन्ना इज़ा अज़क़्नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्म-तन् फ़रि-ह बिहा व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुम् बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम् फ़-इन्नल्-

5

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ
هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿۳۹﴾ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا
وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۰﴾ وَلَمَنِ
انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۱﴾ اِنَّمَا
السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۲﴾ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ
اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۴۳﴾ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ ع
مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ
يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۴﴾ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا
خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِىْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿۴۵﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ
مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۶﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ
يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ
مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿۴۷﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ

❖ रु. 4/14/5

कुछ उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। **(38)** और जो ऐसे हैं कि जब उनपर ज़ुल्म वाक़े होता है तो वे बराबर का बदला लेते हैं।[1] **(39)** और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है,[2] फिर (बदला लेने की इजाज़त के बाद) जो शख़्स माफ़ करे और इस्लाह करे तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है, वाक़ई अल्लाह तआला ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। **(40)** और जो अपने ऊपर ज़ुल्म हो चुकने के बाद बराबर का बदला ले ले, सो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं। **(41)** इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं[3] और नाहक़ दुनिया में सरकशी (और तकब्बुर) करते हैं, ऐसों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब (मुक़र्रर) है। **(42)** और जो शख़्स सब्र करे और माफ़ कर दे, यह ज़रूर बड़े हिम्मत के कामों में से है।[4] **(43)** ❖

और जिसको अल्लाह तआला गुमराह कर दे तो उसके बाद उस शख़्स का (दुनिया में भी) कोई मददगार नहीं, और आप (उन) ज़ालिमों को देखेंगे जिस वक़्त कि उनको अ़ज़ाब का मुआ़यना होगा, कहते होंगे कि क्या (दुनिया में) वापस जाने की कोई सूरत है? **(44)** और (साथ ही) आप उनको इस हालत में देखेंगे कि वे दोज़ख़ के सामने लाए जाएँगे ज़िल्लत के मारे झुके हुए होंगे, सुस्त निगाह से देखते होंगे और (उस वक़्त) ईमान वाले कहेंगे कि पूरे घाटे वाले वे लोग हैं जो अपनी जानों से और अपने मुताल्लिक़ीन से (आज) क़ियामत के दिन घाटे में पड़े। याद रखो कि ज़ालिम (यानी मुश्रिक और काफ़िर) लोग हमेशा के अ़ज़ाब में रहेंगे। **(45)** और (वहाँ) उनके कोई मददगार न होंगे जो ख़ुदा से अलग (होकर) उनकी मदद करें। और जिसको ख़ुदा गुमराह कर दे उस (की नजात) के लिए कोई रास्ता ही नहीं। **(46)** तुम अपने रब का हुक्म मान लो, इससे पहले कि ऐसा दिन आ पहुँचे जिसके लिए ख़ुदा की तरफ़ से हटना न होगा।[5] न तुमको उस दिन कोई पनाह मिलेगी और न तुम्हारे बारे में कोई (ख़ुदा से) रोक-टोक करने वाला है। **(47)** फिर अगर ये लोग (यह सुनकर भी) मुँह मोड़ें तो हमने आपको उनपर निगराँ करके नहीं भेजा, (जिससे कि आपको अपने से पूछताछ का अन्देशा हो), आपके ज़िम्मे तो सिर्फ़ (हुक्म का) पहुँचा देना है। और हम जब (इस क़िस्म के) आदमी को अपनी इनायत का मज़ा चखा देते हैं तो वह उसपर ख़ुश हो जाता है, और अगर (ऐसे) लोगों पर उनके आमाल के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं, कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुक्री करने

1. यानी ज़्यादती नहीं करते, और यह मतलब नहीं कि माफ़ नहीं करते।

2. बशर्ते कि वह फ़ेल (काम) अपनी ज़ात के एतिबार से नाफ़रमानी न हो।

3. चाहे शुरू में या बदला लेने के वक़्त।

4. यानी ऐसा करना बेहतर है और यह बहादुरी है।

5. यानी दुनिया में जिस तरह अ़ज़ाब हटता जाता है वहाँ इसका हटाना और ढील देना न होगा।

इन्सा-न कफ़ूर **(48)** लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, यख़्लुक़ु मा यशा-उ, य-हबु लिमंय्यशा-उ इनासंव्-व य-हबु लिमंय्यशा-उज़्-ज़ुकूर **(49)** औ युज़व्विजुहुम् ज़ुक्रानंव्-व इनासन् व यज्अ़लु मंय्यशा-उ अ़क़ीमन्, इन्नहू अ़लीमुन् क़दीर **(50)** व मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युकल्लि-महुल्लाहु इल्ला वह्यन् औ मिंव्वरा-इ हिजाबिन् औ युर्सि-ल रसूलन् फ़यूहि-य बि-इज़्निही मा यशा-उ, इन्नहू अ़लिय्युन् हकीम **(51)** व कज़ालि-क औहैना इलै-क रूहम्-मिन् अम्रिना, मा कुन्-त तद्री मल्किताबु व लल्-ईमानु व लाकिन् ज-अ़ल्नाहु नूरन्-नह्दी बिही मन् नशा-उ मिन् अि़बादिना, व इन्न-क ल-तह्दी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(52)** सिरातिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, अला इलल्लाहि तसीरुल्-उमूर **(53)** ❖

عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَإِنَّآ إِذَآ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ
وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٨﴾
لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَشَآءُ
إِنٰثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَشَآءُ الذُّكُورَ ﴿٤٩﴾ أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّإِنٰثًا ۚ
وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَآءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ
أَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا
فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَآءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٥١﴾ وَكَذٰلِكَ أَوْحَيْنَآ
إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْإِيمَانُ
وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُورًا نَّهْدِي بِهِ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ
لَتَهْدِي إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِلَى اللّٰهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾
سورة الزخرف مكية وهي تسع وثمانون آية وسبع ركوعات
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ إِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٣﴾ وَإِنَّهُ فِيٓ أُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٤﴾ أَفَنَضْرِبُ
عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ﴿٥﴾ وَكَمْ أَرْسَلْنَا

43 सूरतुज़्-ज़ुख़्रुफ़ि 63

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3656 अक्षर, 848 शब्द, 89 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् **(1)** वल्-किताबिल्-मुबीन **(2)** इन्ना जअ़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल् लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून **(3)** व इन्नहू फ़ी उम्मिल्-किताबि लदैना ल-अ़लिय्युन् हकीम **(4)** अ-फ़ नज़्रिबु अ़न्कुमुज़्ज़िक्-र सफ़्हन् अन् कुन्तुम् क़ौमम्-मुस्रिफ़ीन **(5)** व कम् अर्सल्ना मिन्-नबिय्यिन् फ़िल्-अव्वलीन **(6)** व मा यअ्तीहिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला कानू बिही

लगता है।[1] **(48)** अल्लाह तआ़ला ही की बादशाहत है आसमानों की और ज़मीन की,[2] वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है बेटियाँ अ़ता फ़रमाता है और जिसको चाहता है बेटे अ़ता फ़रमाता है। **(49)** या उनको जमा कर देता है, बेटे भी और बेटियाँ भी, और जिसको चाहता है बेऔलाद रखता है। बेशक वह बड़ा जानने वाला, बड़ी क़ुदरत वाला है। **(50)** और किसी बशर "यानी आदमी और इनसान" की (मौजूदा हालत में) यह शान नहीं कि अल्लाह उससे कलाम फ़रमाए मगर (तीन तरह से), या तो इल्हाम से,[3] या आड़ और पर्दे के बाहर से,[4] या किसी फ़रिश्ते को भेज दे कि वह ख़ुदा के हुक्म से जो ख़ुदा को मन्ज़ूर होता है, पैग़ाम पहुँचा देता है, वह बड़ी बुलन्द शान वाला है और बड़ी हिक्मत वाला (भी) है। **(51)** और इसी तरह हमने आपके पास भी वह्य यानी अपना हुक्म भेजा है, आपको न यह ख़बर थी कि (अल्लाह की) किताब क्या चीज़ है, और न यह ख़बर थी कि ईमान (के कमाल की इन्तिहा) क्या है, और लेकिन हमने इस क़ुरआन को एक नूर बनाया,[5] जिसके ज़रिए हम अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं हिदायत करते हैं। और इसमें कोई शुब्हा नहीं कि आप एक सीधे रास्ते की हिदायत कर रहे हैं। **(52)** यानी उस ख़ुदा के रास्ते की कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। याद रखो सब मामलात उसी की तरफ़ लौटेंगे। **(53)** ❖

43 सूरः ज़ुख़्रुफ़ 63

सूरः ज़ुख़्रुफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 89 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् **(1)** क़सम है इस वाज़ेह किताब की **(2)** कि हमने इसको अ़रबी ज़बान का क़ुरआन बनाया ताकि (ऐ अ़रब वालो!) तुम (आसानी से) समझ लो। **(3)** और वह हमारे पास लौहे-महफ़ूज़ में बड़े रुतबे की और हिक्मत से भरी हुई किताब है।[6] **(4)** क्या हम तुमसे इस नसीहत (की किताब) को इस बात पर हटा लेंगे कि तुम (फ़रमाँबरदारी की) हद से गुज़रने वाले हो।[7] **(5)** और हम पहले लोगों में बहुत-से नबी भेजते रहे

1. ये दोनों हालतें नफ़्सानी लज़्ज़तों से बहुत ज़्यादा ताल्लुक़ होने और हक़ तआ़ला से बेताल्लुक़ी की दलील हैं। और यह हालत उनकी तबीयत का हिस्सा हो गई है। पस उनसे आप ईमान की उम्मीद क्यों रखें, जो ग़म का सबब हो।
2. "लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति······आख़िरत तक" तमाम इख़्तियारात को आ़म है।
3. यानी दिल में कोई अच्छी बात तबई हवास के वास्ते के बग़ैर डाल दे, चाहे वह इल्हामे क़तई हो जैसा अम्बिया का। या ग़ैर-क़तई हो जैसा ग़ैर-अम्बिया का इल्हाम।
4. यह पर्दा कोई जिस्मानी आड़ नहीं और न यह पर्दा हक़ तआ़ला की ज़ात व नूर को छुपा सकता है, बल्कि हक़ीक़त इस पर्दे की बशर के इदराक की सिफ़त का कमज़ोर होना है, और यही पर्दा था जो मूसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला के देखने से रुकावट बना था, और यही रुकावट जन्नत में दूर हो जाएगी, यानी दीदार की क़ुव्वत और बरदाश्त करने की हिम्मत दे दी जाएगी।
5. यानी उलूम और आमाल की तरफ़ हिदायत देने वाला बनाया।
6. पस जब यह समझने में आसान है, और ख़ास हमारी हिफ़ाज़त के तहत और अपने बेमिसाल, बड़े रुतबे वाली और हक़ होने पर दलालत करने वाली किताब, फिर फ़ायदों और मस्लहतों पर मुश्तमिल तो ऐसी किताब को ज़रूर मानना चाहिए। लेकिन अगर तुम न भी मानो तब भी हम हिक्मत के तक़ाज़े की वजह से उसका भेजना और तुमको उसका मुख़ातब बनाना न छोड़ेंगे।
7. यानी चाहे तुम मानो या न मानो, मगर नसीहत तो बराबर की जाएगी और यह फ़ैज़ कामिल होकर रहेगा।

यस्तह्ज़िऊन (7) फ़-अह्लक्ना अशद्-द मिन्हुम् बत्शंव्-व मज़ा म-सलुल्-अव्वलीन (8) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-न ख़-ल-क़हुन्नल्-अ़ज़ीज़ुल्-अ़लीम (9) अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ मह्दंव्-व ज-अ़-ल लकुम् फ़ीहा सुबुलल्-लअ़ल्लकुम् तह्तदून (10) वल्लज़ी नज़्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अम्-बि-क़-दरिन् फ़-अन्शर्ना बिही बल्द-तम्-मैतन् कज़ालि-क तुख़्रजून (11) वल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा व ज-अ़-ल लकुम् मिनल्-फ़ुल्कि वल्-अन्आ़मि मा तर्-कबून (12) लि-तस्तवू अ़ला ज़ुहूरिही सुम्-म तज़्कुरू निअ़्-म-त रब्बिकुम् इज़स्तवैतुम् अ़लैहि व तक़ूलू सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन (13) व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून (14) व ज-अ़लू लहू मिन् अ़िबादिही जुज़्अन्, इन्नल्-इन्सा-न ल-कफ़ूरुम्-मुबीन (15) ❖

अमित्त-ख़-ज़ मिम्मा यख़्लुक़ु बनातिंव्-व अस्फ़ाकुम् बिल्-बनीन (16) व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिमा ज़-र-ब लिर्रह्मानि म-सलन् ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम (17) अ-व मंयुनश्श-उ फ़िल्-हिल्यति व हु-व फ़िल्ख़िसामि ग़ैरु मुबीन (18) व ज-अ़लुल् मलाइ-कतल्लज़ी-न हुम् अ़िबादुर्रह्मानि इनसान्, अ-शहिदू ख़ल्क़हुम्, स-तुक्तबु शहा-दतुहुम् व युस्-अलून (19) व क़ालू लौ शा-अर्रह्मानु मा अ़बद्नाहुम्, मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून (20) अम्

مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْأَوَّلِينَ ﴿٦﴾ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٧﴾ فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾
وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ
الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ
فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١١﴾ وَالَّذِي
خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا
تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾ لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا
اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا
كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٤﴾ وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ
عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ
بَنَاتٍ وَّأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ
لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾ أَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا
فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ
الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ
شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ

हैं। **(6)** और उन लोगों के पास कोई नबी ऐसा नहीं आया जिसके साथ उन्होंने मज़ाक़ उड़ाने का काम न किया हो। **(7)** फिर हमने उन लोगों को जो कि उनसे ज़्यादा ताक़तवर थे ग़ारत कर डाला, और पहले लोगों की (हलाक़ व ग़ारत करने की) यह हालत हो चुकी है।[1] **(8)** और अगर आप उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया है, तो वे ज़रूर यही कहेंगे कि उनको ज़बरदस्त, जानने वाले (ख़ुदा तआ़ला) ने पैदा किया है।[2] **(9)** जिसने तुम्हारे (आराम के) लिए ज़मीन को फ़र्श (के जैसा) बनाया (कि उसपर आराम करते रहो) और उसमें उसने तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँच सको। **(10)** और जिसने आसमान से पानी एक अन्दाज़ से बरसाया, फिर हमने उससे सूखी ज़मीन को (उसके मुनासिब) ज़िन्दा किया। इसी तरह तुम (भी अपनी क़ब्रों से) निकाले जाओगे। **(11)** और जिसने तमाम क़िस्में बनाईं और तुम्हारी वे कश्तियाँ और चौपाए बनाए जिनपर तुम सवार होते हो। **(12)** ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो, फिर जब उसपर बैठ चुको तो अपने रब की नेमत को दिल से याद करो, और (ज़बान से पसन्दीदगी के इज़हार के तौर पर) यूँ कहो कि उसकी ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया, और हम तो ऐसे न थे जो इनको क़ाबू में कर लेते।[3] **(13)** और हमको अपने रब की तरफ़ लौटकर जाना है। **(14)** और उन लोगों ने ख़ुदा के बन्दों में से (जो मख़्लूक़ होते हैं) ख़ुदा का हिस्सा ठहरा दिया, वाक़ई इनसान खुला नाशुक्रा है।[4] **(15)** ❖

क्या अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ात में से बेटियाँ पसन्द कीं और तुमको बेटों के साथ मख़्सूस किया **(16)** हालाँकि जब उनमें से किसी को उस चीज़ के होने की ख़बर दी जाती है जिसको ख़ुदा रहमान का नमूना (यानी औलाद) बना रखा है, (मुराद बेटी है) तो (इस क़द्र नाराज़ हो कि) सारे दिन उसका चेहरा बेरौनक़ रहे और वह दिल ही दिल में घुटता रहे। **(17)** क्या जो कि (आ़दतन) बनाव-सिंघार में पले-बढ़े और वह बहस करने में बयान की कुव्वत (भी) न रखे।[5] **(18)** और उन्होंने फ़रिश्तों को जो कि ख़ुदा के बन्दे हैं औरत क़रार दे रखा है। क्या ये उनकी पैदाइश के वक़्त मौजूद थे? उनका यह दावा लिख लिया जाता है और (क़ियामत में) उनसे पूछताछ होगी। **(19)** और वे लोग यूँ कहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो हम

1. पस न आप ग़म करें कि उनका भी ऐसा ही हाल होना है, चुनाँचे बद्र वग़ैरह में हुआ। और न ये बेफ़िक्र हों कि नमूना मौजूद है।
2. और पैदा करने में तन्हा और अकेला होना इसको लाज़िम है कि माबूद और ख़ुदा भी तन्हा और अकेला हो, पस अल्लाह का एक होना उनके यह मान लेने से साबित हो गया।
3. क्योंकि जानवर से ज़्यादा ताक़त नहीं, और अल्लाह के दिल में डाले बग़ैर कश्ती चलाने की तदबीर से वाक़िफ़ नहीं। दोनों के मुताल्लिक़ हक़ तआ़ला ने तदबीर सिखा दी।
4. इसलिए कि ख़ुदा तआ़ला के साथ इतना बड़ा कुफ़्र करता है कि उसको हिस्सों वाला क़रार देता है, जिससे उसका क़दीम न होना लाज़िम आता है।
5. मक्का के मुश्रिकों की यह हालत थी कि अपने घर लड़की का पैदा होना तो बुरा समझते थे लेकिन रब्बुल आ़लमीन के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते थे। फ़रमाया कि लड़की की ज़ात जो गहने-पाते में पले, और ज़रूरत के वक़्त जिसके मुँह से पूरी बात भी न निकल सके, उसको अल्लाह की तरफ़ मन्सूब करते हो?

आतैनाहुम् किताबम्-मिन् क़ब्लिही फ़हुम् बिही मुस्तम्सिकून (21) बल् क़ा-लू इन्ना वजद्ना आबा-अना अ़ला उम्म-तिंव्-व इन्ना अ़ला आसारिहिम् मुह्तदून (22) व कज़ालि-क मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी क़र्-यतिम् मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत्-रफ़ूहा इन्ना वजद्ना आबा-अना अ़ला उम्म-तिंव्-व इन्ना अ़ला आसारिहिम्-मुक़्तदून (23) क़ा-ल अ-व लौ जिअ्तुकुम् बि-अह्दा मिम्मा वजत्तुम् अ़लैहि आबा-अकुम्, क़ालू इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (24) फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुकज़्ज़िबीन ● (25) ❖

व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लि-अबीहि व क़ौमिही इन्ननी बराउम् मिम्मा तअ्बुदून (26) इल्लल्लज़ी फ़-त-रनी फ़-इन्नहू स-यह्दीन (27) व ज-अ़-लहा कलि-मतम्- बाक़ि-यतन् फ़ी अ़क़िबिही लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (28) बल् मत्तअ्तु हाउला-इ व आबा-अहुम हत्ता जा-अहुमुल्-हक़्क़ु व रसूलुम्-मुबीन (29) व लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु क़ालू हाज़ा सिह्रुंव्-व इन्ना बिही काफ़िरून (30) व क़ालू लौ ला नुज़्ज़ि-ल हाज़ल्-क़ुर्आनु अ़ला रजुलिम्-मिनल् क़र्-यतैनि अ़ज़ीम (31) अ-हुम् यक़्सिमू-न रह्म-त रब्बि-क, नह्नु क़सम्ना बैनहुम् मअी-श-तहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व रफ़अ्ना बअ्-ज़हुम् फ़ौ-क़ बअ्ज़िन् द-रजातिल्-लि-यत्तख़ि-ज़ बअ्ज़ुहुम् बअ्ज़न् सुख़्रिय्यन्, व रह्मतु रब्बि-क ख़ैरुम्-मिम्मा यज्मअून (32) व लौ ला अंय्यकूनन्नासु

الزخرف ٤٣ | ٦٤٣ | اليه يرد ٢٥

ما لهم بذلك من علم ان هم الا يخرصون ﴿٢٠﴾ ام اتينهم كتبا
من قبله فهم به مستمسكون ﴿٢١﴾ بل قالوا انا وجدنا اباءنا
على امة وانا على اثرهم مهتدون ﴿٢٢﴾ وكذلك ما ارسلنا من
قبلك في قرية من نذير الا قال مترفوها انا وجدنا
اباءنا على امة وانا على اثرهم مقتدون ﴿٢٣﴾ قل اولو جئتكم
باهدى مما وجدتم عليه اباءكم قالوا انا بما ارسلتم به
كفرون ﴿٢٤﴾ فانتقمنا منهم فانظر كيف كان عاقبة المكذبين ﴿٢٥﴾ ع
واذ قال ابرهيم لابيه وقومه انني براء مما تعبدون ﴿٢٦﴾ الا
الذي فطرني فانه سيهدين ﴿٢٧﴾ وجعلها كلمة باقية في
عقبه لعلهم يرجعون ﴿٢٨﴾ بل متعت هؤلاء واباءهم حتى
جاءهم الحق ورسول مبين ﴿٢٩﴾ ولما جاءهم الحق قالوا هذا
سحر وانا به كفرون ﴿٣٠﴾ وقالوا لولا نزل هذا القران على رجل
من القريتين عظيم ﴿٣١﴾ اهم يقسمون رحمت ربك نحن قسمنا
بينهم معيشتهم في الحيوة الدنيا ورفعنا بعضهم فوق بعض
درجت ليتخذ بعضهم بعضا سخريا ورحمت ربك خير مما
يجمعون ﴿٣٢﴾ ولولا ان يكون الناس امة واحدة لجعلنا لمن

منزل ٦

उनकी इबादत न करते। उनको इसकी कुछ तहक़ीक़ नहीं, बिलकुल बेतहक़ीक़ बात कर रहे हैं।[1] **(20)** क्या हमने उनको इस (क़ुरआन) से पहले कोई किताब दे रखी है कि ये उससे दलील पकड़ते हैं।[2] **(21)** बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादाओं को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उनके पीछे-पीछे रास्ता चल रहे हैं। **(22)** और इसी तरह हमने आपसे पहले किसी बस्ती में कोई पैग़म्बर नहीं भेजा मगर वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हमने अपने बाप-दादाओं को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उन्हीं के पीछे-पीछे चले जा रहे हैं। **(23)** (इसपर) उनके पैग़म्बर ने कहा कि क्या (बाप-दादा के तरीक़े ही की पैरवी किए जाओगे) अगरचे मैं उससे अच्छा मक़सूद पर पहुँचा देने वाला तरीक़ा तुम्हारे पास लाया हूँ कि जिसपर तुमने अपने बाप-दादाओं को पाया है। वे (बैर और दुश्मनी के तौर पर) कहने लगे कि हम तो इस दीन को मानते ही नहीं जिसको देकर तुमको भेजा गया है। **(24)** सो हमने उनसे इन्तिक़ाम लिया, सो देखिए झुठलाने वालों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ।[3] ● **(25)** ❖

और (वह वक़्त भी क़ाबिले ज़िक्र है) जबकि इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी क़ौम से फ़रमाया, मैं उन चीज़ों (की इबादत) से बेज़ार हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो। **(26)** मगर हाँ, जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझको रास्ता दिखाता है।[4] **(27)** और वह इस (अ़क़ीदे) को अपनी औलाद में (भी) एक क़ायम रहने वाली बात कर गए। ताकि (हर ज़माने में मुश्रिक) लोग (शिर्क से) बाज़ आते रहें।[5] **(28)** बल्कि मैंने उनको और उनके बाप-दादाओं को (दुनिया का) ख़ूब सारा सामान दिया, यहाँ तक कि उनके पास सच्चा क़ुरआन और साफ़-साफ़ बतलाने वाला रसूल आया। **(29)** और जब उनके पास यह सच्चा क़ुरआन पहुँचा तो कहने लगे कि यह तो जादू है और हम इसको नहीं मानते। **(30)** और कहने लगे कि यह क़ुरआन (अगर अल्लाह का कलाम है तो) इन दोनों बस्तियों (मक्का और ताइफ़ के रहने वालों) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल नहीं किया गया?[6] **(31)** क्या ये लोग आपके रब की (ख़ास) रहमत (यानी नुबुव्वत) को तक़सीम करना चाहते हैं। दुनियावी ज़िन्दगी में (तो) उनकी रोज़ी हम (ही) ने तक़सीम कर रखी है, और हमने एक को दूसरे पर बरतरी दे रखी है, ताकि एक-दूसरे से काम लेता रहे (और दुनिया का इन्तिज़ाम क़ायम रहे), और आपके रब की रहमत इस (दुनियावी माल व असबाब) से कहीं बेहतर है, जिसको ये लोग समेटते फिरते हैं।[7] **(32)**

---

1. क्योंकि क़ादिर कर देना रिज़ा और ख़ुशनूदी की दलील नहीं।

2. हक़ीक़त यह है कि न दलीले अ़क़्ली है न दलीले नक़्ली।

3. ऊपर तौहीद का मज़मून था। आगे उसकी ताकीद और ताईद के लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से जो कि अ़रब वालों के नज़दीक माने हुए और सम्मानित थे, इसका मन्क़ूल होना और उनके बाद फिर उनकी औलाद में इसका नक़ल होते हुए आना और अब आख़िर में सबसे आख़िरी पैग़म्बर की मारिफ़त इसको ताज़ा करना और इसके साथ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत के मुताल्लिक़ उन लोगों के एक एतिराज़ का जवाब मज़कूर है।

4. मतलब यह कि उन लोगों को हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का हाल याद करना चाहिए कि वह ख़ुद भी तौहीद (अल्लाह के एक होने) के मोतक़िद थे।

5. यानी अपनी औलाद को भी वसीयत की, जिसका कुछ-कुछ असर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नबी बनाकर भेजे जाने तक रहा। यहाँ तक कि जाहिलियत के ज़माने में भी अ़रब में बाज़ लोग शिर्क से नफ़रत करते थे।

6. यानी रसूल के लिए बड़ी शान वाला होना ज़रूरी है, और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम माल और रियासत नहीं रखते, तो यह पैग़म्बर नहीं हो सकते। मक़सद पैग़म्बरी का इनकार था।

7. पस जब दुनियावी रोज़गार तक़सीम उनकी राय पर नहीं रखी जो कि अदना दर्जे की चीज़ है तो नुबुव्वत जो ख़ुद भी आला दर्जे की चीज़ है और उसकी मस्लहतें भी बड़े दर्जे की हैं, वह क्योंकर उनकी राय पर तक़सीम की जाती।

उम्म-तंव्वहि-दतल् ल-जअ़ल्ना लिमंय्यक्फ़ुरु बिर्रह्मानि लि-बुयूतिहिम् सुक़ुफ़म्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव् व मआ़रि-ज अ़लैहा यज़्हरून **(33)** व लिबुयूतिहिम् अब्वाबंव्-व सुरुरन् अ़लैहा यत्तकिऊन **(34)** व ज़ुख़्रुफ़न्, व इन् कुल्लु ज़ालि-क लम्मा मताअ़ुल्-हयातिद्दुन्या, वल्-आख़िरतु अिन्-द रब्बि-क लिल्-मुत्तक़ीन **(35)** ❖

व मंय्यअ़्शु अ़न् ज़िक्रिर्-रह्मानि नुक़य्यिज़् लहू शैतानन् फ़हु-व लहू क़रीन **(36)** व इन्नहुम् ल-यसुद्दूनहुम् अ़निस्सबीलि व यह्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून **(37)** हत्ता इज़ा जा-अना क़ा-ल या लै-त बैनी व बैन-क बुअ़्दल् -मश्रिक़ैनि फ़-बिअ़्सल्-क़रीन **(38)** व लंय्यन्फ़-अ़कुमुल्-यौ-म इज़् ज़लम्तुम् अन्नकुम् फ़िल्-अ़ज़ाबि मुश्तरिकून **(39)** अ-फ़-अन्-त तुस्मिअ़ुस्सुम्-म औ तह्दिल्-अ़ुम्-य व मन् का-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(40)** फ़-इम्मा नज़्ह-बन्-न बि-क फ़-इन्ना मिन्हुम् मुन्तक़िमून **(41)** औ नुरि-यन्नकल्लज़ी व-अ़द्नाहुम् फ़-इन्ना अ़लैहिम् मुक़्तदिरून **(42)** फ़स्तम्सिक् बिल्लज़ी ऊहि-य इलै-क इन्न-क अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(43)** व इन्नहू ल-ज़िक्रुल्-ल-क व लिक़ौमि-क व सौ-फ़ तुस्अलून **(44)** वस्अल् मन् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रुसुलिना, अ-जअ़ल्ना मिन् दूनिर्रह्मानि आलि-हतंय् -युअ़्बदून **(45)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ़-न व म-लइही फ़क़ा-ल इन्नी रसूलु रब्बिल्-आ़लमीन **(46)** फ़-लम्मा जा-अहुम् बिआयातिना इज़ा हुम् मिन्हा यज़्हकून **(47)** व

يَكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرُفًا ۭ وَاِنْ كُلُّ
ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾
وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾
وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾
حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ
الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ
مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾ اَوْ
نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ
بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ
وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔــلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَسْـَٔــلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ
اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا
نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۡ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ

और अगर यह बात (अपेक्षित) न होती कि तमाम आदमी एक ही तरीक़े के हो जाएँगे तो जो लोग अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र करते हैं उनके लिए उनके घरों की छतें हम चाँदी की कर देते, और (यह भी कि) ज़ीने भी जिनपर वे चढ़ा (उतरा) करते हैं। **(33)** और उनके घरों के किवाड़ भी और तख़्त भी जिनपर तकिया लगाकर बैठते हैं। **(34)** और (यही चीज़ें) सोने की भी हैं,[1] और यह सब (साज़ व सामान) कुछ भी नहीं सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी की चन्द दिन की कामयाबी है, (फिर फ़ना आख़िर फ़ना,) और आख़िरत आपके रब के यहाँ ख़ुदा तआ़ला से डरने वालों के लिए है।[2] **(35)** ❖

और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की नसीहत (यानी क़ुरआन) से अंधा बन जाए हम उसपर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, सो वह (हर वक़्त) उसके साथ रहता है। **(36)** और वे उनको (हक़) रास्ते से रोकते रहते हैं। और ये लोग ख़्याल करते हैं कि वे (सही) रास्ते पर हैं। **(37)** यहाँ तक कि जब ऐसा शख़्स हमारे पास आएगा तो (उस शैतान से) कहेगा कि काश! मेरे और तेरे दरमियान में (दुनिया में) पूरब और पश्चिम के बराबर फ़ासला होता कि (तू तो) बुरा साथी था। **(38)** और (उनसे कहा जाएगा कि) जबकि तुम (दुनिया में) कुफ़्र कर चुके थे, तो आज यह बात तुम्हारे काम न आएगी कि तुम (और शयातीन) सब अ़ज़ाब में शरीक हो। **(39)** सो क्या आप (ऐसे) बहरों को सुना सकते हैं या (ऐसे) अन्धों को और उन लोगों को जो खुली गुमराही में हैं, राह पर ला सकते हैं?[3] **(40)** पस अगर हम (दुनिया से) आपको उठा लें तो भी हम उनसे बदला लेने वाले हैं। **(41)** या अगर उनसे जो हमने अ़ज़ाब का वायदा कर रखा है वह आपको (भी) दिखला दें तब भी (कुछ बईद नहीं, क्योंकि) हमको उनपर हर तरह की क़ुदरत है।[4] **(42)** तो आप इस क़ुरआन पर क़ायम रहिए जो आप पर वह्य के ज़रिए से नाज़िल किया गया है, आप बेशक सीधे रास्ते पर हैं।[5] **(43)** और यह क़ुरआन आपके लिए और आपकी क़ौम के लिए बेशक बड़े शर्फ़ "यानी इज़्ज़त व सम्मान" की चीज़ है, और जल्दी ही तुम सब पूछे जाओगे।[6] **(44)** और आप उन सब पैग़म्बरों से जिनको हमने आपसे पहले भेजा है, पूछ लीजिए, क्या हमने ख़ुदा-ए-रहमान के सिवा दूसरे माबूद ठहरा दिए थे कि उनकी इबादत की जाए। **(45)** ❖

और हमने मूसा को अपनी दलीलें देकर फ़िरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा था, सो उन्होंने (उन लोगों के पास आकर) फ़रमाया कि मैं रब्बुल आ़लमीन की तरफ़ से (पैग़म्बर होकर आया) हूँ। **(46)** फिर जब मूसा उनके पास हमारी निशानियाँ लेकर आए तो वे यकायक उनपर हँसने लगे। **(47)** और हम उनको जो निशानी दिखलाते थे वह दूसरी निशानी से बढ़कर होती थी,[7] और हमने उन लोगों को अ़ज़ाब में पकड़ा था ताकि वे (अपने कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँ।[8] **(48)** और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से

---

1. इससे मालूम हुआ कि दुनिया हक़ीक़त में बड़ी चीज़ नहीं हैं। पस वह नुबुव्वत के रुतबे की सलाहियत का आधार भी न होगी, बल्कि इस सलाहियत का आधार अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता की हुई आला ख़ूबियाँ और कमालात हैं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में कमाल दर्जे के जमा हैं, पस नुबुव्वत उन्हीं के लिए मुनासिब थी, न कि मक्का और ताइफ़ के मालदारों के लिए।

2. पस जो चीज़ फ़ना हो जाने वाली हो वह न क़ाबिले क़द्र है और न इस क़ाबिल है कि उसको तलब किया जाए। हाँ, आख़िरत जो कि बाक़ी रहने वाली है, और उसके हासिल करने के ज़राए (सूत्र) जो कि आमाल और नेकियाँ हैं, वे बेशक एतिबार के क़ाबिल हैं।

3. यानी उनको हिदायत देना आपके इख़्तियार से बाहर है। आप इसके पीछे न पड़ें।

4. मतलब यह कि अ़ज़ाब ज़रूर होगा चाहे कभी हो।

5. मतलब यह कि अपना काम किए जाइए दूसरों के काम का ग़म न कीजिए।

6. पस आपसे सिर्फ़ तब्लीग़ के मुताल्लिक़ सवाल होगा, जिसको आप ख़ूब अदा कर चुके हैं। और अ़मल के मुताल्लिक़ उनसे सवाल होगा जिसमें उन्होंने कोताही की। पस जब आपसे उनके आमाल के बारे में पूछताछ न होगी **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 890 पर)**

मा नुरीहिम् मिन् आ-यतिन् इल्ला हि-य अक्बरु मिन् उख़्तिहा व अख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (48) व क़ालू या अय्युहस्-साहिरुद्अ़ु लना रब्ब-क बिमा अ़हि-द अ़िन्द-क इन्नना ल-मुह्तदून (49) फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ा-ब इज़ा हुम् यन्कुसून (50) व नादा फ़िर्औनु फ़ी क़ौमिही क़ा-ल या क़ौमि अलै-स ली मुल्कु मिस्-र व हाज़िहिल्-अन्हारु तज्री मिन् तह्ती अ-फ़ला तुब्सिरून (51) अम् अ-न ख़ैरुम् मिन् हाज़ल्लज़ी हु-व महीनुंव्-व ला यकादु युबीन (52) फ़-लौ ला उल्कि-य अ़लैहि अस्वि-रतुम् मिन् ज़-हबिन् औ जा-अ म-अ़हुल्-मलाइ--कतु मुक़्तरिनीन (53) फ़स्तख़फ़्-फ़ क़ौमहू फ़-अताअ़ूहु, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ी-न (54) फ़-लम्मा आ-सफ़ूनन्-त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़रक़्नाहुम् अज्मअ़ीन (55) फ़-जअ़ल्नाहुम् स-लफ़ंव्-व म-सलल्-लिल्आख़िरीन (56) ❖

व लम्मा ज़ुरिबब्नु मर्-य-म म-सलन् इज़ा क़ौमु-क मिन्हु यसिद्दून (57) व क़ालू अ-आलि-हतुना ख़ैरुन् अम् हु-व, मा ज़-रबूहु ल-क इल्ला ज-दलन्, बल् हुम् क़ौमुन् ख़ासिमून (58) इन् हु-व इल्ला अ़ब्दुन् अन्अ़म्ना अ़लैहि व ज-अ़ल्नाहु म-सलल्-लि-बनी इस्राईल (59) व लौ नशा-उ ल-जअ़ल्ना मिन्कुम् मलाइ-कतन् फ़िल्अर्ज़ि यख़्लुफ़ून (60) व इन्नहू ल-अ़िल्मुल्-लिस्सा-अ़ति फ़ला तम्तरुन्-न बिहा वत्तबिअ़ूनि, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (61) व ला यसुद्दन्नकुमुश्-शैतानु इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन (62) व लम्मा जा-अ ईसा बिल्बय्यिनाति क़ा-ल क़द् जिअ़्तुकुम् बिल्-हिक्मति व लि-उबय्यि-न

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ
إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿٥٠﴾
وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَ
هَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ
هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ
مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ
فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا آسَفُونَا انتَقَمْنَا
مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾ ع
وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾ وَ
قَالُوا أَآلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ
خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي
إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنكُم مَّلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ﴿٦٠﴾
وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا
جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُم بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُم
بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٦٣﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ

उस बात की दुआ कर दीजिए जिसका उसने आपसे अ़हद कर रखा है, हम ज़रूर राह पर आ जाएँगे। **(49)** फिर जब हमने वह अ़ज़ाब उनसे हटा दिया तब ही उन्होंने (अपना) अ़हद तोड़ दिया। **(50)** और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम में यह मुनादी कराई, यह बात कही कि ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है? और ये नहरें मेरे (महल के) नीचे बह रही हैं, क्या तुम देखते नहीं हो? **(51)** बल्कि मैं (ही) अफ़ज़ल हूँ उस शख़्स से[1] जो कि कम-क़द्र है,[2] और बयान की क़ुव्वत भी नहीं रखता। **(52)** तो उसके सोने के कंगन क्यों नहीं डाले गए,[3] या फ़रिश्ते उसके साथ में पर बाँधकर आए होते।[4] **(53)** ग़रज़ उसने (ऐसी बातें करके) अपनी क़ौम को मग़लूब कर दिया और वे उसके कहने में आ गए। वे लोग (कुछ पहले से भी) शरारत के भरे थे। **(54)** फिर जब उन लोगों ने हमको गुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया और उन सबको डुबो दिया। **(55)** और हमने उनको आइन्दा आने वालों के लिए ख़ास तौर के पहले गुज़रे हुए और (इब्रत का) नमूना बना दिया।[5] **(56)** ❖

और जब ईसा इब्ने मरियम के मुताल्लिक़ एक अ़जीब मज़मून बयान किया गया तो यकायक आपकी क़ौम के लोग उससे (ख़ुशी के मारे) चिल्लाने लगे। **(57)** और (उस एतिराज़ करने वाले के साथ होकर) कहने लगे कि हमारे माबूद ज़्यादा बेहतर हैं या ईसा (अ़लैहिस्सलाम)? उन लोगों ने जो यह (अ़जीब मज़मून) आपसे बयान किया है तो सिर्फ़ झगड़ने की ग़रज़ से, बल्कि ये लोग हैं ही झगड़ालू।[6] **(58)** ईसा (अ़लैहिस्सलाम) तो सिर्फ़ एक ऐसे बन्दे हैं जिनपर हमने फ़ज़्ल किया था और उनको बनी इस्राईल के लिए हमने (अपनी क़ुदरत का) नमूना बनाया था। **(59)** और अगर हम चाहते तो हम तुमसे फ़रिश्तों को पैदा कर देते कि वे ज़मीन पर एक के बाद एक रहा करते। **(60)** और वह (यानी ईसा अ़लैहिस्सलाम) क़ियामत के यक़ीन का ज़रिया हैं, तो तुम लोग उस (के सही होने) में शक मत करो, और तुम लोग मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। **(61)** और तुमको शैतान (इस राह पर आने से) रोकने न पाए, वह बेशक तुम्हारा खुला दुश्मन है। **(62)** और जब ईसा (अ़लैहिस्सलाम) मोजिज़े लेकर आए तो उन्होंने (लोगों से) कहा कि मैं तुम्हारे पास समझ की बातें लेकर आया हूँ और ताकि बाज़ बातें जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे हो तुमसे बयान कर दूँ, तो तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। **(63)** बेशक अल्लाह ही मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, सो उसी की

(पृष्ठ 888 का शेष) तो फिर आप क्यों ग़म करते हैं।

7. मतलब यह कि सब निशानियाँ बड़ी थीं।

8. यानी वे निशानियाँ नुबुव्वत की दलीलें भी थीं, और उनके लिए सज़ाएँ भी थीं।

1. यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम से।

2. यानी माल और बड़ाई के एतिबार से।

3. मतलब यह कि अगर उस शख़्स को नुबुव्वत अ़ता होती तो ख़ुदा की तरफ़ से उसके हाथ में सोने के कंगन होते।

4. यानी ख़ास कर लेने की ये निशानियाँ ज़ाहिर होतीं, हालाँकि यह सिर्फ़ हिमाक़त है, क्योंकि नुबुव्वत जिस क़िस्म का कमाल और ख़ास करना है उसी क़िस्म की निशानियाँ और दलीलें उसके साथ मौजूद हैं।

5. मतलब यह है कि लोग उनका क़िस्सा याद करके इबरत दिलाते हैं कि देखो पहले लोगों में से ऐसे-ऐसे हुए हैं और उनका ऐसा-ऐसा हाल हुआ है।

6. क्योंकि अक्सर हक़ के मामलों में झगड़े निकालते रहते हैं।

लकुम् बअ्ज़ल्लज़ी तख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (63) इन्नल्ला-ह हु-व रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (64) फ़ख़्त-लफ़ल्-अह्ज़ाबु मिम्-बैनिहिम् फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् अज़ाबि यौमिन् अलीम (65) हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्सा-अ-त अन् तअ्ति-यहुम् बग़्-ततंव्-व हुम् ला यश्अुरून (66) अल्-अख़िल्ला-उ यौमइज़िम्-बअ्ज़ुहुम् लिबअ्ज़िन् अदुव्वुन् इल्लल्-मुत्तक़ीन (67) ❖

या अिबादि ला ख़ौफ़ुन् अलैकुमुल्-यौ-म व ला अन्तुम् तह्ज़नून (68) अल्लज़ी-न आमनू बिआयातिना व कानू मुस्लिमीन (69) उद्ख़ुलुल्- जन्न-त अन्तुम् व अज़्वाजुकुम् तुह्बरून (70) युताफ़ु अलैहिम् बिसिहाफ़िम्-मिन् ज़-हबिंव्-व अक्वाबिन् व फ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व त-लज़्ज़ुल्-अअ्युनु व अन्तुम् फ़ीहा ख़ालिदून (71) व तिल्कल्- जन्नतुल्लती ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (72) लकुम् फ़ीहा फ़ाकि-हतुन् कसी-रतुम् मिन्हा तअ्कुलून (73) इन्नल्-मुज्रिमी-न फ़ी अज़ाबि जहन्न-म ख़ालिदून (74) ला युफ़त्-तरु अन्हुम् व हुम् फ़ीहि मुब्लिसून (75) व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् कानू हुमुज़्ज़ालिमीन (76) व नादौ या मालिकु लि-यक़्ज़ि अलैना रब्बु-क, क़ा-ल इन्नकुम् माकिसून (77) ल-क़द् जिअ्नाकुम् बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रकुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून (78) अम् अब्रमू अम्रन् फ़-इन्ना मुब्रिमून (79) अम् यह्सबू-न अन्ना ला नस्मअु सिर्रहुम् व नज्वाहुम्, बला व रुसुलुना लदैहिम् यक्तुबून (80) क़ुल् इन् का-न लिर्रह्मानि व-लदुन्

الیه یرد ۲۵ ۴۴۶ الزخرف ۴۳

رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾ فَاخْتَلَفَ
الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ
أَلِيمٍ ﴿٦٥﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾ الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا
الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾ يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾ الَّذِينَ
آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ
تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا
مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾ وَ
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ
كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾
لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا
هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ
مَاكِثُونَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٨﴾
أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَ
نَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾ قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ
وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾ سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ

منزل ۶

इबादत करो, यही (अल्लाह तआला को एक मानना) सीधा रास्ता है। **(64)** सो मुख़्तलिफ़ गिरोहों ने (इस बारे में) आपस में इख़्तिलाफ़ डाल लिया,[1] सो उन ज़ालिमों के लिए एक दर्दनाक अ़ज़ाब के दिन से बड़ी ख़राबी है। **(65)** ये लोग बस क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं[2] कि वह उनपर अचानक आ पड़े और उनको ख़बर भी न हो। **(66)** तमाम (दुनियावी) दोस्त उस दिन एक-दूसरे के दुश्मन हो जाएँगे सिवाय ख़ुदा तआ़ला से डरने वालों के।[3] **(67)** ❖

(और मोमिनों को अल्लाह की तरफ़ से निदा होगी कि) ऐ मेरे बन्दो! तुमपर आज कोई ख़ौफ़ नहीं और न तुम ग़मगीन होगे। **(68)** (यानी वे बन्दे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाए थे और (हमारे) फ़रमाँबरदार थे। **(69)** तुम और तुम्हारी (ईमान वाली) बीवियाँ ख़ुशी-ख़ुशी जन्नत में दाख़िल हो जाओ। **(70)** उनके पास सोने की रकाबियाँ और गिलास लाए जाएँगे (यानी जन्नत के नौउम्र लड़के-लड़कियाँ लाएँगे) और वहाँ वे चीज़ें मिलेंगी जिनको जी चाहेगा और जिनसे आँखों को लज़्ज़त मिलेगी, और तुम यहाँ हमेशा रहोगे। **(71)** और (उनसे कहा जाएगा कि) यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए हो अपने (नेक) आमाल के बदले में। **(72)** (और) तुम्हारे लिए इसमें बहुत-से मेवे हैं जिनमें से खा रहे हो। **(73)** इसमें कोई शक नहीं कि नाफ़रमान (यानी काफ़िर) लोग दोज़ख़ के अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे। **(74)** वह (अ़ज़ाब) उनसे हल्का न किया जाएगा, और वे उसी में मायूस पड़े रहेंगे। **(75)** और हमने उनपर (ज़रा भी) ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन ये ख़ुद ही ज़ालिम थे। **(76)** और पुकारेंगे कि ऐ मालिक! "यह दोज़ख़ के दारोग़ा का नाम है" तुम्हारा परवर्दिगार (हमको मौत देकर) हमारा काम ही तमाम कर दे, वह (फ़रिश्ता) जवाब देगा कि तुम हमेशा इसी हाल में रहोगे। **(77)** हमने सच्चा दीन तुम्हारे पास पहुँचाया लेकिन तुममें अक्सर आदमी सच्चे दीन से नफ़रत रखते हैं। **(78)** हाँ, क्या उन्होंने कोई इन्तिज़ाम दुरुस्त किया है, सो हमने भी एक इन्तिज़ाम दुरुस्त किया है।[4] **(79)** हाँ, क्या उन लोगों का यह ख़्याल है कि हम उनकी चुपकी-चुपकी बातों को और उनके मश्विरों को नहीं सुनते,[5] हम ज़रूर सुनते हैं। और हमारे फ़रिश्ते उनके पास हैं वे भी लिखते हैं। **(80)** आप कहिए अगर ख़ुदा-ए-रहमान के औलाद हो तो सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला मैं हूँ।[6] **(81)** आसमानों और ज़मीन का मालिक जो कि अ़र्श का भी मालिक है, उन बातों से पाक है जो ये (मुश्रिक) लोग बयान कर रहे

1. यानी तौहीद के ख़िलाफ़ तरह-तरह के मज़ाहिब ईजाद कर लिए।
2. इन्तिज़ार से बावजूद इनकार के मजाज़न यह मुराद है कि उनका दलील को न मानना उस शख़्स की हालत के जैसा है जैसे कोई देखने का मुन्तज़िर हो कि उस वक़्त मानूँगा।
3. यानी ईमान वालों के।
4. ज़ाहिर है कि ख़ुदाई इन्तिज़ाम के सामने उनका इन्तिज़ाम नहीं चल सकता। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम महफ़ूज़ रहे और वे लोग नाकाम, और आख़िरकार बद्र की लड़ाई में हलाक हुए।
5. दो में गुफ़्तगू होना "सिर्र" (यानी चुपके-चुपके बातें करना) है और दो से ज़्यादा में "नज्वा" (यानी मश्विरा करना) है।
6. मतलब यह कि मुझको तुम्हारी तरह हक़ बात के मानने से इनकार नहीं, तुम अगर साबित कर दो तो सबसे पहले उसको मैं मानूँ। मगर चूँकि यह बात बिलकुल बातिल है इसलिए मैं यह न मानूँगा और न इबादत करूँगा।

फ़-अ-न अव्वलुल्-आ़बिदीन **(81)** सुब्हा-न रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बिल्-अर्शि अ़म्मा यसिफ़ून **(82)** फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्अ़बू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अ़दून **(83)** व हुवल्लज़ी फ़िस्समा-इ इलाहुंव्-व फ़िल्अर्ज़ि इलाहुन्, व हुवल् हकीमुल्-अ़लीम **(84)** व तबा-रकल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व अ़िन्दहू अ़िल्मुस्सा-अ़ति व इलैहि तुर्जअ़ून **(85)** व ला यम्लिकुल्-लज़ी-न यद्अ़ू-न मिन् दूनिहिश्-शफ़ा-अ़-त इल्ला मन् शहि-द बिल्हक़्क़ि व हुम् यअ़्लमून **(86)** व ल-इन स-अल्-तहुम् मन् ख़-ल-क़हुम ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून **(87)** व क़ीलिही या रब्बि इन्-न हा-उला-इ क़ौमुल्-ला युअ्मिनून ✣ **(88)** फ़स्फ़ह् अ़न्हुम् व क़ुल् सलामुन्, फ़सौ-फ़ यअ़्लमून **(89)** ❖

44 सूरतुद्-दुख़ानि 64

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1495 अक्षर, 349 शब्द, 59 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् **(1)** वल्-किताबिल्-मुबीन **(2)** इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लै-लतिम् मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन **(3)** फ़ीहा यफ़्रक़ु कुल्लु अम्रिन् हकीम **(4)** अम्रम् मिन् अ़िन्दिना, इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन **(5)** रह्म-तम् मिर्रब्बि-क इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम **(6)** रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ✣ इन् कुन्तुम् मूक़िनीन **(7)** ला इला-ह इल्ला हु-व युह्यी व युमीतु, रब्बुकुम् व रब्बु आबा-इकुमुल्-अव्वलीन **(8)** बल् हुम् फ़ी शक्किंय्-यल्-अ़बून **(9)** फ़र्तक़िब् यौ-म तअ्तिस्समा-उ बिदुख़ानिम्-मुबीन **(10)** यग़्शन्ना-स, हाज़ा अ़ज़ाबुन् अलीम **(11)**

الدخان ٤٤ — اليه يرد ٢٥

الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى يُلٰقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَآءِ إِلٰهٌ وَّفِي
الْأَرْضِ إِلٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَبٰرَكَ الَّذِي لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ
بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ
فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ۝ وَقِيلِهٖ يٰرَبِّ إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ۝ فَاصْفَحْ
عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِي لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ إِنَّا كُنَّا
مُنْذِرِينَ ۝ فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝ أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۚ إِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِينَ ۝ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ إِنَّهٗ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ رَبِّ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ إِنْ كُنْتُمْ مُّوقِنِينَ ۝ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيتُ ۚ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَآئِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ۝ فَارْتَقِبْ
يَوْمَ تَأْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝ يَغْشَى النَّاسَ ۚ هٰذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۝ أَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ

منزل ٦

हैं। **(82)** तो आप उनको इसी धंधे और तफ़रीह में रहने दीजिए[1] यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबक़ा पड़े जिसका उनसे वायदा किया जाता है। **(83)** और वही ज़ात है जो आसमान में भी इबादत के क़ाबिल है और ज़मीन में भी क़ाबिले इबादत है। और वही बड़ी हिक्मत वाला और बड़े इल्म वाला है।[2] **(84)** और वह ज़ात बड़ी आलीशान है जिसके लिए आसमान और ज़मीन की और जो मख़्लूक़ उसके दरमियान में है उसकी बादशाही साबित है, और उसको क़ियामत की (भी) ख़बर है। और तुम सब उसी के पास लौटकर जाओगे। **(85)** और ख़ुदा के सिवा जिन माबूदों को ये लोग पुकारा करते हैं वे सिफ़ारिश (तक) का इख़्तियार न रखेंगे, हाँ! जिन लोगों ने हक़ बात (यानी ईमान के कलिमे) का इक़रार किया था और वे तस्दीक़ भी किया करते थे।[3] **(86)** और अगर आप उनसे पूछें कि उनको किसने पैदा किया है तो यही कहेंगे कि अल्लाह ने, सो ये लोग किधर उल्टे जा रहे हैं। **(87)** और उसको रसूल के इस कहने की भी ख़बर है कि ऐ मेरे रब! ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। **(88)** तो आप उनसे बेरुख़ रहिए[4] और यूँ कह दीजिए कि तुमको सलाम करता हूँ, सो उनको अभी मालमू हो जाएगा। **(89)** ❖

44 सूरः दुख़ान 64

सूरः दुख़ान मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 59 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम् **(1)** क़सम है इस वाज़ेह किताब की **(2)** कि हमने इसको (लौहे-महफ़ूज़ से दुनिया के आसमान पर) एक बरकत वाली रात (यानी शबे-क़द्र) में उतारा है, हम आगाह करने वाले थे।[5] **(3)** उस रात में हर हिक्मत वाला मामला तय किया जाता है।[6] **(4)** हमारी पेशी से हुक्म होकर, हम आपको पैग़म्बर बनाने वाले थे **(5)** रहमत की वजह से, जो आपके रब की तरफ़ से होती है। बेशक वह बड़ा सुनने वाला, बड़ा ज़ानने वाला है। **(6)** जो कि मालिक है आसमानों और ज़मीन का और जो (मख़्लूक़) उन दोनों के दरमियान है उसका भी। अगर तुम यक़ीन लाना चाहो। **(7)** उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही जान डालता है और वही जान निकालता है, वह तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप-दादाओं का भी रब है। **(8)** बल्कि वे शक में हैं, खेल में लगे हुए हैं।[7] **(9)** सो आप (उनके लिए) उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए कि आसमान की तरफ़ एक नज़र आने वाला धुआँ पैदा हो **(10)** जो उन सब लोगों पर आ़म हो "यानी फैल" जाए, यह (भी) एक दर्दनाक सज़ा है।[8] **(11)** ऐ हमारे रब! हमसे इस मुसीबत को दूर कर दीजिए हम ज़रूर

1. रहने देने का मतलब यह नहीं कि तब्लीग़ न कीजिए, बल्कि यह मतलब है कि उनकी मुख़ालफ़त की तरफ़ ध्यान न कीजिए और उनके ईमान न लाने से ग़मगीन न होइए।
2. और कोई इल्म व हिक्मत में उसका शरीक नहीं। पस माबूद होना भी उसी के साथ ख़ास है।
3. यानी अलबत्ता वे अल्लाह की इजाज़त से ईमान वालों की सिफ़ारिश कर सकेंगे, मगर इससे काफ़िरों को क्या फ़ायदा?
4. यानी उनके ईमान का एहतिमाम और उसकी उम्मीद न कीजिए। क्योंकि जब उनका यह अन्जाम मुक़द्दर है तो ये क्या ईमान लाएँगे।
5. यानी हमको मन्ज़ूर हुआ कि इन नुक़सानों से बचा लेने के लिए भलाई और बुराई की इत्तिला कर दें। क़ुरआन के नाज़िल करने का यह सबब हुआ।
6. यानी साल भर के मामलात में कि सब ही हिक्मत से भरे हैं, जिस तौर पर अल्लाह तआ़ला को करना मन्ज़ूर है, उस तौर को मुतैयन करके और उनकी इत्तिला कारकुन फ़रिश्तों को करके उनके सुपुर्द कर दिए जाते हैं। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 896 पर)**

रब्बनक्शिफ़् अ़न्नल्-अ़ज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून (12) अन्ना लहुमुज़्ज़िक्रा व क़द् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन (13) सुम्-म तवल्लौ अ़न्हु व क़ालू मु-अ़ल्लमुम्-मज्नून ✣ (14) इन्ना काशिफ़ुल्-अ़ज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आ़-इदून ✣ (15) यौ-म नब्तिशुल् बत्-शतल्-कुब्रा इन्ना मुन्तक़िमून (16) व ल-क़द् फ़तन्ना क़ब्लहुम् क़ौ-म फ़िर्औ़-न व जा-अहुम् रसूलुन् करीम (17) अन् अद्दू इलय्-य अ़िबादल्लाहि, इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (18) व अल्-ला तअ्लू अ़लल्लाहि, इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन (19) व इन्नी अ़ुज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून (20) व इल्लम् तुअ्मिनू ली फ़अ्तज़िलून (21) फ़-दआ रब्बहू अन्-न हाउला-इ क़ौमुम्-मुज्रिमून ▲ (22) फ़-असि्र बिअ़िबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त-बअ़ून (23) वत्रुकिल्-बह्-र रह्वन्, इन्नहुम् जुन्दुम् मुग़्-रक़ून (24) कम् त-रकू मिन् जन्नातिंव्-व अ़ुयून (25) व ज़ुरूअ़िंव्-व मक़ामिन् करीम (26) व नअ़्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन (27) कज़ालि-क, व औरस्नाहा क़ौमन् आ-ख़रीन (28) फ़मा ब-कत् अ़लैहिमुस्समा-उ वल्अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन (29) ❖

व ल-क़द् नज्जैना बनी इस्राई-ल मिनल्-अ़ज़ाबिल्-मुहीन (30) मिन् फ़िर्औ़-न, इन्नहू का-न आ़लि-यम् मिनल्-मुस्रिफ़ीन (31) व ल-क़दिख़्तर्नाहुम् अ़ला अ़िल्मिन् अ़लल्-आ़लमीन (32) व आतैनाहुम् मिनल्-आयाति मा फ़ीहि बलाउम्-मुबीन (33) इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून (34) इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व मा नह्नु बिमुन्शरीन (35) फ़अ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (36) अ-हुम् ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बअ़िंव्-वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, अह्लक्नाहुम्

جاءهم رسول مبين ﴿١٣﴾ ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون ﴿١٤﴾ إنا
كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون ﴿١٥﴾ يوم نبطش البطشة
الكبرى إنا منتقمون ﴿١٦﴾ ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم
رسول كريم ﴿١٧﴾ أن أدوا إلي عباد الله إني لكم رسول أمين ﴿١٨﴾ و
أن لا تعلوا على الله إني آتيكم بسلطان مبين ﴿١٩﴾ وإني عذت
بربي وربكم أن ترجمون ﴿٢٠﴾ وإن لم تؤمنوا لي فاعتزلون ﴿٢١﴾
فدعا ربه أن هؤلاء قوم مجرمون ﴿٢٢﴾ فأسر بعبادي ليلا إنكم
متبعون ﴿٢٣﴾ واترك البحر رهوا إنهم جند مغرقون ﴿٢٤﴾ كم تركوا
من جنات وعيون ﴿٢٥﴾ وزروع ومقام كريم ﴿٢٦﴾ ونعمة كانوا فيها
فاكهين ﴿٢٧﴾ كذلك وأورثناها قوما آخرين ﴿٢٨﴾ فما بكت عليهم السماء
والأرض وما كانوا منظرين ﴿٢٩﴾ ولقد نجينا بني إسرائيل من
العذاب المهين ﴿٣٠﴾ من فرعون إنه كان عاليا من المسرفين ﴿٣١﴾
ولقد اخترناهم على علم على العالمين ﴿٣٢﴾ وآتيناهم من الآيات
ما فيه بلاء مبين ﴿٣٣﴾ إن هؤلاء ليقولون ﴿٣٤﴾ إن هي إلا موتتنا
الأولى وما نحن بمنشرين ﴿٣٥﴾ فأتوا بآبائنا إن كنتم صادقين ﴿٣٦﴾
أهم خير أم قوم تبع والذين من قبلهم أهلكناهم إنهم كانوا

ईमान ले आएँगे। (12) उनको (इससे) कब नसीहत होती है, हालाँकि (इससे पहले) उनके पास ज़ाहिर शान का पैग़म्बर आया। (13) फिर भी ये लोग उससे सरकशी करते रहे और यही कहते रहे कि (किसी दूसरे बशर का) सिखाया हुआ है, दीवाना है। (14) हम किसी क़द्र अ़ज़ाब को हटा देंगे तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। (15) जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे (उस दिन) हम (पूरा) बदला ले लेंगे। (16) और हमने उनसे पहले फ़िरऔ़न की क़ौम को आज़माया था और (वह आज़माइश यह थी कि) उनके पास एक मुअ़ज़्ज़ज़ "यानी सम्मानित" पैग़म्बर आए थे।[1] (17) कि उन अल्लाह के बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो,[2] मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुदा का रसूल (होकर आया) हूँ, दियानतदार हूँ। (18) और यह (भी फ़रमाया) कि तुम ख़ुदा से सरकशी मत करो, मैं तुम्हारे सामने (अपनी नुबुव्वत की) एक वाज़ेह दलील पेश करता हूँ।[3] (19) और मैं अपने परवर्दिगार और तुम्हारे रब की पनाह लेता हूँ इससे कि तुम लोग मुझको पत्थर (या पत्थर के अ़लावा किसी चीज़) से क़त्ल करो। (20) और अगर तुम मुझपर ईमान नहीं लाते तो मुझसे अलग ही रहो। (21) तब मूसा ने अपने रब से दुआ़ की कि ये बड़े सख़्त मुजरिम लोग हैं। ▲ (22) तो अब मेरे बन्दों को तुम रात-ही-रात में लेकर चले जाओ, तुम लोगों का पीछा होगा। (23) और तुम उस दरिया को सुकून की हालत में छोड़ देना, उनका सारा लश्कर डुबो दिया जाएगा। (24) वे लोग कितने ही बाग़ और चश्मे (यानी नहरें) (25) और खेतियाँ और उम्दा मकानात (26) और आराम के सामान जिसमें वे ख़ुश रहा करते थे, छोड़ गए। (27) (यह क़िस्सा) इसी तरह हुआ और हमने एक दूसरी क़ौम को उनका मालिक बना दिया।[4] (28) सो न तो उनपर आसमान और ज़मीन को रोना आया[5] और न उनको मोहलत दी गई।[6] (29) ❖

और हमने बनी इस्राईल को सख़्त ज़िल्लत के अ़ज़ाब यानी फ़िरऔ़न (के ज़ुल्म व सितम) से नजात दी। (30) वाक़ई वह बड़ा सरकश (और बन्दगी की) हद से निकल जाने वालों में से था। (31) और (इसके अ़लावा) हमने बनी इस्राईल को अपने इल्म की रू से (बाज़ बातों में) तमाम दुनिया-जहान वालों पर बरतरी दी। (32) और हमने उनको ऐसी निशानियाँ दीं जिनमें खुला इनाम था।[7] (33) ये लोग कहते हैं कि (34) अख़ीर हालत बस यही हमारा दुनिया का मरना है, और हम दोबारा ज़िन्दा न होंगे।[8] (35) सो ऐ मुसलमानो! अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादाओं को (ज़िन्दा करके) सामने लाओ। (36) ये लोग (क़ुव्वत और शौकत में) ज़्यादा बढ़े हुए हैं या तुब्बा (यमन के बादशाह) की क़ौम? और जो क़ौमें उनसे पहले गुज़र चुकी हैं, सो हमने उनको भी हलाक कर डाला, वे नाफ़रमान थे।[9] (37) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो

(पृष्ठ 894 का शेष) चूँकि वह रात ऐसी है और क़ुरआन सबसे ज़्यादा हिक्मत वाला मामला था, इसलिए यह भी उसी रात में उतरा।

7. आख़िरत की फ़िक्र नहीं जो हक़ को तलब करें और उसमें ग़ौर से काम लें।

8. मुराद इससे ग़ल्ले की कमी (अकाल) है जिसमें मक्का वाले मुब्तला हुए थे। जिसका असली सबब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बद्-दुआ़ थी। जब ये लोग दुश्मनी में हद से ज़्यादा बढ़ गए थे। और यह बद्-दुआ़ एक बार मक्का में हुई थी और एक बार मदीना में।

1. यानी मूसा अ़लैहिस्सलाम।

फ़ायदाः पैग़म्बर के आने से आज़माइश यह होती है कि कौन ईमान लाता है और कौन नहीं लाता।

2. और उनसे अलग और बेदख़ल हो जाओ कि मैं जहाँ और जिस तरह मुनासिब हो उनको आज़ाद करके रखूँ।

3. मुराद इससे 'अ़सा' (लाठी) और 'यदे बैज़ा' (सफ़ेद हाथ) है।

4. मुराद बनी इस्राईल हैं।

5. यह नापसन्दीदा और नफ़रत के क़ाबिल होने का असर है।

6. यानी अगर थोड़ा और जीते तो दोज़ख़ के अ़ज़ाब से और बचे रहते, और यह मोहलत न मिलना असर है ग़ज़ब के हक़दार होने का।

7. यानी वे उमूर दोनों सिफ़तों के जामे थे, यानी नेमत होना और क़ुदरत की दलील होना। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 898 पर)**

इन्नहुम् कानू मुज्रिमीन (37) व मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन (38) मा ख़लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (39) इन्-न यौमल्-फ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्मअ़ीन (40) यौ-म ला युग़्नी मौलन् अ़म्मौलन् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (41) इल्ला मर्रहिमल्लाहु, इन्नहू हुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (42) ❖

इन्-न श-ज-रतज़्ज़क़्क़ूम (43) तआ़मुल्-असीम (44) कल्मुह्लि यग़्ली फ़िल्बुतून (45) क-ग़ल्यिल्-हमीम (46) ख़ुज़ूहु फ़अ़्तिलूहु इला सवाइल्-जहीम (47) सुम्-म सुब्बू फ़ौ-क़ रअ्सिही मिन् अ़ज़ाबिल्-हमीम (48) ज़ुक़् इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्-करीम (49) इन्-न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून (50) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी मक़ामिन् अमीन (51) फ़ी जन्नातिंव् -व अ़ुयून (52) यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम् मु-तक़ाबिलीन (53) कज़ालि-क, व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अ़ीन (54) यद्अ़ू-न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकि-हतिन् आमिनीन (55) ला यज़ूक़ू-न फ़ीहल्मौ-त इल्लल्-मौ-ततल्-ऊला व वक़ाहुम् अ़ज़ाबल्-जहीम (56) फ़ज़्लम्-मिर्रब्बि-क, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (57) फ़-इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (58) फ़र्-तक़िब् इन्नहुम् मुर्-तक़िबून (59) ❖

مُجْرِمِينَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِينَ ۝ مَا
خَلَقْنٰهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيقٰتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُونَ ۝ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ شَجَرَتَ
الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ
الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ
رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ
هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝
فِي جَنّٰتٍ وَّعُيُونٍ ۝ يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ
مُّتَقٰبِلِينَ ۝ كَذٰلِكَ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝ يَدْعُونَ فِيهَا
بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِينَ ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ
الْأُولٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۚ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝
فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ۝
سُورَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
حٰمٓ ۝ تَنْزِيلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

منزل ٦

45 सूरतुल्-जासि-यति 65

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2131 अक्षर, 492 शब्द, 37 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् (1) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-हकीम (2) इन्-न फ़िस्समावाति

कुछ उनके दरमियान में है उसको इस तौर पर नहीं बनाया कि हम बेकार काम करने वाले हों। **(38)** (बल्कि) हमने उन दोनों के किसी हिक्मत ही से बनाया है, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। **(39)** बेशक फ़ैसले का दिन (यानी क़ियामत का दिन) उन सबका मुक़र्ररा वक़्त है **(40)** जिस दिन कोई ताल्लुक़ और रिश्ते वाला किसी ताल्लुक़ वाले के ज़रा काम न आएगा, और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी। **(41)** हाँ, मगर जिसपर अल्लाह तआ़ला रहम फ़रमाए, वह (अल्लाह) ज़बरदस्त है, मेहरबान है।[1] **(42)** ❖

बेशक ज़क़्क़ूम का पेड़ **(43)** बड़े मुजरिम (यानी काफ़िर) का खाना होगा। **(44)** जो (बुरी सूरत होने में) तेल की तलछट जैसा होगा (और) वह पेट में ऐसा खौलेगा **(45)** जैसा तेज़ गर्म पानी खौलता है। **(46)** (और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उसको पकड़ो, फिर घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचों-बीच तक ले जाओ। **(47)** फिर उसके सर के ऊपर तकलीफ़ देने वाला गर्म पानी छोड़ दो। **(48)** ले चख तू बड़ा इज़्ज़त वाला और रुतबे वाला है।[2] **(49)** यह वही चीज़ है जिसमें तुम शक किया करते थे। **(50)** बेशक खुदा से डरने वाले अमन (चैन) की जगह में होंगे। **(51)** यानी बाग़ों में और नहरों में। **(52)** (और) वे लिबास पहनेंगे बारीक और मोटा रेशम का, आमने-सामने बैठे होंगे। **(53)** (और) यह बात इसी तरह है, और हम उनका गोरी-गोरी, बड़ी-बड़ी आँखों वालियों से निकाह करेंगे। **(54)** (और) वहाँ इत्मीनान से हर क़िस्म के मेवे मँगाते होंगे। **(55)** (और) वहाँ वे सिवाय उस मौत के जो दुनिया में आ चुकी थी और मौत का ज़ायक़ा भी न चखेंगे, (यानी मरेंगे नहीं) और अल्लाह उनको दोज़ख़ से बचा लेगा। **(56)** यह सब कुछ आपके रब के फ़ज़्ल से होगा, बड़ी कामयाबी यही है। **(57)** सो हमने इस क़ुरआन को आपकी ज़बान (अ़रबी) में आसान कर दिया है ताकि ये लोग नसीहत क़बूल करें। **(58)** तो (अगर ये लोग न मानें तो) आप मुन्तज़िर "यानी इन्तिज़ार करने वाले" रहिए ये लोग भी मुन्तज़िर हैं।[3] **(59)** ❖

45 सूरः जासियः 65

सूरः जासियः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 37 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम्[4] **(1)** यह नाज़िल की हुई किताब है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से। **(2)** आसमानों

(पृष्ठ 896 का शेष) फिर बाज़ उनमें महसूस की जाने वाली नेमतें थीं और बाज़ उनमें मअ़नवी (यानी अन्दरूनी और बातिनी) नेमतें थीं।

8. मतलब यह कि आख़िरी हालत वह आख़िरत की ज़िन्दगी नहीं, बल्कि यह दुनिया की मौत ही आख़िरी हालत है।

9. मतलब यह कि वे लोग उनसे ज़्यादा सख़्त और ताक़तवर थे मगर हमने उनको भी हलाक कर डाला। सो ये लोग अगर बाज़ न आएँगे तो ये क्योंकर अपने को बचा लेंगे।

1. वह काफ़िरों से इन्तिक़ाम लेगा और मुसलमानों पर रहमत फ़रमाएगा।

2. यानी हँसी उड़ाने के तौर पर कहा जाएगा कि यह तेरा सम्मान हो रहा है जैसा कि दुनिया में तू अपने को बड़ा इज़्ज़तदार और सम्मान वाला समझकर हमारे अहकाम से शर्म किया करता था।

3. यानी आप तब्लीग़ से ज़्यादा फ़िक्र में न पड़िए, न मुख़ालफ़त पर रंज कीजिए। उनका मामला खुदा तआ़ला के सुपुर्द कीजिए, वह खुद समझ लेगा।

4. इस सूरः का खुलासा तीन मज़मून हैं- तौहीद, नुबुव्वत और आख़िरत। और दूसरे बाज़ मज़ामीन इन्हीं के ताल्लुक़ से आ गए हैं।

वल्अर्ज़ि लआयातिल्-लिल्-मुअ्मिनीन (3) व फ़ी ख़ल्किकुम् व मा यबुस्सु मिन् दाब्बतिन् आयातुल्-लिक़ौमिंय्-यूक़िनून (4) वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिर्रिज़्क़िन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा व तस्रीफ़िर्-रियाहि आयातुल् लिक़ौमिंय् -यअ्क़िलून (5) तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि फ़बि-अय्यि हदीसिम्-बअ्दल्लाहि व आयातिही युअ्मिनून (6) वैलुल्- लिकुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीम (7) यस्-मअु आयातिल्लाहि तुत्ला अ़लैहि सुम्-म युसिर्रु मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ्हा फ़-बश्शिर्हु बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (8) व इज़ा अ़लि-म मिन् आयातिना शै-अ-नित्त-ख़-ज़हा हुज़ुवन्, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (9) मिंव्वरा-इहिम् जहन्नमु व ला युग़्नी अ़न्हुम् मा क-सबू शैअंव्-व ला मत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (10) हाज़ा हुदन् वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् लहुम अ़ज़ाबुम् मिर्रिज्ज़िन् अलीम (11) ❖

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ
اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ
الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ
فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝
يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا
فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئًا ۨاتَّخَذَهَا هُزُوًا
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا
كَسَبُوْا شَيْئًا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝
هٰذَا هُدًى وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝
اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا
مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ
اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ

अल्लाहुल्लज़ी सख़्ख़-र लकुमुल्-बह्-र लितज्रि-यल्-फ़ुल्कु फ़ीहि बिअम्रिही व लि-तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (12) व सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म्-मिन्हु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (13) क़ुल् लिल्लज़ी-न आमनू यग़्फ़िरू लिल्लज़ी-न ला यर्जू-न अय्यामल्लाहि लि-यज्ज़ि-य क़ौमम्-बिमा कानू यक्सिबून (14) मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लिनफ़्सिही व मन् असा-अ फ़-अ़लैहा सुम्-म इला रब्बिकुम्
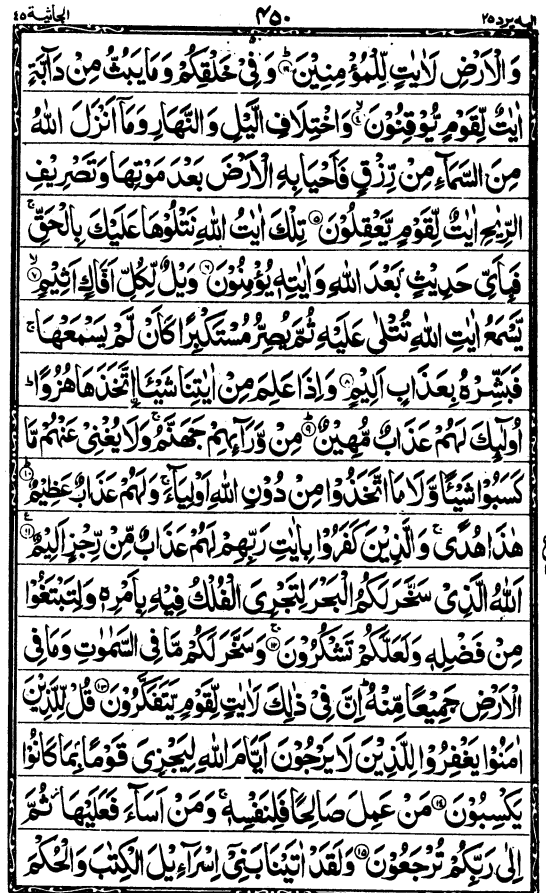
और ज़मीन में ईमान वालों के (दलील पकड़ने के) लिए बहुत-सी दलीलें हैं। (3) और (इसी तरह) खुद तुम्हारे और उन जानवरों के पैदा करने में जिनको ज़मीन में फैला रखा है, दलीलें हैं उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं। (4) और (इसी तरह) एक के बाद एक रात और दिन के आने जाने में, और इस रिज़्क़ (के माद्दे) में जिसको अल्लाह तआ़ला ने आसमान से उतारा,[1] फिर उस (बारिश) से ज़मीन को तरोताज़ा किया उसके सूख जाने के बाद। और (इसी तरह) हवाओं के बदलने में दलीलें हैं उन लोगों के लिए जो (सही-सालिम) अक़्ल रखते हैं। (5) ये अल्लाह तआ़ला की आयतें हैं जो सही-सही तौर पर हम आपको पढ़कर सुनाते हैं, तो फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौन-सी बात पर ये लोग ईमान लाएँगे। (6) बड़ी ख़राबी होगी हर ऐसे शख़्स के लिए जो झूठा हो, नाफ़रमान हो। (7) जो खुदा की आयतों को सुनता है जबकि उसके रू-ब-रू पढ़ी जाती हैं (और) फिर भी वह तकब्बुर करता हुआ (अपने कुफ़्र पर) इस तरह अड़ा रहता है जैसे उसने उनको सुना ही नहीं, सो ऐसे शख़्स को एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दीजिए। (8) और जब वह हमारी आयतों में से किसी आयत की ख़बर पाता है तो उसकी हँसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए (आख़िरत में) ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।[2] (9) उनके आगे जहन्नम (आ रही) है, और (उस वक़्त) न तो उनके वे चीज़ें ज़रा काम आएँगी जो (दुनिया में) कमा गए थे और न वे जिनको अल्लाह के सिवा कारसाज़ (और माबूद) बना रखा था, और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब होगा। (10) यह क़ुरआन पूरा-का-पूरा हिदायत है। और जो लोग अपने रब की (इन) आयतों को नहीं मानते उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (11) ◆

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए दरिया को ताबे बनाया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियाँ चलें और ताकि तुम उसकी रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (12) और (इसी तरह) जितनी चीज़ें आसमानों में हैं और जितनी चीज़ें ज़मीन में हैं उन सबको अपनी तरफ़ से ताबे बनाया, बेशक इन बातों में उन लोगों के लिए दलीलें हैं जो ग़ौर करते रहते हैं। (13) आप ईमान वालों से फ़रमा दीजिए कि उन लोगों से दरगुज़र करें जो खुदा के मामलात का यक़ीन नहीं रखते,[3] ताकि अल्लाह तआ़ला एक क़ौम को (यानी मुसलमानों को) उनके अ़मल का सिला दे। (14) जो शख़्स नेक काम करता है सो अपने ज़ाती नफ़े के लिए, और जो शख़्स बुरा काम करता है उसका वबाल उसी पर पड़ता है, फिर तुमको अपने परवर्दिगार के पास लौटकर जाना है।[4] (15) और हमने बनी इस्राईल को (आसमानी) किताब और हिक्मत (यानी अहकाम का इल्म) और नुबुव्वत दी थी, और हमने उनको अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दी थीं, और हमने उनको दुनिया

1. मुराद बारिश है।

2. मतलब यह कि जिन आयतों को तिलावत में सुनता है उनको भी झुठलाता है, और जिन आयतों की वैसे ही ख़बर सुन लेता है उनको भी झुठलाता है। ग़रज़ आयतों के झुठलाने में बहुत बढ़ा हुआ है।

3. यानी आख़िरत का इनकार करने वाले हैं।

4. पस वहाँ तुमको अख़्लाक़ और नेक आमाल का अच्छा बदला और उन तुम्हारे मुख़ालिफ़ों को उनके कुफ़्र और गुनाहों पर बुरा बदला दिया जाएगा। सो तुमको यहाँ दरगुज़र करना ही मुनासिब है।

फ़ायदाः और इससे जिहाद की नफ़ी नहीं होती, क्योंकि यहाँ उस बदले के लेने से रोका है जिससे असल मक़सद अल्लाह का कलिमा बुलन्द करना न हो, बल्कि सिर्फ़ अपने गुस्से को शाँत करना हो। और जिहाद में असल मक़सद अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करना है, अगरचे ताबे होकर गुस्सा भी शाँत हो जाए।

तुर्-जअून (15) व ल-क़द् आतैना बनी इस्राईलल्-किता-ब वल्-हुक्-म वन्नुबुव्व-त व रज़क्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अ़लल्-आ़लमीन (16) व आतैनाहुम् बय्यिनातिम् मिनल्-अम्रि फ़-मख़्त-लफ़ू इल्ला मिम्बअ़्दि मा जा-अहुमुल्-अ़िल्मु बग़्यम्-बैनहुम्, इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (17) सुम्-म जअ़ल्ना-क अ़ला शरी-अ़तिम्-मिनल्-अम्रि फ़त्तबिअ़्हा व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अल्लज़ी-न ला यअ़्लमून (18) इन्नहुम् लंय्युग़्नू अ़न्-क मिनल्लाहि शैअन्, व इन्नज़्ज़ालिमी-न बअ़्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ़्ज़िन् वल्लाहु वलिय्युल्-मुत्तक़ीन (19) हाज़ा बसा-इरु लिन्नासि व हुदंव्-व रह्मतुल्- लिक़ौमिंय्-यूक़िनून (20) अम् हसिबल्लज़ीनज्त-रहुस्-सय्यिआति अन् नज्अ़-लहुम् कल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, सवा-अम्-मह्याहुम् व ममातुहुम्, सा-अ मा यह्कुमून (21) ❖

व ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्-अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि व लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून (22) अ-फ़-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इला-हहू हवाहु व अज़ल्लहुल्लाहु अ़ला अ़िल्मिंव्-व ख़-त-म अ़ला सम्अ़िही व क़ल्बिही व ज-अ़-ल अ़ला ब-सरिही ग़िशा-वतन्, फ़-मंय्-यह्दीहि मिम्बअ़्दिल्लाहि, अ-फ़ला तज़क्करून (23) व क़ालू मा हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा युह्लिकुना इल्लद्-दह्रु व मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून (24) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिम्-मा का-न हुज्ज-तहुम्

الجاثية ٤٥ ٧٥١ اليه يرد ٢٥

وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾
وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ
الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ
اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾
هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ حَسِبَ
الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾
اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى
سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ
اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا
وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا
يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ
قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ

منزل

जहान वालों पर बरतरी दी। (16) और हमने उनको दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं,[1] सो उन्होंने इल्म ही के आने के बाद आपस में इख़्तिलाफ़ किया, आपस की ज़िद्दा-ज़िद्दी की वजह से। आपका रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उन मामलों में (अ़मली) फ़ैसला करेगा जिनमें ये आपस में इख़्तिलाफ़ किया करते थे।[2] (17) फिर हमने आपको दीन के एक ख़ास तरीक़े पर कर दिया, सो आप उसी तरीक़े पर चले जाइए और इन जाहिलों की ख़्वाहिशों पर न चलिए। (18) ये लोग ख़ुदा के मुक़ाबले में आपके ज़रा भी काम नहीं आ सकते, और ज़ालिम लोग एक-दूसरे के दोस्त होते हैं, और अल्लाह परहेज़गार लोगों का दोस्त है। (19) यह क़ुरआन आ़म लोगों के लिए समझदारियों का सबब और हिदायत का ज़रिया है, और यक़ीन (यानी ईमान) लाने वालों के लिए बड़ी रहमत (का सबब) है। (20) ये लोग जो बुरे-बुरे काम करते हैं, क्या ये ख़्याल करते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर रखेंगे जिन्होंने ईमान और नेक अ़मल इख़्तियार किया? कि उन सबका जीना और मरना यकसाँ हो जाए? ये बुरा हुक्म लगाते हैं।[3] (21) ❖

और अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया, और ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाए, और उनपर ज़रा भी ज़ुल्म न किया जाएगा। (22) सो क्या आपने उस शख़्स की हालत भी देखी जिसने अपना ख़ुदा अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को बना रखा है,[4] और ख़ुदा तआ़ला ने उसको बावजूद समझ-बूझ के गुमराह कर दिया है।[5] और ख़ुदा तआ़ला ने उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है,[6] सो ऐसे शख़्स को ख़ुदा के (गुमराह कर देने के) बाद कौन हिदायत करे, क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (23) और ये (मरने के बाद ज़िन्दा होने के इनकारी) लोग यूँ कहते हैं कि सिवाय इस दुनिया की ज़िन्दगी के और कोई हमारी ज़िन्दगी नहीं है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हमको सिर्फ़ ज़माने (की गर्दिश) से मौत आ जाती है।[7] और उन लोगों के पास इसपर कोई दलील नहीं, सिर्फ़ अटकल से हाँक रहे हैं। (24) और (इस बारे में) जिस वक़्त उनके सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनका (इसपर) इसके अ़लावा और कोई जवाब नहीं होता, कहते हैं कि हमारे बाप-दादाओं को (ज़िन्दा करके) सामने ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25) आप यूँ कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला

1. ग़रज़ सब ही तरह की नेमतें उनको दीं।

2. इस मज़मून से दो चीज़ें समझ में आ गईं- एक बनी इस्राईल को किताब, अहकाम और नुबुव्वत मिलने से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत की ताईद, दूसरे आपको तसल्ली देना कि बनी इस्राईल को जो इख़्तिलाफ़ की वजह पेश आई थी वही आपकी क़ौम को आपके साथ मुख़ालफ़त करने में पेश आई है, यानी दुनिया की मुहब्बत और हसद और नफ़्सानियत। यह नहीं कि आपकी दलीलों या अहकाम को वाज़ेह करने में कुछ कमी हो। पस आप ग़म न करें और यह ज़िक्रशुदा क़िस्सा याद कर लिया करें कि बनी इस्राईल के क्या-क्या मामलात हुए।

3. मतलब यह कि आख़िरत के इनकार से यह लाज़िम आता है कि फ़रमाँबरदारों को कहीं इताअ़त का फल न मिले, और मुख़ालिफ़ों पर कभी मुख़ालफ़त का वबाल न पड़े। पस आख़िरत के वजूद की यह हिक्मत हुई कि हर एक को उसके आमाल के फल मिल जाएँ।

4. यानी इल्म और अ़मल के एतिबार से जो जी में आता है उसकी पैरवी करता है।

5. यानी हक़ को सुना और समझा भी मगर नफ़्स की पैरवी करने से गुमराह हो गया।

6. यानी नफ़्स की पैरवी की बदौलत हक़ को क़बूल करने की सलाहियत बहुत ही कमज़ोर हो गई। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 904 पर)

इल्ला अन् क़ालुअ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (25) क़ुलिल्लाहु युह्यीकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म यज्मअ़ुकुम् इला यौमिल्-क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि व लाकिन्-न अक्सरन्--नासि ला यअ़्लमून (26) ❖

व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु यौमइज़िंय्-यख़्-सरुल्-मुब्तिलून (27) व तरा कुल्-ल उम्म-तिन् जासि-यतन्, कुल्लु उम्म-तिन् तुद्अ़ा इला किताबिहा, अल्यौ-म तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ़्मलून (28) हाज़ा किताबुना यन्तिक़ु अ़लैकुम् बिल्हक़्क़ि, इन्ना कुन्ना नस्तन्सिख़ु मा कुन्तुम् तअ़्मलून (29) फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति फ़-युद्ख़िलुहुम् रब्बुहुम् फ़ी रह्मतिही, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-मुबीन (30) व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू, अ-फ़ लम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़स्तक्बर्तुम् व कुन्तुम् क़ौमम्-मुज्रिमीन (31) व इज़ा क़ी-ल इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-वस्सा-अ़तु ला रै-ब फ़ीहा क़ुल्तुम्-मा नद्री मस्सा-अ़तु इन्-नज़ुन्नु इल्ला ज़न्नंव्-व मा नह्नु बिमुस्तैक़िनीन (32) व बदा लहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व हा-क़ बिहिम्-मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (33) व क़ीलल्-यौ-म ननसाकुम् कमा नसीतुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन्-नासिरीन (34) ज़ालिकुम् बि-अन्न-कुमुत्तख़ज़्तुम् आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-व ग़र्रत्कुमुल्-हयातुद्दुन्या फ़ल्यौ-म ला युख़्रजू-न मिन्हा व ला हुम् युस्तअ़्-तबून (35) फ़लिल्लाहिल्-हम्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल्-अर्ज़ि रब्बिल्-आ़लमीन (36) व लहुल्-किब्रिया-उ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (37) ❖

الجاثية ٤٥ ٧٥٢ اليه يرد ٢٥

ثم يجمعكم الى يوم القيمة لا ريب فيه ولكن اكثر الناس
لا يعلمون ﴿٢٦﴾ ولله ملك السموت والارض ويوم تقوم الساعة
يومئذ يخسر المبطلون ﴿٢٧﴾ وترى كل امة جاثية كل امة
تدعى الى كتبها اليوم تجزون ما كنتم تعملون ﴿٢٨﴾ هذا كتبنا
ينطق عليكم بالحق انا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون ﴿٢٩﴾ فاما
الذين امنوا وعملوا الصلحت فيدخلهم ربهم في رحمته
ذلك هو الفوز المبين ﴿٣٠﴾ واما الذين كفروا افلم تكن ايتي
تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين ﴿٣١﴾ واذا قيل
ان وعد الله حق والساعة لا ريب فيها قلتم ما ندري ما
الساعة ان نظن الا ظنا وما نحن بمستيقنين ﴿٣٢﴾ وبدا لهم
سيات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ﴿٣٣﴾ وقيل
اليوم ننسكم كما نسيتم لقاء يومكم هذا وماوىكم النار و
ما لكم من نصرين ﴿٣٤﴾ ذلكم بانكم اتخذتم ايت الله هزوا وغرتكم
الحيوة الدنيا فاليوم لا يخرجون منها ولا هم يستعتبون ﴿٣٥﴾
فلله الحمد رب السموت ورب الارض رب العلمين ﴿٣٦﴾ وله
الكبرياء في السموت والارض وهو العزيز الحكيم ﴿٣٧﴾

منزل

तुमको ज़िन्दा रखता है, फिर (जब चाहेगा) तुमको मौत देगा, फिर क़ियामत के दिन जिस (के आने) में ज़रा शक नहीं तुमको जमा करेगा, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। **(26)** ◆

और अल्लाह ही की बादशाहत है आसमानों में और ज़मीन में,[1] और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन अहले बातिल घाटे में पड़ेंगे। **(27)** और (उस दिन) आप हर फ़िर्क़े को देखेंगे कि (डर के मारे) घुटनों के बल पड़ेंगे। हर गिरोह अपने नामा-ए-आमाल (के हिसाब) की तरफ़ बुलाया जाएगा। आज तुमको तुम्हारे किए का बदला मिलेगा। **(28)** (और कहा जाएगा कि) यह (नामा-ए-आमाल) हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक बोल रहा है,[2] और हम (दुनिया में) तुम्हारे आमाल को (फ़रिश्तों से) लिखवाते जाते थे।[3] **(29)** सो जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किए थे तो उनको उनका रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा और यह खुली कामयाबी है। **(30)** और जो लोग काफ़िर थे (उनसे कहा जाएगा कि) क्या मेरी आयतें तुमको पढ़-पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं, सो तुमने (उनको क़बूल करने से) तकब्बुर किया था और तुम (इस वजह से) बड़े मुजरिम थे। **(31)** और जब (तुमसे) कहा जाता था कि अल्लाह का वायदा हक़ है[4] और क़ियामत में कोई शक नहीं है, तो तुम कहा करते थे कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या चीज़ है, सिर्फ़ एक ख़्याल-सा तो हमको भी होता है और हमको यक़ीन नहीं। **(32)** और (उस वक़्त) उनको अपने तमाम बुरे आमाल ज़ाहिर हो जाएँगे और जिस (अज़ाब) के साथ वे मज़ाक़ किया करते थे वह उनको आ घेरेगा। **(33)** और (उनसे) कहा जाएगा कि आज हम तुमको भुलाए देते हैं[5] जैसा कि तुमने अपने इस दिन के आने को भुला रखा था, और (आज) तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। **(34)** यह (सज़ा) इस वजह से है कि तुमने अल्लाह की आयतों की हँसी उड़ाई थी और तुमको दुनियावी ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था। सो आज न तो ये लोग दोज़ख़ से निकाले जाएँगे और न उनसे ख़ुदा (की नाराज़गी) की तलाफ़ी चाही जाएगी।[6] **(35)** सो तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिए हैं जो परवर्दिगार है आसमानों का और परवर्दिगार है ज़मीन का, परवर्दिगार तमाम आलम का। **(36)** और उसी को बड़ाई है आसमानों में और ज़मीन में, और वही ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। **(37)** ◆

(पृष्ठ 902 का शेष) 7. मतलब यह कि ज़माने के गुज़रने से जिस्मानी क़ुव्वतें तहलील होती (यानी घुल जाती) हैं और इन तबई असबाब से मौत आ जाती है। और इसी तरह ज़िन्दगी का सबब भी तबई चीज़ें हैं। पस जब मौत और ज़िन्दगी तबई असबाब के तक़ाज़े की बिना पर है और दूसरी ज़िन्दगी को तबई असबाब नहीं चाहते तो दूसरी ज़िन्दगी न होगी।

1. वह जो चाहे तसर्रुफ़ करे।
2. यानी तुम्हारे आमाल को ज़ाहिर कर रहा है।
3. और यह उन्हीं का मजमूआ है।
4. यानी मरने के बाद ज़िन्दा होने और आमाल का बदला दिए जाने के वायदे का।
5. यानी रहमत से महरूम किए देते हैं, जिसको भुलाना मजाज़न कह दिया है।
6. यानी इसका मौक़ा न दिया जाएगा कि तौबा करके ख़ुदा को राज़ी कर लें।

छब्बीसवाँ पारः हा-मीम

46 सूरतुल्-अह्क़ाफ़ि 66

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2709 अक्षर, 750 शब्द, 35 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् **(1)** तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल्-अ़ज़ीज़िल्-हकीम **(2)** मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्, वल्लज़ी-न क-फ़रू अ़म्मा उन्ज़िरू मुअ़्रिज़ून **(3)** क़ुल् अ-रऐतुम्-मा तद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्-अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति, ईतूनी बिकिताबिम् मिन् क़ब्लि हाज़ा औ असा-रतिम्-मिन् अ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(4)** व मन् अज़ल्लु मिम्मंय्यद्अ़ू मिन् दूनिल्लाहि मल्-ला यस्तजीबु लहू इला यौमिल्-क़ियामति व हुम् अ़न् दुआ़-इहिम् ग़ाफ़िलून **(5)** व इज़ा हुशिरन्नासु कानू लहुम् अअ़्दाअंव्-व कानू बिअ़िबा-दति--हिम् काफ़िरीन **(6)** व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन **(7)** अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् इनिफ़्तरैतुहू फ़ला तम्लिकू-न ली मिनल्लाहि शैअन्, हु-व अअ़्लमु बिमा तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि, कफ़ा बिही शहीदम्-बैनी व बैनकुम्, व हुवल् ग़फ़ूरुर्-रहीम **(8)** क़ुल् मा कुन्तु बिद्अ़म्-मिनर्रुसुलि व मा अद्री मा युफ़्अ़लु बी व ला बिकुम्,

الاحقاف ٤٦ — ٤٥٣ — حٰمٓ ٢٦

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ مَا خَلَقْنَا
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ
فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ
غٰفِلُوْنَ ۝ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ
كٰفِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ
اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا
تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ
بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

منزل

छब्बीसवाँ पारः हा-मीम

46 सूरः अहक़ाफ़ 66

सूरः अहक़ाफ़ मक्का में नाज़िल हुई, इसमें 35 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हा-मीम **(1)** यह किताब अल्लाह ज़बरदस्त, हिक्मत वाले की तरफ़ से भेजी गई है। **(2)** हमने आसमान और ज़मीन को और जो उनके दरमियान में हैं उनको हिक्मत के साथ एक मुक़र्ररा मुद्दत के लिए पैदा किया है।[1] और जो लोग काफ़िर हैं उनको जिस चीज़ से डराया जाता है[2] वे उससे बेरुख़ी करते हैं। **(3)** आप कहिए कि यह तो बतलाओ कि जिन चीज़ों की तुम अल्लाह तआ़ला को छोड़कर इबादत करते हो, मुझको यह दिखलाओ कि उन्होंने कौन-सी ज़मीन पैदा की है या उनका आसमान में कुछ साझा है।[3] मेरे पास कोई किताब जो इससे पहले की हो या कोई और मज़मून नक़्लशुदा लाओ, अगर तुम सच्चे हो।[4] **(4)** और उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह तआ़ला को छोड़कर ऐसे माबूद को पुकारे जो क़ियामत तक भी उसका कहना न करे, और उनको उनके पुकारने की भी ख़बर न हो। **(5)** और जब सब आदमी जमा किए जाएँ तो वे उनके दुश्मन हो जाएँ और उनकी इबादत ही का इनकार कर बैठें।[5] **(6)** और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन लोगों के सामने पढ़ी जाती हैं तो ये मुन्किर लोग उस सच्ची बात के मुताल्लिक़ जबकि वह उन तक पहुँचती है, यूँ कहते हैं कि यह खुला जादू है। **(7)** क्या ये लोग यह कहते हैं कि इस शख़्स ने इसको अपनी तरफ़ से बना लिया है? आप कह दीजिए कि अगर मैंने इसको अपनी तरफ़ से बनाया होगा तो फिर तुम लोग मुझको ख़ुदा से ज़रा भी नहीं बचा सकते।[6] वह ख़ूब जानता है, तुम क़ुरआन में जो-जो बातें बना रहे हो। मेरे और तुम्हारे दरमियान में वह काफ़ी गवाह है,[7] और वह बड़ी मग़्फ़िरत वाला, रहमत वाला है। **(8)** आप कह दीजिए कि कोई मैं अनोखा रसूल तो हूँ नहीं, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा, और न (यह मालूम कि) तुम्हारे साथ (क्या किया जाएगा), मैं तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़

---

1. वह हिक्मत तौहीद और बदला दिए जाने पर दलालत है, और वह मीयाद क़ियामत है।
2. जैसे यह कि तौहीद के इनकार पर तुमको क़ियामत में अ़ज़ाब होगा।
3. यानी ज़ाहिर है कि तुम भी उनको पैदा करने वाला नहीं मानते जो कि माबूद होने के हक़दार होने की दलील हो सकती है, बल्कि मख़्लूक़ कहते हो जो माबूद बनने के हक़दार होने के मनाफ़ी है। पस अ़क़्ली दलील तो मनफ़ी (नकारात्मक) हुई।
4. मतलब यह कि दलीले नक़्ली के लिए यह ज़रूरी है कि जहाँ से नक़्ल की गई है उसका पैरवी के क़ाबिल होना साबित हो, और सनद उस तक लगातार और बराबर मौजूद हो, चाहे वह जिससे नक़्ल किया गया है किसी नबी की किताब हो या उनका ज़बानी क़ौल हो, ज़ाहिर है कि ऐसी दलील कोई पेश नहीं कर सकता।
5. पस ऐसे माबूदों की इबादत करने से बढ़कर क्या ग़लती है कि इबादत का सबब और वजह एक भी नहीं और इबादत न करने के असबाब और कारण अनेक साबित हैं।
6. मतलब यह कि नुबुव्वत का झूठा दावा करने पर सज़ा का मुरत्तब होना ऐसा लाज़िमी है कि कोई मेरा हामी व मददगार भी उसके ख़िलाफ़ करने पर क़ादिर नहीं।
7. यानी उसकी ख़बर रखता है।

इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य व मा अ-न इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (9) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् का-न मिन् अिन्दिल्लाहि व कफ़र्तुम् बिही व शहि-द शाहिदुम् मिम्-बनी इस्राई-ल अ़ला मिस्लिही फ़-आम-न वस्तक्बर्तुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्- क़ौमज़्ज़ालिमीन (10) ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू लौ का-न ख़ैरम्-मा स-बक़ूना इलैहि, व इज़् लम् यह्तदू बिही फ़-स-यक़ूलू-न हाज़ा इफ़्कुन् क़दीम (11) व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव्-व रह्म-तन्, व हाज़ा किताबुम् मुसद्दिक़ुल् -लिसानन् अ़-रबिय्यल् लियुन्ज़िरल्लज़ी-न ज़-लमू व बुश्रा लिल्-मुह्सिनीन (12) इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (13) उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा जज़ा-अम् बिमा कानू यअ्मलून (14) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि इह्सानन्, ह-मलत्हु उम्मुहू कुर्हंव्-व व-ज़अ़त्हु कुर्हन्, व हम्लुहू व फ़िसालुहू सलासू-न शह्रन्, हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू व ब-ल-ग़ अर्बअ़ी-न स-नतन् क़ा-ल रब्बि औज़िअ़्नी अन् अश्कु-र निअ़्-म-त- -कल्लती अन्अ़म्-त अ़लय्-य व अ़ला वालिदय्-य व अन् अअ़्म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अस्लिह् ली फ़ी ज़ुर्रिय्यती, इन्नी तुब्तु इलै-क व इन्नी मिनल्-

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ
شَاهِدٌ مِّنْ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ
هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ۝١١ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ وَ
هٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى
لِلْمُحْسِنِيْنَ ۝١٢ اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝١٣ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ
اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ
ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ
قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِىْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ
وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِىْ فِىْ
ذُرِّيَّتِىْ ۚ اِنِّىْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝١٥ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ
فِىْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝١٦ وَالَّذِىْ

मुस्लिमीन (15) उलाइ-कल्लज़ी-न न-तक़ब्बलु अ़न्हुम् अह्स-न मा अ़मिलू व न-तजा-वज़ु अ़न् सय्यिआतिहिम् फ़ी अस्हाबिल्-जन्नति, वअ़्दस्-सिद्क़िल्लज़ी कानू यू-अ़दून (16) वल्लज़ी क़ा-ल लिवालिदैहि उफ़्फ़िल्-लकुमा अ-तअ़िदानिनी अन् उख़्र-ज व क़द्

❖ रु. 1/10/1

वह्य के ज़रिए आता है, और मैं तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। **(9)** आप यह कह दीजिए कि तुम मुझको यह बताओ कि अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो और तुम इसके मुन्किर हो, और बनी इस्राईल में से कोई गवाह इस जैसी किताब पर गवाही देकर ईमान ले आए और तुम तकब्बुर ही में रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला बेइन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं किया करता। **(10)** ❖

और ये काफ़िर लोग ईमान वालों के बारे में यूँ कहते हैं कि अगर यह क़ुरआन कोई अच्छी चीज़ होता तो ये लोग उसकी तरफ़ हमसे आगे न बढ़ते,[1] और जब उन लोगों को क़ुरआन से हिदायत नसीब न हुई तो यह कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। **(11)** और इससे पहले मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की किताब जो राह दिखाने वाली और रहमत थी, और यह एक किताब है जो उसको सच्चा करती है, अ़रबी ज़बान में, ज़ालिमों के डराने के लिए और नेक लोगों को ख़ुशख़बरी देने के लिए। **(12)** जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है,[2] फिर जमे रहे,[3] उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। **(13)** ये लोग जन्नती हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन कामों के बदले में जो वे करते थे। **(14)** और हमने इनसान को अपने माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है। उसकी माँ ने उसको बड़ी मशक़्क़त के साथ पेट में रखा और बड़ी मशक़्क़त के साथ उसको जन्म दिया और उसको पेट में रखना और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने (में पूरा होता) है, यहाँ तक कि जब वह अपनी जवानी को पहुँच जाता है[4] और चालीस साल को पहुँचता है तो कहता है कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको इसपर हमेशगी दीजिए कि मैं आपकी उन नेमतों का शुक्र किया करूँ जो आपने मुझको और मेरे माँ-बाप को अ़ता फ़रमाई हैं। और मैं नेक काम करूँ जिससे आप ख़ुश हों, और मेरी औलाद में भी मेरे लिए सलाहियत पैदाकर दीजिए, मैं आपकी जनाब में तौबा करता हूँ और मैं फ़रमाँबरदार हूँ।[5] **(15)** ये वे लोग हैं कि हम उनके कामों को क़बूल कर लेंगे और उनके गुनाहों से दरगुज़र करेंगे, इस तौर पर कि ये जन्नत वालों में से होंगे,[6] उस सच्चे वायदे की वजह से जिसका उनसे वायदा किया जाता है। **(16)** और जिसने अपने माँ-बाप से कहा कि तुफ़ "यानी लानत" है तुमपर। क्या तुम मुझको यह वायदा (यानी ख़बर) देते हो कि मैं (क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होकर) क़ब्र से निकाला जाऊँगा? हालाँकि मुझसे पहले बहुत-सी उम्मतें गुज़र गईं। और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद कर रहे हैं कि अरे तेरा नास हो ईमान ले आ, बेशक

---

1. यानी हम लोग बड़े अ़क़्लमन्द हैं और ये लोग कमअ़क़्ल हैं, और हक़ बात को अ़क़्लमन्द पहले क़बूल करता है। तो अगर यह हक़ होता तो हम पहले मानते, जब हमने नहीं माना तो यह हक़ नहीं। ये लोग बेअ़क़्ली से उधर दौड़ने लगे हैं।
2. यानी तौहीद को रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम के मुताबिक़ क़बूल किया।
3. यानी उसको छोड़ा नहीं।
4. यानी बालिग़ होने की उम्र को।
5. हासिल मक़ाम का यह हुआ कि जो शख़्स नेक होता है वह अल्लाह का हक़ भी अदा करता है, और माँ-बाप के हुक़ूक़ भी, जो कि बन्दों के हुक़ूक़ में से हैं, अदा करता है।
6. यहाँ यह न समझा जाए कि बग़ैर तौबा के गुनाह माफ़ नहीं होते, क्योंकि गुनाह महज़ फ़ज़्ल से भी माफ़ हो जाते हैं।

ख़-लतिल्-क़ुरूनु मिन् क़ब्ली व हुमा यस्तग़ीसानिल्ला-ह वैल-क आमिन् इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़-यक़ूलु मा हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (17) उलाइ-कल्लज़ी-न हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिम्-मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि, इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन (18) व लि-कुल्लिन् द-रजातुम्-मिम्मा अ़मिलू व लियुवफ़्फ़ि-यहुम् अअ़्मालहुम् व हुम् ला युज़्लमून (19) व यौ-म युअ़्रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्-नारि, अज़्हब्तुम् तय्यिबातिकुम् फ़ी हयातिकुमुद्-दुन्या वस्तम्तअ़्तुम् बिहा फ़ल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अ़ज़ाबल्-हूनि बिमा कुन्तुम् तस्तक्बिरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तफ़्सुक़ून (20) ❖

वज़्कुर् अख़ा आ़दिन्, इज़् अन्ज़-र क़ौमहू बिल्-अह्क़ाफ़ि व क़द् ख़-लतिन्-नुज़ुरु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (21) क़ालू अजिअ्-तना लितअ़्फ़ि-कना अ़न् आलि-हतिना फ़अ़्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन (22) क़ा-ल इन्नमल्-अ़िल्मु अ़िन्दल्लाहि व उबल्लिग़ुकुम् मा उर्सिल्तु बिही व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्हलून (23) फ़-लम्मा रऔहु आ़रिज़म्-मुस्तक़्बि-ल औदि-यतिहिम् क़ालू हाज़ा आ़रिज़ुम् मुम्तिरुना, बल् हु-व मस्तअ़्जल्तुम् बिही, रीहुन् फ़ीहा अ़ज़ाबुन् अलीम (24) तुदम्मिरु कुल्-ल शैइम्-बि-अम्रि रब्बिहा फ़-अस्बहू ला युरा इल्ला मसाकिनुहुम्, कज़ालि-क नज्ज़िल्-क़ौमल्-मुज्रिमीन (25) व ल-क़द् मक्कन्नाहुम् फ़ीमा इम्-मक्कन्नाकुम् फ़ीहि व जअ़ल्ना

قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَآ أَتَعِدَانِنِيٓ أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ
مِن قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ ءَامِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ
حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ
حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ
الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَٰسِرِينَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجَٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوا
وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَٰلَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَٰتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم
بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ
أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَ
مِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّا اللَّهَ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوٓا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ ءَالِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن
كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿٢٢﴾ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّآ
أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَٰكِنِّيٓ أَرَىٰكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا
مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا
اسْتَعْجَلْتُم بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ

❖ रु. 2/10/2

अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है, तो यह कहता है कि ये बे-सनद बातें अगलों से नक़्ल होती चली आ रही हैं।[1] (17) ये वे लोग हैं कि उनके हक़ में भी उन लोगों के साथ अल्लाह का क़ौल पूरा होकर रहा जो उनसे पहले जिन्न और इनसान गुज़र चुके हैं, बेशक ये घाटे में रहे। (18) और हर एक के लिए उनके आमाल की वजह से अलग-अलग दर्जे मिलेंगे, और ताकि अल्लाह तआला सबको उनके आमाल पूरे कर दे और उनपर ज़ुल्म न होगा। (19) और जिस दिन काफ़िर लोग आग के सामने लाए जाएँगे कि तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में हासिल कर चुके और उनको ख़ूब बरत चुके, सो आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक़ तकब्बुर किया करते थे।[2] और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानियाँ किया करते थे।[3] (20) ❖

और आप क़ौमे आद के भाई का ज़िक्र कीजिए जबकि उन्होंने अपनी क़ौम को जो कि ऐसे मक़ाम पर रहते थे कि वहाँ रेग के लम्बे झुके हुए तूदे थे,[4] इसपर डराया कि तुम ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत मत करो। और उनसे पहले और उनसे पीछे बहुत-से डराने वाले (पैग़म्बर अब तक) गुज़र चुके हैं, मुझको तुमपर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अन्देशा है। (21) वे कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इस इरादे से आए हो कि हमको हमारे माबूदों से फेर दो? अगर तुम सच्चे हो तो जिसका तुम हमसे वायदा करते हो उसको हमपर ला दो। (22) उन्होंने फ़रमाया कि पूरा इल्म तो ख़ुदा ही को है, और मुझको तो जो पैग़ाम देकर भेजा गया है मैं तुमको पहुँचा देता हूँ, लेकिन मैं तुमको देखता हूँ कि तुम लोग ख़ालिस जहालत की बातें करते हो।[5] (23) सो उन लोगों ने जब उस बादल को अपनी वादियों के मुक़ाबिल आता देखा तो कहने लगे कि यह तो बादल है जो हमपर बरसेगा, नहीं-नहीं बल्कि यह वही है जिसकी तुम जल्दी मचाते थे। एक आँधी है जिसमें दर्दनाक अ़ज़ाब है। (24) वह हर चीज़ को अपने परवर्दिगार के हुक्म से हलाक कर देगी। चुनाँचे वे ऐसे हो गए कि

---

1. मतलब यह कि यह ऐसा बदबख़्त है कि कुफ़्र और नाफ़रमानी दोनों का मुजिरम है, और नाफ़रमानी भी इस दर्जे की कि माँ-बाप की मुख़ालफ़त के साथ उनसे कलाम में बदतमीज़ी और सख़्ती व बद-अख़्लाक़ी करता है।

2. "दुनिया में" की क़ैद इस इशारे के लिए है कि ज़मीन पर रहकर तकब्बुर करना और भी ज़्यादा बुरा है, और "नाहक़" की क़ैद हक़ीक़त के मुताबिक़ है, क्योंकि मख़्लूक़ से तकब्बुर का सादिर होना हमेशा नाहक़ ही होगा। और तकब्बुर करने से मुराद ईमान से तकब्बुर करना है कि हमेशगी का अ़ज़ाब उसी की ख़ासियत में से है।

3. इसमें तमाम कुफ़्रियात और बुराइयाँ और ज़ुल्म के तरीक़े दाख़िल हो गए।

4. उन लोगों का ठिकाना अक्सर के क़ौल के मुताबिक़ यमन के शहर में था, और वहाँ रेग के तूदे थे। अ़रब के लोग तिजारत के लिए अक्सर सफ़र किया करते थे तो उन जगहों से गुज़रते थे और आदमियों और मवेशियों का उस हवा में उड़े-उड़े फिरना दुर्रे मन्सूर में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया गया है। और वादी कहते हैं ज़मीन के निचले हिस्से को जहाँ पानी जमा हो जाता है, इसी वजह से कभी इसका तर्जुमा मैदान से किया जाता है और कभी नदी नाले से।

5. इसलिए कि एक तो तौहीद को क़बूल नहीं करते हो, फिर अपने मुँह से बला माँगते हो, फिर मुझसे उसकी फ़रमाइश करते हो।

लहुम् सम्-अंव्-व अब्सारंव्-व अफ़्इ-दतन् फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् सम्अ़ुहुम् व ला अब्सारुहुम् व ला अफ़्इ-दतुहुम् मिन् शैइन् इज़् कानू यज्हदू-न बिआयातिल्लाहि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (26) ❖

ल-क़द् अह्लक्ना मा हौलकुम् मिनल्-क़ुरा व सर्रफ़्नल्-आयाति लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (27) फ़-लौ ला न-स-रहुमुल्लज़ीनत्-त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि क़ुर्बानन् आलि-हतन्, बल् ज़ल्लू अ़न्हुम् व ज़ालि-क इफ़्क़ुहुम् व मा कानू यफ़्तरून (28) व इज़् सरफ़्ना इलै-क न-फ़रम्-मिनल्-जिन्नि यस्तमिअ़ूनल्-क़ुर्आ-न फ़-लम्मा ह-ज़रूहु क़ालू अन्सितू फ़-लम्मा क़ुज़ि-य वल्लौ इला क़ौमिहिम् मुन्ज़िरीन (29) क़ालू या क़ौमना इन्ना समिअ़्ना किताबन् उन्ज़ि-ल मिम्बअ़्दि मूसा मुसद्दि-क़ल्लिमा बै-न यदैहि यह्दी इलल्-हक़्क़ि व इला तरीक़िम्-मुस्तक़ीम (30) या क़ौमना अजीबू दाअ़ि-यल्लाहि व आमिनू बिही यग़्फ़िर् लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व युजिर्कुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (31) व मल्-ला युजिब् दाअ़ि-यल्लाहि फ़लै-स बिमुअ़्जिज़िन् फ़िल्अर्ज़ि व लै-स लहू मिन् दूनिही औलिया-उ, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (32) अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व लम् यअ़्-य बिख़ल्क़िहिन्-न बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि-यल्मौता, बला इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (33) व यौ-म

ربها فاصبحوا لا يرى الا مسكنهم كذلك نجزي القوم
المجرمين ۝ ولقد مكنهم فيما ان مكنكم فيه وجعلنا
لهم سمعا وابصارا وافدة فما اغنى عنهم سمعهم ولا
ابصارهم ولا افدتهم من شيء اذ كانوا يجحدون بايت
الله وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ۝ ولقد اهلكنا ما
حولكم من القرى وصرفنا الايت لعلهم يرجعون ۝ فلولا
نصرهم الذين اتخذوا من دون الله قربانا الهة بل ضلوا
عنهم وذلك افكهم وما كانوا يفترون ۝ واذ صرفنا اليك
نفرا من الجن يستمعون القران فلما حضروه قالوا انصتوا
فلما قضي ولوا الى قومهم منذرين ۝ قالوا يقومنا انا
سمعنا كتبا انزل من بعد موسى مصدقا لما بين يديه
يهدي الى الحق والى طريق مستقيم ۝ يقومنا اجيبوا داعي
الله وامنوا به يغفر لكم من ذنوبكم ويجركم من عذاب
اليم ۝ ومن لا يجب داعي الله فليس بمعجز في الارض و
ليس له من دونه اولياء اولئك في ضلل مبين ۝ اولم
يروا ان الله الذي خلق السموت والارض ولم يعي بخلقهن

सिवाय उनके मकानों के और कुछ न दिखाई देता था। हम मुजरिमों को यूँ ही सज़ा दिया करते हैं। **(25)** और हमने उन लोगों को उन बातों में क़ुदरत दी थी कि तुमको उन बातों में क़ुदरत नहीं दी, और हमने उनको कान और आँख और दिल दिए थे, सो चूँकि वे लोग अल्लाह तआ़ला की आयतों का इनकार करते थे इसलिए न उनके कान उनके ज़रा काम आए और न उनकी आँखें और न उनके दिल, और जिसकी वे हँसी किया करते थे उसी ने उनको आ घेरा।[1] **(26)** ❖

और हमने तुम्हारे आस-पास की और बस्तियाँ भी ग़ारत की हैं,[2] और हमने बार-बार अपनी निशानियाँ बतला दी थीं ताकि वे बाज़ आएँ। **(27)** सो अल्लाह तआ़ला के सिवा जिन-जिन चीज़ों को उन्होंने अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने को अपना माबूद बना रखा है, उन्होंने उनकी मदद क्यों न की? बल्कि वे सब उनसे ग़ायब हो गए और वह महज़ उनकी तराशी हुई और घड़ी हुई बात है। **(28)** और जबकि हम जिन्नात की एक जमाअ़त को आपकी तरफ़ ले आए जो क़ुरआन सुनने लगे थे। ग़रज़ जब वे क़ुरआन के पास आ पहुँचे, कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब क़ुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग अपनी क़ौम के पास ख़बर पहुँचाने के वास्ते वापस गए। **(29)** कहने लगे कि ऐ भाइयो! हम एक किताब सुनकर आए हैं जो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के बाद नाज़िल की गई है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है, हक़ और सही रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है। **(30)** ऐ भाइयो! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना मानो और उसपर ईमान ले आओ, अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको दर्दनाक अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा।[3] **(31)** और जो शख़्स अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना न मानेगा तो वह ज़मीन में हरा नहीं सकता, और ख़ुदा के सिवा उसका कोई मददगार भी न होगा। ऐसे लोग खुली गुमराही में हैं। **(32)** क्या उन लोगों ने यह न जाना कि जिस ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने में ज़रा नहीं थका, वह इसपर क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे, क्यों न हो बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है। **(33)** और

---

1. यानी न उनके हवास उनको अ़ज़ाब से बचा सके, और न उनकी तदबीर जिसका इदराक दिल से होता है, और न उनकी क़ुव्वत, पस तुम्हारी तो क्या हक़ीक़त है?

2. जैसे समूद और क़ौमे लूत कि मुल्क शाम को जाते हुए उनके ठिकानों से गुज़रते थे। और चूँकि मक्का से एक तरफ़ यमन है, दूसरी सम्त में शाम, इसलिए "तुम्हारे आस-पास" फ़रमाया।

3. इन आयतों में जिन जिन्नात के ईमान लाने का ज़िक्र है उनका वाक़िआ़ हदीसों में इस तरह आया है कि जब नबी-ए-पाक के नबी बनकर तशरीफ़ लाने के वक़्त जिन्नात को आसमानी ख़बरें सुनने से दुमदार टूटने वाले सितारे के ज़रिए रोक दिया गया, तो जिन्नात में तज़्किरा हुआ कि इसका सबब तहक़ीक़ करना चाहिए कि कौन-सा नया वाक़िआ़ दुनिया में हुआ है जिसके सबब यह मामला हो गया। जिन्नात मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में तहक़ीक़ के वास्ते रवाना हुए। बाज़ जिन्नात हिजाज़ की तरफ़ भी चले, उस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चन्द सहाबियों के साथ 'बतने नख़्ला' में जो एक जगह का नाम है तशरीफ़ रखते थे, और उकाज़ के बाज़ार को तशरीफ़ ले जाने का इरादा था। ग़रज़ आप सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब वे जिन्नात यहाँ पहुँचे, क़ुरआन सुनकर कहने लगे, बस वह नई बात जो हमारे और आसमानी ख़बरों के दरमियान रुकावट हो गई, यह है। और एक रिवायत में यह है कि वे जिन्नात जब यहाँ आए तो आपस में कहने लगे कि ख़ामोश रहकर क़ुरआन सुनो, जब आप सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मोतक़िद और मोमिन होकर अपनी क़ौम के पास वापस गए और उनको ख़बर सुनाकर ईमान की तरग़ीब दी, और आपको उनके आने-जाने की ख़बर नहीं हुई, यहाँ तक कि सूरः जिन्न के नाज़िल होने से आपको ख़बर दी गई।

युअ्रजुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्नारि, अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि, क़ालू बला व रब्बिना, क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून **(34)** फ़स्बिर् कमा स-ब-र उलुल्-अ़ज़्मि मिनर्-रुसुलि व ला तस्तअ्जिल्-लहुम्, क-अन्नहुम् यौ-म यरौ-न मा यू-अ़दू-न लम् यल्बसू इल्ला सा-अ़तम् मिन्-नहारिन्, बलाग़ुन् फ़-हल् युह्लकु इल्लल्-क़ौमुल्-फ़ासिक़ून ◆ **(35)** ❖

47 सूरतु मुहम्मदिन् 95

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2475 अक्षर, 558 शब्द, 38 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि अज़ल्-ल अअ़्मालहुम् **(1)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व आमनू बिमा नुज़्ज़ि-ल अ़ला मुहम्मदिंव्-व हुवल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-हिम् कफ़्फ़-र अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व अस्ल-ह बालहुम् **(2)** ज़ालि-क बिअन्नल्लज़ी-न क-फ़रुत्त-बअ़ुल्-बाति-ल व अन्नल्लज़ी-न आमनुत्-ब-अुल्-हक़्-क़ मिर्-रब्बिहिम्, कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहु लिन्नासि अम्सालहुम् **(3)**

بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ
قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾
فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ
بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٍ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾ ذٰلِكَ
بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا
الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ﴿٣﴾ فَاِذَا لَقِيْتُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا
الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۚ
ذٰلِكَ ۛ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ
بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

फ़-इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ज़र्बर्रिक़ाबि, हत्ता इज़ा अस्ख़न्तुमूहुम् फ़शुद्दुल्-वसा-क़ फ़-इम्मा मन्नम्-बअ़्दु व इम्मा फ़िदा-अन् हत्ता त-ज़अ़ल्-हर्बु औज़ा-रहा, ज़ालि-क, व लौ यशा-उल्लाहु लन्त-स-र मिन्हुम् व लाकिल्-लियब्लु-व बअ़्-ज़कुम् बिबअ़्ज़िन्, वल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-लंय्युज़िल्-ल अअ़्मालहुम् **(4)** स-यह्दीहिम् व युस्लिहु बालहुम **(5)** व युद्ख़िलुहुमुल्-जन्न-त अ़र्र-फ़हा लहुम् **(6)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्
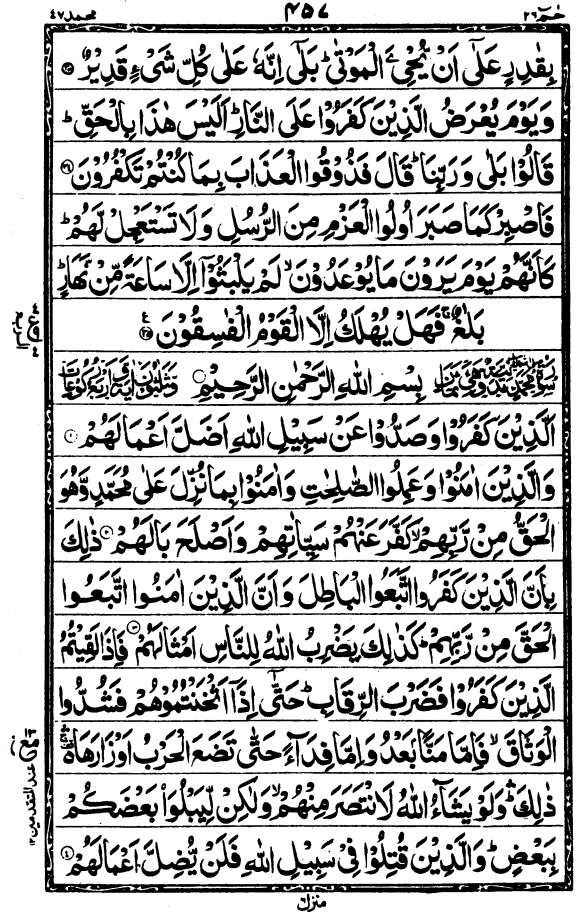
जिस दिन वे काफ़िर लोग दोज़ख़ के सामने लाए जाएँगे (उनसे पूछा जाएगा), क्या ये दोज़ख़ एक हक़ीक़त नहीं है? वे कहेंगे कि हमको अपने परवर्दिगार की क़सम! ज़रूर एक हक़ीक़त है। इरशाद होगा, तो अपने कुफ़्र के बदले इसका अ़ज़ाब चखो। **(34)** तो आप सब्र कीजिए जैसे और हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया था,[1] और उन लोगों के लिए (अल्लाह के) इन्तिक़ाम की जल्दी न कीजिए। जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देखेंगे जिसका उनसे वायदा किया जाता है तो गोया ये लोग दिन भर में एक घड़ी रहे हैं,[2] यह पहुँचा देना है। सो वही बरबाद होंगे जो नाफ़रमानी करेंगे। ◆ **(35)** ❖

47 सूरः मुहम्मद 95

सूरः मुहम्मद मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 38 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जो लोग काफ़िर हुए और अल्लाह के रास्ते से रोका, ख़ुदा ने उनके आमाल ज़ाया कर दिए।[3] **(1)** और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और वे उस सब पर ईमान लाए जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर नाज़िल किया गया है और वह उनके रब के पास वाक़ई चीज़ है, अल्लाह तआ़ला उनके गुनाह उनपर से उतार देगा और उनकी हालत दुरुस्त रखेगा। **(2)** यह इस वजह से है कि काफ़िर तो ग़लत रास्ते पर चले और ईमान वाले सही रास्ते पर चले जो उनके रब की तरफ़ से है।[4] अल्लाह तआ़ला इसी तरह लोगों के लिए उनके हालात बयान फ़रमाते हैं। **(3)** सो जब तुम्हारा काफ़िरों से मुक़ाबला हो जाए तो उनकी गर्दनें मारो,[5] यहाँ तक कि जब तुम उनका ख़ूब ख़ून बहा चुको तो ख़ूब मज़बूत बाँध लो। फिर उसके बाद या तो मुआ़वज़े के बग़ैर छोड़ देना और या मुआ़वज़ा लेकर छोड़ देना, जब तक कि लड़ने वाले अपने हथियार न रख दें,[6] यह (जिहाद का) हुक्म (जो ज़िक्र किया गया) इसपर अ़मल करना। और अगर अल्लाह चाहता तो उनसे इन्तिक़ाम ले लेता, लेकिन ताकि तुममें एक का दूसरे के ज़रिए से इम्तिहान करे।[7]

---

1. "हिम्मत वालों" से मुहक़्क़िक़ीन ने सब पैग़म्बर मुराद लिए हैं, क्योंकि सबका अ़ज़्म और हिम्मत वाला होना ज़ाहिर है, और "मिनर्रुसुलि" में कलिमा "मिन" बयान करने के लिए है। और चूँकि अल्लाह के इरशाद "फ़ज़्ज़ल्ना बअ्-ज़हुम अ़ला बअ्ज़िन" कि हमने बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है, के मुताबिक़ इस सिफ़्त में बाज़ रसूल औरों से बढ़े हुए हैं, इस बिना पर यह लक़ब भी बाज़ रसूलों का मश्हूर हो गया है।
2. यानी दुनिया की लम्बी मुद्दत छोटी मालूम होगी और यही मालूम होगा कि बहुत जल्दी अ़ज़ाब आ गया।
3. यानी जिन कामों को वे नेक समझ रहे थे ईमान न होने की वजह से वे मक़बूल नहीं, बल्कि उनमें से बाज़े काम और उल्टे सज़ा का सबब हैं।
4. ग़लत रास्ते का नाकामी का सबब होना और सही रास्ते का कामयाबी का सबब होना ज़ाहिर है, इसलिए वे नाकाम रहे और ये कामयाब हुए। और अगर इस्लाम के सही रास्ता होने में कोई शक हो तो "मिर्रब्बिहिम" यानी यह उनके रब की तरफ़ से है, से उसका जवाब हो गया कि दलील इसके सही होने की यह है कि उसका अल्लाह की जानिब से होना नुबुव्वत के मोजिज़ों ख़ास तौर से क़ुरआन के बेमिसाल होने से साबित है।
5. यानी क़त्ल करो।
6. मुराद इससे इस्लाम लाने और ताबेदार होने में से किसी मामले को क़बूल करना है। पस अगर क़त्ल और क़ैद से पहले इस्लाम ले आएँ या ज़िम्मी होना (यानी मुस्लिम हुकूमत में टैक्स देकर रहना) क़बूल करें तो अब न क़त्ल जायज़ है न क़ैद जायज़ है।
7. मुसलमानों का इम्तिहान यह कि कौन अल्लाह के हुक्म को अपनी जान पर तरजीह देता है, और काफ़िरों का इम्तिहान यह कि इस सज़ा से ख़बरदार होकर कौन हक़ को क़बूल करता है। पस इस हिक्मत के लिए भी जिहाद को शरीअ़त में रखा गया।

तन्सुरुल्ला-ह यन्सुर्कुम् व युसब्बित् अक़्दामकुम् **(7)** वल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-तअ्सल्-लहुम् व अज़ल्-ल अअ्मालहुम **(8)** ज़ालि-क बिअन्नहुम् करिहू मा अन्ज़लल्लाहु फ़-अह्ब-त अअ्मालहुम **(9)** अ-फ़ लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, दम्म-रल्लाहु अ़लैहिम् व लिल्काफ़िरी-न अम्सालुहा **(10)** ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह मौलल्लज़ी-न आमनू व अन्नल्-काफ़िरी-न ला मौला लहुम **(11)** ❖

इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, वल्लज़ी-न क-फ़रू य-तमत्तअू-न व यअ्कुलू-न कमा तअ्कुलुल्-अन्आ़मु वन्नारु मस्वल्-लहुम **(12)** व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् हि-य अशद्दु क़ुव्वतम्-मिन् क़र्-यतिकल्लती अख़्र-जत्-क अह्लक्नाहुम् फ़ला नासि-र लहुम **(13)** अ-फ़ मन् का-न अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बिही क-मन् ज़ुय्यि-न लहू सू-उ अ़-मलिही वत्त-बअू अह्वा-अहुम **(14)** म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअ़िदल्-मुत्तक़ू-न, फ़ीहा अन्हारुम्-मिम्मा-इन् ग़ैरि आसिनिन् व अन्हारुम् मिल्-ल-बनिल्- लम् य-तग़य्यर् तअ्मुहू व अन्हारुम्-मिन् ख़म्रिल् लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबी-न व अन्हारुम्-मिन् अ़-सलिम् मुसफ़्फ़न्, व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स-मराति व मग़्फ़ि-रतुम् मिर्रब्बिहिम्, क-मन् हु-व ख़ालिदुन् फ़िन्नारि व सुक़ू मा-अन् हमीमन् फ़-क़त्त-अ़ अम्आ़-अहुम **(15)** व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क हत्ता इज़ा ख़-रजू मिन् अ़िन्दि-क क़ालू लिल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म माज़ा क़ा-ल

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۡ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
اَمْثَالُهَا ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ
لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ع
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَ
يَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ
هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ
لَهُمْ ۝ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ
وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ
مِّنْ مَّاۗءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ
خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ڬ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۭ وَلَهُمْ فِيْهَا
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ
وَسُقُوْا مَاۗءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَاۗءَهُمْ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाते हैं, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज़ ज़ाया नहीं करेगा। **(4)** अल्लाह उनको मक़सूद तक पहुँचा देगा और उनकी हालत दुरुस्त रखेगा।[1] **(5)** और उनको जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसकी उनको पहचान करा देगा। **(6)** ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।[2] **(7)** और जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए तबाही है, और उनके आमाल को ख़ुदा तआ़ला बेकार कर देगा।[3] **(8)** यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने अल्लाह के उतारे हुए अहकाम को नापसन्द किया, सो अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया। **(9)** क्या ये लोग मुल्क में चले-फिरे नहीं, और उन्होंने देखा नहीं कि जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका अन्जाम कैसा हुआ कि अल्लाह ने उनपर कैसी तबाही डाली, और उन काफ़िरों के लिए भी इसी क़िस्म के मामलात होने को हैं। **(10)** यह इस सबब से है कि अल्लाह मुसलमानों का कारसाज़ है और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। **(11)** ◆

बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो लोग काफ़िर हैं वे ऐश कर रहे हैं और इस तरह खाते-पीते हैं जिस तरह चौपाए खाते-पीते हैं, और जहन्नम उन लोगों का ठिकाना है। **(12)** और बहुत-सी बस्तियाँ ऐसी थीं जो कुव्वत में आपकी उस बस्ती से बढ़ी हुई थीं जिसके रहने वालों ने आपको घर से बेघर कर दिया, हमने उनको हलाक कर दिया। सो उनका कोई मददगार न हुआ।[4] **(13)** तो जो लोग अपने रबके वाज़ेह रास्ते पर हों, क्या वे उन शख़्सों की तरह हो सकते हैं जिनकी बद्अमली उनको अच्छी मालूम होती हो और जो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर चलते हों?[5] **(14)** जिस जन्नत का परहेज़गारों से वायदा किया जाता है उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें बहुत-सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं जिसमें ज़रा भी बदलाव न होगा,[6] और बहुत-सी नहरें दूध की हैं जिनका ज़ायक़ा ज़रा बदला हुआ न होगा, और बहुत-सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों को बहुत मज़ेदार मालूम होगी, और बहुत-सी नहरें शहद की हैं जो बिलकुल साफ़ होगा, और उनके लिए वहाँ हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रबकी तरफ़ से बख़्शिश होगी। क्या ऐसे लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे और खौलता हुआ पानी उनको पीने को दिया जाएगा, सो वह उनकी अंतड़ियों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।[7] **(15)**

1. यानी क़ब्र में और हश्र में और पुलसिरात पर और आख़िरत के तमाम मौक़ों में।
2. मतलब यह कि मजमूए के मुक़ाबले मजमूआ साबित-क़दम रहकर काफ़िरों पर ग़ालिब आ जाएगा। चाहे शुरू ही से चाहे इन्तिहा में।
3. ग़रज़ काफ़िर लोग दोनों जहाम में घाटे में रहे।
4. ऐसी हालत में उनको घमण्ड न करना चाहिए क्योंकि हम जब चाहें उनकी भी सफ़ाई कर सकते हैं। और आप उनको भी सबब और इल्लत के एक होने यानी कुफ़्र और मुख़ालफ़त की वजह से वक़्त पर सज़ा देने वाले हैं। और ये लोग जो कि अहले बातिल हैं आप और तमाम अहले हक़ के मुक़ाबले में क्योंकर सज़ा के क़ाबिल न होंगे, जबकि अहले बातिल सिर्फ़ नफ़्स की राह पर हैं, और अहले हक़ ख़ुदा की राह पर हैं।
5. यानी जब आमाल में फ़र्क़ है तो अन्जाम में भी फ़र्क़ होगा। पस जिस तरह अहले हक़ सवाब के मुस्तहिक़ हैं उसी तरह अहले बातिल अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हैं।
6. न बू (गंध) में, न रंग में, न ज़ायके में।
7. ग़रज़ यह कि जब उनके आमाल में फ़र्क़ है तो उनके अन्जाम में यह फ़र्क़ होगा जिसका बयान अब किया गया।

आनिफ़न्, उलाइ-कल्लज़ी-न त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् वत्त-बअ़ू अह्वा-अहुम (16) वल्लज़ीनह्-तदौ ज़ा-दहुम् हुदंव्-व आताहुम् तक़्वाहुम (17) फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्-सा-अ़-त अन् तअ्ति-यहुम् बग़्-ततन् फ़-क़द् जा-अ अश्रातुहा फ़-अन्ना लहुम् इज़ा जा-अत्हुम् ज़िक्राहुम (18) फ़अ़्लम् अन्नहू ला इला-ह इल्लल्लाहु वस्तग़्फ़िर् लि-ज़म्बि-क व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, वल्लाहु यअ़्लमु मु-तक़ल्ल-बकुम् व मस्वाकुम् (19) ❖

व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू लौ ला नुज़्ज़िलत् सू-रतुन् फ़-इज़ा उन्ज़िलत् सू-रतुम् मुह्क-मतुंव्-व ज़ुकि-र फ़ीहल्-क़ितालु रऐतल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंय्-यन्ज़ुरू-न इलै-क न-ज़रल्-मग़्शिय्यि अ़लैहि मिनल्-मौति, फ़-औला लहुम (20) ता-अ़तुंव्-व क़ौलुम्-मअ़्रूफ़ुन्, फ़-इज़ा अ़-ज़मल्-अम्रु फ़लौ स-दक़ुल्ला-ह लका-न ख़ैरल्-लहुम (21) फ़-हल् अ़सैतुम् इन् तवल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तुक़त्तिअ़ू अर्हा-मकुम (22) उलाइ-कल्लज़ी-न ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़-असम्म-हुम् व अअ़्मा अब्सा-रहुम (23) अ-फ़ला य-तदब्बरूनल्-क़ुरआ-न अम् अ़ला क़ुलूबिन् अक़्फ़ालुहा (24) इन्नल्-लज़ीनर्तद्दू अ़ला अद्बारिहिम् मिम्बअ़्दि मा तबय्य-न लहुमुल्-हुदश्शैतानु सव्व-ल लहुम्, व अम्ला लहुम (25) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लिल्लज़ी-न करिहू मा नज़्ज़-लल्लाहु सनुतीअ़ुकुम् फ़ी बअ़्ज़िल्-अम्रि वल्लाहु यअ़्लमु इस्रा-रहुम (26) फ़कै-फ इज़ा तवफ़्फ़त्हुमुल्-मलाइ-कतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व अद्बारहुम (27) ज़ालि-क

محمد ٤٧ ٩٥٩ حٰمٓ ٢٦

حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ
اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا
السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ
ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا
الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ
الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۗ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ
فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ
اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ
الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ
مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۗ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ
الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ

منزل

❖ रु. 2/8/6

और बाज़े आदमी ऐसे हैं[1] कि वे आपकी तरफ़ कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे लोग आपके पास से बाहर जाते हैं तो दूसरे इल्म वालों से कहते हैं कि हज़रत ने अभी क्या बात फ़रमाई थी?[2] ये वे लोग हैं कि हक़ तआ़ला ने उनके दिलों पर मुहर कर दी है और ये अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर चलते हैं। **(16)** और जो लोग राह पर हैं[3] अल्लाह तआ़ला उनको और ज़्यादा हिदायत देता है, और उनको उनके तक़्वे की तौफ़ीक़ देता है।[4] **(17)** सो ये लोग बस क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वह उनपर अचानक आ पड़े[5] सो उसकी निशानियाँ तो आ चुकी हैं,[6] तो जब क़ियामत उनके सामने आ खड़ी हुई उस वक़्त उनको समझना कहाँ मयस्सर होगा। **(18)** तो आप इसका यक़ीन रखिए कि अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई इबादत के क़ाबिल नहीं,[7] और आप अपनी ख़ता की माफ़ी माँगते रहिए[8] और सब मुसलमान मर्दों और सब मुसलमान औ़रतों के लिए भी। और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे चलने-फिरने और रहने-सहने की ख़बर रखता है।[9] **(19)** ❖

और जो लोग ईमान वाले हैं वे कहते रहते हैं कि कोई (नई) सूरः क्यों न नाज़िल हुई, सो जिस वक़्त कोई साफ़-साफ़ (मज़मून की) सूरः नाज़िल होती है और (इत्तिफ़ाक़ से) उसमें जिहाद का भी ज़िक्र होता है तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) रोग है आप उन लोगों को देखते हैं कि वे आपकी तरफ़ इस तरह देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो।[10] सो (असल यह है कि) जल्द ही उनकी कमबख़्ती आने वाली है। **(20)** उनकी फ़रमाँबरदारी और बातचीत मालूम है, पस जब सारा काम तैयार ही हो जाता है तो अगर ये लोग अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत ही बेहतर होता।[11] **(21)** सो अगर तुम किनारा करने वाले रहो तो आया तुमको यह अन्देशा भी है कि तुम दुनिया में फ़साद मचा दो, और आपस में ताल्लुक़ तोड़ दो। **(22)** ये वे लोग हैं जिनको ख़ुदा ने अपनी रहमत से दूर कर दिया, फिर उनको बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अंधा कर दिया। **(23)** तो क्या ये लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते? या दिलों पर ताले लग रहे हैं? **(24)** जो लोग पीठ फेर कर हट गए इसके बाद कि सीधा रास्ता उनको साफ़ मालूम हो गया, शैतान ने उनको चकमा दिया है और उनको दूर-दूर की सुझाई है। **(25)** यह इस सबब से हुआ कि उन लोगों ने ऐसे लोगों से जो कि ख़ुदा के उतारे हुए अहकाम को नापसन्द करते हैं, यह कहा कि बाज़ी बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे, और अल्लाह तआ़ला उनके ख़ुफ़िया बातें करने को ख़ूब जानता है। **(26)** सो

---

1. इससे मुनाफ़िक़ लोग मुराद हैं।
2. इसकी वजह उनकी ख़बीस हालत के तक़ाज़े से यह मालूम होती है कि वे इस बात का इशारा करते थे कि हम आपकी बातों को तवज्जोह के क़ाबिल नहीं जानते, और बज़ाहिर बात का पूछना ज़ाहिर करते थे, और यह भी उनके निफ़ाक़ का एक शोबा है।
3. यानी मुसलमान हो चुके हैं।
4. यानी ईमान लाने के बाद उन अहकाम पर भी अ़मल करते हैं।
5. यह भी एक तरह की डाँट और तंबीह है। यानी क्या क़ियामत में नसीहत हासिल करेंगे?
6. यहाँ 'अशरात' से मुराद वे निशानियाँ हैं जो क़ियामत से बहुत पहले सामने आईं, और क़रीब की निशानियाँ जैसे ईसा अ़लैहिस्सलाम का आसमान से उतरना, दज्जाल का निकलना और सूरज का पश्चिम की ओर से निकलना यहाँ मुराद लेना इसलिए मुनासिब नहीं कि इससे आयत के नाज़िल होने के ज़माने के लोगों को डराना तकल्लुफ़ से ख़ाली नहीं, और "क़द जा-अ अशरातुहा" से मक़सूद वईद यानी सज़ा की धमकी और अ़ज़ाब से डराना है।
7. इसमें दीन के सब उसूल (यानी बुनियादी चीज़ें) आ गए, क्योंकि इल्म से मुराद पूरा और कामिल इल्म है, और कामिल इल्म बन्दगी पर पूरी तरह अ़मल करने को शामिल है। हासिल यह कि जिन चीज़ों के करने का हुक्म है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 920 पर)

बिअन्नहुमुत्त-बअ़ू मा अस्ख़तल्ला-ह व करिहू रिज़्वानहू फ़-अह्ब-त अअ़्मालहुम **(28)** ❖

अम् हसिबल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम्-म-रज़ुन् अल्-लंय्युख़्रिजल्लाहु अज़्ग़ा-नहुम **(29)** व लौ नशा-उ ल-अरैना-कहुम् फ़-ल-अ़रफ़्तहुम् बिसीमाहुम्, व ल-तअ़्रिफ़न्नहुम् फ़ी लह़्निल्-क़ौलि, वल्लाहु यअ़्लमु अअ़्मालकुम **(30)** व ल-नब्लुवन्नकुम् हत्ता नअ़्-लमल्-मुजाहिदी-न मिन्कुम् वस्साबिरी-न व नब्लु-व अख़्बा-रकुम **(31)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि व शाक़्क़ुर्रसू-ल मिम्बअ़्दि मा तबय्य-न लहुमुल्-हुदा लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन्, व स-युह्बितु अअ़्मालहुम **(32)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअ़ुल्ला-ह व अतीअ़ुर्रसू-ल व ला तुब्तिलू अअ़्मालकुम **(33)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि सुम्-म मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़-लंय्-यग़्फ़िरल्लाहु लहुम **(34)** फ़ला तहिनू व तद्अ़ू इलस्सल्मि व अन्तुमुल्-अअ़्लौ-न वल्लाहु म-अ़कुम् व लंय्यति-रकुम् अअ़्मालकुम **(35)** इन्नमल्-हयातुद्दुन्या लअ़िबुंव्-व लह्वुन्, व इन् तुअ़्मिनू व तत्तक़ू युअ़्तिकुम् उजू-रकुम् व ला यस्अल्कुम् अम्वालकुम **(36)** इंय्यस्अल्कुमूहा फ़-युह्फ़िकुम् तब्ख़लू व युख़्रिज् अज़्ग़ा-नकुम **(37)** हा-अन्तुम् हा-उला-इ तुद्औ़-न लितुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़मिन्कुम् मंय्यब्ख़लु व मंय्यब्ख़ल् फ़-इन्नमा यब्ख़लु अ़न्- नफ़्सिही, वल्लाहुल्-ग़निय्यु व अन्तुमुल्-फ़ु-क़रा-उ व इन् त-तवल्लौ यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् सुम्-म ला यकूनू अम्सालकुम **(38)** ❖

محمد ٤٧ — ٩٦٠ — حٰمٓ ٢٦

وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا
رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ
بِسِيْمٰهُمْ ۭ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ۝
وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۭ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ
فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۝ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ
وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝ اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ
وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝
اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ۝ هٰٓاَنْتُمْ
هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَ
مَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ
وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ۝

منزل ٦

उनका क्या हाल होगा जबकि फ़रिश्ते उनकी जान क़ब्ज़ करते होंगे और उनके मुँहों पर और पीठों पर मारते जाते होंगे। **(27)** यह इस सबब से कि जो तरीक़ा ख़ुदा की नाराज़ी को वाजिब करने वाला था ये उसी पर चले और उसकी रिज़ा से नफ़रत करते रहे, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उनके सब आमाल ज़ाया और बरबाद कर दिए। **(28)** ❖

जिन लोगों के दिल में रोग है क्या ये लोग यह ख़्याल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला कभी उनकी दिली दुश्मनियों को ज़ाहिर न करेगा? **(29)** और हम अगर चाहते तो आपको उनका पूरा पता बता देते, सो आप उनको हुलिए से पहचान लेते, और आप उनको बात करने के अन्दाज़ से ज़रूर पहचान लेंगे। और अल्लाह तआ़ला तुम सबके आमाल को जानता है।[1] **(30)** और हम ज़रूर तुम सबके आमाल की आज़माइश करेंगे, ताकि हम उन लोगों को मालूम कर लें जो तुममें जिहाद करने वाले हैं और जो साबित-क़दम "यानी अड़िग" रहने वाले हैं। **(31)** और ताकि तुम्हारी हालतों की जाँच कर लें। बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की, इसके बाद कि उनको रास्ता नज़र आ चुका था, ये लोग अल्लाह को कुछ नुक़सान न पहुँचा सकेंगे,[2] और अल्लाह उनकी कोशिशों को मिटा देगा। **(32)** ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल की इताअ़त करो, और (काफ़िरों की तरह अल्लाह और रसूल की मुख़ालफ़त करके) अपने आमाल को बरबाद मत करो। **(33)** बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वे काफ़िर ही रहकर मर गए, ख़ुदा तआ़ला उनको कभी न बख़्शेगा।[3] **(34)** सो तुम हिम्मत मत हारो और सुलह की तरफ़ मत बुलाओ,[4] और तुम ही ग़ालिब रहोगे[5] और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे साथ है और तुम्हारे आमाल में हरगिज़ कमी न करेगा।[6] **(35)** दुनियावी ज़िन्दगी तो सिर्फ़ एक खेल-तमाशा है,[7] और अगर तुम ईमान और तक़्वा इख़्तियार करो तो अल्लाह तुमको तुम्हारे अज्र अ़ता करेगा, और तुमसे तुम्हारे माल तलब न करेगा। **(36)** अगर तुमसे तुम्हारे माल तलब करे फिर इन्तिहाई दर्जे तक तुमसे तलब करता रहे तो तुम कन्जूसी करने लगो, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारी नागवारी ज़ाहिर कर दे। **(37)** हाँ! तुम लोग ऐसे हो कि तुमको अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, सो बाज़े तुममें से वे हैं जो कन्जूसी करते हैं। और जो शख़्स कन्जूसी करता है तो वह ख़ुद अपने से कन्जूसी करता है। और अल्लाह तो किसी का मोहताज नहीं, और तुम सब मोहताज हो। और अगर तुम नाफ़रमानी करोगे तो ख़ुदा तआ़ला तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम पैदा कर देगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। **(38)** ❖

(पृष्ठ 918 का शेष) और जिन चीज़ों से मना किया गया है उन सबपर शरीअ़त के मुताबिक़ अ़मल की हमेशा पाबन्दी रखो।

8. ख़ता से मुराद मजाज़ी ख़ता है।

9. पस उसके वायदे के उम्मीदवार और उसकी वईद से डरते रहना चाहिए।

10. इस तरह देखने का सबब ख़ौफ़ और बुज़दिली है कि अब अपनी ज़ाहिरी हालत को बनाए रखने के लिए जिहाद में जाना पड़ा और मुसीबत आई।

11. यानी शुरू में अगर मुनाफ़िक़ थे तो आख़िर में निफ़ाक़ से तौबा कर लेते, तब भी ईमान मक़बूल हो जाता।

1. तो मुसलमानों को उनके इख़्लास पर जज़ा और मुनाफ़िक़ों को उनके निफ़ाक़ व धोखे पर सज़ा देगा।

2. बल्कि यह दीन हर हाल में पूरा होकर रहेगा, चुनाँचे हुआ।

3. मग़्फ़िरत के न होने के लिए कुफ़्र के साथ "अल्लाह के रास्ते से रोकना" शर्त नहीं।

4. यहाँ जो सुलह की मनाही है तो इससे मुराद मुतलक़ सुलह नहीं, बल्कि सिर्फ़ वह सुलह जिसका मन्शा सिर्फ़ हिम्मत की कमज़ोरी हो, जो कि गुनाह है। और जो सुलह किसी मस्लहत से हो वह जायज़ है।

5. और वे मग़लूब होंगे इसलिए कि तुम महबूब हो और वे नापसन्दीदा हैं।

6. यह तो हिम्मत व जुर्रत दिलाने से जिहाद की तरग़ीब थी, आगे दुनिया से बे-रग़बती पैदा करके **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 922 पर)**

48 सूरतुल्-फ़त्हि 111

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2555 अक्षर, 568 शब्द, 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना फ़-तह्ना ल-क फ़त्हम्-मुबीना **(1)** लि-यग़्फ़ि-र लकल्लाहु मा तक़द्द-म मिन् ज़म्बि-क व मा त-अख़्ख़-र व युतिम्-म निअ़्-म-तहू अ़लै-क व यह्दि-य-क सिरातम्- मुस्तक़ीमा **(2)** व यन्सु-रकल्लाहु नस्रन् अ़ज़ीज़ा **(3)** हुवल्लज़ी अन्ज़लस्सकि-न-त फ़ी क़ुलूबिल्-मुअ्मिनी-न लि-यज़्दादू ईमानम्-म-अ़ ईमानिहिम्, व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(4)** लियुद्ख़िलल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व युकफ़्फ़ि-र अ़न्हुम् सय्यिआ-तिहिम्, व का-न ज़ालि-क अ़िन्दल्लाहि फ़ौज़न् अ़ज़ीमा **(5)** व युअ़ज़्ज़िबल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्-मुश्रिकी-न वल्मुश्रिकातिज़्-ज़ान्नी-न बिल्लाहि ज़न्नस्सौइ, अ़लैहिम् दाइ-रतुस्-सौइ व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् व ल-अ़-नहुम् व अ-अ़द्-द लहुम् जहन्न-म, व साअत् मसीरा **(6)** व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा **(7)** इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा **(8)** लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तुअ़ज़्ज़िरूहु व तुवक़्क़िरूहु, व तुसब्बिहूहु बुक्र-तंव्-व असीला **(9)** इन्नल्लज़ी-न युबायिअ़ून-क इन्नमा युबायिअ़ूनल्ला-ह, यदुल्लाहि फ़ौ-क़ ऐदीहिम् फ़-मन्-न-क-स फ़-इन्नमा यन्कुसु अ़ला नफ़्सिही व मन् औफ़ा

حم ٢٦ ٨٦١ الفتح ٤٨

سورة الفتح مدنية ... بسم الله الرحمن الرحيم ... آياتها ٢٩ ركوعاتها ٤

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝١ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ
وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝٢ وَ
يَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ۝٣ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ
الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝٤ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝٥ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ
وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ
عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ
جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝٦ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ
اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝٧ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝٨
لِّتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَ
أَصِيلًا ۝٩ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ
أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا
عَاهَدَ عَلَيْهُ اللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝١٠ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ

منزل

48 सूरः फ़त्ह 111

सूरः फ़त्ह मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

[1]बेशक हमने आपको एक खुल्लम-खुल्ला फ़त्ह दी[2] **(1)** ताकि अल्लाह तआ़ला आपकी सब अगली पिछली ख़ताएँ माफ़ फ़रमा दे, और आप पर अपने एहसानों को पूरा कर दे, और आपको सीधे रास्ते पर ले चले।[3] **(2)** और अल्लाह आपको ऐसा ग़ल्बा दे जिसमें इज़्ज़त ही इज़्ज़त हो।[4] **(3)** वह ख़ुदा ऐसा है कि जिसने मुसलमानों के दिलों में बरदाश्त पैदा की है, ताकि उनके पहले ईमान के साथ उनका ईमान और ज़्यादा हो। और आसमान व ज़मीन का सब लश्कर अल्लाह ही का है, और अल्लाह तआ़ला (मस्लहतों का) बड़ा जानने वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। **(4)** ताकि अल्लाह तआ़ला मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों को ऐसी जन्नतों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें हमेशा को रहेंगे, और ताकि उनके गुनाह दूर कर दे, और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है। **(5)** और ताकि अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को अ़ज़ाब दे जो कि अल्लाह के साथ बुरे-बुरे गुमान रखते हैं। उनपर बुरा वक़्त पड़ने वाला है,[5] और (आख़िरत में) अल्लाह तआ़ला उनपर ग़ज़बनाक होगा और उनको रहमत से दूर कर देगा, और उनके लिए उसने दोज़ख़ तैयार कर रखी है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। **(6)** और आसमान व ज़मीन का सब लश्कर अल्लाह ही का है, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है।[6] **(7)** हमने आपको गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला करके भेजा है। **(8)** ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी क़द्र व इज़्ज़त करो[7] और सुबह व शाम उसकी तस्बीह में लगे रहो। **(9)** जो लोग आपसे बैअ़त कर रहे हैं, तो वे (हक़ीक़त में) अल्लाह तआ़ला से बैअ़त कर रहे हैं, ख़ुदा का हाथ उनके हाथों पर है।[8] फिर (बैअ़त के बाद) जो शख़्स अ़हद तोड़ेगा सो उसके अ़हद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा। और जो शख़्स उस बात को पूरा करेगा जिसपर (बैअ़त में) ख़ुदा से अ़हद किया है, सो जल्द ही ख़ुदा उसको बड़ा अज्र देगा। **(10)** ❖

(पृष्ठ 920 का शेष) जिहाद की तरग़ीब और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की तम्हीद है।

7. अगर इसमें जान-माल को फ़ायदा हासिल करने के लिए बचाना है तो वह फ़ायदा ही कितने दिन का है, और क्या उसका हासिल?

1. आप हुदैबिया से मदीना को वापस तशरीफ़ लाते थे कि रास्ते में यह सूरः नाज़िल हुई। पूरी की पूरी या अक्सर, इसमें इख़्तिलाफ़ है। और सारे वाक़िआ़त (जिनकी तरफ़ इस सूरः में इशारा है) ज़ीक़ादा सन् 6 हिजरी में पेश आए।

2. यानी सुलह हुदैबिया से यह फ़ायदा हुआ कि वह सबब बन गई एक ऐसी फ़त्ह की जिसकी ज़रूरत थी, यानी फ़त्हे मक्का की। पस यह सुलह ही फ़त्ह थी। और मक्का की फ़त्ह को खुली फ़त्ह इसलिए कहा गया कि फ़त्ह की ग़रज़ और मक़सद इस्लाम का ग़ल्बा होना है, लोगों के मुसलमान होने से या झुक जाने और फ़रमाँबरदारी इख़्तियार कर लेने से, और यही उसका वह असर है जिसकी तलब है, और मक्का के फ़त्ह होने से इस्लाम को इसलिए बहुत ज़्यादा ग़ल्बा हुआ कि अ़रब के तमाम क़बीले इस बात के मुन्तज़िर थे कि आप अपनी क़ौम पर ग़ालिब आ गए तो हम भी इताअ़त कर लेंगे। चुनाँचे जब मक्का फ़त्ह हुआ तो चारों तरफ़ से क़बीले उमड़ पड़े और ख़ुद या किसी वफ़्द के वास्ते से हाज़िर होकर इस्लाम लाना शुरू किया। पस चूँकि इस्लाम के ग़ल्बे के आसार इस फ़त्ह पर ज़्यादा नुमायाँ हुए इसलिए इसको खुली फ़त्ह क़रार दिया गया।

3. और पहले से भी सीधे रास्ते पर चलना यक़ीनी है, लेकिन उसमें काफ़िर लोग आड़े आते और टकराते थे।

4. यानी जिसके बाद फिर आपको कभी दबना ही न पड़े।

5. चुनाँचे मुश्रिकीन चन्द दिन बाद क़त्ल और क़ैद किए गए और मुनाफ़िक़ों की तमाम उम्र हसरत **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 924 पर)**

बिमा आ़-ह-द अ़लैहुल्ला-ह फ़-सयुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा (10) ❖

स-यक़ूलु ल-कल्-मुख़ल्लफ़ू-न मिनल्-अअ्राबि श-ग़लत्ना अम्वालुना व अह्लूना फ़स्तग़्फ़िर् लना यक़ूलू-न बि-अल्सि-नतिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम्, क़ुल् फ़-मंय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम् ज़र्रन् औ अरा-द बिकुम् नफ़्अ़न्, बल् कानल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीरा (11) बल् ज़नन्तुम् अल्लंय्यन्क़लिबर्-रसूलु वल्-मुअ्मिनू-न इला अह्लीहिम् अ-बदंव्-व ज़ुय्यि-न ज़ालि-क फ़ी क़ुलूबिकुम् व ज़नन्तुम् ज़न्नस्सौइ व कुन्तुम् क़ौमम्-बूरा (12) व मल्लम् युअ्मिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इन्ना अअ्तद्ना लिल्काफ़िरी-न सअ़ीरा (13) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (14) स-यक़ूलुल्- मुख़ल्लफ़ू-न इज़न्त-लक़्तुम् इला मग़ानि-म लितअ्ख़ुज़ूहा ज़रूना नत्तबिअ्कुम् युरीदू-न अंय्युबद्दिलू कलामल्लाहि, क़ुल्-लन् तत्तबिअ़ूना कज़ालिकुम् क़ालल्लाहु मिन् क़ब्लु फ़-स-यक़ूलू-न बल् तह्सुदू-नना बल् कानू ला यफ़्क़हू-न इल्ला क़लीला (15) क़ुल् लिल्-मुख़ल्लफ़ी-न मिनल्-अअ्राबि स-तुद्औ़-न इला क़ौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुक़ातिलूनहुम् औ युस्लिमू-न फ़-इन् तुतीअ़ू युअ्तिकुमुल्लाहु अज्रन् ह-सनन् व इन् त-तवल्लौ कमा तवल्लैतुम् मिन् क़ब्लु युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (16) लै-स अ़लल्-अअ्मा ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-अअ्रजि ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-मरीज़ि ह-रजुन्, व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू

حم ٢٦ — ٩٦٢ — الفتح ٤٨

مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ
بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۗ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ
اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ
وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ﴿١٢﴾ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿١٣﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٤﴾ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ
اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ
اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۗ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥﴾
قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ
شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا
حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ
حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

منزل

जो देहाती पीछे रह गए वे जल्द ही आपसे यह कहेंगे कि हमको हमारे माल और बाल-बच्चों ने फ़ुर्सत न लेने दी, सो हमारे लिए (इस कोताही की) माफ़ी की दुआ माँगिए। ये लोग अपनी ज़बान से वे बातें कहते हैं कि जो उनके दिल में नहीं हैं। आप कह दीजिए कि सो वह कौन है जो ख़ुदा के सामने तुम्हारे लिए किसी चीज़ का (कुछ भी) इख़्तियार रखता हो? अगर अल्लाह तआला तुमको कोई नुक़सान या कोई नफ़ा पहुँचाना चाहे,[1] बल्कि अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल पर बाख़बर है। **(11)** बल्कि तुमने यूँ समझा कि रसूल और (उनके साथी) मोमिनीन अपने घर वालों में कभी लौटकर न आएँगे। और यह बात तुम्हारे दिलों में अच्छी भी मालूम हुई थी और तुमने बुरे-बुरे गुमान किए, और तुम बरबाद होने वाले लोग हो गए। **(12)** और जो शख़्स अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान न लाएगा सो हमने काफ़िरों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रखी है। **(13)** और तमाम आसमान व ज़मीन की हुकूमत अल्लाह ही की है, वह जिसको चाहे बख़्श दे और जिसको चाहे सज़ा दे,[2] और अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।[3] **(14)** जो लोग पीछे रह गए थे वे जल्दी ही जब तुम (ख़ैबर की) ग़नीमतें "यानी जंग में फ़त्ह के बाद हासिल होने वाले माल" लेने चलोगे तो कहेंगे कि हमको भी इजाज़त दो कि हम तुम्हारे साथ चलें। वे लोग यूँ चाहते हैं कि ख़ुदा के हुक्म को बदल डालें।[4] आप कह दीजिए कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते, ख़ुदा तआला ने पहले से यूँ ही फ़रमा दिया है।[5] तो वे लोग कहेंगे कि बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो, बल्कि ख़ुद ये लोग बहुत कम बात समझते हैं। **(15)** आप उन पीछे रहने वाले देहातियों से (यह भी) कह दीजिए कि जल्द ही तुम लोग ऐसे लोगों (से लड़ने) की तरफ़ बुलाए जाओगे जो बहुत सख़्त लड़ने वाले होंगे, कि या तो उनसे लड़ते रहो या वे (इस्लाम के) फ़रमाँबरदार हो जाएँ। सो अगर तुम इताअत करोगे तो तुमको अल्लाह तआला नेक बदला (यानी जन्नत) देगा, और अगर तुम (उस वक़्त भी) मुँह मोड़ोगे जैसा कि इससे पहले मुँह मोड़ चुके हो तो वह दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा। **(16)** न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है, और जो शख़्स अल्लाह व रसूल का कहना मानेगा उसको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो शख़्स (हुक्म से) मुँह मोड़ेगा उसको दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा। ● **(17)** ❖

(पृष्ठ 922 का शेष) और परेशानी में कटी कि इस्लाम बढ़ता जाता था और वे घुटते जाते थे।

6. यानी पूरी क़ुदरत वाला है अगर चाहता किसी लश्कर से उन सबकी एक दम से सफ़ाई कर देता कि ये उसके हक़दार हैं, लेकिन चूँकि वह हिक्मत वाला है इसलिए मस्लहत से सज़ा में देरी फ़रमाता है।

7. अक़ीदे के तौर पर भी कि अल्लाह तआला को तमाम कमालात वाला और तमाम कमियों से पाक समझो, और अमल के एतिबार से भी फ़रमाँबरदारी करो।

8. "अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है" से यह न समझा जाए कि बैअत के वक़्त हाथ में हाथ लेना ज़रूरी है, या यह कि शैख़ यानी बैअत लेने वाले का हाथ ऊपर ही होना ज़रूरी है। असल यह बयान करना है कि बैअत से इताअत व फ़रमाँबरदारी मक़सद है। और "अल्लाह के हाथ" में, इसके असल मायने अल्लाह ही को मालूम हैं इसमें ज़्यादा खोजबीन नहीं करनी चाहिए।

1. ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं। पस साबित हुआ कि हक़ीक़त में कोई उज़्र तक़दीर को टालने वाला नहीं। मगर जहाँ शरीअत ने मस्लहत समझा बहुत-से मौक़ों पर हक़ीक़ी उज़्र को रुख़्सत और छूट का मदार क़रार भी दे दिया।

2. चुनाँचे मोमिन के लिए मग़फ़िरत और काफ़िर के लिए अज़ाब चाहा और इसी तरह मुक़र्रर कर दिया।

3. यानी काफ़िर अगरचे सज़ा का हक़दार होता है लेकिन अल्लाह तआला ऐसा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है कि वह अगर ईमान ले आए तो उसको भी बख़्श देता है।

4. यानी ये लोग चाहते हैं कि ख़ुदा के हुक्म को बदल डालें, जो कि इस वाक़िए के मुताल्लिक़ हुआ है कि सिवाय हुदैबिया वालों के 'ख़ैबर' और कोई न जाए, ख़ासकर पीछे रह जाने वाले। यानी मुसलमानों से इसकी दरख़्वास्त करना **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 926 पर)**

युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मंय्य-तवल्-ल युअ़ज़्ज़िब्हु अ़ज़ाबन् अलीमा ● (17) ❖

ल-क़द् रज़ियल्लाहु अ़निल्-मुअ्मिनी-न इज़् युबायिअ़ून-क तह्तश्श-ज-रति फ़-अ़लि-म मा फ़ी क़ुलूबिहिम् फ़-अन्ज़-लस्सकी-न-त अ़लैहिम् व असाबहुम् फ़त्हन् क़रीबा (18) व मग़ानि-म कसी-रतंय्-यअ्ख़ुज़ूनहा, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (19) व-अ़-दकुमुल्लाहु मग़ानि-म कसी-रतन् तअ्ख़ुज़ूनहा फ़-अ़ज्ज-ल लकुम् हाज़िही व कफ़्-फ़ ऐदि-यन्नासि अ़न्कुम् व लितकू-न आ-यतल्-लिल्मुअ्मिनी-न व यह्दि-यकुम् सिरातम्- मुस्तक़ीमा (20) व उख़्रा लम् तक़्दिरू अ़लैहा क़द् अहातल्लाहु बिहा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा (21) व लौ क़ात-लकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-वल्लवुल् -अद्बा-र सुम्-म ला यजिदू-न वलिय्यंव् व ला नसीरा (22) सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला (23) व हुवल्लज़ी कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम् अ़न्कुम् व ऐदि-यकुम् अ़न्हुम् बि-बत्नि मक्क-त मिम्-बअ्दि अन् अज़्-फ़-रकुम् अ़लैहिम्, व कानल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीरा (24) हुमुल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दूकुम् अ़निल्-मस्जिदिल्-हरामि वल्हद्-य मअ्कूफ़न् अंय्यब्लु-ग़ महिल्-लहू, व लौ ला रिजालुम्-मुअ्मिनू-न व निसाउम् मुअ्मिनातुल्-लम् तअ़्लमूहुम् अन् त-तऊहुम् फ़तुसी-बकुम् मिन्हुम् म-अ़र्रतुम्-बिग़ैरि अ़िल्मिन् लियुद्ख़िलल्लाहु फ़ी रह्मतिही मंय्यशा-उ लौ तज़य्यलू ल-अ़ज़्ज़ब्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (25)

الْاَنْهٰرُ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ
الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ
فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً
يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً
تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ
اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا
عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝
وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ
لَا نَصِيْرًا ۝ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ
اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ
بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۗ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ
وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ
مَّعَرَّةٌ ۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا
لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

तहक़ीक़ी बात है कि अल्लाह तआ़ला उन मुसलमानों से खुश हुआ जबकि ये लोग आपसे (बबूल के) पेड़ के नीचे बैअ़त कर रहे थे और उनके दिलों में जो कुछ था अल्लाह तआ़ला को वह भी मालूम था। पस अल्लाह तआ़ला ने उनमें इत्मीनान पैदा कर दिया[1] और उनको लगे हाथ एक फ़त्ह दे दी।[2] **(18)** और (उस फ़त्ह में) बहुत-सी ग़नीमतें भी (दीं) जिनको ये लोग ले रहे हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़ा ज़बरदस्त, बड़ा हिक्मत वाला है। **(19)** अल्लाह तआ़ला ने तुमसे (और भी) बहुत-सी ग़नीमतों का वायदा कर रखा है जिनको तुम लोगे। सो फ़िलहाल तुमको यह दे दी है और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए,[3] और ताकि यह (वाक़िआ़) ईमान वालों के लिए एक नमूना हो जाए, और ताकि तुमको एक सीधी सड़क पर डाल दे।[4] **(20)** और एक फ़त्ह और भी है जो तुम्हारे क़ाबू में नहीं आई।[5] खुदा तआ़ला उसको घेरे में लिए हुए है, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है। **(21)** और अगर तुमसे ये काफ़िर लड़ते तो ज़रूर पीठ फेरकर भागते, फिर न उनको कोई यार मिलता और न मददगार। **(22)** अल्लाह तआ़ला ने (काफ़िरों के लिए) यही दस्तूर कर रखा है जा पहले से चला आता है, और आप खुदा के दस्तूर में रद्दोबदल न पाएँगे। **(23)** और वह ऐसा है कि उसने उनके हाथ तुमसे (यानी तुमको क़त्ल करने से) और तुम्हारे हाथ उन (के क़त्ल) से ऐन मक्का (के निकट) में रोक दिए, इसके बाद कि तुमको उनपर क़ाबू दे दिया था, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को देख रहा था।[6] **(24)** ये वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुमको मस्जिदे हराम से रोका, और (यह कि) क़ुरबानी के जानवर को, जो रुका हुआ रह गया उसके मौक़े में पहुँचने से रोका। और अगर (मक्का में उस वक़्त) बहुत-से मुसलमान मर्द और बहुत-सी मुसलमान औ़रतें न होतीं जिनकी तुमको ख़बर भी न थी, यानी उनके पिस जाने का अन्देशा न होता, जिसपर उनकी वजह से तुमको भी बेख़बरी से नुक़सान पहुँचता, तो सब क़िस्सा तय कर दिया जाता। लेकिन ऐसा इसलिए नहीं किया गया ताकि अल्लाह अपनी रहमत में जिसको चाहे दाख़िल कर दे।[7] अगर यह टल गए होते तो उनमें जो काफ़िर थे हम उनको दर्दनाक सज़ा देते। **(25)** जबकि

(पृष्ठ 924 का शेष) गोया कि यह दरख़्वास्त करना है कि मुसलमान खुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ करें, जो उनके लिए शरई तौर पर मना है। और इस मायने में बदलाव करने वाले मुसलमान होंगे। लेकिन चूँकि वे लोग इस दरख़्वास्त की वजह से इस बदलाव करने का सबब हैं, इसलिए उनकी तरफ़ इसकी निस्बत की गई, और ज़िक्र हुए मायने में तब्दीली के वाक़ेअ़ होने से अल्लाह के अफ़आ़ल (यानी कामों) और सिफ़्तों में कोई नुक़्स नहीं आता, क्योंकि वह हुक्म क़ानून बयान करने के तौर पर था, लेकिन मोमिनों का गुनाहगार होना लाज़िम आता है। मतलब का हासिल यह हुआ कि वे इसकी दरख़्वास्त करते हैं कि तुम गुनाह के करने वाले हो जाओ।

5. पहले से इसलिए कहा कि हुदैबिया से वापसी पर यह हुक्म हो गया था।

1. जिससे उनको खुदा का हुक्म मानने में ज़रा भी संकोच नहीं हुआ।

2. इससे ख़ैबर की फ़त्ह मुराद है।

3. यानी सबके दिल में रौब पैदा कर दिया कि उनको ज़्यादा हाथ डालने की हिम्मत न हुई। और इससे तुम्हारा दुनियावी नफ़ा भी मक़सूद था, ताकि आराम हो।

4. मुराद इस सड़क से अल्लाह पर भरोसा और एतिमाद है, यानी हमेशा के लिए उसको सोचकर अल्लाह पर एतिमाद से काम लिया करो।

5. इससे मक्का का फ़त्ह होना मुराद है।

6. हुदैबिया में सुलह से पहले एक वाक़िआ़ यह हुआ कि एक जमाअ़त हथियार से लैस मक्का वालों में से यहाँ खुफ़िया तौर पर इस इरादे से आई कि मौक़ा पाकर नऊज़ु बिल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का काम तमाम कर दें। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने उनको देख लिया और पकड़ लिया, मगर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको छोड़ दिया, यहाँ उस वाक़िए की तरफ़ इशारा है।

7. चुनाँचे उन मुसलमानों की जान बची और तुम्हारा दीन बचा।

इज़् ज-अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-हमिय्य-त हमिय्यतल्-जाहिलिय्यति फ़-अन्ज़लल्लाहु सकी-न-तहू अ़ला रसूलिही व अ़लल्-मुअ्मिनी-न व अल्ज़-महुम् कलि-मतत्-तक़्वा व कानू अ-हक़्-क़ बिहा व अह्लहा, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा (26) ❖

ल-क़द् स-दक़ल्लाहु रसूलहुर्रुअ्या बिल्हक़्क़ि ल-तद्ख़ुलुन्नल्-मस्जिदल्-हरा-म इन् शा-अल्लाहु आमिनी-न मुहल्लिक़ी-न रुऊ-सकुम् व मुक़स्सिरी-न ला तख़ाफ़ू-न, फ़-अ़लि-म मा लम् तअ़्लमू फ़-ज-अ़-ल मिन् दूनि ज़ालि-क फ़त्हन् क़रीबा (27) हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही, व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (28) मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाहि, वल्लज़ी-न म-अ़हू अशिद्दा-उ अ़लल्-कुफ़्फ़ारि रु-हमा-उ बैनहुम् तराहुम् रुक्क-अ़न् सुज्ज-दंय्यब्तग़ू-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानन् सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम्-मिन् अ-सरिस्सुजूदि, ज़ालि-क म-सलुहुम् फ़ित्तौराति व म-सलुहुम् फ़िल्-इन्जीलि, क-ज़र्ड़िन् अख़्र-ज शत्-अहू फ़आ-ज़-रहू फ़स्तग़्-ल-ज़ फ़स्तवा अ़ला सूक़िही युअ़्जिबुज़्ज़ुर्रा-अ़ लि-यग़ी-ज़ बिहिमुल्-कुफ़्फ़ा-र, व-अ़द--ल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन्हुम् मग़्फ़ि-रतंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा (29) ❖

فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْۤا اَحَقَّ
بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ۠ لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ
رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ
تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ هُوَ الَّذِىْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ
بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ
تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ
فِىْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِى التَّوْرٰىةِ ۛۚ وَمَثَلُهُمْ
فِى الْاِنْجِيْلِ ۛ۫ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى
عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝
سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِىَ ثَمَانِ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا

49 सूरतुल्-हुजुराति 106

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1573 अक्षर, 350 शब्द, 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुक़द्दिमू बै-न य-दयिल्लाहि व रसूलिही वत्तक़ुल्ला-ह,

उन काफ़िरों ने अपने दिलों में शर्म "और ग़ैरत" को जगह दी, और शर्म की जाहिलियत की।[1] सो अल्लाह तआला ने अपने रसूल और मोमिनों को अपनी तरफ़ से तहम्मुल "संयम" अ़ता किया[2] और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक़्वे की बात पर जमाए रखा[3] और वे उसके ज़्यादा हक़दार और उसके अहल हैं, और अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानता है। **(26)** ❖

बेशक अल्लाह तआला ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखलाया जो हक़ीक़त के मुताबिक़ है कि तुम लोग मस्जिदे हराम (यानी मक्का) में इन्शा-अल्लाह ज़रूर जाओगे, अमन व शांति के साथ, कि तुममें कोई सर मुँडाता होगा और कोई बाल कतरवाता होगा, तुमको किसी तरह का अन्देशा न होगा। सो अल्लाह तआला को वे बातें मालूम हैं जो तुमको मालूम नहीं, फिर उससे पहले एक फ़त्ह दे दी।[4] **(27)** वह (अल्लाह) ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत दी और सच्चा दीन (यानी इस्लाम) देकर (दुनिया में) भेजा है, ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब करे[5] और अल्लाह काफ़ी गवाह है। **(28)** मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग आपकी सोहबत पाए हुए हैं वे काफ़िरों के मुक़ाबले में तेज़ हैं और आपस में मेहरबान हैं। ऐ मुख़ातब! तू उनको देखेगा कि कभी रुकूअ़ कर रहे हैं, कभी सज्दा कर रहे हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल और रज़ामन्दी की तलाश में लगे हैं, उनके आसार सज्दे की तासीर की वजह से उनके चेहरों पर नुमायाँ हैं। ये उनकी सिफ़तें तौरात में हैं और इन्जील में उनका यह वस्फ़ है कि जैसे खेती कि उसने अपनी सूई निकाली, फिर उसने उसको मज़बूत किया, फिर वह और मोटी हुई, फिर अपने तने पर सीधे खड़ी हो गई, कि किसानों को भली मालूम होने लगी, ताकि उनसे काफ़िरों को जलाए। अल्लाह तआला ने उन हज़रात से जो कि ईमान लाए हैं और नेक काम कर रहे हैं, मग़्फ़िरत और बड़े अज्र का वायदा कर रखा है। **(29)** ❖

49 सूरः हुजुरात 106

सूरः हुजुरात मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

[6]ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल (की इजाज़त) से पहले तुम आगे मत बढ़ा करो[7] और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला (तुम्हारी सब बातों को) सुनने वाला, और (तुम्हारे सब कामों को) जानने वाला है। **(1)** ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँची मत किया करो। और न उनसे

---

1. इस शर्म से मुराद वह ज़िद है जो बिस्मिल्लाह और रसूलुल्लाह के लफ़्ज़ लिखने में उन्होंने मुसलमानों से की थी, इसलिए इसको जाहिलियत की क़ैद के साथ बयान फ़रमाया, वरना मुतलक़ ग़ैरत व शर्म बुरी चीज़ नहीं।
2. जिससे अपने ऊपर संयम करके लिखने पर इसरार नहीं किया, यहाँ तक कि सुलह हो गई और कुफ़्फ़ार किताल से बच गए।
3. तक़्वे की बात से कलिमा-ए-तय्यिबा यानी तौहीद और रिसालत का इक़रार मुराद है, इसकी बदौलत कुफ़्र व शिर्क से बचाव हो जाता है, और यह कि वह चाहता है तक़्वा व इताअ़त के वाजिब करने को। और उसपर जमाए रखने का मतलब यह है कि तौहीद और रिसालत के एतिक़ाद का तक़ाज़ा अल्लाह व रसूल की इताअ़त हैं। और मुसलमानों का यह बर्दाश्त करना सिर्फ़ इस वजह से था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तहम्मुल और संयम का हुक्म फ़रमाया था। पस यह इताअ़त कलिमा-ए-तक़्वा पर जमना है।
4. ख़ैबर की फ़त्ह मुराद है।
5. हुज्जत और दलील के एतिबार से तो हमेशा, और मुसलमानों की हुकूमत और शान व शौकत के एतिबार से दीनदारों के सुधार की शर्त के साथ। और चूँकि यह शर्त सहाबा में पाई जाती थी इसलिए यह आयत रिसालत के सुबूत के साथ-साथ सहाबा के लिए आ़म फ़ुतूहात होने की ख़ुशख़बरी भी हो गई, चुनाँचे ऐसा ही ज़ाहिर हुआ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 932 पर)

इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम (1) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तर्फ़अू अस्वातकुम् फ़ौ-क़ सौतिन्-नबिय्यि व ला तज्हरू लहू बिल्क़ौलि क-जह्रि बअ्ज़िकुम् लि-बअ्ज़िन् अन् तह्ब-त अअ्मालुकुम् व अन्तुम् ला तश्अुरून (2) इन्नल्लज़ी-न यग़ुज़्ज़ू-न अस्वातहुम् अिन्-द रसूलिल्लाहि उलाइ-कल्लज़ीनम्-त-हनल्लाहु क़ुलू-बहुम् लित्तक़्वा, लहुम्-मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् अज़ीम (3) इन्नल्लज़ी-न युनादून-क मिंव्वरा-इल्-हुजुराति अक्सरुहुम् ला यअ्क़िलून (4) व लौ अन्नहुम् स-बरू हत्ता तख़्रु-ज इलैहिम् लका-न ख़ैरल्-लहुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (5) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् जा-अकुम् फ़ासिक़ुम् बि-न-बइन् फ़-तबय्यनू अन् तुसीबू क़ौमम्-बि-जहालतिन् फ़तुस्बिहू अला मा फ़-अल्तुम् नादिमीन (6) वअ्लमू अन्-न फ़ीकुम् रसूलल्लाहि, लौ युतीअुकुम् फ़ी कसीरिम् मिनल्-अम्रि ल-अनित्तुम् व लाकिन्नल्ला-ह हब्ब-ब इलैकुमुल्-ईमा-न व ज़य्य-नहू फ़ी क़ुलूबिकुम् व कर्र-ह इलैकुमुल्-कुफ़्-र वल्फ़ुसू-क़ वल्-अिस्या-न, उलाइ-क हुमुर्-राशिदून (7) फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व निअ्-मतन्, वल्लाहु अलीमुन् हकीम (8) व इन् ताइ-फ़तानि मिनल्-मुअ्मिनीनक़्त-तलू फ़-अस्लिहू बैनहुमा फ़-इम् ब-ग़त् इह्दाहुमा अलल्-उख़्रा फ़क़ातिलुल्लती तब्ग़ी हत्ता तफ़ी-अ इला अम्रिल्लाहि फ़-इन् फ़ाअत् फ़-अस्लिहू बैनहुमा बिल्अद्लि व अक़्सितू, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन (9) इन्नमल्-मुअ्मिनू-न इख़्वतुन् फ़-अस्लिहू बै-न अ-ख़वैकुम् वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम्

اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۱ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ
فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ
اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ
اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ
لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝۳ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ
وَّرَاۗءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۴ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى
تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنْ جَاۗءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ
فَتُصْبِحُوْا عَلٰي مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝۶ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ
اللّٰهِ ۭ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ
الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَ
الْعِصْيَانَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝۷ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۭ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۸ وَاِنْ طَاۗىِٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا
فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَي الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ
تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْۗءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَاۗءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا
بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝۹ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ

ऐसे खुलकर बोला करो जैसे तुम आपस में एक-दूसरे से खुलकर बोला करते हो,[1] कहीं तुम्हारे आमाल बरबाद हो जाएँ और तुमको ख़बर भी न हो। (2) बेशक जो लोग अपनी आवाज़ों को रसूलुल्लाह के सामने पस्त रखते हैं, ये लोग वे हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआला ने तक़्वे के लिए ख़ास कर दिया है,[2] उन लोगों के लिए मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र है।[3] (3) जो लोग हुजरों के बाहर से आपको पुकारते हैं, उनमें अक्सरों को अ़क़्ल नहीं है। (4) और अगर ये लोग (ज़रा) सब्र (और इन्तिज़ार) करते, यहाँ तक कि आप ख़ुद बाहर उनके पास आ जाते तो यह उन लोगों के लिए बेहतर होता, (क्योंकि यह अदब की बात थी)। और अल्लाह तआ़ला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (5) ऐ ईमान वालो! अगर कोई शरीर आदमी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो, कभी किसी क़ौम को नादानी से कोई नुक़सान पहुँचा दो, फिर अपने किए पर पछताना पड़े।[4] (6) और जान लो कि तुममें अल्लाह के रसूल हैं। बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं कि अगर वह उसमें तुम्हारा कहना माना करें तो तुमको बड़ा नुक़सान पहुँचे। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने तुमको ईमान की मुहब्बत दी, और उसको तुम्हारे दिलों में पसन्दीदा कर दिया, और कुफ़्र और फ़िस्क़ और नाफ़रमानी से तुमको नफ़रत दी, ऐसे लोग सही रास्ते पर हैं (7) अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और इनाम "की वजह" से। और अल्लाह तआ़ला जानने वाला और हिक्मत वाला है। (8) और अगर मुसलमानों में दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके दरमियान इस्लाह कर दो। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है, यहाँ तक कि वह ख़ुदा के हुक्म की तरफ़ रुजू हो जाए। फिर अगर रुजू हो जाए तो उन दोनों के दरमियान इन्साफ़ के साथ इस्लाह कर दो, और इन्साफ़ का ख़्याल रखो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ वालों को पसन्द करता है। (9) मुसलमान तो सब भाई हैं। सो अपने दो भाइयों के

(पृष्ठ 930 का शेष) 6. इस सूरः के हिस्सों के मजमूए का हासिल हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और दीनी भाइयों के हुक़ूक़ का बयान है। इन आयतों के नाज़िल होने का वाक़िआ़ यह है कि एक बार बनू तमीम के कुछ लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा में आपस में आपकी मज्लिस में इस मामले में गुफ़्तगू हो गई कि उन लोगों पर हाकिम किसको बनाया जाए। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कअ़क़ा बिन माबद के बारे में राय दी, और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अक़रा बिन हाबिस के बारे में राय दी, और गुफ़्तगू बढ़कर दोनों की आवाज़ें बुलन्द हो गईं, इसपर यह हुक्म नाज़िल हुआ।

7. यानी जब तक मज़बूत इशारात या स्पष्ट तौर पर गुफ़्तगू की इजाज़त न हो, उस वक़्त तक गुफ़्तगू मत किया करो।

1. यानी न बुलन्द आवाज़ से बोलो जबकि आपके सामने बात करना हो, अगरचे आपस में ही गुफ़्तगू हो, और न बराबर की आवाज़ से बोलो जबकि ख़ुद आपसे गुफ़्तगू करो।

2. मतलब यह कि कामिल मुत्तक़ी हैं।

3. अगली आयतों का वाक़िआ़ यह है कि वही बनू तमीम जब आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए आए तो उस वक़्त आप अपने दौलत ख़ाना (यानी घर) में तशरीफ़ रखते थे। उन्होंने तमीज़ व तहज़ीब न होने की वजह से बाहर से आपको नाम ले-लेकर पुकारना शुरू किया। इसपर ये आयतें नाज़िल हुईं।

4. इसके नाज़िल होने का वाक़िआ़ इस तरह हुआ (और फिर हुक्म आ़म है) कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वलीद बिन उक़्बा को बनी मुस्तलक़ के क़बीले से ज़कात वसूल करने के लिए भेजा, और एक रिवायत में बनी वकीआ़ आया है। वलीद में और उनमें जाहिलियत के ज़माने में कुछ दुश्मनी थी। वलीद को वहाँ जाते हुए कुछ अन्देशा हुआ, उन लोगों ने सुनकर स्वागत किया, वलीद को यह ख़्याल हुआ कि ये लोग क़त्ल करने के इरादे से आए हैं। वापस आकर अपने ख़्याल के मुवाफ़िक़ कह दिया कि वे तो इस्लाम के मुख़ालिफ़ हो गए। आपने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु को सही हालात की तहक़ीक़ के लिए भेजा और फ़रमा दिया कि ख़ूब तहक़ीक़ करना और जल्दी मत करना। चुनाँचे उन्होंने वहाँ फ़रमाँबरदारी और भलाई के सिवा कुछ न देखा। आकर आपको इत्मीनान दिला दिया, उसपर यह हुक्म नाज़िल हुआ।

फ़ायदाः इससे एक शरई हुक्म साबित हो गया कि बग़ैर तहक़ीक़ के ऐसी ख़बर पर अ़मल न करना चाहिए।

तुर्हमून ▲ (10) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला यस्ख़र् क़ौमुम्-मिन् क़ौमिन् असा अंय्यकूनू ख़ैरम्-मिन्हुम् व ला निसा-उम् मिन्-निसाइन् असा अंय्यकुन्-न ख़ैरम्-मिन्हुन्-न व ला तल्मिज़ू अन्फ़ु-सकुम् व ला तनाबज़ू बिल्-अल्क़ाबि, बिअ्-स लिस्मुल्-फ़ुसूक़ु बअ्दल्-ईमानि व मल्-लम् यतुब् फ़-उलाइ-क हुमुज़्-ज़ालिमून (11) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज्तनिबू कसीरम् मिनज़्ज़न्नि इन्-न बअ्ज़ज़्ज़न्नि इस्मुंव्-व ला तजस्स-सू व ला यग़्तब् बअ्ज़ुकुम् बअ्ज़न्, अ-युहिब्बु अ-हदुकुम् अंय्यअ्कु-ल लह्-म अख़ीहि मैतन् फ़-करिह्तुमूहु, वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह तव्वाबुर्रहीम (12) या अय्युहन्नासु इन्ना ख़लक़्नाकुम् मिन् ज़-करिंव्-व उन्सा व ज-अल्नाकुम् शुअूबंव्-व क़बाइ-ल लि-तआ-रफ़ू, इन्-न अक्र-मकुम् अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम्, इन्नल्ला-ह अलीमुन् ख़बीर (13) क़ालतिल्-अअ्राबु आमन्ना, क़ुल्-लम् तुअ्मिनू व लाकिन् क़ूलू अस्लम्ना व लम्मा यद्ख़ुलिल्-ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम्, व इन् तुतीअुल्ला-ह व रसूलहू ला यलित्कुम् मिन् अअ्मालिकुम् शैअन्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (14) इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही सुम्-म लम् यर्ताबू व जा-हदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि, उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून (15) क़ुल् अ-तुअल्लिमूनल्ला-ह बिदीनिकुम्, वल्लाहु यअ्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, वल्लाहु

الحجرات ٤٩ — حٰمٓ ٢٦

إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٠﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا
مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا
تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ
بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ
وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن
يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ
شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾ قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا ۖ قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا وَلَٰكِن
قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوا
اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا
وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ ﴿١٥﴾ قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ

منزل

दरमियान इस्लाह कर दिया करो, और अल्लाह से डरते रहा करो ताकि तुमपर रहमत की जाए। ▲ (10) ◆

ऐ ईमान वालो! न तो मर्दों को मर्दों पर हँसना चाहिए[1] क्या अ़जब है कि (जिनपर हँसते हैं) वे उन (हँसने वालों) से (ख़ुदा के नज़दीक) बेहतर हों। और न औ़रतों को औ़रतों पर हँसना चाहिए, क्या अ़जब है कि वे उनसे बेहतर हों। और न एक-दूसरे को ताना दो, और न एक-दूसरे को बुरे लक़ब से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना (ही) बुरा है। और जो लोग (इन हरकतों से) बाज़ न आएँगे तो वे ज़ुल्म करने वाले हैं। **(11)** ऐ ईमान वालो! बहुत-से गुमानों से बचा करो, क्योंकि बाज़े गुमान गुनाह होते हैं। और सुराग़ मत लगाया करो। और कोई किसी की ग़ीबत भी न किया करे।[2] क्या तुममें से कोई इस बात को पसन्द करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? इसको तो तुम नागवार समझते हो। और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला, मेहरबान है। **(12)** ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया है, और तुमको मुख़्तलिफ़ क़ौमें और मुख़्तलिफ़ ख़ानदान बनाया ताकि एक-दूसरे को पहचान सको।[3] अल्लाह के नज़दीक तुम सबमें बड़ा शरीफ़ वही है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो। अल्लाह ख़ूब जानने वाला, पूरा ख़बर रखने वाला है। **(13)** ये गँवार कहते हैं कि हम ईमान ले आए। आप फ़रमा दीजिए कि तुम ईमान तो नहीं लाए लेकिन यूँ कहो कि हम (मुख़ालफ़त छोड़कर) फ़रमाँबरदार हो गए, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ।[4] और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल का कहना मान लो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल में से ज़रा भी कमी न करेगा। बेशक अल्लाह मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। **(14)** पूरे मोमिन वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर शक नहीं किया और अपने माल और जान से ख़ुदा के रास्ते में जिहाद किया, ये लोग हैं सच्चे। **(15)** आप

---

1. 'हँसी उड़ाना' वह हँसी है जिससे दूसरे का अपमान हो और दिल को तकलीफ़ पहुँचे, और जिससे दूसरे का दिल ख़ुश हो वह मिज़ाह कहलाता है, और वह जायज़ है।

2. ग़ीबत यह है कि किसी की पीठ-पीछे उसकी ऐसी बुराई करना कि उसके सामने की जाए तो उसको तकलीफ़ हो। अगरचे वह सच्ची बात हो, वरना बोहतान है। और पीठ-पीछे की क़ैद से यह न समझा जाए कि सामने जायज़ है, क्योंकि वह ताना देने में दाख़िल है जिसकी मनाही ऊपर आई है।

फ़ायदाः तहक़ीक़ी बात यह है कि ग़ीबत गुनाहे कबीरा (यानी बड़ा गुनाह) है। लेकिन जिससे बहुत कम तकलीफ़ हो वह सग़ीरा (यानी छोटा) हो सकता है।

फ़ायदाः बिना सख़्त मजबूरी के ग़ीबत सुनना ग़ीबत करने ही की तरह मना है।

3. शु-अ़ब् ख़ानदान की जड़ को कहते हैं, क़बीला उसकी शाख़ को। जैसे सय्यिद एक शु-अ़ब् है और हसनी और हुसैनी क़बीले हैं। इसी तरीक़े पर और को सोच लिया जाए।

4. यहाँ इस्लाम से मुराद इस्लाम के लुग़वी मायने हैं, शरई इस्लाम नहीं। पस इस आयत से ईमान व इस्लाम के एक-दूसरे से अलग होने पर दलील पकड़ना सही नहीं है।

बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(16)** यमुन्नू-न अ़लै-क अन् अस्लमू, क़ुल्-ला तमुन्नू अ़लय्-य इस्लामकुम् बलिल्लाहु यमुन्नु अ़लैकुम् अन् हदाकुम् लिल्ईमानि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(17)** इन्नल्ला-ह यअ़्लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु बसीरुम्-बिमा तअ़्मलून **(18)** ❖

50 सूरतु क़ाफ़ 34

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1525 अक्षर, 376 शब्द, 45 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ाफ़्। वल्-क़ुर्आनिल्-मजीद **(1)** बल् अ़जिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् फ़क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा शैउन् अ़जीब **(2)** अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबन् ज़ालि-क रज्अुम्-बअ़ीद **(3)** क़द् अ़लिम्ना मा तन्कुसुल्-अर्ज़ु मिन्हुम् व अ़िन्दना किताबुन् हफ़ीज़ **(4)** बल् कज़्ज़बू बिल्-हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़हुम् फ़ी अम्रिम्-मरीज **(5)** अ-फ़ लम् यन्ज़ुरू इलस्समा-इ फ़ौक़हुम् कै-फ़ बनैनाहा व ज़य्यन्नाहा व मा लहा मिन् फ़ुरूज **(6)** वल्अर्-ज़ मदद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज **(7)** तब्सि-रतंव्-व ज़िक्रा लिकुल्लि अ़ब्दिम्-मुनीब **(8)** व नज़्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् मुबा-रकन् फ़-अम्बत्ना बिही जन्नातिंव्-व हब्बल्-हसीद **(9)** वन्नख़्-ल बासिक़ातिल्-लहा तल्अुन्-नज़ीद **(10)** रिज़्क़ल्-लिल्अ़िबादि व अह्यैना बिही बल्द-तम्-मैतन्, कज़ालिकल्-ख़ुरूज **(11)** कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व अस्हाबुर्रस्सि व समूद **(12)** व आ़दुंव्-व फ़िर्औ़नु

وما في الأرض والله بكل شيء عليم ۝ يمنون عليك أن
أسلموا قل لا تمنوا علي إسلامكم بل الله يمن عليكم أن
هداكم للإيمان إن كنتم صادقين ۝ إن الله يعلم غيب
السماوات والأرض والله بصير بما تعملون ۝
سورة ق مكية وهي خمس وأربعون آية وثلاث ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
ق والقرآن المجيد ۝ بل عجبوا أن جاءهم منذر منهم
فقال الكافرون هذا شيء عجيب ۝ أإذا متنا وكنا ترابا
ذلك رجع بعيد ۝ قد علمنا ما تنقص الأرض منهم و
عندنا كتاب حفيظ ۝ بل كذبوا بالحق لما جاءهم فهم
في أمر مريج ۝ أفلم ينظروا إلى السماء فوقهم كيف بنيناها و
زيناها وما لها من فروج ۝ والأرض مددناها وألقينا فيها
رواسي وأنبتنا فيها من كل زوج بهيج ۝ تبصرة وذكرى
لكل عبد منيب ۝ ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به
جنات وحب الحصيد ۝ والنخل باسقات لها طلع نضيد ۝ رزقا
للعباد وأحيينا به بلدة ميتا كذلك الخروج ۝ كذبت قبلهم

फ़रमा दीजिए कि क्या ख़ुदा तआला को अपने दीन की ख़बर देते हो[1] हालाँकि अल्लाह को तो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों की ख़बर है, और अल्लाह सब चीज़ों को जानता है।[2] (16) ये लोग अपने इस्लाम लाने का आप पर एहसान रखते हैं, आप कह दीजिए कि मुझपर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुमपर एहसान रखता है कि उसने तुमको ईमान की हिदायत दी, बशर्ते कि तुम सच्चे हो।[3] (17) बेशक अल्लाह तआला आसमान और ज़मीन की छुपी बातों को जानता है, और तुम्हारे सब आमाल को भी जानता है। (18) ◆

50 सूरः क़ाफ़ 34

सूरः क़ाफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 45 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़ाफ़। क़सम है क़ुरआन मजीद की। (1) बल्कि उनको इस बात पर ताज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं (की) जिन्स में से (कि इनसान हैं) एक डराने वाला (यानी पैग़म्बर) आ गया। सो काफ़िर लोग कहने लगे कि यह (एक) अ़जीब बात है। (2) जब हम मर गए और मिट्टी हो गए तो क्या दोबारा ज़िन्दा होंगे? यह दोबारा ज़िन्दा होना (संभावना से) बहुत ही दूर की बात है। (3) हम उनके उन हिस्सों को जानते हैं जिनको मिट्टी (खाती और) कम करती है। और हमारे पास (वह) किताब (यानी लौहे) महफ़ूज़ (मौजूद) है। (4) बल्कि सच्ची बात को जबकि वह उनको पहुँचती है तो झुठलाते हैं। ग़रज़ यह कि वे एक डाँवाडोल हालत में हैं।[4] (5) क्या उन लोगों ने अपने ऊपर की तरफ़ आसमान को नहीं देखा कि हमने उसको कैसा (ऊँचा और बड़ा) बनाया, और (सितारों से) उसको सँवार दिया, और उसमें कोई रख़ना "यानी छेद, नुक़्स और फटन" तक नहीं। (6) और ज़मीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ों को जमाया, और उसमें हर क़िस्म की ख़ुशनुमा चीज़ें उगाईं (7) जो ज़रिया है देखने और समझने का[5] हर रुजू होने वाले बन्दे के लिए।[6] (8) और हमने आसमान से बरकत (यानी नफ़े) वाला पानी बरसाया, फिर उससे बहुत-से बाग़ उगाए और खेती का ग़ल्ला (9) और लम्बी-लम्बी खजूर के पेड़ जिनके गुच्छे ख़ूब गुंधे हुए होते हैं (10) बन्दों को रिज़्क़ देने के लिए। और हमने उस (बारिश) के ज़रिए मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया (पस) इसी तरह ज़मीन से निकलना होगा।[7] (11) इससे

---

1. यानी अल्लाह तआ़ला तो जानते हैं कि तुमने ईमान क़बूल नहीं किया, इसके बावजूद जो तुम दावा क़बूल करने का करते हो तो लाज़िम आता है कि अल्लाह तआ़ला के इल्म के ख़िलाफ़ एक बात बताते हो।

2. इससे मालूम हुआ कि हक़ तआ़ला को जो तुम्हारे मुताल्लिक़ इल्म है कि तुम ईमान नहीं लाए, वही सही है।

3. यहाँ लफ़्ज़ 'ईमान' फ़रमाने से शुब्हा न किया जाए कि उसका ईमान होना तस्लीम कर लिया गया। बात यह है कि यहाँ फ़र्ज़ कर लेने के तौर पर गुफ़्तगू है, जिसमें उनकी तरफ़ से गुफ़्तगू की गई है। जैसा कि "अगर तुम सच्चे हो" में क़रीना है। यानी अगर मान लो तुम्हारे दावे के मुवाफ़िक़ इसको ईमान मान लिया जाए तो भी ख़ुदा ही का एहसान है।

4. इसलिए कि कभी ताज्जुब है, कभी झुठलाना है।

5. यानी हमारी क़ुदरत को पहचानने का ज़रिया है।

6. यानी ऐसे शख़्स के लिए जो इस ग़रज़ से बनाई हुई चीज़ों में ग़ौर-फ़िक्र करने की तरफ़ मुतवज्जह हो जो कि एक तरह से उनके बनाने वाले की तरफ़ तवज्जोह करना है। शेष तफ़सीर पृष्ठ 936 पर)

व इख़्वानु लूत **(13)** व अस्हाबुल्-ऐ-कति व क़ौमु तुब्बअिन्, कुल्लुन् कज़्ज़-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ वअ़ीद **(14)** अ-फ़-अ़यीना बिल्ख़ल्क़िल्-अव्वलि, बल् हुम् फ़ी लब्सिम्-मिन् ख़ल्क़िन् जदीद **(15)** ❖

व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न व नअ़्लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन् हब्लिल्-वरीद **(16)** इज़् य-तलक़्क़ल्-मु-तलक़्क़ियानि अ़निल्-यमीनि व अ़निश्शिमालि क़अ़ीद **(17)** मा यल्फ़िज़ु मिन् क़ौलिन् इल्ला लदैहि रक़ीबुन् अ़तीद **(18)** व जाअत् सक्-रतुल्-मौति बिल्हक़्क़ि, ज़ालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद **(19)** व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि, ज़ालि-क यौमुल्-वअ़ीद **(20)** व जाअत् कुल्लु नफ़्सिम् म-अ़हा सा-इक़ुंव्-व शहीद **(21)** ल-क़द् कुन्-त फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन् हाज़ा फ़-कशफ़्ना अ़न्-क ग़िता-अ-क फ़-ब-सरुकल्-यौ-म हदीद **(22)** व क़ा-ल क़रीनुहू हाज़ा मा ल-दय्-य अ़तीद **(23)** अल्क़िया फ़ी जहन्न-म कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् अ़नीद **(24)** मन्नाअ़िल्-लिल्ख़ैरि मुअ़्तदिम्-मुरीब **(25)** अल्लज़ी ज-अ़-ल मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-अल्क़ियाहु फ़िल्-अ़ज़ाबिश्-शदीद **(26)** क़ा-ल क़रीनुहू रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन् का-न फ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद **(27)** क़ा-ल ला तख़्तसिमू ल-दय्-य व क़द् क़द्दम्तु इलैकुम् बिल्-वअ़ीद **(28)** मा युबद्दलुल्-क़ौलु ल-दय्-य व मा अ-न बिज़ल्लामिल्-लिल्-अ़बीद **(29)** ❖

यौ-म नक़ूलु लि-जहन्न-म हलिम्त-लअ्ति व तक़ूलु हल् मिम्-मज़ीद **(30)** व उज़्लि--फ़तिल्-जन्नतु लिल्मुत्तक़ी-न ग़ै-र बअ़ीद **(31)** हाज़ा मा तू-अ़दू-न लिकुल्लि अव्वाबिन्

ق ٥٠ — حٰمٓ ٢٦

قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّاَصۡحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوۡدُ ﴿۱۲﴾ وَعَادٌ وَّفِرۡعَوۡنُ وَاِخۡوَانُ
لُوۡطٍ ﴿۱۳﴾ وَّاَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ وَقَوۡمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ
وَعِيۡدِ ﴿۱۴﴾ اَفَعَيِيۡنَا بِالۡخَـلۡقِ الۡاَوَّلِ ؕ بَلۡ هُمۡ فِىۡ لَبۡسٍ مِّنۡ خَلۡقٍ
جَدِيۡدٍ ﴿۱۵﴾ وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ وَنَعۡلَمُ مَا تُوَسۡوِسُ بِهٖ نَفۡسُهٗ ۖۚ
وَنَحۡنُ اَقۡرَبُ اِلَيۡهِ مِنۡ حَبۡلِ الۡوَرِيۡدِ ﴿۱۶﴾ اِذۡ يَتَلَقَّى الۡمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ
الۡيَمِيۡنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيۡدٌ ﴿۱۷﴾ مَا يَلۡفِظُ مِنۡ قَوۡلٍ اِلَّا لَدَيۡهِ
رَقِيۡبٌ عَتِيۡدٌ ﴿۱۸﴾ وَجَآءَتۡ سَكۡرَةُ الۡمَوۡتِ بِالۡحَـقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنۡتَ
مِنۡهُ تَحِيۡدُ ﴿۱۹﴾ وَنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ ؕ ذٰلِكَ يَوۡمُ الۡوَعِيۡدِ ﴿۲۰﴾ وَجَآءَتۡ كُلُّ
نَفۡسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيۡدٌ ﴿۲۱﴾ لَقَدۡ كُنۡتَ فِىۡ غَفۡلَةٍ مِّنۡ هٰذَا
فَكَشَفۡنَا عَنۡكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الۡيَوۡمَ حَدِيۡدٌ ﴿۲۲﴾ وَقَالَ قَرِيۡنُهٗ
هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيۡدٌ ﴿۲۳﴾ اَلۡقِيَا فِىۡ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيۡدٍ ﴿۲۴﴾ مَّنَّاعٍ
لِّلۡخَيۡرِ مُعۡتَدٍ مُّرِيۡبِ ﴿۲۵﴾ اۨلَّذِىۡ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلۡقِيٰهُ فِى
الۡعَذَابِ الشَّدِيۡدِ ﴿۲۶﴾ قَالَ قَرِيۡنُهٗ رَبَّنَا مَاۤ اَطۡغَيۡتُهٗ وَلٰـكِنۡ كَانَ فِىۡ
ضَلٰلٍۢ بَعِيۡدٍ ﴿۲۷﴾ قَالَ لَا تَخۡتَصِمُوۡا لَدَىَّ وَقَدۡ قَدَّمۡتُ اِلَيۡكُمۡ
بِالۡوَعِيۡدِ ﴿۲۸﴾ مَا يُبَدَّلُ الۡقَوۡلُ لَدَىَّ وَمَاۤ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلۡعَبِيۡدِ ﴿۲۹﴾ يَوۡمَ
نَقُوۡلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امۡتَلَــئۡتِ وَتَقُوۡلُ هَلۡ مِنۡ مَّزِيۡدٍ ﴿۳۰﴾ وَاُزۡلِفَتِ

منزل

पहले क़ौमे नूह और रस्स वालों और समूद ने झुठलाया (12) और आद और फ़िरऔन और क़ौमे लूत ने भी झुठलाया (13) और ऐका वालों और क़ौमे तुब्बा ने झुठलाया। (यानी) सबने पैग़म्बरों को झुठलाया, सो मेरी वईद (उनपर) साबित हो गई।[1] (14) क्या हम पहली बार पैदा करने में थक गए? बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा करने की तरफ़ से (महज़ बेदलील) शुब्हे में हैं। (15) ◆

और हमने इनसान को पैदा किया है, और उसके जी में जो ख़्यालात आते हैं हम उनको जानते हैं, और हम इनसान के इस क़द्र क़रीब हैं कि उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा।[2] (16) जब दो लेने वाले फ़रिश्ते लेते रहते हैं, जो कि दाईं और बाईं तरफ़ बैठे रहते हैं। (17) वह कोई लफ़्ज़ मुँह से निकालने नहीं पाता मगर उसके पास ही एक ताक लगाने वाला तैयार है। (18) और मौत की सख़्ती (नज़दीक) आ पहुँची।[3] यह (मौत) वह चीज़ है जिससे तू बिदकता था। (19) और (क़ियामत के दिन दोबारा) सूर फूँका जाएगा। यही दिन होगा वईद का। (20) और हर शख़्स (क़ियामत के मैदान में) इस तरह आएगा कि उसके साथ एक "और होगा जो" उसको अपने साथ लाएगा, और एक (उसके आमाल का) गवाह होगा। (21) तू इस दिन से बेख़बर था, सो अब हमने तेरे ऊपर से तेरा (ग़फ़लत का) पर्दा हटा दिया, सो आज (तो) तेरी निगाह बड़ी तेज़ है। (22) और (उसके बाद) फ़रिश्ता जो उसके साथ रहता था, अ़र्ज़ करेगा कि यह वह (रोज़नामचा है) जो मेरे पास तैयार है। (23) ऐसे शख़्स को जहन्नम में डाल दो जो कुफ़्र करने वाला हो (24) और (हक़ से) ज़िद रखता हो, और नेक काम से रोकता हो, और (बन्दगी की) हद से बाहर जाने वाला हो, (और दीन में) शुब्हा पैदा करने वाला हो। (25) जिसने ख़ुदा के साथ दूसरा माबूद तजवीज़ किया हो, सो ऐसे शख़्स को सख़्त अ़ज़ाब में डाल दो। (26) वह शैतान जो उसके साथ रहता था, कहेगा कि ऐ हमारे परवर्दिगार! मैंने इसको ज़बरदस्ती गुमराह नहीं किया था, लेकिन यह ख़ुद दूर-दराज़ की गुमराही में था। (27) इरशाद होगा, मेरे सामने झगड़े की बातें मत करो, (कि बेफ़ायदा हैं) और मैं तो पहले ही तुम्हारे पास वईद भेज चुका था। (28) मेरे यहाँ (वह) बात (ज़िक्र हुई वईद की) नहीं बदली जाएगी, और मैं (इस तजवीज़ में) बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हूँ। (29) ◆

जिस दिन कि हम दोज़ख़ से कहेंगे कि तू भर भी गई? वह कहेगी कि कुछ और भी है?[4] (30) और

(पृष्ठ 934 का शेष) 7. यानी जब इन उमूर पर हमारी क़ुदरत साबित हो गई तो मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क्यों न होगी? पस क़ुदरत में होना मुम्किन और करने वाला इल्म और क़ुदरत की सिफ़तों से मुत्तसिफ़ हुआ, फिर ताज्जुब या झुठलाने के क्या मायने?

1. यानी उन सबपर अ़ज़ाब नाज़िल हुआ। इसी तरह इन झुठलाने वालों पर अ़ज़ाब आएगा, चाहे दुनिया में भी या सिर्फ़ आख़िरत में।

2. मतलब यह हुआ कि हम इल्म के एतिबार से उसकी रूह और नफ़्स से भी ज़्यादा नज़दीक हैं। जैसा इल्म इनसान को अपने हालात का है हमको उसका इल्म ख़ुद उससे भी ज़्यादा है।

3. यानी हर शख़्स की मौत क़रीब है।

4. यह पूछना शायद काफ़िरों में हौल और डर बिठाने के लिए हो कि जवाब सुनकर उनके दिल में दोज़ख़ का ख़ौफ़ और डर पैदा हो जाए कि हम कैसे ग़ज़ब और गुस्से के ठिकाने पर पहुँचे हैं।

हफ़ीज़ (32) मन् ख़शियर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि व जा-अ बिक़ल्बिम्-मुनीब (33) उद्ख़ुलूहा बि-सलामिन्, ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुलूद (34) लहुम्-मा यशाऊ-न फ़ीहा व लदैना मज़ीद (35) व कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अशद्दु मिन्हुम् बत्शन् फ़-नक़्क़बू फ़िल्-बिलादि, हल् मिम्-महीस (36) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लिमन् का-न लहू क़ल्बुन् औ अल्क़स्सम्-अ़ व हु-व शहीद (37) व ल-क़द् ख़लक़्नस्समावाति वल्-अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व मा मस्सना मिल्लुग़ूब (38) फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअ़िश्शम्सि व क़ब्लल्-ग़ुरूब (39) व मिनल्लैलि फ़-सब्बिह्हु व अद्बारस्-सुजूद (40) वस्तमिअ़् यौ-म युनादिल्-मुनादि मिम्-मकानिन् क़रीब (41) यौ-म यस्मअ़ूनस्-सै-ह-त बिल्हक़्क़ि, ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुरूज (42) इन्ना नह्नु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल्-मसीर (43) यौ-म त-शक़्क़-क़ुल्-अर्ज़ु अ़न्हुम् सिराअ़न्, ज़ालि-क हश्रुन् अ़लैना यसीर (44) नह्नु अअ़्लमु बिमा यक़ूलू-न व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-जब्बारिन् फ़-ज़क्किर् बिल्-क़ुर्आनि मंय्यख़ाफ़ु वअ़ीद (45) ❖

الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ
حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ ﴿٣٣﴾
ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا
مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا
فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَحِيصٍ ﴿٣٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ
لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ ﴿٣٨﴾
فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَ
قَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ
يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ
يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ
الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ
وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾ ع ۳ ۱۷

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالذَّارِيَاتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحَامِلَاتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجَارِيَاتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمَاتِ

51 सूरतुज़्-ज़ारियाति 67

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1559 अक्षर, 360 शब्द, 60 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वज़्ज़ारियाति ज़र्वन् (1) फ़ल्-हामिलाति विक़्रन् (2) फ़ल्-जारियाति युस्रन् (3)

जन्नत मुत्तक़ियों के क़रीब लाई जाएगी, कि कुछ दूर न रहेगी।[1] (31) यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वायदा किया जाता था, कि वह हर ऐसे शख़्स के लिए है जो रुजू होने वाला, पाबन्दी करने वाला हो। (32) जो शख़्स ख़ुदा तआ़ला से बेदेखे डरता हो और रुजू होने वाला दिल लेकर आएगा। (33) इस जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह दिन है हमेशा रहने का। (34) उनको जन्नत में सब कुछ मिलेगा जो-जो चाहेंगे, और हमारे पास और भी ज़्यादा (नेमत है)। (35) और हम उन (मक्का वालों) से पहले बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर चुके हैं जो क़ुव्वत में उनसे (कहीं) ज़्यादा थे, और तमाम शहरों को छानते फिरते थे[2] (लेकिन जब हमारा अ़ज़ाब नाज़िल हुआ तो उनको) कहीं भागने की जगह न मिली।[3] (36) इसमें उस शख़्स के लिए बड़ी इबरत है जिसके पास (समझने वाला) दिल हो, या वह (कम-से-कम दिल से) मुतवज्जह होकर (बात की तरफ़) कान ही लगा देता हो। (37) और हमने आसमानों को और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान में है उस सबको छह दिन में पैदा किया, और हमको थकान ने छुआ तक नहीं। (38) सो उनकी बातों पर सब्र कीजिए और अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ करते रहिए, (इसमें नमाज़ भी दाख़िल है) सूरज निकलने से पहले (जैसे सुबह की नमाज़) और छुपने से पहले (जैसे ज़ोहर और अ़सर) (39) और रात में भी उसकी तस्बीह किया कीजिए, (इसमें मग़रिब और इशा आ गई) और (फ़र्ज़) नमाज़ों के बाद भी।[4] (40) और सुन लो कि जिस दिन एक पुकारने वाला पास ही से पुकारेगा।[5] (41) जिस दिन उस चीख़ने को यक़ीनन सब सुन लेंगे, यह दिन होगा (क़ब्रों से) निकलने का। (42) हम ही (अब भी) जिलाते हैं और हम ही मारते हैं, और हमारी ही तरफ़ फिर लौटकर आना है। (43) जिस दिन ज़मीन उन (मुर्दों) पर से खुल जाएगी, जबकि वे दौड़ते होंगे। यह हमारे नज़दीक एक आसान जमा कर लेना है। (44) जो-जो कुछ ये लोग कह रहे हैं हम ख़ूब जानते हैं, और आप उनपर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हैं। तो आप क़ुरआन के ज़रिए से ऐसे शख़्स को नसीहत करते रहिए जो मेरी वईद "सज़ा की धमकी" से डरता हो। (45) ❖

51 सूरः ज़ारियात 67

सूरः ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 60 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है उन हवाओं की जो ग़ुबार वग़ैरह को उड़ाती हों। (1) फिर उन बादलों की जो बोझ (यानी बारिश) को उठाते हैं। (2) फिर उन कश्तियों की जो नरमी से चलती हैं। (3) फिर उन फ़रिश्तों की जो (हुक्म के मुवाफ़िक़) चीज़ें बाँटते हैं। (4) तुमसे जिस (यानी क़ियामत) का वायदा किया जाता है, वह

1. 'जन्नत के क़रीब लाने' की दो सूरतें हो सकती हैं- या तो उसकी जगह से मुन्तक़िल करके क़ियामत के मैदान में ले आएँ और अल्लाह को सब क़ुदरत है। तो इस सूरत में "उसमें दाख़िल हो जाओ" फ़रमाना इस मायने में नहीं है कि अभी चले जाओ, बल्कि ख़ुशख़बरी और वायदा है कि तुम हिसाब-किताब वग़ैरह के बाद उसमें जाना। और दूसरी सूरत यह हो सकती है कि हिसाब वग़ैरह से फ़ारिग़ होने के बाद उन लोगों को जन्नत के क़रीब पहुँचाकर बाहर ही से कहा जाएगा कि "यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वायदा किया जाता था" फिर और क़रीब करके कहा जाएगा "उसमें दाख़िल हो जाओ...... आख़िर तक"।
2. यानी ताक़त के साथ रोज़गार और कमाने के असबाब में भी बड़ी तरक़्क़ी दी थी।
3. यानी किसी तरह बच न सके।
4. हासिल यह हुआ कि अल्लाह के ज़िक्र में और उसकी फ़िक्र में लगे रहिए ताकि उनके कुफ़्रिया क़ौलों की तरफ़ तवज्जोह न हो।
5. पास का मतलब यह है कि वह आवाज़ सबको बेतकल्लुफ़ पहुँचेगी, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 940 पर)

फ़ल्-मुक़स्सिमाति अम्रन् (4) इन्नमा तू-अ़दू-न लसादिक़ (5) व इन्नद्दी-न ल-वाक़िअ़् (6) वस्समा-इ ज़ातिल्-हुबुकि (7) इन्नकुम् लफ़ी क़ौलिम्-मुख़्तलिफ़ (8) युअ्फ़कु अ़न्हु मन् उफ़िक् (9) क़ुतिलल्-ख़र्रासून (10) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ग़म्-रतिन् साहून (11) यस्अलू-न अय्या-न यौमुद्दीन (12) यौ-म हुम् अ़लन्नारि युफ़्तनून (13) ज़ूक़ू फ़ित्न-तकुम्, हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तस्तअ्जिलून (14) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून (15) आख़िज़ी-न मा आताहुम् रब्बुहुम्, इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुह्सिनीन (16) कानू क़लीलम्-मिनल्लैलि मा यह्जअ़ून (17) व बिल्-अस्हारि हुम् यस्तग़्फ़िरून (18) व फ़ी अम्वालिहिम् हक़्क़ुल्-लिस्सा-इलि वल्-मह्रूम (19) व फ़िल्अर्ज़ि आयातुल्-लिल्मूक़िनीन (20) व फ़ी अन्फ़ुसिकुम् अ-फ़ला तुब्सिरून (21) व फ़िस्समा-इ रिज़्क़ुकुम् व मा तू-अ़दून (22) फ़-वरब्बिस्समा-इ वल्अर्ज़ि इन्नहू ल-हक़्क़ुम्- मिस्-ल मा अन्नकुम् तन्तिक़ून (23) ❖

हल् अता-क हदीसु ज़ैफ़ि इब्राहीमल्-मुक्रमीन ✣ (24) इज़् द-ख़लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन्, क़ा-ल सलामुन् क़ौमुम्-मुन्करून (25) फ़रा-ग़ इला अह्लिही फ़जा-अ बिअ़िज्लिन् समीन (26) फ़-क़र्र-बहू इलैहिम् क़ा-ल अला तअ्कुलून (27) फ़-औज-स मिन्हुम् ख़ी-फ़तन्, क़ालू ला तख़फ़्, व बश्श-रूहु बिग़ुलामिन् अ़लीम (28) फ़-अक़्ब-लतिम्-र-अतुहू फ़ी सर्रतिन् फ़-सक्कत् वज्हहा व क़ालत् अ़जूज़ुन् अ़क़ीम (29) क़ालू कज़ालिकि क़ा-ल रब्बुकि, इन्नहू हुवल् हकीमुल्-अ़लीम (30)

أَمْرًا ۙ إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۙ وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۙ وَالسَّمَاءِ
ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُخْتَلِفٍ ۙ يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ
أُفِكَ ۙ قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ ۙ الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ
يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ۙ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ
ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ إِنَّ الْمُتَّقِينَ
فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ كَانُوا قَلِيلًا مِنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ وَ
بِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ
وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِلْمُوقِنِينَ وَفِي أَنْفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ
وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ
لَحَقٌّ مِثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ
الْمُكْرَمِينَ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ
فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا
تَأْكُلُونَ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ
عَلِيمٍ فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ
عَقِيمٌ قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ

बिलकुल सच है। **(5)** और (आमाल की) जज़ा (और सज़ा) ज़रूर होने वाली है।[1] **(6)** क़सम है आसमान की जिसमें (फ़रिश्तों के चलने के) रास्ते हैं **(7)** कि तुम (यानी सब) लोग (क़ियामत के बारे में) मुख़्तलिफ़ गुफ़्तगू में हो। **(8)** उससे वही फिरता है जिसको फिरना होता है। **(9)** ग़ारत हो जाएँ बे-सनद बातें करने वाले[2] **(10)** जो कि जहालत में भूले हुए हैं।[3] **(11)** पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा? **(12)** जिस दिन वे लोग आग पर रखे जाएँगे **(13)** (और कहा जाएगा कि) अपनी उस सज़ा का मज़ा चखो, यही है जिसकी तुम जल्दी मचाया करते थे। **(14)** बेशक मुत्तक़ी लोग जन्नतों में और चश्मों में होंगे। **(15)** (और) उनके रब ने उनको जो (सवाब) अ़ता किया होगा वह उसको (खुशी-खुशी) ले रहे होंगे। (और क्यों न हो) वे लोग इससे पहले (दुनिया में) नेक काम करने वाले थे। **(16)** वे लोग रात को बहुत कम सोते थे।[4] **(17)** और रात के अख़ीर में इस्तिग़फ़ार किया करते थे। **(18)** और उनके माल में सवाली और ग़ैर-सवाली का हक़ था।[5] **(19)** और यक़ीन लाने वालों के लिए ज़मीन में बहुत-सी निशानियाँ हैं **(20)** और ख़ुद तुम्हारी ज़ात में भी। और क्या तुमको दिखाई नहीं देता। **(21)** और तुम्हारा रिज़्क़ और जो तुमसे (क़ियामत के मुताल्लिक़) वायदा किया जाता है **(22)** (उन) सबका (मुतैयन वक़्त) आसमान में है, तो क़सम है आसमान और ज़मीन के परवर्दिगार की कि वह बरहक़ है जैसा कि तुम बातें कर रहे हो। **(23)** ❖

क्या इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के मुअ़ज़्ज़ "यानी सम्मानित" मेहमानों की हिकायत आप तक पहुँची है? **(24)** (और यह क़िस्सा उस वक़्त में था) जबकि वे (मेहमान) उनके पास आए फिर उनको सलाम किया, इब्राहीम (अ़लैहि.) ने भी (जवाब में) कहा, सलाम (और कहने लगे कि) अन्जान लोग (मालूम होते) हैं। **(25)** फिर अपने घर की तरफ़ चले और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा (तला हुआ) लाए। **(26)** और उसको उनके पास (यानी सामने लाकर) रखा। कहने लगे, आप लोग खाते क्यों नहीं? **(27)** तो उनसे दिल में डरे, उन्होंने कहा कि तुम डरो मत और उनको एक लड़के की खुशख़बरी दी, जो बड़ा आ़लिम होगा।[6] **(28)** इतने में उनकी बीवी बोलती हुई आईं, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगीं कि (पहले तो) बुढ़िया (फिर) बाँझ। **(29)** फ़रिश्ते कहने लगे कि तुम्हारे परवर्दिगार ने ऐसा ही फ़रमाया है, कुछ शक नहीं कि वह बड़ा हिक्मत वाला, जानने वाला है।[7] **(30)**

(पृष्ठ 938 का शेष) और जैसे अक्सर दूर की आवाज़ किसी को पहुँचती है किसी को नहीं पहुँचती, ऐसा न होगा।

1. इन क़स्मों में इशारा है दलील की तरफ़। यानी ये सब अ़जीब तसर्रुफ़ात खुदाई क़ुदरत से होना दलील है अ़ज़्मते क़ुदरत की, फिर ऐसे बड़े क़ुदरत वाले को क़ियामत का क़ायम करना क्या मुश्किल है?

2. यानी जो अपने पास बिना दलील के होते हुए क़ियामत का इनकार करते हैं।

3. भूलने से मुराद वह ग़फ़लत है जो अपने इख़्तियार से हो।

4. यानी रात का ज़्यादा हिस्सा इबादत में ख़र्च करते थे।

5. यानी ऐसी पाबन्दी और एहतिमाम से देते थे कि जैसे उनके ज़िम्मे उनका कुछ आता हो। मुराद इससे ज़कात के अ़लावा है।

फ़ायदाः यह मतलब नहीं है कि "जन्नतें और चश्मे" इन नवाफ़िल पर मौक़ूफ़ हैं। बल्कि बुलन्द दर्जे वालों का ज़िक्र फ़रमाया गया है।

6. इससे इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम मुराद हैं।

7. यानी अपने आपमें अगरचे यह बात ताज्जुब की है, मगर तुमको जो कि नुबुव्वत के ख़ानदान में रहती हो और इल्म व समझ भी रखती हो, यह मालूम करके कि यह खुदा का इरशाद है, ताज्जुब में न रहना चाहिए।

सत्ताईसवाँ पारः का-ल फ़मा ख़त्बुकुम्

सूरतुज़्-ज़ारियाति (आयत 31 से 60)

का-ल फ़मा ख़ात्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (31) क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम्-मुज्रिमीन (32) लिनुर्सि-ल अ़लैहिम् हिजा-रतम्-मिन् तीन (33) मुस्व-मतन् अ़िन्-द रब्बि-क लिल्-मुस्रिफ़ीन (34) फ़-अख़्रज्ना मन् का-न फ़ीहा मिनल्-मुअ्मिनीन (35) फ़मा वजद्ना फ़ीहा ग़ै-र बैतिम्-मिनल्-मुस्लिमीन (36) व तरक्ना फ़ीहा आ-यतल्-लिल्लज़ी-न यख़ाफ़ूनल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (37) व फ़ी मूसा इज़् अर्सल्नाहु इला फ़िर्औ-न बिसुल्तानिम्-मुबीन (38) फ़-तवल्ला बिरुक्निही व क़ा-ल साहिरुन् औ मज्नून (39) फ़-अख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ़-नबज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि व हु-व मुलीम (40) व फ़ी आ़दिन् इज़् अर्सल्ना अ़लैहिमुर्-रीहल्-अ़क़ीम (41) मा त-ज़रु मिन् शैइन् अतत् अ़लैहि इल्ला ज-अ़लत्हु कर्रमीम (42) व फ़ी समू-द इज़् क़ी-ल लहुम् त-मत्तअू हत्ता हीन (43) फ़-अ़तौ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्साअि़-क़तु व हुम् यन्ज़ुरून (44) फ़मस्तताअू मिन् क़ियामिंव्-व मा कानू मुन्तसिरीन (45) व क़ौ-म नूहिम्-मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (46) ❖

वस्समा-अ बनैनाहा बिऐदिंव्-व इन्ना ल-मूसिअून (47) वल्अर्-ज़ फ़रश्नाहा फ़निअ्मल्-माहिदून (48) व मिन् कुल्लि शैइन् ख़लक़्ना ज़ौजैनि लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (49) फ़-फ़िर्रू इलल्लाहि, इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (50) व ला तज्अ़लू

قال فما خطبكم ايها المرسلون قالوا انا ارسلنا الى قوم
مجرمين لنرسل عليهم حجارة من طين مسومة عند
ربك للمسرفين فاخرجنا من كان فيها من المؤمنين
فما وجدنا فيها غير بيت من المسلمين وتركنا فيها اية
للذين يخافون العذاب الاليم وفي موسى اذ ارسلنه الى
فرعون بسلطن مبين فتولى بركنه وقال سحر او مجنون
فاخذنه وجنوده فنبذنهم في اليم وهو مليم وفي عاد اذ
ارسلنا عليهم الريح العقيم ما تذر من شيء اتت عليه
الا جعلته كالرميم وفي ثمود اذ قيل لهم تمتعوا حتى حين
فعتوا عن امر ربهم فاخذتهم الصعقة وهم ينظرون فما
استطاعوا من قيام وما كانوا منتصرين وقوم نوح من
قبل انهم كانوا قوما فسقين والسماء بنينها بايد وانا
لموسعون والارض فرشنها فنعم المهدون ومن كل شيء
خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ففروا الى الله اني لكم منه نذير
مبين ولا تجعلوا مع الله الها اخر اني لكم منه نذير مبين
كذلك ما اتى الذين من قبلهم من رسول الا قالوا ساحر او

सत्ताईसवाँ पारः क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम

सूरः ज़ारियात (आयत 31 से 60)

इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) कहने लगे (कि) अच्छा तो (यह बतलाओ कि) तुमको बड़ी मुहिम क्या पेश आई है ऐ फ़रिश्तो![1] **(31)** फ़रिश्तों ने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम (यानी लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम) की तरफ़ भेजे गए हैं। **(32)** ताकि हम उनपर घिंगर के पत्थर बरसाएँ। **(33)** जिनपर आपके रब के पास (यानी आ़लिमे ग़ैब में) ख़ास निशानियाँ भी हैं हद से गुज़रने वालों के लिए।[2] **(34)** और हमने जितने ईमान वाले थे उनको वहाँ से निकाल कर अलग कर दिया। **(35)** सो मुसलमानों के सिवाय एक घर के और कोई घर (मुसलमानों का) हमने नहीं पाया।[3] **(36)** और हमने इस वाक़िए में (हमेशा के वास्ते) ऐसे लोगों के लिए इबरत रहने दी[4] जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं।[5] **(37)** और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के क़िस्से में भी इबरत है, जबकि हमने उनको फ़िरऔ़न के पास एक खुली हुई दलील (यानी मोजिज़ा) देकर भेजा। **(38)** सो उसने अपनी हुकूमत के अरकान सहित सरकशी की और कहने लगा कि यह जादूगर है या मजनूँ। **(39)** सो हमने उसको और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया (यानी ग़र्क़ कर दिया) और उसने काम ही मलामत का किया था। **(40)** और आ़द के क़िस्से में भी इबरत है, जबकि हमने उनपर नामुबारक आँधी भेजी। **(41)** जिस चीज़ पर गुज़रती थी (यानी उन चीज़ों में से कि जिनके हलाक करने का हुक्म था) उसको ऐसा कर छोड़ती थी जैसे कोई चीज़ गलकर रेज़ा-रेज़ा हो जाती है। **(42)** और समूद के क़िस्से में भी इबरत है, जबकि उनसे कहा गया, और थोड़े दिनों चैन-सुकून ले लो। **(43)** सो (इस डराने पर भी) उन लोगों ने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, सो उनको अ़ज़ाब ने आ पकड़ा और वे (उस अ़ज़ाब के आसार को) देख रहे थे। **(44)** सो न तो खड़े ही हो सके और न (हमसे) बदला ले सके। **(45)** और उनसे पहले नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम का यही हाल हो चुका था। (यानी इस सबब से कि) वे बड़े नाफ़रमान लोग थे। **(46)** ❖

और हमने आसमानों को (अपनी) क़ुदरत से बनाया और हम बड़ी क़ुदरत वाले हैं। **(47)** और हमने ज़मीन को फ़र्श (के तौर पर) बनाया, सो हम (कैसे) अच्छे बिछाने वाले हैं। **(48)** और हमने हर चीज़ को दो-दो क़िस्म बनाया, ताकि तुम (उन बनाई हुई चीज़ों से तौहीद को) समझो। **(49)** तो तुम अल्लाह ही की (तौहीद की) तरफ़ दौड़ो, मैं तुम्हारे (समझाने के) वास्ते अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से खुला डराने वाला (होकर आया) हूँ। **(50)** और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद मत क़रार दो। मैं तुम्हारे वास्ते अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से खुला डराने वाला हूँ।[6] **(51)** इसी तरह जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं, उनके पास कोई

---

1. जब प्यारे मेहमानों ने जो आदमियों की शक्ल में थे बताया कि हम फ़रिश्ते हैं और हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह का ख़ौफ़ जो उनके अचानक ज़ाहिर होने पर तारी हुआ था, जाता रहा तो आपने महसूस किया कि सिर्फ़ लड़के की ख़ुशख़बरी देना इनका मक़सद नहीं था, क्योंकि उसके लिए एक क़ासिद को भेज देना काफ़ी था। यक़ीनन ये किसी अहम मामले के लिए भेजे गए हैं। इसलिए दरियाफ़्त फ़रमाया कि आप हज़रात के आने की असली ग़रज़ क्या है?

2. फ़रिश्तों ने बताया कि लूत अ़लैहिस्सलाम की मुज्रिम क़ौम पर पत्थर बरसाकर उनको तहस-नहस करने पर मुतैयन हुए हैं। जो मुज्रिम जिस पत्थर से हलाक होने वाला है, उसपर उसका नाम भी लिखा है। ग़रज़ यह कि सख़्त पकड़ करने वाले रब ने उनकी सख़्त बुरी हरकतों की सज़ा में जो इनसानियत के लिए शर्म का सबब थीं, उनपर कंकरी के पत्थर बरसाए जिससे वे हलाक हो गए।

3. उस क़सबे में लूत अ़लैहिस्सलाम के घराने के सिवा मुसलमानों का कोई घर न था, उसको बचा लिया गया। आपकी बीवी चूँकि काफ़िरा थी वह भी तमाम क़ौम की तरह हलाकत के गढ़े में डाल दी गई। लूत अ़लैहिस्सलाम की बीवी दो हाल से ख़ाली न थी- या तो मुनाफ़िक़ा थी यानी ज़ाहिर में मोमिना और बातिन में काफ़िरा, अगर ऐसा था तो मालूम हुआ कि मुनाफ़िक़ औरत से **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 944 पर)**

मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र, इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (51) कज़ालि-क मा अतल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला क़ालू साहिरुन् औ मज्नून (52) अ-तवासौ बिही बल् हुम् क़ौमुन् ताग़ून (53) फ़-तवल्-ल अ़न्हुम् फ़मा अन्-त बि-मलूम (54) व ज़क्किर् फ़-इन्नज़्ज़िक्रा तन्फ़अुल्-मुअ्मिनीन (55) व मा ख़लक़्तुल्-जिन्-न वल्-इन्-स इल्ला लि-यअ्बुदून (56) मा उरीदु मिन्हुम् मिर्रिज़्क़िंव्-व मा उरीदु अंय्युत्अिमून (57)

مجنون اتواصوا به بل هم قوم طاغون فتول عنهم فما انت
بملوم وذكر فان الذكرى تنفع المؤمنين وما خلقت الجن
والانس الا ليعبدون ما اريد منهم من رزق وما اريد ان
يطعمون ان الله هو الرزاق ذو القوة المتين فان للذين
ظلموا ذنوبا مثل ذنوب اصحبهم فلا يستعجلون فويل
للذين كفروا من يومهم الذي يوعدون
بسم الله الرحمن الرحيم
والطور وكتب مسطور في رق منشور والبيت المعمور
والسقف المرفوع والبحر المسجور ان عذاب ربك لواقع
ما له من دافع يوم تمور السماء مورا وتسير الجبال سيرا
فويل يومئذ للمكذبين الذين هم في خوض يلعبون
يوم يدعون الى نار جهنم دعا هذه النار التي كنتم بها
تكذبون افسحر هذا ام انتم لا تبصرون اصلوها فاصبروا
او لا تصبروا سواء عليكم انما تجزون ما كنتم تعملون
ان المتقين في جنت ونعيم فكهين بما اتهم ربهم و
وقىهم ربهم عذاب الجحيم كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم

इन्नल्ला-ह हुवर्रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्-क़ुव्वतिल्-मतीन (58) फ़-इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़नूबम्-मिस्-ल ज़नूबि-अस्हाबिहिम् फ़ला यस्तअ्जिलून (59) फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिंय्यौमि-हिमुल्लज़ी यू-अ़दून (60) ❖

52 सूरतुत्-तूरि 76

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1334 अक्षर, 319 शब्द, 49 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वत्तूरि (1) व किताबिम्-मस्तूरिन् (2) फ़ी रक़्क़िम्-मन्शूरिंव्- (3) -वल्-बैतिल्-मअ्मूर (4) वस्सक़्फ़िल्-मर्फ़ूअि (5) वल्-बह्रिल्-मस्जूर (6) इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बि-क लवाक़िअ़् (7) मा लहू मिन् दाफ़िअिंय्- (8) -यौ-म तमूरुस्-समा-उ मौरंव्- (9) -व तसीरुल्-जिबालु सैरा (10) फ़वैलुंय्यौ-मइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (11) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ख़ौज़िंय्यल्-अ़बून ✣ (12) यौ-म युदअ़्अ़ू-न इला नारि जहन्न-म दअ़्अ़ा (13) हाज़िहिन्नारुल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (14) अ-फ़सिह्रुन् हाज़ा अम् अन्तुम् ला तुब्सिरून (15) इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू सवाउन् अ़लैकुम्, इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ़्मलून (16) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-

पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसको उन्होंने जादूगर या मजनूँ न कहा हो। **(52)** क्या इस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते चले आते हैं,[1] बल्कि (इस एक ही बात पर जमा होने की वजह यह हुई कि) ये सब-के-सब सरकश लोग हैं।[2] **(53)** सो आप उनकी तरफ़ तवज्जोह न कीजिए[3] क्योंकि आप पर किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं। **(54)** और समझाते रहिए कि समझाना ईमान (लाने) वालों को (भी) नफ़ा देगा। **(55)** और मैंने जिन्न और इनसान को इसी वास्ते पैदा किया है कि मेरी इबादत किया करें। **(56)** मैं उनसे (मख़्लूक़ को) रिज़्क़ पहुँचाने की दरख़्वास्त नहीं करता। और न यह दरख़्वास्त करता हूँ कि वे मुझको खिलाया करें। **(57)** अल्लाह ख़ुद ही सबको रिज़्क़ पहुँचाने वाला, ताक़त वाला, निहायत क़ुव्वत वाला है।[4] **(58)** तो उन ज़ालिमों के लिए (अल्लाह के इल्म में सज़ा की) भी बारी मुक़र्रर है, जैसे (पहले गुज़र चुके) उन्हीं जैसे तरीक़े वाले लोगों की बारी (मुक़र्रर) थी, सो मुझसे (अ़ज़ाब) जल्दी तलब न करें। **(59)** ग़रज़ उन काफ़िरों के लिए उस दिन के आने से बड़ी ख़राबी होगी जिसका उनसे वायदा किया जाता है।[5] **(60)** ❖

52 सूरः तूर 76

सूरः तूर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 49 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

और क़सम है तूर (पहाड़) की **(1)** और उस किताब की जो लिखी है **(2)** खुले हुए काग़ज़ में **(3)** और (क़सम है) बैतुल-मअ़मूर की।[6] **(4)** और (क़सम है) ऊँची छत की, (मुराद आसमान है)। **(5)** और (क़सम है) नमकीले पानी के दरिया की, जो (पानी से) भरा हुआ है।[7] **(6)** कि बेशक आपके रब का अ़ज़ाब ज़रूर होकर रहेगा। **(7)** कोई उसको टाल नहीं सकता। **(8)** (और यह उस दिन ज़ाहिर होगा) जिस दिन आसमान थरथराने लगेगा। **(9)** और पहाड़ (अपनी जगह से) हट जाएँगे। **(10)** तो जो लोग झुठलाने वाले हैं (और) जो (झूठ के) मश्ग़ले में बेहूदगी के साथ लग रहे हैं **(11)** उनकी उस दिन कमबख़्ती आएगी। **(12)** जिस दिन कि उनको दोज़ख़ की आग की तरफ़ धक्के देकर लाएँगे। **(13)** यह वही दोज़ख़ है जिसको तुम झुठलाया करते थे[8] **(14)** तो क्या यह (भी) जादू है (देखकर बतलाओ)? या यह कि तुमको (अब भी) नज़र नहीं आता। **(15)** उसमें दाख़िल हो, फिर चाहे (उसकी) सहार करना या सहार न करना, तुम्हारे हक़ में दोनों बराबर हैं।[9] जैसा तुम करते थे वैसा ही बदला तुमको दिया जाएगा।[10] **(16)** बेशक मुत्तक़ी लोग (जन्नत के) बाग़ों और ऐश के सामान में होंगे। **(17)** (और) उनको जो चीज़ें उनके परवर्दिगार ने दी होंगी उनसे दिल से ख़ुश होंगे, और

(पृष्ठ 942 का शेष) मोमिन का निकाह जायज़ है जब तक कुल्ली तौर पर किसी कुफ़्रिया अ़मल को न करे, उस वक़्त तक वह मोमिन के निकाह में रह सकती है। और अगर वह औ़रत खुलेआ़म काफ़िरा थी तो उस वक़्त ग़ैर-मुस्लिम औ़रत से निकाह जायज़ होगा।

4. लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम की बस्ती बिलकुल तबाह व बर्बाद कर दी गई और उस सरज़मीन पर एक दरिया ज़ाहिर हो गया जो उस हौलनाक हादसे की यादगार 'बहीरा-ए-लूत' के नाम से अब तक मश्हूर है। उस दरिया का पानी इतना कड़वा और बदबूदार है कि कोई जानदार उसको इस्तेमाल नहीं कर सकता और उसके किनारे कोई पेड़ भी नहीं उगता।

5. हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की तबाहशुदा बस्ती की जगह तमाम लोगों के लिए इबरत की जगह है। लेकिन बदबख़्त काफ़िर उससे इबरत हासिल नहीं करते, बल्कि उन्होंने हक़ीक़ते हाल के चेहरे पर बात बनाने का मुलम्मा कर रखा है कि उस मक़ाम पर कोयले और गन्धक की खान थी जिसके उड़ने से यह दरिया ज़ाहिर हो गया था। ग़रज़ यह मक़ाम सिर्फ़ ईमान वालों के लिए इबरत की जगह है काफ़िर लोग उससे सबक़ नहीं लेते।

6. आगे हक़ तआ़ला का इरशाद है कि आप वाक़ई बेशक साफ़ तौर पर डराने वाले हैं जैसा कि अभी ज़िक्र हुआ, लेकिन ये आपके मुख़ालिफ़ ऐसे जाहिल हैं कि 'अल्लाह की पनाह!' आपको कभी जादूगर, कभी मजनूँ बताते हैं, सो आप सब्र कीजिए।

1. यानी यह जमा होना तो ऐसा हो गया जैसे एक-दूसरे को कहते चले आते हों कि देखो **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 946 पर)**

व नअ़ीम **(17)** फ़ाकिही-न बिमा आताहुम् रब्बुहुम् व वक़ाहुम् रब्बुहुम् अ़ज़ाबल्-जहीम **(18)** कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ्मलून **(19)** मुत्तकिई-न अ़ला सुरुरिम्-मस्फ़ू-फ़तिन् व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अ़ीन **(20)** वल्लज़ी-न आमनू वत्त-बअ़त्हुम् ज़ुर्रिय्यतुहुम् बिईमानिन् अल्हक्ना बिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम् व मा अलत्नाहुम् मिन् अ़-मलिहिम् मिन् शैइन्, कुल्लुम्-रिइम् बिमा क-स-ब रहीन **(21)** व अम्दद्नाहुम् बिफ़ाकि-हतिंव्-व लह्मिम्-मिम्मा यश्तहून **(22)** य-तनाज़अू-न फ़ीहा कअ्सल्-ला लग्वुन् फ़ीहा व ला तअ्सीम **(23)** व यतूफ़ु अ़लैहिम् ग़िल्मानुल्-लहुम् क-अन्नहुम् लुअ्लुउम्-मक्नून **(24)** व अक़्ब-ल बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िंय्य-तसा-अलून **(25)** क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन **(26)** फ़-मन्नल्लाहु अ़लैना व वक़ाना अ़ज़ाबस्-समूम **(27)** इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लु नद्अूहु, इन्नहू हुवल् बर्रुर्-रहीम **(28)** ❖

फ़-ज़क्किर् फ़मा अन्-त बिनिअ़्-मति रब्बि-क बिकाहिनिंव्-व ला मज्नून **(29)** अम् यक़ूलू-न शाअ़िरुन् न-तरब्बसु बिही रैबल्-मनून **(30)** क़ुल् त-रब्बसू फ़-इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मु-तरब्बिसीन **(31)** अम् तअ्मुरुहुम् अह्लामुहुम् अम् हुम् क़ौमुन् ताग़ून **(32)** अम् यक़ूलू-न तक़व्व-लहू बल्-ला युअ्मिनून **(33)** फ़ल्यअ्तू बि-हदीसिम्-मिस्लिही इन् कानू सादिक़ीन **(34)** अम् ख़ुलिक़ू मिन् ग़ैरि शैइन् अम् हुमुल्-ख़ालिक़ून **(35)** अम् ख़-लक़ुस्समावाति वल्अर्-ज़ बल्-ला यूक़िनून **(36)** अम् अ़िन्दहुम् ख़ज़ा-इनु रब्बि-क अम् हुमुल्-मुसैतिरून **(37)** अम् लहुम् सुल्लमुंय्यस्तमिअ़ू-न फ़ीहि फ़ल्यअ्ति मुस्तमिअ़ुहुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन **(38)** अम् लहुल्-बनातु व लकुमुल्-बनून **(39)** अम् तस्-अलुहुम्

تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ
وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾
وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا
لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ
مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوا إِنَّا كُنَّا
قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾
إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَا أَنتَ بِنِعْمَتِ
رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ
الْمَنُونِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾ أَمْ تَأْمُرُهُمْ
أَحْلَامُهُم بِهَٰذَا ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَل
لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾ أَمْ
خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾ أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾ أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ
الْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾ أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم
بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا

उनका परवर्दिगार उनको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा। **(18)** ख़ूब खाओ और पियो मज़े के साथ, अपने आमाल के बदले में। **(19)** तकिया लगाए हुए तख़्तों पर जो बराबर-बराबर बिछाए हुए हैं, और हम उनका गोरी-गोरी बड़ी-बड़ी आँखों वालियों (यानी हूरों) से विवाह कर देंगे। **(20)** और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया, हम उनकी औलाद को भी (दर्जे में) उनके साथ शामिल कर देंगे, और उनके अ़मल में से कोई चीज़ कम नहीं करेंगे।[1] हर शख़्स अपने (कुफ़्रिया) आमाल में (दोज़ख़ में) क़ैद रहेगा। **(21)** और हम उनको मेवे और गोश्त जिस क़िस्म का उनको पसन्द हो दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाला देते रहेंगे। **(22)** (और) वहाँ आपस में (दिल्लगी के तौर पर) शराब के जाम में छीना-झपटी भी करेंगे, उसमें न बक-बक लगेगी (क्योंकि नशा न होगा) और न कोई बेहूदा बात होगी। **(23)** और उनके पास ऐसे लड़के आएँगे जो ख़ास उन्हीं के लिए होंगे, गोया कि वे हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं।[2] **(24)** और वे एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बातचीत करेंगे। **(25)** यह भी कहेंगे कि (भाई) हम तो इससे पहले अपने घर (यानी दुनिया में अपने अन्जाम से) बहुत डरा करते थे। **(26)** सो ख़ुदा ने हमपर बड़ा एहसान किया और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लिया। **(27)** हम इससे पहले (यानी दुनिया में) उससे दुआ़एँ माँगा करते थे, वाक़ई वह बड़ा एहसान करने वाला, मेहरबान है। **(28)** ❖

तो आप समझाते रहिए क्योंकि आप अल्लाह के फ़ज़्ल से न तो काहिन हैं और न मजनूँ हैं[3] (जैसा कि ये मुश्रिक लोग कहते हैं)। **(29)** हाँ, ये लोग यूँ (भी) कहते हैं कि यह शायर हैं (और) हम उनके बारे में मौत के हादसे का इन्तिज़ार कर रहे हैं। **(30)** आप फ़रमा दीजिए कि (ठीक है) तुम मुन्तज़िर रहो, सो मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूँ।[4] **(31)** क्या उनकी अ़क़्लें उनको इन बातों की तालीम करती हैं? या यह है कि ये बुरे लोग हैं।[5] **(32)** हाँ, क्या यह (भी) कहते हैं कि उन्होंने इस (क़ुरआन) को ख़ुद घड़ लिया है, बल्कि ये लोग तस्दीक़ नहीं करते। **(33)** तो ये लोग इस तरह का कोई कलाम (बनाकर) ले आएँ अगर ये (इस दावे में) सच्चे हैं। **(34)** (आगे तौहीद के मुताल्लिक़ गुफ़्तगू है कि) क्या ये लोग बग़ैर किसी पैदा करने वाले के ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा हो गए हैं, या ये ख़ुद अपने पैदा करने वाले हैं? **(35)** या उन्होंने आसमान और ज़मीन को पैदा किया है? बल्कि ये लोग (अपनी जहालत की वजह से तौहीद का) यक़ीन नहीं लाते। **(36)** क्या इन लोगों के पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं, या ये लोग (इस नुबुव्वत के महकमे के) हाकिम हैं? **(37)** क्या उनके पास कोई सीढ़ी है कि उसपर (चढ़कर आसमान की) बातें सुन लिया करते हैं? तो उनमें से जो (वहाँ की) बातें सुन आता हो वह (इस दावे पर) कोई साफ़ दलील पेश करे। **(38)** क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ और तुम्हारे लिए

(पृष्ठ 944 का शेष) जो रसूल आए तुम भी हमारी तरह कहना।

2. यानी सबब उस क़ौल की सरकशी है, चूँकि वह मुश्तरक है इसलिए क़ौल भी मुश्तरक हो गया।

3. इस आयत क़े नाज़िल होने पर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को सख़्त मलाल हुआ और समझे कि अब वह्य रुक गई और अ़ज़ाब नाज़िल हुआ चाहता है, क्योंकि हक़ तआ़ला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को काफ़िरों की नाफ़रमानियाँ देखकर ख़ामोश ही रहने और मुँह फेर लेने का हुक्म सादिर फ़रमा दिया है, लेकिन जब अगली आयत में यह हुक्म नाज़िल हुआ कि आप समझाते रहिए क्योंकि समझाना ईमान लाने वालों को भी नफ़ा देगा, तो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के दम में दम आया।

4. हासिल यह कि जब इस इबादत का हुक्म करने से हमारी कोई ग़रज़ नहीं बल्कि ख़ुद बन्दों ही का नफ़ा है तो उनको इसमें कुछ तरद्दुद न होना चाहिए।

5. यानी जिस तरह गुज़रे हुए ज़मानों के काफ़िरों ने गुनाहों और नाफ़रमानियों की गठरी बाँध ली थी, उसी तरह मक्का के काफ़िरों ने भी अपने अन्जाम की तबाही का पूरा ज़ख़ीरा जमा कर लिया है, सिर्फ़ इतनी-सी कमी है कि जिस तरह उन अगलों पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ नाज़िल हुआ था इसी तरह उनपर भी आ गया। और हक़ीक़त में अगर रब्बुल आ़लमीन को अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दिलदारी अ़ज़ीज़ न होती तो अ़ज़ाब के नाज़िल होने में देर ही क्या लगती? लेकिन हज़रत सरदारे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की **(पृष्ठ 944 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 946 की तफ़सीर पृष्ठ 948-952 पर)**

अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग़्रमिम्-मुस्क़लून **(40)** अम् अिन्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून **(41)** अम् युरीदू-न कैदन्, फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू हुमुल्-मकीदून **(42)** अम् लहुम् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून **(43)** व इंय्यरौ किस्फ़म्-मिनस्समा-इ साक़ितंय्-यक़ूलू सहाबुम्-मर्कूम **(44)** फ़-ज़र्हुम् हत्ता युलाक़ू यौ-महुमुल्लज़ी फ़ीहि युस्-अ़क़ून **(45)** यौ-म ला युग़्नी अ़न्हुम् कैदुहुम् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून **(46)** व इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू अ़ज़ाबन् दू-न ज़ालि-क व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ़्लमून **(47)** वस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क फ़-इन्न-क बि-अअ़्युनिना व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क ही-न तक़ूम **(48)** व मिनल्लैलि फ़सब्बिह्हु व इद्बारन्-नुजूम **(49)** ❖

53 सूरतुन्-नज्मि 23

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1450 अक्षर, 365 शब्द, 62 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वन्नज्मि इज़ा हवा **(1)** मा ज़ल्-ल साहिबुकुम् व मा ग़वा **(2)** व मा यन्तिक़ु अ़निल्-हवा **(3)** इन् हु-व इल्ला वह्युंय्यूहा **(4)** अ़ल्ल-महू शदीदुल्क़ुवा **(5)** ज़ू मिर्रतिन् फ़स्तवा **(6)** व हु-व बिल्-उफ़ुक़िल्-अअ़्ला **(7)** सुम्-म दना फ़-तदल्ला **(8)** फ़का-न क़ा-ब क़ौसैनि औ अद्ना **(9)** फ़-औहा इला अ़ब्दिही मा औहा **(10)** मा क-ज़बल्-फ़ुआदु मा रआ **(11)** अ-फ़तुमारूनहू अ़ला मा यरा **(12)** व ल-क़द् रआहु नज़्ल-तन् उख़्रा **(13)** अिन्-द सिद्-रतिल्-मुन्तहा **(14)** अिन्दहा जन्नतुल्-मअ़्वा **(15)** इज़् यग़्शस्-सिद्र-त

فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ۝ أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝
أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ۝ أَمْ لَهُمْ
إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ
السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ۝ فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ
الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ۝ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ۝ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
حِينَ تَقُومُ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۝ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۝ وَمَا يَنطِقُ عَنِ
الْهَوَىٰ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝ عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۝ ذُو مِرَّةٍ
فَاسْتَوَىٰ ۝ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۝ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۝ فَكَانَ قَابَ
قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۝ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ
مَا رَأَىٰ ۝ أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۝ وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۝
عِندَ سِدْرَةِ الْمُنتَهَىٰ ۝ عِندَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ۝ إِذْ يَغْشَى
السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ۝ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ۝ لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ

बेटे (तजवीज़ हों)? (39) क्या आप उनसे (अहकाम के पहुँचाने का) कुछ बदला माँगते हैं कि वह तावान उन लोगों को भारी मालूम होता है? (40) क्या उनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि ये लिख लिया करते हैं?[1] (41) क्या ये लोग कुछ बुराई करने का इरादा रखते हैं? सो ये काफ़िर ख़ुद ही (उस) बुराई में गिरफ़्तार होंगे। (42) क्या उनका अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह तआला उनके शिर्क से पाक है। (43) और अगर वे आसमान के टुकड़े को देख लें[2] कि गिरता हुआ आ रहा है तो यूँ कह दें कि यह तो तह-ब-तह जमा हुआ बादल है। (44) तो उनको रहने दीजिए यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबक़ा पड़े जिसमें उनके होश उड़ जाएँगे। (45) जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ भी काम न आएँगी। और न (कहीं से) उनको मदद मिलेगी। (46) और उन ज़ालिमों के लिए इस (अ़ज़ाब) से पहले भी अ़ज़ाब होने वाला है[3] (जैसे क़हत, और बद्र की लड़ाई में क़त्ल होना) लेकिन उनमें अक्सर को मालूम नहीं। (47) और आप अपने रब की (इस) तजवीज़ पर सब्र से बैठे रहिए कि आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं, और (मज्लिस से या सोने से) उठते वक़्त अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ बयान किया कीजिए। (48) और रात में भी उसकी तस्बीह किया कीजिए (जैसे इशा की नमाज़) और सितारों से पीछे "यानी उनके छुपने के बाद" भी। (49) ❖

53 सूरः नज्म 23

सूरः नज्म मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 62 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है (आ़म) सितारे की जब वह छुपने लगे[4] (1) यह (हर वक़्त) तुम्हारे साथ रहने वाले न (हक़) राह से भटके और न ग़लत रास्ते पर गए[5] (2) और न आप अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश से बातें बनाते हैं। (3) उनका इर्शाद ख़ालिस वह्य है, जो उनपर भेजी जाती है।[6] (4) उनको एक फ़रिश्ता तालीम करता है जो बड़ा ताक़तवर है।[7] (5) पैदाइशी ताक़तवर है। फिर वह फ़रिश्ता (अपनी) असली सूरत पर (आपके सामने) ज़ाहिर हुआ। (6) ऐसी हालत में कि वह (आसमान के) बुलन्द किनारे पर था।[8] (7) फिर वह फ़रिश्ता (आपके) नज़दीक आया, फिर और आया। (8) सो दो कमानों के बराबर फ़ासला रह गया[9] बल्कि और भी कम।[10] (9) फिर अल्लाह पाक ने अपने बन्दे पर वह्य नाज़िल फ़रमाई जो कुछ नाज़िल फ़रमाई थी। (10) दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई ग़लती नहीं की। (11) तो क्या उन (पैग़म्बर) से उनकी देखी हुई चीज़ में झगड़ा करते हैं। (12) और उन्होंने (यानी पैग़म्बर ने) उस फ़रिश्ते को एक बार और भी (असली सूरत में) देखा है। (13) सिद्रतुल मुन्तहा के पास।[11] (14) उसके क़रीब जन्नतुल-मअ्वा है। (15) जब उस सिद्रतुल मुन्तहा को लिपट रही थीं जो चीज़ें लिपट रही थीं।[12] (16) निगाह न तो हटी और न बढ़ी[13] (17) उन्होंने अपने परवर्दिगार (की

(पिछले पृष्ठ का शेष) दुआ से क़ुरैश पर सख़्त कहत (अकाल) का आया हुआ अ़ज़ाब भी टल गया।

6. सही हदीसों से साबित है कि ख़ाना-ए-काबा के बिलकुल बराबर में सातवें आसमान पर फ़रिश्तों का ख़ाना-ए-काबा बना हुआ है, उसका नाम 'बैतुल-मअ्मूर' (यानी आबाद घर) है। हर दिन उसका तवाफ़ करने के लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आते हैं, और जो एक बार तवाफ़ कर चुके हैं क़ियामत तक दूसरी बार उनकी बारी न आएगी।

7. इन क़स्मों में मतलब का इस तौर पर बयान करना है कि क़ियामत के क़ायम होने की असल ज़रूरत आमाल का सवाब या अ़ज़ाब है, और बदला दिए जाने में शरई अहकाम असल हैं। फिर बदला दिए जाने के नतीजे में दो चीज़ें अहम हैं- जन्नत और दोज़ख़, और क़सम खाने की वजह सूरः हिज्र आयत 'लअ़मुरु-क' के तहत में और क़सम की ग़रज़-मक़सद सूरः साफ़्फ़ात के शुरू में गुज़र चुकी है।

8. यानी जिन आयतों में उसकी ख़बर थी (पृष्ठ 944 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 946, 948 की तफ़सीर पृष्ठ 950-960 पर)

मा यग़्शा (16) मा ज़ाग़ल्-ब-सरु व मा तग़ा (17) ल-क़द् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल्-कुब्रा (18) अ-फ़-रऐतुमुल्ला-त वल्अुज़्ज़ा (19) व मनातस्सालि-सतल्-उख़्रा (20) अ-लकुमुज़्-ज़-करु व लहुल्-उन्सा (21) तिल्-क इज़न् क़िस्मतुन् ज़ीज़ा (22) इन् हि-य इल्ला अस्माउन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़-लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व मा तह्वल् -अन्फ़ुसु व ल-क़द् जा-अहुम् मिर्रब्बि-हिमुल्-हुदा (23) अम् लिल्-इन्सानि मा तमन्ना (24) फ़-लिल्लाहिल्-आख़िरतु वल्-ऊला (25) ❖

व कम् मिम्म-लकिन् फ़िस्समावाति ला तुग़्नी शफ़ा-अ़तुहुम् शैअन् इल्ला मिम्बअ़्दि अंय्यअ्-ज़नल्लाहु लिमंय्यशा-उ व यर्ज़ा (26) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति ल-युसम्मूनल् -मलाइ-क-त तस्मि-यतल्-उन्सा (27) व मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिन्, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन्नज़्-ज़न्-न ला युग़्नी मिनल्-हक़्क़ि शैआ (28) फ़-अअ्रिज़् अ़म्-मन् तवल्ला अ़न् ज़िक्रिना व लम् युरिद् इल्लल्-हयातद्दुन्या (29) ज़ालि-क मब्लग़ुहुम् मिनल्-अिल्मि, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ़्लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ़्लमु बि-मनिह्तदा ◆ (30) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न असाऊ बिमा अ़मिलू व यज्ज़ि-यल्लज़ी-न अह्सनू बिल्हुस्ना (31) अल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबाइरल्-इस्मि वल्-फ़वाहि-श इल्लल्-ल-मम्, इन्-न रब्ब-क वासिअ़ुल्-मग़्फ़ि-रति, हु-व अअ़्लमु बिकुम् इज़् अन्श-अकुम् मिनल्-अर्ज़ि व इज़् अन्तुम् अजिन्नतुन् फ़ी बुतूनि उम्म-हातिकुम् फ़ला तुज़क्कू अन्फ़ु-सकुम्, हु-व अअ़्लमु बि-मनित्तक़ा (32) ❖

اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ۝ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۝ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ
الْاُخْرٰى ۝ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ۝
اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ
وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ۝ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ۝
فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ۝ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ۝
وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ
مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۝ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۥ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ
ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ
اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۝ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا
اللَّمَمَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ
الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ

क़ुदरत) के बड़े-बड़े अ़जूबे देखे हैं।[1] (18) भला तुमने लात और उ़ज़्ज़ा (19)) और तीसरे मनात के हाल में ग़ौर भी किया है?[2] (20) क्या तुम्हारे लिए तो बेटे (तजवीज़) हों और ख़ुदा के लिए बेटियाँ? (21) इस हालत में तो यह बहुत बेढंगी तक़सीम हुई। (22) यह (ज़िक्र हुए माबूद का) बस नाम-ही-नाम हैं, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने मुक़र्रर कर लिया है। ख़ुदा तआ़ला ने तो उन (के माबूद होने) की कोई दलील नहीं भेजी। (बल्कि) ये लोग सिर्फ़ बेअसल ख़्यालों पर और अपने नफ़्स की ख़्वाहिश पर चल रहे हैं, हालाँकि उनके पास (रसूल के वास्ते से) उनके रब की जानिब से हिदायत आ चुकी है। (23) क्या इनसान को उसकी हर तमन्ना मिल जाती है? (24) सो ख़ुदा ही के इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। (25) ❖

और बहुत-से फ़रिश्ते आसमानों में मौजूद हैं, उनकी सिफ़ारिश ज़रा भी काम नहीं आ सकती, मगर इसके बाद कि अल्लाह जिसके लिए चाहें इजाज़त दें और (उसके लिए सिफ़ारिश करने से) राज़ी हों। (26) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे फ़रिश्तों को (ख़ुदा की) बेटी के नाम से नामज़द करते हैं। (27) हालाँकि उनके पास इसपर कोई दलील नहीं, सिर्फ़ बेअसल ख़्यालों पर चल रहे हैं। और यक़ीनन बेअसल ख़्यालात हक़ बात (के साबित करने) में ज़रा भी फ़ायदेमन्द नहीं होते। (28) तो आप ऐसे शख़्स से अपना ख़्याल हटा लीजिए जो हमारी नसीहत का ख़्याल न करे और दुनियावी ज़िन्दगी के सिवा उसको कोई (आख़िरत का मतलब) मक़सूद न हो। (29) उन लोगों की समझ की रसाई यही (दुनियावी ज़िन्दगी) है, तुम्हारा परवर्दिगार ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है, और वही उसको भी ख़ूब जानता है जो सही रास्ते पर है। ◆ (30) और जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है वह सब अल्लाह ही के इख़्तियार में है, अन्जामकार यह है कि बुरा काम करने वालों को उनके (बुरे) काम के बदले में (ख़ास अन्दाज़ की) जज़ा देगा, और नेक काम करने वालों को उनके नेक कामों के बदले में जज़ा देगा। (31) वे लोग ऐसे हैं कि बड़े गुनाहों से और (उनमें) बेहयाई की बातों से (ख़ास तौर से ज़्यादा) बचते हैं, मगर हल्के-हल्के गुनाह,[3] बेशक आपके रब की मग़्फ़िरत बहुत बड़ी है[4] वह तुमको (और तुम्हारे हालात को उस वक़्त से) ख़ूब जानता है जब तुमको ज़मीन से पैदा किया था, और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे, तो तुम अपने को नेक और पारसा मत समझा करो। (बस) तक़्वे वालों को वही ख़ूब जानता है।[5] (32) ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) उनको झुठलाते थे, तथा यह कि उन आयतों को जादू कहा करते थे। ख़ैर वह तो तुम्हारे नज़दीक जादू था तो क्या यह भी जादू है? देखकर बतलाओ।

9. न यह होगा कि तुम्हारी हाय-तौबा से नजात हो जाए और न यह होगा कि तुम्हारे मान लेने और झुक जाने और चुप हो जाने पर रहम करके निकाल दिया जाए, बल्कि हमेशा उसी में रहना होगा।

10. यानी तुम कुफ़्र किया करते थे जो कि सख़्त नाफ़रमानी और अल्लाह के बेइन्तिहा और असीमित कमालात का इनकार है, पस बदले में दोज़ख़ का अ़ज़ाब नसीब होगा जो कि सख़्त अ़ज़ाब है और जिसकी कोई हद व सीमा नहीं है।

(तफ़सीर पृष्ठ 946) **1.** यानी यह न करेंगे कि उन मुक़्तदाओं यानी जिनकी पैरवी की गई है उनके बाज़ आमाल लेकर उनकी औलाद को देकर दोनों को बराबर कर दें, बल्कि मुक़्तदा अपने आला दर्जों में बदस्तूर रहेगा और पैरोकार व ताबेदार को भी वहाँ पहुँचा दिया जाएगा।

2. यानी ऐसे हसीन व ख़ूबसूरत लड़के जन्नतियों की ख़िदमत करने वाले होंगे जैसे आबदार मोती, और मोती भी वे जो किसी महफ़ूज़ जगह में अच्छी तरह बन्द करके रखे हों कि उनकी आब और चमक को गर्द व गुबार ने मैला नहीं किया। महफ़ूज़ मोती की आब और चमक आला दर्जे की होती है।

3. काहिन वे थे जो उन शैतानों से ख़बरें हासिल करते जो चोरी-छुपे आसमान तक पहुँचकर आसमानी ख़बरें ले उड़ते थे। फिर काहिन उनमें अपनी तरफ़ से बीस झूठ मिलाकर लोगों को सुनाते और अपने ग़ैब जानने का सिक्का जमाते। मक्का के काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जो तोहमतें लगाई थीं, उनमें एक यह थी कि आप काहिन हैं, यानी ख़ुदा की पनाह! शैतानों से आसमानी ख़बरें हासिल करते हैं।

4. यानी तुम मेरा अन्जाम देखो, **(पृष्ठ 946 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 948, 950 की तफ़सीर पृष्ठ 952-964 पर)**

अ-फ़-रऐतल्लज़ी तवल्ला **(33)** व अअ़्ता क़लीलंव्-व अक्दा **(34)** अ-अ़िन्दहू अ़िल्मुल्-ग़ैबि फ़हु-व यरा **(35)** अम् लम् युनब्बअ् बिमा फ़ी सुहुफ़ि मूसा **(36)** व इब्राहीमल्लज़ी वफ़्फ़ा **(37)** अल्ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा **(38)** व अल्लै-स लिल्-इन्सानि इल्ला मा सआ़ **(39)** व अन्-न सअ़्-यहू सौ-फ़ युरा **(40)** सुम्-म युज्ज़ाहुल्-जज़ाअल्-औफ़ा **(41)** व अन्-न इला रब्बिकल्-मुन्तहा **(42)** व अन्नहू हु-व अज़्ह-क व अब्का **(43)** व अन्नहू हु-व अमा-त व अह्या **(44)** व अन्नहू ख़-लक़ज़्ज़ौजैनिज़्ज़-क-र वल्-उन्सा **(45)** मिन्-नुत्फ़तिन् इज़ा तुम्ना **(46)** व अन्-न अ़लैहिन्-नश-अतल्-उख़्रा **(47)** व अन्नहू हु-व अग्ना व अक़्ना **(48)** व अन्नहू हु-व रब्बुश्-शिअ़्रा **(49)** व अन्नहू अह्ल-क आ़-द-निल्ऊला **(50)** व समू-द फ़मा अब्क़ा **(51)** व क़ौ-म नूहिम्-मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू हुम् अज़्ल-म व अत्ग़ा **(52)** वल्-मुअ्तफ़ि-क-त अह्वा **(53)** फ़-ग़श्शाहा मा ग़श्शा **(54)** फ़बिअय्यि आला-इ रब्बि-क त-तमारा **(55)** हाज़ा नज़ीरुम् मिनन्-नुज़ुरिल्-ऊला **(56)** अज़ि-फ़तिल्-आज़िफ़ह् **(57)** लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि काशिफ़ह् **(58)** अ-फ़-मिन् हाज़ल्-हदीसि तअ्जबून **(59)** व तज़्हकू-न व ला तब्कून (60) व अन्तुम् सामिदून (61) फ़स्जुदू लिल्लाहि वअ्बुदू ❑ (62) ❖

قال فما خطبكم ٢٧ ۴٧٦ القمر ٥٤

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۞ اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ تَوَلّٰى ۞ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّ
اَكْدٰى ۞ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ۞ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِىْ
صُحُفِ مُوْسٰى ۞ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰٓى ۞ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ
اُخْرٰى ۞ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ۞ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ
يُرٰى ۞ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۞ وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۞ وَ
اَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۞ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۞ وَاَنَّهٗ خَلَقَ
الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۞ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۞ وَاَنَّ عَلَيْهِ
النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۞ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۞ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ
الشِّعْرٰى ۞ وَاَنَّهٗ اَهْلَكَ عَادَا الْاُوْلٰى ۞ وَثَمُوْدَا فَمَا اَبْقٰى ۞ وَقَوْمَ
نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۞ وَالْمُؤْتَفِكَةَ
اَهْوٰى ۞ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۞ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ۞ هٰذَا
نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ۞ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۞ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ۞ اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۞ وَتَضْحَكُوْنَ وَ
لَا تَبْكُوْنَ ۞ وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ۞ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۞

سورة القمر مكية بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۞ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا

منزل

54 सूरतुल् क़-मरि 37

इस सूरः में अ़रबी के 1482 अक्षर, 348 शब्द, 55 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इक़्त-र-बतिस्सा-अ़तु वन्शक़्क़ल्-क़मर् **(1)** व इंय्यरौ आ-यतंय्-युअ़्रिज़ू व यक़ूलू

❑ सज्दा 12 ❖ रु. 3/30/7

तो भला आपने ऐसे शख़्स को भी देखा जिसने (दीने हक़ से) मुँह मोड़ लिया **(33)** और थोड़ा माल दिया[1] और (फिर) बन्द कर दिया। **(34)** क्या उस शख़्स के पास (किसी सही ज़रिए से) ग़ैब का इल्म है कि उसको देख रहा है। **(35)** क्या उसको उस मज़मून की ख़बर नहीं पहुँची जो मूसा के सहीफ़ों में है **(36)** और तथा इब्राहीम (अ़लैहि.) के, जिन्होंने अहकाम पर पूरी तरह अ़मल किया। **(37)** (और वह मज़मून) यह (है) कि कोई शख़्स किसी का गुनाह अपने ऊपर नहीं ले सकता। **(38)** और यह कि इनसान को (ईमान के बारे में) सिर्फ़ अपनी ही कमाई मिलेगी। **(39)** और यह कि इनसान की कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी। **(40)** फिर उसको पूरा बदला दिया जाएगा। **(41)** और यह कि (सबको) आपके रब ही के पास पहुँचना है। **(42)** और यह कि वही हँसाता है और रुलाता है। **(43)** और यह कि वही मारता है और जिलाता है। **(44)** और यह कि वही दोनों क़िस्म यानी नर और मादा को बनाता है **(45)** नुत्फ़े से, जब वह (गर्भ में) डाला जाता है। **(46)** और यह कि (वायदे के मुताबिक़) दोबारा पैदा करना उसके ज़िम्मे है। **(47)** और यह कि वही मालदार करता है और सरमाया (देकर महफ़ूज़ और) बाक़ी रखता है। **(48)** और यह कि वही मालिक है शिअ़्रा (सितारे) का भी[2] **(49)** और यह कि उसने पुरानी क़ौम आ़द को (उसके कुफ़्र की वजह से) हलाक किया[3] **(50)** और समूद को भी, कि (उनमें से) किसी को बाक़ी न छोड़ा। **(51)** और उनसे पहले नूह की क़ौम को (हलाक किया) बेशक वे सबसे बढ़कर ज़ालिम और शरीर थे। **(52)** और उल्टी हुई बस्तियों को भी फेंक दिया। **(53)** (और फिर उन बस्तियों को) घेर लिया, जिस चीज़ ने कि घेर लिया। **(54)** सो तू अपने रब की कौन-कौन-सी नेमत में शक (और इनकार) करता रहेगा? **(55)** यह (पैग़म्बर) भी पहले पैग़म्बरों की तरह एक पैग़म्बर हैं। **(56)** (इनको मान लो क्योंकि) वह जल्दी आने वाली चीज़ क़रीब आ पहुँची है। **(57)** अल्लाह तआ़ला के अ़लावा कोई उसका हटाने वाला नहीं। **(58)** सो क्या (ऐसी ख़ौफ़ की बातें सुनकर भी) तुम लोग इस (अल्लाह के) कलाम से ताज्जुब करते हो **(59)** और हँसते हो? और (अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से) रोते नहीं हो? **(60)** और तुम तकब्बुर करते हो। **(61)** सो अल्लाह की इताअ़त करो और (किसी को उसका शरीक बनाए बग़ैर उसकी) इबादत करो। ❑ **(62)** ❖

54 सूरः क़मर 37

सूरः क़मर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 55 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़ियामत नज़दीक आ पहुँची और चाँद फट गया।[4] **(1)** और ये लोग अगर कोई मोजिज़ा देखते हैं तो टाल देते हैं और कहते हैं कि यह जादू है जो अभी ख़त्म हुआ जाता है। **(2)** उन लोगों ने झुठलाया और

(पिछले पृष्ठ का शेष) मैं तुम्हारा अन्जाम देखता हूँ। इसमें इशारे के तौर पर पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है कि मेरा अन्जाम कामयाबी है और तुम्हारा अन्जाम घाटा और नाकामी। यह मक़सूद नहीं कि तुम मरोगे और मैं नहीं मरूँगा, बल्कि उन लोगों का इससे जो मक़सूद था कि इनका दीन नहीं चलेगा, यह मर जाएँगे और दीन मिट जाएगा, जवाब में इसका रद्द मक़सूद है। चुनाँचे ऐसे ही हुआ।

5. उनके अ़क्ल का दावेदार होने पर उनका यह क़ौल दलालत करता है कि अगर दीने इस्लाम में कोई ख़ैर और अच्छाई होती तो अदना तबक़े के लोग इस्लाम लाने में हमसे आगे न बढ़ जाते। क़ुरैश के सरदार दूसरे लोगों में अ़क्ल और समझ वाले मशहूर थे, पस इस आयत में उनकी अ़क्ल की हालत दिखलाई गई है कि बस तुम्हारी यही अ़क्ल है जो ऐसी तालीम दे रही है? और अगर यह अ़क्ल की तालीम नहीं तो ख़ालिस शरारत और ज़िद है।

(तफ़सीर पृष्ठ 948) 1. यानी काफ़िर लोग जो बड़ी पुख़्तगी और इस्तिक़लाल के साथ कहा करते हैं कि क़ियामत हरगिज़ आएगी ही नहीं, और अगर आई भी तो हमको अ़ज़ाब हरगिज़ न होगा। क्या उनके पास लौहे-महफ़ूज़ मौजूद है जिससे ग़ैब की चीज़ों को देखकर इस ज़ोर और पुख़्तगी से **(पृष्ठ 948 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 950, 952 की तफ़सीर पृष्ठ 954-966 पर)**

सिह्रुम्-मुस्तमिर्र (2) व कज़्ज़बू वत्त-बअू अह्वा-अहुम् व कुल्लु अम्रिम्-मुस्तक़िर्र (3) व ल-क़द् जा-अहुम् मिनल्-अम्बा-इ मा फ़ीहि मुज़्-दजर् (4) हिक्मतुम् बालि-ग़तुन् फ़मा तुग़्निन्-नुज़ुर (5) फ़-तवल्-ल अ़न्हुम् ✣ यौ-म यद्अुद्-दाअि इला शैइन्-नुकुर (6) ख़ुश्श-अ़न् अब्सारुहुम् यख़्रुजू-न मिनल्-अज्दासि क-अन्नहुम् जरादुम्-मुन्तशिर (7) मुह्तिअ़ी-न इलद्-दाअि, यक़ूलुल्-काफ़िरू-न हाज़ा यौमुन् अ़सिर (8) कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिन् फ़-कज़्ज़बू अ़ब्-दना व क़ालू मज्नूनुंव्-वज़्दुजिर (9) फ़-दअ़ा रब्बहू अन्नी मग़्लूबुन् फ़न्तसिर (10) फ़-फ़तह्ना अब्वाबस्-समा-इ बिमाइम्-मुन्हमिर (11) व फ़ज्जर्नल्-अर्-ज़ अ़ुयूनन् फ़ल्तक़ल्-मा-उ अ़ला अम्रिन् क़द् क़ुदिर (12) व हमल्नाहु अ़ला ज़ाति अल्वाहिंव्-व दुसुर (13) तज्री बि-अअ़्युनिना जज़ाअल्-लिमन् का-न कुफ़िर (14) व लक़त्त-रक्नाहा आ-यतन् फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (15) फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (16) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (17) कज़्ज़बत् आ़दुन् फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (18) इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्-सरन् फ़ी यौमि नह्सिम्-मुस्तमिर्र (19) तन्ज़िअ़ुन्ना-स क-अन्नहुम् अअ़्जाज़ु नख़्लिम्-मुन्क़अ़िर (20) फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (21) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (22) ❖

सحر مستمر ۝ وكذبوا واتبعوا أهواءهم وكل أمر مستقر ۝
ولقد جاءهم من الأنباء ما فيه مزدجر ۝ حكمة بالغة فما
تغن النذر ۝ فتول عنهم يوم يدع الداع إلى شيء نكر ۝
خشعا أبصارهم يخرجون من الأجداث كأنهم جراد
منتشر ۝ مهطعين إلى الداع يقول الكافرون هذا يوم عسر ۝
كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر ۝
فدعا ربه أني مغلوب فانتصر ۝ ففتحنا أبواب السماء بماء
منهمر ۝ وفجرنا الأرض عيونا فالتقى الماء على أمر قد
قدر ۝ وحملناه على ذات ألواح ودسر ۝ تجري بأعيننا جزاء
لمن كان كفر ۝ ولقد تركناها آية فهل من مدكر ۝ فكيف
كان عذابي ونذر ۝ ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من
مدكر ۝ كذبت عاد فكيف كان عذابي ونذر ۝ إنا أرسلنا
عليهم ريحا صرصرا في يوم نحس مستمر ۝ تنزع الناس
كأنهم أعجاز نخل منقعر ۝ فكيف كان عذابي ونذر ۝ و
لقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر ۝ كذبت ثمود بالنذر ۝
فقالوا أبشرا منا واحدا نتبعه إنا إذا لفي ضلال وسعر ۝ أألقي

कज़्ज़बत् समूदु बिन्नुज़ुर (23) फ़क़ालू अ-ब-शरम् मिन्ना वाहिदन् नत्तबिअ़ुहू इन्ना इज़ल्-लफ़ी ज़लालिंव्-व सुअ़ुर (24) अ-उल्क़ि-यज़्ज़िक्रु अ़लैहि मिम्बैनिना बल् हु-व

अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों की पैरवी की, और हर बात को क़रार आ जाता है। **(3)** और उन लोगों के पास (तो पहले गुज़री हुई उम्मतों की भी) ख़बरें इतनी पहुँच चुकी हैं कि उनमें (काफ़ी) इबरत **(4)** यानी आला दर्जे की समझ और अक़्लमन्दी (हासिल हो सकती) है। सो (उनकी कैफ़ियत यह है कि) ख़ौफ़ दिलाने वाली चीज़ें उनको कुछ फ़ायदा ही नहीं देतीं। **(5)** तो आप उनकी तरफ़ से कुछ ख़्याल न कीजिए। जिस दिन एक बुलाने वाला फ़रिश्ता (उनको) एक ना-पसन्दीदा चीज़ की तरफ़ बुलाएगा **(6)** उनकी आँखें (ज़िल्लत की वजह से) झुकी हुई होंगी (और) क़ब्रों से इस तरह निकल रहे होंगे जैसे टिड्डियाँ फैल जाती हैं। **(7)** (और फिर निकलकर) बुलाने वाले की तरफ़ दौड़े चले जा रहे होंगे। काफ़िर कहते होंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है। **(8)** उन लोगों से पहले नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम ने झुठलाया, यानी हमारे (ख़ास) बन्दे (नूह अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया और कहा कि यह मजनूँ है, और नूह (अ़लैहिस्सलाम) को धमकी दी गई। **(9)** तो नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने रब से दुआ़ की कि मैं आ़जिज़ हूँ सो आप (इनसे) इन्तिक़ाम लीजिए। **(10)** पस हमने कसरत से बरसने वाले पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिए **(11)** और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, फिर (आसमान और ज़मीन का) पानी उस काम के (पूरा होने के) लिए मिल गया जो (अल्लाह के इल्म में) तजवीज़ हो चुका था। **(12)** और हमने नूह (अ़लैहिस्सलाम) को (मोमिनों के साथ) सवार किया तख़्तों और मेख़ों वाली कश्ती पर **(13)** जो कि हमारी निगरानी में चल रही थी। यह सब कुछ उस शख़्स का बदला लेने के लिए किया जिसकी बेक़द्री की गई थी।[1] **(14)** और हमने इस वाक़िए को इबरत के वास्ते रहने दिया, क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? **(15)** फिर (देखो) मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना कैसा हुआ। **(16)** और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है,[2] सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? **(17)** आ़द ने (भी अपने पैग़म्बर को) झुठलाया। सो (उसका क़िस्सा सुनो कि) मेरा अ़ज़ाब और डराना कैसा हुआ। **(18)** हमने उनपर एक तेज़ हवा भेजी, एक हमेशा रहने वाले नहूसत के दिन में।[3] **(19)** वह हवा लोगों को इस तरह उखाड़-उखाड़ फेंकती थी कि गोया वे उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं। **(20)** सो (देखो) मेरा अ़ज़ाब और डराना कैसा (हौलनाक) हुआ। **(21)** और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? **(22)** ❖

समूद ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया **(23)** और कहने लगे, क्या हम ऐसे शख़्स की पैरवी करेंगे जो हमारी जिन्स का आदमी है और अकेला है, तो इस सूरत में हम बड़ी ग़लती और (बल्कि) पागलपन में पड़ जाएँ। **(24)** क्या हम सबमें से (चुनकर) उसपर वह्य नाज़िल हुई है, (हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि यह बड़ा झूठा

(पिछले पृष्ठ का शेष) अपने कलाम को सच्चा साबित करना चाहते हैं।

2. यानी उनकी सरकशी, कुफ़्र और दुश्मनी यहाँ तक बढ़ गई है कि अगर हम उनपर अ़ज़ाब नाज़िल करें और आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें, तब भी तो न डरें, बल्कि कहें कि यह तो बादल है चन्द टुकड़े ऊपर नीचे तह-ब-तह जमा होकर गाढ़े और गहरे बादल की सूरत में बारिश बरसाने को ज़ाहिर हुआ है।

3. यानी क़ियामत के दिन से पहले भी उनको एक और अ़ज़ाब होना है कि वह क़ब्र का अ़ज़ाब है। या दुनियावी अ़ज़ाब यानी सात साल का क़हत और बद्र की लड़ाई में ज़िल्लत के साथ मुसलमानों के हाथों क़त्ल होना।

4. जब सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जिबराईल अ़लैहिस्सलाम के ज़रिए से वह्य आनी शुरू हुई, आपने नबी बनने के बाद ऐलानिया अपने रसूल होने का दावा किया तो मक्का के काफ़िरों ने अपनी ज़ाती ग़रज़ों की वजह से बुरा-भला कहना शुरू किया और कहा अफ़सोस! मुहम्मद ने अपने बाप-दादा के दीन से बरगश्ता होकर एक नया दीन घड़ लिया है। तो उस वक़्त ये आयतें नाज़िल हुईं। और सितारे से या तो सुरैया मुराद है या आ़म है, यानी सितारा कि जब वह छुपने लगे, यानी जबकि वह ग़ुरूब होता है या जबकि क़ियामत के दिन टूट पड़ेगा।

5. इस क़सम में नज़ीर है क़सम के जवाब के मज़मून "मा ज़ल्-ल व मा ग़वा" की। यानी जिस तरह सितारा निकलने से छुपने तक उस पूरी की पूरी दूरी और सफ़र में **(पृष्ठ 948 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 950, 952, 954 की तफ़सीर पृष्ठ 956-968 पर)**

कज़्ज़ाबुन् अशिर (25) स-यअ्लमू-न ग़दम्- मनिल्-कज़्ज़ाबुल्-अशिर (26) इन्ना मुर्सिलुन्ना-क़ति फ़ित्न-तल्-लहुम् फ़र्तक़िब्हुम् वस्तबिर (27) व नब्बिअ्हुम् अन्नल्-मा-अ क़िस्मतुम्-बैनहुम् कुल्लु शिर्बिम्-मुह्त-ज़र (28) फ़नादौ साहि-बहुम् फ़-तआता फ़-अ़क़र (29) फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (30) इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् सै-हतंव्-वाहि-दतन् फ़कानू क-हशीमिल्-मुह्तज़िर (31) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (32) कज़्ज़बत् क़ौमु लूतिम्-बिन्नुज़ुर (33) इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् हासिबन् इल्ला आ-ल लूतिन्, नज्जैनाहुम् बि-स-हर (34) निअ्-मतम्-मिन् अ़िन्दिना, कज़ालि-क नज्ज़ी मन् शकर् (35) व ल-क़द् अन्ज़-रहुम् बत्श-तना फ़-तमारौ बिन्नुज़ुर (36) व ल-क़द् रा-वदूहु अ़न् ज़ैफ़िही फ़-तमस्ना अअ्यु-नहुम् फ़ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर (37) व ल-क़द् सब्ब-हहुम् बुक्र-तन् अ़ज़ाबुम् मुस्तक़िर्र (38) फ़ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर (39) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (40) ❖

व ल-क़द् जा-अ आ-ल फ़िर्औनन्-नुज़ुर (41) कज़्ज़बू बिआयातिना कुल्लिहा फ़-अख़ज़्नाहुम् अख़्-ज़ अ़ज़ीज़िम्-मुक़्तदिर (42) अ-कुफ़्फ़ारुकुम् ख़ैरुम्-मिन् उलाइकुम् अम् लकुम् बरा-अतुन् फ़िज़्ज़ुबुर (43) अम् यक़ूलू-न नह्नु जमीअुम्-मुन्तसिर (44) सयुह्ज़-मुल् जम्अु व युवल्लूनद्-दुबुर (45) बलिस्सा-अ़तु मौअ़िदुहुम् वस्सा-अ़तु अद्हा व अमर्र (46) इन्नल्- मुज्रिमी-न फ़ी ज़लालिंव्-व सुअ़ुर ⁜ (47) यौ-म युस्हबू-न फ़िन्नारि अ़ला वुजूहिहिम्, ज़ूक़ू मस्-स सक़र् (48) इन्ना कुल्-ल

قال فما خطبكم ٢٧ ٤٧٨ القمر ٥٤

الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝ سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ
الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ۝ إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ
وَاصْطَبِرْ ۝ وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝
فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝
إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ
بِالنُّذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ۝
نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم
بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا
أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ
مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ
فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا
فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولَٰئِكُمْ أَمْ لَكُم
بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ
الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ
وَأَمَرُّ ۝ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي

منزل

❖ रु. 2/18/9 ⁜ व. लाज़िम

और बड़ा शैख़ीबाज़ है। **(25)** उनको बहुत जल्दी (मरते ही) मालूम हो जाएगा कि झूठा (और) शैख़ीबाज़ कौन था? **(26)** हम ऊँटनी को निकालने वाले हैं उनकी आज़माइश के लिए, सो उनको देखते-भालते रहना और सब्र से बैठे रहना। **(27)** और उन लोगों को यह बतला देना कि (कुएँ का) पानी उनमें बाँट दिया गया है, हर एक बारी पर बारी वाला हाज़िर हुआ करेगा।[1] **(28)** सो उन्होंने अपने साथी (क़ेदार) को बुलाया, सो उसने (ऊँटनी पर) वार किया और मार डाला।[2] **(29)** सो (देखो) मेरा अ़ज़ाब और डराना कैसा हुआ। **(30)** हमने उनपर (फ़रिश्ते की) एक ही चीख़ को मुसल्लत किया, सो वे (उससे) ऐसे हो गए जैसे काँटों की बाढ़ लगाने वाले (की बाढ़) का चूरा।[3] **(31)** और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? **(32)** लूत की क़ौम ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया। **(33)** हमने उनपर पत्थरों की बारिश बरसाई, सिवाय लूत (अ़लैहि.) के मुताल्लिक़ीन के। (यानी मोमिनों के अ़लावा) कि उनको रात के आख़िरी हिस्से में बचा लिया गया **(34)** अपनी ओर से फ़ज़्ल करके। जो शुक्र करता है हम उसे ऐसा ही सिला दिया करते हैं। **(35)** और (अ़ज़ाब आने से पहले) लूत (अ़लैहिस्सलाम) ने उनको हमारी पकड़ से डराया था, उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किए। **(36)** और उन लोगों ने लूत से उनके मेहमानों को बुरे इरादे से लेना चाहा[4] सो हमने उनकी आँखें चौपट कर दीं कि लो मेरे अ़ज़ाब और डराने का मज़ा चखो। **(37)** (यह तो उस वक़्त वाक़िआ़ हुआ) और (फिर) सुबह सवेरे उनपर हमेशगी का अ़ज़ाब आ पहुँचा। **(38)** (और इर्शाद हुआ) कि लो मेरे अ़ज़ाब और डराने का मज़ा चखो। **(39)** और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? **(40)** ◆

और (फ़िरऔ़न और) फ़िरऔ़न वालों के पास भी डराने की बहुत-सी चीज़ें पहुँचीं।[5] **(41)** उन लोगों ने हमारी (उन) तमाम निशानियों को झुठलाया, सो हमने उनको ज़बरदस्त क़ुदरत का पकड़ना पकड़ा। **(42)** क्या तुममें जो काफ़िर हैं उनमें इन (ज़िक्र हुए) लोगों से कुछ फ़ज़ीलत है, या तुम्हारे लिए (आसमानी) किताबों में कोई माफ़ी है? **(43)** या ये लोग कहते हैं कि हमारी ऐसी जमाअ़त है जो ग़ालिब ही रहेंगे। **(44)** जल्द ही (उनकी) यह जमाअ़त शिकस्त खाएगी और पीठ फेरकर भागेंगे।[6] **(45)** बल्कि क़ियामत उनका (असल) वायदा है, और क़ियामत बड़ी सख़्त और नागवार चीज़ है। **(46)** ये मुजरिम लोग (यानी काफ़िर) बड़ी ग़लती और बेअ़क़्ली में हैं। **(47)** जिस दिन ये लोग अपने मुहों के बल जहन्नम में घसीटे जाएँगे तो इनसे कहा जाएगा कि

(पिछले पृष्ठ का शेष) अपनी बाक़ायदा रफ़्तार से इधर-उधर नहीं हुआ इसी तरह आप अपनी उम्र में गुमराही और ग़लत रास्ते पर जाने से महफ़ूज़ हैं। इसमें साथ ही इस तरफ़ भी इशारा है कि जैसे सितारे से रोशनी देने और रहनुमाई करने का अ़मल होता है इसी तरह आपसे भी हिदायत व रहनुमाई का अ़मल होता है, इस वजह से कि आप गुमराही और हक़ रास्ते से हटने से महफ़ूज़ हैं।

फ़ायदाः 'ज़लाल' यह कि बिलकुल रास्ता भूलकर खड़ा रह जाए, और 'ग़वायत' यह कि ग़लत राह को राह समझकर चलता रहे।

6. वह्य आ़म है चाहे अल्फ़ाज़ की भी हो जिसे क़ुरआन कहते हैं, चाहे सिर्फ़ मायनों की जो सुन्नत कहलाती है। और चाहे वह्य आंशिक हो या किसी क़ायदा-ए-कुल्लिया की वह्य हो जिससे आप इज्तिहाद फ़रमाते हों। इन अल्फ़ाज़ से असल मक़सद काफ़िरों के ख़्याल का इनकार है। यानी आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुदा की तरफ़ ग़लत बात की निस्बत नहीं करते।

7. जिबराईल अ़लैहिस्सलाम की ताक़त का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि क़ौमे लूत की बस्तियाँ एक बाज़ू पर तहतुस्सरा से उठाकर उलट मारीं और एक ही चिंघाड़ से क़ौमे समूद के जिगर फाड़ दिए।

8. जिबराईल अ़लैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास दह्या कलबी नाम के एक सहाबी की शक्ल में आया करते थे जो बहुत हसीन व ख़ूबसूरत थे। एक बार आपने जिबराईल अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया कि मैं तुम्हें तुम्हारी असल सूरत में भी देखना चाहता हूँ। सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हिरा में थे कि हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम सूरज के निकलने की जगह पर आसमान के किनारे पर ज़ाहिर हुए। छह सौ पर थे और क़द और जिस्म और परों ने आसमान के दोनों किनारे छुपा रखे थे।

9. अ़रब वालों की आ़दत थी कि जब दो शख़्स आपस में इन्तिहाई दर्जे का इत्तिफ़ाक़ और एकता करना चाहते तो दोनों अपनी-अपनी कमानें लेकर उनकी ताँत को **(पृष्ठ 948 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 950, 952, 954, 956 की तफ़सीर पृष्ठ 958-970 पर)**

शैइन् ख़लक़्नाहु बि-क़-दर (49) व मा अम्रुना इल्ला वाहि-दतुन् क-लम्हिम्-बिल्ब-सर (50) व ल-क़द् अह्लक्ना अश्या-अ़कुम् फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (51) व कुल्लु शैइन् फ़-अ़लूहु फ़िज़्ज़ुबुर (52) व कुल्लु सग़ीरिंव्-व कबीरिम्-मुस्त-तर (53) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व न-हर (54) फ़ी मक़्अ़दि सिद्क़िन् अ़िन्-द मलीकिम्-मुक़्तदिर (55) ❖

55 सूरतुर्-रह्मानि 97

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1683 अक्षर, 351 शब्द, 78 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अर्रह्मानु (1) अ़ल्ल-मल्-क़ुर्आन (2) ख़-लक़ल्-इन्सा-न (3) अ़ल्ल-म-हुल्-बयान (4) अश्शम्सु वल्क़-मरु बिहुस्बानिंव्- (5) -वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान (6) वस्समा-अ र-फ़-अ़हा व व-ज़अ़ल्-मीज़ान (7) अल्ला ततग़ौ फ़िल्मीज़ान (8) व अक़ीमुल्-वज़्-न बिल्क़िस्ति व ला तुख़्सिरुल्-मीज़ान (9) वल्अर्-ज़ व-ज़-अ़हा लिल्-अनाम (10) फ़ीहा फ़ाकि-हतुंव्-वन्नख़्लु ज़ातुल् अक्माम (11) वल्हब्बु ज़ुल्-अ़स्फ़ वर्-रैहान (12) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (13) ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिन् कल्-फ़ख़्ख़ार (14) व ख़-लक़ल्-जान्-न मिम्-मारिजिम्-मिन्-नार (15) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (16) रब्बुल्-मश्रिक़ैनि व रब्बुल्-मग़्रिबैन (17) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (18) म-रजल्-बहरैनि यल्तक़ियान (19) बैनहुमा बर्-ज़ख़ुल्-ला यब्ग़ियान (20) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (21)

النار على وجوههم ذوقوا مس سقر ۝ انا كل شيء خلقنه
بقدر ۝ وما امرنا الا واحدة كلمح بالبصر ۝ ولقد اهلكنا
اشياعكم فهل من مدكر ۝ وكل شيء فعلوه في الزبر ۝ و
كل صغير وكبير مستطر ۝ ان المتقين في جنت ونهر ۝
في مقعد صدق عند مليك مقتدر ۝

سورة الرحمن مدنية ... بسم الله الرحمن الرحيم ... وسبعون اية ...

الرحمن ۝ علم القران ۝ خلق الانسان ۝ علمه البيان ۝
الشمس والقمر بحسبان ۝ والنجم والشجر يسجدن ۝ والسماء
رفعها ووضع الميزان ۝ الا تطغوا في الميزان ۝ واقيموا
الوزن بالقسط ولا تخسروا الميزان ۝ والارض وضعها للانام ۝
فيها فاكهة ۝ والنخل ذات الاكمام ۝ والحب ذو العصف
والريحان ۝ فباي الاء ربكما تكذبن ۝ خلق الانسان من
صلصال كالفخار ۝ وخلق الجان من مارج من نار ۝ فباي
الاء ربكما تكذبن ۝ رب المشرقين ورب المغربين ۝ فباي
الاء ربكما تكذبن ۝ مرج البحرين يلتقين ۝ بينهما برزخ
لا يبغين ۝ فباي الاء ربكما تكذبن ۝ يخرج منهما اللؤلؤ

दोज़ख़ (की आग) के लगने का मज़ा चखो। (48) हमने हर चीज़ को अन्दाज़े से पैदा किया।[1] (49) और हमारा हुक्म एक ही बार में ऐसा हो जाएगा जैसे आँख का झपकाना। (50) और हम तुम्हारे ही तरीक़े वाले जैसे लोगों को हलाक कर चुके हैं, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है? (51) और जो कुछ भी ये लोग करते हैं सब कुछ आमालनामों में (भी लिखा हुआ) है। (52) और हर छोटी बड़ी बात (उसमें) लिखी हुई है। (53) परहेज़गार लोग बाग़ों में और नहरों में होंगे। (54) एक उम्दा मक़ाम में क़ुदरत वाले बादशाह के पास। (55) ◆

55 सूरः रहमान 97

सूरः रहमान मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 78 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

रहमान ने (1) क़ुरआन की तालीम दी। (2) उसने इनसान को पैदा किया। (3) (फिर) उसको बोलना सिखाया। (4) सूरज और चाँद हिसाब के साथ (चलते) हैं। (5) और बग़ैर तने के पेड़ और तनेदार पेड़ (अल्लाह के) फ़रमाँबरदार हैं। (6) और उसी ने आसमान को ऊँचा किया, और उसी ने (दुनिया में) तराज़ू रख दी (7) ताकि तुम तौलने में कमी-बेशी न करो (8) और इन्साफ़ (और हक़ पहुँचाने) के साथ वज़न को ठीक रखो और तौल को घटाओ मत। (9) और उसी ने मख़्लूक़ के वास्ते ज़मीन को (उसकी जगह) रख दिया (10) कि उसमें मेवे हैं, और खजूर के पेड़ हैं जिन (के फल) पर ग़िलाफ़ होता है। (11) और (उसमें) ग़ल्ला है जिनमें भूसा (भी) होता है[2] और (उसमें) ग़िज़ा की चीज़ (भी) है। (12) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे?[3] (13) उसी ने इनसान (की असल यानी आदम अ़लैहिस्सलाम) को ऐसी मिट्टी से पैदा किया जो ठीकरे की तरह बजती थी। (14) और जिन्नात को ख़ालिस आग से पैदा किया।[4] (15) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (16) वह दोनों पूरब और दोनों पश्चिम का मालिक है।[5] (17) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? (18) उसी ने दो दरियाओं को (देखने में) मिलाया कि (ज़ाहिर में) आपस में मिले हुए हैं (19) (और हक़ीक़त में) उन दोनों के दरमियान में एक (क़ुदरती) पर्दा है कि दोनों बढ़ नहीं सकते।[6] (20) सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की

(पिछले पृष्ठ का शेष) आपस में मिला देते, पस दो कमानों का फ़ासला रह जाना निकटता और इत्तिहाद से इशारा होगा।

10. इससे इस तरफ़ इशारा है कि ज़ाहिरी निकटता और ताल्लुक़ के अ़लावा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम में रूहानी मुनासबत भी थी।

11. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिबराईल अ़लैहिस्सलाम को 'शबे मेराज' में दूसरी बार 'सिद्रतुल मुन्तहा' के पास उनकी असल सूरत में देखा था। 'सिदरा' अ़रबी में बेरी के पेड़ को कहते हैं। 'सिद्रतुल मुन्तहा' सातवें आसमान पर बेरी का एक पेड़ है, फ़रिश्तों के पहुँचने की वहीं तक सीमा है।

12. एक रिवायत में है कि ऐसे अच्छे रंग वाले सुनहरे परवाने थे कि जिनके देखने से दिल खिँचा जाए। और दूसरी रिवायत में है कि फ़रिश्ते थे यानी उनकी हक़ीक़त यह थी।

13. बल्कि उन चीज़ों को ख़ूब देखा। और जिन चीज़ों के देखने का हुक्म जब तक न हुआ उनकी तरफ़ देखने को आपकी निगाह न बढ़ी, यानी उनको इजाज़त से पहले नहीं देखा। यह आपके हद दर्जा इस्तिक़लाल की दलील है क्योंकि इनसान अ़जीब चीज़ों से हैरान होकर उन चीज़ों को देखता नहीं **(पृष्ठ 948 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 950, 952, 954, 956, 958 की तफ़सीर पृष्ठ 960-972 पर)**

यख़्रुजु मिन्हुमल्-लुअ्लुउ वल्-मर्जान (22) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (23) व लहुल्-जवारिल्-मुन्श-आतु फ़िल्बह्रि कल्-अअ्लाम ● (24) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (25) ❖

कुल्लु मन् अ़लैहा फ़ानिंव्- (26) -व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुल्-जलालि वल्-इक्राम (27) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (28) यस्अलुहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्-ल यौमिन् हु-व फ़ी शअ्निन् (29) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (30) स-नफ़्रुग़ु लकुम् अय्युहस्स-क़लान (31) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (32) या मअ्-शरल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअ्तुम् अन् तन्फ़ुज़ू मिन् अक़्तारिस्समावाति वल्अर्ज़ि फ़न्फ़ुज़ू, ला तन्फ़ुज़ू-न इल्ला बिसुल्तान (33) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (34) युर्-सलु अ़लैकुमा शुवाज़ुम्-मिन्-नारिंव्-व नुहासुन् फ़ला तन्तसिरान (35) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (36) फ़-इज़न् शक़्क़तिस्समा-उ फ़-कानत् वर्-दतन् कद्दिहान (37) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (38) फ़यौमइज़िल्-ला युस्अलु अ़न् ज़म्बिही इन्सुंव्-व ला जान्न (39) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (40) युअ्-रफ़ुल्-मुज्रिमू-न बिसीमाहुम् फ़युअ्-ख़ज़ु बिन्नवासी वल्-अक़्दाम (41) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (42) हाज़िही जहन्नमुल्लती युकज़्ज़िबु बिहल्-मुज्रिमून ✣ (43) यतूफ़ू-न बैनहा व बै-न हमीमिन् आन (44) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (45) ❖

قال فما خطبكم ٢٧ — ٧٨٠ — الرحمن ٥٥

وَالْمَرْجَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَآتُ
فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ كُلُّ مَنْ
عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلَّ يَوْمٍ
هُوَ فِي شَأْنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ
الثَّقَلَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ
إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ
لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ
عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِنْ نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ
وَلَا جَانٌّ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ
بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ۝ يَطُوفُونَ
بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ وَلِمَنْ خَافَ
مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۝

منزل ٧

कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(21)** उन दोनों से मोती और मोंगा बरामद होता है। **(22)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(23)** उसी के (इख़्तियार और मिल्क में) हैं जहाज़ जो पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े (नज़र आते) हैं। ● **(24)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(25)** ❖

जितने (जानदार) रू-ए-ज़मीन पर मौजूद हैं सब फ़ना हो जाएँगे।[1] **(26)** और (सिर्फ़) आपके परवर्दिगार की ज़ात जो कि बड़ाई (वाली) और एहसान वाली है बाक़ी रह जाएगी। **(27)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(28)** उसी से (अपनी-अपनी ज़रूरतें) सब आसमान और ज़मीन वाले माँगते हैं, वह हर वक़्त किसी-न-किसी काम में रहता है।[2] **(29)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(30)** ऐ जिन्नात और इनसानो! हम जल्द ही तुम्हारे (हिसाब व किताब के) लिए ख़ाली हुए जाते हैं।[3] **(31)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(32)** ऐ जिन्नात और इनसानों के गिरोह! अगर तुमको यह क़ुदरत है कि आसमान और ज़मीन की हदों से कहीं बाहर निकल जाओ तो (हम भी देखें) निकलो, मगर बग़ैर ज़ोर के नहीं निकल सकते, (और ज़ोर है नहीं, पस निकलने का सवाल ही पैदा नहीं होता)। **(33)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(34)** तुम दोनों पर (क़ियामत के दिन) आग का शोला और धुआँ छोड़ा जाएगा, फिर तुम (उसको) हटा न सकोगे।[4] **(35)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(36)** ग़रज़ जब (क़ियामत आएगी जिसमें) आसमान फट जाएगा और ऐसा सुर्ख़ हो जाएगा जैसे सुर्ख़ नरी (यानी चमड़ा) **(37)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(38)** तो उस दिन (अल्लाह के मालूम करने के लिए) किसी इनसान और जिन्न से उसके जुर्म के मुताल्लिक़ न पूछा जाएगा।[5] **(39)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(40)** मुजरिम लोग अपने हुलिये से (कि चेहरे के काला होने और आँखों के नीला होने की वजह से) पहचाने जाएँगे[6] सो (उनके) सर और पाँव पकड़ लिए जाएँगे। **(41)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(42)** यह है वह जहन्नम जिसको मुजरिम लोग झुठलाते थे। **(43)** वे लोग दोज़ख़ के इर्द-गिर्द खौलते हुए पानी के दरमियान घूमते होंगे। **(44)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(45)** ❖

और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से (हर वक़्त) डरता रहता है, उसके लिए (जन्नत में) दो बाग़ होंगे।[7] **(46)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(47)** (और वे) दोनों बाग़ बहुत ज़्यादा शाख़ों वाले होंगे। **(48)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम

(पिछले पृष्ठ का शेष) जिनके देखने को कहा जाता है, और उन चीज़ों को देखता है जिनके देखने की मनाही की गई हो।

(तफ़सीर पृष्ठ 950) 1. वे अ़जूबे मेराज की हदीसों में ज़िक्र किए गए हैं- जैसे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से मुलाक़ात, रूहों को देखना, जन्नत की सैर वग़ैरह। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने सूरः नज्म की इन आयतों की तफ़सीर अल्लाह तआ़ला के दीदार के साथ की है लेकिन मुस्लिम शरीफ़ में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़यशा की रिवायत से इन आयतों की तफ़सीर हज़रत जिबराईल को देखने के साथ खुद सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नक़्ल की गई है। और शुरैक की रिवायत जो बुख़ारी शरीफ़ में है उससे यह शुब्हा पड़ता है कि शायद ये आयतें अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी और क़ुर्ब पर महमूल हों, सो इमाम नववी ने नक़्ल किया है कि शुरैक हाफ़िज़े हदीस नहीं थे।

2. अ़रब में बुत तो बहुत थे, मगर इन तीनों को ख़ास करने की वजह उनका बड़ा और मशहूर होना है। तो इससे जो छोटे बुत थे उनका माबूद होना और **(पृष्ठ 950 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 952, 954, 956, 958, 960 की तफ़सीर पृष्ठ 962-976 पर)**

व लि-मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही जन्नतान (46) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (47) ज़वाता अफ़्नान (48) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (49) फ़ीहिमा ऐनानि तज्रियानि (50) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (51) फ़ीहिमा मिन् कुल्लि फ़ाकि-हतिन् ज़ौजान (52) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (53) मुत्तकिई-न अ़ला फ़ुरुशिम्-बता-इनुहा मिन् इस्तब्-रक़िन्, व जनल्-जन्नतैनि दान (54) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़ि--बान (55) फ़ीहिन्-न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम् यत्मिस्हुन्-न इन्सुन् क़ब्लहुम् व ला जान्न (56) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (57) क-अन्न-हुन्नल्-याक़ूतु वल्-मर्जान (58) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (59) हल् जज़ाउल्-इह्सानि इल्लल्-इह्सान (60) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (61) व मिन् दूनिहिमा जन्नतान (62) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (63) मुद्हाम्मतानि (64) फ़बि-अय्यि आला--इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (65) फ़ीहिमा ऐनानि नज़्ज़ा-ख़तानि (66) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (67) फ़ीहिमा फ़ाकि-हतुंव्-व नख़्लुंव्-व रुम्मान (68) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (69) फ़ीहिन्-न ख़ैरातुन् हिसान (70) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (71) हूरुम्-मक़्सूरातुन् फ़िल्-ख़ियाम (72) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (73) लम् यत्मिस्हुन्-न इन्सुन् क़ब्लहुम् व ला जान्न (74) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (75) मुत्तकिई-न अ़ला रफ़्रफ़िन् ख़ुज़्रिंव्-व अ़ब्क़रिय्यिन् हिसान (76) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (77) तबा-रकस्मु रब्बि-क ज़िल्-जलालि वल्-इक्राम (78) ❖

قال فما خطبكم ٢٧ ٤٨١ الرحمٰن ٥٥

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ
وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ
قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا
عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ
وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ
حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَ
لَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ
خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾
تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

منزل ٧

अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(49)** उन दोनों बाग़ों में दो चश्मे होंगे कि बहते चले जाएँगे। **(50)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे। **(51)** उन दोनों बाग़ों में हर मेवे की दो-दो क़िस्में होंगी। **(52)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(53)** वे लोग तकिया लगाए ऐसे फ़र्शों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम के होंगे,[1] और उन दोनों बाग़ों का फल बहुत नज़दीक होगा। **(54)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(55)** उनमें नीची निगाह वालियाँ (यानी हूरें) होंगी, कि उन (जन्नती) लोगों से पहले उनपर न तो किसी आदमी ने तुसर्रुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। **(56)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(57)** गोया वे याकूत और मरजान हैं। **(58)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(59)** भला हद दर्जा इताअ़त का बदला इनायत के अ़लावा और भी कुछ हो सकता है?[2] **(60)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(61)** और उन दोनों बाग़ों से कम दर्जे में दो बाग़ और हैं। **(62)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(63)** वे दोनों बाग़ गहरे सब्ज़ होंगे।[3] **(64)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(65)** उन दोनों बाग़ों में दो चश्मे होंगे जो कि जोश मारते होंगे। **(66)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(67)** उन दोनों बाग़ों के अन्दर मेवे और खजूरें और अनार होंगे। **(68)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(69)** उनमें अच्छे गुण वाली ख़ूबसूरत औ़रतें होंगी (यानी हूरें)। **(70)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(71)** वे औ़रतें गोरी रंगत की होंगी (और) ख़ेमों में महफ़ूज़ होंगी। **(72)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(73)** (और) इन (जन्नती) लोगों से पहले उनपर न तो किसी आदमी ने तसर्रुफ़ किया होगा और न किसी जिन्न ने। **(74)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(75)** वे लोग हरे नक़्श वाले और अ़जीब ख़ूबसूरत कपड़ों (के फ़र्शों) पर तकिया लगाए बैठे होंगे। **(76)** सो ऐ जिन्न और ऐ इनसान! तुम अपने रब की कौन-कौन-सी नेमतों के इनकारी हो जाओगे? **(77)** बड़ा बरकत वाला नाम है आपके रब का, जो बड़ाई वाला और एहसान वाला है।[4] **(78)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) अच्छी तरह बातिल हो गया।

3. यानी हल्के-हल्के गुनाह अगर कभी-कभार हो जाएँ तो जिस नेक काम करने का यहाँ ज़िक्र है, उसमें उनसे ख़लल नहीं आता।

तंबीहः छोटे गुनाहों को अलग करने का मतलब यह नहीं कि छोटे गुनाह करने की इजाज़त है।

4. गुनाहों में फँसे हुए लोगों को अपने गुनाहों और बुराइयों की तलाफ़ी से हिम्मत न हारना चाहिए। अगर ख़ुदा-ए-ग़फ़ूर चाहे कुफ़्र व शिर्क के सिवा तमाम दूसरे गुनाहों को महज़ अपने फ़ज़्ल से माफ़ कर देता है, तो तलाफ़ी से क्यों माफ़ न करेगा? इसी तरह नेक अ़मल करने वालों को अपने आमाल पर घमण्ड और तकब्बुर न होना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी नेकियों में भी छुपे तौर पर ऐसे ऐब और ख़राबियाँ शामिल हो जाती हैं कि वे नेकियाँ क़ाबिले क़बूल नहीं रहतीं, और अ़मल करने वाले को उस तरफ़ ध्यान न होने से उनकी इत्तिला नहीं होती, लेकिन ख़ुदा-ए-अ़लीम को उनका इल्म होता है। पस ज़ाहिर है कि जब वह नेकी मक़बूल नहीं तो नेकोकार होने का मदार नहीं हो सकती, फिर घमण्ड और बड़ाई कैसी?

(पृष्ठ 950 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 952, 954, 956, 958, 960, 962 की तफ़सीर पृष्ठ 964-977 पर)

56 सूरतुल्-वाक़ि-अ़ति 46

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1768 अक्षर, 384 शब्द, 96 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा व-क़-अ़तिल्-वाक़ि-अ़तु (1) लै-स लिवक़्अ़तिहा काज़िबह् ✣ (2) ख़ाफ़ि-ज़तुर्-राफ़ि-अ़ः (3) इज़ा रुज्जतिल्-अर्ज़ु रज्जंव्-(4) -व बुस्सतिल्-जिबालु बस्सा (5) फ़-कानत् हबा-अम् मुम्-बस्संव-(6) -व कुन्तुम् अज़्वाजन् सलासः (7) फ़-अस्हाबुल्-मैमनति मा अस्हाबुल्-मै-मनः (8) व अस्हाबुल्-मश्-अ-मति मा अस्हाबुल्-मश्-अमः (9) वस्साबिक़ूनस्-साबिक़ून (10) उलाइ-कल्-मुक़र्रबून (11) फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (12) सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन (13) व क़लीलुम् मिनल्-आख़िरीन (14) अ़ला सुरुरिम्-मौज़ूनतिम्- (15) -मुत्तकिई-न अ़लैहा मु-तक़ाबिलीन (16) यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मु-ख़ल्लदून (17) बिअक्वाबिंव्-व अबारी-क़ व कअ्सिम्-मिम्-मअ़ीन (18) ला युसद्-दअू-न अ़न्हा व ला युन्ज़िफ़ून (19) व फ़ाकि-हतिम्-मिम्मा य-तख़य्यरून (20) व लह्मि तैरिम्-मिम्मा यश्तहून (21) व हूरुन् अ़ीन (22) क-अम्सालिल्-लुअ्लुइल्-मक्नून (23) जज़ा-अम् बिमा कानू यअ्मलून (24) ला यस्मअू-न फ़ीहा लग़्वंव्-व ला तअ्सीमा (25) इल्ला क़ीलन् सलामन् सलामा (26) व अस्हाबुल्-यमीनि मा अस्हाबुल्-यमीन (27) फ़ी सिद्रिम्-मख़्ज़ूदिंव्- (28) -व तल्हिम्-मन्ज़ूदिंव्- (29) -व ज़िल्लिम् मम्दूदिंव्- (30) -व माइम्-मस्कूब (31) व फ़ाकि-हतिन् कसी-रतिल्- (32) -ला मक्तू-अ़तिंव्-व ला

الواقعة ٥٦ ٧٨٢ قال فما خطبكم ٢٧

سورة الواقعة مكية وهي ست وتسعون آية وثلث ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ﴿۱﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۘ﴿۲﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۙ﴿۳﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۙ﴿۴﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۙ﴿۵﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۙ﴿۶﴾ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ؕ﴿۷﴾ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ۬ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ؕ﴿۸﴾ وَاَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ۬ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ؕ﴿۹﴾ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۚۙ﴿۱۰﴾ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ﴿۱۱﴾ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۱۲﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿۱۳﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ﴿۱۴﴾ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ﴿۱۵﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿۱۶﴾ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۙ﴿۱۷﴾ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ۬ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ﴿۱۸﴾ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۙ﴿۱۹﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ؕ﴿۲۱﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۙ﴿۲۲﴾ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۚ﴿۲۳﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۙ﴿۲۵﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿۲۶﴾ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ۬ مَاۤ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ؕ﴿۲۷﴾ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۙ﴿۲۸﴾ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۙ﴿۲۹﴾ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۙ﴿۳۰﴾ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۙ﴿۳۱﴾ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۙ﴿۳۲﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۙ﴿۳۳﴾ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ؕ﴿۳۴﴾

منزل ٧

✣ व. लाज़िम

56 सूरः वाक़िअः 46

सूरः वाक़िअः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 96 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब क़ियामत क़ायम होगी। **(1)** जिसके क़ायम होने में कोई झूठ नहीं है। **(2)** तो वह (बाज़ को) पस्त कर देगी (और बाज़ को) बुलन्द कर देगी।[1] **(3)** जबकि ज़मीन को सख़्त ज़लज़ला आएगा। **(4)** और पहाड़ बिलकुल टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे। **(5)** फिर वे मुन्तशिर गुबार हो जाएँगे। **(6)** और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे।[2] **(7)** सो जो दाहिने वाले हैं, वे दाहिने वाले कैसे अच्छे हैं।[3] **(8)** और जो बाएँ वाले हैं, वे बाएँ वाले कैसे बुरे हैं।[4] **(9)** और जो आला दर्जे के हैं वे तो आला ही दर्जे के हैं। **(10)** (और) वे (अल्लाह के साथ) ख़ास निकटता रखने वाले हैं।[5] **(11)** ये (निकटता रखने वाले) लोग आराम के बाग़ों में होंगे। **(12)** उनका एक बड़ा गिरोह तो अगले लोगों में से होगा। **(13)** और थोड़े पिछले लोगों में से होंगे।[6] **(14)** (वे लोग) सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर **(15)** तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे। **(16)** उनके आस-पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे ये चीज़ें लेकर आना-जाना किया करेंगे- **(17)** आबख़ोरे और आफ़ताबे ''यानी ढक्कनदार लोटे और डोंगे'' और ऐसा जामे-शराब जो बहती हुई शराब से भरा जायेगा। **(18)** न उससे उनको सरदर्द होगा और न उससे अक़्ल में फ़तूर आयेगा। **(19)** और मेवे जिनको वे चाहेंगे। **(20)** और परिन्दों का गोश्त जो उनको पसन्दीदा होगा **(21)** और (उनके लिए) गोरी-गोरी बड़ी-बड़ी आँखों वाली औ़रतें होंगी (यानी हूरें)। **(22)** जैसे (हिफ़ाज़त से) छुपाकर रखा हुआ मोती। **(23)** यह उनके आमाल के बदले में मिलेगा। **(24)** (और) वहाँ न बक-बक सुनेंगे और न कोई (और) बेहूदा बात। **(25)** बस (हर तरफ़ से) सलाम की आवाज़ आएगी। **(26)** और जो दाहिने वाले हैं, वे दाहिने वाले कैसे अच्छे हैं।[7] **(27)** वे उन बाग़ों में होंगे जहाँ बग़ैर काँटों की बेरियाँ होंगी **(28)** और तह-ब-तह केले होंगे। **(29)** और लम्बा-लम्बा साया होगा। **(30)** और चलता हुआ पानी होगा। **(31)** और कसरत से मेवे होंगे। **(32)** जो न ख़त्म होंगे और न उनकी रोक-टोक होगी। **(33)** और ऊँचे-ऊँचे फ़र्श होंगे। **(34)** हमने (वहाँ की) उन औ़रतों को

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. कि फ़लाँ शख़्स परहेज़गार है और फ़लाँ नहीं। अगरचे देखने में परहेज़गारी के अफ़आ़ल दोनों से सादिर होते हैं। पस नेक काम करने वालों को घमण्ड और नाज़ न चाहिए क्योंकि नेकोकारी का मदार ख़ात्मे पर है और अपने ख़ात्मे का हाल किसी को मालूम नहीं, यह चीज़ सिर्फ़ ख़ुदा के इल्म में है।

(तफ़सीर पृष्ठ 952) **1.** यह आयत हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बाप वलीद बिन मुग़ीरा के बारे में नाज़िल हुई थी। वह सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान ले आया, और जब वह ईमान लाकर घर को जा रहा था तो उसका एक दोस्त जो उसके इस्लाम का हाल सुन चुका था रास्ते में मिला, कहने लगा वलीद! मुझको सख़्त ताज्जुब और अफ़सोस है कि तू अपने बाप-दादा का दीन और अपने बड़ों का तरीक़ा छोड़कर एक नए दीन में दाख़िल हो गया है। वलीद कहने लगा कि मुझे अल्लाह के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ हुआ इसलिए दीने इस्लाम क़बूल कर लिया। वह बोला, अगर आख़िरत के अ़ज़ाब का अन्देशा है तो मुझको माल अ़ता करो मैं तुम्हारे सारे गुनाह अपने ज़िम्मे ले लेता हूँ। वलीद ने थोड़ा-सा माल दिया और जिस क़द्र माल मुक़र्रर हुआ था वह भी पूरा न दिया और काग़ज़ लिखवा कर उसपर शहादतें करा लीं और मुश्रिक बनकर मुत्मइन हो बैठा कि ख़ूब जान बची। थोड़ी-सी रक़म ख़र्च करने पर ख़ैर गुज़री कि अ़ज़ाब का खटका जाता रहा। उसके बारे में यह आयत नाज़िल हुई। इससे मालूम हुआ कि ऐसा शख़्स दूसरों को नफ़ा पहुँचाने के लिए क्या ख़र्च करेगा जब अपने ही मतलब के लिए पूरा ख़र्च न कर सका।

2. 'शिअ़्रा' एक सितारे का नाम है जो सख़्त गर्मी में निकलता है। ख़ुज़ाआ़ क़बीले के लोग उसकी पूजा करते थे, इसलिए ख़ास तौर पर

(पृष्ठ 952 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 954, 956, 958, 960, 962, 964 की तफ़सीर पृष्ठ 966-977 पर)

मम्नू-अ़तिंव्- **(33)** -व फ़ुरुशिम्-मर्फ़ूअ़: **(34)** इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शा-अन् **(35)** फ़-जअ़ल्नाहुन्-न अब्कारा **(36)** अ़ुरुबन् अतराबल्- **(37)** -लिअस्हाबिल्-यमीन **(38)** ❖

सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन **(39)** व सुल्लतुम्-मिनल्-आख़िरीन **(40)** व अस्हाबुश्-शिमालि मा अस्हाबुश्-शिमाल **(41)** फ़ी समूमिंव्-व हमीमिंव्- **(42)** -व ज़िल्लिम्-मिंय्यह्मूमिल्- **(43)** -ला बारिदिंव्-व ला करीम **(44)** इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुत्-रफ़ीन **(45)** व कानू युसिर्रू-न अ़लल्-हिन्सिल्-अ़ज़ीम **(46)** व कानू यक़ूलू-न अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ-इन्ना ल-मब्अूसून **(47)** अ-व आबाउनल्-अव्वलून **(48)** क़ुल् इन्नल्-अव्वली-न वल्-आख़िरीन **(49)** ल-मज्मूअ़ू-न इला मीक़ाति यौमिम्-मअ़्लूम **(50)** सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज़्ज़ाल्लूनल्-मुकज़्ज़िबून **(51)** ल-आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् ज़क़्क़ूम **(52)** फ़मालिऊ-न मिन्हल्-बुतून **(53)** फ़शारिबू-न अ़लैहि मिनल्-हमीम **(54)** फ़शारिबू-न शुर्बल्-हीम **(54)** हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन **(56)** नह्नु ख़लक़्नाकुम् फ़लौ ला तुसद्दिक़ून **(57)** अ-फ़-रऐतुम्-मा तुम्नून **(58)** अ-अन्तुम् तख़्लुक़ूनहू अम् नह्नुल्-ख़ालिक़ून **(59)** नह्नु क़द्दर्ना बैनकुमुल्-मौ-त व मा नह्नु बिमस्बूक़ीन **(60)** अ़ला अन्-नुबद्दि-ल अम्सा-लकुम् व नुन्शि-अकुम् फ़ी मा ला तअ़्लमून **(61)** व ल-क़द् अ़लिम्तुमुन्-नश्अ-तल्-ऊला फ़लौ ला तज़क्करून **(62)** अ-फ़-रऐतुम्-मा तह्रुसून **(63)** अ-अन्तुम् तज़्-रअ़ूनहू अम् नह्नुज़्-ज़ारिअ़ून **(64)** लौ नशा-उ ल-जअ़ल्नाहु हुतामन् फ़ज़ल्तुम् तफ़क्कहून **(65)** इन्ना

إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ۝ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۝ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝
لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝
وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝ فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝
وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ۝ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ
ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ۝ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ۝
وَكَانُوا يَقُولُونَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا
لَمَبْعُوثُونَ ۝ أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝
لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا
الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ۝ لَآكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ ۝ فَمَالِئُونَ
مِنْهَا الْبُطُونَ ۝ فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۝ فَشَارِبُونَ
شُرْبَ الْهِيمِ ۝ هَٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۝ نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ
فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُم مَّا تُمْنُونَ ۝ أَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُ
أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۝ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوقِينَ ۝ عَلَىٰ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا
لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۝
أَفَرَأَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ۝ أَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۝

ख़ास तौर पर बनाया है। (35) यानी हमने उनको ऐसा बनाया कि वे कुंवारियाँ हैं, (36) महबूबा हैं, हम-उम्र हैं। (37) ये सब चीज़ें दाहिने वालों के लिए हैं। (38) ❖

उन (दाहिने वालों) का एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा।[1] (39) और एक बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा। (40) और जो बाएँ वाले हैं, वे बाएँ वाले कैसे बुरे हैं। (41) वे लोग आग में होंगे और खौलते हुए पानी में (42) और काले धुएँ के साये में (43) जो न ठन्डा होगा और न ख़ुशी व राहत देने वाला होगा।[2] (44) वे लोग उससे पहले (यानी दुनिया में) बड़ी ख़ुशहाली में रहते थे। (45) और बड़े भारी गुनाह (यानी शिर्क व कुफ़्र) पर इसरार किया करते थे। (46) और यूँ कहा करते थे कि जब हम मर गए और मिट्टी और हड्डियाँ (होकर) रह गए, तो क्या (उसके बाद) हम दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे (47) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी (ज़िन्दा किए जाएँगे)? (48) आप कह दीजिए कि सब अगले और पिछले (49) जमा किए जाएँगे एक मुक़र्रर की हुई तारीख़ के वक़्त पर (50) फिर (जमा होने के बाद) तुमको ऐ गुनराहो, झुठलाने वालो! (51) ज़क़्क़ूम के पेड़ से खाना होगा। (52) फिर उससे पेट भरना होगा। (53) फिर उसपर खौलता हुआ पानी पीना होगा। (54) फिर पीना भी प्यासे ऊँटों के जैसा। (55) (ग़रज़) उन लोगों की क़ियामत के दिन यह दावत होगी। (56) हमने तुमको (पहली बार) पैदा किया है (जिसको तुम भी तस्लीम करते हो), फिर तुम तस्दीक़ क्यों नहीं करते? (57) अच्छा फिर यह बतलाओ तुम जो (औरतों के गर्भ में) वीर्य पहुँचाते हो। (58) उसको तुम आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं?[3] (59) हम ही ने तुम्हारे दरमियान मौत को (मुतैयन वक़्त पर) तय कर रखा है[4] और हम इससे आजिज़ नहीं हैं (60) कि तुम्हारे जैसे और (आदमी) पैदा कर दें और तुमको ऐसी सूरत में बना दें जिनको तुम जानते ही नहीं।[5] (61) और तुमको पहली पैदाइश का इल्म हासिल है[6] फिर तुम क्यों नहीं समझते? (62) अच्छा फिर यह बतलाओ कि तुम जो कुछ (बीज वग़ैरह) बोते हो, (63) उसको तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं? (64) अगर हम चाहें तो उस

(पिछले पृष्ठ का शेष) उसका ज़िक्र फ़रमाया कि जिसको तुम अपना माबूद समझते हो उसका मालिक भी वही परवर्दिगारे आलम है।

3. यह 'आदे ऊला' हज़रत हूद और हज़रत लूत अलैहिमस्सलाम की क़ौम थी, और 'दूसरी आद' आदे इरम कहलाते हैं।

4. यानी क़ियामत के नज़दीक होने की ख़बरों को तस्दीक़ करने वाला भी ज़ाहिर हो गया। और उसका तस्दीक़ करने वाला होना इस तरह है कि चाँद का टुकड़े होना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोजिज़ा है जिससे नुबुव्वत साबित होती है। और नबी का हर क़ौल सच्चा है। पस आपका क़ियामत के नज़दीक होने की ख़बर देना भी सच है। इससे डराने वाले का क़ाबिले एतिबार होना साबित हो गया। चाँद का टुकड़े होना क़ियामत के बरहक़ होने की इस लिहाज़ से एक दलील है कि जिस तरह चाँद के दो टुकड़े हो गए इसी तरह क़ियामत के दिन आसमान और ज़मीन, चाँद-सूरज सब टूट-फूट जाएँगे। चाँद के टुकड़े होने वाले मोजिज़े का वाक़िआ यह है कि हज का मौसम था, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आधी रात के वक़्त क़बीलों में तब्लीग़ के लिए तशरीफ़ ले गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और बाज़ दूसरे सहाबा भी आपके साथ थे। इत्तिफ़ाक़ से क़ुरैश के चन्द सरदार आपको रास्ते में मिल गए। वे आपको क़बीलों की तरफ़ जाते हुए देखकर कहने लगे, मुहम्मद! तुम चुपके-चुपके बाहर के लोगों को अपना पैरोकार बनाते हो लेकिन हम लोगों को अपनी सच्चाई की कोई निशानी दिखाकर अपने साथ मिलाने की कोशिश क्यों नहीं करते? आपने फ़रमाया कि तुम लोग तो मेरी बात ही नहीं सुनते, ऐसी हालत में तुम्हें मेरे हक़ पर और सच्चा होने का क्योंकर यक़ीन हो सकता है? उन्होंने कहा कि सच्चा होने की कोई निशानी दिखाओ तो हम ज़रूर मानेंगे। अबू जहल ने चाँद की तरफ़ इशारा करके कहा, 'अच्छा अगर तुम सच्चे हो तो हमारे सामने इस चाँद को दो टुकड़े करके दिखा दो' आपने फ़रमाया कि अगर ऐसा हो जाए तो मुझे सच्चा नबी यक़ीन करोगे? अबू जहल और क़ुरैश के दूसरे सरदार बोले हाँ, हम तुम्हें सच्चा नबी मान लेंगे। आपने फ़रमाया कि आसमान की तरफ़ देखो, फ़ौरन चाँद दो टुकड़े हो गया। एक टुकड़ा हिरा पहाड़ के पूरब की तरफ़ उतर आया और दूसरा पश्चिम की तरफ़ हो लिया, पहाड़ दोनों के बीच में था, फिर दोनों हिस्से ऊपर की तरफ़ चढ़े और आपस में मिल गए। दिल के काले क़ुरैश के सरदार हक़ की पैरवी करने के बजाय कहने लगे कि वाक़ई यह शख़्स बड़ा जादूगर है, इस चाँद पर और हमारी आँखों पर जादू कर दिया है।

(पृष्ठ 954, 956, 958, 960, 962, 964,966 की तफ़सीर पृष्ठ 968-977 पर)

ल-मुग़्रमून (66) बल् नह्नु मह़्रूमून (67) अ-फ़-रऐतुमुल् मा-अल्लज़ी तश्रबून (68) अ-अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनल्-मुज़्नि अम् नह्नुल्-मुन्ज़िलून (69) लौ नशा-उ जअ़ल्नाहु उजाजन् फ़लौ ला तश्कुरून (70) अ-फ़-रऐतुमुन्-नारल्लती तूरून (71) अ-अन्तुम् अन्शअ्तुम् श-ज-र-तहा अम् नह्नुल्-मुन्शिऊन (72) नह्नु जअ़ल्नाहा तज़्कि-रतंव्-व मताअ़ल्-लिल्मुक़्वीन (73) फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अ़ज़ीम ▲ (74) ❖

फ़ला उक़्सिमु बि-मवाक़िअ़िन्-नुजूम (75) व इन्नहू ल-क़-समुल्-लौ तअ़्लमू-न अ़ज़ीम (76) इन्नहू ल-क़ुर्आनुन् करीम (77) फ़ी किताबिम् मक्नून (78) ला य-मस्सुहू इल्लल्-मुतह्हरून (79) तन्ज़ीलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (80) अ-फ़बिहाज़ल्-हदीसि अन्तुम् मुद्हिनून (81) व तज्अ़लू-न रिज़्-क़कुम् अन्नकुम् तुकज़्ज़िबून (82) फ़लौ ला इज़ा ब-ल-ग़तिल्-हुल्क़ूम (83) व अन्तुम् ही-न-इज़िन् तन्ज़ुरून (84) व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्-ला तुब्सिरून (85) फ़लौ ला इन् कुन्तुम् ग़ै-र मदीनीन (86) तर्जिअ़ूनहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (87) फ़-अम्मा इन् का-न मिनल्-मुक़र्रबीन (88) फ़-रौहुंव्-व रैहानुंव्-व जन्नतु नअ़ीम (89) व अम्मा इन् का-न मिन् अस्हाबिल्-यमीन (90) फ़-सलामुल्-ल-क मिन् अस्हाबिल्-यमीन (91) व अम्मा इन् का-न मिनल् मुकज़्ज़िबीनज़्-ज़ाल्लीन (92) फ़-नुज़ुलुम्-मिन् हमीमिंव्-(93) -व तस्लि-यतु जहीम (94) इन्-न हाज़ा लहु-व हक़्क़ुल्-यक़ीन (95) फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अ़ज़ीम (96) ❖

قال فما خطبكم ٢٧ — ٤٨٤ — الواقعة ٥٦

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطٰمًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾
بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَاَنْتُمْ
اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ
اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ
اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّ
مَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ
النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾
فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُوْنَ
رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾ وَاَنْتُمْ
حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾
فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ
وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾ فَسَلٰمٌ
لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ
الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ

منزل ٧

(पैदावार) को चूरा-चूरा कर दें, फिर तुम हैरान होकर रह जाओगे। **(65)** कि (अबकी बार तो) हमपर तावान ही पड़ गया। **(66)** बल्कि हम बिलकुल ही महरूम रह गए (यानी सारा ही सरमाया गया गुज़रा)। **(67)** अच्छा फिर यह बतलाओ कि जिस पानी को तुम पीते हो **(68)** उसको बादल से तुम बरसाते हो या हम बरसाने वाले हैं? **(69)** अगर हम चाहें तो उसको कड़वा कर डालें, सो तुम शुक्र क्यों नहीं करते? **(70)** अच्छा फिर यह बतलाओ जिस आग को तुम सुलगाते हो **(71)** उसके पेड़ को तुमने पैदा किया है या हम पैदा करने वाले हैं? **(72)** हमने उसको याद दिलाने की चीज़ और मुसाफ़िरों के फ़ायदे की चीज़ बनाया है। **(73)** सो आप बड़ी शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए।[1] ▲ **(74)** ❖

सो मैं क़सम खाता हूँ सितारों के छुपने की। **(75)** और अगर तुम ग़ौर करो तो यह एक बड़ी क़सम है। **(76)** कि यह एक क़ाबिले एहतिराम क़ुरआन है। **(77)** जो एक महफ़ूज़ किताब (यानी लौहे-महफ़ूज़) में दर्ज है **(78)** कि उसको पाक फ़रिश्तों के अलावा कोई हाथ नहीं लगाने पाता।[2] **(79)** यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से भेजा हुआ है। **(80)** सो क्या तुम लोग इस कलाम को सरसरी बात समझते हो[3] **(81)** और झुठलाने को अपनी ग़िज़ा बना रहे हो? **(82)** सो जिस वक़्त रूह हलक़ तक आ पहुँचती है **(83)** और तुम उस वक़्त तका करते हो **(84)** और हम (उस वक़्त) उस (मरने वाले) शख़्स के तुमसे भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं, लेकिन तुम समझते नहीं हो।[4] **(85)** तो (हक़ीक़त में) अगर तुम्हारा हिसाब-किताब होने वाला नहीं है **(86)** तो तुम उस रूह को (बदन की तरफ़) फिर क्यों नहीं लौटाते, अगर तुम सच्चे हो।[5] **(87)** फिर (जब क़ियामत आएगी तो) जो शख़्स अल्लाह के क़रीबी लोगों में से होगा उसके लिए तो राहत है। **(88)** और (फ़राग़त की) ग़िज़ाएँ हैं और आराम की जन्नत है। **(89)** और जो शख़्स दाहिने वालों में से होगा **(90)** तो उससे कहा जाएगा कि तेरे लिए अमन व अमान है कि तू दाहिने वालों में से है। **(91)** और जो शख़्स झुठलाने वालों (और) गुमराहों में से होगा **(92)** तो खौलते हुए पानी से उसकी दावत होगी। **(93)** और दोज़ख़ में दाख़िल

(तफ़सीर पृष्ठ 954) 1. मुराद नूह अलैहिस्सलाम हैं। और चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अल्लाह तआला के हुक़ूक़ में आपस में ताल्लुक़ है इसमें अल्लाह के साथ कुफ़्र करना भी आ गया।

2. यानी आसान कर दिया सबके लिए उमूमन इस वजह से कि अपने बयान में बिलकुल वाज़ेह है, और अरब वालों के लिए हिस्सा था इस वजह से कि ज़बान अरबी है।

फ़ायदाः इसका सीधा मतलब यह है कि शौक़ दिलाने और डराने के मुताल्लिक़ क़ुरआन में जो मज़मून हैं वे निहायत साफ़ और वाज़ेह हैं, और अहकाम के निकालने की वुजूहात का बारीक और गहरा होना तो खुद ज़ाहिर है।

3. यानी वह ज़माना उनके हक़ में हमेशा के लिए इसलिए मन्हूस रहा कि उस दिन जो अज़ाब आया वह अज़ाब बरज़ख़ (यानी मौत के बाद क़ियामत से पहले ज़माने) से मिला हुआ हो गया, फिर अज़ाब काफ़िरों के लिए कभी ख़त्म होने वाला या हटने वाला न होगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 956) 1. चूँकि अल्लाह की उस ऊँटनी के पानी पीते वक़्त दूसरे जानवर घाट पर पानी पीने नहीं आ सकते, इसलिए उसमें और तुममें पानी तक़सीम कर दिया गया है, कि एक दिन यह पानी पिए और दूसरे दिन तुम्हारे जानवर पिएँ। और हर फ़रीक़ अपनी बारी के दिन पानी पीने के लिए हाज़िर हुआ करे, न उसकी बारी में तुम्हारे मवेशी आएँ और न उनकी बारी के दिन यह घाट पर जाए।

2. एक बदकार औरत के बहुत मवेशी थे। उसने अपने आशना को जिसका नाम केदार था इस बात पर तैयार किया कि सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी को मार डाले, उसने उसकी कोंचें काटकर हलाक कर दिया।

3. क़ायदा यह है कि खेत की हिफ़ाज़त के लिए उसके इर्द-गिर्द सूखी टहनियों और काँटों की बाड़ लगा दिया करते हैं, ताकि जानवर खेत में घुसकर खेती बर्बाद न कर सकें। कुछ मुद्दत के बाद वह बाड़ पुरानी होकर बर्बाद हो जाती है। इस मिसाल से यह ग़रज़ है कि हमने पुरानी बाड़ की तरह समूद को पामाल और तबाह कर दिया।

4. यानी उन फ़रिश्तों के लेने के पीछे पड़ गए जो ख़ूबसूरत लड़कों की शक्ल में हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के मेहमान बने थे।

(पृष्ठ 956 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 958, 960, 962, 964, 966, 968 की तफ़सीर पृष्ठ 970-978 पर)

57 सूरतुल्-हदीदि 94

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2599 अक्षर, 586 शब्द, 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (1) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि युह्यी व युमीतु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (2) हुवल्-अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्-बातिनु व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (3) हुवल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा, व हु-व म-अ़कुम् ऐ-नमा कुन्तुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर (4) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर (5) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन् नहा-र फ़िल्लैलि, व हु-व अ़लीमुम् बिज़ातिस्-सुदूर (6) आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फ़िक़ू मिम्मा ज-अ़-लकुम् मुस्तख़-लफ़ी-न फ़ीहि, फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अन्फ़क़ू लहुम् अज्रुन् कबीर (7) व मा लकुम् ला तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वर्रसूलु यद्अूकुम् लितुअ्मिनू बि-रब्बिकुम् व क़द् अ-ख़-ज़ मीसा-क़कुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (8) हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलु अ़ला अ़ब्दिही आयातिम् बय्यिनातिल्-लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व इन्नल्ला-ह बिकुम्

قال فما خطبكم ٢٧ ٤٨٥ الحديد ٥٧

حَقُّ الْيَقِينِ ۞ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۞

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۞ لَهُ مُلْكُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۞ هُوَ
الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۞ هُوَ
الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ
مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۞ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ
الْأُمُورُ ۞ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۞ آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ
مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۞
وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَ
قَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۞ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ
عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ
بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۞ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ

منزل

होना होगा। (94) बेशक यह (जो कुछ ज़िक्र हुआ) तहक़ीक़ी यक़ीनी बात है। (95) सो अपने (उस) बड़ी शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए। (96) ❖

57 सूरः हदीद 94

सूरः हदीद मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं। और वह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (1) उसी की बादशाही है आसमानों की और ज़मीन की, वही ज़िन्दगी देता है और (वही) मौत देता है, और वही हर चीज़ पर क़ादिर है। (2) (सब मख़्लूक़ से) वही पहले है और वही पीछे, और वही ज़ाहिर है और वही पोशीदा है, और वह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (3) वह ऐसा है कि उसने आसमानों और ज़मीन को छह दिन (की मात्रा) में पैदा किया, फिर तख़्त पर क़ायम हुआ[1] वह सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाख़िल होती है (जैसे बारिश) और जो चीज़ उसमें से निकलती है (जैसे पेड़-पौधे और घास वग़ैरह) और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ उसमें चढ़ती है[2] और वह तुम्हारे साथ रहता है चाहे तुम लोग कहीं भी हो, और वह तुम्हारे सब आमाल को भी देखता है। (4) उसी की हुकूमत है आसमानों की और ज़मीन की, और अल्लाह ही की तरफ़ तमाम मामलात लौट जाएँगे। (5) वही रात को दिन में दाख़िल करता है (जिससे दिन बड़ा हो जाता है) और वही दिन को रात में दाख़िल करता है (जिससे रात बड़ी हो जाती है) और वह दिल की बातों (तक) को जानता है। (6) तुम लोग अल्लाह तआ़ला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और (ईमान लाकर) जिस माल में तुमको उसने क़ायम-मक़ाम किया है उसमें से (उसकी राह में) ख़र्च करो, सो जो लोग तुममें से ईमान ले आएँ और ख़र्च करें,[3] उनको बड़ा सवाब होगा।[4] (7) और तुम्हारे लिए इसका क्या सबब है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते हालाँकि रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुमको इस बात की तरफ़ बुला रहे हैं कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ, और खुद खुदा ने तुमसे अ़हद लिया था, अगर तुमको ईमान लाना हो। (8) वह ऐसा (रहम करने वाला) है कि अपने (ख़ास) बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर साफ़-साफ़ आयतें भेजता है ताकि वह तुमको (कुफ़्र और जहालत की) अंधेरियों से रोशनी की तरफ़ लाए, और बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे हाल पर बड़ा

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. मुराद मूसा अ़लैहिस्सलाम के इरशादात और मोजिज़ात हैं।

6. बद्र की लड़ाई के दिन मक्का के काफ़िरों ने कहा था कि हमारी भारी जमाअ़त और तादाद और ज़बरदस्त गिरोह है, हम यक़ीनन मुसलमानों को शिकस्त देंगे, लेकिन शिकस्त खाई और पीठ फेरकर भागे।

(तफ़सीर पृष्ठ 958) 1. मक्का के काफ़िरों ने तक़दीर के मसले पर कुछ बहस शुरू की, उसके सुबूत में यह आयत नाज़िल हुई। तक़दीर के मसले पर बहस करने से मुसलमानों को सख़्त मनाही है, क्योंकि यह बड़ा नाज़ुक मसला है जो हर एक की समझ में नहीं आ सकता। ज़्यादा खोद-कुरेद करने से ऐसे शुब्हात और वहम पैदा होते हैं जो ईमान को डाँवाडोल करते हैं। ईमान का मन्शा इस बात का पूरी तरह यक़ीन कर लेना है कि जो कुछ भी हो रहा है वह मुक़द्दर में दाख़िल है, छोटा-बड़ा हर काम शुरू और इब्तिदा ही में लिखा जा चुका है। लेकिन याद रहे कि लौहे-महफ़ूज़ के इस क़दीम लिखने ने किसी शख़्स को गुनाह पर मजबूर नहीं कर दिया है।

2. यानी ज़मीन में अनाज पैदा फ़रमाया जो इनसान की ग़िज़ा है और उसके ऊपर भूसे की भी पैदाइश की जो उनके चौपायों की ग़िज़ा बनता है। पस भूसा भी एक अलग और मुस्तक़िल नेमत हुई।

(पृष्ठ 958 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 960, 962, 964, 966, 968, 970 की तफ़सीर पृष्ठ 972-978 पर)

ल-रऊफ़ुर्रहीम (9) व मा लकुम् अलू-ला तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि, ला यस्तवी मिन्कुम् मन् अन्फ़-क़ मिन् क़ब्लिल्-फ़त्हि व क़ात-ल, उलाइ-क अअ्-ज़मु द-र-जतम्-मिनल्लज़ी-न अन्फ़क़ू मिम्बअ्दु व क़ातलू, व कुल्लंव्-व-अ़दल्लाहुल्-हुस्ना, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर (10) ❖

मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन् फ़-युज़ाअि-फ़हू लहू व लहू अज्रुन् करीम (11) यौ-म तरल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति यस्आ नूरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् बुश्राकुमुल्-यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (12) यौ-म यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्-मुनाफ़िक़ातु लिल्लज़ी-न आमनुन्ज़ुरूना नक़्तबिस् मिन्-नूरिकुम् क़ीलर्जिअू वरा-अकुम् फ़ल्तमिसू नूरन्, फ़ज़ुरि-ब बैनहुम् बिसूरिल्-लहू बाबुन्, बातिनुहू फ़ीहिर्रह्-मतु व ज़ाहिरुहू मिन् क़ि-बलिहिल्-अ़ज़ाब (13) युनादूनहुम् अलम् नकुम् म-अ़कुम्, क़ालू बला व लाकिन्नकुम् फ़तन्तुम् अन्फ़ु-सकुम् व

قال فما خطبكم ٢٧ ۴۸۶ الحديد ٥٧

مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ
الْفَتْحِ وَقٰتَلَ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ
وَقٰتَلُوْا وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٠﴾
مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ
اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١١﴾ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يَقُوْلُ
الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ
قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ
بَابٌ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾
يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ
وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ
غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَاْوٰىكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلٰىكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾
اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ

منزل ٧

तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व ग़र्रत्कुमुल्-अमानिय्यु हत्ता जा-अ अम्रुल्लाहि व ग़र्रकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर (14) फ़ल्यौ-म ला युअ्-ख़ज़ु मिन्कुम् फ़िद्-यतुंव्-व ला मिनल्लज़ी-न क-फ़रू, मअ्वाकुमुन्नारु, हि-य मौलाकुम्, व बिअ्सल्-मसीर (15) अलम् यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन् तख़्श-अ क़ुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न-ज़-ल मिनल्-हक़्क़ि व
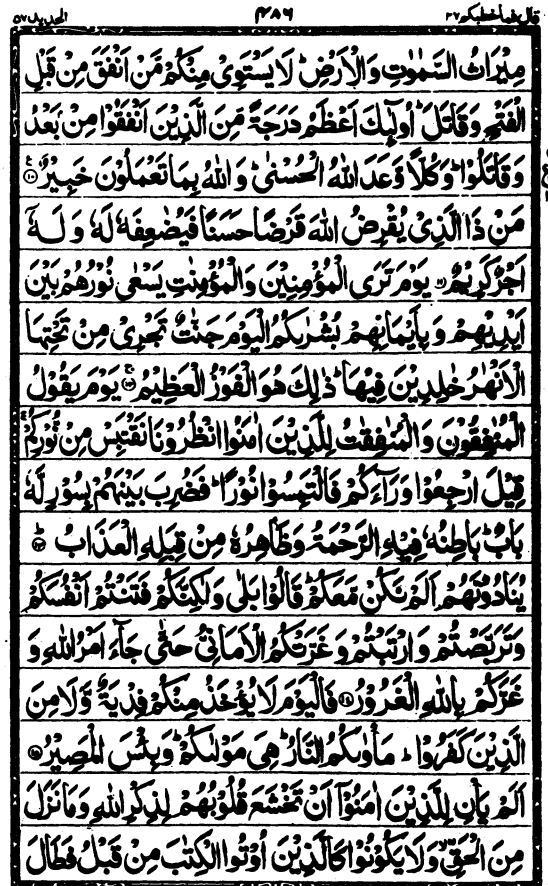
शफ़्क़त करने वाला, बड़ा मेहरबान है। **(9)** और तुम्हारे लिए इसका क्या सबब है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते? हालाँकि सब आसमान और ज़मीन अख़ीर में अल्लाह ही का रह जाएगा।[1] तुममें से जो लोग मक्का फ़त्ह होने से पहले (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च कर चुके[2] और लड़ चुके बराबर नहीं, वे लोग दर्जे में उन लोगों से बड़े हैं जिन्होंने (मक्का के फ़त्ह होने के) बाद में ख़र्च किया और लड़े। और (यूँ) अल्लाह तआ़ला ने भलाई (यानी सवाब) का वायदा सबसे कर रखा है, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। **(10)** ◆

कोई शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला को अच्छी तरह क़र्ज़ के तौर पर दे, फिर ख़ुदा तआ़ला उस (दिए हुए के सवाब) को उस शख़्स के लिए बढ़ाता चला जाए और उसके लिए पसन्दीदा अज्र है।[3] **(11)** जिस दिन आप मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनकी दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा,[4] आज तुमको ख़ुशख़बरी है ऐसे बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे (और) यह बड़ी कामयाबी है। **(12)** (और यह वह दिन होगा) जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें मुसलमानों से (पुलसिरात पर) कहेंगे कि (ज़रा) हमारा इन्तिज़ार कर लो, हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें।[5] उनको जवाब दिया जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ फिर (वहाँ से) रोशनी तलाश करो, फिर उन (दोनों फ़रीक़ों) के दरमियान में एक दीवार क़ायम कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा (भी) होगा। (जिसकी कैफ़ियत यह है कि) उसकी अन्दरूनी ओर में रहमत होगी और बाहरी ओर की तरफ़ अ़ज़ाब होगा। **(13)** ये (मुनाफ़िक़) उनको पुकारेंगे कि क्या (दुनिया में) हम तुम्हारे साथ न थे? वे (मुसलमान) कहेंगे कि हाँ (थे तो सही) लेकिन तुमने अपने को गुमराही में फँसा रखा था और तुम मुन्तज़िर रहा करते थे, और (इस्लाम के हक़ होने में) तुम शक रखते थे, और तुमको तुम्हारी बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था, यहाँ तक कि तुमपर ख़ुदा का हुक्म आ पहुँचा और तुमको धोखा देने वाले (यानी शैतान) ने अल्लाह के साथ धोखे में डाल रखा था। **(14)** ग़रज़ आज न तुमसे कोई बदला लिया जाएगा और न काफ़िरों से, तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है, वही तुम्हारा साथी है और वह (वाक़ई) बुरा ठिकाना है। **(15)** क्या ईमान वालों के लिए

(पिछले पृष्ठ का शेष) 3. यह आयत तफ़रीअ़िया इस सूरः में इकत्तीस जगह आई है और हर जगह "आला-इ" (यानी नेमतों) का मिस्दाक़ अलग है, इसलिए यह बार-बार आना वैसे ही नहीं, सिर्फ़ अल्फ़ाज़ मुश्तरक हैं, और इन अल्फ़ाज़ के बार-बार आने की वजह से ज़ाहिरी तौर पर इसमें ताकीद का फ़ायदा भी है। और इस क़िस्म का तकरार (यानी एक जैसे अल्फ़ाज़ का बार-बार आना) जो कि उम्दा साफ़ की हुई मिठाई से ज़्यादा मीठा है, अ़रब के कलाम (सादी इबारत और शे'र) में कसरत से बिला नकीर इस्तेमाल होता है। "तुकज़्ज़िबानि" (यानी तुम इनकारी हो जाओगे) में ख़िताब इनसान और जिन्न को होना इन दलीलों से है- अल्लाह तआ़ला का क़ौल "ख़-लक़ल् इनसा-न व ख़-लक़ल् जान्-न" (यानी उसने इनसान और जिन्नात को पैदा किया) अल्लाह तआ़ला का क़ौल "अय्युहस्स-क़लानि" अल्लाह तआ़ला का क़ौल "इन्सुन् क़ब्लहुम व ला जान्नुन"।

4. क़ुरआन का असल लफ़्ज़ "जान्नुन्" है, जिस तरह इनसानों के बाप आदम अ़लैहिस्सलाम हैं और तमाम इनसान उन्हीं की औलाद हैं, इसी तरह तमाम जिन्नात जान्न की औलाद हैं, पस वह तमाम जिन्नात का बाप है।

5. जिस तरह गर्मी और जाड़े के मौसम में सूरज निकलने के दो मुख़्तलिफ़ मक़ाम हैं, इसी तरह ग़ुरूब होने के भी अलग-अलग मक़ाम हैं, गोया दो पूरब हुए और दो पश्चिम हुए।

6. यानी उसमें दो समुद्र पैदा किए। उनमें से एक का पानी खारा और दूसरे का पानी मीठा है, हालाँकि दोनों एक-दूसरे से मिले हुए बह रहे हैं मगर फिर भी उनमें क़ुदरती दीवार रोक है, कि न खारी समुद्र मीठे को नमकीन बना सकता है और न मीठा समुद्र खारे को मीठा कर सकता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 960) 1. चूँकि मक़सूद जिन्न और इनसानों के दोनों गिरोहों को तंबीह करना है और वे सब ज़मीन पर हैं इसलिए फ़ना होने में ज़मीन वालों का ज़िक्र किया गया, इस ज़मीन वालों को ख़ास कर देने से जो ज़मीन के अ़लावा हैं उनके फ़ना होने की नफ़ी लाज़िम नहीं आती। **(पृष्ठ 960 की बक़िया और पृष्ठ 962, 964, 966, 968, 970, 972 की तफ़सीर पृष्ठ 974-978 पर)**

ला यकूनू कल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लु फ़ता-ल अ़लैहिमुल्-अ-मदु फ़-क़सत् क़ुलूबुहुम्, व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (16) इअ्-लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, क़द् बय्यन्ना लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून (17) इन्नल्-मुस्सद्दिक़ी-न वल्-मुस्सद्दिक़ाति व अक़्रज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनंय्-युज़ा-अ़फ़ु लहुम् व लहुम् अज्रुन् करीम (18) वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्-सिद्दीक़ू-न वश्शु-हदा-उ अ़िन्-द रब्बिहिम्, लहुम् अज्रुहुम् व नूरुहुम्, वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम (19) ❖

इअ्-लमू अन्नमल्-हयातुद्दुन्या लअ़िबुंव्-व लह्वुंव्-व ज़ी-नतुंव्-व तफ़ाख़ुरुम्-बैनकुम् व तकासुरुन् फ़िल्-अम्वालि वल्-औलादि, क-म-सलि ग़ैसिन् अअ्-जबल्-कुफ़्फ़ा-र नबातुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु हुतामन्, व फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन् शदीदुंव्-व मग़्फ़ि-रतुम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानुन्, व मल्-हयातुद्-दुन्या इल्ला मताअ़ुल्-गुरूर (20) साबिक़ू इला मग़्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्जुहा क-अ़र्ज़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि उअ़िद्दत् लिल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही, ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (21) मा असा-ब मिम्-मुसी-बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन् क़ब्लि अन्- नब्र-अहा, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (22) लिकैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ातकुम् व ला तफ़्रहू बिमा आताकुम्, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर (23)

عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ
اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَحِيْمِ ﴿۱۹﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّ
تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ
اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ
وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَ
مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۲۰﴾ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۱﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي
الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ
اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۲۲﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا

❖ रु. 2/9/18

इस बात का वक़्त नहीं आया कि उनके दिल ख़ुदा की नसीहत के और जो हक़ दीन (अल्लाह तआला की तरफ़ से) नाज़िल हुआ है उसके सामने झुक जाएँ, और उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिनको उनसे पहले (आसमानी) किताब मिली थी (यानी यहूदी और ईसाई), फिर (उसी हालत में) उनपर एक लम्बा ज़माना गुज़र गया (और तौबा न की) फिर उनके दिल (ख़ूब ही) सख़्त हो गए, और बहुत-से आदमी उनमें के (आज) काफ़िर हैं।[1] **(16)** यह बात जान लो कि अल्लाह तआला ज़मीन को उसके सूख जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है,[2] हमने तुमसे उसकी नज़ीरें बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो। **(17)** बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और ये (सदक़ा देने वाले) अल्लाह को नेक-नीयती के साथ क़र्ज़ दे रहे हैं, वह सदक़ा (सवाब के एतिबार से) उनके लिए बढ़ा दिया जाएगा, और उनके लिए पसन्दीदा अज्र है। **(18)** और जो लोग अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, ऐसे ही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं,[3] उनके लिए (जन्नत में) उनका (ख़ास) अज्र और (पुलसिरात पर) उनका (ख़ास) नूर होगा। और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया, यही लोग दोज़ख़ी हैं। **(19)** ❖

तुम ख़ूब जान लो कि (आख़िरत के मुक़ाबले में) दुनियावी ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल-तमाशा और (एक ज़ाहिरी) ज़ीनत और आपस में एक-दूसरे पर फ़ख़्र करना और मालों और औलाद में एक-दूसरे से अपने को ज़्यादा बतलाना है।[4] जैसे बारिश (बरसती) है कि उसकी पैदावार (खेती) किसानों को अच्छी मालूम होती है, फिर वह सूख जाती है सो उसको तू ज़र्द देखता है, फिर वह चूरा-चूरा हो जाती है।[5] और आख़िरत (की कैफ़ियत यह है कि उस) में सख़्त अज़ाब है, और ख़ुदा की तरफ़ से मग्फ़िरत और रज़ामन्दी है, और दुनियावी ज़िन्दगी सिर्फ़ धोखे का सामान है। **(20)** तुम अपने परवर्दिगार की मग्फ़िरत की तरफ़ दौड़ो और (इससे बढ़कर) ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी लम्बाई-चौड़ाई आसमान और ज़मीन की वुसअ़त के बराबर है।[6] वह उन लोगों के वास्ते तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह अपना फ़ज़्ल जिसको चाहें इनायत करें, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।[7] **(21)** कोई मुसीबत न दुनिया में आती है और न ख़ास तुम्हारी जानों में मगर वह एक ख़ास किताब (यानी लौहे-महफ़ूज़) में लिखी है, इससे पहले कि हम उन जानों को पैदा करें[8] यह अल्लाह के नज़दीक आसान काम है। **(22)** (यह बात इस वास्ते

(पिछले पृष्ठ का शेष) 2. यानी कायनात के इन्तिज़ाम में हर वक़्त अपनी मरज़ी के मुताबिक़ हुक्म फ़रमाता रहता है। जैसी कुछ उसने रोज़े अव्वल में किसी की तक़दीर लिख दी उसी के मुताबिक़ किसी को इज़्ज़त देता है और किसी को ज़िल्लत, किसी को अमीर बनाता है और किसी को फ़क़ीर, किसी को पैदा करता है और किसी को मारता है। पस इस आयत का यह मतलब नहीं कि अफ़आ़ल (कामों) का सादिर होना उसकी ज़ात के लवाज़िम में से है।

3. यानी हिसाब-किताब लेने वाले हैं। मजाज़न् और मुबालग़े के तौर पर इसको ख़ाली होने से ताबीर फ़रमा दिया। और हक़ीक़ी मायने इसलिए नहीं हो सकते कि इससे यह लाज़िम आता है कि उससे पहले उसको ऐसी मश्ग़ूलियत हो जो दूसरी तरफ़ मुतवज्जह होने से रोकने वाली हो, और यह अल्लाह की ज़ात के लिए मुहाल है।

4. यानी तुम मेरे हुक्म और तक़दीर से कहीं निकलकर भाग नहीं सकते, जब तुम लोग क़ब्रों से निकालकर खड़े किए जाओगे तो ख़ालिस आग के शोले और धुआँ भेज दिया जाएगा, तुममें उसके मुक़ाबले की ताक़त न होगी और न तुम उससे बच सकोगे, वह तुम सबको मैदाने हश्र की जानिब हाँक लाएगी।

5. क्योंकि अल्लाह तआला को सब मालूम है। यानी हिसाब इस ग़रज़ से न होगा बल्कि ख़ुद उनको मालूम कराने के लिए और जतलाने के लिए सवाल और हिसाब होगा। और यह ख़बर देना भी एक नेमत है।

6. यह पहचान मुज्रिमों के मुतैयन करने के लिए लाज़िमी नहीं, लेकिन अल्लाह तआला किसी हिक्मत से इस तरह ज़ाहिर कर देंगे और यह ख़बर देना भी एक नेमत है।

7. एक बार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ियामत के दिन और हिसाब व किताब और दोज़ख़ और जन्नत का ज़िक्र फ़रमाया, और इनसान जिन मामलात के लिए पैदा किया गया है और नाफ़रमानी की सूरत में जो अ़ज़ाब और इबरतनाक सज़ाएँ और तकलीफ़ें **(पृष्ठ 960 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 962, 964, 966, 968, 970, 972, 974 की तफ़सीर पृष्ठ 976-978 पर)**

अल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्ना-स बिल्बुख़्लि, व मंय्य-तवल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद **(24)** ल-क़द् अर्सल्ना रुसु-लना बिल्बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म-अ़हुमुल्-किता-ब वल्मीज़ा-न लि-यक़ूमन्नासु बिल्-क़िस्ति व अन्ज़ल्नल्-हदी-द फ़ीहि बअ्सुन् शदीदुंव्-व मनाफ़िअु लिन्नासि व लि-यअ्-लमल्लाहु मंय्यन्सुरुहू व रुसु-लहू बिल्ग़ैबि, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ **(25)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहंव्-व इब्राहीं-म व जअ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहि-मन्नुबुव्व-त वल्किता-ब फ़मिन्हुम् मुह्तदिन् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून **(26)** सुम्-म क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बि-अ़ीसब्नि मर्य-म व आतैनाहुल्-इन्जी-ल व जअ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्लज़ीनत्-त-बअ़ूहु रअ्-फ़तंव्-व रह्म-तन्, व रह्बानिय्य-त-निब्त-दअ़ूहा मा कतब्नाहा अ़लैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्वानिल्लाहि फ़मा रऔहा हक़्-क़ रिआ़-यतिहा फ़आतैनल्लज़ी-न आमनू मिन्हुम् अज्रहुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून **(27)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व आमिनू बि-रसूलिही युअ्तिकुम् किफ़्लैनि मिर्रह्मतिही व यज्अ़ल्-लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(28)** लि-अल्ला यअ़्ल-म अह्लुल्-किताबि अल्ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम्-मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व अन्नल्-फ़ज़्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम **(29)** ❖

بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِۣ ۙ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ
وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ
الْحَمِيْدُ ۝ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ
شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ
ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝
ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓي اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ
الْاِنْجِيْلَ ڏ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ
وَرَهْبَانِيَّةَۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ
اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا
بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ
بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ
اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰي شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ
اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

बतला दी है) ताकि जो चीज़ तुमसे जाती रहे तुम उसपर (इतना) ग़म न करो, और ताकि जो चीज़ तुमको अ़ता फ़रमाई है उसपर इतराओ नहीं, और अल्लाह तआ़ला किसी इतराने वाले शैख़ीबाज़ को पसन्द नहीं करता।[1] (23) जो ऐसे हैं कि (दुनिया की मुहब्बत की वजह से) ख़ुद भी बुख़्ल "यानी कन्जूसी" करते हैं और दूसरे लोगों को भी बुख़्ल की तालीम करते हैं, और जो शख़्स (हक़ दीन से) मुँह मोड़ेगा तो अल्लाह तआ़ला बेपरवाह हैं, तारीफ़ के लायक़ हैं।[2] (24) हमने (इसी आख़िरत का सुधार करने के लिए) अपने पैग़म्बरों को खुले-खुले अहकाम देकर भेजा, और हमने उनके साथ किताब को और इन्साफ़ करने (के हुक्म) को नाज़िल फ़रमाया ताकि लोग (अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ में) सही राह पर क़ायम रहें, और हमने लोहे को पैदा किया जिसमें सख़्त हैबत है, और (इसके अ़लावा) लोगों के और भी तरह-तरह के फ़ायदे हैं, और (इसलिए लोहा पैदा किया) ताकि अल्लाह तआ़ला जान ले कि बेदेखे उसकी और उसके रसूलों की (यानी दीने हक़ की) कौन मदद करता है, अल्लाह तआ़ला ताक़तवर और ज़बरदस्त है।[3] (25) ❖

और हमने नूह और इब्राहीम (अ़लैहिमस्सलाम) को पैग़म्बर बनाकर भेजा, और हमने उनकी औलाद में पैग़म्बरी और किताब जारी रखी, सो उन लोगों में बाज़े तो हिदायत पाने वाले हुए और बहुत-से उनमें नाफ़रमान थे। (26) फिर उनके बाद और रसूलों को (जो कि मुस्तक़िल शरीअ़त रखने वाले न थे) एक के बाद एक भेजते रहे और उनके बाद ईसा इब्ने मरियम (अ़लैहिस्सलाम) को भेजा, और हमने उनको इन्जील दी, और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की थी हमने उनके दिलों में शफ़क़त और रहम व तरस पैदा किया। और उन्होंने रहबानियत "यानी दुनिया से बिलकुल बेताल्लुक़ हो जाने" को ख़ुद ईजाद कर लिया, हमने उसको उनपर वाजिब न किया था, लेकिन उन्होंने हक़ तआ़ला की रिज़ा के वास्ते उसको इख़्तियार किया था, सो उन्होंने उस (रहबानियत) की पूरी रियायत न की।[4] सो उनमें से जो लोग ईमान लाए[5] हमने उनको उनका (वायदा किया हुआ) अज्र दिया, और ज़्यादा उनमें नाफ़रमान हैं। (27) ऐ (ईसा अ़लैहिस्सलाम पर) ईमान रखने वालो! तुम अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तआ़ला तुमको अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से देगा, और तुमको ऐसा नूर इनायत करेगा कि तुम उसको लिए हुए चलते-फिरते होगे और तुमको बख़्श देगा,[6] और अल्लाह मग्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (28) (और ये दौलतें तुमको इसलिए देगा) ताकि अहले किताब को यह बात मालूम हो जाए कि उन लोगों को अल्लाह के फ़ज़्ल के किसी हिस्से पर (भी) इख़्तियार नहीं, और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है वह जिसको चाहे दे दे[7] और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।[8] (29) ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) उसके लिए तैयार हैं उनको याद करके वह घबरा उठे, और उनपर ऐसा ख़ौफ़ तारी हुआ, कहने लगे कि काश! मैं घास हुआ होता, कि मुझको चौपाए चर लेते, उस वक़्त उनकी शान में यह आयत नाज़िल हुई।

(तफ़सीर पृष्ठ 962) 1. क़ायदा है कि अबरा (यानी दोहरे कपड़े का ऊपर वाला हिस्सा) अस्तर (नीचे वाले कपड़े) के मुक़ाबले में ज़्यादा उम्दा होता है। पस जब अस्तर मोटे और मज़बूत रेशम का होगा तो अबरा कैसा कुछ होगा।

2. यानी नेकी का बदला नेकी ही होता है, जैसे उन नेक बन्दों ने नेक अ़मल किए ऐसे ही उनको हमारी सरकारे आ़ली से नेक सिले अ़ता हुए।

3. क़ायदे की बात है कि जो चीज़ बहुत ज़्यादा हरे रंग की हो वह स्याही माईल हो जाती है। मतलब यह है कि ये दोनों बाग़ भी ख़ूब हरे-भरे होंगे। ये उन नेक बन्दों के लिए हैं जो रुतबे में पहले लोगों के मुक़ाबले में कुछ कम हैं।

4. इस सूरः में रब्बुल आ़लमीन ने जिन्नात और इनसान पर इकत्तीस जगह अपनी नेमतें जताई हैं। हर आयत के बाद नेमत का इज़हार सही ज़ौक़ रखने वाले के लिए वह पुरलुत्फ़ मायने ज़ाहिर करता है जिसको दिल वाले ही समझ सकते हैं। अगरचे अल्फ़ाज़ एक हैं, लेकिन हर मक़ाम में अलग लुत्फ़ और अलग कैफ़ियत है।

(तफ़सीर पृष्ठ 964) 1. यानी काफ़िरों की ज़िल्लत और मोमिनों की बुलन्दी और तरक़्क़ी का उस दिन ज़ुहूर होगा।

(पृष्ठ 964 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 966, 968, 970, 972, 974, 976 की तफ़सीर पृष्ठ 977-980 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) 2. यानी मोमिनों में से ख़ास लोग, अ़वाम मोमिनीन और कुफ़्फ़ार, और अगली आयतों में मोमिनों में से ख़ास लोगों को मुक़र्रबीन और साबिक़ीन कहा है और अ़वाम मोमिनीन को 'दाहिने वाले' और काफ़िरों को 'बाएँ वाले'।

3. मुराद इससे वे हैं जिनके नामा-ए-आमाल दाहिने हाथ में दिए जाएँगे। और अगरचे मुक़र्रबीन का भी यही मतलब है लेकिन इस सिफ़त पर इक्तिफ़ा करना इस तरफ़ इशारा है कि उनमें 'दाहिने वालों' से ज़ायद कोई और ख़ुसूसी निकटता की सिफ़त नहीं पाई जाती, इस तरह इससे अ़वाम मोमिनीन मुराद हो गए।

4. मुराद इससे वे हैं जिनके नामा-ए-आमाल बाएँ हाथ में दिए जाएँगे यानी काफ़िर लोग। और इसमें मुख़्तसर तौर पर उनकी हालत का बुरा होना भी बतला दिया।

5. इसमें आला दर्जे के तमाम बन्दे शामिल हैं यानी अम्बिया, औलिया, सिद्दीक़ीन और कामिल मुत्तक़ी हज़रात, और इसमें मुख़्तसर तौर पर उनकी हालत का बुलन्द और ऊँचा होना बतला दिया।

6. अगलों से मुराद पहले गुज़रे हुए हज़रात हैं, आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पहले तक। और पिछलों से मुराद हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वक़्त से लेकर क़ियामत तक।

7. चूँकि अ़रब गर्म मुल्क और रेगिस्तान है, वहाँ के लोग आ़म तौर पर बेरी, केले और लम्बे साये से ज़्यादा रग़बत और लगाव रखते थे। मक्का मुअ़ज़्ज़मा से थोड़े फ़ासले पर 'ताइफ़' नाम का एक शहर हरा-भरा और उपजाऊ जगह है। एक बार मुसलमानों ने ताइफ़ की एक वादी देखी जिसमें बेरी के पेड़ ज़्यादा थे और छाँव घनी थी, उसको देखकर बोले काश! हमको जन्नत में इतना ही मिल जाए। उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई।

(तफ़सीर पृष्ठ 966) 1. जब पहली आयत "सुल्लतुम् मिनल् अव्वली-न व क़लीलुम् मिनल् आख़िरी-न" नाज़िल हुई जिसका मन्शा यह था कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह के मुक़र्रब अगली उम्मतों में से ज़्यादा और पिछली उम्मत यानी उम्मते मुहम्मदिया में से थोड़े लोग होंगे, तो यह सुनकर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु रो दिए और सहाबा-ए-किराम पर यह बात भारी गुज़री कि उम्मते मरहूमा के थोड़े से लोग शामिल होंगे। तो ख़ुदा-ए-रहीम ने पहली आयत के नाज़िल होने के साल भर बाद इस सूरः का आख़िरी हिस्सा नाज़िल फ़रमाया, जिसमें यह आयत भी थी "सुल्लतुम् मिनल् अव्वली-न व सुल्लतुम् मिनल् आख़िरी-न" इसमें उस गिरोह के अन्दर उम्मते मुहम्मदिया की भी एक बड़ी जमाअ़त के दाख़िल होने की ख़ुशख़बरी थी। और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि चूँकि पहले अम्बिया की उम्मतें मजमूई हैसियत से ज़्यादा हैं और पहली उम्मतों के शुरू में ईमान लाने वाले अफ़राद उम्मते मुहम्मदी के इब्तिदाई ईमान वाले हज़रात से बढ़े हुए हैं इसलिए निस्बतन उन्हीं की तादाद ज़्यादा होगी, हाँ दोनों गिरोह के आ़म मोमिन जिनके आमालनामे उनके दाहिने हाथों में मिलेंगे बहुत ज़्यादा तादाद में और दर्जे में बराबर होंगे।

2. यानी साए से एक जिस्मानी नफ़ा होता है राहत और ठंडक, और एक रूहानी नफ़ा होता है लज़्ज़त और ख़ुशी। दोज़ख़ वाले दोनों से फ़ायदा न उठा सकेंगे।

3. यानी उस मनी (यानी वीर्य) पर एक के बाद दूसरी मुख़्तलिफ़ हालतें तारी करना कि अब 'मनी' है और चन्द दिन में जमा हुआ ख़ून हो गया, फिर थोड़े दिनों में लोथड़ा बन गया, फिर बोटी हो गई। फिर उसमें अंग और हिस्से निकल आए यहाँ तक कि वह मुकम्मल तौर पर पूरे जिस्मानी अंगों वाला आदमी बन गया। ये हालतें तुम पैदा करते हो या हम? ज़ाहिर है कि हम ही बनाते हैं।

4. मतलब यह है कि बनाना और बनाए हुए को एक ख़ास वक़्त तक बाक़ी रखना यह सब हमारा ही काम है।

5. यानी जैसे आदमी से जानवर की सूरत में बदल डालें जिसका गुमान भी न हो।

6. यानी यह कि वह हमारी क़ुदरत से है।

(तफ़सीर पृष्ठ 968) 1. ये सब नेमतें साफ़ बताती हैं कि इबादत के लायक़ सिर्फ़ एक ज़ात है, और ये इस अ़क़ीदे के वाजिब होने की दलीलें भी हैं कि जो इन सब बातों पर क़ादिर है वह इसपर भी क़ादिर है कि मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा कर दे।

2. इसके मज़ामीन पर मुत्तला होने का क्या मतलब? पस वहाँ से यहाँ ख़ास तौरपर आना फ़रिश्ते ही के ज़रिए से है और यही नुबुव्वत है। और शैतान इसको नहीं ला सकते कि यह एतिराज़ व शुब्हा पैदा हो कि कहीं जिन्नात से मालूम करके ग़ैब की बातें बता रहे हों।

3. यानी इसकी तस्दीक़ करने को वाजिब नहीं जानते।

4. यानी तुमसे ज़्यादा उस शख़्स के हाल से वाक़िफ़ होते हैं, क्योंकि तुम तो सिर्फ़ ज़ाहिरी हालत देखते हो और हम उसकी अन्दरूनी हालत की भी ख़बर रखते हैं।

5. मतलब यह कि क़ुरआन सच्चा है और वह मरने के बाद ज़िन्दा होने को बता रहा है। पस उसका होना साबित हुआ। और कोई चीज़ उसके लिए रुकावट है नहीं, तो मरने के बाद ज़िन्दा होना साबित हो गया। और इसपर भी तुम्हारा इनकार करते रहना, इससे यह लाज़िम आता है कि गोया तुम रूह को अपने बस में समझते हो कि अगर क़ियामत में ख़ुदा दोबारा रूह डालना चाहे जैसा कि क़ुरआन का फ़रमान है, मगर हम न डालने देंगे, और दोबारा ज़िन्दा न होने देंगे, तभी तो इतनी सख़्ती से इनकार करते हो, वरना जो अपने को आ़जिज़ समझता हो वह दलीलें आने के बाद ऐसी सख़्ती से और ज़ोरदार बात क्यों कहे।

(तफ़सीर पृष्ठ 970) 1. अ़र्श पर क़ायम होने की कोई सूरत और कैफ़ियत तजवीज़ करना **(शेष अगले पृष्ठ पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) और अपनी हालत पर क़ियास करके अल्लाह तआला के लिए जिस्म होने का वहम करना बिलकुल नाजायज़ है। ईमान का मन्शा यह है कि अर्श पर अल्लाह तआला के क़रार पकड़ने का यक़ीन रखें लेकिन उसकी कैफ़ियत या तश्बीह से ज़बान बन्द रखें। क्योंकि अल्लाह तआला बेमिस्ल और बेनज़ीर है, किसी भी तरह उसके साथ किसी की मिसाल नहीं दी जा सकती।

2. जैसे फ़रिश्ते कि उतरते और चढ़ते हैं, और जैसे अहकाम जो उतरते हैं और आमाल जो चढ़ते हैं।

3. तबूक की लड़ाई में सफ़र दूर का और लम्बा था और जिहाद के सामान की कमी थी इसलिए मालदार सहाबा-ए-किराम को चन्दा देने की तरग़ीब और नादार व ग़रीब मोमिनों की मदद करने के हुक्म में यह आयत नाज़िल हुई। और चूँकि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने लश्कर की तैयारी और सामान से लैस करने में शानदार माली मदद की, उनकी फ़ज़ीलत के इज़हार में आयत "फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम" नाज़िल हुई।

4. इस क़ायम मक़ाम बनाने के उन्वान में इस तरफ़ इशारा है कि यह माल तुमसे पहले और किसी के पास था और इसी तरह तुम्हारे बाद किसी और के हाथ में चला जाएगा। पस जब यह सदा रहने वाली चीज़ नहीं तो इसको इस तरह जोड़-जोड़कर रखना कि ज़रूरत की जगह में भी ख़र्च न किया जाए कोरी बेवक़ूफ़ी है।

(तफ़सीर पृष्ठ 972) **1.** पस जब सब माल एक दिन छोड़ना है तो ख़ुशी से क्यों न दिया जाए कि सवाब भी हो।

2. यह आयत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई कि सबसे पहले इस्लाम लाए और अल्लाह की राह में जान व माल दोनों ख़र्च किए।

3. ख़ैरात का सवाब ज़रूरत और हालात के लिहाज़ से कम और ज़्यादा होता है। जिन बुज़ुर्गाने मिल्लत ने मक्का के फ़त्ह होने से पहले इस्लाम की मदद की और अल्लाह की राह में दिल खोलकर माल ख़र्च किया उनका अज्र व सवाब उन लोगों से कहीं ज़्यादा है जिन्होंने मक्का के फ़त्ह होने के बाद अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया। क्योंकि मक्का के फ़त्ह होने के बाद इस्लाम ताक़तवर और इम्दाद से बेपरवाह हो गया था, अगरचे सवाब दोनों गिरोहों को मिलेगा और रब्बे करीम हर एक पर नवाज़िश फ़रमाएगा, लेकिन दोनों फ़रीक़ में आपस में दर्जों का बहुत फ़र्क़ होगा।

4. यह नूर पुलसिरात पर से गुज़रने के लिए उनके साथ होगा।

5. क़ियामत के दिन जब दोज़ख़ पर पुलसिरात के क़ायम किए जाने का हुक्म होगा और लोग उसपर से गुज़रने लगेंगे तो मोमिन अपने-अपने आमाल के मुवाफ़िक़ तेज़ी से गुज़र जाएँगे। लेकिन काफ़िर और मुश्रिक लोग कट-कटकर दोज़ख़ में गिरने लगेंगे। हर तरफ़ अंधेरा-ही-अंधेरा होगा, लेकिन ईमान वालों के आगे-आगे और दाहिनी तरफ़ उनके ईमान का नूर उनके साथ-साथ दौड़ता होगा। मुनाफ़िक़ लोग भी जो ज़ाहिर में मुसलमान और बातिन में काफ़िर थे और देखने में दुनिया के अन्दर मुसलमानों के साथी थे उनके नूर की रोशनी में चलने लगेंगे लेकिन उनके जैसी तेज़ रफ़्तार कहाँ से लाएँ, इसलिए पीछे रह जाएँगे और पुकारेंगे, मुसलमानो! ज़रा ठहरो हमें भी अपने साथ ले चलो, दुनिया में हम भी तुम्हारे साथी थे। मोमिन कहेंगे कि पीछे से रोशनी लाओ। मतलब यह कि रोशनी तो दुनिया में ईमान और नेक अमल से पैदा की जाती है, दुनिया में न ईमान लाए और न नेक अमल किए, अब रोशनी कहाँ से लाएँ। ग़रज़ वे पीछे रह जाएँगे। अब दोनों फ़रीक़ के दरमियान एक दीवार आड़ हो जाएगी।

(तफ़सीर पृष्ठ 974) **1.** मतलब यह कि मुसलमान को जल्द तौबा कर लेना चाहिए क्योंकि कभी-कभी फिर तौबा की तौफ़ीक़ नहीं रहती, और कभी-कभी कुफ़्र तक नौबत पहुँच जाती है।

2. इस तरह तौबा करने पर अपनी रहमत से मुर्दा दिल को ज़िन्दा और दुरुस्त कर देता है। पस मायूस न होना चाहिए।

3. यानी ये ऊँचे दर्जे कामिल ईमान ही की बदौलत नसीब होते हैं।

4. यानी दुनिया के मक़ासिद ये हैं कि बचपन में खेलकूद का ग़ल्बा रहता है और जवानी में बनने-सँवरने और आपस में एक-दूसरे पर फ़ख़्र करने का और बुढ़ापे में माल-दौलत और आल-औलाद को गिनवाना। और ये सब मक़ासिद फ़ानी और महज़ ख़्वाब व ख़्याल हैं।

5. इसी तरह दुनिया चन्द दिन की बहार है फिर ज़वाल और ख़ात्मा।

6. यानी इससे कम का इनकार है ज़्यादा का इनकार नहीं।

7. इसमें इशारा है कि अपने आमाल पर कोई मग़रूर न हो और अपने आमाल पर जन्नत का हक़दार होने का दावेदार न हो। यह सिर्फ़ फ़ज़्ल है जिसका मदार हमारी मरज़ी पर है, मगर हमने अपनी रहमत से इन आमाल के करने वालों के साथ अपनी मरज़ी मुताल्लिक़ कर ली है। अगर हम चाहते तो अपनी मरज़ी को मुताल्लिक़ न करते।

8. यानी तमाम मुसीबतें बाहरी हों या अन्दुरूनी वे सब मुक़द्दर हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 976) **1.** 'इख़्तियाल' यानी इतराना अक्सर अन्दुरूनी ख़ूबियों और कमालात पर इतराने में और फ़ख़्र अक्सर बाहरी चीज़ों माल व रुतबे वग़ैरह पर इतराने में इस्तेमाल होता है।

2. ऊपर 'इअ्लमू' से 'अलहमीद' तक दुनिया का ग़ैर-अहम चीज़ होना और उसके दरमियान में 'व फ़िल्-आख़िरति' से आख़िरत का अहम और शान वाली चीज़ होना इरशाद हुआ है। आगे भी आख़िरत का अहम और शान वाला होना इस तरह बयान फ़रमाते हैं कि असल में हमने इसी आख़िरत के दुरुस्त करने के लिए रसूलों को भेजा, और अहकाम मुक़र्रर किए और **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 978 पर)**

अट्ठाईसवाँ पारः क़द् समिअ़ल्लाहु

58 सूरतुल्-मुजाद-लति 105

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2103 अक्षर, 479 शब्द, 22 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लती तुजादिलु-क फ़ी ज़ौजिहा व तश्तकी इलल्लाहि वल्लाहु यस्-मअु तहावु-रकुमा, इन्नल्ला-ह समीअ़ुम्-बसीर **(1)** अल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन्कुम् मिन्-निसा-इहिम् मा हुन्-न उम्महाति--हिम्, इन् उम्महातुहुम् इल्लल्-लाई व-लद्-नहुम्, व इन्नहुम् ल-यक़ूलू-न मुन्करम् मिनल्-क़ौलि वज़ूरन्, व इन्नल्ला-ह ल-अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर **(2)** वल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन् निसा-इहिम् सुम्-म यअ़ूदू-न लिमा क़ालू फ़-तह़रीरु र-क़-बतिम्-मिन् क़ब्लि अंय्य-तमास्सा, ज़ालिकुम् तू-अ़ज़ू-न बिही, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न ख़बीर **(3)** फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु-तताबिअ़ैनि मिन् क़ब्लि अंय्य-तमास्सा, फ़-मल्-लम् यस्ततिअ़् फ़-इत्आ़मु सित्ती-न मिस्कीनन्, ज़ालि-क लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुन् अलीम **(4)** इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू कुबितू कमा कुबितल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम्-बय्यिनातिन्, व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम् मुहीन **(5)** यौ-म यब्असुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-युनब्बिउहुम् बिमा

قد سمع الله ٢٨ — ٧٨٩ — المجادلة ٥٨

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَانِ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ
اِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ (١)
اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ
اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا
مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ (٢) وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ
مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ (٣) فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا
ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ وَ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٤) اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (٥) يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ
اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ

منزل ٧

अट्ठाईसवाँ पारः क़द् समिअ़ल्लाहु

58 सूरः मुजादला 105

सूरः मुजादला मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 22 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बेशक अल्लाह तआ़ला ने उस औ़रत की बात सुन ली जो आपसे अपने शौहर के मामले में झगड़ती थी, और (अपने रंज व ग़म की) अल्लाह तआ़ला से शिकायत करती थी, और अल्लाह तआ़ला तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा था, (और) अल्लाह (तो) सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।[1] **(1)** तुममें जो लोग अपनी बीवियों से 'ज़िहार' करते हैं (जैसे यूँ कह देते हैं कि तू मुझपर मेरी माँ की तरह है) वे उनकी माएँ नहीं हैं, उनकी माएँ तो बस वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया है, और वे लोग बेशक एक नामाक़ूल और (चूँकि) झूठ बात कहते हैं (इसलिए गुनाह ज़रूर होगा) और यक़ीनन अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाले, बख़्श देने वाले हैं। **(2)** और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं, फिर अपनी कही हुई बात की तलाफ़ी करना चाहते हैं तो उनके ज़िम्मे एक ग़ुलाम या बाँदी का आज़ाद करना है, इससे पहले कि दोनों (मियाँ-बीवी) आपस में मिलें, इससे तुमको नसीहत की जाती है, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है।[2] **(3)** फिर जिसको (ग़ुलाम-बाँदी) मयस्सर न हो तो उसके ज़िम्मे लगातार दो महीने के रोज़े हैं, इससे पहले कि दोनों आपस में मिलें। फिर जिससे यह भी न हो सकें तो उसके ज़िम्मे साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह हुक्म इसलिए (बयान किया गया) है कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल.) पर ईमान ले आओ, और ये अल्लाह की (मुक़र्रर की हुई) हदें हैं, और काफ़िरों के लिए सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।[3] **(4)** जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वे (दुनिया में भी) ऐसे ज़लील होंगे जैसे उनसे पहले लोग ज़लील हुए, और हमने खुले-खुले अहकाम नाज़िल किए हैं, और काफ़िरों को ज़िल्लत का अ़ज़ाब होगा। **(5)** जिस दिन उन

(पृष्ठ 978 का शेष) दीन की मदद के लिए ख़ास तौर पर लोहे को पैदा किया। और साथ ही इन चीज़ों में तुम्हारे दुनियावी मुनाफ़े भी रख दिए। पस दुनिया एक ज़रूरत की वजह से मक़सूद है और आख़िरत अपनी ज़ात ही के सबब मक़सूद हुई।

3. ऊपर मख़्लूक़ की दुरुस्ती के लिए रसूलों का भेजना मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र किया गया था। आगे बाज़ ख़ास रसूलों का उम्मतों की इस्लाह के लिए भेजना और उन उम्मतों में से बाज़ का इस्लाह क़बूल करना और बाज़ का इस्लाह को क़बूल न करना, और मौजूदा लोगों को इस्लाह के क़बूल करने का हुक्म इरशाद है।

4. यानी जिस ग़रज़ से उसको इख़्तियार किया था और वह ग़रज़ अल्लाह की रिज़ा हासिल करना थी, उसका एहतिमाम नहीं किया, यानी अहकाम पर अ़मल नहीं किया अगरचे देखने में दुनिया से बेताल्लुक़ रहे, और बाज़े अहकाम पर अ़मल करने में सक्रिय रहे।

5. यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान लाए।

6. यानी ऐसा ईमान देगा जो हर वक़्त साथ रहेगा यहाँ से पुलसिरात तक।

7. चुनाँचे उसकी मरज़ी व चाहत उसके फ़ज़्ल के साथ मुसलमानों से मुताल्लिक़ हुई तो उन्हीं को इनायत फ़रमा दिया।

8. मतलब यह कि उनका घमण्ड और गुमान टूट जाए कि वे मौजूदा हालत में अपने को फ़ज़्ल और मग़फ़िरत का महल व हक़दार समझते हैं।

1. अ़रब में जहालत के ज़माने में अगर कोई शख़्स अपनी बीवी को इस तरह कह देता कि तू मेरी माँ की जगह है, या तेरी पीठ मेरी माँ या बहन की पीठ की जगह है, तो मियाँ-बीवी में हमेशा के लिए जुदाई हो जाती थी। और यह क़ौल तलाक़ से बढ़कर हमेशा के लिए हराम करने वाला ख़्याल किया जाता था। शरीअ़त की इस्तिलाह में इसको 'ज़िहार' कहते हैं। हुज़ूरे पाक के ज़माने में औस बिन सामित सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने गुस्से में अपनी बीवी ख़ौला बिन्ते सालबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को कह दिया कि तू मेरे हक़ में ऐसी है जैसी मेरी माँ की पुश्त कि मुझपर हराम है। उसके बाद दोनों शर्मिन्दा हुए। हज़रत ख़ौला मसले के हल और तहक़ीक़े हाल के लिए बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुईं। चूँकि 'ज़िहार' के मुताल्लिक़ अब तक कोई आसमानी हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था, आपने क़ौम ही के मामूल को (शेष तफ़सीर पृष्ठ 982 पर)

अ़मिलू, अह़्साहुल्लाहु व नसूहु, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (6) ❖

अलम् त-र अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, मा यकूनु मिन्-नज्वा सला-सतिन् इल्ला हु-व राबिअुहुम् व ला ख़म्सतिन् इल्ला हु-व सादिसुहुम् व ला अद्ना मिन् ज़ालि-क व ला अक्स-र इल्ला हु-व म-अ़हुम् ऐ-न मा कानू सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (7) अलम् त-र इलल्लज़ी-न नुहू अ़निन्-नज्वा सुम्-म यअ़ूदू-न लिमा नुहू अ़न्हु व य-तनाजौ-न बिल्इस्मि वल्-अ़ुद्वानि व मअ़्सि-यतिर्रसूलि व इज़ा जाऊ-क हय्यौ-क बिमा लम् युहय्यि-क बिहिल्लाहु व यक़ूलू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् लौ ला युअ़ज़्ज़िबुनल्लाहु बिमा नक़ूलु, हस्बुहुम् जहन्नमु यस्लौनहा फ़-बिअ्सल्-मसीर (8) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तनाजैतुम् फ़ला त-तनाजौ बिल्इस्मि वल्अ़ुद्वानि व मअ़्सि-यतिर्-रसूलि व तनाजौ बिल्-बिर्रि वत्तक़्वा, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह़्शरून (9) इन्नमन्- नज्वा मिनश्- शैतानि लियह़्ज़ुनल्लज़ी-न आमनू व लै-स बिज़ार्रिहिम् शैअन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मुअ्मिनून (10) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ी-ल लकुम् तफ़स्सहू फ़िल्-मजालिसि फ़फ़्सहू यफ़्सहिल्लाहु लकुम् व इज़ा क़ीलन्शुज़ू फ़न्शुज़ू यर्फ़अ़िल्लाहुल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् वल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म द-रजातिन्, वल्लाहु बिमा

ع وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۞ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ
اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى
مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ
يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۞ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ
لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُوْلِ ۡ وَاِذَا جَاۗءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَ
يَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۭ حَسْبُهُمْ
جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۞ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَاۗرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ
تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ

सबको अल्लाह दोबारा ज़िन्दा करेगा। फिर उनका सब किया हुआ उनको बतलाएगा। (क्योंकि) अल्लाह तआला ने वह महफ़ूज़ कर रखा है और ये लोग उसको भूल गए, और अल्लाह हर चीज़ की ख़बर रखता है। **(6)** ◆

क्या आपने इसपर नज़र नहीं फ़रमाई कि अल्लाह तआला सब कुछ जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। कोई सरगोशी ''यानी चुपके-चुपके बातें करना'' तीन आदमियों की ऐसी नहीं होती जिसमें चौथा वह (यानी अल्लाह) न हो, और न पाँच की (कानाफूसी) होती है जिसमें छठा वह न हो, और न इस (अंक) से कम (में) होती है (जैसे दो चार आदमियों में) और न उससे ज़्यादा, मगर वह (हर हालत में) उन लोगों के साथ होता है, चाहे वे लोग कहीं भी हों। फिर उन (सब) को क़ियामत के दिन उनके किए हुए काम बतला देगा, बेशक अल्लाह तआला को हर बात की पूरी ख़बर है। **(7)** क्या आपने उन लोगों पर नज़र नहीं फ़रमाई[1] जिनको सरगोशी ''चुपके-चुपके बातें करने'' से मना किया गया था, (मगर) फिर (भी) वह वही काम करते हैं जिससे उनको मना किया गया था, और गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशियाँ ''यानी कानाफूसी'' करते हैं।[2] और वे लोग जब आपके पास आते हैं आपको ऐसे लफ़्ज़ से सलाम कहते हैं[3] जिससे अल्लाह ने आपको सलाम नहीं फ़रमाया[4] और अपने जी में (या अपने आपस में) कहते हैं कि (अगर यह पैग़म्बर हैं तो) अल्लाह तआला हमको हमारे इस कहने पर (फ़ौरन) सज़ा क्यों नहीं देता, उनके लिए जहन्नम काफ़ी है, उसमें ये लोग (ज़रूर) दाख़िल होंगे, सो वह बुरा ठिकाना है। **(8)** ऐ ईमान वालो! जब तुम (किसी ज़रूरत से) सरगोशी करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशियाँ मत करो, और नफ़ा पहुँचाने और परहेज़गारी की बातों की सरगोशियाँ करो[5] और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम सब जमा किए जाओगे। **(9)** ऐसी सरगोशी सिर्फ़ शैतान की तरफ़ से (यानी उसके बहाकाने से) है[6] ताकि मुसलमानों को रंज में डाले, और वह (शैतान) बग़ैर ख़ुदा के इरादे के उनको कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, और मुसलमानों को (हर मामले में) अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। **(10)** ऐ ईमान वालो! जब तुमसे

(पृष्ठ 980 का शेष) क़ाबिले अ़मल ख़्याल करके फ़रमा दिया कि अब तुम्हारे और तुम्हारे शौहर में एक साथ रहने की कोई सूरत नहीं हो सकती। यह सुनकर वह रोने-धोने लगीं और अपने शौहर का शिकवा शुरू कर दिया और कहा या रसूलल्लाह! मेरी जवानी शौहर ही के घर में गुज़री और अब जो मैं बूढ़ी हो चली हूँ तो 'ज़िहार' कर बैठा है, लेकिन जुदाई की सूरत में घर तबाह हो जाएगा और छोटे-छोटे बच्चे परेशान और मारे-मारे फिरेंगे। उसके बाद आसमान की तरफ़ सर उठाकर कहने लगीं, या इलाही! मुझ बेचारी का तू ही वारिस है, मेरी फ़रियाद सुन। उसी वक़्त ये आयतें नाज़िल हुई जिनमें 'ज़िहार' को तलाक़ क़रार नहीं दिया गया, और फ़रमाया गया कि जिसने जन्म नहीं दिया वह माँ किस तरह हो सकती है? और ऐसी बेहूदा बात कहने से रोकने का यह हुक्म देकर फ़रमाया कि जब तक शौहर कफ़्फ़ारा अदा न करे, उस वक़्त तक बीवी के क़रीब न जाए।

2. पस कफ़्फ़ारे में दो हिक्मतें हो गईं- एक बुराई का कफ़्फ़ारा जिसकी तरफ़ इशारा है 'अल्लाह माफ़ करने वाले, बख़्श देने वाले हैं' में। दूसरे तंबीह और डाँट जिसका 'तुमको नसीहत की जाती है' में बयान है।

3. इस्लाम में भी यह हुक्म बहाल है कि जो शख़्स अपनी बीवी के किसी अंग को अपनी माँ, बहन, बेटी या किसी ऐसी औ़रत के अंग से तश्बीह दे जिसमें मर्द का किसी हालत में निकाह नहीं हो सकता तो कफ़्फ़ारा अदा किए बग़ैर बीवी से सोहबत करना और इसी तरह की दूसरी बातें जैसे लिपटाना, चूमना और साथ लेटाना वग़ैरह सब हराम हो जाते हैं। लेकिन अंग के तश्बीह देने से बदन के वही अंग व हिस्से मुराद हैं जिनकी तरफ़ मर्द बग़ैर किसी सख़्त मजबूरी के देख नहीं सकता जैसे पीठ, पेट, रान। अगर कफ़्फ़ारे में बाँदी गुलाम आज़ाद करने का मौक़ा न हो जैसा कि मौजूदा ज़माने में बाँदी और गुलामों का कहीं भी वजूद नहीं पाया जाता तो साठ रोज़े रखे, अगर रोज़ों की ताक़त नहीं तो साठ मिस्कीनों को दोनों वक़्त खाना सालन-रोटी पेट भरकर खिलाए। और अगर अनाज देना चाहे तो हर एक को दो सेर गेहूँ दे।

1. मदीना पाक के यहूदियों की आ़दत थी कि जब किसी मुसलमान को अपनी मज्लिस के सामने से गुज़रते हुए देखते तो आपस में कानों में बातें करनी शुरू कर देते। अगरचे उस वक़्त यहूदी और मुसलमानों में आपस में सुलह का अ़हद था, लेकिन उस कानाफूसी से मुसलमानों के दिलों में यह बात खटकती थी कि कहीं हमारे क़त्ल या तकलीफ़ के मश्विरे तो नहीं कर रहे हैं? हर चन्द पैग़म्बरे ख़ुदा सल्ल. ने उनको उस नाजायज़ कानाफूसी से मना किया, लेकिन वे बाज़ न आए। उनके बारे में यह आयत नाज़िल हुई। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 984 पर)**

तअ़्मलू-न ख़बीर **(11)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नाजैतुमुर्रसू-ल फ़-क़द्दिमू बै-न यदै नज्वाकुम् स-द-क़तन्, ज़ालि-क ख़ैरुल्-लकुम् व अत्हरु, फ़-इल्लम् तजिदू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम **(12)** अ-अश्फ़क़्तुम् अन् तुक़द्दिमू बै-न यदै नज्वाकुम् स-द-क़ातिन्, फ़-इज़् लम् तफ़्अ़लू व ताबल्लाहु अ़लैकुम् फ़-अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अतीअ़ुल्ला-ह व रसूलहू, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून **(13)** ❖

अमलू त-र इलल्लज़ी-न तवल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम्, मा हुम्-मिन्कुम् व ला मिन्हुम् व यह्लिफ़ू-न अ़लल्-कज़िबि व हुम् यअ़्लमून **(14)** अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन्, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ़्मलून **(15)** इत्त-ख़ज़ू ऐमा-नहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि फ़-लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन **(16)** लन् तुग्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, उलाइ-क अस्हाबुन्-नारि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(17)** यौ-म यब्-अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-यह्लिफ़ू-न लहू कमा यह्लिफ़ू-न लकुम् व यह्सबू-न अन्नहुम् अ़ला शैइन्, अला इन्नहुम् हुमुल्-काज़िबून **(18)** इस्तह्-व-ज़ अ़लैहिमुश्शैतानु फ़-अन्साहुम् ज़िक्रल्लाहि, उलाइ-क हिज़्बुश्-शैतानि, अला इन्-न हिज़्बश्शैतानि हुमुल्-ख़ासिरून **(19)** इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू उलाइ-क

انشزوا فانشزوا يرفع الله الذين امنوا منكم والذين
اوتوا العلم درجت والله بما تعملون خبير ﴿١١﴾ يايها
الذين امنوا اذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي
نجوىكم صدقة ذلك خير لكم واطهر فان لم
تجدوا فان الله غفور رحيم ﴿١٢﴾ ءاشفقتم ان تقدموا بين يدي
نجوىكم صدقت فاذ لم تفعلوا وتاب الله عليكم
فاقيموا الصلوة واتوا الزكوة واطيعوا الله ورسوله
والله خبير بما تعملون ﴿١٣﴾ الم تر الى الذين تولوا قوما
غضب الله عليهم ما هم منكم ولا منهم ويحلفون
على الكذب وهم يعلمون ﴿١٤﴾ اعد الله لهم عذابا شديدا
انهم ساء ما كانوا يعملون ﴿١٥﴾ اتخذوا ايمانهم جنة
فصدوا عن سبيل الله فلهم عذاب مهين ﴿١٦﴾ لن
تغني عنهم اموالهم ولا اولادهم من الله شيا اولىك
اصحب النار هم فيها خلدون ﴿١٧﴾ يوم يبعثهم الله جميعا
فيحلفون له كما يحلفون لكم ويحسبون انهم على
شيء الا انهم هم الكذبون ﴿١٨﴾ استحوذ عليهم الشيطن

कहा जाए[1] कि मज्लिस में जगह खोल दो तो तुम जगह खोल दिया करो। अल्लाह तुमको (जन्नत में) खुली जगह देगा। और जब (किसी ज़रूरत से) यह कहा जाए कि (मज्लिस से) उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो[2] अल्लाह तआ़ला (इस हुक्म के मानने से) तुममें ईमान वालों के और (ईमान वालों में) उन लोगों के जिनको (दीन का) इल्म अ़ता हुआ है (आख़िरत के) दर्जे बुलन्द कर देगा, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। **(11)** ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से सरगोशी "यानी कान में बात" (करने का इरादा) किया करो तो अपनी उस सरगोशी से पहले (मिस्कीनों को) कुछ ख़ैरात दे दिया करो,[3] यह तुम्हारे लिए बेहतर है और (गुनाहों से) पाक होने का अच्छा ज़रिया है। फिर अगर तुमको (सदक़ा देने की) ताक़त न हो तो अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। **(12)** क्या तुम अपनी सरगोशी "यानी चुपके-चुपके कान में बात करने" से पहले ख़ैरात देने से डर गए? सो (ख़ैर!) जब तुम (उसको) न कर सके और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे हाल पर इनायत फ़रमाई तो तुम नमाज़ के पाबन्द रहो और ज़कात दिया करो और अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल का कहना माना करो, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है।[4] **(13)** ◆

क्या आपने उन लोगों पर नज़र नहीं फ़रमाई जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिनपर अल्लाह ने ग़ज़ब किया है, ये (मुनाफ़िक़) लोग न तो (पूरे-पूरे) तुममें हैं और न उन ही में हैं, और झूठी बात पर क़स्में खा जाते हैं, और वे (खुद भी) जानते हैं। **(14)** अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख़्त अ़ज़ाब मुहैया कर रखा है, (क्योंकि) बेशक वे बुरे-बुरे काम किया करते थे। **(15)** उन्होंने अपनी क़स्मों को (अपने बचाव के लिए) ढाल बना रखा है, फिर खुदा की राह से रोकते रहते हैं। सो (इस वजह से) उनके लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब होने वाला है। **(16)** उनके माल और औलाद अल्लाह (के अ़ज़ाब) से उनको ज़रा भी न बचा सकेंगे, (और) ये लोग दोज़ख़ी हैं वे लोग उसमें हमेशा रहने वाले हैं। **(17)** जिस दिन अल्लाह उन सबको दोबारा ज़िन्दा करेगा, सो ये उसके सामने भी (झूठी) क़स्में खा जाएँगे जिस तरह तुम्हारे सामने क़स्में खा जाते हैं, और यूँ ख़्याल करेंगे कि हम किसी अच्छी हालत में हैं। ख़ूब सुन लो कि ये लोग बड़े ही झूठे हैं। **(18)** उनपर शैतान ने पूरा

(पृष्ठ 982 का शेष) 2. मुनाफ़िक़ों की जुर्रत और ढिटाई का यह आ़लम था कि मस्जिदे नबवी में बैठकर अपना हल्क़ा बना लेते और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का मज़ाक़ उड़ाते और ऐब निकालते। सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कोई शरई हुक्म सादिर फ़रमाते तो ये आपस में कहने लगते कि हमसे तो ऐसे सख़्त काम हो नहीं सकते। सूरः निसा में उनकी कानाफूसियों के बारे में रोक का हुक्म आ चुका था, लेकिन वे किसी तरह बाज़ नहीं आते थे।

3. 'सलाम' के मायने सलामती के और 'साम' के मायने मौत व हलाक होने के हैं। बाज़ यहूदी बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर होते तो शरारत व बद-अन्देशी के तौर पर आपको 'अस्सामु अ़लैकुम' कहते थे और फिर इस बुरी हरकत और शरारत पर नाज़ करते हुए दिल में कहते थे कि अगर मुहम्मद वाक़ई खुदा के सच्चे नबी हैं तो फिर इस बेअदबी पर उनका खुदा हमपर अ़ज़ाब क्यों नाज़िल नहीं करता? उसपर यह आयत नाज़िल हुई।

4. यानी अल्लाह तआ़ला के अल्फ़ाज़ तो ये हैं "सलामुन् अ़लल् मुर्सलीन, सलामुन अ़ला इबादिहिल्लज़ीनस्तफ़ा, सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमन्" और वे कहते हैं "अस्सामु अ़लैकुम"।

5. 'बिर्र' यानी नफ़ा पहुँचाने से मुराद वह नफ़ा है जिसका फ़ैज़ दूसरों तक पहुँचे जो 'उदवान' यानी 'ज़्यादती' के मुक़ाबले में है। और 'तक़्वा' यानी परहेज़गारी 'इस्म व मासियत' यानी गुनाह और रसूल की नाफ़रमानी के मुक़ाबिल है।

6. मोमिनों के ख़िलाफ़ मुनाफ़िक़ों और यहूदियों की कानाफूसी मुसलमानों को ग़मगीन और परेशान करती थी, क्योंकि जब किसी मज्लिस में कई आदमी हों और दो आदमी तीसरे से अलग होकर कान में बातें करने लगें तो तीसरे को लाज़िमी तौर पर शक और मलाल होगा कि खुदा जाने मुझसे अलग होकर क्या मश्विरा कर रहे हैं। मुनाफ़िक़ों की इस बुरी हरकत के बारे में यह आयत नाज़िल हुई।

1. सहाबा-ए-बद्र की जमाअ़त अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के बाद सबसे अफ़ज़ल व मक़बूल-तरीन जमाअ़त है। एक बार उनमें से चन्द हज़रात सरदारे दो जहाँ सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दीदार मुबारक से मुशर्रफ़ होने के लिए हाज़िरे ख़िदमत हुए। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 986 पर)**

फ़िल्-अज़ल्लीन (20) क-तबल्लाहु ल-अग़्लिबन्-न अ-न व रसुली, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (21) ला तजिदु क़ौमंय्-युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि युवाद्दू-न मन् हाद्दल्ला-ह व रसूलहू व लौ कानू आबा-अहुम् औ अब्ना-अहुम् औ इख़्वा-नहुम् औ अ़शी-र-तहुम्, उलाइ-क क-त-ब फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-ईमा-न व अय्य-दहुम् बिरूहिम्-मिन्हु, व युद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, उलाइ-क हिज़्बुल्लाहि, अला इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुल्-मुफ़्लिहून (22) ❖

59 सूरतुल्-हश्रि 101

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2016 अक्षर, 455 शब्द, 24 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (1) हुवल्लज़ी अख़्-रजल्लज़ी-न

فَأَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۚ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ
الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗٓ
أُولٰٓئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِيْ ۚ
إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ يُوَآدُّونَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ وَلَوْ كَانُوٓا اٰبَآءَهُمْ
أَوْ أَبْنَآءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ
قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَّعِشْرُونَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾
هُوَ الَّذِيٓ أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَّخْرُجُوا وَظَنُّوٓا أَنَّهُمْ
مَّانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَأَتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ

منزل ٧

क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि मिन् दियारिहिम् लि-अव्वलिल्-हश्रि, मा ज़नन्तुम् अंय्यख़्रुजू व ज़न्नू अन्नहुम् मानि-अ़तुहुम् हुसूनुहुम् मिनल्लाहि फ़-अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम् यह्तसिबू व क़-ज़-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्रुअ़्-ब युख़्रिबू-न बुयू-तहुम् बि-ऐदीहिम् व ऐदिल्-मुअ्मिनी-न, फ़अ़्तबिरू या उलिल्-अब्सार (2) व लौ ला अन् क-तबल्लाहु अ़लैहिमुल्-जला-अ
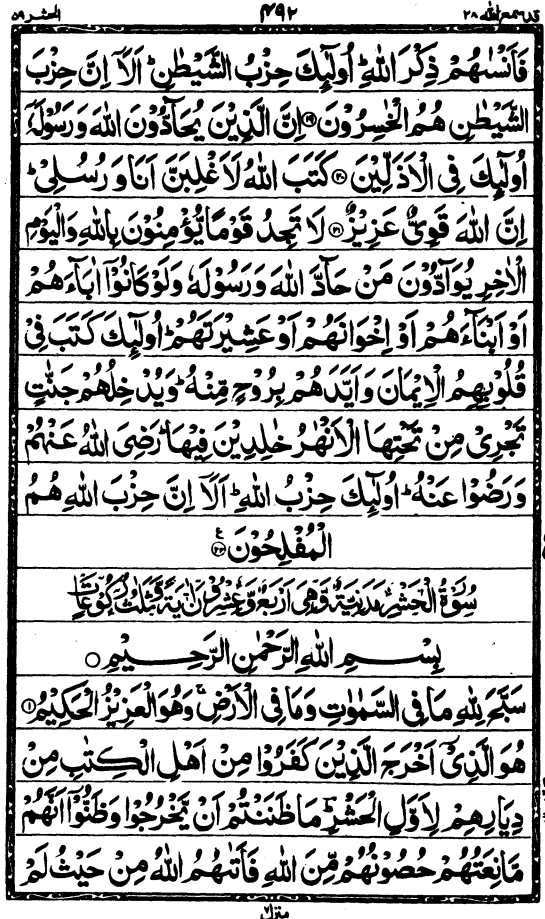
क़ब्ज़ा जमा लिया है, सो उसने उनको ख़ुदा की याद भुला दी है, ये लोग शैतान का गिरोह है, ख़ूब सुन लो कि शैतान का गिरोह ज़रूर बरबाद होने वाला है।[1] **(19)** जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं ये लोग इन्तिहाई ज़लील लोगों में हैं। **(20)** और अल्लाह तआ़ला ने यह बात (अपने क़दीमी हुक्म में) लिख दी है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ग़ालिब रहेंगे,[2] बेशक अल्लाह तआ़ला क़ुव्वत वाला, ग़ल्बे वाला है। **(21)** जो लोग अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर (पूरा) ईमान रखते हैं, आप उनको न देखेंगे कि वे ऐसे शख़्सों से दोस्ती रखते हैं जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं, अगरचे वे उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबा ही क्यों न हों। उन लोगों के दिलों में अल्लाह तआ़ला ने ईमान जमा दिया है और उनके (दिलों) को अपने फ़ैज़ से क़ुव्वत दी है, (फ़ैज़ से मुराद नूर है)। और उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे से नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी होगा और वे अल्लाह से राज़ी होंगे। ये लोग अल्लाह का गिरोह है। ख़ूब सुन लो कि अल्लाह ही का गिरोह कामयाबी पाने वाला है।[3] **(22)** ❖

59 सूरः हश्र 101

सूरः हश्र मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 24 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अल्लाह की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ कि आसमानों और ज़मीन में (मख़्लूक़ात) हैं, (चाहे अपनी ज़बान से या अपने हाल से) और वह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। **(1)** वही है जिसने (उन) अहले किताब काफ़िरों (यानी बनू-नज़ीर) को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया,[4] तुम्हारा गुमान भी न था कि वे (कभी अपने घरों से) निकलेंगे, और (ख़ुद) उन्होंने यह गुमान कर रखा था कि उनके क़िले उनको अल्लाह से बचा लेंगे,[5] सो उनपर ख़ुदा (का अ़ज़ाब) ऐसी जगह से पहुँचा कि उनको ख़्याल भी न था।[6] और उनके दिलों में रौब डाल दिया कि अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से और मुसलमानों के हाथों से भी उजाड़ रहे थे, सो ऐ समझ रखने वालो! (इस हालत को देखकर) इबरत हासिल करो।[7] **(2)** और अगर

(पृष्ठ 984 का शेष) इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त मस्जिदे नबवी में काफ़ी बड़ा मजमा था। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जाँनिसार इन्द्र धनुष की तरह रिसालत के चाँद के गिर्द जमे बैठे हुए थे। इसलिए उन नए आने वाले सहाबा-ए-बद्र को बैठने की जगह न मिल सकी। ये हज़रात सलाम करके खड़े रहे, मजमे में से कोई शख़्स उनकी ख़ातिर न उठा। जब यह हालत सरवरे अम्बिया सल्ल. ने देखी तो बद्री सहाबियों की गिनती के मुताबिक़ चन्द ग़ैर-बदरियों को नाम लेकर अपनी जगह से खड़े हो जाने का हुक्म दिया। वे हज़रात फ़ौरन खड़े हो गए और अहले बद्र उनकी जगह जा बैठे। इससे मुनाफ़िक़ों को ताना मारने का मौक़ा मिल गया और कहने लगे कि मुहम्मद तो बाज़ को दूसरों पर तरजीह देते हैं, उन्हें सबको एक नज़र से देखना चाहिए। आँ हज़रत ने जिन हज़रात को अपनी-अपनी जगह से खड़े होने का हुक्म दिया और उन्होंने बग़ैर तंगदिली के इरशादे नबवी की तामील की थी, हक़ तआ़ला को उनका यह हुक्म मानना बहुत पसन्द आया। चुनाँचे उनकी तारीफ़ में यह पूरी आयत "तअ़मलू-न ख़बीर" तक नाज़िल हुई। और हक़ीक़त में इनसानी आदाब, इनसानी हमदर्दी और इस्लामी भाईचारे और मुरव्वत का यही तक़ाज़ा है कि अपने से अफ़ज़ल लोगों का एहतिराम किया जाए। अगर गुन्जाइश हो तो ख़ूब मिल-मिलकर बैठ जाएँ वरना बुज़ुर्ग हस्तियों के लिए जगह ख़ाली कर दी जाए।

2. चाहे उठने के लिए इस ग़रज़ से कहा जाए कि आने वाले के लिए जगह खुल जाए, फिर चाहे बिलकुल उठ जाने से हो या एक जगह से उठकर दूसरी जगह जा बैठने से हो, और चाहे इस वजह से कहा जाए कि मज्लिस की मुख्य जगह को किसी ख़ास मश्विरे की मस्लहत या किसी ज़रूरत आराम या इबादत वग़ैरह से अलग करने और ख़ाली करने वग़ैरह की हाजत हो, जो बग़ैर तन्हाई के बिलकुल हासिल न हो सकें या कामिल न हो सकें। पस मज्लिस के सदर (अध्यक्ष) के हुक्म से उठ जाना चाहिए। और यह हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अ़लावा के लिए भी आ़म है। पस मज्लिस के मुखिया को ज़रूरत के वक़्त इसकी इजाज़त है, लेकिन आने वाले को न चाहिए कि किसी को उठाकर उसकी जगह जा बैठे। **(पृष्ठ 984 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 986 की तफ़सीर पृष्ठ 988-992 पर)**

ल-अ़ज़्ज़-बहुम् फ़िद्दुन्या, व लहुम् फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन्नार (3) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशाक़्क़िल्ला-ह फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब (4) मा क़-तअ़्तुम् मिल्ली-नतिन् औ तरक्तुमूहा क़ाइ-मतन् अ़ला उसूलिहा फ़बि-इज़्निल्लाहि व लियुख़्ज़ि-यल्-फ़ासिक़ीन (5) व मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन्हुम् फ़मा औजफ़्तुम् अ़लैहि मिन् ख़ैलिंव्-व ला रिकाबिंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युसल्लितु रुसु-लहू अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (6) मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन् अह्लिल्-क़ुरा फ़-लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्-क़ुरबा वल्यतामा वल्-मसाकीनि वब्निस्सबीलि कै ला यकू-न दू-लतम्-बैनल्-अग़्निया-इ मिन्कुम्, व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब ✣ (7) लिल्फ़ु-क़राइल्-मुहाजिरीनल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम् यब्तग़ू-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानंव्-व यन्सुरूनल्ला-ह व रसूलहू, उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून (8) वल्लज़ी-न त-बव्वउद्दा-र वल्ईमा-न मिन् क़ब्लिहिम् युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला यजिदू-न फ़ी सुदूरिहिम् हा-जतम्-मिम्मा ऊतू व युअ़्सिरू-न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व लौ का-न बिहिम् ख़सा-सतुन्, व

يَحْتَسِبُوا وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ
بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٢﴾
وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤﴾
مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا
فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ﴿٥﴾ وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ
مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَٰكِنَّ
اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٦﴾
مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ
وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ
كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا آتَاكُمُ
الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ
إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٧﴾ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ
أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ هُمُ

✣ व. लाज़िम

अल्लाह तआ़ला उनकी क़िस्मत में वतन से निकाला जाना न लिख चुकता तो उनको दुनिया ही में (क़त्ल की) सज़ा देता, और उनके लिए आख़िरत में दोज़ख़ का अ़ज़ाब (तैयार) है। (3) यह इस सबब से है कि उन लोगों ने अल्लाह की और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की मुख़ालफ़त की है, और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालफ़त करता है तो अल्लाह तआ़ला उसको सख़्त सज़ा देने वाला है।[1] (4) जो खजूरों के पेड़ के तने तुमने काट डाले या उनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया, सो (दोनों बातें) ख़ुदा ही के हुक्म (और रिज़ा) के मुवाफ़िक़ हैं, और ताकि काफ़िरों को ज़लील करे।[2] (5) और जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को उनसे दिलवाया, सो तुमने उसपर न घोड़े दौड़ाए और न ऊँट, लेकिन अल्लाह तआ़ला (की आ़दत है कि) अपने रसूलों को जिसपर चाहे (ख़ास तौर पर) मुसल्लत फ़रमा देता है, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है। (6) जो कुछ अल्लाह तआ़ला (इस तौर पर) अपने रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को दूसरी बस्तियों के (काफ़िर) लोगों से दिलवा दे[3] (जैसे फ़िदक और एक हिस्सा ख़ैबर का), सो वह (भी) अल्लाह का हक़ है और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का और (आपके) रिश्तेदारों का और यतीमों का और ग़रीबों का और मुसाफ़िरों का ताकि वह (ग़नीमत का माल) तुम्हारे मालदारों के क़ब्ज़े में न आ जाए। और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तुमको जो कुछ दे दिया करें वह ले लिया करो, और जिस चीज़ (के लेने) से तुमको रोक दें (और अल्फ़ाज़ के आ़म होने से यही हुक्म है अफ़आ़ल और अहकाम में भी) तुम रुक जाया करो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तआ़ला (मुख़ालफ़त करने पर) सख़्त सज़ा देने वाला है। (7) (और) उन ज़रूरतमन्द मुहाजिरीन का (ख़ास तौर पर) हक़ है जो अपने घरों से और अपने मालों से (ज़ुल्म व ज़बरदस्ती से) अलग कर दिए गए। वे अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल (यानी जन्नत) और रिज़ा के तालिब हैं, और वे अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दीन) की मदद करते हैं, (और) यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं।[4] (8) और (तथा) उन लोगों का (भी हक़ है)

(पिछले पृष्ठ का शेष) 3. ख़ैरात की मिक़्दार (यानी मात्रा) आयत में मुक़र्रर नहीं और रिवायतों में मुख़्तलिफ़ मिक़्दारें आई हैं। ज़ाहिरी तौर पर ग़ैर-तयशुदा मालूम होती है, लेकिन माक़ूल मात्रा होना ज़रूरी है। ग़ालिबन यह सदक़ा ऐलानिया होगा, वरना हर शख़्स सदक़ा करने में पहल करने वाला होने का दावा कर सकता। इसकी ज़रूरत इस बिना पर पेश आई कि मुनाफ़िक़ लोग बिना ज़रूरत भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ तन्हाई कर लेते और बेकार बातों के मुताल्लिक़ सवालात करने लगते, इससे उनका मक़सद मुसलमानों पर अपनी बड़ाई और बारगाहे नबवी में अपना ख़ुसूसी मक़ाम रखने वाला होना जतलाने के सिवा कुछ न होता था। महबूबे रब्बुल आ़लमीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मिजाज़ मुबारक ज़्यादा सवाल करने और फ़ुज़ूल बातों से परेशान होता था, इसके अ़लावा यह सूरत नुबुव्वत के एहतिराम के भी ख़िलाफ़ थी, इसलिए यह आयत नाज़िल हुई।

4. जब यह हुक्म हुआ कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बात करनी हो तो पहले कुछ ख़ैरात देकर पाकी हासिल कर लो फिर आपसे बात करो, मुफ़्त में कान में बात करना बेतहज़ीबी में दाख़िल है, तो मुनाफ़िक़ तो वहीं ठण्डे पड़ गए। क्योंकि फ़रमान मानकर रक़म ख़र्च करने में उनकी रूह फ़ना होती थी। लेकिन जिन सहाबा-ए-किराम को कोई बात दरियाफ़्त करनी होती थी वे ख़ैरात देकर हाज़िरे ख़िदमत होते थे फिर आपसे कोई बात पूछते थे। लेकिन इस आयत के नाज़िल होने के बाद बहुत-से कम गुन्जाइश वाले सहाबा भी ज़रूरी मसाइल पूछने से रुक गए। चूँकि मक़सूद हासिल हो ही चुका था इसलिए सदक़ा देने का हुक्म रद्द हो गया और आयत 'अ-अश्फ़क़्तुम……आख़िर तक' नाज़िल फ़रमाई।

(तफ़सीर पृष्ठ 986) 1. ये छह आयतें मुनाफ़िक़ों की मुनाफ़िक़ाना बदकिरदारियों के इज़्हार में नाज़िल हुईं। मुनाफ़िक़ लोग यहूदियों के साथी बन बैठे थे जिनपर अल्लाह का ग़ज़ब है। मुनाफ़िक़ लोग यहूदियों से जा-जाकर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के राज़ कह देते थे, और अगर उसकी इत्तिला हो जाती और उनसे पूछा जाता तो अपना इस्लाम जताने को सैकड़ों झूठी क़स्में खा जाते, ताकि एक तो मुसलमानों की नाराज़गी से बचे रहें दूसरे इस्लाम की जड़ उखाड़ने की शैतानी कोशिशों में भी छुपे तौर पर सक्रिय रह सकें। लेकिन मुनाफ़िक़ों की नापाक जमाअ़त न इधर की रही न उधर की।

2. मक़सद यहाँ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का ग़ल्बा बयान करना है अपना ज़िक्र अम्बिया के ऐज़ाज़ व सम्मान के लिए फ़रमा दिया।

3. इस आयत के नाज़िल होने की शान में **(पृष्ठ 986 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 988 की तफ़सीर पृष्ठ 990-996 पर)**

मंय्यू-क़् शुह्-ह नफ़्सिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (9) वल्लज़ी-न जाऊ मिम्बअ़्दिहिम् यक़ूलू-न रब्बनग़्फ़िर् लना व लि-इख़्वानिनल्लज़ी-न स-बक़ूना बिल्-ईमानि व ला तज्अ़ल् फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल्-लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना इन्न-क रऊफ़ुर्रहीम ◆ (10) ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न नाफ़क़ू यक़ूलू-न लि-इख़्वानिहिमुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि ल-इन् उख़्रिज्तुम् ल-नख़्रुजन्-न म-अ़कुम् व ला नुतीअ़ु फ़ीकुम् अ-हदन् अ-बदंव्-व इन् क़ूतिल्तुम् ल-नन्सुरन्नकुम्, वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून (11) ल-इन् उख़्रिजू ला यख़्रुजू-न म-अ़हुम् व ल-इन् क़ूतिलू ला यन्सुरूनहुम् व ल-इन्-न-सरूहुम् लयु-वल्लुन्नल्-अद्बा-र, सुम्-म ला युन्सरून (12) ल-अन्तुम् अशद्दु रह्-बतन् फ़ी सुदूरिहिम् मिनल्लाहि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्-ला यफ़्क़हून (13) ला युक़ातिलूनकुम् जमीअ़न् इल्ला फ़ी क़ुरम्-मुहस्स-नतिन् औ मिंव्वरा-इ जुदुरिन्, बअ्सुहुम् बैनहुम् शदीदुन्, तह्सबुहुम् जमीअ़ंव्-व क़ुलूबुहुम् शत्ता, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्-ला यअ़्क़िलून (14) क-म-सलिल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़रीबन् ज़ाक़ू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (15) क-म-सलिश्शैतानि इज़् क़ा-ल लिल्-इन्सानिक्फ़ुर् फ़-लम्मा

الصّٰدِقُوْنَ ۚ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ
يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ
خَصَاصَةٌ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ
وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ
لِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا
غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۚ اَلَمْ تَرَ اِلَى
الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ
اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۚ لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا
لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۙ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۚ
لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۚ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ
اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ۗ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۗ تَحْسَبُهُمْ
جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۚ

जो दारुल इस्लाम (यानी मदीना) में उन (मुहाजिरों) के (आने से) पहले से क़रार पकड़े हुए हैं। जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे ये लोग मुहब्बत करते हैं। और मुहाजिरों को जो कुछ मिलता है उससे ये (अन्सार हज़रात) अपने दिलों में कोई रश्क नहीं पाते, और अपने से मुक़द्दम रखते हैं अगरचे उनपर फ़ाक़ा ही हो,[1] और (वाक़ई) जो शख़्स अपनी तबीयत की कन्जूसी से महफ़ूज़ रखा जाए ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।[2] **(9)** और उन लोगों का (भी उस फ़ै के माल में हक़ है) जो उनके बाद आए। जो (इन ज़िक्र हुए लोगों के हक़ में) दुआ करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको बख़्श दे और हमारे भाइयों को (भी) जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं, और हमारे दिलों में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न होने दीजिए। ऐ हमारे रब! आप बड़े शफ़्क़त वाले (और) रहम करने वाले हैं। ◆ **(10)** ❖

क्या आपने उन मुनाफ़िक़ों (यानी अ़ब्दुल्लाह बिन उब्बी वग़ैरह) की हालत नहीं देखी कि अपने (तरीक़े पर चलने वाले) भाइयों से जो कि अहले किताब काफ़िर हैं, (यानी बनू नज़ीर से) कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! अगर तुम निकाले गए तो हम तुम्हारे साथ निकल जाएँगे और तुम्हारे मामले में हम किसी का कभी कहना नहीं मानेंगे। और अगर तुमसे किसी की लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाह है कि वे बिलकुल झूठे हैं। **(11)** ख़ुदा की क़सम! अगर अहले किताब निकाले गए तो ये (मुनाफ़िक़ लोग) उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद न करेंगे। और अगर (मान लो, अगरचे ऐसा होना मुहाल है कि) उनकी मदद भी की तो पीठ फेरकर भागेंगे, फिर उनकी कोई मदद न होगी।[3] **(12)** बेशक तुम लोगों का ख़ौफ़ उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में अल्लाह से ज़्यादा है, (और) यह (उनका तुमसे डरना और ख़ुदा से न डरना) इस सबब से है कि वे ऐसे लोग हैं कि समझते नहीं। **(13)** ये लोग (तो) सब मिलकर भी तुमसे न लड़ेंगे मगर हिफ़ाज़त वाली बस्तियों में या दीवार (क़िला व शहर-पनाह) की आड़ में, उनकी लड़ाई आपस (ही) में बड़ी तेज़ है। ऐ मुख़ातब! तू उनको (ज़ाहिर में) मुत्तफ़िक़ "यानी एकजुट" ख़्याल करता है हालाँकि उनके दिल ग़ैरमुत्तफ़िक़ "बिखरे हुए" हैं।[4] यह इस वजह से है कि वे ऐसे लोग हैं जो (दीन की) अ़क़्ल नहीं रखते। **(14)** उन लोगों के जैसी मिसाल है जो उनसे कुछ ही पहले हुए हैं जो (दुनिया में भी)

(पिछले पृष्ठ का शेष) दो वाक़िआत बयान किए गए हैं। एक बार हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के वालिद अबू क़ुहाफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने कुफ़्र की हालत में हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान में कोई नामाक़ूल बात मुँह से निकाली। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का कमाले ईमान भला उस बद-ज़बानी को कब बर्दाश्त कर सकता था, उन्होंने उनके मुँह पर तमाँचा मारा। जब आक़ा-ए-दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने इस वाक़िए का तज़्किरा हुआ तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! उस वक़्त मेरे पास तलवार न थी वरना ऐसी बेजा बात पर उनकी गर्दन उड़ा देता। तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की तारीफ़ में यह आयत नाज़िल हुई। या इसके नाज़िल होने का सबब यह था कि ग़ज़वा-ए-बद्र जहाँ एक तरफ़ हज़रत उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस्लाम की ताईद में बहादुरी से लड़ रहे थे तो दूसरी तरफ़ उनके बाप ने कुफ़्र को ग़ालिब करने की नापाक कोशिश में अपनी सारी सलाहियतें झोंक दी थीं। जर्राह हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को इस्लामी लश्कर में देखकर बुरी तरह दाँत पीस रहा था। वह उस वक़्त यहाँ तक बिफरा हुआ था कि उसने अपनी तवज्जोह हर तरफ़ से हटाकर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के क़त्ल पर केंद्रित कर दी। वह बड़ी तेज़ी से आकर उनपर हमलावार हुआ। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने महज़ अपने बचाव पर इक्तिफ़ा किया, मगर वह ताबड़तोड़ हमले कर रहा था। जब उन्होंने देखा कि मेरा काफ़िर बाप मेरे इस्लाम की वजह से मेरी जान का दुश्मन बना हुआ है तो इधर-उधर बचे-बचे फिरते रहे। लेकिन जब यक़ीन हो गया कि यह मुझे नहीं छोड़ेगा तो मजबूर होकर उसके क़त्ल करने का फ़ैसला कर लिया, चुनाँचे मौक़ा पाकर तलवार के एक ही वार से उसका काम तमाम कर दिया, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।

4. मदीना मुनव्वरा से दो-चार मील के फ़ासले पर यहूद की एक क़ौम बनू नज़ीर आबाद थी। उन्होंने हिजरते नबवी के बाद सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से एक मुआ़हदा किया था जिसके मुताबिक उनपर लाज़िम था कि वे मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी तहरीक में शामिल न होंगे। मुसलमानों के हर तरह से मुवाफ़िक़ रहेंगे और उनके दुश्मनों की मदद नहीं करेंगे। एक बार नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक़्तूल के वारिसों को ख़ून के बदले मुआवज़ा दिलवाने के **(पृष्ठ 986 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 988, 990 की तफ़सीर पृष्ठ 992-998 पर)**

क-फ़-र क़ा-ल इन्नी बरीउम्-मिन्-क इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्-आ़लमीन **(16)** फ़का-न आ़कि-ब-तहुमा अन्नहुमा फ़िन्नारि ख़ालिदैनि फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन **(17)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वल्तन्ज़ुर् नफ़्सुम्-मा क़द्द-मत् लि-ग़दिन् वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून **(18)** व ला तकूनू कल्लज़ी-न नसुल्ला-ह फ़-अन्साहुम् अन्फ़ु-सहुम्, उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून **(19)** ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति, अस्हाबुल्-जन्नति हुमुल्-फ़ाइज़ून **(20)** लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल्-क़ुर्आ-न अ़ला ज-बलिल्-ल-रऐ-तहू ख़ाशिअ़म् मु-तसद्दिअ़म् मिन् ख़श्-यतिल्लाहि, व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून **(21)** हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दति हुवर्-रह्मानुर्रहीम **(22)**

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल्-क़ुद्दूसुस्-सलामुल्-मुअ्मिनुल्-मुहैमिनुल्-अ़ज़ीज़ुल्-जब्बारुल्- मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून **(23)** हुवल्लाहुल् ख़ालिक़ुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(24)** ❖

الحشر ٥٩ ٤٩٥ قد سمع الله ٢٨

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَ
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ
اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا
وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ
وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ
اَنْفُسَهُمْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ
وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا
هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ
اللّٰهِ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾
هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ
الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْمَلِكُ
الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ
الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

منزل ٧

अपने किर्दार का मज़ा चख चुके हैं और (आख़िरत में भी) उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब (होने वाला) है।[1] (15) शैतान के जैसी मिसाल है कि (पहले तो) इनसान से कहता है, तू काफ़िर हो जा, फिर जब वह काफ़िर हो जाता है तो (उस वक़्त साफ़) कह देता है कि मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं, मैं तो अल्लाह-रब्बुल आ़लमीन से डरता हूँ। (16) सो आख़िरी अन्जाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में गए जहाँ हमेशा रहेंगे। (एक गुमराह करने की वजह से दूसरा गुमराह होने की वजह से), और ज़ालिमों की यही सज़ा है।[2] (17) ❖

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो, और हर शख़्स देखभाल ले कि कल (क़ियामत) के वास्ते उसने क्या ज़ख़ीरा भेजा है। और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह को तुम्हारे आमाल की सब ख़बर है। (18) और तुम उन लोगों की तरह मत हो जिन्होंने अल्लाह (के अहकाम) से बेपरवाई की, सो अल्लाह ने ख़ुद उनकी जान से उनको बेपरवाह बना दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। (19) दोज़ख़ वाले और जन्नती आपस में बराबर नहीं। जो जन्नत वाले हैं वे कामयाब लोग हैं (और दोज़ख़ी नाकाम हैं)। (20) अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते तो (ऐ मुख़ातब!) तू उसको देखता कि ख़ुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता। और इन अ़जीब मज़ामीन को हम लोगों के (नफ़े के) लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। (21) वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई और माबूद (बनने के लायक़) नहीं, वह जानने वाला है छुपी चीज़ों का और ज़ाहिर चीज़ों का, वही बड़ा मेहरबान, रहम वाला है। (22) वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई और माबूद नहीं, वह बादशाह है (सब ऐबों से) पाक है, सालिम है,[3] अमन देने वाला है, निगहबानी करने वाला है,[4] ज़बरदस्त है, ख़राबी का दुरुस्त करने वाला है, बड़ी अ़ज़्मत वाला है अल्लाह (जिसकी शान यह है कि) लोगों के शिर्क से पाक है। (23) वह माबूद (बरहक़) है, पैदा करने वाला है, ठीक-ठीक बनाने वाला है (यानी हर चीज़ को हिक्मत के मुवाफ़िक़ बनाता है)। सूरत बनाने वाला है, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं, सब चीज़ें उसकी तस्बीह करती हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, और वही ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है।[5] (24) ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) मुआ़वज़ा दिलवाने के एक मुक़द्दमे का तसफ़िया करने के लिए चन्द सहाबा के साथ उनके यहाँ तशरीफ़ ले गए, उन्होंने आपको दीवार के नीचे बैठाकर एक तरफ़ तो आपसे गुफ़्तगू शुरू की और दूसरी तरफ़ आपस में मश्विरा किया कि नऊज़ु बिल्लाह! आपको हलाक कर डालें। चुनाँचे इस मन्सूबे को अ़मली जामा पहनाने के लिए एक बड़ा पत्थर छत पर चढ़ाकर आप पर लुढ़का देना चाहा। झट से जिबराईल अ़लैहिस्सलाम पहुँचे और आपको इस साज़िश की इत्तिला दी, और आप फ़ौरन खड़े हुए और सहाबा को साथ लेकर मदीना मुनव्वरा वापस तशरीफ़ ले आए। आपने कहला भेजा कि तुमने अ़हद को तोड़ा है, या तो दस दिन के अन्दर यहाँ से ख़ुद चले जाओ वरना लड़ाई होगी। वे लड़ाई के लिए तैयार हो गए। आपने उनपर लश्कर भेजा और उनके क़िले का घेराव कर लिया। आख़िर मजबूर होकर निकल जाने पर राज़ी हो गए। आपने फ़रमाया कि सब हथियार छोड़ जाओ और जितना सामान अपने साथ लेजा सकते हो ले जाओ। ग़रज़ अपने घरों को अपने हाथों से वीरान करके चल दिए। बाज़ लोग ख़ैबर चले गए और दूसरों ने मुल्क शाम का रास्ता लिया, यह सन् तीन हिजरी का वाक़िआ़ है। बाज़ों ने इसको सन् चार या पाँच हिजरी का वाक़िआ़ क़रार दिया है।

5. यानी अपने क़िलों की मज़बूती पर ऐसे मुत्मइन थे कि उनके दिल में ग़ैबी बदले का ख़तरा भी न आता था।

6. मुराद इस जगह से यह है कि मुसलमानों के हाथों से निकाले गए जिनकी बेसरो-सामानी पर नज़र करके इसका गुमान भी न होता था कि ये बेसामान उन सामान वालों पर ग़ालिब आ जाएँगे।

7. यानी इबरत हासिल करो कि ख़ुदा व रसूल की मुख़ालफ़त का अन्जाम कभी-कभी दुनिया में भी बहुत ही बुरा होता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 988) **1.** यानी अगर सख़्त सज़ा देने वाले ख़ुदा ने उनका वतन से निकाला जाना मुक़द्दर न किया होता तो उन्हें दुनिया में उनकी बद-अ़हदी, ग़द्दारी और क़त्ल करने की कोशिश की कोई और सज़ा देता। बहरहाल उनको दुनिया में जो सज़ा मिलनी थी वह मिली और आख़िरत में उनके लिए आग तैयार है।

2. जब इस्लामी लश्कर ने बनू नज़ीर पर चढ़ाई की तो वे अपने क़िलों में जा छुपे और उनके बाहर निकलने की कोई सूरत न हुई। उस ज़माने में क़िलाभेदी तोपें या कोई और ऐसा सामान न था जो घिरे हुए लोगों को बाहर निकलकर मुक़ाबला करने पर मजबूर करता, लेकिन अल्लाह पाक की मदद **(पृष्ठ 988 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 990, 992 की तफ़सीर पृष्ठ 994-1000 पर)**

60 सूरतुल्-मुम्तहि-नति 91

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1593 अक्षर, 370 शब्द, 13 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम् औलिया-अ तुल्क़ू-न इलैहिम् बिल्-म-वद्दति व क़द् क-फ़रू बिमा जा-अकुम् मिनल्-हक़्क़ि युख़्रिजूनर्-रसू-ल व इय्याकुम् अन् तुअ्मिनू बिल्लाहि रब्बिकुम्, इन् कुन्तुम् ख़रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली वब्तिग़ा-अ मर्ज़ाती तुसिर्रू-न इलैहिम् बिल्म-वद्दति व अ-न अअ्लमु बिमा अख़्फ़ैतुम् व मा अअ्लन्तुम्, व मंय्यफ़्अ़ल्हु मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (1) इंय्यस्क़फ़ूकुम् यकूनू लकुम् अअ्दा-अंव्-व यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् व अल्सि-न-तहुम् बिस्सू-इ व वद्दू लौ तक्फ़ुरून (2) लन् तन्फ़-अ़कुम् अर्हामुकुम् व ला औलादुकुम् यौमल्-क़ियामति यफ़्सिलु बैनकुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर (3) क़द् कानत् लकुम् उस्वतुन् ह-स-नतुन् फ़ी इब्राही-म वल्लज़ी-न म-अ़हू इज़् क़ालू लिक़ौमिहिम् इन्ना बु-रआ-उ मिन्कुम् व मिम्मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि कफ़र्ना बिकुम् व बदा बैनना व बैनकुमुल्-अ़दा-वतु वल्-बग़्ज़ा-उ अ-बदन् हत्ता तुअ्मिनू बिल्लाहि वह्-दहू इल्ला क़ौ-ल इब्राही-म लि-अबीहि ल-अस्तग़्फ़िरन्-न ल-क व मा अम्लिकु ल-क मिनल्लाहि मिन् शैइन्, रब्बना अ़लै-क तवक्कल्ना व इलै-क अनब्ना व

قد سمع الله ٢٨ — ٧٩٦ — الممتحنة ٦٠

سورة الممتحنة مدنية وهي ثلث عشرة اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

يايها الذين امنوا لا تتخذوا عدوي وعدوكم اولياء
تلقون اليهم بالمودة وقد كفروا بما جاءكم من الحق
يخرجون الرسول واياكم ان تؤمنوا بالله ربكم ان
كنتم خرجتم جهادا في سبيلي وابتغاء مرضاتي
تسرون اليهم بالمودة وانا اعلم بما اخفيتم وما
اعلنتم ومن يفعله منكم فقد ضل سواء السبيل ①
ان يثقفوكم يكونوا لكم اعداء ويبسطوا اليكم ايديهم
والسنتهم بالسوء وودوا لو تكفرون ② لن تنفعكم ارحامكم
ولا اولادكم يوم القيمة يفصل بينكم والله بما
تعملون بصير ③ قد كانت لكم اسوة حسنة في ابرهيم
والذين معه اذ قالوا لقومهم انا برءؤا منكم ومما
تعبدون من دون الله كفرنا بكم وبدا بيننا وبينكم
العداوة والبغضاء ابدا حتى تؤمنوا بالله وحده الا
قول ابرهيم لابيه لاستغفرن لك وما املك لك

منزل

60 सूरः मुम्तहिनः 91

सूरः मुम्तहिनः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 13 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ ईमान वालो! तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त मत बनाओ कि उनसे दोस्ती का इज़हार करने लगो,[1] हालाँकि तुम्हारे पास जो हक़ दीन आ चुका है वे उसके इनकारी हैं। रसूल को और तुमको इस बिना पर कि तुम अपने परवर्दिगार अल्लाह पर ईमान ले आए शहर से निकाल चुके हैं। अगर तुम मेरे रास्ते पर जिहाद करने की ग़रज़ से और मेरी रज़ामन्दी ढूँढने की ग़रज़ से (अपने घरों से) निकले हो। तुम उनसे चुपके-चुपके दोस्ती की बातें करते हो,[2] हालाँकि मुझको सब चीज़ों का ख़ूब इल्म है, तुम जो कुछ छुपाकर करते हो और जो ज़ाहिर करते हो।[3] और (आगे इसपर धमकी है कि) जो शख़्स तुममें से ऐसा करेगा वह सही रास्ते से भटकेगा। **(1)** अगर उनको तुमपर क़ब्ज़ा हासिल हो जाए तो (फ़ौरन) दुश्मनी का इज़हार करने लगें और (वह दुश्मनी का इज़हार यह कि) तुमपर बुराई के साथ हाथ और ज़बान चलाने लगें (यह दुनियावी नुक़सान पहुँचाना है), और (दीनी नुक़सान पहुँचाना यह कि) वे इस बात के इच्छुक हैं कि तुम काफ़िर (ही) हो जाओ। **(2)** तुम्हारे रिश्तेदार और औलाद क़ियामत के दिन तुम्हारे काम न आएँगे, ख़ुदा तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब आमाल को ख़ूब देखता है।[4] **(3)** तुम्हारे लिए इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) में और उन लोगों में जो कि (ईमान और इताअ़त में) उनके शरीके हाल थे, एक उम्दा नमूना है, जबकि उन सबने अपनी क़ौम से कह दिया कि हम तुमसे और जिनको तुम अल्लाह के सिवा माबूद समझते हो उनसे बेज़ार हैं, हम तुम्हारे मुन्किर हैं, और हममें और तुममें हमेशा के लिए बैर, दुश्मनी और बुग्ज़ (ज़्यादा) ज़ाहिर हो गया, जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ। लेकिन इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की इतनी बात तो अपने बाप से हुई थी कि मैं तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार ज़रूर करूँगा, और तुम्हारे लिए (इस्तिग़फ़ार से ज़्यादा) मुझको ख़ुदा के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं।[5] ऐ हमारे परवर्दिगार! हम आप पर भरोसा करते हैं और आप ही की तरफ़ रुजू करते हैं। और आप ही की तरफ़ लौटना है। **(4)** ऐ हमारे

(पिछले पृष्ठ का शेष) हर-हर क़दम पर अपने रसूल के साथ थी। हबीबे रब्बुल आ़लमीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह के पैग़ाम के इशारे पर हुक्म दिया कि उनके खेत उजाड़ दो और बाग़ात काट दो, ताकि ये लोग जल्द फ़ैसला करने पर मजबूर हों। जब खेत उजड़ने और बाग़ात कटने लगे तो वे लोग बोले ऐ मुहम्मद! हम तो ग़द्दार और बद-अ़हद हैं इसलिए हमारे क़त्ल के पीछे पड़ना तो ठीक है, इन बेक़ुसूर खेतों और बाग़ों ने क्या क़ुसूर किया है जिसकी सज़ा में उनके सर क़लम हो रहे हैं? चूँकि यह पैग़ाम ज़ाहिरी तौर पर उचितता का पहलू लिए हुए था, इसलिए बाज़ नए-नए इस्लाम में दाख़िल होने वाले सहाबियों को भी ख़लजान (यानी चिंता और आशंका) हुआ और कुछ परेशानियाँ लाहिक़ हुईं। ख़ुदा तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर उनका इत्मीनान कर दिया कि जो कुछ हुआ हमारे हुक्म और मरज़ी से हुआ। याद रहे कि ज़रूरत व मस्लहत के वक़्त जंगी दुश्मनों का माल व असबाब बर्बाद और उसमें आग लगा देना, उनके पेड़ों को काट डालना और बाग़ों का काटना, ग़रज़ हर क़िस्म की ज़रूरियाते ज़िन्दगी का बर्बाद करना जायज़ है।

3. लूट की दो क़िस्में हैं- एक वह जो काफ़िरों से लड़कर हाथ आए। दूसरे बग़ैर जंग व झगड़े के मिले और उसमें इस्लामी मुजाहिद मालिक बनने और आपस में बाँटने के हक़दार न हों। पहली सूरत को 'माले ग़नीमत' कहते हैं और दूसरी का नाम 'फ़ै' है। माले फ़ै सब-का-सब बैतुल-माल में जमा होता है, माले ग़नीमत के पाँच हिस्से किए जाते हैं, चार हिस्से इस्लामी लश्कर में बँटते हैं और पाँचवा हिस्सा अल्लाह के रास्ते में अलग कर दिया जाता है। बनू नज़ीर के मकानात, बाग़ात और खेत मुसलमानों के क़ब्ज़े में आए। हक़ तआ़ला ने यह ज़मीन माले ग़नीमत की तरह तक़सीम न कराई बल्कि उसका कुल्ली इख़्तियार नबी करीम सल्ल. को दे दिया।

4. हिजरत के बाद अन्सार पर मुहाजिरों का बोझ आन पड़ा था, यही लोग उन परदेसियों की ज़िन्दगी की ज़रूरतों के ज़िम्मेदार थे। हज़राते मुहाजिरीन **(पृष्ठ 988 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 990, 992, 994 की तफ़सीर पृष्ठ 996-1004 पर)**

इलैकल्-मसीर **(4)** रब्बना ला तज्अ़ल्ना फ़ित्-नतल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू वग़्फ़िर् लना रब्बना इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(5)** ल-क़द् का-न लकुम् फ़ीहिम् उस्वतुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्यौमल्-आख़ि-र, व मंय्य-तवल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद **(6)** ❖

अ़सल्लाहु अंय्यज्अ़-ल बैनकुम् व बैनल्लज़ी-न आ़दैतुम् मिन्हुम् मवद्द-तन्, वल्लाहु क़दीरुन्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम **(7)** ला यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न लम् युक़ातिलूकुम् फ़िद्दीनि व लम् युख़्रिजूकुम् मिन् दियारिकुम् अन् तबर्रूहुम् व तुक़्सितू इलैहिम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन **(8)** इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न क़ा-तलूकुम् फ़िद्दीनि व अख़्-रजूकुम् मिन् दियारिकुम् व ज़ा-हरू अ़ला इख़्राजिकुम् अन् तवल्लौहुम् व मंय्य-तवल्लहुम् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून **(9)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा जा-अकुमुल् मुअ्मिनातु मुहाजिरातिन् फ़म्तहिनूहुन्-न, अल्लाहु अअ्लमु बि-ईमानिहिन्-न फ़-इन् अ़लिम्तुमूहुन्-न मुअ्मिनातिन् फ़ला तर्जिअूहुन्-न इलल्-कुफ़्फ़ारि, ला हुन्-न हिल्लुल् लहुम् व ला हुम् यहिल्लू-न लहुन्-न, व आतूहुम् मा अन्फ़क़ू, व ला जुना-ह अ़लैकुम् अन् तन्किहूहुन्-न इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजू-रहुन्-न, व ला तुम्सिकू बिअ़ि-समिल्-कवाफ़िरि वस्अलू मा अन्फ़क़्तुम् वल्-यस्अलू मा अन्फ़क़ू, ज़ालिकुम् हुक्मुल्लाहि, यह्कुमु बैनकुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(10)** व इन् फ़ा-तकुम् शैउम्-मिन् अज़्वाजिकुम् इलल्-कुफ़्फ़ारि फ़-आ़क़ब्तुम्

مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ
الْمَصِيْرُ ﴿۴﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا
رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۵﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ
اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ
يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۶﴾ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۷﴾ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ
يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ
تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْۤا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۸﴾ اِنَّمَا
يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ
مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰۤى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ
يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا
جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ
فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّاۤ اَنْفَقُوْا ؕ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ

❖ रु. 1/6/7

परवर्दिगार! हमको काफ़िरों का तख़्ता-ए-मश्क़ "यानी ज़ुल्म व सितम का निशाना" न बना। और ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे गुनाह माफ़ कर दीजिए, बेशक आप ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं। **(5)** बेशक उन लोगों में तुम्हारे लिए यानी ऐसे शख़्स के लिए उम्दा नमूना है जो अल्लाह (के सामने जाने) का और क़ियामत के दिन (के आने) का एतिक़ाद रखता हो। और जो शख़्स (इस हुक्म से) रूगरदानी करेगा, सो (उसी का नुक़सान होगा क्योंकि) अल्लाह तआ़ला (तो) बिलकुल बेनियाज़ और तारीफ़ के लायक़ है। **(6)** ❖

अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है (यानी उधर से वायदा है) कि तुममें और उन लोगों में जिनसे तुम्हारी दुश्मनी है, दोस्ती कर दे, और अल्लाह तआ़ला को बड़ी क़ुदरत है, और अल्लाह तआ़ला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है।[1] **(7)** अल्लाह तआ़ला तुमको उन लोगों के साथ एहसान और इन्साफ़ का बर्ताव करने से मना नहीं करता जो तुमसे दीन के बारे में नहीं लड़े, और तुमको तुम्हारे घरों से[2] नहीं निकाला, अल्लाह तआ़ला इन्साफ़ का बर्ताव करने वालों से मुहब्बत रखते हैं। **(8)** सिर्फ़ उन लोगों के साथ दोस्ती करने से[3] अल्लाह तआ़ला तुमको मना करता है जो तुमसे दीन के बारे में लड़े हों, (चाहे सामने आकर या इरादे से) और तुमको तुम्हारे घरों से निकाला हो। और (अगर निकाला भी न हो, लेकिन) तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की हो। और जो शख़्स ऐसों से दोस्ती करेगा सो वे गुनाहगार होंगे। **(9)** ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें (ग़ैर-इस्लामी मुल्क से) हिजरत करके आएँ तो तुम उनका इम्तिहान कर लिया करो। उनके ईमान को अल्लाह ही ख़ूब जानता है।[4] पस अगर उनको (उस इम्तिहान की रू से) मुसलमान समझो तो उनको काफ़िरों की तरफ़ वापस मत करो, (क्योंकि) न तो वे औरतें उन काफ़िरों के लिए हलाल हैं और न वे काफ़िर उन औरतों के लिए हलाल हैं। और उन काफ़िरों ने जो कुछ ख़र्च किया हो वह उनको अदा कर दो। और तुमको उन औरतों से निकाह कर लेने में कुछ गुनाह न होगा जबकि तुम उनके महर उनको दे दो। और (ऐ मुसलमानो!) तुम काफ़िर औरतों के ताल्लुक़ात को बाक़ी मत रखो,[5] और (इस सूरत में) जो कुछ तुमने ख़र्च किया हो (उन काफ़िरों से) माँग लो, और जो कुछ उन काफ़िरों ने ख़र्च किया हो वे (तुमसे) माँग लें, यह अल्लाह का हुक्म है (इसका इत्तिबा करो) वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह तआ़ला

(पिछले पृष्ठ का शेष) मक्का मुअ़ज़्ज़मा में अपनी बड़ी-बड़ी जायदाद छोड़कर चले आए थे, इसलिए बनू नज़ीर से जो ज़मीनें और बाग़ात हासिल हुए वे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़राते मुहाजिरीने किराम पर तक़सीम कर दिए। इस तक़सीम ने अन्सार सहाबा को मुहाजिरीन के बोझ से आज़ाद कर दिया, उससे मुहाजिरीन और अन्सार दोनों को फ़ायदा पहुँचा।

(तफ़सीर पृष्ठ 990) **1.** नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास एक मेहमान आया और आपने घर में पाक बीवियों से खाना मँगा भेजा। हर एक ने यही जवाब दिया कि पानी के सिवा कुछ नहीं। आपने अन्सार सहाबा की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, जो कोई आज रात मेरे मेहमान की मेहमानदारी करेगा ख़ुदा उसपर रहम करेगा। हज़रत साबित क़ैस अन्सारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैं मेहमान की ख़िदमत का हक़ अदा करूँगा। ग़रज़ मेहमान को घर ले गए और बीवी से कहा, यह रसूलुल्लाह के मेहमान आज हमारे मेहमान बने हैं, जो कुछ ख़ातिर-मुदारात हो सके, पीछे न रहना। बीवी ने कहा कि हमारे यहाँ तो आज बच्चों की ख़ुराक के सिवा और कुछ भी नहीं। हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु बोले अच्छा यूँ करो कि बच्चों को तो बहला-फुसलाकर सुला दो, और मैं खाना लेकर मेहमान के साथ बैठूँ और तुम भी मेरे साथ बैठ जाओ। जब मेहमान खाना शुरू कर दे तो तुम किसी बहाने से उठकर चिराग़ बुझा देना, हम दोनों झूठ-मूठ और दिखाने को नवाले उठाते रहेंगे, अगरचे हम फ़ाक़े से रहेंगे लेकिन मेहमान का पेट तो भर जाएगा। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। सुबह को हज़रत साबित बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुए तो यह आयत नाज़िल हो चुकी थी।

2. इन तीन आयतों से साबित हुआ किः 1- ख़ुलासा-ए-उम्मत हज़राते मुहाजिरीन हैं। 2- अन्सार सहाबा के जो फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए गए हैं उनमें बड़ी बात यह है कि वे मुहाजिरीन से मुहब्बत करते हैं। इससे यह मालूम हुआ कि अन्सार की जो फ़ज़ीलत है वह मुहाजिरों के ख़िदमत-गुज़ार होने की वजह से है। 3- इन आयतों से यह भी मालूम होता है कि उम्मत तीन तबक़ों में मुन्क़सिम है। चुनाँचे हज़रत सअ़द

(पृष्ठ 990 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 992, 994, 996 की तफ़सीर पृष्ठ 998-1008 पर)

फ़-आतुल्लज़ी-न ज़-हबत् अज़्वाजुहुम् मिस्-ल मा अन्फ़क़ू, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून **(11)** या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा जा-अकल्-मुअ्मिनातु युबायिअ्-न-क अ़ला अल्-ला युश्रिक्-न बिल्लाहि शैअंव्-व ला यस्रिक़्-न व ला यज़्नी-न व ला यक़्तुल्-न औला-दहुन्-न व ला यअ्ती-न बिबुह्तानिंय्-यफ़्तरीनहू बै-न ऐदीहिन्-न व अर्जुलिहिन्-न व ला यअ्सी-न-क फ़ी मअ्रूफ़िन् फ़-बायिअ्हुन्-न वस्तग़्फ़िर् लहुन्नल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(12)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला त-तवल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् क़द् य-इसू मिनल्-आख़िरति कमा य-इसल्-कुफ़्फ़ारु मिन् अस्हाबिल्-क़ुबूर ● **(13)** ❖

61 सूरतुस्-सफ़्फ़ 109

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 991 अक्षर, 223 शब्द, 14 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(1)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-म तक़ूलू-न मा ला तफ़्अ़लून **(2)** कबु-र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्अ़लून **(3)** इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्लज़ी-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क-अन्नहुम् बुन्यानुम्-मर्सूस **(4)** व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि लि-म तुअ्ज़ू-ननी व क़त्-तअ्लमू-न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम्, फ़-लम्मा ज़ाग़ू अज़ाग़ल्लाहु क़ुलूबहुम्, वल्लाहु ला

وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْئَلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْئَلُوا
مَا أَنْفَقُوا ۚ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ
فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ
يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ
وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ
أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۖ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ
الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٢﴾
كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

बड़ा इल्म वाला (और) हिक्मत वाला है। **(10)** और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई बीवी काफ़िरों में रह जाने से (बिलकुल ही) तुम्हारे हाथ न आए फिर तुम्हारी बारी आए तो जिनकी बीवियाँ हाथ से निकल गईं, जितना (मह्र) उन्होंने (उन बीवियों पर) ख़र्च किया था उसके बराबर तुम उनको दे दो, और अल्लाह से कि जिसपर तुम ईमान रखते हो डरते रहो। **(11)** ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! जब मुसलमान औ़रतें आपके पास (इस ग़रज़ से) आएँ[1] कि आपसे इन बातों पर बैअ़त करें कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी, और न चोरी करेंगी, और न बदकारी करेंगी, और न अपने बच्चों को क़त्ल करेंगी और न बोहतान की औलाद लाएँगी, जिसको अपने हाथों और पाँव के दरमियान (शौहर के नुत्फ़े से जन्म दी हुई दावा करके) बना लें,[2] और जायज़ बातों में वे आपके ख़िलाफ़ न करेंगी, तो आप उनको बैअ़त कर लिया कीजिए, और उनके लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब किया कीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। **(12)** ऐ ईमान वालो! उन लोगों से (भी) दोस्ती मत करो जिनपर अल्लाह तआ़ला ने ग़ज़ब फ़रमाया है[3] कि वे आख़िरत (की भलाई और सवाब) से ऐसे नाउम्मीद हो गए हैं जैसे काफ़िर लोग जो क़ब्रों में (दफ़न) हैं, नाउम्मीद हैं।[4] ● **(13)** ❖

61 सूरः सफ़्फ़ 109

सूरः सफ़्फ़ मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 14 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

सब चीज़ें अल्लाह ही की पाकी बयान करती हैं (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और वही ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है।[5] **(1)** ऐ ईमान वालो! ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो? **(2)** ख़ुदा के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़गी की है कि ऐसी बात कहो जो करो

(पिछले पृष्ठ का शेष) बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुदा ने मोमिनों के तीन दर्जे क़ायम किए हैं- पहला दर्जा मुहाजिरों का जो ख़त्म हो चुका, अब किसी को नहीं मिल सकता। दूसरा दर्जा अन्सार का, वह भी ख़त्म हो चुका, और अब किसी को नहीं मिल सकता। तीसरा दर्जा उन लोगों का है जो मुहाजिरीन और अन्सार के बाद हों और उनके लिए दुआ़ करने वाले रहें और इस्तिग़फ़ार करते रहें, यह दर्जा बाक़ी है और इनसान की सआ़दत इसी में है कि वह तीसरे गिरोह में हो। और अगर कोई दुआ़ करने वाला होने के बजाय मुहाजिरीन और अन्सार को बुरा भला कहने वाला होगा, तो वह अपने अन्जाम का ख़ुद ज़िम्मेदार होगा।

3. जब रसूले ख़ुदा सल्ल. ने बनू नज़ीर का घेराव किया था तो मुनाफ़िक़ों के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने उनसे कहला भेजा कि घबराना नहीं मैं अपनी क़ौम के दो हज़ार बहादुरों से तुम्हारी मदद को जल्द ही पहुँचाता हूँ। मगर जब वक़्त आया तो कुछ भी न कर सका। यहूद बनू नज़ीर से मुनाफ़िक़ों ने यह भी वायदा कर रखा था कि अगर तुम निकाले गए तो हम भी मदीना से निकल जाएँगे, लेकिन मुनाफ़िक़ उनके साथ न निकले।

4. यानी अगरचे अहले हक़ की दुश्मनी में वे सब बराबर हैं मगर ख़ुद भी तो उनमें अ़क़ीदों के अलग-अलग होने की वजह से दुश्मनी और फूट है।

(तफ़सीर पृष्ठ 992) **1.** मुराद उनसे यहूद बनी क़ैनक़ाअ़ हैं, जिनका क़िस्सा यह हुआ कि बद्र के वाक़िए के बाद उन्होंने आपसे सन् दो हिजरी में अ़हद तोड़कर जंग की, फिर मग़लूब और मक़हूर हुए और आपके फ़ैसले पर क़िले से बाहर निकले और सबकी मुशकें बाँधी गईं। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के रोने-धोने से उनकी इस शर्त पर जान बख़्शी हुई कि मदीना से चले जाएँ। चुनाँचे वे मुल्क शाम के इलाक़ों की तरफ़ निकल गए और उनके मालों में माले ग़नीमत की तरह अ़मल हुआ।

2. पस जिस तरह उस शैतान ने इनसान को पहले बहकाया फिर वक़्त पर साथ न दिया और दोनों घाटे का शिकार हुए, इसी तरह मुनाफ़िक़ीन ने पहले बनू नज़ीर को बुरी राय दी कि तुम निकलो नहीं, फिर ऐन वक़्त पर उनको दग़ा दी और दोनों बला में फँसे। बनू नज़ीर तो निकाले गए **(पृष्ठ 992 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 994, 996, 998 की तफ़सीर पृष्ठ 1000-1010 पर)**

यह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन **(5)** व इज़् क़ा-ल ईसब्नु मर्य-म या बनी इस्राई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिक़ल्-लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् बि-रसूलिंय्-यअ्ती मिम्बअ्दिस्मुहू अह्मदु, फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्बय्यिनाति क़ालू हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन **(6)** व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हु-व युद्आ इलल्-इस्लामि, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन **(7)** युरीदू-न लियुत्फ़िऊ नूरल्लाहि बि-अफ़्वाहिहिम्, वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल्-काफ़िरून **(8)** हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल्-मुश्रिकून **(9)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू हल् अदुल्लुकुम् अ़ला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम **(10)** तुअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(11)** यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम् व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मसाकि-न तय्यि-बतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन्, ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(12)** व उख़्रा

الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَانٌ مَّرْصُوصٌ ﴿٤﴾
وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَد تَّعْلَمُونَ
أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٥﴾ وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِن بَعْدِي اسْمُهُ
أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٦﴾
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ
إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٧﴾ يُرِيدُونَ
لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ
الْكَافِرُونَ ﴿٨﴾ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٩﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنجِيكُم مِّنْ عَذَابٍ
أَلِيمٍ ﴿١٠﴾ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾
يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا

नहीं। **(3)** अल्लाह तो उन लोगों को (ख़ास तौर पर) पसन्द करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं कि गोया वह एक इमारत है कि जिसमें सीसा पिलाया गया है।[1] **(4)** और (वह वक़्त ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जबकि मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! मुझको क्यों तकलीफ़ पहुँचाते हो[2] हालाँकि तुमको मालूम है कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ। फिर जब (इस तंबीह पर भी) वे लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों को और (ज़्यादा) टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह तआ़ला (का मामूल है कि वह) ऐसे नाफ़रमानों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता।[3] **(5)** और (इसी तरह वह वक़्त भी ज़िक्र करने के क़ाबिल है) जबकि ईसा इब्ने मरियम ने फ़रमाया कि ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ कि मुझसे पहले जो तौरात (आ चुकी) है मैं उसकी तस्दीक़ करने वाला हूँ, और मेरे बाद जो एक रसूल आने वाले हैं जिनका (मुबारक) नाम अहमद होगा, मैं उनकी ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ। फिर जब वह उन लोगों के पास खुली दलीलें लाए तो वे लोग (उन दलीलों यानी मोजिज़ों के बारे में) कहने लगे, यह खुला जादू है। **(6)** और (वाक़ई) उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे, हालाँकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो।[4] और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं दिया करता।[5] **(7)** ये लोग चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने मुँह से (फूँक मारकर) बुझा दें[6] हालाँकि अल्लाह तआ़ला अपने नूर को कमाल तक पहुँचाकर रहेगा, अगरचे काफ़िर लोग कैसे ही नाख़ुश हों। **(8)** (चुनाँचे) वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने (इस नूर के पूरा करने के लिए) अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी क़ुरआन) और सच्चा दीन (यानी इस्लाम) देकर भेजा है ताकि इस (दीन) को तमाम (बक़िया) दीनों पर ग़ालिब कर दे (कि यही पूरा करना है), अगरचे मुश्रिक कैसे ही नाख़ुश हों। **(9)** ❖

ऐ मोमिनो! क्या मैं तुमको ऐसी तिजारत बतलाऊँ जो तुमको एक दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले? **(10)** (वह यह है कि) तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान ले आओ।[7] और अल्लाह की राह में अपने माल

(पिछले पृष्ठ का शेष) और मुनाफ़िक़ अपने मन्सूबे में नाकामयाब रहे।

3. यानी न गुज़रे ज़माने में उसमें कोई ऐब हुआ जो कि हासिल है "क़ुद्दूसुन" का, और न आइन्दा इसका एहतिमाल व गुमान है जो कि हासिल है 'सलामुन' का।

4. यानी आफ़त भी नहीं आने देता और आई हुई को भी दूर कर देता है।

5. पस ऐसे अ़ज़्मत और बड़ाई वाले के अहकाम पर अ़मल करना ज़रूरी और निहायत ज़रूरी है।

(तफ़सीर पृष्ठ 994) **1.** यानी अगरचे दिल से दोस्ती न हो मगर ऐसा दोस्ताना बर्ताव भी मत करो।

2. यानी पहले तो दोस्ती ही बुरी चीज़ है, फिर ख़ुफ़िया पैग़ाम भेजना और ज़्यादा बुरा है।

3. यानी दूसरी ज़िक्र की हुई रुकावटों की तरह यह चीज़ भी दोस्ती के लिए रुकावट होनी चाहिए।

4. हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हिजरत के आठवें साल मक्का पर चढ़ाई करने का इरादा फ़रमाया और इस इरादे को ख़ुफ़िया रखा, ताकि मक्का वालों के कानों में इसकी भनक न पड़े और वे मुक़ाबले में आकर ख़ून-ख़राबे का सबब न बनें। आप उसके लिए तमाम एहतियाती तदबीरें अ़मल में लाए। हज़रत हातिब बिन अबी बल्तआ़ मुहाजिर और बद्री सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जो यमन के रहने वाले थे और मक्का में आकर रहने लगे थे और उनके माल, वालिदा, भाई और बाल-बच्चे अब भी मक्का में थे। मक्का वालों को आपके इस ख़ुफ़िया इरादे की इत्तिला देने के लिए चिट्ठी लिखी और मक्का की एक औ़रत के हाथ भेज दी। सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वह्य के ज़रिए इसकी इत्तिला हुई, आपने झट हज़रत अ़ली और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को हुक्म दिया कि फ़ौरन पहुँचो और चिट्ठी औ़रत से वापस लाओ। उन्होंने घोड़े दौड़ा दिए। उस औ़रत का पीछा किया और रौज़ा-ए-ख़ाख़ के मक़ाम पर उस औ़रत को जा गिरफ़्तार किया। औ़रत ने चिट्ठी के होने से इनकार किया, लेकिन जब ज़्यादा सख़्ती की गई तो उसने अपनी चोटी में से चिट्ठी निकाल दी, यह चिट्ठी बारगाहे नुबुव्वत में लाकर पढ़ी गई। आपने हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से उसके बारे में पूछा, उन्होंने गुज़ारिश की या रसूलल्लाह! वाक़ई मैंने यह चिट्ठी लिखी, लेकिन मुझे ख़ुदा-ए-अ़लीम की क़सम यह काम मैंने मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने की नीयत से नहीं किया और न काफ़िरों की भलाई के ख़्याल से, बल्कि असल वजह यह थी कि दूसरे मुहाजिरों की मक्का मुअ़ज़्ज़मा में रिश्तेदारी और ख़ानदानी ताल्लुक़ हैं **(पृष्ठ 994 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 996, 998,1000 की तफ़सीर पृष्ठ 1002-1012 पर)**

तुहिब्बूनहा नस्रुम्-मिनल्लाहि व फ़त्हुन् क़रीबुन्, व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन **(13)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा क़ा-ल ई़सब्नु मर्य-म लिल्-हवारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि, क़ालल्-हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि फ़-आ-मनत् ताइ-फ़तुम् मिम्-बनी इस्राई-ल व क-फ़रत् ताइ-फ़तुन् फ़-अय्यद्नल्लज़ी-न अमानू अ़ला अ़दुव्विहिम् फ़-अस्बहू ज़ाहिरीन **(14)** ❖

62 सूरतुल्-जुमु-अ़ति 110

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 787 अक्षर, 176 शब्द, 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़िल्-मलिकिल्-क़ुद्दूसिल्-अ़ज़ीज़िल्-हकीम **(1)** हुवल्लज़ी ब-अ़-स फ़िल्-उम्मिय्यी-न रसूलम्-मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(2)** व आ-ख़री-न मिन्हुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम्, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(3)** ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम **(4)** म-सलुल्लज़ी-न हुम्मिलुत्-तौरा-त सुम्-म लम् यह्मिलूहा क-म-सलिल्-हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारन्, बिअ्-स

الْأَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾
وَأُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ قَالَ
الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى
عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اَحَدَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ
الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ
يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَ
اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا
يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا
التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا بِئْسَ

❖ रु. 2/5/10

और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। **(11)** (जब ऐसा करोगे तो) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह माफ़ करेगा और तुमको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में (दाख़िल करेगा) जो हमेशा रहने के बाग़ों में (बने) होंगे, यह बड़ी कामयाबी है। **(12)** और (इस आख़िरत के फल के अ़लावा) एक और (दुनियावी फल) भी है कि तुम उसको (भी ख़ास तौर पर) पसन्द करते हो। (यानी) अल्लाह की तरफ़ से मदद और जल्दी फ़त्ह पाना। और (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) आप मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए। **(13)** ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के (दीन के) मददगार हो जाओ जैसा कि ईसा इब्ने मरियम (अ़लैहिस्सलाम) ने (उन) हवारियों से फ़रमाया कि अल्लाह के वास्ते मेरा कौन मददगार होता है? वे हवारी बोले,[1] हम अल्लाह (के दीन) के मददगार हैं। सो (इस कोशिश के बाद) बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए[2] और कुछ लोग इनकारी रहे।[3] सो हमने ईमान वालों की उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में ताईद की, सो वे ग़ालिब हो गए। **(14)** ❖

62 सूरः जुमा 110

सूरः जुमा मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

[4]सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं, (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) अल्लाह तआ़ला की पाकी बयान करती हैं जो कि बादशाह है, (ऐबों से) पाक है, ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। **(1)** वही है जिसने (अ़रब के) अनपढ़ लोगों में उन्ही (की क़ौम) में से (यानी अ़रब में से) एक पैग़म्बर भेजा, जो उनको अल्लाह की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और उनको (ग़लत अ़क़ीदों और बुरे अख़्लाक़ से) पाक करते हैं, और उनको किताब और समझदारी (की बातें) सिखलाते हैं, और ये लोग (आपके पैग़म्बर की हैसियत से तशरीफ़ लाने से) पहले से खुली गुमराही में थे।[5] **(2)** और (इन मौजूदा लोगों के अ़लावा) दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए[6] और वह ज़बरदस्त, हिक्मत वाला है। **(3)** यह (रसूल के ज़रिए से गुमराही से निकलकर हिदायत की तरफ़ आना) ख़ुदा का फ़ज़्ल है, वह फ़ज़्ल जिसको चाहता है देता है, और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाला है। **(4)** जिन लोगों को तौरात पर अ़मल करने का हुक्म दिया गया,

(पिछले पृष्ठ का शेष) उनके माल व औलाद की हिफ़ाज़त उस रिश्ते-नाते के सबब हो रही है, और मैं ग़ैर-मुल्क का रहने वाला हूँ, मक्का वालों से कोई रिश्ता नहीं, मेरे माल और बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करने वाला वहाँ कोई नहीं। चूँकि मुझे कामिल यक़ीन था कि ख़ुदा तआ़ला अपने दीन का बोल-बाला करेगा और उसके नबी को हर हालत में फ़त्ह होगी, मैंने ख़्याल किया अगर मैं मक्का वालों को इस चढ़ाई की इत्तिला दे दूँ तो इससे इस्लाम और मुसलमानों को तो कोई नुक़सान नहीं, लेकिन कुरैश मेरे एहसानमन्द होकर मेरे घर वालों और बाल-बच्चों और माल की हिफ़ाज़त करेंगे और उनको तकलीफ़ और नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे। आपने मज्लिस में हाज़िर लोगों से फ़रमाया कि जो कुछ सच्ची बात थी इन्होंने ज़ाहिर कर दी है, इसलिए इनको कोई बुरा न कहे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! यह शख़्स इस्लाम की मुख़ालफ़त में ग़द्दारी और ख़ियानत का मुजरिम हुआ है। इजाज़त दीजिए कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ। इरशाद हुआ क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह बद्री हैं और बद्र वालों का हर गुनाह माफ़ है और उनके लिए जन्नत वाजिब हो चुकी है। रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस माफ़ और दरगुज़र करने वाली शान पर हज़रत उमर रज़ि. की आँखों से आँसू जारी हो गए। उसपर ये आयतें नाज़िल हुईं।

5. यानी मुसलमानो! हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनके साथियों जैसी नेक चाल तुमको भी चलनी चाहिए कि उन्होंने अपने ग़ैर-मुस्लिम भाई-बन्दों से बिलकुल बेताल्लुक़ी का इज़हार कर दिया, न उनसे कुछ वास्ता रखा न कोई सरोकार। लेकिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने काफ़िर बाप के लिए जो इस्तिग़फ़ार का वायदा फ़रमाया था उसमें उनकी पैरवी करना जायज़ नहीं। क्योंकि उनसे यह वायदा नावाक़फ़ियत की हालत में हो गया था। **(पृष्ठ 994 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 996, 998 1000, 1002 की तफ़सीर पृष्ठ 1004-1016 पर)**

म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन (5) क़ुल् या अय्युहल्लज़ी-न हादू इन् ज़-अ़म्तुम् अन्नकुम् औलिया-उ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि फ़-तमन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (6) व ला य-तमन्नौनहू अ-बदम्-बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम्, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (7) क़ुल् इन्नल्-मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ़-इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्-म तुरद्दू-न इला आ़लिमिल्- ग़ैबि वश्शहा-दति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (8) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति मिंय्यौमिल्-जुमु-अ़ति फ़स्अ़ौ इला ज़िक्रिल्लाहि व ज़रुल्-बै-अ, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून (9) फ़-इज़ा क़ुज़ि-यतिस्सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्अर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्- लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (10) व इज़ा रऔ तिजा-रतन् औ लह्-व-निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा व त-रकू-क क़ाइमन्, क़ुल् मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुम्-मिनल्-लह्वि व मिनत्तिजा-रति, वल्लाहु ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (11) ❖

مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَاۗءُ
لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ
ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ
الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي
الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا
لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا
وَتَرَكُوْكَ قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ
التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِذَا جَاۗءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ

63 सूरतुल्-मुनाफ़िक़ून 104

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 821 अक्षर, 183 शब्द, 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा जा-अकल्-मुनाफ़िक़ू-न क़ालू नश्हदु इन्न-क ल-रसूलुल्लाहि ✣ वल्लाहु यअ़्लमु
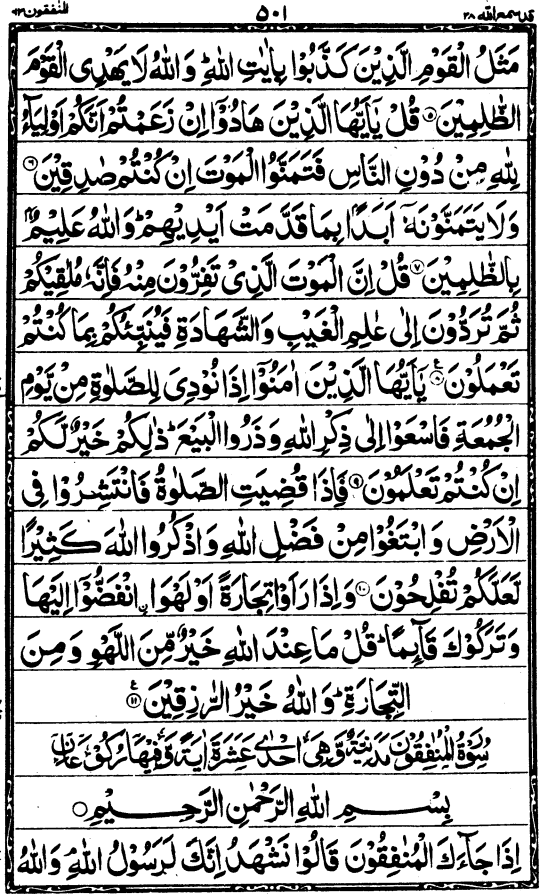
फिर उन्होंने उसपर अ़मल नहीं किया उनकी हालत उस गधे जैसी हालत है जो बहुत-सी किताबें लादे हुए है।[1] (ग़रज़) उन लोगों की बुरी हालत है जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया (जैसे यहूद हैं), और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं दिया करता। **(5)** (और अगर ये लोग यह कहें कि हम बावजूद इस हालत के भी अल्लाह के मक़बूल हैं तो) आप (उनसे) कह दीजिए कि ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा यह दावा है कि तुम किसी और की शिर्कत के बग़ैर अल्लाह के मक़बूल (और प्यारे) हो, तो तुम (इसकी तस्दीक़ के लिए) मौत की तमन्ना कर (के दिखा) दो अगर तुम (इस दावे में) सच्चे हो।[2] **(6)** और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे, उन (कुफ़्रिया) आमाल (के ख़ौफ़ और सज़ा) की वजह से जो अपने हाथों समेटते हैं, और अल्लाह को ख़ूब इत्तिला है उन ज़ालिमों (के हाल) की। **(7)** आप (उनसे यह भी) कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो वह (मौत एक दिन) तुमको आ पकड़ेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (यानी ख़ुदा) के पास ले जाए जाओगे। फिर वह तुमको तुम्हारे सब किए हुए काम बतला देगा (और सज़ा देगा)। **(8)** ❖

ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन (जुमे की) नमाज़ के लिए अज़ान कही जाया करे तो तुम अल्लाह की याद (यानी नमाज़ व ख़ुतबे) की तरफ़ (फ़ौरन) चल पड़ा करो, और ख़रीद व बेच (और इसी तरह दूसरे काम जो चलने से रुकावट हों) छोड़ दिया करो।[3] यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुमको कुछ समझ हो। (क्योंकि उसका नफ़ा बाक़ी है और ख़रीद व बेच वग़ैरह का नफ़ा फ़ना हो जाने वाला है)। **(9)** फिर जब (जुमे की) नमाज़ पूरी हो चुके तो (उस वक़्त तुमको इजाज़त है कि) तुम ज़मीन पर चलो-फिरो और ख़ुदा की रोज़ी तलाश करो[4] और (उसमें भी) अल्लाह को कसरत से याद करते रहो[5] ताकि तुमको भलाई हासिल हो। **(10)** और (बाज़े लोगों का यह हाल है कि) वे लोग जब किसी तिजारत या मश्ग़ूल होने वाली चीज़ को देखते हैं तो वे उसकी तरफ़ दौड़ने के लिए बिखर जाते हैं, और आपको खड़ा हुआ छोड़ जाते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि जो चीज़ (अल्लाह की निकटता और सवाब की क़िस्म में से) ख़ुदा के पास है वह ऐसे मश्ग़ले और तिजारत से कहीं बेहतर है, और अल्लाह सबसे अच्छा रोज़ी पहुँचाने वाला है।[6] **(11)** ❖

63 सूरः मुनाफ़िक़ून 104

सूरः मुनाफ़िक़ून मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब आपके पास ये मुनाफ़िक़ीन आते हैं[7] तो कहते हैं कि हम (दिल से) गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं। और यह तो अल्लाह को मालूम है कि आप अल्लाह के रसूल हैं (इसमें तो उनके क़ौल को झुठलाया नहीं जाता) और (इसके बावजूद) अल्लाह तआ़ला गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ लोग (इस कहने में) झूठे हैं। **(1)** उन लोगों ने अपनी क़स्मों को (अपनी जान व माल बचाने के लिए) ढाल बना रखा है,

---

(पिछले पृष्ठ का शेष) जब उन्हें बाप का क़तई तौर पर काफ़िर होना मालूम हो गया और काफ़िर के लिए इस्तिग़फ़ार की मनाही भी मालूम हो गई तो साफ़ लफ़्ज़ों में अपनी बेज़ारी का इज़्हार फ़रमा दिया।

(तफ़सीर पृष्ठ 996) 1. चुनाँचे मक्का फ़त्ह होने के दिन बहुत आदमी ख़ुशी से मुसलमान हो गए। मतलब यह कि अव्वल तो ताल्लुक़ात का ख़त्म करना हमेशा के लिए हो तब भी हुक्म होने की वजह से वाजिबुल अ़मल था, फिर ख़ासकर जबकि थोड़ी ही मुद्दत के लिए करना पड़े, और ईमान में शरीक होने से दोस्ती और ताल्लुक़ बदस्तूर लौट आए। ग़रज़ हर तरह ताल्लुक़ तोड़ना ज़रूरी हुआ।

2. मुराद वे काफ़िर हैं जो 'ज़िम्मी' (यानी इस्लामी हुकूमत में टैक्स देकर रह रहे हों, बदले में उनकी हर तरह की हिफ़ाज़त और देखभाल इस्लामी हुकूमत करती हो) या सुलह करने वाले हों। यानी उनके साथ एहसान का बर्ताव जायज़ है और इसी को मुन्सिफ़ाना बर्ताव फरमाया। पस इन्साफ़ से मुराद **(पृष्ठ 996 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 998, 1000, 1002, 1004 की तफ़सीर पृष्ठ 1006-1019 पर)**

इन्न-क ल-रसूलुहू, वल्लाहु यश्हदु इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न लकाज़िबून (1) इत्त-ख़ज़ू ऐमा-नहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ़्मलून (2) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् आमनू सुम्-म क-फ़रू फ़-तुबि-अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (3) व इज़ा रऐ-तहुम् तुअ़्जिबु-क अज्सामुहुम्, व इंय्यक़ूलू तस्मअ़् लिक़ौलिहिम्, क-अन्नहुम् ख़ुशुबुम् मुसन्न-दतुन्, यह्सबू-न कुल्-ल सै-हतिन् अ़लैहिम्, हुमुल्-अ़दुव्वु फ़ह्ज़र्हुम्, क़ा-त-लहुमुल्लाहु अन्ना युअ़्फ़कून (4) व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआ़लौ यस्तग़्फ़िर् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ रुऊ-सहुम् व रऐ-तहुम् यसुद्दू-न व हुम्-मुस्तक्बिरून (5) सवाउन् अ़लैहिम् अस्तग़्फ़र्-त लहुम् अम् लम् तस्तग़्फ़िर् लहुम्, लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (6) हुमुल्लज़ी-न यक़ूलू-न ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि हत्ता यन्फ़ज़्ज़ू, व लिल्लाहि ख़ज़ा-इनुस्समावाति वल्अर्ज़ि व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न ला यफ़्क़हून (7) यक़ूलू-न ल-इर्रजअ़्ना इलल्-मदीनति लयुख़्रिजन्नल्-अ-अ़ज़्ज़ु मिन्हल्-अ-ज़ल्-ल, व लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु व लि-रसूलिही व लिल्-मुअ़्मिनी-न व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न ला यअ़्लमून (8) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (9) व अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य अ-ह-दकुमुल्-मौतु फ़-यक़ू-ल रब्बि लौ ला अख़्ख़र्-तनी

يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۗ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ لَكٰذِبُونَ ۝
اِتَّخَذُوٓا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُمْ سَآءَ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اٰمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلٰى
قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝ وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ
وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ ۖ
يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قٰتَلَهُمُ
اللَّهُ ۖ أَنّٰى يُؤْفَكُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ
اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝
سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۚ لَنْ يَغْفِرَ
اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِينَ ۝ هُمُ الَّذِينَ
يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوا ۗ
وَلِلَّهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِينَ
لَا يَفْقَهُونَ ۝ يَقُولُونَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ
الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَ
لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ
أَمْوَالُكُمْ وَلَآ أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ

❖ रु. 1/8/13

फिर ये लोग (दूसरों को भी) अल्लाह की राह से रोकते हैं, बेशक उनके ये आमाल बहुत ही बुरे हैं। **(2)** (और हमारा) यह (कहना कि उनके आमाल बहुत बुरे हैं) इस सबब से है कि ये लोग (पहले ज़ाहिर में) ईमान लाए फिर (कुफ़्रिया कलिमात कहकर) काफ़िर हो गए, सो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई है, तो ये (हक़ बात को) नहीं समझते। **(3)** और जब आप उनको देखें तो (ज़ाहिरी शान व शौकत की वजह से) उनके डील-डोल आपको अच्छे मालूम हों। और अगर ये बातें करने लगें तो आप उनकी बातें सुन लें, गोया कि ये लकड़ियाँ हैं जो (दीवार के) सहारे लगाई हुई (खड़ी) हैं। हर शोर पुकार को (चाहे वह किसी वजह से हो) अपने ऊपर (पड़ने वाली) ख़्याल करने लगते हैं।[1] यही लोग (तुम्हारे पूरे) दुश्मन हैं, आप उनसे होशियार रहिए ख़ुदा उनको ग़ारत करे, (हक़ दीन से) कहाँ फिरे चले जाते हैं। **(4)** और जब उनसे कहा जाता है कि (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास) आओ तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह इस्तिग़फ़ार कर दें तो वे अपना सर फेर लेते हैं।[2] और आप उनको देखेंगे कि (वे उस नसीहत करने वाले और इस्तिग़फ़ार से) तकब्बुर करते हुए बेरुख़ी करते हैं। **(5)** (जब उनके कुफ़्र की यह हालत है तो) उनके हक़ में दोनों बातें बराबर हैं चाहे उनके लिए आप इस्तिग़फ़ार करें या उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें, अल्लाह तआ़ला उनको हरगिज़ न बख़्शेगा[3] बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे नाफ़रमान लोगों को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता। **(6)** ये वे हैं जो कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के पास (जमा) हैं उनपर कुछ ख़र्च मत करो यहाँ तक कि ये आप ही बिखर जाएँगे। और (उनका यह कहना कोरी जहालत है, क्योंकि) अल्लाह ही के हैं सब ख़ज़ाने आसमानों के और ज़मीन के, और लेकिन मुनाफ़िक़ीन समझते नहीं हैं। **(7)** (और) ये (लोग) कहते हैं कि अगर हम अब मदीना में लौटकर जाएँगे तो इज़्ज़त वाला वहाँ से ज़िल्लत वाले को बाहर निकाल देगा। और (यह कहना बिलकुल जहालत है, बल्कि हक़ीक़त में) अल्लाह ही की है इज़्ज़त और उसके रसूल की, (अल्लाह के साथ ताल्लुक़ के वास्ते से) और मुसलमानों के (अल्लाह और उसके रसलू के साथ ताल्लुक़ के वास्ते से) और लेकिन मुनाफ़िक़ लोग जानते नहीं। **(8)** ❖

ऐ ईमान वालो! तुमको तुम्हारे माल और औलाद (मुराद इससे दुनिया की तमाम चीज़ें हैं) अल्लाह की याद (और इताअ़त) से (मुराद इससे दीन के तमाम अहकाम हैं) ग़ाफ़िल न करने पाएँ,[4] और जो ऐसा करेगा तो ऐसे लोग नाकाम रहने वाले हैं।[5] **(9)** और (इबादतों में से एक माली इबादत और नेकी का हुक्म किया जाता है कि) हमने जो कुछ तुमको दिया है उसमें से (वाजिब हुक़ूक़) इससे पहले-पहले ख़र्च कर लो कि तुममें से किसी की मौत आ खड़ी हो, फिर वह (तमन्ना व हसरत के तौर पर) कहने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको और थोड़े दिनों क्यों मोहलत न दी गई कि मैं ख़ैर-ख़ैरात दे लेता और नेक काम करने वालों में शामिल हो जाता। **(10)** और अल्लाह तआ़ला किसी शख़्स को जबकि उसकी (उम्र की) मीयाद (ख़त्म होने पर) आ जाती है हरगिज़ मोहलत नहीं देता। और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है (वैसे ही बदले के हक़दार होगे)। **(11)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) ख़ास इन्साफ़ है, यानी ख़ास उनके ज़िम्मी बनकर रहने या सुलह करके रहने के एतिबार से इन्साफ़ का तक़ाज़ा यह है कि उनके साथ एहसान का मामला किया जाए और आ़म इन्साफ़ तो हर काफ़िर बल्कि जानवर के साथ भी वाजिब है।

3. हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बड़ी बीवी फ़तीला ने इस्लाम के क़बूल करने से इनकार किया था इसलिए उन्होंने इस्लाम के शुरू ही में उसे तलाक़ दे दी थी। एक बार वह अपनी बेटी हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मिलने के लिए मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँची। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूरे पाक की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरी मुश्रिका माँ आई है और बदस्तूर इस्लाम से बेज़ार है, क्या मैं उसके साथ कुछ अच्छा सुलूक कर सकती हूँ। आपने फ़रमाया, हाँ! सुलूक कर सकती हो, उसपर यह आयत नाज़िल हुई कि जो तुमसे लड़े नहीं और न तुमको वतन से निकाला और न वतन से निकालने में तुम्हारे मुख़ालिफ़ों की मदद की, उनके साथ

(पृष्ठ 996 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 998, 1000, 1002, 1004, 1006 की तफ़सीर पृष्ठ 1008-1019 पर)

इला अ-जलिन् क़रीबिन् फ़-अस्सद्-क़ व अकुम्-मिनस्सालिहीन (10) व लंय्यु-अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन् इज़ा जा-अ अ-जलुहा, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ्मलून (11) ❖

64 सूरतुत्-तग़ाबुनि 108

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1122 अक्षर, 247 शब्द, 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (1) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् फ़-मिन्कुम् काफ़िरुंव्-व मिन्कुम् मुअ्मिनुन्, वल्लाहु बिमा तअ्मूल-न बसीर (2) ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि व सव्व-रकुम् फ़-अह्स-न सु-व-रकुम् व इलैहिल्-मसीर (3) यअ्लमु मा फ़िस्-समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ्लिनू-न, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (4) अलम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु फ़-ज़ाक़ू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (5) ज़ालि-क बि-अन्नहू कानत्-तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़क़ालू अ-ब-शरुंय्-यह्दूनना फ़-क-फ़रू व तवल्लौ वस्तग़्नल्लाहु, वल्लाहु ग़निय्युन् हमीद (6) ज़-अ़मल्लज़ी-न क-फ़रू अल्लंय्युब्-अ़सू, क़ुल् बला व रब्बी ल-तुब्अ़सुन्-न सुम्-म ल-तुनब्ब-उन्-न बिमा अ़मिल्तुम्, व ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (7) फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी अन्ज़ल्ना,

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ
قَرِيْبٍ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ
نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ ع
سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانِ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَ
لَهُ الْحَمْدُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ
فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ
وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝
اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ
اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا
وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ

منزل ٧

64 सूरः तग़ाबुन 108

सूरः तग़ाबुन मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं अल्लाह की पाकी (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) बयान करती हैं। उसी की बादशाही है और वही तारीफ़ के लायक़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। **(1)** वही है जिसने तुमको पैदा किया, सो (बावजूद इसके भी) तुममें बाज़े काफ़िर हैं और बाज़े मोमिन हैं। और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे (ईमानी व कुफ़्रिया) आमाल को देख रहा है। **(2)** उसी ने आसमानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया[1] और तुम्हारा नक़्शा बनाया, सो उम्दा नक़्शा बनाया[2] और उसी के पास (सबको) लौटना है। **(3)** वह सब चीज़ों को जानता है जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और सब चीज़ों को जानता है जो तुम छुपाकर करते हो और जो खुले तौर पर करते हो, और अल्लाह तआ़ला दिलों तक की बातों का जानने वाला है।[3] **(4)** क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने (तुमसे) पहले कुफ़्र किया[4] फिर उन्होंने अपने (उन) आमाल का वबाल (दुनिया में भी) चखा और (उसके अ़लावा आख़िरत में भी) उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब होने वाला है। **(5)** यह इस सबब से है कि उन लोगों के पास उनके पैग़म्बर खुली दलीलें लेकर आए तो उन लोगों ने (उन रसूलों के बारे में) कहा कि क्या आदमी हमको हिदायत करेंगे? ग़रज़ उन्होंने कुफ़्र किया और मुँह मोड़ा और खुदा ने (भी उनकी कुछ) परवाह न की, और अल्लाह (सबसे) बेपरवाह (और) तारीफ़ के लायक़ है।[5] **(6)** ये काफ़िर (आख़िरत के अ़ज़ाब का मज़मून सुनकर) यह दावा करते हैं कि वे हरगिज़-हरगिज़ दोबारा ज़िन्दा न किए जाएँगे। आप कह दीजिए क्यों नहीं! खुदा की क़सम! ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किए जाओगे, फिर जो-जो कुछ तुमने किया है तुमको सब जतला दिया जाएगा (और उसपर सज़ा दी जाएगी)। और यह (मरने के बाद ज़िन्दा करना और बदला देना) अल्लाह तआ़ला को बिलकुल आसान है। **(7)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) रिश्तेदारी के सबब सुलूक करने में कोई हर्ज नहीं।

4. हुदैबिया में क़ुरैश के काफ़िरों और मुसलमानों में इस बात पर सुलह हुई थी कि काफ़िरों में से जो कोई मुसलमान होकर आए उसको मुसलमान वापस कर दें, और जो मुसलमान इस्लाम से फिरकर क़ुरैश से जा मिले क़ुरैश उसको वापस न दें। सुलह के दिनों में उक़्बा बिन अबी मुईत काफ़िर की बेटी मोहतरमा उम्मे कुलसूम ईमान लाईं और हिजरत करके मदीना मुनव्वरा में अपने सौतेले भाई हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास पहुँच गईं। पीछे-पीछे उनके दोनों भाई उम्मारा और वलीद बहन को वापस लेने आ पहुँचे। उन्होंने गुमान किया था कि वापसी की शर्त आ़म है हालाँकि वह मर्दों ही के साथ ख़ास थी, लेकिन अब अल्लाह की बारगाह से बेकस व मज़लूम औ़रत ज़ात पर मुसालहत की यह शर्त लागू न होने का हुक्म नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आ पहुँचा और यह आयत नाज़िल हुई। इसमें जहाँ यह हुक्म हुआ कि ईमान वाली औ़रतों को काफ़िरों के हवाले न करो, वहाँ यह भी इरशाद हुआ कि उनके काफ़िर शौहरों को उनके वे महर जो उन्हें दे चुके हैं, वापस कर दो।

5. यानी जो तुम्हारी बीवियाँ ग़ैरइस्लामी हुकूमत में कुफ़्र की हालत में रह गईं उनका निकाह तुमसे ख़त्म हो गया।

(तफ़सीर पृष्ठ 998) **1.** मक्का के फ़त्ह होने के दिन जब औ़रतें इस्लाम की बैअ़त के लिए नबी करीम की बाबरकत ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो हक़ तआ़ला ने अपने हबीब को उनके बैअ़त करने का तरीक़ा तालीम फ़रमाया और यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

2. जाहिलियत के ज़माने में बाज़ औ़रतों का दस्तूर था कि किसी ग़ैर का बच्चा उठा लाईं और कह दिया कि मेरे शौहर का है। या किसी से बदकारी की और उस हराम नुत्फ़े को अपने शौहर का बतला दिया, कि इसमें गुनाह के अ़लावा ज़िना के किसी बच्चे को दूसरे की तरफ़ मन्सूब करना भी है हालाँकि वह बच्चा उसका नहीं है, जिसपर हदीस में वईद आई है।

3. हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अ़न्हु और किसी और सहाबी की चन्द यहूदियों से मुहब्बत थी। वे मुसलमानों की ख़बरें उन तक जा पहुँचाते, उसकी मनाही में यह आयत नाज़िल हुई और वे फ़ौरन तौबा करके उनसे अलग हो गए।

(पृष्ठ 998 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1000, 1002, 1004, 1006, 1008 की तफ़सीर पृष्ठ 1010-1019 पर)

वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर **(8)** यौ-म यज्मअुकुम् लियौमिल्-जम्अि ज़ालि-क यौमुत्-तग़ाबुनि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि व यअ्मल् सालिहंय्-युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(9)** वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ख़ालिदी-न फ़ीहा, व बिअ्सल्-मसीर ▲ **(10)** ❖

मा असा-ब मिम्-मुसी-बतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि यह्दि क़ल्बहू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(11)** व अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्-रसू-ल फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़-इन्नमा अ़ला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन **(12)** अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मुअ्मिनून **(13)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्वल्-लकुम् फ़ह्ज़रूहुम् व इन् तअ्फ़ू व तस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(14)** इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुन्, वल्लाहु अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम **(15)** फ़त्तक़ुल्ला-ह मस्त-तअ्तुम् वस्-मअू व अतीअू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्- लिअन्फ़ुसिकुम्, व मंय्यू-क़ शुह्-ह नफ़्सिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून **(16)** इन् तुक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनंय्-युज़ाअिफ़्हु लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु

لَن يُبْعَثُوا قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ
وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝٧ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي
أَنزَلْنَا وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝٨ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ
ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ
عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝١٠ مَا أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَن
يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝١١ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ
الْمُبِينُ ۝١٢ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝١٣
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ
فَاحْذَرُوهُمْ وَإِن تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝١٤ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ عِندَهُ أَجْرٌ
عَظِيمٌ ۝١٥ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنفِقُوا
خَيْرًا لِّأَنفُسِكُمْ وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝١٦

सो तुम (को चाहिए कि) अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर पर (यानी क़ुरआन पर) जो कि हमने नाज़िल किया है ईमान लाओ, और अल्लाह तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखता है। **(8)** (और उस दिन को याद करो) कि जिस दिन तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन है नफ़े और नुक़सान का।[1] और (बयान उसका यह है कि) जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता होगा और नेक काम करता होगा अल्लाह तआला उसके गुनाह दूर कर देगा और उसको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे से नहरें जारी होंगी, जिसमें हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे (और) यह बड़ी कामयाबी है। **(9)** और जिन लोगों ने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा ये लोग दोज़ख़ी हैं, उसमें हमेशा रहेंगे और वह बुरा ठिकाना है। ▲ **(10)** ❖

कोई मुसीबत ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर नहीं आती।[2] और जो शख़्स अल्लाह पर (पूरा) ईमान रखता है अल्लाह तआला उसके दिल को (सब्र व रिज़ा की) राह दिखा देता है, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है।[3] **(11)** और (कलाम का खुलासा यह है कि हर मामले में जिसमें मुसीबतें भी दाख़िल हैं) अल्लाह का कहना मानो और रसूल का कहना मानो, और अगर तुम (इताअत से) मुँह मोड़ोगे तो (याद रखो कि) हमारे रसूल के ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुँचा देना है।[4] **(12)** अल्लाह के सिवा कोई माबूद (बनने के क़ाबिल) नहीं[5] और मुसलमानों को अल्लाह ही पर (मुसीबतों वग़ैरह में) भरोसा रखना चाहिए। **(13)** ऐ ईमान वालो! तुम्हारी बाज़ बीवियाँ और औलाद तुम्हारे (दीन की) दुश्मन हैं, सो तुम उनसे होशियार रहो (और उनकी ऐसी बात पर अमल मत करो), और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र कर जाओ और बख़्श दो तो अल्लाह तआला (तुम्हारे गुनाहों का) बख़्शने वाला (और तुम्हारे हाल पर) रहम करने वाला है। **(14)** तुम्हारे माल और औलाद बस तुम्हारे लिए एक आज़माइश की चीज़ है। और (जो शख़्स उनमें पड़कर अल्लाह को याद रखेगा तो) अल्लाह के पास (उसके लिए) बड़ा अज्र है।[6] **(15)** तो जहाँ तक तुमसे हो सके अल्लाह से डरते रहो[7] और (उसके अहकाम को) सुनो और मानो, और (ख़ासकर हुक्म के मौक़ों में) ख़र्च (भी) किया करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। और जो शख़्स अपने नफ़्स की हिर्स से महफ़ूज़ रहा ऐसे ही लोग (आख़िरत में) फ़लाह पाने वाले हैं। **(16)** अगर तुम अल्लाह को अच्छी तरह (यानी नेक-नीयती के साथ) क़र्ज़ दोगे तो वह उसको

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. जो काफ़िर मर जाता है इस वजह से कि उसको आख़िरत का मुआयना हो जाता है, असल हक़ीक़त पर यक़ीन के साथ बाख़बर हो जाता है कि अब मेरी बख़्शिश न होगी।

5. पस जो ऐसा बड़ाई और शान वाला हो उसकी हर हुक्म में फ़रमाँबरदारी ज़रूरी है। जिनमें एक हुक्म जिहाद का है जो इस सूरः में ज़िक्र हुआ है। जिसके नाज़िल होने का सबब यह है कि एक बार बाज़ मुसलमानों ने आपस में तज़्किरा किया कि अगर हमको कोई ऐसा अमल मालूम हो जो अल्लाह तआला के नज़दीक निहायत महबूब हो तो हम उसको अमल में लाएँ। और इससे पहले उहुद की लड़ाई में बाज़े जिहाद से भाग चुके थे, तथा जिहाद के हुक्म के नाज़िल होने के वक़्त बाज़ को वह हुक्म गिराँ गुज़रा था, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।

(तफ़सीर पृष्ठ 1000) 1. मतलब यह हुआ कि तुम जो कहते हो कि हमको सबसे ज़्यादा महबूब अमल मालूम होता, सो सबसे महबूब अमल तो जिहाद है, फिर उसके नाज़िल होने के वक़्त नागवारी क्यों हुई थी और जंगे उहुद में क्यों भाग गए थे। यहाँ डाँट-डपट डींगें मारने और झूठ बोलने पर है। और बिना अमल के वअ़ज़ इसके मफ़हूम से ख़ारिज है।

2. वे तकलीफ़ें मुख़्तलिफ़ तौर पर थीं और हासिल उन सबका नाफ़रमानी और मुख़ालफ़त है।

3. इस तरह ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुख़्तलिफ़ तरीक़े से तकलीफ़ें पहुँचाते हैं, इसलिए इनका जुर्म और बुराई और ज़्यादा हो जाता है कि इस्लाह की उम्मीद नहीं रही, पस उनके फ़साद को मिटाने के लिए क़िताल का हुक्म देना मस्लहत हुआ।

4. यह आयत नज़ीर बिन हारिस के बारे में नाज़िल हुई। उसने कहा था कि क़ियामत के दिन 'लात' और 'उज़्ज़ा' बुत मेरी शफ़ाअ़त करेंगे और उनकी सिफ़ारिश यक़ीनन अल्लाह की बारगाह में मक़बूल होकर मेरी मग़फ़िरत होगी।

5. 'वल्लाहु ला यहदी' इसलिए बढ़ाया कि उनकी मौजूदा हालत इस्लाह से दूर हो गई, इसलिए क़िताल ही की सज़ा तजवीज़ किया जाना मस्लहत हुआ। **(पृष्ठ 1000 की बक़िया और पृष्ठ 1002, 1004, 1006, 1008, 1010 की तफ़सीर पृष्ठ 1012-1019 पर)**

शकूरुन् हलीम (17) आ़लिमुल्-गैबि वश्शहा-दतिल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (18) ❖

65 सूरतुत्-तलाक़ि 99

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1237 अक्षर, 298 शब्द, 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा तल्लक़्तुमुन्-निसा-अ फ़-तल्लिक़ूहुन्-न लिअ़िद्-दति--हिन्-न व अह़्सुल्- अ़िद्-द-त वत्तक़ुल्ला-ह रब्बकुम् ला तुख़्रिजूहुन्-न मिम्-बुयूतिहिन्-न व ला यख़्रुज्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यि-नतिन्, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व मंय्य-त-अ़द्-द हुदूदल्लाहि फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू, ला तद्री लअ़ल्लल्ला-ह युह़्दिसु बअ़्-द ज़ालि-क अम्रा (1) फ़-इज़ा बलग्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्-न बि-मअ़्रूफ़िन् औ फ़ारिक़ूहुन्-न बि-मअ़्रूफ़िंव्-व अशिहदू ज़वै अ़द्लिम्-मिन्कुम् व अक़ीमुश्शहा-द-त लिल्लाहि, ज़ालिकुम् यू-अ़ज़ु बिही मन् का-न युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्अ़ल्-लहू मख़्-रजा (2) व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह्तसिबु, व मंय्य-तवक्कल् अ़लल्लाहि फ़हु-व हस्बुहू, इन्नल्ला-ह बालिग़ु अम्रिही, क़द् ज-अ़लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् क़द्रा (3) वल्लाई य-इस्-न मिनल्-महीज़ि मिन्-निसाइकुम् इनिर्तब्तुम् फ़-अ़िद्दतुहुन्-न सला-सतु अश्हुरिंव्-वल्लाई लम् यहिज़्-न, व उलातुल्-अह़्मालि अ-जलुहुन्-न अंय्यज़अ़्-न हम्ल-हुन्-न, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह

إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ
شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً فِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا
الْعِدَّةَ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۖ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا
يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ
اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ لَا تَدْرِي
لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ أَمْرًا ﴿١﴾ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ
عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ ذٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ
مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ
شَيْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾ وَاللَّائِي يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنِ
ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ أَشْهُرٍ وَاللَّائِي لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَأُولَاتُ
الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ

तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जाएगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और अल्लाह तआ़ला बड़ा क़द्र करने वाला है (कि नेक अ़मल को क़बूल फ़रमाता है और) बड़ा बुर्दबार है। **(17)** छुपे और ज़ाहिर (आमाल) का जानने वाला है (और) ज़बरदस्त है (और) हिक्मत वाला है। **(18)** ❖

65 सूरः तलाक़ 99

सूरः तलाक़ मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ पैग़म्बर! (आप लोगों से कह दीजिए कि) जब तुम लोग (अपनी) औ़रतों को तलाक़ देने लगो[1] तो उनको इद्दत (के ज़माने यानी हैज़) से पहले (यानी पाकी के ज़माने में) तलाक़ दो, और तुम इद्दत को याद रखो और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो जो तुम्हारा रब है। उन औ़रतों को उनके (रहने के) घरों से मत निकालो (क्योंकि तलाक़ वाली का रहने का ठिकाना निकाह वाली की तरह वाजिब है) और न वे औ़रतें खुद निकलें, मगर हाँ! कोई खुली बेहयाई करें तो और बात है।[2] और ये सब खुदा के मुक़र्रर किए हुए अहकाम हैं, और जो शख़्स अल्लाह के अहकाम से तजावुज़ करेगा (जैसे उस औ़रत को घर से निकाल दिया) उसने अपने ऊपर जुल्म किया। तुझको ख़बर नहीं शायद अल्लाह तआ़ला इस तलाक़ देने के बाद कोई नई बात (तेरे दिल में) पैदा कर दे। (जैसे तलाक़ पर शर्मिन्दगी हो तो रुजू करने में उसकी तलाफ़ी हो सकती है)। **(1)** फिर जब वे (तलाक़ पाई हुई) औ़रतें अपनी इद्दत गुज़र जाने के क़रीब पहुँच जाएँ (तो तुमको दो इख़्तियार हैं, या तो) उनको क़ायदे के मुवाफ़िक़ निकाह में रहने दो या क़ायदे के मुवाफ़िक़ उनको रिहाई दो, और आपस में से दो मोतबर शख़्सों को गवाह कर लो। (ऐ गवाहो! अगर गवाही की ज़रूरत पड़े तो) ठीक-ठीक अल्लाह के वास्ते (बिना किसी रियायत के) गवाही दो। इस मज़मून से उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखता हो।[3] और जो शख़्स अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके लिए (परेशानियों से) नजात की शक्ल निकाल देता है। **(2)** और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुँचाता है जहाँ उसका गुमान भी नहीं होता।[4] और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस (की ज़रूरतों को पूरा करने और उसके काम बनाने) के लिए काफ़ी है। अल्लाह तआ़ला अपना काम (जिस तरह चाहे) पूरा करके रहता है। अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ का (अपने इल्म में) एक अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है। **(3)** (ऊपर इद्दत का मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र था) और (तफ़सील यह है कि) तुम्हारी (तलाक़ दी हुई) बीवियों में से जो औ़रतें (ज़्यादा उम्र होने की वजह से) माहवारी आने से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुमको (उनकी इद्दत के मुतैयन करने में) शुब्हा हो तो उनकी इद्दत तीन महीने हैं। और इसी तरह जिन औ़रतों को (अब तक उम्र कम होने की वजह से) माहवारी नहीं आई। और गर्भवती औ़रतों की इद्दत उस गर्भ का पैदा हो जाना है। और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह तआ़ला उसके हर एक काम में आसानी कर देगा। **(4)** यह (जो कुछ ज़िक्र

(पिछले पृष्ठ का शेष) 6. एक बार सोलह दिन तक नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर वह्य नाज़िल न हुई थी। एक यहूदी सरदार कअ़ब बिन अशरफ़ कहने लगा, ऐ यहूद के गिरोह! तुमको खुशख़बरी हो कि दीने इस्लाम का अब ख़ात्मा है, मुहम्मद का काम (अल्लाह की पनाह) ख़त्म ही हुआ चाहता है, इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

7. यानी ईमान पर हमेशा क़ायम रहो।

(तफ़सीर पृष्ठ 1002) 1. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बुज़ुर्ग साथियों को 'हवारी' कहते हैं। ये तादाद में बारह थे। लफ़्ज़ 'हवारी' 'हौर' से निकला है जिसके मायने सफ़ेदी के हैं, हवारी इस बिना पर हवारी कहलाए कि हज़रत मसीह अ़लैहिस्सलाम पर सबसे पहले ईमान लाने वाले धोबी थे। **(पृष्ठ 1002 की बक़िया और पृष्ठ 1004, 1006, 1008, 1010, 1012 की तफ़सीर पृष्ठ 1014-1020 पर)**

यजूअ़ल्-लहू मिन् अम्रिही युस्रा **(4)** ज़ालि-क अम्रुल्लाहि अन्ज़-लहू इलैकुम्, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युअ़्ज़िम् लहू अज्रा **(5)** अस्किनूहुन्-न मिन् हैसु स-कन्तुम् मिंव्वुज्दिकुम् व ला तुज़ार्रूहुन्-न लि-तुज़य्यिक़ू अ़लैहिन्-न, व इन् कुन्-न उलाति हम्लिन् फ़-अन्फ़िक़ू अ़लैहिन्-न हत्ता यज़अ़्-न हम्-लहुन्-न फ़-इन् अर्ज़अ़्-न लकुम् फ़-आतूहुन्-न उजू-रहुन्-न वअ़्तमिरू बैनकुम् बि-मअ़्रूफ़िन् व इन् तआसर्तुम् फ़-सतुर्ज़िअ़ु लहू उख़्रा **(6)** लियुन्फ़िक़् ज़ू स-अ़तिम्-मिन् स-अ़तिही, व मन् क़ुदि-र अ़लैहि रिज़्क़ुहू फ़ल्युन्फ़िक़् मिम्मा आताहुल्लाहु, ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला मा आताहा, स-यज्-अ़लुल्लाहु बअ़्-द अ़ुस्रिंय्-युस्रा **(7)** ❖

व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् अ़तत् अ़न् अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ़-हासब्नाहा हिसाबन् शदीदंव्-व अ़ज़्ज़ब्नाहा अ़ज़ाबन्-नुक्रा **(8)** फ़-ज़ाक़त् व बा-ल अम्रिहा व का-न आ़कि-बतु अम्रिहा ख़ुस्रा **(9)** अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़त्तक़ुल्ला-ह या उलिल्-अल्बाबिल्लज़ी-न आमनू क़द् अन्ज़लल्लाहु इलैकुम् ज़िक्रा **(10)** रसूलंय्-यत्लू अ़लैकुम् आयातिल्लाहि मुबय्यिनातिल्-लियुख़्रिजल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व मंय्युअ़्मिम् बिल्लाहि व यअ़्मल् सालिहंय्-युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, क़द् अह्-सनल्लाहु लहू रिज़्क़ा **(11)** अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़

قد سمع الله ٢٨ ٥٠٦ الطلاق ٦٥

لَهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ﴿٤﴾ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ
اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ﴿٥﴾ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ
حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا
عَلَيْهِنَّ ۚ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا
بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى ﴿٦﴾
لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۚ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ
فَلْيُنْفِقْ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ۚ
سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ﴿٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ
عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا
عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا
خُسْرًا ﴿٩﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِي
الْاَلْبَابِ ۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾ رَّسُوْلًا
يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ
صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ

منزل

हुआ) अल्लाह का हुक्म है, जो उसने तुम्हारे पास भेजा है। और जो शख़्स (इन मामलात में और दूसरे मामलात में भी) अल्लाह से डरेगा तो अल्लाह उसके गुनाहों को दूर कर देगा (जो कि बड़े नुक़सान का सबब हैं) और उसको बड़ा अज्र देगा। **(5)** तुम उन (तलाक़ दी हुई) औरतों को अपनी गुन्जाइश के मुवाफ़िक़ रहने का मकान दो जहाँ तुम रहते हो।[1] और उनको तंग करने के लिए (उसके बारे में) तकलीफ़ मत पहुँचाओ। और अगर वे (तलाक़ दी हुई) औरतें गर्भ से हों तो गर्भ पैदा होने तक उनको (खाने-पीने का) ख़र्च दो। फिर अगर वे (तलाक़ दी हुई) औरतें (जबकि पहले ही से बच्चे वालियाँ हों या बच्चा पैदा होने से ही उनकी इद्दत ख़त्म हुई हो) तुम्हारे लिए (बच्चे को उजरत पर) दूध पिला दें तो तुम उनको (तय की हुई) उजरत दो, और (उजरत के बारे में) आपस में मुनासिब तरीक़े पर मश्विरा कर लिया करो।[2] और अगर तुम आपस में कश्मकश करोगे तो कोई दूसरी औरत दूध पिला देगी। **(6)** (आगे बच्चे के ख़र्च के बारे में इरशाद है कि) गुन्जाइश वाले को अपनी गुन्जाइश के मुवाफ़िक़ (बच्चे पर) ख़र्च करना चाहिए। और जिसकी आमदनी कम हो उसको चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसको दिया है उसमें से ख़र्च करे। ख़ुदा तआ़ला किसी शख़्स को उससे ज़्यादा का मुकल्लफ़ नहीं बनाता जितना उसको दिया है। ख़ुदा तआ़ला तंगी के बाद जल्दी फ़रागत भी देगा (अगरचे हाजत व ज़रूरत के पूरा करने के बक़द्र हो)। **(7)** ❖

और बहुत-सी बस्तियाँ थी जिन्होंने अपने रब के हुक्म (मानने) से और उसके रसूलों से सरकशी की, सो हमने उन (के आमाल) का सख़्त हिसाब किया[3] और हमने उनको बड़ी भारी सज़ा दी (कि वह सज़ा अ़ज़ाब के ज़रिए हलाक करना है)। **(8)** ग़रज़ उन्होंने अपने आमाल का वबाल चखा और उनका अन्जाम घाटा ही हुआ। **(9)** (यह तो दुनिया में हुआ और आख़िरत में) अल्लाह ने उनके लिए एक सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (और जब नाफ़रमानी का अन्जाम यह है) तो ऐ समझदारो! जो कि ईमान लाए हो, ख़ुदा से डरो[4] ख़ुदा ने तुम्हारे पास एक नसीहतनामा भेजा **(10)** (और वह नसीहतनामा देकर) एक ऐसा रसूल (भेजा) जो तुमको अल्लाह के साफ़-साफ़ अहकाम पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, ताकि ऐसे लोगों को जो ईमान लाएँ और अच्छे अ़मल करें (कुफ़्र व जहालत की) अंधेरियों से (ईमान, इल्म और अ़मल के) नूर की तरफ़ ले आएँ।[5] और (आगे ईमान वग़ैरह इबादतों पर वायदा है कि) जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अ़मल करेगा ख़ुदा उसको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उनमें हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे। बेशक अल्लाह ने उनको (बहुत) अच्छी रोज़ी दी। **(11)** (आगे अल्लाह की फ़रमाँबरदारी का वाजिब

(पिछले पृष्ठ का शेष) आप एक दरिया के घाट पर से गुज़रे, देखा कि धोबी कपड़े धो रहे हैं, आपने उनसे फ़रमाया कि तुम लोगों का मैल-कुचैल दूर करते हो, आओ मैं तुमको धो दूँ और तुमसे मैल-कुचैल छुड़ा दूँ। चुनाँचे वे सब आपकी दावत पर ईमान ले आए।

2. इस्राईलियों में से चन्द आदमी जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाए थे उनका यह अ़क़ीदा था कि आप अल्लाह के बन्दे और रसूल थे। हक़ तआ़ला ने आपको यहूदियों के हाथों में पड़ने से बचाकर आसमान पर उठा लिया।

3. इसका यह तर्जुमा भी हो सकता है कि एक गिरोह ने कुफ़्र इख़्तियार कर लिया, यानी हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा मानने लगे।

4. ऊपर की सूरः में तौहीद व रिसालत का सुबूत और झुठलाने वालों का क़त्ल की मज़ा का मुस्तहिक़ होना ज़िक्र किया गया था। इस सूरः के शुरू में तौहीद व रिसालत को साबित करने और झुठलाने वालों में से यहूद का जो मूसा अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के उन्वान से ऊपर की सूरः में मज़कूर हुए हैं, निन्दा और वईद का मुस्तहिक़ होना ज़िक्र किया गया है। और चूँकि उन यहूद की असल बीमारी दुनिया की मुहब्बत थी, इसलिए मुसलमानों को उससे बचाने के लिए दूसरे रुकूअ़ में जुमे के अहकाम के ज़िम्न से आख़िरत को दुनिया पर तरजीह देने का हुक्म और इसके उलट करने से मना किया गया है। पस दोनों सूरतों के आख़िर में तिजारत का ज़िक्र है, पहली में दीनी तिजारत का और दूसरी में दुनियावी तिजारत का।

5. मुराद अक्सर हैं। क्योंकि जाहिलियत के ज़माने में भी बाज़े अल्लाह के एक होने के इक़रारी थे मगर फिर भी हिदायत को मुकम्मल करने

(पृष्ठ 1002 की बक़िया और पृष्ठ 1004, 1006, 1008, 1010, 1012, 1014 की तफ़सीर पृष्ठ 1016-1020 पर)

सब्-अ़ समावातिंव्-व मिनल्-अर्ज़ि मिस्-लहुन्-न, य-तनज़्ज़लुल्-अम्रु बैनहुन्-न लितअ्लमू अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुंव्-व अन्नल्ला-ह क़द् अहा-त बिकुल्लि शैइन् अ़िल्मा (12) ❖

66 सूरतुत्-तह्रीमि 107

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1124 अक्षर, 253 शब्द, 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अ-हल्लल्लाहु ल-क तब्तग़ी मर्ज़ा-त अज़्वाजि-क, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम (1) क़द् फ़-रज़ल्लाहु लकुम् तहिल्-ल-त ऐमानिकुम् वल्लाहु मौलाकुम् व हुवल् अ़लीमुल्-हकीम (2) व इज़् असर्रन्-नबिय्यु इला बअ्ज़ि अज़्वाजिही हदीसन् फ़-लम्मा नब्ब-अत् बिही व अज़्ह-र-हुल्लाहु अ़लैहि अ़र्र-फ़ बअ्-ज़हू व अअ्र-ज़ अ़म्-बअ्ज़िन् फ़-लम्मा नब्ब-अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब-अ-क हाज़ा, क़ा-ल नब्ब-अनि-यल् अ़लीमुल्-ख़बीर (3) इन् ततूबा इलल्लाहि फ़-क़द् सग़त् क़ुलूबुकुमा व इन् तज़ा-हरा अ़लैहि फ़-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल्-मुअ्मिनी-न वल्मलाइ-कतु बअ्-द ज़ालि-क ज़हीर (4) अ़सा रब्बुहू इन् तल्ल-क़कुन्-न अंय्युब्दि लहू अज़्वाजन् ख़ैरम्-मिन्कुन्-न मुस्लिमातिम्-मुअ्मिनातिन् क़ानितातिन् ता-इबातिन् आ़बिदातिन् सा-इहातिन् सय्यिबातिंव्-व अब्कारा (5) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ू अन्फ़ु-सकुम् व अह्लीकुम्

قد سمع الله ٢٨ ٥٠٧ التحريم ٦٦

اَبَدًا قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ
مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ یَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَیْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی
كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾
سُوْرَةُ التَّحْرِیْمِ مَدَنِیَّةٌ وَّهِیَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اِثْنَتَا عَشْرَةَ اٰیَةً فِیْهَا رُكُوْعَانِ
یٰٓاَیُّهَا النَّبِیُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ تَبْتَغِیْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿١﴾ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَیْمَانِكُمْ
وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَهُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿٢﴾ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِیُّ اِلٰی
بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِیْثًا فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَیْهِ
عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ
مَنْ اَنْبَاَكَ هٰذَا قَالَ نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿٣﴾ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَی
اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَیْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ
مَوْلٰىهُ وَجِبْرِیْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ
ظَهِیْرٌ ﴿٤﴾ عَسٰی رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ یُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَیْرًا
مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ
ثَیِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ﴿٥﴾ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِیْكُمْ
نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَیْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

منزل ٧

होना बयान किया जाता है, यानी) अल्लाह ऐसा है जिसने सात आसमान पैदा किए और उन्हीं की तरह ज़मीन भी, (और) उन सबमें (अल्लाह तआ़ला के) अहकाम नाज़िल होते रहते हैं। (और यह इसलिए बतलाया गया) कि तुमको मालूम हो जाए कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है, और अल्लाह हर चीज़ को (अपने) इल्मी घेरे में लिए हुए है। **(12)** ❖

66 सूरः तहरीम 107

सूरः तहरीम मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आपके लिए हलाल किया है आप (क़सम खाकर) उसको (अपने ऊपर) क्यों हराम फ़रमाते हैं? (फिर वह भी) अपनी बीवियों की ख़ुशी हासिल करने के लिए। और अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला, मेहरबान है।[1] **(1)** अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़स्मों का खोलना (यानी क़सम तोड़ने के बाद उसके कफ़्फ़ारे का तरीक़ा) मुक़र्रर फ़रमा दिया है, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारा कारसाज़ है। और वह बड़ा जानने वाला, बड़ी हिक्मत वाला है। **(2)** और जबकि पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने अपनी किसी बीवी से एक बात चुपके से फ़रमाई,[2] फिर जब उस बीवी ने वह बात (दूसरी बीवी को) बतला दी और पैग़म्बर को अल्लाह तआ़ला ने (वह्य के ज़रिए से) उसकी ख़बर कर दी, तो पैग़म्बर ने (उस ज़ाहिर कर देने वाली बीवी को) थोड़ी-सी बात तो जतला दी और थोड़ी-सी बात को टाल गए। सो जब पैग़म्बर ने उस बीवी को वह बात जतलाई, वह कहने लगी कि आपको इसकी किसने ख़बर कर दी? आपने फ़रमाया कि मुझको बड़े जानने वाले, ख़बर रखने वाले (यानी ख़ुदा ने) ख़बर कर दी। **(3)** ऐ (पैग़म्बर की) दोनों बीवियो! अगर तुम अल्लाह के सामने तौबा कर लो तो तुम्हारे दिल माईल हो रहे हैं। और अगर (इसी तरह) पैग़म्बर के मुक़ाबले में तुम दोनों कार्रवाइयाँ करती रहीं तो याद रखो पैग़म्बर का साथी अल्लाह है और जिबराईल है और नेक मुसलमान हैं, और उनके अ़लावा फ़रिश्ते (आपके) मददगार हैं।[3] **(4)** अगर पैग़म्बर तुम औरतों को तलाक़ दे दें तो उनका परवर्दिगार बहुत जल्द तुम्हारे बदले उनको तुमसे अच्छी बीवियाँ दे देगा, जो इस्लाम वाली, ईमान वाली, फ़रमाँबरदारी करने वाली, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोज़ा रखने वाली होंगी, कुछ बेवा और कुछ कुँवारियाँ।[4] **(5)** ऐ ईमान वालो! तुम अपने को और अपने घर वालों को

(पिछले पृष्ठ का शेष) के वे भी मोहताज थे।

6. इसमें तमाम उम्मत क़ियामत तक अ़रबी और ग़ैर-अ़रबी सब आ गए। और उनको 'मिन्हुम' इस्लाम के एतिबार से फ़रमाया, क्योंकि मुसलमान सब मुत्तहिद और एक हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1004) **1.** यह इसलिए कि गधा उन किताबों के नफ़े से महरूम है। इसी तरह इल्म का असल मक़सूद और नफ़ा अ़मल है, जब यह न हुआ और सिर्फ़ इल्म हासिल करने और याद करने ही में दिक़्क़त और परेशानी उठाई तो बिलकुल ऐसी ही मिसाल हो गई। और गधे को ख़ास करने की वजह यह है कि वह जानवरों में बेवक़ूफ़ मशहूर है, तो इसमें और ज़्यादा बेज़ारी और कराहत हो गई।

2. यहूद ख़ुदा तआ़ला के साथ अपने ताल्लुक़ात जतलाया करते और अपने मक़बूले बारगाह होने पर फ़ख़्र करते। उनके रद्द में यह आयत नाज़िल हुई जिसमें कहा गया कि अगर दूसरों के बजाय तुम ही अल्लाह के दोस्त हो तो मरने की आरज़ू करो, क्योंकि जिसको इस बात का यक़ीन हो जाए कि मैं अल्लाह का प्यारा और लाडला हूँ, मुझे अल्लाह तआ़ला के यहाँ बड़े दर्जे मिलेंगे तो वह बेखटके मौत का इच्छुक होगा, ताकि ज़िन्दगी की तमाम परेशानियों से नजात पाकर जल्दी अल्लाह से जा मिले, और जन्नत का हमेशा का आराम और राहत हासिल करे।

3. बेचने को ख़ास करने की वजह उसके ज़्यादा एहतिमाम के सबब है कि उसके छोड़ने को नफ़े का जाता रहना समझा जाता है।

(पृष्ठ 1004 की बक़िया और पृष्ठ 1006, 1008, 1010, 1012, 1014, 1016 की तफ़सीर पृष्ठ 1018-1020 पर)

नारंव्-व क़ूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु अ़लैहा मलाइ-कतुन् ग़िलाजुन् शिदादुल्-ला यअ़्सूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम् व यफ़्अ़लू-न मा युअ़्मरून (6) या अय्युहल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ़्तज़िरुल्-यौ-म, इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ़्मलून (7) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू तूबू इलल्लाहि तौ-बतन्-नसूहन्, अ़सा रब्बुकुम् अंय्युकफ़्फ़ि-र अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व युद्ख़ि-लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु यौ-म ला युख़्ज़िल्लाहुन्-नबिय्-य वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू नूरुहुम् यस्आ बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् यक़ूलू-न रब्बना अत्मिम् लना नू-रना वग़्फ़िर् लना इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (8) या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्-मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम्, व मअ़्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर (9) ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रुम्-र-अ-त नूहिंव्-वम्-र-अ-त लूतिन्, का-नता तह्-त अ़ब्दैनि मिन् अ़िबादिना सालिहैनि फ़-ख़ानताहुमा फ़-लम् युग़्निया अ़न्हुमा मिनल्लाहि शैअंव्-व क़ीलद्ख़ुलन्ना-र मअ़द्-दाख़िलीन (10) व ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न आमनुम्-र-अ-त फ़िर्औ़-न ✣ इज़् क़ालत् रब्बिब्नि ली अ़िन्द-क बैतन् फ़िल्-जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ़-न व अ़-मलिही व नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (11) व मर्य-मब्न-त अ़िम्रानल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व सद्द-क़त् बि-कलिमाति-रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल्-क़ानितीन (12) ❖

لَا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧ ع
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۭ عَسٰى رَبُّكُمْ
اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ
يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا
وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ
الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ
امْرَاَتَ لُوْطٍ ۭ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ
فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ
مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ ۙ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢ ع

منزل ٧

(दोज़ख़ की) उस आग से बचाओ[1] जिसका ईंधन (और सोख़्ता) आदमी और पत्थर हैं। जिसपर सख़्त-मिज़ाज (और) मज़बूत फ़रिश्ते (मुतैयन) हैं, जो ख़ुदा की किसी बात में (ज़रा भी) नाफ़रमानी नहीं करते जो उनको हुक्म देता है। और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है उसको (फ़ौरन) पूरा करते हैं।[2] **(6)** (और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल करते वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) ऐ काफ़िरो! तुम आज उज़्र (और माज़िरत) मत करो (कि बेफ़ायदा है), बस तुमको तो उसकी सज़ा मिल रही है जो कुछ तुम (दुनिया में) किया करते थे। **(7)** ❖

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो।[3] (तौबा का नतीजा फ़रमाते हैं कि) उम्मीद (यानी वायदा) है कि तुम्हारा रब (उस तौबा की बदौलत) तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको (जन्नत के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। (और यह उस दिन होगा) जिस दिन कि अल्लाह तआ़ला नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को और जो मुसलमान (दीन की रू से) उनके साथ हैं, उनको रुस्वा न करेगा।[4] उनका नूर उनके दाहिने और उनके सामने दौड़ता होगा, (और यूँ) दुआ़ करते होंगे कि ऐ हमारे रब! हमारे लिए इस नूर को आख़िर तक रखिए। (यानी राह में बुझ न जाए), और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए, आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं। **(8)** ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! कुफ़्फ़ार से (तलवारों से) और मुनाफ़िक़ों से (ज़बान से) जिहाद कीजिए और उनपर सख़्ती कीजिए। (दुनिया में तो ये इसके मुस्तहिक़ हैं) और (आख़िरत में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरी जगह है। **(9)** अल्लाह तआ़ला काफ़िरों के लिए नूह (अ़लैहिस्सलाम) की बीवी और लूत (अ़लैहिस्सलाम) की बीवी का हाल बयान फ़रमाता है। वे दोनों हमारे ख़ास बन्दों में से दो बन्दों के निकाह में थीं। सो उन औ़रतों ने उन दोनों बन्दों का हक़ ज़ाया किया, तो वे दोनों नेक बन्दे अल्लाह के मुक़ाबले में उनके ज़रा भी काम न आ सके, और उन दोनों औ़रतों को (काफ़िरा होने की वजह से) हुक्म हो गया कि और जाने वालों के साथ तुम दोनों भी दोज़ख़ में जाओ।[5] **(10)** और अल्लाह तआ़ला मुसलमानों (की तसल्ली) के लिए फ़िरऔ़न की बीवी (हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा) का हाल बयान फ़रमाता है। जबकि उनकी बीवी ने दुआ़ की कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे वास्ते जन्नत में अपने नज़दीक में मकान बनाइए और मुझको फ़िरऔ़न (की बुराई) से और उसके अ़मल (यानी कुफ़्र के नुक़सान और असर) से महफ़ूज़ रखिए, और मुझको तमाम ज़ालिम (यानी काफ़िर) लोगों से महफ़ूज़ रखिए।[6] **(11)** (और साथ ही मुसलमानों की तसल्ली के लिए) इमरान की बेटी (हज़रत) मरियम (अ़लैहस्सलाम) का हाल बयान करता है, जिन्होंने अपनी आबरू को (हराम और हलाल दोनों से) महफ़ूज़ रखा।[7] सो हमने उनके दामन में अपनी रूह फूँक दी और उन्होंने अपने परवर्दिगार के पैग़ामों की (जो उनको फ़रिश्तों के ज़रिए पहुँचे थे) और उसकी किताबों की तस्दीक़ की। और वह इताअ़त करने वालों में से थीं। **(12)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) **4.** यानी उस वक़्त दुनिया के कामों के लिए चलने-फिरने की इजाज़त है।

5. यानी दुनियावी कामों में ऐसे मश्ग़ूल मत हो जाओ कि ज़रूरी अहकाम और इबादतों से ग़ाफ़िल हो जाओ।

6. सरदारे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जुमा के दिन खड़े ख़ुतबा दे रहे थे कि हज़रत दह्या कल्बी रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ाफ़िला ग़ल्ले और हर क़िस्म के ख़ुराक के सामान से लदा हुआ मुल्के शाम से मदीना आया। उस वक़्त मदीना मुनव्वरा में सख़्त क़हत (अकाल) और तंगी थी, और क़ायदा था कि जब कोई क़ाफ़िला सही-सलामत वापस आता तो ख़ुशी के नक़्क़ारे बजाते थे। नक़्क़ारा बजा और जो लोग ख़ुतबा सुन रहे थे, उस आवाज़ पर चल दिए। बहुत थोड़ी मिक़्दार (मात्रा) में हज़रात जिनमें 'अशरा-ए-मुबश्शरा' भी दाख़िल थे, बैठे रह गए। उस वक़्त यह नाराज़गी भरी आयत नाज़िल हुई। लेकिन याद रहे कि जो हज़रात उठकर गए इस्लाम में उनकी इब्तिदाई हालत थी, दूसरे उस वक़्त तक ख़ुतबे से उठने की कोई मनाही नहीं आई थी। इसलिए वह इज्तिहादी ग़लती का शिकार हुए थे। पस किसी मुख़ालिफ़ के लिए एतिराज़ की गुन्जाइश नहीं।

(पृष्ठ 1004 की बक़िया और पृष्ठ 1006, 1008, 1010, 1012, 1014, 1016, 1018 की तफ़सीर पृष्ठ 1020-1022 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. इन मुनाफ़िक़ों के ज़िक्र वाली आयतों के नाज़िल होने का सबब यह है कि किसी लड़ाई में किसी मुहाजिर और अन्सारी में तकरार हो गया, उसपर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिगड़ा कि तुमने इन परदेसियों को रोटी खिला-खिलाकर बिगाड़ दिया। अबके मदीना पहुँचकर उन लोगों को ख़र्च देना बन्द कर दो, खुद ही चले जाएँगे। और यह भी कहा कि हम इज़्ज़त वाले हैं इन ज़िल्लत वालों को निकाल देंगे। यह बात ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु सहाबी ने सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जाकर कही, आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों को बुलाकर पूछा, वह साफ़ मुकर गया और क़स्में खा गया। ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बड़ा रंज हुआ, उसपर ये आयतें नाज़िल हुईं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1006) 1. यानी जिस तरह लकड़ियाँ चौड़ी और मोटी मगर बेजान होती हैं, इसी तरह मुनाफ़िक़ों की हालत है। यानी बातूनी ऐसे कि आदमी ख़्वाह-मख़्वाह उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर बात सुनने लगे, और मोटे-ताज़े ऐसे जैसे कोई ताक़तवर पहलवान होता है। लेकिन हक़ीक़त में बिलकुल बुज़दिल कि जहाँ कोई चीख़ा-चिल्लाया तो समझे कि हमपर कोई बला आई।

2. जब पिछली आयतें मुनाफ़िक़ों के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में नाज़िल हुईं तो उसकी क़ौम के लोगों ने उससे कहा कि खुदा तआ़ला ने तुम्हारे मुताल्लिक़ बहुत सख़्त आयतें नाज़िल की हैं, बेहतर यह है कि तौबा कर लो और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुज़ूर में हाज़िर होकर ख़ता माफ़ कराओ। वह कहने लगा, वाह जनाब वाह! पहले तो तुमने ईमान लाने की तरग़ीब दी और मैं ईमान ले आया, फिर कहा कि ज़कात दिया करो, ख़ैर ज़ोर-ज़बरदस्ती से उसे भी मन्ज़ूर किया। अब सिर्फ़ यह कसर रह गई है कि तुम्हारे कहने से मुहम्मद को सज्दा करने लगूँ, मुझसे यह हरगिज़ न हो सकेगा। इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

3. मतलब यह कि अगर वे आपके पास आते भी और आप उनकी ज़ाहिरी हालत के एतिबार से इस्तिग़फ़ार भी फ़रमाते तब भी उनको कुछ नफ़ा न होता। यहाँ से बेएतिक़ाद और सही अ़क़ीदे वाले गुनाहगार का फ़र्क़ निकलता है। जब बेएतिक़ाद को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इस्तिग़फ़ार भी फ़ायदा बख़्श नहीं तो कोई ऐसा बेएतिक़ाद जिसके अ़क़ीदे इस्लामी तौहीद के ख़िलाफ़ हों, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शफ़ाअ़त पर किस तरह भरोसा कर सकता है?

4. यानी दुनिया में मुन्हमिक मत हो जाना कि दीन में ख़लल पड़ने लगे।

5. क्योंकि दुनियावी नफ़ा तो ख़त्म हो जाएगा और आख़िरत का नुक़सान देरपा और हमेशा के लिए रह जाएगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1008) 1. यानी हिक्मत से पुर और फ़ायदे वाला बनाया।

2. चुनाँचे इनसान के जिस्मानी आज़ा (अंगों और हिस्सों) के बराबर किसी जानदार के आज़ा में तनासुब नहीं।

3. ये तमाम बातें इस बात को चाहती हैं कि तुम उसकी इताअ़त किया करो।

4. वह ख़बर पहुँचना भी इताअ़त के वाजिब होने का तक़ाज़ा करता है।

5. यानी उसको न किसी की नाफ़रमानी से नुक़सान, और न किसी की बन्दगी व इबादत से नफ़ा है। खुद फ़रमाँबरदार और नाफ़रमानी करने वाले ही का नफ़ा और नुक़सान है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1010) 1. यानी नफ़े व नुक़सान के ज़ाहिर होने का मतलब यह है कि मुसलमानों का नफ़ा और काफ़िरों का नुक़सान उस दिन अ़मली तौर पर ज़ाहिर हो जाएगा।

2. और यह समझकर सब्र व रिज़ा इख़्तियार करना चाहिए।

3. यानी वह जानता है कि किसने सब्र व रिज़ा इख़्तियार किया, और किसने नहीं किया। और हर एक को अपनी हिक्मत के मुताबिक़ जज़ा व सज़ा देता है।

4. चूँकि वह इस तब्लीग़ के फ़रीज़े को अच्छे तरीक़े से अदा कर चुके। पस उनका तो कोई नुक़सान नहीं, तुम्हारा ही नुक़सान होगा।

5. पस उसी को माबूद समझना चाहिए।

6. जब मक्का मुअ़ज़्ज़मा से दारुल-अमान मदीना को हिजरत शुरू हुई तो बाज़ सहाबा हिजरत के इरादे से घर से निकले, उनके घर वालों और बाल-बच्चों ने रोना शुरू किया और हाय-वावेला मचाने लगे, कि यहाँ हमको किसके सहारे छोड़े जाते हो? उन्होंने बाल-बच्चों का यह रोना व फ़रियाद करना सुनकर हिजरत का इरादा मुल्तवी (स्थगित) कर दिया। जब चन्द साल के बाद हिजरत करके मदीना पहुँचे तो अपने साथियों को जो उनसे पहले हिजरत करके चले आए थे देखा कि उम्मत के पेशवा की सोहबत में रहकर बड़े फ़ैज़ान हासिल किए हैं, तो उन्होंने अपने बाल-बच्चों को जो उस नेक काम में रुकावट बने थे सज़ा देनी चाही, तो यह आयत नाज़िल हुई कि उनका जुर्म तो वाक़ई सज़ा के क़ाबिल है लेकिन तुमको दरगुज़र करनी मुनासिब है अलबत्ता आगे के लिए एहतियात करनी चाहिए।

7. इससे कुछ ज़माने पहले आयत "फत्तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही" नाज़िल हुई थी, जिसका मन्शा यह था कि अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है, लेकिन कमज़ोर बन्दे की इतनी ताक़त कहाँ कि अपने मौला का पूरा हक़ अदा कर सके। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम इस आयत के नाज़िल होने के बाद रात-दिन इबादत व रियाज़त में मश्ग़ूल रहने लगे। पैर सूज गए, पेशानियाँ सज्दा करते-करते ज़ख़्मी हो गईं। आख़िर कुछ मुद्दत के बाद खुदा-ए-मेहरबान ने रहम फ़रमाकर कमी और नरमी करने की ग़रज़ से यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि हमारा हक़ तो तुमसे किसी सूरत में भी अदा नहीं हो सकता, इसलिए जितना तुमसे हो सके उतना डरो और तक़्वा और तहारत इख़्तियार किए रहो।

(तफ़सीर पृष्ठ 1012) 1. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपनी बीवी को **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) हैज़ (माहवारी) की हालत में तलाक़ दे दी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दुल्लाह! हैज़ में तलाक़ देनी नाजायज़ है, इसलिए रुजू कर लो। हक़ तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर तलाक़ का तरीक़ा तालीम फ़रमा दिया।

2. यानी जैसे बदकारी करने या चोरी करने का जुर्म करें तो सज़ा के लिए निकाली जाएँ, या बाज़ उलमा के क़ौल के मुताबिक़ ज़बान दराज़ी और हर वक़्त का रंज व तकरार रखती हों तो उनको निकाल देना जायज़ है।

3. शरीअ़त में अगरचे ख़ास ज़रूरत और मजबूरी के वक़्त बीवी को तलाक़ देना जायज़ है लेकिन बिना ज़रूरत सख़्त नापसन्दीदा है। इसकी भी ज़्यादा एहतियात रखी गई है कि हैज़ (यानी माहवारी) के दिनों में नहीं, बल्कि पाकी के ज़माने में तलाक़ दी जाए और पाकी की हालत भी वह हो जिसमें मियाँ-बीवी को हमबिस्तरी (सोहबत) करने का इत्तिफ़ाक़ न हुआ हो। फिर उसके बाद तलाक़ पाने वाली अगर बालिग़ा है कि जिसको हैज़ के दिन होते हैं तो उसकी इद्दत तीन हैज़ है, और अगर नाबालिग़ा या इतनी बूढ़ी है कि हैज़ नहीं आता तो तीन महीने। और अगर तलाक़ पाने वाली हामिला (गर्भ से) है तो उसकी इद्दत उस बच्चे का पैदा होना है। इद्दत के ज़माने में औ़रत को घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। अगर तलाक़े रजई के बाद (यानी एक या दो तलाक़ के बाद जबकि उससे पहले कोई तलाक़ न दी हो, इसलिए कि कुल और मजमूए का एतिबार होता है) इद्दत ख़त्म होने से पहले शौहर उस औ़रत को अपने निकाह में रखना चाहे तो रुजू कर ले, और दो गवाह बना ले ताकि किसी को तोहमत लगाने का मौक़ा हाथ न आए।

4. अगर आख़िरत का नफ़ा, नुक़सान और रिज़्क़ मुराद लिया जाए तब तो ये मायने होंगे कि अ़ज़ाब से नजात देगा और जन्नत का रिज़्क़ देगा। और अगर दुनिया का नफ़ा व नुक़सान मुराद है तो उसके ज़ाहिर होने की कई सूरतें हैं- एक महसूस तरीक़े पर कि वह बला टल जाए और रिज़्क़ वग़ैरह की फ़राख़ी हो जाए, और अक्सर यही होता है। दूसरे बातिनी तौर पर कि उस बला पर सब्र हो जाए कि यह भी नजात है उसके असर से, और थोड़े पर क़नाअ़त हो जाए कि यह भी महसूस किए जाने वाले रिज़्क़ के हुक्म ही में है, सुकून और इत्मीनान के असर में, और ऐसा तो होता ही है। और इसको "ला यह्तसिब" कहना इस मायने में होगा कि बज़ाहिर तो नफ़्स के सुकून का तरीक़ा फ़राख़ी-ए-रिज़्क़ है, क़नाअ़त से सुकून "मिन् हैसु ला यह्तसिब" है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1014) **1.** यानी इद्दत में रहने का ठिकाना भी तलाक़ पाने वाली का वाजिब है, लेकिन 'तलाक़े बाईन' में एक मकान में तन्हाई के साथ दोनों का रहना जायज़ नहीं, बल्कि आड़ होना ज़रूरी है।

2. इद्दत गुज़रने तक अपनी तलाक़ दी हुई बीवी को मकान देना शौहर पर लाज़िम है और बच्चे का ख़र्च बाप पर है जब तक बच्चा माँ के पेट में रहे। शौहर तलाक़ दी हुई बीवी को खिलाए-पहनाए और जब पैदा हो तो उसकी माँ ही उसको दूध पिलाए, जो उजरत किसी दूसरी दूध पिलाने वाली को देनी पड़े वही उसकी माँ को दी जाए, क्योंकि वह मुतल्लक़ा हो चुकी और बच्चे की पैदाइश से उसकी इद्दत ख़त्म हो गई। लेकिन उस मासूम बच्चे की माँ होने के सबब माँ का हक़ दूसरी दूध पिलाने वाली से बहरहाल मुक़द्दम है, बशर्ते कि बच्चे की माँ को दूध पिलाने से इनकार न हो, और दूध पिलाने की उजरत भी दूसरी औ़रतों से ज़्यादा न माँगे।

3. मतलब यह कि उनके कुफ़्रिया आमाल में से किसी अ़मल को माफ़ नहीं किया, बल्कि सबपर सज़ा तजवीज़ की, और पूछगछ के तौर पर हिसाब मुराद नहीं।

4. डरना यह कि इताअ़त करो।

5. मतलब यह कि जो नसीहत इस रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के ज़रिए से पहुँचे उसपर अ़मल करना भी इताअ़त है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1016) **1.** शुरू की आयतों के नाज़िल होने का सबब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में इस तरह नक़ल किया गया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल शरीफ़ था कि अ़स्र के बाद खड़े-खड़े बीवियों के पास तशरीफ़ लाते। एक बार हज़रत ज़ैनब के पास मामूल से ज़्यादा ठहरे और शहद पिया तो मुझको रश्क आया, मैंने हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मश्विरा किया कि हममें से जिसके पास तशरीफ़ लाएँ वह यूँ कहे कि आपने 'मग़ाफ़ीर' पिया है। (यह एक गोंद है जो बदबूदार होता है) चुनाँचे ऐसा ही हुआ। आपने फ़रमाया कि मैंने तो शहद पिया है, इन बीवियों ने कहा कि शायद कोई मक्खी उस पेड़ पर बैठ गई होगी और उसका रस चूस लिया होगा। आपने क़सम खाकर फ़रमाया कि मैं फिर शहद न पिऊँगा, और इस ख़्याल से कि हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा का जी बुरा न हो इसके छुपाने की ताकीद फ़रमाई, मगर उन बीवी ने दूसरी से कह दिया। और बाज़ रिवायतों में है कि हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा शहद पिलाने वाली हैं और हज़रत आयशा और हज़रत सौदा और हज़रत सफ़िया सलाह-मश्विरा करने वाली हैं।

2. वह बात यह थी कि मैं फिर शहद न पियूँगा, मगर किसी से कहना नहीं।

3. मतलब यह कि तुम्हारी इन साज़िशों से आपका कोई नुक़सान नहीं है, बल्कि तुम्हारा ही नुक़सान है।

4. बाज़ मस्लहतों से बेवा (विधवा) भी पसन्दीदा होती है- जैसे तजुर्बा, सलीक़ा, हमउम्र होना वग़ैरह, इसलिए इसको भी पसन्दीदा सिफ़तों में फ़रमाया।

(तफ़सीर पृष्ठ 1018) **1.** अपने को बचाना खुद इताअ़त करना, और घर वालों को बचाना उनको अल्लाह के अहकाम सिखाना और उनपर अ़मल कराने के लिए ज़बान से हाथ से जितनी हो सके कोशिश करना।

2. यहाँ 'नाफ़रमानी' से मुराद दिली नाफ़रमानी है जो इताअ़त के मुक़ाबिल है। यानी न दिल में नाफ़रमानी का ख़्याल होता है, न अ़मल में ख़िलाफ़ करते हैं। या यूँ कहा जाए कि इस मायने में भी नाफ़रमानी नहीं करते कि कहे हुए के ख़िलाफ़ करें, और सुस्ती और देर भी नहीं करते। **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1022 पर)**

उन्तीसवाँ पारः ताब-रकल्लज़ी

67 सूरतुल्-मुल्कि 77

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1359 अक्षर, 335 शब्द, 30 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तबा-रकल्लज़ी बि-यदिहिल्-मुल्कु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(1)** अल्लज़ी ख़ा-लक़ल्-मौ-त वल्हया-त लि-यब्लु-वकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़-मलन्, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़ूर **(2)** अल्लज़ी ख़-ल-क़ सब्-अ़ समावातिन् तिबाक़न्, मा तरा फ़ी ख़ल्क़िर्रह्मानि मिन् तफ़ावुतिन्, फ़र्जिअ़िल्-ब-स-र हल् तरा मिन् फ़ुतूर **(3)** सुम्मर्जिअ़िल्-ब-स-र कर्रतैनि यन्क़लिब् इलैकल्-ब-सरु ख़ासिअंव्-व हु-व हसीर **(4)** व ल-क़द् ज़य्यन्नस्समाअद्-दुन्या बि-मसाबी-ह व ज-अ़ल्नाहा रुजूमल्-लिश्शयातीनि व अअ़्तद्ना लहुम् अ़ज़ाबस्सअ़ीर **(5)** व लिल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् अ़ज़ाबु जहन्न-म, व बिअ्सल्-मसीर **(6)** इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअ़ू लहा शहीक़ंव्-व हि-य तफ़ूर **(7)** तकादु त-मय्यज़ु मिनल्-ग़ैज़ि, कुल्लमा उल्क़ि-य फ़ीहा फ़ौजुन् स-अ-लहुम् ख़-ज़-नतुहा अलम् यअ्तिकुम् नज़ीर **(8)** क़ालू बला क़द् जा-अना नज़ीरुन्, फ-कज़्ज़ब्ना व क़ुल्ना मा नज़्ज़लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर **(9)** व क़ालू लौ कुन्ना नस्मअ़ु औ नअ़्क़िलु मा कुन्ना फ़ी अस्हाबिस्सअ़ीर **(10)** फ़अ़्-त-रफ़ू बिज़म्बिहिम्

تبارك الذى ٢٩ ٥٠٩ الملك ٦٧

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ﴿١﴾
الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ﴿٢﴾ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا
مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ
تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ﴿٣﴾ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ
الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ﴿٤﴾ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ
وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ﴿٥﴾
وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٦﴾
اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ﴿٧﴾ تَكَادُ تَمَيَّزُ
مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ
نَذِيْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ
اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا
نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٠﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ
فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ

منزل ٧

उन्तीसवाँ पारः तबा-रकल्लज़ी

67 सूरः मुल्क 77

सूरः मुल्क मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 30 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

वह (ख़ुदा) बड़ा बुलन्द शान वाला है जिसके क़ब्ज़े में तमाम बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। **(1)** जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुममें कौन शख़्स अ़मल में ज़्यादा अच्छा है।[1] और वह ज़बरदस्त (और) बख़्शने वाला है। **(2)** जिसने सात आसमान ऊपर-नीचे पैदा किए। तू ख़ुदा की इस कारीगरी में कोई ख़लल न देखेगा, सो तू (अब की बार) फिर निगाह डालकर देख ले, कहीं तुझको कोई ख़लल नज़र आता है? **(3)** (यानी बिना सोचे तूने बहुत बार देखा होगा अबकी बार सोच-फ़िक्र से निगाह कर)। फिर बार-बार निगाह डालकर देख (आख़िरकार) निगाह ज़लील और आ़जिज़ होकर तेरी तरफ़ लौट आएगी।[2] **(4)** और हमने क़रीब के आसमान को चिराग़ों (यानी सितारों) से सजा रखा है, और हमने उन (सितारों) को शैतानों को मारने का ज़रिया भी बना दिया है और हमने उन (शैतानों) के लिए (उनके कुफ़्र की वजह से) दोज़ख़ का अ़ज़ाब (भी) तैयार कर रखा है। **(5)** और जो लोग अपने रब (की तौहीद) का इनकार करते हैं उनके लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है, और वह बुरी जगह है। **(6)** जब ये लोग उसमें डाले जाएँगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे, और वह इस तरह जोश मारती होगी **(7)** जैसे मालूम होता है कि (अभी) ग़ुस्से के मारे फट पड़ेगी। (और) जब उसमें (काफ़िरों का) कोई गिरोह डाला जाएगा तो उसके मुहाफ़िज़ उन लोगों से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला (पैग़म्बर) नहीं आया था?[3] **(8)** वे काफ़िर (एतिराफ़ के तौर पर) कहेंगे कि वाक़ई हमारे पास डराने वाला (पैग़म्बर) आया था, सो (यह हमारी शामत थी कि) हमने (उसको) झुठला दिया और कह दिया कि अल्लाह ने (अहकाम व किताबें) कुछ नाज़िल नहीं किया, (और) तुम बड़ी ग़लती में पड़े हो।[4] **(9)** और (काफ़िर फ़रिश्तों से यह भी) कहेंगे कि हम अगर सुनते या समझते[5] तो हम दोज़ख़ वालों में (शामिल) न होते। **(10)** ग़रज़ अपने जुर्म का इक़रार करेंगे, सो

(पृष्ठ 1020 का शेष) 3. यानी नाफ़रमानी पर दिल में कामिल शर्मिन्दगी और उसको छोड़ने का पुख़्ता इरादा हो।

4. मक़सूद सिर्फ़ मोमिनों का बयान करना है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र मिला देना हुक्म में ज़ोर पैदा करने के लिए है। यानी जैसे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को रुस्वा न करना यक़ीनी है इसी तरह मोमिनों का रुस्वा न होना भी यक़ीनी है। और रुस्वाई से मुराद एक ख़ास रुस्वाई है जो कुफ़्र की जज़ा है। अल्लाह तआ़ला का क़ौल- 'इन्नल् ख़िज़्यल् यौ-म वस्सू-अ अ़लल् काफ़िरीन' की वजह से। और मोमिनों से मुराद आ़म मोमिनीन हैं।

5. यह दावा करना कि यह क़िस्सा हुज़ूरे पाक सल्ल. की पाक बीवियों को सुनाया गया है, सिर्फ़ दावा बिना दलील है। क्योंकि यह क़िस्सा आपकी पाक बीवियों के मज़मून से मुताल्लिक़ नहीं, बल्कि आयत 'क़ू अन्फ़ुसकुम व अहलीकुम' के मज़मून से मुताल्लिक़ है।

6. या तो यह दुआ़ आ़म हालात में की थी, या एक ख़ास हालत में। जिसका क़िस्सा यह लिखा है कि फ़िरऔ़न को जब अपनी बीवी के मोमिना होने की इत्तिला हो गई तो हुक्म दिया कि चारों हाथ-पैरों में कीलें ठोंक करके धूप में डाल दिया जाए और उनके सीने पर चक्की का पत्थर रखा जाए। उस तकलीफ़ में उन्होंने यह दुआ़ की तो उनको जन्नत में अपना मकान नज़र आ गया जिससे वह तकलीफ़ हल्की हो गई।

7. इसमें उनकी ख़ुद इख़्तियार की हुई और अल्लाह की तरफ़ से अ़ताशुदा ग़ैर-इख़्तियारी पाकीज़गी का बयान है जो कि बुलन्द अख़्लाक़ और ऊँचे हालात में से है।

1. अ़मल के अच्छा होने में मौत का तो यह दख़ल है कि मौत के मुशाहदे से इनसान दुनिया को फ़ानी और मरने के बाद ज़िन्दा होने के एतिक़ाद से आख़िरत को बाक़ी समझकर वहाँ के अ़ज़ाब और सज़ा से बचने के लिए तैयार हो सकता है, और ज़िन्दगी का दख़ल यह है कि अगर ज़िन्दगी न हो तो अ़मल किस वक़्त करे। पस अ़मल के अच्छा होने के लिए **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1024 पर)**

फ़-सुह्क़ल्-लि-अस्हाबिस्-सअ़ीर **(11)** इन्नल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर **(12)** व असिर्रू क़ौलकुम् अविज्-हरू बिही, इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर **(13)** अला यअ्लमु मन् ख़-ल-क़, व हुवल्-लतीफ़ुल्-ख़बीर **(14)** ❖

हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ ज़लूलन् फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिर्रिज़्क़िही, व इलैहिन्-नुशूर **(15)** अ-अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्यख़्सि-फ़ बिकुमुल्-अर्-ज़ फ़-इज़ा हि-य तमूर **(16)** अम् अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्युर्सि-ल अ़लैकुम् हासिबन्, फ़-सतअ्लमू-न कै-फ़ नज़ीर **(17)** व ल-क़द् कज़्ज़-बल्--लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़कै-फ़ का-न नकीर **(18)** अ-व लम् यरौ इलत्तैरि फ़ौक़हुम् साफ़्फ़ातिंव्-व यक़्बिज़्-न ✣ मा युम्सिकुहुन्-न इल्लर्रह्मानु, इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-बसीर **(19)** अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु-व जुन्दुल्-लकुम् यन्सुरुकुम् मिन् दूनिर्रह्मानि, इनिल्-काफ़िरू-न इल्ला फ़ी ग़ुरूर **(20)** अम्-मन् हाज़ल्लज़ी यर्ज़ुक़ुकुम् इन् अम्-स-क रिज़्क़हू बल्-लज्जू फ़ी अ़ुतुव्विंव्-व नुफ़ूर **(21)** अ-फ़मंय्यम्शी मुकिब्बन् अ़ला वज्हिही अह्दा अम्-मंय्यम्शी सविय्यन् अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(22)** क़ुल् हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् व ज-अ़ल लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा तश्कुरून **(23)** क़ुल् हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून **(24)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(25)** क़ुल् इन्नमल्-इ़ल्मु इ़न्दल्लाहि व इन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन **(26)** फ़-लम्मा रऔहु ज़ुल्फ़-तन् सी-अत् वुजूहुल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ी-ल

لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِیْرٌ ﴿١٢﴾ وَ اَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ
عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا یَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَ هُوَ اللَّطِیْفُ
الْخَبِیْرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِیْ مَنَاكِبِهَا
وَ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَ اِلَیْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ اَنْ
یَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِیَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ
اَنْ یُّرْسِلَ عَلَیْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَیْفَ نَذِیْرِ ﴿١٧﴾ وَ لَقَدْ
كَذَّبَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿١٨﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اِلَى الطَّیْرِ
فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّ یَقْبِضْنَ ؔۘ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۭ
بَصِیْرٌ ﴿١٩﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ
الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ یَرْزُقُكُمْ
اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِیْ عُتُوٍّ وَّ نُفُوْرٍ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ یَّمْشِیْ مُكِبًّا
عَلٰى وَجْهِهٖۤ اَهْدٰۤى اَمَّنْ یَّمْشِیْ سَوِیًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿٢٢﴾
قُلْ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ
قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَ
اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿٢٥﴾
قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ

❖ रु. 1/14/1 ✣ व. लाज़िम इख़्तिलाफ़ी

दोज़ख़ियों पर लानत है। **(11)** बेशक जो लोग अपने रब से बेदेखे डरते हैं उनके लिए मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र (मुक़र्रर) है। **(12)** और तुम लोग चाहे छुपाकर बात कहो या पुकारकर कहो (उसको सब ख़बर है, क्योंकि) वह दिलों तक की बातों से ख़ूब वाक़िफ़ है।[1] **(13)** (और भला) क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है? और वह बारीकी से देखने वाला (और) पूरी ख़बर रखने वाला है। **(14)** ❖

वह ऐसा (नेमत देने वाला) है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को ताबे कर दिया[2] सो तुम उसके रास्तों में चलो (फिरो) और ख़ुदा की रोज़ी में से (जो ज़मीन में पैदा की है) खाओ (पियो) और (खा-पीकर उसको भी याद रखना कि) उसी के पास दोबारा ज़िन्दा होकर जाना है।[3] **(15)** क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो गए हो जो कि आसमान में (भी अपना हुक्म व तसर्रुफ़ रखता है) कि वह तुमको ज़मीन में धँसा दे, फिर वह ज़मीन थरथरा (कर उलट-पलट हो) ने लगे। **(16)** या तुम लोग उससे बेख़ौफ़ हो गए हो जो कि आसमान में (भी अपना हुक्म व तसर्रुफ़ रखता) है कि वह तुमपर (क़ौमे आ़द की तरह) एक तेज़ हवा भेज दे[4] (जिससे तुम हलाक हो जाओ)। सो जल्द ही (यानी मरते ही) तुमको मालूम हो जाएगा कि मेरा (अ़ज़ाब से) डराना कैसा (सही) था। **(17)** और उनसे पहले जो लोग गुज़र चुके हैं उन्होंने (दीने हक़ को) झुठलाया था, सो (देख लो उनपर) मेरा अ़ज़ाब कैसा (वाक़ेअ़) हुआ।[5] **(18)** क्या उन लोगों ने अपने ऊपर परिन्दों की तरफ़ नज़र नहीं की, कि पर फैलाए हुए (उड़ते फिरते) हैं, और (कभी उसी हालत में) पर समेट लेते हैं, सिवाय (ख़ुदा-ए-) रहमान के उनको कोई थामे हुए नहीं है। बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है (और जिस तरह चाहे उसमें तसर्रुफ़ कर रहा है)। **(19)** हाँ! रहमान के सिवा वह कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर (आफ़तों से) तुम्हारी हिफ़ाज़त कर सके, (और) काफ़िर (जो अपने माबूदों के बारे में ऐसा ख़्याल रखते हैं) तो (वे) ख़ालिस धोखे में हैं। **(20)** (और) हाँ, (यह भी बतलाओ कि) वह कौन है जो तुमको रोज़ी पहुँचा दे अगर अल्लाह तआ़ला अपनी रोज़ी बन्द कर ले, (मगर ये लोग इससे भी मुतास्सिर नहीं होते) बल्कि ये लोग सरकशी और (हक़ से) नफ़रत पर जम रहे हैं।[6] **(21)** सो (जिस काफ़िर का हाल ऊपर सुना है उसको सुनकर सोचो कि) क्या जो शख़्स मुँह के बल गिरता हुआ चल रहा हो वह मन्ज़िले मक़सूद पर ज़्यादा पहुँचने वाला होगा या वह शख़्स जो सीधा एक हमवार सड़क पर चला जा रहा हो।[7] **(22)** आप (उनसे) कहिए कि वही (ऐसा क़ादिर व नेमत देने वाला) है जिसने तुमको पैदा किया, और तुमको कान और आँखें और दिल दिए, (मगर) तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो। **(23)** (और) आप (यह भी) कहिए कि वही है जिसने तुमको रू-ए-ज़मीन पर फैलाया, और तुम (क़ियामत के दिन) उसी के पास इकट्ठे किए जाओगे। **(24)** और ये लोग (जब क़ियामत का ज़िक्र सुनते हैं तो) कहते हैं कि यह वायदा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो (बतलाओ)। **(25)** आप (जवाब में) कह दीजिए कि यह (उसके सही वक़्त का) इल्म तो ख़ुदा ही को है, और मैं तो सिर्फ़ (ख़ुलासे के तौर पर मगर) साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। **(26)** फिर जब उस (वायदा किए गए अ़ज़ाब) को पास आता हुआ देखेंगे[1]

(पृष्ठ 1022 का शेष) मौत शर्त के दर्जे में और ज़िन्दगी ज़र्फ़ (यानी एक जगह) के दर्जे में है। और चूँकि मौत पूरी तरह ख़त्म होना नहीं, इसलिए उसपर मख़्लूक़ होने का हुक्म सही है।

2. यानी वह जिस चीज़ को जैसा चाहे बना सकता है। चुनाँचे आसमान को मज़बूत बनाना चाहा तो कैसा बनाया कि एक लम्बी मुद्दत गुज़र जाने के बावजूद अब तक उसमें कोई ख़लल नहीं आया। इसी तरह किसी चीज़ को कमज़ोर और असर क़बूल करने वाली बना दिया। ग़रज़ उसको हर तरह से क़ुदरत है।

3. यह सवाल झिड़कने के तौर पर है।

4. यानी हमारी जमाअ़त के सभी अफ़राद ने तमाम डराने वालों और रसूलों को यूँ कह दिया, जिसका हासिल यह है कि अपने-अपने रसूल को हर एक ने यूँ कह दिया। **(पृष्ठ 1022 की शेष तफ़सीर और पृष्ठ 1024 की तफ़सीर पृष्ठ 1026-1028 पर)**

हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्द-अून (27) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अह्ल-कनियल्लाहु व मम्-मअि-य औ रहि-मना फ़-मंय्युजीरुल्- काफ़िरी-न मिन् अज़ाबिन् अलीम (28) क़ुल् हुवर्-रह्मानु आमन्ना बिही व अलैहि तवक्कल्ना फ़-स-तअ्लमू-न मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (29) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अस्ब-ह मा-उकुम् ग़ौरन् फ़-मंय्यअ्तीकुम् बिमाइम्-मअ़ीन (30) ❖

68 सूरतुल्-क़-लमि 2

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1295 अक्षर, 306 शब्द, 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नून् वल्क़-लमि व मा यस्तुरून (1) मा अन्-त बिनिअ्मति रब्बि-क बि-मज्नून (2) व इन्-न ल-क ल-अज्रन् ग़ै-र मम्नून (3) व इन्न-क ल-अ़ला ख़ुलुक़िन् अज़ीम (4) फ़-सतुब्सिरु व युब्सिरून (5) बि-अय्यिकुमुल्-मफ़्तून (6) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु बिमन् ज़ल्-ल अन् सबीलिही व हु-व अअ्लमु बिल्-मुह्तदीन (7) फ़ला तुतिअिल्-मुकज़्ज़िबीन (8) वद्दू लौ तुद्हिनु फ़युद्हिनून (9) व ला तुतिअ् कुल्-ल हल्लाफ़िम्-महीन (10) हम्माज़िम्-मश्शाइम् बि-नमीम (11) मन्नाअिल्-लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिन् असीम (12) अुतुल्लिम् बअ्-द ज़ालि-क ज़नीम (13) अन् का-न ज़ा मालिंव्-व बनीन (14) इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल्-अव्वलीन (15) स-नसिमुहू अ़लल्-ख़ुर्तूम (16) इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना

تبارك الذي ٢٩ — ٥١١ — القلم ٦٨

زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ
بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ
رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ
الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ
يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾

سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾
وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾
فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ
بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۪ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ
الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٨﴾ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ
حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ ﴿١١﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ
اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ﴿١٣﴾ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٤﴾
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهٗ عَلَى
الْخُرْطُوْمِ ﴿١٦﴾ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا

منزل ٧

तो उस वक़्त (ग़म के) मारे काफ़िरों के मुँह बिगड़ जाएँगे, और (उनसे) कहा जाएगा कि यही है वह जिसको तुम माँगा करते थे (कि अ़ज़ाब लाओ, अ़ज़ाब लाओ)। **(27)** आप (उनसे) कहिए कि तुम यह बतलाओ कि अगर ख़ुदा तआ़ला मुझको और मेरे साथ वालों को (तुम्हारी तमन्ना के अनुसार) हलाक कर दे या (हमारी उम्मीद और अपने वायदे के अनुसार) हमपर रहमत फ़रमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब से कौन बचा लेगा?[2] **(28)** (और) आप (उनसे यह भी) कहिए कि वह बड़ा मेहरबान है, हम उसपर ईमान लाए और हम उसपर भरोसा करते हैं। सो जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन है। (यानी तुम, जैसा कि हम कहते हैं, या हम जैसा कि तुम कहते हो)। **(29)** आप (यह भी) कह दीजिए कि अच्छा यह बतलाओ कि अगर तुम्हारा पानी (जो कुओं में है) नीचे को उतर कर ग़ायब हो जाए, सो वह कौन है जो तुम्हारे पास सोत का पानी ले आए (यानी कुएँ की सोत को जारी कर दे)।[3] **(30)** ❖

68 सूरः क़लम 2

सूरः क़लम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

नून। क़सम है क़लम की और (क़सम है) उन (फ़रिश्तों) के लिखने की (जो आमाल के लिखने वाले हैं) **(1)** कि आप अपने रब के फ़ज़्ल से मजनूँ नहीं हैं।[4] (जैसा कि नुबुव्वत के मुन्किर लोग कहते हैं) **(2)** और बेशक आपके लिए (इस अहकाम की तब्लीग़ पर) ऐसा अज्र है जो (कभी) ख़त्म होने वाला नहीं **(3)** और बेशक आप (उम्दा) अख़्लाक़ के आला पैमाने पर हैं।[5] **(4)** सो (उनकी बेहूदा बातों का ग़म न कीजिए, क्योंकि) आप भी देख लेंगे और ये लोग भी देख लेंगे **(5)** कि तुममें किसको जुनून "यानी पागलपन" था।[6] **(6)** आपका परवर्दिगार उसको भी ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह (सही) राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जनता है। **(7)** तो आप उन झुठलाने वालों का (कभी) कहना न मानिए। (जैसा कि अब तक भी नहीं माना)। **(8)** ये लोग चाहते हैं कि आप (अपनी ज़िम्मेदारी यानी तब्लीग़ में) ढीले हो जाएँ तो ये लोग भी ढीले हो जाएँ।[7] **(9)** और आप (ख़ास तौर से) किसी ऐसे शख़्स का कहना न मानें जो बहुत क़स्में खाने वाला हो। (मुराद झूठी क़स्में खाने वाला है)। **(10)** बेवक़अ़त हो, ताना देने वाला हो, चुग़लियाँ लगाता फिरता हो, **(11)** नेक काम से रोकने वाला हो, (एतिदाल की) हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहों का करने वाला हो, **(12)** और सख़्त मिज़ाज हो, (और) इन (सब) के अ़लावा हरामज़ादा (भी) हो।[8] **(13)** इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला हो। **(14)** जब हमारी आयतें उसके सामने पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये बे-सनद बातें हैं जो अगलों से नक़ल होती हुई चली आती हैं। **(15)** हम जल्द ही उसकी नाक पर दाग़ लगा देंगे।[9] **(16)** हमने उनकी आज़माइश कर रखी है जैसे हमने बाग़ वालों की

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. यानी पैग़म्बरों के कहने को क़बूल करते और मानते।

(तफ़सीर पृष्ठ 1024) 1. दलील का हासिल यह है कि वह हर चीज़ का पैदा करने वाला और मुख़्तार है। पस तुम्हारे हालात और जो तुम कहते हो उसका भी पैदा करने वाला है, और पैदा करने का इख़्तियार होना पहले से इल्म के साथ होता है, पस इल्म ज़रूरी हुआ। और अक़वाल यानी जो कुछ कहते हैं उसकी तख़्सीस मक़सूद नहीं बल्कि हुक्म आ़म है। इसको ज़िक्र करने की तख़्सीस शायद इस बिना पर हो कि अक़वाल ज़्यादा ज़ाहिर होते हैं। ग़रज़ उसको सब इल्म है, वह हर एक को मुनासिब बदला देगा।

2. चुनाँचे वह तुम्हारे तसर्रुफ़ात की क़ाबलियत रखती है।

3. पस यह इसको चाहता है कि उसकी नेमतों का शुक्र अदा करो जो कि ईमान लाना व फ़रमाँबरदारी करना है।

4. यानी तुम्हारे कुफ़्र का तक़ाज़ा यही है। **(पृष्ठ 1024 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1026 की तफ़सीर पृष्ठ 1028-1036 पर)**

अस्हाबल्-जन्नति इज़् अक़्समू ल-यस्रिमुन्नहा मुस्बिहीन (17) व ला यस्तस्नून (18) फ़ता-फ़ अ़लैहा ता-इफ़ुम्-मिर्रब्बि-क व हुम् ना-इमून (19) फ़-अस्-बहत् कस्सरीम् (20) फ़-तनादौ मुस्बिहीन (21) अनिग़्दू अ़ला हर्सिकुम् इन् कुन्तुम् सारिमीन (22) फ़न्त-लक़ू व हुम् य-तख़ा-फ़तून (23) अल्-ला यद्ख़ुलन्न-हल्यौ-म अ़लैकुम्-मिस्कीन (24) व ग़दौ अ़ला हर्दिन् क़ादिरीन (25) फ़-लम्मा रऔहा क़ालू इन्ना ल-ज़ाल्लून (26) बल् नह्नु महरूमून (27) क़ा-ल औसतुहुम् अलम् अक़ुल्-लकुम् लौ ला तुसब्बिहून (28) क़ालू सुब्हा-न रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (29) फ़-अक़्ब-ल बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िंय्-य-तला-वमून (30) क़ालू या वैलना इन्ना कुन्ना तागीन (31) अ़सा रब्बुना अंय्युब्दि लना ख़ैरम्-मिन्हा इन्ना इला रब्बिना रागिबून (32) कज़ालिकल्-अ़ज़ाबु, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु ⁘ लौ कानू यअ़्लमून (33) ❖

इन्-न लिल्-मुत्तक़ी-न अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातिन्-नअ़ीम (34)

अ-फ़-नज्-अ़लुल्-मुस्लिमी-न कल्-मुज्रिमीन (35) मा लकुम्, कै-फ़ तह्कुमून (36) अम् लकुम् किताबुन् फ़ीहि तद्रुसून (37) इन्-न लकुम् फ़ीहि लमा त-ख़य्यरून (38) अम् लकुम् ऐमानुन् अ़लैना बालि-ग़तुन् इला यौमिल्-क़ियामति इन्-न लकुम् लमा तह्कुमून (39) सल्हुम् अय्युहुम् बिज़ालि-क ज़अ़ीम (40) अम् लहुम् शु-रका-उ फ़ल्यअ्तू बिशु-रका-इहिम् इन् कानू सादिक़ीन (41)

لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ
مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُونَ ﴿١٩﴾ فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا
مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ اغْدُوا عَلٰى حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ﴿٢٢﴾
فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٣﴾ أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم
مِّسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قَادِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا
لَضَآلُّونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل
لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾ قَالُوا سُبْحٰنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾ قَالُوا يٰوَيْلَنَا إِنَّا
كُنَّا طٰغِينَ ﴿٣١﴾ عَسٰى رَبُّنَا أَن يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلٰى رَبِّنَا
رٰغِبُونَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾
أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾
أَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾ أَمْ
لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا
تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ
فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَآئِهِمْ إِن كَانُوا صٰدِقِينَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَن

منزل

आज़माइश की थी, जबकि उन लोगों ने (यानी उनमें से अक्सर ने या बाज़ ने) क़सम खाई कि उस (बाग़) का फल ज़रूर सुबह चलकर तोड़ लेंगे। **(17)** और (ऐसा यक़ीन व एतिमाद हुआ कि) उन्होंने इन्शा-अल्लाह भी नहीं कहा। **(18)** सो उस बाग़ पर आपके रबकी तरफ़ से एक फिरने वाला (अ़ज़ाब) फिर गया और वे सो रहे थे। **(19)** फिर सुब्ह को वह बाग़ ऐसा रह गया जैसा कटा हुआ खेत (कि ख़ाली ज़मीन रह जाती है)। **(20)** सो सुबह के वक़्त (सोकर जो उठे तो) एक-दूसरे को पुकार कर कहने लगे **(21)** कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुमको फल तोड़ना है। **(22)** फिर वे लोग आपस में चुपके-चुपके बातें करते चले **(23)** कि आज तुम तक कोई मोहताज न आने पाए। **(24)** और (अपने ख़्याल में) अपने को उसके न देने पर क़ादिर समझकर चले। **(25)** फिर जब (वहाँ पहुँचे और) उस बाग़ को (उस हालत में) देखा तो कहने लगे कि हम ज़रूर रास्ता भूल गए। **(26)** बल्कि (जगह तो वही है लेकिन) हमारी क़िस्मत ही फूट गई (कि बाग़ यह हाल हो गया)।[1] **(27)** उनमें जो किसी क़द्र अच्छा आदमी था वह कहने लगा कि क्या मैंने तुमको कहा न था, अब (तौबा और) तस्बीह क्यों नहीं करते। **(28)** सब (तौबा के तौर पर) कहने लगे कि हमारा परवर्दिगार पाक है, बेशक हम ख़तावार हैं। **(29)** फिर एक-दूसरे को मुख़ातब बनाकर आपस में इल्ज़ाम देने लगे। **(30)** (फिर सब मुत्तफ़िक़ होकर) कहने लगे बेशक हम हद से निकलने वाले थे। (सब मिलकर तौबा कर लो) **(31)** शायद (तौबा की बरकत से) हमारा परवर्दिगार हमको उससे अच्छा बाग़ उसके बदले दे दे, (अब) हम अपने रब की तरफ़ रुजू होते हैं।[2] **(32)** इस तरह अ़ज़ाब हुआ करता है[3] और आख़िरत का अ़ज़ाब इस (दुनियावी अ़ज़ाब) से भी बढ़कर है। क्या अच्छा होता कि ये लोग (इस बात को) जान लेते (ताकि ईमान ले आते)। **(33)** ❖

इसमें कोई शक नहीं कि परहेज़गारों के लिए उनके रबके पास राहत व आराम की जन्नतें हैं। **(34)** क्या हम फ़रमाँबरदारों को नाफ़रमानों के बराबर कर देंगे? **(35)** तुमको क्या हुआ, तुम कैसा फ़ैसला करते हो? **(36)** क्या तुम्हारे पास कोई (आसमानी) किताब है जिसमें पढ़ते हो **(37)** कि उसमें तुम्हारे लिए वह चीज़ (लिखी) हो जिसको तुम पसन्द करते हो। **(38)** क्या हमारे ज़िम्मे कुछ क़स्में चढ़ी हुई हैं जो तुम्हारी ख़ातिर से खाई गई हों, और क़स्में क़ियामत तक बाक़ी रहने वाली हों (जिनका मज़मून यह हो) कि तुमको वे चीज़ें मिलेंगी जो तुम फ़ैसला कर रहे हो (यानी सवाब व जन्नत)। **(39)** उनसे पूछिए कि उनमें उसका कौन ज़िम्मेदार है। **(40)** क्या उनके ठहराए हुए (ख़ुदाई में) कुछ शरीक हैं? सो उनको चाहिए कि ये अपने उन शरीकों को पेश करें अगर ये सच्चे हैं। **(41)** (वह दिन याद करने के क़ाबिल है) जिस दिन साक़ "यानी

(पिछले पृष्ठ का शेष) **5.** इससे साफ़ मालूम हुआ कि कुफ़्र क़ाबिले नफ़रत है। पस अगर किसी हिक्मत से यहाँ अ़ज़ाब टल गया तो दूसरे आ़लम में वईद व धमकी के मुताबिक़ ज़ाहिर होगा।

6. खुलासा यह कि तुम्हारे बातिल माबूद न नुक़सान के हटाने पर क़ादिर हैं और न नफ़ा पहुँचाने पर क़ादिर हैं। फिर उनकी इबादत बिलकुल बेवक़ूफ़ी है।

7. यही हाल है मोमिन और काफ़िर का, कि मोमिन के चलने का रास्ता भी दीने मुस्तक़ीम है और चलता भी है वह सीधा होकर, और कमी-बेशी से बचकर। और काफ़िर के चलने का रास्ता भी टेढ़ा और गुमराही का है और चलने में भी हर वक़्त हलाकत के गढ़ों में गिरता और ख़तरनाक रास्तों पर चलता जाता है, पस ऐसी हालत में क्या मन्ज़िले मक़सूद पर पहुँचेगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1026) **1.** पास आता हुआ देखना यह कि आमाल का मुहासबा होगा। दोज़ख़ में जाने का हुक्म होगा जिससे यक़ीन हो जाएगा कि अब अ़ज़ाब सर पर आया।

2. क़ुरैश के काफ़िर हज़रत सरदारे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को और सहाबा-ए-किराम रिज़यल्लाहु अ़न्हुम को बद-दुआ़एँ देते और कोस्ते थे। हक़ तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई जिसमें मोमिनों को इस जवाब की तल्क़ीन की गई कि अच्छा साहिबो! अगर तुम्हारी तमन्ना के मुवाफ़िक़ हम दुनिया से **(पृष्ठ 1026 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1028 की तफ़सीर पृष्ठ 1030-1040 पर)**

यौ-म युक्शफ़ु अ़न् साक़िंव्-व युद्औ़-न इलस्सुजूदि फ़ला यस्ततीअ़ून (42) ख़ाशि-अ़तन् अब्सारुहुम् तर्-हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, व क़द् कानू युद्औ़-न इलस्सुजूदि व हुम् सालिमून (43) फ़-ज़र्नी व मंय्युकज़्ज़िबु बिहाज़ल्-हदीसि, स-नस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ़्लमून (44) व उम्ली लहुम्, इन्-न कैदी मतीन (45) अम् तस्-अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग़्-रमिम् मुस्क़लून (46) अम् अ़िन्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (47) फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तकुन् क-साहिबिल्-हूति ✣ इज़् नादा व हु-व मक्ज़ूम (48) लौ ला अन् तदा-र-कहू निअ़्मतुम्-मिर्रब्बिही लनुबि-ज़ बिल्-अ़रा-इ व हु-व मज़्मूम (49) फ़ज्तबाहु रब्बुहू फ़-ज-अ़-लहू मिनस्सालिहीन (50) व इंय्- यकादुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-युज़्लिक़ून-क बि-अब्सारिहिम् लम्मा समिअ़ुज़्ज़िक्-र व यक़ूलू-न इन्नहू ल-मजनून ✣ (51) व मा हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-आ़लमीन ◆ (52) ❖

سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾ خَاشِعَةً
اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ
وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ
كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾
اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَ
لَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٨﴾ لَوْلَاۤ اَنْ
تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾
فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ
اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾
سُوْرَةُ الْحَاۤقَّةِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَاۤقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَاۤقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحَاۤقَّةُ ﴿٣﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ
وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ
فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ
وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا ۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ

69 सूरतुल्-हाक़्क़ति 78

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1134 अक्षर, 260 शब्द, 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्-हाक़्क़तु (1) मल्-हाक़्क़ह् (2) व मा अद्रा-क मल्-हाक़्क़ह् (3) कज़्ज़बत् समूदु व आ़दुम्-बिल्-क़ारिअ़ह् (4) फ़-अम्मा समूदु फ़-उह्लिकू बित्ताग़ियह् (5) व अम्मा आ़दुन् फ़-उह्लिकू बिरीहिन् सर्सरिन् आ़तियह् (6) सख़्ख़-रहा अ़लैहिम् सब्-अ़ लयालिंव्-व

✣ व. लाज़िम ✣ व. लाज़िम
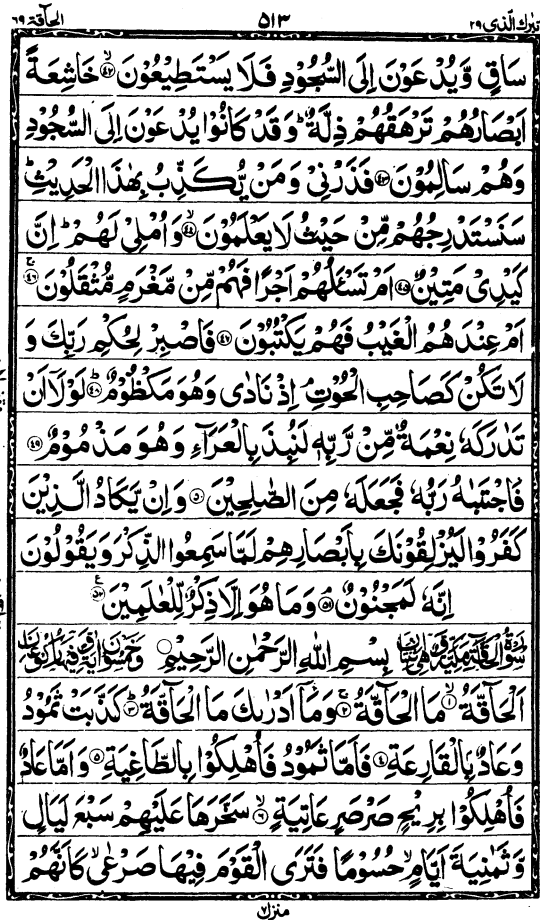
पिन्डली" की तजल्ली फ़रमाई जाएगी[1] और सज्दे की तरफ़ लोगों को बुलाया जाएगा[2] सो ये (काफ़िर) लोग सज्दा न कर सकेंगे। **(42)** (और) उनकी आँखें (शर्मिन्दगी के मारे) झुकी होंगी (और) साथ ही उनपर ज़िल्लत छाई होगी। और (वजह इसकी यह है कि) ये लोग (दुनिया में) सज्दे की तरफ़ बुलाए जाया करते थे और वे सही सालिम थे (यानी उसपर क़ादिर थे)।[3] **(43)** और जो इस कलाम को झुठलाते हैं उनको (इस मौजूदा हाल पर) रहने दीजिए। हम उनको धीरे-धीरे (जहन्नम की तरफ़) लिए जा रहे हैं, इस तौर पर कि उनको ख़बर भी नहीं। **(44)** और (दुनिया में अज़ाब नाज़िल कर डालने से) उनको मोहलत देता हूँ, बेशक मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है। **(45)** क्या आप उनसे कुछ बदला माँगते हैं कि वे उस तावान से दबे जाते हैं। (इसलिए आपकी इताअ़त से नफ़रत है)। **(46)** या उनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि ये (उसको) लिख लिया करते हैं। **(47)** तो आप अपने रब की (इस) तजवीज़ पर सब्र से बैठे रहिए और (तंगदिली में) मछली (के पेट में जाने) वाले पैग़म्बर[4] (यूनुस अ़लैहिस्सलाम) की तरह न होइए जबकि उन्होंने (यानी यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने) दुआ की और वह ग़म से घुट रहे थे। **(48)** अगर ख़ुदावन्दी एहसान उनकी मदद न करता तो वह (जिस) मैदान में (मछली के पेट से निकालकर डाले गए थे उसी) बदहाली के साथ डाले जाते (मदद करने से मुराद तौबा का क़बूल करना है)। **(49)** फिर उनके रब ने उनको और मक़बूल कर लिया और उनको नेकों में से कर दिया। **(50)** और ये काफ़िर जब क़ुरआन सुनते हैं तो (अपने हद दर्जा बैर और दुश्मनी की वजह से) ऐसे मालूम होते हैं कि गोया आपको अपनी निगाहों से फ़ुसला कर गिरा देंगे।[5] (यह एक मुहावरा है)। और (उसी दुश्मनी की वजह से आपके बारे में) कहते हैं कि यह मजनूँ है। **(51)** हालाँकि यह क़ुरआन (जिसके साथ आप बात फ़रमाते हैं) तमाम जहान के वास्ते नसीहत है। ◆ **(52)** ❖

69 सूरः हाक्क़ः 78

सूरः हाक्क़ः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

वह होने वाली चीज़ **(1)** कैसी कुछ है वह होने वाली चीज़। **(2)** और आपको कुछ ख़बर है कि कैसी कुछ है वह होने वाली चीज़ (यह बार-बार पूछना डराने और उसका हौलनाक होना बयान करने के लिए है)।[6] **(3)** समूद और आ़द ने उस खड़खड़ाने वाली चीज़ (यानी क़ियामत) को झुठलाया। **(4)** सो समूद तो एक ज़ोरदार आवाज़ से हलाक कर दिए गए। **(5)** और आ़द जो थे सो वह एक तेज़ व तुन्द हवा से हलाक किए गए। **(6)** जिसको अल्लाह तआ़ला ने उनपर सात रात और आठ दिन लगातार मुसल्लत कर दिया था।

(पिछले पृष्ठ का शेष) उठ ही गए या अल्लाह के वायदे के मुताबिक़ उसकी रहमत से नावाज़े गए, ग़रज़ जो कुछ भी हमारे साथ मामला होगा वह दुनिया ही में होगा और अन्जाम उसका भलाई के सिवा कुछ नहीं। मगर अपनो कहो कि तुमपर जो मुसीबत आने वाली है उसको कौन रोक लेगा? ग़रज़ अपनी फ़िक्र छोड़कर दूसरों के पीछे पड़ना कहाँ की अ़क़्लमन्दी है।

3. यह पानी जो तुम पीते हो, ज़मीन के अन्दर उतर जाए या बिलकुल सूखकर ख़त्म हो जाए तो अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी ऐसा नहीं जो पानी ला मौजूद करे। जब यह आयत एक बार किसी मश्हूर मुलहिद (यानी ख़ुदा का इनकार करने वाले) ने सुनी तो बड़े ग़ुरूर से कहने लगा कि हम पहाड़ों के बीच में ज़मीन खोदकर पानी निकालेंगे। उसपर उसकी आँखों की तरी सूख गई और फ़ौरन अन्धा हो गया। ग़रज़ क़ुदरत की तरफ़ से उसका **(पृष्ठ 1026 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1028, 1030 की तफ़सीर पृष्ठ 1032-1044 पर)**

समानि-य-त अय्यामिन् हुसूमन् फ़-तरल्-क़ौ-म फ़ीहा सर्-आ क-अन्नहुम् अअ्-जाज़ु नख़्लिन् ख़ावियह् (7) फ़-हल् तरा लहुम् मिम्-बाक़ियह् (8) व जा-अ फ़िर्औनु व मन् क़ब्लहू वल्-मुअ्तफ़िकातु बिल्-ख़ातिअह् (9) फ़-अ़सौ रसू-ल रब्बिहिम् फ़-अ-ख़-ज़हुम् अख़्ज़-तर्-राबियह् (10) इन्ना लम्मा तग़ल्-मा-उ हमल्नाकुम् फ़िल्जारियह् (11) लिनज्-अ़-लहा लकुम् तज़्कि-रतंव्-व तअि-यहा उज़ुनुंव्-वाअ़ियह् (12) फ़-इज़ा नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि नफ़्ख़तुंव्-वाहि-दतुन् (13) व हुमि-लतिल्-अर्ज़ु वल्जिबालु फ़-दुक्कता दक्क-तंव्-वाहि-दह् (14) फ़यौमइज़िंव्-व-क़-अ़तिल्- वाक़िअ़ह् (15) वन्-शक़्क़तिस्-समा-उ फ़हि-य यौमइज़िंव्-वाहि-यतुंव्- (16) -वल्-म-लकु अ़ला अर्जा-इहा, व यह़्मिलु अ़र्-श रब्बि-क फ़ौक़हुम् यौमइज़िन् समानियह् (17) यौमइज़िन् तुअ्रज़ू-न ला तख़्फ़ा मिन्कुम् ख़ाफ़ियह् (18) फ़-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बि-यमीनिही फ़-यक़ूलु हाउ-मुक़्रऊ किताबियह् (19) इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन् हिसाबियह् (20) फ़हु-व फ़ी अ़ी-शतिर्-राज़ियह् (21) फ़ी जन्नतिन् आ़लियह् (22) क़ुतूफ़ुहा दानियह् (23) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा अस्लफ़्तुम् फ़िल्-अय्यामिल्-ख़ालियह् (24) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बिशिमालिही फ़-यक़ूलु या लैतनी लम् ऊ-त किताबियह् (25) व लम् अद्रि मा हिसाबियह् (26) या लैतहा कानतिल्-क़ाज़ियह् (27) मा अग़्ना अ़न्नी मालियह् (28) ह-ल-क अ़न्नी सुल्तानियह् (29) ख़ुज़ूहु फ़-ग़ुल्लूहु (30) सुम्मल्-जही-म सल्लूहु (31)

أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۞٧ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ۞٨ وَجَآءَ
فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۞٩ فَعَصَوْا رَسُوْلَ
رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ۞١٠ إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ
فِى الْجَارِيَةِ ۞١١ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۞١٢
فَإِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۞١٣ وَّحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَ
الْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۞١٤ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۞١٥
وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۞١٦ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى
أَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۞١٧
يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۞١٨ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِىَ كِتٰبَهٗ
بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۞١٩ إِنِّىْ ظَنَنْتُ أَنِّىْ
مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۞٢٠ فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۞٢١ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۞٢٢
قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ۞٢٣ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِى
الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۞٢٤ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِىْ لَمْ أُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۞٢٥ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۞٢٦ يٰلَيْتَهَا
كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۞٢٧ مَآ أَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۞٢٨ هَلَكَ عَنِّىْ
سُلْطٰنِيَهْ ۞٢٩ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۞٣٠ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۞٣١ ثُمَّ فِىْ

सो (ऐ मुख़ातब! अगर) तू (उस वक़्त मौजूद होता) तो उस क़ौम को इस तरह गिरा हुआ देखता कि गोया वह गिरी हुई खजूरों के तने (पड़े) हैं। **(7)** सो क्या तुझको उनमें का कोई बचा हुआ नज़र आता है? (यानी बिलकुल ख़ात्मा हो गया)। **(8)** और (इसी तरह) फ़िरऔन ने और उससे पहले लोगों ने और (क़ौमे लूत की) उल्टी हुई बस्तियों ने बड़े-बड़े क़ुसूर किए (यानी कुफ़्र व शिर्क, उसपर उनके पास रसूल भेजे गए)। **(9)** सो उन्होंने अपने रब के रसूल का कहना न माना तो अल्लाह ने उनको बहुत सख़्त पकड़ा, (यानी) हमने। **(10)** जबकि (नूह अलैहिस्सलाम के वक़्त में) पानी को तुग़यानी "यानी हद से ज़्यादा बढ़ोतरी और उफ़ान" हुई तो तुमको कश्ती में सवार किया (और बाक़ी को ग़र्क़ कर दिया) **(11)** ताकि हम उस मामले को तुम्हारे लिए यादगार (और इबरत) बनाएँ, और याद रखने वाले कान उसको याद रखें। **(12)** फिर जब सूर में एक ही बार में फूँक मारी जाएगी (मुराद पहली फूँक मारना है) **(13)** और (उस वक़्त) ज़मीन और पहाड़ (अपनी जगह से) उठा लिए जाएँगे, फिर दोनों एक ही दफ़ा में टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे। **(14)** तो उस दिन होने वाली चीज़ हो पड़ेगी। **(15)** और आसमान फट जाएगा और वह (आसमान) उस दिन बिलकुल बोदा होगा।[1] **(16)** और फ़रिश्ते (जो आसमान में फैले हुए हैं) उसके किनारे पर आ जाएँगे[2] और आपके परवर्दिगार के अर्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाए होंगे।[3] **(17)** जिस दिन (ख़ुदा के सामने हिसाब के वास्ते) तुम पेश किए जाओगे (और) तुम्हारी कोई बात (अल्लाह तआला से) छुपी न होगी। **(18)** (फिर आमालनामे हाथ में दिए जाएँगे तो) जिस शख़्स का आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा वह तो (ख़ुशी के मारे आस-पास वालों से) कहेगा कि लो मेरा आमालनामा पढ़ो।[4] **(19)** मेरा (तो पहले ही से) एतिक़ाद था कि मुझको मेरा हिसाब पेश आने वाला है।[5] **(20)** ग़रज़ वह शख़्स पसन्दीदा ऐश **(21)** यानी आलीशान जन्नत में होगा। **(22)** जिसके मेवे (इस क़द्र) झुके होंगे (कि जिस हालत में चाहेंगे) ले सकेंगे **(23)** (और हुक्म होगा कि) खाओ-पियो मज़े के साथ उन आमाल के सिले में जो तुमने गुज़िश्ता दिनों (यानी दुनिया में रहने के दौरान) में किए हैं। **(24)** और जिसका आमालनामा उसके बाएँ हाथ में दिया जाएगा, सो वह (बहुत ही हसरत से) कहेगा, क्या अच्छा होता कि मुझको मेरा आमालनामा ही न मिलता। **(25)** और मुझको यह ख़बर ही न होती कि मेरा हिसाब क्या है। **(26)** क्या अच्छा होता कि (पहली) मौत ही ख़ात्मा कर चुकती। **(27)** (अफ़सोस) मेरा माल मेरे कुछ काम न आया। **(28)** मेरा रुतबा और पद (भी) मुझसे गया गुज़रा।[6] **(29)** (ऐसे शख़्स के लिए फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उस शख़्स को पकड़ लो और उसको तौक़ पहना दो **(30)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) उसका यह जवाब दिया गया कि पहाड़ों पर जाकर पानी निकालना तो लम्बी प्रक्रिया है, तुम अपनी आँखों की तरी (यानी नमी और गीलापन) ही वापस लाकर अपने दावे का अमली सुबूत पेश कर दो।

4. सैफ़ुल्लाह हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का बाप वलीद बिन मुग़ीरा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मनों की पहली सफ़ में था। उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दीवाना कहा। हक़ तआला ने उसके जवाब में सूरः क़लम नाज़िल फ़रमाकर उसकी एक छोटी ऐबजोई के जवाब में उसकी दस ख़स्लतें ज़ाहिर फ़रमा दीं।

5. चुनाँचे आपका हर काम एतिदाल लिए हुए और अल्लाह की रिज़ा के मुताबिक़ है।

6. यानी पागलपन की हक़ीक़त अक़्ल का ख़राब होना है। और अक़्ल का काम नफ़े व नुक़सान को समझना और असल नफ़ा व नुक़सान वह है जो हमेशा का हो। पस क़ियामत में उनको भी मालूम हो जाएगा कि अक़्ल वाले अहले हक़ थे जिन्होंने उस नफ़े को हासिल किया, और मजनूँ यानी पागल ये ख़ुद थे जो उस नफ़े से महरूम रहकर हमेशा के नुक़सान में मुब्तला हुए।

(पृष्ठ 1026 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1028, 1030, 1032 की तफ़सीर पृष्ठ 1034-1045 पर)

सुम्-म फ़ी सिल्सि-लतिन् ज़र्-उहा सब्ऊ़-न ज़िराअ़न् फ़स्लुकूहु (32) इन्नहू का-न ला युअ्मिनु बिल्लाहिल्-अ़ज़ीम (33) व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तआ़मिल्-मिस्कीन (34) फ़लै-स लहुल्-यौ-म हाहुना हमीम (35) व ला तआ़मुन् इल्ला मिन् ग़िस्लीन (36) ला यअ्कुलुहू इल्लल्-ख़ातिऊन (37) ❖

फ़ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून (38) व मा ला तुब्सिरून (39) इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीम (40) व मा हु-व बिक़ौलि शाअ़िर्, क़लीलम्-मा तुअ्मिनून (41) व ला बिक़ौलि काहिन्, क़लीलम्-मा तज़क्करून (42) तन्ज़ीलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (43) व लौ तक़व्व-ल अ़लैना बअ्ज़ल्-अक़ावील (44) ल-अख़ज़्ना मिन्हु बिल्यमीन (45) सुम्-म ल-क़तअ्ना मिन्हुल्-वतीन (46) फ़मा मिन्कुम्-मिन् अ-हदिन् अ़न्हु हाजिज़ीन (47) व इन्नहू ल-तज़्कि-रतुल् लिल्-मुत्तक़ीन (48) व इन्ना ल-नअ्लमु अन्-न मिन्कुम् मुकज़्ज़िबीन (49) व इन्नहू ल-हस्-रतुन् अ़लल्-काफ़िरीन (50) व इन्नहू ल-हक़्क़ुल्-यक़ीन (51) फ़-सब्बिह् बिस्मि-रब्बिकल्-अ़ज़ीम (52) ❖

سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ (٣٢) اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ (٣٣) وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ (٣٤) فَلَيْسَ
لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ (٣٥) وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ (٣٦)
لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ (٣٧) فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ (٣٨) وَمَا
لَا تُبْصِرُوْنَ (٣٩) اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ (٤٠) وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ
قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ (٤١) وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ (٤٢)
تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٤٣) وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ
الْاَقَاوِيْلِ (٤٤) لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ (٤٥) ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ (٤٦)
فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِيْنَ (٤٧) وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ
لِّلْمُتَّقِيْنَ (٤٨) وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ (٤٩) وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (٥٠) وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ (٥١) فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ (٥٢)

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ (١) لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ (٢)
مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ (٣) تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ
يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ (٤) فَاصْبِرْ صَبْرًا

70 सूरतुल्-मआ़रिजि 79

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 677 अक्षर, 260 शब्द, 44 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

स-अ-ल साइलुम्-बि-अ़ज़ाबिंव्-वाक़िअ़िल्- (1) -लिल्-काफ़िरी-न लै-स लहू दाफ़िअ़ुम्- (2) -मिनल्लाहि ज़िल्-मआ़रिज (3) तअ्रुजुल्-मलाइ-कतु वर्रूहु इलैहि फ़ी
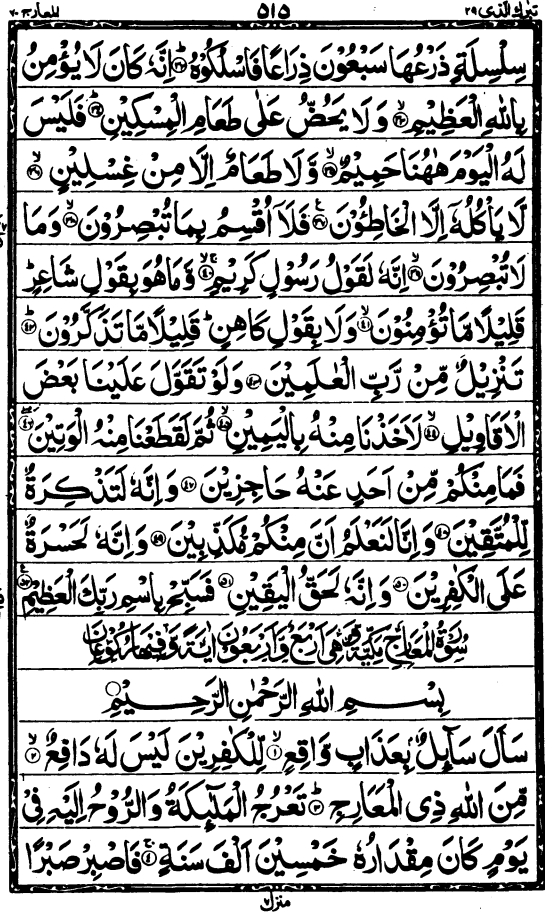
फिर उसको दोज़ख़ में दाख़िल कर दो। **(31)** फिर एक ऐसी ज़न्जीर में जिसकी पैमाइश सत्तर गज़ है[1] उसको जकड़ दो **(32)** यह शख़्स अल्लाह पर ईमान न रखता था।[2] **(33)** और (वह ख़ुद तो किसी को क्या देता औरों को भी) ग़रीब आदमी के खिलाने की तरग़ीब न देता था (इसलिए अ़ज़ाब का हक़दार हुआ)।[3] **(34)** सो आज उस शख़्स का न कोई दोस्त है **(35)** और न उसको कोई खाने की चीज़ नसीब है, सिवाय ज़ख़्मों के धोवन के[4] **(36)** जिसको बड़े गुनाहगारों के सिवा कोई न खाएगा। **(37)** ❖

फिर (बदला देने का मज़मून बयान करने के बाद) मैं क़सम खाता हूँ उन चीज़ों की भी जिनको तुम देखते हो **(38)** और उन चीज़ों की भी जिनको तुम नहीं देखते[5] **(39)** कि यह क़ुरआन (अल्लाह तआ़ला का) कलाम है एक इज़्ज़त वाले फ़रिश्ते का लाया हुआ है (पस जिसपर आया वह ज़रूर रसूल है)। **(40)** और यह किसी शायर का कलाम नहीं है जैसा कि कुफ़्फ़ार (आपको शायर कहते थे, मगर) तुम बहुत कम ईमान लाते हो।[6] **(41)** और न किसी काहिन "यानी अन्दाज़े से ग़ैब की बातें बताने वाले" का कलाम है (जैसा कि बाज़ कुफ़्फ़ार आपको कहते थे), तुम बहुत कम समझते हो। **(42)** रब्बुल-आ़लमीन की तरफ़ से भेजा हुआ (कलाम) है। **(43)** और अगर यह (पैग़म्बर) हमारे ज़िम्मे कुछ (झूठी) बातें लगा देते **(44)** तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ते **(45)** फिर हम उनकी दिल की रग काट डालते। **(46)** फिर तुममें कोई उनका इस सज़ा से बचाने वाला भी न होता।[7] **(47)** और बिला शुब्हा यह क़ुरआन परहेज़गारों के लिए नसीहत है। **(48)** और हमको मालूम है कि तुममें बाज़े झुठलाने वाले भी हैं (पस हम उनको उसकी सज़ा देंगे)। **(49)** और (इस एतिबार से) यह क़ुरआन काफ़िरों के हक़ में हसरत का सबब है। **(50)** और यह क़ुरआन तहक़ीक़ी यक़ीनी बात है। **(51)** सो (जिसका यह कलाम है) अपने (उस) अ़ज़ीम शान वाले परवर्दिगार के नाम की तस्बीह कीजिए। **(52)** ❖

70 सूरः मआ़रिज 79

सूरः मआ़रिज मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 44 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

एक दरख़्वास्त करने वाला[8] (इनकार करने के तौर पर) उस अ़ज़ाब की दरख़्वास्त करता है जो वाक़ेअ़ होने वाला है **(1)** काफ़िरों पर, (और) जिसका कोई दूर करने वाला नहीं। **(2)** और जो कि अल्लाह की तरफ़ से वाक़ेअ़ होगा जो कि सीढ़ियों का (यानी आसमानों का) मालिक है। **(3)** (जिन सीढ़ियों से) फ़रिश्ते और (मोमिनों की) रूहें उसके पास चढ़कर जाती हैं[9] (और वह अ़ज़ाब) ऐसे दिन में होगा जिसकी मिक़्दार (यानी मात्रा दुनिया के) पचास हज़ार साल के (बराबर) है।[10] **(4)** सो आप (उनकी मुख़ालफ़त पर) सब्र कीजिए, और

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. यानी काफ़िरों का दिली मन्शा यह है कि आप अपने फ़रीज़े और ज़िम्मेदारी यानी तब्लीग़ को छोड़ दें या उसमें कमी कर दें और बुतपरस्ती की निन्दा भी छोड़ दें तो वे भी ढीले पड़ जाएँगे और दीने इस्लाम की मुख़ालफ़त में मौजूदा गर्मजोशी का इज़हार न करेंगे।

8. "ज़नीम" अ़रब की लुग़त में उस शख़्स को कहते हैं जो अपने आपको किसी दूसरी क़ौम या ख़ानदान की तरफ़ मन्सूब करे, यह आयत

(पृष्ठ 1026 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1028, 1030, 1032, 1034 की तफ़सीर पृष्ठ 1036-1046 पर)

यौमिन् का-न मिक़्दारुहू ख़म्सी-न अल्-फ़ स-नतिन् **(4)** फ़स्बिर सब्रन् जमीला **(5)** इन्नहुम् यरौनहू बओ़दंव्- **(6)** व नराहु क़रीबा **(7)** यौ-म तकूनुस्समा-उ कल्मुह्लि **(8)** व तकूनुल्-जिबालु कल्अ़िह्नि **(9)** व ला यस्अलु हमीमुन् हमीमंय्- **(10)** -युबस्सरू-नहुम्, य-वद्दुल्-मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन् अ़ज़ाबि यौमिइज़िम् बि-बनीहि **(11)** व साहि-बतिही व अख़ीहि **(12)** व फ़सी-लतिहिल्लती तुअ्वीहि **(13)** व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअन् सुम्-म युन्जीहि **(14)** कल्ला, इन्नहा लज़ा **(15)** नज़्ज़ा-अ़तल्-लिश्शवा **(16)** तद्अू मन् अद्ब-र व त-वल्ला **(17)** व ज-म-अ़ फ़औआ़ **(18)** इन्नल्-इन्सा-न ख़ुलि-क़ हलूआ़ **(19)** इज़ा मस्सहुश्शर्रु जज़ूआ़ **(20)** व इज़ा मस्सहुल्-ख़ैरु मनूआ़ **(21)** इल्लल्-मुसल्लीन **(22)** अल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् दा-इमून **(23)** वल्लज़ी-न फ़ी अम्वालिहिम् हक़्क़ुम्-मअ्लूम **(24)** लिस्सा-इलि वल्-मह्रूम **(25)** वल्लज़ी-न युसद्दिक़ू-न बियौमिद्-दीन **(26)** वल्लज़ी-न हुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून **(27)** इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बिहिम् ग़ैरु मअ्मून **(28)** वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून **(29)** इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन **(30)** फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-आ़दून **(31)** वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राऊन **(32)** वल्लज़ी-न हुम् बि-शहादातिहिम् क़ा-इमून **(33)** वल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून **(34)** उलाइ-क फ़ी जन्नातिम्-मुक्रमून **(35)** ❖

جَمِيْلًا ۝٥ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝٦ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۝٧ يَوْمَ تَكُوْنُ
السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝٨ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝٩ وَلَا يَسْـَٔلُ
حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝١٠ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ۭ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ
عَذَابِ يَوْمِىِٕذٍۢ بِبَنِيْهِ ۝١١ وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۝١٢ وَفَصِيْلَتِهِ
الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۝١٣ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝١٤ كَلَّا ۭ اِنَّهَا
لَظٰى ۝١٥ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۝١٦ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۝١٧ وَجَمَعَ
فَاَوْعٰى ۝١٨ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝١٩ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ
جَزُوْعًا ۝٢٠ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝٢١ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝٢٢ الَّذِيْنَ
هُمْ عَلٰي صَلَاتِهِمْ دَاۗىِٕمُوْنَ ۝٢٣ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ
مَّعْلُوْمٌ ۝٢٤ لِّلسَّاۗىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝٢٥ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ۝٢٦ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝٢٧
اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۝٢٨ وَّالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ
حٰفِظُوْنَ ۝٢٩ اِلَّا عَلٰٓي اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ
غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝٣٠ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَاۗءَ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْعٰدُوْنَ ۝٣١ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝٣٢
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَاۗىِٕمُوْنَ ۝٣٣ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰي صَلَاتِهِمْ

सब्र भी ऐसा जिसमें शिकायत का नाम न हो। **(5)** ये लोग उस दिन को (इस वजह से कि ये उसके आने के इनकारी हैं) दूर देख रहे हैं। **(6)** और हम उसको (ज़ाहिर होने के एतिबार से) क़रीब देख रहे हैं। **(7)** (वह अ़ज़ाब उस दिन वाक़ेअ़ होगा) जिस दिन (कि आसमान रंग में) तेल तलछट की तरह हो जाएगा। **(8)** और (उस दिन) पहाड़ रंगीन ऊन की तरह (जो कि धुनी हुई हो) हो जाएँगे (यानी उड़ते फिरेंगे)। **(9)** और (उस दिन) कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा **(10)** इसके बावजूद कि एक-दूसरे को दिखा भी दिए जाएँगे।[1] (और उस दिन) मुज्रिम (यानी काफ़िर) इस बात की तमन्ना करेगा कि उस दिन के अ़ज़ाब से छूटने के लिए अपने बेटों को **(11)** और बीवी को और भाई को **(12)** और कुन्बे को जिनमें वह रहता था **(13)** और तमाम ज़मीन पर रहने वालों को अपने फ़िदये में दे दे, फिर यह (फ़िदये में दे देना) उसको (अ़ज़ाब से) बचा ले।[2] **(14)** यह हरगिज़ न होगा, (बल्कि) वह आग ऐसी भड़कती हुई है **(15)** जो खाल (तक) उतार देगी **(16)** (और) वह उस शख़्स को (ख़ुद) बुलाएगी जिसने (दुनिया मे हक़ से) पीठ फेरी होगी और (अल्लाह व उसके रसूल की बात मानने से) बेरुख़ी की होगी। **(17)** और जमा किया होगा फिर उसको उठा-उठाकर रखा होगा।[3] **(18)** इनसान कम-हिम्मत पैदा हुआ है।[4] **(19)** जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो (ज़रूरत से ज़्यादा) चीख़-पुकार करने लगता है। **(20)** और जब उसको ख़ुशहाली और फ़रागत होती है तो (अपने ज़िम्मे वाजिब हुक़ूक़ से) बुख़्ल करने लगता है। **(21)** मगर वह नमाज़ी (यानी मोमिन) **(22)** जो अपनी नमाज़ पर बराबर तवज्जोह रखते हैं[5] **(23)** और जिनके मालों में हक़ है **(24)** सवाली और बे-सवाली सबका।[6] **(25)** और जो क़ियामत के दिन का एतिक़ाद रखते हैं **(26)** और जो अपने परवर्दिगार के अ़ज़ाब से डरने वाले हैं। **(27)** (और) वाक़ई उनके रब का अ़ज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं (यह एक अलग और ग़ैर-मुताल्लिक़ जुम्ले के तौर पर है)। **(28)** और जो अपनी शरमगाहों को (हराम से) महफ़ूज़ रखने वाले हैं। **(29)** लेकिन अपनी बीवियों से या अपनी (शरई) बाँदियों से (हिफ़ाज़त नहीं करते), क्योंकि उनपर (उसमें) कोई इल्ज़ाम नहीं। **(30)** हाँ! जो उसके अ़लावा (और जगह अपनी शहवत पूरी करने का) लतबगार हो, ऐसे लोग (शरई) हद से निकलने वाले हैं। **(31)** और जो अपनी (सुपुर्दगी में ली हुई) अमानतों और अपने अ़हद का ख़्याल रखने वाले हैं। **(32)** और जो अपनी गवाहियों को ठीक-ठीक अदा करते हैं, **(33)** और जो अपनी (फ़र्ज़) नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं। **(34)** (बस) ऐसे लोग जन्नतों में इज़्ज़त से दाख़िल होंगे। **(35)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी के बारे में नाज़िल हुई थी, जिसमें दूसरी बुराइयों के अ़लावा यह बुराई भी थी कि अपने आपको एक और ख़ानदान की तरफ़ मन्सूब करता था।

9. उसकी नाक को अपमान करने के तौर पर सूँड से ताबीर फ़रमाया, जैसे किसी आदमी के मुँह को थोतड़ी कह दिया जाए जिसका इस्तेमाल उमूमन कुत्ते के लिए होता है। हक़ तआ़ला क़ियामत के दिन उसके चेहरे और नाक पर ज़िल्लत और पहचान की कोई निशानी रख देगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1028) **1.** 'सनआ़' शहर से थोड़े फ़ासले पर एक बाग़ था जिस दिन उसके फल तोड़े जाते शहर के फ़ुक़रा व मसाकीन जमा हो जाते। मालिक का मामूल यह था कि अपने साल भर के गुज़ारे के लिए उसमें से निकालकर बाक़ी तमाम ग़ल्ला और फल फ़क़ीरों और मोहताजों में ख़ैरात कर देता था। इससे उसको बड़ी बरकत और तरक़्क़ी थी। जब मालिक का इन्तिक़ाल हो गया तो उसके पाँच बेटे वारिस हुए। फल तोड़ने का दिन आया तो पाँचों भाई आपस में कहने लगे कि हमसे ख़ैरात करने में बाप की पैरवी न हो सकेगी। ये फल जो मसाकीन ले जाते हैं अपने ही काम आएँ तो अच्छा है। चलो सुबह-सवेरे ऐसे वक़्त में फल तोड़ लाएँ कि किसी को मालूम न हो सके। जब ग़रीब व मिसकीन लोग अपने वक़्त पर आएँगे तो कटा-कटाया पाएँगे। उनको अपनी इस तदबीर की कामयाबी का यहाँ तक यक़ीन था

(पृष्ठ 1028 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1030, 1032, 1034, 1036 की तफ़सीर पृष्ठ 1038-1046 पर)

फ़मालिल्लज़ी-न क-फ़रू कि़-ब-ल-क मुह्तिओन (36) अ़निल्-यमीनि व अ़निश्शिमालि अ़िज़ीन (37) अ-यत्मअ़ु कुल्लुम्रिइम्-मिन्हुम् अंय्युद्ख़-ल जन्न-त नअ़ीम (38) कल्ला, इन्ना ख़लक़्नाहुम् मिम्मा यअ़्लमून (39) फ़ला उक़्सिमु बिरब्बिल्-मशारिकि़ वल्-मग़ारिबि इन्ना ल-क़ादिरून (40) अ़ला अन् नुबद्दि-ल ख़ैरम्-मिन्हुम् व मा नह्नु बिमस्बूक़ीन (41) फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्अ़बू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अ़दून (42) यौ-म यख़्रुजू-न मिनल्-अज्दासि सिराअ़न् क-अन्नहुम् इला नुसुबिंय्- यूफ़िज़ून (43) ख़ाशि-अ़तन् अब्सारुहुम् तर्-हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, ज़ालिकल्-यौमुल्लज़ी कानू यू-अ़दून (44) ❖

71 सूरतु नूहिन् 71

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 974 अक्षर, 231 शब्द, 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

इन्ना अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही अन् अन्ज़िर् क़ौम-क मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (1) क़ा-ल या क़ौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन (2) अनिअ़्बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु व अतीअ़ून (3) यग़्फ़िर् लकुम्-मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़िर्कुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन्, इन्-न अ-जलल्लाहि इज़ा जा-अ ला यु-अख़्ख़रु ✣ लौ कुन्तुम् तअ़्लमून (4) क़ा-ल रब्बि इन्नी दऔतु क़ौमी लैलंव्-व नहारा (5) फ़-लम् यज़िद्हुम् दुआ़ई इल्ला फ़िरारा (6) व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लि-तग़्फ़ि-र लहुम् ज-अ़लू

يُحَافِظُونَ ۞ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُكْرَمُونَ ۞ فَمَالِ الَّذِينَ
كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۞ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ۞
أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ۞ كَلَّا
إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۞ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ
إِنَّا لَقَادِرُونَ ۞ عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوقِينَ ۞ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ
الَّذِي يُوعَدُونَ ۞ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ۞ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۞

سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ
أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۞ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۞
أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ۞ يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ
وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ
لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۞ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۞
فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۞ وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ

तो काफ़िरों को क्या हुआ कि (इन मज़ामीन के झुठलाने को) आपकी तरफ़ दौड़े आ रहे हैं। **(36)** दाहिने और बाएँ से जमाअतें बनकर।[1] **(37)** क्या उनमें हर शख़्स इसकी हवस रखता है कि वह राहत व आराम की जन्नत में दाख़िल होगा। **(38)** यह हरगिज़ न होगा, हमने उनको ऐसी चीज़ से पैदा किया है जिसकी उनको भी ख़बर है।[2] **(39)** फिर (दूसरे तौर पर क़ियामत के क़ायम होने के लिए) मैं क़सम खाता हूँ पूरबों और पश्चिमों के मालिक की कि हम इसपर क़ादिर हैं **(40)** कि (दुनिया ही में) उनकी जगह उनसे बेहतर लोग ले आएँ (यानी पैदा कर दें) और हम (इससे) आ़जिज़ नहीं हैं।[3] **(41)** तो आप उनको इसी शग़ल और तफ़रीह में रहने दीजिए यहाँ तक कि उनको अपने उस दिन से साबक़ा पड़े जिसका उनसे वायदा किया जाता है **(42)** जिस दिन ये क़ब्रों से निकलकर इस तरह दौड़ेंगे जैसे किसी इबादतगाह की तरफ़ दौड़े जाते हैं। **(43)** (और) उनकी आँखें (शर्मिन्दगी की वजह से) नीचे को झुकी होंगी (और) उनपर ज़िल्लत छाई होगी। (बस) यह है उनका वह दिन जिसका उनसे वायदा किया जाता था (जो कि अब ज़ाहिर हुआ)। **(44)** ◆

71 सूरः नूह 71

सूरः नूह मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

हमने[4] नूह (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा था कि तुम अपनी क़ौम को (कुफ़्र के वबाल से) डराओ, इससे पहले कि उनपर दर्दनाक अ़ज़ाब आए।[5] **(1)** उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। **(2)** (और कहता हूँ) कि तुम अल्लाह की इबादत (यानी तौहीद इख़्तियार) करो और उससे डरो और मेरा कहना मानो **(3)** तो वह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको वक़्ते मुक़र्रर (यानी मौत के वक़्त) तक (बिना सज़ा के) मोहलत देगा। अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त (है), जब (वह) आ जाएगा तो टलेगा नहीं। क्या ख़ूब होता अगर तुम (इन बातों को) समझते।[6] **(4)** (जब लम्बी मुद्दत तक इन नसीहतों का कुछ असर क़ौम पर न हुआ तो) नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने (हक़ तआ़ला से) दुआ़ की कि ऐ मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम को रात को भी और दिन को भी (हक़ दीन की तरफ़) बुलाया। **(5)** सो मेरे बुलाने पर (दीन से) और ज़्यादा भागते रहे। **(6)** और (वह भागना यह हुआ कि) मैंने जब कभी उनको (हक़ दीन की तरफ़) बुलाया ताकि (ईमान के सबब) आप उनको बख़्श दें तो उन लोगों

(पिछले पृष्ठ का शेष) कि इन्शा-अल्लाह भी न कहा। यहाँ भाइयों में ये मश्विरे हो रहे थे और वहाँ रात ही को बाग़ में आग लग गई जो सारे बाग़ का सफ़ाया कर गई। बाग़ की यह हालत हो गई थी कि पहचाना न जा सकता था। पहले तो उन्हें यह ख़्याल हुआ कि हम रास्ता भूलकर किसी और जगह पहुँच गए हैं, लेकिन ग़ौर किया तो पहचाना कि वही जगह और वही मक़ाम है, तब कहने लगे कि हाय हमारी किस्मत ही फूट गई।

2. जब उस भाई ने जो उनमें सबसे ज़्यादा दीनदार और समझदार था, उन्हें ख़बरदार किया कि जब तुम इन्शा-अल्लाह कहे बग़ैर फल तोड़ने का इरादा कर रहे थे तो मैंने तुम्हें मश्विरा दिया था कि अल्लाह की तस्बीह करो यानी इन्शा-अल्लाह कहो, क्योंकि उसकी मरज़ी के बग़ैर

(पृष्ठ 1028 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1030, 1032, 1034, 1036, 1038 की तफ़सीर पृष्ठ 1040-1047 पर)

असाबि-अ़हुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग़्शौ सिया-बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा (7) सुम्-म इन्नी दऔ़तुहुम् जिहारा (8) सुम्-म इन्नी अअ्लन्तु लहुम् व अस्रर्तु लहुम् इस्रारा (9) फ़क़ुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्बकुम्, इन्नहू का-न ग़फ़्फ़ारा (10) युर्सिलिस्समा-अ अ़लैकुम् मिद्रारंव्- (11) -व युम्दिद्कुम् बिअम्वालिंव्-व बनी-न व यज्अ़ल्-लकुम् जन्नातिंव्-व यज्अ़ल्-लकुम् अन्हारा (12) मा लकुम् ला तर्जू-न लिल्लाहि वक़ारा (13) व क़द् ख़-ल-क़कुम् अत्वारा (14) अलम् तरौ कै-फ़ ख़-लक़ल्लाहु सब्-अ़ समावातिन् तिबाक़ा (15) व ज-अ़लल् क़-म-र फ़ीहिन्-न नूरंव्-व ज-अ़लश्शम्-स सिराजा (16) वल्लाहु अम्ब-तकुम् मिनल्-अर्ज़ि नबाता (17) सुम्-म युअ़ीदुकुम् फ़ीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा (18) वल्लाहु ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ बिसाता (19) लि-तस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फ़िजाजा (20) ❖

क़ा-ल नूहुर्-रब्बि इन्नहुम् अ़सौनी वत्त-बअू मल्-लम् यज़िद्हु मालुहू व व-लदुहू इल्ला ख़सारा (21) व म-करू मक्रन् कुब्बारा (22) व क़ालू ला त-ज़रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज़रुन्-न वद्दंव्-व ला सुवाअंव्-व ला यग़ू-स व यअू-क़ व नस्रा (23) व क़द् अज़ल्लू कसीरन्, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला ज़लाला (24) मिम्मा ख़तीआतिहिम् उग़्रिक़ू फ़-उद्ख़िलू नारन् फ़-लम् यजिदू लहुम् मिन् दूनिल्लाहि अन्सारा (25) व क़ा-ल नूहुर्-रब्बि ला तज़र् अ़लल्-अर्ज़ि मिनल्-काफ़िरी-न दय्यारा (26) इन्न-क इन् तज़र्हुम् युज़िल्लू अ़िबा-द-क व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा (27)

جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ فِیْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِیَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا
وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝٧ ثُمَّ اِنِّیْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨ ثُمَّ اِنِّیْٓ
اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۝٩ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ
اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠ یُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَیْكُمْ مِّدْرَارًا ۝١١ وَّیُمْدِدْكُمْ
بِاَمْوَالٍ وَّبَنِیْنَ وَیَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّیَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝١٢
مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝١٣ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ۝١٤ اَلَمْ
تَرَوْا كَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۝١٥ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ
فِیْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝١٦ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ
الْاَرْضِ نَبَاتًا ۝١٧ ثُمَّ یُعِیْدُكُمْ فِیْهَا وَیُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ۝١٨ وَاللّٰهُ
جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۝١٩ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝٢٠ ع
قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِیْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ یَزِدْهُ مَالُهٗ وَ
وَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ۝٢١ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۝٢٢ وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ
اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا یَغُوْثَ وَیَعُوْقَ وَ
نَسْرًا ۝٢٣ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِیْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ۝٢٤
مِمَّا خَطِیْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ یَجِدُوْا لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ۝٢٥ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَی الْاَرْضِ

ने अपनी उँगलियाँ अपने कानों में दे लीं (ताकि हक़ बात को सुनें भी नहीं), और (यह कि हद दर्जे नफ़रत की वजह से) अपने कपड़े (अपने ऊपर) लपेट लिए और इसरार किया और (मेरी इताअ़त से) हद दर्जे का तकब्बुर किया।[1] **(7)** फिर (भी) मैंने उनको बुलन्द आवाज़ से बुलाया।[2] **(8)** फिर मैंने उनको (ख़ुसूसी तौर पर ख़िताब करके) ऐलानिया समझाया और उनको बिलकुल ख़ुफ़िया भी समझाया। **(9)** और (उस समझाने में) मैंने (उनसे यह) कहा कि तुम अपने रब से गुनाह बख़्शवाओ बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है। **(10)** कसरत से तुमपर बारिश भेजेगा। **(11)** और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा, और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा, और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा।[3] **(12)** (मैंने उनसे यह भी कहा कि) तुमको क्या हुआ कि तुम अल्लाह की बड़ाई के मोतक़िद नहीं हो? (वरना शिर्क न करते)। **(13)** हालाँकि उसने तुमको तरह-तरह से बनाया। **(14)** क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने किस तरह सात आसमान ऊपर-तले पैदा किए **(15)** और उनमें चाँद को नूर (की चीज़) बनाया और सूरज को (एक रोशन) चिराग़ (की तरह) बनाया। **(16)** और अल्लाह तआ़ला ने तुमको ज़मीन से एक ख़ास तौर पर पैदा किया। **(17)** फिर तुमको (मौत के बाद) ज़मीन ही में ले जाएगा और (क़ियामत में फिर इसी ज़मीन से) तुमको बाहर ले आएगा। **(18)** और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श (की तरह) बनाया **(19)** ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो[4] **(20)** ❖

(और यह सब गुफ़्तगू और वाक़िआ अ़र्ज़ करके) नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने (यह) कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! उन लोगों ने मेरा कहना नहीं माना और ऐसे शख़्सों की पैरवी की कि जिनके माल और औलाद ने उनको नुक़सान ही ज़्यादा पहुँचाया।[5] **(21)** और (उन्होंने जिनकी पैरवी की है वे ऐसे हैं कि) जिन्होंने (हक़ के मिटाने के लिए) बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं। **(22)** और जिन्होंने (अपने पैरोकारों से) कहा कि तुम अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और (ख़ास तौर पर) 'वुद्द' को और न 'सुवा' को और न 'यग़ूस' को और 'यऊक़' को और 'नसूर' को छोड़ना।[6] **(23)** और उन (सरदार) लोगों ने बहुतों को (बहका-बहकाकर) गुमराह कर दिया, और (अब आप) उन ज़ालिमों की गुमराही और बढ़ा दीजिए।[7] **(24)** (उन लोगों का अन्जाम यह हुआ कि) अपने इन गुनाहों के सबब वे ग़र्क़ किए गए, फिर (ग़र्क़ होने के बाद) दोज़ख़ में दाख़िल किए गए। और ख़ुदा के सिवा उनको कोई हिमायती मयस्सर न हुए। **(25)** और नूह (अ़लैहिस्सलाम) ने (यह भी) कहा कि ऐ मेरे

(पिछले पृष्ठ का शेष) कामयाबी मुहाल है। मगर तुमने तवज्जोह न की और उसका ख़मियाज़ा भुगतना पड़ा, तब वे सब शर्मिन्दा हुए और ग़लती का इक़रार किया और तौबा की। हक़ तआ़ला ने उनकी तौबा क़बूल फ़रमाई और उस बाग़ के बदले में उनको एक और बाग़ अ़ता फ़रमाया जिसमें से ख़च्चर भर-भरकर अँगूर बाहर जाते थे। बज़ाहिर मालूम होता है कि ये लोग मोमिन थे जो पहले बुख़्ल के मुर्तकिब हुए मगर बाद में तौबा कर ली थी।

3. ऐ मक्का वालो! तुम भी ऐसे ही अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हो बल्कि इससे भी ज़्यादा के, क्योंकि जिस अ़ज़ाब का ज़िक्र किया गया वह तो महज़ नाफ़रमानी पर था, तुम तो कुफ़्र करते हो।

(तफ़सीर पृष्ठ 1030) 1. पिंडली खोल दिया जाना अ़रब ज़बान का एक मुहावरा है जिससे किसी काम की सख़्ती और मुसीबत का आना मुराद होता है। इस मुहावरे की बिना शायद यह हो कि जब इनसान को कोई मुश्किल काम करना पड़ता है तो वह पाजामा पिंडली से ऊपर चढ़ाकर मुस्तैदी के साथ उस काम को अन्जाम देता है। पस मतलब यह है कि वह दिन याद करने के क़ाबिल है जिसमें मुसीबत और सख़्ती का सामना होगा। और चूँकि काफ़िरों ने दुनिया में अल्लाह के अहकाम को तस्लीम नहीं किया था और सज्दे की सआ़दत से महरूम रहे थे **(पृष्ठ 1030 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1032, 1034, 1036, 1038, 1040 की तफ़सीर पृष्ठ 1042-1047 पर)**

रब्बिग़्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअ्मिनंव्-व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा ● (28) ❖

72 सूरतुल्-जिन्नि 40

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1126 अक्षर, 287 शब्द, 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्-त-म-अ़ न-फ़रुम् मिनल्-जिन्नि फ़क़ालू इन्ना समिअ़्ना क़ुरआनन् अ़-जबा (1) यह्दी इलर्-रुश्दि फ़-आमन्ना बिही, व लन्-नुश्रि-क बिरब्बिना अ-हदा (2) व अन्नहू तआ़ला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहि-बतंव्-व ला व-लदा (3) व अन्नहू का-न यक़ूलु सफ़ीहुना अ़लल्लाहि श-तता (4) व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् तक़ूलल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़लल्लाहि कज़िबा (5) व अन्नहू का-न रिजालुम् मिनल्-इन्सि यअूज़ू-न बिरिजालिम् मिनल्-जिन्नि फ़ज़ादूहुम् र-हक़ा (6) व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़नन्तुम् अल्लंय्-यब्-असल्लाहु अ-हदा (7) व अन्ना ल-मस्नस्समा-अ फ़-वजद्नाहा मुलिअत् ह-रसन् शदीदंव्-व शुहुबा (8) व अन्ना कुन्ना नक्अुदु मिन्हा मक़ाअि-द लिस्सम्अि, फ़-मंय्यस्तमिअिल्-आ-न यजिद् लहू शिहाबर्-र-सदा (9) व अन्ना ला नद्री अ-शर्रुन् उरी-द बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-शदा (10) व अन्ना मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना

مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝ اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَ
لَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَ
لِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا
تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝

سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا
قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ
اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝
وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ
تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ
الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝ وَّاَنَّهُمْ
ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاۗءَ
فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ
مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝
وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ
رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا

परवर्दिगार! काफ़िरों में से ज़मीन पर एक रहने वाला भी मत छोड़। (26) (क्योंकि) अगर आप उनको रू-ए-ज़मीन पर रहने देंगे तो आपके बन्दों को गुमराह ही कर देंगे, और (आगे भी) उनके महज़ बुरी और काफ़िर ही औलाद पैदा होगी। (27) ऐ मेरे रब! मुझको और मेरे माँ-बाप को[1] और जो मोमिन होने की हालत में मेरे घर में दाख़िल हैं उनको (यानी घर वालों और बाल-बच्चों को, बीवी और किनआ़न को छोड़कर) और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों को बख़्श दीजिए, और उन ज़ालिमों की हलाकत व तबाही और बढ़ाइए।[2] ● (28) ❖

72 सूरः जिन्न 40

सूरः जिन्न मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप (उन लोगों से) कहिए कि मेरे पास इस बात की वह्य आई है कि जिन्नात में से एक जमाअ़त ने क़ुरआन सुना।[3] फिर (अपनी क़ौम में वापस जाकर) उन्होंने कहा कि हमने एक अ़जीब क़ुरआन सुना है। (1) जो सही रास्ता बतलाता है, सो हम तो उसपर ईमान ले आए[4] और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं बनाएँगे। (2) और (उन्होंने यह भी बयान किया कि) हमारे परवर्दिगार की बड़ी शान है, उसने न किसी को बीवी बनाया और न औलाद। (3) और हममें जो अहमक़ हुए हैं वे अल्लाह की शान में हद से बढ़ी हुई बातें कहते थे।[5] (4) और हमारा (पहले) यह ख़्याल था कि इनसान और जिन्नात कभी ख़ुदा की शान में झूठ बात न कहेंगे। (5) और बहुत-से लोग आदमियों में ऐसे थे कि वे जिन्नात में से बाज़े लोगों की पनाह लिया करते थे। सो उन आदमियों ने उन जिन्नात का दिमाग़ और ख़राब कर दिया।[6] (6) और जैसा कि तुमने ख़्याल कर रखा था वैसा ही आदमियों ने भी ख़्याल कर रखा था कि अल्लाह तआ़ला किसी को दोबारा ज़िन्दा न करेगा। (7) और हमने (अपनी पुरानी आ़दत के अनुसार) आसमान (की ख़बरों) की तलाशी लेना चाहा, सो हमने उसको सख़्त पहरों (यानी मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों) और शोलों से भरा हुआ पाया।[7] (8) और (उससे पहले) हम आसमान (की ख़बरें सुनने) के मौक़ों में (ख़बर) सुनने के लिए जा बैठा करते थे, सो जो कोई अब सुनना चाहता है तो अपने लिए एक तैयार शोला पाता है। (9) और हम नहीं जानते कि (इन नए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के भेजने से) ज़मीन वालों को कोई तकलीफ़ पहुँचाना मक़सूद है या उनके रब ने उनको हिदायत देने का इरादा फ़रमाया है। (10) और हममें (पहले से भी) बाज़े नेक (होते आए) हैं और बाज़े और

(पिछले पृष्ठ का शेष) इसलिए इसका इज़्हार करने के लिए उनको सज्दे का हुक्म होगा, लेकिन उनकी कमरें तख़्ता हो जाएँगी और वे झुक न सकेंगे।

2. बुलाए जाने से मुराद सज्दे का हुक्म देना नहीं है बल्कि उस तजल्ली में असर होगा कि सब ग़ैरइख़्तियारी तौर पर सज्दा करना चाहेंगे।

3. दुनिया में हुक्म न मानने से आज उनको यह रुस्वाई व ज़िल्लत हुई।

4. 'ज़ुन्नून' और 'साहिबुल हूत' दोनों के एक ही मायने हैं यानी मछली वाला, यह हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम का लक़ब था क्योंकि उनको मछली निगल गई थी।

(पृष्ठ 1030 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1032, 1034, 1036, 1038, 1040, 1042 की तफ़सीर पृष्ठ 1044-1048 पर)

तराइ-क़ क़ि-ददा **(11)** व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् नुअ्जिज़ल्ला-ह फ़िल्अर्ज़ि व लन् नुअ्जि-ज़हू ह-रबा **(12)** व अन्ना लम्मा समिअ्नल्-हुदा आमन्ना बिही, फ़-मंय्युअ्मिम् बिरब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव्-व ला र-हक़ा **(13)** व अन्ना मिन्नल्-मुस्लिमू-न व मिन्नल्-क़ासितू-न, फ़-मन् अस्ल-म फ़-उलाइ-क त-हर्रौ र-शदा **(14)** व अम्मल्-क़ासितू-न फ़कानू लि-जहन्न-म ह-तबा **(15)** व अल्-लविस्तक़ामू अ़लत्तरी-क़ति ल-अस्क़ैनाहुम् माअन् ग़-दक़ा **(16)** लिनफ़्ति-नहुम् फ़ीहि, व मंय्युअ्रिज़् अ़न् ज़िक्रि रब्बिही यस्लुकूहु अ़ज़ाबन् स-अ़दा **(17)** व अन्नल्-मसाजि-द लिल्लाहि फ़ला तद्अू मअ़ल्लाहि अ-हदा **(18)** व अन्नहू लम्मा क़ा-म अ़ब्दुल्लाहि यद्अूहु कादू यकूनू-न अ़लैहि लि-बदा **(19)** ❖

क़ुल् इन्नमा अद्अू रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ-हदा **(20)** क़ुल् इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला र-शदा **(21)** क़ुल् इन्नी लंय्युजी-रनी मिनल्लाहि अ-हदुंव्-व लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा **(22)** इल्ला बलाग़म् मिनल्लाहि व रिसालातिही, व मंय्यअ्सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदा **(23)** हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अ़दू-न फ़-सयअ्लमू-न मन् अज़्अ़फ़ु नासिरंव्-व अक़ल्लु अ़-ददा **(24)** क़ुल् इन् अद्री अ-क़रीबुम्-मा तू-अ़दू-न अम् यज्अ़लु लहू रब्बी अ-मदा **(25)** आ़लिमुल्-ग़ैबि फ़ला युज़्हिरु अ़ला ग़ैबिही अ-हदा **(26)**

طَرَآئِقَ قِدَدًا ﴿١١﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى الْاَرْضِ وَلَنْ
نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ﴿١٢﴾ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْ
بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿١٣﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا
الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٤﴾ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ
فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ
مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ
عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾
وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ ع
قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ اِنِّىْ لَآ اَمْلِكُ
لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِىْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ
وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ
وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ
نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِىْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ
يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّىْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ
اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ

तरह के (होते आए) हैं, हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर थे। **(11)** और (हमारा तरीक़ा तो यह है कि) हमने समझ लिया है कि हम ज़मीन (के किसी हिस्से) में (जाकर) अल्लाह तआला को हरा नहीं सकते और न (और कहीं) भागकर उसको हरा सकते हैं।[1] **(12)** और हमने जब हिदायत की बात सुन ली तो हमने उसका यक़ीन कर लिया, सो (हमारी तरह) जो शख़्स अपने रब पर ईमान ले आएगा तो उसको न किसी कमी का अन्देशा होगा और न ज़्यादती का।[2] **(13)** और हममें बाज़े तो मुसलमान (हो गए) हैं और बाज़े हममें (पहले की तरह बदस्तूर) बेराह हैं। सो जो शख़्स मुसलमान हो गया उन्होंने तो भलाई का रास्ता ढूँढ लिया **(14)** और जो बेराह हैं दोज़ख़ के ईंधन हैं।[3] **(15)** और (मुझको अल्लाह की तरफ़ से ये मज़ामीन भी नाज़िल हुए हैं कि) अगर ये (मक्का वाले) लोग (सीधे) रास्ते पर क़ायम हो जाते तो हम उनको फ़रागत के पानी से सैराब करते। **(16)** ताकि उसमें उनका इम्तिहान करें।[4] और जो शख़्स अपने परवर्दिगार की याद (यानी ईमान व फ़रमाँबरदारी) से रूगरदानी करेगा अल्लाह तआला उसको सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेगा। **(17)** और (उन वह्य के ज़रिये आए मज़मूनों में से एक यह है कि) जितने सज्दे हैं वे सब अल्लाह का हक़ हैं[5] सो अल्लाह तआला के साथ किसी की इबादत मत करो।[6] **(18)** और जब ख़ुदा का ख़ास बन्दा (मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं) ख़ुदा की इबादत करने खड़ा होता है तो ये (काफ़िर) लोग उस बन्दे पर भीड़ लगाने को हो जाते हैं।[7] **(19)** ❖

आप (उनसे) कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने परवर्दिगार की इबादत करता हूँ और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। **(20)** आप (यह भी) कह दीजिए कि मैं तुम्हारे न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता हूँ और न किसी भलाई का।[8] **(21)** आप कह दीजिए कि (अगर ख़ुदा न करे मैं ऐसा करूँ तो) मुझको ख़ुदा (के ग़ज़ब) से कोई नहीं बचा सकता, और न मैं उसके सिवा कोई पनाह (की जगह) पा सकता हूँ।[9] **(22)** लेकिन ख़ुदा की तरफ़ से पहुँचाना और उसके पैग़ामों का अदा करना यह मेरा काम है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का कहना नहीं मानते तो यक़ीनन उन लोगों के लिए दोज़ख़ की आग है जिसमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। **(23)** (लेकिन ये काफ़िर लोग इस जहालत से बाज़ न आएँगे) यहाँ तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वायदा किया जाता है। उस वक़्त जानेंगे कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और किसकी जमाअत कम है। **(24)** आप (उनसे) कह दीजिए कि मुझको मालूम नहीं कि जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है[10] क्या वह जल्द ही (आने वाली) है या मेरे परवर्दिगार ने उसके लिए कोई दूर की मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है। **(25)** (और) ग़ैब का जानने वाला वही है, सो वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला "यानी अवगत" नहीं करता **(26)** हाँ मगर अपने किसी मक़बूल और चुने हुए पैग़म्बर को। तो (इस तरह

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. यह एक मुहावरा है यानी तेज़ नज़रों से घूर-घूरकर आपकी तरफ़ इस तरह देखते हैं गोया आप उनसे डरकर क़ुरआन का पढ़ना और सुनना छोड़ देंगे।

6. इन सवालात से मक़सूद डराना और उसका हौलनाक होना बयान करना है कि वह होने वाली चीज़ है। यानी क़ियामत एक बड़ी हौलनाक चीज़ है, और चूँकि क़ियामत ज़रूर वाक़ेअ होने वाली है इसलिए उसको 'अल्हाक़्क़ः' से ताबीर फ़रमाया।

(पृष्ठ 1032, 1034, 1036, 1038, 1040, 1042, 1044 की तफ़सीर पृष्ठ 1045-1048 पर)

(तफ़सीर पृष्ठ 1032) 1. चुनाँचे फट जाना कमज़ोरी की दलील है। यानी जैसा इस वक़्त वह मज़बूत है और उसमें कहीं कोई नुक़्स और फटन नहीं, उस दिन उसमें यह बात न रहेगी बल्कि कमज़ोरी और फटन हो जाएगी।

2. आसमान बोदा और कमज़ोर हो जाएगा। चुनाँचे बीच में से फटकर चार तरफ़ सिमट जाएगा और वे फ़रिश्ते जो इस वक़्त उसमें हर तरफ़ फैले हुए हैं उसके किनारों पर आ जाएँगे।

3. हदीस में है कि अब अ़र्श को चार फ़रिश्ते उठाए हुए हैं।

4. चूँकि उसको नजात हासिल हुई और वह शुरू ही में जन्नत में दाख़िल होने वाला है इसलिए वह ख़ुशी-ख़ुशी अपना नामा-ए-आमाल हर किसी को दिखाएगा।

5. यानी क़ियामत व हिसाब का एतिक़ाद रखता था। मतलब यह कि मैं ईमान व तस्दीक़ रखता था, ख़ुदा ने उसकी बरकत से आज मुझको नवाज़ा।

6. आमालनामे का बाएँ हाथ में मिलना उसके मातूब (कोप पात्र) होने की निशानी है इसलिए अपनी बदनसीबी और बदहाली पर बहुत ही ज़्यादा रंज व हसरत और हाय-तौबा मचाएगा कि हाय! यहाँ न मेरी दौलत व मालदारी कुछ काम आई और न रुतबे व इज़्ज़त ही ने कुछ फ़ायदा दिया, सब दुनिया का दुनिया ही में रह गया।

(तफ़सीर पृष्ठ 1034) 1. उस गज़ की मिक़्दार (मात्रा) ख़ुदा को मालूम है। क्योंकि यह गज़ वहाँ का होगा।

2. यानी जिस तरह ईमान लाना अम्बिया की तालीम के मुताबिक़ ज़रूरी था, वह ईमान न रखता था।

3. यहाँ ''इत्आ़म'' और ''हज़्'' (यानी ख़ुद खाना-खिलाने और दूसरों को उसपर तरग़ीब देने) से मुराद वह हालत है जिसमें ऐसा करना वाजिब है, और मुराद उससे वह छोड़ना है जिसका सबब ईमान न लाना हो। हासिल यह कि ख़ुदा की अ़ज़्मत और मख़्लूक़ की शफ़्क़त जो अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ से मुताल्लिक़ असल इबादतें हैं, ये दोनों का छोड़ने वाला और इनकारी था, इसलिए अ़ज़ाब का हक़्दार हुआ।

4. यानी सिवाय एक ऐसी चीज़ के जो देखने और बुरा होने में ज़ख़्मों के धोवन के जैसा होगा। और यह कहना कि इसके सिवा कुछ न मिलेगा यह क़ैद इज़ाफ़ी है और मक़सूद इससे इसका इनकार है कि पसन्दीदा खाने नहीं मिलेंगे, वरना 'ज़क़्क़ूम' वग़ैरह का होना ख़ुद आयतों से साबित है।

5. इस क़सम को मक़सूद से एक ख़ास मुनासबत है कि क़ुरआन मजीद का लाने वाला तो नज़र नहीं आता था और जिनपर क़ुरआन आता था वे नज़र आते थे, यानी तमाम मख़्लूक़ की क़सम है।

6. रसूल से या तो हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुराद हैं या जिबराईल अ़लैहिस्सलाम। यानी क़ुरआन अल्लाह का कलाम है जो अल्लाह के अमानतदार रसूले मक़बूल की ज़बान से अदा कराया जाता है, जिसकी ज़िम्मेदारी है कि उसको हर्फ़-ब-हर्फ़ (यानी जूँ का तूँ) मख़्लूक़ तक पहुँचाएँ और बीच में तसर्रुफ़ करने की न ख़ुद उनको इजाज़त है न वह ऐसा कर सकते हैं। और यह किसी शायर का कलाम भी नहीं। ग़रज़ यह कि क़ुरआन जिसके ज़रिए से तुम तक पहुँचा है वह अल्लाह का सच्चा और अमानतदार रसूल है, कोई शायर नहीं है।

7. क़त्ल के वक़्त जल्लाद अपने बाएँ हाथ से मुज्रिम का दाहिना हाथ पकड़कर उसकी गर्दन उड़ाता है, और गर्दन की वह रग जो दिल से मिली हुई है 'वतीन' कहलाती है, उसके कटने से इनसान हलाक हो जाता है। मतलब यह है कि अगर हमारा रसूल हमारी तरफ़ कोई ग़लत बात मन्सबू करता तो झूठ घड़ने की सज़ा में हम उसको फ़ौरन हलाक कर देते। याद रहे कि नुबुव्वत का सिलसिला हज़रत ख़ातिमुल अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते ग्रामी पर ख़त्म हो चुका, अगर किसी नुबुव्वत का दावा करने वाले का कोई पैरोकार इस आयत से दलील पकड़ कर कहने लगे कि ''अगर मेरा मुक़्तदा झूठा नबी होता तो फ़ौरन हलाक कर दिया जाता'', तो यह उसकी समझ के टेढ़ा होने पर दलालत करता है क्योंकि यह एतिमाद का इज़्हार सिर्फ़ नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते ग्रामी पर किया गया है न कि किसी झूठा दावा करने वाले पर। क़ायदे की बात है कि कोई शख़्स किसी के लायक़ बेटे पर ऐब लगाने लगे तो बाप फ़ौरन कहने लगता है कि हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता, अगर मेरा लड़का ऐसा करे तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूँ। लेकिन अगर उसके किसी नालायक़ बेटे के मुताल्लिक़ कोई शिकायत पहुँचती है तो वह शर्मिन्दा होता है और माज़िरत करने लगता है कि हाय मैं क्या करूँ! उसकी बदकिरदारियों से तो मैं तंग आ चुका हूँ। ग़रज़ जिस तरह फ़ासिक़ व बद-चलन बेटे के मुताल्लिक़ कभी कोई शख़्स एतिमाद का इज़्हार नहीं किया करता उसी तरह इस आयत में ख़ुदा तआ़ला ने सिर्फ़ अपने सच्चे रसूल के सच्चा और साफ़ होने पर एतिमाद का इज़्हार फ़रमाया है। किसी दज्जाल झूठे के बारे में नहीं फ़रमाया कि अगर वह मुझपर झूठ घड़े तो उसके दिल की रग को काट दूँ। झूठा दावा करने वालों और बोहतान बाँधने वालों के बारे में हक़ तआ़ला का उसूल अलग है, और वह यह है ''व उम्ली लहुम इन्-न कैदी मतीन'' **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1046 पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) (यानी मैं उनको मोहलत देता हूँ। मेरी यह तदबीर बड़ी ज़बरदस्त है) यह वही मस्लहतों से भरी तदबीर है जो इब्लीस और उसके लश्कर को क़ियामत तक खुला छोड़ देने में कारफ़रमा है, ताकि वे मख़्लूक़ को गुमराह करने का कारोबार आख़िरी हदों तक पहुँचा सकें।

8. एक बार मशहूर बुतपरस्त नज़र बिन हारिस ख़ाना-ए-काबा के दरवाज़े पर खड़ा होकर दुआ माँगने लगा कि इलाही! अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) हक़ पर हैं तो हमपर पत्थर बरसा और ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल कर कि हमको पनपना नसीब न हो, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।

9. मुराद आसमानी दुनिया है। चूँकि रूहें आसमान के रास्ते चढ़ती हैं इसलिए उनको 'मआ़रिज' (यानी सीढ़ियों) से ताबीर फ़रमाया।

10. मुराद क़ियामत का दिन है कि कुछ उसके लम्बा होने और कुछ उसके सख़्त होने से काफ़िरों को इस क़द्र लम्बा महसूस होगा। और चूँकि कुफ़्र के दर्जों के एतिबार से सख़्ती में फ़र्क़ होगा इसलिए एक आयत में 'क-अल्फ़ि स-नतिन्' (यानी एक हज़ार साल के बराबर) आया है, और काफ़िरों की तख़्सीस इसलिए की कि हदीस में आया है कि मोमिन को वह दिन इस क़द्र हल्का मालूम होगा जैसे फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ लेता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1036) 1. दोस्त का अपने दोस्त की ख़बर न लेना इस वजह से न होगा कि वह अपने दोस्त को देख नहीं रहा होगा, बल्कि उस हमवार ज़मीन पर जहाँ शुरू से लेकर आख़िर तक के तमाम लोग जमा होंगे एक किनारे वाला दूसरे किनारे वाले को ज़्यादा होने के बावजूद बिलकुल साफ़ नज़र आएगा, लेकिन चूँकि वहाँ अपनी-अपनी ऐसी पड़ी होगी कि न बाप को बेटे की ख़बर होगी और न दोस्त को दोस्त की, इसलिए कोई किसी का पुरसाने हाल न होगा।

2. यानी उस दिन ऐसी नफ़्सा-नफ़्सी होगी कि हर शख़्स को अपनी फ़िक्र पड़ जाएगी। और जिनपर जान देता था उनको अपने बदले में सुपुर्द कर देना अगर उसके क़ाबू की बात हो तो इसको गवारा कर लेगा।

3. मतलब यह कि अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ को ज़ाया किया होगा, या अ़क़ीदों और अख़्लाक़ के फ़ासिद होने की तरफ़ इशारा है। ख़ुलासा यह है कि ऐसी सिफ़तें दोज़ख़ में दाख़िल होने का सबब हैं और उस मुज्रिम में ये सिफ़तें पाई जाती थीं फिर अ़ज़ाब से नजात कैसे हो सकती है?

4. कम-हिम्मती से तबई कम-हिम्मती मुराद नहीं, बल्कि कम-हिम्मती के बुरे आसार मुराद हैं जिनको अपने इख़्तियार से पैदा किया है।

5. यानी नमाज़ में ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर दूसरी तरफ़ तवज्जोह नहीं करते।

6. महरूम उस हाजतमन्द मिस्कीन को कहते हैं जिसको सवाल की आ़दत न हो और लोग उसको ख़ुशहाल समझकर इम्दाद के क़ाबिल न समझें। सो ज़ाहिर है कि ऐसे शख़्स की इम्दाद करना बहुत बड़ा सवाब का काम है। बाज़े नेकदिल मालदार ऐसे मिस्कीनों की तन्ख़्वाह मुक़र्रर करके उनको ख़ुद से मासिक इम्दाद पहुँचाते रहते हैं। इस वजह से ख़ैरात पर हमेशगी रहने के सबब उनका अज्र भी बहुत ज़्यादा हो जाएगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1038) 1. यानी चाहिए तो यह था कि उन मज़ामीन की तस्दीक़ करते लेकिन ये लोग मुत्तफ़िक़ हो होकर आपके पास इस ग़रज़ से आते हैं कि उन मज़ामीन को झुठलाएँ और उनके साथ मज़ाक़ करें।

2. यानी सबको मालूम है कि तमाम इनसान गन्दी और हक़ीर चीज़ 'मनी' (यानी वीर्य) के क़तरे से पैदा हुए हैं। चूँकि इस पैदाइश में तमाम इनसान बराबर हैसियत रखते हैं इसलिए ज़ाहिर है कि महज़ पैदाइश किसी के लिए दूसरों से ज़्यादा फ़ज़ीलत की वजह नहीं हो सकती, हाँ फ़ज़ीलत व फ़ौक़ियत और जन्नत में दाख़िले का सबब अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना है और तुम काफ़िर उससे महरूम हो, इसलिए तुम्हारी हवस भी बेफ़ायदा है।

3. पस जब नई मख़्लूक़ और वह भी ऐसी जिसमें ख़ूबियों की सिफ़तें ज़्यादा हों जिनमें ज़्यादा चीज़ें पैदा करना पड़ें हमको पैदा करना आसान है तो तुमको दोबारा पैदा करना कौन-सा मुश्किल है।

4. पहली सूरः में सज़ाओं को वाजिब करने वाली चीज़ों का बयान था। उनमें से एक रसूल का झुठलाना है। इस सूरः में नूह अ़लैहिस्सलाम के क़िस्से के तहत में इसका बयान है, और साथ ही पहली सूरः में ज़िक्र हुई आख़िरत की सज़ाओं के साथ इस सूरः में कुफ़्र पर दुनियावी सज़ा को भी साबित किया है। साथ ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इसमें तसल्ली भी दी गई है कि क़ौमे नूह ने भी झुठलाया था।

5. यानी उनसे कहो कि अगर ईमान न लाओ तो तुमपर दर्दनाक अ़ज़ाब आएगा चाहे दुनियावी यानी तूफ़ान या आख़िरत का यानी दोज़ख़।

6. यानी अगर तुम ईमान ले आओगे तो तुम्हारी पिछली ख़ताएँ सब माफ़ हो जाएँगी, और ईमान न लाने पर जिस अ़ज़ाब का दुनिया में अन्देशा है वह ईमान लाने की सूरत में टल जाएगा और तबई मौत तक अमन व आ़फ़ियत के साथ **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1047 पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) ज़िन्दगी गुज़ारनी नसीब होगी। बाक़ी वह वक़्ते मुक़र्ररा जो मोमिन और काफ़िर हर शख़्स के लिए तजवीज़ हो चुका है, तो वह किसी हाल में भी टल नहीं सकता। लेकिन काफ़िर और मोमिन के मरने में यह फ़र्क़ है कि मोमिन की मौत इज़्ज़त की मौत है कि आइन्दा के लिए राहत है, लेकिन काफ़िर दुनियावी ज़िन्दगी में हर तरह ऐश व आराम में भी रहा तो मरने के बाद उसको 'बरज़ख़ के अ़ज़ाब' और जहन्नम की सज़ा का सामना है। मोमिन आइन्दा के अ़ज़ाब से तो महफ़ूज़ ही है मगर कभी-कभी उसको दुनियावी परेशानियाँ पेश आ जाती हैं। लेकिन नूह अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह की वह्य से इत्तिला पाकर क़ौम को यक़ीन दिलाया कि ईमान ले आने की सूरत में तुम इन दुनिया में पेश आने वाली मुसीबतों से भी महफ़ूज़ रहोगे, लेकिन उन बदनसीबों ने फिर भी कोई तवज्जोह न की।

(तफ़सीर पृष्ठ 1040) **1.** जब नूह अ़लैहिस्सलाम सदियों तक क़ौम को समझाते और नसीहतें करते रहे और इनकार व मुँह मोड़ने के सिवा हक़ की दावत का कोई जवाब न मिला तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ किया, इलाहुल आ़लमीन! मैंने दावत में कोई कसर नहीं छोड़ी मगर क़ौम ने नसीहत पर अ़मल करना तो दरकिनार उसका सुनना भी गवारा न किया। ये लोग हमेशा कुफ़्र पर जमे रहे और गुरूर व तकब्बुर को अपना शिआ़र बनाए रखा। इसपर भी मैं अपने नसीहत करने और समझाने में बराबर मसरूफ़ रहा। आख़िर जब देखा कि आख़िरत के फ़ायदे व कामयाबी पर क़तई कान नहीं धरते तो उन्हें ईमान के क़बूल करने के दुनियावी फ़ायदे समझाए और ईमान की फ़ौरी बरकतें बयान कीं, तन्हाई में और खुलेआ़म रग़बत दिलाने और डराने के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से उनको सही रास्ते पर लाने की कोशिश की मगर ये लोग न समझे बिलकुल न समझे।

2. मुराद इससे वअ़ज़ (यानी नसीहत के तौर पर तक़रीर करना) और आ़म ख़िताब है जिसमें आ़दतन आवाज़ बुलन्द होती है।

3. इन नेमतों के ज़िक्र करने से शायद यह फ़ायदा हो कि अक्सर तबीयतों में फ़ौरन मिलने वाले फ़ायदों की तलब ज़्यादा है, चुनाँचे दुर्रे मन्सूर में हज़रत क़तादा का क़ौल है कि वे लोग दुनिया के ज़्यादा लालची थे इसलिए यह फ़रमाया।

4. यहाँ तक सारा का सारा वह क़लाम है जिसका ज़िक्र नूह अ़लैहिस्सलाम ने हक़ तआ़ला से बतौर फ़रियाद के किया।

5. मुराद उन शख़्सों से सरदार हैं जिनकी अ़वाम पैरवी करते हैं, और माल और औलाद का उन सरदारों को नुक़सान पहुँचाना इस मायने में है कि माल व औलाद सरकशी और नाफ़रमानी के बढ़ने का सबब हो गये।

6. यूँ तो नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने अपने पूजने के लिए सैकड़ों बुत बना रखे थे मगर ख़ास बड़े बुत जो सब मख़्लूक़ के रुजू होने का मर्कज़ बने हुए थे पाँच थे- मर्द की शक्ल पर जो देवता था उसका नाम 'वुद' था, और जो औ़रत के जैसी मूरत देवी बना रखी थी, उसका नाम 'सुवाअ़्' रख छोड़ा था। एक शेर की मूरत थी जिसका नाम 'यग़ूस' था, एक मूर्ती घोड़े की हमशक्ल थी उसका नाम 'यऊक़' था, एक गिध की शक्ल पर थी उसको 'नस्र' के नाम से जानते थे।

7. ताकि ये लोग हलाकत के मुस्तहिक़ हो जाएँ। पस दुआ़ करने का मक़सद गुमराही बढ़ाना नहीं बल्कि हलाकत का मुस्तहिक़ होना है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1042) **1.** बज़ाहिर मालूम होता है कि नूह अ़लैहिस्सलाम के माँ-बाप मोमिन थे। और अगर इसके ख़िलाफ़ साबित हो जाए तो माँ-बाप से मुराद दूर के माँ-बाप लेंगे और दूर के माँ-बाप में मोमिन होने का वजूद यक़ीनी है।

2. यानी उनकी नजात की कोई सूरत न रहे, हलाक ही हो जाएँ। और यही मक़सूद था गुमराही की दुआ़ से। नूह अ़लैहिस्सलाम की तब्लीग़ी उम्र साढ़े नौ सौ साल थी, उन्होंने इतनी लम्बी उम्र तब्लीग़ ही में खपा दी, लेकिन जब इतनी लम्बी मुद्दत में भी सिर्फ़ चन्द आदमियों के अ़लावा किसी पर हिदायत का असर न देखा तो अपने ईमानी नूर से महसूस किया कि इन चन्द आदमियों के सिवा जो अब तक ईमान ला चुके मौजूदा नस्ल में से कोई और शख़्स इस्लाम के दायरे में दाख़िल न होगा। बल्कि आपको यह भी मालूम हो गया कि उनकी आने वाली नस्ल में भी किसी को ईमान लाने की तौफ़ीक़ न होगी, तो उनके ईमान क़बूल करने की तरफ़ से क़तई मायूसी के बाद आपने तूफ़ाने आ़म की बद-दुआ़ की।

3. हज़रत सय्यिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नबी की हैसियत से तशरीफ़ लाने से पहले जिन्नात आसमान तक चले जाते थे। जो अहकाम फ़रिश्तों पर नाज़िल होते और फ़रिश्तों में आपस में उनका तज़्किरा होता तो जिन्नात वे बातें सुनकर काहिनों को ला सुनाते थे, और 'काहिन' उसमें अपनी तरफ़ से बीस झूठ मिलाकर ग़ैब जानने के मुद्दई बन बैठते। जब क़ुरआन नाज़िल होने लगा तो फ़रिश्तों की ज़बरदस्त चौकियाँ बिठा दी गईं ताकि जिन्नात कोई आसमानी कलाम न सुन सकें और हक़ व बातिल आपस में गड्-मड् न हों और आसमानी वह्य और शैतानी कलाम एक-दूसरे से अलग रहें। उसके बाद जो जिन्न आसमान तक पहुँचने की कोशिश करता वह 'शिहाबे साक़िब' से हलाक कर दिया जाता। ग़रज़ जिन्नात ने आसमान तक अपनी रसाई न देखी तो उसकी वजह मालूम करने के लिए इधर-उधर फैल पड़े। जब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक्का शहर से बाहर **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1048 पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) वादी-ए-नख़्ला में अपने अस्हाबे किराम के साथ सुबह की नमाज़ अदा कर रहे थे, तो वे जिन्न ढूँढते-ढूँढते यहाँ आ निकले और आपकी क़िराअत सुनी। जिन्नात क़ुरआन का बेनज़ीर होना मालूम करके फ़ौरन ही आप पर ईमान ले आए। ये लोग इस्लाम में दाख़िल होकर वापस गए और अपनी क़ौम से तमाम माजरा बयान किया।

4. क़ुरआन होना तो उसके मज़मून से मालूम हुआ और अ़जीब होना इससे कि किसी इनसान के कलाम जैसा नहीं।

5. मुराद इससे वे शिर्क की बातें हैं जैसे अल्लाह का शरीक बनाना और उसके लिए औलाद वग़ैरह साबित करना वग़ैरह।

6. जाहिली दौर में जब अ़रब वाले किसी वादी या ख़ौफ़नाक बयाबान से गुज़रते तो कहा करते थे, "अऊज़ु बिसय्यिदि हाज़ा वादी मिन सु-फ़हा-इ क़ौमिही" (मैं इस वादी के सरदार की इस क़ौम के बेवक़ूफ़ों से पनाह चाहता हूँ)। उनके गुमान में बयाबानों पर जिन्नात का क़ब्ज़ा था और जिन्नों के सरदार की इसलिए पनाह तलब करते थे कि उसके मातहत बसने वाले जिन्न कुछ तकलीफ़ न पहुँचाएँ। मतलब यह कि इस क़िस्म की रस्मों और अक़वाल से आदमियों ने उन जिन्नात को और ज़्यादा मग़रूर और घमण्डी बना दिया।

7. 'शुहुब' शिहाब (शोले के मायने में) का बहुवचन है। मतलब यह कि हमने जो आसमान को टटोला तो देखा कि उसमें बड़े ताक़तवर और मज़बूत फ़रिश्ते चौकीदार बनाकर हर तरफ़ तैनात कर दिए गए हैं ताकि कोई जिन्न आसमानी कलाम सुनने को आए तो उसको 'शिहाब' से दूर कर दें।

(तफ़सीर पृष्ठ 1044) **1.** भागने से यह मुराद है कि कोई शख़्स रू-ए-ज़मीन से भागकर किसी और जगह चला जाए और अपने आपको ख़ुदा की गिरफ़्त से बचा ले तो यह नामुम्किन है।

2. कमी यह कि उसकी कोई नेकी लिखने से रह जाए। और ज़्यादती यह कि कोई गुनाह ज़्यादा लिख दिया जाए।

3. यहाँ तक जिन्नात का कलाम ख़त्म हो गया।

4. यह आयत मक्का के काफ़िरों के बारे में नाज़िल हुई। जब उनपर कुफ़्र के सबब सात साल का सख़्त क़हत (अकाल) पड़ा। इस आयत में हक़ तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर ये लोग ईमान ले आते तो हम इस कसरत से पानी बरसाते कि क़हत नाम को भी न रहता, अनाज की रेलपेल हो जाती।

5. यानी यह जायज़ नहीं कि कोई सज्दा अल्लाह को किया जाए और कोई सज्दा ग़ैरुल्लाह को, जैसा कि क़ुरैश के मुश्रिक करते थे।

6. जिन्नात ने दरख़्वास्त की थी कि या रसूलल्लाह! हमको भी इजाज़त दीजिए कि हम आपके साथ मस्जिद में हाज़िर होकर जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा किया करें, तो यह आयत नाज़िल हुई।

7. जिन्नात हज़रत सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते देखते कि किस ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से अपने ख़ालिक़ के सामने हाथ बाँधे हुए खड़े होकर उसका पाक कलाम ख़ुलूसे दिल से पढ़ रहे हैं। फिर कभी झुकते हैं, कभी अपने मौला के आगे पेशानी ज़मीन पर रख देते हैं, और सहाबा हैं कि हाथ बाँधे हुए पीछे खड़े रहते हैं और जिस तरह उम्मत का पेशवा कर रहा है वे भी करते जाते हैं। तो यह हालत देखकर जिन्नात कलाम मजीद सुनने के शौक़ में सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के गिर्द हुजूम करते थे और घिचपिच एक-दूसरे से चिमट जाते थे।

8. यानी तुम जो ऐसी फ़रमाइशें करते हो कि अगर आप रसूल हैं तो हमपर अ़ज़ाब नाज़िल कर दें तो इसका जवाब यह है कि यह मेरे इख़्तियार में नहीं।

9. मक्का के काफ़िर कहते थे कि ऐ मुहम्मद! तुमने एक नया दीन घड़ लिया है तुम इस दावे से बाज़ आ जाओ, हम तुम्हारे हिमायती हो जाएँगे और तुमको हर बला व मुसीबत से पनाह देंगे। ख़ुदा-ए-हकीम ने आपको इन अल्फ़ाज़ से उनका जवाब तालीम फ़रमाया।

10. अल्लाह अपनी वह्य की हिफ़ाज़त के लिए मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते तैनात फ़रमा देता है जो शैतानों और उनके वस्वसों से अल्लाह की वह्य की हिफ़ाज़त करते हैं, ताकि अल्लाह का कलाम किसी दूसरी चीज़ की मिलावट से महफ़ूज़ रहे, वरना दीन की हक़्क़ानियत पर से भरोसा उठ जाएगा। इसी बिना पर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को मासूम (ख़ता से महफ़ूज़) कहा जाता है और यही सबब है कि शैतान किसी के ख़्वाब में सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शक्ल नहीं बना सकता।

इल्ला मनिर्तज़ा मिर्रसूलिन् फ-इन्नहू यस्लुकु मिम्-बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र-सदा (27) लियअ़्ल-म अन् क़द् अब्लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व अहा-त बिमा लदैहिम् व अह्सा कुल्-ल शैइन् अ़-ददा (28) ❖

73 सूरतुल्-मुज़्ज़म्मिलि 3

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 864 अक्षर, 200 शब्द, 20 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्- मुज़्ज़म्मिलु (1) क़ुमिल्-लै-ल इल्ला क़लीला (2) निस्फ़हू अविन्क़ुस् मिन्हु क़लीला (3) औ ज़िद् अ़लैहि व रत्तिलिल्-क़ुर्आ-न तर्तीला (4) इन्ना सनुल्क़ी अ़लै-क क़ौलन् सक़ीला (5) इन्-न नाशि-अतल्लैलि हि-य अशद्दु वत्अंव्-व अक़्वमु क़ीला (6) इन्-न ल-क फ़िन्नहारि सब्हन् तवीला (7) वज़्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल् इलैहि तब्तीला (8) रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फत्तख़िज़्हु वकीला (9) वस्बिर अ़ला मा यक़ूलू-न वह्जुर्हुम् हज्रन् जमीला (10) व ज़र्नी वल्-मुकज़्ज़िबी-न उलिन्नअ़्मति व मह्हिल्हुम् क़लीला (11) इन्-न लदैना अन्कालंव्-व जहीमा (12) व तआमन् ज़ा ग़ुस्सतिंव्-व अ़ज़ाबन् अलीमा (13) यौ-म तर्जुफ़ुल्-अर्ज़ु वल्-जिबालु व कानतिल्-जिबालु कसीबम्-महीला (14) इन्ना अर्सल्ना इलैकुम् रसूलन् शाहिदन् अ़लैकुम् कमा अर्सल्ना इला फ़िर्औ-न रसूला (15) फ-असा फ़िर्औनुर्-रसू-ल फ-अख़ज़्नाहु

تبٰرك الذي ٢٩ ٥٢١ المزمل ٧٣

يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾ لِّيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ
وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾
سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ
يٰٓأَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾ قُمِ الَّيْلَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢﴾ نِّصْفَهٗٓ أَوِ انْقُصْ
مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿٣﴾ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾ إِنَّا سَنُلْقِيْ
عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾ إِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْـًٔا وَّأَقْوَمُ
قِيْلًا ﴿٦﴾ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَ
تَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا
جَمِيْلًا ﴿١٠﴾ وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾
إِنَّ لَدَيْنَآ أَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا أَلِيْمًا ﴿١٣﴾
يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿١٤﴾
إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلٰى
فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَأَخَذْنٰهُ أَخْذًا
وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ
شِيْبًا ﴿١٧﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾ إِنَّ هٰذِهٖ

منزل ٧

इत्तिला देता है कि) उस पैग़म्बर के आगे और पीछे हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते भेज देता है। **(27)** (और यह इन्तिज़ाम इसलिए किया जाता है) ताकि (ज़ाहिरी तौर पर) अल्लाह तआला को मालूम हो जाए कि उन फ़रिश्तों ने अपने परवर्दिगार के पैग़ाम (रसूल तक हिफ़ाज़त से) पहुँचा दिए। और अल्लाह तआला उन (पहरेदारों) के तमाम हालात का इहाता किए हुए है और उसको हर चीज़ की गिनती मालूम है। **(28)** ◆

73 सूरः मुज़्ज़म्मिल 3

सूरः मुज़्ज़म्मिल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 20 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ कपड़ों में लिपटने वाले।[1] **(1)** रात को (नमाज़ में) खड़े रहा करो, मगर थोड़ी-सी रात। **(2)** यानी आधी रात (कि उसमें खड़े न रहो बल्कि आराम करो) या उस आधी से किसी क़द्र कम कर दो **(3)** या आधी से कुछ बढ़ा दो। और क़ुरआन को ख़ूब साफ़-साफ़ पढ़ो (कि एक-एक हर्फ़ अलग-अलग हो)। **(4)** हम तुमपर एक भारी कलाम डालने को हैं[2] (मुराद क़ुरआन है)। **(5)** बेशक रात के उठने में दिल और ज़बान का ख़ूब मेल होता है, और (दुआ या पढ़ने पर) बात ख़ूब ठीक निकलती है। **(6)** बेशक तुमको दिन में बहुत काम रहता है[3] (दुनियावी भी और दीनी भी)। **(7)** और अपने रब का नाम याद करते रहो और सबसे कटकर उसी की तरफ़ मुतवज्जह रहो। **(8)** वह पूरब और पश्चिम का मालिक है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, तो उसी को अपने काम सुपुर्द कर देने के लिए क़रार दिए रहो। **(9)** और ये लोग जो बातें करते हैं उनपर सब्र करो, और ख़ूबसूरती के साथ उनसे अलग रहो।[4] **(10)** और मुझको और उन झुठलाने वालों और ऐश व आराम में रहने वालों को (मौजूदा हालत पर) छोड़ दो (यानी रहने दो) और उन लोगों को थोड़े दिनों की और मोहलत दे दो।[5] **(11)** हमारे यहाँ बेड़ियाँ हैं और दोज़ख़ है **(12)** और गले में फँस जाने वाला खाना है और दर्दनाक अ़ज़ाब है। **(13)** जिस दिन कि ज़मीन और पहाड़ हिलने लगेंगे, और पहाड़ (चूरा-चूरा होकर) उड़ने वाली रेत हो जाएँगे। **(14)** बेशक हमने तुम्हारे पास एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुमपर (क़ियामत के दिन) गवाही देंगे जैसा कि हमने फ़िरऔन के पास एक रसूल भेजा था **(15)** फिर फ़िरऔन ने उस रसूल का कहना न माना तो हमने उसको बहुत सख़्ती के साथ पकड़ा। **(16)** सो अगर तुम (भी रसूल के भेजने के बाद नाफ़रमानी और) कुफ़्र करोगे तो उस दिन से कैसे बचोगे जो (बहुत ही ज़्यादा) सख़्ती और अपने बहुत बड़ा होने से बच्चों को भी बूढ़ा कर देगा।[6] **(17)** जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वायदा ज़रूर होकर रहेगा।[7] **(18)** यह (तमाम मज़मून) एक (बहुत ही उम्दा) नसीहत है, सो जिसका जी चाहे अपने परवर्दिगार की

1. इस उन्वान से ख़िताब करने की वजह यह है कि नुबुव्वत के शुरूआ़ती ज़माने में क़ुरैश ने 'दारुन्नदवा' में जमा होकर आपके बारे में मश्विरा किया कि आपकी हालत के मुनासिब कोई लक़ब तजवीज़ करना चाहिए कि उसपर सब मुत्तफ़िक़ रहें। किसी ने कहा कि काहिन हैं, फिर राय क़रार पाई कि काहिन नहीं हैं। किसी ने मजनूँ कहा, फिर इसको भी सबने ग़लत क़रार दिया। फिर जादूगर कहा, बाज़ ने इसको रद्द किया, लेकिन फिर कहने लगे कि जादूगर इसलिए हैं कि हबीब को हबीब (प्यारे को प्यारे) से जुदा कर देते हैं। आपको यह ख़बर पहुँचकर रंज हुआ और रंज की हालत में कपड़ों में लिपट गए जैसा कि अक्सर सोच और रंज में ग़मगीन आदमी इस तरह कर लेता है। पस हमदर्दी और ताल्लुक़ के इज़्हार के लिए इस उन्वान से ख़िताब फ़रमाया। और फ़रमाया कि **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1052)**

अख़्ज़ंव्-वबीला **(16)** फ़कै-फ़ तत्तक़ू-न इन् क-फ़र्तुम् यौमंय्यज्-अ़लुल्-विल्दा-न शीबा **(17)** अस्समा-उ मुन्फ़तिरुम् बिही, का-न वअ़्दुहू मफ़्अ़ूला **(18)** इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला **(19)** ❖

इन्-न रब्ब-क यअ़्लमु अन्न-क तक़ूमु अद्ना मिन् सुलु-सयिल्लैलि व निस्-फ़हू व सुलु-सहू व ताइ-फ़तुम् मिनल्लज़ी-न म-अ़-क, वल्लाहु युक़द्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र, अ़लि-म अल्-लन् तुह्सूहु फ़ता-ब अ़लैकुम् फ़क़्रऊ मा त-यस्स-र मिनल्-क़ुरआनि, अ़लि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मर्ज़ा व आ-ख़रू-न यज़्रिबू-न फ़िल्अर्ज़ि यब्तग़ू-न मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व आ-ख़रू-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़क़्रऊ मा त-यस्स-र मिन्हु व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्-ज़का-त व अक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन्, व मा तुक़द्दिमू लि-अन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि हु-व ख़ैरंव्-व अअ़्-ज़-म अज्रन्, वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम **(20)** ❖

تبارك الذي ٢٩ ٥٢٢ المدثر ٧٤

تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ
أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ
مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن
تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ
أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ
خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا
اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾

سورة المدثر مكية — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾ قُمْ فَأَنذِرْ ﴿٢﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ﴿٤﴾
وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾ وَلَا تَمْنُن تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿٧﴾
فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ﴿٨﴾ فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ﴿٩﴾ عَلَى
الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ﴿١٠﴾ ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ﴿١١﴾ وَجَعَلْتُ
لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ﴿١٢﴾ وَبَنِينَ شُهُودًا ﴿١٣﴾ وَمَهَّدتُّ لَهُ تَمْهِيدًا ﴿١٤﴾

منزل ٧

74 सूरतुल्-मुद्दस्सिरि 4

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1145 अक्षर, 256 शब्द, 56 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल् मुद्दस्सिरु **(1)** क़ुम् फ़-अन्ज़िर् **(2)** व रब्ब-क फ़-कब्बिर **(3)** व सिया-ब-क फ़-तह्हिर् **(4)** वर्रुज्-ज़ फ़ह्जुर **(5)** व ला तम्नुन् तस्तक्सिर **(6)** व लि-रब्बि-क फ़सबिर **(7)** फ़-इज़ा नुक़ि-र फ़िन्नाक़ूरि **(8)** फ़-ज़ालि-क यौमइज़िंय्-यौमुन्
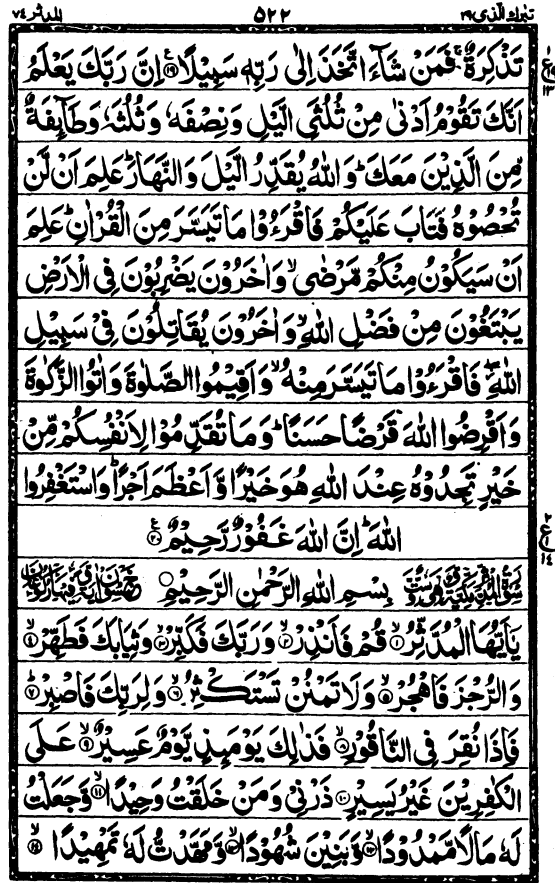
तरफ़ रास्ता इख़्तियार कर ले।[1] (19) ❖

आपके रब को मालूम है कि आप और आपके साथ वालों में से बाज़े आदमी (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात (नमाज़ में) खड़े रहते हैं। और रात और दिन का पूरा अन्दाज़ा अल्लाह ही कर सकता है। उसको मालूम है कि तुम इस (वक़्त के अन्दाज़े) को ज़ब्त नहीं कर सकते तो (इन वजूहों से) उसने तुम्हारे हाल पर इनायत की। सो (अब) तुम लोग जितना क़ुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो।[2] उसको (यह भी) मालूम है कि बाज़े आदमी तुममें बीमार होंगे और बाज़े आदमी रोज़ी की तलाश के लिए मुल्क में सफ़र करेंगे, और बाज़े अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे (इसलिए भी इस हुक्म को मन्सूख़ कर दिया) सो (इसलिए भी तुमको इजाज़त है कि अब) तुम लोग जितना क़ुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो और (फ़र्ज़) नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह तआ़ला को अच्छी तरह (यानी इख़्लास से) क़र्ज़ दो।[3] और जो नेक अ़मल अपने लिए आगे (ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत बनाकर) भेज दोगे उसको अल्लाह के पास पहुँचकर उससे अच्छा और सवाब में बड़ा पाओगे। और अल्लाह से गुनाह माफ़ कराते रहो, बेशक अल्लाह मग्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है। (20) ❖

74 सूरः मुद्दस्सिर 4

सूरः मुद्दस्सिर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 56 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ऐ कपड़े में लिपटने वाले![4] (1) उठो (यानी अपनी जगह से उठो, या यह कि तैयार हो) फिर (काफ़िरों को) डराओ। (2) और अपने रब की बड़ाइयाँ बयान करो। (3) और अपने कपड़ों को पाक रखो। (4) और बुतों से अलग रहो (जिस तरह कि अब तक अलग हो)[5] (5) और किसी को इस ग़रज़ से मत दो कि (दूसरे वक़्त) ज्यादा मुआ़वज़ा चाहो। (6) और फिर (डराने "यानी तब्लीग़ करने" में जो तकलीफ़ व परेशानी पेश आए उसपर) अपने रब (को ख़ुश करने) के वास्ते सब्र कीजिए। (7) फिर जिस वक़्त सूर फूँका जाएगा (8) सो वह वक़्त यानी वह दिन एक सख़्त दिन होगा (9) जिसमें काफ़िरों पर ज़रा भी आसानी न होगी। (10) (आगे बाज़ ख़ास काफ़िरों का ज़िक्र है, यानी) मुझको और उस शख़्स को (अपने-अपने हाल पर) रहने दो जिसको मैंने अकेला पैदा किया[6] (11) और उसको कसरत से माल दिया (12) और पास रहने वाले बेटे (दिए) (13) और सब तरह का सामान उसके लिए मुहैया कर दिया। (14) फिर भी इस बात की हवस

(पृष्ठ 1050 का शेष) आप इन बातों का रंज न करें बल्कि हक़ तआ़ला की तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह फ़रमाएँ और इसी सिफ़त पर मुस्तक़िल क़ायम रहें।

2. यानी हम आप पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाएँगे और रिसालत की तब्लीग़ और इस्लाम की दावत का भारी बोझ डालेंगे, पस आप इबादत व रियाज़त कीजिए ताकि वह भारी बोझ हल्का और हुक्म का पालन करना आसान हो जाए।

3. यानी दिन को वअ़ज़ व नसीहत ही से फ़ुर्सत न मिलेगी इसलिए इबादत के वास्ते रात का वक़्त ख़ास करो कि नफ़्स भी ख़ूब कुचला जाए और दुआ़ भी दिल की गहराई से निकले।

(पृष्ठ 1050 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1052 की तफ़सीर पृष्ठ 1054-1064 पर)

अ़सीर (9) अ़लल्-काफ़िरी-न ग़ैरु यसीर (10) ज़र्नी व मन् ख़लक़्तु वहीदा (11) व जअ़ल्तु लहू मालम्-मम्दूदा (12) व बनी-न शुहूदा (13) व मह्हत्तु लहू तम्हीदा (14) सुम्-म यत्मअ़ु अन् अज़ी-द (15) कल्ला, इन्नहू का-न लिआयातिना अ़नीदा (16) स-उर्हिक़ुहू सअ़ूदा (17) इन्नहू फ़क्क-र व क़द्द-र (18) फ़क़ुति-ल कै-फ़ क़द्द-र (19) सुम्-म क़ुति-ल कै-फ़ क़द्द-र (20) सुम्-म न-ज़-र (21) सुम्-म अ़-ब-स व ब-स-र (22) सुम्-म अद्-ब-र वस्तक्-ब-र (23) फ़क़ा-ल इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुंय्-युअ्सर (24) इन् हाज़ा इल्ला क़ौलुल्-ब-शर (25) स-उस्लीहि स-क़र (26) व मा अद्रा-क मा स-क़र (27) ला तुब्क़ी व ला त-ज़र (28) लव्वा-हतुल् लिल्ब-शर (29) अ़लैहा तिस्-अ़-त अ़-शर (30) व मा जअ़ल्ना अस्हाबन्नारि इल्ला मलाइ-कतंव्-व मा जअ़ल्ना अ़िद्द-तहुम् इल्ला फ़ित्-नतल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू लि-यस्तैक़िनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब व यज़्दादल्लज़ी-न आमनू ईमानंव्-व ला यर्ताबल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब वल्-मुअ्मिनू-न व लि-यक़ूलल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंव्-वल्- काफ़िरू-न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म-सलन्, क-ज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ, व मा यअ़्लमु जुनू-द रब्बि-क इल्ला हु-व, व मा हि-य इल्ला ज़िक्रा लिल्ब-शर (31) ◆

कल्ला वल्क़-मरि (32) वल्लैलि इज़् अद्-ब-र (33) वस्सुब्हि इज़ा अस्-फ़-र (34) इन्नहा ल-इह्दल्-कु-बरि (35) नज़ीरल् लिल्ब-शर (36) लिमन् शा-अ मिन्कुम् अंय्-तक़द्-द-म औ य-त-अख़्ख़-र (37) कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत् रही-नतुन् (38) इल्ला अस्हाबल्-यमीन (39) फ़ी जन्नातिन्, य-तसा-अलून (40) अ़निल्-मुज्रिमीन (41)

تبارك الذي ٢٩ ٥٢٣ المدثر ٧٤

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝ كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ۝ سَأُرْهِقُهُ
صَعُودًا ۝ إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ قُتِلَ
كَيْفَ قَدَّرَ ۝ ثُمَّ نَظَرَ ۝ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝ ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝
فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ۝ إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝ سَأُصْلِيهِ
سَقَرَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ۝ لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ۝ لَوَّاحَةٌ لِلْبَشَرِ ۝
عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً
وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ
وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ۝ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝ وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ۝
وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ۝ إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ۝ نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ۝ لِمَنْ
شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۝
إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۝ فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۝
مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ۝ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۝ وَلَمْ نَكُ

منزل

रखता है कि (उसको) और ज़्यादा दूँ **(15)** हरगिज़ (वह ज़्यादा देने के क़ाबिल) नहीं, (क्योंकि) वह हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ है। **(16)** उसको जल्द ही (यानी मरने के बाद) दोज़ख़ के पहाड़ पर चढ़ाऊँगा।[1] **(17)** उस शख़्स ने सोचा फिर एक बात तजवीज़ की **(18)** सो उसपर ख़ुदा तआला की मार हो कैसी बात तजवीज़ की। **(19)** (और) फिर (दोबारा) उसपर ख़ुदा की मार हो, कैसी बात तजवीज़ की। **(20)** फिर (हाज़िर लोगों के चेहरों को) देखा **(21)** फिर मुँह बनाया (ताकि देखने वाले समझें कि इसको क़ुरआन से बहुत ज़्यादा नफ़रत है) और ज़्यादा मुँह बनाया। **(22)** और फिर मुँह फेरा और तकब्बुर किया। **(23)** फिर बोला कि बस यह जादू है (जो औरों से) मन्क़ूल (है)। **(24)** बस यह तो आदमी का कलाम है। **(25)** मैं उसको जल्द ही दोज़ख़ में दाख़िल करूँगा। **(26)** और तुमको कुछ ख़बर भी है कि दोज़ख़ कैसी चीज़ है? **(27)** (इससे डराना और ख़ौफ़ दिलाना मक़सद है, वह ऐसी है कि) न तो बाक़ी रहने देगी और न छोड़ेगी। **(28)** (और) वह (जलाकर) बदन की हैसियत बिगाड़ देगी। **(29)** (और) उसपर उन्नीस फ़रिश्ते (जो उसके मुहाफ़िज़ हैं, जिनमें एक का नाम मालिक है, मुक़र्रर) होंगे।[2] **(30)** और हमने दोज़ख़ के कारकुन (आदमी नहीं बल्कि) सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हमने जो उनकी तादाद (ज़िक्र व बयान करने में) सिर्फ़ ऐसी रखी है जो काफ़िरों की गुमराही का ज़रिया हो तो इसलिए ताकि अहले किताब (सुनने के साथ) यक़ीन कर लें और ईमान वालों का ईमान और बढ़ जाए, और अहले किताब और मोमिनीन शक न करें। और ताकि जिन लोगों के दिलों में (शक की) बीमारी है वह और काफ़िर लोग कहने लगें कि इस अजीब मज़मून से अल्लाह तआला का क्या मक़सद है? (जिस तरह इस ख़ास बाब में ख़ुदा तआला ने काफ़िरों को गुमराह किया) इसी तरह अल्लाह तआला जिसको चाहता है गुमराह कर देता है और जिसको चाहता है हिदायत कर देता है। और (यह उन्नीस फ़रिश्तों का मुक़र्रर होना किसी हिक्मत से है वरना) तुम्हारे रब के लश्करों (यानी फ़रिश्तों की तादाद) को सिवाय रब के कोई नहीं जानता, और दोज़ख़ का हाल बयान करना सिर्फ़ आदमियों की नसीहत के लिए है।[3] **(31)** ❖

क़सम है चाँद की। **(32)** और रात की जब वह जाने लगे। **(33)** और सुबह की जब वह रोशन हो जाए **(34)** कि यक़ीनन दोज़ख़ बड़ी भारी चीज़ है। **(35)** जो इनसान के लिए बड़ा डरावा है। **(36)** (यानी) तुममें जो (आगे की तरफ़) बढ़े उसके लिए भी या जो (ख़ैर से) पीछे की तरफ़ हटे उसके लिए भी।[4] **(37)** हर शख़्स अपने (कुफ़्रिया) आमाल के बदले में (दोज़ख़ में) मुक़ैयद होगा। **(38)** मगर वे दाहिने वाले **(39)** कि वे जन्नतों में होंगे, पूछते होंगे **(40)** मुज्रिमों (यानी काफ़िरों) का हाल (ख़ुद उन काफ़िरों ही से) **(41)** (यानी मोमिन लोग काफ़िरों से पूछेंगे) कि तुमको दोज़ख़ में किस बात ने दाख़िल किया? **(42)** वे कहेंगे, हम न तो

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. अलग होना यह कि कोई ताल्लुक़ न रखो और ख़ूबसूरती से यह कि उनकी शिकायत व इन्तिक़ाम की फ़िक्र में न पड़ो।

5. यह किनाया है सब्र व इन्तिज़ार से, यानी थोड़ा-सा और सब्र कर लीजिए जल्द ही उनको सज़ा होने वाली है।

6. यानी उसके सख़्त और लम्बा होने की वजह से।

7. पस यह भी गुमान नहीं है कि वह वक़्त टल जाए।

(तफ़सीर पृष्ठ 1052) 1. यानी उस तक पहुँचने के लिए दीन का रास्ता क़बूल करे।

(पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056 की तफ़सीर पृष्ठ 1058-1065 पर)

मा स-ल-ककुम् फ़ी स-क़र (42) क़ालू लम् नकु मिनल्-मुसल्लीन (43) व लम् नकु नुत्‌अ़िमुल्-मिस्कीन (44) व कुन्ना नख़ूज़ु म-अ़ल्-ख़ा-इज़ीन (45) व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बियौमिद्‌दीन (46) हत्ता अतानल्-यक़ीन (47) फ़मा तन्फ़अ़ुहुम् शफ़ा-अ़तुश्शाफ़िअ़ीन (48) फ़मा लहुम् अ़नित्तज़्कि-रति मुअ़्‌रिज़ीन (49) क-अन्नहुम् हुमुरुम्-मुस्तन्‌फ़िरह् (50) फ़र्रत् मिन् क़स्-वरह् (51) बल् युरीदु कुल्लुम्‌रिइम्-मिन्हुम् अंय्युअ्ता सुहुफ़म् मुनश्श-रतन् (52) कल्ला, बल्-ला यख़ाफ़ूनल्-आख़िरह् (53) कल्ला इन्नहू तज़्कि-रतुन् (54) फ़-मन् शा-अ ज़-करह् (55) व मा यज़्कुरू-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, हु-व अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल्-मग़्फ़िरह् ▲ (56) ❖

75 सूरतुल्-क़ियामति 31

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 682 अक्षर, 164 शब्द, 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बियौमिल्-क़ियामति (1) व ला उक़्सिमु बिन्नफ़्सिल्-लव्वामह् (2) अ-यह्सबुल्-इन्सानु अल्-लन् नज्म-अ़ अ़िज़ामह् (3) बला क़ादिरी-न अ़ला अन्-नुसव्वि-य बनानह् (4) बल्

نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ۝ وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۝ وَكُنَّا نُكَذِّبُ
بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ حَتَّىٰ أَتَانَا الْيَقِينُ ۝ فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَاعَةُ
الشَّافِعِينَ ۝ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ۝ كَأَنَّهُمْ
حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ۝ فَرَّتْ مِن قَسْوَرَةٍ ۝ بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ
مِّنْهُمْ أَن يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝ كَلَّا ۖ بَل لَّا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۝
كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ۝ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَن
يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

سورة القيامة مكية بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ آياتها ٤٠ ركوعاتها ٢

لَا أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ۝ وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝ أَيَحْسَبُ
الْإِنسَانُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ۝ بَلَىٰ قَادِرِينَ عَلَىٰ أَن نُّسَوِّيَ
بَنَانَهُ ۝ بَلْ يُرِيدُ الْإِنسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ
الْقِيَامَةِ ۝ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ ۝ يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۝ كَلَّا لَا وَزَرَ ۝
إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ
وَأَخَّرَ ۝ بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝ وَلَوْ أَلْقَىٰ
مَعَاذِيرَهُ ۝ لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۝ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ

منزل

युरीदुल्-इन्सानु लियफ़्जु-र अमामह् (5) यस्अलु अय्या-न यौमुल्-क़ियामह् (6) फ़-इज़ा बरिक़ल्-ब-सरु (7) व ख़-सफ़ल्-क़-मरु (8) व जुमिअ़श्शम्सु वल्क़-मरु (9) यक़ूलुल्-इन्सानु यौमइज़िन् ऐनल्-म-फ़र्रु (10) कल्ला ला व-ज़र (11) इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल्-मुस्तक़र्र (12) युनब्बउल्-इन्सानु यौमइज़िम् बिमा क़द्-द-म व अख़्ख़-र (13) बलिल्-इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बसी-रतुंव्- (14) -व लौ अल्क़ा मआ़ज़ीरह् (15) ला

69
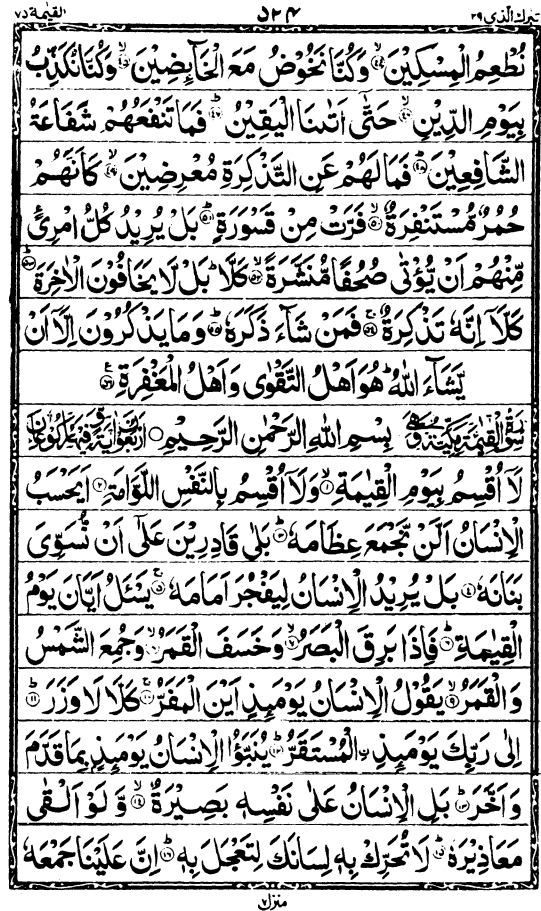
नमाज़ पढ़ा करते थे (43) और न ग़रीब को (जिसका हक़ वाजिब था) खाना खिलाया करते थे। (44) और मश्ग़ले में रहने वालों के साथ हम भी (उस) मश्ग़ले में रहा करते थे। (45) और क़ियामत के दिन को झुठलाया करते थे। (46) यहाँ तक कि (उसी हालत में) हमको मौत आ गई।[1] (47) सो (जो हालत ज़िक्र हुई उसमें) उनको सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी।[2] (48) (और जब कुफ़्र और हक़ से मुँह मोड़ने की बदौलत उनकी यह हालत बनने वाली है) तो उनको क्या हुआ कि इस (कुरआनी) नसीहत से मुँह फेरते हैं (49) कि गोया वे जंगली गधे हैं (50) जो शेर से भागे जा रहे हैं। (51) बल्कि उनमें हर शख़्स यह चाहता है कि उसको खुले हुए (आसमानी) नविश्ते दिए जाएँ। (52) (आगे इस बेहूदा दरख़्वास्त का रद्द है कि यह)[3] हरगिज़ नहीं (हो सकता) बल्कि ये लोग आख़िरत (के अ़ज़ाब) से नहीं डरते। (53) (पस यह) हरगिज़ नहीं हो सकता बल्कि क़ुरआन (ही) नसीहत (के लिए काफ़ी) है। (54) जिसका जी चाहे इससे नसीहत हासिल करे। (55) और बग़ैर ख़ुदा के चाहे ये लोग नसीहत क़बूल नहीं करेंगे। वही है जिस (के अ़ज़ाब) से डरना चाहिए और (वही है) जो (बन्दों के गुनाह) माफ़ करता है। ▲ (56) ❖

75 सूरः क़ियामः 31

सूरः क़ियामः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की। (1) और क़सम खाता हूँ ऐसे नफ़्स की जो अपने ऊपर मलामत करे।[4] (2) (आगे उन लोगों का रद्द है जो मरने के बाद ज़िन्दा होने का इनकार करते हैं, यानी) क्या इनसान ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियाँ हरगिज़ जमा न करेंगे? (3) हम ज़रूर जमा करेंगे (और यह जमा करना हमको कुछ दुश्वार नहीं) क्योंकि हम इसपर क़ादिर हैं कि उसकी उँगलियों की पोरियों तक को दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि बाज़ा आदमी (क़ियामत का इनकारी होकर) यूँ चाहता है कि अपनी आने वाली ज़िन्दगी में भी (बेख़ौफ़ व ख़तर होकर) बुराइयाँ और गुनाह करता रहे। (5) (इसलिए इनकार करने के तौर पर) पूछता है कि क़ियामत का दिन कब आएगा?[5] (6) सो जिस वक़्त (हैरत के मारे) आँखें फटी रह जाएँगी। (7) और चाँद बेनूर हो जाएगा। (8) और (चाँद की क्या तख़्सीस है बल्कि) सूरज और चाँद (दोनों) एक हालत के हो जाएँगे (यानी दोनों बेनूर हो जाएँगे) (9) उस दिन इनसान कहेगा, अब किधर भागूँ? (10) (इरशाद होता है) हरगिज़ (भागना मुम्किन) नहीं (क्योंकि) कहीं पनाह की जगह नहीं। (11) उस दिन सिर्फ़ आप ही के परवर्दिगार के पास (जाने का) ठिकाना है। (12) उस दिन इनसान को उसका सब अगला-पिछला किया हुआ जतला दिया जाएगा। (13) (और इनसान का अपने आमाल से आगाह होना कुछ उस जतलाने पर मौक़ूफ़ न होगा)[6] बल्कि इनसान ख़ुद अपनी हालत पर ख़ूब बाख़बर होगा। (14) अगरचे (तबीयत के तक़ाज़े की वजह से उस वक़्त भी) अपने हीले (बहाने) सामने लाए।[7] (15) (और) ऐ पैग़म्बर! (वह्य के ख़त्म हो चुकने से पहले) क़ुरआन पर अपनी ज़बान न हिलाया कीजिए ताकि आप उसको जल्दी-जल्दी

(पिछले पृष्ठ का शेष) 2. नुबुव्वत के शुरू में जब मुसलमानों पर तहज्जुद की नमाज़ फ़र्ज़ हुई तो मुसलमानों को वक़्त का अन्दाज़ा करने में बड़ी दुश्वारी पेश आती। **(पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056 की तफ़सीर पृष्ठ 1058-1065 पर)**

तुहर्रिक् बिही लिसान-क लितअ्-ज-ल बिह् (16) इन्-न अ़लैना जम्-अ़हू व क़ुर्आनहू (17) फ़-इज़ा क़रअ्नाहु फ़त्तबिअ् क़ुर्आनह् (18) सुम्-म इन्-न अ़लैना बयानह् (19) कल्ला बल् तुहिब्बूनल्-आ़जि-ल-त (20) व त-ज़रूनल्-आख़िरह् (21) वुजूहुंय्-यौमइज़िन् नाज़ि-रतुन् (22) इला रब्बिहा नाज़िरह् (23) व वुजूहुंय्-यौमइज़िम् बासि-रतुन् (24) तज़ुन्नु अंय्युफ़्अ़-ल बिहा फ़ाक़िरह् (25) कल्ला इज़ा ब-ल-ग़तित्-तराक़ि-य (26) व क़ी-ल मन्-राक़िंव- (27) -व ज़न्-न अन्नहुल् फ़िराक़ (28) वल्-तफ़्फ़तिस्-साक़ु बिस्साक़ि (29) इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल्-मसाक़ (30) ❖

फ़ला सद्-द-क़ व ला सल्ला (31) व लाकिन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (32) सुम्-स ज़-ह-ब इला अह्लिही य-तमत्ता (33) औला ल-क फ़-औला (34) सुम्-म औला ल-क फ़-औला (35) अ-यह्सबुल्-इन्सानु अंय्युत्-र-क सुदा (36) अलम् यकु नुत्फ़-तम् मिम्-मनिय्यिंय्-युम्ना (37) सुम्-म का-न अ़-ल-क़तन् फ़-ख़-ल-क़ फ़-सव्वा (38) फ़-ज-अ़-ल मिन्हुज़्-ज़ौजैनिज़्-ज़-क-र वल्-उन्सा (39) अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि-यल्-मौता (40) ❖

تبارك الذی ۲۹ — ۵۲۵ — الدهر ۷٦

وَقُرْاٰنَهٗ ۚ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۚ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۚ
كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۙ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۗ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ
نَّاضِرَةٌ ۙ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۢ بَاسِرَةٌ ۙ تَظُنُّ
اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۗ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ وَقِيْلَ مَنْ ۜ
رَاقٍ ۙ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ اِلٰى
رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِۨالْمَسَاقُ ۚ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ وَلٰكِنْ
كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۙ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۗ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۙ
ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۗ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ۗ
اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۙ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ
فَسَوّٰى ۙ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۗ اَلَيْسَ
ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۧ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ۞
اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا
بَصِيْرًا ۞ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۞ اِنَّآ اَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۠ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۞ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ

منزل

76 सूरतुद्-दह्रि 98

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1099 अक्षर, 246 शब्द, 31 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हल् अता अ़लल्-इन्सानि हीनुम्-मिनद्-दह्रि लम् यकुन् शैअम्-मज़्कूरा (1) इन्ना ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् अम्शाजिन्-नब्तलीहि फ़-जअ़ल्नाहु समीअ़म्-बसीरा (2) इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव्-व इम्मा कफ़ूरा (3) इन्ना अअ़्तद्ना लिल्-काफ़िरी-न
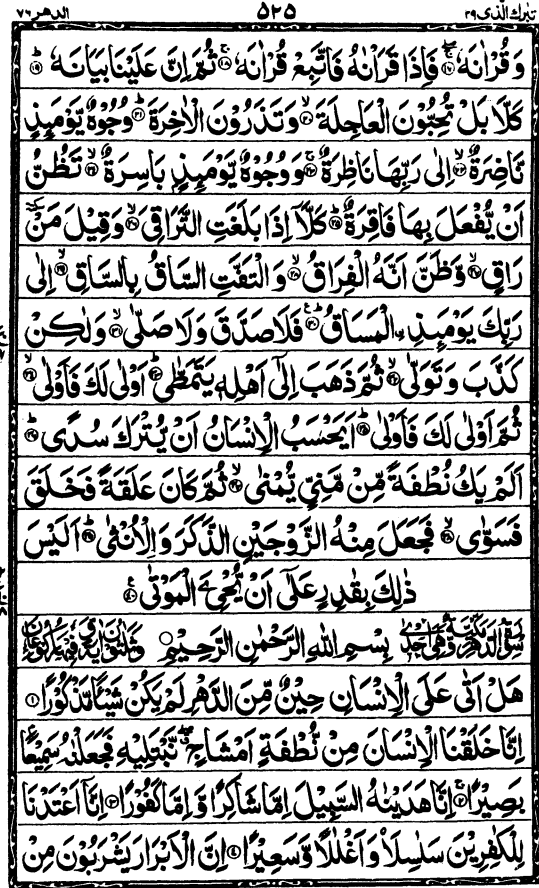
लें। **(16)** (क्योंकि) हमारे ज़िम्मे है (आपके दिल में) इसका जमा कर देना (और आपकी ज़बान से) इसका पढ़वा देना। **(17)** (जब यह हमारे ज़िम्मे है) तो जब हम उसको पढ़ने लगा करें (यानी हमारा फ़रिश्ता पढ़ने लगा करे) तो आप उसके ताबे हो जाया कीजिए। **(18)** फिर उसका बयान करा देना (भी) हमारा ज़िम्मा है।[1] **(19)** (ऐ इनकारियो! क़ियामत के बारे में जैसा कि तुम समझ रहे हो) हरगिज़ ऐसा नहीं, बल्कि (सिर्फ़ बात यह है) कि तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो **(20)** और आख़िरत को छोड़ बैठे हो।[2] **(21)** बहुत-से चेहरे उस दिन रौनक़ वाले होंगे। **(22)** अपने परवर्दिगार की तरफ़ देख रहे होंगे। **(23)** (यह तो मोमिनों का हाल हुआ) और बहुत-से चेहरे उस दिन बद्-रौनक़ होंगे। **(24)** (और वे लोग) ख़्याल कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा (यानी उनको सख़्त अ़ज़ाब होगा)। **(25)** हरगिज़ ऐसा नहीं, जब जान हँसली तक पहुँच जाती है **(26)** और (उस वक़्त बहुत ही हसरत से) कहा जाता है कि कोई झाड़ने वाला है?[3] **(27)** और (उस वक़्त) वह (मरने वाला) यक़ीन कर लेता है कि यह (दुनिया से) जुदाई का वक़्त है। **(28)** और (मौत की सख़्तियों से) एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाती है[4] **(29)** उस दिन तेरे रब की तरफ़ जाना होता है। **(30)** ❖

तो उसने न तो (ख़ुदा और रसूल की) तस्दीक़ की थी और न नमाज़ पढ़ी थी। **(31)** लेकिन (ख़ुदा और रसूल को) झुठलाया था और (अहकाम से) मुँह मोड़ा था। **(32)** फिर नाज़ करता हुआ अपने घर चल देता है। **(33)** तेरी कमबख़्ती पर कमबख़्ती आने वाली है। **(34)** फिर (दोबारा सुन ले कि) तेरी कमबख़्ती पर कमबख़्ती आने वाली है। **(35)** क्या इनसान यह ख़्याल करता है कि यूँ ही बेकार छोड़ दिया जाएगा? **(36)** क्या यह शख़्स (शुरू ही में सिर्फ़) एक मनी ''यानी वीर्य'' का क़तरा न था जो (औरत के गर्भ में) टपकाया गया था। **(37)** फिर वह ख़ून का लोथड़ा हो गया, फिर अल्लाह तआ़ला ने (उसको इनसान) बनाया, फिर आज़ा ''यानी जिस्मानी हिस्से'' दुरुस्त किए। **(38)** फिर उसकी दो क़िस्में कर दीं, मर्द और औ़रत। **(39)** (तो) क्या वह (ख़ुदा जिसने शुरू में अपनी क़ुदरत से यह सब कुछ किया) इस बात पर क़ुदरत नहीं रखता कि (क़ियामत में) मुर्दों को ज़िन्दा करे? **(40)** ❖

76 सूरः दह्र 98

सूरः दह्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 31 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बेशक इनसान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त भी आ चुका है जिसमें वह कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था (यानी इनसान न था बल्कि नुत्फ़ा था) **(1)** हमने उसको मख़्लूत ''यानी मिश्रित'' नुत्फ़े से पैदा किया, इस तौर पर कि हम उसको मुकल्लफ़ बनाएँ। तो (इसी वास्ते) हमने उसको सुनता-देखता (समझता) बनाया।[5] **(2)** हमने उसको (भलाई-बुराई पर बाख़बर करके) रास्ता बतलाया (यानी अहकाम का मुख़ातब बनाया, फिर) या तो वह शुक्रगुज़ार (और मोमिन) हो गया या नाशुक्र (और काफ़िर) हो गया। **(3)** हमने काफ़िरों के लिए ज़न्जीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। **(4)** (और) जो नेक (लोग) हैं वे ऐसे शराब के

(पिछले पृष्ठ का शेष) यह मालूम नहीं होता था कि किस क़द्र रात गुज़री और किस क़द्र बाक़ी है। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम सोना-लेटना सब छोड़ बैठे और क़रीब-क़रीब सारी रात अपने मौला-ए-करीम के आगे हाथ बाँधे हाज़िर और सारी-सारी रात खड़े रहने में गुज़ार देते थे।

(पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056, 1058 की तफ़सीर पृष्ठ 1060-1066 पर)

सलासि-ल व अग़्लालंव्-व सअ़ीरा **(4)** इन्नल्-अब्रा-र यश्रबू-न मिन् कअ्सिन् का-न मिज़ाजुहा काफ़ूरा **(5)** अ़ैनंय्-यश्रबु बिहा अ़िबादुल्लाहि युफ़ज्जिरूनहा तफ़्जीरा **(6)** यूफ़ू-न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू-न यौमन् का-न शर्रुहू मुस्ततीरा **(7)** व युत्अ़िमूनत्तआ़-म अ़ला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा **(8)** इन्नमा नुत्अ़िमुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव्-व ला शुकूरा **(9)** इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना यौमन् अ़बूसन् क़म्-तरीरा **(10)** फ़-वक़ाहुमुल्लाहु शर्-र ज़ालिकल्-यौमि व लक़्क़ाहुम् नज़्रतंव्-व सुरूरा **(11)** व जज़ाहुम् बिमा स-बरू जन्नतंव्-व हरीरा **(12)** मुत्तकिई-न फ़ीहा अ़लल्-अर-इकि ला यरौ-न फ़ीहा शम्संव्-व ला ज़म्-हरीरा **(13)** व दानि-यतन् अ़लैहिम् ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत् क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला **(14)** व युताफ़ु अ़लैहिम् बिआनि-यतिम्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव्-व अक्वाबिन् कानत् क़वारी-र **(15)** क़वारी-र मिन् फ़िज़्ज़तिन् क़द्दरूहा तक़्दीरा **(16)** व युस्क़ौ-न फ़ीहा कअ्सन् का-न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला **(17)** अ़ैनन् फ़ीहा तुसम्मा सल्-सबीला **(18)** व यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मुख़ल्लदू-न इज़ा रऐ-तहुम् हसिब्-तहुम् लुअ्लुअम्-मन्सूरा **(19)** व इज़ा रऐ-त सम्-म रऐ-त नअ़ीमंव्-व मुल्कन् कबीरा **(20)** आ़लि-यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् ख़ुज़्रुंव्-व इस्तब्रक़ुंव्-व हुल्लू असावि-र मिन् फ़िज़्ज़तिन् व सक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरा **(21)** इन्-न हाज़ा का-न लकुम् जज़ा-अंव्-व का-न सअ़्युकुम्-मश्कूरा **(22)** ❖

इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना अ़लैकल्-क़ुरआ-न तन्ज़ीला **(23)** फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ़् मिन्हुम् आसिमन् औ कफ़ूरा **(24)** वज़्कुरिस्-म रब्बि-क बुक्र-तंव्-व असीला **(25)**

كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا
تَفْجِيرًا ۝ يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝
وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝ إِنَّمَا
نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝ إِنَّا نَخَافُ
مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝ فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ
وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ۝ وَجَزَاهُم بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ۝
مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝
وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ۝ وَيُطَافُ
عَلَيْهِم بِآنِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا ۝ قَوَارِيرَا
مِن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا
زَنجَبِيلًا ۝ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ۝ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ
مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ۝ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ
رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ۝ عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَ
إِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا
طَهُورًا ۝ إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ۝
إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنزِيلًا ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَ

जाम से (शराबें) पिएँगे जिसमें काफ़ूर की मिलावट होगी। **(5)** यानी ऐसे चश्मे से (पिएँगे) जिससे अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे पिएँगे (और) जिसको वह (ख़ास बन्दे जहाँ चाहेंगे) बहाकर ले जाएँगे। **(6)** वे लोग वाजिबात को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती आ़म होगी।[1] **(7)** और वे लोग (सिर्फ़) ख़ुदा तआ़ला की मुहब्बत से ग़रीब और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं।[2] **(8)** हम तुमको सिर्फ़ ख़ुदा की रज़ामन्दी के लिए खाना खिलाते हैं, न हम तुमसे (इसका अ़मली) बदला चाहें और न (इसका ज़बान से) शुक्रिया (चाहें)। **(9)** हम अपने रब की तरफ़ से एक सख़्त और तल्ख़ दिन का अन्देशा रखते हैं।[3] **(10)** सो अल्लाह तआ़ला उनको (इस इताअ़त और इख़्लास की बरकत से) उस दिन की सख़्ती से महफ़ूज़ रखेगा और उनको ताज़गी और ख़ुशी अ़ता फ़रमाएगा (यानी चेहरों पर ताज़गी और दिलों में ख़ुशी देगा)। **(11)** और उनकी पुख़्तगी (यानी दीन पर जमे रहने) के बदले में उनको जन्नत और रेश्मी लिबास देगा, **(12)** इस हालत में कि वे वहाँ (जन्नत में) मसहरियों पर (आराम और इ़ज़्ज़त से) तकिया लगाए होंगे। न वहाँ तपिश (और गर्मी) पाएँगे और न जाड़ा **(13)** (बल्कि ख़ुशी बख़्शने वाली दरमियानी हालत होगी) और यह हालत होगी कि (वहाँ के यानी जन्नत के) दरख़्तों के साये उनपर झुके होंगे और उनके मेवे उनके इख़्तियार में होंगे (कि हर वक़्त हर तरह बिना मशक़्क़त ले सकेंगे)। **(14)** और उनके पास चाँदी के बरतन लाए जाएँगे और आबख़ोरे "यानी पानी पीने के बरतन" जो शीशे के होंगे **(15)** (और) वह शीशे चाँदी के होंगे जिनको भरने वालों ने मुनासिब अन्दाज़ से भरा होगा।[4] **(16)** और वहाँ उनको (ज़िक्र हुए जामे शराब के अ़लावा) ऐसा जामे शराब पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी। **(17)** यानी ऐसे चश्मे से (उनको पिलाया जाएगा) जो वहाँ होगा जिसका नाम (वहाँ) सल्सबील (मश्हूर) होगा। **(18)** और उनके पास (ये चीज़ें लेकर) ऐसे लड़के आना-जाना करेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे (और इस क़द्र हसीन हैं कि) ऐ मुख़ातब! अगर तू उनको (चलते-फिरते) देखे तो यूँ समझे कि मोती हैं जो बिखर गए हैं।[5] **(19)** और ऐ मुख़ातब! अगर तू उस जगह को देखे तो तुझको बड़ी नेमत और बड़ी हुकूमत दिखाई दे।[6] **(20)** (और) उन जन्नतियों पर बारीक रेशम के हरे रंग के कपड़े होंगे और दबीज़ रेशम के कपड़े भी (क्योंकि हर लिबास में अलग लुत्फ़ है) और उनको चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे, और उनका रब उनको पाकीज़ा शराब पीने को देगा (जिसमें न नापाकी होगी न गदलापन)। **(21)** यह तुम्हारा सिला है, और तुम्हारी कोशिश (जो दुनिया में करते थे) मक़बूल हुई। **(22)** ❖

हमने आप पर क़ुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। **(23)** सो आप अपने रब के हुक्म पर (कि इसमें

(पिछले पृष्ठ का शेष) पाँव सूज गए और पिंडलियों में ख़ून उतरकर वर्म हो गया। पूरे एक साल बाद ख़ुदा तआ़ला ने उनके हाल पर रहम फ़रमाकर कमी के लिए यह आयत नाज़िल फ़रमाई जिससे तहज्जुद का फ़र्ज़ होना मन्सूख़ हो गया और मोमिनों को इख़्तियार दिया गया कि जो चाहे तहज्जुद पढ़े और जो चाहे न पढ़े। और जो नमाज़े तहज्जुद अदा करे वह भी जितना क़ुरआन पाक आसानी से पढ़ सके पढ़े "मा तयस्स-र मिनल् क़ुरआन" (जितना क़ुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो) में क़ुरआन पढ़ने से नमाज़े तहज्जुद में पढ़ना मुराद है।

3. 'क़र्ज़े हसन' (यानी अच्छी तरह क़र्ज़ देना) उस बिना ब्याज वाले क़र्ज़ को कहते हैं कि जिसका तक़ाज़ा सख़्त न हो। और अगर मक़रूज़ अदा न कर सके, बिना अदा किए दुनिया से चला जाए तो आख़िरत में भी मुतालबा न हो। अल्लाह को क़र्ज़ देने से उसके बन्दों को ज़कात, सदक़ात और ख़ैरात देना मुराद है। माल सब मालिकुल-मुल्क ही का है, बन्दे सारे उसके मम्लूक हैं, पस यह उसकी नवाज़िश है कि एक ख़ुशहाल बन्दे से उसी के ज़रूरतमन्द भाई को दिलवाता है और उसको अपने ऊपर क़र्ज़ क़रार देता है कि उसका बदला यक़ीनन अ़ता फ़रमाएगा। और बदला भी बराबर नहीं बल्कि दस गुना और उससे भी ज़्यादा।

4. हदीसों में है कि सबसे पहले सूरः इक़रा के शुरू की आयतें नाज़िल होकर बाज़ हिक्मतों से कुछ दिनों तक वह्य नाज़िल न हुई फिर एक बार जंगल में **(पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056, 1058, 1060 की तफ़सीर पृष्ठ 1062-1066 पर)**

व मिनल्लैलि फ़स्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला (26) इन्-न हा-उला-इ युहिब्बूनल् आजि-ल-त व य-ज़रू-न वरा-अहुम् यौमन् सक़ीला (27) नह्नु ख़लक़्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला (28) इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला (29) व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा (30) युद्ख़िलु मंय्यशा-उ फ़ी रह्मतिही, वज़्ज़ालिमी-न अ-अ़द्-द लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (31) ❖

77 सूरतुल्-मुर्सलाति 33

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 846 अक्षर, 181 शब्द, 50 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्-मुर्सलाति .अुर्फ़न् (1) फ़ल्-आसिफ़ाति अ़स्फ़न् (2) वन्नाशिराति नश्रन् (3) फ़ल्फ़ारिक़ाति फ़र्क़न् (4) फ़ल्मुल्क़ियाति ज़िक्रन् (5) .अुज़्रन् औ नुज़्रन् (6) इन्नमा तू-अ़दू-न लवाक़िअ् (7) फ़-इज़न्नुजूमु तुमिसत् (8) व इज़स्समा-उ .फ़ुरिजत् (9) व इज़ल्-जिबालु नुसिफ़त् (10) व इज़र्रुसुलु उक़्क़ितत् (11) लि-अय्यि यौमिन् उज्जिलत् (12) लियौमिल्-फ़स्लि (13) व मा अद्रा-क मा यौमुल्-फ़स्लि (14) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (15) अलम् नुह्लिकिल्-अव्वलीन (16) सुम्-म नुत्बिअुहुमुल्-आख़िरीन (17) कज़ालि-क नफ़्अ़लु बिल्-मुज्रिमीन (18) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (19) अलम् नख़्लुक़्कुम् मिम्-माइम्-महीन (20) फ़-जअ़ल्नाहु फ़ी क़रारिम्-मकीन (21) इला क़-दरिम्

لَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾
وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ
الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَ
شَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ
تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ
اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ
فِيْ رَحْمَتِهٖ ۗ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿٣﴾
فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾ اِنَّمَا
تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾
وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ﴿١١﴾ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٥﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ
الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ

तब्लीग़ भी दाख़िल है) मुस्तकि़ल रहिए और उनमें से किसी फ़ासिक़ या काफ़िर के कहने में न आइए। **(24)** और (आगे ज़रूरी इबादतों का हुक्म है) यानी अपने परवर्दिगार का सुबह व शाम नाम लिया कीजिए। **(25)** और रात के किसी क़द्र हिस्से में भी उसको सज्दा किया कीजिए (यानी फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ा कीजिए) और रात के बड़े हिस्से में उसकी तस्बीह किया कीजिए। (मुराद इससे तहज्जुद है, फ़राइज़ के अ़लावा)। **(26)** ये लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे (आने वाले) एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं। **(27)** हम ही ने उनको पैदा किया है और हम ही ने उनके जोड़-बन्द मज़बूत किए। और (साथ ही यह कि) जब हम चाहें उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल दें। **(28)** यह (सब जो कुछ ज़िक्र हुआ, काफ़ी) नसीहत है, सो जो शख़्स चाहे अपने रबकी तरफ़ रास्ता इख़्तियार कर ले। **(29)** और बग़ैर ख़ुदा के चाहे तुम लोग कोई बात चाह नहीं सकते। (और बाज़ लोगों के लिए ख़ुदा के न चाहने में बाज़ हिक्मतें होती हैं, क्योंकि) ख़ुदा तआ़ला बड़ा इल्म और हिक्मत वाला है। **(30)** वह जिसको चाहे अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और (जिसको चाहे कुफ़्र और ज़ुल्म में मुब्तला रखता है। फिर) ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। **(31)** ❖

77 सूरः मुर्सलात 33

सूरः मुर्सलात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 50 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है उन हवाओं की जो नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजी जाती हैं। **(1)** फिर उन हवाओं की जो तेज़ी से चलती हैं (जिससे ख़तरों का अन्देशा होता है)। **(2)** और उन हवाओं की जो बादलों को (उठाकर) फैलाती हैं। **(3)** फिर उन हवाओं की जो बादलों को मुन्तशिर कर देती हैं (जैसा कि बारिश के बाद होता है)। **(4)** फिर उन हवाओं की जो (दिल में) अल्लाह तआ़ला की याद डालती हैं **(5)** (यानी) तौबा का या डराने का (जज़्बा दिल में डालती हैं)[1] **(6)** कि जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर होने वाली है, (मुराद क़ियामत है)। **(7)** सो जब सितारे बेनूर हो जाएँगे **(8)** और जब आसमान फट जाएगा **(9)** और जब पहाड़ उड़ते फिरेंगे **(10)** और जब सब पैग़म्बर मुक़र्ररा वक़्त पर जमा किए जाएँगे। **(11)** किस दिन के लिए पैग़म्बरों का मामला मुल्तवी रखा गया है? **(12)** (आगे जवाब है) फ़ैसले के दिन के लिए (मुल्तवी रखा गया है)। **(13)** और (आगे उस फ़ैसले के दिन के हौलनाक होने का ज़िक्र है कि) आपको मालूम है कि वह फ़ैसले का दिन कैसा कुछ है?[2] (यानी बहुत सख़्त है)। **(14)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। **(15)** (आगे अ़ज़ाब से डराना है, यानी) क्या हम अगले (काफ़िर) लोगों को (अ़ज़ाब से) हलाक नहीं कर चुके? **(16)** फिर पिछलों को भी (अ़ज़ाब में) उन (पहलों) ही के साथ-साथ कर देंगे। **(17)** हम मुज्रिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं (यानी उनके कुफ़्र पर सज़ा देते हैं)। **(18)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। **(19)** (आगे मरने के बाद ज़िन्दा करने की क़ुदरत का बयान है, यानी) क्या हमने तुमको एक बेक़द्र पानी (यानी नुत्फ़े) से नहीं बनाया? **(20)** फिर हमने उसको एक मुक़र्ररा वक़्त तक

(पिछले पृष्ठ का शेष) आपको एक आवाज़ सुनाई दी। ऊपर नज़र उठाकर देखा तो जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ज़मीन व आसमान के बीच एक तख़्त पर बैठे हैं। आप हैबत से घर लौट आए और कपड़ों में लिपट गए। उसमें शुरू की आयतें नाज़िल हुईं। लफ़्ज़े ''मुद्दस्सिर'' में इस तरफ़ इशारा है। और ये आयतें नुबुव्वत के शुरू के दौर की हैं और बक़िया सूरः बाद में नाज़िल हुई है। और 'इतक़ान' से मालूम होता है

(पृष्ठ 1052 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1054, 1056, 1058, 1060, 1062 की तफ़सीर पृष्ठ 1064-1066 पर)

मअ्लूम (22) फ़-क़दर्ना फ़निअ्मल्-क़ादिरून (23) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (24) अलम् नज्अलिल्-अर्-ज़ किफ़ाता (25) अह्याअंव्-व अम्वाता (26) व जअ़ल्ना फ़ीहा रवासि-य शामिख़ातिंव्-व अस्कैनाकुम्-माअन् फ़ुराता (27) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (28) इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (29) इन्तलिक़ू इला ज़िल्लिन् ज़ी सलासि शु-अब् (30) ला ज़लीलिंव्-व ला युग़्नी मिनल्-ल-हब् (31) इन्नहा तर्मी बि-श-ररिन् कल्-क़स्र (32) क-अन्नहू जिमा-लतुन् सुफ़्र (33) वैलुंय्-यौमइज़िल्- लिल्-मुकज़्ज़िबीन (34) हाज़ा यौमु ला यन्तिक़ून (35) व ला युअ्-ज़नु लहुम् फ़-यअ्तज़िरून (36) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (37) हाज़ा यौमुल्-फ़स्लि जमअ्नाकुम् वल्-अव्वलीन (38) फ़-इन् का-न लकुम् कैदुन् फ़कीदून (39) वैलुंय्-यौमइज़िल्- लिल्-मुकज़्ज़िबीन (40) ❖

·इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी ज़िलालिंव्-व अ़ुयून (41) व फ़वाकि-ह मिम्मा यश्तहून (42) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (43) इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (44) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (45) कुलू व त-मत्तअू क़लीलन् इन्नकुम् मुज्रिमून (46) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (47) व इज़ा क़ी-ल लहुमुर्-कअू ला यर्-कअून (48) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (49) फ़बि-अय्यि हदीसिम् बअ्-दहू युअ्मिनून (50) ❖

المرسلت ٧٧ ٥٢٨ تبارك الذى ٢٩

قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾
اَحْيَآءً وَّ اَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّ اَسْقَيْنٰكُمْ
مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى
مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ
شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ
كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾
هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ
وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ
مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا
كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوْا
وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

منزل ٧

एक महफ़ूज़ जगह (यानी औरत के गर्भ में) रखा। **(21)** ग़रज़ हमने (इन तसर्रुफ़ात का) एक अन्दाज़ा ठहराया **(22)** सो हम कैसे अच्छे अन्दाज़ा ठहराने वाले हैं। **(23)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। **(24)** क्या हमने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया **(25)** ज़िन्दों और मुर्दों को? **(26)** और हमने इस (ज़मीन) में ऊँचे-ऊँचे पहाड़ बनाए (जिनसे बहुत-से फ़ायदे जुड़े हुए हैं) और हमने तुमको मीठा पानी पिलाया। **(27)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। **(28)** तुम उस अ़ज़ाब की तरफ़ चलो जिसको झुठलाते थे। **(29)** एक सायबान "यानी साया करने वाला जैसे छज्जा वग़ैरह" की तरफ़ चलो जिसकी तीन शाख़ें हैं।[1] **(30)** जिसमें न (ठंडा) साया है और न वह गर्मी से बचाता है। **(31)** वह अंगारे बरसाएगा जैसे बड़े-बड़े महल। **(32)** जैसे काले-काले ऊँट।[2] **(33)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। **(34)** यह वह दिन होगा जिसमें लोग बोल न सकेंगे **(35)** और न उनको (उज़्र करने की) इजाज़त होगी, सो उज़्र भी न कर सकेंगे। **(36)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। **(37)** (उन लोगों से कहा जाएगा कि) यह है फ़ैसले का दिन (जिसको तुम झुठलाया करते थे), हमने (आज) तुमको और अगलों को (फ़ैसले के लिए) जमा कर लिया। **(38)** सो अगर तुम्हारे पास (आज के फ़ैसले से बचने की) कोई तदबीर हो तो मुझपर तदबीर चलाओ। **(39)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। **(40)** ❖

परहेज़गार लोग सायों और चश्मों में **(41)** और पसन्दीदा मेवों में होंगे **(42)** (और उनसे कहा जाएगा कि) अपने नेक आमाल के सिले में ख़ूब मज़े से खाओ-पियो। **(43)** हम नेक लोगों को ऐसा ही सिला दिया करते हैं। **(44)** (और ये काफ़िर लोग जन्नत की नेमतों को भी झुठलाते हैं, सो समझ लें कि) उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। **(45)** तुम (दुनिया में) थोड़े दिन और खा लो, बरत लो, (जल्द ही कमबख़्ती आने वाली है) तुम बेशक मुज्रिम हो। **(46)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों के लिए बड़ी ख़राबी होगी। **(47)** और (उन काफ़िरों की सरकशी और जुर्म की यह हालत है कि) जब उनसे कहा जाता है कि (ख़ुदा की तरफ़) झुको तो नहीं झुकते। **(48)** उस दिन (हक़ के) झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी। **(49)** तो फिर इस (इस क़द्र उम्दा अन्दाज़ में नसीहत करने और डराने वाले क़ुरआन) के बाद और फिर कौन-सी बात पर ईमान लाएँगे?[3] **(50)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) कि सूरः मुज़्ज़म्मिल के बाद बाक़ी सूरः नाज़िल हुई है।

5. बावजूद एहतिमाल न होने के यह हुक्म फ़रमाना इशारा है तौहीद की अ़ज़ीम शान की तरफ़ कि ऐसी ज़रूरी चीज़ है कि मासूम (जो गुनाहों से महफ़ूज़ हो) को भी बावजूद ज़रूरत न होने के इसकी तालीम की जाती है तो ग़ैर-मासूम तो इसका और भी ज़्यादा मुकल्लफ़ होगा।

6. एक बार वलीद बिन मुग़ीरा ने नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को क़ुरआन पढ़ते सुन लिया। इस क़लाम ने उसके पत्थर दिल को मोम बना दिया और इस्लाम की तरफ़ माईल हुआ। अबू जहल को इसकी ख़बर लगी तो वलीद के पास जाकर कहने लगा कि तुम्हारी क़ौम तुम्हारी तरफ़ से बदगुमान हो गई है, तुम्हारा अपने बाप-दादा के दीन और पुराने तरीक़े को छोड़कर कल के बच्चे मुहम्मद पर ईमान लाना बड़ी ज़िल्लत और कम-ज़रफ़ी की बात होगी। तुम्हारे लिए मुनासिब यह है कि किसी ऐसी बात का इज़्हार करो जिससे सबको यक़ीन आ जाए कि तुम मुहम्मद के दीन को हरगिज़ पसन्द नहीं करते। वलीद बोला कि तुम ख़ूब जानते हो कि आज अ़रब के अन्दर शायरी में कोई शख़्स मेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता। किसी की बुराई बयान करने में, तारीफ़ बयान करने में, ग़ज़ल कहने में, ग़रज़ मैं हर रंग में शे'र कहता हूँ। लेकिन मैंने मुहम्मद की ज़बान से ऐसा मज़ेदार और असर करने वाला कलाम सुना है कि जिसकी मिठास उम्र भर न भूलूँगा। अबू जहल बोला, कुछ भी हो तुम्हें कोई ऐसी बात ज़रूर बनानी होगी जिससे तुम्हारी क़ौम की बदगुमानी दूर हो। वलीद ने कहा कि अच्छा मैं देखूँगा कि मुझे क्या करना चाहिए। ग़रज़ बहुत कुछ सोच-विचार के बाद वलीद ने ऐलान किया कि मुहम्मद किसी दूसरे से नक़ल करने लगते हैं, इसपर यह आयत नाज़िल हुई। **(पृष्ठ 1054, 1056, 1058, 1060, 1062, 1064 की तफ़सीर पृष्ठ 1065-1066 पर)**

(तफ़सीर पृष्ठ 1054) 1. दोज़ख़ में एक पहाड़ का नाम 'सऊद' है। दोज़ख़ वालों को दूसरे अज़ाबों के साथ एक अज़ाब यह होगा कि उन्हें 'सऊद' पहाड़ पर चढ़ने के लिए मजबूर किया जाएगा। सत्तर साल में उसकी चोटी पर पहुँचेंगे। वहाँ से फिर दोज़ख़ में आ गिरेंगे, फिर चढ़ेंगे और फिर फिस्लेंगे और जहन्नम में गिरेंगे। अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

2. चन्द यहूदियों ने किसी सहाबी से इम्तिहान के तौर पर पूछा कि बताओ दोज़ख़ पर कितने फ़रिश्ते मुतैयन हैं? उन्होंने नबी करीम की ख़िदमत में हाज़िर होकर इसका ज़िक्र किया। फ़ौरन यह आयत नाज़िल हुई। हासिल यह कि फ़रिश्ते जिनकी ताक़त मालूम है, इसके बावजूद कि उनमें का एक भी तमाम जहन्नमियों को अज़ाब देने के लिए काफ़ी है, फिर उन्नीस फ़रिश्तों के मुक़र्रर होने से ज़ाहिर है कि अज़ाब का बहुत ही एहतिमाम होगा।

3. जब अल्लाह के कलाम ने दोज़ख़ के मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों की तादाद उन्नीस बताई तो अबुल असद क़ुरैशी नाम का बुतपरस्त कहने लगा कि ऐ क़ुरैश की जमाअ़त! कुछ घबराने की बात नहीं मुझ जैसे ताक़तवर पहलवान के सामने उन्नीस फ़रिश्ते क्या हक़ीक़त रखते हैं? अपने दाहिने कन्धे को हरकत दूँगा तो दस को धकेल दूँगा, और नौ को बाएँ कन्धे से दूर कर दूँगा। उसपर यह आयत नाज़िल हुई। जहन्नम का हाल बयान करने से असल मक़सद यह है कि काफ़िर व गुमराह लोग वहाँ की हौलनाकियों को सुनकर डरें और ईमान पर माईल हों।

4. मतलब यह कि तमाम मुकल्लफ़ लोगों के लिए डराने वाला है, और चूँकि इस डराने के परिणाम क़ियामत में ज़ाहिर होंगे इसलिए क़सम ऐसी चीज़ों की खाई गई है जो क़ियामत के बहुत ही मुनासिब है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1056) 1. यानी ख़ात्मा उसी नाफ़रमानी पर हुआ इस वजह से हम दोज़ख़ में आए।

2. इस नफ़ा न होने का सुबूत शफ़ाअ़त के न होने के सुबूत से होगा। यानी शफ़ाअ़त ही न होगी।

3. दुर्रे मन्सूर में क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया गया है कि बाज़े काफ़िरों ने आपसे कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आपकी पैरवी करें तो ख़ास हमारे नाम ऐसी लिखी हुई तहरीरें लाएँ जिनमें आपकी पैरवी करने का हुक्म लिखा हो।

4. अगर इनसान का नफ़्स खेलकूद की तरफ़ माईल हो, उसको न नेकी की तरफ़ रग़बत हो और न नेक काम पर उसका जी लगे, तो ऐसे नफ़्स को "नफ़्से अम्मारा बिस्सू-इ" कहते हैं। अगर नेकी व बदी और अच्छाई व बुराई का एहसास करे, कभी-कभी बुराई कर बैठे लेकिन फ़ौरन ही सचेत होकर अपनी ख़ता का इक़रार कर ले और नाफ़रमानी हो जाने पर अपने आपको मलामत करे, उस नफ़्स का नाम "नफ़्से लव्वामा" है। अगर नेकी का शौक़ रखने वाला हो और बदी से बेज़ार हो, इबादत व रियाज़त पर माईल, सब्र व तहम्मुल का आ़दी और अच्छे अख़्लाक़ का गरवीदा हो तो ऐसे पाक नफ़्स का नाम "नफ़्से मुत्मइन्ना" है।

5. यानी चूँकि तमाम उम्र गुनाहों और नफ़्स की ख़्वाहिशों में गुज़ारने का इरादा कर रखा है इसलिए उसको हक़ को तलब करने की नौबत ही नहीं आती कि क़ियामत का होना उसको साबित हो, इसलिए इनकार पर अड़ा हुआ है, और इनकार करने के तौर पर पूछता है कि क़ियामत कब आएगी?

6. इनसान अपने तमाम हालात और वाक़िआ़त को खुद अच्छी तरह जानता होगा इसलिए जतलाना ख़बर देने की ग़रज़ से न होगा बल्कि उसका मक़सद हुज्जत पूरी करना और लाजवाब करना होगा।

7. यानी अगर इनसान खुद अपने ऊपर ग़ौर करे तो अपने पैदा करने वाले के एक होने का क़ायल हो जाए। और अगर यह कहे कि मेरी समझ में नहीं आता तो यह सिर्फ़ उसकी हुज्जतबाज़ी और बहाने बनाना है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1058) 1. हक़ तआ़ला ने जिबराईल अ़लैहिस्सलाम के पढ़ने को अपना पढ़ना क़रार दिया, क्योंकि जिबराईल अ़लैहिस्सलाम हक़ तआ़ला के पयाम्बर (दूत) और क़ुरआन लाने में सिर्फ़ वास्ता थे। मतलब यह कि जब जिबराईल आकर क़ुरआन पढ़ा करें तो आप ख़ामोशी से सुना करें और उनके सुना चुकने के बाद आप दोबारा पढ़ लिया करें। जिबराईल के पढ़ने के दौरान आपको ज़बान के हरकत देने की ज़रूरत नहीं। क़ुरआन का आपके सीने में जमा कर देना यानी याद करा देना और आपके लिए इसका पढ़ना आसान कर देना और इसका साफ़-साफ़ मतलब व मफ़हूम समझा देना सब कुछ हमारे ज़िम्मे है।

2. पस तुम्हारे इस इनकार की बिना महज़ फ़ासिद है। सो क़ियामत ज़रूर होगी और हर एक को उसके आमाल पर बाख़बर करके उनके आमाल के मुनासिब बदला मिलेगा।

3. मुराद आ़म इलाज करने वाला है, चूँकि अ़रब में झाड़-फूँक का ज़्यादा चर्चा था इसलिए "राक़" (यानी झाड़ने वाले) से ताबीर किया।

4. मुराद इससे मौत के वक़्त की तकलीफ़ है। तवज्जोह करने की कुछ तख़्सीस नहीं, उसका ज़िक्र मिसाल देने के लिए है।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1066 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) 5. मतलब यह कि हमने ऐसी हैअतों और सिफ़तों के साथ पैदा किया कि उसमें मुकल्लफ़ बनने की क़ाबलियत हो।

(तफ़सीर पृष्ठ 1060) 1. यानी सबपर कम या ज़्यादा उसकी सख़्ती का असर होगा, मुराद क़ियामत का दिन है।

2. क़ैदी अगर मज़लूम है तब तो उसकी रियायत का अच्छा होना ज़ाहिर है, और अगर ज़ालिम है तो सख़्त ज़रूरत के वक़्त उसको खाना खिलाना भी अच्छा है।

3. इससे मालूम हुआ कि आख़िरत के ख़ौफ़ से कोई काम करना इख़्लास और अल्लाह की रिज़ा तलब करने के ख़िलाफ़ नहीं।

4. यानी उसमें पीने की चीज़ ऐसे अन्दाज़ से भरी होगी कि न उस वक़्त की इच्छा में कमी रहे और न उससे बचे कि दोनों में बेलुत्फ़ी होती है। और चाँदी के शीशे के यह मायने हैं कि सफ़ेदी तो चाँदी जैसी होगी और सफ़ाई व चमक शीशे के जैसी, और दुनिया की चाँदी में आरपार नज़र नहीं आता, और शीशे में यहाँ ऐसी सफ़ेदी नहीं होती, पस यह एक अजीब चीज़ होगी।

5. मोती से तो उनके बाहर आने और सफ़ाई की वजह से तश्बीह दी और बिखरे हुए का वस्फ़ उनके चलने-फिरने के लिहाज़ से, जैसे बिखरे मोती अलग-अलग होकर कोई इधर जा रहा है और कोई उधर जा रहा है, और यह आला दर्जे की तश्बीह है।

6. एक बार हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा कि एक चटाई पर लेटे हुए हैं और चटाई के पट्ठे के निशान मुबारक जिस्म पर नक़्श हो गए हैं। यह देखकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की आँखों में आँसू आ गए। हज़रत रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसका सबब पूछा तो उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि 'क़ैसर' व 'किसरा' तो काफ़िर होने के बावजूद कैसे ऐश-आराम में हैं और अल्लाह के हबीब दोनों जहाँ के सरदार एक सख़्त चटाई पर आराम फ़रमा हैं, जिसपर कोई कपड़ा भी नहीं। आपने फ़रमाया ऐ उमर! क्या तुम इसपर राज़ी नहीं कि ग़ैर-मुस्लिमों की फ़ानी नेमतें दुनिया की ज़िन्दगी तक सीमित हैं और हम लोगों को ख़ुदा तआ़ला आख़िरत में कभी ख़त्म न होने वाली हमेशा की नेमतें अ़ता फ़रमाएगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1062) 1. यानी ये ज़िक्र हुई हवाएँ क़ुदरत पर दलालत करने वाली होने की वजह से अपने बनाने वाले और पैदा करने वाले की तरफ़ मुतवज्जह होने का सबब हो जाती हैं।

2. इस सवाल व जवाब का मतलब यह मालूम होता है कि काफ़िर लोग जो रसूलों को झुठलाते आए हैं और अब भी इस उम्मत के काफ़िर लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को झुठला रहे हैं। और जब इस झुठलाने पर आख़िरत के अ़ज़ाब से डराए जाते हैं तो आख़िरत को भी झुठलाते हैं। इस वक़्त यह झुठलाना अपने आपमें इसको चाहता है कि रसूलों का जो क़िस्सा काफ़िरों से पेश आ रहा है उसका फ़ैसला अभी हो जाए, और उसकी ताख़ीर और देरी होने से काफ़िरों को जल्दी होने से इनकार और मुसलमानों को तबई तौर पर जल्दी से हो जाने की तमन्ना होती है। इस आयत में इस जल्दी का जवाब है कि हक़ तआ़ला ने बाज़ हिक्मतों से उसको मुअख़्ख़र कर रखा है, लेकिन वाक़ेअ़ ज़रूर होगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1064) 1. उस सायबान से एक धुआँ मुराद है जो जहन्नम से निकलेगा। और यह चूँकि कसरत से होगा इसलिए ऊँचा होगा, फटकर कई टुकड़े हो जाएगा। काफ़िर लोग हिसाब से फ़ारिग़ होने तक उसी धुएँ के घेरे में रहेंगे, जबकि अल्लाह के मक़बूल बन्दे अ़र्श के साये के नीचे होंगे।

2. क़ायदा है कि जब आग से चिंगारी झड़ती है तो बड़ी होती है, फिर पहली तश्बीह शुरू की हालत के एतिबार से है और दूसरी तश्बीह आख़िरी और इन्तिहाई हालत के एतिबार से है।

3. इन धमकियों और झंझोड़ने का तक़ाज़ा यह था कि ये सुनते ही डरकर ईमान ले आते मगर जब इसपर भी उनको असर नहीं तो फिर इस डराने वाले और आ़लीशान अल्फ़ाज़ वाले क़ुरआन के बाद और किस बात पर ईमान लाएँगे? इसमें काफ़िरों को झिड़की का सबब आपका उनके ईमान से नाउम्मीद होना है।

तीसवाँ पारः अ़म्-म य-तसा-अलून

78 सूरतुन्-न-बइ 80

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 801 अक्षर, 174 शब्द, 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ़म्-म य-तसा-अलून **(1)** अ़निन्-न-बइल्-अ़ज़ीम **(2)** अल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून **(3)** कल्ला स-यअ़्लमून **(4)** सुम्-म कल्ला स-यअ़्लमून **(5)** अलम् नज्अ़लिल्-अर्-ज़ मिहादंव्- **(6)** -वल्-जिबा-ल औतादंव्- **(7)** -व ख़लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्- **(8)** -व जअ़ल्ना नौमकुम् सुबातंव्- **(9)** -व जअ़ल्नल्लै-ल लिबासंव्- **(10)** -व जअ़ल्नन्-नहा-र मआ़शा **(11)** व बनैना फ़ौ-क़कुम् सब्अ़न् शिदादंव्- **(12)** -व जअ़ल्ना सिराजंव्-वह्हाजा **(13)** व अन्ज़ल्ना मिनल्-मुअ़्सिराति मा-अन् सज्जाजल्- **(14)** -लिनुख़्रि-ज बिही हब्बंव्-व नबातंव्- **(15)** -व जन्नातिन् अल्फ़ाफ़ा **(16)** इन्-न यौमल्-फ़स्लि का-न मीक़ातंय्- **(17)** -यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़-तअ़्तू-न अफ़्वाजा **(18)** व फ़ुति-हतिस्-समा-उ फ़-कानत् अब्वाबंव्- **(19)** -व सुय्यि-रतिल्-जिबालु फ़-कानत् सराबा **(20)** इन्-न जहन्न-म कानत् मिर्सादल्- **(21)** -लित्ताग़ी-न म-आबल्- **(22)** -लाबिसी-न फ़ीहा अह्क़ाबा **(23)** ला यज़ूक़ू-न फ़ीहा बर्दंव्-व ला शराबा **(24)** इल्ला हमीमंव्-व ग़स्साक़न् **(25)** जज़ाअंव्-विफ़ाक़ा **(26)** इन्नहुम् कानू ला यर्जू-न हिसाबा **(27)** व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा **(28)** व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन् **(29)** फ़ज़ूक़ू फ़-लन् नज़ी-दकुम् इल्ला अ़ज़ाबा **(30)** ❖

النبا ٧٨ ٥٢٩ عم ٣٠

سُورَةُ النَّبَإِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيمِ الَّذِي هُمْ فِيهِ
مُخْتَلِفُونَ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ أَلَمْ نَجْعَلِ
الْأَرْضَ مِهَادًا وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلْنَا
نَوْمَكُمْ سُبَاتًا وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا
وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا وَأَنْزَلْنَا
مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا وَجَنَّاتٍ
أَلْفَافًا إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ
فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا وَسُيِّرَتِ
الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا لِلطَّاغِينَ
مَآبًا لَابِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا
إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا جَزَاءً وِفَاقًا إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ
حِسَابًا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا
فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا
حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا وَكَأْسًا دِهَاقًا

منزل

तीसवाँ पारः अ़म्-म य-तसाअलून

78 सूरः नबा 80

सूरः नबा[1] मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

ये (क़ियामत का इनकार करने वाले) लोग किस चीज़ का हाल पूछते हैं।[2] **(1)** उस बड़े वाक़िए का हाल पूछते हैं **(2)** जिसमें ये लोग (अहले हक़ के साथ) इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं। **(3)** हरगिज़ ऐसा नहीं (बल्कि क़ियामत आएगी और) उनको अभी मालूम हुआ जाता है। **(4)** (दोबारा कहते हैं कि जैसा ये लोग समझते हैं) हरगिज़ ऐसा नहीं (बल्कि आएगी) उनको अभी मालूम हुआ जाता है।[3] **(5)** क्या हमने ज़मीन को फ़र्श **(6)** और पहाड़ों को (ज़मीन की) मेख़ें नहीं बनाया। **(7)** और (इसके अ़लावा हमने और भी क़ुदरत ज़ाहिर फ़रमाई, चुनाँचे) हमने ही तुमको जोड़ा-जोड़ा (यानी मर्द व औ़रत) बनाया। **(8)** और हम ही ने तुम्हारे सोने को राहत की चीज़ बनाया। **(9)** और हम ही ने रात को पर्दे की चीज़ बनाया **(10)** और हम ही ने दिन को रोज़गार का वक़्त बनाया। **(11)** और हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। **(12)** और हम ही ने (आसमान में) एक रोशन चिराग़ बनाया (मुराद सूरज है)।[4] **(13)** और हम ही ने पानी भरे बादलों से कसरत से पानी बरसाया। **(14)** ताकि हम उस पानी के ज़रिये से पैदा करें ग़ल्ला और सब्ज़ी **(15)** और घने बाग़।[5] **(16)** बेशक फ़ैसले का दिन एक मुतैयन वक़्त है। **(17)** यानी जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम लोग गिरोह-गिरोह होकर आओगे। **(18)** और आसमान खुल जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे।[6] **(19)** और पहाड़ (अपनी जगह से) हटा दिए जाएँगे, सो वे रेत की तरह हो जाएँगे।[7] **(20)** (आगे उस फ़ैसले के दिन में जो फ़ैसला होगा उसका बयान है, यानी) बेशक दोज़ख़ एक घात की जगह है **(21)** सरकशों का ठिकाना (है) **(22)** जिसमें वे बेइन्तिहा ज़मानों (तक पड़े) रहेंगे। **(23)** (और) उसमें न तो वे किसी ठंडक (यानी राहत) का मज़ा चखेंगे और न पीने की चीज़ का (जो कि प्यास को बुझाने वाली हो) **(24)** सिवाय गर्म पानी और पीप के। **(25)** और (उनको) पूरा-पूरा बदला मिलेगा। **(26)** (और वे आमाल जिनका यह बदला है, यह हैं कि) वे लोग (क़ियामत के) हिसाब का अन्देशा न रखते थे। **(27)** और हमारी आयतों को ख़ूब झुठलाते थे। **(28)** और हमने (उनके आमाल में से) हर चीज़ को (उनके आमालनामे में) लिखकर ज़ब्त कर रखा है। **(29)** सो मज़ा चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाएँगे। **(30)** ❖

ख़ुदा से डरने वालों के लिए बेशक कामयाबी है। **(31)** यानी (खाने और सैर को) बाग़ (जिनमें तरह-तरह के मेवे होंगे) और अंगूर **(32)** और (दिल बहलाने को) नौजवान हमउम्र औ़रतें **(33)** और (पीने को) लबालब भरे हुए शराब के जाम। **(34)** (और) वहाँ न कोई बेहूदा बात सुनेंगे और न झूठ (क्योंकि ये

---

1. इसमें भी पिछली मिली हुई सूरः की तरह क़ियामत के जल्द आने की संभावना और जज़ा व सज़ा के वाक़िआ़त ज़िक्र किए गए हैं।
2. मुराद क़ियामत है और पूछने से मक़सद इनकार करने के तौर पर पूछना है। और इस सवाल व जवाब से मक़सद ज़ेहनों का उधर मुतवज्जह करना और जो बात ग़ैर-वाज़ेह थी उसकी तफ़सीर से उसका अहम होना ज़ाहिर है।
3. यानी जब दुनिया से जाने के बाद उनपर अ़ज़ाब वाक़ेअ़ होगा तब असल हक़ीक़त और **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1070 पर)**

इन्-न लिल्मुत्तक़ी-न मफ़ाज़न् (31) हदाइ-क़ व अअ़्नाबंव्- (32) -व कवाअि़-ब अत्राबंव्- (33) -व कअ्सन् दिहाक़ा (34) ला यस्मअू-न फ़ीहा लग़्वंव्-व ला किज़्ज़ाबा (35) जज़ाअम्-मिर्रब्बि-क अ़ताअन् हिसाबा (36) रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमर्रह्मानि ला यम्लिकू-न मिन्हु ख़िताबा (37) यौ-म यक़ूमुर्रूहु वल्मलाइ-कतु सफ़्फ़ल् ला य-तकल्लमू-न इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व क़ा-ल सवाबा (38) ज़ालिकल् यौमुल्-हक़्क़ु फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिहि मआबा (39) इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अ़ज़ाबन् क़रीबंय्-यौ-म यन्ज़ुरुल्-मरउ मा क़द्द-मत् यदाहु व यक़ूलुल्-काफ़िरु या लैतनी कुन्तु तुराबा (40) ❖

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا
رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ
خِطَابًا يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا
مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن
شَاءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَآبًا إِنَّا أَنذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ
يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِي كُنتُ تُرٰبًا

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَّأَرْبَعُونَ اٰيَةً وَّفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا
فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا فَالْمُدَبِّرٰتِ أَمْرًا يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ
تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ قُلُوبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ
يَقُولُونَ أَإِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا
نَّخِرَةً قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ
فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ هَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ مُوسٰى إِذْ نَادٰىهُ
رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى اذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغٰى
فَقُلْ هَل لَّكَ إِلٰى أَن تَزَكّٰى وَأَهْدِيَكَ إِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى

79 सूरतुन्-नाज़िआ़ति 81

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 791 अक्षर, 181 शब्द, 46 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वन्नाज़िआ़ति ग़र्क़ंव्- (1) -वन्नाशि- -ताति नश्तंव्- (2) -वस्साबिहाति सब्हन् (3) फ़स्साबिक़ाति सब्क़न् (4) फ़ल्मुदब्बि- -राति अम्रा ✣(5) यौ-म तर्जुफ़ुर्राजि-फ़तु (6) तत्बअ़ुहर्-रादिफ़ह् (7) क़ुलूबुंय्- यौमइज़िंव्-वाजि-फ़तुन् (8) अब्सारुहा ख़ाशिअ़ह् ✣ (9) यक़ूलू-न अ-इन्ना ल-मर्दूदू-न फ़िल्-हाफ़िरह् (10) अ-इज़ा कुन्ना अ़िज़ामन्-नख़िरह् (11) क़ालू तिल्-क इज़न् कर्रतुन् ख़ासिरह् ✣ (12) फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्-रतुंव्-वाहि-दतुन् (13) फ़-इज़ा हुम् बिस्साहिरह् (14) हल् अता-क हदीसु मूसा ✣ (15) इज़् नादाहु रब्बुहू बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा (16) इज़्हब् इला फ़िर्औ़-न इन्नहू तग़ा (17) फ़क़ुल् हल्-ल-क इला अन् तज़क्का (18) व अह्दि-य-क इला रब्बि-क फ़-तख़्शा (19) फ़-अराहुल् आ-यतल्-कुब्रा (20)

70
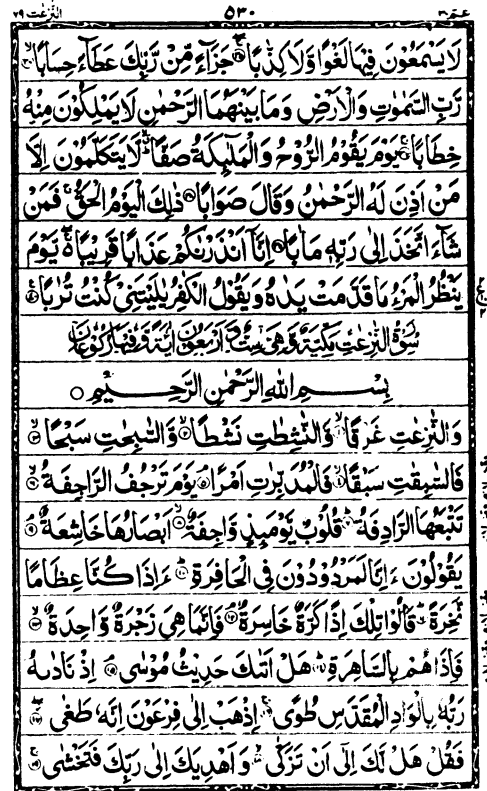
बातें वहाँ बिलकुल नापैद हैं) **(35)** यह (उनको उनकी नेकियों का) बदला मिलेगा जो कि काफ़ी इनाम होगा (आपके) रब की तरफ़ से **(36)** जो मालिक है आसमानों का और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो उन दोनों के दरमियान में हैं। (और जो) रहमान है, (और) किसी को उसकी तरफ़ से (मुस्तक़िल) इख़्तियार न होगा (कि उसके सामने कुछ कह-सुन सके)[1] **(37)** जिस दिन तमाम रूहों वाले और फ़रिश्ते (ख़ुदा के सामने) सफ़ बाँधे हुए (आ़जिज़ी के साथ झुके हुए) खड़े होंगे, (उस दिन) कोई न बोल सकेगा सिवाय उसके जिसको रहमान (बोलने की) इजाज़त दे दे और वह शख़्स बात भी ठीक कहे।[2] **(38)** यह (दिन जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ) यक़ीनी दिन है, सो जिसका जी चाहे (उसके हालात सुनकर) अपने रब के पास (अपना) ठिकाना बना ले। **(39)** हमने तुमको एक नज़दीक आने वाले अ़ज़ाब से डरा दिया है (जो कि ऐसे दिन में होने वाला है) जिस दिन हर शख़्स उन आमाल को (अपने सामने हाज़िर) देख लेगा जो उसने अपने हाथों किए होंगे, और काफ़िर (हसरत से) कहेगा कि काश! मैं मिट्टी हो जाता[3] (ताकि सज़ा से बच जाता)। **(40)** ❖

79 सूरः नाज़िआ़त 81

सूरः नाज़िआ़त मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 46 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है उन फ़रिश्तों की जो (काफ़िरों की) जान सख़्ती से निकालते हैं। **(1)** और जो (मुसलमानों की रूह आसानी से निकालते हैं, गोया उनका) बन्द खोल देते हैं।[4] **(2)** और जो तैरते हुए चलते हैं। **(3)** फिर तेज़ी के साथ दौड़ते हैं। **(4)** फिर हर मामले की तदबीर करते हैं। **(5)** (उन सबकी क़समें खाकर कहते हैं कि क़ियामत ज़रूर आएगी) जिस दिन हिला देने वाली चीज़ हिला डालेगी (इससे सूर का पहली बार फूँका जाना मुराद है)। **(6)** जिसके बाद एक पीछे आने वाली चीज़ आएगी (इससे सूर का दूसरी बार फूँका जाना मुराद है)। **(7)** बहुत-से दिल उस दिन धड़क रहे होंगे। **(8)** उनकी आँखें शर्म के मारे झुक रही होंगी। **(9)** कहते हैं, क्या हम पहली हालत में फिर वापस होंगे? (पहली से मुराद मौत से पहले की ज़िन्दगी है)[5] **(10)** क्या जब हम बोसीदा हड्डियाँ हो जाएँगे **(11)** फिर (ज़िन्दगी की तरफ़) वापस होंगे? (अगर ऐसा हुआ तो) उस सूरत में यह वापसी (हमारे लिए) बड़े घाटे की चीज़ होगी।[6] **(12)** तो (यह समझ लें कि हमको कुछ मुश्किल नहीं, बल्कि) बस वह एक ही सख़्त आवाज़ होगी **(13)** जिससे लोग फ़ौरन ही मैदान में आ मौजूद होंगे। **(14)** क्या आपको मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का क़िस्सा पहुँचा है? **(15)** जबकि उनको उनके परवर्दिगार ने एक पाक मैदान यानी तुवा में (यह उसका नाम है) पुकारा **(16)** कि तुम फ़िरऔ़न के पास जाओ, उसने बड़ी शरारत इख़्तियार की है। **(17)** सो उससे (जाकर) कहो कि क्या तुझको इस बात की ख़्वाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए? **(18)** और (तेरी दुरुस्ती की ग़रज़ से) मैं तुझको तेरे रब की तरफ़ (ज़ात व सिफ़ात की) रहनुमाई करूँ तो तू (यह सुनकर उससे) डरने लगे? **(19)** फिर (जब उसने नुबुव्वत की दलील तलब की तो) उसको (नुबुव्वत की) बड़ी

(पृष्ठ 1068 का शेष) क़ियामत का हक़ होना सामने आएगा। ये लोग उसको नामुम्किन और मुहाल समझते हैं हालाँकि उसको नामुम्किन समझने से हमारी क़ुदरत का इनकार लाज़िम आता है, और हमारी क़ुदरत का इनकार निहायत अ़जीब है क्योंकि......(आगे देखो तर्जुमा)

(पृष्ठ 1068 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1070 की तफ़सीर पृष्ठ 1072-1080 पर)

फ़-कज़्ज़-ब व अ़सा (21) सुम्-म अद्-ब-र यस्आ़ (22) फ़-ह-श-र, फ़नादा (23) फ़क़ा-ल अ-न रब्बुकुमुल्-अअ़्ला (24) फ़-अ-ख़-ज़हुल्लाहु नकालल्-आख़िरति वल्-ऊला (25) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अ़िब्-रतल् लिमंय्यख़्शा (26) ❖

अ-अन्तुम् अशद्दु ख़ल्कन् अमिस्समा-उ बनाहा (27) र-फ़-अ़ सम्कहा फ़-सव्वाहा (28) व अग़्त-श लैलहा व अख़्र-ज जुहाहा (29) वल्अर्-ज़ बअ़्-द ज़ालि-क दहाहा (30) अख़्र-ज मिन्हा मा-अहा व मर्आ़हा (31) वल्-जिबा-ल अर्साहा (32) मताअ़ल्-लकुम् व लि-अन्आ़मिकुम् (33) फ़-इज़ा जा-अतित्-ताम्मतुल्-कुब्रा (34) यौ-म य-तज़क्करुल्- इन्सानु मा सआ़ (35) व बुर्रि-ज़तिल्-जहीमु लिमंय्यरा (36) फ़-अम्मा मन् तग़ा (37) व आ-सरल् हयातद्दुन्या (38) फ़-इन्नल्-जही-म हि-यल् -मअ्वा (39) व अम्मा मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही व नहन्-नफ़्-स अ़निल्-हवा (40) फ़-इन्नल् जन्न-त हि-यल्-मअ्वा (41) यस्अलू-न-क अ़निस्सा-अ़ति अय्या-न मुर्साहा (42) फ़ी-म अन्-त मिन् ज़िक्राहा (43) इला रब्बि-क मुन्तहाहा (44) इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरु मंय्यख़्शाहा (45) क-अन्नहुम् यौ-म यरौनहा लम् यल्बसू इल्ला अ़शिय्य-तन् औ जुहाहा (46) ❖

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۝ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۝ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۝
فَحَشَرَ فَنَادٰى ۝ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۝ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ
الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ ءَاَنْتُمْ
اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ بَنٰىهَا ۝ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ۝ وَ
اَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۝ وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ۝
اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۝ وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ۝ مَتَاعًا لَّكُمْ
وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ
الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ۝ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۝
وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ۝ وَاَمَّا مَنْ
خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝ فَاِنَّ الْجَنَّةَ
هِيَ الْمَاْوٰى ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۝ فِيْمَ اَنْتَ
مِنْ ذِكْرٰىهَا ۝ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ۝ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ۝
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ۝ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۝

80 सूरतु अ़-ब-स 24

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 553 अक्षर, 113 शब्द, 42 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

(नोटः इस सूरः से लेकर पारः के आख़िर तक हर सूरः एक ही रुकूअ़ की है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ़-ब-स व तवल्ला (1) अन् जा-अहुल् अअ़्मा (2) व मा युद्री-क ल-अ़ल्लहू

निशानी दिखलाई। **(20)** तो उस (फ़िरऔ़न) ने उनको झुठलाया और (उनका) कहना न माना। **(21)** फिर (मूसा अ़लैहिस्सलाम से) अलग होकर (उनके ख़िलाफ़) कोशिश करने लगा **(22)** और (लोगों को) जमा किया फिर (उनके सामने) बुलन्द आवाज़ से तक़रीर की **(23)** और कहा कि मैं तुम्हारा आला रब हूँ। **(24)** सो अल्लाह तआ़ला ने उसको आख़िरत के और दुनिया के अ़ज़ाब में पकड़ा।[1] **(25)** बेशक (इस वाक़िए में) ऐसे शख़्स के लिए बड़ी इबरत है जो अल्लाह तआ़ला से डरे। **(26)** ❖

भला तुम्हारा (दूसरी बार) पैदा करना (अपने आप में) ज़्यादा सख़्त है या आसमान का?[2] अल्लाह तआ़ला ने उसको बनाया। **(27)** (इस तरह से कि) उसकी छत को बुलन्द किया और उसको दुरुस्त बनाया (कि कहीं उसमें नुक़्स और दरार नहीं) **(28)** और उसकी रात को अंधेरी बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया।[3] **(29)** और उसके बाद ज़मीन को बिछाया **(30)** (और बिछाकर) उससे उसका पानी और चारा निकाला। **(31)** और पहाड़ों को (उसपर) क़ायम कर दिया **(32)** तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के फ़ायदा पहुँचाने के लिए। **(33)** सो जब वह बड़ा हंगामा आएगा **(34)** यानी जिस दिन इनसान अपने किए को याद करेगा **(35)** और देखने वालों के सामने दोज़ख़ ज़ाहिर की जाएगी **(36)** तो (उस दिन यह हालत होगी कि) जिस शख़्स ने (हक़ से) सरकशी की होगी **(37)** और (आख़िरत का मुन्किर होकर) दुनियावी ज़िन्दगी को तरजीह दी होगी **(38)** सो दोज़ख़ (उसका) ठिकाना होगा। **(39)** और जो शख़्स (दुनिया में) अपने परवर्दिगार के सामने खड़ा होने से डरा होगा और नफ़्स को (हराम) ख़्वाहिश से रोका होगा[4] **(40)** सो जन्नत उसका ठिकाना होगा। **(41)** ये लोग आपसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब आएगी?[5] **(42)** (सो) उसके बयान करने से आपका क्या ताल्लुक़ **(43)** उस (के इल्म को मुतैयन करने) का मदार सिर्फ़ आपके परवर्दिगार की तरफ़ है **(44)** (और) आप तो सिर्फ़ (उसकी मुख़्तसर ख़बर देकर) ऐसे शख़्स को डराने वाले हैं जो उससे डरता हो। **(45)** जिस दिन ये उसको देखेंगे तो (उनको) ऐसा मालूम होगा कि गोया (दुनिया में) सिर्फ़ एक दिन के आख़िरी हिस्से में या उसके अव्वल हिस्से में रहे हैं।[6] **(46)** ❖

80 सूरः अ़-ब-स 24

सूरः अ़-ब-स मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 42 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

(नोटः- अब पारे के आख़िर तक हर सूरः एक ही रुकूअ़ की है।)

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

पैग़म्बर[7] (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के चेहरे पर नागवारी के असरात ज़ाहिर हो गए और मुतवज्जह न हुए **(1)** इस बात से कि उनके पास अंधा आया।[8] **(2)** और आपको क्या ख़बर शायद नाबीना "यानी अंधा" (आपकी तालीम से पूरे तौर पर) सँवर जाता। **(3)** या (किसी ख़ास मामले में) नसीहत क़बूल करता,

---

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. मुराद सूरज है, जैसे कि अल्लाह तआ़ला का क़ौल है- 'व ज-अ़लश्शम्-स सिराजन्'।

5. और इन सबसे हमारा कामिल क़ुदरत वाला होना ज़ाहिर है। फिर क़ियामत पर हमारे क़ादिर होने का क्यों इनकार किया जाता है?

6. यानी आसमान इस क़द्र बहुत सारा खुल जाएगा जैसे बहुत-से दरवाज़े मिलाकर बहुत-सी जगह खुली होती है। पस यह कलाम तश्बीह पर आधारित है, अब यह शुब्हा नहीं हो सकता कि आसमान में दरवाज़े तो अब भी हैं फिर उस दिन दरवाज़े होने के क्या मायने? और यह खुलना फ़रिश्तों के नाज़िल होने के लिए होगा जैसा कि सूरः फ़ुरक़ान में 'त-शक़्क़क़ुस्समा-उ' से ताबीर फ़रमाया है।

(पृष्ठ 1068 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1070, 1072 की तफ़सीर पृष्ठ 1074-1081 पर)

यज़्ज़क्का **(3)** औ यज़्ज़क्करु फ़-तन्फ़-अ़हुज़्ज़िक्रा **(4)** अम्मा मनिस्तग़्ना **(5)** फ़-अन्-त लहू तसद्दा **(6)** व मा अ़लै-क अल्ला यज़्ज़क्का **(7)** व अम्मा मन् जा-अ-क यस्आ **(8)** व हु-व यख़्शा **(9)** फ़-अन्-त अ़न्हु त-लह्हा **(10)** कल्ला इन्नहा तज़्कि-रतुन् **(11)** फ़-मन् शा-अ ज़-करह् ∴ **(12)** फ़ी सुहुफ़िम्-मुकर्र-मतिम्- **(13)** -मर्फ़ू-अ़तिम् मुतह्ह-रतिम् **(14)** बिऐदी स-फ़-रतिन् **(15)** किरामिम् ब-र-रह् **(16)** क़ुतिलल्-इन्सानु मा अक्-फ़रह् **(17)** मिन् अय्यि शैइन् ख़-लक़ह् **(18)** मिन् नुत्फ़तिन्, ख़-ल-क़हू फ़-क़द्द-रहू **(19)** सुम्मस्सबी-ल यस्स-रहू **(20)** सुम्-म अमातहू फ़-अक़्ब-रहू **(21)** सुम्-म इज़ा शा-अ अन्श-रह् **(22)** कल्ला लम्मा यक़्ज़ि मा अ-मरह् **(23)** फ़ल्यन्ज़ुरिल्- इन्सानु इला तआ़मिही **(24)** अन्ना स-बब्नल्-मा-अ सब्बा **(25)** सुम्-म शक़क़्नल्-अर्-ज़ शक़्क़ा **(26)** फ़-अम्बत्ना फ़ीहा हब्बंव्- **(27)** -व अि़-नबंव्-व क़ज़्बंव्- **(28)** -व ज़ैतूनंव्-व नख़्लंव्- **(29)** -व हदाइ-क़ ग़ुल्बंव्- **(30)** व फ़ाकि-हतंव्-व अब्बम्- **(31)** -मताअ़ल्-लकुम् व लि-अन्आ़मिकुम् **(32)** फ़-इज़ा जा-अतिस्साख़्ख़ह् **(33)** यौ-म यफ़िर्रुल्-मर्उ मिन् अख़ीहि **(34)** व उम्मिही व अबीहि **(35)** व साहि-बतिही व बनीह् **(36)** लि-कुल्लिम्-रिइम् मिन्हुम् यौमइज़िन् शअ्नुंय्-युग़्नीह् **(37)** वुजूहुंय्-यौमइज़िम् मुस्फ़ि-रतुन् **(38)** ज़ाहि-कतुम् मुस्तब्शि-रतुन् **(39)** व वुजूहुंय्-यौमइज़िन् अ़लैहा ग़-ब-रतुन् **(40)** तर्-हक़ुहा क-तरह् **(41)** उलाइ-क हुमुल् क-फ़-रतुल् फ़-जरह् **(42)** ❖

عبس ٨٠ ٥٣٢ عمّ ٣٠

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَىٰ ۝ أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ ۝ فَأَنْتَ لَهُ
تَصَدَّىٰ ۝ وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ۝ وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَىٰ ۝
وَهُوَ يَخْشَىٰ ۝ فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ۝ كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ
شَاءَ ذَكَرَهُ ۝ فِي صُحُفٍ مُكَرَّمَةٍ ۝ مَرْفُوعَةٍ مُطَهَّرَةٍ ۝ بِأَيْدِي
سَفَرَةٍ ۝ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝ قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ۝ مِنْ أَيِّ
شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝ ثُمَّ السَّبِيلَ
يَسَّرَهُ ۝ ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ۝ كَلَّا لَمَّا
يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ۝ أَنَّا صَبَبْنَا
الْمَاءَ صَبًّا ۝ ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝
وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝ وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۝ وَفَاكِهَةً
وَأَبًّا ۝ مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝ فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ۝
يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ وَ
بَنِيهِ ۝ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝ وُجُوهٌ
يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ۝ وَوُجُوهٌ
يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝

منزل ٧

सो उसको नसीहत करना (कुछ न कुछ) फ़ायदा पहुँचाता। **(4)** तो जो शख़्स (दीन से) बेपरवाई करता है **(5)** आप उसकी तो फ़िक्र में पड़ते हैं **(6)** हालाँकि आप पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि वह न सँवरे। **(7)** और जो शख़्स आपके पास (दीन के शौक़ में) दौड़ता हुआ आता है **(8)** और वह (खुदा से) डरता है **(9)** आप उससे बेतवज्जोही करते हैं। **(10)** (आप आइन्दा) हरगिज़ ऐसा न कीजिए। कुरआन (सिर्फ़ एक) नसीहत की चीज़ है। **(11)** सो जिसका जी चाहे उसको क़बूल कर ले। **(12)** वह (कुरआन लौहे-महफ़ूज़ के) ऐसे सहीफ़ों में (लिखा हुआ) है जो (अल्लाह के नज़दीक) मुकर्रम "यानी सम्मानित" हैं। **(13)** बुलन्द रुतबे वाले हैं, मुक़द्दस हैं। **(14)** जो ऐसे लिखने वालों (यानी फ़रिश्तों) के हाथों में (रहते) हैं **(15)** कि वे मुकर्रम (और) नेक हैं। **(16)** आदमी पर (जो ऐसे तज़्किरे से नसीहत हासिल न करे) खुदा की मार, वह कैसा नाशुक्रा है। **(17)** (वह देखता नहीं कि) अल्लाह ने उसको कैसी (बेवक़्अत) चीज़ से पैदा किया। **(18)** (आगे जवाब है कि) नुत्फ़े से (पैदा किया। आगे उसकी कैफ़ियत का ज़िक्र है कि) उसकी सूरत बनाई, फिर उस (के जिस्मानी अंगों) को अन्दाज़ से बनाया। **(19)** फिर उसके (निकलने का) रास्ता आसान कर दिया। **(20)** फिर (उम्र ख़त्म होने के बाद) उसको मौत दी, फिर उसको क़ब्र में ले गया। **(21)** फिर जब अल्लाह चाहेगा उसको दोबारा ज़िन्दा करेगा। **(22)** हरगिज़ (शुक्र नहीं अदा किया और) उसको जो हुक्म किया था उसपर अ़मल नहीं किया। **(23)** सो इनसान को चाहिए कि अपने खाने की तरफ़ नज़र करे **(24)** कि हमने अ़जीब तौर पर पानी बरसाया। **(25)** फिर अ़जीब तौर पर ज़मीन को फाड़ा **(26)** फिर हमने पैदा किया उसमें ग़ल्ला **(27)** और अंगूर और तरकारी **(28)** और ज़ैतून और खजूर **(29)** और घने बाग़ **(30)** और मेवे और चारा। **(31)** (बाज़ चीज़ें) तुम्हारे और (बाज़ चीज़ें) तुम्हारे मवेशियों के फ़ायदे के लिए। **(32)** (अब तो ये नाशुक्री और कुफ़्र करते हैं) फिर जिस वक़्त कानों को बहरा कर देने वाला शोर बर्पा होगा **(33)** जिस दिन ऐसा आदमी भागेगा (जिसका ऊपर बयान हुआ), अपने भाई से **(34)** और अपनी माँ से और अपने बाप से **(35)** और अपनी बीवी से और अपनी औलाद से। (यानी कोई किसी की हमदर्दी न करेगा)। **(36)** उनमें हर शख़्स को (अपना ही) ऐसा मश्ग़ला होगा जो उसको दूसरी तरफ़ मुतवज्जह न होने देगा। **(37)** (यह तो काफ़िरों का हाल हुआ, आगे मजमूई तौर पर मोमिनों और काफ़िरों की तफ़सील है कि) बहुत-से चेहरे उस दिन (ईमान की वजह से) रोशन **(38)** (और ख़ुशी से) खिले हुए होंगे **(39)** और बहुत-से चेहरों पर उस दिन (कुफ़्र की वजह से) स्याही छाई होगी। **(40)** (और उस स्याही के साथ) उनपर (ग़म की) कदूरत "यानी मलाल व रन्जीदगी" छाई होगी। **(41)** यही लोग काफ़िर-फ़ाजिर हैं। **(42)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. और ये वाक़िआत दूसरी बार सूर फूँकने के वक़्त होंगे। अलबत्ता पहाड़ चलाए जाने में इस सूरः में भी और दूसरी जगह भी जहाँ-जहाँ आया है दोनों एहतिमाल हैं, या तो दूसरी बार सूर फूँकने के बाद कि उससे पूरी दुनिया फिर अपनी हालत पर वापस आ जाएगी, जब हिसाब का वक़्त आएगा तो पहाड़ों को ज़मीन के बराबर कर दिया जाएगा, ताकि ज़मीन पर कोई पहाड़ आड़ न रहे, सब एक ही मैदान में नज़र आएँ। और या यह कि पहली बार सूर फूँकने से दूसरी बार सूर फूँकने तक के मजमूए को एक दिन क़रार दे लिया गया। अल्लाह ही ख़ूब जानते हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1070) 1. यहाँ कई सिफ़तें इरशाद फ़रमाई हैं- 'रब्बिस्समावाति.....आख़िर तक' जो दलालत करता है क़ियामत के दिन के वाक़िए पर मालिक और क़ब्ज़ा व इख़्तियार वाला होने पर, और रहमान जो मोमिनों को जज़ा देने के मुनासिब है। और 'ला यम्लिकू-न.....आख़िर तक' जो काफ़िरों को ख़ौफ़ दिलाने के मुनासिब है।

2. ठीक बात से वह बात मुराद है जिसकी इजाज़त दी गई हो, यानी बोलना भी सीमित और शर्त के साथ होगा, यह नहीं कि जो चाहे

3. और यह उस वक़्त कहेगा जबकि इनसान व जिन्नात के अ़लावा दूसरे जानदारों को आपस में बदला दिलाने के बाद मिट्टी कर दिया जाएगा। **(पृष्ठ 1070 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1072 की तफ़सीर पृष्ठ 1076-1081 पर)**

81 सूरतुत्-तक्वीरि 7

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 436 अक्षर, 104 शब्द और 29 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़श्शमुसु कुव्विरत् **(1)** व इज़न्नुजूमुन्-क-दरत् **(2)** व इज़ल्-जिबालु सुय्यिरत् **(3)** व इज़ल्-अिशारु अुत्तिलत् **(4)** व इज़ल्-वुहूशु हुशिरत् **(5)** व इज़ल्-बिहारु सुज्जिरत् **(6)** व इज़न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् **(7)** व इज़ल्-मौऊ-दतु सुअिलत् **(8)** बिअय्यि ज़म्बिन् क़ुतिलत् **(9)** व इज़स्सुहुफ़ु नुशिरत् **(10)** व इज़स्समा-उ कुशितत् **(11)** व इज़ल्-जहीमु सुअ्अिरत् **(12)** व इज़ल्-जन्नतु उज़्लिफ़त् **(13)** अ़लिमत् नफ़्सुम्-मा अह्-ज़रत् **(14)** फ़ला उक़्सिमु बिल्ख़ुन्नसिल्- **(15)** -जवारिल्-कुन्नस **(16)** वल्-लैलि इज़ा अ़स्-अ़-स **(17)** वस्सुब्हि इज़ा त-नफ़्फ़-स **(18)** इन्नहू ल-क़ौलु रसूलिन् करीम **(19)** ज़ी क़ुव्वतिन् अ़िन्-द ज़िल्-अ़र्शि मकीन **(20)** मुताअिन् सम्-म अमीन **(21)** व मा साहिबुकुम् बिमज्नून **(22)** व ल-क़द् रआहु बिल्-उफ़ुक़िल्-मुबीन **(23)** व मा हु-व अ़लल्-ग़ैबि बि-ज़नीन **(24)** व मा हु-व बिक़ौलि शैतानिर्-रजीम **(25)** फ़ऐ-न तज़्हबून **(26)** इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल् लिल्-आ़लमीन **(27)** लिमन् शा-अ मिन्कुम् अंय्यस्तक़ीम **(28)** व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन **(29)** ❖

التكوير٨١ الانفطار٨٢ ٥٣٣ عم٣٠

سورة التكوير مكية بسم الله الرحمن الرحيم هي تسع وعشرون اية
إذا الشمس كورت ﴿١﴾ وإذا النجوم انكدرت ﴿٢﴾ وإذا الجبال
سيرت ﴿٣﴾ وإذا العشار عطلت ﴿٤﴾ وإذا الوحوش حشرت ﴿٥﴾ و
إذا البحار سجرت ﴿٦﴾ وإذا النفوس زوجت ﴿٧﴾ وإذا الموءدة
سئلت ﴿٨﴾ بأي ذنب قتلت ﴿٩﴾ وإذا الصحف نشرت ﴿١٠﴾ وإذا
السماء كشطت ﴿١١﴾ وإذا الجحيم سعرت ﴿١٢﴾ وإذا الجنة أزلفت ﴿١٣﴾
علمت نفس ما أحضرت ﴿١٤﴾ فلا أقسم بالخنس ﴿١٥﴾ الجوار
الكنس ﴿١٦﴾ والليل إذا عسعس ﴿١٧﴾ والصبح إذا تنفس ﴿١٨﴾ إنه
لقول رسول كريم ﴿١٩﴾ ذي قوة عند ذي العرش مكين ﴿٢٠﴾
مطاع ثم أمين ﴿٢١﴾ وما صاحبكم بمجنون ﴿٢٢﴾ ولقد رآه
بالأفق المبين ﴿٢٣﴾ وما هو على الغيب بضنين ﴿٢٤﴾ وما هو
بقول شيطن رجيم ﴿٢٥﴾ فأين تذهبون ﴿٢٦﴾ إن هو إلا ذكر
للعلمين ﴿٢٧﴾ لمن شاء منكم أن يستقيم ﴿٢٨﴾ وما تشاءون
إلا أن يشاء الله رب العلمين ﴿٢٩﴾
سورة الانفطار مكية بسم الله الرحمن الرحيم هي تسع عشرة اية
إذا السماء انفطرت ﴿١﴾ وإذا الكواكب انتثرت ﴿٢﴾ وإذا البحار

منزل٧

82 सूरतुल्-इन्फ़ितारि 82

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 334 अक्षर, 80 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़स्समा-उन्-फ़-तरत् **(1)** व इज़ल्-कवाकिबुन् त-सरत् **(2)** व इज़ल्-बिहारु

81 सूरः तक्वीर 7

सूरः तक्वीर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 29 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब सूरज बेनूर हो जाएगा। **(1)** और जब सितारे टूट-टूटकर गिर पड़ेंगे। **(2)** और जब पहाड़ चलाए जाएँगे। **(3)** और जब दस महीने की गाभन ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी। **(4)** और जब जंगली जानवर (घबराहट के मारे) सब जमा हो जाएँगे। **(5)** और जब दरिया भड़काए जाएँगे।[1] **(6)** और जब एक-एक किस्म के लोग इकट्ठे किए जाएँगे। **(7)** और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा **(8)** कि वह किस गुनाह पर कत्ल की गई थी। **(9)** और जब आमालनामे खोले जाएँगे (ताकि सब अपने-अपने अमल देख लें)। **(10)** और जब आसमान खुल जाएगा (और उसके खुलने से आसमान की ऊपर की चीज़ें नज़र आने लगेंगी)। **(11)** और जब दोज़ख़ (और ज़्यादा) दहकाई जाएगी। **(12)** और जब जन्नत करीब कर दी जाएगी। **(13)** (तो उस वक़्त) हर शख़्स उन आमाल को जान लेगा जो लेकर आया है। **(14)** (और जब ऐसा होलनाक वाक़िआ होने वाला है) तो मैं क़सम खाता हूँ उन सितारों की जो (सीधे चलते-चलते) पीछे को हटने लगते हैं। **(15)** (और फिर पीछे ही को) चलते रहते हैं (और अपने निकलने की जगहों में) जा छुपते हैं। **(16)** और क़सम है रात की जब वह जाने लगे। **(17)** और क़सम है सुबह की जब वह आने लगे। **(18)** (आगे क़सम का जवाब है) कि यह कुरआन (अल्लाह तआला का) कलाम है। **(19)** एक इज़्ज़त वाला फ़रिश्ते (यानी जिबराईल अलैहिस्सलाम का लाया हुआ जो कुव्वत वाला है और) अर्श के मालिक के नज़दीक रुतबे वाला है। **(20)** (और) वहाँ (यानी आसमानों में) उसका कहना माना जाता है[2] (और वह) अमानतदार हैं।[3] **(21)** कि (वह्य को सही-सही पहुँचा देते हैं।) और यह तुम्हारे साथ के रहने वाले (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मजनूँ नहीं हैं। **(22)** उन्होंने उस फ़रिश्ते को (असली सूरत में आसमान के) साफ़ किनारे पर देखा भी है।[4] **(23)** और यह पैग़म्बर पोशीदा (बतलाई हुई वह्य की) बातों पर कन्जूसी करने वाले भी नहीं।[5] **(24)** और यह कुरआन किसी शैतान मरदूद की कही हुई बात नहीं है।[6] **(25)** (जब यह साबित है) तो तुम लोग (इस बारे में) किधर को चले जा रहे हो? **(26)** बस यह तो (उमूमन) दुनिया जहान वालों के लिए एक बड़ा नसीहत की किताब है। **(27)** (और ख़ास तौर से) ऐसे शख़्स के लिए जो तुममें से सीधा चलना चाहे। **(28)** औरे तुम बग़ैर खुदा-ए-रब्बुल आलमीन के चाहे कुछ नहीं चाह सकते।[7] **(29)** ❖

82 सूरः इन्फ़ितार 82

सूरः इन्फ़ितार मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब आसमान फट जाएगा। **(1)** और जब सितारे (टूटकर) झड़ पड़ेंगे **(2)** और सब दरिया (मीठे व

(पिछले पृष्ठ का शेष) यह रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से दुर्रे मन्सूर में बयान की गई है। या वह मायने मुराद हों जो सूरः निसा में "लौ तुसव्वा बिहिमुल अर्ज़ु" (कि काश! हम ज़मीन के पैवन्द हो जाते) में गुज़रे हैं।

4. "वन्नाज़िआति, वन्नाशिताति" से यह शुब्हा न किया जाए कि कभी-कभी काफ़िरों का मौत का वक़्त आसान और मोमिनों का सख़्त देखा जाता है। **(पृष्ठ 1070 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1072, 1076 की तफ़सीर पृष्ठ 1078-1081 पर)**

फ़ुज्जिरत् (3) व इज़ल्-क़ुबूरु बुअ़्सिरत् (4) अ़लिमत् नफ़्सुम्-मा क़द्द-मत् व अख़्ख़-रत् (5) या अय्युहल्-इन्सानु मा ग़र्-र-क बिरब्बिकल्-करीम (6) अल्लज़ी ख़-ल-क़्-क फ़-सव्वा-क फ़-अ़्-द-लक् (7) फ़ी अय्यि सू-रतिम् मा शा-अ रक्क-बक् (8) कल्ला बल् तुकज़्ज़िबू-न बिद्दीनि (9) व इन्-न अ़लैकुम् लहाफ़िज़ीन (10) किरामन् कातिबीन (11) यअ़्लमू-न मा तफ़्अ़लून (12) इन्नल्-अब्रा-र लफ़ी नअ़ीम (13) व इन्नल् फ़ुज्जा-र लफ़ी जहीम (14) यस्लौनहा यौमद्दीन (15) व मा हुम् अ़न्हा बिग़ा-इबीन (16) व मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (17) सुम्-म मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (18) यौ-म ला तम्लिकु नफ़्सुल्-लिनफ़्सिन् शैआ, वल्अम्रु यौमइज़िल्-लिल्लाह् ◆ (19) ❖

83 सूरतुल्-मुतफ़्फ़िफ़ी-न 86

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 758 अक्षर, 172 शब्द और 36 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वैलुल्-लिल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन (1) अल्लज़ी-न इज़क्तालू अ़लन्नासि यस्तौफ़ून (2) व इज़ा कालूहुम् अव्-ज़नूहुम् युख़्सिरून (3) अला यज़ुन्नु उलाइ-क अन्नहुम् मब्अ़ूसून (4) लियौमिन् अ़ज़ीम (5) यौ-म यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल्-आ़लमीन (6) कल्ला इन्-न किताबल्-फ़ुज्जारि लफ़ी सिज्जीन (7) व मा अद्रा-क मा सिज्जीन (8) किताबुम्-मर्क़ूम (9) वैलुंय्यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (10) अल्लज़ी-न युकज़्ज़िबू-न बियौमिद्दीन (11) व मा युकज़्ज़िबु बिही इल्ला कुल्लु मअ़्-तदिन् असीम (12) इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल्-अव्वलीन (13) कल्ला बल्-रा-न अ़ला क़ुलूबिहिम्-मा कानू यक्सिबून (14) कल्ला इन्नहुम् अ़र्रब्बिहिम् यौमइज़िल्-लमह्जूबून (15) सुम्-म इन्नहुम्

فُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَ
أَخَّرَتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝ الَّذِي
خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝
كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا
كَاتِبِينَ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ وَ
إِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا
بِغَائِبِينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ
الدِّينِ ۝ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ۝
سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ سِتٌّ وَثَلَاثُونَ آيَةً
وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝
وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم
مَّبْعُوثُونَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝
كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ
بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ إِذَا
تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ كَلَّا بَلْ رَانَ

नमकीले) बह पड़ेंगे (3) और जब क़ब्रें उखाड़ी जाएँगी (यानी उनके मुर्दे निकल खड़े होंगे)। (4) (उस वक़्त) हर शख़्स अपने अगले और पिछले आमाल को जान लेगा। (5) ऐ इनसान! तुझको किस चीज़ ने तेरे ऐसे रब्बे करीम के साथ भूल में डाल रखा है (6) जिसने तुझको (इनसान) बनाया, फिर तेरे जिस्मानी अंगों को दुरुस्त किया, फिर तुझको (मुनासिब) एतिदाल पर बनाया। (7) (और) जिस सूरत में चाहा तुझको तरकीब दे दिया।[1] (8) (इन सब उमूर का तक़ाज़ा यह है कि तुमको) हरगिज़ (मग़रूर) नहीं (होना चाहिए, मगर तुम बाज़ नहीं आते) बल्कि तुम (इस वजह से धोखे में पड़ गए हो कि तुम) जज़ा व सज़ा (ही) को झुठलाते हो। (9) और तुमपर (तुम्हारे सब आमाल) याद रखने वाले, (10) इज़्ज़त वाले, लिखने वाले मुक़र्रर हैं। (11) जो तुम्हारे सब कामों को जानते हैं। (12) नेक लोग बेशक आराम में होंगे (13) और बदकार (यानी काफ़िर) लोग बेशक दोज़ख़ में होंगे। (14) बदले के दिन उसमें दाख़िल होंगे। (15) और (फिर दाख़िल होकर) उससे बाहर न होंगे (बल्कि उसमें हमेशा रहना होगा)। (16) और आपको कुछ ख़बर है कि वह बदले का दिन कैसा है? (17) (और हम) फिर (दोबारा कहते हैं कि) आपको कुछ ख़बर है कि वह बदले का दिन कैसा है? (18) वह दिन ऐसा है जिसमें किसी शख़्स के नफ़े के लिए कुछ बस न चलेगा और पूरी की पूरी हुकूमत उस दिन अल्लाह ही की होगी। ◆ (19) ❖

83 सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन 86

सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 36 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बड़ी ख़राबी है नाप-तौल में कमी करने वालों की (1) कि जब लोगों से (अपना हक़) नापकर लें तो पूरा लें (2) और जब उनको नापकर या तौलकर दें तो घटा कर दें।[2] (3) (आगे नाप-तौल में कमी करने वालों को धमकाया और तंबीह की जा रही है कि) क्या उन लोगों को इसका यक़ीन नहीं है कि ज़िन्दा करके उठाए जाएँगे (4) एक बड़े दिन में। (5) जिस दिन तमाम आदमी रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। (6) हरगिज़ (ऐसा) नहीं होगा, (यानी काफ़िर) लोगों का आमालनामा 'सिज्जीन' में रहेगा।[3] (7) और (आगे डराने के लिए सवाल है कि) आपको कुछ मालूम है कि 'सिज्जीन' में रखा हुआ आमालनामा क्या चीज़ है? (8) वह एक निशान किया हुआ दफ़्तर है। (9) उस दिन (यानी क़ियामत के दिन) झुठलाने वालों को बड़ी ख़राबी होगी। (10) जो जज़ा के दिन को झुठलाते हैं। (11) और उस (बदले के दिन को तो वही शख़्स झुठलाता है जो बन्दगी की हद) से गुज़रने वाला हो (और) मुज्रिम हो। (12) (और) जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाएँ तो यूँ कह देता हो कि बे-सनद बातें हैं, अगलों से नक़ल होती हुई चली आती हैं। (13) हरगिज़ (ऐसा)

(पिछले पृष्ठ का शेष) असल यह है कि यह सख़्ती और सहूलत ज़ाहिरी जिस्म पर होती है और आयत में रूहानी व हक़ीक़ी सख़्ती और सहूलत मुराद है।

5. यानी क्या मरने के बाद फिर दोबारा ज़िन्दा होना होगा? असल इसका मुहाल होना ज़ाहिर करना मक़सद है।

6. क्योंकि हमने तो उसके लिए कुछ सामान नहीं किया। मक़सद इससे अहले हक़ के इस अक़ीदे का मज़ाक़ और हँसी उड़ाना था। यानी मुसलमानों के अक़ीदे पर तो हम बड़े ख़सारे में होंगे। जैसे कोई शख़्स किसी को ख़ैरख़्वाही से डराए कि इस रास्ते से मत जाना शेर मिलेगा

(पृष्ठ 1070 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1072, 1076, 1078 की तफ़सीर पृष्ठ 1080-1082 पर)

लसालुल्-जहीम (16) सुम्-म युक़ालु हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (17) कल्ला इन्-न किताबल्- अब्रारि लफ़ी अ़िल्लिय्यीन (18) व मा अद्रा-क मा अ़िल्लिय्यून (19) किताबुम्-मर्क़ूम (20) यश्-हदुहुल्- मुक़र्रबून (21) इन्नल्-अब्रा-र लफ़ी नओ़ीम (22) अ़लल् अरा-इकि यन्ज़ुरून (23) तअ़्रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम् नज़्-रतन्-नओ़ीम (24) युस्क़ौ-न मिर्रहीक़िम्-मख़्तूम (25) ख़ितामुहू मिस्क, व फ़ी ज़ालि-क फ़ल्य-तनाफ़सिल्-मु-तनाफ़िसून (26) व मिज़ाजुहू मिन् तस्नीम (27) अ़ैनंय्-यश्रबु बिहल्- मुक़र्रबून (28) इन्नल्लज़ी-न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी-न आमनू यज़्-हकून (29) व इज़ा मर्रू बिहिम् य-तग़ा-मज़ून (30) व इज़न्-क़-लबू इला अह्लिहिमुन्क़्-लबू फ़किहीन (31) व इज़ा रऔहुम् क़ालू इन्-न हा-उला-इ लज़ाल्लून (32) व मा उर्सिलू अ़लैहिम् हाफ़िज़ीन (33) फ़ल्यौमल्लज़ी-न आमनू मिनल्-कुफ़्फ़ारि यज़्हकून (34) अ़लल्-अरा-इकि यन्ज़ुरून (35) हल् सुव्विबल्-कुफ़्फ़ारु मा कानू यफ़्अ़लून (36) ❖

الانشقاق ٨٤ ٥٣٥ عم ٣٠

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ
لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ
كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۝ وَ
مَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝
اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝ عَلَى الْاَرَآىِٕكِ يَنْظُرُوْنَ ۝ تَعْرِفُ فِيْ
وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝ خِتٰمُهٗ
مِسْكٌ ۝ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ۝ وَمِزَاجُهٗ مِنْ
تَسْنِيْمٍ ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا
كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۝ وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ۝
وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا
اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ۝ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ۝ فَالْيَوْمَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ۝ عَلَى الْاَرَآىِٕكِ يَنْظُرُوْنَ ۝
هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝
سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هِيَ خَمْسٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً
اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۝ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَاِذَا الْاَرْضُ
مُدَّتْ ۝ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۝ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝

منزل

84 सूरतुल्-इन्शिक़ाक़ि 83

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 448 अक्षर, 108 शब्द और 25 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़स्समाउन्-शक़्क़त् (1) व अज़िनत् लिरब्बिहा व हुक़्क़त (2) व इज़ल्-अर्ज़ु मुद्दत् (3) व अल्क़त् मा फ़ीहा व त-ख़ल्लत् (4) व अज़िनत् लिरब्बिहा व हुक़्क़त् (5) या अय्युहल्-इन्सानु इन्न-क कादिहुन् इला रब्बि-क कद्हन् फ़मुलाक़ीहि (6) फ़-अम्मा मन्
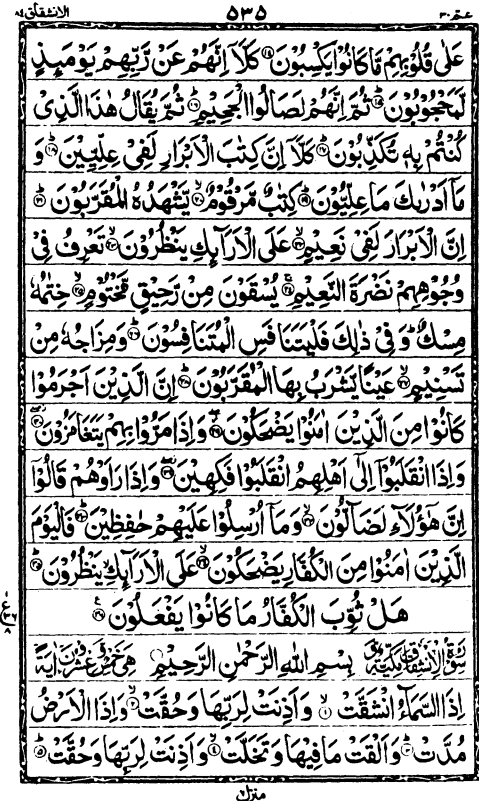
नहीं बल्कि (उनके झुठलाने की असल वजह यह है कि) उनके दिलों पर उनके (बुरे) आमाल का ज़ंग बैठ गया है। **(14)** हरगिज़ (ऐसा) नहीं, ये लोग उस दिन (एक तो) अपने रब (का दीदार देखने) से रोक दिए जाएँगे। **(15)** फिर (सिर्फ़ इसीपर बस न होगा बल्कि) ये दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। **(16)** फिर (उनसे) कहा जाएगा, यही है जिसको तुम झुठलाया करते थे। **(17)** (ये जो मोमिनों के अज्र व सवाब का इनकार करने वाले हैं) हरगिज़ (ऐसा) नहीं, नेक लोगों का आमालनामा इल्लिय्यीन में रहेगा।[1] **(18)** और (आगे बड़ाई व रुतबा जताने के लिए सवाल है कि) आपको कुछ मालूम है कि इल्लिय्यीन में रखा हुआ आमालनामा क्या चीज़ है? **(19)** वह एक निशान किया हुआ दफ़्तर है **(20)** जिसको मुक़र्रब फ़रिश्ते (शौक़ से) देखते हैं।[2] **(21)** (आगे उनके आख़िरत के बदले का बयान है कि) नेक लोग बड़ी राहत व आराम में होंगे। **(22)** मसहरियों पर (बैठे जन्नत की अजीब-अजीब चीज़ों को) देखते होंगे। **(23)** ऐ मुख़ातब! तू उनके चेहरों में राहत व आराम की ख़ुशी व ताज़गी देखेगा। **(24)** (और) उनको पीने के लिए मुहर-बन्द ख़ालिस शराब मिलेगी **(25)** जिसपर मुश्क की मुहर होगी।[3] और हिर्स करने वालों को ऐसी चीज़ की हिर्स करनी चाहिए।[4] **(26)** और उस (शराब) की मिलावट तसनीम (के पानी) की होगी। **(27)** यानी एक ऐसा चश्मा जिससे मुक़र्रब बन्दे पिएँगे। **(28)** (आगे मुसलमान और काफ़िर दोनों की दुनिया व आख़िरत का हाल मजमूई तौर पर बयान किया गया है, यानी) जो लोग मुज्रिम थे (यानी काफ़िर) वे ईमान वालों से (उनका अपमान करने के तौर पर दुनिया में) हँसा करते थे। **(29)** और ये (ईमान वाले) जब उन (काफ़िरों) के सामने से होकर गुज़रते थे तो आपस में आँखों से इशारे करते थे। **(30)** और जब अपने घरों में जाते तो (वहाँ भी उनका तज़्किरा करके) दिल्लगियाँ करते।[5] **(31)** और जब उनको देखते तो यूँ कहा करते कि ये लोग यक़ीनन ग़लती में हैं (क्योंकि काफ़िर लोग इस्लाम को ग़लती समझते थे)। **(32)** हालाँकि ये (काफ़िर) उन (मुसलमानों) पर निगरानी करने वाले करके नहीं भेजे गए। **(33)** सो आज (क़ियामत के दिन) ईमान वाले काफ़िरों पर हँसते होंगे। **(34)** मसहरियों पर (बैठे उनका हाल) देख रहे होंगे।[6] **(35)** वाक़ई काफ़िरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला। **(36)** ❖

84 सूरः इन्शिक़ाक़ 83

सूरः इन्शिक़ाक़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 25 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब (दूसरी बार सूर फूँकने के वक़्त) आसमान फट जाएगा (ताकि उसमें से बादल और फ़रिश्ते नाज़िल हों) **(1)** और अपने रब का हुक्म सुन लेगा[7] और वह (आसमान) इसी लायक़ है। **(2)** और जब ज़मीन खींचकर बढ़ा दी जाएगी[8] **(3)** और (वह ज़मीन) अपने अन्दर की चीज़ों (यानी मुर्दों) को बाहर उगल देगी और खाली हो जाएगी। **(4)** और अपने रबका हुक्म सुन लेगी, और वह इसी लायक़ है। **(5)** ऐ इनसान! तू

(पिछले पृष्ठ का शेष) और मुख़ातब झुठलाने के तौर पर किसी से कहे कि भाई उधर मत जाना शेर खा जाएगा। मतलब यह कि क़ियामत कोई चीज़ नहीं है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1072) 1. दुनियावी अ़ज़ाब तो डूबना है और आख़िरत का अ़ज़ाब आग में जलना है।

2. ज़ाहिर है कि तुम्हारे दूसरी बार पैदा करने से आसमान का पैदा करना ज़्यादा सख़्त है, फिर जब उसको पैदा कर दिया तो तुम्हारा दोबारा पैदा कर देना क्या मुश्किल है।

3. रात और दिन को आसमान की तरफ़ इसलिए मन्सूब किया कि रात और दिन सूरज के निकलने और छुपने से होते हैं और सूरज आसमान में है। **(पृष्ठ 1072 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1076, 1078, 1080 की तफ़सीर पृष्ठ 1081-1082 पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. यानी एतिक़ाद के साथ अ़मल भी नेक होगा। और नेक अ़मल जन्नत का रास्ता है, जन्नत उसपर मौक़ूफ़ नहीं।
5. काफ़िर लोग इनकार के मक़सद से क़ियामत का मुक़र्ररा वक़्त पूछा करते थे। आगे उसका जवाब है कि उसके बयान करने से आपका क्या ताल्लुक़? क्योंकि बयान तब किया जा सकता है जब इल्म हो, और जब उसका अल्लाह के अ़लावा किसी को इल्म नहीं तो कोई दूसरा उसका मुक़र्ररा वक़्त कैसे बयान कर सकता है?
6. यानी दुनिया की लम्बी मुद्दत छोटी-सी मालूम होगी और समझेंगे कि अ़ज़ाब जल्दी आ गया जिसकी ये दरख़्वास्त करते हैं। हासिल यह कि जल्दी क्यों करते हैं जब वह आएगा उसको जल्दी ही समझोगे, और जिस देर को अब देर समझ रहे हो यह देर मालूम न होगी।
7. जो लोग अपने कुफ़्र में ज़्यादा सख़्त थे उनको समझाने और सही राह पर लाने की कोशिश करने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कोफ़्त होती थी, यहाँ तक कि एक बार इसी बिना पर एक नाबीना (अंधे) सहाबी का ऐसे मौक़े पर आकर बोलना नागवारी का सबब हुआ था। इसलिए सूरः के शुरू में एक महबूबाना अन्दाज़ के साथ जिसको लोग नाराज़गी कहते हैं, इस क़द्र एहतिमाम व कोशिश से मना किया गया। और हक़ के सच्चे तालिबों के हाल पर तवज्जोह फ़रमाने का हुक्म फ़रमाते हैं।
8. एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुश्रिकों के बाज़ सरदारों को समझा रहे थे कि इतने में अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम नाबीना (यानी आँखों से महरूम) सहाबी हाज़िर हुए और कुछ पूछना शुरू किया। यह बात काटना आपको नागवार हुआ और आपने उनकी तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाई और नागवारी की वजह से आपके मुबारक चेहरे पर सलवटें पड़ गईं। जब आप उस मजलिस से उठकर घर जाने लगे तो ये आयतें नाज़िल हुईं। उसके बाद जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम आपके पास आते तो आप बड़ी ख़ातिर करते। (ये सारी रिवायतें दूर्रे मन्सूर से नक़ल की गई हैं)। इन आयतों में आपकी इज्तिहादी लग़ज़िश पर आपको अवगत करा दिया गया है। मन्शा इस इज्तिहाद का यह था कि यह बात तो यक़ीनी और साबित है कि अहम मुक़द्दम होता है, आपने कुफ़्र के सख़्त होने को अहमियत का सबब समझा। जैसे दो बीमारों में एक को हैज़ा और दूसरे को जुकाम है, तो हैज़ा वाले का इलाज मुक़द्दम होगा। लेकिन अल्लाह तआ़ला के इरशाद का हासिल यह है कि बीमारी का सख़्त होना उस वक़्त अहम है जब मरीज़ इलाज का मुख़ालिफ़ न हो, वरना जो इलाज का तालिब हो वह अहम और मुक़द्दम होगा चाहे बीमारी मामूली हो। इन आयतों से यह भी साबित होता है कि जिस शख़्स से उज़्र या जानकारी न होने के सबब कोई बेतमीज़ी सादिर हो जाए उससे मुँह फेरना या नाराज़ न होना चाहिए। और 'अअ़्मा' यानी अन्धे से ताबीर करना इस तरफ़ इशारा है कि वह ज़्यादा मेहरबानी और तवज्जोह के हक़दार हैं।
(तफ़सीर पृष्ठ 1076) **1.** यह छह वाक़िए तो पहली बार सूर फूँकने के वक़्त होंगे जबकि दुनिया आबाद होगी, और उस सूर फूँकने से ये तब्दीलियाँ होंगी, और उस वक़्त ऊँटनियाँ वग़ैरह भी अपनी-अपनी हालत पर होंगी जिनमें बाज़ बच्चा देने के क़रीब होंगी, जो कि अ़रब वालों के नज़दीक सबसे ज़्यादा प्यारा माल है। मगर उस वक़्त हलचल में किसी को कहीं का होश न रहेगा। और जंगली जानवर भी घबराहट के मारे सब गड्-मड् हो जाएँगे। और दरियाओं में पहले उफान आएगा और ज़मीन में दरारें पड़ जाएँगी जिससे सब मीठे और खारे दरिया एक हो जाएँगे। फिर सख़्त गर्मी के सबब सबका पानी एक तरह से आग बन जाएगा। उसके बाद आ़लम फ़ना हो जाएगा। और अगले छह वाक़िआत दूसरी बार सूर फूँकने के बाद होंगे।
2. यानी फ़रिश्ते उसका कहना मानते हैं।
3. अमानतदार है कि वह्य को सही-सही कुछ कमी-ज़्यादती किए बग़ैर पहुँचा देता है। पस वह्य लाने वाला तो ऐसा है। आगे जिनपर वह्य नाज़िल हुई उनके बारे में इरशाद है कि......(आगे तर्जुमा देखो)
4. साफ़ किनारे से बुलन्द किनारा मुराद है कि साफ़ नज़र आता है, इसका तफ़सीली बयान सूरः नज्म में गुज़रा है।
5. जैसा कि काहिनों की आ़दत थी कि रक़म लेकर कोई बात बतलाते थे, इससे आपके काहिन होने और इस्लाम की तब्लीग़ पर अज्र लेने की नफ़ी और इनकार भी हो गया।
6. इससे काहिन होने की नफ़ी और ताकीद हो गई। हासिल यह कि न आप मजनूँ हैं, न काहिन (यानी ग़ैब की झूठी-सच्ची ख़बरें देने वाले) हैं, न आपको कोई ग़रज़ है। और वह्य लाने वाले को पहचानते भी हैं जो अमानतदार है। पस ज़रूर यह अल्लाह का कलाम और आप अल्लाह के रसूल हैं। और ये क़िस्में जो ऊपर ज़िक्र हुईं इस मक़ाम के मतलब के बहुत ही मुनासिब हैं। चुनाँचे सितारों का सीधा चलना और लौटना और छुप जाना फ़रिश्तों के आने और वापस जाने और आ़लमे मलकूत में जा छुपने के मुशाबह है। और रात का गुज़रना और सुबह का आना क़ुरआन के मुशाबह है। इस सबब से कि इसके ज़रिए भी कुफ़्र का अंधेरा दूर होता और हिदायत की रोशनी फैलती है।
7. यानी अपने आपमें तो नसीहत है लेकिन इसकी तासीर अल्लाह की चाहत पर मौक़ूफ़ है, जो बाज़ लोगों के लिए मुताल्लिक़ होती है और बाज़ के लिए किसी हिक्मत से मुताल्लिक़ नहीं होती। **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष)

(तफ़सीर पृष्ठ 1078) **1.** यानी इनसान बनाने और दुरुस्त करने में मुश्तरक होने के बावजूद फिर अलग-अलग तौर पर पैदा किया। ''मा ग़र्र-क'' से पहले अन्जाम और आख़िर का और उसके बाद उसकी इब्तिदाई हालत के ज़िक्र की तरफ़ इशारा है कि अगरचे यह बात ग़ुरूर और धोखे में पड़ने से रोकने वाली हो लेकिन फिर भी ग़ुरूर और घमण्ड से बाज़ नहीं आता। और करीम की सिफ़त बयान करने से इस तरफ़ इशारा है कि करीम होना इस बात को चाहता है कि उसकी तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह की जाए।

2. अगरचे लोगों से अपना हक़ पूरा लेना बुरा नहीं है मगर उसके लेने से मक़सूद ख़ुद उसकी निन्दा करना नहीं है बल्कि कम देने पर निन्दा की ताकीद है। यानी कम देना अगरचे अपने आपमें बुरा है लेकिन उसके साथ अगर दूसरों की बिलकुल रियायत न की जाए तो और ज़्यादा बुरा है। बख़िलाफ़ रियायत करने वाले के कि अगर उसमें एक ऐब है तो एक हुनर भी है, इसलिए पहले शख़्स का ऐब ज़्यादा सख़्त है। और चूँकि असल मक़सूद कम देने की निन्दा करना है इसलिए उसमें नाप और तौल दोनों का ज़िक्र किया ताकि ख़ूब वज़ाहत हो जाए कि नापने में भी कम देते हैं, तौलने में भी कम देते हैं। और चूँकि पूरा लेना अपने आपमें बुराई का सबब नहीं है इसलिए वहाँ नाप और तौल दोनों का ज़िक्र नहीं किया बल्कि एक ही का ज़िक्र किया। फिर नापने को शायद इसलिए ख़ास किया हो कि अ़रब में ज़्यादा दस्तूर नापने का था।

3. सिज्जीन सातवीं ज़मीन में एक मक़ाम है जो काफ़िरों की रूहों का ठिकाना है, जैसा कि तफ़सीर इब्ने कसीर में हज़रत कअ़ब से और दुर्रे मन्सूर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास, मुजाहिद, क़तादा, फ़रक़द और अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़मर से मरफ़ूअ़न नक़ल किया गया है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1080) **1.** इल्लिय्यीन सातवें आसमान पर एक मक़ाम है जो मोमिनों की रूहों का ठिकाना है, जैसा कि तफ़सीर इब्ने कसीर में हज़रत कअ़ब से बयान किया गया है।

2. यह मोमिन के लिए बहुत बड़ा सम्मान है जैसा कि रूहुल-मआ़नी में हज़रत कअ़ब से रिवायत है कि जब फ़रिश्ते मोमिन की रूह को क़ब्ज़ करके ले जाते हैं तो हर आसमान के मुक़र्रब फ़रिश्ते उसके साथ होते जाते हैं यहाँ तक कि सातवें आसमान तक पहुँचकर उस रूह को रख देते हैं। फिर फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि हम इसका आमालनामा खोलकर देखना चाहते हैं। चुनाँचे वह आमालनामा खोलकर दिखलाया जाता है।

3. जैसे क़ायदा है कि लाख वग़ैरह लगाकर उसपर मुहर कर देते हैं और ऐसी चीज़ को 'तीन ख़िताम' कहते हैं। वहाँ शराब के मुँह पर कस्तूरी लगाकर उसपर मुहर कर दी जाएगी जो इस बात की निशानी होगी कि इस शराब में से न तो कुछ निकाली गई है और न बाहर की कोई चीज़ इसमें दाख़िल की गई है।

4. यानी हिर्स के लायक़ यह है, चाहे सिर्फ़ शराब मुराद ली जाए चाहे जन्नत की तमाम नेमतें, यानी हासिल करने के लायक़ ये नेमतें हैं न कि दुनिया की फ़ानी नेमतें। और उनके हासिल करने का तरीक़ा नेक आमाल हैं। पस उनमें बहुत ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए।

5. मतलब यह कि सामने और पीछे हर हालत में मोमिनों का अपमान करने और उनके मज़ाक़ उड़ाने का मश्ग़ला रहता। लेकिन जब सामने मौजूद होते तो इशारे चला करते और पीछे खुलकर बुराइयाँ करते, हालाँकि मुसलमानों का अपमान और हँसी उड़ाने के बजाय काफ़िरों को अपनी फ़िक्र करनी चाहिए थी। उन्होंने एक तो अहले हक़ का मज़ाक़ उड़ाया, फिर अपनी इस्लाह से बेफ़िक्र रहे।

6. दुर्रे मन्सूर में हज़रत क़तादा से रिवायत है कि कुछ दरीचे-झरोके ऐसे होंगे जिनसे जन्नत वाले दोज़ख़ियों को देख सकेंगे, पस उनका बुरा हाल देखकर बदला लेने के तौर पर हँसेंगे।

7. यहाँ हुक्म से मुराद फटने का हुक्म तक्वीनी है और मानने से मुराद उसका वाक़ेअ़ हो जाना है।

8. जिस तरह चमड़ा या रबड़ खींचा जाता है। पस ज़मीन अपनी मौजूदा मिक़्दार (यानी मात्रा) से बहुत ज़्यादा लम्बी-चौड़ी हो जाएगी ताकि शुरू से आख़िर तक की तमाम मख़्लूक़ उसपर समा सकें, जैसा कि दुर्रे मन्सूर में उम्दा सनद के साथ हाकिम की रिवायत से मरफ़ूअ़न आया है- ''क़ियामत के दिन ज़मीन चमड़े की तरह फैला दी जाएगी''। पस यह फटना और यह लम्बा होना दोनों हिसाब के मुक़द्दिमात में से हैं।

ऊति-य किताबहू बि-यमीनिही (7) फ़सौ-फ़ युहा-सबु हिसाबंय्-यसीरा (8) व यन्क़लिबु इला अह्लिही मस्रूरा (9) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू वरा-अ ज़ह्रिही (10) फ़सौ-फ़ यद्अू सुबूरा (11) व यस्ला सअ़ीरा (12) इन्नहू का-न फ़ी अह्लिही मस्रूरा (13) इन्नहू ज़न्-न अल्लंय्यहू-र (14) बला इन्-न रब्बहू का-न बिही बसीरा (15) फ़ला उक़्सिमु बिश्श-फ़क़ि (16) वल्लैलि व मा व-स-क़ (17) वल्क़-मरि इज़त्त-स-क़ (18) ल-तर्कबुन्-न त-बक़न् अ़न् त-बक़ (19) फ़मा लहुम् ला युअ्मिनून (20) व इज़ा क़ुरि-अ अ़लैहिमुल्-क़ुरआनु ला यस्जुदून ❑ (21) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू युकज़्ज़िबून (22) वल्लाहु अअ्लमु बिमा यूअून (23) फ़-बश्शिर्हुम् बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (24) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (25) ❖

85 सूरतुल्-बुरूजि 27

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 475 अक्षर, 109 शब्द और 22 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्समा-इ ज़ातिल्-बुरूजि (1) वल्यौमिल्-मौअूदि (2) व शाहिदिंव्-व मश्हूद (3) क़ुति-ल अस्हाबुल् उख़्दूदि- (4) -न्नारि ज़ातिल्-वक़ूदि (5) इज़् हुम् अ़लैहा क़ुअूद (6) व हुम् अ़ला मा यफ़्अ़लू-न बिल्-मुअ्मिनी-न शुहूद (7) व मा न-क़मू मिन्हुम् इल्ला अंय्युअ्मिनू बिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-हमीद (8) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (9) इन्नल्लज़ी-न फ़-तनुल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति सुम्-म लम् यतूबू फ़-लहुम् अ़ज़ाबु जहन्न-म व लहुम् अ़ज़ाबुल्-हरीक़ (10) इन्नल्लज़ी-न आमनू

يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ فَاَمَّا مَنْ
اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۙ وَّيَنْقَلِبُ
اِلٰٓى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۭ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَاۗءَ ظَهْرِهٖ ۙ فَسَوْفَ
يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۙ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ۭ اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۭ
اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ۚ بَلٰٓى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ۭ
فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۙ وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۙ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۙ
لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۭ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۙ وَاِذَا قُرِئَ
عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ۭ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ۡ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالسَّمَاۗءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۙ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۙ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۭ
قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۙ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۙ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا
قُعُوْدٌ ۙ وَّهُمْ عَلٰي مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۭ وَمَا
نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ الَّذِيْ
لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۭ

अपने रब के पास पहुँचने तक (यानी मरने के वक़्त तक) काम में कोशिश कर रहा है, फिर (क़ियामत में) उस (काम की जज़ा) से जा मिलेगा। **(6)** तो (उस दिन) जिस शख़्स का आमालनामा उसके दाहिने हाथ में मिलेगा **(7)** सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा[1] **(8)** और (वह उससे फ़ारिग़ होकर) अपने मुताल्लिक़ीन के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा। **(9)** और जिस शख़्स का आमालनामा (उसके बाएँ हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से मिलेगा[2] **(10)** सो वह मौत को पुकारेगा **(11)** और जहन्नम में दाख़िल होगा। **(12)** यह शख़्स (दुनिया में) अपने मुताल्लिक़ीन में ख़ुश-ख़ुश रहा करता था (यहाँ तक कि ख़ुशी की ज़्यादती में आख़िरत को झुठलाया करता था)। **(13)** उसने ख़्याल कर रखा था कि उसको (ख़ुदा की तरफ़) लौटना नहीं है। **(14)** (आगे इस ख़्याल का रद्द है कि लौटना) क्यों न होता, उसका रब उसको ख़ूब देखता था। **(15)** सो (इस बिना पर) मैं क़सम खाकर कहता हूँ शफ़क़ "यानी वह सुर्ख़ी जो सुबह को सूरज के निकलने से पहले और शाम को सूरज के छुपने के बाद" की। **(16)** और रात की और उन चीज़ों की जिनको रात समेट (कर जमा कर) लेती है।[3] **(17)** और चाँद की जब वह पूरा हो जाए **(18)** कि तुम लोगों को ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुँचना है।[4] **(19)** सो (बावजूद इन चीज़ों के जो कि ख़ौफ़ और ईमान के जमा होने का तक़ाज़ा करती हैं) उन लोगों को क्या हुआ कि ईमान नहीं लाते। **(20)** और (जब उनके बैर और दुश्मनी की यह हालत है कि) जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो उस वक़्त भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ नहीं झुकाते। ❑ **(21)** बल्कि ये काफ़िर (और उल्टा) झुठलाते हैं। **(22)** और अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर है जो कुछ ये लोग (बुरे आमाल का ज़ख़ीरा) जमा कर रहे हैं। **(23)** सो (उन कुफ़्रिया आमाल के सबब) आप उन लोगों को एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर दे दीजिए। **(24)** लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अ़मल किए, उनके लिए (आख़िरत में) ऐसा अज्र है जो कभी मौक़ूफ़ होने वाला नहीं। **(25)** ❖

85 सूरः बुरूज 27

सूरः बुरूज मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 22 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है बुरजों वाले आसमान की (मुराद बुरजों से बड़े-बड़े सितारे हैं)। **(1)** और (क़सम) है वायदा किए हुए दिन की **(2)** और हाज़िर होने वाले की, और (क़सम है) उस (दिन) की जिसमें (लोगों की) हाज़िरी होती है।[5] **(3)** कि मलऊन हुए ख़न्दक़ वाले **(4)** यानी बहुत-से ईंधन की आग वाले, **(5)** जिस वक़्त वे लोग उस (आग) के आस-पास बैठे हुए थे। **(6)** और वे जो कुछ मुसलमानों के साथ (ज़ुल्म व सितम) कर रहे थे उसको देख रहे थे। **(7)** और उन काफ़िरों ने उन मुसलमानों में कोई ऐब नहीं पाया सिवाय इसके कि वे ख़ुदा पर ईमान ले आए थे[6] जो ज़बरदस्त (और) तारीफ़ के लायक़ है। **(8)** ऐसा कि उसी की बादशाहत है आसमानों और ज़मीन की, और (आगे ज़ालिमों के लिए आ़म सज़ा की धमकी और डाँट है, और मज़लूमों के लिए आ़म वायदा है) अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ है। **(9)** जिन्होंने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों

---

1. आसान हिसाब के मुख़्तलिफ़ दर्जे हैं। एक यह कि उसपर बिलकुल अ़ज़ाब लागू न हो, बाज़ के लिए तो यह होगा और हदीस में इसी की तफ़सीर आई है कि जिस हिसाब में ज़्यादा बहस व पूछताछ न हो, सिर्फ़ पेशी हो जाए और यह उन लोगों के लिए होगा जिनपर अ़ज़ाब नहीं होगा। दूसरा यह कि उसपर हमेशा के लिए अ़ज़ाब न हो और यह आ़म मोमिनों के लिए होगा, और मुतलक़ अ़ज़ाब उसके ख़िलाफ़ नहीं।
2. इससे कुफ़्फ़ार मुराद हैं, और पीठ की तरफ़ से मिलने की दो सूरतें हो सकती हैं- एक यह कि **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1086 पर)**

व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्- अन्हारु, ज़ालिकल् फ़ौजुल्-कबीर (11) इन्-न बत्-श रब्बि-क ल-शदीद (12) इन्नहू हु-व युब्दिउ व युअ़ीद (13) व हुवल्-ग़फ़ूरुल्-वदूद (14) जुल्-अ़रशिल्-मजीद (15) फ़अ़्आ़लुल्-लिमा युरीद (16) हल् अता-क हदीसुल्-जुनूद (17) फ़िर्औ-न व समूद (18) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी तक्ज़ीबिंव- (19) -वल्लाहु मिंव्वरा-इहिम्-मुहीत (20) बल् हु-व क़ुर्आनुम् मजीद (21) फ़ी लौहिम्-मह़्फ़ूज़ (22) ❖

86 सूरतुत्-तारिकि 36

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 254 अक्षर, 61 शब्द और 17 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

वस्समा-इ वत्तारिकि (1) व मा अद्रा-क मत्तारिक़ु (2) अन्नज्मुस्-साकिब (3) इन् कुल्लु नफ़्सिल्-लम्मा अ़लैहा हाफ़िज़ (4) फ़ल्यन्ज़ुरिल्-इन्सानु मिम्-म ख़ुलिक़ (5) ख़ुलि-क़ मिम्माइन् दाफ़िक़िंय्- (6) -यख़्रुजु मिम्-बैनिस्सुल्बि वत्तरा-इब (7) इन्नहू अ़ला रज्अ़िही लक़ादिर (8) यौ-म तुब्लस्सरा-इरु (9) फ़मा लहू मिन् क़ुव्वतिंव्-व ला नासिर (10) वस्समा-इ ज़ातिर्-रज्अ़ (11) वल्अर्ज़ि ज़ातिस्सद्अ़ि (12) इन्नहू ल-क़ौलुन् फ़स्लुंव्- (13) -व मा हु-व बिल्-हज़्लि (14) इन्नहुम् यकीदू-न कैदंव्- (15) -व अकीदु कैदा (16) फ़-महहिलिल्-काफ़िरी-न अम्हिल्हुम् रुवैदा (17) ❖

الطارق ٨٦ ٥٣٧ عم ٣٠

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ
عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَ
يُعِيدُ ۝ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝ فَعَّالٌ
لِمَا يُرِيدُ ۝ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۝
بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ۝ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ۝

سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ سَبْعَ عَشْرَةَ آيَةً

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝
إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝
خُلِقَ مِنْ مَاءٍ دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝
إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَ
لَا نَاصِرٍ ۝ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝
إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝ إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝
وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝ فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

منزل ٧

को तकलीफ़ पहुँचाई और फिर तौबा नहीं की, तो उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है, और (ख़ास तौर पर जहन्नम में) उनके लिए जलने का अ़ज़ाब है। **(10)** (आगे मोमिनों के हक़ में जिनमें मज़लूम लोग भी आ गए, इरशाद है कि) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अ़मल किए उनके लिए (जन्नत के) बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी (और) यह बड़ी कामयाबी है। **(11)** आपके रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। **(12)** (पस काफ़िरों पर सख़्त सज़ा का वाक़ेअ़ होना कोई बईद नहीं और यह कि) वही पहली बार भी पैदा करता है और वही दोबारा (क़ियामत में भी) पैदा करेगा। **(13)** और वही बड़ा बख़्शने वाला (और) बड़ी मुहब्बत करने वाला **(14)** (और) अ़र्श का मालिक (और) बड़ाई वाला है। **(15)** वह जो चाहे सब कुछ कर गुज़रता है। **(16)** क्या आपको उन लश्करों का क़िस्सा पहुँचा है **(17)** यानी फ़िरऔ़न और समूद का? **(18)** बल्कि ये काफ़िर (खुद क़ुरआन को) झुठलाने में (लगे) हैं। **(19)** और (अन्जामकार उसकी सज़ा भुगतेंगे, क्योंकि अल्लाह उनको इधर-उधर से घेरे हुए है। **(20)** (क़ुरआन ऐसी चीज़ नहीं जो झुठलाने के क़ाबिल हो) बल्कि वह एक अ़ज़्मत वाला क़ुरआन है **(21)** जो लौहे-महफ़ूज़ में (लिखा हुआ) है। **(22)** ❖

86 सूरः तारिक़ 36

सूरः तारिक़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 17 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है आसमान की और उस चीज़ की जो रात को ज़ाहिर होने वाली है। **(1)** और आपको कुछ मालूम है कि वह रात को ज़ाहिर होने वाली चीज़ क्या है? **(2)** वह चमकदार सितारा है। **(3)** कोई शख़्स ऐसा नहीं जिसपर (आमाल का) याद रखने वाला कोई (फ़रिश्ता) मुक़र्रर न हो।[1] **(4)** (जब यह बात है) तो इनसान को (क़ियामत की फ़िक्र करनी चाहिए और) देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। **(5)** वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है **(6)** जो पीठ और सीने (यानी पूरे बदन) के दरमियान से निकलता है।[2] **(7)** (तो इससे साबित हुआ कि) वह उसके दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है। **(8)** (और यह दोबारा पैदा करना उस दिन होगा) जिस दिन सबकी क़लई खुल जाएगी।[3] **(9)** फिर इस इनसान को न तो खुद (अपनी रक्षा की) क़ुव्वत होगी और न इसका कोई हिमायती होगा। **(10)** क़सम है आसमान की जिससे बारिश होती है **(11)** और ज़मीन की जो (बीज निकलते वक़्त) फट जाती है। **(12)** (आगे क़सम का जवाब है) कि यह क़ुरआन (हक़ व बातिल में) एक फ़ैसला कर देने वाला कलाम है **(13)** कोई बेकार चीज़ नहीं है।[4] **(14)** (उन लोगों का यह हाल है कि) ये लोग (हक़ के इनकार के लिए) तरह-तरह की तदबीरें कर रहे हैं **(15)** और मैं भी (उनकी नाकामी और सज़ा के लिए) तरह-तरह की तदबीरें कर रहा हूँ। **(16)** तो आप उन काफ़िरों (की मुख़ालफ़त) को यूँ ही रहने दीजिए, (और ज़्यादा दिन नहीं बल्कि) उनको थोड़े ही दिनों रहने दीजिए। **(17)** ❖

(पृष्ठ 1084 का शेष) उसकी मश्कें कसी हुई होंगी तो बायाँ हाथ भी पीठ की तरफ़ होगा। दूसरी सूरत हज़रत मुजाहिद का क़ौल है कि उसका हाथ पीठ की तरफ़ निकाल दिया जाएगा। दुर्रे मन्सूर में इसी तरह बयाम किया गया है।

3. मुराद वे सब जानदार हैं जो रात को आराम करने के लिए अपने-अपने ठिकाने पर आ जाते हैं।

4. वे हालतें एक मौत है, उसके बाद बरज़ख़ के हालात, उसके बाद क़ियामत के हालात, फिर खुद उनमें भी तादाद व ज़्यादती है। और इन क़स्मों का मौक़े के मुनासिब होना इस तरह है कि रात की हालतों का विभिन्न होना कि पहले सुर्ख़ी ज़ाहिर होती है फिर ज़्यादा रात आती है तो सब सो जाते हैं, **(पृष्ठ 1084 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1086 की तफ़सीर पृष्ठ 1088-1093 पर)**

87 सूरतुल्-अअ्ला 8

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 299 अक्षर, 72 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्बिहिस्-म रब्बिकल्-अअ्ला **(1)** अल्लज़ी ख़-ल-क़ फ़-सव्वा **(2)** वल्लज़ी क़द्द-र फ़-हदा **(3)** वल्लज़ी अख़्र-जल्-मर्आ **(4)** फ़-ज-अ़-लहू गुसाअन् अह्वा **(5)** सनुक़्रिउ-क फ़ला तन्सा **(6)** इल्ला मा शा-अल्लाहु, इन्नहू यअ्लमुल्-जह्-र व मा यख़्फ़ा **(7)** व नुयस्सिरु-क लिल्युस्रा **(8)** फ़ज़क्किर् इन् न-फ़-अ़तिज़्-ज़िक्रा **(9)** स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा **(10)** व य-तजन्नबुहल्-अश्क़- **(11)** -ल्लज़ी यस्लन्-नारल्-कुब्रा **(12)** सुम्-म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या **(13)** क़द् अफ़्ल-ह मन् तज़क्का **(14)** व ज़-करस्-म रब्बिही फ़-सल्ला **(15)** बल् तुअ्सिरूनल्- हयातद्-दुन्या **(16)** वल्-आख़िरतु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा **(17)** इन्-न हाज़ा लफ़िस्-सुहुफ़िल्-ऊला **(18)** सुहुफ़ि इब्राही-म व मूसा **(19)** ❖

عمّ ٣٠ ٥٣٨ الاعلى ٨٧ الغاشية ٨٨

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً
سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ وَالَّذِيْ
قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ فَجَعَلَهٗ غُثَاۗءً اَحْوٰى ۙ
سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا
يَخْفٰى ۭ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۭ
سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ الَّذِيْ يَصْلَى
النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۭ قَدْ اَفْلَحَ
مَنْ تَزَكّٰى ۙ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۭ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا ۙ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ
الْاُوْلٰى ۙ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۧ
سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ سِتٌّ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۭ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ خَاشِعَةٌ ۙ عَامِلَةٌ
نَّاصِبَةٌ ۙ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۭ لَيْسَ
لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۭ
وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ
لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۭ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۘ فِيْهَا سُرُرٌ

منزل ٧

88 सूरतुल्-ग़ाशि-यति 68

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 384 अक्षर, 93 शब्द और 26 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हल् अता-क हदीसुल्-ग़ाशियह् **(1)** वुजूहुंय्-यौमइज़िन् ख़ाशिअ़ह् **(2)** आ़मि-लतुन् नासि-बतुन् **(3)** तस्ला नारन् हामि-यतन् **(4)** तुस्क़ा मिन् ऐ़निन् आनियह् **(5)** लै-स लहुम् तआ़मुन् इल्ला मिन् ज़रीअ़िल्- **(6)** -ला युस्मिनु व ला युग़्नी मिन् जूअ़् **(7)** वुजूहुंय्-यौमइज़िन् नाअ़ि-मतुल्- **(8)** -लिसअ्यिहा राज़ि-यतुन् **(9)** फ़ी जन्नतिन्

7

87 सूरः अअ़्ला 8

सूरः अअ़्ला मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

(ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) आप (और जो मोमिन आपके साथ हैं) अपने रब आ़ली- शान के नाम की तस्बीह कीजिए। **(1)** जिसने (हर चीज़ को) बनाया, फिर (उसको) ठीक बनाया। **(2)** और जिसने तजवीज़ किया फिर राह बतलाई। **(3)** और जिसने (ज़मीन से) चारा निकाला **(4)** फिर उसको स्याह कूड़ा कर दिया।[1] **(5)** (इस कुरआन के बारे में हम वायदा करते हैं कि) हम (जितना) कुरआन (नाज़िल करते जाएँगे) आपको पढ़ा दिया करेंगे (यानी याद करा दिया करेंगे), फिर आप उसमें से कोई हिस्सा नहीं भूलेंगे। **(6)** मगर जिस क़द्र (भुलाना) अल्लाह को मन्ज़ूर हो (कि मन्सूख़ करने का तरीक़ा यह भी है)। वह ज़ाहिर और छुपी हर चीज़ को जानता है।[2] **(7)** और (इसी तरह) हम इस शरीअ़त के लिए आपको सहूलत देंगे (यानी समझना भी आसान होगा और अ़मल भी आसान होगा) **(8)** तो आप नसीहत किया कीजिए, अगर नसीहत करना मुफ़ीद होता हो।[3] **(9)** वही शख़्स नसीहत मानता है जो (ख़ुदा से) डरता है। **(10)** और जो शख़्स बद-नसीब हो वह उससे गुरेज़ करता है **(11)** जो (आख़िरकार) बड़ी आग में (यानी दोज़ख़ की आग में) दाख़िल होगा। **(12)** फिर न उसमें मर ही जाएगा और न (आराम की ज़िन्दगी) जियेगा। **(13)** मुराद पाई उस शख़्स ने जो (कुरआन सुनकर ग़लत अ़क़ीदों और बुरे अख़्लाक़ से) पाक हो गया **(14)** और अपने रब का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा। **(15)** (मगर ऐ इनकार करने वालो! तुम आख़िरत का सामान नहीं करते) बल्कि तुम दुनियावी ज़िन्दगी को मुक़द्दम रखते हो **(16)** हालाँकि आख़िरत (दुनिया से) कहीं बेहतर और पायदार है। **(17)** (और यह मज़मून सिर्फ़ कुरआन ही का दावा नहीं बल्कि) यह मज़मून अगले सहीफ़ों में भी है **(18)** यानी इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।[4] (पस इससे और भी ज़्यादा ताकीद हो गई)। **(19)** ❖

88 सूरः ग़ाशियः 68

सूरः ग़ाशियः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 26 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आपको उस आ़म घेराव करने वाले वाक़िए की कुछ ख़बर पहुँची है? (मुराद इससे क़ियाभत है)। **(1)** बहुत-से चेहरे उस दिन ज़लील (और) मुसीबत झेलते **(2)** (और मुसीबत झेलने से) ख़स्ता होंगे **(3)** (और) भड़कती हुई आग में दाख़िल होंगे **(4)** (और) खौलते हुए चश्मे से पानी पिलाए जाएँगे। **(5)** (और) उनको सिवाय एक काँटेदार झाड़ के और कोई खाना नसीब न होगा। **(6)** जो न (तो खाने वालों को) मोटा करेगा और न (उनकी) भूख को दूर करेगा।[5] **(7)** बहुत-से चेहरे उस दिन रौनक़ वाले **(8)** (और) अपने (नेक) कामों की बदौलत ख़ुश होंगे **(9)** (और) आला दर्जे की जन्नत में होंगे **(10)** जिसमें कोई बेहूदा बात न

(पिछले पृष्ठ का शेष) और फिर एक रात का दूसरी रात से चाँद की रोशनी के कम ज़्यादा होने में मुख़्तलिफ़ और विभिन्न होना, ये सब हालात का मुख़्तलिफ़ होना मौत के बाद के हालात से मुशाबह है। और मौत से आख़िरत की दुनिया शुरू होती है जैसे सुर्ख़ी से रात शुरू होती है। फिर मरने के बाद यानी बरज़ख़ की ज़िन्दगी लोगों के सो रहने की तरह है, और घटने के बाद चाँद का पूरा होना दुनिया के फ़ना होने के बाद **(पृष्ठ 1084 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1086, 1088 की तफ़सीर पृष्ठ 1090-1093 पर)**

आलियह् (10) ला तस्मअु फ़ीहा लाग़ियह् (11) फ़ीहा अ़ैनुन् जारियह् ✣ (12) फ़ीहा सुरुरुम्-मर्फ़ू-अ़तुंव्- (13) -व अक्वाबुम्-मौज़ू-अ़तुंव्- (14) -व नमारिक़ु मस्फ़ू-फ़तुंव्- (15) -व ज़राबिय्यु मब्सूसह् (16) अ-फ़ला यन्ज़ुरू-न इलल्-इबिलि कै-फ़ ख़ुलिक़त् (17) व इलस्समा-इ कै-फ़ रुफ़िअ़त् (18) व इलल्-जिबालि कै-फ़ नुसिबत् (19) व इलल्-अर्ज़ि कै-फ़ सुतिहत् (20) फ़ज़क्किर्, इन्नमा अन्-त मुज़क्किर (21) लस्-त अ़लैहिम् बि-मुसैतिरिन् (22) इल्ला मन् तवल्ला व क-फ़र (23) फ़युअ़ज़्ज़िबुहुल्लाहुल्-अ़ज़ाबल्-अक्बर (24) इन्-न इलैना इया-बहुम् (25) सुम्-म इन्-न अ़लैना हिसा-बहुम ● (26) ❖

89 सूरतुल्-फ़ज्रि 10

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 585 अक्षर, 137 शब्द और 30 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्-फ़ज्रि (1) व लयालिन् अ़शिंरव्- (2) -वश्शफ़्अि वल्वत्रि (3) वल्लैलि इज़ा यस्रि (4) हल् फ़ी ज़ालि-क क़-समुल्लिज़ी हिज्र् (5) अलम् त-र कै-फ़ फ़-अ़-ल रब्बु-क बिआ़द (6) इर-म-ज़ातिल्-अ़िमादि- (7) -ल्लती लम् युख़्लक़् मिस्लुहा फ़िल्-बिलाद (8) व समूदल्लज़ी-न जाबुस्सख़्-र बिल्वादि (9) व फ़िर्औ़-न ज़िल्-औताद (10) अल्लज़ी-न तग़ौ फ़िल्-बिलाद (11) फ़-अक्सरू फ़ीहल्-फ़साद (12) फ़-सब्-ब अ़लैहिम् रब्बु-क सौ-त अ़ज़ाब (13) इन्-न रब्ब-क लबिल्-मिर्साद (14) फ़-अम्मल्-इन्सानु इज़ा मब्तलाहु रब्बुहू फ़-अक्र-महू व नअ़्अ़-महू फ़-यक़ूलु रब्बी अक्र-मन् (15) व अम्मा इज़ा मब्तलाहु फ़-क़-द-र अ़लैहि रिज़्क़हू फ़-यक़ूलु रब्बी अहानन् (16) कल्ला बल्-ला तुक्रिमूनल्-यती-म (17) व ला तहाज़्ज़ू-न अ़ला तआ़मिल्-मिस्कीन (18)

مرفوعة ۝ واكواب موضوعة ۝ ونمارق مصفوفة ۝ وزرابي
مبثوثة ۝ افلا ينظرون الى الابل كيف خلقت ۝ والى السماء
كيف رفعت ۝ والى الجبال كيف نصبت ۝ والى الارض
كيف سطحت ۝ فذكر انما انت مذكر ۝ لست عليهم
بمصيطر ۝ الا من تولى وكفر ۝ فيعذبه الله العذاب
الاكبر ۝ ان الينا ايابهم ۝ ثم ان علينا حسابهم ۝

سورة الفجر مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي ثلاثون آية

والفجر ۝ وليال عشر ۝ والشفع والوتر ۝ واليل اذا يسر ۝
هل في ذلك قسم لذي حجر ۝ الم تر كيف فعل ربك بعاد ۝
ارم ذات العماد ۝ التي لم يخلق مثلها في البلاد ۝ وثمود
الذين جابوا الصخر بالواد ۝ وفرعون ذي الاوتاد ۝ الذين
طغوا في البلاد ۝ فاكثروا فيها الفساد ۝ فصب عليهم ربك
سوط عذاب ۝ ان ربك لبالمرصاد ۝ فاما الانسان اذا ما
ابتله ربه فاكرمه ونعمه فيقول ربي اكرمن ۝ واما
اذا ما ابتله فقدر عليه رزقه فيقول ربي اهانن ۝ كلا
بل لا تكرمون اليتيم ۝ ولا تحضون على طعام المسكين ۝

منزل ٧

सुनेंगे। **(11)** उस (जन्नत) में बहते हुए चश्मे होंगे। **(12)** (और) उस (जन्नत) में ऊँचे-ऊँचे तख़्त (बिछे) हैं **(13)** और रखे हुए आबख़ोरे "पानी पीने के बरतन" (मौजूद) हैं। **(14)** और बराबर-बराबर लगे हुए गद्दे (तकिए) हैं **(15)** और सब तरफ़ क़ालीन (ही क़ालीन) फैले पड़े हैं।[1] **(16)** तो क्या वे लोग ऊँट को नहीं देखते कि किस तरह (अ़जीब तौर पर) पैदा किया गया है? **(17)** और आसमान को (नहीं देखते) कि तरह बुलन्द किया गया है? **(18)** और पहाड़ों को (नहीं देखते) कि किस तरह खड़े किए गए हैं? **(19)** और ज़मीन को (नहीं देखते) कि किस तरह बिछाई गई है?[2] **(20)** तो आप (भी उनकी फ़िक्र में न पड़िए बल्कि सिर्फ़) नसीहत कर दिया कीजिए, (क्योंकि) आप तो सिर्फ़ नसीहत करने वाले हैं। **(21)** (और) आप उनपर मुसल्लत नहीं हैं (जो ज़्यादा फ़िक्र में पड़ें)। **(22)** हाँ, मगर जो मुँह फेरेगा और कुफ़्र करेगा **(23)** तो ख़ुदा उसको (आख़िरत में) बड़ी सज़ा देगा। **(24)** क्योंकि हमारे ही पास उनका आना होगा। **(25)** फिर हमारा ही काम उनसे हिसाब लेना है (आप ज़्यादा ग़म में न पड़िए)। ● **(26)** ❖

89 सूरः फ़ज्र 10

सूरः फ़ज्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 30 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है (फ़ज्र के वक़्त की) **(1)** और (ज़िलहिज्जा की) दस रातों की **(2)** और जुफ़्त और ताक़ "यानी जोड़े और बेजोड़" की[3] **(3)** और (क़सम है) रात की जब वह चलने लगे (यानी गुज़रने लगे) **(4)** क्यों इस (ज़िक्र हुई क़सम) में अ़क़्लमन्द के वास्ते काफ़ी क़सम भी है।[4] **(5)** क्या आपको मालूम नहीं कि आपके परवर्दिगार ने क़ौमे आ़द यानी क़ौमे इरम के साथ क्या मामला किया? **(6)** जिनके डील-डोल सुतूनों के जैसे (लम्बे) थे। **(7)** (और) जिनकी बराबर (ताक़त व कुव्वत में दुनिया भर के) शहरों में कोई शख़्स नहीं पैदा किया गया।[5] **(8)** और (आपको मालूम है कि) क़ौमे समूद के (साथ क्या मामला किया गया) जो वादी-ए-क़ुरा में (पहाड़ के) पत्थरों को तराशा करते थे (और मकानात बनाया करते थे)। **(9)** और मेख़ों वाले फ़िरऔ़न के साथ[6] **(10)** जिन्होंने शहरों में सर उठा रखा था। **(11)** और उनमें बहुत फ़साद मचा रखा था। **(12)** सो आपके रब ने उनपर अ़ज़ाब का कोड़ा बरसाया। **(13)** बेशक आपका रब (नाफ़रमानों की) घात में है। **(14)** सो आदमी को जब उसका परवर्दिगार आज़माता है, यानी उसको (ज़ाहिरी तौर पर) इकराम व इनाम देता है तो वह (फ़ख़्र के तौर पर) कहता है कि मेरे रब ने मेरी क़द्र बढ़ा दी। **(15)** और जब उसको (दूसरी तरह) आज़माता है, यानी उसकी रोज़ी उसपर तंग कर देता है तो वह (शिकायत के तौर पर) कहता है कि मेरे रब ने मेरी क़द्र घटा दी।[7] **(16)** हरगिज़ ऐसा नहीं! बल्कि तुम (में और आमाल भी अ़ज़ाब का सबब हैं, चुनाँचे तुम) लोग यतीम की (कुछ) क़द्र (और ख़ातिर) नहीं करते हो **(17)** और दूसरों को भी मिस्कीन को खाना देने की तरग़ीब नहीं देते।[8] **(18)** और (तुम) मीरास का माल समेटकर खा जाते हो। **(19)** और माल से तुम लोग

(पिछले पृष्ठ का शेष) क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होने के मुशाबह है।

5. तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में आया है कि "वायदा किया हुआ दिन" क़ियामत का दिन है और "हाज़िर होने वाला" जुमे का दिन है, और "जिस दिन में हाज़िरी होती है" अ़र्फ़े का दिन है जिसमें हाजी लोग अपने-अपने मक़ामात से सफ़र करके अ़रफ़ात में उस दिन के इरादे से जमा होते हैं, गोया वह दिन मक़सूद (यानी जिसका इरादा किया जाए) और दूसरे लोग हाज़िरी का इरादा करने वाले हैं।

6. इस सूरः में एक वाक़िए का मुख़्तसर तौर पर तज़्किरा है जो मुस्लिम शरीफ़ में ज़िक्र किया गया है। ख़ुलासा उसका यह है कि किसी काफ़िर बादशाह के पास **(पृष्ठ 1084 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1086, 1088, 1090 की तफ़सीर पृष्ठ 1092-1094 पर)**

व तअ्कुलूनत्तुरा-स अक्लल् लम्मंव्- (19) -व तुहिब्बूनल्-मा-ल हुब्बन् जम्मा (20) कल्ला इज़ा दुक्कतिल्-अर्ज़ु दक्कन् दक्कंव्- (21) -व जा-अ रब्बु-क वल्म-लकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा (22) व जी-अ यौमइज़िम्-बि-जहन्न-म यौमइज़िंय्य-तज़क्करुल्-इन्सानु व अन्ना लहुज़्ज़िकरा (23) यक़ूलु या लैतनी क़द्दम्तु लि-हयाती (24) फ़यौमइज़िल्-ला युअ़ज़्ज़िबु अ़ज़ाबहू अ-हदुंव्- (25) -व ला यूसिक़ु व साक़हू अ-हद (26) या अय्यतुहन्-नफ़्सुल्-मुत्मइन्नतु- (27) -र्जिअ़ी इला रब्बिकि राज़ि-यतम् मर्ज़िय्यह् (28) फ़द्ख़ुली फ़ी अ़िबादी (29) वद्ख़ुली जन्नती (30) ❖

90 सूरतुल्-ब-लदि 35

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 347 अक्षर, 82 शब्द और 20 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बिहाज़ल्-ब-लदि (1) व अन्-त हिल्लुम् बिहाज़ल्-ब-लदि (2) व वालिदिंव्-व मा व-लद् (3) ल-क़द् ख़लक़्नल्- इन्सा-न फ़ी क-बद् (4) अ-यह्सबु अल्लंय्यक़्दि-र अ़लैहि अ-हद् ✣ (5) यक़ूलु अह्लक्तु मालल्-लु-बदा (6) अ-यह्सबु अल्लम् य-रहू अ-हद् (7) अलम् नज्अ़ल्-लहू अ़ैनैनि (8) व लिसानंव्-व श-फ़तैनि (9) व हदैनाहुन्-नज्दैन (10) फ़-लक़्त-ह-मल् अ़-क़-ब-त (11) व मा अद्रा-क मल्अ़-क़-बह् (12) फ़क्कु र-क़-बतिन् (13) औ इत्आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्-ग़-बतिंय्- (14) -यतीमन् ज़ा मक़्र-बतिन् (15) औ मिस्कीनन् ज़ा मत्-र-बह् (16) सुम्-म का-न मिनल्लज़ी-न आमनू व तवासौ बिस्सब्रि व तवासौ बिल्-मर्-ह-मह् (17) उलाइ-क अस्हाबुल् मैं-म-नह् (18) वल्लज़ी-न क-फ़रू

البلد ٩٠ — ٢٠ پاره — عمّ ٣٠

وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّا
إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾
وَجِايْۤءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ
الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ
الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِي
فِي عِبَادِي ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

سُورَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ — وَهِيَ عِشْرُونَ آيَةً

لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَأَنتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٍ
وَمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي كَبَدٍ ﴿٤﴾ أَيَحْسَبُ أَن
لَّن يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾
أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُ أَحَدٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا
وَشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي
مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ
كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا

منزل ٧

❖ रु. 1/30/14 ✣ व. लाज़िम

बहुत ही मुहब्बत रखते हो। **(20)** (आगे इन कामों को अ़ज़ाब का सबब न समझने पर तंबीह है) कि हरगिज़ ऐसा नहीं! (जैसा कि तुम समझते हो)। जिस वक़्त ज़मीन को तोड़-तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा **(21)** और आपका रब और गिरोह के गिरोह फ़रिश्ते (मैदाने-महशर में) आएँगे।[1] **(22)** और उस दिन जहन्नम को लाया जाएगा, उस दिन इनसान को समझ आएगी, और अब समझ आने का मौक़ा कहाँ रहा।[2] **(23)** कहेगा काश! मैं इस (आख़िरत की) ज़िन्दगी के लिए कोई (नेक) अ़मल आगे भेज लेता। **(24)** पस उस दिन न तो खुदा के अ़ज़ाब के बराबर कोई अ़ज़ाब देने वाला निकलेगा **(25)** और न उसके जकड़ने के बराबर कोई जकड़ने वाला निकलेगा। **(26)** (और जो अल्लाह तआ़ला के फ़रमाँबरदार थे उनको इरशाद होगा कि) ऐ इत्मीनान वाली रूह![3] **(27)** तू अपने परवर्दिगार (के क़रीब रहमत) की तरफ़ चल, इस तरह से कि तू उससे खुश और वह तुझसे खुश। **(28)** फिर (उधर चलकर) तू मेरे (ख़ास) बन्दों में शामिल हो जा (कि यह भी रूहानी नेमत है), **(29)** और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। **(30)** ❖

90 सूरः बलद् 35

सूरः बलद् मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 20 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

मैं क़सम खाता हूँ इस शहर (यानी मक्का) की **(1)** और (मज़मून से हटकर इस जुमले में आपकी तसल्ली के लिए पेशीनगोई फ़रमाते हैं कि) आपको इस शहर में लड़ाई हलाल होने वाली है।[4] **(2)** और क़सम है बाप की औलाद की[5] **(3)** कि हमने इनसान को बड़ी मशक़्क़त में पैदा किया है।[6] **(4)** क्या वह यह ख़्याल करता है कि उसपर किसी का बस न चलेगा[7] **(5)** (और) कहता है कि मैंने इतना ज़्यादा माल ख़र्च कर डाला।[8] **(6)** क्या वह यह ख़्याल करता है कि उसको किसी ने देखा नहीं **(7)** क्या हमने उसको दो आँखें **(8)** और ज़बान और दो होंठ नहीं दिए। **(9)** और (फिर) हमने उसको (बुराई और भलाई के) दोनों रास्ते बतला दिए। **(10)** सो वह शख़्स (दीन की) घाटी में से होकर न निकला।[9] **(11)** और आपको मालूम है कि घाटी (से) क्या (मुराद) है? **(12)** वह किसी (की) गर्दन का गुलामी से छुड़ा देना है **(13)** या खाना खिलाना फ़ाक़े के दिन में **(14)** किसी रिश्तेदार यतीम को, **(15)** या किसी ख़ाकसार मोहताज को (यानी अल्लाह के इन अहकाम का पालन करना चाहिए था)। **(16)** फिर (सबसे बढ़कर यह कि) उन लोगों में से न हुआ जो ईमान लाए और एक-दूसरे को (ईमान की) पाबन्दी की नसीहत व तंबीह की, और एक-दूसरे को (मख़्लूक़ पर) रहम करने की (यानी ज़ुल्म को छोड़ने की) तंबीह व नसीहत की।[10] **(17)** यही लोग दाहिने वाले हैं। **(18)** और जो

(पिछले पृष्ठ का शेष) एक 'काहिन' (यानी ग़ैब की ख़बरें बताने वाला) था। उसने बादशाह से कहा कि मुझको कोई होशियार लड़का दो तो मैं उसको अपना कहानत का इल्म सिखा दूँ। चुनाँचे एक लड़का तजवीज़ किया गया, उसके रास्ते में एक ईसाई आ़लिम रहता था जो उस वक़्त के दीने हक़ यानी ईसाईयत का सच्चा पैरोकार था। उस लड़के का ईसाई आ़लिम के पास भी आना-जाना शुरू हो गया। चुनाँचे वह खुफ़िया मुसलमान हो गया। एक बार उस लड़के ने देखा कि एक शेर ने रास्ता रोक रखा है और लोग परेशान हैं। उसने एक पत्थर हाथ में लेकर दुआ़ की, ऐ अल्लाह! अगर राहिब (यानी ईसाई आ़लिम) का दीन सच्चा है तो यह जानवर मेरे पत्थर से मारा जाए। यह कहकर वह पत्थर मारा तो शेर को लगा और वह हलाक हो गया। लोगों में चर्चा हुआ कि इस लड़के को कोई अ़जीब इल्म आता है। किसी अन्धे ने सुना तो उसने लड़के से आकर कहा कि मेरी आँखें अच्छी हो जाएँ। लड़के ने दुआ़ की तो वह 'बीना' (यानी देखने वाला) होकर मुसलमान हो गया। बादशाह को ये ख़बरें पहुँचीं तो उसने लड़के और राहिब (ईसाई आ़लिम) और अन्धे को जो अब देखने वाला था, गिरफ़्तार करा कर बुलाया। राहिब और अन्धे को शहीद करा दिया और लड़के के लिए हुक्म दिया कि पहाड़ पर से गिराया जाए।

(पृष्ठ 1084 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1086, 1088, 1090, 1092 की तफ़सीर पृष्ठ 1093-1094 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) मगर जो लोग उसको लेकर आए थे वे खुद गिरकर हलाक हो गए और लड़का सही सालिम वापस आया। फिर बादशाह ने समुद्र में ग़र्क़ करने का हुक्म दिया, वह उससे भी बच गया और जो लोग उसको डुबोने ले गए थे वे सब ग़र्क़ हो गए। यह देखकर बादशाह सख़्त परेशान और चिंतित हुआ। लड़का बादशाह से कहने लगा कि मुझको बिस्मिल्लाह कहकर तीर मारो तो मैं मर जाऊँगा। चुनाँचे ऐसा ही किया गया तो लड़का जन्नत को पहुँच गया। यह हालत देखकर एकदम आ़म लोगों की ज़बान से नारा बुलन्द हुआ कि हम सब अल्लाह पर ईमान लाते हैं। यह देखकर बादशाह बद-हवास हुआ और गुस्से की हालत में हुकूमत के सलाहकारों से मश्विरा किया। चुनाँचे उनकी सलाह से बड़ी-बड़ी ख़न्दक़ें आग से भरवाकर ऐलान कर दिया कि जो शख़्स इस्लाम से न फिरेगा उसको आग में जला दिया जाएगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1086) **1.** मतलब यह कि इन आमाल पर मुहासबा होने वाला है। और इस क़सम को मक़सूद से मुनासबत यह है कि जैसे आसमान पर सितारे हर वक़्त मौजूद हैं मगर वे ख़ास रात ही में ज़ाहिर होते हैं, इसी तरह आमाल सब आमालनामे में इस वक़्त भी महफ़ूज़ हैं मगर उनका ज़ुहूर ख़ास क़ियामत में होगा।

2. इस पानी से 'मनी' (यानी वीर्य) मुराद है, चाहे सिर्फ़ मर्द की या मर्द और औ़रत दोनों की हो। और औ़रत की 'मनी' में अगरचे पतलापन मर्द की 'मनी' के बराबर नहीं होता लेकिन कुछ न कुछ पतलापन ज़रूर होता है। और दूसरी तक़दीर पर लफ़्ज़ "मा" का मुफ़रद लाना इस बिना पर है कि दोनों माद्दे मिश्रित होकर एक चीज़ की तरह हो जाते हैं, और पुश्त और सीना चूँकि बदन के दो किनारे हैं इसलिए इससे तमाम बदन मुराद हो सकता है। और यह इसलिए मुराद लिया गया कि 'मनी' तमाम बदन में पैदा होकर फिर मुन्फ़इल (यानी असर क़बूल करने वाली) होती है। और इस किनाये में पुश्त और सीने की तख़्सीस शायद इसलिए हो कि 'मनी' यानी वीर्य के माद्दे के हासिल होने में मुख्य अंगों यानी दिल, दिमाग़ और जिगर को ख़ास दख़ल है, और दिल और जिगर का ताल्लुक़ सीने से और दिमाग़ का ताल्लुक़ पुश्त से ज़ाहिर है। हासिल यह कि नुत्फ़े से इनसान बना देना दोबारा पैदा करने से ज़्यादा अ़जीब है।

3. यानी बातिल अ़क़ीदों और फ़ासिद नीयतों की जितनी छुपी हुई बातें हैं सब ज़ाहिर हो जाएँगी, और दुनिया में जिस तरह मौक़े पर जुर्म से मुकर जाते हैं यह बात वहाँ मुम्किन न होगी।

4. जिस तरह क़ुरआन अपनी दलालत से असलियत और ग़ैर-असलियत में फ़ैसला कर देने वाला है इसी तरह अपने मोजिज़ा होने की सिफ़त से इन दो एहतिमालों का भी कि यह अल्लाह की तरफ़ से है या नहीं फ़ैसला कर देने वाला है। और इसके अल्लाह की तरफ़ से होने की शिक़ को मुतैयन कर देने वाला है। और आख़िर की क़सम को आख़िर के मज़मून से यह मुनासबत है कि क़ुरआन आसमान से आता है और जिसमें क़ाबलियत होती है उसको हिदायत व सआ़दत से मालामाल करता है। जैसे बारिश आसमान से आती है और अच्छी ज़मीन को फ़ैज़ पहुँचाती है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1088) **1.** पहले आ़म तसुर्रुफ़ात मज़कूर हैं, फिर हैवानों के मुताल्लिक़, फिर घास-फूँस और पेड़-पौधों के मुताल्लिक़। मतलब यह है कि नेक कामों के ज़रिए आख़िरत का इरादा करना चाहिए जहाँ जज़ा व सज़ा होने वाली है। और इसी ताअ़त व नेकी का तरीक़ा बतलाने के लिए हमने क़ुरआन नाज़िल किया है और आपको उसकी तब्लीग़ के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है।

2. पस उससे किसी चीज़ की मस्लहत छुपी नहीं। इसलिए जब महफ़ूज़ रखना मस्लहत होता है तो महफ़ूज़ रखते हैं, जब भुला देना मस्लहत होती है तो भुला देते हैं।

3. पस हासिल यह हुआ कि चूँकि नसीहत नफ़े की चीज़ है इसलिए आप नसीहत किया कीजिए, मगर इसके बावजूद कि वह अपनी ज़ात के एतिबार से नफ़ा देने वाली है यह न समझिए कि सबको मुफ़ीद होती है और सब ही मान लेंगे।

4. तफ़सीर रूहुल-मआ़नी में अ़ब्द बिन हमीद की रिवायत से हदीसे मरफ़ूअ़ ज़िक्र की गई है कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर दस सहीफ़े नाज़िल हुए और मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तौरात से पहले दस।

5. यानी न उसमें ग़िज़ाईयत है और न भूख को दूर करने की क़ाबलियत है। और मुसीबत झेलने से मुराद हश्र में परेशान फिरना और दोज़ख़ में ज़न्जीरों और तौक़ों को लादना, दोज़ख़ के पहाड़ों पर चढ़ना और उसके असर से हालत का ख़स्ता होना ज़ाहिर है, और खौलता हुआ चश्मा वही जिसको दूसरी आयतों में 'हमीम' फ़रमाया है। और इस आयत से मालूम होता है कि वहाँ उसका भी चश्मा होगा, और "ज़रीअ़" में खाने को सीमित करना एक इज़ाफ़ी चीज़ है, यानी पसन्दीदा और मज़ेदार खाने का इनकार करना मक़सूद है। पस ज़क़्क़ूम (थूहर) और ज़ख़्मों के धोवन के साबित होने से इसका कोई टकराव नहीं। यह दोज़ख़ियों का हाल हुआ। आगे जन्नत वालों का हाल है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1090) **1.** ताकि जहाँ चाहें आराम कर लें। एक जगह से दूसरी जगह जाना भी न पड़े।

2. इन चार चीज़ों की तख़्सीस इसलिए है कि अ़रब के लोग अक्सर जंगलों में चलते-फिरते रहते थे। **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) उस वक़्त उनके सामने ऊँट होते थे और ऊपर आसमान और नीचे ज़मीन और किनारों में पहाड़, इसलिए इन निशानियों में ग़ौर करने के लिए इरशाद फ़रमाया गया।

3. 'जोड़े' से मुराद ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ और 'बेजोड़' से मुराद नवीं तारीख़ है जैसा कि हदीस में है। और एक हदीस में है कि इससे नमाज़ मुराद है कि किसी की ताक़ यानी बेजोड़ रकअ़तें हैं और किसी की जुफ़्त यानी जोड़ वाली। पहली हदीस को रिवायत के एतिबार से भी सही कहा गया है और दिरायत (यानी अ़क्ल व समझ) के एतिबार से भी वह ज़्यादा तरजीह रखती है। क्योंकि बक़िया तक़सीम होने वाले ज़मानों में से हैं।

4. सवाल करना ताकीद और मज़बूती के लिए है। यानी उन ज़िक्र हुई क़स्मों में से हर-हर क़सम कलाम की ताकीद के लिए काफ़ी है, और अगरचे सब क़स्में ऐसी ही हैं मगर एहतिमाम के लिए उसके काफ़ी होने की वज़ाहत फ़रमा दी, जैसा कि सूरः वाक़िअ़ः में अल्लाह तआ़ला का क़ौल गुज़रा "व इन्नहू ल-क़-समुन् लौ तअ़लमू-न अ़ज़ीम" और क़सम का जवाब इसी में मौजूद है कि इनकारियों को सज़ा ज़रूर होगी।

5. उस क़ौम के दो लक़ब हैं 'आ़द' और 'इरम' क्योंकि आ़द बेटा है आ़स का और वह इरम का और वह साम बिन नूह अ़लैहिस्सलाम का। पस कभी उनको आ़द कहते हैं उनके बाप के नाम पर और कभी इरम कहते हैं उनके दादा के नाम पर, और उस इरम का एक बेटा आ़बिर है, और आ़बिर का बेटा समूद जिसके नाम से एक क़ौम मशहूर है, पस आ़द व समूद दोनों इरम में जा मिले हैं। आ़द आ़स के वास्ते से और समूद आ़बिर के वास्ते से।

6. दुर्रे मन्सूर में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इसकी तफ़सीर नक़ल की गई है कि वह जिसको सज़ा देता था उसके चारों हाथ-पावँ मेख़ों यानी कीलों से बाँधकर सज़ा देता था। और इसकी एक तफ़सीर सूरः सॉद में गुज़र चुकी है।

7. यानी मुझको इसके बावजूद कि मैं इकराम व सम्मान का हक़दार हूँ अपनी नज़र से आजकल गिरा रखा है कि दुनियावी नेमतें कम हो गईं। मतलब यह कि काफ़िर दुनिया ही को असल समझता है कि उसके ज़्यादा होने को मक़बूलियत की दलील और अपने को उसका मुस्तहिक़ और तंगी को धुतकारा हुआ होने की दलील और अपने को उसका ग़ैर-मुस्तहिक़ समझता है। पस इसमें दो चीज़ें बचने की हैं, एक दुनिया को असल मक़सूद समझना जिससे आख़िरत का इनकार और उसको छोड़ना सामने आता है, दूसरे हक़दार होने का दावा जिससे नेमत पर फ़ख़्र-नाज़, नाशुक्री और बला व मुसीबत पर शिकवा व बेसब्री निकलती है, और ये सब आमाल अ़ज़ाब का सबब हैं।

8. यानी दूसरों के वाजिब हुक़ूक़ न खुद अदा करते हैं न औरों को वाजिब हुक़ूक़ अदा करने को कहते हैं। और अ़मली तौर पर उसके तारिक (छोड़ने वाले) और एतिक़ाद के तौर पर उसके मुन्किर (इनकार करने वाले) हो, और काफ़िर के लिए वाजिब का छोड़ना अ़ज़ाब के ज़्यादा होने के और एतिक़ाद का ख़राब होना नफ़्से अ़ज़ाब का सबब है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1092) **1.** यह हिसाब के वक़्त होगा और अल्लाह तआ़ला का आना 'मुतशाबिहात' (यानी इसका सही मतलब अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नहीं बता सकता कि उसकी कैफ़ियत क्या होगी) में से है।

2. क्योंकि आख़िरत बदला मिलने की जगह है, अ़मल करने की जगह नहीं।

3. मक़ाम के क़रीने से यह ख़िताब "ऐ इत्मीनान वाली रूह!......आख़िर तक" क़ियामत के दिन मालूम होता है। और बाज़ रिवायतों में जो आया है कि मरने के वक़्त मोमिन से कहा जाता है, वहाँ आयत की तफ़सीर मक़सूद नहीं, न मरने के वक़्त की तख़्सीस है।

4. चुनाँचे मक्का फ़त्ह होने के दिन आपके लिए हरम के अहकाम बाक़ी नहीं रहे थे।

5. सारी औलाद के बाप आदम अ़लैहिस्सलाम हैं। पस आदम अ़लैहिस्सलाम और आदम की औलाद सबकी क़सम हुई।

6. चुनाँचे उम्र में कहीं बीमारी में, कहीं रंज में, कहीं फ़िक्र में ज़्यादातर मुब्तला रहता है, और उसका तक़ाज़ा यह था कि उसमें आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा होती और अपने को तक़दीर के हाथों मजबूर समझकर हुक्म का फ़रमाँबरदार और अल्लाह की रिज़ा के ताबे होता, लेकिन काफ़िर इनसान की यह हालत है कि बिलकुल भूल में पड़ा हुआ है।

7. यानी क्या अल्लाह की क़ुदरत से अपने को बाहर समझता है जो इस क़द्र भूल में पड़ा हुआ है।

8. यानी एक तो शैख़ी बघारता है फिर रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुश्मनी, इस्लाम की मुख़ालफ़त और गुनाहों में ख़र्च करने को हुनर समझता है, फिर झूठ भी बोलता है कि उसको ज़्यादा माल बतलाता है।

9. दीन के कामों को इसलिए घाटी कहा कि वे नफ़्स पर भारी हैं।

10. ईमान तो सबसे पहले है फिर ईमान पर साबित-क़दम रहने का हुक्म करना औरों से अफ़ज़ल है। फिर दूसरों को तकलीफ़ न देना बक़िया से अहम है, फिर उन आमाल का रुतबा है जो "फ़क्कु र-क़-बतिन्" से "ज़ा मत्-र-बतिन्" तक ज़िक्र किए गए हैं।

बिआयातिना हुम् अस्हाबुल् मश-अ-मह् (19) अ़लैहिम् नारुम् मुअ्-स-दह् (20) ❖

91 सूरतुश्-शम्सि 26

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 254 अक्षर, 56 शब्द और 15 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वश्शम्सि व ज़ुहाहा (1) वल्क़-मरि इज़ा तलाहा (2) वन्नहारि इज़ा जल्लाहा (3) वल्लैलि इज़ा यग़्शाहा (4) वस्समा-इ व मा बनाहा (5) वल्अर्ज़ि व मा तहाहा (6) व नफ़्सिंव्-व मा सव्वाहा (7) फ़-अल्ह-महा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा (8) क़द् अफ़्ल-ह मन् ज़क्काहा (9) व क़द् ख़ा-ब मन् दस्साहा (10) कज़्ज़बत् समूदु बितग़्वाहा (11) इज़िम्ब-अ़-स अश्क़ाहा (12) फ़क़ा-ल लहुम् रसूलुल्लाहि ना-क़तल्लाहि व सुक़्याहा (13) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ़-क़रूहा फ़-दम्-द-म अ़लैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ़-सव्वाहा (14) व ला यख़ाफ़ु अ़ुक़्बाहा (15) ❖

بالمرحمة ﴿١٧﴾ أولئك أصحب الميمنة ﴿١٨﴾ والذين كفروا
بايتنا هم أصحب المشئمة ﴿١٩﴾ عليهم نار مؤصدة ﴿٢٠﴾
سورة الشمس مكية بسم الله الرحمن الرحيم خمس عشرة اية
والشمس وضحها ﴿١﴾ والقمر إذا تلها ﴿٢﴾ والنهار إذا جلها ﴿٣﴾
واليل إذا يغشها ﴿٤﴾ والسماء وما بنها ﴿٥﴾ والأرض وما طحها ﴿٦﴾
ونفس وما سوىها ﴿٧﴾ فألهمها فجورها وتقوىها ﴿٨﴾ قد
أفلح من زكىها ﴿٩﴾ وقد خاب من دسىها ﴿١٠﴾ كذبت ثمود
بطغوىها ﴿١١﴾ إذ انبعث أشقىها ﴿١٢﴾ فقال لهم رسول الله
ناقة الله وسقيها ﴿١٣﴾ فكذبوه فعقروها فدمدم عليهم
ربهم بذنبهم فسوىها ﴿١٤﴾ ولا يخاف عقبها ﴿١٥﴾
سورة الليل مكية بسم الله الرحمن الرحيم إحدى وعشرون اية
واليل إذا يغشى ﴿١﴾ والنهار إذا تجلى ﴿٢﴾ وما خلق الذكر
والأنثى ﴿٣﴾ إن سعيكم لشتى ﴿٤﴾ فأما من أعطى واتقى ﴿٥﴾
وصدق بالحسنى ﴿٦﴾ فسنيسره لليسرى ﴿٧﴾ وأما من بخل
واستغنى ﴿٨﴾ وكذب بالحسنى ﴿٩﴾ فسنيسره للعسرى ﴿١٠﴾
وما يغني عنه ماله إذا تردى ﴿١١﴾ إن علينا للهدى ﴿١٢﴾

92 सूरतुल्-लैलि 9

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 314 अक्षर 71 शब्द और 21 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्लैलि इज़ा यग़्शा (1) वन्नहारि इज़ा त-जल्ला (2) व मा ख़-लक़ज़्ज़-क-र वल्उन्सा (3) इन्-न सअ्-यकुम् लशत्ता (4) फ़-अम्मा मन् अअ्ता वत्तक़ा (5) व सद्-द-क़ बिल्हुस्ना (6) फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्युस्रा (7) व अम्मा मम्-बख़ि-ल वस्तग़्ना (8) व कज़्ज़-ब बिल्हुस्ना (9) फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्-अुस्रा (10) व मा युग़्नी अ़न्हु मालुहू इज़ा
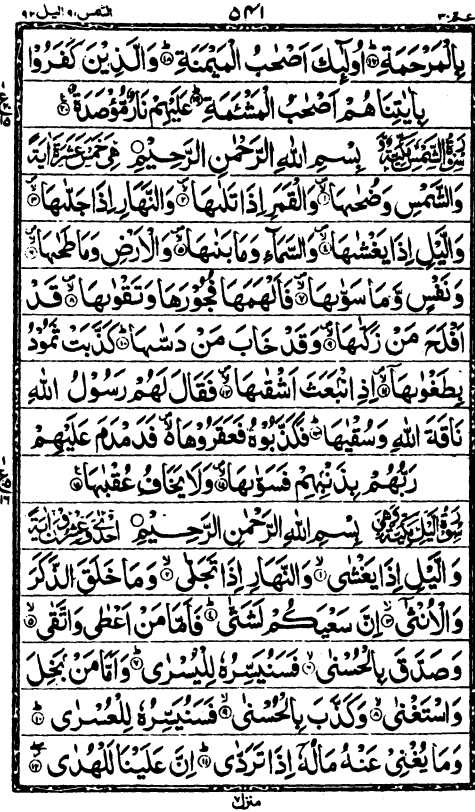
लोग हमारी आयतों के इनकारी हैं वे लोग बाएँ वाले हैं। **(19)** उनपर घेरने वाली आग होगी जिसको बन्द कर दिया जाएगा।[1] **(20)** ❖

91 सूरः शमूस 26

सूरः शमूस मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 15 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है सूरज की और उसकी रोशनी की **(1)** और चाँद की जब सूरज (के छुपने के) पीछे आए।[2] **(2)** और (क़सम है) दिन की जब वह उस (सूरज) को ख़ूब रोशन कर दे। **(3)** और (क़सम है) रात की जब वह उस (सूरज) को छुपा ले। **(4)** और (क़सम है) आसमान की और उस (ज़ात) की जिसने उसको बनाया।[3] **(5)** और (क़सम है) ज़मीन की और उस (ज़ात) की जिसने उसको बिछाया। **(6)** और (क़सम है इनसान की) जान की और उस (ज़ात) की जिसने उसको दुरुस्त बनाया। **(7)** फिर उसकी बद-किरदारी और परहेज़गारी (दोनों बातों) को उसके दिल में डाला।[4] **(8)** यक़ीनन वह मुराद को पहुँचा जिसने इस (जान) को पाक कर लिया **(9)** और नामुराद हुआ जिसने इसको (गुनाहों और बुराइयों में) दबा दिया। **(10)** क़ौमे समूद ने अपनी शरारत के सबब (सालेह अ़लैहिस्सलाम को) झुठलाया **(11)** (और यह उस ज़माने का क़िस्सा है) जबकि उस क़ौम में जो सबसे ज़्यादा बदबख़्त था **(12)** वह (ऊँटनी के क़त्ल करने के लिए) उठ खड़ा हुआ, तो उन लोगों से अल्लाह के पैग़म्बर (सालेह अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की (इस) ऊँटनी से और इसके पानी पीने से ख़बरदार रहना।[5] **(13)** सो उन्होंने पैग़म्बर को झुठलाया, फिर उस ऊँटनी को मार डाला, तो उनके परवर्दिगार ने उनके गुनाहों के सबब उनपर हलाकत नाज़िल फ़रमाई, फिर उस (हलाकत) को तमाम क़ौम के लिए आ़म फ़रमाया। **(14)** और अल्लाह तआ़ला को उस हलाकत के अख़ीर में किसी ख़राबी (के निकलने) का (किसी से) अन्देशा नहीं हुआ।[6] **(15)** ❖

92 सूरः लैल 9

सूरः लैल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 21 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है रात की जबकि वह (सूरज को और दिन को) छुपा ले। **(1)** और (क़सम है) दिन की जबकि वह रोशन हो जाए। **(2)** और (क़सम है) उस (ज़ात पाक) की जिसने नर और मादा को पैदा किया **(3)** कि बेशक तुम्हारी कोशिशें (यानी आमाल) मुख़्तलिफ़ हैं। **(4)** सो जिसने अल्लाह की राह में (माल) दिया और अल्लाह से डरा, **(5)** और अच्छी बात (यानी दीने इस्लाम) को सच्चा समझा, **(6)** तो हम उसको राहत की चीज़ के लिए सामान देंगे।[7] **(7)** और जिसने (अपने ऊपर वाजिब हुक़ूक़ से) बुख़्ल किया और बजाय ख़ुदा से डरने के ख़ुदा से बेपरवाई इख़्तियार की **(8)** और अच्छी बात (यानी इस्लाम) को झुठलाया **(9)** तो हम उसको तकलीफ़ की चीज़ के लिए सामान दे देंगे।[8] **(10)** और उसका माल उसके कुछ काम न आएगा जब वह बर्बाद

1. यानी दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में भरकर आगे से दरवाज़ा बन्द कर देंगे, क्योंकि हमेशा रहने की वजह से निकलना तो मिलेगा ही नहीं।
2. यानी निकले, मुराद इससे महीने की दरमियानी बाज़ रातों का चाँद है कि सूरज के छुपने के बाद रोशन होता है, और यह क़ैद शायद इसलिए हो कि वह वक़्त रोशनी के हद को पहुँचने का होता है जैसा कि "जुहाहा" का इशारा है सूरज की रोशनी के कामिल दर्जे को पहुँचने की तरफ़, और या उस वक़्त दो निशानियाँ ज़ाहिर होती हैं- पीछा करने और मिलाने की क़ुदरत, **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1098 पर)**

त-रद्दा (11) इन्-न अ़लैना लल्हुदा (12) व इन्-न लना लल्-आख़िर-त वल्ऊला (13) फ़-अन्ज़र्तुकुम् नारन् त-लज़्ज़ा (14) ला यस्लाहा इल्लल् अश्क़- (15) -ल्लज़ी कज़्ज़-ब व त-वल्ला (16) व स-युजन्नबुहल् अत्क़- (17) -ल्लज़ी युअ्ती मा-लहू य-तज़क्का (18) व मा लि-अ-हदिन् अि़न्दहू मिन्-निअ़्मतिन् तुज्ज़ा (19) इल्लब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिल्-अअ़्ला (20) व लसौ-फ़ यर्ज़ा (21) ❖

93 सूरतुज़्-ज़ुहा 11

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 166 अक्षर, 40 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वज़्ज़ुहा (1) वल्लैलि इज़ा सजा (2) मा वद्द-अ़-क रब्बु-क व मा क़ला (3) व लल्-आख़िरतु ख़ैरुल्-ल-क मिनल्-ऊला (4) व लसौ-फ़ युअ़्ती-क रब्बु-क फ़-तर्ज़ा (5) अलम् यजिद्-क यतीमन् फ़-आवा (6) व व-ज-द-क ज़ाल्लन् फ़-हदा (7) व व-ज-द-क आ-इलन् फ़-अग़्ना (8) फ़-अम्मल्-यती-म फ़ला तक़्हर् (9) व अम्मस्-सा-इ-ल फ़ला तन्हर् (10) व अम्मा बिनिअ़्-मति रब्बि-क फ़-हद्दिस् (11) ❖

الضحى ٩٣ الانشراح ٩٤ ٥٤٢ عم ٣٠

وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝ فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۝
لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا
الْأَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝ وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ
مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝
وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۝
سُورَةُ الضُّحَىٰ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً
وَالضُّحَىٰ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ۝ وَ
لَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝
أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۝ وَ
وَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَأَمَّا
السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝
سُورَةُ الْإِنشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ
أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي
أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ
يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَ
إِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

منزل ٧

94 सूरतुल्-इन्शिराहि 12

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 103 अक्षर, 27 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलम् नश्रह् ल-क सद्र-क (1) व व-ज़अ़्ना अ़न्-क विज़्र-क- (2) -ल्लज़ी अन्क़-ज़ ज़ह्-र-क (3) व र-फ़अ़्ना ल-क ज़िक्रक् (4) फ़-इन्-न मअ़ल्-अुस्रि युस्रन् (5) इन्-न मअ़ल्-अुस्रि युस्रा (6) फ़-इज़ा फ़रग़्-त फ़न्सब् (7) व इला रब्बि-क फ़र्ग़ब् (8) ❖

होने लगेगा। (बरबादी से मुराद जहन्नम में जाना है)। **(11)** वाक़ई हमारे ज़िम्मे राह का बतला देना है **(12)** और (जैसी राह कोई शख़्स इख़्तियार करेगा वैसा ही फल उसको देंगे, क्योंकि) हमारे ही क़ब्ज़े में है आख़िरत और दुनिया।[1] **(13)** (आगे खुलासे के तौर पर इरशाद है कि) तो मैं तुमको एक भड़कती हुई आग से डरा चुका हूँ।[2] **(14)** उसमें (हमेशा के लिए) वही बदबख़्त दाख़िल होगा **(15)** जिसने (दीने हक़ को) झुठलाया और (उससे) मुँह फेरा। **(16)** और उससे ऐसा शख़्स दूर रखा जाएगा जो बड़ा परहेज़गार है। **(17)** जो अपना माल (सिर्फ़) इस ग़रज़ से देता है कि (गुनाहों से) पाक हो जाए। **(18)** और सिवाय अपने बड़ी शान वाले परवर्दिगार की रिज़ा हासिल करने के (कि यही उसका मक़सूद है) उसके ज़िम्मे किसी का एहसान न था **(19)** कि (उस देने से) उसका बदला उतारना (मक़सूद) हो।[3] **(20)** और यह शख़्स जल्द ही खुश हो जाएगा[4] (यानी आख़िरत में ऐसी-ऐसी नेमतें मिलेंगी)। **(21)** ❖

93 सूरः जुहा[5] 11

सूरः जुहा मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है दिन की रोशनी की। **(1)** और रात की जबकि वह क़रार पकड़े।[6] **(2)** (आगे क़सम का जवाब है) कि आपके परवर्दिगार ने न आपको छोड़ा और न (आपसे) दुश्मनी की।[7] **(3)** और आख़िरत आपके लिए दुनिया से कहीं ज़्यादा बेहतर है। (पस वहाँ आपको इससे ज़्यादा नेमतें मिलेंगी)। **(4)** और जल्द ही अल्लाह तआ़ला आपको (आख़िरत में बहुत ज़्यादा नेमतें) देगा, सो आप खुश हो जाएँगे।[8] **(5)** क्या अल्लाह तआ़ला ने आपको यतीम नहीं पाया, फिर (आपको) ठिकाना दिया।[9] **(6)** और अल्लाह ने आपको (शरीअ़त से) बेख़बर पाया, सो (आपको शरीअ़त का) रास्ता बतला दिया।[10] **(7)** और अल्लाह तआ़ला ने आपको नादार पाया, सो मालदार बना दिया।[11] **(8)** तो आप (उसके शुक्रिए में) यतीम पर सख़्ती न कीजिए **(9)** और माँगने वाले को मत झिड़किए **(10)** (यह तो अ़मली शुक्र है) और अपने रब के (ज़िक्र हुए) इनामों का तज़्किरा करते रहा कीजिए (यानी ज़बान से क़ौली शुक्र भी कीजिए)। **(11)** ❖

94 सूरः इन्शिराह 12

सूरः इन्शिराह मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क्या हमने आपकी ख़ातिर आपका सीना (इल्म, नर्मी और बर्दाश्त से) कुशादा नहीं कर दिया?[12] **(1)** और हमने आपसे आपका वह बोझ उतार दिया **(2)** जिसने आपकी कमर तोड़ रखी थी।[13] **(3)** और हमने आपकी ख़ातिर आपका ज़िक्र बुलन्द किया।[14] **(4)** सो बेशक मौजूदा मुश्किलात के साथ आसानी (होने वाली है)।[15] **(5)** बेशक मौजूदा मुश्किलात के साथ आसानी होने वाली है। **(6)** तो आप जब (तब्लीग़े अहकाम से) फ़ारिग़ हो जाया करें तो (अपनी ज़ात से मुताल्लिक़ दूसरी खुसूसी इबादतों में) मेहनत किया कीजिए **(7)** और (जो कुछ माँगना हो उसमें) अपने रब ही की तरफ़ तवज्जोह रखिए। **(8)** ❖

(पृष्ठ 1096 का शेष) सूरज का छुपना और चाँद का निकलना।

3. मुराद अल्लाह तआ़ला है और मख़्लूक़ की क़सम को ख़ालिक़ यानी पैदा करने वाले की क़सम पर मुक़द्दम फ़रमाना दलील से मदलूल की तरफ़ जाना है कि तैयारशुदा चीज़ अपने बनाने वाले पर दलालत करती है, पस इस मदलूल (जिसपर दलालत की गई है) में तौहीद पर दलील पकड़ने की तरफ़ भी इशारा हो गया। **(पृष्ठ 1096 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1098 की तफ़सीर पृष्ठ 1100-1113 पर)**

95 सूरतुत्-तीनि 28

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 165 अक्षर, 34 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि **(1)** व तूरि सीनी-न **(2)** व हाज़ल् ब-लदिल्-अमीन **(3)** ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न फ़ी अह्सनि तक़्वीम **(4)** सुम्-म र-दद्नाहु अस्फ़-ल साफ़िलीन **(5)** इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून **(6)** फ़मा युकज़्ज़िबु-क बअ़्दु बिद्दीन **(7)** अलैसल्लाहु बि-अह्कमिल्-हाकिमीन **(8)** ❖

96 सूरतुल् अ़-लक़ि 1

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 290 अक्षर, 72 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़-लक़ **(1)** ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् अ़-लक़ **(2)** इक़्रअ् व रब्बुकल् अकरमु- **(3)** -ल्लज़ी अ़ल्ल-म बिल्क़-लमि **(4)** अ़ल्ल-मल्-इन्सा-न मा लम् यअ़्लम् **(5)** कल्ला इन्नल्-इन्सा-न ल-यत्ग़ा **(6)** अर्-रआहुस्तग़्ना **(7)** इन्-न इला रब्बिकर्-रुज्आ़ **(8)** अ-रऐतल्लज़ी यन्हा **(9)** अ़ब्दन् इज़ा सल्ला **(10)** अ-रऐ-त इन् का-न अ़लल्-हुदा **(11)** औ अ-म-र बित्तक़्वा **(12)** अ-रऐ-त इन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला **(13)** अलम् यअ़्लम् बिअन्नल्ला-ह यरा **(14)** कल्ला ल-इल्लम् यन्तहि ल-नस्फ़-अ़म् बिन्नासि-यति **(15)** नासि-यतिन् काज़ि-बतिन् ख़ाति-अह् **(16)** फ़ल्यद्अु नादि-यह् **(17)** स-नद्अुज़्-ज़बानियह् **(18)** कल्ला, ला तुतिअ़्हु वस्जुद् वक़्तरिब् ❑ **(19)** ❖

التين ٩٥ العلق ٩٦ ٥٤٣ عم ٣٠

سورة التين مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي ثماني آيات

والتين والزيتون ﴿١﴾ وطور سينين ﴿٢﴾ وهذا البلد الأمين ﴿٣﴾ لقد خلقنا الإنسان في أحسن تقويم ﴿٤﴾ ثم رددناه أسفل سافلين ﴿٥﴾ إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم أجر غير ممنون ﴿٦﴾ فما يكذبك بعد بالدين ﴿٧﴾ أليس الله بأحكم الحاكمين ﴿٨﴾

سورة العلق مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي تسع عشرة آية

اقرأ باسم ربك الذي خلق ﴿١﴾ خلق الإنسان من علق ﴿٢﴾ اقرأ وربك الأكرم ﴿٣﴾ الذي علم بالقلم ﴿٤﴾ علم الإنسان ما لم يعلم ﴿٥﴾ كلا إن الإنسان ليطغى ﴿٦﴾ أن رآه استغنى ﴿٧﴾ إن إلى ربك الرجعى ﴿٨﴾ أرأيت الذي ينهى ﴿٩﴾ عبدا إذا صلى ﴿١٠﴾ أرأيت إن كان على الهدى ﴿١١﴾ أو أمر بالتقوى ﴿١٢﴾ أرأيت إن كذب وتولى ﴿١٣﴾ ألم يعلم بأن الله يرى ﴿١٤﴾ كلا لئن لم ينته لنسفعا بالناصية ﴿١٥﴾ ناصية كاذبة خاطئة ﴿١٦﴾ فليدع ناديه ﴿١٧﴾ سندع الزبانية ﴿١٨﴾ كلا لا تطعه واسجد واقترب ﴿١٩﴾

منزل ٧

95 सूरः तीन 28

सूरः तीन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है इन्जीर (के पेड़) की और ज़ैतून (के पेड़) की। **(1)** और तूरे सीनीन की। **(2)** और इस अमन वाले शहर (मक्का शरीफ़) की **(3)** कि हमने इनसान को बहुत ख़ूबसूरत साँचे में ढाला है। **(4)** फिर (उनमें जो बूढ़ा हो जाता है) हम उसको पस्ती की हालत वालों से भी ज़्यादा पस्त कर देते हैं।[1] **(5)** लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए इस क़द्र सवाब है जो कभी मौक़ूफ़ न होगा। **(6)** फिर कौन-सी चीज़ तुझको क़ियामत के बारे में मुन्किर बना रही है? **(7)** क्या अल्लाह तआ़ला सब हाकिमों से बढ़कर हाकिम नहीं है?[2] **(8)** ❖

96 सूरः अ़लक़ 1

सूरः अ़लक़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 19 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

(ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम!) आप (पर जो) क़ुरआन (नाज़िल हुआ करेगा) अपने रब का नाम लेकर पढ़ा कीजिए।[3] (यानी जब पढ़िए बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहकर पढ़ा कीजिए) जिसने (मख़्लूक़ात को) पैदा किया। **(1)** जिसने इनसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।[4] **(2)** आप क़ुरआन पढ़ा कीजिए और आपका रब बड़ा करीम है (जो चाहता है अ़ता फ़रमाता है)। **(3)** (और ऐसा है) जिसने (लिखे-पढ़ों को) क़लम से तालीम दी **(4)** (और आ़म तौर पर) इनसान को (दूसरे साधनों से) उन चीज़ों की तालीम दी जिनको वह न जानता था।[5] **(5)** सचमुच बेशक (काफ़िर) आदमी (आदमियत की) हद से निकल जाता है। **(6)** इस वजह से कि अपने आपको (अपने ही जिन्स के अफ़राद से) बेपरवाह देखता है। **(7)** ऐ (आ़म) मुख़ातब! तेरे रब ही की तरफ़ सबको लौटना होगा। **(8)** ऐ (आ़म) मुख़ातब! भला उस शख़्स का हाल तो बतला जो (हमारे) एक (ख़ास) बन्दे को मना करता है **(9)** जब वह (बन्दा) नमाज़ पढ़ता है।[6] **(10)** (और) ऐ मुख़ातब! भला यह तो बतला कि अगर वह बन्दा हिदायत पर हो (जो कि लाज़िमी कमाल है) **(11)** या वह (दूसरों को भी) परहेज़गारी की तालीम देता हो। **(12)** ऐ मुख़ातब! भला यह तो बतला कि अगर वह शख़्स (नाहक़ दीन को) झुठलाता हो और (हक़ से) मुँह फेरता हो, **(13)** क्या उस शख़्स को यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआ़ला (उसकी सरकशी व शरारत वग़ैरह को) देख रहा है। **(14)** हरगिज़ (ऐसा) नहीं (करना चाहिए, और) अगर यह शख़्स बाज़ न आएगा तो हम (उसको) पैशानी के बाल पकड़कर **(15)** जो कि झूठ और ख़ता में लिप्त पेशानी के बाल हैं (जहन्नम की तरफ़) घसीटेंगे। **(16)** सो यह अपने पास बैठने वाले लोगों को बुला ले। **(17)** (अगर उसने ऐसा किया तो) हम भी दोज़ख़ के प्यादों को बुला लेंगे।[7] **(18)** (आगे फिर तंबीह व मलामत किया जा रहा है कि उसको) हरगिज़ (ऐसा) नहीं (करना चाहिए मगर) आप उसका कहना न मानिए और (बदस्तूर) नमाज़ पढ़ते रहिए और (ख़ुदा की) नज़दीकी हासिल करते रहिए। ❑ **(19)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) **4.** या यह निस्बत पैदा करने के ऐतिबार से है, यानी दिल में जो नेकी का रुझान होता है या जो बुराई की तरफ़ मैलान होता है, दोनों का पैदा करने वाला अल्लाह तआ़ला है, अगरचे नेकी का ख़्याल दिल में डालना फ़रिश्ते के वास्ते से होता है और बुराई का ख़्याल शैतान के ज़रिये, **(पृष्ठ 1096 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1098, 1100 की तफ़सीर पृष्ठ 1102-1113 पर)**

97 सूरतुल्-क़द्रि 25

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 115 अक्षर, 30 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल्-क़द्रि (1) व मा अद्रा-क मा लैलतुल्-क़द्र (2) लैलतुल्-क़द्रि ख़ैरुम्-मिन् अल्फ़ि शह्र् (3) त-नज़्ज़लुल्-मलाइ-कतु वर्रूहु फ़ीहा बि-इज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् (4) सलामुन्, हि-य हत्ता मत्-लअ़िल्-फ़ज्र ▲ (5) ❖

98 सूरतुल् बय्यि-नति 100

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 413 अक्षर, 95 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

लम् यकुनिल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्- किताबि वल्मुश्रिकी-न मुन्फ़क्की-न हत्ता तअ्ति-यहुमुल्- बय्यिनह् (1) रसूलुम्-मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म् मुतह्ह-रतन् (2) फ़ीहा कुतुबुन् क़य्यिमह् (3) व मा त-फ़र्रक़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्-बअ़्दि मा जाअत्हुमुल्-बय्यिनह् (4) व मा उमिरू इल्ला लियअ़्बुदुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न हु-नफ़ा-अ व युक़ीमुस्सला-त व युअ्तुज़्ज़का-त व ज़ालि-क दीनुल्-क़य्यिमह् (5) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि वल्मुश्रिकी-न फ़ी नारि जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, उलाइ-क हुम् शर्रुल्-बरिय्यह् (6) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति उलाइ-क हुम् ख़ैरुल्-बरिय्यह् (7) जज़ाउहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, ज़ालि-क लिमन् ख़शि-य रब्बह् (8) ❖

سورة القدر مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي خمس آيات
إنا أنزلناه في ليلة القدر ۝ وما أدراك ما ليلة القدر ۝ ليلة
القدر خير من ألف شهر ۝ تنزل الملائكة والروح فيها
بإذن ربهم من كل أمر ۝ سلام هي حتى مطلع الفجر ۝
سورة البينة مدنية بسم الله الرحمن الرحيم وهي ثماني آيات
لم يكن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين
منفكين حتى تأتيهم البينة ۝ رسول من الله يتلوا
صحفا مطهرة ۝ فيها كتب قيمة ۝ وما تفرق الذين أوتوا
الكتاب إلا من بعد ما جاءتهم البينة ۝ وما أمروا إلا
ليعبدوا الله مخلصين له الدين حنفاء ويقيموا الصلوة
ويؤتوا الزكوة وذلك دين القيمة ۝ إن الذين كفروا من
أهل الكتاب والمشركين في نار جهنم خالدين فيها أولئك
هم شر البرية ۝ إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات
أولئك هم خير البرية ۝ جزاؤهم عند ربهم جنات
عدن تجري من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا رضي
الله عنهم ورضوا عنه ذلك لمن خشي ربه ۝
منزل

72

97 सूरः क़द्र 25

सूरः क़द्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बेशक हमने क़ुरआन को शबे-क़द्र में उतारा है। **(1)** और (शौक़ बढ़ाने के लिए फ़रमाते हैं कि) आपको कुछ मालूम है कि शबे-क़द्र कैसी चीज़ है? **(2)** (आगे जवाब है कि) शबे-क़द्र हज़ार महीने से बेहतर है।[1] **(3)** (और वह शबे-क़द्र ऐसी है कि) उस रात में फ़रिश्ते और रूहुल-क़ुदुस (यानी जिबराईल अलैहि.) अपने परवर्दिगार के हुक्म से हर ख़ैर के मामले को लेकर (ज़मीन की तरफ़) उतरते हैं।[2] **(4)** (और वह रात) पूरी-की-पूरी सलाम है। वह रात (इसी सिफ़त व बरकत के साथ) फ़ज्र के निकलने के वक़्त तक रहती है।[3] ▲ **(5)** ❖

98 सूरः बय्यिनः 100

सूरः बय्यिनः मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जो लोग अहले किताब और मुश्रिकों में से (आपको पैग़म्बर बनाकर भेजे जाने से पहले) काफ़िर थे, वे (अपने कुफ़्र से हरगिज़) बाज़ आने वाले न थे, जब तक कि उनके पास खुली दलील न आती।[4] **(1)** (यानी) एक अल्लाह का रसूल जो (उनको) पाक सहीफ़े पढ़कर सुना दे **(2)** जिनमें दुरुस्त मज़ामीन लिखे हों। **(3)** और जो लोग अहले किताब थे (और ग़ैर-अहले किताब तो और भी ज़्यादा) वे इस खुली दलील के आने ही के बाद (दीन में) इख़्तिलाफ़ करने वाले हो गए[5] **(4)** हालाँकि उन लोगों को (पहली आसमानी किताबों में) यही हुक्म हुआ था कि (बातिल और शिर्क वाले दीनों से) यक्सू होकर अल्लाह की इस तरह इबादत करें कि इबादत उसी के लिए ख़ास रखें, और नमाज़ की पाबन्दी रखें और ज़कात दिया करें, और यही तरीक़ा है उन (ज़िक्र हुए) दुरुस्त मज़ामीन का (बतलाया हुआ)। **(5)** बेशक जो लोग अहले किताब और मुश्रिकीन में से काफ़िर हुए वे दोज़ख़ की आग में जाएँगे जहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) ये लोग मख़्लूक़ में सबसे बदतर हैं। **(6)** बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए वे लोग मख़्लूक़ में सबसे अच्छे हैं। **(7)** उनका सिला उनके परवर्दिगार के यहाँ हमेशा रहने की जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे (और) अल्लाह उनसे ख़ुश रहेगा और वे अल्लाह से ख़ुश रहेंगे।[6] यह (जन्नत और अल्लाह की रिज़ा) उस शख़्स के लिए है जो अपने रब से डरता है। **(8)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) फिर वह रुझान और मैलान कभी इरादे के दर्जे तक पहुँच जाता है जो इरादे व इख़्तियार से सादिर होता है, जिसके बाद फ़ेल का सादिर होना ख़ुदा के पैदा करने की वजह से होता है, और कभी इरादे तक नहीं पहुँचता।

5. यानी उसको क़त्ल मत करना और न उसका पानी बन्द करना, चूँकि क़त्ल के इरादे का सबब यही पानी की बारी थी, पानी का इसलिए ज़िक्र फ़रमाया। और अल्लाह की ऊँटनी इसलिए कहा कि ख़ुदा तआला ने उसको नुबुव्वत की दलील बना दिया और उसके एहतिराम व सम्मान को वाजिब फ़रमाया।

6. उस हलाकत के अख़ीर में किसी ख़राबी के निकलने का किसी से अन्देशा नहीं हुआ। जैसे दुनिया के बादशाहों को कभी-कभी किसी क़ौम को सज़ा देने के बाद अन्देशा होता है कि उसपर कोई शोरिश और हंगामा न खड़ा हो जाए। समूद और ऊँटनी का तफ़सीली तज़्किरा सूरः आराफ़ में गुज़र चुका है। **(पृष्ठ 1096 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1098, 1100, 1102 की तफ़सीर पृष्ठ 1104-1114 पर)**

99 सूरतुल्-ज़िल्ज़ालि 93

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 158 अक्षर, 37 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा ज़ुल्ज़ि-लतिल्-अर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा **(1)** व अख़्र-जतिल्-अर्ज़ु अस्क़ालहा **(2)** व क़ालल्-इन्सानु मा लहा **(3)** यौमइज़िन् तुहद्दिसु अख़्बारहा **(4)** बि-अन्-न रब्ब-क औहा लहा **(5)** यौमइज़िंय्-यस्दुरुन्नासु अश्तातल्-लियुरौ अअ़्मालहुम् **(6)** फ़-मंय्यअ़्मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्-यरहू **(7)** व मंय्-यअ़्मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् शर्रंय्-यरहू **(8)** ❖

100 सूरतुल्-आ़दियाति 14

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 170 अक्षर, 40 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्-आ़दियाति ज़ब्हन् **(1)** फ़ल्मूरियाति क़द्हन् **(2)** फ़ल्-मुग़ीराति सुब्हन् **(3)** फ़-असर्-न बिही नक़्अ़न् **(4)** फ़-वसत्-न बिही जम्अ़न् **(5)** इन्नल्-इन्सा-न लिरब्बिही ल-कनूद **(6)** व इन्नहू अ़ला ज़ालि-क ल-शहीद **(7)** व इन्नहू लिहुब्बिल्-ख़ैरि ल-शदीद **(8)** अ-फ़ला यअ़्लमु इज़ा बुअ़्सि-र मा फ़िल्क़ुबूरि **(9)** व हुस्सि-ल मा फ़िस्सुदूरि **(10)** इन्-न रब्बहुम् बिहिम् यौमइज़िल् ल-ख़बीर **(11)** ❖

سورة الزلزال مدنية بسم الله الرحمن الرحيم وهي ثمان آيات
إذا زلزلت الأرض زلزالها ۝ وأخرجت الأرض أثقالها ۝
وقال الإنسان ما لها ۝ يومئذ تحدث أخبارها ۝ بأن
ربك أوحى لها ۝ يومئذ يصدر الناس أشتاتا ليروا
أعمالهم ۝ فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ۝ ومن
يعمل مثقال ذرة شرا يره ۝
سورة العاديات مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي إحدى عشرة آية
والعاديات ضبحا ۝ فالموريات قدحا ۝ فالمغيرات صبحا ۝
فأثرن به نقعا ۝ فوسطن به جمعا ۝ إن الإنسان لربه
لكنود ۝ وإنه على ذلك لشهيد ۝ وإنه لحب الخير لشديد ۝
أفلا يعلم إذا بعثر ما في القبور ۝ وحصل ما في الصدور ۝
إن ربهم بهم يومئذ لخبير ۝
سورة القارعة مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي إحدى عشرة آية
القارعة ۝ ما القارعة ۝ وما أدراك ما القارعة ۝ يوم
يكون الناس كالفراش المبثوث ۝ وتكون الجبال كالعهن
المنفوش ۝ فأما من ثقلت موازينه ۝ فهو في عيشة

101 सूरतुल्-क़ारि-अ़ति 30

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 160 अक्षर, 35 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्क़ारि-अ़तु **(1)** मल्क़ारि-अ़तु **(2)** व मा अद्रा-क मल्क़ारिअ़हू **(3)** यौ-म

72

99 सूरः ज़िल्ज़ाल 93

सूरः ज़िल्ज़ाल मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

जब ज़मीन अपनी सख़्त जुम्बिश से हिलाई जाएगी। **(1)** और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।[1] **(2)** और (उस हालत को देखकर काफ़िर) आदमी कहेगा कि इसको क्या हुआ?[2] **(3)** उस दिन (ज़मीन) अपनी सब (अच्छी-बुरी) ख़बरें बयान करने लगेगी।[3] **(4)** इस सबब से कि आपके रब का उसको यही हुक्म होगा। **(5)** उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ जमाअतें होकर (हिसाब के मक़ाम से) वापस होंगे ताकि अपने आमाल (के फल) को देख लें। **(6)** सो जो शख़्स (दुनिया में) ज़र्रा बराबर नेकी करेगा वह (वहाँ) उसको देख लेगा। **(7)** और जो शख़्स ज़र्रा बराबर बुराई करेगा वह उसको देख लेगा।[4] **(8)** ❖

100 सूरः आदियात 14

सूरः आदियात मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है उन घोड़ों की जो हाँपते हुए दौड़ते हैं (1) फिर (पत्थर पर) टाप मारकर आग झाड़ते हैं। (2) फिर सुबह के वक़्त तहस-नहस करते हैं। **(3)** फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं। **(4)** फिर उस वक़्त (दुश्मनों की) जमाअत में जा घुसते हैं।[5] **(5)** बेशक (काफ़िर) आदमी अपने परवर्दिगार का बड़ा नाशुक्रा है। **(6)** और उसको खुद भी उसकी ख़बर है (कभी पहली ही बार में कभी ग़ौर-फ़िक्र के बाद)। **(7)** और वह माल की मुहब्बत में बड़ा मज़बूत है। **(8)** क्या उसको वह वक़्त मालूम नहीं जब ज़िन्दा किए जाएँगे जितने मुर्दे क़ब्रों में हैं। **(9)** और ज़ाहिर हो जाएगा जो कुछ दिलों में है। **(10)** बेशक उनका परवर्दिगार उनके हाल से उस दिन पूरा आगाह है। **(11)** ❖

101 सूरः क़ारिअः 30

सूरः क़ारिअः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 11 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

वह खड़खड़ाने वाली चीज़। **(1)** कैसी कुछ है वह खड़खड़ाने वाली चीज़।[6] **(2)** और आपको मालूम है कैसी कुछ है वह खड़खड़ाने वाली चीज़? **(3)** जिस दिन आदमी परेशान परवानों की तरह हो जाएँगे **(4)** और पहाड़ धुन्की हुई रंगीन ऊन की तरह हो जाएँगे (तश्बीह देने की वजह अलग-अलग होकर उड़ जाना है)। **(5)** फिर (आमाल के वज़न के बाद) जिस शख़्स का (ईमान का) पल्ला भारी होगा[7] **(6)** वह तो अपनी पसन्दीदा

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. राहत की चीज़ से नेक अ़मल और नेक अ़मल के वास्ते से जन्नत मुराद है जो कि आसानी की जगह और सबब है। इसी लिए "युसरा" कह दिया गया। वरना "युसरा" के मायने आसान चीज़ के हैं।

8. तकलीफ़ की चीज़ से बुरे अ़मल और बुरे अ़मल के वास्ते से दोज़ख़ मुराद है जो कि तंगी का सबब और जगह है। इसलिए "उस्र" को "उस्रा" कह दिया गया। और सामान देने से मुराद दोनों जगह यह है कि अच्छे या बुरे काम उससे बेतकल्लुफ़ सादिर होंगे, और वैसे ही असबाब जमा हो जाएँगे, और फिर नेक आमाल का जन्नत का सामान होना और बुरे आमाल का दोज़ख़ का सामान होना ज़ाहिर ही है। हदीस में है कि "जो (पृष्ठ 1096 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1098, 1100, 1102, 1104 की तफ़सीर पृष्ठ 1106-1114 पर)

यकूनुन्नासु कल्फ़राशिल्-मब्सूसि (4) व तकूनुल्-जिबालु कल्-अिह्निल्-मन्फ़ूश (5) फ़-अम्मा मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू (6) फ़हु-व फ़ी अीशतिर्-राज़ियह् (7) व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू (8) फ़-उम्मुहू हावियह् (9) व मा अद्रा-क मा हियह् (10) नारुन् हामियह् (11) ❖

102 सूरतुत्-तकासुरि 16

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 123 अक्षर, 28 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हाकुमुत्-तकासुरु (1) हत्ता ज़ुर्तुमुल्-मक़ाबिर (2) कल्ला सौ-फ़ तअ्लमून (3) सुम्-म कल्ला सौ-फ़ तअ्लमून (4) कल्ला लौ तअ्लमू-न अिल्मल्-यक़ीन (5) ल-त-र-वुन्नल्-जहीम (6) सुम्-म ल-त-र-वुन्नहा अैनल्-यक़ीन (7) सुम्-म लतुस्-अलुन्-न यौमइज़िन् अनिन्-नअीम (8) ❖

103 सूरतुल्-अस्रि 13

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 74 अक्षर, 14 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्-अस्रि (1) इन्नल्-इन्सा-न लफ़ी ख़ुस्र (2) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति व तवासौ बिल्हक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्र (3) ❖

عم ٣٠ — ٥٤٦ — التكاثر ١٠٢ العصر ١٠٣ الهمزة ١٠٤

رَاضِيَةٍ ۝ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝
وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ۝ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝
سُورَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ
أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝
ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝
لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ
يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝
سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَلَاثُ آيَاتٍ
وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝
سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعُ آيَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝
يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝ كَلَّا لَيُنبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝ وَ
مَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝ نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ ۝ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى
الْأَفْئِدَةِ ۝ إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ ۝ فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

منزل

104 सूरतुल् हु-म-ज़ति 32

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 135 अक्षर, 33 शब्द और 9 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वैलुल्-लिकुल्लि हु-म-ज़तिल् लु-मज़ह् (1) अल्लज़ी ज-म-अ मालंव्-व अद्-द-दहू (2) यह्सबु अन्-न मालहू अख़्ल-दह् (3) कल्ला लयुम्ब-ज़न्-न फ़िल्-हु-त-मति (4) व मा

ऐश व आराम में होगा (यानी नजात पाने वाला होगा)। (7) और जिस शख़्स का (ईमान का) पल्ला हल्का होगा (यानी वह काफ़िर होगा) (8) तो उसका ठिकाना हाविया होगा। (9) और आपको कुछ मालूम है कि वह (हाविया) क्या चीज़ है? (10) (वह) एक दहकती हुई आग है। (11) ❖

102 सूरः तकासुर 16

सूरः तकासुर मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 8 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

(दुनियावी साज़ व सामान पर) फ़ख़्र करना (उसके तलब करने और मुहब्बत की निशानी है,) तुमको (आख़िरत से) ग़ाफ़िल रखता है। (1) यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुँच जाते हो। (2) हरगिज़ नहीं! तुमको बहुत जल्द (क़ब्र में जाते ही यानी मरते ही) मालूम हो जाएगा। (3) फिर (दोबारा तुमको सचेत किया जाता है कि) हरगिज़ (तुम्हारी यह हालत ठीक) नहीं, बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (4) हरगिज़ नहीं! (और) अगर तुम यक़ीनी तौर पर (ऐसी दलीलों, जो सही हों और जिनकी पैरवी वाजिब हो, से इस बात को) जान लेते। (5) अल्लाह की क़सम! तुम लोग जरूर दोज़ख़ को देखोगे। (6) फिर (दोबारा ताकीद के लिए कहा जाता है कि) खुदा की क़सम! तुम लोग उसको ऐसा देखना देखोगे जो कि खुद यक़ीन है।[1] (7) फिर (और बात सुनो कि) उस दिन तुम सबसे नेमतों की पूछ होगी।[2] (8) ❖

103 सूरः अ़स्र 13

सूरः अ़स्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क़सम है ज़माने की (जिसमें नफ़ा व नुक़सान वाक़ेअ़ होता है) (1) कि इनसान (उम्र को ज़ाया करने की वजह से) बड़े घाटे में है, (2) मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए (कि यह कमाल है) और एक-दूसरे को हक़ के एतिक़ाद (पर क़ायम रहने) की नसीहत व तंबीह करते रहे, और एक-दूसरे को (आमाल की) पाबन्दी की नसीहत व तंबीह करते रहे। (3) ❖

104 सूरः हु-मज़ः 32

सूरः हु-मज़ः मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 9 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बड़ी ख़राबी है हर ऐसे शख़्स के लिए जो पीठ पीछे ऐब निकालने वाला हो (और) रू-ब-रू ताना देने वाला हो। (1) जो (हिर्स के ज़्यादा होने की वजह से) माल जमा करता हो, और (उसकी मुहब्बत और खुशी से) उसको बार-बार गिनता हो। (2) वह ख़्याल कर रहा है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा।[3] (3) हरगिज़ नहीं (रहेगा। फिर आगे उस ख़राबी की तफ़सीर है कि) अल्लाह की क़सम! वह शख़्स ऐसी आग में डाला जाएगा जिसमें जो कुछ पड़े वह उसको तोड़-फोड़ दे। (4) और आपको कुछ मालूम है कि वह तोड़-फोड़ करने वाली आग कैसी है? (5) वह अल्लाह की आग है जो (अल्लाह के हुक्म से) सुलगाई गई है, (6) जो (कि बदन को लगते ही) दिलों तक जा पहुँचेगी।[4] (7) (और) वह (आग) उनपर बन्द कर दी जाएगी (8) (इस तरह से कि) वे लोग आग के बड़े लम्बे-लम्बे सुतूनों में (घिरे होंगे)।[5] (9) ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) नेक-बख़्त होता है उसके लिए नेक-बख़्तों के आमाल आसान कर दिए जाते हैं और यही मामला बद-बख़्तों के साथ होता है **(पृष्ठ 1096 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1098, 1100, 1102, 1104, 1106 की तफ़सीर पृष्ठ 1108-1115 पर)**

अद्रा-क मल्हु-त-मह् (5) नारुल्लाहिल् मू-क़्-दतु- (6) -ल्लती तत्तलिअ़ु अ़लल्-अफ़्इदह् (7) इन्नहा अ़लैहिम् मुअ्-स-दतुन् (8) फ़ी अ़-मदिम्-मुमद्-द-दह् (9) ❖

105 सूरतुल्-फ़ीलि 19

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 94 अक्षर, 24 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलम् त-र कै-फ़ फ़-अ़-ल रब्बु-क बि-अस्हाबिल्-फ़ील (1) अलम् यज्अ़ल् कै-दहुम् फ़ी तज़्लीलिंव- (2) -व अर्स-ल अ़लैहिम् तैरन् अबाबील (3) तर्मीहिम् बिहिजा-रतिम्- मिन् सिज्जील (4) फ़-ज-अ़-लहुम् क-अ़स्फ़िम् मअ्कूल (5) ❖

106 सूरतु क़ुरैशिन् 29

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 79 अक्षर, 17 शब्द और 4 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

लि-ईलाफ़ि क़ुरैशिन् (1) ईलाफ़िहिम् रिह्-ल-तश्शिता-इ वस्सैफ़ (2) फ़ल्-यअ्बुदू रब्-ब हाज़ल्-बैति- (3) -ल्लज़ी अत्-अ़-म-हुम् मिन् जूअिंव्-व अ-म-नहुम् मिन् ख़ौफ़ (4) ❖

سورة الفيل مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي خمس آيات
الم تر كيف فعل ربك باصحب الفيل ۝ الم يجعل كيدهم
في تضليل ۝ وارسل عليهم طيرا ابابيل ۝ ترميهم
بحجارة من سجيل ۝ فجعلهم كعصف ماكول ۝
سورة قريش مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي اربع آيات
لايلف قريش ۝ الفهم رحلة الشتاء والصيف ۝
فليعبدوا رب هذا البيت ۝ الذي اطعمهم من جوع
وامنهم من خوف ۝
سورة الماعون مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي سبع آيات
ارءيت الذي يكذب بالدين ۝ فذلك الذي يدع اليتيم ۝
ولا يحض على طعام المسكين ۝ فويل للمصلين ۝
الذين هم عن صلاتهم ساهون ۝ الذين هم يراءون ۝
ويمنعون الماعون ۝
سورة الكوثر مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي ثلث آيات
انا اعطينك الكوثر ۝ فصل لربك وانحر ۝ ان
شانئك هو الابتر ۝

107 सूरतुल्-माऊनि 17

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 115 अक्षर, 25 शब्द और 7 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ-रऐतल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन (1) फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुअ्अुल्-यतीम (2) व ला यहुज़्जु अ़ला तआ़मिल्-मिस्कीन (3) फ़वैलुल् लिल्-मुसल्लीन (4) अल्लज़ी-न हुम अ़न् सलातिहिम् साहून (5) अल्लज़ी-न हुम् युराऊ-न (6) व यम्-नअ़ूनल्-माऊ़न (7) ❖
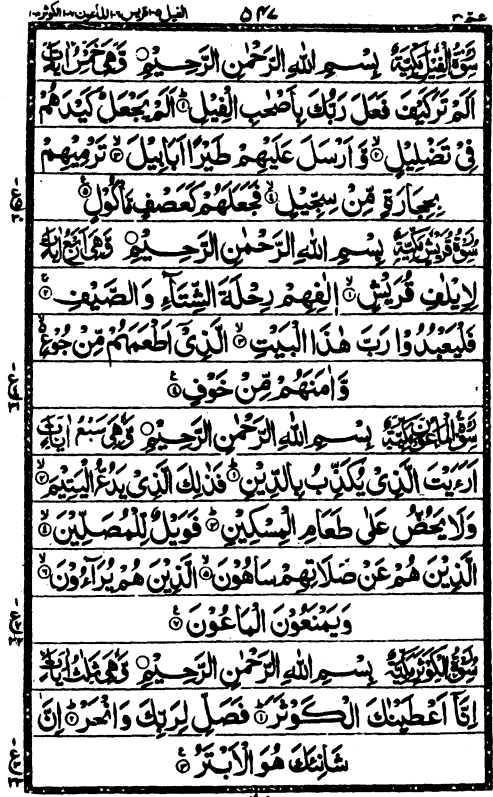
105 सूरः फ़ील 19

सूरः फ़ील मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क्या आपको मालूम नहीं कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या मामला किया?[1] **(1)** क्या उनकी तदबीर को (जो कि काबा शरीफ़ को वीरान करने के बारे में थी) पूरी तरह ग़लत नहीं कर दिया? **(2)** और उनपर गिरोह के गिरोह परिन्दे भेजे **(3)** जो उन लोगों पर कंकर की पत्थरियाँ फेंकते थे। **(4)** सो अल्लाह तआ़ला ने उनको खाए हुए भूसे की तरह (पामाल) कर दिया। **(5)** ❖

106 सूरः क़ुरैश 29

सूरः क़ुरैश मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 4 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

चूँकि क़ुरैश आ़दी हो गए हैं। **(1)** यानी जाड़े और गर्मी के सफ़र के आ़दी हो गए हैं। **(2)** तो (इस नेमत के शुक्रिए में) उनको चाहिए कि इस ख़ाना-ए-काबा के मालिक की इबादत करें **(3)** जिसने उनको भूख में खाने को दिया और ख़ौफ़ से उनको अमन दिया।[2] **(4)** ❖

107 सूरः माऊ़न 17

सूरः माऊन मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 7 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

क्या आपने उस शख़्स को नहीं देखा जो क़ियामत के दिन को झुठलाता है। **(1)** सो (अगर आप उस शख़्स का हाल सुनना चाहें तो सुनिए कि) वह वह शख़्स है जो यतीम को धक्के देता है। **(2)** और मोहताज को खाना देने की (दूसरों को भी) तरग़ीब नहीं देता।[3] **(3)** सो (इससे साबित हुआ कि) ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है **(4)** जो अपनी नमाज़ को भुला बैठते हैं (यानी छोड़ देते हैं)[4] **(5)** जो ऐसे हैं कि (जब नमाज़ पढ़ते हैं तो) दिखावा करते हैं। **(6)** और ज़कात बिलकुल नहीं देते। **(7)** ❖

108 सूरः कौसर 15

सूरः कौसर[5] मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

बेशक हमने आपको कौसर (एक हौज़ का नाम है, और हर बड़ी भलाई भी इसमें दाख़िल है) अ़ता फ़रमाई है।[6] **(1)** सो (इन नेमतों के शुक्रिए में) आप अपने परवर्दिगार की नमाज़ पढ़िए और क़ुरबानी कीजिए। **(2)** यक़ीनन आपका दुश्मन ही बेनाम व निशान है।[7] **(3)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) कि उनके लिए बुरे आमाल आसान कर दिए जाते हैं''।

(तफ़सीर पृष्ठ 1098) 1. यानी दोनों में हमारी ही हुकूमत है। इसलिए दुनिया में हमने अहकाम मुक़र्रर किए और आख़िरत में उनकी मुख़ालफ़त व मुवाफ़क़त पर सज़ा व जज़ा देंगे, जिसका बयान दो जगह ''फ़-सनुयस्सिरुहू'' में हुआ है।

(पृष्ठ 1098 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 1100, 1102, 1104, 1106, 1108 की तफ़सीर पृष्ठ 1110-1115 पर)

108 सूरतुल्-कौसरि 15

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 37 अक्षर, 10 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अअ़्तैनाकल्-कौ-सर् (1) फ़-सल्लि लिरब्बि-क वन्हर् (2) इन्-न शानि-अ-क हुवल्-अब्तर् (3) ❖

109 सूरतुल्-काफ़िरून 18

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 99 अक्षर, 26 शब्द और 6 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् या अय्युहल्-काफ़िरून (1) ला अअ़्बुदु मा तअ़्बुदून (2) व ला अन्तुम् आ़बिदू-न मा अअ़्बुद (3) व ला अ-न आ़बिदुम्-मा अ़बत्तुम् (4) व ला अन्तुम् आ़बिदू-न मा अअ़्बुद (5) लकुम् दीनुकुम् व लि-य दीन (6) ❖

سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ سِتُّ اٰيٰتٍ
قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ وَلَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ
سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيٰتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ
اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا
سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ؕ
سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۚ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۚ
فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ
سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اَرْبَعُ اٰيٰتٍ
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ
منزل ٧

110 सूरतुन्-नस्रि 114

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 81 अक्षर, 19 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्-फ़त्हु (1) व रऐतन्ना-स यद्ख़ुलू-न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा (2) फ़-सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क वस्तग़्फ़िर्हु, इन्नहू का-न तव्वाबा (3) ❖

111 सूरतुल् ल-हबि 6

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 81 अक्षर, 24 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तब्बत् यदा अबी ल-हबिंव्-व तब्ब (1) मा अग़्ना अ़न्हु मालुहू व मा क-सब् (2) स-यस्ला नारन् ज़ा-त ल-हबिंव्- (3) -वम्-र-अतुहू हम्मा-लतल् ह-तब (4) फ़ी जीदिहा
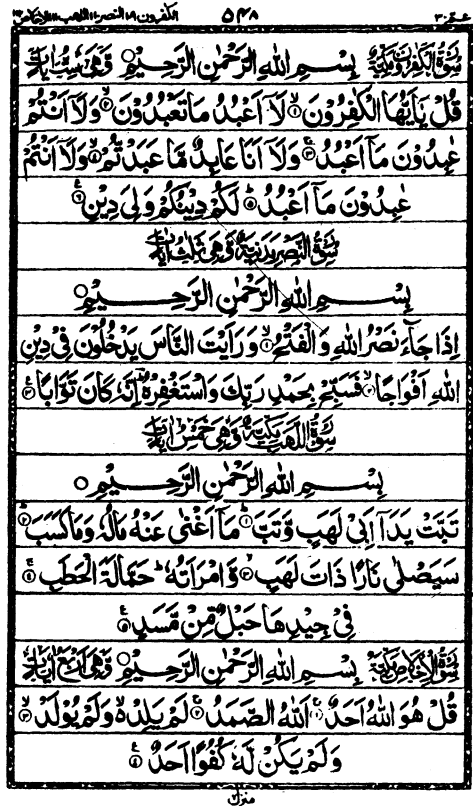
109 सूरः काफ़िरून 18

सूरः काफ़िरून[1] मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 6 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप (उन काफ़िरों से) कह दीजिए कि ऐ काफ़िरो! (1) (मेरा और तुम्हारा तरीक़ा एक नहीं हो सकता और) न (तो फ़िलहाल) मैं तुम्हारे माबूदों की पूजा करता हूँ (2) और न तुम मेरे माबूद की पूजा करते हो। (3) और न (आइन्दा भविष्य में) मैं तुम्हारे माबूदों की पूजा करूँगा (4) और न तुम मेरे माबूद की पूजा करोगे।[2] (5) तुमको तुम्हारा बदला मिलेगा और मुझको मेरा बदला मिलेगा।[3] (6) ◆

110 सूरः नस्र 114

सूरः नस्र मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 3 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) जब ख़ुदा की मदद और (मक्का की) फ़त्ह (अपनी निशानियों के साथ) आ पहुँचे (यानी ज़ाहिर हो जाए) (1) और (उसकी निशानियाँ जो उसपर सामने आने वाली हैं, ये हैं कि) आप लोगों को अल्लाह के दीन (यानी इस्लाम में) गिरोह के गिरोह दाख़िल होता हुआ देख लें।[4] (2) तो अपने रब की तस्बीह व तारीफ़ कीजिए और (उससे) इस्तिग़फ़ार की दरख़्वास्त कीजिए, वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है।[5] (3) ◆

111 सूरः लहब 6

सूरः लहब[6] मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

अबू लहब के हाथ टूट जाएँ और वह बर्बाद हो जाए।[7] (1) न उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई। (माल से मुराद सरमाया और कमाई से मुराद उसका नफ़ा है)। (2) (और आख़िरत में) वह जल्द ही (मरने के फ़ौरन बाद) एक भड़कती हुई अंगारों वाली आग में दाख़िल होगा। (3) वह भी और उसकी बीवी भी जो लकड़ियाँ लादकर लाती है। (मुराद काँटेदार लकड़ियाँ हैं,[8] जिनका शाने नुज़ूल में ज़िक्र है)। (4) (और दोज़ख़ में) उसके गले में रस्सी होगी ख़ूब बटी हुई। (5) ◆

112 सूरः इख़्लास 22

सूरः इख़्लास[9] मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 4 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप (उन लोगों से) कह दीजिए कि वह यानी अल्लाह तआला (अपनी ज़ात व सिफ़ात के कमाल में) एक है।[10] (1) अल्लाह (ऐसा) बेनियाज़ है (कि वह किसी का मोहताज नहीं और उसके सब मोहताज हैं)। (2) उसके औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है। (3) और न कोई उसके बराबर का है।[11] (4) ◆

(पिछले पृष्ठ का शेष) 2. ताकि ईमान व फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करके उससे बचो और कुफ़्र व नाफ़रमानी इख़्तियार करके उसमें न जाओ। क्योंकि उसमें जाने और न जाने के यही असबाब हैं।

(पृष्ठ 1098 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1100, 1102, 1104, 1106, 1108, 1110 की तफ़सीर पृष्ठ 1112-1116 पर)

हब्लुम् मिम्-म-सद् (5) ❖

112 सूरतुल्-इख़्लासि 22

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 49 अक्षर, 17 शब्द और 4 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् हुवल्लाहु अ-हद (1) अल्लाहुस्-समद् (2) लम् यलिद् व लम् यूलद् (3) व लम् यकुल्-लहू कुफ़ुवन् अ-हद (4) ❖

113 सूरतुल्-फ़-लक़ि 20

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 73 अक्षर, 23 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ि (1) मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़ (2) व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब् (3) व मिन् शर्रिन्-नफ़्फ़ासाति फ़िल्-उ़-क़द् (4) व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा ह-सद् (5) ❖

٥٤٩

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۝٤ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

سُوْرَةُ النَّاسِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١ مَلِكِ النَّاسِ ۝٢ اِلٰهِ النَّاسِ ۝٣ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۥ الْخَنَّاسِ ۝٤ الَّذِیْ يُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

بسم الخير

دُعَاءُ خَتْمِ الْقُرْاٰنِ

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِیْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًی وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِیْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَاءَ اللَّيْلِ وَاٰنَاءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِیْ حُجَّةً يَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ

منزل

114 सूरतुन्-नासि 21

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 81 अक्षर, 20 शब्द और 6 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नासि (1) मलिकिन्नासि (2) इलाहिन्नासि (3) मिन् शर्रिल् वस्वासिल्-ख़न्नास (4) अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि (5) मिनल्-जिन्नति वन्नास (6) ❖

दुआ-ए-ख़त्मे क़ुरआन

अल्लाहुम्-म आनिस् वह्शती फ़ी क़ब्री। अल्लाहुम्मर्हम्नी बिल्-कुरआनिल्-अ़ज़ीमि वज्अ़ल्हु ली इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह्म-तन्। अल्लाहुम्-म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अ़ल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्ज़ुक़्नी तिला-व-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि। वज्अ़ल्हु ली हुज्जतंय्-या रब्बल्-आ़लमीन।
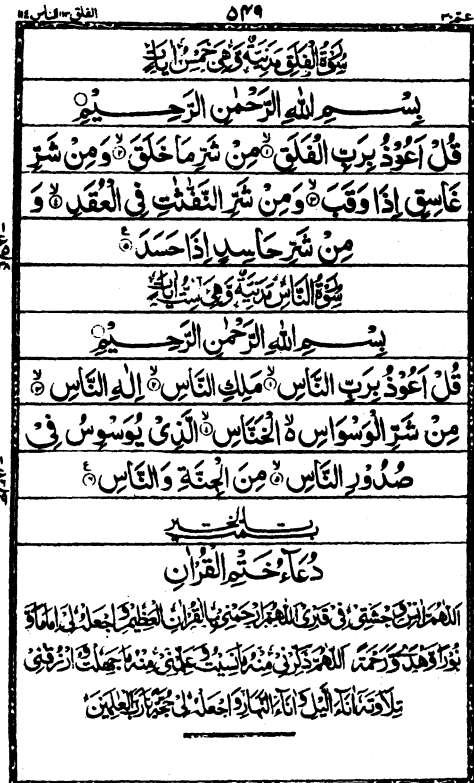
113 सूरः फ़लक़ 20

सूरः फ़लक़[1] मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 5 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप (अपने पनाह लेने के लिए) कहिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह लेता हूँ **(1)** तमाम मख़्लूक़ात की बुराई से[2] **(2)** और (ख़ास तौर से) अन्धेरी रात की बुराई से, जब वह रात आ जाए। (और रात में बुराइयों और फ़ितनों का अन्देशा ज़ाहिर है)। **(3)** और (ख़ास तौर से गन्डे की) गिरहों पर पढ़-पढ़कर फूँकने वालियों की बुराई से। **(4)** और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करने लगे। **(5)** ❖

114 सूरः नास 21

सूरः नास मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 6 आयतें हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बड़े रहम वाले हैं।

आप कहिए (जिस तरह कि सूरः फ़लक़ में गुज़रा) कि मैं आदमियों के मालिक, **(1)** आदमियों के बादशाह, **(2)** आदमियों के माबूद की पनाह लेता हूँ **(3)** वस्वसा डालने, पीछे हट जाने वाले[3] (शैतान) की बुराई से। **(4)** जो लोगों के दिलों में वस्वसा[4] डालता है **(5)** चाहे वह (वस्वसा डालने वाला) जिन्न हो या आदमी (हो)। **(6)** ❖

(पिछले पृष्ठ का शेष) 3. यह इख़्लास की निहायत ही ऊँची हालत है, क्योंकि ख़र्च करने में किसी के एहसान का बदला उतारना अपने आपमें यह भी पसन्दीदा और मतलूब है, मगर फ़ज़ीलत में शुरू में किसी के साथ एहसान करने के बराबर नहीं। पस जब उस शख़्स का ख़र्च करना उससे भी ख़ाली और पाक है तो दिखावे वग़ैरह जैसे गुनाहों की मिलावट से और ज़्यादा बरी होगा। और यह इख़्लास का बहुत ऊँचा और आला दर्जा है।

4. अगरचे आयत के अल्फ़ाज़ आम हैं मगर इसका सबब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िआ है, कि उन्होंने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह को काफ़िरों से ख़रीदकर अल्लाह के लिए आज़ाद कर दिया था।

5. एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी बीमारी की वजह से दो-तीन रात इबादत में रात को न जागे एक काफ़िरा ने कहा कि मालूम होता है कि तुम्हारे शैतान ने तुमको छोड़ दिया है, देर हो गई, उसपर यह सूरः नाज़िल हुई।

6. क़रार पकड़ने के दो मायने हो सकते हैं- एक हक़ीक़ी यानी उसकी अंधेरी का कामिल हो जाना कि उससे पहले उसका ज़्यादा होना हरकत करने की तरह था, दूसरे मजाज़ी (यानी असली मायनों को छोड़कर) यानी जानदारों का उसमें सो जाना और चलने-फिरने और बोलने-चालने की आवाज़ों का रुक जाना।

7. क्योंकि अव्वल तो आपसे कोई बात ऐसी नहीं हुई, दूसरे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के वास्ते यह बात अल्लाह के तरीक़े में मुहाल है, पस आप काफ़िरों की ख़ुराफ़ात और बेकार बातों से ग़मगीन न हों, आपको वह्य की नेमत बराबर हासिल रहेगी।

8. जिसकी क़सम खाई गई है उसको ख़ुशख़बरी से मुनासबत यह है कि वह्य का लगातार आना और उसके आने में कुछ देरी होना रात और दिन के अदलने-बदलने की तरह है।

9. चुनाँचे सीरत की किताबों में है कि आप माँ के पेट में थे कि आपके वालिद की वफ़ात हो गई, अल्लाह तआला ने आपके दादा और चचा से आपकी परवरिश कराई।

10. अल्लाह तआला का क़ौल "मा कुन्-त तद्री मल्किताबु व लल्-ईमानु" और वह्य से पहले शरीअत की तफ़सील मालूम न होना इससे

(पृष्ठ 1098 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 1100, 1102, 1104, 1106, 1108, 1110, 1112 की तफ़सीर पृष्ठ 1113-1116 पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष) आपकी शान में कोई नुक़्स नहीं आता।

11. इस तरह कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के माल में आप शरीक हुए और उसमें नफ़ा मिला। फिर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आपसे निकाह कर लिया और अपना तमाम माल हाज़िर कर दिया।

12. यानी इल्म भी बहुत ज़्यादा अ़ता फ़रमाया और तब्लीग़ के मुख़ालिफ़ीन की रुकावट बनने की वजह से जो तकलीफ़ पेश आती है उसमें बरदाश्त करने की हिम्मत और संयम भी दिया।

13. "बोझ" से मुराद वे मुबाह उमूर हैं जो आपसे कभी-कभार किसी हिक्मत के तसव्वुर की बिना पर सादिर हो जाते थे और बाद में उनका हिक्मत के ख़िलाफ़ और ग़ैर-मुनासिब होना साबित होता था और आप अपनी बुलन्द शान और अल्लाह से अपने ख़ुसूसी ताल्लुक़ की वजह से ऐसे ही ग़मगीन होते थे जिस तरह कोई गुनाह से ग़मगीन होता है। इसमें उनपर पकड़ न होने की ख़ुशख़बरी है।

14. यानी शरीअ़त में अक्सर जगह अल्लाह तआ़ला के नाम के साथ आपका मुबारक नाम मिलाया गया, जैसे 'अत्तहिय्यात में, नमाज़ में, अज़ान में, तकबीर में' और अल्लाह के नाम की बुलन्दी और शोहरत ज़ाहिर है। पस जो उससे मिला हुआ होगा बुलन्दी व शोहरत में वह भी उसके ताबे रहेगा।

15. मक्का में आप और ईमान वाले तरह-तरह की तकलीफ़ों और सख़्तियों में गिरफ़्तार थे, लेकिन आख़िरकार वे मुश्किलें एक-एक करके सब दूर हो गईं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1100) **1.** यानी वह ख़ूबसूरती और ताक़त बद-सूरती और कमज़ोरी से बदल जाती है और बुरे से बुरा हो जाता है। इससे मक़सूद बुराई के इन्तिहाई दर्जे को बयान करना है, जिससे लौटाने की क़ुदरत पर काफ़ी इस्तिदलाल होता है।

2. सूरः के शुरू में चार चीज़ों की क़सम खाई गई है- दो पेड़ ज़्यादा नफ़े वाले और दो बरकत वाले मक़ामात कि एक वह मक़ाम है जहाँ मूसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह से हम-कलाम होते थे, दूसरा मक़ाम आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पैदा होने और रहने और वह्य नाज़िल होने का है। और पेड़ों की क़सम को मक़सूद से मुनासबत ज़ाहिर है कि पेड़ भी इसी तरह फलता-फूलता है, और चूँकि यहाँ बयान था अशरफ़ुल मख़्लूक़ात यानी इनसान का इसलिए क़सम भी उस पेड़ की खाई जो सब पेड़ों में अफ़ज़ल है, और तूर पहाड़ और 'बलदे अमीन' यानी मक्का शरीफ़ दोनों वह्य उतरने की जगह हैं तो आख़िरत में बदला दिए जाने से उनको ज़्यादा मुनासबत हुई क्योंकि वह्य से आख़िरत में बदला दिए जाने का इल्म हुआ है।

3. "इक़रा से मा लम् यअ्लम्" तक सबसे पहली वह्य है। जिसके नाज़िल होने से नुबुव्वत की इब्तिदा और शुरूआत हुई।

4. इस सिफ़त और ख़ूबी को ख़ास करने में यह नुक्ता है कि नेमत के लिहाज़ से इनसान पर हक़ तआ़ला का तमाम दूसरी मख़्लूक़ात से ज़्यादा इनाम व इकराम है कि ख़ून के लोथड़े से जो कि बिलकुल एक बेजान चीज़ थी इसको किस दर्जे तक तरक़्क़ी दी कि सूरत कैसी बनाई, अ़क़्ल व इल्म से नवाज़ा। पस इनसान को ज़्यादा शुक्र और ज़िक्र करना चाहिए। और ख़ून के लोथड़े की तख़्सीस शायद इसलिए है कि उससे पहले एक बरज़ख़ी हालत है कि उसके पहले नुत्फ़ा और ग़िज़ा व उन्सुर है, और उसके बाद गोश्त की बोटी और हड्डियों की तरकीब और उसमें रूह का डालना है।

5. मतलब यह कि अव्वल तो तालीम लिखने में मुन्हसिर नहीं दूसरे असबाब से भी तालीम हो रही है। दूसरे असबाब अपने आपमें कुछ असर नहीं रखते, सबबे हक़ीक़ी और उलूम के देने वाले हम हैं। पस अगरचे आप लिखना नहीं जानते मगर हमने जब आपको पढ़ने का हुक्म किया है तो हम दूसरे ज़रिए से आपको पढ़ना और वह्य के उलूम को याद रखने की क़ुदरत दे देंगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ।

6. यह आयत अबू जहल के मुताल्लिक़ नाज़िल हुई थी जिसने आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ने से रोका था।

7. चूँकि यह बुलाना उसके बुलाने की शर्त के साथ था, जब शर्त ही नहीं पाई गई तो मश्रूत भी नहीं पाया गया। तिबरी ने हज़रत क़तादा से मुर्सलन रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर अबू जहल ऐसी हरकत करता तो फ़रिश्ते सबके सामने उसको पकड़कर तहस-नहस कर देते।

(तफ़सीर पृष्ठ 1102) **1.** यानी हज़ार महीने तक इबादत करने का जिस-क़द्र सवाब है उससे ज़्यादा शबे-क़द्र में इबादत करने का सवाब है। इसी तरह तफ़सीरे ख़ाज़िन में बयान किया गया है।

2. चुनाँचे बैहक़ी की हदीस में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया गया है कि शबे-क़द्र में जिबराईल अ़लैहिस्सलाम फ़रिश्तों के एक गिरोह में आते हैं और जिस किसी को अल्लाह की इबादत में मश्ग़ूल देखते हैं उसके लिए रहमत की दुआ़ करते हैं। रहमत और सलामती की दुआ़ एक ही बात है। और 'अमरे-ख़ैर' यानी ख़ैर के मामले से मुराद यही है।

3. यह नहीं कि उस रात के किसी ख़ास हिस्से में यह बरकत हो और किसी में न हो। शबे-क़द्र के मुताल्लिक़ एक इश्काल यह है कि सूरज के निकलने और छुपने की जगहों के अनेक और अलग-अलग होने की वजह से शबे क़द्र का हर जगह अलग होना लाज़िम आता है। जवाब यह है कि इसमें कोई मुहाल और नामुमकिन होना लाज़िम नहीं आता कि ये बरकतें किसी को **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) किसी वक़्त में मिलें और किसी को किसी वक़्त में, इसी तरह फ़रिश्तों का उतरना हर जगह मुख़्तलिफ़ वक़्त में हो।
4. मुराद क़ुरआन है। मतलब यह है कि उन काफ़िरों का कुफ़्र ऐसा सख़्त था और ऐसे जहालत में मुब्तला थे कि एक अ़ज़ीम और बड़े रसूल के भेजे बग़ैर उनके राह पर आने की उम्मीद न थी, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने हुज्जत के पूरा करने और लाज़िम करने के लिए आपको क़ुरआन देकर भेजा।
5. यानी दीने हक़ से भी इख़्तिलाफ़ किया और आपसी इख़्तिलाफ़ जो पहले से थे उनको भी दीने हक़ की पैरवी करके दूर न किया। और मुश्रिकों को ख़ास तौर पर इसलिए कहा कि उनके पास तो पहले से भी आसमानी इल्म न था, और क़ुरआन को सहीफ़े और इसके मज़ामीन को किताबें फ़रमाना क़ुव्वत के एतिबार से है। हासिल यह है कि ऐसे रसूल और ऐसी अ़ज़ीमुश्शान किताब का आना यह तक़ाज़ा करता था कि वे सब लोग दीने हक़ पर जमा हो जाते, मगर उन लोगों ने इज्तिमा के सबब को तफ़रीक़ और फूट डालने का सबब बना लिया। और इस मुक़ाबला करने से यह भी मालूम हो गया कि जिन लोगों ने इख़्तिलाफ़ और फूट डालने का काम नहीं किया वे ईमान वाले हैं।
6. यानी न उनसे कोई नाफ़रमानी होगी और न उनको कोई बुरा और नापसन्दीद मामला पेश आएगा जिससे दोनों तरफ़ से किसी के राज़ी न होने का अन्देशा हो।
(तफ़सीर पृष्ठ 1104) **1.** बोझ से दफ़न हुई चीज़ें और मुर्दे मुराद हैं।
2. उस हालत को देखकर कहेगा कि यह आ़दत के ख़िलाफ़ और ख़िलाफ़े गुमान ज़ल्ज़ला और बोझों का निकालना कैसे होने लगा। वजह इस कहने की यह है कि यह क़ियामत और उसके वाक़िआ़त का पहले से इनकारी था, अब उन वाक़िआ़त को देखकर हैरान है।
3. तिर्मिज़ी शरीफ़ वग़ैरह में इसकी तफ़सीर में हदीस आई है कि जिस शख़्स ने रू-ए-ज़मीन पर जैसा अ़मल किया होगा भला या बुरा, ज़मीन गवाही देने के तौर पर अल्लाह के सामने सब कह देगी।
4. बशर्ते कि उस वक़्त तक वह भलाई व बुराई बाक़ी रही हो, वरना अगर कुफ़्र से वह ख़ैर और भलाई फ़ना हो चुकी हो या तौबा व ईमान से वह बुराई दूर हो चुकी हो वह इसमें दाख़िल ही नहीं, क्योंकि वह भलाई-भलाई न रही और वह बुराई-बुराई न रही जिसपर हुक्म का मदार था, जब वह न रहा तो हुक्म भी साबित न होगा।
5. इससे मुराद लड़ाई के घोड़े हैं। जिहाद हो या ग़ैर-जिहाद और अ़रब को इस वजह से कि वे लड़ाके और जंगजू थे इन क़स्मों से निहायत मुनासबत है, हाँपना दौड़ने के वक़्त ज़ाहिर है। और लोहे वाला जूता पथरीली ज़मीन पर लगने से आग का झड़ना भी ज़ाहिर है, और अ़रब में अक्सर आ़दत यह थी कि दुश्मनों पर सुबह के वक़्त हमला बोलते थे ताकि रात के वक़्त जाने में दुश्मन को ख़बर न हो। सुबह को अचानक जा पड़ें, और रात को हमला न करने में बहादुरी का इज़्हार समझते थे। गुबार का उड़ना अगरचे हर वक़्त होता है मगर उसको सुबह के साथ मुक़ैयद करना इस तरफ़ इशारा है कि उनके चलने में बहुत तेज़ी होती है कि ठन्ड के वक़्त गुबार दबा हुआ होता है।
6. मुराद क़ियामत है कि दिलों को घबराहट के मारे और कानों को सख़्त आवाज़ से खड़खड़ा देगी और उसका खड़खड़ाना उस दिन होगा जिस दिन आदमी परेशान परवानों की तरह हो जाएँगे। परवानों के साथ तश्बीह देने की वजह कमज़ोरी और बहुत ज़्यादा परेशान होना है, अगरचे बाज़ों को बेताबी और परेशानी न होगी मगर कमज़ोरी और ज़्यादती सबके लिए आ़म है।
7. "ईमान के पल्ले के भारी और हल्का होने" की तहक़ीक़ सूरः आराफ़ के शुरू में गुज़र चुकी है।
(तफ़सीर पृष्ठ 1106) **1.** यानी वह देखना दलील के तौर पर नहीं जिसपर यक़ीन आने में कभी-कभी देर होती है, बल्कि बिलकुल सामने रू-ब-रू देखना होगा जिसपर फ़ौरन यक़ीन हासिल हो जाता है। और यह कि रू-ब-रू देखने में दलीलों से और अ़क़्ली ज़रूरतों से इन्किशाफ़ (यानी असलियत का खुलकर सामने आना) भी ज़्यादा है, उसके खुद देखने को नफ़्से यक़ीन फ़रमाया जो कि 'ऐ़नुल् यक़ीन' से मुराद है, इसके बावजूद कि वह सब यक़ीन है।
2. "लतुस्अलुन्-न" में आ़म ख़िताब है हदीस के क़रीने से, जिसमें आपने हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से फ़रमाया कि तुम लोगों से इन नेमतों के मुताल्लिक़ सवाल किया जाएगा। इसी तरह बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में ज़िक्र किया गया है। पस जब ग़ैर-मुज्रिमीन तक से सवाल होगा अगरचे इसपर कोई नुक़सान मुरत्तब न हो तो मुज्रिमीन तो क्यों बच जाएँगे? और उनके लिए वह नुक़सानदेह भी होगा।
3. यानी उसमें इस क़द्र मश्गूल रहता और खुद को लगाए रखता है कि जैसे यह ख़्याल करता है कि यह हमेशा रहेगा। और यह ज़ाहिर है कि इन सिफ़ात व आमाल पर ये ख़ास वईद (सज़ा की धमकी) उस सूरत में है जबकि मन्शा उनका कुफ़्र हो, अगरचे मुतलक़ वईद मुतलक़ सिफ़ात व ज़िक्र हुए अफ़आ़ल पर भी दूसरी वाज़ेह आयात में है।
4. यानी उसमें जल्दी से पकड़ने और अन्दर घुस जाने से और उस शख़्स को मौत न आने से यह हालत होगी कि बदन के साथ ही दिल को जला देगी। और अगर इसे छोड़ भी दें तो भी दिल तक पहुँचने की तकलीफ़ मौत के न आने के सबब उसको महसूस होगी, दुनिया की आग के ख़िलाफ़ कि बदन से दिल तक पहुँचते-पहुँचते बहुत देर लगती है, यहाँ तक कि उससे पहले ही **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) रूह निकल जाती है और दिल तक पहुँचने का दर्द और तकलीफ़ का एहसास करने की नौबत नहीं आती।
5. यानी आग के इतने बड़े-बड़े शोले होंगे और वे लोग उस आग में क़ैद होंगे।

(तफ़सीर पृष्ठ 1108) 1. यमन का हाकिम अब्रहा बड़ा लश्कर लेकर जिसमें हाथी भी थे ख़ाना-ए-काबा को ढाने के लिए चढ़ आया। जब मुहसर वादी में पहुँचा तो समुद्र की तरफ़ से कुछ परिन्दे आए। उनके पन्जों और चोंचों में मसूर और चने के बराबर कंकरियाँ थीं, उन्होंने उन कंकरियों को लश्कर पर फेंकना शुरू किया, ये कंकरियाँ बन्दूक़ की गोली की तरह लगती थीं और हलाक कर देती थीं। अक्सर तो इस अ़ज़ाब से हलाक हो गए और दूसरे भाग गए। यह वाक़िआ हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादते शरीफ़ा (जन्म मुबारक) से पचास दिन पहले हुआ।
2. हासिल यह कि मक्का में ग़ल्ला वग़ैरह पैदा नहीं होता, इसलिए क़ुरैश की आ़दत थी कि साल भर में तिजारत के लिए दो सफ़र करते, जाड़ों में यमन की तरफ़ कि वह गर्म मुल्क है और गर्मी में शाम की तरफ़ कि वह ठंडा मुल्क है। और लोग उनको हरम वाले और बैतुल्लाह के ख़ादिम समझकर उनकी इज़्ज़त करते और उनके माल व जान से कोई रोक-टोक न करता, और उनको ख़ूब नफ़ा होता कि घर बैठकर खाते और खिलाते। इस सूरः में इसी वाक़िए का ज़िक्र है। और चूँकि बैतुल्लाह के सबब हर जगह उनका एहतिराम व सम्मान होता था इसलिए लफ़्ज़ 'रब' (यानी मालिक) को 'हाज़ल बैत' की तरफ़ मुज़ाफ़ किया, और "भूख" में खाना देना इशारा है नफ़े के हासिल करने की तरफ़, और "ख़ौफ़" से दुनिया के अमन की तरफ़ इशारा है कि सफ़र हो या वतन में रहने की हालत उनसे कोई किसी तरह की रोक-टोक न करता था।
3. यानी वह ऐसा संगदिल है कि न ख़ुद एहसान करे और न दूसरों को एहसान पर आमादा करे। और जब बन्दे का हक़ ज़ाया करना ऐसा बुरा है तो ख़ालिक़ (यानी पैदा करने वाले) का हक़ ज़ाया करना तो और ज़्यादा बुरा है।
4. क्योंकि इसमें इज़हार करने का हुक्म नहीं दिया गया इसलिए इसको बिलकुल ही छोड़ देते हैं, बख़िलाफ़ नमाज़ के कि उसके इज़हार का हुक्म है इसलिए कभी-कभी दिखाने के लिए पढ़ भी लेते हैं और जब निगाह बची छोड़ देते हैं।
5. इस सूरः के नाज़िल होने का सबब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की औलाद में से सबसे बड़े बेटे हज़रत क़ासिम थे, उनका मक्का में इन्तिक़ाल हो गया तो आ़स बिन वाईल सहमी ने और उसके साथ दूसरे मुश्रिकों ने कहा कि मुहम्मद की नस्ल बन्द हो गई। पस आप नऊज़ु बिल्लाह अब्तर यानी बेनाम व निशान हैं। मतलब यह था कि उनके दीन का चर्चा चन्द दिन का है, फिर ये सब बखेड़े पाक हो जाएँगे। उसपर आपकी तसल्ली के लिए यह सूरः नाज़िल हुई। दुर्रे मन्सूर में भी इसी तरह है।
6. जिसमें दुनिया की ख़ैर यानी दीन का बाक़ी रहना और इस्लाम की तरक़्क़ी जो कि अज्र की ज़्यादती का सबब है और आख़िरत की भलाई यानी अल्लाह की निकटता के दर्जे और बुलन्द रुतबे सब दाख़िल है, फिर अगर एक बेटा फ़ौत हुआ और उसपर मुख़ालिफ़ लोग ख़ुश हो रहे हैं तो उसपर ग़म न कीजिए क्योंकि उससे बढ़कर आपको ये दौलतें अ़ता फ़रमाई गई हैं।
7. चाहे ज़ाहिरी नस्ल उस दुश्मन की चले या न चले लेकिन दुनिया में उसका ख़ैर के साथ ज़िक्र बाक़ी न रहेगा, बख़िलाफ़ आपके कि क़ियामत तक आपकी उम्मत और आपका दीन और आपकी याद, नेक-नामी, मुहब्बत और एतिक़ाद के साथ रहेगी जो कि 'कौसर' के मफ़हूम के आ़म होने में सब दाख़िल हैं। अगर नरीना औलाद की नस्ल न हो न सही, जो नस्ल से मक़सूद है वह आपको हासिल है। यहाँ तक कि दुनिया से गुज़रकर आख़िरत में भी। और दुश्मन इससे महरूम है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1110) 1. इस सूरः के नाज़िल होने का सबब यह है कि एक बार काफ़िरों के चन्द सरदार आपके पास आए और आपसे अ़र्ज़ किया कि आइए हमारे माबूदों की आप इबादत किया कीजिए और आपके माबूद की हम इबादत किया करें, जिसमें हम और आप दीन के तरीक़े में शरीक रहें। जौन-सा तरीक़ा ठीक होगा उससे सबको कुछ-कुछ हिस्सा मिल जाएगा। उसपर यह सूरः नाज़िल हुई। दुर्रे मन्सूर में इसी तरह बयान किया गया है।
2. मतलब यह मालूम होता है कि मैं मोमिन होकर शिर्क की बला में गिरफ़्तार नहीं हो सकता, न अब न आइन्दा। और तुम मुश्रिक रहकर मोमिन क़रार नहीं दिए जा सकते, न अब न आइन्दा। यानी तौहीद व शिर्क जमा नहीं हो सकते। जब तक तुम अपने माबूदों की इबादत करने वाले और मुश्रिक रहोगे उस वक़्त तक मेरे माबूद की इबादत करने वाले यानी मोमिन न समझे जाओगे। पस इसको पेशीनगोई पर महमूल करने की, और इसपर जो सवाल होता है कि बाज़े तो मुसलमान हो गए थे, उसके जवाब में "काफ़िरून" को अ़हद हुए मामले पर महमूल करने की ज़रूरत नहीं।
3. इसमें उनके शिर्क पर वईद भी सुना दी। पस यह सूरः मुख़ालफ़त के इज़हार और वईद पर मुश्तमिल है।
4. तो उस वक़्त समझ लीजिए कि दुनिया में रहने और नबी बनाकर भेजे जाने का मक़सद जो कि दीन का मुकम्मल करना है, ख़त्म हुआ। इस वजह से आख़िरत का सफ़र क़रीब है, पस उसके लिए तैयारी कीजिए।
5. बहुत-सी हदीसों में इस सूरः की यही तफ़सीर आई है कि इसमें आपकी वफ़ात के क़रीब होने की **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) ख़बर है, और फ़त्ह से मक्का का फ़त्ह होना मुराद है। और "अल्लाह के दीन में लोगों का गिरोह के गिरोह दाख़िल होने" को फ़त्हे मक्का की निशानियों में से इसलिए कहा गया है कि आ़म लोग मक्का के फ़त्ह होने का इन्तिज़ार कर रहे थे। अब तक एक-एक दो-दो आदमी मुसलमान होता था, मक्का के फ़त्ह होने के बाद क़बीले के क़बीले इस्लाम में दाख़िल होने लगे।

6. बुख़ारी, मुस्लिम और हदीस की दूसरी किताबों में रिवायत किया गया है कि जब आयत "व अन्ज़िर् अ़शी-र-तकल् अक़्रबी-न" नाज़िल हुई और आपने सफ़ा पहाड़ पर चढ़कर सबको पुकारा और जमा करके इस्लाम की दावत दी तो आँ हज़रत के चचा अबू लहब बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ने गुस्ताख़ी करते हुए कहा "तू बर्बाद हो जाए, क्या हमको सिर्फ़ इतनी बात के लिए जमा किया था" उसपर यह सूरः नाज़िल हुई।

7. चुनाँचे ग़ज़्वा-ए-बद्र के सात दिन के बाद उसके ताऊन का दाना जिसको 'अ़दसा' कहते हैं निकला और बीमारी लग जाने के ख़ौफ़ से घर वालों ने उसको अलग डाल दिया, यहाँ तक कि उसी हालत में हलाक हो गया। तीन दिन तक लाश यूँ ही पड़ी रही, जब सड़ने लगा तो मज़दूरों से उठवाकर शहर से बाहर भेज दिया, उन्होंने लेजाकर उसको गढ़े में फेंक दिया।

8. अबू लहब की बीवी काँटेदार लकड़ियाँ जमा करके लाती और अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी और बैर की वजह से आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की राह में बिछाती। दुर्रे मन्सूर में बैहक़ी वग़ैरह से इसी तरह नक़्ल किया गया है। और बाज़ ने कहा है कि "लकड़ियाँ लादकर लाने वाली" से मुराद चुग़लख़ोर है, और वह औ़रत चुग़लख़ोर भी थी जैसा कि दुर्रे मन्सूर में बयान किया गया है। चुनाँचे फ़ारसी में भी 'हेज़म-कश' (यानी सूखी लकड़ी लादकर लाने वाला) इसी मायने में इस्तेमाल होता है।

9. इस सूरः के नाज़िल होने का सबब यह है कि एक बार मुश्रिकों ने आपसे कहा कि अपने रब की ख़ूबी और नसब बयान कीजिए इसपर सूरः इख़्लास नाज़िल हुई जैसा कि दुर्रे मन्सूर में है।

10. ज़ाती कमालात ये कि 'वाजिबुल वजूद' (यानी अपने वजूद में किसी का मोहताज नहीं) है, और सिफ़ात का कमाल यह कि इल्म व क़ुदरत वग़ैरह उसके क़दीम और मुहीत (घेरने वाले) हैं।

11. तौहीद का इनकार करने वाले कई क़िस्म के हैं- अल्लाह के वजूद का इनकार करने वाले, उसके 'वाजिबुल वजूद होने का इनकार करने वाले, उसकी सिफ़तों के कामिल होने का इनकार करने वाले, उसकी इबादत में दूसरों को शरीक करने वाले। इन सबका बातिल होना "अल्लाहु अ-हद" (यानी अल्लाह एक है) में हो गया। और जो मदद माँगने में शिर्क करते हैं उनका बातिल होना "अल्लाहुस्स-मद्" (यानी अल्लाह बेनियाज़ है) में हो गया। पस पहला जुम्ला मज़मून "इय्या-क नअ़बुदु" और दूसरे जुम्ले में "इय्या-क नस्तईन" दाख़िल हो गया। और जो लोग अल्लाह के लिए बेटे और बेटियाँ साबित करते थे उनका बातिल होना "लम यलिद्" से हो गया। और जो लोग बाज़ जिन्नात और इनसानों के माबूद होने का एतिक़ाद रखते थे उनका बातिल होना "लम् यूलद्" से हो गया। यानी ये लोग पैदा किए हुए हैं, हक़ तआ़ला को किसी ने पैदा नहीं किया। क्योंकि इससे हादिस होना लाज़िम आता है इसलिए अल्लाह के बराबर किसी को ख़्याल करना और किसी को उसका साथी व हमसफ़र एतिक़ाद करना, जैसा कि 'मजूस' (यानी आग को पूजने वाले) जो कि 'यज़दाँ' और 'अहूरमन' के क़ायल हैं, इसका बातिल होना "लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अ-हद" से ज़ाहिर हो गया।

(तफ़सीर पृष्ठ 1112) **1.** सूरः 'फ़लक़' और 'नास' एक साथ नाज़िल हुईं। बैहक़ी की रिवायत की दलीलों के मुताबिक़ इनके नाज़िल होने का सबब यह है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर लबीद यहूदी और उसकी बेटियों ने जादू कर दिया था जिससे आपको बीमारी जैसी हालत लाहिक़ हो गई। आपने हक़ तआ़ला से दुआ़ की, उसपर ये दोनों सूरतें नाज़िल हुईं जिनमें एक की पाँच आयतें और एक की छह आयतें हैं। कुल मिलाकर ग्यारह आयतें हैं, और आपको वह्य से उस जादू की जगह और मक़ाम भी मालूम करा दिया गया। चुनाँचे वहाँ से मुख़्तलिफ़ चीज़ें निकलीं जिनमें जादू किया गया था। और उसमें ताँत का एक टुकड़ा भी था, जिसमें ग्यारह गिरहें लगी हुई थीं। हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ये सूरतें पढ़ने लगे। एक-एक आयत पर एक-एक गिरह खुल गई। चुनाँचे आपको बिलकुल शिफ़ा हो गई, और दोनों सूरतों के मजमूए में मुख़्तलिफ़ बुराइयों से पनाह माँगने का और तमाम मामलात में हक़ तआ़ला पर भरोसा करने का हुक्म हुआ है।

2. शायद 'फ़लक़' (यानी सुबह के वक़्त) की तख़्सीस रात के मुक़ाबले में हो और इशारा इस तरफ़ हो कि जिस तरह हक़ तआ़ला रात को दूर फ़रमा देता है उसी तरह रात के असर यानी जादू का असर भी ख़त्म कर सकता है।

3. पीछे हटने का मतलब यह है कि हदीस में है कि अल्लाह का नाम लेने से वह हट जाता है, और यह बात जिन्नी शैतान में तो ज़ाहिर है, और इनसानी शैतान में तफ़सीरे कबीर के मुताबिक़ इस तरह से है कि वस्वसा डालने वाला अपने को नसीहत करने वाले और ख़ैरख़्वाह की सूरत में ज़ाहिर करता है, लेकिन अगर उसको डाँट दिया जाए तो फिर वस्वसा से बाज़ आ जाता है और हट जाता है। और अगर क़बूल कर लिया जाए तो और आगे बढ़ता है। और यह सिफ़्त इशारा इस तरफ़ है कि अल्लाह के साथ उससे पनाह तलब करना बचाव और पनाह का सबब होगा, क्योंकि उसकी ख़ासियत है अल्लाह की याद से पीछे रह जाना।

4. इससे वह वस्वसा मुराद है जो नाफ़रमानी की तरफ़ ले जाता हो, और उसका दीन के लिए नुक़सानदेह होना ज़ाहिर है।